ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य जगत्
साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य —30 रुपये विदेश मे 65 पौ० या 125 डालर वर्ष 51, अक 3 17 रविवार जनवरी, 1988 दूरभाष। 343718
आजीवन सदस्य-251 रु० इस अक का मूल्य—75 पैसे सृष्टि सवत 1972949088, दयानन्दाब्द 163 माघ कृ०-13, 2044 वि०

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार का सम्मान

गुरुकुल कागडी के सुयोग्य स्नातक इ॰ प के ख्याति प्राप्त विद्वान् मगला प्रसाद पारितोषिक विजेता, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश सरकार द्वारा सम्मानित और पुरस्कृत, 'आयममाज का इतिहाम' (सात खण्ड) के प्रणेता, इति-

हास के अतिरिक्त राजनीनि शास्त्र और ऐतिहासिक उपन्यामो के लेखक, जिनकी अब तक 42 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, गुरुकुल कागडी के वतमान कुलाधिपति 84 वर्षीय श्री प्रो० सत्यकेतु विद्यालकार का दिल्ली प्रशासन की हिन्दी अकादमी की ओर से 29 दिसम्बर को स्थानीय हिमाचल भवन मे सम्मान किया गया। दिल्ली के उपराज्यपाल श्री हरकिशनलाल कपूर ने उन्हे एक शाल, रजत मजूषा और 11 हजार की राशि भेंट की।

अन्य जिन व्यक्तियो को सम्मानित किया गया वे हैं—डा० प्रभाकर माचवे, श्रीमती शकुन्त माथुर, डा० नरेन्द्र कोहली (साहित्य सेवा), डा० विमल कुमार जैन, श्री वी० आर० नारायण (राष्ट्रभाषा सेवा), श्री मुकुट बिहारी वर्मा श्री चन्दूलाल चन्द्राकर (पत्रकारिता)।

भावभीनी श्रद्धांजलि

पं. वीरसेन वेदश्रमी दिवंगत

वेदविज्ञानाचाय प० वीरसेन वेदश्रमी का मगलवार 22 12 87 को उनके निवास स्थान इदौर मे देहावसान हो गया। 23 12 87 का उनकी अन्त्येष्टि एव 25 12 87 को श्रद्धाजलि मभा म नगर के गण्यमान्य महानुभावो के अतिरिक्त हजारो की सख्या म श्रद्धालु जन उपस्थित थे। वेदश्रमी जी ने वेदो पर अनुसधान करके 30 से अधिक पुस्तका की रचना की और उन पुस्तको पर उन्हे अनेक पुरस्कार तथा मम्मान प्राप्त हुए। पडित जी न याज्ञिक वृष्टि विज्ञान एव याज्ञिक चिकित्मा विज्ञान के विशेषज्ञ के रूप मे अन्तराष्ट्रीय ख्याति अर्जित की। उन्होने दिल्ली, अजमेर, जयपुर पानीपत खडवा बिलासपुर, रायपुर, आदि अनक स्थानो पर यज्ञ विज्ञान क सफल प्रयोग किये। उनका जन्म 5 दिसम्बर 1908 को देवास मे हुआ था। 1930 मे गुरुकुल, वृदावन (मथरा) से आयुर्वेद शिरोमणि की उपाधि प्राप्त की। वे म० प्र० केमिस्ट एसो० सस्थापक-सचिव के पद पर लगातार दस वर्ष तक रहे, वे वेद विश्व परिषद् के भी अध्यक्ष रहे। श्रद्धाजलि सभा मे उनकी स्मृति म एक ट्रस्ट की स्थापना का निश्चय किया गया जिस के माध्यम से उनके ग्रथो के प्रकाशन क साथ साथ वेद एव यज्ञ सबधी अनुसधान काय भी होगा।

अत्येष्टि उनके सुपुत्रो द्वारा (विक्रमादित्य विश्वावसु विभावसु) द्वारा धूम धाम से बैण्ड बाजे के साथ वेदमन्त्रो का उच्च स्वर मे उच्चारण करते हुए जूनी इन्दौर के श्मशान घाट पर जहा अत्येष्टि हेतु वेदी बनी हुई है, पूण वैदिक रीति से दिनाक 23 12-87 को दिन के 5 बजे की गयी। सस्कार मे 16 किलो शुद्ध घी 40 किलो हवन सामग्री, 5 किलो चन्दन, 150 ग्राम कपूर लगा। पडितजी का शान्त व सौम्य चेहरा मरणोपरान्त भी वैसा ही देदीप्यमान दिखाई दे रहा था।

सुपुत्रो ने 24 दिसम्बर को शान्ति यज्ञ कराया जिसमे पडितजी के सैकडो भक्त व श्रद्धालु सम्मिलित हुए। 25 दिसम्बर को श्री श्रद्धानन्द अनाथालय इन्दौर मे श्रद्धाजलि सभा श्री गणपति वर्मा की अध्यक्षता मे हुइ जिसका सचालन श्री जगदीशप्रसद वैदिक ने किया। श्री किशोरीलाल गोयल ने बताया कि पडित जी की ही प्रेरणा से दयानन्द वैदिक प्रचार मिशन की स्थापना लगभग 50 वष पूव की गयी। जिसके तत्वावधान मे सावर के मुसलमान व न हरिजनो को शुद्ध किया गया। आगर व आसपास के गावो के अनेक ईसाई व न हरिजनो को शुद्ध किया गया। इन्दौर के पास के गावो मे नायता को शुद्ध किया गया। सन 1946 मे महेश्वर मे गुरुकुल की स्थापना की।

आय वीर दल की स्थापना कर अनेक स्थानो पर शाखाए प्रारम्भ की। मध्य भारतीय क्षेत्र का आर्य सम्मेलन कराया। सीहोर व ब्यावर मे भी आय सम्मेलन हुए। सन 1951 मे मध्य भारतीय आय प्रतिनिधि सभा का रजिस्ट्रेशन भी करा दिया। प० वीरसेनजी इस सभा के प्रथम मन्त्री बने।

श्री नाथूराम वर्मा ने कहा कि प्रारभ मे कुछ लो॰ ॰ ॰ ॰ कवल आयु-

(शेष पृष्ठ 2 पर)

डा० सत्यपाल जी का सात्विक दान

नई दिल्ली, 6 जनवरी। गुरुकुल कागडी के सुयोग्य स्नातक, पुरानी पीढी के मिशनरी आर्य समाजी डॉ० सत्यपाल जी घरौण्डा (करनाल) वाले आज परिवार सहित आय समाज "अनारकली" मन्दिर माग, नई दिल्ली मे पधारे। उनके साथ उनकी धमपत्नी, उनका सुपुत्र, उनकी बहू, उनकी सुपुत्री एव उनका पोता भी थे। उन्होने बडी श्रद्धापूवक महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टकारा के लिये 10 000/- (दस हजार) एव आय अनाथालय फिरोजपुर छावनी के लिये 10 000/ (दस हजार) दान दिया। इसके साथ ही उन्होने आर्य जगत्" के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालकार एव टकारा ट्रस्ट तथा आय प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मत्री श्री राम नाथ सहगल को एक-एक गरम शाल श्रद्धापूवक भेंट किया।

डा० सत्यपाल जी का सारा परिवार बडे सात्विक विचारो का है। वे आय समाज के हर काय मे तन, मन, धन मे सहायता करते रहते है।

अगर इसी तरह अन्य आय समाजी भी महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टकारा मे, जहा पिछले तीन वर्षो स वर्षा नही हुई, स्थित उपदेशक विद्यालय, गोशाला आदि के लिये दान देने की कृपा करे ना टकारा ट्रस्ट का काय सुचारु रूप से चलता रहे।

स्त्री आर्य समाज अशोक विहार द्वारा ग्यारह हजार रुपए भेंट

आर्य प्रादेशिक प्रातिनिधि सभा के तत्त्वावधान मे ब्यावर (राजस्थान) टकारा (सौराष्ट्र) तथा कालाहाडी (उडीसा) मे सूखा राहत केन्द्र चलाए जा रहे है। उडीसा राहत केन्द्र का सचालन युवा एव कमठ सन्यासी स्वामी धर्मानन्द द्वारा किया जा रहा है। स्वामी जी जनवरी के प्रथम सप्ताह म दिल्ली पधारे थे। इस अवसर पर आय स्त्री समाज, अशोक विहार ने उन्हे आमन्त्रित कर के उन्हे ग्यारह हजार रुपए का चक समाज की प्रधाना श्रीमती प्रेमशील महेन्द्रू ने भेंट किया।

—पद्मा तलवाड, मन्त्रिणी।

सम्पादक—क्षितीश वेदालकार व्यवस्थापक—रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

आर्यों की प्रार्थना कैसी हो ?

—भोलानाथ दिलावरी, प्रधान केन्द्रीय आर्यसभा, अमृतसर—

[आर्यसमाज के सत्संगों मे जो प्राथना की जाती है उसमे प्राय परमात्मा की स्तुति तथा कुछ अन्य साधारण-सी बातों का उल्लेख होता है। वैदिक धर्म और महर्षि की मान्यताओं का, आर्य संस्कृति की महानता का और आर्यों के चक्रवर्ती साम्राज्य का उसमे कोई उल्लेख नही होता। मैंने अपनी ओर से प्राथना का यह प्रारूप तैयार किया है जिसमे उस कमी को पूरा करने का प्रयत्न किया गया है। यदि ऐसा या इससे उत्तम कोई अन्य प्रारूप तैयार करके सभी समाजों और आर्यसंस्थाओं में उसको प्रचलित किया जा सके, तो उससे आर्यों में नई चेतना आ सकती है। मैंने तो एक उदाहरणमात्र प्रस्तुत किया है।—लेखक]

हे परम पिता परमात्मन ! आपने अपनी अपार दया से हमें आर्य कुल में जन्म देकर अपनी अमर सन्तान कहलाने का सुअवसर दिया है। इस नाते ही सृष्टि के आदि में, दो अरब वर्ष पूर्व, हमारे मार्ग दर्शन के लिए पवित्र वेद ज्ञान महर्षियों द्वारा प्रदान करने की कृपा की। और पवित्र सत्य सनातन आर्य धर्म के प्रचारार्थ ब्रह्मादि ऋषियों की परम्परा चलाई। इन्ही ऋषियों से प्रेरणा लेकर वेद ज्ञान को सरल और सर्वसुलभ बनाने के लिए ब्राह्मणों, उपनिषदों और षट्दर्शनों का निर्माण किया गया।

प्रभु जी, आपने ही इस सत्य सनातन वेद धर्म के प्रचार प्रसारार्थ महा प्रतापी चक्रवर्ती महाराजाओं की परम्परा चलाई। इसी परम्परा में मनु महाराज, भगीरथ, रघु, राम और कृष्ण आदि महापुरुष हुए। इन्होंने आपके "कृण्वन्तो-विश्वमार्यम्" के आदेश के पालनार्थ भूमण्डल पर चक्रवर्ती आर्य राज्य स्थापित किया जो सत्ययुग से लेकर त्रेता और द्वापर युग-पर्यन्त निर्बाध चलता गया।

परन्तु शोक, इस कलियुग के प्रारम्भ में ही अपने चक्रवर्ती राज्य और वैभव के मद में चूर हम आलस्य-प्रमाद में घिर अपने आर्यत्व को भूल बैठे। "कृण्वन्तो विश्वमार्यम" का आदेश विस्मरण हो गया। फलस्वरूप आर्यों के चक्रवर्ती राज्य की इतिश्री हो गई। हम नाना प्रकार के अवैदिक मत-मतान्तरों में बुरी तरह उलझ गए। यहां तक कि हमारे राष्ट्र पर मलेच्छों का राज्य हो गया। आर्य संस्कृति और ज्ञान के अमूल्य स्रोतों को पूर्णतया नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया। बलात् धर्म परिवर्तन होने लगा।

ऐसे घोर संकट के समय प्रभु जी ! आपने हम आर्यों की यह दुर्दशा देख, फिर से धर्म जगाने हेतु महर्षि दयानन्द को भेजा। इस महा मानव ने फिर से लुप्त प्राय "वेदों" को बड़े परिश्रम से खोज कर फिर से संसार के समक्ष रख दिया। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" की प्रतिज्ञा याद दिलाई। शुद्ध वेदोक्त आर्य धर्म के प्रचार हेतु "आर्यसमाज" का निर्माण किया।

हे सर्व शक्तिमान् परम पिता ! हम आपको अन्तर्यामी और सर्वसाक्षी जानकर आपके समक्ष यह प्रतिज्ञा करते हैं कि हम सच्चे अर्थों में आर्य बनेंगे वेद-वेदांगों, और ऋषि कृत ग्रन्थों में वर्णित सत्य सनातन वैदिक धर्म पर प्राणपन से चलने का प्रयत्न करेंगे और अन्यों को प्रेरित करेंगे। फिर से अपने देश को सच्चे अर्थ में "आर्यावर्त" बना कर आर्य राज्य स्थापित करेंगे सब देश वासियों को और आर्य सन्तानों को ... करेंगे। वेद ज्ञान और आर्य संस्कृति को संसार में फैलाएंगे।

प्रभु जी, हमें शक्ति दो, इस लक्ष्य की पूर्ति के निमित्त हम प्राणपन से जुट जावें और मार्ग में आई चुनौतियों का दृढ़ता से मुकाबला कर सकें।

पता—केन्द्रीय आर्यसभा भवन,
शक्तिनगर, अमृतसर

पं. वीरसेन

(पृष्ठ 1 का शेष)

वेद का ही विद्वान माना था। किन्तु कालान्तर मे वैदिक सपदा' आदि ग्रन्थो को देखकर वे स्वय चकित हो गये और उन्होंने हृदय से उन्हें वेद का विद्वान् माना। वेदश्रमी तथा वेदविज्ञानाचार्य की उपाधियों से वे विभूषित हुए। उन्होंने सही तरीके से ओम् का उच्चारण करना सिखाया। सस्कारो की समाप्ति पर महावामदव्य के गान का जो विधान ऋषि ने किया है, उसे उन्होंने स्वय सस्वर चरिताथ किया।

डा० मधुकर घालप (आदिवासी सेवा सघ सुन्द्रेल, झाबुआ म० प्र०) ने कहा कि वृष्टिविज्ञान' पर अनुसधान प० वीरसेनजी की ही देन है। 'पजन्यो अभिवषतु' का विश्लेषण कर वरुण के आह्वान से अनेक स्थानो पर यज्ञ कर सफलता प्राप्त की, सूखे तलाब भर गये, भूमि अनाज बोने योग्य हो गयी। मुझे भी उन्होंने रिसर्च मे मार्गदर्शन किया। उन्होंने कहा कि आज जितना खतरा एटमबम से है उतना ही वायु-प्रदूषण से है। स्टाकहोम के एक वैज्ञानिक ने कहा था कि केवल भारतवर्ष की यज्ञ पद्धति ही इस विनाश को रोक सकती है। वैदिक वृष्टि विज्ञान को कई प्रदेशों ने मान्यता दी। यदि एक ट्रस्ट बना कर अनुसधान किया जाये, तो वैदिक वृष्टि विज्ञान द्वारा अतिवृष्टि अनावृष्टि को समाप्त किया जा सकता है। पडितजी द्वारा 20 स्थानो पर इसका प्रयोग किया गया। 16 स्थानो पर सफलता मिली व भरपूर वर्षा हुई।

स्वामी कर्तव्यान दजी ने कहा कि पडितजी ने सिद्ध कर दिया कि वेद का विज्ञान आध्यात्मिक विज्ञान है जो भौतिक विज्ञान से बहुत आगे है। द्यौ, अन्तरिक्ष, पृथिवी आदि को यदि हमे नियन्त्रित करना है, तो उसके विज्ञान को समझना पडेगा। पडितजी ने प्रकृति को सतुलित करने का सबल माध्यम यज्ञ को ही बताया।

श्री जगदीश प्रसाद वैदिक ने म०भा० आर्य प्रतिनिधि सभा तथा सयोगितागज समाज की ओर से श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए प० वीरसेनजी के विषय में कई ऐसे तथ्य उजागर किये जो बहुतो को नही मालूम थे। उन्होंने बताया कि पडितजी को तीन वेद कण्ठस्थ थे। उन्होंने चारो वेदो का 1200 बार पारायण किया। इतना श्रम करने वाला विद्वान कठिनाई से मिलेगा। वे आर्थिक विपन्नता मे रहते हुए भी साहस नही खोते थे। उनकी दोनो पुत्रिया फीस जमा न कर सकने के कारण गुरुकुल से वापस आ गयी पर प० जी ने साहस नही छोडा। फिर से धन अर्जित कर दोनो पुत्रियो का गुरुकुल भेजा व स्नातिका बनाया। प० जी साक्षात वेदमूर्ति थे। उन्होंने वेदो पर अनुसधान किया। उनका कार्य आर्य जगत् मे स्वर्णाक्षरो मे लिखा जायेगा।

पी० आर० आर्यकुमार, श्री भट्ट वकील, श्री बसन्त करम वेलकर और श्री ठाकुरदास ने भी श्रद्धाजलि अर्पित की।

अन्त में सभाध्यक्ष श्री गणपति वर्मा ने सब महानुभावो का आभार माना व आर्य समाज मल्हारगज के अन्तर्गत पिछले 12 वर्षों से चल रहे योग साधना केन्द्र की ओर से श्रद्धाजलि अर्पित की।

—गणपति वर्मा, रिटा० डी० एस० पी०,
सचालक, योग साधना केन्द्र, आर्य समाज, मल्हारगज, इन्दौर (मध्य-प्रदेश)

आर्य समाज, दयानन्द बाजार लुधियाना के विभिन्न कार्यक्रम

आर्य समाज, दयानन्द बाजार, लुधियाना मे 14 जनवरी को मकर सक्रान्ति 15 से 21 जनवरी तक स्त्री आर्य समाज द्वारा गायत्री महायज्ञ 24 जनवरी को माता सुमनावति और 31 जनवरी को डा० बालकृष्ण शास्त्री का साप्ताहिक सत्सग मे प्रवचन होगा। 26 जनवरी को गणतन्त्र दिवस और 14 से 16 फरवरी तक ऋषि बोधोत्सव का कार्यक्रम होगा।—रोशनलाल शर्मा
महा मन्त्री

सुभाषित

पत्र नैव यदा करीरविटपे दोषो वसन्तस्य किं
नोलूकोऽप्यवलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम् ।
धारा नैव पतन्ति चातकमुखे मेघस्य किं दूषणम्
यत्पूर्वं विधिना ललाटलिखित तन्मार्जितु क क्षम ।।
—भर्तृहरि

पत्र न लगते यदि करील में तो बसंत का है क्या दोष ।
देख न सकता यदि उलूक भी दिन में तो रवि पर क्या रोष ।
चातक मुख में धार न गिरती, दोष मेघ को देना व्यर्थ ।
विधि के लिखे ललाट लेख के समार्जन मे कौन समर्थ ।।
—गोपालदास गुप्त

सम्पादकीयम्

अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता

भारतीय सविधान मे जहा वाणी की स्वतन्त्रता आदि का उल्लेख है, वहा निम्न पांच बातों की स्वतन्त्रता भारत के प्रत्येक नागरिक को प्रदान की गई है—

क वाणी और अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता, ख शान्तिपूर्ण निरायुध सम्मेलन की स्वतन्त्रता, ग सगठन बनाने की स्वतन्त्रता, घ भारत मे सर्वत्र अबाध सचरण की स्वतन्त्रता, ङ भारत के किसी भी भाग मे बसने और जीविका या कारबार की स्वतन्त्रता ।

उक्त पाचो स्वतन्त्रताओ के लिये यह प्रतिबन्ध भी साथ ही लगाया गया है कि यदि इन स्वतन्त्रताओ से राज्य की प्रभुता, अखण्डता, सुरक्षा और लोक व्यवस्था तथा शिष्टाचार को हानि पहुचे तो वह स्वतन्त्रता स्वीकार योग्य नहीं होगी । इस प्रकार स्वतन्त्र भारत मे जहा अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता दी गई है, वहा देश की स्वतन्त्रता को हानि पहुचाने वाले प्रतिबन्धो से उसे मर्यादित भी कर दिया गया है । सच बात तो यह है कि इन मर्यादाओ के अभाव मे नागरिको को दी गई स्वतन्त्रता उच्छृंखलता मे बदल सकती है और वह उच्छृंखलता अराजकता मे परिणत हो सकती है । तब समस्त राज्य व्यवस्था भी व्यर्थ हो जाती है । राज्य व्यवस्था है ही इसलिये कि वह जनता को मर्यादित स्वतन्त्रता का उपभोग करने दे और जो लोग इस प्रकार की मर्यादाओ का उल्लघन करते हो उनको दण्ड दे जिससे अन्य नागरिको का जीवन व्यवस्थित और सुरक्षित रह सके ।

ऋषिवर दयानन्द ने आर्य समाज के दसवे नियम मे इसी बात को बहुत सरल ढग से प्रस्तुत करते हुए लिखा है—"सब मनुष्यो को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने मे परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम मे सब स्वतन्त्र रहे ।" इसका अर्थ यह है कि व्यक्ति की स्वतन्त्रता सामाजिक परतन्त्रता से बधी हुई है । यदि कोई व्यक्ति समाज हित की चिन्ता नहीं करता और अपनी स्वतन्त्रता का समाज के विरोध में प्रयोग करता है तो वह स्पष्ट रूप से समाजद्रोही है । राष्ट्र भी छोटे समाज का ही विस्तृत रूप है इसलिये प्रत्येक व्यक्ति की स्वतत्रता राष्ट्रीय स्वतत्रता की मर्यादाओ से बधी हुई है ।

भारत क्योकि बहुभाषी, बहुधर्मी और बहुजातीय देश है इसलिये इस प्रकार की मर्यादाओ की और भी अधिक आवश्यकता है । यदि इस देश के सविधान मे और यहा की जनता के बहुसख्यक वर्ग मे साम्प्रदायिक सहिष्णुता की भावना न होती, तो इस देश मे शान्ति और व्यवस्था स्थापित करना कठिन हो जाता । इसलिये दावे के साथ कहा जा सकता है कि साम्प्रदायिक सहिष्णुता मे विश्वास रखने वाला विशाल हिन्दू समाज जब तक यहा बहुमत मे है तभी तक यहा लोकतन्त्र भी है, सम्प्रदाय-निरपेक्षता भी है और जन जीवन की सुरक्षा भी है । जिस दिन यहा हिन्दु अल्पमत मे हो जायेंगे उस दिन इनमे से एक भी तत्व यहा नही बचेगा । हमारे सविधान मे लोकतन्त्र और सम्प्रदाय निरपेक्षता के सिद्धात को स्वीकार किये जाने का सबसे बडा कारण यही है कि ये दोनो चीजें यहा के जन मन मे रची बसी थीं । जिन देशो मे गैर हिन्दुओ का बाहुल्य है, उनके यहा उक्त दोनो मूल तत्वो का भी अभाव है । दूर जाने की आवश्यकता नही, भारत के चारो ओर जितने देश हैं, एक बार उन पर नजर डाल लीजिए, तो हमारी बात की पुष्टि हो जायेगी । भारत के चारो ओर ही क्यो, हम तो कहेगे कि यूरोप और अमरीका के सुदूरस्थ देशो मे भी इस प्रकार की सम्प्रदाय निरपेक्षता का कोई स्वाभाविक आधार दिखाई नही देता । अन्यथा इग्लैंड और आयरलैंड का, तुर्की और यूनान का, अरब और इजराइल का तथा ईराक और ईरान का विद्यमान सघर्ष दिखाई नही देता । कुछ लोग इस बात को भारत की दुर्बलता समझ सकते हैं परन्तु जिन आदर्शों के लिये भारत अब तक जीवित रहता आया है और सारे ससार मे उसकी ख्याति है, अकस्मात् उन आदर्शों से विचलित हो जाना उसके लिए सम्भव नही, क्योकि उन आदर्शो की स्थापना उसने इतिहास के थपेडो से सीखी है ।

अभिव्यक्ति की स्वतत्रता के सम्बध मे जिस विवेक की आवश्यकता है, कभी-कभी भारत सरकार मे वह विवेक दृष्टिगोचर नहीं होता । हो सकता है कि यह हमारा अपना ही अविवेक हो । परन्तु हमको बात तो अपने विवेक के अनुसार ही करनी पड़ेगी । उस विवेक के आधार पर हम यह कहने का साहस करते हैं कि पिछले दिनों सरकार ने एक पुस्तक को छपने से पहले ही जब्त करके अपने विवेक का परिचय नहीं दिया । पुस्तक के लेखक थे—श्री राम स्वरूप । उस पुस्तक के अग्रेजी मे तीन सस्करण हो चुके थे । पुस्तक का नाम था "अंडरस्टैंडिंग थ्रू हदीस' । अब श्री सीताराम गोयल ने उसका हिन्दी अनुवाद 'हदीस के माध्यम से इस्लाम का अध्ययन" नाम से किया था । छपने के बाद वह पुस्तक जिल्द बाधने के लिये जिल्दसाज के यहा गई थी । वहां से पुस्तक की सब प्रतिया पुलिस उठा ले गई और श्री सीताराम गोयल को गिरफ्तार कर लिया गया ।

इस काड मे तीन बातें सामने आती है—1 अग्रेजी मे लिखी हुई पुस्तक उतनी विस्फोटक नही होती जितनी हिन्दी मे लिखी हुई होती है । 2 अग्रेजी के पाठक कितने सहिष्णु और समझदार है कि इस प्रकार की पुस्तको से उत्तेजित नही होते । 3 हिन्दी के पाठक नासमझ हैं आसानी से उत्तेजित हो जाते है । इसीलिये हिन्दी मे लिखी पुस्तक खतरनाक होती है । हिन्दी वालो को अज्ञानी और अग्रेजी वालो को ज्ञानी समझना, एक ही बात यदि हिन्दी अग्रेजी दोनो मे कही जाये तो उसके अलग-अलग प्रभाव की कल्पना करना क्या, सरकार के विवेक का सूचक है ? सरकार की इस अयुक्तियुक्त समझदारी पर मन ही मन हसा ही जा सकता है ।

इस पुस्तक मे लेखक ने अपनी ओर से कोई शब्द नही लिखा था और यह पुस्तक इस्लाम के समस्त अनुयायियो मे सबसे अधिक प्रामाणिक माने जाने वाली 'सही इस्लाम' नामक हदीस का अनुवाद मात्र थी, जब अग्रेजी मे तीन सस्करण निकल जाने पर भी कोई खतरा उपस्थित नहीं हुआ तो हिन्दी में उसके प्रकाशित हो जाने पर कौन-सा अनर्थ हो जाता, यह हमारी समझ मे नही आया । यही हम एक बात और भी कहना चाहते हैं । धार्मिक सहिष्णुता के प्रति जनता जनार्दन की चेतना को जागृत करने का केवल एक ही उपाय है, और वह है—एक दूसरे के धर्म की सही जानकारी । बहुत बार अपने पडोसी की धार्मिक मान्यताओ के न समझने के कारण ही आपसी गलत फहमिया पैदा होती हैं । साम्प्रदायिक उपद्रवो का मूल कारण भी ऐसी नासमझिया ही होती हैं । इस स्थिति को सभालने का सबसे उत्तम उपाय तो यही है कि देश की जनता को अधिक से अधिक एक दूसरे के धर्म को जानने का अवसर मिले, सब विश्वविद्यालयो मे विभिन्न धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन की व्यवस्था हो, तर्क और बुद्धि की कसौटी पर उनका विश्लेषण और विवेचन किया जाये और सर्वसम्मत स्वीकृत जो तथ्य हो, उसको राष्ट्र धर्म के रूप मे पनपने का अवसर दिया जाय । यह होता विवेक का मार्ग । इस मार्ग को प्रशस्त करने मे जो पुस्तकें सहायक हो सके उनका स्वागत किया जाना चाहिये । हम उक्त पुस्तक को इसी कोटि मे गिनते हैं ।

पहले सरकार को यह सिद्ध करना चाहिये था कि उक्त पुस्तक मे लेखक ने अमुक बात ऐसी लिखी है जो हदीस मे नही है । यदि उस पुस्तक मे ऐसी कोई बात न हो और फिर भी वह आपत्तिजनक प्रतीत हो, तो सरकार के विवेक का तकाजा यह है कि वह उस हदीस को जब्त करती, न कि इस पुस्तक को । परन्तु लगता है कि तुष्टीकरण की नीति मे अधी हुई सरकार की आखो को विवेक का यह सीधा मार्ग नही सूझा । इसी तुष्टीकरण की नीति का परिणाम यह है कि हिन्दुओ की उचित मागो को भी साम्प्रदायिक कहकर ठुकरा दिया जाता है । सन 985 मे हिन्दू रक्षा दल के अध्यक्ष और मत्री की ओर से एक पत्रक छापा गया था जिसमे कुरान मजीद की 24 ऐसी आयतें अग्रेजी अनुवाद सहित दी गई थी जिनसे साम्प्रदायिक उपद्रवो को हवा मिल सकती थी । दोनो व्यक्तियो पर अभियोग चला और उन्हे गिरफ्तार किया गया । उसके बाद न्यायालय ने 31 जुलाई । 86 को उक्त दोनो महानुभावो को बरी करते हुए निर्णय दिया—'कुरान मजीद की पवित्र पुस्तक के प्रति उचित आदर रखते हुए उक्त आयतो के सूक्ष्म अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि ये आयते अधिक हानिकारक हैं और घृणा की शिक्षा देती है जिससे मुसलमानो और देश के अन्य वर्गों मे भेदभाव निर्मित होने की सम्भावना है ।"

इसी प्रकार कलकत्ता के न्यायालय मे भी कुरान की ऐसी आयतो के विरुद्ध एक याचिका दायर की गई थी जिसका विस्तृत विवरण हम गत वर्ष 'आर्य जगत्' के सत्यार्थ प्रकाश विशेषाक मे छाप चुके हैं । तथ्य अपने आप मे पवित्र होते हैं । परन्तु उन तथ्यो का सामना करने की ताब हरेक मे नही होती । सहिष्णुता की वहीं आवश्यकता पडती है । तथ्यो को छिपाने से भ्रम ही अधिक फैलता है । अगर सरकार को ऐसा लगता हो कि किसी मत के माननीय ग्रथ मे लोकतत्र और सम्प्रदाय निरपेक्षता का सिद्धान्त स्वीकरणीय नही है, तो उसको अपने सविधान मे से इन दोनो मूलभूत सिद्धातो को निकाल देना चाहिये या भारत मे उन सिद्धान्तो के विरुद्ध मान्यताओ का प्रचार करने वाले ग्रन्थो के प्रचार पर पाबन्दी लगा देनी चाहिये । एक तरफ सऊदी अरब जैसे कट्टर धर्मान्ध देश हैं जो गीता और सत्यार्थ प्रकाश जैसे धर्म का तर्कसगत सही रूप बताने वाले ग्रन्थो को अपने देश मे सहन नही कर सकते और दूसरी ओर हम हैं जो गलत बात को भी गलत कहने से डरते हैं । यह अभिव्यक्ति की कैसी स्वतत्रता है ?

हमारे समाज में नारी की दयनीय

—प्राचार्या श्रीमती कमला रत्नम्—

देवराला की रूपकंवर को 18 वर्ष की अल्पायु में विवाह के मात्र दस महीने बाद पति के शव के साथ जीवित जला दिया गया। दस महीनों में शायद दस दिन भी वह पति सुख न देख पायी थी कि उसे उसकी कीमत अपनी जान देकर चुकानी पड़ी। बीसवीं सदी के अन्त में और आजादी की आधी शताब्दी बाद भी ऐसी क्रूर और वीभत्स घटना हो सकती है और लोग उसमें धार्मिक उन्माद, जाति गौरव पुरुषार्थ के तत्व खोज सकते हैं हमारे समाज के लिए यह अत्यन्त शर्म और चिन्ता की बात है। बूढ़े, अनपढ़ और अन्धविश्वासी ग्रामीणों को यदि छोड़ भी दिया जाये, तो जयपुर के छात्र, कतिपय विधायक, पुलिस कर्मी यहां तक कि विरोधी पार्टी के नेता भी हाथों में नंगी तलवार लिए आक्रोश भेदी नारों से सती प्रथा का समर्थन करते हैं। धर्म की आड़ में यह घोर अनैतिकता, क्रूर बर्बरता तथा श्रृगाली धन लोलुपता का नग्न नृत्य है और उसके प्रतीकार में हम क्या करना चाहते हैं? मात्र सभायें और गोष्ठियां भाषण, प्रस्ताव। हम स्वयं कुछ न कर सरकार से कहते हैं कि वह सती विरोधी कानून बनाये और इस कुकृत्य को रोके? क्या हम नहीं जानते कि सरकार के द्वारा यह काम नहीं हो सकता न ही पुलिस बल के प्रयोग से इसे रोका जा सकता है। जहां लाखों लोगों का उन्मत्त सैलाब उमड़ता हो, वहां सौ दो सौ या हजार पुलिस कर्मी क्या कर लेंगे? विशेषकर जब उन्हीं के कतिपय सदस्य वेष बदलकर सती स्थल पर माथा टेक चुके हों, और राजनीतिक पार्टियों के नेता सती के विरोध में बोलने को राजपूत स्त्रियों का अपमान समझते हों। केन्द्र और प्रदेश सरकारें हत्या के हफ्तों बाद तक सोयी रहें अथवा अपना मुंह न खोलें? इन सभी के मन में कहीं-न कहीं यह छिपी भावना है कि स्त्रियों के पतिव्रत धर्म में राजस्थान सबसे आगे है और राजपूतनी के सत के आगे देवता भी नतमस्तक हैं।

तो फिर इस स्थिति का निदान क्या है? सती एक मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, आर्थिक, ऐतिहासिक तथा अन्य सूत्रों की एक संश्लिष्ट समस्या है अतएव इसका निदान भी इन सभी स्तरों पर होना चाहिये। धर्म को यदि हम बीच में न घसीटें तो अच्छा होगा क्योंकि धर्म कभी अधर्म नहीं हो सकता, वह कभी किसी के किसी भी अवस्था में वध की अनुमति नहीं देता, यहां तक कि आत्महत्या को भी घोर पाप समझता है। हमारे इतिहास में, विशेषकर राजस्थान के इतिहास में सती की घटना हैं, परन्तु वे विधवाओं के जलने की नहीं, वरन् अरक्षित नारियों के विधवा के नारकीय जीवन और आततायियों से बचने के प्रयास में आत्मोत्सर्ग की घटनायें हैं। मुसलमानों की बर्बरता से बचने के लिये पद्मिनी ने कई हजार रानियों के साथ अग्नि में कूद कर शरीर त्याग दिया। इतिहास ने इसे जौहर की संज्ञा दी, क्योंकि वास्तव में यह चरम साहस और वीरता का कार्य था। इससे पहले सती ने अपने पिता दक्ष के यज्ञकाण्ड में कूद कर प्राण दे दिये थे, परन्तु इसलिये नहीं कि वह विधवा थी, सती ने अपने प्रिय पति शिव के अपमान के विरोध-स्वरूप आत्मोत्सर्ग किया था। सती ने अपनी इच्छा से शिव का वरण किया था, और उसके पिता ने इसका विरोध किया था।

वास्तव में धर्मशास्त्र कहीं भी विधवा दहन की आज्ञा नहीं देता। शास्त्र के भी दो अंग हैं, श्रुति और स्मृति। वेद श्रुति हैं और उन्हीं का प्रमाण अन्तिम साक्ष्य है। वेदों का उल्लंघन नहीं हो सकता, क्योंकि वेद शाश्वत सत्य का प्रतिपादन करते हैं। स्मृतियां समयसापेक्ष हैं। समय और युग के अनुसार बदलती रहती हैं। अतएव स्त्री पीड़न के स्मृतियों से दिये गये उदाहरण अकाट्य तर्क नहीं माने जा सकते। न ही विधवाओं के लिये उनके क्रूर और कठोर विधान आज के युग में हमें मान्य हो सकते हैं। आज समय बदल गया है, हमारे सामने भोजन, वस्त्र, स्वास्थ्य, सुरक्षा, रोजगार आदि की विविध चुनौतियां हैं। अन्य विकसित राष्ट्रों के उदाहरण हमारे सामने हैं। हम किसी भी दकियानूसी स्मृति-विधान को आज नहीं मान सकते। यह बड़े ही खेद और लज्जा की बात है कि पुरी के शंकराचार्य निरंजनदेव तीर्थ ने सती का समर्थन किया है और उसे वेदोक्त बताया है। धर्म के रक्षक जब स्वयं ही धर्म के भक्षक बन जायें तो समाज अवश्य रसातल में जायेगा। वेदों के अर्थ का अनर्थ करते भी उन्हें लज्जा नहीं आती।

वेद क्या कहता है?

ऋग्वेद में मात्र एक स्थल पर विधवा के कर्तव्य का सन्दर्भ है—

> इमा नारीरविधवा सुपत्नीराञ्जनेन सर्पिषा संविशन्तु।
> अनश्रवोऽनमीवा सुरत्ना आरोहन्तु जनयो योनिमग्रे।
> उदीर्ष्व नार्यभि जीवलोकं
> गतासुमेतमुप शेष एहि।
> हस्तग्राभस्य दिधिषोस्तवेदं
> पत्युर्जनित्वमभि सं बभूथ॥
>
> ऋक्० 10/18/7-8

श्री सातवलेकर के अनुसार भावार्थ इस प्रकार है "ये सधवा (अथवा पुनर्विवाहित) और श्रेष्ठ स्त्रियां धृताञ्जन से सुशोभित होकर गृह में प्रवेश करें वे अश्रु रहित, नीरोग और आभूषणों से युक्त होकर आदर पूर्वक पहले (आगे-आगे) अपने नये गृह में प्रवेश करें। 'उपरोक्त मंत्र में योनिमग्रे' को मत्सरतापूर्वक 'योनिमग्ने' पढ़ कर स्त्री द्रोही-रूढ़िवादी लोग इसका अर्थ करते हैं— "स्त्री इस प्रकार सज धज कर अग्नि में प्रवेश करे।" यहां ये संस्कृत व्याकरण को भी ताक पर उठा कर रख देते हैं। वेद का वाक्य है "नारी अविधवा अग्रे योनिम आरोहन्तु" ये स्त्रियां जो अविधवा हैं अर्थात् जिन्होंने पुनर्विवाह कर लिया है वे अपने आपको सुसज्जित करके "अग्रे" अर्थात् सर्वप्रथम आगे आगे "योनि" गृह में प्रवेश करें। "अग्रे" को "अग्ने" पाठ मानना नितान्त मात्सर्यपूर्ण कृत्य है क्योंकि अन्य शास्त्रों में हम पाठान्तर मान सकते हैं, परन्तु वेदों में इसके लिये स्थान नहीं है। वेद इस प्रकार सुरक्षित रखे गये हैं कि उनमें पाठान्तर की सम्भावना नहीं है। मैक्समूलर तथा सातवलेकर के प्रामाणिक संस्करणों में "अग्रे" ही पाठ है। सायण-भाष्य में भी इसी पाठ को स्वीकार किया गया है। दूसरे यह ऋचा कहती है— "अविधवा स्त्रियां आगे आगे गृह में प्रवेश करें।" तो विधवा के अग्नि प्रवेश की बात कहां से आयी? आर्य समाज से द्वेष रखने वाले कुछ दिग्भ्रमित लोग स्वामी दयानन्द कृत वेदभाष्य को प्रामाणिक नहीं मानते। क्या अंग्रेजों के सामने नतमस्तक होने वाले ये लोग, मैक्समूलर, सायण और सातवलेकर को भी अप्रामाणिक मानते हैं?

दूसरे मन्त्र का अर्थ है "हे स्त्री'! तू जीवित लोगों का विचार करके यहां से उठ जा, तेरे पति के प्राण निकल चुके हैं, तू व्यर्थ इसके पार्श्व में लेटी हुई है। तू इधर आ, पाणिग्रहण करने वाले और तेरा पोषण करने वाले इस (दूसरे) पति को और इस सन्तान को देखकर तू उनमें मिल कर रह।" ऋग्वेद की इन दो ऋचाओं से यह निर्विवाद प्रमाणित होता है कि स्त्रियां पुनर्विवाह करती थीं और दूसरे पति के साथ अपने नये घर में आगे-आगे ससम्मान प्रवेश करती थीं। वेद का स्पष्ट आदेश था कि पति की मृत्यु हो जाने पर वे दूसरा विवाह करें और नये पति तथा बच्चों का मुख देख कर जीवित रहें। विधवा को मारने-जलाने का विधान किसी वेद या शास्त्र में नहीं है। हां, मध्ययुगीन इतिहास में ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं। परन्तु मध्ययुगीन संस्कृति के शव को हम क्या आज भी ढोते रहेंगे? 158 वर्ष पूर्व राजा राममोहनराय ने भारत से लेकर इंग्लैंड की पार्लियामेन्ट तक सती प्रथा के खिलाफ आंदोलन चलाया, और अन्त में 4 सितम्बर 1829 को "सती प्रथा निषेध" कानून बन गया और 25 जुलाई 1855 को विधवाओं के पुनर्विवाह को भी कानूनन अनुमति दे दी गयी।

यह अत्यन्त ही लज्जा एवं खेद की बात है कि आज जब हम अन्य स्वतन्त्र विकसित देशों के साथ 21 वीं सदी का द्वार खटखटा रहे हैं, कम्प्यूटर और मंगल ग्रह पर बसने की योजना बना रहे हैं, तब सती का यह कुरूप प्रकरण किसी भयंकर दुःस्वप्न के समान हमारे सामने साकार हो रहा है। आजाद भारत में हमने बाल विवाह, दहेज, अस्पृश्यता निवारण, हरिजनोद्धार, निरक्षरता उन्मूलन सबको अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा आदि के कानून बनाये। उनमें क्या हुआ? सरकार की नाक के नीचे हजारों की संख्या में दूध पीते शिशुओं का विवाह हो रहा है, दहेज के नाम पर प्रतिदिन स्त्रियां जलाई जा रही हैं, उपहार के नाम से दहेज का लेन देन धड़ल्ले से जारी है, आधे से अधिक आबादी आज भी निरक्षर है, और अस्पृश्यता यथावत् मौजूद है। यहां तक कि पुरी के निरंजन देव कह सकते हैं कि स्व० इन्दिरा गांधी प्रसिद्ध जगन्नाथ मन्दिर में प्रवेश नहीं कर सकती थी, क्योंकि उन्होंने पारसी से विवाह किया था अर्थात् विवाह से पहले या बाद स्त्री की अपनी कोई स्वतन्त्र सत्ता नहीं है।

समाज में स्त्री की स्थिति

यथार्थ में यह सारा प्रश्न समाज में स्त्री की स्थिति का है। मध्य युगीन स्मृतिकारों ने स्त्री की दो ही स्थितियां दी हैं। पहली पति के सान्निध्य में सधवा की स्थिति में उसकी मर्यादा (status) क्या है, दूसरी विधवा हो जाये तो उसकी क्या स्थिति होगी। अथर्ववेद के नौवें काण्ड में "पञ्चौदन" प्रकरण में कहा गया है,

> "या पूर्वं पतिं वित्त्वा अथ
> अन्यं विन्दते पतिम्।
> पञ्चौदनं च तावजं न वियोषतः॥
>
> (अथर्व 9-6-27)

"जो पहले पति को प्राप्त करके तत्पश्चात् (उसकी मृत्यु अथवा अन्य कारण से) दूसरे को (विन्दते) प्राप्त कर लेती है, वे दोनों (वर वधू दम्पति) पंच

वैदिक काल में नारी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष के समान दर्जे पर स्थित था। उसके बाद वह दर्जा स्मृतिकाल में, पुराण-काल में और मध्य युग के इस्लामी काल में निरन्तर गिरता ही चला गया। अन्त मे तो उसे नरक का द्वार, अवगुणो की खान, ताडन का अधिकारी, पति को परमेश्वर मानने वाली ऐसी दयनीय दासी का रूप दे दिया गया कि पुरुष ने इसे पांव की जूती से भी बदतर समझना शुरू कर दिया। पुरुष ने अपने आपको अनेक विवाहों का अधिकारी मान लिया और विधवा को पुनर्विवाह का अनधिकारी मानते हुए उसे केवल अपने पति की चिता पर जलने का अधिकार देकर स्वर्ग प्राप्ति का आडम्बर रच दिया। धर्म के नाम पर ऐसे अन्याय और अधर्म का समर्थन करने वाले धर्माचार्यों की बुद्धि की बलिहारी। अनेक भाषाओं की पण्डित, प्रसिद्ध संस्कृत-विदुषी आचार्या कमला रत्नम् ने यह मार्मिक लेख लिखा है।

स्थिति और सती सम्बन्धी उन्माद

भोजन वाले आत्मा का समर्पण करके नियुक्त नही होते।' इसी प्रकार इसके बाद वाला मन्त्र कहता है, आत्मा के प्रति समर्पण करता हुआ वह दूसरा पति पुनर्विवाहित स्त्री के साथ समान स्थान (Equal status) वाला होता है। तात्विक दृष्टि से देखा जाये तो विवाह के समय ही वेदो ने स्त्री की विवाहोपरान्त स्थिति निश्चित कर दी है। वेद के विवाह मन्त्रो में कहा गया है—

सा‍म्राज्ञी श्वशुरे भव साम्राज्ञी
श्वश्र्वा भव।
ननान्दरि साम्राज्ञी भव
साम्राज्ञी अधि देवृषु।
(ऋ ग 10 85 64)

इसी के आधार पर मनुस्मृति ने कहा—"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता" यह मनुस्मृति की वेदकालीन स्थिति है। उसके बाद स्त्री पारतन्त्र्य के अन्य समस्त उद्धरण समयानुसार परिवर्तित सामाजिक दशाओ के अनुसार जोड़े जाते रहे हैं। परन्तु इतना तो स्फटिकवत स्पष्ट है कि वेदो का मूल उद्देश्य स्त्रियो को सताना, दबाना या अन्य प्रकार से प्रताडित करना, पुरुष की अपेक्षा निम्न स्तर पर समझना नही था। एक ही उदाहरण वेद द्रष्टा ऋषि वाक् का है, जिसने कहा था—

"अहं राष्ट्री सगमनी वसुना,
चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्।
तां मा देवा व्यदधु पुरुत्रा,
भूरिस्थात्रांभूर्यावेशयन्तीम्॥
मैं राष्ट्री, सर्वजगदीश्वरी,
सगमनी वसुओ की,
ब्रह्मज्ञात्री, यज्ञियो मे प्रथम मैं,
देवो ने मुझे ही रखा,
अनेक रूपो मे मुझे ही किया प्रतिष्ठित।'

महाविदुषी ब्रह्मज्ञान की उपार्जयित्री, अम्भृण ऋषि की दुहिता वाग्देवी की यह रचना है, समस्त वैदिक स्त्री ऋषिकाओ मे सर्वाधिक तेजस्वी। नारी शक्ति की इससे श्रेष्ठ और सम्पूर्ण स्थापना अन्यत्र नही मिल सकती।

वैदिक और औपनिषदिक वाङ्मय की सबसे बड़ी उपलब्धि "आत्मा" की खोज है। "आत्मा" लिंग भेद से ऊपर है वह न स्त्री है, न पुरुष। यह आत्मा सब जीवों में समान रूप से निवास करती है। अत पुरुष अथवा नारी के एक दूसरे से श्रेष्ठ होने का प्रश्न ही नहीं उठता। कालिदास का कथन है—

'स्त्रीपुमानित्यनास्थैषावृत्त हि महित सताम्।"

'कोई स्त्री है या पुरुष, इससे कोई फर्क नही पडता, सज्जनता का महत्व लोगो के आचरण मे है।'

मध्य युग मे अनेक ऐतिहासिक और सामाजिक परिस्थितियो के कारण स्त्रियो की स्थिति घर और बाहर दोनो स्थानों मे बहुत नीचे गिर गयी। स्त्री को मात्र भोग्या, चूल्हा चौका करने वाली नौकरानी और बच्चे पैदा करने वाली मशीन समझा जाने लगा। हिन्दू समाज मे आर्थिक कारणो से पुत्र-जन्म अनिवार्य माना जाने लगा। एक स्त्री से यदि पुत्र न हो तो दूसरी, फिर तीसरी और फिर इसी प्रकार क्रमश अनगिनत। हमारी ही आंखों के सामने सेठ रामकृष्ण डालमिया ने पुत्र की इच्छा से एक के बाद एक पाच विवाह किये और उच्च कोटि की सभ्रान्त तथा पढी लिखी महिलाए उनके चगुल मे फस कर सामाजिक प्रतिबन्धो के जाल मे सेठ के घर जीवनपर्यन्त कैद रहीं।

स्त्री के आत्मगौरव की हत्या की पराकाष्ठा तब हुई जब तुलसीदास ने, चाहे किसी भी सदर्भ में कहा कि स्त्रियाँ सब अवगुणो की खान होती हैं—

"नारि सुभाउ सत्य सब कहहीं,
अवगुण आठ सदा उर रहहीं।

इसी की तुलना मे पुरुष के अवगुण उन्होने नही गिनाये। उन्होने कहा कि स्त्रियो का एक ही धर्म है—आजन्म पति सेवा। सीता को उपदेश देते हुए अनुसूया कहती हैं—

"अमित दानि भर्ता वैदेही।
अधम सो नारि जो सेव न तेही।
वृद्ध, रोगबस, जड धनहीना।
अंध बधिर, क्रोधी, अति दीना।
ऐसेहु पति कर किय अपमाना।
नारि पाव जमपुर दुख नाना॥
एकइ धर्म एक व्रत नेमा।
काय बचन-मन पति पद प्रेमा।

पिछले चार सौ से अधिक वर्षों में तुलसीदास ने जितनी लोकप्रियता और प्रचार पाया है, रामायण जिस प्रकार घर-घर में बांची जाती है, उसके कारण स्त्री की इस दयनीय नियति का संस्कार पुरुषो और स्त्रियो के चेतन-अवचेतन मे, उनके रक्त के प्रत्येक कण मे, प्रत्येक श्वास में दृढता से मूलबद्ध हो गया है। आज मामूली से मामूली पुरुष भी स्त्री को पैर का जूती समझना अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानता है। यही नहीं, स्वय स्त्रिया भी लडके-लडकी में भेद करती हैं। घर के सब श्रम-साध्य कार्य लडकी करती हैं, भाइयो की सेवा टहल भी करती हैं, सब से अन्त मे बचा खुचा भोजन उसे दिया जाता है। उसकी शिक्षा यदि होती है, तो हमेशा लडको से घट कर। यहा तक कि जन्म के समय ही उसे एक बोझ या अभिशाप माना जाता है और उसके विवाह की समस्या एक सर्वग्रासी शाप के समान माता-पिता को परेशान रखती है। अधिकांश व्रत और त्यौहार अच्छा पति पाने के लिये, पति दीर्घायु के लिये, किये जाते हैं। कोई भी सत, साहित्यकार, धर्माधिकारी इसके समानान्तर उपदेश नहीं देते कि पुरुष के भी अपनी स्त्री के प्रति कोई कर्तव्य हैं। केवल माता के रूप मे स्त्री की थोडी बहुत प्रतिष्ठा रह गयी है। परन्तु विधवा होकर जब वह सती हो जाती है (स्वेच्छया बहुत कम) या जबरन कर दी जाती है, तब हमारा समाज उसके सब दोष भूलकर उसमे देवत्व देखने लगता है, उसकी पूजा करने लगता है। लाखो की सख्या मे अधविश्वासी स्त्री पुरुष समान रूप से उससे आशीर्वाद मागते हैं विपत्ति और दुर्भाग्य के स्रोत के स्थान पर वह सब रोगो की अचूक औषधि सौभाग्य प्रदान करने वाली बन जाती है

समाज का घिनौना रूप

हमारे समाज का यह अत्यन्त क्रूर विद्रूप है, इसे हटाने के लिये मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, धार्मिक शैक्षिक सभी प्रयत्न करने पडेंगे। युगो की कालिख केवल कानून की कलम की नोक से नही कटेगी। महत्वपूर्ण यह है कि सर्वप्रथम स्त्री को आर्थिक स्वतन्त्रता मिलनी चाहिये। वह इस योग्य हो कि पुरुष के बिना भी अपनी जीविका उपार्जित कर सके। राजस्थान मे सर्वाधिक सती मन्दिर हैं, जहा कुमारी कन्याओ को विधिवत् पूजा के लिये भेजा जाता है। प्रदेश कानून सचिव श्री एस० आर० बन्सल के अनुसार सरकार स्वय सती प्रथा को प्रोत्साहन देती है। देवराला (जिला सीकर) के निकट झुंझुनू मे विशाल सती मन्दिर पर हर वर्ष मेला लगता है, और सरकार उसके लिये कुम्भ मेले के समान विशेष बसों का प्रबन्ध करती है। तीन दिन की सार्वजनिक छुट्टी घोषित करती है और वहा पर हुई बिक्री से कर वसूल करती है।

अब इस नासूर पर एक नया घाव यह हुआ है कि विभिन्न राजनीतिक दल सती की आग पर अपनी रोटिया सेंकने में लगे हैं कि सती का समर्थन कर वे किसी हद तक अपने अपने वोट बैंक सुदृढ कर लें।

बम्बई के पत्रकार सघ (बाम्बे यूनियन आफ जर्नलिस्ट्स) ने देवराला जाकर पता लगाया है कि रूपकवर स्वेच्छा से सती नही हुई। उसे सती कर दिया जायेगा यह जानते ही वह एक भूसा गोदाम मे घुस गयी थी जहा से उसे खीच कर निकाला गया और घसीट कर चिता मे झोंक दिया गया। यह कुकृत्य धन के लोभ मे किया गया, क्योकि रूपकवर दहेज मे लाख से भी ऊपर की सम्पत्ति लायी थी, जिसे स्थानीय रिवाज के अनुसार उसके पति की सतानहीन स्थिति मे मृत्यु के बाद उसके पीहरवालो को लौटाना पडता। अब चिता स्थल पर हो रहे आयोजन धन बटोरने का साधन हैं जिसमे धर्मान्धता, पिछडापन, अन्धविश्वास आदि बातें सहयोग दे रही हैं। गाव की साधनहीन, दीन हीन पीडित निरक्षर जनता, जिसे भोजन वस्त्र, पीने का शुद्ध पानी भी नसीब नही सती स्मारक के लिए चढावे पर लाखो रुपया दे रही है, सोचकर ही स्तम्भित होना पडता है। क्या हमारे समाज और धर्म के ठेकेदार इस जटिल समस्या का कोई समाधान खोज सकते हैं? नही तो सदियो तक हमें ये अभिशाप भोगना पडेगा।

—आर्य समाज, दयानन्द मार्ग, शकूर बस्ती, दिल्ली के चुनाव मे श्री प० देवव्रत त्यागी प्रधान, डा० भारत भूषण मन्त्री और श्री विनय कुमार आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

कायदे आजम जिन्ना अपनी भूल का प्रायश्चित करना चाहते थे?

—डा सीता राम सहगल—

पिछले दिनो पाकिस्तान मे कुछ ऐसी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं जिनसे पाकिस्तान के निर्माता कायदे आजम मोहम्मद अली जिन्ना के अन्तिम दिनो पर विचित्र ढग से प्रकाश पडता है। यह बात तो अब सर्व विदित हो चुकी है कि जिन्ना को कैंसर था और इस रहस्य को उसने और उसके डाक्टरो न इस प्रकार प्रयत्नपूवक छिपा कर रखा कि यह रहस्य आखिरी दम तक जनता के सामने खुल नही पाया। शायद ब्रिटिश अधिकारियो को भी जिन्ना के कैंसर के बारे मे पता नही था। हो सकता है कि उस समय भारत के वायसराय लाड माउट बेटेन को इसका कुछ आभास रहा हो क्योकि पाकिस्तान के निर्माण मे जिस प्रकार की जल्दबाजी से उन्होने काम लिया, उससे यह शका होती है। परन्तु इस शका का कोई पुष्ट आधार नही है। अगर माउट बेटन को इसका आभास रहा हो, तो उसकी इस कुटनीतिज्ञता को सराहना करनी पडेगी कि उसने अपने प्रति अनुरक्त और पूण रूप से विश्वस्त प० जवाहर लाल नेहरू को भी इस रहस्य की तनिक सी भी भनक नही पडने दी। अगर उस समय के प्रमुख काग्रेसी नेताओ को इस बात की कुछ भी भनक पड जाती या उनमें 6-8 महीने तक धैय धारण करने का साहस होता, तो पाकिस्तान का निर्माण असम्भव था। क्योकि जिन्ना को कैंसर की बीमारी ने इस हद तक ग्रस लिया था कि वे अधिक दिन जीने वाले नही थे और जिन्ना के दिवगत हो जाने के पश्चात् पाकिस्तान की माग भी अपनी मौत अपने आप मर जाती।

सीमात गाधी के सुपुत्र खान वलीखा ने "हकीकत आखिर हकीकत है" नामक पुस्तक मे लिखा है कि सन् 1946 मे जब जिन्ना गोलमेज कान्फ्रेन्स मे शामिल होने के लिये लन्दन गये थे तब वे गुप्त रूप से चर्चिल से भी मिले थे। जिन्ना की एक प्राईवेट सेक्रेटरी अग्रेज लेडी थी। उसी के माध्यम से जिन्ना और चर्चिल के बीच पहले गुप्त पत्र व्यवहार होता रहा था। गोलमेज कान्फ्रेन्स के अवसर पर जब चर्चिल और जिन्ना की गुप्त भेंट हुई तब चर्चिल ने ही जिन्ना के दिमाग में पाकस्तान का विचार भरा। पाकिस्तान बनने के बाद विदेश मत्री बने मोहम्मद जफरुल्ला से, जो कादियानी मुसलमान थे और इसी कारण पाकिस्तान के विदेश मत्री पद से हटा कर बाद मे उन्हे अन्तर्राष्ट्रीय हेग न्यायालय में भेजा गया था, पाकिस्तान सम्बन्धी दस्तावेज तैयार करवाये गये थे।

पाकिस्तान बनने के बाद जिन्ना ने वहा की पार्लियामेंट मे जो पहला भाषण दिया था उससे पता लगता है कि वे पाकिस्तान को कट्टर साम्प्रदायिक इस्लामी राज्य बनाने की बजाय उसे एक ऐसा प्रजातन्त्रात्मक राज्य बनाना चाहते थे जिसमे गैर-मुस्लिम भी बराबरी के दर्जे की नागरिकता प्राप्त कर सकें। परन्तु पाकिस्तान के कठमुल्ले कहा करते थे कि जिन्ना का इस्लाम से क्या वास्ता? कुरान वह नही पढता, नमाज वह अदा नही करता और इस्लाम के किसी कायदे कानून का वह पालन नही करता। वह मूल रूप से पारसी है। पारसियो से ही उसके सम्बध हैं। एक पारसी लडकी से उसने शादी की थी। वह तो केवल राजनैतिक नेतागिरी करने के लिये ही, काग्रेसी नेताओ से द्वेष के कारण पाकिस्तान का राग अलापने लगा नही तो पहले वह स्वय राष्ट्रवादी काग्रेसी था ही।

स्वर्गीय इलाही बख्श ने जिन्ना के अन्तिम दिनो के सम्बध में जो पुस्तक लिखी उसकी बिक्री पर पाकिस्तान मे प्रतिबन्ध लगा दिया और भारत मे आने से उस पुस्तक को रोक लिया गया। जिन्ना के सर्व प्रमुख सिपहसालार कायदे मिल्लत लियाकत अली खा भारत से गये मुहाजिर (शरणार्थी) थे और पाकिस्तान मे ऐसा कोई इलाका नही था जहा से चुनाव लडने की वे हिम्मत कर सकते। इसलिये वे भारत विरोधी उग्र से उग्र भाषण देकर ही अपनी गद्दी कायम रखना चाहते थे और चुनावो को हमेशा टालते रहते थे। लियाकत अली को कायदे आजम द्वारा सब अधिकार अपने हाथ मे रखने के कारण जिन्ना की तानाशाही से भी शिकायत होने लगी थी और वे अपने मित्रो में अपने विचारो को प्रकट भी करने लगे थे। इससे नाराज होकर जिन्ना लियाकत अली को बर्खास्त करने की भी सोचते थे। जब लियाकत अली को यह भनक पडी तो उसने भी कायदे आजम को तरह-तरह से परेशान करना शुरू कर दिया।

जब जिन्ना की हालत खराब हो गई तो लियाकत अली ने उनको आराम करने के बहाने, राजधानी से दूर रखने के लिए क्वेटा के पास ठन्डे पहाडी स्थान जियारत मे भेज दिया। परन्तु वहा उनके इलाज की कोई समुचित व्यवस्था नहीं की। जब कायदे आजम की तबियत बहुत बिगडी तब उनको जियारत से लाने के लिये जो एम्बुलैंन्स भेजी गई वह भी वातानुकूलित नही थी और उसमें मच्छरो और मक्खियो की भरमार थी। जब कायदे आजम नहीं रहे तब इलाही बख्श ने लियाकत अली खा पर यह आरोप भी लगाया है उसने उनके अन्तिम सस्कार की भी उचित व्यवस्था नहीं की। परन्तु इसका प्रतिवाद जिन्ना की बहन कु० फातिमा ने किया और उसने कहा कि अपने भाई का अन्तिम सस्कार मैंने अपनी निगरानी मे करवाया था।

पाकिस्तान मे एक दूसरे की टाग खींचने और नेतृत्व की होड के कारण जिस प्रकार के कारनामे होते रहे हैं उनकी शुरूआत भी लियाकत अली खा की हत्या से ही हुई थी। लियाकत अली खा की बेगम जिसका नाम सीता देवी था (शायद), और जो दिल्ली के हिन्दू कालेज मे पढी थी और वहा पढाती भी रही थी, जिसे बाद के पाकिस्तानी नेताओ ने पाकिस्तान से दूर ही दूर रखने के लिये विदेश मे राजदूत बनाकर भेज दिया था, उसने यह कहा था कि मेरे पति की हत्या इसलिये की गई कि वह बगालियो को उनका हक देना चाहते थे। स्वय जिन्ना ने भी पाकिस्तान के प्रथम मन्त्री मडल में एक बगाली मुसलमान को विधि मन्त्री बनाया था। परन्तु पाकिस्तान कठमुल्लो को यह बात पसन्द नही थी। इसी का अन्तिम परिणाम बगलादेश का निर्माण हुआ और याहिया खा को उसका दड भोगना पडा।

इलाही बख्श ने लिखा है कि लियाकत अली और कायदे आजम मे बाकायदा झगडा हुआ था। जिन्ना लियाकत अली को बर्खास्त करना चाहते थे। परन्तु जब उनकी नही चली तो मरणासन्न अवस्था होते हुए भी उन्होंने दवाई लेना बिल्कुल बन्द कर दिया और वे जिन्दगी से सर्वथा निराश होकर मौत की इन्तजार करने लगे।

जब अन्तिम बार लियाकत अली कायदे आजम से मिलने जियारत गये तब जिन्ना ने अपने वजीरेआजम पर बरसते हुए कहा था "मैंने पाकिस्तान बनाकर और तुम्हे उसका प्रधान मन्त्री बनाकर बहुत भयकर भूल की है। मैं खुद दिल्ली जाऊ गा और नेहरू से कहूगा कि पिछली सब बातो को भूल जाओ। अब हम सब मिलकर भाई भाई की तरह रहेंगे।" यह समाचार 26 नवम्बर 1947 को पेशावर के दैनिक समाचार पत्र "फन्टियर पोस्ट" मे छपा था। इससे अन्तिम दिनो में जिन्ना के दिल की बात का पता लगता है। श्री जिन्ना अपने अन्तिम दिन बम्बई के मलाबार हिल के अपने निवास स्थान मे गुजारना चाहते थे और उन्होने उस समय पाकिस्तान में भारतीय हाई कमिशनर श्री प्रकाश से कहा था। "नेहरू से कहो कि भारत सरकार मेरे मालाबार हिल वाले निवास स्थान का अधिग्रहण न करे और मेरी दिल्ली वाली कोठी को भी अपने कब्जे मे न करे, तो मैं नेहरू का और भारत सरकार का बहुत शुक्रगुजार होऊ गा।" नेहरू जी ने मालाबार हिल का जिन्ना का बगला कस्टोडियन की सम्पत्ति मे शामिल नहीं होने दिया परन्तु दिल्ली की कोठी उससे पहले बिक चुकी थी इसलिये उसके बारे मे वे कुछ नहीं कर सके।

इस प्रकार ऐसा लगता है कि यमराज के दूतो को अपने सामने खडा देखकर जिन्ना को अपनी गलती का अहसास हुआ और वे देश के टुकडे-टुकडे करने के पाप का प्रायश्चित करना चाहते थे। पर पाकिस्तान के काल्पनिक स्वप्न को अग्रेजो के सहयोग से धरातल पर यथार्थ रूप देने वाला कायदे आजम अपने स्वप्न को पूरा नहीं कर सका और एक दिन इसी निराश, हताश और उद्विग्नता की हालत में इस ससार से चल बसा। खुदा उनकी रूह को जन्नत बख्शे। आमीन!!!

पता—डब्ल्यू 43, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली—27

23 दिसम्बर को सरकारी छुट्टी हो

स्वामी श्रद्धानन्द का अमर बलिदान 23 दिसम्बर 1926 को हुआ था अन्य अनेक महापुरुषों से सम्बद्ध विशेष तिथियों पर भारत सरकार ने सरकारी अवकाश घोषित कर रखा है, परन्तु 23 दिसम्बर को नहीं। इसके बजाय ईसाइयो से सम्बद्ध 25 दिसम्बर को 'बडा दिन' कह कर अवकाश घोषित किया गया है यह सरासर ब्रिटिश कालीन दास मनोवृत्ति का सूचक है। भारत सरकार से प्रार्थना है कि स्वामी श्रद्धानन्द जैसे हिन्दू-मुस्लिम एकता के सूत्रधार, गुरुकुल के रूप में राष्ट्रीय शिक्षा का आदर्श उपस्थित करने वाले, दलितोद्धार के प्रबल पुरस्कर्ता, निर्भीक राष्ट्रनेता स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस 23 दिसम्बर को अवकाश घोषित किया जाए।

23 दिसम्बर को आर्य समाज करोल बाग मे श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर श्री क्षितीश वेदालकार द्वारा प्रस्तुत यह प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित हुआ। सभा को श्री रामचन्द्र विकल ससत्सदस्य, श्री सोमनाथ मरवाह और श्रीमती उषा शास्त्री ने सम्बोधित किया। श्री देशराज बहल ने सभा की अध्यक्षता की।

इस सभा का आयोजन स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित अ० भा० दलितोद्धार सभा पहाडगज की ओर से किया गया। सभा का सचालन दलितोद्धार सभा के प्रधान श्री रामलाल मलिक ने किया। आर्य समाज पहाडगज की पाठशाला के छात्र-छात्राओं ने बैन्ड वादन से कार्यक्रम की शोभा बढाई।

क्या संस्कृत मृत भाषा है ?

—डा श्रीमती राजेश्वरी देवी—
शोध सहयोगी दिल्ली विश्वविद्यालय

संस्कृत भारत की प्राचीन श्रेष्ठ भाषा है। अनादिकाल से हमारे देश के जन जीवन पर उसका अपरिमित प्रभाव पड़ा है। भारतीय साहित्य और सस्कृति उससे पूर्णतया अनुप्राणित हैं। 'देववाणी' पद से विभूषित होकर वह आज भी भारतीय जनता के हृदय में श्रद्धा का सचार करती है। ऐसी देश प्राण भाषा को मृत कहना अपनी विमूढ़ता का परिचय देना है।

जागरण काल

संस्कृत साहित्य की अजस्र धारा वैदिक काल से लेकर आज तक प्रवहमान है। इस साहित्य ने भारतीय साहित्य को प्राणवान् बनाते हुए सदैव युगानुकूल प्रवृत्तियों को आत्मसात् किया है। 18 वीं शताब्दी के तृतीय चरण के पश्चात् का काल साहित्यिक—जागरण काल कहा जाता है। इस काल में संस्कृत साहित्य के इतिहास में एक अभूतपूर्व परिवर्तन आया, जिसमे काव्य की शैली तथा विषय वस्तु समान रूप से परिवर्तित हो गए। लेखन पद्धति अधिक व्यापक और स्वाभाविक हो गई। लेखक सुरा-सुन्दरी और सैन्य बिहार से अलग मानवीय हृदय को स्पर्श करते हुए काव्य की रचना करने लगे। वे राष्ट्रीय जीवन और प्राकृतिक छटा आदि के वर्णन में रुचि लेने लगे। अत राष्ट्र जीवन और राष्ट्रीय एकता के विविध उपादानो का वर्णन उत्साहवर्धक रहा। देशी और विदेशी विभिन्न साहित्यिक कृतियो के अध्ययन के फलस्वरूप संस्कृत साहित्यकारों को नवीन भावभूमि मिली जो कविता, चम्पू, रूपक, गद्य, काव्य, उपन्यास, चरित काव्य, कथा, निबन्ध, आलोचना पत्र साहित्य आदि विविध साहित्यिक विधाओ में परिलक्षित होती है।

ब्रिटिश शासन काल के प्रारम्भिक काल मे सस्कृत पण्डितो को ब्रिटिश सम्राटो की प्रशस्तियां लिखने का प्रलोभन दिया गया। इससे सस्कृत कविता और नाटक के लिए एक नया विषय मिला और अनेक काव्य, नाटक आदि लिखे गए जिनमे विनायक भट्ट का अग्रेज चन्द्रिका (1801 ई०), टी० गणपति शास्त्री का भारतानुवर्णनम्, रामस्वामी राजा का राजाग्ल महोद्यान (1894 ई०) आदि कृतियां उल्लेखनीय हैं। सामाजिक व राजनैतिक व्यग्य विनोद को प्रस्तुत करने वाले अनेक काव्यो की भी रचना हुई जिनमें एल० रगोलादास की कांग्रेस गीता (1905 ई०) जिसमें सूरत के तूफानी कांग्रेस अधिवेशन पर व्यग्य है, उल्लेखनीय हैं।

पत्र पत्रिकाओं का प्रसार

आधुनिक काल मे सस्कृतज्ञो का विशेष उत्साह असख्य पत्र-पत्रिकाओ के प्रकाशन से प्रकट हुआ है। उनमें से कुछ नाम हैं—

सस्कृत प्रतिभा, अर्वाचीन सस्कृतम्, संस्कृत रत्नाकर, सस्कृत प्रचारकम्, और सस्कृतामृतम् (दिल्ली), अमृतवाणी (बगलोर), गुरुकुल पत्रिका, भारतोदय (हरिद्वार), भारती (जयपुर), मंजूषा (कलकत्ता), विश्वसस्कृतम् (होशियारपुर), शारदा (पूना), श्रीपण्डित, सूर्योदय, और गाण्डीवम् (वाराणसी), सस्कृत प्रतिमा (इन्दौर), सागरिका (सागर), पारिजातम् (कानपुर), भवितव्यम् (नागपुर), दिव्यज्योति (शिमला) आदि। इन पत्रिकाओं मे ऐसी विविध सामग्री उपलब्ध होती है जो सस्कृत में नवचेतना का प्रतीक है। इन पत्रिकाओं में कविताओं, कहानियों, लेखो आदि के द्वारा समकालीन घटनाओं, सामाजिक प्रश्नो, नए सुधारो और परिवतनो पर भी लिखा जाता है।

पत्रिका प्रकाशन के अतिरिक्त अनेक स्थानो पर लघुकथा स्पर्धाए भी की जाती रही हैं। सामाजिक कुप्रवृत्तियो को दूर करने के लिए सामाजिक व लाक्षणिक नाटक भी लिखे तथा मच पर खेले जाते रहे।

नव जागरण की लहर

19 वीं शताब्दी का अन्तिम चरण राष्ट्रीय आन्दोलन का युग माना जाता है तथा बीसवीं शताब्दी का प्रथम चरण राष्ट्रभक्तों के देश के प्रति बलिदान की गाथा को सुनाता है। नया आन्दोलन वस्तुत एक नव जागरण और भारत की आत्मा की नई खोज थी। राष्ट्रीयता और स्वतन्त्रता आन्दोलन के जन्म के साथ सार्वजनिक आन्दोलनो के नेताओ के एक समूह का उदय हुआ। उनकी देशभक्ति, त्याग और अभियानो ने बुद्धिजीवियो और जनसाधारण को एक साथ झकझोर दिया। फलत सस्कृतज्ञ भी इन राजनैतिक आन्दोलनो से प्रभावित हुए। अत सस्कृत कवियों ने जहां जीवन के विविध पक्षो को लेकर रचनाए लिखीं वहीं वे इस क्षेत्र में भी पीछे नही रहे हैं। अत ऐसे अनेक गद्य-पद्य काव्य, नाटक, उपन्यास तथा राष्ट्रगीतो की रचना हुई जो कि राष्ट्रीय भावनाओ से ओतप्रोत है। राष्ट्रीय आन्दोलन से सम्बन्धित नेताओ के विषय मे सभी पत्रिकाओ मे नेताओ की जीत और उपलब्धियो के विषय मे कविताए और वर्णन प्रकाशित होते रहे हैं।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के अनन्तर राष्ट्र मे नूतन चेतना उदित हुई है। राष्ट्रीय चेतना तथा चिन्तन के क्षेत्र में बहुत परिवर्तन हुआ है। अत सस्कृत साहित्यकार इससे भी अछूता नहीं रहा है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के परवर्ती काव्यों मे राष्ट्रीय भावना, राष्ट्रभक्ति परम उद्दाम होकर चमकती है। इस काल में जिन महापुरुषों ने अपने राष्ट्र की स्वतन्त्रता हेतु अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया ऐसे राजनैतिक नेताओ, लोकनायकों तथा समाज सुधारकों के राष्ट्रार्पित जीवन चरितो को लेकर अनेक काव्य रचे गए हैं। अर्थात् भारत को पारतन्त्र्य से मुक्त करने के लिए, स्वातन्त्र्य सघर्ष के महान सेनानियो—लोकमान्य तिलक, सुभाष चन्द्र बोस, महात्मा गाधी, जवाहरलाल नेहरू, भगतसिंह इत्यादि के चरित्रो ने भारतीय जनमानस को अत्यधिक आन्दोलित किया इसीलिए भारतीय वाङ्मय में उनका विविध प्रकार से स्तवन किया गया है। इन नेताओं के जीवन को लेकर पर्याप्त साहित्य सर्जना भी हुई है। महात्मा गाधी नेहरू पर लिखे गए ग्रन्थो की सख्या 75 के लगभग है। इतना ही नहीं इसके अतिरिक्त सस्कृत के अनक यशस्वी साहित्यकारो द्वारा समय-समय पर गाधी तथा नेहरू विषयक विविध लेखो, कविताओं, निबन्धो आदि के रूप मे रचित सामग्री बहुत विविधतापूर्ण, रोचक, अनुशीलन योग्य तथा विपुल किन्तु विभिन्न पत्रिकाओ तथा ग्रथो मे विकीर्ण है।

इस काल में अनेक काव्य ऐसे भी हैं जिनका निर्माण ही राष्ट्रीय भावना का जनमानस में अवतरण कराने के लिए और समस्त मानवो के मन मे राष्ट्र भक्ति सस्थापित करने के लिए हुआ है। इस प्रकार स्वतन्त्रता प्राप्ति अनन्तर वस्तुत सस्कृत कवियो द्वारा राष्ट्रीय भावना तथा देश प्रेम का प्रवाह ही अधिक बहा है। यथा डा० कपिल देव द्विवेदी विरचित राष्ट्रगीताञ्जलि (1978) में भारत राष्ट्र का गान है। इस प्रकार सस्कृत साहित्य का क्षेत्र बहुत व्यापक हैं। इसमें सभी युगो मे, सभी विधाओ मे, सभी भावनाओ की सामग्री ओतप्रोत है। सस्कृत साहित्य लोकदृष्टि से सर्वोपयोगी, मात्रा की दृष्टि से विशाल तथा राष्ट्र दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

जागृत साहित्य

जो लोग यह समझते हैं कि सस्कृत मृत भाषा है, उसमे नवीन साहित्य की रचना का अभाव है, उनकी भ्रान्ति आधुनिक सस्कृत साहित्य के अध्ययन से निर्मूल हो जायेगी। इस साहित्य के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सस्कृत का रचनाकार अत्यन्त जागरूक है। वह न केवल नवीन व युगानुसार विषयो से प्रभावित होकर उन पर वर्णनात्मक रचना करता है, वरन् युग के उस प्रश्न व व्यक्ति के सम्बन्ध में उसकी अपनी प्रतिक्रिया भी व्यक्त होती है। वह अपनी विवेक शक्ति से प्रस्तुत विषय पर अपनी धारणा भी व्यक्त करता है। उसकी भाषा व शैली में वह अद्भुत शक्ति है जिसमें वह नवीन विषय को अत्यन्त सुन्दर व चमत्कारपूर्ण ढग से प्रकट करता है। इस प्रकार सस्कृत भाषा मे आज भी पर्याप्त मात्रा में साहित्य सर्जना हो रही है और यह भाषा भी अन्य साहित्य सम्पन्न एव सुजीवित भाषाओ की ही भाति जीवन्त है। अत जो लोग इसे मृतभाषा कहते हैं वे बहुत ही घने अज्ञानान्धकार में हैं, अपने राष्ट्र की अतिमहत्वपूर्ण सम्पत्ति से अनभिज्ञ हैं और राष्ट्र को पथभ्रष्ट करके उसकी बहुत बडी हानि करते हैं। यद्यपि आज सस्कृत का प्रचलन उतना अधिक नहीं है तथापि सस्कृत साहित्य की अजस्र धारा आज भी निरन्तर प्रवाहित हो रही है। इसमे विविध विधाओं मे विपुल रचना हुई है। आधुनिकतम दहेज, सती, राजनीतिक व्यग्य आदि विषयो पर कविता कहानी, नाटक आदि की निरन्तर रचना पत्रिकाओ मे प्रकाशित हो रही हैं।

जो लोग सस्कृत को पुराने समय की भाषा कहकर उसे अवहेलना की दृष्टि से देखते हैं वे वास्तव मे उसके महत्व को नही जानते हैं। यह बलपूर्वक कहा जा सकता है कि आज भी सस्कृत ग्रीक और लैटिन की अपेक्षा कहीं अधिक जीवित हैं। अग्रेजी की अपेक्षा सस्कृत हम भारतीयो के जीवन को अधिक स्पर्श करती है। हमारा धार्मिक जीवन इसका ज्वलन्त प्रमाण है। वेदो और उपनिषदो रामायण और महाभारत, गीता तथा भागवत का आज भी देश व्यापी प्रचार है। हमारे देवालयों तथा तीर्थस्थानो में उसका प्रभाव आज भी अक्षुण्ण है। हमारे उपनयन, विवाह आदि समस्त सस्कार तथा अन्य अगणित धार्मिक काय सस्कृत मे ही सम्पन्न होते हैं। हमारा धार्मिक साहित्य भी इसी में लिखा गया है। सभी प्रातीय भाषाओ की आदि जननी सस्कृत ही है। समय समय पर अनेक सफल सस्कृत कवि सम्मेलनो का आयोजन और सस्कृत नाटको का सफल मञ्चन होता रहता है। सस्कृत न जानने वाला व्यक्ति भी आकाशवाणी से प्रसारित होने वाले समाचारो को पचास प्रतिशत समझ लेता है क्योंकि सस्कृत हमारी भाषाओ मे बसी है। आज भी कई परिवारो में सस्कृत बोली जाती है। दक्षिण के एक पूरे ग्राम की बोलचाल की भाषा सस्कृत ही है। इस प्रकार सस्कृत को मृत भाषा कहना केवल अपनी विमूढता को व्यक्त करना है।

आर्य प्रतिनिधि सभा (हि०प्र०) के द्विवार्षिकी चुनाव मे श्री कृष्णलाल आर्य प्रधान, श्री भगवान देव चैतन्य महामत्री और श्री अरुणेश सूद कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज मन्दिर नेमदार गज (नवादा) प्रधान-श्री नन्दलाल साहू मन्त्री-श्री रविन्द्र प्रसाद 'निर्भय' कोषाध्यक्ष-श्री अर्जुन प्रसाद पुस्तकाध्यक्ष-श्री दीलिप कुमार 'दक्ष' चुने गये।

पत्रों के दर्पण में

यह बौद्धिक आतंक !!!

विचारो की अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता लोकतन्त्र का प्राण है। किसी सीमा तक आज की अपेक्षा तो ब्रिटिश काल मे ही यह स्वतन्त्रता अधिक थी। तभी बरेली में स्वामी दयानन्द ने मि० एडवर्डस कमिश्नर, मि० रीड कलेक्टर तथा लगभग 15, 20 अन्य अंग्रेज अधिकारियो की उपस्थिति में ईसाई मत की आलोचना करते हुए कहा था, 'लोग कहते हैं कि सत्य को प्रकट न करो कलक्टर क्रोधित होगा, अप्रसन्न होगा, गवर्नर पीड़ा देगा। अरे ! चक्रवर्ती राजा भी क्यो न अप्रसन्न हो हम तो सत्य ही कहेंगे।'

स्वामी दयानन्द ने एक ऐतिहासिक पत्र संस्कृत भाषा [गद्य-पद्य] मे अपने शिष्य एव विदेश में [उनके] वैदिक संस्कृति के प्रथम दूत प० श्याम जी कृष्ण वर्मा को लन्दन में भेजा था। इस पत्र मे स्वामी जी ने उन्हें इंगलैंड की पार्लियामेंट में जाकर वहा के सदस्यो को यह बताने का निदश दिया कि भारत में मुन्शी इन्द्रमणि द्वारा इस्लाम मत पर लिखी गई पुस्तक भारत सरकार ने जब्त करके किस प्रकार लोकतत्र एव ब्रिटिश सरकार द्वारा घोषित नीति का गला घोटा है। यह पत्र 'ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन" प्रथम भाग पृष्ठ 412 पर प्रकाशित है।

स्वामी जी ने इसको लेकर पूरे भारत मे एक चेतना जगायी। मुन्शी इन्द्रमणि पर जो 500 रु० का आर्थिक दण्ड न्यायालय ने लगाया था दो बार अपील करके उसे समाप्त कराया गया। यही नही भविष्य मे ऐसी स्थिति का मुकाबला करने के लिए उन्होने एक कोष की स्थापना कर दी।

दिल्ली निवासी सुधी विचारक श्री रामस्वरूप की पुस्तक "इस्लाम थ्रू हदीस" जो सन् 1983 मे अमेरिका तथा 1984 में भारत मे प्रकाशित हो चुकी है। विगत चार वर्षों मे इस पुस्तक में किसी विद्वान् को कोई आपत्ति जनक सामग्री नही मिली। 19 दिसम्बर 1987 को इसी पुस्तक का हिन्दी अनुवादन प्रकाशित करने के अपराध [?] मे वरिष्ठ लेखक एव प्रकाशक सीताराम गोयल को उनके निवास दिल्ली से भारतीय दण्ड संहिता 295 के अन्तर्गत पुलिस ने बन्दी बना कर कारागार में डाल दिया। पुस्तक की सारी प्रतियां पुलिस ने जिल्द साज के पास से ही अपने कब्जे मे ले ली हैं। लेखक ने जो कुछ भी लिखा है सारा प्रामाणिक हदीसो के आधार पर लिखा है। यदि फिर भी सरकार को इसमे कुछ आपत्तिजनक लगता है तो उन सन्दर्भों को मूल स्रोत से ही निकाल दिया जाये ताकि उसे कोई पढ़ ही न सके।

—जयदेव शर्मा, 84 सदर बाजार, लखनऊ।

श्रद्धानन्द बलिदान विशेषांक

(1) श्रद्धानन्द, बलिदान विशेषांक इतना सुन्दर निकला है कि उसके लिए बिना बधाई दिए मैं रह नही सकता। स्वामी श्रद्धानन्द जी का भागलपुर वाला ऐतिहासिक भाषण इतना जोरदार है कि क्या कहू? पता नही कहा-कहा से तुम ऐसी अद्भुत सामग्री खोज खोजकर निकाल लाते हो ? इस विशेषाक के लिए एक बार पुन बधाई।—सत्यव्रत सिद्धान्तालकार, डबल्यू 77 ए, ग्रेटर केलाश I, नई दिल्ली-48

(2) विशेषाक सामने है। आपकी योग्यता और परिश्रम दोनो बोलते हैं। स्वामी जी का ऐतिहासिक भाषण, रैम्जे मैकडाल्ड का गुरुकुल प्रवास का काव्यमय वर्णन और रास बिहारी के सम्बन्ध मे लेख सब एक से एक बढ़ कर। नव वर्ष के रूप मे मेरी यह बधाई स्वीकार करें—

गुलो की शोख हसी मस्तियां लुटाती रहे।
कली-कली तेरे गुलशन की मुस्कुराती रहे॥
हो साले नौ की मुबारिक तुम्हे ऐ जाने 'शरर'।
तेरे चमन में सदा यूं ही बहार आती रहे॥

—उत्तम चन्द शरर, 30/8, पानीपत

(3) श्रद्धानन्द बलिदान अक अपनी मिसाल आप है। इस समय 'आर्य जगत्' के स्तर का कोई दूसरा पत्र तो दिखाई देता नही। इसका सारा श्रेय आपको है। काश ! आप जैसे कुछ और यशस्वी और मूर्धन्य पत्रकार आर्य समाज को मिलते।

—वेदपाल शास्त्री, आर्य समाज देवनगर नई दिल्ली-5

(4) स्वामी श्रद्धानन्द जी के सम्बन्ध मे ठोस और महत्वपूर्ण सामग्री पढ़ने को मिली। ऐसा सुन्दर विशेषाक निकालने के लिए आपकी जितनी भी प्रशसा की जाय, थोडी है। 'आर्य जगत्' के विशेषांकों की धूम यों ही थोडी रहती है। सब मे आपकी सूझबूझ और परिश्रम बोलता है। आप ऋषि के मिशन को पूरा करने में जिस तत्परता से लगे हैं उसे देखकर अनायास आपके शतायु होने की प्रार्थना मन से निकलती है। —रामकुमार सोरायण जवाहर कोठी चौहान, पानीपत।

यज्ञों के नाम पर बरबादी क्यों?

उक्त शीर्षक से 'आर्य जगत्' में मेरा जो पत्र छपा था उससे कई महानुभावों ने मुझे यज्ञ-विरोधी और आर्य द्वेषी समझ लिया है। परन्तु मैं स्वय आर्य समाजी होने के कारण और जीवन भर आर्य समाज के सिद्धान्तों के अनुसार अपना आचरण ढालने के लिए प्रयत्नशील रहने के कारण अब 97 वर्ष की आयु में यज्ञ-विरोधी कैसे हो सकता हू? हा यज्ञ के नाम पर होने वाले मिथ्या आडम्बरो को और अत्युक्तिपूर्ण दावे कर करके लोगों की श्रद्धा का दुरुपयोग करने को मैं पाखण्ड की सज्ञा अवश्य देता हू। एक याज्ञिक-प्रवर ने मेरे उत्तर मे लिखा कि मैंने 600 मन गाय के घी से विशाल यज्ञ करवाया और वर्षा करवाई। मैं पूछता हू कि फिर देश के अनेक भागों मे इतना भयकर सूखा क्यो है! जब लोग पेयजल की बूद बूद को तरसते हों, घी की तो बात ही क्या, तब इतने घी को 'फूकना' (इस शब्द के प्रयोग के लिए क्षमा चाहता हू) क्या राष्ट्रीय बरबादी नहीं है? क्या यह राष्ट्रीय अपराध नहीं है? मुझे श्री प० युधिष्ठिर मीमासक ने बताया है कि अक्कल कोट में गजानन नामक एक सन्त अपने अनुयायियो को सूर्योदय और सूर्यास्त के समय हवन करके केवल एक बार घृताहुति डलवाते हैं। क्या उनका यज्ञ-यज्ञ नहीं है?

फिर अग्निहोत्र को ही यज्ञ मानने पर इतना बल क्यों है? यह तो केवल पच यज्ञो में से एक—देव यज्ञ—का अग है। ब्रह्म यज्ञ (सध्या), पितृयज्ञ, अतिथि-यज्ञ, और बलि वैश्वदेव यज्ञ भी तो यज्ञ हैं। उन पर बल क्यों नहीं? क्या इसलिए कि उन यज्ञो में अग्निहोत्र के नाम पर दिन प्रतिदिन वर्धमान मिथ्या आडम्बरो की गुजायश नहीं, इसी मिथ्या आडम्बर का परिणाम है कि पिछले दिनों श्री राजीव गाधी की दीर्घायु के लिए किए गए यज्ञ मे उनके एक भक्त ने 15 लाख रु० फूक दिया।

मैं तो वेद के अनुसार प्रत्येक श्रेष्ठ कर्म को यज्ञ मानता हू। और श्रेष्ठ कर्म मैं स्वार्थ हीन परोपकार के कार्य को कहता हू। परन्तु ये आडम्बर प्रधान तथाकथित यज्ञ तो केवल स्वार्थ पूर्ति के साधन ही अधिक होते हैं।

मैं बाजार से खरीदी गई सामग्री से किए गए यज्ञो को भी लाभदायक नहीं समझता। मैंने जीवन के अधिकाश भाग मे आयुर्वेद की सेवा की है। अपने अनुभव के आधार पर, और ऋषि द्वारा संस्कार विधि मे वर्णित वर्णन के आधार पर मैं कहना चाहता हू कि ग्रीष्म, शरद्, और वर्षा ऋतु मे अलग-अलग द्रव्यो की सामग्री का विधान है और वही लाभकारी है। उन ऋतुओ के अनुकूल सामग्री का विधान तो 'संस्कार विधि, या 'आर्य पर्व पद्धति' मे देखें। पर अपने अनुभव के आधार पर निम्न और उच्च रक्तचाप वाले व्यक्तियो के लिए मैं एक प्रयोग लिखता हू—

जटामासी को गोघृत मे मिलाकर यज्ञ करना चाहिए और जटामासी का काढ़ा बनाकर पीना चाहिए। उच्च रक्त चाप वाले को ग्रीष्म ऋतु की हवन सामग्री से हवन करना चाहिए और माथे पर सर्पगन्धाचूर्ण का लेप करना चाहिए अथवा प्रति-दिन दो रत्ती सर्पगन्धाचूर्ण कैप्सूल मे भर कर गो दुग्ध के साथ लेना चाहिए। साथ ही रात मे तुरबत सफेद नामक औषधि दो रत्ती, दो ग्राम त्रिफला के साथ गरम दूध या गरम पानी से लेना चाहिए।

फिर निवेदन कर दू कि मैं यज्ञ विरोधी नहीं, आडम्बर विरोधी हू।

—आचार्य राम शास्त्री वैद्य, एल 1/27 ए, डी डी ए फ्लैट्स कालकाजी, नई दिल्ली-19, दूरभाष 6462527

वृष्टि यज्ञ की महत्ता

आर्य जगत दि० 25 10-87 मे पढ़ कर हर्ष हुआ कि आर्य समाज, आदर्श नगर, जयपुर ने रमेश मुनि वानप्रस्थ द्वारा 21-8-87 से 27-8-87 तक विधिपूर्वक वृष्टि यज्ञ करवाया जिसमे इतनी सफलता हुई कि पहले ही दिन मूसलाधार वर्षा हुई और पूर्णाहुति के बाद तो 26-8-87 और 28-8 87 को इतनी घनघोर वर्षा हुई कि राज्य में कई जगह बाढ आ गई। आश्चर्य की बात है कि आज जब सरकार को सैंकड़ो करोड रुपये सूखा ग्रस्त इलाकों की सहायता के लिए व्यय करने पड रहे हैं, वृष्टि यज्ञ स्थान स्थान पर क्यों नहीं हो रहे। यदि सरकार इसके लिए तैयार न हो तो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को यह शुभ कार्य अविलम्ब हाथ में लेना चाहिए।

ऐसा सुझाव मैंने स्वामी आनन्दबोध जी को अगस्त 1986 में भेजा था। उत्तर में उन्होने लिखा कि वृष्टि यज्ञ के विधान की पुष्टि सार्वदेशिक सभा ने की हुई है। क्यो नहीं सार्वदेशिक सभा रमेश मुनि जी, वैद्यनाथ जी को इकट्ठा करके यह काम उनके सुपुर्द कर दें और सारे व्यय का भार अपने ऊपर ले लें। इसमें सन्देह नहीं किया जा सकता कि जनता का पूर्ण सहयोग उनको मिल जायेगा।

यह अवसर है कि सारा देश इससे आर्य समाज का आभारी हो जायेगा तथा कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के लिए राज मार्ग सिद्ध हो जायेगा। अन्यथा अथर्व वेद और शतपथ ब्राह्मण पर से विश्वास उठ जायेगा।

— राम चन्द्र थापर ए-85 ईस्ट आफ कैलाश नई दिल्ली-65

आर्य प्रादेशिक सभा, एवं डी ए वी संस्थाओं की ओर से सूखा राहत कार्य

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एव डी० ए० वी० मस्थाओ की ओर से पिछले तीन महिनों से सूखा ग्रस्त क्षेत्रों में निम्न तीन सूखा राहत केन्द्र चलाये जा रहे हैं—राजस्थान —आर्य समाज ब्यावर द्वारा अब तक लगभग 50 क्विटल खाद्य सामग्री राजस्थान के सूखा ग्रस्त क्षेत्रो में इस केन्द्र द्वारा बाटी गई। इस केन्द्र के कार्यकर्ता श्री ओमप्रकाश भवर, मत्री, आय प्रतिनिधि सभा, राजस्थान एव श्री विष्णु देव मत्री, आर्य समाज, ब्यावर हैं। सौराष्ट्र—महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टकारा में लगभग 80 क्विटल खाद्य सामग्री एव काफी मात्रा मे कपडे सौराष्ट्र के सूखा ग्रस्त क्षेत्रो मे बाटे गये। उसके कार्यकर्ता श्री सत्यदेव रिटायर्ड इजीनियर एव श्री अरुण कुमार उपाचाय उपदेशक विद्यालय टकारा हे। उडीसा —गुरुकुल आश्रम आमसेना, खडियार राड, कालाहाण्डी मे श्री स्वामी धर्मानन्द जी के नतृत्व मे सूखा राहत केन्द्र चल रहा है। इसमे लगमग 150 क्विटल खाद्य सामग्री और लगभग रु० 25 000/-(पच्चीस हजार) के नये तथा पुराने वस्त्र बाटे गये हे। उडोसा केन्द्र मे नवापाडा, सब डिविजन बोडेन, सोनापाडा, आमसेना, चनाबहेडा, सलिदा, झाल वाहाल, कोदोमेरी, चुहरी, दर्री नवापारा, माहुजतोरा, डुमरडिही, चालमुडा नवा-डिही, बनका, मुडागाव, गोतमा, डुमरपाली, कल्याणपुर, पटपरपालो, आदि गावो मे खाद्य सामग्री तथा कपडे आदि बाट जा रहे हैं।

अब तक लगभग दो लाख रु० की खाद्य सामग्री एव कपडे आदि उपरोक्त तीनो सूखा राहत केन्द्रो मे आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एव डी० ए० वी० सस्थाओ की ओर से भेजे जा चुके हैं। ये केन्द्र 30 सितम्बर 1988 तक चलेंगे। इनमे लगभग दस लाख रु० की खाद्य सामग्री की आवश्यकता है। हमारी समस्त आर्य जनो से प्रार्थना है कि वे अधिक से अधिक खाद्य सामग्री तथा नकद राशि "आय प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली" के कार्यालय मे भिजवाने की कृपा कर। जहां से यह सारी सामग्री उपरोक्त तीनो केन्द्रो मे भेजी जाती है और सूखा ग्रस्त क्षेत्रो मे बाटी जाती है। जो भी आय जन खाद्य सामग्री एव राशि भजेंगे। उनके नाम 'आर्य जगत्" साप्ताहिक समाचार पत्र में प्रकाशित किये जायेंगे।

निवेदक

प्रो० वेद व्यास	दरबारी लाल	रामनाथ सहगल
प्रधान	कार्यकर्ता प्रधान	सभा मत्री

कलकत्ता में प्रथम डी. ए. वी. विद्यालय का उद्घाटन

कलकत्ता, 9 जनवरी। देश में शिक्षण केन्द्रो की स्थापना के क्रम मे कलकत्ता महानगर मे स्थापित प्रथम डीएवी सार्वजनिक विद्यालय का उद्घाटन आज सम्पन्न हुआ। दक्षिण कलकत्ता मे (तारातल्ला के समीप) 61 डायमण्ड हावर रोड पर खुले इस विद्यालय मे अभी चौथी कक्षा तक पढाई होगी। आगे चलकर इसे उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मे परिणित किया जायेगा। आज के उद्घाटन समारोह मे डीएवी सोसाइटी के अध्यक्ष प्रो वेदव्यास एव सगठन सचिव श्री दरबारीलाल ने दिल्ली से आकर योगदान किया। उद्घाटन की रस्म दीप जलाकर पूरी की जन-कार्य मन्त्री श्री यतीन चक्रवर्ती ने। आयोजन मे प्रधान अतिथि थे "विश्वमित्र" सम्पादक श्री कृष्णचन्द अग्रवाल। यहा के आय समाज से सम्बन्धित लोग बडी सख्या मे उपस्थित थे। आचार्य उमाकान्त के नेतृत्व में होम एव प्रार्थना से समारोह की कार्यवाही आरम्भ हुई। उल्लेखनीय है कि भवानीपुर आर्य समाज एव आर्य विद्यालय के प्रयास से इस विद्यालय की स्थापना हुई है। मंच पर प्रधान श्री मुलकराज आनन्द एवं सर्वश्री रामनाथ सहगल, हीरालाल चोपडा, आनन्द कुमार अग्रवाल और विद्यालय के प्रिंसिपल श्री आर० एस० शर्मा आदि उपस्थित थे। अपने उद्घाटन भाषण में श्री चक्रवर्ती ने कहा—दयानन्द जी ने देश की आजादी और सुशिक्षा दोनो के लिए काम किया था। लोगो को शिक्षित करके वे कुसस्कारो को समाप्त करना चाहते थे। स्वामी विवेकानन्द का भी यही उद्देश्य था, लेकिन वतमान मे पुराने मूल्य बोध का विस्मरण हो रहा है। देश के युवक और छात्र नशीली वस्तुओ के शिकार हो रहे हैं। उस से इनकी रक्षा अनिवार्य है। डीएवी के आदर्श को सामने रखकर शिक्षा की व्यवस्था स्तुत्य है। इससे समाज के नैतिक मूल्य मे जो गिरावट आ रही है उसकी भी रक्षा होगी।

आर्य समाज एव डीएवी शिक्षण केन्द्रों से अपने पिता तथा "विश्वमित्र" के सस्थापक स्व बाबा मूलचन्द जी अग्रवाल तथा स्वय घनिष्ठ सम्बन्ध का उल्लेख करते हुए उक्त अवसर पर "विश्वमित्र" सम्पादक श्री कृष्णचन्द अग्रवाल ने कहा कि आज तो शिक्षा केन्द्रों में छात्र-छात्राओं को कठिनाई से स्थान मिलता है। पांच दशक पहले विपरीत स्थिति थी। नगर मे आर्य कन्या विद्यालय एव अन्य बालिका विद्यालयों में शिक्षा के लिए मुश्किल से लडकियों की भर्ती होती थी। सस्थापको को इस निमित्त बडी चेष्टा करनी होती थी। आपने इस नए विद्यालय के प्रागण में एक हाल के निर्माण की भी सलाह दी ताकि क्षेत्र के लोगो की आवश्यकता पूर्ति हो सके। श्री अग्रवाल ने कहा कि उद्देश्य और कार्यकर्ता अच्छे हो तो सावजनिक हित के कार्यों के लिए धन की कमी नहीं होती है। अन्य वक्ताओ ने भी शिक्षा के महत्व एवं स्वामी दयानन्द के आदर्श पर अपने विचार व्यक्त किए।

टंकारा आर्य-यात्रा

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट की ओर से 15 16 17 फरवरी को टकारा मे शिवरात्रि के अवसर पर ऋषि मेला मनाया जा रहा है। वहा जाने के लिए हवाई जहाज, रेल और बस तीनो की व्यवस्था की गई है।

हवाई जहाज का किराया
(दिल्ली से अहमदाबाद तक आना-जाना) 1500/रु०
बस किराया 600/-
रेल का किराया (दिल्ली से राजकोट टकारा और वापिस दिल्ली) 300/रु०
सीट बुक करवाने की अन्तिम तिथि

हवाई जहाज द्वारा	30-1-88 तक,
रेल द्वारा	26-1 88 तक
बस द्वारा	1 2-88 तक,

बुक हुई सीट कैंसिल नही होगी।

बस यात्रा का कार्यक्रम

प्रस्थान 10-2-1988 को प्रात 6 बजे आर्य समाज, करोल बाग, नई दिल्ली

दिनाक	प्रस्थान	पहुच
10 2 88	प्रस्थान प्रात 6 बजे आर्य समाज करोल बाग दिल्ली से	पहुच 5 बजे ब्यावर
11-2-88	प्रस्थान ब्यावर प्रात 8 बजे	पहुच साय 6 बजे आबू रोड, वाया माउण्ट आबू
12 2-88	प्रस्थान आबू रोड प्रात 7 बजे	पहुच साय 5 बजे आय समाज राजकोट
13-2-88	प्रस्थान प्रात 7 बजे राकोट	पहुच साय 5 बजे पोरबन्दर, (कन्या गुरुकुल) वाया सोमनाथ मन्दिर
14-2-88	प्रस्थान प्रात 7 बजे पोरबन्दर	वाया द्वारका, द्वारकाबेट पहुच जामनगर साय 6 बजे
15-2 88	प्रस्थान प्रात जामनगर	टकारा बारास्ता, मोरवी पहुच टकारा 12 बजे
16-2-88		टकारा मे ही
17-2-88	प्रस्थान 10 बजे टकारा से	पहुच अहमदाबाद 4 बजे साय
18-2-88	प्रस्थान 7 बजे प्रातः अहमदाबाद (साबरमती आश्रम)	पहुच 3 बजे उदयपुर
19 2-88	प्रस्थान उदयपुर से 8 बजे स्थान पर रात्रि उदयपुर	पहुच चित्तौड गढ, गुरुकुल 6 बजे ब्रासका, नाथ द्वार, हल्दी घाटी, ककरोली
20-2-88	प्रस्थान चित्तौड गढ, चित्तौड किला	पुष्कर 4 बजे वापसी अजमेर 7 बजे साय
21-2-88	प्रस्थान अजमेर प्रात 8 बजे प्रात 8 बजे जयपुर	(आमेर किला) से दिल्ली साय 9 बजे

टकारा मे ऋषि लगर के लिए अधिक से अधिक आटा, चावल दाल, घी, नकद आदि निम्न स्थानो पर भिजवायें

आर्य समाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली—110001
आर्य समाज मन्दिर, करोल बाग —110005
आय समाज मन्दिर, ग्रेटर कैलाश —110048
आय समाज मन्दिर, राजिन्द्र नगर —110060

भवदीय

प्रान्तीय महिला सभा	टकारा ट्रस्ट
श्रीमती सरला महता	श्री रतन चन्द सूद
,, शाति मलिक	,, ओ०पी० गोयल कार्यकर्ता प्रधान
,, राम चमेली	,, आर०के० पुन्शी प्रबन्धक
,, कृष्णा वढेरा	,, राम नाथ सहगल
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा	शुद्धि सभा
डा० धर्म पाल	श्री राम भज बत्रा
श्री हरबन्स सिह खेर	,, द्वारका नाथ सहगल
,, सरदारी लाल वर्मा	,, राजेश्वर साउथ एक्सटेंशन पार्ट-1
,, तीरथ राम आहूजा	,, दीवान चन्द पलटा
प्रधान शाति प्रकाश बहल दूरभाष 6417269	सयोजक राम लाल मलिक 5722510
मन्त्री रामसरन दास आहूजा 5713002, 343718	सहसयोजक नरेन्द्र मलिक

1988 के लिए आर्य पर्व सूची

स०	नाम पर्व	अंग्रेजी तिथि	वार
(1)	मकर सक्रान्ति	14-1-1988	बृहस्पतिवार
(2)	बसत पचमी	23-1 1988	शनिवार
(3)	सीताष्टमी	11-2-1988	बृहस्पतिवार
(4)	दयानन्द बोधरात्रि	16-2-1988	मगलवार
(5)	वीर लेखराम तृतीया	20-2-1988	शनिवार
(6)	नव सस्येष्टि (होली)	3-3-1988	बृहस्पतिवार
(7)	दुलैण्डी	4-3-1988	शुक्रवार
(8)	आर्यसमाज स्थापना दिवस	19 3-1988	शनिवार
(9)	रामनवमी	26-3-1988	शनिवार
(10)	हरि तृतीया	15-8-1988	सोमवार
(11)	श्रावणी उपाकर्म	27-8-1988	शनिवार
(12)	श्री कृष्ण जन्माष्टमी	3-9-1988	शनिवार
(13)	विजयादशमी	20-10-1988	बृहस्पतिवार
(14)	गुरू विरजानन्द दिवस	23-10-1988	रविवार
(15)	महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस	9-11-1988	बुद्धवार
(16)	श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	23-12-1988	शुक्रवार

मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

सूखा राहत कोष दान सूची—10

आर्य प्रादेशिक सभा, एव डी ए वी कमेटी द्वारा सूखा ग्रस्त प्रदेशो मे सूखा राहत के लिए धन की अपील की गई थी। प्राप्त राशि और दानदाताओ की दसवीं सूची निम्न है। भविष्य मे राशि भेजने वालों का ब्योरा इसी तरह "आर्य जगत्" में प्रकाशित किया जायेगा।

323	प्रिसिपल डी०ए०वी प० स्कूल बल्लमगढ़	830 00
324	ईश्वर चन्द्र अग्रवाल, सिवाह	31 C0
325	प्रमोदकुमार एव जयनारायण साहू—आसनसोल	51-00
326	प्रधान आर्य समाज खरड	100 00
327	निहाल सिह नागलोई नई दिल्ली	100-00
328	सच्चिदानन्द आर्य—प्रसादनगर नई दिल्ली	201 00
329	प्रिसिपल, डी० ए० वी० प० स्कूल शिमला	251 00
330	श्रीमती सुभाष सागर 871, ईस्ट पार्क रोड नई दिल्ली	100-00 +खाद्य सामग्री
331.	डा० आशा गुप्ता सुखदा हास्पिटल ग्रेटर कैलाश-I नई दिल्ली	1250+वस्त्र
332	सत्यकाम भारद्वाज,—207 गौल्फ लिंक नई दिल्ली	201 00
333.	दयावती बक्सी—A38, कैलाश कालोनी नई दिल्ली	250-00
334	डा० (श्रीमती) राज आनद – 824, सती गज बेगम ब्रिज, मेरठ	251-00
335	प्रिसिपल एम० सी० एम० डी ए वी कालेज फोर वूमेन, चण्डीगढ़	250 00

डा० वेदीराम शर्मा मारिशस यात्रा पर

श्री डा० वेदीराम शर्मा, जो अभी लगातार दो वर्ष तक नैरोबी (केन्या) में वेद प्रचार करके लौटे हैं, अब मारिशस वासियो के आग्रह पर वहा आर्यसमाज के प्रचार काय को सुव्यवस्थित रूप देने के लिए वहा जा रहे हैं।

टकारा में पारायण यज्ञ के ब्रह्मा डा० रामप्रसाद वेदालकार होगे

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी टकारा में ऋषि बोधोत्सव 15 16 17 फरवरी को मनाया जायेगा, जिसमें यजुर्वेद पारायण महायज्ञ 10 से 16 फरवरी तक होगा जिसके ब्रह्मा गुरुकुल कांगडी के भू० पू० उपकुलपति डा० रामप्रसाद वेदालकार होगे।

आर्य युवक दल हरियाणा का स्थापना दिवस

आय युवक दल हरियाणा का स्थापना दिवस 17 जनवरी को ई-36इडस्ट्रियल एरिया (हाली पार्क के सामने) पानीपत में प्रात 10॥ से 12॥ तक मनाया जाएगा। समारोह की अध्यक्षता श्री दरबारीलाल जी करेंगे मुख्य अतिथि श्री रामनाथ सहगल होंगे। 12॥ से 1॥ बजे तक आर्य युवक दल की विशेष बैठक होगी जिसमे आय व्यय के विवरण के साथ भावी कायक्रम की रूपरेखा तैयार की जाएगी। —चमनलाल आय

शिलान्यास समारोह

आर्य समाज सरस्वती विहार, दिल्ली के सत्सग के भवन आधार शिला की 24 जनवरी को स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे श्री क्षेमचन्द जी मेहता सहमन्त्री आर्य प्रतिनिधि प्रादेशिक सभा, दिल्ली के कर-कमलो द्वारा होगी।

—कृष्णदेव कोषाध्यक्ष

26 जनवरी को गीत प्रतियोगिता

आर्यसमाज डी० सी० एम० रेलवे कालोनी के वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य मे 26 जनवरी को दोपहर 2 से 5 बजे तक देशभक्तिपूर्ण गीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। प्रतियोगिता की अध्यक्षता श्री ओम्प्रकाश नरूला करेंगे। प्रतियोगी अपना नाम 20 जनवरी तक भेज दें।

नारी-उत्पीडन के विरूद्ध संघर्ष का संकल्प

अजमेर। महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास मे दिवराला गई आर्य वीरागनाओ के जत्थे का स्वागत किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री महावीर बहल उप प्रधान ने की मत्री श्री मदन मोहन शास्त्री ने पदयात्रियों के साथ किए गए सरकारी व्यवहार की निन्दा की। श्री वेदवती मन्त्राणी महिला समाज ने पदयात्रा के लिए गए जत्थे के सस्मरण सुनाये तथा नारी उत्पीडन के विरुद्ध सघर्ष का सकल्प व्यक्त किया।

—वीरेन्द्र सिह कार्यालय अध्यक्ष

संस्कृत को उचित स्थान नहीं दिया तो आन्दोलन होगा

3 जनवरी को आर्यसमाज दीवानहाल में स्वामी आनन्द बोध सरस्वती की अध्यक्षता मे सस्कृत प्रेमियों की एक विशेष सभा हुई जिसमें यह प्रस्ताव पास किया गया कि सरकार ने नई शिक्षा प्रणाली मे सस्कृत को उचित स्थान नहीं दिया तो जनआन्दोलन करने पर विवश होना पडेगा। सरकार को उचित कार्यवाही के लिए एक महीने का नोटिस देने का भी निश्चय किया गया। सभा मे प्रो० कमला रत्नम, श्री क्षितीश वेदालकार, श्री सोमनाथ मरवाहा, श्री यशपाल सुधाशु, श्री सूर्यदेव तथा अन्य अनेक सस्कृत प्रेमी विद्यमान थे।

दरबारीलाल जी का जन्म दिवस

डीएवी आन्दोलन के [illegible] श्री दरबारीलाल जी का 15 जनवरी को साय 5 बजे तानसेन मार्ग स्थित फिक्की समाचार मे प्रो० वेदव्यास जी की अध्यक्षता मे जन्म दिवस समारोह मनाया जाएगा जिसमे मुख्य अतिथि केन्द्रीय पर्यावरण मन्त्री चौ० भजनलाल होंगे। इस अवसर पर 'आर्य समाज एण्ड फ्रीडम स्ट्रगल' नामक पुस्तक का विमोचन भी होगा।

हकीकतराय बलिदान दिवस

आयसमाज सरोजिनी नगर मे 24 जनवरी को प्रात: 8॥ से 12॥ बजे तक हकीकतराय धमरक्षा समिति और दक्षिण दिल्ली की आयसमाजो की ओर से वसन्त पचमी और हकीकतराय बलिदान दिवस मनाया जाएगा जिसमें अनेक विद्वान् और आर्य नेता भाग लेंगे।

आचार्य रामशास्त्री अस्पताल में

सस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् प्रज्ञाचक्षु; 97 वर्षीय आचार्य रामशास्त्री वैद्य के अचानक घर में फिसल जाने से कूल्हे की हड्डी टूट गई है वे मैडिकल इस्टिट्यूट के पहली मन्जिल स्थित प्राइवेट वार्ड के रूम न० 111 मे भर्ती हैं। 10 जनवरी रात को दस बजे लोक समाध्यक्ष श्री बलराम जाखड पटना से लौटते ही हवाई अड्डे से सीधे उनका हाल जानने अस्पताल पहुचे। वहा उन्होने डाक्टरो को आवश्यक हिदायते दी ताकि उनके सही उपचार में कोई बाधा न हो।

भा० लेखक मच का निर्वाचन

भारतीय लेखक मन्च के वार्षिक निर्वाचन मे सर्व सम्मति से निम्न पदाधिकारी चुने गए सरक्षक श्री ब्रह्मदत्त स्नातक, अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र मोगिया, मन्त्री श्री प्रेमचन्द शर्मा तथा कोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्रपाल गुप्त।

ऋषि जन्म भूमि टंकारा यात्रियो का स्वागत

टकारा ऋषि बोध उत्सव पर पधारने वाले यात्रियो के लिये आर्य समाज मन्दिर अमर नगर मैन रोड मच्छी प्लोट राजकोट 4 में निवास और भोजन की व्यवस्था की गई है।

उड़ीसा में सूखा राहत कार्य

नबापारा (उड़ीसा) के ब्लाक विकास अधिकारी गुरुकुल आमसेना में सूखा-पीड़ितों को चावल बांट रहे हैं। साथ में कन्या गुरुकुल की आचार्या निगरानी के लिए खड़ी हैं। दाईं ओर के चित्र में उड़ीसा आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त मंत्री श्री वेदिवेशन गुरुकुल में लोगों को चावल बांट रहे हैं।

राजस्थान में सूखा राहत कार्य की झांकी

आर्य प्रादेशिक सभा के सहयोग से आर्य समाज ब्यावर द्वारा राजस्थान में सूखा सहायता कार्यक्रम के अन्तर्गत अन्न और वस्त्र का वितरण। राजस्थान आ० प्र० सभा के मंत्री श्री ओम्प्रकाश भवर, पूर्व सांसद आचार्य भगवान् देव, आर्य भजनोपदेशक श्री अमर सिंह और डी ए वी महिला कालेज के प्रिंसिपल श्री वासुदेव आर्य पूर्ण सहयोग पूर्वक वितरण की व्यवस्था में लगे हैं।

ब्यावर आर्य समाज के मंत्री श्री विष्णु देव आर्य ने श्री सहगल के नाम लिखे पत्र में अपने कार्य का विस्तृत विवरण देते हुए अधिक से अधिक अनाज तथा अन्य सामग्री भेजने को लिखा है। 1 जनवरी से दूरस्थ गांवों में भी अनाज वितरण की योजना बनाई गई है। पहले आर्योपदेशक श्री अमर सिंह जी गांवों में जाकर कुछ दिन प्रचार करते हैं और गरीब तथा सहायता के पात्र परिवारों की सूची तैयार करते हैं। फिर आर्य समाज के अधिकारी और स्वयं सेवक एक दिन जाकर अनाज और वस्त्र वितरण करते हैं। ब्यावर शहर में भी प्रतिदिन आर्य समाज की टोलियां अन्न और वस्त्र संग्रह के लिए फेरी लगाती हैं।

हिन्दी पुत्री पाठशाला, खन्ना में नया भवन

खन्ना की हिन्दी पुत्री पाठशाला में मुख्य अतिथि श्री दरबारी लाल जी नए भवन का शिलान्यास कर रहे हैं। चित्र में प्रि० श्रीमती सरोज कुन्दरा, श्री बी० बी० गक्खड़, पाठशाला के प्रशासक श्री कृष्ण सिंह आर्य तथा अन्य विशिष्ट जन खड़े हैं।

डी ए वी पब्लिक स्कूल गाजियाबाद का छात्र प्रथम

आर्य समाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली के वार्षिक महोत्सव पर आयोजित भाषण प्रतियोगिता "हवन यज्ञ क्यों करें" में 24 डी० ए० वी० पब्लिक स्कूलों के छात्रों ने भाग लिया। जिसमें डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल राजनगर, गाजियाबाद के छात्र निशान्त कुमार कक्षा चार ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

(निशान्त कुमार)

इंजीनियरों की परीक्षा में हिन्दी का विकल्प

दिसम्बर, 1987 के समाचार-पत्रों में छपे एक विज्ञापन के अनुसार भारतीय साधारण बीमा निगम, बम्बई तथा इसकी सहायक कम्पनियों, नेशनल इंश्योरेंस क० लि०, कलकत्ता, द न्यू इंडिया एश्योरेंस क० लि०, बम्बई, द ओरिएन्टल इंश्योरेंस क० लि०, नई दिल्ली तथा यूनाइटेड इण्डिया इंश्योरेंस क० लि०, मद्रास में इंजीनियरों के 150 पदों पर नियुक्ति के लिए ली जाने वाली प्रतियोगिता परीक्षा में हिन्दी के वैकल्पिक प्रयोग की सुविधा दे दी गई है। सभी परीक्षाएं दो भाषाओं अर्थात् अंग्रेजी व हिन्दी में होंगी।

अधिक से अधिक इंजीनियरों को प्रेरित करें कि वे उक्त परीक्षा में हिन्दी माध्यम का विकल्प लें। —जगन्नाथ, संयोजक राजभाषा कार्य

कन्या गुरुकुल, हाथरस का समाचार

(1) कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों ने कुछ समय के लिये घी खाना छोड़कर उसका मूल्य तथा अन्य चन्दा एकत्रित कर 2000 रु० प्रधान मन्त्री सूखा राहत कोष के लिये एकत्रित कर सम्बन्धित अधिकारियों को भेजा है।

(2) कन्या गुरुकुल, हाथरस की स्नातिका, पंजाब निवासी श्रीमती लज्जावती जी धर्मपत्नी श्री वीरसेन आयुर्वेदालंकार मुजफ्फरनगर निवासी ने कन्या गुरुकुल के छात्रवृत्ति स्थायी कोष के लिये 5000 रु० दान दिया है। गुरुकुल परिवार की ओर से हार्दिक धन्यवाद।

यू० 108/81 लायसेंस टू पोस्ट विदाउट प्रिपेमेंट
रजिस्ट्रेशन न० आर० एन० आई० 39/57 डी० सी०409
Y D. P.S.O. ON 14 1-88, 17 जनवरी 1988

इमाम बुखारी द्वारा विषवमन

दिल्ली की जामा मस्जिद के इमाम सैयद अब्दुला बुखारी ने पिछले दिसम्बर के अन्तिम दिनो लाहोर मे हिन्दुस्तान के खिलाफ जमकर जहर उगला। उन्होने पाकिस्तान के लोगो से कहा कि वे अपने मतभेद मिटा कर इस्लामी झण्डे तले एक होकर भारत के मुसलमानो को 'नजात' दिलाए।

'नवाए वक्त' ने इमाम की बातो से शह पाकर अपने एक सम्पादकीय मे लिखा है—"इस सर-जमीन पर मुसलमानो के लिए पाकिस्तान खुदा का एक बेशकीमती तोहफा है। अगर किसी ने इसका सबूत देखना हो तो वह सरहद के पार हिन्दुस्तानी मुसलमानो की हालत देखे और उन मुसलमानो की तरफ भी देखे जो बर्मा, लाओस, थाईलैंड, लेबनान, इथिओपिया 'बुल्गारिया, युगोस्लाविया, अफगानिस्तान और रूस के एशियाई हिस्से मे रहते हैं।"

'जग' और नवाए-वक्त' मे छपी खबरो के मुताबिक सैयद बुखारी ने अपनी तकरीरो और मुलाकातो मे कहा कि 'हिन्दुस्तान के मुसलमान पहले तो अग्रेजो के गुलाम थे, बाद मे 1947 मे काग्रेस के गुलाम हो गए।' लेकिन दिलचस्प बात यह है कि उन्होने कही कुछ कहा कही कुछ और अपने ही बयानो को काटते रहे। मिसाल के तौर पर जजो की एक मीटिंग मे सैयद बुखारी ने कहा—'हम अपने लिए पाकिस्तान जैसा अलग इलाका लेकर आजादी की बरकतो से अपने आपको महरूम नहीं करना चाहते क्योकि हम पाकिस्तान का तजुर्बा देख चुके हैं। हिन्दुस्तान मे ही हम इज्जत से रहना चाहते।" साथ ही उन्होने कहा—"(हिन्दुस्तान के) मुसलमानो पर हो रहे जुल्मो-सितम को बन्द करने के लिए पाकिस्तान सरकार की तरफ से भारत पर डाला गया कोई भी दबाव अन्दरूनी मामलो मे दखलन्दाजी नही समझी जाएगी, नेहरू-लियाकत अली समझौते के तहत ऐसा किया जा सकता है। बागलादेश के बन जाने के बावजूद यह समझौता लागू है।"

इमाम ने धर्म पर कम और राजनीति पर ज्यादा जोर दिया। उन्होने कहा—'अल्लाह ताला के फजल से हिन्दुस्तान के 20 करोड मुसलमानो ने अब इतनी ताकत हासिल करली है कि अगर चुनावो मे काग्रेस के खिलाफ बगावत करने का फैसला कर ले तो भारत मे काग्रेस कभी भी नही जीत सकती अपनी तादाद के जोर से हम किसी भी पार्टी को गद्दी पर बैठा सकते हैं।'

हरियाणा सभा द्वारा सूखा राहत कार्य

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा की ओर से गाय तथा भैंस की सर्वोत्तम नसल की सुरक्षा हेतु साण्ड तथा झोटो के लिए चारे व दाने की व्यवस्था करने के लिये सूखाग्रस्त ग्रामो मे जहा नहर तथा नलकूपो के पानी की सुविधा नही है, वहा नवम्बर मास मे 32800 रुपए की सहायता दी गई। 11 12 दिसम्बर को तहसील झज्जर मे सभाप्रधान प्रा० शेरसिंह ने सभा उपदेशक प० अर्जुनदेव आर्य एव प० सुखदेव शास्त्री के सहयोग से ग्रामीण जनता की उपस्थिति मे सरपचो एव सामाजिक कार्यकर्त्ताओं की बनी समिति को यह राशि वितरित की। अब तक कुल 50800 रुपए की राशि वितरित की जा चुकी है।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री।

बहन शास्त्रीदेवी को श्रद्धाजलि

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश ने अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिला की बहन श्रीमति शास्त्री देवी को श्रद्धाजलि अर्पित की वे परिषद् के कार्यक्रमो मे आती रहती थी। 90 वर्षीय वृद्धा श्रीमति शास्त्री देवी अपनी यौवनावस्था मे अपने भाई को बम्ब व अन्य आवश्यक सामग्री सप्लाई करती रहीं, उनका जीवन सघर्षमय रहा।—चन्द्रमोहन आर्य

रामायण आत्मिक शक्ति का मूल है

"विश्व हिन्दी दर्शन" के सम्पादक तथा "अन्तर्राष्ट्रीय रामायण सम्मेलनो" के महासचिव श्री लल्लन प्रसाद व्यास ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन के रत्नाकर मण्डल मे 18 दिसम्बर को भाषण मे कहा कि केवल भारत ही नही विश्व की युवा शक्ति को सच्चे सस्कारो और उच्च आदर्शों से जोडने का सबसे प्रभावी माध्यम रामायण ही है जिसमे मनुष्य के सततोमुखी आत्मिक विकास की व्यवहारिक रूपरेखा है। रामायण का यह माध्यम जितनी जल्दी अपनाया जाएगा उसी गति से युवा शक्ति सृजनात्मक दिशा की ओर अग्रसर हो सकेगी। आपने मारीशस, फिजी, सूरीनाम आदि भारतवासी बहुत देशो का उदाहरण देते हुए बताया कि उनमे मूलभूत भारतीय सस्कार रामायण के ही कारण हैं। भारत मे भी जो युवक रामायण के नियमित पठन-पाठन से जुडे हैं उनमे औरो की अपेक्षा अधिक आत्मशक्ति और विवेक होता है।

'धन भेजने की अपील'

स्व० पूज्य प० ब्रह्मदत्तजी जिज्ञासु के सुयोग्य शिष्य डा० वीरेन्द्र कुमार शर्मा पी० एच० डी० वेद शास्त्रो के विद्वान् वक्ता (होशियारपुर वाले) गत 6 मास से रोग शैय्या पर चण्डीगढ़ एव ब्राउन हस्पताल लुधियाना मे भयकर सफल आप्रेशन के बाद अपने निवास स्थान बुद्धराम कालोनी सिवल लाईन होशियारपुर मे स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं। उक्त पते पर यथा शक्ति धन भेज कर सहयोगी बने। —प्रो० विनोदपाल प्रधान, आर्य समाज लक्ष्मणसर अमृतसर

आर्य समाज, मिर्जापुर का उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मिर्जापुर के वार्षिकोत्सव के अवसर पर आर्य समाज मिर्जापुर के अन्तर्गत सचालित आर्य महिला महाविद्यालय इण्टर कालेज तथा नर्सरी स्कूल के बच्चो एव नगर के प्रबुद्ध नागरिको के सम्मुख डा० आनन्द सुमन के क्रातिकारी उपदेश हुए। प्रात काल यज्ञ के ब्रह्मा के रूप मे डा० आनन्द सुमन ने वेद मन्त्रो की मनोरम व्याख्या की जिसमे 25 अध्यापिकाओं को यज्ञोपवीत धारण कराया गया।

उत्सव मे सार्वदेशिक आर्यवीर दल के श्री बाल दिवाकर हस श्री जयप्रकाश आर्य श्री महिपाल सिंह, श्री महानन्द सिंह आदि वक्ताओं ने भाग लिया। उत्सव की सफलता का श्रेय बहन सन्तोष कुमारी कपूर को है।

—डा० मधु चोपडा मन्त्री

क्या आर्यसमाज की सम्पत्ति पर भी सरकारी नियन्त्रण होगा ?

हरियाणा सरकार मठो, मन्दिरो तथा डेरो की देखभाल के लिए कानून बनाने पर विचार कर रही है। इस समाचार पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के मन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री ने कहा है कि सरकारी एकाधिकार प्राप्त डेरो आदि की सम्पत्तियो की आय व्यय की जाच-पडताल करके उनकी आय को जनता की भलाई पर खर्च करने का कानून तो उचित है, परन्तु यदि सरकार ने आर्यसमाजो तथा गुरुकुलो आदि की व्यवस्था मे अनुचित हस्तक्षेप किया तो उसे सहन नही किया जायेगा।—केदारसिंह कार्यालयाध्यक्ष,

श्रद्धानन्दबलिदान-स्मृति समारोह एक मास तक

आर्य उप-प्रतिनिधि सभा, जिला देहरादून ने जनपद मे 13 दिसम्बर से 17 जनवरी तक, एक मास से भी अधिक समय तक चलने वाले, स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान-स्मृति समारोह का आयोजन किया। 13 दिसम्बर को आर्य समाज नत्थनपुर से यह कार्यक्रम आरम्भ हुआ।

3 जनवरी को देहरादून नगर से 4 किलोमीटर की दूरी पर स्थित ग्राम जोगीवाला मे आर्य समाज की स्थापना की गई।

—देवदत्त बाली प्रधान आर्य उप-प्रतिनिधि सभा, जिला देहरादून

पं० वेदपाल प्रभुशरणाश्रित दक्षिण अफ्रीका में

पडित प्रभुशरणाश्रित 17-11-87 को डरबन पहुचे। उन्होने यहा एक सप्ताह की अवधि मे वैदिक धर्म पर 21 व्याख्यान दिए। रेडियो से तीन वार्त्तायें प्रसारित कीं और युवक शिविरों को सबोधित किया। इस प्रकार वे प्रातः से साय तक धर्म प्रचार की विभिन्न गतिविधियों मे सलग्न रहे। व्याख्यानों और वार्त्ताओं के अतिरिक्त वे पत्र पत्रिकाओं मे लेख भी उन्होने प्रकाशित कराए। इससे पूर्व उनकी पुत्री स्वामी सजीवनी आनन्द सरस्वती वहा धर्म प्रचार कर रही थी। प्रभुशरणाश्रित के पुत्र [illegible] वैज्ञानिक ने 'सन्देश प्रकाश' शीर्षक से अग्रेजी हिन्दी के कैसेट भेजे। उनसे भी अच्छा प्रचार हुआ। मई मास मे राजू वैज्ञानिक स्वय दक्षिण अफ्रीका की प्रचार यात्रा पर जा रहे हैं।

—एस० रामभरोसे, अध्यक्ष।

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती द्वारा विद्यालय भवन का उद्घाटन

आर्य समाज नामनेर आगरा द्वारा सस्थापित विद्यालय भवन का उद्घाटन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा किया गया। इस अवसर पर बम्बई के श्री सत्यप्रकाश कपूर ने 1 लाख रुपये की राशि दान मे दी।

पुरोहित चाहिए

आर्यसमाज वसन्त विहार नई दिल्ली के लिए एक योग्य पुरोहित की आवश्यकता है जो वैदिक सिद्धान्त तथा कर्मकाण्ड का उत्तम कोटि का ज्ञान रखता हो, सस्कार कराने मे दक्ष हो, सगीत जानने वाले को वरीयता मिलेगी। शैक्षिक योग्यता, आयु, पुरोहित के कार्य का अनुभव आदि के पूर्ण विवरण सहित आवेदन पत्र शीघ्र भेजें। वेतन योग्यतानुसार।—डा० जी० पी० गुप्ता मन्त्री, आर्य समाज, वसन्त विहार एफ 10/15 नई दिल्ली-57

श्री प्रणव जी को मातृशोक

आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् व्याख्याता और कवि श्री प० ओंकार मिश्र 'प्रणव' शास्त्री की माताजी का 92 वर्ष की आयु में प्रणव जी के अनुज के गृह पर झासी मे 8 12-1987 को हृदय गति रुक जाने से देहान्त हो गया। श्रद्धेय माता जी बहुत ही धार्मिक रुचि की थीं। हम श्री प्रणव जी के प्रति हार्दिक समवेदना प्रकट करते हैं।—शिवकुमार शास्त्री पूर्व सांसद (लोकसभा)

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री, द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाडी धीरज (फोन 527335) दिल्ली मे छपवाकर कार्यालय आर्य जगत्, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—सार्व सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 (फोन 343718)

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य जगत्
साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य —30 रुपये विदेश मे 65 पौ० या 125 डालर वर्ष 51, अक 4 रविवार 24 जनवरी, 1988 दूरभाष : 343718
आजीवन सदस्य-251 रु० इस अक का मूल्य—75 पैसे सृष्टि सवत् 1972949088, दयानन्दाब्द 163 माघ० शु०-6, 2044 वि०

गणराज्य दिवस अंक

आजादी की लड़ाई में आर्य समाज कांग्रेस से आगे

श्री दरबारी लाल के जन्मदिवस पर चौ० भजनलाल

"आजादी की लडाई मे आयसमाज का योगदान किसी भी दृष्टि से कांग्रेस से कम नही है। आय समाज की स्थापना 1875 में और कांग्रेस की स्थापना 1885 मे होने के कारण आर्यसमाज का इतिहास कांग्रेस से एक दशक से भी अधिक पुराना है। आय समाज ने देश की स्वतन्त्रता के लिये और सामाजिक कुरीतियो के निवारण के लिए जितना आन्दोलन किया और जितना बलिदान किया उसी की छाप पीछे कांग्रेस के नेताओ पर भी पडी और वतमान भारत के सविधान मे भी उसकी छाप स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है।"—ये शब्द 15 जनवरी 88 को फिक्की (फेडरेशन आफ इण्डियन चैम्बर्स आफ कामस) के सभागार मे डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के सगठन सचिव श्री दरबारी लाल के 58 वें जन्म दिवस के समारोह मे उपस्थित श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए केन्द्रीय पर्यावरण मन्त्री चौ० भजनलाल ने कहे। इसी अवसर पर उन्होने आय समाज और स्वतन्त्रता आन्दोलन के सम्बन्ध मे प्रिन्सिपल किशन सिंह आय और डा० के० सी० यादव द्वारा लिखे गये ग्रन्थ का विमोचन भी किया। यह ग्रन्थ दोनो लेखकों की ओर से दरबारी लाल जी को समर्पित किया गया।

अपने सब बच्चो को डी ए वी सस्थाओ मे शिक्षा दिलवाने वाले हरियाणा के भूतपूर्व मुख्य मन्त्री चौधरी साहब ने डी ए वी आन्दोलन की प्रशसा करते हुए कहा कि शिक्षा के क्षेत्र मे जितना काय डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति का है, यदि वह न होता तो शिक्षा के प्रसार के लिए भारत सरकार को अपने वजट मे निर्धारित वतमान राशि से भी दुगुनी राशि खच करनी पडती। उन्होने कहाकि डी ए वी सस्थाओ ने ही अपने छात्रो मे नैतिक मूल्यो और राष्ट्र भक्ति की जो भावना जगाई है, वह अद्वितीय है। उन्होने डी ए वी वालों को इस काम के लिए धन्यवाद दिया है कि उन्होने अपने कमठ कार्यकर्ता का इस प्रकार स्वागत समारोह आयोजित किया। उन्होने कहा कि जो सस्थायें अपने निष्ठावान् कर्मचारियों का उचित सम्मान नही करती वे कभी आगे नही बढ सकती।

इससे पूर्व डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के महामन्त्री श्री ज्ञान प्रकाश चोपडा ने गत सौ वर्षो के डी ए वी आन्दोलन के गौरवपूर्ण इतिहास की चर्चा करते हुए निस्वाथ भाव से काम करने वाले उन महारथियो का उल्लेख किया जिनके परिश्रम से डी ए वी का पौधा आज विशाल वटवृक्ष के रूप मे खडा हुआ है। कुलाची हसराज माडल स्कूल की प्रिन्सिपल श्रीमती सन्तोष तनेजा ने श्री दरबारी लाल के डी ए वी आन्दोलन से जुडने के बाद गत 40 वर्षो के उनके कर्तृत्व का उल्लेख करते हुए बताया कि किस प्रकार आर्य समाज और शिक्षाजगत् की सेवा करने के उद्देश्य से वे सन् 1948 मे इस आदोलन से जुडे और क्रमश धीरे धीरे लगातार ऊचे चढते हुए आज सगठन सचिव के सबसे अधिक उत्तर दायित्व पूर्ण पद तक पहुचे। उन्होने बताया कि श्री दरबारी लाल के प्रयत्न से डी ए वी ने प्रकाशन के क्षेत्र मे, प्रबन्धन और रोजगार सम्बन्धी अध्ययन के क्षेत्र मे, पिछडे वर्गो के बच्चो की शिक्षा के क्षेत्र मे और ग्राम विकास के क्षेत्र मे नये आयाम जोडे हैं। प्रत्येक डी ए वी पब्लिक स्कूल मे आय समाज की स्थापना के इनके सुझाव का यह परिणाम है कि आज डी ए वी पब्लिक स्कूलो मे 170 आर्य समाजें स्थापित हैं। श्री दरबारी लाल स्वय आय प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के कार्यकर्ता प्रधान हैं और सभा की आर्य समाज सम्बन्धी देश व्यापी गतिविधियो में सदा सक्रिय रहे हैं। उन्होने कहा कि श्री दरबारी लाल न केवल कुशल प्रशासक है, प्रत्युत कुशल सगठनकर्ता भी हैं और साथ ही इतने मिलनसार और विनम्र हैं कि जब भी कोई इनके पास अपनी कोई समस्या लेकर आता है तो वह हमेशा सन्तुष्ट होकर जाता है। श्री दरबारी लाल को सब डी ए वी स्कूलो के प्रिन्सिपलो तथा अन्य विशिष्ट व्यक्तियो के नाम जबानी याद हैं और सबके कार्यों पर उनकी सजग दृष्टि रहती है।

(दरबारी लाल)

गत वर्ष सारे साल विभिन्न स्थानो पर हुए डी० ए० वी० शताब्दी समारोहो मे जो सफलता प्राप्त हुई उसका भी अधिकाश श्रेय श्री दरबारी के अथक परिश्रम और उत्साह को है। शिक्षा के क्षेत्र मे उनकी सेवाओ का समादर करते हुए पजाब विश्वविद्यालय ने उन्हे अपना सिनेटर चुना। इसके अतिरिक्त अब देश की सीमाओ के बाहर इण्डोनेशिया, जापान, मारिशस और अमेरिका आदि मे भी उनकी योजना के अनुसार डीएवी सस्थायें खोलने की तैयारी चल रही है। डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के प्रधान प्रो० वेद व्यास जी ने जो निश्चय किया है कि इस सदी की समाप्ति तक डी ए वी पब्लिक स्कूलो की सख्या 500 तक पहुच जाये, उनके इस स्वप्न के पीछे श्री दरबारी लाल जैसे व्यक्तियो की कमठता तथा अपने अन्य साथियो की लगन के प्रति उनका विश्वास ही है।

हसराज माडल स्कूल पजाबी बाग के प्रिन्सिपल श्री तिलक राज गुप्त ने अपने काव्यात्मक भाषण से सबको प्रभावित किया। प्रिन्सिपल कृष्णसिंह आर्य और डा० यादव ने आय समाज और स्वतन्त्रता सग्राम के सम्बन्ध मे लिखी पुस्तक का सक्षिप्त परिचय दिया। चौधरी भजनलाल ने श्री दरबारी लाल

(शेष पृष्ठ 13 पर)

कैसे हम गणतंत्र मनाएं ?

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति —

भारत के गणराज्य वरो से
वचित आज हुआ जनगण।
आतनाद को करुण आह सुन
चिन्ताकुल कैसा जन मन।
निधनता-भुखमरी अभी भी,
अपना जाल बिछाए है।
अभी कुशिक्षा का दानव भी,
शोषण सुरसा-मुख बाए है।
भाग्य-विधायक नेताओं में,
होता निशिदिन भीषण द्वन्द्व।
अनुशासन को दिए तिलाजलि,
जन-जन बना यहा स्वच्छन्द।

नही कही कानून व्यवस्था,
ढीला हुआ प्रशासन है।
किंकतव्य विमूढ बना सा
आज देश का शासन है।
जनगण भरता रहता आहे,
शोषण का साम्राज्य यहा।
भ्रष्टाचार बढ़ा अतुलित है,
दानवता का राज्य यहा।
भ्रष्टाचार महगाई पीडित,
कैसे हम गणतन्त्र मनाए।
लोक शक्ति की गौरव गरिमा,
कैसे हम धरती पर लाए ?

पता—मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

सम्पादक—क्षितीश वेदालकार व्यवस्थापक—रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

सत्य और ऋत—एक दृष्टि

—गजानन्द आर्य—

'सत्यमेव जयते' यह हमारे राष्ट्र का आदर्श वाक्य है। यह मडूक उपनिषद् म लिया गया है। साधारण सस्कृत म वाक्य बनता है—सत्यमेव जयति, पर उपनिषद् मे आर्ष प्रयोग है—"सत्यमेव जयते" जिसका सरल अर्थ है—सत्य की ही विजय होनी है। प्रत्येक सरकारी विभाग की फाइलो मे 'सत्यमेव जयते, वाक्य अकित होता है। लगता है यह वाक्य कहने भर का है, क्योकि अधिकाश मे विजय असत्य की हो रही है। सवत्र छल कपट और झूठ का बोलबाला है। सच्चा व्यक्ति भूखो मरता है। कपटी व मिथ्यावादी मौज करता है। न्यायालय में झूठे गवाहो के बल पर मुकद्दमे जीते जाते हैं। सच्चरित्र व्यक्ति दुश्चरित्र के मुकाबले चुनाव हार जाता है। फिर भी हम कहते हैं—'सत्यमेव जयते'। एक ओर प्रत्यक्ष प्रमाण है दूसरी ओर आप्त शब्द। आप्त शब्द को मिथ्या कहते भी नहीं बनता। अवश्य ही हमसे कहीं भूल हुई है। वह भूल यह है कि हमारा यह वाक्य अधूरा है। हमे मानना चाहिए था "सत्यमेव जयते नानृतम्" अर्थात् सत्य की ही जय होती है, बशर्ते कि वह अनृत न हो। यहा अनृत शब्द से सत्य की कसौटी निखारना अभिप्रेत है। यदि सीधा सादा आशय होता तो कह सकते थे "सत्यमेव जयते नासत्यम्।"

ऋत और सत्य शब्द पर्यायवाची माने जाते हैं। ऋत के विपरीत शब्द हैं अनृत अर्थात असत्य। पर वेद मन्त्रो मे दोनो शब्द साथ-साथ आये हैं जैसे—
ऋत च सत्य चभिद्धात्पसो० ऋग्
ऋत वदिष्यामि सत्य
वदिष्यामि ते०आ०
ऋत च स्वाध्याय प्रवचने च।
सत्य च स्वा० तैत्तरीय०

एकार्थवाची होने पर भी एक मौलिक अन्तर है। ऋत का अर्थ यथार्थ ज्ञान है, जो कभी असत्य नही हो सकता। प्राकृतिक नियम और वेदो का ज्ञान जिसके अधीन प्राणियो की कर्म-व्यवस्था और समस्त लोक लोकान्तरो का नियमपूर्वक सचालन है—ऐसी व्यवस्था को मानना ऋत है। इसी ऋत के बल पर भूगोल और खगोल शास्त्री एव वैज्ञानिक गण अपना परीक्षण करते रहते हैं। परीक्षण मे असफल हो जाने पर उनको ऋत के प्रति कोई सन्देह नही रहता, किन्तु अपनी ही भूल माननी पडती है। इसी प्रकार ईश्वर की न्याय व्यवस्था पर विश्वास करना ऋत है। भयकर दुख और असफलता मे भी ईश्वर को दोष न देना ऋत का पालन है।

प्राणी मात्र का स्वाभाविक ज्ञान और पृथक्-पृथक् आकृति की पहचान ऋत है सूर्य-चन्द्रादि नक्षत्रो की नियमपूर्वक गति ऋत है। जल की शीतलता और अग्नि की उष्णता ऋत है। एक जाति के नर-मादा के सयोग से सतति होना ऋत है। खेत में जैसा बीज डालो वैसा ही फल आना ऋत है। इस प्रकार ऋत एक ऐसा सत्य है जिसके आधार पर मानव अपने पुरुषार्थ से सत्य का विस्तार कर सकता है। सक्षेप मे ऋत एक सूत्र है और सत्य एक प्रयोग। सत्य के प्रयोग और अन्वेषण करना मनुष्य की बुद्धि, विद्या-विस्तार और धर्म अर्थ काम मोक्ष की प्राप्ति के आवश्यक अग हैं। ईश्वर प्राप्ति और मोक्ष के लिए मनुष्य उद्योग करता आ रहा है। बीज रूप से इसका परिचय वेदो मे है। वेदानुकूल किया गया श्रम सफल हो सकता है, किन्तु मानव अपनी अलग-अलग कल्पनाओ से विभिन्न उपाय अपनाता है और अपने उपायो को भी सत्य मान लेता है। इस प्रकार का सत्य भ्रम बन जाता है। सत्य मे असत्य की मिलावट हो जाती है।

ऋत और सत्य के भेद को समझने का एक सरल उदाहरण दूध का ले सकते हैं। गौ के स्तन मे दूध है, केवल मात्र दूध है, ऐसा निश्चयात्मक ज्ञान ऋत है। स्तन से निकल जाने पर मनुष्य द्वारा सग्रह किया हुआ दूध कितना सत्य है, यही से सत्य-असत्य की भेद-मूलक धारणा बन जाती है। दूध मे जल मिल गया क्या? दूध पाऊडर का तो नही है? इत्यादि सशय इकट्ठे हो जाते है। सशय को दूर कर देने की प्रक्रिया सत्य-असत्य का निर्णय कर देने की प्रक्रिया है। असली दूध की पहचान तभी सिद्ध होगी जब विश्वास हो जाय कि दूध का गुण और स्वाद ठीक स्तन से निकले दूध जैसा है। खेत मे बोया जाने वाला बीज तभी अकुर बनेगा जब वह सही बीज होगा। बीज मे विकृति आ जाने पर अकुरित्त नहीं हो सकता। इसलिए यह एक सूत्र बन गया कि अकुरित बीज अवश्य ही यथार्थ है अर्थात् ऋत है। बीज यदि अनृत होता तो कदापि अकुरित नही हो सकता था।

शास्त्री की भाषा मे ऋत स्वत प्रमाण है, ठीक ऐसे ही जैसे वेद स्वत प्रमाण हैं। वेद ज्ञान ईश्वरीय ज्ञान है और ईश्वरीय ज्ञान ऋत है। जिस प्रकार अन्य शास्त्र परत प्रमाण हैं, उसी प्रकार सत्य परत प्रमाण है। ईश्वर ने मानव को सत्याचरण करने और सत्यासत्य के विवेक के लिए बुद्धि प्रदान की है। सत्यासत्य का निर्णय और आचरण सर्वदा करते रहने से ही सत्य बना रह सकता है, क्यो कि इसमे असत्य के मिल जाने की बहुत सभावना रहती है। इसीलिये आर्य समाज का चौथा नियम है कि सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोडने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। आर्य समाज का पहला नियम ऋत को स्वीकार करने का है।

असत्य और अनृत, सत्य और ऋत विपरीतार्थक शब्द, किन्तु एक अन्तर है दोनो मे, असत्य शब्द सत्य का विपरीत होने पर भी सत्य मे घुलमिल सकता है। कोई घटना या कोई पदार्थ ऐसा हो सकता है जिसमे आधा सच और आधा झूठ छिपा हो। सत्य असत्य का यही मिश्रण सवत्र धोखे का कारण बनता है। न्यायालय में लडने वाले दोनो पक्षो मे कुछ सच्चाई हो सकती है। वास्तविक दूध में कुछ पानी भी ठहर ही जाता है। प्रत्येक पैदा होने वाले भगवानों-पैगम्बरों और गुरुओ में कुछ चतुराई अवश्य होती है, जिसके बल पर उनकी झूठ चल निकलती है। सच और झूठ के इस मिश्रण को लक्ष्य करके ही ऋषि ने लिखा था मनुष्य का आत्मा सत्य और असत्य को जानने हारा है। असत्य सत्य में घुलमिल जाता है, पर अनृत की स्थिति बिल्कुल भिन्न है अनृत में ऋत लेश मात्र नहीं हो सकता। अनृत का अर्थ है ईश्वर नियम के प्रतिकूल, प्रकाश मे अन्धकार नहीं समा सकता। उसी प्रकार ऋत मे अनृत का स्थान कदापि नहीं है। अनृत के इस अर्थ को जान लेने पर 'नानृतम्" का तात्पर्य बहुत सुगम हो जाता है। सत्य की परिभाषा सकीर्ण न होकर विस्तृत हो जाती है। तब हम समझ सकते हैं कि सत्य केवल वही नही है जो हम वर्तमान में देख रहे हैं। हमारी दृष्टि और ज्ञान अल्प हैं, क्योंकि हम अल्पज्ञ हैं। सर्वज्ञ व्यवस्थापक की व्यवस्था मे त्रुटि नही हो सकती। ऐसा निश्चय होने पर हमारा समझना सार्थक होता है—"सत्यमेव जयते नानृतम्"। भौतिक जगत् मे दक्षता प्राप्त करने वाले वैज्ञानिक तथा चिकित्सकगण ईश्वर प्रदत्त ऋत के कायल हैं। उन सबके परीक्षण-प्राकृतिक नियमो को आधार मानकर होते हैं।

इसी प्रकार का अटल निश्चय व विश्वास ईश्वर की न्याय व्यवस्था पर होने के पश्चात् किसी का छल कपट द्वारा समृद्ध बन जाना अथवा झूठे मुकद्दमे जीत लेना कुछ महत्व नही रखता। खोटे अथवा अच्छे कर्मों का भुगतान अवश्य होगा। इस एक धारणा को हृदयगम कर लेना सत्यमेव जयते को सार्थक बनाता है। जिस सत्य में ऋत नही है, वह सत्य कभी नही हो सकता। महर्षि ने सस्कार विधि मे—गृहस्थियो को चेतावनी दी है कि मनुष्य निश्चय करके जाने कि इस ससार मे जैसे गाय की सेवा का फल (दूध आदि) शीघ्र नही होता वैसे ही अधर्म से किये गये कार्यों का फल भी शीघ्र नही होता। अधर्मकर्ता के सुखो का धीरे-धीरे क्षय होता जाता है और एक दिन सब सुखो से वचित होकर दुख ही दुख भोगता है। मनु॰ 4/172

यदि अधम द्वारा प्राप्त सुखो का दुष्फल वर्तमान जीवन मे न मिले तो उसके पुत्रों को, यदि पुत्रो को भी न मिले तो पौत्रों के समय मे अवश्य प्राप्त होता है, किन्तु यह कभी नहीं हो सकता कि कर्ता का किया हुआ कर्म निष्फल हो जावे। मनु० 4/173

ईश–वन्दना

—स्व० वागीश्वर विद्यालकार—

दयाकर हे दयामय देव! आओ।
सुभग इस दीन कुटिया को बनाओ॥
कहा मैं नाथ दोनो हाथ खाली।
कहा तुम हो सकल सम्पत्तिशाली॥
न आडम्बर बडे मैं कर सकूगा।
तुम्हे भगवन् न इसकी चाह ही है,
न इसकी कुछ मुझे परवाह ही है॥
प्रभो! अब कामना अतिम यही है,
हृदय अपना बना आसन बिठाऊ।
तुम्हे तब प्रेम से उस पर रिझाऊ॥
वहा पर स्नेह का दीपक जलाऊ।
हुआ लवलीन मीठे गीत गाऊ॥
निरतर भक्ति के आसू बहाऊ।
तुम्हारे पाद पकज यो धुलाऊ॥
मधुर नैवेद्य पुष्पो का चढाऊ।
करू तन-मन न्यौछावर सिर झुकाऊ॥
बना श्रद्धा-सुमन का हार लाऊ,
तुम्हारे कण्ठ में सादर पिन्हाऊ।
कृपाकर हे! अब कृपा के सिन्धु! आओ।
सफल मेरे मनोरथ कर दिखाओ॥

सुभाषित

एक भूमिपति करोति सचिव राज्ये प्रमाण यदा,
तं मोहाच्छ्रयते मद स च मदाद् दास्येन निर्विद्यते ।
निर्विण्णस्य पद करोति हृदये तस्य स्वतन्त्रस्पृहा,
स्वातन्त्र्यस्पृहया तत स नृपते. प्राणेष्वभिद्रुह्यति ॥

—पचतन्त्र

जब राजा अपने किसी मन्त्री को सर्वाधिकार दे देता है तो वह मन्त्री अज्ञान में पड अपनी सत्ता के मद मे चूर हो उठता है वह अपने आपको केवल एक अधीनस्थ अधिकारी समझने को तैयार नहीं होता, तब वह स्वतन्त्र होने की इच्छा करने लगता है और स्वतन्त्र होने की इच्छा के कारण राजा के प्राणो के प्रति भी द्रोह करने लगता है ।

सम्पादकीयम्

स्वागत हे गणराज्य तुम्हारा!

हे गणराज्य दिवस ! इस ठिठुरती सर्दी मे तुम आए हो, तुम्हारा स्वागत है। मौसम भले ही ठिठुरा देने वाला हो, परन्तु तुम्हारी अगवानी का उचित वातावरण तैयार करने के लिये तुम से पहले बसन्त पचमी भी आ गई। वह यह सन्देश दे गई कि अब सर्दी से कांपने के थोडे ही दिन शेष रह गये हैं और बसन्त ऋतु आने वाली है। तब धरा हरीतिमा और रग बिरगे फूलो से पट जायेगी और मौसम सुहावना हो उठेगा। ऋतुराज बसन्त की इस लुभावनी तसवीर की आशा मे पतझड़ का कुछ ही दिन का मेहमान यह हेमन्त भी विदा हो जायेगा और ऐसा सुखद वातावरण छा जायेगा कि उसको देखकर पशु-पक्षियो सहृदयो और कवि जनो की वाणी अनायास आल्हाद से मुखरित हो उठेगी। बसन्त की उस आशा मे भारत की जनता इस ठिठुरन को भी खुशी-खुशी झेल लेगी ।

15 अगस्त को स्वाधीनता दिवस आया था, आज 26 जनवरी को तुम आये हो ! तुम उसके अनुज हो न स्वाधीनता दिवस से लगभग तीन साल छोटे—वह सन् 1947 मे आया था, तुम सन् 1950 में। वह केवल लाल किले के प्राचीर पर राष्ट्रीय ध्वज के आरोहण तक सीमित रह गया और तुमने गणराज्य दिवस की परेड के नाम से ऐसा राजसी वैभव अपने साथ समेट लिया कि उसे देखने को देश की जनता टूट पडी। प्रथम गणराज्य दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद की छ घोडों की बग्गी पर निकली सवारी को जिसमे उस बग्गी के सिवाय और कोई तामझाम नहीं था, जिन्होंने अपनी आखो से देखा है वे आज की इस ठाठ बाठ भरी वैभवशाली परेड की कल्पना कहा कर सके होगे। तुम्हारा आगमन लगातार आगे बढते राष्ट्र की विकासशीलता का और समृद्धि का प्रतीक बन गया है। इस राजसी परेड को देखकर अपने राष्ट्र की वर्तमान और भावी समृद्धि तथा शक्ति का सकेत भी मिलता है ।

भारत को गणराज्य घोषित करते समय जो लोकतन्त्रीय प्रणाली हमने स्वीकार की थी उसके जहा कुछ वरदान हैं, वहा कुछ अभिशाप भी। लोकतन्त्र का सारा आधार क्योंकि लोक है, तन्त्र नहीं, इसलिये जब-जब लोक पर तन्त्र हावी होने लगता है तो लगता है कि इस लोकतन्त्र से तो अधिनायक तन्त्र को अपना लेना कही अधिक अच्छा होता। अधिनायक तन्त्र मे कामो का अजाम देने में सहूलियत होती है इसलिये विकास की गति भी तेज हो सकती है। परन्तु लोक के बल पर चलने वाला तन्त्र इतनी तेजी से नहीं चल सकता। यही उसका अभिशाप है। परन्तु इस अभिशाप को भी हम बहुत बडा वरदान मानते हैं। हमे किसी अधिनायक के आदेश से द्रुतगति से हुआ विकास नहीं चाहिये। हमे अपने पुरुषार्थ से अर्जित —भले ही उसमें कुछ विलम्ब क्यो न हो जायें—विकास की ही आकांक्षा है क्योकि उसमे हमारा अपना सक्रिय योगदान होगा। जबरदस्ती ठूसा गया या भीख मे माग कर खिलाया गया हलवा हमे नहीं चाहिये उमसे हमारे आत्म गौरव की हानि ही होगी।

लोक लाज के बिना लोक राज नही चलता। परन्तु जब लोकतन्त्र के नेताओ की आंखो में शर्म और हया नहीं रहती, तब वे लोक मानस की भावनाओ का निरादर करने से भी नहीं चूकते। भले और बुरे की पहचान के लिए एक कसौटी यह है कि जिस काम को करने में भय, शका और लज्जा का सामना करना पड वह काम नहीं करना चाहिए और जिस काम को करने में उत्साह आनन्द और प्रसन्नता का अनुभव हो उसे करने मे कभी हिचकना नहीं चाहिए। सत्य और असत्य के विवेक की यह एक ऐसी कसौटी है जो परमात्मा ने प्रत्येक मनुष्य के हृदय मे स्थापित कर दी है। धर्म और अधर्म के विषय में असली कसौटी मनुष्य का अपना अन्त करण ही है और उसी अन्त करण के माध्यम से धर्म के सार के रूप में इस सिद्धात की स्थापना हुई है—

आत्मनः प्रतिकूलानि परेषा न समाचरेत् ।

—अर्थात् अपनी आत्मा के विपरीत दूसरो से आचरण नही करना चाहिए। धर्म-अधर्म तथा कर्तव्य और अकर्तव्य के सब नियम उपनियम इसी एक कसौटी पर कसे जा सकते हैं। मनुष्य के अपने अन्त करण से बढ़कर ससार का कोई न्यायालय भी नहीं है। अगर मनुष्य मात्र की आत्मा मे ऐसी समान सवेदनशीलता न होती तो कभी सही मानवता विकसित न होती। सत्य, सत्य इसीलिये है क्योकि ससार के प्रत्येक मानव का आत्मा उसे सत्य के रूप मे ग्रहण करती है। इसीलिये सत्य कभी खण्डित नहीं होता, वह सार्वभौम है। धर्म के जितने शाश्वत सिद्धान्त हैं वे स्वय मानव की आत्मा से उद्भूत हैं। इसलिए उनमे प्रदेश-विशेष और काल-विशेष से अन्तर नहीं पडता। काल और प्रदेश के हिसाब से जो सिद्धात बदल जाते हैं वे कुछ लोगों की मान्यतायें हो सकती हैं, परन्तु शाश्वत सत्य की कोटि मे नही आ सकते।

परन्तु मनुष्य के अन्त करण पर भी जब धीरे धीरे राग द्वेष आदि के मलों का आवरण चढ़ने लगता है तब मनुष्य का अन्त करण भी इतना कलुषित हो सकता है कि वह मानव को सही दिशा-निर्देश न दे सके। लोकतन्त्र के जिन नेताओ के मन मे से लोकलाज का भय निकल गया है वे इसी कोटि में आते हैं। शायद कोयले की कोठरी मे रहते रहते कालिमा ने उनके धवलिमा को ढक लिया है। भारतीय सस्कृति ने हमेशा 'आवाजे खल्क को नक्काराये खुदा' समझा है। हमने जनता-जनार्दन के विवेक पर विश्वास किया है इसीलिए तन्त्र को लोक के प्रति उत्तरदायी माना है। लोक पहले विद्यमान रहता है, वही अपने ऊपर शासन करने वाले तन्त्र का चुनाव करता है इसलिये लोक स्थायी है, तन्त्र अस्थायी। लोक चाहे तो तन्त्र को बदल सकता है, तभी तो वह लोकतन्त्र कहलाता है। पर जब राज्य को अपनी बपौती समझने वाले या राजा में ईश्वरीय अश की कल्पना करने वाले लोग तन्त्र के दिमाग में यह भुस भर देते हैं कि जनता तुम्हारी गुलाम है और तुम उसके मालिक हो तब तन्त्र को जनता जनार्दन के आवाज मे खुदा की आवाज सुनाई नही देती। तब तन्त्रस्थ लोग अपनी आवाज को ही "नक्काराये खुदा" मानने लग जाते हैं।

समाज के प्रति गैर जिम्मेदारी की यह भावना हमने पश्चिम की राजनीति से सीखी है। हम यह समझने लगे हैं कि शासक को बिना लोक की चिन्ता किये अपनी मर्जी चलाने का अधिकार है और लोक का काम केवल इतना है कि वह गर्दन झुकाकर चुपचाप तन्त्र के चाबुक से हाके जाना बर्दाश्त करता रहे। इस पद्धति में सरकार कानून बनाती है और उन कानूनो पर चलने का वचन देती है परन्तु जब अपने बनाये कानून पर वह खुद नही चल पाती या नही चलना चाहती तो उसके मन मे कोई मलाल नहीं होता। गनीमत यही है कि अभी न्यायालय मौजूद हैं और सरकार के कानूनो की व्याख्या करना उनका उत्तरदायित्व है। ऐसे भी अवसर आते हैं जब किसी भी कानून का सही ढग से पालन न करने के लिये न्यायालय सरकार को फटकारते हैं। परन्तु तब सरकार अपनी साख बचाने के लिये सविधान मे ही सशोधन कर देती है या कानून को इस तरह सशोधित कर देती है कि आगे से सरकार पर अंगुली न उठाई जा सके। कानूनो की अवहेलना होने का कारण और क्या है ?

अभी हाल में ही कानपुर मे गगा के प्रदूषण के विरुद्ध उच्चतम न्यायालय मे याचिका दी गई तब न्यायाधीशो के सामने यह बात आई कि इस औद्योगिक शहर की जितनी औद्योगिक इकाइया हैं उनसे प्रतिदिन 27 करोड लीटर गद गगा मे गिरता है। तभी पतित पावनी के नाम से विख्यात गगा का जल भी प्रदूषित होकर अपेय होने से बच नही सका। अब न्यायाधीशो ने यह आदेश दिया है कि किसी शहर मे किसी ऐसे उद्योग की स्थापना की या उसे चलने की अनुमति न दी जाये, जो वायु और जल को प्रदूषित करने वाले अपने रासायनिक उच्छेषो को स्वय नियन्त्रित न कर सके। ऐसा कौन-सा शहर है जिसमें भाति भाति के उद्योग भी चलते हो और उसके कल कारखाने नदियो और वायुमण्डल को प्रदूषित न करते हो। एक तरफ हम गगा को प्रदूषण मुक्त करने के लिये करोडो रुपये की योजनायें बनाते हैं परन्तु ऐसी व्यवस्था नही करते कि प्रदूषित हो ही न। बीमारी का असली इलाज औषधि या इन्जेक्शन के द्वारा शरीर को अप्राकृतिक अवस्थाओ से गुजारना नही, बल्कि पथ्य और अहतियात ही सही उपचार है जिसे अग्रेजी की कहावत मे हम कहते हैं—'प्रिकोशन इज बैटर दैन क्योर'

भारत की प्राचीन परम्परा के अनुसार समाज ने जिस पद्धति को स्वीकार किया था, उसमे वेद और लोक दोनो का समान दर्जा था और उसका विधान ऐसे ऋषि मुनि तैयार करते थे जिनका लोकहित के सिवाय अपना कोई स्वार्थ नही होता था। वे लोक के सच्चे प्रतिनिधि होते थे। यदि किसी विषय मे धर्म शास्त्र मूक हो, तो वे लोक को, और लोक के सर्वसामान्य अन्त करण को, कसौटी मानकर जो कायदे कानून बनाते थे, राजा का काम उनका परिपालन था, न कि अपने बनाये हुए कोई कानून जनता पर थोपना। तब तन्त्र लोक के प्रति जिम्मेवार होता था। तन्त्र का निर्माण था ही इसलिये कि वह लोक को मर्यादा मे रख सके न कि स्वय उन मर्यादाओ का उल्लघन करे। वायु और जल तथा पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्त रखना सबसे बडी लोक मर्यादा थी। उसकी अवहेलना का अधिकार किसी को नही था। बल्कि यज्ञो को नित्यकर्म में शामिल भी इसी उद्देश्य से किया गया था कि पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्त रखा जा सके ।

हे गणराज्य दिवस ! तुम आये हो, ऋतुराज बसन्त के आगमन की सूचना लेकर आये हो। हमारी जनता अपने अतिथि प्रेम के लिये मशहूर है। हे लोक राज्य के महोत्सव ! तुम्हारे स्वागत में यह भूखा भारत अपने पलक पावडे बिछाये खडा है। अपनी रूखी-सूखी से तुम्हारा स्वागत सहर्ष करने को तैयार है। पर लोक के जिस वर्ग को यह रूखी-सूखी भी नसीब नही, उसके नसीब पर भी रहम करना और अगर ले तुम्हारे स्वागत के लिये इतना ही कारण बहुत है कि तुम भावी बसन्त का सन्देश तो लेकर आये हो। हे गणराज्यदिवस ! तुम्हारा स्वागत है, भूरि भूरि स्वागत है।

प्रश्न है राष्ट्र की पहचान का

—लालकृष्ण अडवाणी ससद सदस्य—

यह देश का दुर्भाग्य है कि श्रीराम-जन्मभूमि का उद्धार स्वतन्त्रता-प्राप्ति के आरम्भिक वर्षों मे नही किया गया और इस विवाद को चालीस वर्षों तक अनिर्णीत रहने दिया गया है।

1947 में देश विभाजन का आधार था—मुस्लिम बहुमत और हिन्दू बहुमत। पाकिस्तान मुस्लिम बहुल था, अत उसने अपने सविधान को मजहबी रूप दिया। भारत हिन्दू बहुल था, अत उसने ऐसा सविधान स्वीकार किया, जिसमे शासन किसी मजहब या मत-विशेष से सम्बन्धित नही होगा और सभी नागरिको को वे चाहे जिस मजहब के मानने वाले हो—समान अधिकार प्राप्त होगे। मूल सविधान मे 'सेक्युलर' (धम निरपेक्ष) शब्द का कहीं प्रयोग नही किया गया था। कालान्तर में पथोपपन्थ से परे समान नागरिकता की इसी कल्पना को 'सेक्युलरवाद' की सज्ञा दी जाने लगी।

1947 में हिन्दू व मुसलमानों मे सम्बन्ध अत्यधिक कटु थे। पाकिस्तान द्वारा अपने को इस्लामी राज घोषित करने के बावजूद यदि भारत ने 'सेक्युलरवाद' अपनाया, तो इसका प्रमुख कारण यह था कि हिन्दू राज्यशास्त्र ने, हिन्दू इतिहास ने, मजहबी राज्य की कल्पना को कभी स्वीकार नहीं किया।

भारतीय 'सेक्युलरवाद' पर डोनाल्ड यूजीन स्मिथ नामक एक अग्रेजी लेखक ने एक उत्तम ग्रथ लिखा है, जिसमे उन्होने इस विषय में गाधी जी और नेहरू जी के सवथा भिन्न दृष्टिकोणो का इन शब्दो में विवेचन किया है—

'गाधी एक धार्मिक पुरुष थे जो सभी धर्मों की सत्यता मे विश्वास करते थे, इस विश्वास के साथ मेल खाने वाला राज्यशास्त्र ही उन्हें स्वीकाय था, इसीलिए उन्होने 'सेक्युलर' राज्य माना था। नेहरू का आरम्भिक बिन्दु एक ऐसे व्यावहारिक राजनैतिक चिन्तन और नेता का था जो धर्म को प्राय असत्य मानते थे, किन्तु जो लोकतन्त्र के स्वस्थ सचालन के लिए सभी (मतावलम्बियों) को अपने अपने विश्वासो पर चलने की स्वतन्त्रता आवश्यक मानते थे। उनके 'सेक्युलरवाद' का आधार यही था।'

भारत यदि 'सेक्युलर' बना, तो इस कारण कि वह हिन्दू-बहुल था। इस सचाई का भी समझना चाहिए कि हिंदू बहुल भारत ने जिस 'सेक्यूलरवाद' को स्वीकार किया उसका नेहरू जी के 'आस्तिकताविहीन सेक्युलरवाद' से कोई सम्बन्ध नही था और न ही 'सेक्युलरवाद' का अर्थ था भारत के हिन्दू इतिहास और मूल हिन्दू परम्परा की अवमानना।

दो दृष्टिकोण

स्वतन्त्र भारत के पहले गवर्नर जनरल श्री राजाजी, पहले राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद और पहले गृहमन्त्री सरदार वल्लभभाई पटेल इस विषय में गाधी जी के मत के थे। आजादी के आरभिक वर्षो में ही एक ऐसा प्रसग उत्पन्न हुआ, जिसने इन दो दृष्टिकोणो के टकराव का रूप धारण कर लिया। टकराव के इस प्रकरण का सम्बन्ध गुजरात के सोमनाथ मन्दिर से था। प्रभास पत्तन के ऐतिहासिक नगर मे समुद्र तट पर स्थित इस मन्दिर के उत्थान पतन की रोमाचक गाथा आज के सन्दभ में भी बहुत शिक्षाप्रद है। लगातार 700-800 सालो तक सोमनाथ मन्दिर बार-बार विदेशी आक्रमणकारियों का कोपभाजन बनता रहा। मन्दिर में प्रतिष्ठित ज्योतिलिंग अनेक बार टूटा और अनेक बार पुन प्रतिष्ठापित हुआ। सोमनाथ पर पहला हमला ग्यारहवीं शताब्दी में हुआ। सन् 1025 ईसवी मे महमूद गजनवी ने एक विशाल सेना लेकर प्रभास पर हमला किया। शिवलिंग को टुकडे-टुकडे कर, मन्दिर को लूट लिया और बाद मे उसे आग लगा दी। कुछ वर्ष बाद सौराष्ट्र के दो राजाओ भोज और भीम ने मिलकर मन्दिर का पुर्ननिर्माण करवाया। सन् 1297 में अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति आसफ ने दूसरी बार इसका विध्वस किया। मन्दिर के स्थान पर मस्जिद बनवा दी। कुछ वर्ष बाद इतिहास फिर पलटा। जूनागढ़ के चूडासामा नरेश महिपाल ने और उसके पुत्र राखेंगार ने मन्दिर का पुर्ननिर्माण कराया और शिवलिंग की स्थापना की। कहते हैं कि सन् 1693 में जफर खां ने फिर उसे नष्ट कर उसके स्थान पर मस्जिद खडी करवा दी।

मन्दिर के अपकर्ष का यह सिलसिला 18वीं शताब्दी तक चलता रहा। सन् 1701 में औरगजेब ने गुजरात के सुबेदार शाहजादा मोहम्मद आजम को आदेश दिया कि 'सोमनाथ मन्दिर को ऐसे नष्ट करो कि उसके फिर खड़े किये जाने की कोई सम्भावना शेष न रहे।' सन् 1706 मे इस आदेश के पालन से सोमनाथ मे महाभयकर विध्वस हुआ। औरगजेब के आदेश से फिर वहां एक मस्जिद खडी हो गयी।

इस घटना के एक वर्ष बाद ही सन् 1707 मे, औरगजेब की मृत्यु हुई और मुगल सल्तनत का बिखराव आरम्भ हो गया। मराठो ने अब गुजरात पर कब्जा किया, तब सन् 1783 मे इन्दौर की रानी अहिल्या ने मन्दिर के मूल स्थान से कुछ हटकर एक छोटा-सा मन्दिर बनवाया। सन् 1838 मे अग्रेजों ने मन्दिर स्थल पर अपनी तोपें खडी कर दीं। श्री कन्हैयालाल मुशी ने अपनी पुस्तक 'सोमनाथ' व 'श्राईन इटर्नल' में इस पूरे इतिहास का सविस्तर वर्णन करते हुए लिखा है कि जब 1922 में वह (श्री मुशी) वहां गए तो उन्होंने उसे घुडसाल के रूप मे पाया।

जूनागढ गुजरात का एक रजवाडा था, जिसके नवाब ने 1947 मे स्वतन्त्रता प्राप्ति के अवसर पर घोषणा की कि उन्होने अपना विलय भारत के साथ नही, पाकिस्तान के साथ करने का निश्चय किया है। जूनागढ़ मे एक गुस्से की लहर दौड गयी। जनता ने नवाब की घोषणा को चुनौती दी और विद्रोह का बिगुल बजा दिया। श्री सामलदास गांधी के नेतृत्व में एक सामानांतर सरकार भी बनाई गई। कुछ समय सघर्ष चला। एक रात नवाब साहब अपने जेवरात, अपने कुत्ते आदि समेटकर पूरा बोरिया-बिस्तर बाधकर, पाकिस्तान भाग खडे हुए। कुछ ही दिनो में जूनागढ़ का विधिवत् भारत मे विलय हो गया।

सोमनाथ की घोषणा

नवम्बर 1947 मे जब विलयोपरांत सरदार पटेल जूनागढ़ आए, तब उन्होंने पहला काम यह किया कि प्रभास पत्तन आकर एक सार्वजनिक सभा में घोषणा की कि सोमनाथ मन्दिर जीर्णोद्धार कर शिवलिंग की पुनर्स्थापना की जाएगी।

श्रीराम-जन्मभूमि के बारे में अदालत के निर्णय के बाद मुस्लिम लीग आदि कुछ सस्थानों ने बाबरी मस्जिद समिति बनाकर एक आन्दोलन शुरू किया है। उनकी मांग है कि अदालत का निर्णय बदल दिया जाए और श्रीराम-जन्मभूमि के स्थान पर बाबर द्वारा बनायी गई मस्जिद उन्हें सुपर्द की जावे। इसी माग के समर्थन में नई दिल्ली के बोट क्लब पर उन्होने एक विशाल रैली आयोजित की, जिसमें वक्ताओं ने बहुत उत्तेजनात्मक भाषण दिए।

सन् 1947 में सोमनाथ मन्दिर के विषय में किसी कोर्ट ने निर्णय नहीं दिया था। गृहमन्त्री ने घोषणा की थी और पण्डित नेहरू की अध्यक्षता में हुई केन्द्रीय मन्त्रीमण्डल की एक बैठक ने इस घोषणा को सरकारी निर्णय का रूप दिया था। यदि उस समय कोई सस्था या नेता 'औरगजेबी मस्जिद समिति' बनाकर शासन के इस निर्णय का विरोध करते और माग करते कि वहा मन्दिर नहीं, औरगजेब द्वारा बनाई गई मस्जिद फिर खडी की जाए, तो निसदेह सारा देश उसे धिक्कारता।

कुछ लोगो का सुझाव है कि शांति स्थापना के लिए अयोध्या के इस पवित्र स्थान को एक 'सरक्षित स्मारक' (प्रोटेक्टेड मोनुमेंट) घोषित कर दिया जाए। उल्लेखनीय है कि 1947 मे भी भारत सरकार के पुरातत्व विभाग ने सोमनाथ मन्दिर के सन्दर्भ में यही सुझाव दिया था। सरदार वल्लभभाई पटेल की प्रतिक्रिया बोधप्रद है। उन्होंने विभाग को कहा "मन्दिर के विषय में हिन्दू भावना तीव्र भी है और व्यापक भी।" आज की स्थिति मे केवल मन्दिर का ढाचा खडा करने से या मन्दिर की आयु को बढाने मात्र से, इस भावना का समाधान नहीं होगा। प्रतिमा की पुनर्स्थापना हिन्दू जनता के लिए सम्मान और भावना का विषय होगा।

डा० कन्हैयालाल मुशी ने अपनी पुस्तक 'पिलग्रिमेज टु फ्रीडम' में इस प्रकरण का उल्लेख करते हुए लिखा है "मन्त्रिमण्डल के निर्णय के बाद सरदार पटेल महात्मा गांधी से मिले और उन्हें निर्णय से अवगत करवाया। गांधीजी ने प्रस्ताव को आशीर्वाद दिया किन्तु योजना मे एक सशोधन सुझाया। सरकार के निर्णय के अनुसार नये सोमनाथ मन्दिर पर होने वाला पूरा व्यय सरकार देने वाली थी, गाधी जी ने सुझाया कि यह धनराशि जनता से प्राप्त करनी चाहिए। सरदार ने गांधी जी का सुझाव मान लिया और मन्दिर के लिए एक ट्रस्ट बना दिया।

मन्दिर का विधिवत् जीर्णोद्धार सरदार पटेल के हाथों 1951 में होना तय था। 1 दिसम्बर 1950 में सरदार पटेल का देहान्त हो गया। 1951 के आरम्भ में ट्रस्ट की ओर से डा० मुन्शी

(शेष पृष्ठ 10 पर)

महात्मा गांधी ने 'सेक्युलरवाद' इसलिए अपनाया क्योंकि वे सभी धर्मों मे सत्य का निवास मानते थे, पर नेहरू का राजनीतिक चिन्तन धर्ममात्र को असत्य मानता था अत स्वस्थ लोकतन्त्र के लिए सभी मतावलम्बियों को अपने विश्वासों पर चलने की छूट देना उन्हें आवश्यक लगता था।

11वीं शताब्दी से लेकर 18वीं शताब्दी तक सोमनाथ के मन्दिर का बारम्बार विध्वस होता रहा। सन् 1922 में मन्दिर के स्थान पर केवल एक घुडसाल थी। अन्त मे, सन् 1947 में जूनागढ़ के भारत में विलय के पश्चात् सरदार पटेल ने इस मन्दिर के पुनरुद्धार की घोषणा की। इस पुनरुद्धार के लिए सरकार के बजाय जनता से धन एकत्र किया गया और प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद ने उसका विधिवत् उद्‌घाटन किया।

प्रश्न केवल इतिहास का या मन्दिर और मस्जिद का नहीं है। प्रश्न है राष्ट्र की अस्मिता का। एक भारतीय नागरिक अपने आपको भारतीय देवता से जोड़े या विदेशी हमलावार से? इस प्रश्न का उत्तर हिन्दू को भी देना है, मुसलमान को भी।

राजनीति का भारतीयकरण

इस ह्रासोन्मुख समाज का क्या करें !

—डा भवानीलाल भारतीय—

'आर्य जगत्' के 13 दिसम्बर के अंक में प्रकाशित 'राजनीति का भारतीयकरण' लेख विचारोत्तेजक है ? लेख के पूर्वार्द्ध में भारत में अल्पमत और बहुमत की समस्या का लेखक ने तर्क पूर्ण विवेचन किया है, जिससे अल्पमत होने की कोई बात ही नहीं है। उत्तरार्द्ध मे मेरे एक लेख में उठाये कतिपय बिन्दुओ पर टिप्पणी की गई है जिसका स्पष्टीकरण आवश्यक है। तब मैंने आर्य समाज के सभासद को अपने मन पसन्द राजनैतिक दल में जाने की छूट की बात कही तो मेरा यह कदापि अभिप्राय नहीं था कि, वह किसी ऐसे दल में भी जा सकता है जाकर उसे वैदिक सिद्धान्तों की अवहेलना या हनन करने की छूट मिले। यदि कोई आर्य समाजी कांग्रेसी बन कर अजमेर के ख्वाजा साहब की दरगाह पर चादर चढ़ाये या महाराष्ट्र के गणपति उत्सव पर गणेश की प्रस्तर या मिट्टी की प्रतिमाओं पर फूल चढ़ाये, तो मेरी दृष्टि में वह दयानन्द का अनुयायी कहलाने का अधिकारी नहीं है। इसी प्रकार कोई आर्य समाजी मार्क्सवादी कम्युनिस्ट बनकर ईश्वर और धर्म का उपहास करे तो वह आर्य समाजी ही कहां रहेगा ? अत निश्चय ही उसे ऐसे दल को चुनना होगा जिसका आर्य समाज की धार्मिक मान्यताओं से विरोध न हो।

विभिन्न राजनीतिक दल

अब भारत में ऐसे दल कौन से हैं, यह मेरे विचार की परिधि में नहीं आता, क्योंकि मैं स्वय एक गैर राजनीतिक व्यक्ति हू।

हिन्दू महासभा और भारतीय जनता पार्टी की निश्चेष्टता और अप्रासंगिता पर टिप्पणी करना भी मेरे लेखन के दायरे मे नहीं आता। हां यह सत्य है कि स्वामी श्रद्धानन्द और लाला लाजपतराय जैसे तेजस्वी आर्य पुरुष कांग्रेस द्वारा अपनाई गई हिन्दू विरोधी और मुस्लिम तुष्टिकरण की नीतियों से खिन्न होकर ही हिन्दू सभा की ओर उन्मुख हुए थे। किन्तु वहा भी उन्हें निराशा ही हाथ लगी। जब स्वामी श्रद्धानन्द ने शुद्धि के कार्यक्रम को हिन्दू महासभा द्वारा मान्यता प्रदान करवाई तो पुरी के तत्कालीन शकराचार्य भारती कृष्ण तीर्थ ने मद्रास मे भाषण देते हुए कहा कि शुद्धि को हिन्दू सभा में मान्यता दिलवा कर आर्य समाज अपनी शक्ति का ही प्रसार कर रहा है। मालवीय जी जैसे उदार सनातनी नेता भी शूद्रों को वेदाधिकार देने, उन्हें यज्ञोपवीत देने अथवा मंदिर प्रवेश जैसे मसलों पर कट्टर रूढ़िवादी दृष्टिकोण अपनाये हुए थे। अत स्वामी श्रद्धानन्द का हिन्दू महासभा से शीघ्र ही मोह भंग हो गया।

मेरी तो यह मान्यता है कि इन सस्थाओं का घटाटोप ही भयकर है, वे वास्तविक अर्थ में हिन्दू हितो की कितनी रक्षा कर सकी हैं, या कर सकेंगी, यह सर्वथा शकास्पद है। दयानन्द का अनुयायी होने के नाते गगा जल के घडो का जुलूस निकलवाने और रामजन्म भूमि के लिये राम और सीता के रथों को देश भ्रमण कराने में मेरा कतई विश्वास नही है। मेरे जैसे लाखों आर्यसमाजियों के लिये राम और कृष्ण की जन्मभूमि का ऐतिहासिक स्मारक से अधिक महत्व नही है। वहा राम मंदिर बनाये जायें और राम जानकी की मूर्तियो का पूजन आरम्भ हो, पूजन आरभ हो, कम से कम षडशोपचार कोई सच्चा आर्यसमाजी तो यह हरगिज नही चाहेगा। अब प्रश्न है बाबरी मस्जिद और रामजन्म भूमि पर किस वर्ग का स्वत्व रहे। निवेदन है कि शताब्दियों से हिन्दुओ की निबलता के कारण ही उनके मठो, मदिरों, तीर्थों पुण्य स्थानो का विध्वस होता रहा है, उसके लिये रोना धोना हमने बहुत कर लिया। हमें इस समस्या का कोई तर्क सम्मत समाधान अवश्य निकालना चाहिए। मुस्लिम साम्प्रदायिकता और सैयद शहाबुद्दीन के तास्सुबी रवैये के आगे आत्मसमर्पण की तो बात ही नही उठती। कांग्रेसी सरकार मे जो हिन्दुओं का बहुमत है, उसका विवेक क्यो नहीं नहीं जागृत होता, और इन नेताओं को सत्ता दिलाने वाला हिन्दुओं का विशाल मतदातावर्ग अपने इन प्रतिनिधियों को इस बात के लिये विवश क्यो नहीं करता कि वे ऐसे मर्म को छूने वाले विस्फोटक प्रश्नों का कोई तर्क सगत समाधान ढूढें। राष्ट्रघात करने वाली किसी सस्था मे यदि कोई आर्य सदस्य प्रविष्ट होता है तो उसे सरक्षण देने का भी कोई प्रश्न ही नहीं है।

उत्तरदायी कौन ?

देश मे यदि राजनीति का महाशून्य उत्पन्न हो गया है तो इसकी जिम्मेदारी इस देश के विशाल हिन्दू बहुमत पर ही है। आर्य समाज तो सख्या की दृष्टि से खुद नितान्त अल्पमत में है। हा, उसके चिन्तन की प्रखरता निर्विवाद है। किन्तु उस समाज के लोगो की राजनैतिक आस्थायें भी शतधा विभक्त हैं, अत वे इस महाशून्य को कैसे भरें ? हमें यह भ्रम अपने मन से निकाल देना चाहिए कि आर्य समाज सकुचित अर्थ मे धार्मिक सस्था है।

किन्तु यदि आर्य समाज अपने राजनैतिक दायित्व से मुह मोड़ लेता है तो वह श्रद्धानन्द लाजपतराय, भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, भाई परमानन्द जैसे देश के लिये सर्वस्व बलिदान करने वालो की जमात को ही पैदा नहीं कर सकता था। सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास और उसमें वर्णित राजधर्म प्रकरण से विमुख होने का भी कोई प्रश्न नहीं है। यदि भारत के आर्य समाजी इस देश के हित के लिये अपना कोई राजनैतिक मच बनायें तो उन्हे रोकता कौन है ? विगत काल में ऐसे कई प्रयोग हुए, किन्तु सभी असफल हो गये। जनसघ के पहले प० बुद्धदेव विद्यालकार की अध्यक्षता मे भारतीय लोक सघ बना। इसके विधान की प्रति और इसके सस्थापक सदस्यों के नाम मेरे पास हैं। यह विशुद्ध आर्यसमाज का प्रयास था। उसके पश्चात् यदि मैं भूलता नहीं हू, तो इस शती के छठे दशक मे 'भारतीय लोक समिति' बनी। इसमें भी प० रामचन्द्र देहलवी और प० राम गोपाल शास्त्री (वैद्य) जैसे अनेक सक्रिय आर्य समाजी थे। राजाय सभा बनाने के तो न जाने कितने प्रस्ताव पास हुए, समितियां बनीं और उनका क्या परिणाम रहा, यह किसी से अविदित नहीं है। मेरे विचार से आर्य समाज के वे लोग जो राजनीति में रुचि रखते हैं, उनके अपने स्वार्थ भिन्न-भिन्न राजनैतिक दलो में रहने से ही पूरे होते हैं। अत वे स्वय नहीं चाहते कि आर्य समाज के विचारो के अनुयायी कोई अपना पृथक् वचस्व पूर्ण राजनैतिक मच बनायें।

आर्य सभा की परिणति

हरियाणा में कुछ वर्ष पहले बनी आर्यसभा और उसके हश्र को भी सभी लोग जानते हैं। इस सस्था के सस्थापक नैष्ठिक सन्यासी लोग, जिन्होने आर्यसमाज के राजनैतिक दर्शन के व्याख्याता और प्रवक्ता होने का गर्व किया था, उनके स्वार्थों का ही परिणाम था कि आर्यसभा तो छिन्न-भिन्न हुई ही, इनमे से एक सन्यासी लोकदल मे गये, दूसरे जनता पार्टी में जाकर चन्द्रशेखर से टकराव कर बैठे और तीसरे कांग्रेस [आई] के अनुयायी बन कर किसी निगम की अध्यक्षता ले पडे। किन्तु आचार्य दयानन्द की मूल शिक्षाओ से दूर हट जाने का ही परिणाम निकला कि आज इन तीनो सन्यासियो की न तो अपनी मातृ सस्था आर्य समाज में ही कोई अच्छी प्रतिष्ठा है और तत् तत् [राजनीतिक दलों ने तो इन्हें दूध की मक्खी की भांति निकाल बाहर किया है। अब हालत यह है कि इन्हीं मे से एक सज्जन कभी तो बधुआ मजदूरों के अधिकारो की लडाई लडते हैं और कभी देवराला की सती के प्रतिरोध में पदयात्रा आयोजित करते हैं, जब कि तथ्य यह है कि न तो सती काड ही बार-बार होते हैं और न केवल पदयात्राओं से ही सती विषयक अन्धविश्वास भी हटाये जाते हैं।

आर्य समाज का अपना मच हो

आर्य समाज अपना राजनैतिक मच अवश्य स्थापित करे किन्तु वह विशुद्ध भारत की राजनैतिक समस्याओं के समाधान के लिए ही होगा और वह आर्य समाज के सार्वदेशिक सगठन से भी पृथक् होगा। किन्तु हमारे आर्यसमाजी प्रचारको के अज्ञान का क्या कहा जाय। वे जब मारिशस या अफ्रीका के आर्य समाजों की वेदी पर प्रवचन करने बैठते हैं तो वहां भी वे पजाब के उग्रवाद या काश्मीर की 370 वी धारा की ही बात करते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि मारिशस या सिंगापुर के आर्यों को न तो पजाब से मतलब है और न फारूक अब्दुल्ला से। वे तो दयानन्दीय विचारधारा को जानना और समझना चाहते हैं। किन्तु एक बात मैं अवश्य कहूगा। आर्य समाज का यह राजनैतिक मच स्वय के बलबूते पर ही खडा होना चाहिए। क्योंकि यदि हम इसमे राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ या विश्व हिन्दू परिषद् का सहयोग लेंगे तो इन सस्थाओ के सकीर्ण हिन्दुत्वाद का अजगर आर्यसमाज को ही निगल लेगा। इस सम्बन्ध में जो अनेक कटु अनुभव आर्य समाज को हुए हैं उन्हें हमें ध्यान मे रखना होगा। डा० नारायण ने मेरे लेख से जिन दो वाक्यों को पसन्द कर उद्धृत किया है, मेरे आलोच्य लेख के भी वे ही मूलभूत मुद्दे थे। और यह वाक्य मेरे नही अपितु ऋषि दयानन्द के ही हैं जिन्होने एक उपास्य देव, एक उपासना पद्धति एक भाषा एक वेशभूषा और एक ही वैचारिक पद्धति के बिना राष्ट्र की ऐकता को स्वप्न तुल्य माना था। इस सुरसा की भांति मुह फैलाये हमारे राष्ट्र को निगल जाने वाली भयकर समस्या का निदान न तो वह कांग्रेस कर सकती है जो एकता में अनेकता की बात करती है और न राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ ही इसका समाधान कर सकता है, जो स्वामी विवेकानन्द की ही भांति हिन्दू धर्म और समाज मे मौजूद दुबलताओं की तर्क सम्मत व्याख्या तो करता है, किन्तु दयानन्द की भांति जिन्हे ठुकराने का उसमें साहस नहीं है। सडी गली पौराणिक अवधारणाओं से तो मुक्ति पानी ही होगी।

हम भी यह चाहते हैं कि आर्यसमाज हिन्दू जाति का राजनीतिक नेतृत्व ग्रहण करे, किन्तु क्या उसके पीछे वे पदलोलुप हिन्दू आयेंगे जो सत्ताधीश बने रहने के लिये कांग्रेस के दुमछल्ले बने रहने में ही अपना हित मानते हैं। क्या आर्यसमाज

(शेष पृष्ठ 9 पर)

31 दिसम्बर को दिवंगत

गोआ के स्वाधीनता सेनानी तथा आर्य पत्रकार : श्री विनोद

— शिवकुमार गोयल —

श्री वि स० विनोद एक मिशनरी तथा सिद्धान्तनिष्ठ पत्रकार तथा कट्टर हिन्दुत्व निष्ठ व्यक्ति थे। धार्मिक दृष्टि से वे जहा दृढ आय समाजी थे वहीं राजनीतिक क्षेत्र मे वे वीर सावरकर द्वारा प्रेरित हिन्दू महासभा के अ समथक थे। हिन्दी-हिन्दू तथा हिन्दुस्तान की समर्पित भावना से सेवा करते हुए वे 31 दिसम्बर को 83 वष की आयु मे दिवगत हो गये।

मेरठ जनपद के छोटे से गांव के साधारण अग्रवाल परिवार में 15 फरवरी 1905 को जन्मे विनोद जी का परिवार ही आय समाजी था। आर्य समाज के सस्कारो के कारण ही उन्हे कानपुर के डी० ए० वी० कालेज मे भर्ती कराया गया वहा वे जहा अनेक आर्य समाजी नेताओ के सम्पक मे आये वहीं पत्रकार-शिरोमणि श्री गणेश शकर विद्यार्थी के भी निकट आये। उन्हीं से पत्रकारिता की प्रेरणा मिली। सन 1926 में गोहाटी आयोजित कांग्रेस के राष्ट्रीय सम्मेलन की उन्होने रिपोर्टिग की थी। कानपुर में कांग्रेसी तथा आय समाजी नेता श्री अलगूराय शास्त्री ने उन्हे बहुत प्रोत्साहन दिया।

सन 1926 मे वे लखनऊ चले गये तथा उस समय की एकमात्र राष्ट्रीय सवाद समिति 'फ्री इण्डिया' के सवाददाता बन गये। बाद मे डा० सम्पूर्णानन्द जी की प्रेरणा पर वे उनके द्वारा सम्पादित 'आज' के अग्रेजी सस्करण "टु डे" के उपसम्पादक रहे। काशी मे उन्हें डा० सम्पूर्णानन्द जी से पत्रकारिता के गुर सीखने का सौभाग्य मिला।

दो वर्ष बाद ही सन् 1930 में दिल्ली के 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में रिपार्टर का नियुक्ति-पत्र उन्हे मिल गया। उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त 'मेरठ षड्यन्त्र' केस को कुशलता के साथ रिपोर्टिग की। अगले ही वर्ष उन्होने अपनी जन्मस्थली मेरठ में प्रेस लगाया तथा अग्रेजी में 'मेरठ टाइम्स' नाम से साप्ताहिक पत्र शुरू किया। बाद में उसका नाम 'सण्डे टाइम्स' हो गया। सन् 1944 में उन्होंने हिन्दी 'प्रभात' शुरू किया जो आज तक उ० प्र० का प्रमुख हिन्दी दैनिक बना हुआ है।

'पंजाब केसरी' के सम्पादक श्री विजय जी के साथ वि० स० विनोद जी, पीछे उनके सुपुत्र सुबोध कुमार विनोद हैं।

मुस्लिम तुष्टिकरण का विरोध

विनोद जी ने एक जागरूक पत्रकार के रूप में जब कांग्रेस की नीतियों का अध्ययन किया तो उन्हें लगा कि कांग्रेस की मुसलमानों के प्रति तुष्टिकरण की नीति देश के टुकडे-टुकडे कर डालेगी। स्वातन्त्र्य वीर सावरकर, भाई परमानन्द, महामना प० मदन मोहन मालवीय आदि उन दिनो इस नीति का विरोध कर रहे थे। विनोद जी को सावरकर जी के व्यक्तित्व, कृतित्व और विचारधारा ने प्रभावित किया। महन्त दिग्विजय नाथ तथा श्री बिशन चन्द्र सेठ भी इसी कारण कांग्रेस छोडकर हिन्दू महासभा में शामिल हुए थे। विनोद जी जीवन के अन्तिम क्षणो तक कट्टर सावरकरवादी बने रहे। हिन्दुत्व के प्रश्न पर कभी भी उन्होने समझौता नहीं किया। निधन से एक माह पूर्व उन्होने मुझ से कहा था—'मेरा दृढ मत है कि भारत को 'हिन्दू राष्ट्र घोषित करके ही ससार की बडी शक्तियो के बराबर पहुचाया जा सकता है' वामपंथियो तथा अन्य राजनीतिक दलो द्वारा वोटों के लिये जब 100 अल्पसख्यको की नाजायज मागो का समर्थन किया जाता तो विनोद जी की लेखनी और हृदय दोनों मचल उठते थे।

कांग्रेस की इस घातक नीति का विरोध करने के आरोप में सन् 1945 में श्री मदन गोपाल सिंहल, श्री गजाधर तिवारी वैद्य आदि के साथ विनोद जी को भी गिरफ्तार कर मेरठ जेल में बन्द कर दिया गया। इसके बाद पाकिस्तान समर्थक राष्ट्रद्रोही तत्वों के खिलाफ लिखे गये सम्पादकीयों तथा समाचारों को ही आपत्तिजनक करार देकर 'प्रभात' पर मुकदमे चलाये गये, उसके विज्ञापन तक बन्द कर दिये गये। इन तमाम सकटों के बावजूद विनोद जी को निर्भीक पत्रकारिता तथा हिन्दुत्व के मार्ग से डिगाया नहीं जा सका। वे अपने गुरु सावरकर जी की तरह सकटो से निरन्तर जूझते रहे।

बाइबिल केस

'सण्डे टाइम्स' ने बाइबिल मे आये अश्लील अशो के विरुद्ध एक लेख प्रकाशित किया तो एक पादरी ने विनोद जी पर मुकदमा चला दिया। हिन्दू महासभा के तत्कालीन अध्यक्ष तथा अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विधिवेत्ता श्री एन० सी० चटर्जी ने मेरठ आकर विनोद जी के बचाव में न्यायालय में ऐसी अकाट्य दलीलें दीं कि वे ससम्मान बरी कर दिये गये।

मेरठ में अग्रेजी हटाओ आन्दोलन चला तो विनोद जी ने उसका नेतृत्व किया। उन्हें अग्रेजी के बोर्ड पोतते हुए गिरफ्तार किया गया। शेख अब्दुल्ला ने मेरठ आकर साम्प्रदायिक वातावरण बनाने का प्रयास किया तो विनोद जी उनका विरोध करने से भी नहीं चूके।

गोवा मुक्ति आंदोलन

सन् 1955 में गोआ की मुक्ति के लिये सत्याग्रह शुरू हुआ तो मेरठ से भी हिन्दू महासभा का जत्था भेजा गया। श्री विनोद जी, पडित गजाधर तिवारी वैद्य, श्री महावीर प्रसाद शुचि (पत्रकार) श्री रामनिवास गोयल आदि लोग गोवा गये। बम्बई से रवाना होने से पूर्व सभी लोग वीर सावरकर से आशीर्वाद लेने गये। उस समय सावरकर ने कहा था—'निहत्थे जाकर विदेशियों की गोली से मरने का मार्ग मैं पसन्द नहीं करता। सरकार को सेना भेजकर गोवा को मुक्त कराना चाहिये। किन्तु शुभ काम में जा रहे हो, अत मेरा आशीर्वाद साथ है।'

विनोदजी की धर्म पत्नी श्रीमती सुवीरा विनोद भी उन्ही की तरह आर्य समाजी विचारधारा की परम विदुषी महिला थी। वे वर्षों तक मेरठ महिला आर्य समाज की प्रधान रहीं। 1967 में हुए गोरक्षा आन्दोलन मे उन्होंने भी सत्याग्रह कर कई महीनों तक तिहाड़ जेल में यातनाए सही थी।

आर्य सम्मेलन में सम्मान

विनोद जी का देश के मूर्धन्य आर्य नेता भी सम्मान करते थे। महात्मा आनन्द बोध सरस्वती, महाशय कृष्ण, श्री प्रकाशवीर शास्त्री, श्री ओम्प्रकाश त्यागी, महात्मा आनन्द स्वामी, 'मिलाप' के सम्पादक श्री रणवीर आदि उन्हें बहुत आदर देते थे।

आय समाज शताब्दी समारोह के अन्तगत कानपुर मे हुए सम्मेलन मे एक निर्भीक आर्य समाजी पत्रकार के रूप में विनोद जी को श्री प्रकाशवीर शास्त्री ने सम्मानित कराया था।

सन् 1959 मे हिन्दू महासभा ने उ० प्र० के ऐतिहासिक मन्दिरो की मुक्ति का अभियान चलाया था। काशी के विश्वनाथ मन्दिर पर बनी मस्जिद को हटाने के लिये चलाये गये सत्याग्रह मे मुझे विनोद जी ने ही प्रेरणा देकर भेजा था। 4 माह काशी जेल में रहने के बाद जब मैं मेरठ लौटा तो रेलवे स्टेशन पर सैकडो लोगो के साथ विनोद जी हमारे स्वागत के लिए उपस्थित थे।

पत्रकारिकता के तो वे मेरे गुरु ही थे। उनके श्री चरणों में बैठकर ही मैंने पत्रकारिता सीखी थी। श्री जयप्रकाश भारती (सम्पादक 'नन्दन') जैसे अनेक विख्यात लेखको को उन्हीं से प्रेरणा मिली थी।

महर्षि दयानन्द और वीर सावरकर

वे वर्षों से अस्वस्थ थे। पिछले साल एक दिन अपने पुत्र सुबोध से बोले—"मेरे कमरे में महर्षि दयानन्द तथा वीर सावरकर का चित्र लगाओ।" दूसरे दिन चित्र न देखकर नाराज हो उठे। बोले—"ये दोनों विभूतियां मेरी प्रेरक रही हैं। मैं चाहता हू कि मेरा अन्तिम सांस भी महर्षि दयानन्द तथा सावरकर के दर्शन करते हुए ही निकले।" सुपुत्र सुबोध ने ऋषि दयानन्द और वीर सावरकर के चित्रों की व्यवस्था की। तब मुझ से बोले—"भैया ! शिवकुमार ! मेरी अटूट आस्था इन दो महापुरुषों में ही रही है। महर्षि दयानन्द से मुझे हिन्दू समाज में व्याप्त अस्पृश्यता तथा

(शेष पृष्ठ 9 पर)

पत्रों के दर्पण में

दूरदर्शन नहीं स्वयं को सुधारो

(1) रामायण धारावाहिक का आर्य समाज के सत्संगों पर पड़ते दुष्ट प्रभावों का समाचार पढ़ने को मिलता रहता है। दूरदर्शन पर रामायण 9.30 बजे आती है हमारे सत्संगों मे उपस्थिति कम नहीं पड़ेगी बशर्ते सत्संग का समय सुबह 7 बजे से प्रारम्भ किया जाय। हमारी दिनचर्या ऐसी होनी चाहिये कि प्रातः ब्रह्ममुहूर्त मे उठकर ईशचिन्तन शौचादि नित्यकर्म से निवृत होकर 7 बजे सत्संग मे पहुंचे। यदि हम सुबह 4 बजे उठने के बजाय 8 या 9 बजे उठें तो फिर दूरदर्शन वालो को दोष देने की अपेक्षा स्वयं को दोषी माना जाना चाहिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी प्रातः 4 बजे उठकर सूर्योदय से पहले सन्ध्यादि से निवृत्त होकर सूर्योदय के पश्चात् हवन शुरू कर देना चाहिये। इससे भी 7 बजे का समय ही ज्यादा उपयुक्त लगता है।

—सीताराम आर्य, बूरा बाजार, गंगापुर सिटी

(2) डा० भवानीलाल जी भारतीय ने रामायण के सम्बन्ध मे 29 नवम्बर के अंक मे अपने विचार दिए हैं। इस लेख से उनकी आर्य समाज के प्रति गहरी आस्था का पता चलता है। लेकिन उनकी यह बात—"जिन्हे रामायण देखनी है वह बेशक अपने घर रहे"—बड़ी अजीब लगी। क्या भारतीय जी को अनुमान है कि साप्ताहिक सत्संगो मे सदस्यो की संख्या कितनी होती है? मैं दिल्ली जैसे बड़े शहरो की बात नहीं कर रहा। आर्य समाज के अधिकारियो ने सत्संग का समय बदल कर एक उचित कदम उठाया है। परिस्थिति के साथ साथ अपने को बदलना चाहिए।

—ललित बजाज, मोहल्ला सोढ़िया, फिरोजपुर शहर

(3) दूरदर्शन के दुष्प्रभाव से साधारणतः सभी वर्ग और विशेषतः आर्य समाज प्रभावित हुआ है। कुछेक आर्य समाजो मे तो दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाली 'रामायण' के समय से पूर्व ही साप्ताहिक सत्संग की कार्यवाही समाप्त कर दी जाती है। अनेक आर्य समाज वार्षिकोत्सव मे रात्रि का कोई कार्यक्रम नहीं रखते। उनका तर्क है कि दूरदर्शन के कारण रात्रि में श्रोताओ की उपस्थिति न्यून हो जाएगी और वार्षिकोत्सव मखौल बनकर रह जाएगा।

'रामायण' की लोकप्रिय (?) बताकर कुछ आर्य समाजी इसके पक्ष मे तर्क प्रस्तुत करते हैं। लखनऊ में लाला ब्रजलाल साहब रईस ने स्वामी दयानन्द सरस्वती से पूछा—"रामलीला देखना दोष है?" स्वामी जी ने उत्तर दिया—"हां! दोष है। हजार हत्या के समान दोष है।"

क्या स्वामी दयानन्द के अनुयायी आर्य समाजी 'रामायण' देखने की लत छोड़कर अपने वार्षिकोत्सव और साप्ताहिक सत्संगो को यथापूर्व आयोजित कर सकेंगे?

—अनूपसिंह 5/2 धामावाला, देहरादून

धर्म के नाम पर अनर्थ

आपका सम्पादकीय "धर्म के नाम पर अनर्थ" बहुत ही अच्छा है। यदि चारवाक और वाम मार्ग पर भी प्रकाश डाल देते तो बहुत अच्छा होता। कृपया चारवाक और वाम मार्ग पर भी लिखें। "धर्म के नाम पर अनर्थ सीरीज सभी पेपर को देना चाहिए ताकि लोगो के समक्ष मे आये। और सभी समझें कि गलतियां हमने की और सुधारना हमें है। इस सीरीज में आप पूरे अनर्थ लीजिए। मूर्ति पूजा, भोग, श्राद्ध, वेदाध्ययन, मोक्ष, योग, भाग, दारु आदि सभी।

—डा० सु० र० आर्य वैद्यनाथ कलेज परली वैजनाथ जिला-बीड महाराष्ट्र।

अनुपम 'आर्य जगत्'

आर्य जगत् मे अपने अपने विषय के विद्वान् लेखको द्वारा अत्यन्त सरल सुबोध भाषा में पढ़कर अनेक अछूते विषयो पर खोजपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। सदा की भांति आपके खोजपूर्ण सम्पादकीय मे अनेक ऐतिहासिक तथ्यो का मुझे प्रथम बार बोध हुआ और इसी प्रकार डी० ए० वी० आन्दोलन के बारे मे अनेक तथ्यो का ज्ञान हुआ। 'आध्यात्मिकता की खोज' मे प० सत्यव्रत ने कुन्डलिनी जागरण पर प्रचलित पाखण्डो का भली प्रकार से पर्दाफाश किया है। स्वामी सत्य प्रकाश जी ने स्वतंत्र भारत मे आर्य समाज के चालीस वर्ष शीर्षक लेख मे अनूठी खोजपूर्ण सामग्री प्रस्तुत करने के साथ साथ आर्य समाज में व्याप्त कुर्सी हथियाने एवं वर्षों से एक ही व्यक्ति का एकाधिकार कुर्सी पर जमाए रखने की कुप्रवृत्ति पर कटु एवं सत्य प्रहार करके आर्य जगत् का मार्ग दर्शन किया है पदलिप्सा से आर्य समाज की अपूरणीय क्षति पहुंची है।—धर्म देव चक्रवर्ती 19 माडल बस्ती दिल्ली-5

अंग्रेजों की नकल

प्रतिवर्ष हम 25 दिसम्बर को बड़ा दिन मानते हैं, जबकि प्रत्यक्ष वह छोटा दिन होता है। साथ ही हम एक जनवरी को नववर्ष के उपलक्ष मे बधाई कार्ड भेजते हैं, करोड़ों की संख्या में एक एक कार्ड पर 50 पैसे से कम खर्च तो होते नहीं। यह विदेशी नव वर्ष है न कि भारतीय। अंगरेज गया, परन्तु अंग्रेजी की नकल करना ही हमने आदर्श मान लिया है। भावी पीढ़ी को दासता की जंजीरो मे मत बांधो।

—पथिक, मानव सेवाश्रम (रुड़की मार्ग) छुटमलपुर (सहारनपुर) उ०प्र०

आर्य समाज भड़ौच मे स्वामी जगदीश्वरानन्द का उपदेश

आर्य समाज, भड़ौच (गुजरात) मे 20 दिसम्बर को स्वामी जगदीश्वरानन्द जी के पधारने पर उनका भव्य स्वागत किया गया स्थानीय विद्वान् प० वेदमित्र जी ने स्वामी जी का परिचय देते हुए उनसे धर्मोपदेश करने का आग्रह किया जिसमे स्वामी जगदीश्वरानन्द जी का सारगर्भित उपदेश हुआ।

—भावेश कुमार मेरजा

ब्र० आर्य नरेश द्वारा प्रचार

राष्ट्र, संस्कृति तथा युवा शक्ति के उत्थान हेतु उद्गीथ साधना स्थली के संस्थापक ब्र० आर्य नरेश वेद प्रवक्ता द्वारा 17 नवम्बर से 18 दिसम्बर तक हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, महाराष्ट्र आदि प्रदेशो मे प्रचार कार्य हुआ। दो परिवारो ने दैनिक यज्ञ और कुछ परिवारो ने सायकाल सम्मिलित सध्या करने का व्रत लिया।

मुस्लिम परिवार की शुद्धि

29-12-87 को आर्य समाज मन्दिर समालखा मे एक परिवार मुसलमान नट की उनकी इच्छा के अनुसार वैदिक धर्म मे दीक्षित किया गया शुद्धि कार्य स्वामी सेवानन्द ने किया आर्य समाज पानीपत की ओर से श्री भगवत भिक्षु ने शुद्ध हुए परिवार को एक कम्बल भेंट किया। परिवार के व्यक्तियो की संख्या आठ थी।

रामचन्द्रन शान्तियज्ञ

24 दिसम्बर को पिथौरागढ़ दयानन्द बाल मन्दिर में श्री एम० जी० रामचन्द्रन (मुख्यमन्त्री-तमिलनाडु) की दिवगत आत्मा हेतु आर्यसमाज द्वारा आयोजित शान्तियज्ञ प० गगादत्त जोशी की अध्यक्षता मे हुआ तथा स्वामी कच्चाहारी ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

—आर्य समाज नागौर (राज०) के श्री राजाराम सैनी प्रधान, श्री चन्द्रशेखर व्यास मन्त्री और श्री मोहन लाल आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

क्रीडा महोत्सव सम्पन्न

डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल भुवनेश्वर का वार्षिक क्रीडामहोत्सव 9 एव 10 दिसम्बर को सोल्लास सम्पन्न हुआ। मुख्यअतिथि राज्य पुलिस महानिदेशक 'श्री प्रफुल्लचन्द रथ' ने विजयी छात्र छात्राओ को पुरस्कृत कर उत्साहित किया प्राचाय 'श्रीमती यू० पी० आर० विठठलगाजा' ने वार्षिक विवरण पढ कर क्रीडा, सगीत, नृत्य तथा चित्रकला इत्यादि अनेक सास्कृतिक अनुष्ठानो द्वारा पुरस्कृत छात्र छात्राओ की सूचना से सबको अवगत कराया।

सतीप्रथा का विरोध

आर्य समाज सम्भल (मुरादाबाद) मे 8 12 87 का सती प्रथा व नारी उत्पीडन के विरोध मे एक जनसभा आयोजित की गई जिसमे महिला आय समाज कन्या इ टर कालिज की छात्राओ अध्यापिकाओ व प्रधानाचार्या, दयानन्द बाल मन्दिर के आचार्यों व प्रधानाध्यापको ने भाग लिया। इस सभी की अध्यक्षता श्री विक्रमसिंह आय, प्रधान जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद ने की।

—जगदीश शरण आय

आर्य आदर्श विद्यालय का उत्सव सम्पन्न

आय समाज आदश नगर नई दिल्ली के तत्वावधान में 3 जनवरी को आर्य आदर्श विद्यालय के पाचवें वार्षिकोत्सव की अध्यक्षता श्री महेन्द्र सिंह साथी महापौर दिल्ली नगर निगम दिल्ली ने की।

विद्यालय के छात्र छात्राओ द्वारा सास्कृतिक कायक्रम हुआ।

श्री धर्म चन्द्र बत्रा मत्री आर्यसमाज आदर्श नगर ने इस क्षेत्र की कुछ समस्याओ का सकेत महापौर महोदय के समक्ष किया। श्री साथी ने इन समस्याओ के शीघ्र समाधान का आश्वासन दिया।

—महावीर बत्रा व्यवस्थापक

मुस्लिम महिला की शुद्धि और विवाह

26-12-87 को हिन्दू महासभा भवन मन्दिर माग नई दिल्ली में शारदा खातुन नामक एक 28 वर्षीय महिला जिसे उसके मुस्लिम पनि ने लगभग 3 वष पूर्व तलाक दे दिया था ने, अपने 3 पुत्रो सहित स्वेच्छा से हिन्दू धम स्वीकार किया महिला का नाम शारदा देवी रखा गया और उसके तीन पुत्रो का नाम क्रमश श्याम कुमार, इन्द्र कुमार, और नरेन्द्र कुमार रखा गया। शुद्धि के पश्चात शारदा देवी का विवाह सर्वराज पाशा के साथ सम्पन्न हुआ।—प० इन्द्रसेन शर्मा उपाध्यक्ष

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट

टंकारा जिला-राजकोट-363650 (गुजरात)

दिल्ली कार्यालय :—आर्य समाज (अनारकली), मदिर मार्ग नई दिल्ली-110001

ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण एवं आर्थिक सहायता की अपील

मान्यवर, सादर नमस्ते।

इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव 15-16 17 फरवरी 1988 तदनुसार सोम, मगल, और बुधवार को ऋषि जन्म स्थान टकारा मे भव्य समारोह के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर एक सप्ताह तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ होगा। देश देशान्तर से पधारे ऋषि भक्त आर्य विद्वान् तथा कलाकार इस सुअवसर पर ऋषि के चरणों मे अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करेंगे। कन्या गुरुकुल बडौदा, पोरबन्दर तथा जामनगर की कन्याए, टकारा उपदेशक विद्यालय के विद्यार्थी आर्य वीर दल घ्रागध्रा एव अन्य सस्थाओ के युवक समारोह मे कायक्रम प्रस्तुत करेंगे। अभ्यागतो के आवास भोजन का पूर्ण प्रबन्ध टकारा ट्रस्ट की ओर से नि शुल्क होगा किन्तु बाहर से पधारने वाले सज्जन ऋतु अनुकूल अपने-अपने बिस्तर अवश्य साथ लायें। सम्प्रति टकारा ट्रस्ट के अधीन निम्न कार्य चल रहे हैं —

1 ऋषि जन्म गृह का प्रबन्ध
2 गो-सवर्धन केन्द्र (विशाल गौशाला)
3 अतिथि गृह
4 अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय
5 दिव्य दयानन्द दर्शन चित्र-गृह
6 आय साहित्य प्रचार केन्द्र (पुस्तकालय तथा सार्वजनिक वाचनालय)

ऋषि जन्म स्थली टकारा मे अभी और भी अनेक विशेष करणीय कार्य हैं— पानी की भयकर कमी को दूर करने की व्यवस्था, ऋषि जन्म गृह के मुख्य भाग को अपने अधिकार मे लेना, टकारा की सस्थाओ का विकास तथा ऋषि जन्म स्थली को विश्वदर्शनीय बनाना। टकारा ट्रस्ट के अधिकारी जनता जनार्दन के सहयोग से टकारा उत्सव की सफलता, टकारा की सस्थाओ का विकास तथा वहा के कार्य की कठिनाइयो को दूर करने का प्रबल प्रयत्न कर रहे हैं। इन सब कार्यों के लिए कम से कम पाच लाख रुपये की तुरन्त आवश्यकता है।

टकारा की गौशाला मे 28 गायें हैं। गौशाला से विद्यार्थियों को शुद्ध दूध मिलता है। परन्तु हर वष इस गौशाला में 20,000/- रुपए का घाटा हो जाता है इस वष भयकर सूखा और इस चारे की कमी के कारण यह घाटा एक लाख रु० हो जाने की सम्भावना है। यह घाटा ऋषि भक्तो और गोभक्तो के दान से ही पूरा होता है। इसके अतिरिक्त पिछले दो वर्षों की भाति इस वर्ष भी राजकोट और टकारा मे वर्षा न होने से अकाल की स्थिति हो गई है। गौओ के पीने का पानी भी टैंकरों से खरीद कर मगाया जा रहा है। इस भीषण सूखे के कारण टकारा ट्रस्ट के इन कार्यों को चलाने मे काफी आर्थिक सकट का सामना करना पड रहा है। खाद्य सामग्री के भाव भी बहुत ही बढ गये हैं। पीने के पानी की समस्या तो विकट है ही।

अत आपसे विनम्र निवेदन है कि आप ऋषिबोधोत्सव पर टंकारा अवश्य पधारिये और इस सारे कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनिए। यह दान राशि आप क्रास चेक/ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर से 'टकारा सहायक समिति दिल्ली' के नाम अथवा 'महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा' के नाम से इसके दिल्ली कार्यालय, आर्य समाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा सकते हैं।

आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि आप अपनी ओर से, अपनी आर्य समाज, अपनी शिक्षण संस्था तथा अन्य सम्बन्धित सस्था की ओर से अधिकाधिक राशि भेजकर ऋषि ऋण से उऋण हों और पुण्य के भागी बनें।

विशेष सूचना : टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली दान राशि पर आयकर की छूट है।

निवेदक

श्री स्वामी दयानन्द स्मारक ट्रस्ट के अधिकारी तथा ट्रस्टी गण

क्रान्तिकारी बारहठ परिवार

— ब्रह्मदत्त —
मन्त्री श्री केसरसिंह बारहठ स्मारक समिति शाहपुरा

मातृभूमि को अंग्रेजों की दासता से मुक्त कराने में देश के असख्य सपूतों ने आत्म बलिदान किए । उनमें भूतपूर्व रियासत शाहपुरा (राजपूताना) के क्रान्तिकारी परिवार के वीरवर केसर सिंह बारहठ, उनके अनुज जोरावर सिंह और इनके युवक पुत्र प्रतापसिंह बारहठ ने भी देश भक्ति के इस महायज्ञ में अपने प्राणों की आहुति दीं। उनकी स्मृति को स्थायी रखने के उद्देश्य से शाहपुरा मे एक स्मारक स्थापित कर वहा पर तीनों वीरो की प्रतिमायें प्रस्थापित की हैं और श्री केसरी सिंह बारहठ स्मारक समिति द्वारा प्रति वर्ष 23 दिसम्बर को उन्हें श्रद्धाञ्जलि अर्पित की जाती है, क्योंकि 23 दिसम्बर 1912 को भारत के ब्रिटिश साम्राज्य के वायसराय लाड हार्डिंग पर दिल्ली के चादनी चोक मे बम फेंकने वाली पार्टी मे बारहठ परिवार के जोरावर सिंह और प्रतापसिंह का पूर्ण सहयोग रहा था। इसीलिए इस कार्य के लिए यह दिन निर्धारित किया गया। इस ऐतिहासिक घटना ने ब्रिटिश-शासन की जड़ें हिला दी थीं। क्योंकि उस समय भारत के समस्त राजा महाराजाओ को बुलवा कर अपनी प्रभुसत्ता का प्रदर्शन करने हेतु लाड हार्डिंग ने दिल्ली मे एक बडे जलूस का आयोजन किया था। वायसराय स्वय हाथी पर आसीन थे। किन्तु बम फटने से सारी आन, बान, शान धूमिल हो गयी और जलूस मे भगदड मच गयी। वायसराय के पीछे हाथी पर छतरी लेकर बैठा जमादार था मारा गया था।

क्रान्ति के सूत्रधार .

जब मातृभूमि को अंग्रेजी हुकूमत से आजाद कराने का प्रथम युद्ध (1857 की क्रान्ति) विफल हो गया तो महा विप्लवी नायक रास बिहारी बोस ने सशस्त्र क्रान्ति का देशव्यापी आयोजन किया तब भारतीय क्रान्तिकारी सगठन का सूत्रपात हुआ। रास बिहारी बोस ने प्रत्येक प्रदेश मे सशस्त्र क्रान्ति का सगठन करने तथा उसका सचालन करने के लिए उस प्रदेश के प्रमुख क्रान्तिकारियो को उत्तरदायित्व सौंपा था। राजस्थान मे केसरी सिंह बारहठ और उनके पुत्र प्रताप सिंह बारहठ (जो केवल 20 वर्ष का था) तथा खरवा के ठाकुर गोपाल सिंह और विजय सिंह पथिक, इस क्रान्तिकारी सगठन के सूत्रधार थे। अर्जुनलाल सेठी क्रान्तिकारी युवको को प्रशिक्षित करते थे।

केसरी सिंह बारहठ के पिता कृष्ण सिंह बारहठ महर्षि दयानन्द के भक्त थे और वे ही सस्कार उनके पुत्र केसरी सिंह में भी विद्यमान थे। शाहपुरा रियासत मे उनकी जागीर वाला गाव देवपुरा था जहा उनकी एक बडी हवेली थी। केसरी सिंह को देश प्रेम और विद्वत्ता विरासत मे मिले थे। वे सस्कृत साहित्य एव राजनीति के प्रकाड विद्वान् तथा उच्च कोटि के कवि थे। उनकी सुप्रसिद्ध कविता चेतावणीरा चगट्या जिस से प्रभावित होकर उदयपुर के महाराणा फतहसिंह दिल्ली पहुच कर भी अंग्रेजी दरबार मे सम्मिलित न होकर वापिस उदयपुर लौट आए थे, उनकी तेजस्विता का उत्कट प्रमाण है।

देश सेवा व्रती

केसरी सिंह की क्रान्तिकारी कार्यवाहियों से ब्रिटिश शासन के इशारे पर शाहपुरा मे उनकी चल अचल सम्पत्ति जब्त कर ली गयी। गाव भी चला गया। उन्हें किसी पुरानी घटना के आधार पर गिरफ्तार कर हजारी बाग जेल मे भेज दिया गया। पाच वर्ष बाद जेल से मुक्त होने पर कष्टमय जीवन व्यतीत करते हुए वे आजीवन देश सेवा मे लगे रहे।

हर्ष की बात है कि राजस्थान की वर्तमान सरकार ने शाहपुरा स्थित बारहठ की हवेली को अधिग्रहण कर इसे राष्ट्रीय स्मारक का रूप देने की योजना बनायी है।

वीरवर जोरावर सिंह

जोरावर सिंह जोधपुर की महारानी के कामदार थे। देश प्रेम, साहस और वश परम्परागत शौर्य ने उन्हे भी देश सेवा हेतु प्रेरित किया जोधपुर में उनका सम्पर्क प्रसिद्ध क्रान्तिकारी भाई बालमुकन्द से जिन्हे दिल्ली षड्यन्त्र अभियोग मे फासी हुई, सम्पर्क हुआ। जोरावर सिंह और प्रताप सिंह को भी गिरफ्तार किया गया किन्तु सबूत के अभाव मे इन्हे छोड दिया गया। जोरावर सिंह को आरा के महन्त की राजनैतिक हत्या में सम्मिलित होने के सन्देह में गिरफ्तारी का वारन्ट जारी हुआ, परन्तु वे फरार हो गये और मालवा तथा राजस्थान के जगलों में ही भटकते रहे। उन्होंने बड़े कष्ट सहे और अन्त मे फरारी अवस्था मे ही उनका निधन हुआ।

कुंवर प्रताप सिंह

बीस वर्ष की उम्र में ही कुंवर प्रतापसिंह अनेक स्थानो पर जाकर सैनिको एव युवकों को मातृभूमि की स्वतन्त्रता हेतु प्रेरित करते क्रान्तिकारी सगठन तैयार करने मे जुट गये और अल्प समय मे ही रास बिहारी बोस के विश्वासपात्र बन गये। जब रासबिहारी भूमिगत हो गये तो प्रतापसिंह से उनका भेद जानने के लिए बनारस षड्यन्त्र केस मे गिरफ्तार कर बरेली जेल भेज दिया गया। वहा ब्रिटिश सरकार के गुप्तचर विभाग के निदेशक सर चार्लस क्लीव ने प्रतापसिंह को अनेक प्रलोभन दिए। उनसे कहा गया कि तुम्हारे परिवार के सदस्यो पर चलाये गये अभियोग उठा लिए जावेंगे, तुम्हारी चल-अचल सम्पत्ति लौटा दी जावेगी, तुम्हारी मा तुम्हारे लिए बिलख रही है। किन्तु प्रतापसिंह ने क्रान्तिकारी दल के भेद नही बताये। निदेशक से उन्होने कहा कि मेरी मा यदि रोती है तो उसे रोने दो, मैं अपनी मा का रुदन रोकने के लिए देश की हजारो माताओ को नही रूलाना चाहता। परिणाम स्वरूप उन्हें जेल मे इतनी यातनाएं दी गयी कि उनके जेल में ही प्राण पखेरू उड गये और वे सदा के लिए अमर हो गये।

वीर बलिदानियों के प्रति विनम्र श्रद्धाजलि।

पता—बी-46 गणेश मार्ग, बापूनगर, जयपुर 302015

(पृष्ठ 6 का शेष)

अन्य कुरीतियो का विरोध करने की प्रेरणा मिली, तो वीर सावरकर से हिन्दू सगठन तथा 'हिन्दू राष्ट्र' की कल्पना मिली। यदि गांधी जी की जगह देश सावरकर के बताये मार्ग पर चलता तो न पाकिस्तान ही बनता न पजाब की समस्या सामने आती। ये शब्द कहते-कहते इनकी आंखें आर्द्र हो गईं।

दैनिक 'प्रभात' विनोद जी का सच्चा स्मारक है। 'प्रभात' हिन्दुत्व का सजग प्रहरी रहा। एक बार 'प्रभात' में हिन्दू साम्प्रदायिकता' जसा वाक्य छप गया। रात भर विनोद जी सो नहीं पाये। अपने सम्पादकीय में उन्होंने स्पष्ट किया कि "हिन्दू तो साम्प्रदायिक हो ही नहीं सकता। हिन्दू ही इस देश का सच्चा राष्ट्रीय है, सच्चा हितचिन्तक है। वह भारत को टूटते देख ही नही सकता।"

आर्य समाज तथा हिन्दुत्व के ऐसे सजग प्रहरी की पूर्ति संभव नही।

पता—धर्म मुद्रणालय, बीच पट्टी, पिलखुवा-245304

(शेष पृष्ठ 5 का शेष)

का नेतृत्व वे मठाधीश, सन्त, महन्त और गद्दीधारी धर्माचार्य कभी स्वीकार करेंगे जो आज भी अपने करोडो अनुयायियो को नकेल बधे ऊटो के समान सभाले हुए तो हैं किन्तु उनमें न तो विवेक शक्ति को ही जागृत करते और न राष्ट्रभक्ति के भावो को ही बढ़ावा देते हैं। पुरी का जो शकराचार्य सुधारक शिरोमणि राम मोहन राय और अर्थापत्ति से दयानन्द को भी पापी कहने का दुस्साहस करे और करोडो हिन्दू फिर भी उसके अनुयायी बने रहें तथा उसे धर्माचार्य के इस पद से च्युत न करें, उस हिन्दू समाज का बेडा गर्क हो जाये, तो इसमे आश्चर्य ही क्या ?

—आर्य समाज ग्राम-भदौना, पो० उतरास (प्रतापगढ़) के श्री नन्हेलाल प्रधान, श्री शिवकुमार मन्त्री और श्री रवीन्द्र कुमार कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज, अमर नगर, मेन रोड, मवडी प्लाट राजकोट के चुनाव में पं० लक्ष्मण देव आर्य प्रमुख, सुशीला देवी आर्या मन्त्री और श्री अमू भाई वाघेला आर्य खजांची चुने गये।

पारिवारिक सत्संग योजना

आर्य समाज शान्ति नगर सोनीपत द्वारा विश्व कल्याण की भावना से पारिवारिक सत्सग योजना का शुभारम्भ किया है। यह सत्सग प्रत्येक रविवार को साय 3 से 5 बजे तक आयोजित किया जायेगा।—हरि चन्द स्नेही महामन्त्री

प्रश्न है राष्ट्र को...

(पृष्ठ 4 का शेष)

राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद से अनुरोध करने गये कि आप इस पुण्य कार्य को सम्पन्न करें। मुन्शी जी ने लिखा है कि निमन्त्रण देते समय उन्होंने श्री राजेन्द्र बाबू से यह भी कहा कि स्वीकृति उसी सूरत में दें, यदि वचन पर टिके रहने का निश्चय हो। श्री राजेन्द्र बाबू जानते थे कि यद्यपि नेहरू जी स्वयं इस निर्णय से जुडे हुए थे, पर वे इससे खुश नहीं थे। जब तक सरदार रहे, उनकी अप्रसन्नता व्यक्त नही हुई। अब सरदार के चले जाने के बाद वह विरोध कर सकते हैं। यह जानते हुए भी श्री राजेन्द्र प्रसाद ने निमन्त्रण स्वीकार किया और नेहरू जी के मना करने के बावजूद अपना वचन निभाया। सोमनाथ मन्दिर का जीर्णोद्धार और उसमे ज्योतिर्लिंग की पुनर्स्थापना बडे समारोहपूर्वक भारत के राष्ट्रपति के हाथों हुई।

गांधी नहीं जार्ज पंचम

कल्पना कीजिए कि आज दिल्ली मे बसने वाले ईसाई एकत्र होकर इस बात पर आपत्ति उठाने लगें कि नई दिल्ली के इण्डिया गेट के सामने के गोल चक्कर पर महात्मा गांधी की प्रतिमा क्यो लगाई जा रही है? एक प्रस्ताव द्वारा यदि यह ईसाई समाज माग करे कि इस स्थान पर कुछ वर्ष पूर्व पंचम की जो प्रतिमा थी, उसे ही पुनर्स्थापित किया जाना चाहिए, तो निश्चय ही इस प्रस्ताव की तीव्र भर्त्सना होगी। इसे पागलपन तक कहा जाएगा। स्वतन्त्र भारत अपने को फिरंगी शासक के साथ नही, स्वतन्त्रता समर के सेनापति के साथ ही सम्बद्ध करना चाहेगा। श्रीराम जन्मभूमि समिति की ओर से इतिहास के और कानून के अनेक अकाट्य प्रमाण प्रस्तुत किये जाते रहे हैं किन्तु बाबरी मस्जिद के अभियानकर्ताओ को इस तथ्य को समझना होगा कि इस सारी समस्या की तह में प्रमुख विवाद न इतिहास का है और न कानून का। विवाद मन्दिर और मस्जिद का भी नहीं है। मूल प्रश्न है राष्ट्र की अस्मिता का, राष्ट्र की पहचान का। एक भारतीय नागरिक, वह हिन्दू अथवा मुसलमान, भावात्मक रूप से अपने को किसके साथ जोड सकता है, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम से या बादशाह बाबर से?

1947 से पूर्व मोहम्मद अली जिन्ना कहा करते थे कि भारत एक राष्ट्र नहीं, दो राष्ट्र हैं—एक हिन्दू भारत, दूसरा मुस्लिम भारत। इसी द्विराष्ट्रवाद की कल्पना के आधार पर देश का विभाजन हुआ। जिन्ना साहब के ही पदचिह्नों पर चलते हुए जनता पार्टी के नेता सैयद शाहबुद्दीन भी हिन्दू भारत और मुस्लिम भारत की बात करते हैं वे एक पत्रिका प्रकाशित करते हैं, जिसका नाम ही है—'मुस्लिम इण्डिया' उन्हें यह बात शायद सहज स्वाभाविक लगती है कि देश का हिन्दू अपने को श्रीराम के साथ जोडे और देश का मुसलमान अपने को बाबर के साथ जोडे। किन्तु जो भारत को एक देश मानते हैं और सम्पूर्ण भारतीयो को एक जन, जो इस राष्ट्र के इतिहास को सहस्रों वर्ष पुराना मानते हैं, वे इस हिन्दू भारत और मुस्लिम भारत की द्विराष्ट्रवादी कल्पना को भी कभी नहीं स्वीकार कर सकते।

जो मुस्लिम नेता भारत के मुसलमानो को यह सीख देते हैं कि तुम्हारा राम से कोई सरोकार नहीं, राम तो हिन्दुओं के आदर्श पुरुष हैं, तुम्हारे आराध्य तो बाबर और औरगजेब हैं, जिन्होने मन्दिर तोडकर उनके स्थान पर मस्जिदें बनवायीं, ऐसे नेता न भारत का भला कर रहे हैं और न भारत के मुसलमानो का।

[शाश्वत वाणी से]

आर्य समाज की स्थापना

आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान मे चन्द्रपुरी मे आर्यसमाज की स्थापना की गयी इस अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा गाजियाबाद का उदघाटन उ०प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री इन्द्र राज ने तथा युवक स्मारिका का विमोचन आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल ने किया। श्री बाल दिवाकर हस श्री ए० के० चावला, डा० राजवीर शास्त्री ने सभा को सम्बोधित किया। समारोह का सचालन श्री वीरपाल विद्यालकार ने किया।

चौ० राजेन्द्र प्रसाद का निधन

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश ने आर्य पुरा आर्यसमाज के उपप्रधान श्री चौधरी राजेन्द्र प्रसाद के निधन पर शोक व्यक्त किया है। चौ० राजेन्द्र प्रसाद कर्मठ आर्य पुरुष, युवकों के सहयोगी व प्रगतिशील विचारो के व्यक्ति थे।

ट्रैक्ट विमोचन

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् [illegible] दिल्ली मडल तथा लाला रामचन्द अनाजवाल धर्मार्थ ट्रस्ट, नया बाजार द्वारा आर्यसमाज नया बांस, मे आयोजित एक समारोह में आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के मन्त्री श्री धर्मपाल आर्य ने "त्यागमूर्ति महात्मा हसराज" व "अमर सेनानी स्वामी श्रद्धानन्द" चित्र ट्रैक्टो का विमोचन किया उन्होंने इस मौके पर 15,000 रुपये का आर्ष साहित्य वितरित करने की एक योजना का विवरण दिया। आर्य प्रादेशिक सभा के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल, परिषद् के उपाध्यक्ष श्री अजय सहगल व अनेक आर्य जन यहा उपस्थित थे। आर्यसमाज नया बांस के प्रधान श्री प्रेमचन्द गोयल ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

चन्द्रमोहन आर्य

टंकारा आर्य-यात्रा

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट की ओर से 15 16-17 फरवरी को टकारा में शिवरात्रि के अवसर पर ऋषि मेला मनाया जा रहा है। वहां जाने के लिए हवाई जहाज, रेल और बस तीनों की व्यवस्था की गई है।

हवाई जहाज का किराया
(दिल्ली से अहमदाबाद तक आना जाना) 1500/रु०
बस किराया 600/-
रेल का किराया (दिल्ली से राजकोट टकारा और वापिस दिल्ली) 300/रु०
सीट बुक करवाने की अन्तिम तिथि
हवाई जहाज द्वारा 30-1-88 तक,
रेल द्वारा 26-1-88 तक
बस द्वारा 1-2-88 तक,
बुक हुई सीट कैंसिल नहीं होगी।

बस यात्रा का कार्यक्रम

प्रस्थान 10-2-1988 को प्रात 6 बजे आर्य समाज, करौल बाग, नई दिल्ली

दिनांक	प्रस्थान	पहुंच
10-2-88	प्रस्थान प्रात 6 बजे आर्य समाज करौल बाग दिल्ली से	पहुंच 5 बजे ब्यावर
11-2-88	प्रस्थान ब्यावर प्रात 8 बजे	पहुंच साय 6 बजे आबू रोड, वाया माउण्ट आबू
12-2-88	प्रस्थान आबू रोड प्रात 7 बजे	पहुंच साय 5 बजे आर्य समाज राजकोट
13-2-88	प्रस्थान प्रात 7 बजे राजकोट	पहुंच साय 5 बजे पोरबन्दर, (कन्या गुरुकुल) वाया-सोमनाथ मन्दिर
14-2-88	प्रस्थान प्रात 7 बजे पोरबन्दर	वाया द्वारका, द्वारकाबेट पहुंच जामनगर साय 6 बजे
15-2-88	प्रस्थान प्रात 7 बजे जामनगर	टकारा बारास्ता, मोरवी पहुंच टकारा 12 बजे
16-2-88		टकारा मे ही
17-2-88	प्रस्थान 10 बजे टकारा से	पहुंचे अहमदाबाद 4 बजे साय
18-2-88	प्रस्थान 7 बजे प्रात अहमदाबाद (साबरमती आश्रम)	पहुंच साय 3 बजे उदयपुर
19-2-88	प्रस्थान उदयपुर से 8 बजे स्थान पर रात्रि उदयपुर	पहुंच चित्तौडगढ़, गुरुकुल 6 बजे बारास्ता, नाथद्वार, हल्दी घाटी, ककरौली
20-2-88	प्रस्थान चित्तौड गढ़, चित्तौड किला	पुष्कर 4 बजे वापसी अजमेर 7 बजे साय
21-2-88	प्रस्थान अजमेर प्रात 8 बजे प्रात जयपुर	8 बजे (आमेर किला) से दिल्ली साय 9 बजे

टकारा मे ऋषि लगर के लिए अधिक से अधिक आटा, चावल, दाल, घी, नकद आदि निम्न स्थानों पर भिजवायें

आर्य समाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली—110001
आर्य समाज मन्दिर, करौल बाग —110005
आर्य समाज मन्दिर, ग्रेटर कैलाश —110048
आर्य समाज मन्दिर, राजिन्द्र नगर —110060

भवदीय :

प्रान्तीय महिला सभा	टकारा ट्रस्ट
श्रीमती सरला मेहता	श्री रतन चन्द सूद
" शांति मलिक	" ओ०पी० गोयल कार्यकर्त्ता प्रधान
" राम चमेली	" आर०के० पुन्शी प्रबन्धक
" कृष्णा वडेरा	" राम नाथ सहगल
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा	शुद्धि सभा
डा० धर्म पाल	श्री राम भज बत्रा
श्री हरबन्स सिंह सेर	" द्वारका नाथ सहगल
" सरदारी लाल वर्मा	" राजेश्वर साउथ एक्सटेंशन पार्ट-1
" तीरथ राम आहूजा	" दीवान चन्द पलटा
प्रधान शांति प्रकाश बहल दूरभाष 6417269	सयोजक राम लाल मलिक 5722510
मन्त्री रामसरन दास आहूजा 5713002, 343718	सहसयोजक नरेन्द्र मलिक

1500 जन सागरसमाधि-शान्तियज्ञ

पिथौरागढ़ा आर्यसमाज मन्दिर में 30 दिसम्बर को "1500 जनसागर समाधि शान्तियज्ञ" सम्पन्न किया गया। मनीला (फिलीपीन्स) के पास सागर में यात्री जहाज के तेल टंकर से टक्कर के फलस्वरूप 21 दिसम्बर 1987 को 1500 जन सागर में डूब गये। स्वामी गुरुकुलानन्द फलाहारी ने दिवगत आत्माओं की शान्ति तथा परिजनों के धैर्य हेतु परमात्मा से प्रार्थना की।—लक्ष्मीचन्द्र मित्तल मन्त्री

विभिन्न स्थानों पर श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी 23 दिसम्बर को अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस का आयोजन किया गया 'आर्य जगत्' कार्यालय को निम्नलिखित समाज और संस्थाओ के समाचार प्राप्त हुए हैं।—वैदिक मिशनरी गुरुकुल वेदमन्दिर मथुरा, आर्य समाज, नागौर राजस्थान। आर्य समाज, देहरादून। आर्य महिला परिषद्, गुरुदासपुर। आर्य समाज, महर्षि दयानद बाजार लुधियाना। आर्य समाज मन्दिर गिलौला बहराईच (उ०प्र०)। आर्य समाज, कक्षोली बलसाड। आर्य युवक परिषद् पजाब। आर्य समाज मन्दिर, टकारा। महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा राजकोट गुजरात। आर्य समाज (जी०टी० रोड) मुजफ्फर नगर)।

श्री शांति प्रकाश प्रेम प्रभाकर का 74 वा जन्म दिवस

12 दिसम्बर 1987 को मोती बाग, डी० 126, नई दिल्ली मे स्वामी श्री आनन्दबोध जी सरस्वती की अध्यक्षता मे गढ़वाल के प्रसिद्ध समाज सेवी, स्वतन्त्रता सेनानी, श्री शान्ति प्रकाश जी "प्रेम" प्रधान आर्य समाज पचपुरी गढ़वाल का 74 वा जन्म दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर ब्रह्मचारी श्री स्वदेश कुमार शास्त्री के पौरोहित्य मे वृहत यज्ञ हुआ। श्री प्रेम जी की धर्मपत्नी ने पति की दीर्घायु की कामना करते हुए तिलक किया। स्वामी आनन्द बोध जी ने प्रेम जी सेवा कार्यों की प्रशंसा करते हुए अपना शुभ आशीर्वाद दिया।

दयानन्द मौडल स्कूल जालन्धर

12-12-87 को दयानन्द मौडल सीनियर सेकेण्डरी स्कूल जालन्धर में वार्षिक खेल-कूद और दौड का आयोजन किया गया। मेहरचन्द टैक्नीकल इन्स्टीट्यूट के प्राचार्य श्री एम० एस० परमार ने उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता की। प्रारम्भ में स्कूल के प्राचार्य श्री कवल सूद ने अध्यक्ष से खिलाडियो का परिचय कराया। तदनन्तर अध्यक्ष द्वारा ध्वजारोहण के उपरान्त खिलाडियों ने प्रतिज्ञा ली और औलपिक मशाल जलाकर खेलो का उद्घाटन घोषित किया। खिलाडियो ने इस आयोजन में भांति-भांति के करतब दिखा कर दर्शको को मोहित कर लिया। समापन समारोह की अध्यक्षता जालन्धर के प्रमुख निर्यात व्यापारी श्री जे० के० गुप्ता ने की। इस समारोह मे अन्याय गणमान्य व्यक्तियों में स्थानीय प्रबन्ध समिति के चेयरमेन श्री सोहन लाल, डी० ए० वी० कौलेज प्रबन्ध समिति के चेयरमैन श्री डी० डी० सूद, हसराज महिला महाविद्यालय की प्राचार्य श्रीमती कान्ता सरीन, स्थानीय समिति के सदस्य श्री के० एल० साहनी तथा श्री बलदेव राज तलवार के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। समापान समारोह मे प्राचार्य श्री सूद ने खेल के क्षेत्र में अपने स्कूल के योगदान की चर्चा करते हुए बताया कि विद्यालय के विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय तथा अन्तर राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति अर्जित की है। समारोह मे खेलो के साथ-साथ छात्रों ने पी० टी० लेजियम, डबल के प्रदर्शन एव अनेक प्रकार की कलाबाजियां तथा पिरामिडो का निर्माण दिखाया। छात्रो ने गरबा और गिद्धा नृत्य भी प्रदर्शित किए। अध्यक्ष महोदय ने खेलो की प्रगति के लिए छ हजार दान के अतिरिक्त एक वर्ष तक राज्य स्तर पर प्रदर्शन करने वाले एक खिलाडी को प्रतिमास तीन सौ रुपया छात्र वृति देने का भी वचन दिया। अध्यक्ष एव अभ्यागतों के प्रति आभार व्यक्त करने के उपरान्त 'सारे जहां से अच्छा' सुरम्य सगीत से समारोह का समापन हुआ। —प्राचार्य।

हांसी में वेद प्रचार

आर्यसमाज हांसी की ओर से 11 से 14 दिसम्बर तक श्री हंसराज चोपड़ा, श्री जयकिशनदास आर्य, श्री हंसराज आर्य प्रधान, श्री जगदीश आर्य के यहां पारिवारिक सत्सग हुआ। जिसमें सभा उपदेशक श्री ठा० दुर्गासिंह तूफान, समाज पुरोहित श्री भरतलाल शास्त्री, स्वामी सुमेधानन्द गुरुकुल फतेहाबाद तथा श्री अतर सिंह आर्य क्रान्तिकारी का उपदेश हुआ जिसमें वैदिक परिवार के आदर्श, सामाजिक कुरीतियां, दहेज, शराब आदि से दूर रहकर चारित्रिक उत्थान पर बल दिया। —विजयकुमार आर्य मन्त्री आर्य समाज हांसी

व्यायाम प्रशिक्षण शिविर

18 से 27 दिसम्बर तक आर्य युवक दल हरियाणा की ओर से गाव सिरसी में व्यायाम प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। शिविर में 50 नवयुवक ने भाग लिया। उन्हें व्यायाम, आसन, तथा लाठी चलाने का प्रशिक्षण श्री प्रदीप कुमार आर्य ने दिया। —यशवन्त आर्य महा मन्त्री आर्य युवक दल हरियाणा

आर्य युवा सम्मेलन

दिल्ली। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् श्रिनगर एव आर्यसमाज त्रिनगर के सयुक्त तत्वावधान मे प० यशपाल सुधांशु की अध्यक्षता में "आर्य युवा सम्मेलन" का आयोजन किया गया। श्री सुधांशु ने युवाओं को आह्वान किया कि आर्य समाज का क्षेत्र युवा वर्ग के लिए कल्याणकारी पथ है, नौजवानों को आगे बढ़कर रचनात्मक कार्य करने चाहिए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नव निर्वाचित प्रधान डा० धर्मपाल आर्य का क्षेत्रीय आर्य समाजों व परिषद् शाखाओ के पदाधिकारियों द्वारा स्वागत किया।

श्री राम गुप्ता (हरियाणा कैमीकल) कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे, मच सचालन श्री बृजेश आर्य ने किया।

योग्य कन्या चाहिये

1 वर आयु 28 वर्ष, कद 5-8," शिक्षा दसवीं, पुस्तक विक्रेता, मासिक आय 1700 रु० निवासी बालोतरा (राजस्थान) रजि० न० 702, जाति-गोस्वामी

2 वर आयु 48 वर्ष, कद 5 5' शिक्षा दसवी, निजी व्यवसाय से मासिक आय 3000 रु०, निवासी सोनीपत, जाति अरोडा (नागपाल) रजि० न० 701,

3 वर आयु 30 वर्ष, कद 5 5½" शिक्षा मैकेनिकल इजीनीयर मासिक आय 2500 रु० निवासी फरीदाबाद, जाति-खत्री रजि० न० 700

4 वर आयु 31 वर्ष कद 5 11," शिक्षा बी०ए०, सर्विस एल० आई०सी० में, मासिक आय 2400 रु०, जाति सिन्हा, रजि० न० 699

5 वर आयु 24 वर्ष, कद 5 9", शिक्षा बी०काम० निजी व्यवसाय, मासिक आय 2000 रु० जाति राजपूत रजि न० 698

6 वर आयु 23-1/4 वर्ष, कद 5 4" शिक्षा बी० काम०, व्यवसाय डी०डी० ए० मे सरकारी ठेकेदार, मासिक आय 2000 रु० जाति अरोडा, रजि० न० 697 अ

7 वर आयु 50 वर्ष, कद 5 9' शिक्षा मैट्रिक सरकारी कर्मचारी, मासिक आय 2000 रु० जाति खत्री, रजि० न० 703

8 वर आयु 22 वष, कद 5-6" शिक्षा सातवी, व्यवसाय वस्त्र विक्रेता, मासिक आय 2000 रु०, जाति-खत्री, निवासी जिला बिजनौर, रजि० न० 697

9 वर आयु 24-3/4 वर्ष, कद 5 6-1/4" शिक्षा बी० काम०, सर्विस, विकास अधिकारी, मासिक आय 3500 रु० जाति खत्री, रजि० न 696

10 वर आयु 27 वर्ष, कद 5-9" शिक्षा श्री इजीनियरिंग पास, राशन की दुकान, जाति खत्री, रजि० न० 695

सम्पर्क करें—डा० मदनपाल वर्मा अधिष्ठाता अन्तर्जातीय विवाह विभाग, आर्य समाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 समय साय 5 से 7 बजे तक

छोटा नागपुर क्षेत्र में

विशाल नेत्र-चिकित्सा शिविर

दयानन्द फाउण्डेशन द्वारा लोहरदगा में 21 दिसम्बर से 31 दिसम्बर, 87 तक और सिमडेगा में 25 दिसम्बर से 4 जनवरी, 1988 तक विशाल नेत्र-चिकित्सा शिविरों का आयोजन किया गया। डा० अर्जुनदास ग्रोवर ने छोटा नागपुर क्षेत्र से उपचार-योग्य नेत्र ज्योतिहीनता के उन्मूलन का सकल्प किया है। आदिवासी और कमजोर वर्गों की सेवा के लिए अब तक मोतियाबिन्द के 800 सफल आपरेशन किए जा चुके हैं और 5000 से अधिक सामान्य नेत्र रोगियों को मुफ्त चश्मे तथा औषधि आदि वितरित की गई है। दिल्ली के डा० आनन्द ग्रोवर और चण्डीगढ़ के डा० कापड़िया तथा उनके सहयोगियों ने शिविरों को सफल बनाया।

विशेषता—इन शिविरों की विशेषता यह रही कि रोगियों के आवास और भोजनाच्छादन की निःशुल्क व्यवस्था की गई, चश्मे और औषधियां मुफ्त वितरित की गई, आपरेशन के बाद भी पूरी देखभाल की गई—जिसकी अन्यत्र उपेक्षा कर दी जाती है, जरूरतमन्दो को वस्त्र भी मुफ्त वितरण किए गए। स्वस्थ होकर जाने से पहले भविष्य में स्वस्थ रहने के लिए शुभ कामना के निमित्त यज्ञ करके दयानन्द फाउन्डेशन की गाड़ी से घर तक पहुचाया गया।

लोहरदगा—भावी शिविरो के सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी के लिए लोहरदगा के डी०ए०वी० स्कूल के प्रिंसिपल और आर्यसमाज के प्रधान श्री सुरजन ठाकुर से सम्पर्क करें।

सिमडेगा—आनन्दभवन के प्रबन्धक से सम्पर्क करें।

सभी नागरिकों से सामान्य वस्तुओं का सहयोग सधन्यवाद स्वीकार किया जाएगा।

नारायणदास ग्रोवर
निदेशक डीएवी पब्लिक स्कूल्स रांची

डा० वाचस्पति कुलवन्त
उपनिदेशक डीएवी पब्लिक स्कूल्स
हेहल, रांची

दयानंद फाउंडेशन, रांची

नारी जागरण अभियान

इन्दौर से दिवराला तक पदयात्रा

नारी उत्पीडन के विरुद्ध जन-जागरण निरन्तर होता रहे इस उद्देश्य को लेकर इन्दौर से प्रमुख आर्य समाजियों ने पदयात्रा का निश्चय किया है। यह पदयात्रा 26 जनवरी 1988 को प्रारम्भ होगी इसमें सन्यासी, वानप्रस्थी वृद्ध और महिलाएं भाग लेगी। पदयात्रा इन्दौर से आरम्भ होकर हातोद, देपालपुरा, बडनगर, बदनावर, रतलाम, जावरा, मन्दसौर, पीपल्यामडी, मल्हारगढ़, नीमच, नीम्बाहेडा, चित्तौडगढ़ भीलवाड़ा, नसीराबाद, अजमेर, किशनगढ, जयपुर, चोमू होते हुए दिवराला पहुचेगी। प्रत्येक पदयात्री अपने साथ बिस्तर व जलपात्र अवश्य लावे। पदयात्रा समाप्त होने पर पदयात्रियों को रेल या बस द्वारा वापिस भेजने की व्यवस्था की जावेगी।

आप अपने यहां से अधिक से अधिक नर-नारियों को इस पदयात्रा में शामिल होने के लिए प्रेरित करें।

—जगदीश प्रसाद वैदिक, प्रधान आर्य समाज सयोगिता गज, इन्दौर म० प्र०

गुरुकुल गौतमनगर मे गोशाला तथा उपाध्याय कक्ष का उद्घाटन

श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली में 17 जनवरी को प्रात. यज्ञ के पश्चात् विशेष समारोह मे गोशाला तथा उपाध्याय कक्ष का उद्घाटन हुआ। साथ ही डीजल जीप भी विधिवत् भेंट की गई। नवम्बर मे हुए वार्षिकोत्सव के अवसर पर दानी महानुभावो ने इस जीप के लिए धन दान दिया था जिससे गुरुकुल सम्बन्धी कार्यों को चलाने मे सुविधा हो सके।

श्री स्वामी दीक्षानन्द जी के सान्निध्य में हुए समारोह को प्रसिद्ध आर्य विद्वान् श्री पं० शिवकुमार शास्त्री, श्री क्षितीश वेदालकार और श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय ने सम्बोधित किया। श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने मुख्य अतिथि के रूप मे उद्बोधन किया और आशीर्वाद दिया।

ब्रह्मदत्त स्नातक के साथ पुलिस का दुर्व्यवहार

भारतीय लेखक मंच के 69 वर्षीय वरिष्ठ व अति सम्मानित सदस्य श्री ब्रह्मदत्त स्नातक के साथ जो एक स्वतन्त्र सेनानी व मान्यता प्राप्त पत्रकार भी हैं, जनकपुरा के थानाध्यक्ष ने स्वय व सिपाही बलबीर सिंह की सहायता से अपमानजनक दुर्व्यवहार किया। वे अपने साथ जेबकटी की एक घटना की सूचना देने 6 जनवरी को थाने गए।

थाने मे श्री स्नातक की शिकायत रजिस्टर में दर्ज करने से इन्कार किया गया तथा लिखित शिकायत भी स्वीकार करने में लगभग तीन घटे तक आनाकानी की गई। बाद में इस बदसलूकी की शिकायत भी लिखने से मना किया गया। भारतीय लेखक मच ने प्रस्ताव पास करके श्री स्नातक जैसे सम्मानित व्यक्ति से दुर्व्यहार के दोषियो के खिलाफ अविलम्ब कठोर कारवाही करने की मांग की है।

आर्य समाज, ब्यावर द्वारा अकाल राहत कार्य

ब्यावर से लगभग 30 किलोमीटर दूर मसूदा क्षेत्र मे दिनाक 3-1-88 को आर्य समाज, मसूदा में 200 दो सौ व्यक्तियों को प्रति व्यक्ति 15 किलो गेहू, आटा, दाल व वस्त्र वितरित किये। ये व्यक्ति अत्यन्त निधन परिवार से थे। इनमें 62 विधवाएें, 34 अपंग व्यक्ति 21 सूरदास, 83 बेसहारा व्यक्ति थे। इन सबको श्री अमरसिंह आर्योपदेशक ने स्वय जाकर देखा और उनकी सुची बनाकर आर्य समाज, ब्यावर का कार्ड दिया। ये व्यक्ति लगभग 32 गांवों के थे। —विष्णुदेव आर्य मन्त्री

आर्य समाज मुसाढ़ी का उत्सव

आर्य समाज, मुसाढी (नालन्दा) का वार्षिकोत्सव 1 से 3 फरवरी तक सोत्साह मनाया जायेगा। जिसमे स्वामी ब्रह्मानन्द, प० ओम्प्रकाश वर्मा, श्रीमती राजबाला और श्री दयानन्द सत्यार्थी आदि विद्वान् और उपदेशक भाग लेंगे।

—शिवबालक सिंह आर्य

आर्यसमाज डी० सी०एम० के लिए धन की अपील

आर्यसमाज रेलवे कालोनी, दिल्ली क्लाथ मिल क्षेत्र को सक्रिय करने का सकल्प आर्य युवकों ने लिया है। यहा साप्ताहिक यज्ञ, सत्सग, पुस्तकालय, आदि की गतिविधिया प्रारम्भ कर दी गई हैं। 25-30 वष पूर्व इस आर्यसमाज मन्दिर की स्थिति अच्छी थी, परन्तु आज जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है। अत, दानी सज्जनो व आर्यसमाजो से प्रार्थना है कि मन्दिर को भव्य रूप देने के लिए आर्थिक सहयोग करें।

—चन्द्रमोहन आर्य सयोजक

श्री हरिश्चन्द्र आर्य दिवगत

आर्य समाज लाडनू के कर्मठ कार्यकर्ता श्री हरिश्चन्द्र आर्य का 87 वर्ष की आयु मे निधन हो गया, आर्य समाज लाडनू ने श्री आर्य के निधन पर शोक प्रस्ताव पास किया।

'युवा उद्घोष' का विशेषांक आर्य जनता से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली ने अपने पाक्षिक युवा उद्घोष' का प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष गणतन्त्र दिवस पर 'कुरीति उन्मूलन विशेषांक' निकालने का निश्चय किया है। व्यापारी बन्धुओं, दानदाताओं व आर्य समाजो, डी ए वी सस्थाओं से अनुरोध है कि विज्ञापन देकर अपना सहयोग दें।

विज्ञापन आदेश व प्रिन्टिग मैटर के साथ समस्त राशि क्रास चैंक/ड्राफ्ट "युवा उद्घोष" के नाम से कार्यालय आर्य समाज कबीर बस्ती दिल्ली-110007 के पते पर भेजें। अन्य जानकारी हेतु—अनिल आर्य, सम्पादक व प्रकाशक से सम्पर्क करें।

आर्य युवक दल हरियाणा

आर्य युवक दल की ओर से मास दिसम्बर में गांव रधाना (जीन्द) मे 60 आर्य युवको का विधिवत् गठन हुआ। 21 से 27 दिसम्बर तक गांव सिरसी जिला करनाल मे 52 आर्य युवकों की नियमित शाखा चलाने के बाद 27-12-87 को विधिवत् आर्य युवक दल की स्थापना की गई, जिसके समापन समारोह में ब्र० रामस्वरूप, श्री सूर्यदेव शिक्षक उपस्थित हुए। 28 दिसम्बर से गांव भैणी खुर्द (करनाल) में भी विधिवत् आर्य युवक दल की शाखा चल रही है, जिसको 5 जनवरी को नियमित कर दिया गया।—वेद सुमन वेदालकार

सूखा पीडितों की सहायता

आर्य समाज अशोक विहार फेज-I की ओर से सूखा पीडितों की सहायतार्थ स्वामी धर्मानन्द जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उडीसा की सेवा मे लगभग 14000/ रु० और पर्याप्त मात्रा मे नये व पुराने वस्त्र भेंट किये गये। जिसमें 11000/ रु० का चैंक आर्य स्त्री समाज अशोक विहार की ओर से स्वामी जी को भेंट किया गया। श्रीमती प्रेमशील जी प्रधाना व श्रीमती पदमा तलवाड मन्त्रिणी स्त्री आर्य समाज का विशेष योगदान रहा। इससे पूव 501/-रु आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के सूखा राहत कोष मे आर्य समाज की ओर से पहले भी दिया जा चुका है।

—हरप्रकाश आहलूवालिया उपप्रधान

(पृष्ठ 1 का शेष)

के सम्मानार्थ उन्हे स्वर्ण पदक प्रदान किया। कुलाची हसराज माडल स्कूल की छात्राओ ने स्वागत गान और देश भक्ति का गीत प्रस्तुत किया।

अन्त में श्री दरबारी लाल ने अपने स्वागत के उत्तर मे कहा कि मैंने आज तक अपने जन्म दिवस की तारीख किसी को नहीं बताई थी। पहली बार ही इस प्रकार मेरा यह जन्म दिवस मनाया जा रहा है। उन्होने कहा कि मैंने अपने जीवन मे एक ही मन्त्र सीखा है और वह यह है कि निःस्वार्थ भाव से कम किये जाओ, सफलता अवश्य मिलेगी।

श्री राम नाथ सहगल ने समारोह का कुशल सचालन किया।

भारत दर्शन के लिए आर्य स्पेशल ट्रेन यात्रा

अखिल भारतवर्षीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा दिल्ली के तत्वावधान मे भारत दशन की योजना रेल द्वारा सम्पन्न करने का निश्चय हुआ। 25 अक्टूबर साय 3 बजे आर्य समाज करोलबाग मे सावदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध जी की अध्यक्षता मे यात्रा मगलमय होने की कामना की गई। इस यात्रा में अमेरिका अफ्रीका, पजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, मध्य प्रदेश, दिल्ली, महाराष्ट्र और बिहार के यात्रियो ने सोत्साह भाग लिया। कार्यक्रमानुसार यह यात्रा 25 अक्टूबर को रात्रि 11 30 बजे पुरानी दिल्ली जक्शन से प्रारम्भ हुई।

प्रथम पडाव जयपुर मे हुआ। दोनो स्थानीय आर्य समाजो ने यात्रियो का हार्दिक स्वागत किया। किशनगढ़ मे लोगो ने ट्रेन रुकवाकर स्वागत किया। अजमेर पहुचकर, पुष्कर मे ब्रह्माजा मन्दिर देखकर चितोडगढ़ पहुचे वहा गुरुकुल के ब्रह्मचारियो ने बैण्ड-बाजे से यात्रियो का स्वागत किया। गुरुकुल में सभी ने मिलकर सध्या हवन किया। श्री रामलाल मलिक की प्रेरणा से यात्रियों ने अनुमानत दस हजार रुपये गुरुकुल को दान दिया। वहा से रवाना हुए। मध्य प्रदेश के नीमच, मन्दसौर और मऊ छावनी के आर्य समाजों ने स्मरणीय स्वागत किया और जलपान कराया। मऊ औरगाबाद के लिए प्रस्थान किया। वहा सभी यात्री अजन्ता एव एलोरा की गुफाए देखने के लिए उतावले थे। रेल से उतर कर बसो मे सवार हुए। जिसका सारा प्रबन्ध आर्य समाज के यशस्वी उपदेशक श्री प० ज्ञानेन्द्र जी शर्मा ने किया था। गुफाएं देखने के पश्चात् सिकन्दराबाद के लिए प्रस्थान किया।

सिकन्दराबाद और हैदराबाद के ऐतिहासिक स्थान बसो मे जाकर देखे। वापिस आकर सायकाल रेल से वास्को-डीगामा (गोआ) के लिए प्रस्थान किया। गोआ पूरा देखने की इच्छा के कारण गाडी वहा से विलम्ब से चली। गोवा से हुबली होते हुए मैसूर पहुचे। मैसूर में वृन्दावन गार्डन और ऐतिहासिक स्थान देखे। मैसूर मे जो स्वागत, सेवा एव सहयोग श्री भक्तराम शर्मा के दामाद श्री गणपति वेदालकार और उनकी धर्मपत्नी सविता देवी ने दिया वह चिरस्मरणीय रहेगा। उन्हाने सारा दिन यात्रियों की सेवा में लगा दिया। फल वितरण आर्य समाज मैसूर की ओर से किया गया। यज्ञ प्रवचन रेलवे प्लेट फार्म पर ही हुए।

फिर बगलौर होते हुए पाण्डीचेरा पहुचे। अरविन्दाश्रम देखकर वहा से रामेश्वर के ऐतिहासिक मन्दिर का दशन किया। वहां से मदुरै पहुचकर मीनाक्षी मन्दिर देखा जो शिल्पकला वास्तुकला एव चित्रकारी की मुह बोलती तस्वीर। वहा की कला दीर्घा को देखकर यात्रा भाव बिभोर हो उठे।

मदुरै से कन्याकुमारी के पास तेंन्यूली रेलवे स्टेशन से मीटर गेज छोडकर ब्राडगेज बदलती थी। रेलवे स्टेशन पर काफी कठिनाई आई। तब श्री रामचन्द्र विकल ससत्सदस्य और बडौदा हाउस रेलवे भवन से फोन पर सम्पर्क करके उनके सहयोग से रात्रि को गाडी मिली। देरी होने के कारण अगले दिन ही कन्याकुम री पहुच पाए। सूर्योदय दर्शन हेतु रात्रि मे कन्याकुमारी ही ठहरे। प्रात काल विवेकानन्द स्मारक के दर्शन किए। इस स्मारक से यात्री अत्यधिक प्रभावित हुए। अधिकतर यात्रियो ने कन्याकुमारी नही देखा था। कन्याकुमारी और तीन सागरों के सगम के दृश्य को देखकर यात्री भाव-विभोर हो उठे।

त्रिवेन्द्रम होते हुए कोयम्बटूर पहुचे। वहां से ऊटी के रमणीक स्थान देखकर मद्रास के लिए प्रस्थान किया। मद्रास से तिरुपति गए। वहां वैंकटेश्वर मन्दिर देखकर वहां से जगन्नाथपुरी के लिए प्रस्थान किया। भुवनेश्वर के रेलवे स्टेशन पर भावभीना स्वागत हुआ। रेलवे स्टेशन पर ही सभा हुई, जिसमे उडीसा आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री प्रियव्रत दास एव उनकी धर्मपत्नी श्रीमती धन्नोदेवी ने हरेक सुन्दर चीज का प्रबन्ध किया।

भुवनेश्वर से चलकर कलकत्ता पहुचे। कलकत्ता से पटना होते हुए वाराणसी के लिए प्रस्थान किया। स्टेशन पर कन्या गुरुकुल मातृ मन्दिर की छात्रा और अध्यापिका बैंड के साथ शोभा-यात्रा के रूप मे यात्रियों को गुरुकुल में ले गए। वहा यज्ञ एव सभा हुई। श्री रामलाल मलिक की अपील पर गुरुकुल की सहायतार्थ यात्रियो ने लगभग पन्द्रह हजार रुपये दान दिए। भोजन कन्या गुरुकुल में ही किया। वाराणसी के धार्मिक एव ऐतिहासिक स्थान देखकर इलाहाबाद के लिए प्रस्थान किया।

इलाहाबाद के आनन्द भवन और त्रिवेणी सगम और धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थान देखकर टूण्डला होते हुए एटा रवाना हुए वहां गुरुकुल के ब्रह्मचारियों अधिकारियों ने स्वागत किया। चौरासी खम्भों से युक्त यज्ञशाला में सभा हुई जिसमे श्री मलिक की अपील पर यात्रियो ने गुरुकुल को पखों सहित अनुमानत पैंतीस हजार रुपए दान दिए गुरुकुल के प्रबन्धकों ने सभी यात्रियों को भोजन कराया। एटा से रात्रि में दिल्ली के लिए रवाना हुए।

यह आर्य स्पेशल रेल यात्रा 22 नवम्बर को पूरी हुई। यात्रा मे कठिनाई होना स्वाभाविक है। कठिनाइयों के होते भी यात्रियों ने जिस सौहार्द और आत्मीयता का परिचय दिया उसके लिए सभा उनका आभार प्रकट करती है। इस यात्रा को सफल बनाने में जिन व्यक्तियो ने सहयोग दिया उन सबके हम आभारी है। श्री चेतन स्वरूप कपूर और आचार्य हरिदत्त शास्त्री ने दिन-रात सहयोग दिया। दोनो महानुभावों का तथा मन्त्री श्री बलराम राणा व उपप्रधान रामभज बत्रा का भी हम धन्यवाद करते हैं।

नोट [इस यात्रा की वीडियो फिल्म बनाई गयी है जो यात्रा हमने 27 दिन की वह आप वीडियो फिल्म मगवाकर 2-3 घटे में देख सकेंगे।]

—रामलाल मलिक, प्रधान अ० भा० श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा

ऋषि बोधोत्सव को उत्साह से मनाइए

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने समस्त आर्य समाजो से इस वर्ष 16 फरवरी को ऋषि बोधोत्सव धूमधाम से मनाने की अपील करते हुए भारत सरकार के सूचना मन्त्री श्री अजीत पाजा को भी निम्न आशय का पत्र लिखा है—

19वी शती मे महान समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सामाजिक कुप्रथाओ, का घोर विरोध करते हुए वेद प्रतिपादित सिद्धान्तो के आधार पर विश्व बन्धुत्व और राष्ट्र प्रेम की भावना से 1875 मे आय समाज की स्थापना की थी। उन्होने ही स्वराज्य शब्द सवप्रथम भारतीय जनता के समक्ष रखा था।

शिवरात्रि का पावन पर्व आयजगत् की ओर से महर्षि दयानन्द बोध दिवस के रूप मे मनाया जाता है। शिवरात्रि पव पर ही उन्हे बोध हुआ था और शिव मन्दिर से निकलकर वह सच्चे शिव की खोज मे घर छोडकर चले गए थे।

आगामी 16 फरवरी 1988 को ऋषिबोधोत्सव का पव है। हमारा निवेदन है कि इस दिन आय समाज द्वारा सचालित बोधदिवस के कायक्रमो को राष्ट्रीय स्तर पर दूर दर्शन से प्रसारित किया जावे।

पुरोहित चाहिए

वैदिक सिद्धान्त तथा कमकाण्ड का उत्तम कोटि का ज्ञान, वैदिक सस्कार कराने मे दक्षता सगीत जानने वाले को वरीयता। शिक्षण योग्यता आयु, शिक्षा एव पौरोहित्य का अनुभव आदि के पूर्ण विवरण सहित आवेदन करें। गृहस्थी पुरोहित के लिए आवास की व्यवस्था है। पत्र व्यवहार का पता—सरदारीलाल धवन, प्रधान आयसमाज, मकान न० 5 थापर नगर, मेरठ—250001

डी ए वी पब्लिक स्कूल फरीदाबाद में खेलकूद समारोह

23 दिसम्बर 1987 को डी ए वी पब्लिक स्कूल फरीदाबाद खेलकूद समारोह का उद्घाटन श्रीमती अनीता चौधरी प्रशासनिक अधिकारी हुडा ने किया। चित्र में प्रि० आर्य वीर मल्ला और उपाचार्य श्रीमती वीना सिंह मुख्य अतिथि का स्वागत कर रहे हैं।

विद्यालय के छात्रो ने ड्रिल पी० टी० और अन्य अनेक खेलो में उत्साह से भाग लिया। चित्र मे छात्राए पथ-सचलन कर रही है। चारो अन्तः सदनो के विजयी छात्रो को पुरस्कृत किया गया। 100 मीटर की दौड में सुमित थापर अपर्णा ज्योति, आशीष सैनी और विशाल पुरी सुस्मिता विजेता रहे। 200 मीटर की दौड में अमिताभ, भावना, मीनू, सदीप, चन्द्रशेखर और स्मिता पुरस्कृत हुए। 400 मीटर की दौड मे प्रकाश, पुष्पलता आदि पुरस्कृत हुए।

विद्यालय को फरीदाबाद के एक अभिभावक की ओर से दूरदर्शन सेट भेंट किया जा रहा है जिसे वेदव्यास जी और प्रि० मल्ला स्वीकार कर रहे हैं।

श्री रामकृष्ण गौतम पुरस्कृत

अम्ब (अब चौकी मीनार) जिला ऊना के मुख्याध्यापक श्री रामकृष्ण गौतम को हिमाचल सरकार ने उनकी शैक्षिक सेवा के उपलक्ष्य मे राज्य स्तरीय श्रेष्ठ अध्यापक का पुरस्कार प्रदान किया है उन्होने अनेक ग्रामीण पाठशालाओ मे कार्य किया और ग्राम सुधार, समाज सुधार, मुहल्लो की सफाई, पेयजल की सुविधा आदि की दिशा मे प्रशसनीय कार्य किया। इस समय वे आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के सयुक्त मन्त्री, वेदप्रचारिणी सभा ऊना के प्रधान और आर्य समाज अम्ब के मत्री हैं।

—हंसराज शास्त्री पुरोहित

(श्री रामकृष्ण गौतम)

डी ए वी पब्लिक स्कूल पीतमपुरा, दिल्ली

डी ए वी स्कूल पीतमपुरा नई दिल्ली के वार्षिक समारोह मे मुख्य अतिथि श्री लक्ष्मी मल सिंघवी को प्रो० वेदव्यास जी उपहार भेंट कर रहे है।

आर्य समाज का शिष्टमडल उपराष्ट्रपति से मिला

आर्य समाज, भोपाल का एक शिष्ट मडल, श्री गौरी शकर कौशल (उप-प्रधान, मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा) के नेतृत्व मे उपराष्ट्रपति डा० शकर दयाल शर्मा से मिला और उन्हे एक ज्ञापन दिया। जिसमे निम्नलिखित माग की गयी। 1 विदेशी धन पर धर्मान्तरण न हो, 2 गौ को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाये और म०प्र० से गोवश की निकासी पर प्रतिबन्ध लगाया जाये। 3 राष्ट्र भाषा हिन्दी की उपेक्षा न हो। 4 नई शिक्षा नीति मे देववाणी सस्कृत को पुन पूर्णवत स्थान मिले। 5 स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में प्रभावी कदम उठाया जाये तथा ग्राम-ग्राम मे कन्या मिडिल स्कूल खोले जाये आदि। उपराष्ट्रपति ने भोपाल में डी० ए० वी० कालेज खोलने के लिए शिष्टमडल को प्रेरित किया।

श्रद्धाञ्जलि समारोह

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना मे प० राम प्रसाद बिस्मिल दिवस 19 12 87 को मनाया गया। कार्यवाही यज्ञ से आरम्भ हुई जिसमे अनेक कार्यक्रम हुए।

—सुरेन्द्र कुमार आर्य उपमन्त्री

गौरी शकर का निधन

आर्य समाज बक्सर के कोषाध्यक्ष तथा कर्मठ सदस्य श्री गौरीशकर लाल आर्य का निधन 19 दिसम्बर को हो गया। वे लगभग 70 वर्ष के थे। उनके एकमात्र लडका परिवार मे है वे भी कर्मठ कार्यकर्ता हैं। दाह सस्कार पूर्ण वैदिक रीति अनुसार हुआ। —राजेश्वरी प्रसाद आर्य

यू० 103/81 लायसेंस टु पोस्ट विदाउट प्रिपेमेंट
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० 39/57 डी० सी० 409
N Y D. P.S O ON 21-1-88, 24 जनवरी 1988

डी ए वी फार्मेसी का दिल्ली बिक्री विभाग

उत्तर भारत की विश्वसनीय औषधि निर्माता डी०ए०वी० फार्मेसी जालन्धर का एक सेल डिपो, "डी०ए०वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी, चित्रगुप्त मार्ग नई दिल्ली-110055," के कार्यालय मे विगत दो तीन वर्षो से खुला हुआ है। यह फार्मेसी न केवल शुद्ध आयुर्वेदिक औषधिया उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण योगदान कर रही है, अपितु जनसेवा की भावना को लक्ष्य मे रख कर उचित मूल्य में जनता को शुद्ध औषधिया पहुचाने मे कायरत है। इसके अतिरिक्त डी० ए० वी० फार्मेसी द्वारा निर्मित हवन सामग्री, भी उचित मूल्य पर मिलती है। आय जनता से प्रार्थना है कि वह इस सुविधा का लाभ उठावे।

राम नाथ सहगल — निदेशक फार्मेसी
राम सिंह शर्मा — प्रबन्धक बिक्री विभाग

आर्य समाज पहाड़गंज की टंकारा-यात्रा

आय समाज, चूनामण्डी, पहाडगज नई दिल्ली की ओर से एक बस 12 2 88 को प्रात 10 बजे टकारा के लिए प्रस्थान करेगी बस का किराया 650/- प्रतिव्यक्ति है, इसमे दैनिक यज्ञ और भोजन व्यय भी सम्मिलित है। यात्रा व्यय जमा करने की अन्तिम तिथि 7 2 88 है। यात्री अपना नाम, आयु, पता तथा अपने आर्य समाज का पता अवश्य लिखायें। यात्री को सीट न० दिया जायेगा और वे उसी पर बैठेंगे। बच्चो को अतिरिक्त सीट देना सम्भव नही है। यात्रा का विवरण तथा दर्शनीय स्थलो के नाम तिथिश निम्नलिखित हैं—

12-2-88 दिल्ली से रात्रि 10 बजे अजमेर।
13 2-88 अजमेर 10 बजे प्रात से पुष्कर राज, नाथद्वारा।
14-2-88 प्रात नाथद्वारा से अहमदाबाद, राजकोट, जामनगर।
15-2 88 जामनगर से वाया मोरवी टकारा (टकारा मे 17 2-88 तक)
फिर 18 1 88 टकारा से द्वारका बेट, कन्या गुरुकुल पोरबन्दर, सोमनाथ मन्दिर।
19-2 88 पोरबन्दर से जयपुर।
रुपने 20-2-88 उदयपुर से चित्तौड।
21-2 88 चित्तौड से जयपुर।
22-2 88 जयपुर से दिल्ली रात्रि 9 बजे।

प्रधान	सयोजक	मन्त्री	मन्त्राणी
बलराम आहूजा	श्यामदास सचदेव	प्रियतमदास रसवन्त	कृष्णा रसवन्त
	टेलीफोन 738504	779614	779614

महाराजा हरिसिंह अग्रिकलचरल कौलिजियेट स्कूल

नागबनी मे म०ह०अ० कौलिजियेट स्कूल के वार्षिक व्यायाम प्रदर्शन मे 20 12 87 को मुख्य अतिथि पद से मुख्य न्यायाधीश ए०एम० आनन्द ने श्वेत कपोतो को आकाश मे उडाकर प्रदशन का उद्घाटन किया। प्राइमरी और मिडिल स्कूल की छात्राओ ने बैले नृत्य किए। कक्षा 11 के सजय शर्मा ने कीर्तिमान स्थापित किया। अमरहाउस चैंपियन बना तथा प्रतापहाउस ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। मुख्य अतिथि ने विजेताओ को मैडल प्रदान कर प्रोत्साहित किया और उनके प्रदर्शन की प्रशसा की। अन्त मे प्राचार्य महोदय ने मुख्य अतिथि एव प्रतिष्ठित अभ्यगतो सहित सभी उपस्थित जनो के प्रति आभार प्रदर्शित किया। —प्राचाय

न्यूयार्क में पुरोहित चाहिए

न्यूयाक (अमरीका) की आय समाज के लिये एक सुयोग्य पुरोहित चाहिए, प्रार्थी का आय सिद्धातो से परिचय, मन्त्रो का शुद्ध उच्चारण तथा विद्वान् होना आवश्यक है। अग्रेजी का सम्यक ज्ञान अनिवाय है। प्रार्थी के लिये आवश्यक है कि नि स्वाथ सेवा तथा प्रयत्न से आयसमाज का विकास कर सके। पारिश्रमिक यथा-योग्य तथा यथेष्ट दिया जावेगा। निर्वाचन के पश्चात् अविलम्ब अमरीका के लिय प्रस्थान करना होगा।

शेष विवरण के लिये स्वय मिले अथवा निम्न पते पर पत्र द्वारा सम्पर्क करे— प्रधान आय समाज निजामुद्दीन, डी 24 निजामुद्दीन ईस्ट, नई दिल्ली-110013

यवन नटो की शुद्धि

12 12 87 को आय समाज मन्दिर समालखा मे यज्ञ हवन के बाद मुसलमान नटो को उनकी स्वच्छा मे वैदिक धम मे दीक्षित किया गया। शुद्धि काय स्वामी स्वानन्द सरस्वती ने किया।

डी. ए. वी. माडल स्कूल

यूसुफ सराय नई दिल्ली—16

(अग्रेजी माध्यम, सहशैक्षिक पब्लिक स्कूल)

डी० ए० वी० प्रबन्धक कमेटी से सम्बद्ध रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ
प्रीनर्सरी+2, नर्सरी+3 तथा के० जी०+4, 1-4-1988 तक।
—कक्षा 1 से 7 तक कुछ स्थान उपलब्ध।

विशेषताए

—साय 5-30 बजे तक 'डे स्कूल, सुविधा।
—भारतीय संस्कृति एव सभ्यता का केन्द्र।
—विद्यार्थियो का सर्वांगीण विकास विद्यालय का दायित्व।
—श्रेष्ठ अध्यापिकायें एव समस्त आधुनिक सुविधाए।
—शैक्षिक एव सामाजिक गतिविधियों मे अद्वितीय।
—लगभग 30 विद्यार्थियो की छोटी कक्षाए।
—बाल भवन सुविधा (बाल भवन सोसायटी, भारत से सम्बद्ध)।
—कला एव कौशल, सगीत, गायन एव वाद्य (गिटार, बैंजो, बोंगो, हारमोनियम) नृत्य जूडो एव कराटे।

रजिस्ट्रेशन फार्म 18 जनवरी से 30 जनवरी तक (प्रात 8-30 बजे से दोपहर 1-30 बजे तक सभी कार्य दिवसो पर विद्यालय से उपलब्ध शुल्क 40 रु०)।

यातायात उपलब्ध—प्रवेश परीक्षा एव साक्षात्कार के उपरान्त केवल योग्यता के आधार पर।

दूरभाष 667497/पी० पी० — हस्ता०/-मुख्याध्यापिका

D.A.V. CENTENARY PUBLIC SCHOOL

1961/7 Opposite Arya Samaj Mandir
NERELA, DELHI-40
(Under the auspices of
D A V College Managing Committee, New Delhi)
An English Medium Co-educational School with Indian Culture background run on Public School lines known for excellence in all spheres of school life

Opens Registration for Admission
from 15th January 1988 for
1 LKG (+3) as on 1 4 88
2 Few seats available in class L K G to 7th
Admission strictly on Merit by test and interview
Registration forms available from school office between 9 00 a m and 1 00 p m

SCHOOL TRANSPORT AVAILABLE

M G Katwal — Manager
Darbari Lal — Organising Secretary
S S Mukhija — Principal

गोहत्या का विरोध

आर्य समाज तिजारा की ओर से 13 दिसम्बर को ग्राम जेरोली मे हुई सामूहिक गोहत्या के विरोध मे सम्पूर्ण तिजारा बन्द का आयोजन करके पुलिस स्टेशन के सामने आम सभा म बदल गई। इसमे आर्य समाज तिजारा की ओर से पुलिस व प्रशासन से माग की गयी कि अपराधियो को शीघ्र गिरफ्तार करके कडे से कडा दण्ड दिया जावे।—रतनलाल आर्य मन्त्री

महात्मा सुरेन्द्रमुनि दिवगत

कानपुर— आयसमाज वेदमन्दिर गोविन्दनगर' के सस्थापक सदस्य तथा 'गुरुकुल आश्रम ब्रह्मावर्त-बिठूर' के कोषाध्यक्ष महात्मा सुरेन्द्रमुनि का 73 वष की आयु मे 23 दिसम्बर को निधन हो गया। पत्नी तथा दो भाइयो का भरा-पूरा परिवार छोड गये हैं। ताडीखेत अल्मोडा और पिथौरागढ़ के आर्य-समाज मन्दिर मे शान्तियज्ञ सम्पन्न हुआ।—स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती

लाला रामस्वरूप दिवगत

आर्य समाज, जनकपुरी बी ब्लाक नई दिल्ली के कमठ कायकर्ता श्री लाला रामस्वरूप का 11 जनवरी को दोपहर 1 बजे 70 वर्ष की आयु मे निधन हो गया वे वैदिक मोहन आश्रम के सदस्य तथा पुरानी पीढी के आर्य मिश्नरी थे। मेरे साथ ब्लाक मे घर-घर जाकर टकारा के लिए दान एकत्रित करते थे।

—डा० आर० के० पुरी

शोक सदेश

आय समाज नगर उटारी के मन्त्री श्री विश्वनाथ प्रसाद आर्य की धर्म पत्नी का निधन 7-12-89 को हो गया। जिनका अत्येष्टि सस्कार वैदिक रीत्यानुसार प० महेन्द्र प्रसाद आर्य के आचायत्व मे सम्पन्न हुआ।

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री, द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाडी धीरज (फोन . 527335) दिल्ली से छपवाकर कार्यालय आर्य जगत्, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—सार्व सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 (फोन 343718)

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य —30 रुपये विदेश मे 65 पौ० या 125 डालर वष 51, अक 5 रविवार 31 जनवरी, 1988 दूरभाष: 343718
आजीवन सदस्य-251 रु० इस अक का मूल्य—75 पैसे सृष्टि सवत् 1972949088, दयानन्दाब्द 163 माघ- शु०-13, 2044 वि०

गणराज्य दिवस अंक-2

पुरी के शंकराचार्य की चुनौती स्वीकार

स्वामी अग्निवेश द्वारा शास्त्रार्थ की शर्तों का उल्लेख

जगन्नाथ पुरी के शकराचाय श्री निरजनदेव तीर्थ द्वारा सती प्रथा को वेदानुकूल सिद्ध करने का वक्तव्य दिये जाने पर आर्य समाज के अनेक विद्वानो ने और श्री स्वामी अग्निवेश ने भी उन्हें शास्त्राथ की चुनौती दी थी और उनसे कहा था कि पुरी की चार दीवारी से बाहर निकल यहा दिल्ली के रामलीला मैदान मे आकर शास्त्राथ करें। परन्तु श्री शकराचाय ने मौन साधे रखा। स्वय उडीसा के ही समाचार पत्रो मे अधिकाश बुद्धिजीवियो ने उनके विरुद्ध वक्तव्य दिये और जब न्यायालय ने अपने निणय द्वारा सती प्रथा को मानव जाति पर कलक तथा नारी जाति के प्रति घोर अन्याय घोषित कर दिया तब अन्तत श्री निरजन देव तीथ ने उडीसा के दैनिक 'प्रजातन्त्र' के 18 नवम्बर 1987 के अक मे यह घोषणा कर दी कि मैं अब अपनी ओर से इस वाद-विवाद अध्याय को समाप्त करता हू।

परन्तु जब 5 दिसम्बर से 23 दिसम्बर 87 तक स्वामी अग्निवेश के नेतृत्व मे दिल्ली से दिवराला तक 101 सन्यासियो ने पद यात्रा की और उसकी चर्चा देश के विभिन्न समाचार पत्रो मे हुई तो उनका दम्भ पुन जागृत हो गया और भुवनश्वर से प्रकाशित होने वाले दैनिक पत्र 'सवाद" के 24 दिसम्बर 1987 के अक में एक वक्तव्य देकर उन्होने पुन शास्त्रार्थ का आह्वान कर दिया।

उन्होने अपने वक्तव्य मे कहा कि सती प्रथा के विरुद्ध 150 वर्ष पूर्व कानून बन जाने और दण्ड की व्यवस्था हो जाने पर भी सती प्रथा बन्द नही हुई और जब तक हिन्दू समाज विद्यमान है तब तक वह कभी समाप्त नही होगी। उन्होने कहा कि वेदादि समस्त शास्त्र सती प्रथा का पूर्ण समथन करते हैं। इस प्रथा का विरोध करने वालो को मैं शास्त्रार्थ के लिये आह्वान करता हू। श्री स्वामी अग्निवेश के नेतृत्व मे हुई पदयात्रा का उल्लेख किये जाने पर उन्होने कहा कि मैं उनसे शास्त्राथ करने को पूरी तरह से तैयार हू। उनके आने जाने का माग व्यय और उनके निवास आदि की जिम्मेवारी मैं अपने ऊपर लेता हू। इसके बाद उन्होने यह भी ताना कसा कि स्वामी दयानन्द और आय समाज के लोग मूर्ति-पूजा, श्राद्ध और पिण्डदान आदि का विरोध करते रहे, परन्तु सौ साल के प्रचार के बाद भी क्या हिन्दू समाज से वे उनको छुडा सके ?

राजस्थान द्वारा और केन्द्र सरकार द्वारा सती प्रथा के विरोध मे कानून बनाए जाने की आलोचना करते हुए उन्होने कहा कि सरकार हिन्दुओ के धार्मिक मामलो मे अनधिकार हस्तक्षेप कर रही है। उन्होने सरकार पर यह भी आरोप लगाया कि वह धम निरपेक्षता की आड मे भिन्न-भिन्न सम्प्रदायो के लिए अलग अलग कानून बना रही है। यदि कम आयु मे शादी करना या एक से अधिक शादी करना अपराध है तो वह केवल हिन्दुओ के लिये ही अपराध क्यों है ? इस प्रकार के कानूनो से सरकार स्पष्ट रूप से हिन्दुओ के साथ भेदभाव बरत रही है और उन पर अत्याचार कर रही है। उन्होने काची-पीठ के शकराचाय को सरकार का समथक बताते हुए यह रहस्योद्घाटन भी किया कि जब तक सती प्रथा के सम्बन्ध मे शास्त्राथ और तक वितक के द्वारा निणय नही हो जाता तब तक इस बिल को स्वीकार नही करना चाहिये, इस आशय का मैंने राष्ट्रपति को तार भेजा है।

'आर्य जगत्' का ऋषि बोधाक

हर वष की भाति इस वष भी 'आय जगत्' का ऋषि बोधाक पूण साज-सज्जा के साथ 14 फरवरी को प्रकाशित किया जायगा। विशेषाक की तैयारी के कारण 7 फरवरी का अक बन्द रहेगा, कृपया पाठक नोट कर ले।

जगन्नाथ पुरी के शकराचाय के इस वक्तव्य का ओर जब स्वामी अग्निवेश का ध्यान खीचा गया तो उन्होने उसके जवाब मे कहा कि हम तो कब से सार्वजनिक रूप मे उनको शास्त्राथ की चुनौती दे रहे हैं। पर हमारा आग्रह यह रहा है कि वे पुरी की चार दीवारी के बजाय दिल्ली के रामलीला मैदान मे जन साधारण के समक्ष शास्त्रार्थ करे, तो अच्छा है। परन्तु वे यदि किसी कारण से अपनी माद से नही निकलना चाहते तो हम जगन्नाथपुरी पहुच कर भी उनसे शास्त्राथ करने को तैयार हैं। मेरा उनसे निवेदन है कि वे शास्त्राथ की जो भी तिथि रखना चाहे उसमे एक महीना पहले मुझे सूचित कर। क्योकि मैं भी अपने सामाजिक काय मे बहुत व्यस्त रहता हू और मेरे प्रोग्राम काफी पहले से बने होते । हमारी सहमति के पश्चात ही शास्त्राथ की तिथि तय मानी जायेगी।

उन्होने कहा कि मैं अपने साथ पाच आय विद्वानो को भी जगन्नाथ पुरी ले जाऊगा। इन सबका और मेरा हवाई जहाज से आने जाने का माग व्यय शास्त्राथ की तिथि तय हो जाने के पश्चात शकराचाय जी को भेजना होगा और हमारे भोजन तथा निवास की समुचित व्यवस्था की सूचना देनी होगी। उन्होने यह भी कहा कि हम केवल पुरी के शकराचाय से ही शास्त्राथ करेंगे, उनके किसी शिष्य से या किसी अन्य पौराणिक पडित से नही, क्योकि

(शेष पष्ठ 13 पर)

सूखा राहत कार्य

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एव डी० ए० वी० सस्थाओ की ओर से पिछले चार महीनो से सूखा ग्रस्त क्षेत्रो में निम्न तीन सूखा राहत केन्द्र चलाये जा रहे हैं—राजस्थान —आय समाज ब्यावर द्वारा अब तक लगभग 50 क्विटल खाद्य सामग्री और लगभग 5000 वस्त्र एव नकद राशि भी राजस्थान के सूखा ग्रस्त क्षेत्रो मे इस केन्द्र द्वारा बाटी गई। सौराष्ट्र—महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टकारा मे लगभग 80 क्विटल खाद्य सामग्री एव काफी मात्रा म कपडे सौराष्ट्र के सूखा ग्रस्त क्षेत्रो मे बाटे गये। उडीसा —गुरुकुल आश्रम आममेना, खडियार रोड, कालाहाण्डी मे लगभग 150 क्विटल खाद्य सामग्री और लगभग रु० 25000/ (पच्चीस हजार) के नये तथा पुराने वस्त्र बाटे गये हैं।

अब तक लगभग दो लाख रु० की खाद्य सामग्री एव कपडे आदि उपरोक्त तीनो सूखा राहत केन्द्रो मे भेजे जा चुके हैं। ये केन्द्र 30 सितम्बर 1988 तक चलेंगे। इनमें लगभग दस लाख रु० की खाद्य सामग्री की आवश्यकता है हमारी समस्त आय जनो से प्राथना है कि वे अधिक से अधिक खाद्य सामग्री तथा नकद राशि 'आय प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर माग, नई दिल्ली" के कार्यालय मे भिजवाने की कृपा करें। जहा से यह सारी सामग्री उपरोक्त तीनो केन्द्रो मे भेजी जाती है और सूखा ग्रस्त क्षेत्रो मे बाटी जाती है। जो भी आय जन खाद्य सामग्री एव राशि भेजेंगे। उनके नाम 'आय जगत्" साप्ताहिक समाचार पत्र मे प्रकाशित किये जायेंगे।

निवेदक

प्रो० वेद व्यास	दरबारी लाल	रामनाथ सहगल
प्रधान	कायकर्ता प्रधान	सभा मन्त्री

सम्पादक—क्षितोश वेदालकार व्यवस्थापक—रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

गायत्री मन्त्र : जप की विधि

—रमेश मुनि वानप्रस्थ—

वेदों के अब तक जितने भाष्यकार हुए हैं उन्होंने जप करने के लिये सबसे श्रेष्ठ गायत्री मन्त्र को माना है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी सन्ध्योपासना, पंच महायज्ञ विधि, संस्कार विधि इत्यादि में गायत्री मन्त्र को ही जप करने का सर्व श्रेष्ठ मन्त्र बताया है।

चारो वेदों में गायत्री मन्त्र ऋग्वेद मे एक सामवेद में एक, और यजुर्वेद मे 3 जगह है। इस प्रकार कुल पाच जगह है। ऋग्वेद मे गायत्री मन्त्र तीसरे मंडल के 62 वें सूक्त में 10 वा है। इसके ऋषि 'गाथिनो विश्वामित्र' और देवता सविता है। सामवेद मे यह मन्त्र उत्तरार्चिक 6/2/1/10 पर है। इसके भी ऋषि विश्वामित्र और सविता देवता यह मन्त्र सामगान के लिये उपयुक्त है। सामगान जप से पृथक् चीज है। इसलिए यह मन्त्र भी जप के उपयुक्त नहीं है। यजुर्वेद में गायत्री मन्त्र 22 वें अध्याय का 8 वा मन्त्र है। इसके भी ऋषि विश्वामित्र ही है और देवता सविता है। यह मन्त्र निचृद्गायत्री छन्द मे है। यजुर्वेद मे 30 वें अध्याय का दूसरा मन्त्र भी गायत्री मन्त्र है। इसके ऋषि विश्वामित्र नही है, बल्कि इसके मन्त्र द्रष्टा ऋषि नारायण हैं और देवता वही सविता है। इससे यह भी सिद्ध होता है कि गायत्री मन्त्र के द्रष्टा केवल विश्वामित्र ही नही है बल्कि नारायण ऋषि भी हैं। कई विद्वानो ने वेदों मे मन्त्रों की पुनरुक्ति का दोषारोपण किया है लेकिन वेद मे पुनरुक्ति दोष नहीं है। यजुर्वेद 22/9 वाले मन्त्र के द्रष्टा प्रजापति यज्ञपुरुष, विश्वामित्र, मेधातिथि, सुतम्भर विश्वरूप, अरुणत्रसदस्यू, स्वरत्यात्रेय इस प्रकार कुल आठ ऋषि हैं। और यजुर्वेद के 30 वें अध्याय के मन्त्र द्रष्टा दो ही ऋषि नारायण और मेधातिथि है। यजुर्वेद के 22 वें अध्याय मे कुल 34 मन्त्र हैं और उसका विषय 30 वें अध्याय के विषय से भिन्न है, जबकि यजुर्वेद के 30 वें अध्याय में कुल 22 मन्त्र हैं और इसका विषय 22 वें अध्याय से भिन्न है।

असली गायत्री मन्त्र यजुर्वेद के 36 वें अध्याय मे तीसरा है। इसका छन्द दैवी बृहती-निचृद्गायत्री है। इसलिये यह मन्त्र असली गायत्री मन्त्र है। इसमे खास बात यह है कि इस मन्त्र मे महाव्याहृतियां हैं। 36 वें अध्याय मे कुल 24 मन्त्र हैं और इसमे विश्वामित्र ऋषि ने दध्यङ्ङाथर्वण, वामदेव, मेधातिथि, सिन्धुद्वीप, लोपामुद्रा यानि पाच ऋषियो के साथ बैठक की और इस मन्त्र का साक्षात्कार किया। इस अध्याय के देवता अग्नि, बृहस्पति, सविता, इन्द्र, मित्रादयो लिङ्गोक्ता, वातादय, लिङ्गोक्ता, आप, पृथिवी, ईश्वर, सोम और सूर्य इस प्रकार बारह देवता हैं।

हमे ऐसे अनेकों व्यक्ति मिले जिन्होंने इस मन्त्र का जाप सवालक्ष पांच लाख, ग्यारह लाख व और भी अधिक किया, लेकिन उनको कोई लाभ नहीं हुआ। इसका कारण केवल यही है कि उन्होंने विधि-विधान से इस मन्त्र का जप नहीं किया। उन्होने हीरे को पाकर उसका कांच के टुकडे से अधिक उपयोग नहीं जाना।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गायत्री मन्त्र का निम्न अर्थ ठीक माना है,—'हे प्राणस्वरूप दुःखहर्ता और व्यापक आनंद के देने वाले प्रभो! आप सर्वज्ञ और सकल जगत उत्पादक हैं। हम आपके इस पूजनीय पापनाशक स्वरूप तेज का ध्यान करते हैं जो हमारी बुद्धियों को प्रकाशित करता है। हे पिता! आपसे हमारी बुद्धि कदापि विमुख न हो। आप हमारी बुद्धियो में सदैव प्रकाशित रहें और हमारी बुद्धियो को सत्कर्मों मे प्रेरित करें, ऐसी प्रार्थना है।"

अगर कोई व्यक्ति मंत्र का जाप न करके केवल उपरोक्त अर्थ बोलता जाय और उपरोक्त अर्थ के सवा-लक्ष जप कर ले, तो उसको मन्त्र के जप का फल प्राप्त नही होगा। क्योकि देवता केवल देव वाणी या वेदवाणी को ही समझते हैं, अन्य भाषा को नही।

एक उदाहरण दें किसी भारतीय मित्र के यहा एक अंग्रेज आया और उसने परिवार के सदस्यों का परिचय प्राप्त किया। भारतीय मित्र के लडके नाम चन्द्रप्रकाश था। चन्द्रप्रकाश का अर्थ अंग्रेज मित्र ने पूछा तो भारतीय मित्र ने उसको चन्द्र का मतलब MOON और प्रकाश का मतलब LIGHT बता दिया। अंग्रेज मित्र ने इस नाम की बडी प्रशंसा की। उसी दिन सायंकाल उस अंग्रेज को चन्द्रप्रकाश किसी स्थान पर जाता दिखा तो उसने उसको बहुत आवाजें लगायीं, लेकिन चन्द्रप्रकाश उसके पास नहीं आया और अपने गन्तव्य स्थान को चला गया। उस अंग्रेज को चन्द्रप्रकाश तो याद नहीं रहा, लेकिन उसने moon light के नाम से उसको पुकारा। इसलिये जो देवता देव-वाणी को समझते हैं वे किसी अन्य भाषा से नहीं पुकारे जा सकते।

गायत्री मन्त्र का जाप करने से पहले शुद्ध होना चाहिये। मीमांसा दर्शन में लिखा है कि अपवित्र हुआ जपोपासना न करे। इसलिये सर्व प्रथम तन शुद्धि, वस्त्रों की शुद्धि एवं मन की शुद्धि करके शुद्ध आसन पर जप प्रारम्भ करना चाहिए। जूटे मुंह भी जप करना निषिद्ध है। माला भी हाथ मे रखी जा सकती है। माला न हो, तो अंगुलियों से भी मन्त्रो की गिनती की जा सकती है। मन्त्रों को गिना ही न जाय तो सबसे उत्तम है।

विनियोग—जप करने से पहले गायत्री मन्त्र का विनियोग जानना चाहिए। विनियोग से तात्पर्य सन्दर्भ से है, जिसको अंग्रेजी Reference कहते हैं। सन्दर्भ का मतलब है कि किस वेद का कौन से मण्डल का और कौन से अध्याय का यह मन्त्र है। सीधा-सा मतलब यह कि हर मन्त्र की स्वतन्त्र सत्ता है इसलिए उसका सन्दर्भ बताया बोला जाना आवश्यक है। इसलिए सन्दर्भ [illegible] यह बोला [illegible] है—'यजुर्वेद षट्त्रिंशो अध्यायस्य तृतीय. मन्त्रोऽयम्'। अगर विनियोग नहीं बोला गया तो मन्त्र की शक्ति घट जायेगी।

ऋषि का नाम—जो यज्ञोपवीत हम धारण करते हैं उसमें तीन सूत्र हैं। तीनों हमको यह दिखाते हैं कि हम तीन ऋणों से बंधे हुए हैं। पितृ ऋण, ऋषि ऋण, और देव ऋण। इसमें ऋषि ऋण को उतारने के लिए हमें मन्त्र के ऋषि का कृतज्ञ होना आवश्यक है। हमें उसी ऋषि का नाम लेना होगा जिसके मन्त्र का हम जप कर रहे हैं।

देवता—ऋषि के नाम के बाद हमको देवता का नाम बोलना चाहिए। गायत्री मन्त्र का देवता 'सविता' है, जो अग्नि तत्त्व का अधीनस्थ देवता है और महान् सात्विक है। इस देवता में राजसिक या तामसिक गुण नहीं है और यह देवता जपकर्ता का हर समय [illegible] करता है। उदाहरणतया यजुर्वेद के 30/3 मन्त्र का देवता भी सविता देवता है जिसमें सविता देवता से प्रार्थना की गयी है कि हमारे दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिये (दुरितानि परासुव) इसी देवता से यह भी प्रार्थना की गयी है कि जो कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ है वह सब हमको प्राप्त कराइये (यद्भद्रं तन्न आसुव=) इसी प्रकार से गायत्री मन्त्र में जो प्रार्थना सविता देवता से की गई है उसको देवता का नाम लिये बगैर सफल नहीं कहा जा सकता।

यज्ञोपवीत का एक सूत्र देव ऋण का है, अत मन्त्र के देवता का नाम देव ऋण से उऋण होने के लिये अत्यन्त आवश्यक है।

गायत्री मन्त्र—अब गायत्री मन्त्र बोलने की विधि इस प्रकार हुई—

यजुर्वेदे षट्त्रिंशो अध्यायस्य तृतीयः मन्त्रोऽयम्

ऋषि—विश्वामित्रः ऋषि

देवता—सविता देवता

ओम् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

इसमे महाव्याहृतियों को मध्यम स्वर मे बोला जायेगा और 'तत् सवितुर्वरेण्यं' से मन्त्र के अन्तिम भाग तक मन्त्र को षड्ज=स्वर में बोला जायेगा। षड्ज=स्वर मध्यम स्वर से लगभग 20% अधिक तेज है। मन्त्र बोलने में इसका ध्यान रखना आवश्यक है। अखण्ड ज्योति या गायत्री परिवार के लोगों का गायत्री-मन्त्र उच्चारण शुद्ध नहीं है। न तो महाव्याहृतियां मध्यम स्वर में हैं और न ही बाकी मन्त्र षड्ज=स्वर में है।

(शेष पृष्ठ 40 पर)

श्री दरबारी लाल के जन्मदिवस पर
स्वामी आनन्द बोध सरस्वती का संदेश

श्री चोपडा जी,

सप्रेम नमस्ते।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आगामी 15 जनवरी, 1988 को माननीय श्री दरबारी लाल जी का जन्म दिवस समारोह तथा उनको समर्पित की जाने वाली पुस्तक 'आर्य समाज एण्ड फ्रीडम स्ट्रगल' का विमोचन समारोह सम्पन्न होने जा रहा है।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि माननीय दरबारी लाल जी शतायु जीवन प्राप्त करें और डी० ए० वी० आंदोलन उनके सफल नेतृत्व में सदैव प्रगति करता रहे।

शुभ कामनाओं सहित।

भवदीय

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती,

प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

सुभाषित

रत्नैर्महार्हैस्तुतुषुर्न देवा
न भेजिरे भीमविषेण भीतिम् ।
सुधां विना न प्रययुर्विरामं
न निश्चितार्थाद्विरमन्ति धीरा ॥
भर्तृहरि

महासिन्धु के रत्नों को पा, हुए न देव प्रसन्न प्रतीत ।
और न भीषण विष को पाकर हुये तनिक भी वे भयभीत ॥
बिना पिये पियूष उन्होंने किया नहीं किंचित् विश्राम ।
धीर पुरुष निज निश्चितार्थ को पाये बिन लेते न विराम ।
—गोपालदास गुप्त

सम्पादकीयम्

सपने चूर चूर हो गये ?

स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व का युग जिन्होंने देखा है उनमें से अधिकाश लोगों के मन में यही बात आती है हमने जो सपने लिये थे वे सब चूर चूर हो गए हैं। उनके मन में देश की वतमान परिस्थितियों को देख कर जितना आक्रोश है, निराशा उससे किसी प्रकार कम नहीं है। वे बार-बार अपने से और अपने से भिन्न लोगो से यही प्रश्न करते हैं कि हमने आजादी के सघर्ष में अपना तन-मन-धन तथा सर्वस्व होम देने की जिस आकाशा से योग दिया था क्या उसका यही परिणाम होना था ? गुलामी के दौर में वे समझते थे कि हमारी सारी समस्याओं की जड और परेशानियों का कारण अग्रेजों की दासता है। अग्रेज यहा से चले जायेंगे तो स्वतन्त्र भारत अपनी समस्याओं को पलक झपकते हल कर लेगा। हम नरक कुण्ड से निकल कर सीधे स्वर्ग के वातावरण में पहुच जायेंगे। जब तक अग्रेज मौजूद हैं तब तक वे हमे सुख और चैन की सांस नहीं लेने देंगे। ब्रिटिश साम्राज्य का समस्त ऐश्वर्य और राजसी तथा औद्योगिक समृद्धि भारत जैसे उपनिवेशों के कारण ही सम्भव हो पाई है। अग्रेजों के जाने के पश्चात् भारत का धन भारत मे रहेगा और जो समृद्धि आज उन्हें प्राप्त है, कल हमें प्राप्त होगी।

परन्तु सपने क्या किसी के इतनी आसानी से पूरे हो जाये करते हैं ? सपनों में लगड़ा पर्वतों के शिखरों का आरोहण करता है, अन्धा रग-बिरगे रोमाचकारी दृश्यों को देखता है, और बहरा न जाने किस किस प्रकार के मधुर सगीत अपने कानो से सुनता है। जिस प्रभु की कृपा से इन सब वरदानों से प्राप्त होने की कल्पना की जाती है वे सब वरदान सपने मे अनायास प्राप्त हो जाते हैं। बल्कि बहुत बार तो यही होता है कि यथार्थ जीवन मे जो कुछ उपलब्ध नहीं, हम स्वप्न लोक में विचरण करते हुए उन सब अनुपलब्ध चीजों को प्राप्त कर लेते हैं। सपने इसीलिए इतने लुभावने होते हैं। परन्तु जागने पर पता लगता है कि वे केवल स्वप्न थे, यथार्थ नहीं थे। हमारा मन-रूपी मृग स्वप्न लोक की चरागाह में चरता-चरता शाद्वल की जिस मृग तृष्णा मे भटक रहा था वह जागने पर केवल विशाल मरुस्थल निकलता है।

इस निराशा और आक्रोश का एक कारण और भी है। वह कारण अधिक मनोवैज्ञानिक है। आजादी के पहले की पीढ़ी अधिकतर जीवन के उत्तरार्ध मे पहुच चुकी है और उस पर बुढ़ापा हावी है। यह बुढ़ापे की विशेषता है कि उसे वर्तमान हमेशा असन्तोष देता है और अतीत हमेशा सुखदायक प्रतीत होता है। आजादी के बाद के वातावरण को देख कर जो लोग कभी कभी हताशा मे यह कहने लग जाते हैं कि इससे तो अग्रेजो का राज ही अच्छा था, वे एक तरह से अपने आपको आधुनिक युग में अन्यथा सिद्ध पाते हैं और इसीलिए अपनी जवानी के दिनो के उत्साह-पूर्ण चित्रण से कुछ मानसिक आश्वासन अनुभव करते हैं। जो लोग हमेशा अतीत के गीत गाते रहते हैं वे निश्चित रूप से वर्तमान परिस्थितियों को बदलने में अपनी विफलता को पहचान कर ही पुराने जमाने के गीत गा-गा कर ही सन्तुष्ट होते रहते हैं।

एक तरफ आजादी से पहले की वह पुरानी पीढ़ी है और दूसरी तरफ आजादी के बाद की नई पीढी है। दोनों पीढ़ियो के विचारो में स्पष्ट रूप से अन्तर। जिन्होंने वह युग देखा है वे आज के युग को पतन की पराकाष्ठा का द्योतक समझकर दिन रात बिसूरते रहते हैं। पुरानी पीढ़ी बूढ़ी है इसलिए अतीत दर्शी है और नई पीढ़ी केवल वर्तमान-दर्शी है, उसका अतीत से कोई लेना देना नहीं। पुरानी पीढ़ी को यह शिकायत है कि जिस आजादी के लिये हमने इतने कष्ट सहे क्या वह इसलिये थी कि अब भ्रष्टाचार को शिष्टाचार समझने वाली नई अनाचारी पीढी गुलछर्रे उडाये। आजादी कितने कष्टों से मिली इसका लेखा-जोखा रखने में नई पीढ़ी को कोई रुचि नहीं है। उसको तो विरासत में जो कुछ मिला है वह उसका मजे से भोग करना अपना अधिकार समझती है। आजादी के सघष के दिनो के उत्साह को और उस समय की बलिदानी भावना को भुलाने में भला है। नई पीढ़ी कहती है कि पुरानी पीढ़ी की किस्मत में जेल जाना ही लिखा था, तो हम क्या करें ? हमारे बदले का कष्ट इन बुजुर्गों ने उठा लिया तो उन बुजुर्गों के बदले के सुख से हम क्यो वंचित रहें। इसलिए नई पीढ़ी अतीत दर्शी पुरानी पीढ़ी को एक तरफ धकेल कर वर्तमान को अपनी इच्छा के अनुसार जीना चाहती है।

पीढ़ियों के अन्तराल से जो विचार धारा का अन्तराल उत्पन्न होता है, वह स्वाभाविक है। परन्तु यह भी निश्चित है कि अतीत अब दोबारा लौटकर नहीं आयेगा। आजकल की वर्तमान पीढी भी जब पुरानी पड जायेगी तो और आगे आने वाली 21वीं सदी की नई पीढी कैसी होगी, इसकी आज हम कल्पना नही कर सकते। वह तो सीधी कम्प्यूटर युग की उपज होगी। उस समय की औद्योगिक क्रान्ति का युग कैसा होगा, यह आज कहना मुश्किल है।

हमारे राजनैतिक नेताओं ने देश को आजादी के पश्चात् जिस राह पर डाल दिया है उसका यह सब अवश्यम्भावी परिणाम है। मानवता के मूल्यो को महत्व देने वाली भारतीय सस्कृति की उपेक्षा करके हमने पश्चिम की जिस औद्योगिक संस्कृति को राह पकडी है उसमे सब प्राचीन अनुभव-सिद्ध मूल्यों का अवमूल्यन होना ही था। नैतिक मूल्यों का ह्रास मानवता के ह्रास के साथ स्वत हो जाता है ज्यों-ज्यो शहरी सस्कृति विकसित होती जायेगी त्यों-त्यो ग्रामो का ह्रास होगा, ग्राम-उद्योग नष्ट होगे, गरीब और गरीब होते जायेंगे तथा अमीर और अमीर होते चले जायेंगे। आधुनिक विकास के मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति महगाई का शिकार होने से बच नहीं सकता।

उपभोक्ता सस्कृति मे विकास का अर्थ ही यह है कि लोग अपनी आवश्यकतायें बढ़ावें, उन आवश्यकताओं के अनुसार अपना खर्च बढ़ायें, फिर उन बढ़े हुये खर्चों की पूर्ति के लिये अधिकाधिक वेतन की माग करें। और ज्यों-ज्यो वेतन मे वृद्धि होती जाये त्यों त्यो महगाई भी सुरसा की तरह अपना मुह फैलाती चली जाये। और जब महगाई बढ़ती है तो अपनी इस मुहबोली बहन के साथ उसका सगा भाई भ्रष्टाचार भी कन्धे से कन्धा मिलाकर साथ हो लेता है। इस रास्ते पर चलते चलते लालसायें जितनी ऊपर चढ़ती हैं उतने ही शोषण के गहरे गर्त तैयार होते चले जाते हैं और अमीर तथा गरीब के बीच की खाई दिन पर दिन चौडी होती चली जाती है। तब काले धन की एक ऐसी समानान्तर सरकार स्थापित होती है जिस पर सरकार भी नियन्त्रण नहीं कर पाती। उस काले धन के साथ तस्करी भी जुड जाती है। तस्करी के साथ आतकवाद, आतकवाद के साथ अराजकता और अराजकता के साथ असुरक्षा का राक्षस जनता को निगलने को उतावला हुआ घूमने लगता है।

आजादी के पश्चात् गत 40 वर्षों मे देश ने कोई तरक्की नही की, ऐसा कहना सत्य का सवथा अपलाप होगा। परन्तु यह भी उतना ही सत्य है कि ज्यो-ज्यों गरीबी हटाने के नारे लगते चले गये त्यों त्यों गरीब और बढते ही चले गये। इसमें हमारे देश की ज्यामितिक अनुपात से निरन्तर बढ़ती हुई आबादी भी बहुत बडा कारण है। आबादी के बढ़ने के साथ साथ बेरोजगारी भी बढी है अनाज क पैदावार जितनी बढी उससे अधिक अनाज खाने वाले मुह बढ़ गये। जितने रोजगार के साधन जुटाये उतने बेरोजगारो की सख्या और बढ़ती चली गई। शिक्षा का जो ढाचा हमने तैयार किया उसमे श्रम के बजाय किन्हीं अन्य उपायो से अधिकाधिक धन कमाने की लालसा ने शिक्षित बेराजगारो की भी फौज खडी कर दी। कागजी मुद्रा का इतना फैलाव हो गया है कि जीवनोपयोगी वस्तुओं को खरीदने के लिये अब जितना खर्च करना पडता है वह उन लोगों के लिये कठिन है जो उतनी मात्रा मे कागजी मुद्रा नही कमा पाते। पहले भारतीय सस्कृति की विशेषता यह समझी जाती थी कि उसमें गरीब से गरीब व्यक्ति का भी गुजारा हो जाता था, पर अब गरीब के लिये जीना मुहाल है।

सरकार योजनायें बनाती है और उनकी पूर्ति के लिये बजट मे धन की व्यवस्था करती है। अमुक योजना को अमुक अवधि मे पूरा करने के लिये कर्मचारी-मण्डल भी नियुक्त कर दिया जाता है। परन्तु प्राय. योजनायें कागजों मे ही अधिक पूरी होती हैं। उदाहरण के लिये बैंको से मिलने वाले कर्ज और सूखा राहत के लिये दी गई धन की व्यवस्था को देखें। जरूरत मन्दों तक कितनी कर्ज की राशि पहुचती है और कितनी राशि बिचौलिये खा जाते हैं इसका हिसाब कौन रखता है। सूखा राहत मे भी इस कार्य मे लगे कर्मचारियो को जितनी राहत मिल जाती है उतनी सूखा पीड़ितो को कहां मिल पाती है। राजनीति मे भी जिस प्रकार लाकतन्त्र के बजाय सामत तन्त्र और राजतन्त्र बढ़ता चला जा रहा है वह प्रत्येक राष्ट्र हितैषी के लिये चिन्ता की बात है।

(शेष पृष्ठ 13 पर)

गांधी और नेहरू में मतभेद कहां था

—श्री वी एम. भाटिया—

गांधी जी चाहते थे कि भारत के स्वतन्त्र होने पर कांग्रेस का राजनीतिक स्वरूप समाप्त कर उसे 'जन-सेवा' की संस्था के रूप में परिवर्तित कर दिया जाय, जिसे वे 'सर्व सेवा संघ' नाम देते थे वे जानते थे कि स्वतन्त्र भारत के राजनीतिज्ञ तथा बुद्धिजीवी जन-कल्याण की अपेक्षा सत्ता प्राप्ति की होड़ में लग जाएंगे।

गांधी जी के राजनीतिक विचारो की अपेक्षा उनके आर्थिक विचारो को स्मरण करने की आज अधिक आवश्यकता है। किन्तु दुर्भाग्य की बात है कि शिक्षा एवं समाचार जगत् में उनके आर्थिक विचारो मे किसी ने रुचि व्यक्त नही की। यह सम्भवतया इसलिए कि सत्तासीन अर्थशास्त्री पाश्चात्य आर्थिक विचारों और इतिहास से प्रभावित रहे। गांधी जी इस बात के प्रबल विरोधी थे कि भारत के शासक अपने देशवासियों का उद्धार पाश्चात्य पद्धति से करें। किन्तु नेहरू उन्नत पश्चिमी देशो की प्रणाली पर भारत के आर्थिक आधुनिकीकरण और औद्योगिकीकरण के प्रबल पोषक थे।

गांधी जी का दृष्टिकोण

भारत स्वतन्त्र होने के दो वर्ष पूर्व इन दोनो नेताओ में जो पत्र व्यवहार हुआ उनमें दोनों ने स्पष्ट शब्दों में अपने विचार व्यक्त कर दिए थे। गांधी जी ने 2.10.1945 को नेहरू को लिखा 'मेरी यह स्पष्ट धारणा है कि यदि भारत और भारत के माध्यम से संसार भी वास्तविक स्वाधीनता प्राप्त करे तो जल्दी से जल्दी यह तथ्य स्वीकार कर लेना चाहिए कि भारतवासी नगरों की अपेक्षा ग्रामों मे और महलों की अपेक्षा कुटियो मे निवास करें। इसके कारण थे। एक केवल ग्रामो मे छोटे-छोटे समुदायो मे रहने से ही उस शोषण और अत्याचार से बच सकते हैं जिसे पूंजीवादी सभ्यता पालती पोसती है। दूसरी यह कि स्वावलम्बी ग्राम जीवन ही प्रत्येक प्राणी की प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर उन्हें सन्तुष्ट रखता है, प्रत्येक कार्य-कुशल व्यक्ति उत्पादकता मे लिप्त रहता है। तथा आय का अर्जन और वितरण पूर्णतया विकेन्द्रित होने से समाज मे शोषण सर्वथा विलुप्त हो जाता है।

यह उनका केवल आर्थिक और सामाजिक जीवन दर्शन नही अपितु इसे उनका धर्म और विश्वास समझना चाहिए। वे जानते थे कि वे सार्वभौम आर्थिक चिंतन की धारा के विपरीत तैर रहे हैं, फिर भी उन्होने भारत द्वारा इसके स्वीकार किए जाने की वकालत की—'मुझे इसका भय नहीं है कि आज संसार विपरीत दिशा में जा रहा है। यह भी हो सकता है कि भारत उसी मार्ग का अनुसरण करे। जिस पर चल कर परवाना शमा पर नाचते-नाचते स्वयं को भस्म कर देता है। किन्तु उन्हें इस स्थिति से बचने के लिए अपनी ओर से तो भरसक प्रयत्न करना ही चाहिए।" उनका कहना कि इससे भारत की रक्षा और भारत के माध्यम से संसार की रक्षा, जीवन की अन्तिम सांस तक करते रहना मेरा कर्तव्य है। वे सब उस व्यक्ति को लिख रहे थे जिसे वे अपना उत्तराधिकारी कहते थे और भारत के स्वतन्त्र होने पर जो सरकार की बागडोर सम्भालने वाला था।

विज्ञान का विरोध नहीं

आर्थिक क्षेत्र में मशीनों के और विज्ञान तथा तकनीकी के प्रयोग के सम्बन्ध में कहीं उनकी स्थिति को गलत न समझ लिया जाय, इसलिए उन्होंने स्पष्ट किया कि वे आधुनिक विज्ञान के विरोधी नहीं अपितु इसके प्रशंसक हैं। वे जो कुछ चाहते थे वह यह था कि जो प्राचीन है उसको आधुनिक विज्ञान के सन्दर्भ में ठीक से परखा जाय और उसे नए वस्त्र पहनाकर सुन्दर रूप दे दिया जाय। वे इस बात पर बल नहीं दे रहे थे कि हमारा आज का जो ग्राम्य जीवन है उसे ज्यो का त्यों रखा जाय। 'मेरे आदर्श ग्राम में बुद्धिशील प्राणियों का निवास होगा। वे पशुओ की भांति गन्दगी और अन्धकार में नहीं रहेंगे। नर-नारी स्वतन्त्र होंगे और संसार के किसी भी प्राणी से होड ले सकेंगे। वहां न प्लेग होगा, न हैजा, न चेचक। कोई बेकार नहीं होगा और न कोई ऐशो-आराम मे लिप्त रहेगा। प्रत्येक व्यक्ति को अपने भाग का शारीरिक श्रम करना ही होगा। यह सम्भव है कि रेलवे और पोस्ट तथा टेलीग्राफ आदि के विषय में सोचना पड़ जाय। मेरे लिए तो वास्तविक वस्तु ग्रहण करना मुख्य है, शेष बाद में इस चित्र में स्थान पा लेगा।

यह राष्ट्र निर्माता की ओर से अपने उत्तराधिकारी को जो शीघ्र ही सिंहासन रूढ़ होने वाला था सुझावों के रूप में हो सकता था। किन्तु गांधी जी जानते थे कि इस विषय में नेहरू के विचार बिलकुल उल्टे हैं और जिस विकास योजना का प्रतिपादन वे कर रहे हैं उस के क्रियान्वयन की भी कम सम्भावना है। तदपि यह परम आवश्यक था कि 'मैं अपने उत्तराधिकारी को समझू और वह मुझे समझे।' यही कारण है कि उन्होंने यह पत्र लिखा।

नेहरू का उत्तर

चार दिन बाद उसका उत्तर देते हुए नेहरू ने गांधीजी को लिखा कि ग्रामों पर आधारित आत्मनिर्भरता की जिस राष्ट्रीय आर्थिक नीति का आप प्रतिपादन कर रहे हैं वह अव्यावहारिक है। उनका कहना था कि वे यह नहीं समझ पा रहे हैं कि सत्य और अहिंसा आवश्यक रूपेण गांव का अंग क्यों बने सामान्यतया गांव तो बुद्धि और संस्कारों की दिशा में बिलकुल ही पिछड़े होते हैं और ऐसे प्रतिगामी वातावरण में प्रगति की ही नहीं जा सकती। उनका यह स्पष्ट कहना था कि भारत के स्वतन्त्र हो जाने पर उसकी अर्थव्यवस्था के आधुनिकीकरण से बचने का कोई मार्ग है ही नहीं। इस विशाल जन समुदाय के लिए कम से कम प्राथमिक आवश्यकताओं जैसे भोजन, वस्त्र, मकान पेयजल, प्राथमिक स्वास्थ्य रक्षा आदि की पूर्ति हो, या देश की विदेश आक्रमण से सुरक्षा और उसकी स्वतन्त्रता की रक्षा हो, आवश्यक वस्तुओ के उत्पादन और बड़े और मशीनें उद्योगो में आधुनिक विज्ञान तथा तकनीक का प्रयोग परमावश्यक है। नेहरू का तर्क था कि जब तक भारत आधुनिक उद्योग और तकनीक का प्रयोग नहीं करेगा तब तक भारतवासियो के रहन-सहन का स्तर ऊंचा नहीं उठ सकता और न ही भारत अन्य राष्ट्रों की दृष्टि में सबल राष्ट्र के रूप में सम्मान प्राप्त कर सकता है।

इस पृष्ठ भूमि में भारत के लिए यह आवश्यक था कि विकास के लिए वह उसी प्रक्रिया को स्वीकार करे जो स्वतन्त्र होने के उपरान्त उसने स्वीकार की। जनवरी 1956 में जब राष्ट्रीय विकास परिषद् की बैठक में द्वितीय पंचवर्षीय योजना के प्रारूप पर विचार हो रहा था, तब परिषद् को सम्बोधित करते हुए नेहरू ने कहा था "यदि आप चाहते हैं कि भारत का औद्योगीकरण हो और यह आगे बढ़े, जो परम आवश्यक है, तो इसका औद्योगीकरण होना ही चाहिए तब आप केश तेल आदि जैसे छोटी-मोटी पुरानी फैक्टरियों की चिन्ता न करें। यह बिलकुल अनावश्यक है कि वस्तुएं क्या हैं, चाहे वे छोटी अथवा बड़ी उपयोग्य वस्तुएं हों। आप इसकी जड़ में जाइए और औद्योगिक प्रगति का प्रारूप खड़ा कर दीजिए। इसलिए जो महत्वपूर्ण है वह है बड़ा उद्योग हमें बड़ी-बड़ी मशीनें बनाने वाले उद्योगों की परियोजना चाहिए, हमें वे उद्योग चाहिए जो बड़ी बड़ी मशीनें बनायें।"

नेहरू के संवेदनशील मस्तिष्क को यह समझते भी देर नहीं लगी कि प्रगति का जो ढांचा वे खड़ा कर रहे थे वह गलत था। आठ वर्ष से भी कम समय में उन्होंने इस विषय में अपने विचारों पर पुनरावलोकन किया। नवम्बर 1963 में राष्ट्रीय विकास परिषद् को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा "किसी अन्य वस्तु की अपेक्षा कृषि परमावश्यक है, इसमे बड़े उद्योग भी सम्मिलित हैं, क्योंकि कृषि-उत्पादन आर्थिक प्रगति की दिशा निर्धारित करता है। यदि हम कृषि के क्षेत्र में असफल होते हैं तो हम उद्योग में भी असफल हो जाते हैं। उद्योग की अपेक्षा कृषि अधिक आवश्यक है, इस का सीधा सा कारण यह है कि उद्योग कृषि पर निर्भर होते हैं।"

कृषि और ग्राम को सबल बनाकर उस आधार पर भारतीय अर्थ व्यवस्था का पुनर्निमाण करना गांधी जी की स्थिति मे वापस आना है। किन्तु प्रगति के ढांचे को उलटा करने के लिए बहुत विलम्ब हो गया था। एक तो इसलिए कि विकास प्रक्रिया को आमूल चूल रूप मे केवल नेहरू ही बदल सकते थे, किन्तु इस घोषणा के ठीक छः मास बाद उनका देहान्त हो गया, दूसरे यह कि तब तक योजना की सारी प्रक्रिया और पद्धति योजना आयोग के नौकरशाहों के हाथों में पहुंच गई थी, आयोग स्वयं भी विशेषज्ञ संस्था से नौकरशाही की खाई के रूप मे परिणत हो गया।

विकास की दर घटी या बढ़ी

तब से भारत औद्योगीकरण प्रधान रास्ते पर चल रहा है, भले ही समय-समय पर इसके विपरीत भी बात कही जाती रही है। मुहावरा समय-समय पर बदलता रहा है कभी आत्म-निर्भरता कभी निर्यात प्रधान आयात विकल्प और कभी सन्तुलित प्रगति। किन्तु योजना की पद्धति और कार्यविधि वैसी ही रही। पांच वर्ष की अवधि मे उत्पादकता की दर का पहले निर्धारण किया गया। फिर वर्तमान पूंजी निवेश की सम्भावना का पता लगाया गया। फिर दो बिन्दुओं के आधार पर योजना के आकार-प्रकार का निर्धारण कर लिया गया शेष मामूली काम ही रह गया। योजना का लक्ष्य निर्धारित कर लेने के उपरान्त निवेश और उत्पाद के आधार पर तथा मांग और वितरण के सन्तुलन के आधार पर अर्थ व्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों को संसाधनों का वितरण कर दिया गया। यह सूक्ष्म अल्पकाल योजना की अपेक्षा व्यय योजना है, क्योंकि उत्पादन के

(शेष पृष्ठ 10 पर)

अस्सी करोड़ भुजाओं से आलिंगन को आतुर वह आजादी का दीवाना सुभाष !

—क्षितीश वेदालंकार—

लगभग सन् 1914 की बात है। कलकत्ता में रामकृष्ण मिशन का उत्सव चल रहा था और एक तेजस्वी तपोमूर्ति संन्यासी युवकों का आह्वान करते हुए कह रहा था—'कौन है जो युगों-युगों से भारतमाता की उठती पुकार सुनेगा? कौन है जो भारत माता के आंसू पोंछेगा? मेरी आशा युवकों पर केन्द्रित है। ओ भारत के वीर जवान! पर्वतराज हिमालय की हिमाच्छादित चट्टानें तुम्हें साधना के लिए पुकार रही हैं।'

उसी दिन एक युवक हिमालय की हिमाच्छादित चट्टानों की ओर साधना के पथ पर चल दिया।

वह युवक कई मास तक हिमालय की कन्दराओं में सत्य की खोज में भटकता रहा। उसने कठोर तपस्या की। अनेक साधुओं का सत्संग किया। अन्त में एक दिन उसकी अन्तरात्मा से आवाज आई—

'भारत के लाल! तेरा शरीर तेरा नहीं है, भारतमाता का है। जिस सत्य की खोज में तू इतनी दूर आया है, वह तेरे भीतर ही है। दिव्य चक्षुओं से उसे खोज, वह तो तेरे मानस में ही अन्तर्निहित है और नर में ही तुझे नारायण के दर्शन होंगे। सेवा ही उसके दर्शन का मार्ग है।'

युवकों का आह्वान करने वाली वह तेजोमूर्ति थी स्वामी विवेकानन्द की और जो युवक साधना पथ पर निकल पड़ा वह था सुभाषचन्द्र बोस। उसके बाद देश-सेवा के माध्यम से नारायण को पाने के लिए सुभाष ने अपना सारा जीवन दांव पर लगा दिया।

जिस आई० सी० एस० के लिए उस समय भारत का अभिजात वर्ग जी-जान की बाजी लगाने को सन्नद्ध रहता था, क्योंकि उससे जीवन के स्वर्णिम स्वप्न प्रासाद के कपाट खुल जाते थे, उसी आई० सी० एस० को सुभाष ने गौरव के साथ पास करके भी स्वेच्छा से तिलांजलि दे दी, क्योंकि वह सेवा का नहीं, अफसरी और हकूमत का मार्ग था।

उन्हीं दिनों में देश में सन् 1921 का असहयोग पूरे जोरों पर था। विजयवाड़ा कांग्रेस में एक करोड़ स्वयंसेवक और दो करोड़ रु० तिलक स्वराज्य फण्ड के नाम से एकत्रित करने का संकल्प किया गया था। बंगाल में स्वयंसेवकों के संगठन का दायित्व सुभाष ने सम्भाला। ब्रिटिश सरकार को यह सहन नहीं हुआ। सुभाष को 6 मास के लिए जेल भेज दिया गया।

जेल से छूट कर आये तो न सुभाष को चैन, न सरकार को चैन था। तीन वर्ष बाद फिर गिरफ्तार करके मांडले जेल भेज दिया। लोकमान्य तिलक और लाला लाजपतराय भी इसी जेल को कृतार्थ कर चुके थे। तीन वर्ष बाद जब वहां से सुभाष छूटे तो सरकार ने यह प्रतिबन्ध लगा दिया कि सुभाष किसी भी भारतीय बन्दरगाह पर नहीं उतर सकते—केवल यूरोप-प्रवास कर सकते हैं।

सुभाष अंग्रेजों की इस चाल को समझते थे। वे जानते थे कि कुछ अर्से तक यूरोप में रहने के बाद सरकार उन्हें विद्रोही और अवांछित व्यक्ति करार देकर सदा के लिए भारत-प्रवेश से वञ्चित कर देगी, इसलिए सुभाष ने अपने भाई को लिखा—"मैं अनिश्चित काल तक विदेश में रहने की अपेक्षा भारत की जेल में तिलतिल करके मर जाना पसन्द करूंगा। सरकार का क्या भरोसा कि वह कब तक मुझे निर्वासन में रखे।"

पर ऐसा भी अवसर आया जब भारत की जेल में तिल-तिल करके मरने के बजाय सुभाष ने भारत से निकल जाना अधिक श्रेयस्कर समझा।

द्वितीय विश्वयुद्ध चल रहा था। सुभाष जेल में पड़े पड़े जहां संसार के घटनाचक्र का अध्ययन कर रहा था, वहां भारतमाता के पांवों की बेड़ियां काटने के लिए भी आतुर हो रहा था। उसकी अन्तरात्मा कह रही थी कि अब नहीं तो फिर कब?

कुछ इसी तरह का प्रश्न शायद महात्मा गांधी की आत्मा को भी कचोट रहा था। इसीलिए उन्होंने देश को 'करो या मरो' का आह्वान दिया था। पर अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का बारीकी से अध्ययन करने वाले और अंग्रेजों की जातीय मनोवृत्ति को पूरी तरह हृदयंगम करने वाले सुभाष इतने मात्र से सन्तुष्ट नहीं थे और अन्ततः वे कारावास से ऐसे अन्तर्धान हुए कि ब्रिटिश साम्राज्य चौकड़ी भूल गया और सारा संसार स्तब्ध रह गया।

आजाद हिन्द फौज

अन्त में सुभाष पेशावर, अफगानिस्तान होते हुए जर्मनी में प्रकट हुए। वहीं आजाद हिन्द सेना का निर्माण किया और जब बर्मा पूर्णतः जापान के अधिकार में आ गया तब पूर्वी एशिया को भारत की आजादी का मुख्य द्वार मान कर उन्होंने बर्लिन से टोक्यो तक एक पनडुब्बी में यात्रा की। युद्ध दिनों में यह अपने ऊपर कितना बड़ा खतरा मोल लेना था, इसकी कल्पना ही की जा सकती है।

कुछ दिन टोक्यो में रहने के पश्चात् वे सिंगापुर पहुंचे और 4 जुलाई 1943 को, उसी सिंगापुर में, जो ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा का पूर्वी सिंहद्वार था, विशुद्ध भारतीय नेतृत्व में आजाद हिन्द फौज का विधिवत् संगठन स्थापित हो गया। दो मास बाद एक विराट् सम्मेलन बुलाया गया और नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने उस सेना के अध्यक्ष और सुप्रीम कमाण्डर-इन चीफ के रूप में शपथ ली।

दो अक्तूबर 1943 को आजाद हिन्द फौज ने गांधी जयन्ती मनाई और उस दिन सुभाष चन्द्र बोस का जो भाषण प्रसारित हुआ वह स्मरणीय है। उस भाषण का एक अंश देखिए—

स्मरणीय भाषण !

"गांधी जी मेरे गुरु हैं, मैं अपने गुरु की स्मृति को प्रणाम करता हूं। इस क्षितिज के पार इन बल खाती हुई नदियो, लहराते हुए खेतों और जंगलों के पार स्वर्ण-भूमि है,—हमारे सपनों का देश। वह संसार का सबसे सुन्दर देश है। उसके आकाश में चांद अजब रोशनी फेंकता है उसके पेड़ों की डालो पर विहग अजब मिठास घोलते हैं और उन पेड़ो की छांह में बैठकर वहां के ऋषियों ने सृष्टि के विभिन्न रहस्यो की खोज की है। जिस गांधी की जयन्ती आज हम मना रहे हैं, वह आधुनिक ऋषि हैं। उनकी अहिंसा ही मानवता की एकमात्र आशा है, लेकिन गुलाम देश की अहिंसा, अहिंसा नहीं, कमजोरी होती है।' इसलिए हम पहले अपने देश को आजाद करें। मौत की मंजिलें पार करते हुए हमें दिल्ली पहुंचना है। जिस दिन दिल्ली के लालकिले पर तिरंगा झण्डा लहराएगा उस दिन मणि-जड़ित सिंहासन पर हम महात्मा गांधी को बैठायेंगे, गंगाजल से उनके चरण पखारेंगे और उनसे कहेंगे कि अब संसार का नेतृत्व अपने हाथ मे लीजिए। अब आपकी अहिंसा की जरूरत है—मेरे गुरुदेव!"

आखिर 15 अगस्त सन् 1947 को लालकिले पर तिरंगा लहराया, तो भारत की जनता लालकिले की प्राचीरो को आंख फाड़-फाड़कर निहारती रही कि कदाचित् किसी कोने से सुभाष—भारत की आजादी का दीवाना सुभाष—प्रकट हो जाए। पर सुभाष प्रकट नहीं हुए।

हां प्रकट हुई हवा में तैरती हुई उनकी यह आवाज—

अस्सी करोड भुजाओं का आह्वान

"आज हम अपनी मातृभूमि से दूर हैं। नीड़-विहीन पक्षी की भांति हम अनन्त आकाश में मंडरा रहे हैं, लेकिन हमें एक बार फिर अपनी मातृ-भूमि में वापिस जाना है। सुनो-सुनो—हवा की लहरों पर यह आवाज, यह पुकार तैरती हुई आ रही है। हमारी जननी हमें बुला रही है, हमारी राजधानी दिल्ली ने हमारे स्वागत के लिए अपने कोट-द्वार उन्मुक्त कर दिए हैं। सुनो, देश के कोने-कोने से, सिन्धु, गंगा और रेवा के पुनीत तटों से चालीस करोड आवाजें हमे एक साथ पुकार रही हैं। चालीस करोड हृदय हमारे स्वागत के लिए धड़क रहे हैं। अस्सी करोड भुजायें हमारे आलिंगन के लिए खुली हैं।"

हां, भारत की आजादी के उस दीवाने के लिए भारत की कोटि-कोटि जनता के हृदय आज भी वैसे ही धड़क रहे हैं और जन-जन की ये भुजायें आज भी आलिंगन के लिए वैसे ही आतुर हैं। पर कहां है आजादी का दीवाना वह सुभाष? ▣

—आर्य समाज सम्पत्ति रक्षा समिति, अजमेर की ओर से परोपकारिणी सभा के सदस्य श्री उदयवीर शास्त्री वर्धनार्य की धर्म पत्नी के निधन पर 31 दिसम्बर को शोक प्रस्ताव पारित कर दो मिनट मौन रहकर दिवगत आत्मा की सद्गति हेतु प्रार्थना की गई।

—मेधावी एम०डी० आर्य संयोजक

भाषण प्रतियोगिता

महर्षि दयानन्द उच्च विद्यालय, टोहाना की ओर से आर्य समाज मन्दिर में 6 जनवरी को देवीदयाल गुप्ता चल विजयोपहार भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता प्रिंसिपल श्री शर्मा ने की। मुख्य अतिथि श्री चावला जी एस०डी०ई० ओ० थे। विजयी छात्र छात्राओं को पुरस्कृत किया गया।

दीक्षान्त समारोह

भारती सेवा समिति पठानकोट द्वारा संचालित सिलाई केन्द्र से प्रशिक्षण प्राप्त छात्राओं का दीक्षान्त समारोह 20 दिसम्बर को स्वामी सुबोधानन्द की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। प्रशिक्षण प्राप्त छात्राओं को प्रमाण पत्र दिये गये। अब तक कुल 140 छात्रायें सिलाई प्रशिक्षण प्राप्त कर चुकी हैं। सिलाई अध्यापिका व मशीन मिस्त्री को शाल भेंट करके सम्मानित किया गया। डा० सोमराज भार्गव व उनकी पत्नी को सहयोग के लिए धन्यवाद दिया गया।

गणराज्य दिवस का संदेश है यह !

—लालसिंह यादव एम० ए०—

15 अगस्त सन् 1947 को हमारा देश स्वाधीन हुआ और 26 जनवरी 1949 को गणराज्य घोषित हुआ। इसीलिए हम 15 अगस्त को स्वाधीनता दिवस और 26 जनवरी को गणराज्य दिवस मानते हैं।

आजादी के इस पौधे को लगाने के लिए न जाने कितने वीरो ने अपने खून की खाद दी है। 'सूख जाए न कहीं पौधा ये आजादी का, खून से इसे अपने इसलिए तर करते है।' इसे हरा-भरा रखने के लिए न जाने कितनी वीरागनाओ ने अपना सिन्दूर कितनी माताओ ने अपने कलेजे के टुकड़े और कितनी बहनों ने अपने भाइयों का बलिदान किया है। आजादी के दिवाने कब कष्टो से घबराते हैं। आजादी के दिवाने महाराणा ने वनो की खाक छानी। गाधी जी ने सारी उम्र एक लगोटी मे जेल जाते-जाते बिताई और अन्त मे इसी की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। सुभाषचन्द्र बोस को विदेशो की छानते-छानते बलिदान होना पड़ा। नेता जी कहा करते कि 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आजादी दूगा।' खून दिये बिना आजादी असम्भव है—

आजादी का सग्राम नही, पैसे पर खेला जाता है।
यह शीश कटाने का सौदा, नगे सिर झला जाता है ॥1॥
आजादी का इतिहास कही, काली स्याही लिख पाती है।
इसके लिखने के लिये, खून की नदी बहाई जाती है ॥2॥
आजादी के चरणो मे, जो जयमाला चढाई जायेगी।
वह सुनो तुम्हारे शीशो के, फूलों से गूथी जायेगी ॥3॥

देश को अंग्रेजी साम्राज्य से मुक्त कराने के लिए 'बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद' और भगत सिंह फासी पर चढ़े। उन्होने अपने पीछे वह गौरवमयी गाथा छोड़ी जिसे पढकर आज देशवासियो की छाती फूल जाती है। मानव ही क्या, पशु पक्षियो तक को अपनी मातृभूमि से अत्यधिक प्रेम होता है। जिसकी धूल मे लोट-लोटकर हम बडे हुए हैं, जिसके अन्न और जल से हमारा शरीर बना है, वह जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ कर है। एक बार एक वृक्ष को आग लग गई, पर उस पर बैठे पक्षी उसे छोड कर नही गए। किसी कवि ने उन पक्षियों से कहा—

"आग लगी इस वृक्ष को जल-जल गिरते पात।
तुम उडते क्यो नही पछियो जब पख तुम्हारे साथ ॥

तो पक्षियो ने उत्तर दिया—

'फल खाये इस वृक्ष के, गन्दे कीन्हे पात।
धर्म हमारा है यही जलें इसी के साथ।"

स्वदेश प्रेम के दिवाने अपनी कुर्बानी देकर आगे आने वालो को बलिदान का रास्ता दिखाते हैं। इनकी आहुतियो से ही राष्ट्र रूपी यज्ञ की अग्नि प्रज्वलित रहती है। ऐसे वीरो के लिए ही कहा गया है—

तुमने दिया देश को सब कुछ, देश तुम्हें क्या देगा।
अपनी आग गम रखने को, बस, नाम तुम्हारा लेगा॥
निज वतन के वास्ते कुछ भी न पर्वाह जान की।
इस तरह करनी है रक्षा इस वतन की शान की॥

भारतवर्ष मे रहने वाला प्रत्येक मनुष्य पहले भारतीय है, फिर कुछ और, हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि। उर्दू का शायर कहता है—

न हम इस वक्त हिन्दू हैं न मुस्लिम हैं न ईसाई।
अगर कुछ हैं तो इस देश, इस धरती के शैदाई॥
इसी को जिन्दगी देंगे, इसी से जिन्दगी पाई।
लहू के रग से लिखा इकरार हो जाओ।
वतन की आबरू खतरे मे है तैयार हो जाओ॥

जो अवसरवादी नेता भाई-भाई मे फूट डालते हैं। वतन की इज्जत को दांव पर लगाकर वतन के टुकडे-टुकडे करना चाहते हैं, उन निर्दयी, दुष्ट भेडियो के लिए एक उर्दू का शायर कहता है—

मजहबी इखलाक के जज को ठुकराता है जो।
आदमी को आदमी का गोश्त खिलवाता है वो॥
मैं तो बाज आया ऐसे मजहबी ताऊन से।
जहा भाइयो का हाथ तर हो भाइयो के खून से॥"

देश की एकता के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने वाले वीरों को लक्ष्य करके किसी कवि ने कहा है—

फटे हुए माता के दामन को सीने वाले।
तुझे बधाई है वो वीर! मरकर भी जीने वाले।
मरकर भी न निकली वतन की उल्फत दिल से।
तेरी मिट्टी से भी खुशबू-ए वफा आयेगी॥

आज पजाब मे जिन निर्दोष लोगो का खून बह रहा है बेकार नहीं जायेगा। एक दिन आएगा जब सारा देश एक होकर उठ खडा होगा और इन हत्यारों को छिपाने के लिए कोई जगह नही मिलेगी। हमारी एकता और देशभक्ति के आगे इनकी बन्दूकें ठण्डी पड जायेंगी। इनके खजरो को जग लग जायेगा।

हम आज केवल राजनैतिक स्वतन्त्रता की ही बात नहीं कर रहे बल्कि हम उन महापुरुषो को भी श्रद्धाजलि अर्पित करते हैं जिन्होने धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक स्वतन्त्रता दिलाने के लिए अपना बलिदान दिया। समाज मे फैली बुराइयों से समाज को मुक्ति दिलाने के लिए दयानन्द और गाधी का बलिदान हुआ। आर्थिक स्वतन्त्रता दिलाने के लिए, जागीरदारी प्रथा को समाप्त करने तथा शोषण और आतकवाद के विरुद्ध सघर्ष करते हुए इन्दिरा गाधी ने बलिदान दिया। बेगारी प्रथा, सती प्रथा और दहेज प्रथा को कानूनन बन्द किया गया है। धर्म को आडम्बरों और पोगापथियों से बचाने के लिए गुरुनानक देव, गुरु गोविन्द सिंह, कबीर, तथा स्वामी दयानन्द 'सरस्वती' ने आवाज उठाई तथा जनता को उन धर्म के ठेकेदारों से मुक्त किया जो भोली-भाली जनता को अनेक प्रकार से ठग रहे थे। आर्यसमाज ने छुआछूत को मिटाने के लिए आवाज उठाई। आर्यसमाज ने ही स्त्रियो और हरिजनों को यज्ञोपवीत धारण करने, विद्याग्रहण करने तथा सभी प्रकार की धार्मिक गतिविधियों मे भाग लेने का वेदो के आधार पर समर्थन किया। इसी के फलस्वरूप आज हरिजन भाई और नारिया ऊचे-ऊचे सरकारी पदो पर विराजमान हैं।

देश की आजादी मे बच्चो का योगदान भी कम नहीं है। मुगल काल मे अपने धर्म की रक्षा के लिए वीर हकीकतराय ने अपनी गर्दन कटा दी। गुरु गोविन्द सिंह के चारो बेटे शहीद हो गए। नेता जी की 'आजाद हिन्द सेना' मे भी एक 'बाल-सेना' थी जिसके बारे मे नेताजी कहा करते—

'ये शेर हैं भारत माता के तूफानो से टकरायेंगे।
देखने को तो बालक हैं पर महाकाल बन जायेंगे।'
बालक राम,लखन ने भी तो रावण को सहारा था।
बालक वीर अभिमन्यु ने व्यूह भेदन कर डाला था।
इनमे भी खून उन्ही का है, ये वही जोश दिखलायेंगे।
गुलामी का हलुआ छोड आजादी के पत्ते खायेंगे।
चाहे गोली पर गोली बरसे, पर ये कभी नहीं घबरायेंगे।
बडे हो भारत की फुलवाडी को अपनी महक से महकायेंगे।

इस प्रकार गणराज्य दिवस हमे सविधान में आस्था रखने, देश की अखडता और स्वतन्त्रता की रक्षा करने, सामाजिक, और आर्थिक और धार्मिक स्वतन्त्रता को सुस्थिर करने तथा वीरता के भावो से भरी भावी पीढी के निर्माण का व्रत लेने का सन्देश देता है।

पता—मन्दपुरा (हरयाणा)

भारत में सशस्त्र क्रांति के पुरोधा श्याम जी कृष्ण वर्मा

—जयदेव शर्मा—

ब्रिटिश काल के भारत मे जिस व्यक्ति का नाम लेना भी अपराध था, जो आक्सफोर्ड में सस्कृत का प्राध्यापक रहा और अन्तर्राष्ट्रीय प्राच्य विद्या सम्मेलन में सस्कृत को जीवित भाषा सिद्ध करने वाले जिसके भाषण ने विद्वानों मे तहलका मचा दिया, जिसे ऋषिवर दयानन्द का प्रथम पट्टशिष्य बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिसने इगलेण्ड मे अपने धन से 'इण्डिया हाउस' की स्थापना करके प्रतिभाशाली भारतीय विद्यार्थियो के निवास, छात्रवृत्ति और भारतीय स्वाधीनता के लिए राजनीतिक कार्यकर्ताओं का एकमात्र आश्रयस्थल तैयार किया, जिसने विदेश मे स्वराज्य की दुन्दुभि बजाई, जिसके सहयोगियो ने जर्मनी के अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन मे पहली बार स्वतन्त्र भारत का ध्वज फहराया, क्रान्तिकारियो के पितामह उस श्यामजी कृष्ण वर्मा के नाम और काम को भारत के कितने लोग जानते हैं ?

सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी, विदेश में रह कर ब्रितानी साम्राज्य के शिकजे से भारत भूमि को स्वतन्त्र कराने में अपने जीवन की आहुति दे देने वाले महान् देशभक्त पण्डित श्यामजी कृष्ण वर्मा का जन्म 4 अक्तूबर 1857 ई० को सौराष्ट्र के कच्छ प्रदेश के माण्डवी नामक कस्बे में एक निर्धन परिवार में हुआ था। अति कुशाग्र बुद्धि के श्याम जी ने 1875 ई० में हाई स्कूल की परीक्षा बम्बई से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। 12 जून 1875 को स्वामी दयानन्द सरस्वती का रामानुज सम्प्रदाय के आचार्य पं० कमल नयन जी से सुप्रसिद्ध शास्त्रार्थ सुनकर वे इतने अधिक प्रभावित हुए कि उनके शिष्य तथा उसी वर्ष नव स्थापित मुम्बई आर्य समाज के सभासद् बन गए। स्वामी जी के निर्देशानुसार सन् 1877 मे उन्होंने मानव कल्याण हेतु वैदिक धर्म प्रचार के उद्देश्य से अनेक स्थानों में घूम-घूम कर वैदिक सिद्धांतों पर सस्कृत भाषा में अनेक व्याख्यान दिए। इसके सस्कृत व्याख्यानो की पण्डितों में सर्वत्र प्रशसा हुई। सस्कृत पर आप का मातृ-भाषावत् अधिकार था।

स्वामी दयानन्द से राष्ट्रीयता एव स्वतन्त्रता का पाठ पढ़कर उन्हीं की कृपा से कच्छ-भुज राज्य से छात्रवृत्ति प्राप्त कर उच्च शिक्षा प्राप्त करने इग्लैण्ड गए। सस्कृत में उच्च शिक्षा प्राप्त कर आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय मे सस्कृत के अध्यापन के साथ न केवल बैरिस्टरी की उपाधि प्राप्त की वरन् आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से प्रथम भारतीय स्नातकोत्तर होने का भी गौरव प्राप्त किया।

इग्लैण्ड प्रवास के मध्य पंचम अन्तरराष्ट्रीय प्राच्य विद्या सम्मेलन मे 'सस्कृत प्रकृति' (सस्कृत मृत नहीं जीवित भाषा है) शीर्षक से आंग्ल भाषा के एक भाषण में श्याम जी ने बड़े विद्वतापूर्ण ढग से सस्कृत भाषा को न केवल एक जीवित भाषा सिद्ध किया, वरन् इसे शिक्षित वर्ग की बोलचाल की भाषा सिद्ध करने के अतिरिक्त इसे "राष्ट्र भाषा" होने के सम्पूर्ण गुणो से परिपूर्ण एव सक्षम भी बताया। तत्कालीन अन्य विद्वानों के अतिरिक्त 'सस्कृत अंग्रेजी शब्दकोश' के निर्माता प्रसिद्ध पाश्चात्य सस्कृतज्ञ प्रो० मोनियर विलियम्स ने अपने शब्दकोश की भूमिका में भी इस निबन्ध (भाषण) को 'विचारोत्तेजक' बताकर प्रशसा की है। साथ ही उन्होंने श्याम जी के सस्कृत एवं वेद मन्त्रोच्चारण की भी प्रशसा की है। उक्त दुर्लभ निबन्ध 30 अगस्त 1987 के साप्ताहिक 'आर्य जगत्' (सस्कृत रक्षा विशेषांक) में डा० भवानी लाल भारतीय के प्रयास से हिन्दी में प्रथम बार प्रकाशित हुआ है।

श्याम जी को अपना मार्ग प्रशस्त करने में स्वामी जी का मार्गदर्शन सदैव प्राप्त होता रहा। इग्लैण्ड प्रवास के मध्य में स्वामी जी ने पत्रों के द्वारा उनका पथ प्रदर्शन किया। श्याम जी ने अपने अन्तिम दिनों मे ये पत्र क्रान्तिकारी कार्यों के अपने सहयोगी, पेरिस निवासी सरदार सिह राणा को सौंप दिए थे। 1936 में डी लिट के अध्ययन हेतु भारत से पेरिस गए डा धीरेन्द्र वर्मा को राणा महोदय से ये 26 पत्र प्राप्त हुए। ये सभी पत्र 'ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन' नाम से प्रकाशित हो चुके हैं। इन पत्रों के द्वारा स्वामी जी की कार्य पद्धति एव उनके विचारों पर भी समुचित प्रकाश पडता है। 25 दिसम्बर 1880 को गद्य-पद्य मिश्रित सस्कृत भाषा मे विभिन्न छन्दो में लिखे पत्र मे स्वामी जी ने श्याम जी को ब्रिटिश पालियामेंन्ट जाकर उसके सदस्यो को भारत में अंग्रेजी सरकार द्वारा किए जाने वाले अत्याचारों को बताने का निर्देश देते हुए ब्रिटिश पार्लियामेण्ट में आन्दोलन करने की प्रेरणा दी है।

सन् 1885 ई० में बैरिस्टर बनकर भारत लौटने पर अंग्रेजो की सेवा करना स्वीकार न कर मालवा, मेवाड, काठियावाड आदि देशी राज्यों मे अनेक वर्षों तक प्रधानमन्त्री (दीवान) पद पर कार्य किया। जिस स्वतन्त्रता का कार्य भारत मे रहकर वे न कर सके उसी भारतीय स्वतन्त्रता का कार्य करने के लिए श्यामजी सपरिवार सन् 1897 ई में इग्लैण्ड चले गए। उनके आगे के वर्ष क्रान्तिकारी एव स्वतन्त्रता प्राप्ति के संसाधन एकत्र करने की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण हैं। योग्य भारतीयों को विदेश भ्रमण के लिए अनेक छात्रवृत्तिया देने की योजना कुछ अपने निजी धन से एव कुछ मित्रों से प्राप्त धन की सहायता से चलाई। इन्ही छात्रवृत्तियो के सहारे ही उन्हे विनायक सावरकर, भाई परमानन्द एव सेनापति बापट जैसे क्रान्तिकारी देशभक्त मिले। जनवरी, 1905 में भारत की स्वतन्त्रता के लिए समर्थन जुटाने एव सामाजिक-धार्मिक सुधारो के साथ भारतीय दृष्टिकोण को उजागर करने के उद्देश्य से 'इण्डियन सोश्योलोजिस्ट' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया। उन्हें इग्लैण्ड के फेडरिक हैरिसन तथा हिण्डमैन जैसे क्रान्तिकारी विचारको का भी समर्थन इसमे प्राप्त हुआ।

उसी वर्ष 1905 फरवरी मास में ही श्यामजी ने 'इण्डिया होमरूल सोसायटी' (भारत स्वराज्य सभा) की स्थापना कर इग्लैण्ड की धरती पर ही भारत माता के इस सपूत ने उसकी स्वतत्रता के लिए एक केन्द्र स्थापित किया। अज्ञानतावश 'स्वतन्त्रता' शब्द के प्रथम उदघोष का जो श्रेय 'कांग्रेस मंच' को दिया जाता है, वास्तव मे दयानन्द के शिष्य श्यामजी ने उसे मूतरूप देकर स्वतंत्रता का बिगुल इग्लैण्ड की भूमि पर पहले ही बजा दिया था।

इसके अतिरिक्त एक लाख रुपए लगाकर भारतीय विद्यार्थियो एव राजनीतिक कार्यकर्ताओ के निवास के लिए 'इण्डिया हाउस' नामक भवन का निर्माण किया। इसी वर्ष इसी 'इण्डिया हाउस' में श्याम जी को विनायक दामोदर सावरकर जैसा महत्वपूर्ण सहयोगी प्राप्त हुआ। सन् 1906-7 में 'इण्डिया हाउस' विद्रोहियो का एक विख्यात केन्द्र बन गया था। 1907 मे श्याम जी के सहयोगी मित्र सरदार सिह राणा एव मदाम कामा ने जर्मनी में सम्पन्न हुए अन्तरराष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में भाग लेकर प्रथम बार स्वतत्र भारत का ध्वज फहराया। उसी समय श्यामजी ने भारत में सरकार द्वारा राष्ट्रीय आन्दोलन की दमन नीति का विरोध करने के लिए जनता को सरकार से असहयोग का परामर्श देते हुए विदेशी शासन का तख्ता पलटने के उद्देश्य से सशस्त्र सघर्ष करने के लिए भारतीय जनता का आह्वान किया। नव-युवको में उत्साह उत्पन्न करने के उद्देश्य से जब भारत में 1857 ई० के गदर की वर्षी मनाने का कार्यक्रम भारत सरकार के कारण असफल हो गया तब सावरकर ने 'गदर' की स्वर्ण जयन्ती इसी इण्डिया हाउस में बड़े धूमधाम से मनाई।

श्यामजी ने न केवल भारत की स्वतत्रता के लिए प्रयत्न किया वरन् मिस्र आदि समस्त पराधीन देशों के स्वाधीनता आन्दोलनो का समर्थन भी पूरी तरह किया मार्च, 1908 मे लदन में सावरकर की गिरफ्तारी के पश्चात् वे पेरिस चले गए। जीवन पर्यन्त निर्वासित रहने वाले, क्रान्तिकारियों के गुरु, श्याम जी सन् 1914 में पेरिस से स्विटजरलैंड गए और जिनेवा शहर को अपनी कर्मभूमि चुना। 31 मार्च 1930 को जिनेवा में ही भारत को स्वतन्त्र देखने की लालसा मन में लिये हुए भारतीय सशस्त्र क्रान्ति के इस पुरोधा ने नश्वर ससार से विदा ले ली। विज्ञापन के इस युग मे आज देश में मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर को दो गज जमीं न मिलने का गम तो सभी को सता रहा है, लेकिन ऐसे कितने लोग हैं जिनके हृदय मे भारत मा के इस सच्चे सपूत के त्याग के प्रति आदर एवं पहचान है।

[नव भारत टाइम्स से साभार]

श्रीअली हसन की शुद्धि

आर्य समाज, साकेत नई दिल्ली मे 7 जनवरी को पुष्प विहार निवासी श्री अली हसन की शुद्धि उनकी इच्छा से श्री मदनमोहन शास्त्री ने सम्पन्न कराई उनका नाम अजय कुमार अग्रवाल रखा गया।

श्रीमती रमेशरानी दिवगत

आर्य समाज, महर्षि दयानन्द बाजार, लुधियाना के पूर्व प्रधान श्री रणवीर भाटिया की धर्मपत्नी श्रीमती रमेशरानी का 8 जनवरी को निधन हो गया हवन यज्ञ व पगडी रस्म 18 जनवरी को सम्पन्न हुई।

—आर्य समाज, घिलोडी गेट, पटियाला के चुनाव में श्री वेददत्त साहिर प्रधान, डा० रामलक्ष्मण दास मन्त्री और श्रीमती कृष्णा जोशी कोषाध्यक्ष चुने गये।

पत्रों के दर्पण में

'तमस्' धारावाहिक द्वारा प्रसारित तमस्

(1) 'तमस्' धारावाहिक की पहली कड़ी में सन् 1947 से पहले के दिनों के साम्प्रदायिक उपद्रवो की याद ताजा कराते हुए आर्य समाज और राष्ट्रीय स्वय-सेवक सघ पर कीचड उछाला गया है और हिन्दू-मुस्लिम एकता के कांग्रेसी प्रचार को बढ़ावा दिया गया है। इसमें आर्यसमाजी लोग हवन करते और मुसलमानों के आक्रमणों के आत्मरक्षा के लिए प्रयत्नशील दिखाये गये हैं। परन्तु उनके प्रयत्नों को हास्यास्पद और साम्प्रदायिक वैमनस्य को भडकाने वाला दिखाया गया है। इसी प्रकार एक खाकी निकर पहने युवक को, जो स्पष्ट ही राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ का सदस्य दीख पडता है, दो मुर्गियो की गर्दन काट कर वीर-व्रत में दीक्षित होता दिखाया गया है, जिससे इन दोनों संस्थाओं के प्रति दर्शक के मन में घृणा उत्पन्न होती है। 'दूरदर्शन' ने इस प्रकार के राजनीतिक दलीय प्रचार से भरे धारावाहिक को प्रदर्शन के लिए क्यों चुना, यह विचारणीय है।

'तमस्' के लेखक 'आर्यसमाज' और 'राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ' को कठघरे में खडा करके क्या कहना चाहते हैं? जिस प्रकार इस देश में हिन्दू-मुस्लिम दगे हो रहे हैं उससे लगता है कि कांग्रेस द्वारा प्रचारित हिन्दू-मुस्लिम एकता केवल इसी बात पर स्थापित हो सकती है कि भारत के सब हिन्दू मुसलमान बन जायें। सरकार के भरोसे न रह कर आत्मरक्षा के लिए स्वय सगठन करना अगर बुरी बात है, तो आर्य समाज और राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ इस कलक को अपने सिर लेने को तैयार होंगे। परन्तु 'दूरदर्शन' को ऐसे धर्मविद्वेष भडकाने वाले धारावाहिक का प्रदर्शन करने से पहले भली भांति विचार करना उचित था।

—विराज, एच-1, नवीन शहादरा, दिल्ली-32

(2) तमस् मे आर्य समाज को बहुत बुरे रूप में दिखाया जाता है सन् 1947 भारत विभाजन का काल, पजाब का कोई कस्बा। आर्यसमाज का सत्सग हो रहा है। महर्षि दयानन्द के चित्र दीवारों पर हैं शान्ति पाठ हो रहा है सत्सग की समाप्ति पर एक सज्जन अपने पुत्र को एक विशेष स्थान पर ले जाते हैं वहा पहले से कुछ मुर्गियां रखी गयी है वह सज्जन अपने पुत्र से एक मुर्गी को छुरे से काटने को कहते हैं। पुत्र को इससे घृणा होती है, इस पर वह सज्जन छुरे से मुर्गी को स्वय काटते हैं। लडके को उबकाई आती है। फिर वह सज्जन अपने लडके से दूसरी मुर्गी काटने को कहते हैं लड़का इस बार मुर्गी को काट देता है। सज्जन मुर्गी के खून का टीका लडके के मस्तक पर लगाते हैं और कहते हैं—'आज से तुम्हें हिंसा करने के लिये दीक्षित कर दिया गया है', क्या आर्य समाज इस घृणित सीरियल को चुप-चाप सहन कर लेगा?

—ओमप्रकाश गोयल 12 मुनीरका मार्ग, बसन्त विहार, नई दिल्ली-57

दूरदर्शन या ईसाइयत का प्रचार माध्यम

क्रिसमस शुरू होते ही नित्य प्रति दूर दर्शन पर ईसाइमत से सम्बन्धित कार्यक्रम दिखाये जाते हैं। ऐसा लगता है मानो व्यवस्थित रीति से क्रिसमस के बहाने ईसाइमत का रग भारतवासियो पर चढाया जा रहा है। इटैलियन भाषा में प्रदत्त पोप के सदेश को दिखाने की क्या आवश्यकता थी। देश के 80 करोड नागरिको में 60 करोड हिन्दू हैं जो वैदिक मतावलम्बी हैं। दूरदर्शन राम, कृष्ण, शकर, दयानन्द और अरविन्द के प्रति कभी इतना उदार नहीं हुआ कि लगातार सप्ताह भर तक उनके जीवन या उपदेशों को दिखाया गया हो। पुन. ईसा के जन्म से सम्बन्धित पुराणगाथाओ को काफी लम्बी अवधि तक प्रदर्शित करने का क्या औचित्य है?

—भवानीलाल भारतीय चडीगढ

विधवा और विधुर की चिन्ता क्यो नही?

पजाब मे उग्रवादियो द्वारा बनाई गई अनेक ऐसी औरतें विधवाए बना दी गई हैं जो असहाय हैं और जिनकी जीविका का कोई ठोस साधन नहीं है। इनके अतिरिक्त अनेक विधुर व्यक्ति भी हैं। वे चाहे किसी भी प्रान्त मे हो। यदि ऐसे विधुर और विधवाए एक दूसरे का आश्रय चाहते हों तो क्यों न उनकी सुख सुविधाओं के अनुसार उनका परस्पर सम्बन्ध करा दिया जाय जिससे उनके असहाय बच्चो को पालन और शिक्षण में सहायता मिल सके। उनमें से कुछ होनहार बच्चे भविष्य मे राष्ट्र के रक्षक भी हो सकते हैं। आप कुवारी लड़कियों व लडकों के विवाह का विज्ञापन तो 'आय जगत' मे छापते ही हैं। यदि ऐसे विधुर व विधवाओं के पते मगाकर आप उनके रिश्तों का विज्ञापन भी छपवायें तो मेरी समझ से आर्य समाज की ओर से यह भी एक महान उपकार होगा। जो अधेड़ आयु के विधुर विधवा हैं, जिनकी आयु 50 वर्ष के आस पास हो, वे भी यदि किसी विशेष परिस्थिति में गृह कार्यों की सुविधा के लिये रिश्ता करना चाहें, तो कर सकें।

हिन्दुत्व की रक्षार्थ भी यह बहुत आवश्यक है।

—सी० आर० शर्मा शास्त्री, आर्यसमाज माडल टाउन, यमुनानगर, हरियाणा

[यह सुझाव बहुत अच्छा है।—सं०]

जहाँ सरकार फेल हो गई

(1) यों तो आपके सभी सम्पादकीय महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक होते हैं, पर 10 जनवरी का 'जहां सरकार फेल हो गई' सम्पादकीय तो लाजवाब था। वोटों की वैसाखी पर टिके शासक स्वार्थी तो हैं ही, देश के दुश्मन भी हैं। आर्यसमाज और स्वामी अग्निवेश ने सतीप्रथा के विरोध में दिल्ली से दिवराला तक की पद-यात्रा का आयोजन करके जो सत्साहस प्रदर्शित किया है उसकी शतमुख से सराहना की जानी चाहिए। आर्यसमाज का तो जन्म ही पाखण्ड के खंडन और मानवता के मडन के लिए हुआ। इस अभियान को कोई रचनात्मक रूप देकर निरन्तर जारी रखना चाहिए।

—सहदेव वर्मा, 87 ग्रीन पार्क, पानीपत

(2) स्वामी अग्निवेश ने उचित समय पर उचित कदम उठाया है। उन्होंने आर्यसमाज का सन्देश जन-जन तक पहुचा दिया। उन्होंने सिद्ध कर दिया कि कुरीतियो के विरुद्ध प्रभावी भूमिका केवल आर्यसमाज ही निभा सकता है। उन्होंने आर्य जनता मे और कार्यकर्ताओं में उत्साह की लहर पैदा कर दी है। इस वैज्ञानिक युग में जो पोंगा पथी धर्माचार्य अपने दुराग्रह पर अडे हुए हैं उनसे मोर्चा सिवाय आर्यसमाज के और कौन ले सकता है?

—ओम्प्रकाश आर्य, अध्यक्ष आर्य सेवा सस्थान, 119/122, बम्बारोड, कानपुर-12

(3) प्रशसा में क्या लिखू? सस्कृत की कुछ पक्तियां भेंट कर रहा हूं—

मकर सक्रमणानि शतं भवान्, प्रमुदित परिपश्यतु जीवने।
सुखमनामय वृद्धि मुदारता, दिशतु ते भगवान् जगदीश्वर॥
सुखित आस्व सखे शरदा शतम्॥

—जे० एन० राजपाल, मेस्टन रोड, कानपुर-208001

राम, कृष्ण के चित्र काल्पनिक

(1) 'राम-कृष्ण के चित्रों से परहेज क्यों' के सन्दर्भ में निवेदन है कि भगवान राम तथा योगेश्वर कृष्ण के कोई अधिकृत चित्र न तो उपलब्ध हैं और न उनके उपलब्ध होने की कोई सम्भावना ही है। जो चित्र बाजार में मिलते हैं वे पौराणिक कल्पनाओ पर आधारित हैं। आर्य समाज मन्दिरों में ऐसे चित्र टांगने से केवल पौराणिक कल्पना को ही बल मिलेगा जो सर्वथा अवाञ्छनीय है। दोनों ही महापुरुष आर्यों के गौरव उत्तर भारत मे, अति प्राचीन समय में उत्पन्न हुए थे अतः वे श्याम अथवा नीलवर्ण के कदापि नहीं हो सकते। आर्य समाजों तथा आर्य समाजियों को अपने यशस्वी पूर्वजों के चित्र समाज मन्दिर अथवा घरों में लगाने से कदापि परहेज नहीं रहा। छत्रपति शिवाजी, वीरांगना लक्ष्मीबाई, महाराणा प्रताप, आदि के चित्र अनेक आर्य समाज मन्दिरों में श्रद्धापूर्वक टांगे जाते हैं।

बाबूलाल गुप्त भूतपूर्व सचालक शिक्षा विभाग मध्य भारत

(2) राम और कृष्ण के प्रति अत्यन्त श्रद्धा होते हुए भी उनके चित्र न लगाने का यही कारण हो सकता है कि रामायण और महाभारत ग्रन्थों में राम और कृष्ण के कुछ ऐसे कार्यो का भी उल्लेख है, जिनका औचित्य सिद्ध करना सम्भव नहीं।

—सत्यार्थ शास्त्री, टीनखोग, डिब्रूगढ़

स्वतत्र भारत मे आर्यसमाज के 40 वर्ष

21 नवम्बर के अक में श्री स्वामी सत्य प्रकाश जी का उक्त लेख पढ़कर अति प्रभावित हुआ। प्रत्येक आर्य समाज को यह लेख अपने-अपने साप्ताहिक सत्संगो मे पढ़कर सुनाना चाहिये।

(क) आर्य समाज के पुरोहितों और उपदेशकों की कार्य प्रणाली और कठिनता के सम्बन्ध मे पुरोहितो और उपदेशकों की भी कुछ शिकायतें हैं तथा आर्य समाजो की भी बेबसी है (ख) आर्य समाज का उत्थान केवल आर्य सिद्धान्तों से ही नहीं हुआ वरन् उसकी जन सेवा से भी बहुत प्रचार हुआ है, जो अब उस स्तर की नहीं रही है जो महात्मा हसराज और स्वामी श्रद्धानन्द के युग मे था।

(ग) आर्य समाज का सघटन कुछ भ्रान्ति युक्त है। नाम तो आर्य समाज, डी० ए० वी० स्कूल तथा आर्य स्कूल है परन्तु चलाने वाले अर्ध या पूर्ण पौराणिक हैं। (घ) यह ठीक है कि कई एक सस्थाओं या आर्य समाजों में 'आजीवन' पदाधिकारी दिखाई देते है परन्तु कर्मठ और सच्चे कार्यकर्ताओं का भी अभाव है। यदि लम्बी अवधि वाले पदाधिकारी हट जावें तो वैसे कार्यकर्ता नहीं मिलते और संस्था के अवनति की ओर जाने का भय है। (ङ) आधुनिक युग साहित्य से प्रचार का है। पुस्तकों के भाव चढ़ रहे हैं और जनता की रुचि आर्य ग्रन्थों के पढ़ने से घट रही है। पुराने आर्य साहित्य प्रकाशक लाभ न होने के कारण अपना प्रकाशन बन्द या संकुचित कर रहे हैं। कई संस्थाएं या व्यक्ति आर्य साहित्य प्रकाशन के लिये प्रचुर दान लेते हैं, परन्तु बेचते अत्यधिक मूल्यों पर हैं जिसे साधारण व्यक्ति नहीं खरीद सकते अत प्रचार नहीं होता। (च) दूरदर्शन हमारे साप्ताहिक कार्यक्रमों में विशेष बाधक सिद्ध हुआ है। रविवारीय प्रातः कालीन 'रामायण' धारावाहिक ने हमारे साप्ताहिक सत्संगों से बच्चों को और बड़ों को दूर कर दिया है। अन्य आर्य बन्धुओं से प्रार्थना है कि वे अपने विचार आर्य जगत् में प्रकट करें।

—सोमचन्द्र महता डी-721, सरस्वती विहार दिल्ली-34

आर्य जगत् 18-10-87 के अंक में वेदों में आदि वैदिक अर्थों के विषय में विदुषी प्रज्ञा देवी के आचार्य विश्वश्रवा के विचार रूप "वेदों के राजनीतिक सिद्धान्त" के सम्बन्ध में कुछ विचार दिए हैं। आचार्य जी ने जो वेद मन्त्रों के राष्ट्र परक अर्थ किए हैं, पण्डिता प्रज्ञा देवी का इस विषय में कोई विरोध नहीं। उनका यह कहना है कि जब आचार्य जी किसी शब्द का राष्ट्र परक अर्थ करते हुए यह कह देते हैं कि इस शब्द का और अर्थ कभी नहीं हो सकता तो यह स्थापना आक्षेप योग्य हो जाती है। उन्होंने अपनी बात के समर्थन में कुछ उदाहरण भी दिए हैं, जिन्हें यहां दुहराने की आवश्यकता नहीं।

इन उदाहरणों से पण्डिता प्रज्ञादेवी ने स्पष्ट किया है कि मन्त्रों के प्रत्येक शब्द का यौगिक अर्थ मानने पर आध्यात्मिक, आधि भौतिक, आधिदैविक आदि कई प्रकार के अर्थ हो सकते हैं।

'आर्य मर्यादा' के दीपावली अंक में आचार्य विश्वश्रवा ने दयानन्द के पांच सूत्री कार्यक्रम की तीसरी बात यह कही है कि धूर्तों ने उलटे भाष्य कर वेदों को कलुषित कर दिया है। समस्त वैदिक साहित्य का फिर से भाष्य होना चाहिए। यह माना कि भाष्य होना चाहिए, पर उस की प्रक्रिया क्या हो?

आर्य समाज के अनेक विद्वान् अपने-अपने घर बैठ कर वेद भाष्य कर रहे हैं। उन भाष्यों में परस्पर विरोध है। महात्मा हंसराज जी ने अपने सन्ध्या भाष्य में लिखा है—मनसा परिक्रमा के छः मन्त्रों में "असित." आदि छः शब्दों के अर्थ सायण ने सांप किया है, सो अशुद्ध है। पर सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित

वेदार्थ और वेद

—आचार्य सत्यदेव विद्यालंकार—

अथर्व वेद के इन मन्त्रों में सांप ही अर्थ किया गया है।

आर्य मर्यादा के 25-10-87 के अंक में महात्मा आर्य भिक्षु जी का एक उत्तम लेख है, शीर्षक है। "सत्य धर्माय दृष्टये।" इस लेख में उन्होंने यजुर्वेद के 40 अध्याय के मन्त्र "हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्" का अर्थ किया है—"चमक ले क्षणिक आवरणों ने सत्य का मुख ढक लिया है।" स्वामी दयानन्द ने इस मन्त्र का यह अर्थ नहीं किया।

"त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्" सनातनी भाई तो इसे शिव का मन्त्र "महामृत्युञ्जय मन्त्र" मानकर जाप करते। आर्य भाई भी इससे यज्ञ में आहुति डालते हैं। पं० रघुनन्दन शर्मा ने 'वैदिक सम्पत्ति' में 'त्र्यम्बक' शब्द का अर्थ किया है।—ऐसा यज्ञ जिसमें अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका यह औषधियां सामग्री में प्रयुक्त हों।' ये तीन औषधियां आयुवर्धक हैं। पर इनका अभी तक पता नहीं लगा। इसका अभिप्राय यह है कि एक नुस्खे का ही सहस्रों वर्ष तक जाप होता रहा, दवाई का पता ही नहीं लगा।

ऐसे विरोध के सहस्रों उदाहरण हैं। मन्त्र का अर्थ ही निश्चित न हो तो उससे यज्ञ, प्रार्थना और प्रवचन क्या?

वेदार्थ-वेदभाष्य के लिए सम्पूर्ण वैदिक साहित्य का ज्ञान होना चाहिए। षडंग का तो होना ही चाहिए। यह एक व्यक्ति से सम्भव नहीं। जैसे विश्वकोषों की रचना के लिए अलग 2 ज्ञान शाखाओं के लिए विद्वानों के मण्डल होते हैं, ऐसे ही वेदार्थ के लिए भी होना चाहिए। यह विद्वमण्डल वैदिक साहित्य की ऊहापोह के बाद मन्त्रार्थों का प्रामाणिक अर्थ निश्चित करे। आचार्य विश्वश्रवा के इन वचनों में बहुत सार है कि सारे वैदिक साहित्य का दुबारा भाष्य होना चाहिए। अन्यथा सिद्धान्त विरोध और सिद्धान्त संशय चलता ही रहेगा।

वेदों के विषय में दो शब्द बहुत प्रसिद्ध हैं। और दोनों ही बहुत अस्पष्ट हैं। वेद ईश्वरीय ज्ञान है और वेद सृष्टि के प्रारम्भ में हुए। ईश्वर का ज्ञान अनन्त है। मनुष्य कोई भी है, उसका मन अणु है और आत्मा परिच्छिन्न। ठीक ऐसे ही जैसे समुद्र के किनारे खड़ी टटिहरी समुद्र के पानी की दो बूंद अपनी चोंच में भर ले। टटिहरी के पास जितना समुद्र का अंश है, इस क्षुद्र धरती पर रहने वाले प्राणियों के पास भी ईश्वरीय ज्ञान का उतना ही अंश सम्भव है। फिर ईश्वरीय ज्ञान का रूप तो निश्चित सत्य होना चाहिए क्योंकि ईश्वर सत्य है।

दूसरा शब्द "सृष्टि के आदि में भी अस्पष्ट है। मनुष्य के योग्य धरती का रूप निष्पन्न होने में न जाने कितना समय लगा होगा। प्रकृति की अवस्थाएं ऋत-सत्य, रात्रि, समुद्र-अर्णव, संवत्सर, अहोरात्रादि, ये क्रमशः बहुत लम्बे समय में विकसित हुई होंगी, एक दिन में तो नहीं। यही बात प्रकृति महत्तत्व, अहंकार तत्व, पञ्च तन्मात्रा, फिर पञ्चभूत, तथा इन्द्रियां—यह विकास का क्रम काफी समय में हुआ होगा।

इन दोनों शब्दों की भी व्याख्या अपेक्षित है। अभिप्राय यह है कि वेदार्थ और वेद विषय पर निश्चय के लिए महान् सामूहिक प्रयत्न अपेक्षित है सामान्य प्रयत्न से काम नहीं चलेगा। वेद आर्य समाज का आधार है। वेद प्रतिपादित सिद्धान्त स्पष्ट और सुनिश्चित होने चाहिए।

पता—शान्ति सदन, 145/4 सेण्ट्रल टाउन, जालंधर शहर

※

—आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ नागपुर के माध्यम से वैदिक प्रचारार्थ हिंगणखेड आर्यसमाज मन्दिर में 12-12-87 को महात्मा फुले शिक्षण संस्था अन्तर्गत चलाये जा रहे कस्तुरबा कन्या कनिष्ठ महाविद्यालय के विद्यार्थीनीयो के सामने आर्य समाज मन्दिर के भवन में आरा (बिहार) के क्रांतिकारी उपदेशक श्री प० सियारामजी 'निर्भय' श्री प० सुरेन्द्रपाल जी आर्य गीतकार व उपदेशक तथा श्री प० सेवकरामजी आर्य के प्रेरक उपदेश हुए। 13-12-87 हिंगणखेड के शिक्षक श्री प्र०म० ढोकणे के घर में गृह प्रवेश संस्कार वैदिक पद्धति से धर्मोपदेशको के द्वारा करवाया गया।

—डा० सत्यव्रत मन्त्री

वैद्य कुन्दनलाल सम्मानित

आर्य उप-प्रतिनिधि सभा, जनपद लखनऊ ने नवम्बर, 1986 की अन्तरंग में यह निर्णय लिया कि बच्चों, किशोरों एवं नौजवानों को वैदिक पथ पर लाने हेतु विशेष आयोजन किया जाए। तरुण उपदेशक प० रूपचन्द 'दीपक' ने 1986 से आर्य समाज मन्दिर, श्रृङ्गारनगर, लखनऊ में प्रत्येक मास के प्रथम रविवार को वैदिक सत्सङ्ग के रूप में युवको के कार्यक्रम प्रारम्भ किये। इसके वार्षिकोत्सव के रूप में रविवार 6 दिसम्बर, 1987 को 'प्रथम आर्य युवा सम्मेलन' आयोजित किया गया, जिसके अध्यक्ष पं० हरिवंश लाल मेहता और मुख्य अतिथि वैद्य कुन्दन लाल आर्य थे। अध्यक्ष द्वारा मुख्य अतिथि को एक शाल 251 रुपये, और एक मानपत्र भेंट किया गया।

वैद्य कुन्दनलाल आर्य का जन्म 4 अप्रैल, 1908 को स्यालकोट जनपद के चविण्डा नामक स्थान पर हुआ था। पिता का नाम पं० नन्द लाल हकीम और माता का नाम गोपाल देवी था। 1930 में हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण की। माता-पिता इन्हें वेदोपदेशक बनाना चाहते थे। अतः स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के निर्देशन में चल रहे उपदेशक विद्यालय मे लाहौर भेज दिया। उसके बाद इन्होंने 1935 में डी० ए० वी० कालेज, लाहौर से वैद्य वाचस्पति की उपाधि अर्जित की। ये कालेज जीवन में छात्र संघ के मन्त्री रहे। 1937 में प० जवाहर लाल नेहरू के सम्मान में कविता पढ़ने के आरोप मे तत्कालीन ब्रिटिश सरकार से दण्ड पाकर एक मास लाहौर सेण्ट्रल जेल में बन्द रहे।

उस समय स्यालकोट में 'आर्य युवक समाज' अत्यन्त सक्रिय था। वे 1938 से 1947 तक उसके प्रधान रहे। भारत-विभाजन होने पर स्वतन्त्र चिकित्सा का व्यवसाय अपनाया। 1948 में लखनऊ आकर सरकारी सेवा में प्रविष्ट हो गये। इसी में 28 वर्ष तक कार्य करके 1976 में राजकीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी औषध निर्माणशाला, लखनऊ के सहायक प्रबन्धक पद से सेवानिवृत्त हुए। 80 वर्ष की आयु में भी बच्चो सी निश्छलता और युवको जैसे उत्साह के स्वामी हैं। सदा प्रफुल्लित रहना तो इनका स्वभाव ही है।

आपका जीवन पञ्च महायज्ञों को समर्पित है। आप हवन सामग्री बनाकर बिना लाभ लिये लागत मूल्य पर उपलब्ध कराते हैं। संस्कारों के विशेषज्ञ माने जाते हैं। वेद प्रवचन, प्रभु-भक्ति के गीत (बनाना एवं गाना), प्रभात-फेरियां निकालना, वैदिक साहित्य बिक्री हेतु रखना, प्रचार-सामग्री एवं कैलेण्डर उपलब्ध कराना, शुद्धि संस्कार कराना, रोगियों की सेवा करना, समाज सेवा में वे सदैव तत्पर रहते हैं। धर्मपत्नी श्रीमती ओम प्यारी जी भी धर्मपरायणा नारी हैं।

वैद्य जी सदा पदों से दूर रहते हैं पर कार्य करने के लिए अग्रिम पंक्ति में रहते हैं। वे अपनी सम्पूर्ण दक्षिणा

आर्य समाज को देते आये हैं। ऐसे नररत्न का सम्मान करके आर्य समाज श्रृङ्गारनगर तथा लखनऊ जनपद स्वयं ही गौरवान्वित हुआ है। ईश्वर से प्रार्थना है कि यह परिपाटी आर्यजनों मे सदैव विद्यमान रहे। वैद्य जी का वर्तमान पता है—कविराज कुन्दनलाल आर्य वैद्य वाचस्पति, 549/192, अर्जुन नगर, आलमबाग, लखनऊ—226005।

—आचार्य वेदव्रत अवस्थी, सम्पादक 'आर्यमित्र'

गांधी और नेहरू......

(पृष्ठ 4 का शेष)

लक्ष्य वित्तीय ससाधनों की उपलब्धि पर निर्भर रहते हैं और वित्तीय संसाधन हमेशा एक जैसे नहीं रह सकते। विगत 40 वर्षों मे योजना प्रयत्नों के परिणाम विशेष उत्साहजनक नहीं रहे। 1950 से 1979 तक का आर्थिक उन्नति का अनुपात 3.4 प्रतिशत था। इस को 'हिन्दू विकास दर' की सज्ञा दी गई। यह तब था जब प्रत्येक पचवर्षीय योजना के बाद अगली पचवर्षीय योजना का व्यय लगभग दुगना हो गया। 1980 के उपरान्त विकास की दर में कुछ वृद्धि होनी आरम्भ हुई। यह अब 4.5 प्रतिशत है। किन्तु यह वृद्धि मुख्यतया तृतीय श्रेणी के कर्मचारियों अथवा सेवा क्षेत्रो से ही हुई है, कृषि और उद्योग से नहीं।

1985-86 में समाप्त होने वाली पचवर्षीय योजना मे कृषि क्षेत्र ने प्रति वर्ष 2.7 प्रतिशत उन्नति प्रदर्शित की, उद्योग क्षेत्र ने 5.9 प्रतिशत, तृतीय श्रेणी क्षेत्र के और अधिक 7.4 प्रतिशत तथा सरकारी प्रशासन एव प्रतिरक्षा क्षेत्र के उपक्रमों ने 12.2 प्रतिशत बढ़ोत्तरी प्रदर्शित की। विगत कुछ वर्षों से उच्चतम विकास की जो डींग अधिकारी क्षेत्रों द्वारा हांकी जा रही है, वह भ्रामक है, क्योंकि प्रतिरक्षा रक्षा और सरकारी प्रशासन पर बहुत अधिक व्यय किया गया है तथा सरकारी क्षेत्र के कर्मचारियों और सैनिक कर्मचारियों के वेतन में अत्यधिक वृद्धि हुई है।

योजना के विगत 30 वर्षों में बढ़ोत्तरी का अनुपात निर्धारित लक्ष्य से बहुत अधिक गिरा है, जबकि अनाज के उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि हुई है। फिर भी विगत 15 वर्षों में प्रति व्यक्ति अन्न की पहुंच स्थिर रही है, बढ़ी नहीं, जबकि दलहन की उपज गिर गयी। ऐसा माना जाता है कि छठी पंचवर्षीय योजना में गरीबी का अनुपात 48 से घटकर 37 प्रतिशत रह गया है। यह अनुमान नेशनल सैंपल सर्वे के उस विवरण के आधार पर लगाया गया है जो उसके 1983-84 वर्ष में, अन्न के उत्पादन के क्षेत्र में सर्वोत्तम वर्ष था का सर्वेक्षण करके दिया था। यदि 1987-88 मे, जो कृषि उपज की दृष्टि से बड़ा सकट का वर्ष रहा है, सर्वेक्षण किया जाय तो गरीबी की रेखा 48 प्रतिशत के आस-पास होगी, सातवीं योजना के दस्तावेजों में जो गरीबी के प्रतिशत में कमी दिखाई गई है वह सर्वथा अस्वीकरणीय है।

गरीबी और बेरोजगारी के क्षेत्र में पचवर्षीय योजना समस्या का समाधान तो मूल समस्या के सुधार में किंचित् भी योगदान करने में असमर्थ रही है, वहीं विकास में नेहरूवादी ढग के कारण अर्थव्यस्था में नई समस्यायें भी उत्पन्न हो गई हैं। उनमें अधिक चिन्तनीय हैं—(अ) वार्षिक बजट में यहां तक कि राजस्व खाते में भी भारी घाटा भारतीय सार्वजनिक वित्त का यह नियमित सिद्ध हो गया है। जिसका अभिप्राय है कि सरकार चालू राष्ट्रीय बचत खाते में से निरन्तर निकाल रही है, जो अन्यथा चालू व्यय के लिए पूंजी के रूप में होता। (ब) सरकारी ऋण का लगातार बढ़ना और इसके साथ डेबिट सर्विस चार्जेज जिनके कारण देशी बजट तथा विदेशी मुद्रा विनिमय के संसाधनों में लगातार कमी आती जा रही है। (स) देशी व्यापार का वार्षिक भारी घाटा जिसकी पूर्ति के लिए अन्तर्राष्ट्रीय उधार लेना पड़ता है, भले ही उसे 'विदेशी सहायता' का नाम दिया जाए, किन्तु वह केवल शाब्दिक छल है। (द) जनसख्या के शीर्षस्थ 20 प्रतिशत जनों की आय में असामान्य वृद्धि जो राष्ट्रीय आय का 50 प्रतिशत होता है और 40 प्रतिशत निम्न स्तर वालों को राष्ट्रीय आय का केवल 16 प्रतिशत प्राप्त होता है। (इ) ग्रामीण क्षेत्र के मूल्य पर शहरी क्षेत्र लगातार मुटियाता जा रहा है।

नेहरू की विकासनीति को अपनाने से और गांधी जी की चेतावनी की उपेक्षा से तथा पाश्चात्य अन्धानुकरण से जो कुछ हुआ, उसका परिणाम सामने है, गांधी जी उत्पादन और वितरण का विकेन्द्रीकरण चाहते थे। उसके विपरीत हमने बहुत ही केन्द्रित पद्धति को अपनाया। वे अर्थव्यवस्था को गांवों के आधार पर ऊपर उठाना चाहते थे, जब कि हमारा जोर ऊपर से नीचे शहरी करण की, शहरी उद्योगों शहरी ढांचों और शहरी सस्कृति की ओर है जिसका वास्तविक अभिप्राय अर्थव्यवस्था और संस्कृति का पाश्चात्यीकरण है। गांधीजी कृषि और ग्रामीण उद्योग को प्राथमिकता देना चाहते थे, किन्तु हमने औद्योगीकरण का आधार बनाया भारी और बुनियादी उद्योगों को और आर्थिक विकास के लिए उसे आवश्यक समझकर उसी का साथ दिया।

गांधीजी सबके लिए मितव्ययिता और त्याग के जीवन के पक्षपाती थे, कम से कम उस समय तक जब तक राष्ट्र पर्याप्त अन्न तथा अन्य प्राथमिक की वस्तुएं प्रत्येक के लिए सुलभ कराने में समर्थ हो जाय। इसके विपरीत योजना और विकास के नाम पर हमने वह प्रणाली अपनाई जिससे कुछ शीर्षस्थ जन ऐशो-आराम से रहते हुए ऐसा जीवन बिताते जैसा पाश्चात्य देशों के धनी व्यक्ति बिताते हैं, जब कि जनसंख्या का 2/5 भाग पूरी तरह से दो समय का भोजन भी प्राप्त न सकता हो और दो लाख गांवों को पीने का स्वच्छ जल भी प्राप्त न हो।

विकास नीति और उन्नति का जो ढांचा स्वतन्त्र भारत के लिए सर्वोत्तम सिद्ध होता उसमें इतिहास ने गांधी को उपयुक्त और नेहरू को अनुपयुक्त सिद्ध कर दिया है। न तो हम इतिहास का पुनर्लेखन कर सकते हैं और न ही गांधी जी के उपदेशों की उपेक्षा करके अब तक हुई दैव की क्षति को पूरा कर सकते हैं। किन्तु हम कम से कम इतना तो आज भी कर ही सकते हैं कि गांधी के अनुसार अर्थव्यवस्था पर पुनः विचार करें और वर्तमान प्रणाली में यथा-सम्भव सुधार करें।

('स्टेट्समैन' से साभार)

गायत्री-मन्त्र जप.......

(पृष्ठ 2 का शेष)

नियम—गायत्री मन्त्र का जप मौन नहीं करना चाहिये। गायत्री मन्त्र के जप से पूर्ण लाभ प्राप्त करने के लिये उसको बोलना आवश्यक है। जिस प्रकार तालाब में एक कंकड़ फेंकने से उसकी लहरें किनारे से टकराकर फिर लौटती हैं, उसी प्रकार मन्त्र के बोले हुए शब्द सर्वत्र फैल जाते हैं। मन्त्र के शब्द चन्द्रमा और सूर्य तक ही नहीं, सारे द्युलोक मे भ्रमण करते हैं। शब्द कभी भी नष्ट नहीं होते। शब्द अनादि है और शब्द ब्रह्म है जब शब्द बोला ही नहीं जायेगा तो वह द्युलोक में हलचल भी नहीं मचा सकता। मनुष्य के ब्रह्मांड में जो सहस्रार चक्र है उसको उद्वेलित करने के लिये मन्त्र को बोलना आवश्यक है। एक उदाहरण लें। वायु-मण्डल में अनेकों रेडियो स्टेशनों के प्रोग्राम गूंज रहे हैं लेकिन हम जिस मीटर पर जिस आवाज को जिस रेडियो स्टेशन को सुनना चाहते हैं, उसको सुन लेते हैं। हालांकि उसी समय अन्य रेडियो स्टेशनों की आवाज भी वायुमंडल में तैर रही है लेकिन हम जिसको सुनना चाहते हैं उसी को यन्त्र के प्रभाव से सुन लेते हैं। इसलिये यह निवेदन किया कि जप को बोलकर, मग्न होकर करना चाहिये और जाप के मन्त्रों की संख्या पर नहीं, बल्कि गुण (Quality) पर ध्यान रखना चाहिये। इससे जप अनेक गुणा अधिक लाभदायक बन जाता है।

जप में व्यवधान—जाप के बीच में व्यवधान भी हो सकते हैं। साधारणतया गायत्री मन्त्र के जप से पहले विनियोग, ऋषि का नाम व देवता का नाम एक बार ही लेना चाहिये। लेकिन पचास मन्त्र जपने के बाद घर का कोई सदस्य कोई बात पूछता है, तो जपकर्ता का ध्यान सविता देवता से हट जाता है। जैसे—पतंग उड़ रही है। और वह बीच में में कट जाए। इसलिये जब भी व्यवधान हो जाय तब फिर से विनियोग अर्थात् ऋषि व देवता का नाम बोलना आवश्यक है। व्यवधान दूर करने के लिए एकांत स्थान हो तो सबसे ज्यादा अच्छा है। जैसे कोई बाग बगीचा हो, या पूजा गृह हो या छत हो, या कोई भी एकांत स्थल हो जिसमें व्यवधान होने की सम्भावना न हो। यह आवश्यक नहीं कि जप एक माला का ही किया जाय या जप 51 मन्त्रों का ही किया जाय। इस विधि से 11 मन्त्रों से भी जप किया जा सकता है। मन्त्र जप में गुणवत्ता का ध्यान रखना चाहिये। इस प्रकार नहीं जप से जप का लाभ एक माह में ही दिखायी देने लग जाता है। चन्द्रमा एक महीने में 28 नक्षत्रों पर घूम जाता है सूर्य एक माह में एक राशि पार कर लेता है और पृथिवी एक महीने में अपनी कीली पर 30 बार घूम जाती है इसलिये जप का लाभ एक महीने के बाद ही दिखायी देता है।

पता—द्वारा आर्य समाज, आदर्श नगर, जयपुर (राज०) पिन 302004

कर्मकाण्ड प्रशिक्षण शिविर

"असम आर्य प्रतिनिधि सभा" द्वारा तक "कर्मकाण्ड शिविर" 12 दिसम्बर 1987 से 27-12-87 तक आर्य समाज मन्दिर गौहाटी के प्रांगण में लगाया गया। जिसमे 10 विद्यार्थियों को ऋषि दयानन्द जी द्वारा लिखित सस्कार विधि के अनुसार 16 संस्कारों का प्रशिक्षण दिया गया। उड़ीसा के श्री चन्द्रशेखर जी शास्त्री आचार्य गुरुकुल आम सेना ने प्रशिक्षार्थियों को प्रशिक्षण दिया।

—नारायण दास प्रधान, असम आर्य-प्रतिनिधि सभा।

आर्य अनाथालय फिरोजपुर में लोहड़ी व मकर संक्रान्ति

13 जनवरी को आश्रम के विशाल प्रांगण में लोहड़ी का पर्व उत्साह सहित मनाया गया। सायं बालआश्रम के विशाल प्रागण में बृहद्यज्ञ हुआ जिसमें यजमान स्थान पर चौधरी दम्पत्ति विराजमान थे। यज्ञ प० मनमोहन शास्त्री ने सम्पन्न कराया। यज्ञ मे समस्त आश्रम परिवार सोत्साह सम्मिलित हुआ। रात्रि भोजनोपरान्त प्रांगण में अग्नि प्रज्वलित करके बच्चों ने लोहड़ी के परम्परागत लोककथा तथा लोकगीत प्रस्तुत किये। श्रीमती चौधरी ने सभी को मूंगफली व रेवड़ी व बर्फी वितरित की।

14 जनवरी को प्रातः चौधरी दम्पत्ति के यजमानत्व में मकर संक्रान्ति का विशेष यज्ञ किया गया। प्रि० चौधरी साहब ने पर्व के महत्व पर प्रकाश डाला। बच्चों ने ईश्वर भक्ति के भजन प्रस्तुत किए। शांति पाठ के पश्चात् प्रसाद रूप में अधिष्ठाता महोदय ने मिष्ठान्न वितरित किया। [illegible]

डी ए वी शताब्दी का उपहार

संग्रह योग्य पठनीय जीवनोपयोगी पुस्तकें

हमारी नई पीढ़ी को पढ़ने के लिए वांछित पुस्तकें नहीं मिल रही हैं। बाजार मे ऐसी पुस्तकों की भरमार है जिनसे उनके मानस पर कुप्रभाव पड़ता है। निरर्थक पुस्तक पढ़ने वाले निरक्षरों से किसी भी हालत में अच्छे नहीं कहे जा सकते। युवको के उचित मार्गदर्शन के लिए डी ए वी प्रकाशन संस्थान ने "डी ए वी पुस्तकालय" ग्रन्थ माला का अपने शताब्दी वर्ष में प्रकाशन आरम्भ किया है। अब तक निम्न पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। कागज और छपाई अत्युत्तम होते हुए भी मूल्य प्रचारार्थ कम रखा गया है।

		Price Rs. P.
Wisdom of the Vedas Select Vedic mantras with inspirational English renderings.	Satyakam Vidyalankar	15 00
Maharishi Dayanand. A perceptive biography of the founder of Arya Samaj	K. S. Arya and P D Shastri	20 00
The Story of My Life. Autobiography of the great freedom fighter and Arya Samaj leader	Lajpat Rai	30 00
Mahatma Hans An inspiring biography of the father of DAV movement in India.	Sri Ram Sharma	20 00
प्रेरक प्रवचन डी ए वी कालेजों के जनक द्वारा विविध विषयों पर बोधप्रद प्रवचन	महात्मा हंसराज	15 00
सूक्तियां प्रेरक संस्कृत सूक्तियां हिन्दी तथा अंग्रेजी रूपांतर सहित	धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री	15 00
क्रांतिकारी भाई परमानन्द प्रख्यात क्रान्तिकारी तथा आर्य समाज के नेता की प्रेरणाप्रद जीवनी	धर्मवीर एम० ए०	20.00
Reminiscences of a Vedic Scholar It is a thought-provoking book on many subjects of vital importance for Aryan Culture	Dr Satyavrata Siddhantalankar.	20 00
DAV Centenary Directory (1886-1986) (In Two Volumes) A compendium of biographies of over 10000 eminent DAVs, Benefactors and Associates etc with their photographs. Over 1000 pages, 9" X 11" size, printed on very good paper, beautifully bound in plastic laminated card-board	Rs 150/-per set in Delhi. Rs 200/- by Regd Post in India Rs 150/-plus actual postage for Foreign countries	
Aryan Heritage. A monthly journal for propagation of the Vedic philosophy & culture.	Rs 60/- per annum Rs 500/- for Life for an individual. Rs 600/- in lump-sum for Institutions.	

500/- रुपये से अधिक माल मंगाने पर 10% कमीशन दिया जाएगा। डाक व्यय तथा रेल भाड़ा ग्राहक को देना होगा। चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट "डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति, नई दिल्ली, पब्लिकेशन्स एकाउन्ट" के नाम से भेजा जाए।

प्राप्ति स्थान .

(1) व्यवस्थापक, डी ए वी प्रकाशन संस्थान, चित्रगुप्त रोड, नई दिल्ली 55

(2) मन्त्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1

डी ए वी पब्लिक स्कूल जनकपुरी, दिल्ली

तालकटोरा के सभागार में डी ए वी पब्लिक स्कूल जनकपुरी की ओर से आयोजित अनूप जलोटा संगीत रात्रि का दिल्ली के कार्यकारी पार्षद श्री कुलानन्द भारतीय दीप जलाकर प्रारम्भ कर रहे हैं।

हिसार के कर्मठ समाज सेवी श्री जयदेव आर्य दिवंगत

हिसार के प्रमुख व्यापारी श्री फतहचन्द रईस के सुपुत्र, दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी (श्रद्धानन्द बाजार) के अध्यक्ष श्री त्रिलोकचन्द बसल के अनुज श्री जयदेव आर्य का 18 जनवरी को प्रात 2½ बजे हिसार मे अपने निवास स्थान (फतहचन्द आर्य निवास, मोहना मण्डी) में अकस्मात् हृदयगति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। उनकी मृत्यु का समाचार सुनते ही दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय और अनेक व्यापारिक प्रतिष्ठान बन्द हो गए। पूर्ण वैदिक विधि से अन्त्येष्टि संस्कार हुआ।

श्री जयदेव बचपन मे हिसार के डीएवी स्कूल मे पढे। आयकुमार सभा के प्रधान बने। फिर लाहौर के डीएवी कालिज से बी॰ए॰ किया। देश विभाजन के बाद शरणार्थियो की सेवा में जी जान से जुट गए। हिसार के ऐंग्लो-वैदिक स्कूल, आर्य कन्या पाठशाला और हिसार आर्य समाज तथा भिवानी आर्य अनाथालय के सक्रिय कार्यकर्ता रहे। हिन्दी रक्षा आन्दोलन में जेल की सजा काटी। गोरक्षा आन्दोलन में भी भरपूर योग दिया।

29 जनवरी को उनके पैतृक निवास पर दोपहर पगडी की रस्म और शोकसभा हुई जिसमें स्थानीय तथा बाहर के आर्यजनो ने अच्छी सख्या में भाग लिया। अनेक वक्ताओ ने उनके परोपकार परायण जीवन की घटनाओं का उल्लेख करते हुए उनको श्रद्धाजलि अर्पित की।

प्रभु उनकी आत्मा को सद्गति दे और समस्त पारिवारिक जनों को धैर्य धारण की शक्ति दे।

जीव्याच्चिरं श्री दरबारिलाल:

(श्री दरबारीलाल महाभागस्य एकोनषष्टितमे जन्मदिवसे तद्दीर्घायुष्यकामना)

जीव्याच्चिर श्रीदरबारिलाल !

हसस्य वैचारिक दायभाजां
सदाग्रणी' कर्मसु कौशलस्य—
यो मूर्ति रेवार्य-विचारणाया —
प्रसारणे दत्त-समस्त काल ।
जीव्याच्चिर श्री दरबारिलाल ।

श्रमेण यस्यैव वसुन्धराया
मन्त्र-स्वरो गुञ्जति सर्वदिक्षु,
यच्चेष्टितैरेव चकास्ति लोके—
वेदोक्तधर्मं पुनरुच्चभाल ।
जीव्याच्चिर श्री दरबारिलाल ॥

डी० ए० वि० सस्था-परिवर्धनार्थ
तत्प्राणभूतो यततेऽनिशं य,
कर्तव्य निष्ठोऽलस स्वधम—
सदाशयो हृदि योऽसराल ।
जीव्याच्चिर श्री दरबारिलाल ॥

यन्नाम पर्याय इवाद्य भूमौ
शिक्षालय-स्थापन सुप्रवृत्ते ,
सोऽय कृती येन सुपोषितोऽभूद्—
डी० ए० वि० वृक्षोऽद्य भृश विशाल ।
जीव्याच्चिर श्री दरबारिलाल: ॥

हिंदी-अनुवाद

माननीय श्री दरबारी लाल जी के 59 वें जन्म-दिन पर उनके दीर्घायुष्य की कामना—
श्री दरबारीलाल चिरायु हों ।

(1) महात्मा हसराज के वैचारिक उत्तराधिकारियों मे सर्वदा अग्रणी, कर्मो में कुशलता की मूर्ति तथा आर्य विचारधारा के प्रसार मे अपना सम्पूर्ण समय लगा देने वाले श्री दरबारीलाल चिरायु हों ।

(2) डी ए वी सस्थाओं के प्राण-तत्व के तुल्य सदा उनके सवर्धन में लगे रहने वाले, कर्त्तव्यनिष्ठ, स्वधर्म-पालन में सक्रिय, विचारो मे उच्च तथा हृदय से सरल श्री दरबारी लाल चिरायु हो ।

(3) जिनके परिश्रम से धरती पर सब दिशाओं मे वेद-मन्त्रो के स्वर निनादित हो रहे हैं तथा जिनके प्रयास से वैदिक धम का मस्तक पुन उन्नत एव प्रकाशित हो रहा है, ऐसे श्री दरबारीलाल चिरायु हों ।

(4) जिनका नाम शिक्षा मन्दिरो की स्थापना का पर्याय बनकर भूमि पर प्रचारित हो रहा है, तथा जिनके द्वारा पोषित होकर डी ए वी का वृक्ष विशाल रूप धारण कर गया है, वह पुण्यात्मा श्री दरबारी लाल चिरायु हो । —धर्मवीर शास्त्री B I/51 पश्चिम विहार, नई दिल्ली 63

आर्य केन्द्रीय सभा द्वारा ऋषिबोधोत्सव

आर्य केन्द्रीय सभा, हनुमान रोड, नई दिल्ली की ओर से 16 फरवरी को प्रात 8 से साय 4 बजे तक फिरोजशाह कोटला मेदान मे ऋषि बोधोत्सव का आयोजन किया जावेगा । जिसमे प्रात 8 बजे बृहद्यज्ञ प० यशपाल सुधाशु द्वारा, 9-30 बजे ध्वजारोहण स्वामी विद्यानन्द जी द्वारा 10 बजे मे मत्र दौड, नियम दौड कबड्डी, रस्साकशी, योगासन भाषण प्रतियोगिता, वेदमत्र अन्त्याक्षरी, सांस्कृतिक कायक्रम आदि होगा जिसके सयोजक आर्य युवक परिषद् के मत्री श्री ओम्प्रकाश होंगे । इस अवसर पर स्वामी आनन्द बोध जी, श्री बलराम जाखड, श्री कृष्णचन्द पन्त, डा० सत्यकेतु विद्यालंकार, आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र, प्राचाय श्रीमती कमला रत्नम और दैनिक हिन्दुस्तान के सम्पादक श्री बिनोद मिश्र के अलावा अनेक विद्वान् सभा को सम्बोधित करेंगे ।

निवेदक

महाशय धर्मपाल
प्रधान

डा० शिवकुमार शास्त्री
महामत्री

(पृष्ठ 3 का शेष)

आजादी से पहले और आजादी के बाद के वातावरण मे जो सबसे बडा परिवर्तन आया है वह यह है कि पहले प्रत्येक व्यक्ति अपने आपसे यह पूछता था कि मैने राष्ट्र के लिये क्या किया है ? उस समय एक तरह से राष्ट्र के लिये बडे से बडा बलिदान करने की होड लगी रहती थी । परन्तु अब प्रत्येक वग और व्यक्ति यह पूछता है कि राष्ट्र ने मेरे लिये क्या किया है ? पहले त्याग की होड थी, अब भोग की होड है ।

पर हम निराश नहीं है । हमे अब भी राष्ट्र के भविष्य पर विश्वास है और महान इतिहासकार टायन बी की इस भविष्यवाणी पर भी विश्वास है कि वर्तमान सभ्यता भले ही पश्चिम की देन हो परन्तु ससार में सुख और शान्ति स्थापित करने वाली भावी सभ्यता भारत की देन होगी ।

समुद्र मन्थन मे से विष भी तो निकलता ही है । उस विष से सब घबराते हैं, सिवाय महादेव के । उस पौराणिक महादेव का उपासक यह भारत भी तो महादेव से कम थोड़े ही है । यह भी उस विष को पचा जायेगा और देवता लोग तब तक समुद्र-मन्थन जारी रखेंगे जब तक अमृत प्राप्त नहीं हो जाता । वह अमृत केवल अपने लिये नहीं, सारे विश्व के लिये । अभी तो समुद्र मथन जारी है ।

ऋषि बोधोत्सव को उत्साह से मनाइए

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने समस्त आर्य समाजो से इस वष 16 फरवरी को ऋषि बोधोत्सव धूमधाम से मनाने की अपील करते हुए भारत सरकार के सूचना मन्त्री श्री अजीत पाजा को भी निम्न आशय का पत्र लिखा है—

19वी शती मे महान समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सामाजिक कुप्रथाओ, का घोर विरोध करते हुए वेद प्रतिपादित सिद्धान्तो के आधार पर विश्व बन्धुत्व और राष्ट्र प्रेम की भावना से 1875 मे आय समाज की स्थापना की थी । उन्होने ही स्वराज्य शब्द सवप्रथम भारतीय जनता के समक्ष रखा था ।

शिवरात्रि का पावन पर्व आयजगत् की ओर से महर्षि दयानन्द बोध दिवस के रूप मे मनाया जाता है । शिवरात्रि पर्व पर ही उन्हे बोध हुआ था और शिव मन्दिर से निकलकर वह सच्चे शिव की खोज मे घर छोडकर चले गए थे ।

आगामी 16 फरवरी 1988 को ऋषिबोधोत्सव का पव है । हमारा निवेदन है कि इस दिन आय समाज द्वारा सचालित बोधदिवस के कायक्रमो को राष्ट्रीय स्तर पर दूर दशन से प्रसारित किया जावे ।

आर्य युवक दल हरयाणा

17 1-88 को पानीपत मे आर्य युवक दल, हरियाणा स्थापना दिवस समारोह धूमधाम से मनाया गया । समारोह अध्यक्ष श्री बाबू दरबारी लाल व मुख्य अतिथि श्री रामनाथ सहगल सभा मत्री थे । समारोह मे माता हरकौर आय हाई स्कूल, पानीपत तथा डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल के बच्चो ने भजन एव भाषण देकर जनता का मन मोह लिया । समारोह को श्री शिवराम वर्मा, श्री किशन लाल, श्री किशन लाल, श्री राजकुमार, श्री जगदीश चन्द्र वसु, श्री ठाकुर, श्री अनिरुद्ध भारती, श्री रामस्नेही, श्री ब्र० रामस्वरूप सच्चिदानन्द आर्य आदि ने सम्बोधित किया । श्री रामनाथ जी सहगल ने पानीपत की जनता को स्वामी दयानन्द जन्म-स्थली टकारा को विश्वदर्शनीय बनाने में स्व०ला०जगन्नाथ जी रग वाले के सहयोग देने की प्रशसा की । तथा उनके लडके श्री देशबन्धु जी का ऋषि बोधोत्सव टकारा मे स्वागत करने की घोषणा की । श्री दरबारी लाल जी ने डी०ए०वी० सस्थाओ के कार्यों की विस्तार से चर्चा की तथा बताया कि वे किस प्रकार इन सस्थाओ के माध्यम से वेद प्रचार का कार्य कर रहे हैं । श्री रामस्नेही जी ने आगन्तुक महानभावो का धन्यवाद किया ।

(पृष्ठ 1 का शेष)

शास्त्राथ की चुनौती शकराचार्य ने ही दी है ।

श्री स्वामी अग्निवेश ने यह भी शर्त रखी कि शास्त्राथ मे केवल वेदो को ही प्रमाण रूप मे प्रस्तुत किया जायेगा, क्योकि हम केवल वेदो को ही स्वत प्रमाण मानते हैं, वेद से भिन्न जितने भी ग्रन्थ हैं हमारी दृष्टि मे वे सब परत प्रमाण हैं इसलिये वेद से भिन्न किसी भी ग्रन्थ का कोई प्रमाण स्वीकार्य नही होगा । यह इसलिए भी आवश्यक है क्योकि शकराचाय जी बार बार यह घोषणा करते रहे हैं कि मै वेद से सती प्रथा को सिद्ध करके दिखाऊ गा ।

स्वामी अग्निवेश जी ने यह सुझाव भी दिया कि निर्णायक के रूप मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती और सनातन धम सभा के महामन्त्री गोस्वामी गिरधारी लाल जी तथा एक तीसरा व्यक्ति स्थानीय सर्वोच्च सरकारी अधिकारी रहे, तो अच्छा है ताकि शास्त्राथ के समय निहित स्वार्थो द्वारा कोई उत्पात न किया जा सके । स्वामी अग्निवेश ने यह आशा व्यक्त की कि सद्भावना पूर्ण वातावरण मे इस प्रकार के शास्त्राथ से हिन्दू समाज को, जिसमे बुद्धिजीवी वग तथा जन-सामान्य दोनो शामिल हैं, लाभ ही होगा और भविष्य मे यह विवाद सदा के लिए समाप्त करने मे सहायता मिलेगी ।

टंकारा आर्य-यात्रा

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट की ओर से 15-16-17 फरवरी को टकारा में शिवरात्रि के अवसर पर ऋषि मेला मनाया जा रहा है। वहा जाने के लिए हवाई जहाज, रेल और बस तीनो की व्यवस्था की गई है।

हवाई जहाज का किराया
(दिल्ली से अहमदाबाद तक आना-जाना) 1500/रु०
बस किराया 600/-
रेल का किराया (दिल्ली से राजकोट टकारा और वापिस दिल्ली) 300/रु०
सीट बुक करवाने की अन्तिम तिथि

हवाई जहाज द्वारा 30-1-88 तक,
रेल द्वारा 26-1-88 तक
बस द्वारा 1 2-88 तक,
बुक हुई सीट कैंसिल नहीं होगी।

बस यात्रा का कार्यक्रम

प्रस्थान 10-2-1988 को प्रात 6 बजे आर्य समाज, करौल बाग, नई दिल्ली

दिनाक	प्रस्थान	पहुच
10-2-88	प्रस्थान प्रात 6 बजे आर्य समाज करौल बाग दिल्ली से	पहुच 5 बजे ब्यावर
11-2-88	प्रस्थान ब्यावर प्रात 8 बजे	पहुच साय 6 बजे आबू रोड, वाया माउण्ट आबू
12-2-88	प्रस्थान आबू रोड प्रात 7 बजे	पहुच साय 5 बजे आर्य समाज राजकोट
13-2-88	प्रस्थान प्रात 7 बजे राजकोट	पहुच साय 5 बजे पोरबन्दर, (कन्या गुरुकुल) वाया-सोमनाथ मन्दिर
14-2-88	प्रस्थान प्रात 7 बजे पोरबन्दर	वाया द्वारका, द्वारकाबेट पहुच जामनगर साय 6 बजे
15-2-88	प्रस्थान प्रात 7 बजे जामनगर	टकारा वारास्ता, मोरवी पहुच टकारा 12 बजे
16-2-88		टकारा मे ही
17-2-88	प्रस्थान 10 बजे टकारा से	पहुच अहमदाबाद 4 बजे साय
18-2-88	प्रस्थान 7 बजे प्रात: अहमदाबाद (साबरमती आश्रम)	पहुच साय 3 बजे उदयपुर
19-2-88	प्रस्थान उदयपुर से 8 बजे स्थान पर रात्रि उदयपुर	पहुच चित्तौडगढ, गुरुकुल 6 बजे वारास्ता, नाथद्वार, हल्दी घाटी, ककरौली
20-2-88	प्रस्थान चित्तौड गढ, चित्तौड किला	पुष्कर 4 बजे वापसी अजमेर 7 बजे साय
21-2-88	प्रस्थान अजमेर प्रात 8 बजे प्रात जयपुर	8 बजे (आमेर किला) से दिल्ली साय 9 बजे

टकारा मे ऋषि लगर के लिए अधिक से अधिक आटा, चावल, दाल, घी, नकद आदि निम्न स्थानों पर भिजवायें

आर्य समाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली—110001
आर्य समाज मन्दिर, करौल बाग —110005
आर्य समाज मन्दिर, ग्रेटर कैलाश —110048
आर्य समाज मन्दिर, राजिन्द्र नगर —110060

भवदीय :

प्रान्तीय महिला सभा	टकारा ट्रस्ट
श्रीमती सरला मेहता	श्री रतन चन्द सूद
,, शांति मलिक	,, ओ०पी० गोयल कार्यकर्ता प्रधान
,, राम चमेली	,, आर०के० पुन्जी प्रबन्धक
,, कृष्णा वढेरा	,, राम नाथ सहगल
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा	शुद्धि सभा
डा० धर्म पाल	श्री राम भज बत्रा
श्री हरबन्स सिह खेर	,, द्वारका नाथ सहगल
,, सरदारी लाल वर्मा	,, राजेश्वर साउथ एक्सटेंशन पार्ट-1
,, तीरथ राम आहूजा	,, दीवान चन्द पलटा
प्रधान शांति प्रकाश बहल	सयोजक राम लाल मलिक 5722510
दूरभाष 6417269	
मन्त्री रामसरन दास आहूजा	सहसयोजक नरेन्द्र मलिक
5713002, 343718	

नोट —टकारा ऋषि बोधोत्सव पर ऋषि लगर का प्रबन्ध टकारा ट्रस्ट और समस्त आर्य समाजो की ओर से किया जायेगा।

भाषण प्रतियोगिता में प्रथम

हवन यज्ञ क्यों करें ?

—निशान्त कुमार, कक्षा ४ (ब)—

कर्म काण्ड में प्राय तीन प्रश्न उठाये जाते हैं, क्या ? कैसे ? और क्यो ? हवन यज्ञ क्यो करे ? इस प्रश्न के समाधान से पूर्व यह जान लेना भी नितान्त आवश्यक है कि यज्ञ कहते किसे हैं।

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने आर्योद्देश्य रत्नमाला में लिखा है कि जो अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त वा जो शिल्प व्यवहार और पदार्थ विज्ञान है जो कि जगत् के उपकार के लिये किया जाता है, उसको यज्ञ कहते हैं। तथा स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश के 28 वें मन्तव्य में लिखते हैं कि यज्ञ उसको कहते हैं कि जिसमे विद्वानो का सत्कार यथायोग्य शिल्प अर्थात् रसायन जो कि पदार्थ विद्या उससे उपयोग और विद्यादि शुभ गुणों का दान अग्निहोत्रादि जिनमें वायु, वृष्टि, जल, औषधि की पवित्रता करके सब जीवो को सुख पहुचाना है—उसको उत्तम समझता हू।

जब तक इस होम करने का प्रचार रहा तब तक हमारा देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था। अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाये।

अग्निहोत्र से वायु, वृष्टि, जल की शुद्धि होकर वृष्टि द्वारा ससार को सुख प्राप्त होता है अर्थात् शुद्ध वायु का श्वास स्पर्श, खान-पान से आरोग्यवृद्धि बल पराक्रम बढकर धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का अनुष्ठान पूरा होता है।

पचमहायज्ञ विधि मे श्री स्वामीजी महाराज ने लिखा है कि यज्ञ करने वालो पर ईश्वर अनुग्रह करता है।

सुगन्धादि युक्त चार प्रकार के द्रव्यों का अच्छी प्रकार सस्कार करके अग्नि में होम करने से जगत् का अत्यत उपकार होता है। जैसे दाल और शाक आदि मे सुगन्ध द्रव्य और घी इन दोनो को अग्नि मे तपाके छोक देने से सुगन्धित हो जाते हैं वैसे ही यज्ञ से जो भाप उठता है वह भी वायु आदि को सुगन्धित करके सब जगत् को सुख करता है। इससे यह यज्ञ परोपकार के लिये ही होता है।

जैसे ईश्वर ने सत्यभाषणादि धर्मः व्यवहार करने की आज्ञा दी है, मिथ्या-भाषणादि करने की नहीं, जो इस आज्ञा से उल्टा करता है वह अत्यन्त पापी होता है और ईश्वर की न्याय व्यवस्था से उसको क्लेश भी होता है। वैसे ही ईश्वर ने मनुष्यों को यज्ञ करने की आज्ञा भी दी है, इसको जो भी न करे करता वह भी पापी होकर दुख का भागी होता है।

जो मनुष्य ईश्वर के करने-कराने वा आज्ञा देने योग्य व्यवहारों को छोडता है, वह सब सुखों से हीन होकर और दुष्ट मनुष्य से पीडा पाता हुआ सब प्रकार दुखी रहता है।

किसी ने किसी से पूछा कि जो यज्ञ को छोडता है उसके लिये क्या होता है ? वह उत्तर देता है कि ईश्वर भी उसको छोड देता है। फिर वह पूछता है कि ईश्वर उसको किसलिये छोड देता है ? उत्तर देने वाला कहता है कि दुख भोगने के लिये। जो ईश्वर की आज्ञा को पालता है वह सुखो से युक्त होने योग्य है और जो छोडता है वह राक्षस हो जाता है।

अत यज्ञ और यज्ञ के पदार्थों का तिरस्कार कभी न करे। महर्षि दयानन्द के इन उद्धरणो से स्पष्ट हो जाता है कि कि हम यज्ञ क्यों करें।

अन्त मे आर्य कविरत्न प्रकाश जी के शब्दो मे—

यज्ञ जीवन का हमारे
श्रेष्ठ सुन्दर कर्म है
यज्ञ का करना और,
कराना आर्यों का धर्म है।

[आर्य समाज अनारकली के वार्षिकोत्सव पर हुई प्राथमिक कक्षाओ की भाषण प्रतियोगिता मे प्रथम]
डी०ए०वी० स्कूल रोजनगर, गाजियाबाद

सत्सग गृह का उद्घाटन

27 12-87 को प० कृष्ण कान्त आर्योपदेशक (भूतपूर्व ईसाई प्रचारक) की प्रेरणा से, डा० बृज मुनि वानप्रस्थी की स्वर्गीय धर्म पत्नी की याद में, "माता कुन्दन देवी" वेद प्रचार, सेवा, सत्सग गृह का उद्घाटन समारोह आर्य वीर दल पारिवारिक सत्सग के साथ धूमधाम से मनाया गया। जिसमें आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् एव समाज सेवी श्री उत्तम चन्द शरर जी के प्रवचन एव स्थानीय धर्म प्रेमियों के मधुर भजन हुऐ। —डा० कुन्द्रा, धर्मार्थ औषधालय, किला रोड, रोहतक (हरि०)

रजत जयन्ती समारोह सम्पन्न

आर्य समाज, (भेल) पिपलानी की ओर से वर्ष भर से चल रहे रजत, जयन्ती समारोह का समापन कार्यक्रम 21 से 25 दिसम्बर तक सम्पन्न हुआ। जिसमें स्वामी दीक्षानन्द के उपदेश और श्री विजय सिह 'विजय' के भजन हुए। भेल भोपाल के निदेशक श्री आर० के० सरीन मुख्य अतिथि थे।

श्री दरबारीलाल के जन्मदिवस समारोह की एक झांकी

प्रथम चित्र मे केन्द्रीय पर्यावरण मन्त्री और हरियाणा के पूर्व मुख्यमन्त्री चौ० भजनलाल डी ए वी कालेज कमेटी के सगठन सचिव श्री दरबारी का स्वागत कर रहे हैं और श्री दरबारी लाल उनको नमस्कार कर रहे हैं। द्वितीय चित्र मे डी ए वी कालज कमेटी और आर्य प्रादेशिक सभा के प्रधान प्रो० वेदव्यास जी श्री दरबारी लाल को स्नेहाशीर्वाद प्रदान कर रहे हैं। तीसरे चित्र मे इस जन्मदिवस समारोह के सयोजक श्री बी० बी० गक्खड, जो कालेज कमेटी के अतिरिक्त शिक्षा निदेशक हैं, श्री दरबारी लाल का स्नेह पूर्ण स्वागत कर रहे हैं।

प्रो० कृष्णसिंह आर्य और डा० यादव द्वारा लिखित 'आर्य समाज एण्ड दि फ्रीडम स्ट्रगल' पुस्तक का विमोचन करके चौ० भजनलाल जनता को पुस्तक का आवरण पृष्ठ दिखा रहे हैं। बाईं ओर प्रि० कृष्ण सिंह और डा० यादव भी खड़े हैं। चौ० भजन लाल के साथ प्रसिद्ध उद्योगपति और डी ए वी कालिज कमेटी के उपाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश गायल खड़े हैं।

श्री रामनाथ सहगल के सुपुत्र, आर्य समाज डिफेंस कालोनी के महामन्त्री और जन्मदिवस समारोह के प्रबन्धक श्री अजय सहगल कार्यक्रम के सम्बन्ध मे प्रो० वेदव्यास जी से परामर्श करते हुए।

डी ए वी स्कूल की स्थापना शताब्दी मनाने का निश्चय

अजमेर का डी० ए० वी० स्कूल आगामी 10 फरवरी, 1988 को अपनी स्थापना के सौ वर्ष पूरे करने जा रहा है। यह विद्यालय 1892 मे मिडिल स्कूल, 1895 मे हाईस्कूल तथा 1941 ई० मे इस विद्यालय की स्वर्ण जयन्ती समारोह पूर्वक आयोजित की गई थी तथा उसी अवसर पर दयानन्द कालज अजमेर की स्थापना का निश्चय हुआ जिसका आज राजस्थान के गैर सरकारी शिक्षण सस्थानो मे अपना महत्वपूर्ण स्थान है।

डी० ए० वी० स्कूल प्रबन्ध समिति के विशिष्ठ पदाधिकारियो, आर्य समाज शिक्षा सभा द्वारा सचालित 13 शिक्षण सस्थाओ के प्रधानाध्यापको एव डी० ए० वी० स्कूल के भूतपूर्व छात्र प्रतिनिधियो की गत रविवार को एक बैठक प्रो० दत्तात्रेय आर्य की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। जिसमे सर्व सम्मति से डी०ए०वी० स्कूल स्थापना शताब्दी समारोह पूर्वक मनाने का निश्चय किया गया।

आर्य समाज शिक्षा सभा के अध्यक्षता श्री दत्तात्रेय आर्य मन्त्री ... सभी भूतपूर्व विद्यार्थियो तथा अजमेर के नागरिको ने इस अवसर पर पूर्ण सहयोग प्रदान करने की प्रार्थना की है।

आर्य वीर दल की स्थापना

सोहागपुर दाना पो० शहपुर (बैतूल) म० प्र० मे 16 जनवरी को आर्य वीर दल की स्थापना की गई। जिसमे श्री ... ब्रह्मचारी ..., डा० ... श्री रमा... चौधरी, ... नाम वर्मा व श्री ... गुप्ता ... चुने गए। —अरुण कुमार गुप्ता

यू० 108/81 लायसेंस टू पोस्ट विदाउट प्रिपेमैंट
रजिस्ट्रेशन न० आर० एन० आई० 39/57 डी० सी० 409
N D. P.S.O ON 1-2-88, 31 जनवरी 1988

आर्यसमाज चन्द्रपुरी गाजियाबाद की स्थापना

आर्य केन्द्रीय सभा गाजियाबाद के तत्वावधान में चन्द्रपुरी मे आर्य समाज की स्थापना हुई । उत्तर प्रदेश आ० प्र० स० के प्रधान श्री इन्द्रराज ने केन्द्रीय सभा का विधिवत् उद्घाटन किया और श्री रामनाथ सहगल ने युवक स्मारिका का विमोचन किया। श्री बाल दिवाकर हंस, श्री रामवीर शास्त्री प्रि० ए० के० चावला ने सभा को सम्बोधित किया। बच्चो ने संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

कलकत्ता डी ए वी पब्लिक स्कूल में एक सप्ताह में 350 बच्चे दाखिल

कलकत्ता महानगरी में 9 जनवरी को प्रथम डी ए वी पब्लिक स्कूल का उदघाटन होते ही एक सप्ताह के अन्दर वहां 350 बच्चो का रजिस्ट्रेशन हो चुका है। स्कूल के प्रबन्धक श्री आनन्द कुमार आर्य ने उक्त सूचना देते हुए लिखा है कि अप्रैल तक 2000 बच्चों का रजिस्ट्रेशन हो जाने की सम्भावना है, तब तक स्कूल की जो नई इमारत बन रही है वह भी बनकर तैयार हो जायेगी।

9 जनवरी 1988 को प्रो० वेद व्यास जी के नेतृत्व मे डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति की जो टीम कलकत्ता गई थी उनके सानिध्य मे आर्य समाज भवानीपुर के प्रधान श्री मुल्कराज मल्होत्रा के विशेष प्रयत्न से उस स्कूल के लिये भूमि प्राप्त हुई और अनुभवी शिक्षा शास्त्री श्री आर० एस० शर्मा स्कूल के प्रिन्सिपल नियुक्त हुए। बंगाल के लोकप्रिय मन्त्री श्री यतीन चक्रवर्ती ने स्कूल का उदघाटन किया। स्कूल की इमारतो के सम्बन्ध मे जो निर्माण कार्य चल रहा है, उसमे आर्य समाज का भी एक भवन बनाने की योजना है। इस निर्माण कार्य पर लगभग 35 लाख रु० व्यय होगा।

कलकत्ता के आर्य बन्धुओं में अपने प्रदेश मे इस पहले डी ए वी स्कूल को सफल बनाने का असीम उत्साह है। अब तक इस महानगरी मे शिक्षा के क्षेत्र मे ईसाईयो का जो वर्चस्व रहा है उसके मुकाबले भावी पीढी मे भारतीय और वैदिक संस्कृति तथा नैतिक मूल्यो की आस्था जगाने की दृष्टि से इस स्कूल की ओर सब लोग बडी आशा से देख रहे हैं। स्कूल के प्रधान श्री मल्होत्रा, प्रिन्सिपल श्री शर्मा, और मैनेजर श्री आनन्द कुमार आर्य पूर्ण उत्साह के साथ स्कूल के कार्य को आगे बढाने मे लगे हुए हैं।

श्री आनन्द कुमार आर्य मैनेजर डी ए वी पब्लिक स्कूल, 61, डायमंड हारबर रोड, कलकत्ता-38

सौराष्ट्र में सूखा राहत कार्य की एक झांकी

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा की ओर से जो सूखा राहत कार्य चल रहा है उसके अन्तर्गत जरूरतमंद लोगो का गेहूं, दाल चावल और बच्चो को बिस्कुट मुफ्त दिये जाते हैं। टंकारा मे पिछले तीन वर्ष से अकाल की स्थिति चल रही है। पानी, घास, चारा प्राप्त करने में भी बडी कठिनाई हो रही है। धनी मानी लोगो से प्रार्थना है कि वे इस परोपकार के कार्य मे दिल खोलकर अन्न और धन की सहायता देने में पीछे न रहें। चित्र मे अन्न वितरण का एक दृश्य।

वैदिक प्रशिक्षण शिविर

वैदिक प्रशिक्षण शिविर पूर्वाञ्चलीय डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल हेहल, रांची (बिहार) मे 24 से 31 दिसम्बर, 1987 तक डाईरेक्टर एन०डी० ग्रोवर की देख-रेख मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रातःकालीन मन्त्रो का पाठ प्रभात फेरी, आसन, व्यायाम, सन्ध्या, दैनिक यज्ञ, संगीत आदि हुए। वेद प्रवचन डा० विजयपाल शास्त्री, डी०ए०वी० नैतिक शिक्षा संस्थान, नई दिल्ली द्वारा आसन-व्यायाम श्री सूर्यदेव शास्त्री द्वारा, श्री कृष्ण देव शास्त्री द्वारा वेद पाठ एवं सन्ध्या प्रार्थना के मन्त्रो का अभ्यास करवाया गया। वैदिक प्रश्नोत्तरी का कार्य उसका समाधान डा० विजय पाल शास्त्री, श्री ग्रोवर जी, प० वासुदेव शास्त्री द्वारा सम्पन्न हुआ। खेल-कूद हास्य विनोद, चुटकले कहानियां, श्लोको एवं मन्त्रो के पाठ मे बच्चो ने बडी रुचि से भाग लिया। प्राचार्य श्री लज्जाराम सैनी की कार्य पटुता सराहनीय रही। शिविर मे डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल, खलारी, बोकारो पुर्वी बीना, मुनिडीह, श्यामली, धोरी, कुसुण्डा, नन्दराज, रातु, अलकुसा, लोदना, चाईबासा, आरा, हेहल, आदि स्कूलों के छात्रो ने भाग लिया।

श्री तेजोमित्र शास्त्री, श्री परमेश्वर पाठक और उपनिदेशक डा० वाचस्पति कुलवन्त का विशेष योगदान रहा।

मुद्रक प्रकाशक श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री, द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाडी धीरज (फोन : 527335) दिल्ली से मुद्रित करवाकर कार्यालय आर्य जगत्, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—सार्व सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 (फोन 173481)

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य —30 रुपये विदेश मे 65 पौ० या 125 डालर वर्ष 51, अक 7 रविवार 14 फरवरी, 1988 दूरभाष । 3 4 3 7 18
आजीवन सदस्य-251 रु० इस अक का मूल्य—5 रुपये सृष्टि संवत् 1972949088, दयानन्दाब्द 163 फाल्गुन कृ०-11, 2044 वि०

ऋषि बोधांक

कल्प पुरुष

महर्षि दयानन्द सरस्वती

सम्पादक—क्षितीश वेदालकार

व्यवस्थापक—रामलाल मलिक

सत्यमेव जयते

उप राष्ट्रपति, भारत
नई दिल्ली
VICE PRESIDENT
INDIA
NEW DELHI

27 जनवरी, 1988

सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के जन्म स्थान टकारा (राजकोट) गुजरात में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 15 फरवरी से 17 फरवरी तक एक ऋषि मेला का आयोजन किया गया है, एवं इस अवसर पर एक स्मारिका भी प्रकाशित की जा रही है। मैं ऋषि मेला एवं स्मारिका की सफलता के लिये अपनी शुभकामनाएं भेजता हूं।

शंकर दयाल शर्मा

सत्यमेव जयते

मुख्य मन्त्री, हरियाणा,
चण्डीगढ़।

दिनांक 28 जनवरी, 1988

सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा की ओर से एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी एक युग प्रवर्तक एवं आर्य समाज के संस्थापक थे। उन्होंने तत्कालीन समाज में व्याप्त बुराइयों को खत्म करने के लिए जो नई दिशा दी, वह ऐतिहासिक है। वेदों के पठन-पाठन की भावना को पुनः जागृत करने के लिए अपने युग में जितना कार्य उन्होंने किया, उतना कार्य किसी और ने नहीं किया। नारी शिक्षा एवं उसके पुनरुत्थान के लिए उन्होंने समाज में जागृति पैदा की। मुझे आशा है कि स्मारिका में स्वामी दयानन्द जी के जीवन के महान् आदर्शों का ओजस्वी वर्णन किया जाएगा।

मंगल कामनाओं सहित,

देवी लाल

सत्यमेव जयते

M (PPIL) P/7/1'0/88
योजना, कार्यक्रम कार्यान्वयन,
विधि एवं न्याय मन्त्री
नई दिल्ली-110001
भारत
MINISTER OF PLANNING
PROGRAMME IMPLEMENTATION
AND LAW & JUSTIC
NEW DELHI-110001
INDIA
दिनांक, फरवरी 8, 1988

संदेश

मुझे प्रसन्नता है कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के जन्म-स्थान में आयोजित ऋषि मेला के अवसर पर एक स्मारिका प्रकाशित की जा रही है। स्वामी जी ने भारतीय संस्कृति की रक्षा हेतु आर्य समाज की स्थापना की थी और अंग्रेजों द्वारा किये जा रहे भ्रामक प्रचारों का खण्डन किया था। उनके विचार आज भी उतने ही मूल्यवान हैं जितने अपने समय में थे। इस युग प्रवर्तक तथा संस्कृति रक्षक महामानव को मैं श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं और आशा करता हूं कि यह स्मारिका उनके उपदेश अनुसार चलने के लिए जन-साधारण को प्रेरणा देगी।

पी० शिवशंकर

श्री रामनाथ सहगल,
मंत्री,
महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट,
आर्य समाज,
मन्दिर मार्ग,
नई दिल्ली-110001

सूखा राहत कोष दान सूची-11

आर्य प्रादेशिक सभा, एवं डी ए वी कमेटी द्वारा सूखा ग्रस्त प्रदेशों में सूखा राहत के लिए धन की अपील की गई थी। प्राप्त राशि और दानदाताओं की ग्यारहवीं सूची निम्न है। भविष्य में राशि भेजने वालों का ब्यौरा इसी तरह "आर्य जगत्" में प्रकाशित किया जायेगा।

336	प्रिन्सिपल डी० ए० वी० एस० एस०, लक्कड़ बाजार, शिमला	1000/-
337	मन्त्री जी, आर्य समाज माडल टाउन, यमुना नगर, हरि०	150/-
338	श्री प्रमोद कुमार आर्य, आर० जैड-1096, गली नं० 9/1 साधनगर पालम कालोनी, नई दिल्ली-45	21/-
339	श्री लक्ष्मी नारायण, 9/78 आर्य नगर, कानपुर	50/-
340	श्री विद्याधर अरोड़ा, बी-22/1 रमेश नगर, नई दिल्ली-15	100/-
341	श्री भूपनारायण ठकराल, 81-आर, माडल टाउन, करनाल, हरि०	.01/-
342	प्रिन्सिपल, डी० ए० वी० से० प० स्कूल, नई मण्डी सिरसा हरि०	899/-
343	लज्जा भंडारी, 25/50 सुभाष नगर, रोहतक	20/-
344	चेतन देवी, 22/70 वेस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली-8	201/-
345	श्री राम लाल मेहता, सम्पन रोड नं० 3, बंजाराहिल, हैदराबाद	50/-
346	श्री मगनसिंह मूनचंद, आर्य वेद मंदिर सायना, सुरेन्द्र नगर, गुजरात	20/-
347	श्री बृजमोहन वर्मा, एल-1/9? अशोक विहार, दिल्ली-52	1000/-
348	नरेन्द्र नाथ मल्ला, 11 पूसा रोड, दिल्ली-5	100/-
349	कवलनैन, ग्राम बेगा, सोनीपत, हरि०	101/-
350	नागिया परिवार, 27/6 पंजाबी बाग ईस्ट, नई दिल्ली-26	वस्त्रादि
351	मन्त्री, आर्य समाज फतेहाबाद, आगरा, उ० प्र०	21/-
352	अशोक कामरा, पी० एन० बी० निकट हिन्दू कालेज, सोनीपत, हरि०	95/-
353	मन्त्राणी जी, आर्य स्त्री समाज, दरिया गंज, नई दिल्ली-2	101/-
354	श्री रामचन्द वि० अ०, 41 बर्मीज कालोनी, जयपुर 4	40/-
355	डा० विद्यावती, पर्णकुटी, पुरानी रेलवे रोड, जालन्धर, पंजाब	100/-
356	श्रीमती इन्द्रदेवी बत्रा, ए-212 ए० डी० सी० भवानारोड, मेरठ, उ० प्र०	50/-
357	श्री सदाशिव आर्य, ए स्टाम्पिंग विभाग, टी एन 2319 न्यू अलीपुर, कलकत्ता-88	25/-
358	प्रिन्सिपल, डी० ए० वी० हा० प० स्कूल, कुरुक्षेत्र, हरि०	815/-
359	प्रिन्सिपल, डी० ए० वी० हा० प० स्कूल, बलवन्डी कोटा, राज०	351/-
360	नागनाथ लालबाणी बाघमारे, गणगोलाई, लातूर, महा०	1000/-
361	प्रिन्सिपल, डी० ए० वी० हा० प० स्कूल, बाणा, पटियाला, पंजाब	1001/-

सुभाषित

सर्वज्ञ शम्भु शिव शकर विश्वनाथ
मृत्युञ्जयेश्वर मृड प्रभृतीनि देव ।
नामानि तेऽन्यविषये फलवन्ति किन्तु
त्व स्थाणुरेव नितरा मयि मन्दभाग्ये ॥

—जगद्धर भट्ट (स्तुतिकुसुमाजलि)

शिव के अनेक नामो में एक 'स्थाणु' भी है । स्थाणु शब्द का अर्थ सस्कृत में ठूठ भी होता है । कवि ने उसी शब्द से चमत्कार पैदा किया है । वह कहता है—'हे देवाधिदेव महादेव । आपको लोग अनेक नामों से पुकारते हैं । कोई सर्वज्ञ कहता है, कोई शम्भु, कोई शिव, कोई शकर कोई विश्वनाथ, कोई मृत्युजय, कोई ईश्वर और कोई मृड सुखदायक । ये सब नाम औरो के लिए फलवान् सिद्ध हुए, पर मुझ मन्द-भाग्य के लिए तो आप निरे स्थाणु (ठूठ) ही रहे ।

सम्पादकीयम्

शिवरात्रि का सन्देश

भारतीय वाङ्मय मे ब्रह्मा, विष्णु, महेश-इन त्रिदेवो में सबसे अधिक उपेक्षा ब्रह्मा जी की हुई । विष्णु और शिव के भक्तो ने अपने अपने आराध्य देवों के नाम के मन्दिर की भरमार कर दी जबकि ब्रह्मा जी के नाम पर भारत भर मे केवल दो ही मन्दिर हैं । एक अजमेर के निकट पुष्कर में और दूसरा गौहाटी के पास पाण्डु मे । ब्रह्मा ज्ञान के प्रतीक हैं, विष्णु कर्म के और शिव भक्ति के । ज्ञान के आग्रही ससार में सदा अल्पमत में होते हैं । जबकि भक्ति और कर्म के माध्यम से जीवन मे सफलता प्राप्त करने वाले बहुमत में होते हैं । विष्णु प्रेय मार्ग के प्रतिनिधि हैं और शिव श्रेय मार्ग के । एक के भक्त प्रवृत्ति मार्ग के उपासक हैं और दूसरे के भक्त निवृत्ति मार्ग के । वैष्णवों के राम, कृष्ण और राधा आदि के नाम से अनेक सम्प्रदाय बने तो शैवों के शाक्त लिंगायत और भैरव आदि सम्प्रदाय बने । वज्रयान, तन्त्रयान, सहजयान और नाथ सम्प्रदाय आदि ने निवृत्तिमार्गी फक्कडपन के साथ साथ वाम-मार्गी विचार धारा को भी तीव्रता से अपनाया ।

भारतीय इतिहास के कौन से कालखण्ड मे वैष्णवो के किसी सम्प्रदाय का या शैवो के किसी सम्प्रदाय विशेष का प्राबल्य रहा, इसका वर्णन करने की आवश्यता नहीं । हम तो इतिहास की दृष्टि मे पिछले लगभग एक हजार साल के इतिहास की रूपरेखा मात्र प्रस्तुत कर रहे हैं । वर्तमान हिन्दू समाज वैष्णव विचार धारा से अधिक प्रभावित है । पर तु मन्दिरो का जहा तक सम्बन्ध है, वे शायद शिव जी के ही अधिक होगे । गणेश और कार्तिकेय, जिनका दक्षिण भारत मे बाहुल्य है, शिव से सम्बन्धित हैं और पार्वती, दुर्गा, काली, चण्डी, आदि भी शैव परम्परा से जुडे हैं । हरयाणा का नाम "हरयाणा" इसीलिये पडा कि वहा के गाव गाव में शिव के मन्दिर हैं ।

इन देवो देवताओ को कितना ही अलंकारिक और प्रतीकात्मक रूप क्यो न दिया जाये, परन्तु ये सब के सब उन देवों के व्यक्तीकरण (परसोनीफिकेशन) के ही रूप हैं । वे विष्णु या शिव का व्यक्ति-विशेष अर्थात् सज्ञा मानकर चलते हैं । परन्तु वेद मे केवल शिव नही, प्रत्युत शिवतम प्रयोग भी मिलते हैं । जैसे सन्ध्या के अन्तिम मन्त्र में 'नम शिवाय च, शिवतराय च, शिवतमाय च, इन तीनो शब्दो का प्रयोग हुआ है । वह इस बात का प्रमाण है कि वेद को शिव शब्द विशेषण (एडजेक्टिव) के रूप में भी प्रिय है । तब वह विशेषण व्यक्ति-विशेष न रहकर कल्याण वाचक अर्थ का ही द्योतक बन जाता है । निष्कर्ष यह कि व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के लिए जो भी कुछ हितकारी है वह सब शिव है ।

महाभारतकार ने कहा है—

नहि मानुषात् श्रेष्ठतर हि किंचित् ।

और यह भी शास्त्रीय वचन है—

ये पुरुषे ब्रह्म विदु ते विदु परमेष्ठिनम् ।

—अर्थात् ससार में मनुष्य से श्रेष्ठ और कुछ नहीं है और जिसने मानव मे परमात्मा के दर्शन कर लिये उसने परमेष्ठी को पहचान लिया । इस प्रकार मानव मात्र की सेवा मे और उसके कल्याण में अपने जीवन को लगा देना ही शिव की असली पूजा है । यही शिवरात्रि का सन्देश है ।

चतुर्दशी की अमा-यामिनी में बालक मूलशकर के मन में जिस सच्चे शिव को जानने की इच्छा पैदा हुई थी उसका समाधान ऋषि दयानन्द ने इसी रूप में पाया था और अपना सारा जीवन मानव जाति के कल्याण में लगाकर अपने बोध को सार्थक किया था ।

जिस अमृत की तलाश थी

31 जनवरी के अक मे "सपने चूर चूर हो गये" शीर्षक से जो अग्रलेख हमने लिखा था उसकी पाठको से मिश्रित प्रतिक्रिया प्राप्त हुई । कुछ ने उसकी बहुत प्रशसा की है और कुछ ने लेख के उत्तरार्द्ध मे प्रकट किए गए आशावाद को निरर्थक तथा बहुत दूर की कौडी बताया है । उस लेख के अन्त मे हमने कहा था कि देश की वर्तमान स्थिति समुद्र-मन्थन से निकलने वाले हलाहल विष के समान है और एक दिन महादेव रूपी यह महादेश उस हलाहल को भी पचा लेगा तथा देवता लोग तब तक विश्राम नही लेंगे जब तक अमृत की प्राप्ति न हो जाय । उसी सन्दर्भ मे हमने महान इतिहासकार "टायनबी" की इस भविष्यवाणी का भी उल्लेख किया था कि वर्तमान ससार भले ही पाश्चात् सभ्यता से प्रेरित हो किन्तु भविष्य मे ससार को सुख और शान्ति की प्रेरणा भारतीय सभ्यता से ही प्राप्त होगी । जिस अमृत की ओर हमने सकेत किया था और जिसकी हमे तलाश थी, उसके आसार सर्वथा लुप्त नही हुए हैं । हाल ही में इसका प्रमाण मिल गया ।

महेन्द्रसिंह टिकैत के नेतृत्व मे मेरठ की कमिश्नरी का घेराव करने वाला जो किसान आन्दोलन चला है, वह अद्भुत है । जिन्होंने गान्धी युग के सत्याग्रह देखे हैं और उसमे शामिल होने वाले लोगो का उत्साह देखा है, उनकी आखो मे इस किसान आन्दोलन को देखकर जैसे वही युग तैरने लगा । महात्मा गाधी ने राज शक्ति के मुकाबले मे लोक शक्ति को जागृत किया था और वही उनकी सफलता का रहस्य भी था । सरदार पटेल न भी बारदौली मे किसान आन्दोलन का नेतृत्व करके ही सारे देश मे "सरदार' का खिताब पाया था । परन्तु टिकैत के नेतृत्व वाला यह आन्दोलन उस युग के आन्दोलनो को भी पीछे छोड गया । कहा महात्मा गाधी और सरदार पटल जैसे राजनीति के धुरन्धर, कानून के पण्डित और वर्षों तक जेलो मे तपस्या करने वाले सर्वजन-मान्य नेता, और कहा टिकैत । टिकैत जैसा अनपढ और खाटी किसान, गाधी, पटेल और नेहरू जैसे सभी चतुर नेताओ के मुकाबले में कहा टिक सकता है । वे सब राजनीति के चाणक्य थे और टिकैत राजनीति का क ख ग भी नही जानता । परन्तु इस टिकैत का प्रभाव किसान आन्दोलन मे शामिल विशाल जन-समुदाय पर उन नेताओं से किसी प्रकार कम नही । मेरठ की मिश्नरी के चारो ओर कई किलोमीटर तक फैले किसानों की यह जन मेदिनी टिकैत के एक एक वाक्य पर अपने प्राण न्योछावर करने को तैयार ।

हमने सजय और इन्दिरा गाधी के युग की रैलिया भी देखी हैं । चौधरी चरणसिंह द्वारा और शरद यादव द्वारा आयोजित किसानो की विशाल और अभूतपूर्व रैलिया भी देखी—सुनी हैं । उन रैलियो मे देहात से लोगो को ट्रको और बसो मे भर भर कर लाया जाता था । उनके ठहरने और भोजन आदि की पूर्व व्यवस्था की जाती थी और बहुतो को रैली मे शामिल होने के लिए पैसे दिए जाते थे । परन्तु टिकैत के इस आन्दोलन मे ऐसा कुछ नही हुआ । सब किसान अपने आप और अपनी इच्छा से आए । उनके निवास और भोजन की कही कोई पूर्व व्यवस्था नहीं । वे भयकर सर्दी के मौसम मे भी 24 घटे खुले मैदान मे पडे रहे । दिन मे तो सूर्य भगवान की कृपा से किसी तरह थोडी बहुत राहत मिल जाती, परन्तु रात मे चारो ओर अलाव जल जाते और लोग किसी तरह अपनी रात काट लेते । न तो उनके उत्साह में कमी आई और न उन्होने कष्टो से घबराना सीखा । टिकैत ने किसी राजनैतिक पार्टी का आश्रय नही लिया, किसी राजनैतिक नेता को भी पास नही फटकने दिया । वकीलो और व्यापारियो ने इस किसान आन्दोलन के समर्थन मे मेरठ बन्द का आयोजन किया तो टिकैत ने उसको भी रोक दिया । उसने कहा—हम आपकी सहानुभूति के लिये कृतज्ञ हैं परन्तु इस कारण आप बाजार और दुकानें ब द करके जनता को परेशानी मे क्यो डालते हैं । इस अहिंसक अद्भुत सत्याग्रह को देखकर पुलिस और सुरक्षाबल तथा सारा सरकारी अमला भी किंकर्तव्यविमूढ, उनकी समझ मे नही आया कि वे क्या करें ? अगर ये लाखो लोग हिंसा पर उत्तर आतें तो सारा सरकारी अमला और पुलिस तथा सुरक्षा बल को एक तरफ रखा रह जाता । पर हिंसा का लेश नही । व्यवस्था और अनुशासन

(शेष पृष्ठ 30 पर)

बम्बई में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस की झांकी

बम्बई मे श्रद्धानन्द दिवस के उपलक्ष्य मे हुए यज्ञ के अवसर पर यजमान बने चेम्बूर आय समाज के प्रधान श्री गुलजरी लाल और उनकी पत्नी अग्नि प्रज्वलित कर रहे हैं। दाई ओर खड हैं आय समाज के मत्री श्री ईश्वर मित्र शास्त्री। द्वितीय चित्र मे मच पर विराजमान हैं बम्बई आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री ओंकार नाथ जी मुख्य अतिथि श्री सत्यकाम विद्यालकार और ध्वनि विस्तारक मच पर भाषण दे रहे हैं सभा मत्री श्री धमवीर गुलाठी।

आर्य युवक दल हरियाणा का स्थापना दिवस समारोह

17 जनवरी, 88 को आर्य युवक दल हरियाणा का स्थापना दिवस मनाया गया। प्रथम चित्र मे श्री दरबारी लाल जी ध्वजारोहण कर रहे है। द्वितीय चित्र मे श्री रामनाथ सहगल युवको को सम्बोधित कर रहे हैं। तृतीय चित्र मे श्री दरबारी लाल कार्यालय के कक्ष का उद्घाटन कर रहे हैं। चतुर्थ चित्र मे युवक दल के महामत्री श्री चमन लाल आय वार्षिक विवरण प्रस्तुत कर रह हैं

आवश्यक सूचना

ऋषि बोधांक के प्रकाशन की व्यस्तता के कारण 21-2-88 का अंक प्रकाशित नहीं होगा। अगला अंक 2-82-88 को निकलेगा। कृपया ध्यान दें।

—सम्पादक

सत्य दृष्टि हो शिव दृष्टि

—आचार्य सत्यदेव विद्यालंकार—

1898 विक्रमी की फाल्गुन चतुर्दशी की रात को, आज से 166 वर्ष पूर्व, सौराष्ट्र के टंकारा ग्राम में एक विलक्षण बालक को ज्ञान हुआ। ग्राम के पास बहने वाली डेमी नदी के किनारे बने एक शिवालय में 14 वर्ष की आयु का वह बालक बैठा था। महाशिव रात्रि की पूजा चल रही थी। जैसे-जैसे रात गहरी होती जाती भक्त जन ऊंघने लगते। बालक श्रद्धा और उत्सुकता से जाग रहा था, दिन भर व्रत रहा था। शिव दर्शन की इच्छा प्रबल थी। बिलों से निकल कर चूहों ने अवसर मिलते ही चढ़ावे का नैवेद्य खाना शुरू किया। बालक चौंक पड़ा। जन्म जन्मान्तर की सुसंस्कृत बुद्धि से चमत्कार उत्पन्न हुआ। यह सच्चा शिव नहीं, यह शिव दृष्टि प्राप्त हुई। हजारों वर्षों की परम्पराओं के संस्कारों से दबे एक ब्राह्मण बालक के मन में विरोध की जागृति—यह एक चमत्कार था।

मानव जाति के इतिहास में इस प्रकार के ज्ञान-चमत्कारों के अनेक उदाहरण हैं। हजरत मुहम्मद साहब को ऐसी अनुभूति 40 वर्ष की आयु में मक्का पास की एक पहाड़ी गुफा में कई दिन के चिन्तन के बाद हुई थी। गुरु नानक देव के मन में ऐसी ही ज्ञान-ज्योति 30 वर्ष की आयु में, एक नदी के किनारे तीन दिन के चिन्तन के समय हुई। महात्मा बुद्ध ने 28 वर्ष की आयु में ही गृह त्याग किया और बोध प्राप्त किया तथा हजरत ईसा के मन में 12 वर्ष की आयु में ही प्राचीन के प्रति विद्रोह की भावना जागी।

बालक मूलशंकर के मन में 14 वर्ष की आयु में, शिव दृष्टि—सत्य के प्रति आग्रह का यह प्रारम्भ था। इस दृष्टि के विकास में अनेक वर्ष लगे। अनेक कष्ट भी उठाने पड़े। अनेक साधु-सन्तों, विद्वानों के साथ सत्संग करना पड़ा। इसका एक परिपक्व रूप तब प्राप्त हुआ, जब 1917 विक्रमी में यही बालक, दयानन्द सरस्वती के रूप में, गुरु विरजानन्द के डेरे मथुरा पहुंचा। पर ऊहापोह का अन्त नहीं हुआ। वह तो न जाने कितने ग्रन्थों के अध्ययन तक चलती रही। गुरु विरजानन्द के द्वारा उन्हें एक मूलमन्त्र प्राप्त हुआ कि सत्य की प्राप्ति आर्ष ग्रन्थों से होगी, अनार्ष ग्रन्थों से नहीं।

मौलिक भेद

ऋषि दयानन्द के तत्वबोध तथा अन्य अनेक महात्माओं के तत्वबोध में बहुत अन्तर है। दृष्टिकोण का मौलिक भेद है। इसको समझे बिना ऋषि दयानन्द के, आर्य समाज के, ज्ञान, कर्म तथा ऐतिहासिक महत्व को समझा ही नहीं जा सकता! प्रायः अनेक सन्तों और धर्म पुरुषों को जो ज्ञान हुआ, वह एक स्वतन्त्र, निरपेक्ष ज्ञान का रूप था। उन्होंने यही कहा कि उनका ज्ञान, बोध, अनुभूति ही सत्य है। पिछली विचार परम्पराएं ठीक नहीं। इसलिए इन सब सन्तों और महात्माओं के नए मत और मार्ग के वे स्वयं मार्ग दर्शन बने। ऋषि दयानन्द ने अनुभव किया कि जो सत्य ज्ञान या सत्यमार्ग उन्हें प्राप्त हुआ है वह अनोखा नहीं, सृष्टि के प्रारम्भ से यह ईश्वरीय बोध चला आया है। न जाने कितने ऋषियों मुनियों ने इस तत्व ज्ञान का साक्षात्कार किया। इस प्राचीन सत्य प्रवाह को परिष्कृत करने की आवश्यकता है। सत्य का यह प्रवाह अनादि है, अनन्त है। जब मिथ्या भ्रान्तियों का इस पर आरोप हो जाता है तब उसका परिष्कार आवश्यक हो जाता है।

ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के पिछले चार समुल्लासों में चार प्रकार की मत-धाराओं का दिग्दर्शन—मथन किया है। भारतीय आस्तिक मत, भारतीय नास्तिक मत, इस्लाम तथा ईसाई-मत। ईसाइयत तथा इस्लाम का प्राचीन भारतीय परम्पराओं से कोई सम्बन्ध नहीं। चार्वाक, जैन तथा बौद्ध मत भारतीय परम्परा में ही हैं पर वेद और ईश्वर को न मानने से नास्तिक कहे गए। शेष सब आस्तिक मत हैं। उनमें भी दो भेद हैं। सन्त कबीर, गुरु नानक देव, सन्त रविदास, श्री दादू दयाल आदि भक्तों ने अपने चिन्तन से अपने अन्दर सत्य का बोध किया, वेदादि शास्त्रों का मन्थन नहीं किया। इन के मार्ग स्वतन्त्र हैं। पर शंकराचार्य से रामानन्द तक की आचार्य परम्परा, तुलसीदास, सूरदास आदि भक्त प्राचीन निगमागम की परम्पराओं के अनुयायी हैं। परस्पर विचार भेद अवश्य है, पर मूलभेद नहीं।

ऋषि दयानन्द तथा आर्य समाज भी इसी परम्परा में आते हैं। ऋषिवर ने कोई नया मत या परम्परा नहीं चलाई, मूल भारतीय परम्पराओं और विचारों का परिष्कृत रूप ही पुनः स्थापित किया। ऋषिवर ने वेद, वेदांग, उपांग, उपवेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद् सूत्र-ग्रन्थ, स्मृति ग्रन्थ किसी को नकारा नहीं। इन सबके परिष्कृत रूप को स्थापित करने का प्रयत्न किया। यह परिष्कार का भगीरथ प्रयत्न, भागीरथी-प्रवाह अब भी चल रहा है। प्राचीनतम हिन्दू धर्म, आर्य धर्म का रूप लगातार निखारा जा रहा है। विज्ञान द्वारा, तर्क द्वारा, धार्मिक अनुभूतियों द्वारा इस परिष्कार को आगे बढ़ाना अत्यन्त आवश्यक है। ऐसा न होने पर यह प्राचीन परम्परा, वैदिक ज्ञान, भारतीय संस्कृति, आर्य हिन्दू जाति अवश्य जीर्ण-शीर्ण हो जाएगी।

देवताओं की छीछालेदर

ऋषि दयानन्द की शिव दृष्टि, सत्य दृष्टि के भेद को स्पष्ट करने के लिए एक छोटा सा उदाहरण देता हूं। आज कल (टी॰वी॰) पर रामायण की धारावाहिक कथा चल रही है। उसका लक्ष्य है, हिन्दू उदात्त भावनाओं को, उजागर करना। भक्त-जन खूब मुग्ध होते हैं, रामकथा भक्तों के लिए आनन्द का स्रोत है। एक प्रसंग आया। ऋषि विश्वामित्र के साथ राम और लक्ष्मण जनकपुरी की ओर जा रहे हैं। ताड़का वध आदि पुण्य कार्य समाप्त हो चुके। मार्ग में गौतम ऋषि का प्राचीन उजड़ा हुआ आश्रम है। उसमें एक शिला-बड़ा पत्थर पड़ा हुआ है। उत्सुकता से राम ने पूछा यह क्या है? ऋषि विश्वामित्र ने सन्त तुलसीदास के शब्दों में उत्तर दिया —

गौतम नारी शाप वश,
उपल देह धरि धीर
चरण कमल रज चाहती
कृपा करहु रघुवीर।

अर्थात् यह गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या है। आप के चरण कमल की धूल से इसका उद्धार होगा। सो भगवान् कृपा कीजिए।

भगवान् ने कृपा की, चरण स्पर्श किया। अहिल्या का उद्धार हुआ। नारी रूप में प्रगट भगवान् राम की स्तुति की। राम कृपा से सन्त लोक को चली गई। सन्त तुलसीदास ने गाया —

अस प्रभु दीनबन्धु हरि,
कारण रहित कृपाल,
तुलसीदास सब ताहि भजु,
छाड़ि कपट जंजाल।

अर्थात् भगवान् बिना कारण सब पर कृपा करते हैं। सब कपट छोड़ कर उनका भजन करो।

और भक्तों ने जय जय कार किया 'सियावर रामचन्द्र की जय।'

यदि जरा सा सोचें तो इस एक लघु कथा से, ऐसी अनन्त कथाएं पौराणिक साहित्य में भरी पड़ी हैं, न जाने कितने ऋषि मुनियों की नाक कटती है। इसी प्रसंग में इतने देवों और ऋषियों की नाक कटी।

1—इन्द्र प्रसिद्ध वैदिक देवता है। पौराणिक परम्परा के अनुसार भी एक सौ अश्वमेध यज्ञ करने पर एक मन्वन्तर के लिए स्वर्ग के अधिपति इन्द्र की पदवी प्राप्त होती है। वह देवों का राजा है उसकी सुन्दर धर्म पत्नी है। सैकड़ों परम सुन्दरी अप्सराएं उसके दरबार की शोभा हैं। फिर भी एक तपस्वी मुनि की सुन्दर पत्नी को भ्रष्ट करने का महाभ्रष्ट कार्य उससे करवाया गया।

2—चन्द्र भी एक वैदिक देवता है। सनातनी विचार से वह चन्द्र लोक का अधिष्ठातृ देवता है। 'सोमः ओषधीनां पति', 'उदीचीदिक् सोमोऽधिपति" आदि अनेक स्थलों पर वेदों में उसका महत्व दिखाया गया है। ऋषि गौतम को धोखा देने के लिए उसे मुर्गा बनाया गया। उसने बहुत सवेरे बांग दी। ऋषि को मूर्ख बनाया। ऋषि रात को ही स्नान के लिये चले गए।

3—गौतम ऋषि सनातन परम्परा में प्राचीनतम ऋषि हैं। न्याय शास्त्र के रचयिता भी कहे जाते हैं। ऋषि भी तो दिव्य दृष्टि वाला होता है। इन्द्र के धोखे का उन को पता ही न चला। ठगे जाने पर इन्द्र को महाभ्रष्टता का शाप दिया और अपनी पत्नी को महा मूर्खता का शाप दिया।

4—अहिल्या भोली और मूर्ख सिद्ध हुई। कोई भी पतिव्रता तो क्या सामान्य स्त्री भी ऐसे बहुरूपिया से ठगी नहीं जा सकती, सामान्य स्त्री को भी अपने पति की प्रत्येक चेष्टा का ज्ञान होता है। पर तुलसीदास बाबा को और उन जैसे राम भक्तों को तो रामावतार का माहात्म्य

(शेष पृष्ठ 30 पर)

ऋषि दयानन्द को जो बोध प्राप्त हुआ और अन्य सन्तों तथा महापुरुषों को जो बोध प्राप्त हुआ, उसमें एक मौलिक अन्तर है। अन्य सन्तों ने अपनी अनुभूति को केवल अपनी ही विशेष खोज मानकर अपने नाम से अलग-अलग पन्थ चला दिये, जब कि ऋषि दयानन्द ने अपने अध्ययन-चिन्तन-मनन-निदिध्यासन से यह पाया कि सत्य का एक ईश्वरीय प्रवाह मानव-सृष्टि के आदि से चला आ रहा है और ऋषि मुनियों ने अपनी वाणी और ग्रन्थों द्वारा उसी सत्य को प्रकट करने का प्रयत्न किया है। काल क्रम से ऋषियों की उस वाणी पर आवरण पड़ गया और स्वार्थ-प्रधान लोगों ने अपने-अपने मत चला दिये। चिरन्तन सत्य की खोज और उसकी अभिव्यक्ति ही आर्यावर्त की साधना और सिद्धि रही है। इसीलिए ऋषि-मुनियों द्वारा स्वीकृत उस वेदमार्ग को ही प्रशस्त करने का और अनार्ष ग्रन्थों द्वारा प्रचारित भ्रम-जाल के उच्छेदन का कार्य जीवन भर किया। ऋषि की यह सत्यदृष्टि ही शिव-दृष्टि थी। शिवरात्रि या ऋषिबोध पर्व उस दृष्टि को हृदयंगम करने का पर्व है।

दिव्य दयानन्द का देदीप्यमान जीवन

—(स्व.) आचार्य चतुरसेन शास्त्री –

मन् 1860 के कार्तिक मास के एक उषाकाल मे मथुरा को सूनी गलियों मे कोपीनधारी अवधूत द्रुत चरण रखता हुआ ओठों से ओम् ध्वनि करता हुआ बढ़ा चला जा रहा था।

उसने एक राहगीर से पूछा, "दण्डी गुरु का गृह कहा है ?"

"वहा।" रहागीर ने समीप ही एक छोटे-से द्वार की ओर सकेत किया।

अवधूत 'अग्निमीले पुरोहित यज्ञस्य देवमृत्विज' इत्यादि वेदवाक्य उच्चारण कर द्वार के सम्मुख आ खड़ा हुआ। उसने उच्च स्वर मे कहा

'द्वार खोलिये !'

तीन बार ऐसी पुकार सुनकर भीतर से आवाज आयी, "कौन है ?"

"हे गुरु द्वार खोलिए !"

"तुम कौन हो ?"

"एक अभ्यागत, अतिथि, विद्यार्थी, ज्ञान-पिपासु।"

द्वार खुल गया। क्षीणकाय, कोपीनधारी प्रज्ञाचक्षु वेदर्षि विरजानन्द हाथ में दीप लिए द्वार पर खड़े हैं।

दो ज्ञान-ज्योतिया आमने-सामने प्रस्तुत थी।

प्रज्ञाचक्षु ने प्रश्न किया, 'कौन हो भाई ?"

"ज्ञान का प्यासा हू।"

"क्या नाम है ?"

"दयानन्द।"

"कहा से आ रहे हो ?"

"अज्ञान के अन्धकार मे भटकता हुआ नर्मदा के अरण्य से।"

"क्या चाहते हो ?"

"हे विद्या के सूर्य, मुझे ज्ञान का प्रकाश दीजिए, ज्ञान का अमृत पिलाइए। मुझ भटकते हुए को ज्ञान की सच्ची राह दिखाइए।"

'क्या तेरे लिए ?'

"नहीं गुरुदेव, ससार के लिए, अज्ञान के अन्धकार मे भटकते हुए मनुष्यो को ज्ञान के आलोक मे न आने के लिए।"

'तू क्या जनहित की भावना से प्रेरित है ?'

"मैं सन्यासी हू। मैं अन्धकार में भटकते हुए दीन दुखी मनुष्यो को प्रकाश में लाने को आतुर हू। यही मेरा व्रत है, यही मेरा ध्येय है।"

'आ पुत्र, आ ! ज्ञान की ज्योति से जगत् को जगमग कर। ज्ञान का अमृत पीकर अमर हो ! ससार के पीडित असख्य नर-नारियो को अन्धकार से प्रकाश में ला।"

गुरु ने शिष्य को प्राप्त किया, शिष्य ने गुरु को प्राप्त किया। गुरु ने अपना ज्ञान दिया, शिष्य ने उसे आत्मा मे ग्रहण किया। आगे चलकर इन्हीं दयानन्द सरस्वती ने अपनी शिक्षा से भारत के अन्धकार को दूर किया। कोटि-कोटि जन के अन्धविश्वासो को चीरकर ज्ञान और विवेक का प्रकाश फैलाया।

ऋषि दयानन्द का धर्म-प्रचार

ढाई वर्ष गुरु-चरणो मे रह ज्ञान की झोली भरकर दयानन्द सरस्वती ने सबसे पहले आगरा मे अपना उपदेश दिया। तब, उनकी आयु उन्तालीस वर्ष थी। तब से लेकर मृत्यु-पर्यन्त वे भारत मे घूम-घूमकर वेदो और आर्यधर्म की ध्वजा फहराते रहे। उन्होंने बडे बडे दिग्गज पण्डितों से शास्त्रार्थ कर उनके भ्रम का निवारण किया। उन्हे कोई परास्त न कर सका।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने उनसठ वर्ष की आयु पायी। अपनी मृत्यु से बीस वर्ष पहले प्रौढ तत्व के आरम्भ मे उन्होने उत्तर प्रदेश के गगा के खादर में दो-तीन वर्षों तक परिभ्रमण किया। इस अचल में अनूपशहर, रामघाट और कर्णवास प्रमुख स्थान थे। यहा पर ठाकुरो का बाहुल्य था। दयानन्द सरस्वती का जन्म सन् 1824 मे हुआ और मृत्यु 1883 मे। 1857 के गदर के बाद भारत की राज्य-व्यवस्था अंग्रेजी राज्य के आरम्भिक काल की राज्य-व्यवस्था थी। ज्यो-ज्यो समय बीतता गया, राज्य व्यवस्था अधिक व्यापक और नियमित होती गई। परन्तु स्वामी जी के खादर परिभ्रमण के काल मे ठाकुरो का सामाजिक जीवन 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' पर आधारित था। उनमे शौर्य तो था, परन्तु विवेक और सुविचार की भावना कम थी। स्वामी जी के व्याख्यानो और दर्शनों से बहुतो ने अपना जीवन सुधारा। इसलिए उस अचल मे रहने वाले ठाकुरो मे जो सामाजिक सुधार हुआ उसका श्रेय स्वामी दयानन्द को है।

स्वामी दयानन्द का शरीर सुगठित, सुडौल और सुदृढ़ था। कधे और पार्श्व परिपुष्ट थे। उनकी दोनो भुजाए हाथी की सूड की भाति लम्बी थी और घुटनो को स्पर्श करती थी। नाखून अरुण वर्ण थे। वक्ष विस्तृत और पुष्ट था। जाघे स्तम्भ की भाति सुगठित थी। विकसित और विशाल नेत्र कृपाभाव बरसाते रहते थे। उनकी दृष्टि में आकर्षण और सम्मोहन था। नाक उन्नत और अत्यन्त सुन्दर थीं, दोनों भौंहे सुन्दर थीं और और उनके ऊपर अर्द्धचन्द्राकार भाल चमकता था। व लम्बे और हृष्ट-पुष्ट थे। जब वे चलते थे तो ऐसा प्रतीत होता था कि एक तेजवान मूर्ति अपना प्रकाश बिखेरती आ रही है। ब्रह्मचर्य, त्याग, तपस्या और कठोर जीवन से ही उन्हे ऐसा दीप्त और वज्र शरीर प्राप्त हुआ था। उन्हें अनेक बार विष दिया गया, किन्तु उनके योगबल ने उनके शरीर को सुरक्षित बनाए रखा।

आरम्भ में अड़तालीस वर्ष की आयु तक वे प्रत्येक ऋतु मे केवल एक कौपीन (कटिबन्ध) धारण करते थे, शेष सम्पूर्ण शरीर नगा ही रहता था। सन् 1872 मे जब वे कलकत्ता गए, तब ब्राह्मसमाज के नेता केशवचन्द्र सेन के आग्रह पर उन्होंने वस्त्र धारण करना स्वीकार किया। तब से वे एक रेशमी पीताम्बर, नीचे एक रेशमी धोती और ऊपर एक ऊनी या रेशमी चोगा पहनने लगे थे। इस परिधान मे उनकी तेजोमय, उज्ज्वल, गम्भीर और सुन्दर आकृति को देखकर मन में अपूर्व श्रद्धा, भक्ति और प्रेम का प्रादुर्भाव होता था। वार्तालाप, व्यवहार और उपदेश करते समय वह इतने मर्मदर्शी थे कि प्रत्येक व्यक्ति यही समझता कि स्वामी जी उसी को सम्बोधित कर रहे हैं—उनका अनुग्रह, अधिक कृपा और प्रीति उसी पर है। वे ब्राह्म-मुहूर्त मे ही ध्यानारूढ़ हो अचल समाधि लगाते थे। यह समाधि-अवस्था एक-दो घटे तक रहती थी। यही उनकी मूल योग-सिद्धि थी। इसी को साधकर पुरुष जितेन्द्रिय होता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह उसे स्पर्श नही कर सकते। अवधूत जीवन में वह एक दिन मे चालीस कोस तक की मजिल तय कर लेते थे। एक बार गगा स्रोत से चलकर गगा के किनारे-गगा सागर सगम तक की यात्रा की। गगोत्तरी से रामेश्वर तक की पद-यात्रा भी उन्होने की थी। ग्रीष्म के भीषण प्रताप से तप्त रेत पर दोपहरी काटी थी। पौष माघ की रात्रियो के पाले नग्न और निराहार रहकर सहन किये थे।

इस जितेन्द्रिय महापुरुष ने वेदो का प्रचार कर अनेक अन्ध विश्वासो को दूर किया और साधारण जनता के हृदय मे ज्ञान का प्रकाश फैलाया।

ठाकुरो के गढ़ मे .

एक बार स्वामी दयानन्द बेलोन जाते हुए कर्णवास आए। कर्णवास ठाकुरो का गढ़ था। प्रातःकाल था, वे अपने आसन पर बैठे लोगो को वेदो का ज्ञान करा रहे थे। एक ब्राह्मण पण्डित ने आकर कहा, 'स्वामी जी सुख क्या है ?'

"सुख दो प्रकार का होता है। एक विद्याजन्य और दूसरा अविद्याजन्य। विद्याजन्य सुख ही सच्चा सुख है। यह सुख अज्ञान की निवृत्ति और ज्ञान की प्राप्ति से होता है। अविद्याजन्य सुख तो पशु आदि जीवो में भी पाया जाता है। जीव एकदेशी होने से अल्पज्ञ है, इसीलिए अज्ञानी हो जाता है। परमात्मा देशकाल से ऊपर और सर्वज्ञ है, उसमें अज्ञान का लेशमात्र नहीं है। वह परमानन्दमय, आनन्दघन, परब्रह्म है।"

उसने और भी कुछ प्रश्न पूछे और झुककर स्वामी जी के उत्तरों से सन्तुष्ट होकर उसने उनके चरणों में मस्तक टेक दिया।

स्वामी जी की इस विजय से वहां उपस्थित ठाकुरो को बहुत आश्चर्य हुआ, क्योंकि यह ब्राह्मण दूर-दूर तक परम विद्वान् समझा जाता था और वह सबका गुरु था। ठाकुरो ने कहा, "महाराज, हमे भी ज्ञान दीजिए।"

स्वामी जी ने उत्तर दिया, "आप लोग वीर पुरुष हैं, क्षत्रिय धर्म का पालन कीजिए। प्रजापालन और प्रजा की रक्षा कीजिए। आत्मा की शान्ति के लिए गायत्री जप कीजिए। यज्ञोपवीत धारण कीजिए।"

ठाकुरों मे उत्साह छा गया। भारी सख्या में गायत्री-मत्र ग्रहण करने और यज्ञोपवीत धारण करने का आयोजन किया गया।

स्वामी जी ने कहा, "आठ वर्ष से अठारह वर्ष की अवस्था तक के लिए कोई प्रायश्चित नहीं है, बडी आयु वालों को यज्ञोपवीत लेने से पूर्व प्रायश्चित्त करना होगा।"

अनूपशहर, दानपुर, अहमदगढ़, रामघाट, जहागीराबाद और अलीगढ़ से हजारो ठाकुर यज्ञोपवीत धारण करने के लिए कर्णवास मे एकत्र हो गए। कर्णवास के पण्डित गायत्री-जप का अनुष्ठान कराने लगे। पन्द्रह दिन तक अनुष्ठान चलता रहा। सोलहवें दिन स्वामी जी के कुटी द्वार पर वृहद् यज्ञ हुआ। उसमे होता, उद्गाता और ऋत्विज कर्णवास के पण्डित थे। यज्ञ के उपरान्त स्वामी जी ने अपने हाथ से लोगो को यज्ञोपवीत धारण कराए और गायत्री का उपदेश दिया।

कर्णवास के ठाकुरों की भारी प्रतिष्ठा थी। उनका प्रभाव भी बहुत था। उनके यज्ञोपवीत धारण करने की बात आस पास के गांवो मे शीघ्र फैल गई। लोगो में नवजीवन और उत्साह की एक लहर फैल गई। कोसो दूर से चलकर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य टोलिया बनाकर कर्णवास आकर स्वामी जी के हाथो यज्ञोपवीत धारण करने लगे। पूर्व की-सी धूम मच गई। चालीस-चालीस पचास पचास ठाकुर गगा स्नान कर पक्ति बाध गगा के किनारे खडे हो जाते और स्वामी जी उन्हें यज्ञोपवीत देकर गायत्री का उपदेश देते। घरों में, गलियों में, हाट-बाजारों में, घाटों पर नर-नारी इस अलौकिक सन्यासी के यज्ञोपवीत-दान की चर्चा करते थे।

[आचार्य चतुरसेन शास्त्री ने कथा और उपन्यास के माध्यम से साहित्य को समृद्ध किया है। वे लौहलेखनीधारी के नाम से विख्यात रहे हैं। ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि पर लिखी गई उनकी कहानियां और उपन्यास हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि बन गए हैं। आचार्य जी आर्य समाज एवं स्वामी दयानन्द सरस्वती से बहुत प्रभावित थे। उनकी अप्रकाशित सामग्री का सम्पादन उनके भ्रातृज श्री चन्द्रसेन ने किया है। उसी शृंखला में 1983 में हिन्द पाकेट बुक्स द्वारा प्रकाशित "अपराधी" उपन्यास के स्वामी जी के जीवन से सबन्धित अंशो को पाठको के लाभार्थ साभार किन्तु कुछ संशोधन के साथ यहां पुन प्रकाशित किया जा रहा है।]

महिला को यज्ञोपवीत

कर्णवास में 90 वर्ष की एक वृद्धा बाल-विधवा हुसा ठकुरानी रहा करती थी। वह छः गांवों की स्वामिनी थी। परन्तु बहुत नियम-व्रत से रहती थी। जब उसने सुना कि उसके देवर-पुत्रों ने भी यज्ञोपवीत धारण कर लिया है, तब उसने भी अपने देवर-पुत्र गोपाल सिंह ठाकुर से उस देव-सन्यासी के दर्शन की इच्छा प्रकट की।

"गोपालसिंह ठाकुर से हुसा ठकुरानी का समाचार सुन स्वामी जी ने उसे आने की आज्ञा दे दी।

वृद्धा ने स्वामी जी के सम्मुख पहुंच कर गहरी श्रद्धा से भूमि पर माथा टेककर उनके चरणो में प्रणाम किया।

उसने कहा, "मैं भाग्यहीना हू, मेरा भी कल्याण कीजिए।"

स्वामीजी ने उसे आदरपूर्वक बिठाकर कहा, "ठाकुर-पूजा छोड़ दो, गायत्री का पाठ करो। आपका कल्याण होगा।"

"तब मुझे गायत्री की दीक्षा मिले।"

"अवश्य", कहकर स्वामी जी ने उसे गायत्री का मन्त्र दिया और उसका मर्म समझाया।

स्वामी जी द्वारा गायत्री मन्त्र लेने वाली वह प्रथम महिला थी।

राव कर्णसिंह का आक्रमण

बरोली के ठाकुर कर्णसिंह वैष्णव सम्प्रदाय के गुरु श्री रगाचार्य के शिष्य बनकर पक्के वैष्णव बन गए थे। अपने नौकरो को उन्होंने माथे पर वैष्णवी तिलक लगाने और गले में वैष्णवी कंठी पहनने की आज्ञा दे रखी थी। कभी-कभी किसी को पकडकर चक्रांकित भी कर दिया करते थे। एक दिन उन्होंने अपने पुरोहित को पकडकर जबरदस्ती चक्रांकित कर दिया। वह भागकर पीडा से रोता-कलपता स्वामी जी के पास जाकर अपना चक्रांकित घाव दिखाने लगा। स्वामी जी ने उसे धीरज बधाया और उसके घाव पर औषध लगाकर उसे अपनी कुटी में ही रख लिया। कुछ दिन बाद घाव अच्छा हो गया।

राव कर्णसिंह को जब यह बात ज्ञात हुई तो वह स्वामी जी के प्रति क्रोधित हो उठे। इसी समय ज्येष्ठ की अमावस्या का गंगा-स्नान पर्व भी पडा। वे तुरन्त कर्णवास चल पडे। कर्णवास उनकी ससुराल भी थी। परन्तु वे अपना डेरा स्वामी जी के डेरे के पास लगाकर वहीं ठहरे। रात को उन्होने रास का आयोजन किया। स्वामीजी को बुलवाया, परन्तु उन्होंने इसे निन्दनीय कार्य बताकर उसमें सम्मिलित होने से इनकार कर दिया।

अगले दिन संध्या समय राव कर्णसिंह अपने पंडितों और नौकरों को साथ लेकर स्वामी जी की कुटी पर आए। उस समय वे अपने भक्तों को उपदेश कर रहे थे। रावसाहब को आते देख उन्होने कहा, "आइए, बैठिए।"

रावसाहब ने पूछा "कहां, बैठें?"

स्वामी जी ने उत्तर दिया, "जहां आपकी इच्छा हो वहीं बैठ जाइए।"

"जहां आप बैठे हैं, वहीं बैठेंगे।"

स्वामी जी ने अपनी शीतलपाटी फैलाकर कहा, "आइए, यहीं बैठिए।"

राव धमककर उस पर बैठ गए और पूछा "आप हमारे यहां रास मे क्यों नहीं आए? सन्यासी होकर ऐसा करना बुरा है। हमारे स्थान पर जब रासलीला होती है, तब सभी पडित, सन्यासी, विद्वान् सम्मिलित होते हैं।"

स्वामी जी ने हसकर कहा, "आपके सामने पूज्य पुरुषो का रूप धारण कर मलिन मनुष्य आते हैं, नाचते हैं, रास करते हैं और आप बैठे-बैठे देखा करते हैं। आपको लज्जा नहीं आती? साधारण मनुष्य भी अपने माता-पिता, परिजनों का रूप भरकर उनका स्वांग भरना सहन नहीं कर सकता, फिर आप तो कुलीन क्षत्रिय हैं।"

'हमने सुना है कि आप अवतारों और गंगा की निन्दा करते हैं। पर स्मरण रखें कि मेरे सामने निन्दा की तो मैं बुरा बर्ताव करूंगा।"

"मैं निन्दा नही करता हू। जो वस्तु जैसी है, उसे वैसा ही बताता। गंगा भी जैसी और जितनी है, उसे वैसी और उतनी बताता हूं। सत्य कहने मे निर्भय हू।"

'तो फिर गंगा कितनी है?"

स्वामी जी अपना कमण्डलु उठाकर बोले, 'मेरे लिए तो इतना जल यथेष्ट है सो यह इतना ही है।"

'गंगा गंगेति ' आदि श्लोकों मे नाम-कीर्तन, दर्शन, स्पर्श मे पाप नाश कहा है।"

"ये श्लोक साधारण लोगो के कपोल-कल्पित हैं। माहात्म्य सब गप्प हैं। पापनाश और मोक्षप्राप्ति वेदानुकूल आचरण से होगी, अन्यथा नहीं।"

फिर राव के मस्तक की ओर देखकर कहा, "आपके मस्तक पर यह तिलक-रेखा क्या है?"

'यह श्री है। जो इस श्री को धारण नहीं करता, वह चाण्डाल है।"

"आप कब से वैष्णव हुए हैं?"

"कुछ वर्षों से।"

"क्या आपके पिता भी वैष्णव सम्प्रदाय से दीक्षित हुए थे?"

"नहीं, वे नहीं हुए।"

"तब तो आपके कथनानुसार आपके पिता और पितामह भी चाण्डाल सिद्ध हुए।"

यह सुनते ही राव को क्रोध आ गया और वे तलवार पर हाथ रखकर बोले, "मुह सभालकर बोलो।"

रावसाहब के साथी लोग भी आक्रमण करने के लिए सन्नद्ध हो गए।

स्वामी जी ने शान्ति से कहा, 'हमने जो कहा है, है, सत्य कहा है।"

राव की आंखों में खून उतर आया। वे स्वामी जी को गालियां देने लगे।

स्वामीजी ने हंसते हुए कहा, 'राव महाशय, उत्तम होगा कि आप वृन्दावन से अपने गुरु रंगाचार्य जी को बुलाकर हमसे शास्त्रार्थ करायें। जो हारे वह दूसरे के सिद्धान्त को स्वीकार करे।"

"राव ने आखें तरेरकर कहा, "आप मेरे गुरु श्री रगाचार्य से क्या शास्त्रार्थ कर सकते हैं? आप जैसे उनकी जूतियां साफ करते हैं।" यह कहकर उन्होंने अपनी मुट्ठी मे तलवार कस ली।

स्वामी जी ने कहा, 'आपका हाथ बार-बार तलवार पर क्यो जाता है? आप शास्त्रार्थ करने के लिए रंगाचार्यजी को निमन्त्रण भेज दीजिए, तलवार से भिडना हो तो जोधपुर से जा भिडिए।"

राव महाशय क्रोधान्वित हो तलवार खींच अपशब्द करते हुए स्वामी जी की ओर लपके। स्वामी जी ने 'अरे धूर्त!' कहकर उन्हें हाथ से पीछे धकेल दिया। राव लुढ़क गये, परन्तु तुरन्त उठकर और भी वेग से तलवार का वार करने के लिये आगे बढे।

वे तलवार चलाना ही चाहते थे कि स्वामी जी ने झपटकर तलवार उनके हाथ से छीन ली और जमीन पर टेक देकर, मोडकर, उसके दो टुकडे कर डाले। उन्होने राव का हाथ पकडकर कहा, "क्या आप यह चाहते हैं कि मैं भी आततायी पर प्रहार कर, बदला लू?"

राव का मुह पीला पड गया। उन्हे मूर्छा आने लगी।

स्वामी जी ने उपचार करते हुये कहा, "मैं सन्यासी हू, आपका अनिष्ट नहीं कर सकता। जाइए, ईश्वर आपको सुमति प्रदान करे।"

उन्होने तलवार के दोनो टुकडे दूर फेंककर राव को विदा किया।

अभी तक सभी आगत जन विस्मय और भय से यह देख रहे थे। राव के जाने पर एक भक्त ने कहा "महाराज, इन पर अभियोग चलाया जाए।"

"स्वामी जी ने घृणा से इसे अमान्य करते हुए कहा—

"धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षित।
तस्माद् धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतोऽवधीत्।"

राव का दर्प दलन

उपर्युक्त घटना के लगभग ढाई वर्ष बाद, एक बार फिर, स्वामी जी और राव कर्णसिंह का शक्ति-परीक्षण हुआ। शरद पूर्णिमा पर गंगा-स्नान करने राव कर्णवास जाकर ठहरे हुए थे, स्वामी जी भी फर्रुखाबाद, अनूप शहर घूमते हुये वहां आ पहुचे और अपनी कुटी पर डेरा किया।

इस बार रात का डेरा स्वामी जी की कुटी से डेढ सौ कदम दूर था। राव के साथ नाच-रंग का सामान और वेश्याएं भी थी। जब उन्हें ज्ञात हुआ कि स्वामी जी भी वहा पहुच गए हैं, तब उन्होने वैरागियो को स्वामी जी पर आक्रमण करने के लिए तैयार किया। कर्णवास मे 'मौजी बाबा' नामक एक नेत्रहीन ब्राह्मण सन्त रहते थे। वे शिशुवत् दिगम्बर विचरते रहते थे। जब गंगा-स्नान करते तो स्त्रियां भी उन्हें मलमलकर नहलाने लगती थी और वे 'छोडो मा' कहते हुए पानी मे गिर पडते थे। उनकी वासनाएं शान्त थी। वह प्राय मौन रहते थे, परन्तु स्वामी जी के परम भक्त थे और उनसे घंटो एकांत वार्तालाप किया करते थे। उन्हें जब ज्ञात हुआ कि राव ने स्वामी जी को मारने के लिए वैरागियों को तैयार किया है तो वे तत्काल उनके डेरे पर गए। वैरागी उनके भक्त थे। 'मौजी बाबा' ने उन्हे समझाया तो वे मान गए और फिर कभी राव के कहने मे नही आए।

राव ने वैरागियो से निराश होकर एक रात अपने तीन नौकरो को नयी तलवारें देकर कहा कि स्वामी जी को काटकर गंगा मे बहा आओ।

रात्रि के सन्नाटे मे तीनो व्यक्ति स्वामी जी की कुटी की ओर चले। स्वामी जी उस समय तुरीयावस्था मे ध्यानारूढ थे। ज्यो ही उनकी दृष्टि समाधिस्थ स्वामी जी पर पडी, उनके हाथ कांपने लगे, आखो के आगे अंधेरा छा गया। उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि वे गहन पर्वतीय वन मे भटक गए हैं और मार्ग नहीं सूझ रहा है। उनसे एक पग भी आगे नही बढ़ गया। अत वे भयभीत होकर वापस लौट गए और राव के पास पहुचे। राव ने उन्हें डांट-डपटकर फिर भेजा। वे फिर आए—इस बार स्वामी जी की समाधि टूट चुकी थी। परन्तु तीनो मे से एक भी आगे न बढ़ सका। वे फिर लौट गए। इस बार राव ने अपने नौकरो को बहुत झिडका और गालियां देकर फिर स्वामी जी की हत्या करने भेजा। गिरते-पडते वे फिर कुटी पर आए। उनके वहीं पहुंचे

(शेष पृष्ठ 30 पर)

मानवता की सेवा ही शिव की पूजा है

—[illegible]—

मानव जीवन का इतिहास, विशाल समुद्र की सतत उठती-गिरती उत्ताल तरंगो के समान, उसके उत्थान-पतन की एकमात्र कहानी है। किसी मनुष्य या समाज के जीवन में उत्थान व निखार आता है, उसकी सत्य और शिव की अविचल साधना के उपरान्त। 'सत्यम्' और 'शिवम्' की आराधना के बिना 'सुन्दरम्' की उपलब्धि सभव नहीं। विवेक द्वारा सत्य के पथ का ज्ञान और हृदय की उदारता एव करुणा से प्रेरित 'सर्वे भवन्तु सुखिन, सर्वे सन्तु निरामया' का शिवसकल्प ही एक सुन्दर मानव का निर्माण कर सकता है। जब तक किसी समाज में अज्ञान एव स्वार्थ वृत्ति छायी रहती है, तब तक उसका उत्थान सभव नहीं, न ही उसके जीवन में सौंदर्य सुख शान्ति का निवास सभव है। वही महापुरुष उस समाज या देश का नेतृत्व करके उसे उत्कर्ष की ओर उन्मुख कर सकता है, जिसने सतत साधना से सत्य को पहचाना हो और जिसका उदार एव करुणामय हृदय उस समाज व देश के कल्याण की भावना शिव-सकल्प—में पूर्णतया समर्पित हो, अपने मार्ग मे महान् विपत्तियां आने या विरोध होने पर भी जो मानव सेवा से मुह नहीं मोडता। ऋषि दयानन्द इसी कोटि के महान् पुरुष थे।

शिवरात्रि के ही दिन, अपने पिता की की आज्ञा से पूर्णनिष्ठा के साथ पत्थर की मूर्ति को शिव का साक्षात् रूप समझकर पूजा करते हुए मूल शकर को इतना बोध तो हो ही गया था कि शिव का सच्चा स्वरूप यह नहीं है। तो सच्चा स्वरूप क्या है ?—इसी जिज्ञासा ने उन्हे गृह-परित्याग कर सत्य की खोज में प्रवृत्त किया। अनेक वर्षों की कठिन साधना के पश्चात् उन्होने जिस तत्व ज्ञान की उपलब्धि की, उससे सर्व साधारण जनता को लाभान्वित करने मे अपना समस्त जीवन खपा दिया। सैकडों वर्षों के अज्ञानान्धकार मे डूबा हुआ यह देश पतन की चरम सीमा तक पहुच चुका था, जिसकी हम आज कल्पना भी नहीं कर सकते। धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक—सभी पक्ष नितान्त निष्प्रभ, निबल तथा दयनीय दशा से ग्रस्त हो चुके थे। जीवन के उच्च आदर्शों का अनुसरण करने वाले ऋषियों व सन्त महात्माओं की परम्परा समाप्त हो चुकी थी क्षात्र-शक्ति पारस्परिक वैमनस्य एव विलासिता में पड सात समुद्र पार की एक विदेशी जाति का चरण चुम्बन कर रही थी। निरर्थक कर्मकांड एवं रूढिवाद को परमधर्म समझकर मोह-निद्रा में लीन मानव समाज को जगाना अत्यन्त कष्ट कर कार्य था। निहित स्वार्थ से पीडित पण्डों व पुरोहितो की दुरभिसन्धि के परिणाम-स्वरूप दयानन्द पर ईंट-पत्थरों की वर्षा की गई, मिथ्या लाछन लगाने के प्रयत्न किये गये और अनेक बार उन्हें विष देकर मारने के षड्यन्त्र भी किये गए। परन्तु करुणा, दया मैत्री और सहानुभूति के साक्षात् अवतार ऋषि दयानन्द ने इन सब की तनिक भी परवाह नहीं की।

उनका मन्तव्य था—'कि मनुष्य उसी को कहना चाहिये जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुख और हानि-लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। और जहां तक हो सके वहां तक अन्यायकारी के बल की हानि और न्यायकारी के बल की उन्नति सर्वथा किया करे। इस कार्य में चाहे प्राण भी भले ही चले जावें। परन्तु इस मनुष्य धर्म से पृथक् कभी न होवे।'

व्यक्ति मोक्ष नहीं चाहिए

अपने मन्तव्य की इन पंक्तियो को उन्होंने अपने जीवन में उतार कर दिखाया। ऋषि पर समय-समय पर किये जाने वाले अत्याचारों को देखकर एक बार किसी वृद्ध सन्त ने द्रवित होकर उनसे कहा—'बच्चा, यदि तुम पहले की तरह निवृत्ति मार्ग पर स्थिर रहते, परोपकार के झगडे में न पडते, तो तुम्हें इस जन्म में ही मुक्ति मिल जाती। अब तो तुम्हें मुक्ति के लिये एक और जन्म धारण करना पडेगा ?' इस पर ऋषि ने नम्र भाव से उत्तर दिया—'महात्मन्! मुझे अपनी मुक्ति की कुछ चिन्ता नहीं। मेरे प्रयत्नों से यदि लाखों मनुष्यो के दुखों की निवृत्ति हो जाय तो मैं अपने को धन्य समझू, भले ही मुझे इसके लिये कितने भी जन्म धारण क्यों न करने पडे। परम पिता परमात्मा के पुत्रों को कष्ट से मुक्ति दिलाने में आप ही आप मैं मुक्त हो जाऊगा।' इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि वह शिवपूजा का सच्चा स्वरूप किसे समझते थे। ऋषि के इन वचनों को पढ़कर महाभारतकार का यह वचन सहसा स्मरण हो जाता है—

न त्वह कामये राज्य,
न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दुख तप्तानां
प्राणिनामार्ति नाशनम्।'

ऋषि के जीवन का मूल मन्त्र था—'परोपकाराय सतां विभूतय' केवल आत्महित के लिए जनसाधारण से दूर एकान्त गुफा में बैठने की अपेक्षा प्रात साय प्रभु भक्ति व योगसाधना के साथ-साथ जनता जनार्दन के अज्ञान जन्य विविध कष्टों के निवारणार्थ कार्य को ही ऋषि सच्ची प्रभु भक्ति समझते थे। जब गुजरात में उनके भक्त दो उच्चाधिकारियों ने विरोधियों द्वारा किये गये षड्यन्त्रों को देखते हुए उनसे प्रार्थना की कि वे यह खण्डन-मण्डन का कार्य छोड दें, इसमें जान को खतरा है, इस परोपकार के झगडे में क्या धरा है, ऋषि ने गंभीर होकर उत्तर दिया—'वत्स, यदि अपना भला करना ही जीवन का उद्देश्य हो तो मनुष्यता क्या हुई। अपने भले का भाव तो पशु में भी पाया जाता है। परोपकार और परमहित साधन का नाम ही मनुष्यत्व है।

आलोचना भी भले के लिए

ऋषि के ये शब्द उनकी अन्तरात्मा के भाव को और उनके प्रचार कार्य के लक्ष्य को पूर्णतया स्पष्ट कर देते हैं। सत्यासत्य का निर्णय करने के बाद पाखण्ड और अन्धविश्वास से मुक्त होकर सब धर्मावलम्बी सच्चा सुख प्राप्त कर सकें—इसी भावना से ऋषि ने अपने ग्रन्थो में सब मतमतान्तरों की कठोर आलोचना की है, किसी द्वेष-भाव या किसी पक्षपात की दृष्टि से नहीं। ससार का कौनसा ऐसा धर्मप्रवर्तक या क्रांतिकारी सुधारक हुआ है जिसने अपने समसामयिक धर्माचार्यों के पाखण्ड पूर्ण एवं रूढ़िग्रस्त आचरणों से खिन्न होकर उनकी कटु आलोचना नहीं की। ऐसी आलोचना नितान्त आवश्यक है। महापुरुषो का जन्म ही इस प्रकार की धर्म-ग्लानि से जनता का उद्धार करना होता है। उनके हृदय से निकली वह वाणी आरम्भ में कटु प्रतीत होती हुई भी परिणाम में हितकारिणी सिद्ध हुई है। इस युग में ऋषि दयानन्द द्वारा पाखण्ड खण्डन के लिये की गई कटु आलोचना भी इस देश के सभी धर्माचार्यों के विचारों को सुधारने में तथा सामान्य जनता को अपनी निर्बलताओं व अन्धविश्वासों को दूर करने में प्रेरक एव सहायक हुई है। सत्यान्वेषी, निर्भीक एवं स्पष्टवादी महर्षि दयानन्द के अथक प्रचार से भारतवर्ष में एक नई चेतना जागृत हुई है—इस बात को एण्ड्रो जैकसन और रोमां रोला जैसे विदेशी विद्वानों ने तथा भारतीय संस्कृति के प्रणेता श्री अरविन्द, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, महात्मा गांधी, मदनमोहन मालवीय आदि महापुरुषों ने कृतज्ञता-पूर्वक स्वीकार किया है।

इतना होते हुए भी यदि संकुचित राजनीति से प्रेरित कुछ लोग महर्षि को असहिष्णु, या साम्प्रदायिक विद्वेष फैलाने वाला कहने का साहस करते हैं और भारत के पुनर्जागरण काल के इतिहास में ऋषि के दाय की चर्चा करने में संकोच करते हैं तो पाश्चात्य विद्वान् जौबर्ट के शब्दों में यही कहा जा सकता है—Those who never retract thier opinions love themselves more than love truth ऐसे दुराग्रही लोगों से बहस करना व्यर्थ है।

परन्तु ऋषि के इस गुणगान मात्र से ही हमारे कर्तव्य की इतिश्री नहीं हो जाती। आज शिवरात्रि के दिन ऋषि के जीवन सन्देश को समझते हुए तदनुसार आत्म निर्माण एवं देशोत्थान के कार्य में योगदान की आवश्यकता है। इस बोधरात्रि के दिन उत्पन्न सच्चे शिव की जिज्ञासा का पर्यवसान ऋषि के जीवन में परमात्मा के पुत्रों को कष्ट से मुक्ति दिलाना ही सच्ची प्रभु सेवा या शिवपूजा है—इस शिक्षा के रूप में हमारे सम्मुख उपस्थित होता है। यदि यह भावना आज के दिन हमारे हृदय में उजागर हो जाय और हम सब आर्य-समाज के माध्यम से देशकाल की परिस्थिति का विश्लेषण करते हुए धर्म, समाज और राष्ट्र के कार्यों में ऋषि दयानन्द के विचारों को ध्यान में रखते हुए कुछ सक्रिय योगदान दे सकें तो हम ऋषि के ऋण से उन्मुक्त हो सकते हैं। परमात्मा हमें इस कार्य के लिए प्रेरणा एव शक्ति प्रदान करे।

पता—द्वारा सुरेन्द्रकुमार, पी०आर०ओ० ए ई-3, ओल्ड थर्मल पावर हाउस कालोनी फरीदाबाद (12 001

सर्वतोमुखी क्रान्ति के अग्रदूत महर्षि दयानन्द

—डा० शिवकुमार शास्त्री, महामंत्री, आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य—

प्रसिद्ध इतिहासकार रोम्यां रोलां ने युग प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती के सम्बन्ध में अपने उद्गार प्रकट करते हुए कहा था—"आर्य समाज सब मनुष्यों एवं सब देशों के प्रति न्याय और स्त्री पुरुषों की समानता को सिद्धान्त रूप में स्वीकार करता है। यह जन्मना जात-पांत का विरोधी है और गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर वर्ण-व्यवस्था को मानता है। इस विभाजन से धर्म का कोई सम्बन्ध नहीं। अस्पृश्यता से आर्य समाज को घोर घृणा है। स्वामी दयानन्द से बढ़कर हरिजनों के हितों का रक्षक दूसरा कोई कठिनाई से ही मिलेगा। स्त्रियों को दयनीय स्थिति से उबारने, समान अधिकार दिलाने और शिक्षा की उपयुक्त व्यवस्था कराने में दयानन्द ने बड़ी उदारता और बहादुरी से काम लिया।

"भारत में इस समय जो राष्ट्रीय पुनर्जागरण दीख रहा है उसमें भी स्वामी दयानन्द ने प्रबल शक्ति के रूप मे काम किया। दयानन्द राष्ट्रीय सगठन और पुनर्निर्माण का उत्साही मसीहा था। मैं समझता हूं राजनीतिक आचरण को बनाए रखने और सही दिशा देने मे उनका प्रमुख हाथ रहा है।"

इतिहास साक्षी है कि जिस समय देव दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ उस समय प्राचीन वैदिक धर्मी नाना प्रकार के मत-मतान्तरों की मदिरा से मत्त होकर पथभ्रष्ट हो चुके थे। एक ईश्वर के स्थान पर अनेक मनमाने ईश्वर बना लिए गए थे, श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ हिंसा का शिकार हो रहा था, वेदों के नाम पर अनर्गल प्रलाप हो रहा था, विधर्मी वेदों को 'गडरियों के गीत' कह कर उनकी खिल्ली उड़ा रहे थे, अन्धविश्वास और पाखण्ड चरम सीमा पर था, गुरु को ईश्वर से बड़ा समझा जाता था, स्वार्थी और पाखण्डी पण्डितों ने 'स्त्री-शूद्रौनाधीयताम्' का फतवा देकर इनके लिए वेदों का द्वार सदा के लिए बन्द कर रखा था, बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह और बहु-विवाह पर जहां कोई प्रतिबन्ध नहीं था वहां विधवा विवाह तथा पुनः विवाह की चर्चा तक करना अपराध माना जाता था, हरिजन देव मन्दिरों में नहीं जा सकते थे, वे सवर्णों के कुओं से पानी नहीं भर सकते थे, सतीप्रथा एवं यज्ञों में पशुबलि जैसी बुराइयां धर्म के नाम पर पनप रही थी, हिन्दू समाज प्याज के छिलकों की तरह सारहीन बना हुआ था, राजनैतिक दृष्टि से हम परतन्त्र तो थे ही आपस में भी राजा-महाराजा एक-दूसरे का विरोध कर अंग्रेजी सत्ता के हाथ मजबूत कर रहे थे, अनाथों एवं विधवाओं का क्रन्दन समाज के लिए अभिशाप बना हुआ था, विदेशी शिक्षा विचारकों और एवं मनीषियों के स्थान पर केवलमात्र क्लर्क बना रही थी, सन् 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम के बाद सभी के मन बुझे हुए थे, उस समय के शासक सुरा और सुन्दरी के पाश में जकड़े हुए थे, सम्पूर्ण भूमण्डल पर सर्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापित करने वालों की सन्तान अपने गौरव को भूल कर अंग्रेजों की चाटुकारिता करने में ही अपने को धन्य समझने लगी थी, राणा और शिवा की सन्तान अन्याय के खिलाफ बोल नहीं पा रही थी।

ऐसी विषम से विषमतर और विषमतर से विषमतम परिस्थितियों मे देव दयानन्द ने आर्यजाति को झकझोरा। आज देश में जो शुभ लक्षण दिखाई दे रहे हैं उनके मूल में देव दयानन्द का अथक परिश्रम विद्यमान है।

स्वराज्य शब्द का बोध कराने वाले महर्षि दयानन्द की कृपा से हमारे देश में नई चेतना और जागृति आई थी। स्वामी जी ने हिन्दू धर्म को, जो प्याज के छिलकों की तरह बना हुआ था—संगठित करने के लिए एकेश्वरवाद, त्रैतवाद एवं पंचमहायज्ञों का विधान किया।

हिन्दी भाषा के वे प्रबल समर्थक थे। संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित और अहिन्दी भाषी होते हुए भी उन्होंने अपने ग्रन्थ आर्य भाषा (हिन्दी) में लिखे, सभी आर्य समाजियों के लिए हिन्दी व्यवहार करना आवश्यक बताया।

नारी, जो कि पैरों की जूती और नरक का द्वार समझी जाती थी, देव दयानन्द के लिए पूजा एवं श्रद्धा के योग्य थी। उन्होंने राजर्षि मनु के डिण्डिम घोष का पुनरुद्घोष करते हुए कहा—'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।'

स्वराज्य और स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग के लिए उन्होंने तत्कालीन राजा महाराजाओं को प्रेरित किया। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का पुनरुद्धार कर उन्होने शिक्षा के क्षेत्र में राजा-रंक को समान अधिकार देने का प्रयास कर ऊंच-नीच की भावना को समाप्त किया। गौ को भारत की समृद्धि का कारण बताते हुए उसकी हत्या पर रोक लगाने की ब्रिटिश शासन से जोरदार मांग की।

मजहबी जुनून से हटकर स्वामी जी ने कहा—

"मेरा कोई नवीन कल्पना का मत-मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उसको मानना, मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझ को अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्यावर्त्त में प्रचलित मतो मे से किसी एक मत का आग्रही होता।'

आपस की फूट के भयंकर परिणामों की चर्चा करते हुए स्वामी जी ने बताया थी—

'जब भाई भाई आपस में लड़ते हैं तब तीसरा विदेशी आ कर पंच बन बैठता है।

'आपस की फूट के कारण कौरवों, पाण्डवों एवं यादवों का सत्यानाश हो गया, हो गया सो तो हो गया, परन्तु वह भयंकर राक्षस अब भी आर्यों के पीछे लगा है। न जाने कभी छूटेगा या आर्यों को सब सुखों से छुड़ा कर दुःख सागर में डुबा मारेगा।'

शिवरात्रि का यह महान् पर्व हमारे आत्म निरीक्षण का पर्व है। जिस ऋषि ने बोध प्राप्ति से लेकर जीवन के अन्त तक अपना प्रत्येक क्षण संसार के उपकार में व्यतीत किया, जिसने विष पीकर अमृत प्रदान किया, उस महान् ऋषि के बोधोत्सव को मनाते हुए हम सभी प्रतिज्ञा करें कि देव दयानन्द के अधूरे कार्यों को पूरा करने का संकल्प करते हुए 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के नारे को सार्थक सिद्ध करें।

शिवत्व की खोज

—कविरत्न जगदीश प्रसाद एरन—

लगभग डेढ़ शताब्दी पूर्व शिवरात्रि के दिन मोरवी राज्य के टंकारा ग्राम के विशाल शिवालय में 15 वर्ष के एक छोटे से बालक मूलशंकर के मन में सच्चे शिव को जानने की ललक पैदा हुई थी। नन्हा-सा बालक बड़ी श्रद्धा से भगवान शंकर के दर्शन की लालसा संजोये, आंखों पर पानी के छींटे मारकर, शिव चतुर्दशी की घोर अन्धकारमय रात्रि को निराहार रहकर जागने का उपक्रम कर रहा था। उसके पिता ने उस अविकसित हृदय में भगवान शंकर के दर्शन के विश्वास को भर दिया था, स्वयं निद्रा देवी की गोद में विश्राम करने लगे थे। किन्तु बालक जाग रहा था तथा जब उसने अर्द्ध रात्रि के समय देखा कि कुछ चूहे शिव की पिण्डी पर उछल कूद कर उस पर रखे मिष्ठान को खा रहे हैं तथा पिण्डी को गन्दी कर रहे हैं तो उसका विश्वास डगमगाया तथा उसने पिता को जगा कर सच्चे शिव का पता पूछा। वे बता नहीं पाए तो उसने संकल्प लिया कि वह आजन्म ब्रह्मचारी रहकर सच्चे शिव का पता लगाकर रहेगा तथा वास्तव मे उसने उस रात्रि को जग कर सारे राष्ट्र को जगा दिया। वह शिवरात्रि बोध रात्रि बन गई जिसने कि युगों युगों से बन्द अज्ञान रूपी अन्धकार के द्वार महर्षि दयानन्द के रूप मे मूल शंकर से खुलवा दिये।

सच्चे शिव की खोज के संकल्प ने ही महर्षि से यह अद्भुत कार्य करवाया। महान् राष्ट्रीय समाज सुधारक एवं धार्मिक "सत्या आर्य समाज" की स्थापना की। जिसकी कि आज 70 हजार शाखायें देश-विदेश में क्रियाशील है। महान् क्रान्तिकारी एवं वैचारिक ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश, एवं ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका जैसे ग्रन्थों की रचना की। गोरक्षा हित वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित 'गो करुणा-निधि' नामक पुस्तिका लिखी। अछूतोद्धार एवं नारी शिक्षा का शंखनाद सबसे पहले महर्षि दयानन्द सरस्वती ने किया। पराधीनता के समय जब कि लोग अंग्रेजों के विरुद्ध जबान खोलने से भी डरते थे, स्वामी जी ने स्वराज्य तथा स्वदेशी वस्त्रों के नारे को बुलन्द किया।

भारतवर्ष की दशा उस आटे के दिए के समान थी जिसे कि घर में रखें तो चूहे खा जायें तथा बाहर रखें तो कौए उठा ले जाय। देश जाति-पांति छुआछूत, ऊंच नीच, आडम्बरो, रूढ़ियों, मतमतान्तरो, अवतारवाद आदि के चक्कर में ऐसा पड़ा हुआ था कि हम सब आपस में मिल बैठ भी नहीं सकते थे। दूसरी ओर विदेशी सत्ता इस देश को खोखला किए जा रही थी। स्वामी जी ने एक ईश्वर की सत्ता को सर्व व्यापक बताकर तथा गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था का बोध कराकर इस देश को एक सूत्र में पिरो दिया और उसी वैचारिक क्रान्ति के फल स्वरूप आज हम सभी भारतवासी स्वाधीन होकर, भेदभाव की इन दीवारों को गिरा कर भाई भाई की भांति रह रहे हैं।

प्रातः स्मरणीय महर्षि दयानन्द सरस्वती का नाम उनके इन उपकारमय कार्यों के लिए इतिहास के प्रथम पृष्ठ पर स्वर्णाक्षरों मे सदा-सदा के लिए अंकित रहेगा।

पता—उपमन्त्री मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा रतलाम सम्भाग नीमच (म० प्र०)

महर्षि दयानन्द का पंचसूत्री कार्यक्रम

—आचार्य विश्वश्रवा व्यास—

हम उस समय का वर्णन कर रहे हैं—जब कांग्रेस का जन्म भी नहीं हुआ था। महात्मा गांधी उस समय कहीं पढ़ रहे होंगे। स्वामी जी ने इस विशाल भारत की आजादी के लिये अकेले ही संघर्ष प्रारम्भ किया। स्वामी जी के समय में भारत वर्ष पंजाब, सिन्ध, बिलोचिस्तान, बर्मा, श्रीलंका आदि तक एक महान् देश था। इतने महान् देश की आजादी के लिये स्वामी जी ने जो प्रोग्राम बनाया, वह इस प्रकार था —

1 स्वामी जी का कहना था कि जब तक इतने बडे देश में एक धर्म, एक भाषा, एक संस्कृति नहीं होगी तब तक शान्ति नहीं हो सकती। इस समय देश लो धर्म के नाम पर हिन्दुस्तान, पाकिस्तान के टुकड़े हुए और भाषा ने बंगला देश और पाकिस्तान के टुकडे किये तथा संस्कृति ने बर्मा को अलग किया और आतंकवाद फैलाया। अत शान्ति के लिए एक धर्म, एक भाषा, एक संस्कृति का होना आवश्यक है।

न यावत् भाषैका न च मनुजधर्मोऽप्यविषम
विरोधे संस्कृत्या न हि भवति सुशान्ति कथमपि ।
दयानन्दस्येद कथनमिह देशे न हि श्रुतम्,
गतोऽह्यार्यावर्त्तो मुनि ऋषि गृह पञ्चशकलान् ॥

अर्थ—जब तक भाषा एक नहीं होगी, मनुष्य का समान धर्म नहीं होगा, समान संस्कृति नहीं होगी, तब तक देश मे शान्ति नहीं होगी। महर्षि दयानन्द का यह कहना किसी ने नहीं सुना, अत देश पांच टुकडो मे विभक्त हो गया।

2. दूसरा प्रोग्राम स्वामी जी का यह था कि—

विभिन्ना या भाषा दिशि दिशि प्रचार परिगता
कुरु ज्ञान तासा तु ऋषिमत प्रचाराय विबुध ।
तथा देशे देशे भ्रमत परितो विश्व मधुना
तदार्यं साम्राज्य जगति प्रथित स्यात् द्रुततरम् ॥

अर्थ—नाना देशों मे जो भाषायें हैं उनका ज्ञान प्राप्त करो और उन भाषाओ मे उन देशो मे जाकर ऋषि के सिद्धान्तो को फैलाओ। इससे संसार के अन्दर आर्यों का साम्राज्य शीघ्र हो जायेगा। शायद यह कार्य स्वामी जी ने श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा आदि के सुपुर्द किया था।

3 तीसरा प्रोग्राम स्वामी जी का यह था—

समस्त साहित्य मुनि ऋषिकृत भाष्यमिषतो
विनाश सम्प्राप्त श्रुतिरपि च धूर्तकलुषिता ।
पुनर्भाष्य कृत्वा कुरु सकलग्रन्थान् ऋषिमतान्
दयानन्द स्वामी कथयति च सर्वान् बुधवरान् ॥

अर्थ—समस्त वैदिक साहित्य भाष्य के बहाने से नाश को प्राप्त हो गया है और धूर्तों ने उल्टे भाष्य रचकर वेदों को भी कलुषित कर दिया है। अतः समस्त ग्रन्थो का फिर से भाष्य करो जिससे वे ऋषियो के सिद्धान्तो के अनुसार ठीक प्रतीत हों—स्वामी दयानन्द सब विद्वानों से यह कह रहे हैं। [इस काम में स्वामी जी ने अपना सहयोगी भीमसेन शर्मा इटावा वालो को बनाया।]

4 चौथा प्रोग्राम स्वामी जी का था

या इक्ष्वाकुवश्या रविशशिकुला राजतनया
विराजन्ते लोके कुरुत प्रणय तैं सविनयम् ।
अमीषां पूर्वेषां स्मृतिपथ मुपायातमधुना
यश पुञ्ज पुण्य प्रथिततममैतिह्य जगति ॥

अर्थ—संसार के प्रथम राजा इक्ष्वाकु की परम्परा मे जो सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी राजा हुए हैं—उनकी सन्तान जो इस समय विराजमान है, उनके साथ विनय पूर्वक प्रेम का सम्बन्ध स्थापित करो। ऐतिहासिक जगत् में उनके पूर्वजों का जो यश है, वह उन्हें याद दिलाओ। (इस काम को स्वामी जी स्वयं कर रहे थे।)

5 स्वामी जी का पांचवां प्रोग्राम था—

न भाषाविज्ञान न च भुवि कार्लमार्क्स सरणि
र्न हितार्थं लोकानां नहि नहि डार्विन मतमपि ।
न चास्थ्नोर्विज्ञान जन-जन विवादाय हि च तत्
कुविज्ञान्येतानतिवितथवादान् परिहर ॥

अर्थ—भाषा विज्ञान, कार्ल मार्क्स की थ्योरी, डार्विन का मत, अस्थिविज्ञान—ये सब संसार के हित के लिए नहीं हैं। ये कुविज्ञान हैं, इनको समाप्त करो।

तदा सर्वं कर्त्तुं स्वयमपि प्रवृत्तो महऋषि
तथा भीमादीन्यामपि स कृतवान् कार्यनिरतान् ।
जगन्नाथो धूर्तो यवन सहिता चापि गणिका
महर्षे स्वर्याने कुटिल मतिभू पश्य सफला ॥

अर्थ—इन सब पंचसूत्री प्रोग्रामो को स्वामी जी ने स्वयं करना प्रारम्भ किया, भीमसेन शर्मा आदि को कार्य पर लगाया, किन्तु धूर्त जगन्नाथ, अलीमर्दान खा और वेश्या नन्हीं जान के कारण कुटिलमतियो की चालें सफल हुई और स्वामी जी स्वर्ग सिधारे।

महर्षौ स्वर्याते दिशि दिशि प्रयातास्तदनुगा
गता ईश्वर अल्लामतमथ च भीता अमनग ।
तटस्था सजाता ऋषिवर सुभक्ता नृपतय
तथा भाईभीमप्रभृतय इतो निर्गतिपरा ॥

अर्थ—महर्षि के स्वर्ग सिधारने के बाद उनके अनुयायी भिन्न-भिन्न दिशाओ मे चले गये, कुछ ईश्वर-अल्ला मत (कांग्रेस) मे प्रविष्ट हो गये, कुछ डरे हुये लोग अमन सभा में चले गये, ऋषि के भक्त और प्रशंसक राजा लोग तटस्थ हो गये तथा भाई परमानन्द जी तथा भीमसेन शर्मा आदि आर्यसमाज से निष्कासित कर दिये गये।

समाप्त तद् सर्वं यदपि ऋषिणा भाषितचर
समाजश्चार्याणां अनुकुरुत ईशामतमयम् ।
समाजे सर्वस्मिन्नुपकृति पर कार्य निवह
समाजो चर्चो वा न हि किमपि भिन्न द्वयमपि ॥

अर्थ—ऋषि ने जो भी कहा था, वह सचमुच समाप्त हो गया। आर्यों के समाज ने ईसाईयत का अनुकरण शुरू कर दिया। समाज में और सब जगह उपकार परक काम किये जाने लगे, समाज में और चर्च मे कुछ भी अन्तर शेष नहीं रहा।

क्वचित् डिस्पेंसर्या क्वचिदपि रीडिंगगृहमपि
समाचार सर्वं पठतु जनता दैनिकमपि ।
क्वचित् सिलाईस्कूल क्वचिदपि मसालागृहमपि
अनाथानां स्त्रीणां कथमपि धनस्यार्जनमपि ॥

अर्थ—(समाजो में) कहीं डिस्पेंसरियां खुल गई, कही रीडिंगरूम खोले गये, कही जनता के पढ़ने के लिये दैनिक समाचार पत्रो का प्रबन्ध किया गया। कहीं (जैसे आर्य समाज मेस्टन रोड, कानपुर) सिलाई स्कूल खोले गये, कहीं (जैसे आर्य समाज करोलबाग, दिल्ली) मसालागृह खोले गये, कही अनाथ विधवा स्त्रियों के लिये धनार्जन की व्यवस्था की गई।

विवाहार्थं किंचित् गृहमपि च निर्मान्ति बहव
समस्तान् सभारान् ददति वरयात्राथमपि च ते ।
क्वचित् रोटी वस्त्र वितरित मनाथालय इव
यदा भूकम्पादि जलप्रवहणादि क्वचिदपि ॥

अर्थ—कुछ लोग विवाहादि कार्यों के लिये भवन बनवाते हैं, बरातों के लिये स्थान और सभी सामान देते हैं (जैसे कलकत्ता)। कभी-कभी भूकम्प या बाढ़ आने पर अनाथालय की तरह रोटी और वस्त्रों का वितरण भी करते हैं।

क्वचिच्चैम्बूलेंस शकटमपि दृष्ट धनवता
समाजाना द्वारे स्थितमिति विजानन्तु सुधिय ।
क्वचित् कन्याशाला क्वचिदपि च शाला शिशुकृते
दयानन्दो मार्केट क्वचिदपि दयानन्द सरणि ॥

अर्थ—बुद्धिमान् जनों को यह भी विदित हो कि कहीं धनवानों की एम्बुलेंस गाड़ी भी समाज (जैसे आर्य समाज फोर्ट तथा सांताक्रुज, बम्बई) के दरवाजे पर खडी दिखाई देती है। कहीं लडकियो की पाठशाला दिखाई देती है और कहीं बच्चों के स्कूल; कहीं दयानन्द मार्केट और कहीं दयानन्द मार्ग दृष्टि गोचर होता है।

क्वचित् एमपीलीला क्वचिदपि सत्याग्रह विधिः
प्रशसाग्रन्था वा क्वचिदपि चित्र प्रियतरम् ।
क्वचित् टंकारायां भ्रमणमतयो यात्रिनिवहा
पवित्र स्व कर्तुं ऋषिजननभूमौ प्रचलिता ॥

(शेष पृष्ठ 11 पर)

महर्षि दयानन्द का पंचसूत्री

.... (पृष्ठ 10 का शेष)

अर्थ—कहीं एम० पी० बनने की जोड़-तोड़, कहीं किसी प्रकार का सत्याग्रह, कहीं अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित करने की योजनाएं और कहीं सुन्दर फोटो खींचे जाने का सिलसिला है। कहीं यात्रियों के समूह अपने आपको पवित्र करने के लिये ऋषि की जन्मभूमि टंकारा जाने का विचार करते हैं।

ऋषि कार्यं परित्यज्य कार्यान्तरेष्वभिरता ।
देशाघात करा ह्येते दयानन्दानुयायिन ॥

अर्थ—दयानन्द के ये अनुयायी ऋषि के कार्य को छोड़कर अन्य कार्यों में संलग्न हो गये हैं, ये देश का नाश कर रहे हैं।

विशालोदेशोऽयं सुमतिरहितैर्नीति विरतै
कृत खण्ड खण्ड, तदपि न शान्ता विमतय ।
अह शंके नूनं पुनरपि न भूयाच्छकलित
क्व कैलाशोऽस्माकं क्व प्रियतर सिंध प्रभृतय ॥

अर्थ—इस देश को नीति रहित बुद्धि विहीन इन लोगो ने टुकडे-टुकड़े कर दिया है। फिर भी ये दुर्बुद्धियुक्त जन शान्त नहीं हुए हैं। मुझे आशंका है कि पुन देश के और अधिक टुकडे न कर दिये जायें। न अब कैलाश अपना है, न प्यारा सिन्ध, न बिलोचिस्तान, न सीमा प्रान्त और न बर्मा अपना है।

शिरोहीने माता कररहित गात्रे विचरणे
कबन्ध हे शिष्ट तदपि न शान्ति पुनरपि ।
सदार्या धावन्ते न हि शरणमेषा क्वचिदपि
क्व गच्छामो भीता न हि वदति कोऽपि प्रभुवर ॥

अर्थ—भारत माता का सिर कट गया है, उसके हाथ अलग कर दिये गये हैं, वह पैरों से भी विहीन हो गई है, उसका केवल धड शेष रह गया है, फिर भी कहीं शान्ति नहीं है, कोई भी अधिकारी यह नहीं बताता ये डरे हुए (हिन्दू लोग) कहां जायें।

न पञ्जाबे शान्ति दहन परिगेहा अभिनिश
पलायन्ते सर्वे पार्थ-पार्थं भ्रमन्त दिशि दिशि ।
महात्मा गान्धीचित् वदतु किमु राज्य रघुपते
दयानन्द हित्वा तव चरण लग्ना इह जना ॥

अर्थ—न पंजाब में शान्ति है, निरन्तर रात-रात भर घर जल रहे हैं। सभी लोग एक रास्ते से दूसरे रास्ते, दिशा-दिशा मे भटकते हुए भाग रहे हैं। महात्मा गांधी! बताओ क्या यही तुम्हारा रामराज्य है, यहां के जन ऋषि दयानन्द को छोड़कर अब तुम्हारे चरणों मे आ गये हैं।

मिलित्वा रक्षोभि सुरवरजनै आंगलजना
स्वदेशात् निष्काम्या इति कुमतिपूर्णं तव मतम् ।
त्यजध्व रे आर्या उपकृतिपरान् कार्यं निवहान
समौ भाषाधर्मौ कुरुत निजदेशे पुनरपि ॥

अर्थ—राक्षसों (यवनो) से मिलकर देवता लोग (हिन्दू) अंग्रेजों को भारत से निकाल दें—तुम्हारा यह विचार दुर्बुद्धिपूर्ण था। हे आर्यो उपकार करने वाले कार्यों को छोड दो और अपने देश में फिर समान धर्म तथा समान भाषा करो।

गते देशेऽस्माभि: बहव उपकारा प्रतिदिनम्
कृतास्तेनास्माक क्वचिदपि न रक्षां प्रतिदधु ।
धन गेह नार्य यवनमदमत्तै परिहृता
धृता भल्ले बाला: सदय विलपन्तो दिशि दिशि ॥

अर्थ—इस देश में हमने यवनो के साथ बहुत से उपकार किये, किन्तु हमारे वे उपकार परक कार्य उनसे हमारी रक्षा नहीं कर सके। हमारे धन, घर और स्त्रियो को इन मदमस्त यवनों ने छीना, बच्चो को भालों की नोक पर रक्खा और हर दिशा में वे विलाप करते रहे।

कृता: नग्ना नार्ये यवनपशुभिर्नीचमतिभि:
कृतादेशास्तास्ता. रुदन् परिभ्रान्ता पथि-पथि ।
समक्ष हा पित्रो स्वमदनपिपासा प्रशमिता
हतार्या युष्माक स्मरण पथि नायाति किमपि ॥

अर्थ—नीच बुद्धि वाले यवन पशुओं ने स्त्रियों को नंगे होने का आदेश दिया, सड़क-सड़क पर वे रोती हुई घूमती रहीं। मां-बाप के सामने ही इन्होंने उनसे व्यभिचार किया। धिक्कार है आर्यो—तुम्हें ये सब कुछ भी याद नहीं आता।

मृता यूयं सर्वे भरति किमसून् कश्चन नहि
गता: स्वर्गं सर्वे रविशशिकुला भूमिपतय: ।
न राम: कृष्णो वा न च कपिसुत पाण्डुतनय
न भीम पश्याम: क्व हलधर शूरो यदुप्रिय: ॥

अर्थ—अरे आर्यो! क्या तुम सब मर गये हो, क्या किसी में भी प्राण बाकी नहीं रहे हैं। सूर्यवंशी तथा चन्द्रवंशी राजा लोग स्वर्ग सिधार चुके हैं। न कहीं राम दिखाई देते हैं न कृष्ण, न हनुमान्, न अर्जुन, बलराम और यदुवीर कृष्ण भी कहीं चले गये हैं।

अरे आर्या मूढा . मतिरपि गता वो गिरिगुहाम्
न जानीध्वे यूय यदपि ऋषि कार्यं गुरुतरम् ।
तपो विद्या कीर्ति, सकलमपि नष्ट महर्षे:
न जानीते कोऽपि क्व गत आयात इति वा ॥

अर्थ—अरे आर्यो! तुम लोग मूर्ख हो गये हो, क्या तुम्हारी अक्ल भी चरने चली गई है। तुम ऋषि के महान् कार्यों को भी नही जानते हो। महर्षि (दयानन्द सरस्वती) की सब तपस्या, समस्त विद्या और सम्पूर्ण कीर्ति नष्ट हो गई है। अब तो लोग यह भी नहीं जानते कि (महर्षि) कब आये थे और कहां चले गये।

मत ईश्वर अल्ला न भवति शान्ते प्रतिनिधि
अनार्ये सम्वृद्धा भवति निजदेश प्रतिदिन ।
अरे आर्या निद्रां त्यजत बहुसुप्त परवशै
न काल सुप्ताना चरति स हि जीवेत् कथमपि ॥

अर्थ—ईश्वर अल्ला का नाम लेने वाली पार्टी (कांग्रेस आदि) शान्ति का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकती। अपने देश मे प्रतिदिन इन अनार्यों की गिनती बढ़ती जा रही है। अरे आर्यो! पराधीन रहकर बहुत समय तक सो लिये, अब तो नींद को त्यागो। समय सोने वालो का साथ नही देता, जो चलता रहता है, वही किसी तरह जिन्दा रहता है।

महाकूपे भग: न हितकर श्रोता हितजन
त्वमाया हे स्वामिन् पुनरपि यथार्थ कथयितुम् ।
त्यजन्ता ते भक्ता उपकृति परान् कार्यं निवहान्
भवेयु सलग्ना: तवकथित कार्येष्वभिरता ॥

अर्थ—पूरे कुंए मे ही भांग पडी हुई है, श्रोताओं के हित की बात करने वाला कोई नहीं रहा। हे स्वामी (दयानन्द सरस्वती)! यथार्थ बात को कहने के लिये तुम फिर आओ, ताकि तुम्हारे भक्त (तथा कथित) उपकार वाले कार्यों को छोड़कर तुम्हारे द्वारा बताये गये कार्यों में लग जायें।

विहायालस्य स्व कुरुत यवनान् आर्यमतिषु
मति सिक्खान् दद्यु न गुरव आसन् ऋषिद्रुह ।
प्रभुर्बुद्धि दद्यात् पुनरपि समाज कथमपि
समे स्यु सलग्ना विगत निज देश प्रतिहर. ॥

अर्थ—अपने आलस्य को छोड़कर यवनों को आर्य बुद्धि वाला बनाओ। सिक्खों को यह बुद्धि दो कि गुरु लोग (सिक्खों के दस गुरु) ऋषियों से द्रोह करने वाले नहीं थे। भगवान इस समाज को फिर किसी तरह से बुद्धि दें—सभी लोग अपने देश की दुरवस्था को दूर करने मे लग जायें।

अनार्या वर्धन्ते ह्य नयवन्तोऽत्र जगति
ऋषीणां देशेऽस्मिन् प्रतिदिवसमेते बहुतरा ।
समाजश्चार्याणा भवति ऋषि कार्येष्वभिरत:
तदाह्यार्यावर्तो भवतु ऋषिदेश पुनरपि ॥

अर्थ—इस ससार में नीति का पालन न करने वाले अनार्य बढ़ते जा रहे हैं; ऋषियों के इस देश में उनकी सख्या प्रतिदिन अधिक होती जा रही है। आर्यों का यह समाज ऋषि के कार्यो में लग जायें और यह आर्यावर्त पुन ऋषियो का देश हो जाये।

दयाया आनन्दो विलसति पर स्वात्मविदित
सरस्वत्यस्याग्रे विलसति मुदा वेदमनना ।
श्रुतीना उद्धर्ता सकल जन मान्यो गुरुवर:
दयानन्द स्वामी जयतु सुचिर विश्व जगति ॥

अर्थ—अपनी और दूसरो की आत्मा को जानने वाला दया का आनन्द शोभायमान हो रहा है। वेदों का मनन करने के कारण इसके आगे सरस्वती प्रसन्नता पूर्वक विराजमान है स्वामी दयानन्द वेदों के उद्धारक हैं, सभी व्यक्तियों द्वारा स्वीकृत श्रेष्ठ गुरु हैं। समस्त ससार में चिरकाल तक उनकी जय हो।

पता—वेद मन्दिर, बरेली (उ० प्र०)

प्रेषक—डा० रामप्रकाश आर्य, नई बस स्टैंड कालोनी, सीहोर (म०प्र०)-46600।

तपन नहीं तो पतन अनिवार्य

आर्यसमाज की प्रगति की दृष्टि से एक आत्म-चिन्तन

—जगत्प्रिय वेदालकार 'हिरण्यगर्भ—

(आचार्य अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक विद्यालय, टकारा-363650)

सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक आइ स्टीव ने विश्व को सुख और शान्ति का धाम बनाने के लिए इस बात पर सर्वाधिक बल दिया है कि हमे सबसे पहले अनिवार्य रूप से अच्छे श्रेष्ठ व आदर्श मानव उत्पन्न करने होगे। उसने कभी नहीं कहा कि विज्ञान की उन्नति से अथवा चाद और मगल ग्रहों पर मनुष्य के चरण पड जाने से ससार मे सुख और शान्ति व्याप जाएगी।

विज्ञान की उन्नति कुछ सुविधाए मनुष्य को भले ही दे दे, परन्तु सुख और शान्ति वह कदापि नहीं दे सकती। आज तक विज्ञान ने क्या किया? यही कि मनुष्य को पारस्परिक द्वेष, घृणा और विनाश के मार्ग पर चला दिया। मनुष्य को मनुष्य बनाने का यह मार्ग नहीं है। मनुष्य को मनुष्य यदि बनाना है तो उसे कोई मजबूत सहारा चाहिए। भगवान् से बढ़कर ऐसा कोई अन्य दृढ सहारा उसे नही मिल सकता। वही सृष्टि का एकमात्र आधार है। उसके सच्चे और वास्तविक स्वरूप के ज्ञान की आवश्यकता मनुष्य के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। ईश्वर का यथार्थ स्वरूप जितना स्पष्ट और तर्क-सगत ढग से वेद में वर्णित है, उतना अन्यत्र कहीं नहीं। इसीलिए विश्व को वेदाभिमुखी बनाना ही ऋषि दयानन्द के महत् कार्य का सारतत्व था। उन्होने आर्यसमाज की स्थापना इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए की। आर्यसमाज द्वारा वे महान् लोकाभ्युदय को सिद्ध करना चाहते थे। अपना समस्त जीवन इसी पवित्र कार्य के लिए उन्होने समर्पित किया। उनका जन्म ही जैसे इसके लिए हुआ हो। 'भवो हि लोकाभ्युदयाय तादृशाम्'।

विचारणीय प्रश्न यह है कि अपनी लक्ष्यसिद्धि में आर्यसमाज कहा तक अग्रसर हुआ? उसने कितनी सफलता प्राप्त की?

यह भी कैसी दु:खद विडम्बना है कि सामान्य जनो द्वारा स्थापित काग्रेस व मुस्लिम लीग जैसी सस्थाए एक परम योगी, ऋषि, वेदज्ञ व नैष्ठिक ब्रह्मचारी द्वारा स्थापित सस्था मे आर्य समाज अपने उद्देश्य में क्यो पिछड़ गया? केवल इसलिए कि आर्य समाज जो कुछ करना चाहता है, उसका विरोध वह अपने आचरण से और प्रयत्नो से करता रहा है। वास्तव में अपनी बन्दूक दूसरो के कन्धों पर रखकर चलाते रहे हैं, जिसका मुख खुद हमारी ओर था। आर्यसमाज द्वारा खोले गये स्कूल, कालेजों में क्या पढ़ाया जा रहा है? रोटी, कपडा, मकान की इच्छा और बस। यदि कहीं कुछ अधिक पढ़ाया भी गया तो यह कि वेद ईसा से दो हजार वर्ष पूर्व कहे या रचे गये। 'आर्य' भारत से बाहर कहीं ईरान, मध्य-एशिया व साइबेरिया से यहां आए। सम्राट् अशोक से पहले भारत जाहिलों का देश था, आदि-आदि।

हमने अछूतोद्धार किया। पैदा हो गए अम्बेडकर, जो बौद्ध हो गए। स्त्री-शिक्षा का खूब प्रचार-प्रसार किया। परन्तु सृष्टि होने लगी उपन्यास पढ़ने वाली लडकियो की। उनकी अलमारियों और मेजों पर मोपासा और एमली जोला सुशोभित होने लगीं। शुद्धि का कार्य भी बड़े उत्साह से किया, किन्तु विगत सो वर्षों मे कितने विधर्मियों को हम अपने समाज में विलीन कर पाए? मूर्तिपूजा का प्रबल रूप से खण्डन किया। फल निकला भारत में नास्तिकता का बोलबाला। हिन्दी का नारा लगाया। प्रचार हुआ अग्रेजी का। हम स्वय ही अपना काय उर्दू और अग्रेजी में चलाते रहे।

जीवन को यज्ञिय-पद्धति से जीना आर्यत्व का लक्षण है। हम लोग साधना का मार्ग छोडते जा रहे हैं और सुविधा-जीवी होने में ही अपने कर्तव्य की इतिश्री समझने लग पड़े हैं। आश्चर्य तो यह है कि हमे परस्पर द्वेष और घृणा करने के लिए समय मिल जाता है, जबकि स्वाध्याय, आत्म-चिन्तन और प्रेम करने के लिए जीवन बहुत छोटा है। दुर्भाग्य से साधना का दक्षिण-पथ हम से छूट गया और सस्थावाद के दुश्चक्र में हम बुरी तरह फस गये। आधुनिक सस्थावाद आधुनिक प्रजातन्त्र-वाद की अवाछनीय सौगात है, जो भ्रष्टाचार की वृद्धि तो कर सकती है, किन्तु सदाचार को प्रतिष्ठित वह नहीं कर सकती। यह अत्यधिक दोषपूर्ण है। ब्राह्मी वाटिका को उजाडने का जैसे इसने ठेका ही ले रखा है।

तर्क नहीं, श्रद्धा

अन्धी श्रद्धा को कोसते-कोसते हमने सुझती श्रद्धा का भी परित्याग कर दिया। तर्क का कहीं अन्त नहीं। वह अन्तिम निर्णय में सदा असफल रहा है। तर्क कभी अकाट्य न हुआ है, न होगा। श्रद्धा के साथ तर्क का नहीं, चिन्तन का गठबन्धन करना होगा। चारों वेदों में तर्क कहीं भी प्रतिष्ठित नहीं हुआ। वहां सर्वत्र श्रद्धा, मेधा, सुमति, प्रमति एव चिन्तन को ही सत्य की खोज एवं ऐश्वर्यों के सम्पादन का आधार माना गया है। भौतिक विज्ञान के भी सभी अन्वेषण व आध्यात्मिक विज्ञान की निखिल उपलब्धियां चिन्तन, धारणा, ध्यान व समाधि जन्य हैं, तर्क-जन्य नहीं। न्याय सहित सभी दर्शनों का जनक भी चिन्तन ही है, तर्क नहीं। समाज का मेरुदण्ड साप्ताहिक अधिवेशन था। वह अब टूट रहा है। वह किसी तरह यदि ठीक हो जाए तो फिर चैतन्य आ जाए।

क्या हमारे सब कार्य 'सूत्र प्रोता दारुमयीव योषा' अर्थात् कठपुतली की तरह नहीं हो रहे? ससार का उपकार करने वाला आर्यसमाज न जानें कब से केवल हिन्दू-हित की दुहाई दिए चला आ रहा है या देने लगा है। इसमे रहकर कोई क्या कार्य करे? इसका वातावरण इतना दूषित हो चुका है कि भले आदमी को सास लेकर भी दूभर हो उठा है। आर्य शब्द का उच्चारण करते ही क्या हमें एक दिव्य स्फूर्ति का आभास होने लगता है? दीन-हीन, निस्तेज, अन्य-गतिक चाटूकार पुरुष आर्य नहीं होता। उससे ससार का तो क्या, अपना ही भला होने वाला नहीं। केवल व्यक्ति ही नहीं, कभी कभी पूरा समाज या राष्ट्र भी भूल कर बैठता है, जिसके कारण भावी पीढ़ियों को घोर विपत्तियों का सामना करना पडता है। विवेक द्वारा उनसे बचने के पूर्वोपाय किए जा सकते हैं।

हमारे प्रचार में पेशेवरी का भाव और मिशनरी भावना का अभाव है। फलत आर्य समाज निरन्तर 'नुमाइश-समाज' बनता जा रहा है, जो नित नई-नई नुमाइशें आयोजित करता रहता है। विशेषकर वह सरकारो को और फिर तमाशबीनों को रिझा-रिझा कर तालियां बजवाता है। आर्यसमाजी मचों पर उन्हीं के नेता लोग नित नए नए अभिनय करके फोटो खिचवाते और स्पीचें प्रकाशित कराते रहते हैं।

सर्व साधारण के मस्तिष्क पर आर्य-समाज अपना प्रभाव भले ही जमाता रहा हो, किन्तु हृदयों को प्रेरित करने में वह नितान्त असफल रहा है। आर्य-समाज रूपी घोड़ा जैसे बिगड़ गया है। निरुद्देश्य-सा वह सरपट दौड़ा जा रहा है। नहीं मालूम कहां जा गिरेगा। इस दृष्टि से आर्यसमाज तमोगुण—मिश्रित रजोगुणी लोगो का अखाडा बनकर रह गया है। सच्ची आध्यात्मिकता का उसमें नितान्त अभाव है। शान्ति, शान्ति, शान्ति का नित्य पाठ करने वाले भाई भ्रांति, भ्रान्ति, भ्रांति के चक्कर में उलझ कर रह गए हैं। स्वधर्म, स्वकर्म, स्वदेश, स्ववेश, स्व-नीति, स्व-रीति, स्व-सभ्यता, स्व-संस्कृति, स्वाभिमान, स्व-जाति, स्वराष्ट्र, स्व-भाषा, स्व-लिपि, स्वजन, स्वधन की पकड़ अब उसमें कहा रही, जो आर्यसमाज के उत्थान काल में थी।

दयानन्द का आर्यसमाज कब अर्जुन की तरह आत्म-स्मृति लाभ कर जागेगा, उठेगा और लक्ष्याभिमुख हो विश्व-प्रांगण में कूदेगा, तब ही वास्तविक भारतोदय होगा। हम ऋषि के सिद्धान्तों पर दृढ़ रह, अनवरत एकजुट होकर साधना के सुपथ पर अग्रसर हों। क्योंकि बलिष्ठ, तपस्वी, स्वाहाकारी व सुपठित ब्रह्मचारी ही महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ा सकते हैं। राजनेता कितने ही दूध के धुले और तुला पर तुले क्यों न हों, वे भारत की समस्याओं को कभी भी हल नहीं कर पाएगे। इसलिए ऐ आर्यजन! अपने बलिष्ठ हाथो के साथ, बलवती भावना के साथ वेदों को कसकर थामिए। भारत राष्ट्र की सन्तति आज उत्तरोत्तर अधिकाधिक कामुक, निर्लज्ज, हतप्रभ एव दुर्नय होती जा रही है। परिणाम-स्वरूप जातीय तेज, ओज, शौर्य सब नष्ट हुआ जा रहा है। इस घोर सकट की घड़ी मे आपके सिवा "को राष्ट्रमुद्धरिष्यति"। कभी मनु महाराज ने इस देश के धर्म का मूल वेद को माना था। पर आज वह मान्यता प्ररोचना मात्र हो चली है। क्यों? वेदों में ऐसी बातों या शिक्षाओं की कमी नहीं, जो हमारे वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और सार्वभौम दायित्वों एव अधिकारों का सुन्दर प्रतिपादन करने वाली हैं। महर्षि ने वेदों के धर्मशास्त्रीय स्वरूप एव आधार को उजागर किया। ऋषि दयानन्द ने वेदों की व्यावहारिक व्याख्या-सरणि को पुन प्रशस्त बनाया। वेद का वास्तविक स्वरूप कोरे प्रमाणवाद से निखरने वाला नहीं। उसके लिए तो स्वतन्त्र चिन्तन ही मुख्यत अपेक्षित है।

आर्य समाज के सामने अब दो ही विकल्प हैं। या तो वह तप, तप, घोर तप करे अन्यथा पत, पत, घोर पतन को प्राप्त हो। यदि जीवन में तपन नहीं तो पतन अनिवार्य है। सिद्धान्त आर्य समाज के सुपुष्ट और मानने योग्य हैं। श्रद्धा इसमें हिन्दुओं की आ जाए। कार्य स्वय

→

→

विशाल राष्ट्रीय-क्षेत्र चुना जाए। तभी कुछ बात बनेगी। पहले जैसी धुन समाज में अब नहीं रही। इसीलिए उसे घुन खाए जा रहा है। श्रद्धावान् और आत्मवान् नर-शार्दूलों में भी घुन समाया करती है। अब हममें पहले की-सी स्व-सिद्धान्तों के लिए अटल आस्था कहां रह गई है? सारा का सारा धन्धा वाचिक है। ठोस कार्य कुछ नहीं। इसीलिए प्रथमत आत्मशुद्धि अपेक्षित है। हमें धुन के पक्के धुनी लोग पैदा करने होंगे। उनकी विद्यमानता में ही समाज की डावाडोल स्थिति सभल पाएगी। आर्यजनो में पारस्परिक सहानुभूति और सेवाभाव चिरस्थायी बने, तभी कुछ उद्धार सभव है। मूलत, आर्य समाज सरकण्डों की उस झाड़ी के समान है, जिसमें आग देने से वह दुगुनी होकर धधक उठती है। पारस्परिक विद्वेष फूट के कारण वह खोखला हो चुका है। फूटैल सगठन क्या धर्म-कर्म साधेगा? न उसे स्वय शान्ति मिल सकती है, न सुख और समृद्धि। फूट का परिणाम सदा एक ही रहा है—नाश और सर्वनाश। "भिन्नानां वै मनुजेन्द्र परायणं न विद्यते किञ्चिदन्यद् विनाशात्।" अवस्था इतनी दयनीय हो गई है कि—

हम अपने हाल पर खुद,
इस कदर पशेमां हैं।
निगाह तक भी किसी से,
मिला सकते नहीं॥

हे आर्य! तु अपने स्वत्व को भूल बैठा है। यदि उसे समझ कर गतिशील हो जाए तो फिर तेरे लिए कुछ भी असभव नही रहेगा। दुख, दारिद्रय, दासता आदि सब अपने आपको न पहचानने के फल हैं। कर्मकुशलता ही योग है। आर्य शब्द आचार परक है, जाति या समुदाय परक नहीं। वैदिक आचार-विचार से जो भी युक्त होगा, वह आर्य कहलाएगा। ससार का आर्यकरण कब होगा? तभी जब हम 'इन्द्र वर्धन्तो अप्तुर कृण्वन्त' के पवित्र आदर्श को अपने जीवन में साकार करेंगे। तीन ही तो शर्तें हैं—

1 आत्मवर्धन या आत्मोत्थान (इन्द्र वर्धन्त)
2 त्वरा या तत्परता के साथ कर्म साधना में लीन रहना (अप्तुर)
3 सर्व कृपणताओं का अपाकरण (अपघ्नन्तोऽराव्ण)। प्रगति का यही राजपथ है। "नान्य पन्था विद्यते अयनाय।"

धर्म-प्रचार में कटुता का लेशमात्र भी नहीं होना चाहिए। उसमें तो प्रेम, प्रेरणा और शान्तिपूर्वक समाधान ही अपेक्षित हैं। प्रचारक का शील सर्वतो भद्र रहना चाहिए। वेदाचार से शून्य रहकर वेद का प्रचार करना, धर्म हीन रहकर धर्म का ढोल बजाना कभी भी श्रयस्कर नही। आर्य प्रचारक तो "स्वेन क्रतुना सवदेत्" अपने कर्तृत्व के साथ ही बोले। सदा जीवन की भाषा मे बात करना ही उसका अलंकरण है।

करना उपकार जगत् का
है हमारा लक्ष्य।
पर यह लक्ष्य तो हमारा
अभी पूरा न हुआ।
थोड़ा कर पाए हैं, करना है
बहुत कुछ बाकी।
जितना चाहिए था,
उतना अभी तक न हुआ।
यह दुआ लीजिए हमसे
कि कर्म से अपने।
हम वह सब कर पाए
जो अभी तक न हुआ॥

अपनी इस साधना मे प्रभु ही हमे सभाल सकता है। अपने सकल्प मे हमें स्वय आस्थावान् और दृढ़ रहना है। वेद, आत्म साधना, विवेक और उपासना ये चारो सहचारी बने रहें। वेद अन्य तीनो का मूल है, सिद्धि देने वाला है, तो विवेक हमारे वेदाचार, आत्म साधना एव उपासना को साधक बनाता है। भीतरी द्वेष और बाहरी झगडो को समाप्त किए बिना सगठन सूक्त का दैनन्दिन पाठ साकार कैसे होगा? हमें आर्य समाज को एक आचार प्रधान संस्था फिर से बनाना होगा। सगठित रहकर ही हम आगे बढ सकते हैं। विगठित होकर विनाश सुनिश्चित है मिथ्या दोषारोपण एव निराधार निन्दा की दुष्प्रवृत्ति से हम कब मुक्त हो पाएगे? विश्व भर के श्रेष्ठ जनो को एक सूत्र में पिरोने का उपदेश ऋषि दयानन्द ने हमें दिया था। यही उनकी वसीयत थी।

मानवात्मा आज उस ऋत 'दैवी-विधान' की सुपावन व्यवस्था के लिए चीत्कार कर रही है, जिसमे कानून का नही, न्याय का राज्य हो। बहुमत का नही, न्यायप्रिय एव ईमानदार सच्चरित्र सज्जनो का शासन हो। सम्प्रदाय की नहीं, मानव धर्म की पूजा हो। स्वार्थ की नही, सर्वहित भावना की जिसमे प्रतिष्ठा हो। उच्छृखलता एव नग्नता के स्थान पर जहा शालीन शील हो व शोभनीय आचार का सन्दर्शन हो। भोग और असन्तोष का स्थान जहा योग और सन्तोष को मिले।

आज का समूचा समाज राष्ट्र व विश्व दिनानुदिन पतन की ओर दौडा चला जा रहा है। प्रयत्न व आयोजन सुख के लिए हो रहे हैं, मगर दुख-दारिद्रय बढ रहा है। कोशिश गरीबी मिटाने की है, पर गरीब ही मिटते जा रहे हैं। लक्ष्य हमारा समानता का है, किन्तु असमानता प्रचण्ड से प्रचण्डतर होती चली जा रही है। पुकार चरित्र-शोधन की है, किन्तु बोलबाला दुश्चरित्रता का देखने मे आता है। वस्त्रो के उत्पादन मे बढ़ोतरी है, रुझान नग्नता की ओर है। घोषणाए विश्वशान्ति की हैं, तो तय्यारिया विश्व-विध्वस की हैं। यह भयकर स्थिति दिल दहला देने वाली है। अधिकारो के लिए हाय हाय और कर्तव्य शून्यता छा जाने से चारों तरफ अराजकता का ताण्डव है। अनुशासन हीनता से विद्यालय, कार्यालय सब पट गए हैं। वे मनोरजनालय से अधिक कुछ नहीं रह गये। कामकाज मे दक्षता के अभाव मे लापरवाही व उत्तरदायित्व हीनता द्रौपदी के चीर की तरह बढती जा रही है। जिसका स्पष्ट परिणाम यह है कि शासन सभी कार्यों में गलतियो, विफलताओ व दीर्घ-सूत्रता का शिकार हो रहा है। राष्ट्र का जहाज डूब रहा है और मल्लाह मस्त हुए ऐश की बसी बजा रहे हैं। अराजकता के प्रचण्ड भवर से वतन की नैया को कौन उबारेगा, सिवाय आर्य समाज के? सर्व साधारण का निरन्तर गिरता हुआ चरित्र एव बढती हुई निराशा घोर चिन्ता का विषय हैं। इस विभीषिका के दुष्परिणाम भावी सन्ततियो को भुगतने पडेंगे। स्वार्थ के पक मे आकण्ठ डूबा मानव भौतिकवाद के शिकजे मे बुरी तरह जकड गया है। पाप का अट्टहास मानव-सभ्यता को लील रहा है। आर्य समाज की सौमनस्यता अन्यमनस्कता मे बदल चुकी है। तिस पर भी हम ससार मे सुधार और उद्धार का डिण्डिम घोष किए जा रहे हैं। क्या इसी तरह वेदो का उद्धार होगा? अब भी समय है–सोचो, समझो और अपनी भूलो को सुधारो। इसलिए अब तो जाग जाओ और–

शोला बनकर फूक दो
पाप के अम्बार को।
उठो बना दो पावन फिर से
इस दुखी ससार को॥

वेद के शब्दो मे "सुपर्णोऽसि गरुत्मान् पृष्ठे पृथिव्या सीद। भासान्तरिक्षमापृण ज्योतिषा दिवमुत्तमान तेजसा दिशमुद् ह।"

ऐ आर्य जाति! तू सुपर्ण है, गौरव युक्त है। धरती की पीठ पर सवार हो जा। अपने दिव्य प्रकाश से उसे भर दे। द्युलोक को अपनी ज्योति से थाम ले और दिशा विदिशाओ को अपने तेज से दृढ बना दे।

अन्यतम वैज्ञानिक दयानन्द

—जीवानद नैलवाल—

सन् 1824 में जब महर्षि दयानन्द का जन्म हुआ तब गुलामी की जजीरो मे जकडा हुआ भारत स्वतत्रता की प्रथम किरण को देखने के लिए लालायित हो रहा था। इस काल मे मुसलमानो के बाद अग्रेजो ने भारत को खोखला व सस्कृति शून्य बना डाला था।' पराधीन सपनेहु सुख नाही' की दशा मे किसी भी प्रकार की उन्नति की आशा करना विवेक शून्यता का परिचय देना था। इस गुलामी का लाभ उठाकर पश्चिम के देश भारतीय वाङ्मय के अध्ययन से भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में निरन्तर उन्नति व समृद्धि के मार्ग पर आगे बढ़ रहे थे। इन देशों मे तब जर्मनी सबसे आगे था।

अति अल्पकाल मे ही महर्षि ने वेदो का मनन करके भारत वर्ष मे फैली, कुरीतियो व अन्धविश्वासो को गुलामी का मूल कारण मान कर उनको हटाने मे अपना समय लगाया। इस दौरान उन्होने वेदो मे निर्दिष्ट विज्ञान गूढ़ तत्वो का सकेत मात्र स्वदेशवासियों को कराया। महर्षि को आज विश्व मे एक महान् योगी, दार्शनिक व समाज सुधारक के रूप में तो जाना जाता है, लेकिन वे वैज्ञानिको मे भी अन्यतम हैं, यह हम नहीं जानते।

महर्षि ने अपनी सूक्ष्म बुद्धि के द्वारा ही 'वेद को सब सत्य विद्याओ की पुस्तक माना है, 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे ऋषि ने अनेक वैज्ञानिक की ओर सकेत किया है। उन्होने यह सिद्ध किया है कि सब प्रकार का विज्ञान वेदों मे निहित है। अधिकाश लोग इस बात को मानने से कतराते हैं और पश्चिम वालो के उच्छिष्ट भोगी बनने मे शान समझते हैं। उदाहरण के लिए गुरुत्वाकर्षण के सिद्धान्त को ही लीजिए। लोगों की यही मान्यता है कि गुरुत्वाकर्षण के सिद्धान्त की स्थापना सर्व प्रथम सन् 1687 मे 'न्यूटन' ने की थी। लेकिन यह बात तथ्य के विपरीत है। महर्षि ने ऋ० भा० भूमिका नामक ग्रन्थ मे वेदो मे किस किस मन्त्र मे आकर्षण विषयक तथ्य है, यह प्रदर्शित किया है। सब ग्रह तथा नक्षत्र परस्पर आकर्षण के बल पर टिके हुए है।

इसी प्रकार रोजर बेकन को प्रथम हवाई जहाज के क्षेत्र मे कार्य करने वाला माना जाता है तथा राइट बन्धुओ को प्रथम वायुयान निर्माता माना जाता है। हैलीकोप्टर का निर्माण 1909 मे श्री ब्रेकेट के द्वारा किया गया है। लेकिन वेद में भूमि, समुद्र और अन्तरिक्ष मे अतिद्रुत गति से चलने वाले यानो का उल्लेख है। एक मन्त्र द्रष्टव्य है—

आ नो नावा मतीना यात पाराय गन्तवे।
युञ्जाथामाश्विना रथम्॥ (ऋ० भा० भूमिका पृष्ठ 205, अजमेर सस्करण)

महर्षि ने इस मन्त्र का भाष्य करते हुए लिखा है कि, "हे मनुष्यो! आओ आपस में मिल के इस प्रकार के यानो को रचें, जिससे सब देश-देशान्तरो मे हमारा आना-जाना हो सके।"

रेडियो और बेतार के तार का खोजकर्ता इटली के वैज्ञानिक (1896 ई) जी० मारकोनी को माना जाता है। लेकिन स्वामी जी ने इस विद्या के विषय मे भी वेद मन्त्रो का हवाला दिया है। पृथ्वी को कुछ समय पूर्व तक वैज्ञानिक चपटी तथा स्थिर मानते रहे। परन्तु वेद मे बहुत पहले ही पृथ्वी को गोल व सूर्य की परिक्रमा मे रत बताया है। इसी कारण दिन रात व ऋतुओ का चक्र चलता है। अब आधुनिक वैज्ञानिक भी यही बात कहने लगे हैं।

कहने का तात्पर्य यह कि वेदो के भाष्यकर्ता अन्य कोई नही हुआ। यह मानव जाति का दुर्भाग्य था कि उस तत्वदर्शी वैज्ञानिक को भी हमारे ही लोगो ने विष दे दिया।

यदि आज भी ऋषि दयानन्द के अनुसार भारत सरकार वेदो के अनुसधान पर जोर दे तो अनेक नए वैज्ञानिक तथ्य सामने आ सकते हैं।

पता—आर्य समाज, अल्मोडा
पिन 263601 [उ० प्र०]

सन्तराम जी का जीवन दर्शन
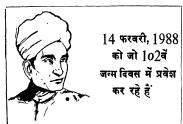
[श्री सन्तराम जी ने जो इस समय 102 वर्ष की आयु के हैं—अपने व्यक्तिगत अनुभवो के आधार पर जीवन-दर्शन के सम्बन्ध में कुछ निष्कर्ष निकाले हैं, उनमें से कुछ निष्कर्ष यहां उद्धृत किये जा रहे हैं]

"ससार छोडकर किसी गुफा या वन मे समाधिस्थ होकर बैठ जाने या ब्रह्मज्ञान छाटते रहने को मैं महात्मापन नहीं मानता। मेरी सम्मति मे महात्मा या महापुरुष वह है जो निस्स्वार्थ भाव से सामाजिक बुराइयो को दूर करके ससार को सुखी बनाने में अपना जीवन अर्पित करता है।"

"मैं तो इस लोक को ही सुखी देखना चाहता हू। परलोक मे क्या होगा, इसकी मुझे अधिक चिन्ता नहीं।"

"मैं तामसिक दान से सात्विक ग्रहण को श्रेष्ठ मानता हू। अर्थात् बेईमानी या अनुचित साधनो से बटोर कर ख्याति के लिए लाखो रुपया दान करने से मैं ईमानदारी से पैसा कमाना उत्तम मानता हू।"

"मनुष्य को उसके कर्म का फल तुरन्त या देर से अवश्य मिलता है। उसके लिये अपने कर्म फल से बचना सम्भव नही। ससार में ईश्वरीय दण्ड या पुरस्कार नाम की चीज नहीं, सब हमारे कर्मों का परिणाम है। मैं पुनर्जन्म को मानता हू।"

"मैं ऐसा समाज चाहता हू जिसमें न कोई इतना निर्धन हो कि उसे किसी से मागने की आवश्यकता हो, और न ही कोई इतना धनाढ्य हो कि लोगो का धन लुटा सके।"

"मैं न किसी को अपने से नीचा मानता हू और न किसी को अपने से ऊचा।"

"मैं न तो हिन्दू धर्म, ईसाई धर्म या मुस्लिम धर्म नाम के कोई अलग-अलग धर्म मानता हू और न भारतीय सस्कृति या पाश्चात्य सस्कृति नाम की कोई अलग-अलग सस्कृतियां। मैं केवल एक मानव सस्कृति और केवल एक मानव धर्म को मानता हू।"

"मेरी सम्मति में धर्म उन विषयों का नाम है जो मानव-समाज में सुख-शान्ति बनाए रखने में सहायता देते हैं।"

"विवाहित पुरुष लम्बी आयु जितने पाते हैं उतने अविवाहित रहने वाले नहीं।

"मांसाहारी कम ही उतनी लम्बी आयु पाते हैं जितनी कि शाकाहारी और फलाहारी।"

"मुझे सबसे अधिक प्रसन्नता उस समय होती है जब मैं किसी दूसरे की निस्स्वार्थ भाव से कोई सेवा कर पाता हू, या फिर जब मुझे कोई मेरे अपने विचारों का मनुष्य मिल जाता है।"

"जो मनुष्य अधिक खोजता और चिढ़ता है उसके भीतर या तो कोई व्याधि जड पकड रही होती है या फिर घर में उसकी अपनी पत्नी के साथ खटपट रहती है।"

"मेरा मत है कि देश के लिये मरने की अपेक्षा देश के लिये जीना अत्यधिक कठिन है।"

"जो मनुष्य अपनी चिन्ता छोडकर दूसरो की चिन्ता करता है, उसकी चिन्ता स्वय भगवान् करते हैं।"

"मैंने देखा है कि जो लोग ससार में उन्नति करते हैं उनमें वचनपालन, समय पालन, धैर्य, दृढ़ लगन, परदु खकातरता, मीठा बोलना जैसा कोई सद्गुण अवश्य रहता है।"

"मुझे मृत्यु से उतना डर नही लगता जितना कि मृत्यु तक पहुचने के मार्ग से। खाट पर पडे घुल-घुल कर मरना अपने लिये और अपने दूसरे आत्मीय जनो के लिये भी भारी कष्ट दायक होता है।"

"खिलखिलाकर हसना सचमुच सर्वोत्तम औषधि है। छोटे बच्चों के साथ खेलने से भी स्वास्थ्य पर बहुत अच्छा प्रभाव पडता है।"

"मैं अनुभव करता हू कि सवेरे और साय, दोनों काल प्रतिदिन चार पांच मील टहलने और निकम्मा न बैठकर किसी न किसी काम मे लगा रहने से रोग और चिन्ता दोनों से बहुत कुछ बचाव हो जाता है।"

"मैं यह चाहता हू कि जिस दिन मरू, सवेरे सैर करके मरू।"

श्री सन्त राम बी. ए. को स्वरचित तथा अनूदित पुस्तकों की सूची

1 हिमालय निवासी महात्माओ के अन्तिम दर्शन [उर्दू]
2 मानसिक आकर्षण द्वारा व्यापारिक सफलता
3 अलबेरुनी का भारत भाग-1
4 एकाग्रता और दिव्य शक्ति
5 गुरुदत्त-लेखावली
6 कौतूहल भण्डार
7 मानव जीवन का विधान
8 आदर्श पत्नी
9 अलबेरुनी का भारत (भाग 2)
10 विवाहित प्रेम
11 कर्म योग
12 इत्सिग की भारत यात्रा
13 पजाबी गीत
14 दम्पति मित्र
15 शिशु-पालन
16 रति-विज्ञान
17 रसीली कहानिया
18 भारत मे बाइबल (दो भाग)
19 अलबेरुनी का भारत (भाग 3)
20 काम-कुज
21 स्वर्गीय सन्देश
22 दयानन्द
23 अतीत कथा
24 नीरोग कन्या
25 रति-विलास
26 सद्गुणी बालक
27 बाल सद्बोध
28 वीर पेशवा
29 दयालू माता
30. सद्गुणी पुत्री
31 बच्चो की बातें
32 रचना-प्रदीप
33 वीर गाथा
34 सुन्दरी सुबोध
35 जान-जोखिम की कहानियां
36 विश्व की विभूतिया
37 स्वदेश-विदेश-यात्रा
38 लोक-व्यवहार
39 महिला-मणिमाला
40 रणजीत-चरित
41 भारत के महापुरुष
42 सुशील कन्या
43 हरिसिंह नलवा
44 हमारा समाज
45 सुखी परिवार
46 हमारे बच्चे
47 उद्बोधिनी
48. व्यावपारिक ज्ञान
49 देश-देशान्तर की कहानियां
50 पजाब की कहानियां (भाग 3)
51 फलाहार
52. सफलता के सिपाही
53 लोक विजय
54. सेवा कुज
55. रसभरी कहानियां
56 चमत्कारो की दुनिया
57 स्काउट बच्चों की
58 अच्छी-अच्छी कहानिया
59 जादू की नाव
60 मनबहलाव की कहानी
61 नदी की कहानी
62 नदी किनारे की कहानी
63 सफलता के सिपाही
64 दादी की कहानियां
65 आनन्द का जीवन
66 महाजनों की कथा
67 शिष्टाचार
68 बड़े लोग
69. पहाडी प्रदेश की कहानियां
70. सुखी जीवन का रहस्य
71. जीने की कला
72 चमत्कारिक अनुभूतियां
73. बच्चों की कहानियां
74. सुख और सफलता के साधन
75 अपनी बिक्री बढ़ाएं
76. मेरे जीवन के अनुभव
77. बालक
78 रसीली कहानियां
79 आत्म-परीक्षा
80. अच्छी चिट्ठी लिखने की रीति
81 जीवन-क्षेत्र में उन्नति के उपाय
82. निरोग रहने के उपाय
83. नए युग की कहानिया
84 प्रेममय विवाह
85 पत्नी धर्म
86 रसधारा
87 नर-नारी
88 आनन्दमय विवाह
89. आत्म-परीक्षा
90. जन्म-मरण की पहेली
91. प्रेरणामय वचन और सूक्तियां
92. पत्नी पति को उन्नति में सहायता कैसे दे सकती है ?
93. परिहास और बुद्धिमत्ता
94. रोमांचिक वन्य जीवन की झांकी
95. मन के जीत जीत (अनुवाद)
96 जैसे चाहे वैसे जीओ

शिव को अशिव मत बनाइए

—गजानन्द आर्य—

ऋषि जीवन की एक घटना है। महाराज पूना नगर में ठहरे थे, प्रतिदिन प्रवचन शंका समाधान और शास्त्रार्थ की चर्चाओं से पूना निवासी बहुत प्रभावित थे। किन्तु कुछ ऐसे भी थे जो स्वामी जी को विद्याबल से परास्त न कर सकने के कारण उनको बदनाम करने के नये-नये हथकंडे अपना रहे थे। एक दिन भक्तजनों ने स्वामी जी को बतलाया कि एक आदमी को रंग से रंगकर गले में पट्टी डाली है, जिस पर लिखा है पंडित दयानन्द। उस आदमी को एक गधे पर उल्टा मुंह करके बैठाया है, कुछ शरारती बच्चे पीछे-पीछे शोर मचाते जा रहे हैं। स्वामी जी कुछ मुस्कराये, पर पास बैठे नवयुवकों से चुप नहीं रहा गया, कहने लगा, "स्वामी जी आप यदि अनुचित न समझें तो हम उन दुष्टों को मजा चखा आवें।" स्वामीजी ने शान्त करते हुए समझाया, "देखो! असली दयानन्द तुम्हारे सामने बैठा है, उनके पास कोई नकली दयानन्द है, जिसका वे मखौल उड़ा रहे हैं। नकलचियों की यही दशा होती है। अत आप लोग जीवन में असली चीज को असली कहें, नकली को असली समझने की भूल न करें।

पूना की पुनरावृत्ति

उपरोक्त घटनाचक्र मे मखौल उड़ाने वाले वे जन थे, जो स्वामी जी के द्वेषी बने हुए थे। उनके द्वेषी होने का कारण था उनके स्वार्थ पर आंच आना। पर समय का फेर देखिये कि स्वामीजी के प्रति श्रद्धाभक्ति रखने वाले हम आर्य लोगों ने स्वय ही पूना वाले ड्रामे को बड़े जोर-शोर से अपनाना शुरू कर दिया है। हमारा वह ड्रामा विभिन्न स्थानों पर विभिन्न नामों से होता हुआ भी दृश्य एक जैसा प्रस्तुत करता है। हमे नित्य प्रति समाचार पत्रों में समाचार पढ़ने को मिलते हैं। [1] आज पुलिस ने दयानन्द मार्ग में एक जुए के अड्डे पर छापा मारा, [2] दयानन्द नगर निवासी एक व्यक्ति आज बलात्कार के आरोप मे पकड़ा गया, [3] कोर्ट में आज दयानन्द मार्केट मे हुए मकान मालिक और किरायेदारों के बीच हुई मारपीट कांड की सुनवाई हुई इत्यादि। ऐसे समाचारों के साथ दयानन्द का नाम जुड़ने से क्या दयानन्द का सम्मान होता है? जरा और आगे की कल्पना कीजिये, सैकड़ों वर्षों के पश्चात् के आर्य समाजी अथवा गैर आर्य समाजी पुराने समाचार-पत्रों अथवा कोर्ट के केसों के माध्यम से आर्य समाज को जानने का प्रयास करेंगे, तब उनको कैसा मसाला मिलेगा।

दूसरे मतावलम्बियों की देखादेखी हमने ऋषि के नाम को उजागर करने के सस्ते फार्मूले अपनाने शुरू कर दिये हैं। हर किसी बस्ती में अथवा सस्थान में दयानन्द के कार्यों की चहल पहल न हो। मात्र नाम रख देने से वहां के निवासी कुछ प्रभावित होते हो ऐसा भी नहीं है। श्रद्धानन्द मार्ग अगर वेश्याओं के कोठे के लिए प्रसिद्ध हो और वहां शराब व मास धड़ल्ले से बिकते हों तो क्या वह कल्याण मार्ग के पथिक स्वामी श्रद्धानन्द के प्रति हमारी श्रद्धा का प्रतीक है? नामकरण से सस्ती प्रसिद्धि के अलावा कुछ उपलब्धि नहीं है।

नगर ग्राम मोहल्ले और सड़कें चिरस्थायी नहीं हैं। इनके माध्यम से यदि चिरस्मरणीय रहा जाता तब महात्मा बुद्ध और उनके उपदेशों को भूलना नहीं चाहिये था, क्योंकि 2500 वर्ष पहले देश के चप्पे-चप्पे में बुद्ध धर्म के उपदेशों को पत्थरों पर अंकित कर दिया गया था। आज वह पत्थर सम्भवतः किसी अजायबघर में देखे जा सकें। आर्य समाज मे हर किसी स्थान का नाम दयानन्द रख देने की प्रवृति स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् अधिक बढ़ी है। पहले इतना अवश्य होता था कि जिस स्थान पर आर्य समाज का विशेष सम्मेलन व अधिवेशन किया जाता था उस स्थान का प्यारा सा नाम आयोजन के दिनों तक के लिए रख दिया जाता था। तब उस अस्थायी नाम की सार्थकता एव गरिमा थी।

ऋषि के नाम को ट्रेड मार्क मत बनाइए

मेरा अभिप्राय ऋषि के नाम को मार्गों—नगरों अथवा बस्तियों के साथ जोड़ने के विरोध मे नही है। मेरा मात्र यह आग्रह है कि ऋषि के पवित्र नाम को सरकारी आई०एस०आई० ट्रेड मार्क की तरह बहुत सोच समझकर प्रदर्शित करें। वह नाम इतना गौरवशाली रहना चाहिए कि किसी जगह का नाम इस नाम पर न रखा जाय। आई०एस०आई० ट्रेड मार्क लगाने का अधिकार हर किसी निर्माता को नहीं होता है। विशेष नियमों व प्रक्रियाओं का पालन करने पर आई०एस०आई० मार्क लगाने की अनुमति मिलती है, इससे उस वस्तु की विश्वसनीयता बनी रहती है। इसी प्रकार जिस स्थान पर आर्य समाज का वर्चस्व और गतिविधियां हों उसी क्षेत्र को दयानन्द नाम दिया जाना चाहिए। आर्य समाज और ऋषि दयानन्द हमारे आदर्श हैं उनके नाम आदर्श के प्रतीक हैं। ऐसे प्रतीकों को पूना की तरह नकली बनाने की भूल हम से नही होनी चाहिए। अन्य मतावलम्बी अपने महापुरुषों का नाम जोड़कर यदि सस्ती प्रसिद्धि लेते हो तो हमे वैसा अनुकरण नहीं करना ही श्रेष्ठ है। पंडित गुरुदत्त जी ने ऋषि निर्वाण के पश्चात् ऋषि के स्मारक पर अपने विचार देते हुए कहा था—"ऋषि का स्मारक ईंट पत्थर पर नाम खुदवाकर नहीं बन सकता।"

शिवरात्रि का जागरण सारा शिवभक्त जगत कर रहा था। भक्तों की उसी परम्परा मे छोटा-सा बालक मूलशकर भी रत-जगा कर रहा था। जाग रूक मूलशकर ने शिवनामधारी प्रतिमा पर चूहों के अशोभनीय कार्यों को देखकर उस प्रतिमा को शिव मानने से अस्वीकार दिया था। ऋषि बोध के इस पावन प्रसंग पर हम आर्यों को नकली और असली का भेद समझना चाहिये।

जल रहा था एक दीपक

—प्रकाशवीर व्याकुल—

जल रहा था एक दीपक, और दयानन्द देव का मन शिव भवन मे जग रहा था।
जग रहा था दो दियों की ज्योतियो से, भ्रम कहीं तम की तरह ही भग रहा था॥
थी निशा सुनसान की सरगम सजोए, भक्त जन कर्तन पिता तन्द्रा में खोए।
मूल शकर ने दो शकर से मिलन को, दीप दो नयनों के थे जगमग सजोए।
आस के कोए में जल, विकसित कमल के अंक में पल फल बना।
लग मग रहा था॥ 1
जग रहा था एक दीपक और दयानन्द

भव्य भव मूर्ति हिम में भावनाए, झाकती उन्मुक्त पट कोई सुनरी सी।
ज्ञान त थान पर चढते थिरकते ओढ कर वैराग रूपी चूनरी सी।
मूंदरी में भारती के ज्यों विधाता, जड़ कोई अनमोल हीरा नग रहा था॥ 2
जग रहा था एक दीपक और दयानन्द ..

देखा कौतूहल कि उच्छृङ्खल चूहे ने, भोग व फल फूल खाए या बखेरे।
कहें हिले पर रुद्र शिव त्रिशूल धारी, मूलशकर देख पत्थर के बटेरे।
टेर कर बोले पिता से क्या यही शिव? सत्य से परिचित कहा वो भग रहा था॥ 3
जग रहा था एक दीपक और दयानन्द .

उठ चला अतृप्त ले मन की पिपासा, दीप जिज्ञासु से कुछ कहने लगा तब।
पाठ दीपक से पढा उद्दीप्त हो तब, मन भरा उच्चाट सा रहने लगा तब।
क्यों वह सहने लगा था द्वन्द्व जग के सत्य शिव की ओर बढ़ पग पग रहा था॥ 4
जग रहा था एक दीपक और दयानन्द

तब कवि "व्याकुल" निरख ससार सारा, दे के उजियारा धर्म श्रुति सतकर्म का।
योग से उद्योग कर झकझोर जग को बुन गए ताना तराना सा मर्म का।
कम नहीं था काम चूहे का गजानन राष्ट्र रूपी बन सबल रग रग रहा था।
जग रहा था एक दीपक और दयानन्द
देव का मन शिव भवन में जग रहा था॥

पता—आर्य समाज, नया बांस, दिल्ली 6

आर्य-भाषा और संस्कृत के सम्बन्ध में
ऋषि दयानन्द का मन्तव्य

वर्तमान भारत के संविधान मे आर्य-भाषा हिन्दी को राष्ट्र भाषा माना गया है। महर्षि दयानन्द सरस्वती बहुत दीर्घदर्शी थे, उन्होने 113 वर्ष पहले इस बात को जान लिया था कि देश की एक लिपि और एक भाषा होनी चाहिये। अत जन्म से गुजराती होते हुए भी उन्होने अपना प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश आर्य-भाषा मे लिखा तथा लिपि के लिये उन्होने देवनागरी को ही अपनाया और राष्ट्र-भाषा के लिए आर्य भाषा (हिन्दी) को स्वीकार किया।

आर्य-भाषा के साथ वे संस्कृत की उन्नति भी चाहते थे। अत महर्षि जी के विचार माननीय हैं।

1 जब पांच-पाच वर्ष के लड़का लड़की हो, तब देवनागरी अक्षरो का अभ्यास करावें। अन्य देशीय भाषाओ के अक्षरो का भी। (स० प्र० समु० 2 पृ० 15)

2 इस पाठशाला मे मुख्य संस्कृत जो मातृभाषा है, उसकी ही वृद्धि देना चाहिए। (पत्र संख्या 359)

जोधपुर नरेश को पत्र

3 आप महाराज कुमार की शिक्षा के लिये किसी मुसलमान व ईसाई को मत रखिये। नही तो महाराजकुमार इनके दोष सीख लेंगे और आपके सनातन राजनीति को न सीखेंगे, न वेदोक्त धर्म की ओर उनकी निष्ठा होगी, क्योंकि बाल्यावस्था मे जैसा उपदेश होता है वही दृढ़ हो जाता है। उसका छूटना दुर्घट है। महाराजकुमार के संस्कार सब वेदोक्त कराइयेगा। 25 वर्ष तक ब्रह्मचर्य रख के प्रथम देवनागरी भाषा और पुन संस्कृत विद्या, जिसमें सनातन आर्य ग्रन्थ हैं, जिनके पढने में परिश्रम और समय कम होवे और महा लाभ प्राप्त हो। इन दोनों को पढ़े। पश्चात् यदि समय हो तो अंग्रेजी भी।

(पत्र संख्या 509)

4 इनसे विदित है कि तुम्हारी पाठशाला मे अलिफ-बे और कैट-बैट की भरमार है, जो कि आर्य-समाजो को विशेष कर्तव्य नही है। (पत्र संख्या 498)

5 वेद भाष्य के लिफाफे पर रजिस्टर के अनुसार ग्राहकों का पता किसी देवनागरी जानने वाले से नागरी में लिखाकर टपाल किया करें। (पत्र संख्या 109)

6 गो-रक्षार्थ सही आर्य-भाषा को राज्यकार्य में प्रवृत्त होने के अर्थ शीघ्र प्रयास कीजिये। (पत्र संख्या 434)

7 इस पाठशाला मे अधिक करके संस्कृत की उन्नति पर ध्यान रखना चाहिये। (पत्र संख्या 354)

8 जहा तक बने, पाठशाला के उद्देश्य पर कि संस्कृत की उन्नति हो, सो इस पर अच्छे प्रकार ध्यान रहे। (पत्र संख्या 358)

9 आप लोगो की पाठशाला मे आर्य-भाषा और संस्कृत का प्रचार बहुत कम और अन्य भाषा उर्दू, फारसी अधिक पढ़ाई जाती है यह हजार मुद्रा का व्यय संस्कृत की ओर से निष्फल होता भासता है बहुत काल से आर्य वर्त मे संस्कृत का अभाव हो रहा है—वरन् संस्कृत रूपी मातृभाषा की जगह अंग्रेजी लोगो की मातृभाषा हो चली है इस (अंग्रेजी) की वृद्धि मे हम तुमको आवश्यकता नही दीखती। (पत्र संख्या 405)

आर्य समाज खेडा अफगान का उत्सव

आर्य समाज खेडा अफगान जिला सहारनपुर का वार्षिक उत्सव 28, 29 फरवरी व 1 मार्च को मनाया जा रहा है जिसमें आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् भजनोपदेशक आमन्त्रित किये गये हैं।

अनुकरणीय दान

खेडा अफगान आर्य समाज के प्रधान श्री सतपाल जी ने अपने पिता श्री हरीकृष्ण जी की पुण्य स्मृति में 500) रु० दान दिया।—आदित्य प्रकाश गुप्त मन्त्री

वेद पारायण यज्ञ

आर्य समाज कु० ह० रा० मा० स्कूल एच-ब्लाक (हिन्दी माध्यम) अशोक विहार दिल्ली मे 4 से 9 जनवरी तक सामवेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद प्रो० रतन सिंह जी का प्रवचन हुआ।

डी० ए० वी० स्कूल के खेल उत्सव

डी० ए० वी० शताब्दी पब्लिक स्कूल रोहतक का वार्षिक उत्सव 13 दिसम्बर 1987 को श्री दरबारी लाल (संगठन सचिव डी० ए० वी० मैनेजिंग कमेटी) की अध्यक्षता मे मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि हरियाणा सहकारिता मन्त्री ने स्कूल के इस खेल उत्सव की प्रशंसा की। प्रतियोगिता में विजयी छात्रों को श्री दरबारी लाल जी ने पारितोषक वितरण किया।

आल इण्डिया रेडियो के हरियाणा दर्शन कार्यक्रम में लगभग सात मिनट तक का प्रसारण इस खलकूद प्रोग्राम को दिया गया।

—आर्य समाज एच ब्लाक कु० ह० मा० स्कूल अशोक विहार I, दिल्ली के चुनाव मे श्रीमती सुदेश सेखरी प्रधान, श्री वेदमूर्ति मन्त्री और श्रीमती अन्जू गुप्ता कोषाध्यक्ष चुने गये।

इस प्रमाद का ह्रास कीजिए

—आचार्य रामकिशोर शर्मा—

अभी समय है शीघ्र उठो सब, इस प्रमाद का ह्रास कीजिये।
अपनी सोई शक्ति जगाओ, मत अपना उपहास कीजिये ॥
यह वह भारत देश जगत् को, जिसने जीवन दान दिया था।
जिससे सभी सुखी हो प्राणी, ऐसा पावन ज्ञान दिया था ॥
निरपराध असहाय जीव को, कभी सताया नही किसी ने।
जीव मात्र का दुख हरने को, यहा अपना बलिदान किया था ॥
अपने उस स्वर्णिम अतीत का, सदभ्यस्त इतिहास कीजिये ॥ अभी०
जिस पर चले पूर्वज क्यो हम, उस पथ पर पग धर न सकेंगे।
जो कुछ किये उन्होंने क्यो वे कार्य आज हम कर न सकेंगे ॥
इसे विचारें बिना सभी हम, बने हुए कर्तव्यमूढ़ हैं।
इसलिये उस ही प्रिय पथ पर, चलने का अभ्यास कीजिए ॥ अभी०
ईश्वर ने जहा सबसे पहले, सृष्टि बनाकर ज्ञान दिया था।
जहा हमारे ऋषि मुनियो को, गुरु बनने का मान दिया था ॥
वहीं आज उस दिव्य ज्ञान के, आलोचक बढ़ते जाते हैं।
पहले भी यहा भ्रमित व्यक्तियो के, भ्रम का अवसान किया था ॥
आलोचक गण का मुख मुद्रण, करने हेतु प्रयास कीजिए ॥ अभी०
आज विदेशी मृग तृष्णा मे, अपने अपने रिपु बन बैठे।
सदा हृदय से लगे रहे जो, वे ही अब हटकर तन बैठे ॥
इस स्थिति मे क्या अखण्डता, और एकता रह पायेगी।
हन्त आज जो संविधान के, विध्वंसक शासक बन बैठे ॥
यथा शीघ्र वैदिक संस्कृति का, जन-जन मे सुविकास कीजिये ॥ अभी०

—श्री राधा कृष्ण संस्कृत महाविद्यालय खुरजा (उत्तर प्रदेश)

आजादी दिलाऊंगा

—विजय प्रेमी, पत्रकार

आजादी दिलाऊंगा, जो मुझे खून दोगे तुम,
ऐसा वो सुभाष मेरे—भारत का लाल था।
गुम नाम हो गया, ना जाने किस रूप में,
गोरों को निकालने में, उसका कमाल था ?
नाक मे नकेल कैसी पिरोयी अकेले ने,
शहीदों मे एक वो शहीद बेमिसाल था ॥
हिन्द फौज, आजादी की खातिर बनाई थी,
एक अनुशासन की लहर सी चलाई थी।
बांध के सरो पे जो कफन चल दिए थे,
ऐसे देश भक्तो की रचना रचाई थी।
लिख गया तकदीर जो अपने वतन की,
मिट्टी की सुगन्ध जैसे होली का गुलाल था ॥
कुर्सियो के वारिसो—देखो आख खोल कर,
कभी विचार करो, खुद को ही तोल कर।
बे गुनाह देश वासी, मौत के शिकार हैं,
नेताजी को देखो जरा, अपना भी मोल कर।
श्रद्धा के सुमन जो, चढ़ाना चाहो उन पर,
बन जाओ ऐसे तुम, जैसे वो विशाल था ॥
रोता है गगन और धरती भी रोती है,
दिशा-दिशा आज मेरे वतन की भी रोती है।
जिस अंगरेजी के चलन को हटाया था,
आज वही अंगरेजी, भारत को डुबोती है।
भारत ही रहने दो न इण्डिया बनाओ तुम,
हिन्दू हिन्दी भाषी नेता, हिन्द की मशाल था ॥
देश को बचाना है तो सोचें आगे आइये,
सही इतिहास अपने बच्चों को पढ़ाइये।
गुमराह हो रही है पीढ़ी मेरे देश की,
नेता जी की तस्वीर सबको दिखाइये,
देश हित मरने की, प्रेरणा के मूल में,
नेता जी के सामने वह गुरखो का काल था।
गगा में है अब तक जल मेरे दोस्तों,
तब तक नेताजी को याद किया जायेगा।
ध्वजा बन खड़ा रहा, तिरगे की शान का,
ऐसा नेता जाने कब संसद में आयेगा।
कमीशन खाने वाले, भले उसे भूल जायें,
भूलगी न जनता जो भारत का लाल था।
आजादी दिलाऊंगा, जो मुझे खून दोगे तुम,
ऐसा वो सुभाष मेरे, भारत का लाल था।

पता—383, सदर कबाड़ी बाजार, मेरठ०

आत्मबोध की वेला

—अरुण कुमार "निर्भीक" सिद्धान्ताचार्य—

कौन कह सकता था कि राज वैभव की सुखद गोद में परिपालित और विलासिता के वारिधि में विचरण शील, कोमलकाय, सुस्मितवदन गौतम एक छोटी सी घटना के दृश्य से अपने जीवन का क्षण ही बदल देगा और एक नवीन सम्प्रदाय का आचार्य बन कर विश्व के इतिहास में अपना नाम अमर कर जायेगा? कौन जानता था कि कलिंग के युद्ध में अनेक हताहतों को देखकर नृशंस अत्याचारी राजा अशोक संसार प्रसिद्ध धर्मप्रिय प्रियदर्शी अशोक बन जायेगा। कौन जानता था कि फलोद्यान में एक वृक्ष से गिरते हुए सेब को देखकर उसकी छाया के नीचे लेटा हुआ बालक विज्ञान-शास्त्र का पिता न्यूटन संसार के सम्मुख विज्ञान का एक महान् आविष्कारक बन जायेगा? किसे पता था कि एक उड़ती हुई पतंग को देखकर विद्युत शक्ति का आविष्कार फ्रैंकलिन के मस्तिष्क की उपज बनेगा? कौन जानता था कि आग पर चढ़ी हुई बटलोई के ढक्कन को हिलता हुआ देखकर जेम्सवाट उस वाष्प शक्ति का महान् आविष्कार कर सकेगा जो आज संसार के समस्त रेल, जहाज और मशीनों का संचालन कर रहा है? कौन जानता था कि मकड़ी के जाले को वृक्ष की दो शाखाओं के बीच में देखकर होवार्ट के मस्तिष्क में नदियों और समुद्रों के ऊपर पुल बनाने का विचार उत्पन्न होगा?

कौन जानता था कि शिव लिंग पर चढ़ते हुए एक छोटे से चूहे को देखकर मूलशंकर के मस्तिष्क में एक ऐसा विचार विप्लव उठेगा जो उसे संसार का महान् सुधारक ऋषि दयानन्द बना कर रहेगा? सदा ही पूजन आदि के समय अनेक बार मूर्तियों पर भाग-दौड़ मचाने वाले मोटे-मोटे चूहों को देखते हुए भी किसी मूर्ति पूजक के हृदय में वह उथल-पुथल और विचार क्रान्ति नहीं हुई जैसी कि बालक मूलशंकर के मन में आज से लगभग 150 वर्ष पूर्व शिव पूजन के समय हुई थी।

अनोखा तो कुछ भी नहीं

ऐसी घटनाएं सदा ही होती रही हैं। अब भी हो रही हैं और आगे भी होंगी। परन्तु जैसे सामान्य पुरुष उन्हें देखते हुए भी नहीं देखते। कोई विरला महानुभाव ही उन्हें समझता है और वह जब हमें बताता है तभी हम उसकी महत्ता को समझ कर कहते हैं, हां ठीक तो है। देखिए न, रास्ते चलते हुए बूढ़ों और श्मशान की ओर ले जाये जाते हुए मृत पुरुषों को देखकर सिद्धार्थ के समान विरक्त होते हुए पहिले किसी को नहीं सुना और न आज ही ऐसा कहीं देखने में आता है। परन्तु बुद्ध-वैराग्य की कथा सुनकर आज सभी उसे बिलकुल स्वाभाविक और ठीक समझते हैं। इसी तथ्य को दूसरे रूप में भी व्यक्त किया जा सकता है कि इन छोटी-छोटी बातों के पीछे छिपे हुए महान सत्य को, "सरसों के पीछे पर्वत" को देखने वाले ही असाधारण अथवा महान् होते हैं।

क्रान्तदर्शी दयानन्द

भारत में अनेक भ्रान्त रूढ़ियां बड़े दीर्घ समय से चली आ रहीं थीं। उनका इतना अधिक विस्तार था कि, सत्य को समझना अथवा उनमें से खोज निकालना असम्भव सा हो गया था। बड़े-बड़े शास्त्रों और पुराणों का पारायण करने वाले पण्डित भी लीक पीटते हुए अन्धेरे मार्ग पर एक के पीछे एक चलते जाते थे। यहां तक कि उन्होंने अपने इसी भ्रान्त विश्वास के अनुसार सत्य-ज्ञान वेद के विचित्र भाष्य करने में ही अपने पाण्डित्य को खपा डाला। कोई भी इसके रहस्य को नहीं समझता था। सभी इन सभी बातों को देखते थे और इनके बाह्यस्वरूप को ही चरम सत्य समझकर उसका अनुगमन कर रहे थे। परन्तु सौभाग्य से महर्षि दयानन्द ने अपनी क्रान्तदर्शिनी प्रतिभा से, छिपी हुई वस्तु को देखा। रहस्य को समझा।

(लेखक)

और आज उनकी कृपा से तथाकथित रहस्य—रहस्य नहीं रहे हैं। सभी उनको समझते हैं। अब वे एक साधारण विषय बन गए हैं। हम और आप चलते फिरते उनकी चर्चा बहुत सरलता से करते हैं।

आत्म बोध की वेला

संसार का इतिहास बताता है कि दोनों प्रकार के—अप्रकाशित और असत्य से आवृत्त सत्य का उद्घाटन करने को समय-समय पर आवश्यकतानुरूप महान् पुरुषों का प्रादुर्भाव होता रहा है। जब जब देश और जातियां अपने मिथ्या विश्वास से दब गईं तब तब उनका उत्थान करने के लिए उद्धारकों का जन्म हुआ है। वर्तमान समय के सच्चे मार्गदर्शक के लिए महर्षि दयानन्द का प्रकाश हुआ था। उसने शिवरात्रि के दिन सत्य शिव का दर्शन कर सुप्त भारतीयों को शिव-दिवस की मधुर सौवर्णी-उषा का पुण्य दर्शन कराया था, हम उनके सदा आभारी हैं। परन्तु केवल आभार मानने से ही तो काम नहीं चलेगा। जिस सुप्त भावना को उन्होंने उद्बुध किया था उसको उद्बुध रखने के लिए, उसको अधिकाधिक सतर्क रखने में ही हमारा कल्याण है।

उसका जीवन और उपदेश हमें बताता है कि उन्नतिशील समुदाय किसी वस्तु के बाहरी रूप को देखकर ही उसमें सन्तुष्ट नहीं हो जाता, अपितु उसमें अन्तर्निहित सत्य की प्राप्ति में ही अपनी कृतकृत्यता समझता है। वह सत्य का अन्वेषण ही उसकी गति का चिन्ह है जहां यह आग बुझ जाती है वहां जीवन दीप भी बुझा हुआ ही है। वहां जीवन की उष्णता कहां? अतः इस समय जब कि बाल-विवाह, सतीप्रथा आदि कुप्रथाएं मुंह-बाए खड़ी हैं, हम उस कल्याणकारी रात्रि (शिवरात्रि) को, जिसने बालक मूलशंकर को महर्षि दयानन्द बना दिया, उस महान् आत्मा की बोध एवं जन्म स्थली टंकारा में उपस्थित होकर आत्म बोध करें तथा नई चेतना, नई उष्मा का अपने अन्दर प्रादुर्भाव करें।

पता - उपदेशक महाविद्यालय टंकारा जि० राजकोट (सौराष्ट्र) 363650

प्रज्ञाचक्षु आचार्य राम शास्त्री का सफल आपरेशन

संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित, प्रसिद्ध आयुर्वेद चिकित्सक, प्रज्ञाचक्षु 97 वर्षीय, आचार्य राम शास्त्री के अचानक घर में फिसल जाने से कूल्हे की हड्डी टूट गई थी। उनका सफल आपरेशन 30 जनवरी को डा० पी० के० दवे ने किया। लोक सभा अध्यक्ष डा० बलराम जाखड़ आपरेशन से पूर्व उनका कुशल-क्षेम पूछने मेडिकल इंस्टिट्यूट पहुंचे थे। आचार्य जी का हाल जानने के लिए वरिष्ठ पत्रकार, स्वतन्त्रता सेनानी श्री क्षितीश वेदालंकार, कांग्रेसी नेता डा० योगानन्द शास्त्री, महीपाल सिंह भाटी, प्रसिद्ध गजल गायिका शान्ति हीरानन्द एवं प्रसिद्ध उद्योगपति श्री गजानन्द आर्य एवं सत्यानन्द आर्य आदि भी पहुंचे। सम्प्रति वे ऑल इण्डिया मेडिकल इंस्टिट्यूट के प्राइवेट वार्ड में 10 जनवरी से भर्ती हैं।

—अभयदेव शर्मा

बसन्त मेला सम्पन्न

अखिल भारतीय हकीकत राय समिति और आर्य समाज मन्दिर सरोजिनी नगर की ओर से धर्मवीर हकीकत राय बलिदान दिवस व बसन्त मेला 24 जनवरी को समारोह पूर्वक मनाया गया। बृहद यज्ञ के ब्रह्मा प० हुकम चन्द वेदालंकार थे। रतन चन्द आर्य पब्लिक स्कूल सरोजिनी नगर के बच्चों ने वीर हकीकत के जीवन पर रोमांचक ड्रामा प्रस्तुत किया। समारोह में श्री क्षितीश वेदालंकार, श्री यशपाल सुधांशु, डा० धर्मपाल, स्वामी स्वरूपानन्द, श्री हरबंस लाल कोहली, डा० शिव कुमार शास्त्री, श्री राम नाथ सहगल, श्री हरबंस सिंह खेर, श्री राम लाल मलिक व अन्य विशिष्ट व्यक्तियों ने भाग लिया।

—रोशन लाल गुप्त मंत्री

आर्यसमाज चैम्बूर, बम्बई का उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज कलेक्टर कालोनी, चैम्बूर बम्बई का वार्षिकोत्सव 25, 26, 27 दिसम्बर तक नवजीवन कालोनी, में सम्पन्न हुआ उत्सव से पूर्व से 24 दिसम्बर तक स्वामी सच्चिदानन्द अमृतसरी की कथा हुई। 25 को महात्मा आर्य भिक्षु के उद्घाटन भाषण के साथ उत्सव आरम्भ हुआ, दोपहर में नगर कीर्तन में नगर के विभिन्न समाजों ने भाग लिया। 26 को महिला सम्मेलन श्रीमती लज्जारानी गोयल की अध्यक्षता में हुआ जिसकी मुख्य अतिथि श्रीमती सुशीलादेवी विद्यालंकृता थीं। समाज की प्रधाना श्रीमती वीरावाली मेहता और मन्त्रिणी श्रीमती विमल विज ने आगन्तुक महिलाओं का आभार प्रदर्शन किया। 27 को श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री ओंकार नाथ आर्य की अध्यक्षता में हुआ जिसके मुख्य अतिथि प० सत्यकाम विद्यालंकार थे। उत्सव में श्री श्याम देव शास्त्री, श्री सूद जी, श्री रामदत्त शास्त्री, डा० सोमदेव डा० रामप्रसाद वेदालंकार, डा० सोमप्रकाश विद्यालंकार प० रामकृष्ण शास्त्री, श्री राजीव तैलंग, श्री देवव्रत शास्त्री आदि के उपदेश और भजन हुए। अन्त में समाज के प्रधान श्री गुलजारी लाल और मन्त्री श्री ईश्वर मित्र शास्त्री ने विद्वानों का आभार प्रकट किया। —देवव्रत शास्त्री आर्य समाज, चैम्बूर बम्बई।

आवश्यक सूचना

दर्शन उपनिषदादि ग्रन्थों के अध्ययन एवं योग प्रशिक्षण प्राप्त करने के इच्छुक योग्य ब्रह्मचारी 15, 16, 17 फरवरी को टंकारा में मनाये जाने वाले ऋषिबोधोत्सव पर शिविर सम्बन्धी जानकारी तथा स्वयं के परिचय के लिए मुझसे मिलें। —स्वामी सत्यपति परिव्राजक आर्य वन विकास फार्म रोजड, सागपुर साबरकांठा गुजरात-383307।

हमें अत्यन्त दुःख के साथ पाठकों को सूचित करना पड़ रहा है कि इसी व्याकरण और वैदिक वाङ्मय के प्रतिभाशाली और ऊहावान् विद्वान्, उत्तर प्रदेश हो गया। उनके नाम के साथ 'स्वर्गीय' विशेषण लगाते हुए कलम कांपती है। उन्हीं के पाण्डित्य और प्रतिभा का निम्न लेख श्रद्धांजलि के रूप में प्रस्तुत है। 26 जनवरी को, जब सारा देश गणराज्य दिवस की धूमधाम में व्यस्त था तब, आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधान, आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री का देहावसान 'भगवदिच्छा बलीयसी।'

पुराणों में देवासुर संग्राम और वैष्णवों का द्वन्द्व है। सत्ययुग में हिरण्यकशिपु और प्रह्लाद की कथा, त्रेता में रावण और राम की कथा शैव और वैष्णवों के पारस्परिक संघर्ष की सूचक है।

पौराणिक कल्पना के अनुसार शिव कैलाश पर्वत पर रहता है, हिमालय की पुत्री पार्वती से पाणिग्रहण करता है, दक्ष हाथ में त्रिशूल धारण करता है और वाम हस्त में डमरू सिर पर गंगा है, मस्तक पर अर्धचन्द्र है, तीन नेत्र हैं, सवारी नांदिया अर्थात् वृषभ है, गले में मुण्डमाल है, बाघाम्बर धारण किया हुआ है, सर्पों का यत्रतत्र बन्धन है। देवों के कष्ट दूर करने के लिये विषपान कर नीलकण्ठ नाम पाया। इत्यादि शिव विषयक किम्वदन्तियां प्रसिद्धि पा चुकी हैं।

शिव के वास्तविक स्वरूप पर विचार करें।

—अर्थात् इन्द्रियों से सूक्ष्म इन्द्रियों के विषय हैं, उनसे भी सूक्ष्म मन है और मन से भी सूक्ष्म बुद्धि है तथा बुद्धि से भी सूक्ष्म काम है। इसलिये हे अर्जुन! कामरूपी महान् शत्रु से मोर्चा ले। योगी अपने मस्तिष्क के विशुद्ध विचारों द्वारा कामरूपी महाशत्रु को भस्म कर देता है। योगी कामासक्त नहीं होता।

त्रिशूल, नांदिया, मुण्डमाल

संसार में तीन प्रकार के दुःख हैं जिनके अन्तर्गत समस्त दुःखों का समावेश होता है आध्यात्मिक, आधिदैविक एवं आधिभौतिक। इन दुःखों से छुटकारा पाने में योगी भरसक प्रयत्नशील और अत्यन्त पुरुषार्थी होता है—

"अथ त्रिविधदुःखात्यन्त
निवृत्तिरत्यन्त पुरुषार्थः"
(सांख्य दर्शन 1 1)

तीनों प्रकार के दुःखों को दूर करना ही अत्यन्त पुरुषार्थ है। ये तीनों दुःख

पूषन्नेकर्षे यम सूर्य प्राजापत्य व्यूह रश्मीन् समूह। तेजो यत्ते रूपं कल्याणतम तत्ते पश्यामि योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि।

यः असौ पुरुषः स अहम् अस्मि= जो, असौ=प्राण में, असौ=यह, पुरुष =पुरुष है। सः वह, अहम्=मैं अस्मि =हूं। यह 'सोऽहम्' नाद आत्मा का अजपा जाप है जो प्रतिक्षण निरन्तर चलता रहता है। [असु=असौ= सप्तमी]।

योगी अपने अतीत जन्मों को जान लेता है कि मैंने कौन-कौन से शरीर धारण किये। बिना सिर का शरीर कभी पहचाना नहीं जा सकता इसलिए शरीरमाल न कह कर मुण्डमाल कहा है, वह अनेक जन्मों की शरीर धारण क्रिया को पहचान लेता है यही उसका मुण्डमाल धारण करना है। योगीश्वर कृष्ण के शब्दों में —

है। इसलिये उसका ज्ञान सर्वत्र प्रसृत होता है। वह भेदभाव को भूल कर सबका भला करता है।

चन्द्र आह्लाद का प्रतीक है। चन्द्रमा को देखकर मन में स्वाभाविक प्रसाद उत्पन्न होता है। 'चन्द्रमा मनसो जातः' इसीलिए चन्द्रमा को देखकर प्रसन्न होता है। चन्द्रमा का दूसरा नाम सोम है। सोम के कारण योगी में सौम्यता का गुण उत्पन्न होता है। योगी सोमरस का पान करता है। द्वितीया का चन्द्र जितना प्यारा लगता है उतना पूर्णिमा का भी नहीं, क्योंकि पूर्णिमा के पश्चात् निराशा का आकलन होता है और द्वितीया के पश्चात् आशा उत्तरोत्तर बलवती होती है।

सर्प, नीलकण्ठ, बाघाम्बर

योगी के काम, क्रोध, मद, मोह ईर्ष्या, द्वेष आदि विषधर अन्तर को छोड़कर बाहिर आ बैठते हैं, उसका अन्तःकरण विशुद्ध हो जाता है। उसको

वैदिक शिव, शिवतर और शिवतम

—स्व आचार्य विश्वबन्धु—

हमारी संस्कृति अध्यात्म प्रधान है। जहां संसार की विभिन्न संस्कृतियां भोग प्रधान हैं, वहां भारतीय संस्कृति त्याग प्रधान है। आध्यात्मिकता में योग का विशेष महत्त्व है। योगी ही सच्चा शिव है।

योगी भी कैलाश पर निवास करता है। पर्वत दृढ़ता का प्रतीक है। पर्वत व्रत का प्रतीक भी है। कैलाश परोक्ष रूप है, इसका प्रत्यक्ष रूप कीलाश है। संस्कृत साहित्य में कीलाश=अमृत और अश= भोजन को कहते हैं, अर्थात् योगी अमृत भोजी होते हैं। इस भोजन में वे चातक व्रती हैं। वे अमृत भोजन पर पर्वत के समान दृढ़ हैं। वे मृत्यु के रहस्य को उद्घाटित करना चाहते हैं।

उस दृढ़ता से योगी आगे बढ़ता है। उसकी साधना में अनेक बाधाएं उपस्थित होती हैं, अनेकों सिद्धियां आगे आकर खड़ी हो जाती हैं। योगिराज श्री कृष्ण के शब्दों में —

इन्द्रियेभ्य परा ह्यर्था
अर्थेभ्यश्च परं मन।
मनसस्तु परा बुद्धि,
यो बुद्धेः परतस्तु स॥
एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा,
संस्तभ्यात्मानमात्मना॥
जहि शत्रुं महाबाहो,
कामरूप दुरासदम्॥

योगी के शरीर, मन और आत्मा को छोड़ भाग जाते हैं। सच्चा योगी संसार को अभय कर देता है।

'नांदिया' नाद का अपभ्रंश रूप है। नाद ध्वनि को कहते हैं। योगी नाद पर आरूढ़ रहता है। वह 'ओम्' नाद का प्रेमी होता है। योग दर्शनकार महायोगी महर्षि पतञ्जलि के शब्दों में —

'तस्य वाचकः प्रणव,
तज्जपस्तदर्थभावनम्'

—अर्थात् योगी प्रणव का जाप करता है। यही उसके पास वृषभ हैं। 'वृषभो वर्षणात्' जो सुखों की वर्षा करता है।

इस विषय में दूसरा विचार यह है कि योगी अपने श्वास-निश्वास को अजपा जाप के रूप में प्रयुक्त करता है। आत्मा को वेदों में हंस कहा है, जैसे—"हंस शुचिषद् अर्थात् आत्मा शुद्ध होने के कारण हंस है। हंस हंस हंस इस प्रकार जाप की सन्धि हंसो हंसो हंसो है। इसका उल्टा रूप सोहं सोहं सोहं है। यही तो 'उल्टा नाम जपा जग जाना बाल्मीकि भये ब्रह्म समाना' है। यह आत्मा (शिव) श्वास प्रश्वासप्रणाली में (सोहं सोहं सोहं) का जाप करता है और इसी भाव पर स्थिरता को धारण करता है। यही बात ईशोपनिषद् में सुन्दर ढंग से वर्णित की है—

बहूनि मे व्यतीतानि
तव जन्मानि चार्जुन।
तान्यहं वेद सर्वाणि
न त्वं वेत्थ परंतप॥

हे अर्जुन! मेरे और तेरे बहुत जन्म व्यतीत हो चुके। पर मैं तो उनको जानता हूं, तू नहीं जानता।

भस्म, गंगा, चन्द्र

प्रत्येक योगी शरीर और आत्मा के सम्बन्ध को भली प्रकार पहचान लेता है। वह जान लेता है 'अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ता शरीरिणः।'

इस शरीरी का देह नाशवान् है, यह जान वह इस शरीर का राग छोड़ देता है। योगी 'भस्मान्तशरीरम्' का महत्व पहचान लेता है और इस शरीर को आत्मा के ऊपर लिपटी हुई भस्म ही समझता है। वह भस्म-यज्ञ को छोड़कर अध्यात्म यज्ञ प्रारम्भ कर देता है।

योगी के मस्तिष्क में ज्ञान गंगा हिलोरें मारती है वह परमगुरु परमात्मा से सम्बन्ध जोड़ता है और उसके ज्ञान को धारण करता है तथा सम्पूर्ण जल-थल को आप्लावित और आप्यायित करता हुआ उसका ज्ञान अन्ततः अनन्त सागर में लीन हो जाता है। योगी समझता है, महान से महान और लघु से लघु, विशाल से विशाल और तुच्छ से तुच्छ वस्तु में परमात्मा का ही निवास

ये दुर्भाव सता नहीं पाते। वह समस्त संसार के विषधरों को अपने यहां आमन्त्रित कर लेता है। संसार को इनसे मोक्ष दिला देता है। ये ही विषधर उसके आभूषणों का काम देने लगते हैं।

देव और असुर शक्ति ने मिलकर समुद्र मन्थन किया और उसमें चौदह से चौदह रत्न निकले जिनमें एक विष भी था। अब उसको कौन पान करे? यह समस्या थी देवताओं के सामने। समस्या को हल किया शिव ने। पान कर लिया गरल गले में और नीलकण्ठ की उपाधि पाई देवों से।

योगी विद्वान् लोगों पर पड़ने वाली आपत्ति को दूर करने के लिए बड़ी से बड़ी कठिनाइयों का सामना करता है; उनको झेलता है विष दिया जाता है पर उसको अमृत समझकर उसका पान करता है और समाज को तनिक भी क्षति-ग्रस्त नहीं होने देता।

योगी हिंस्र जन्तुओं से परिपूर्ण वन में बाघ आदि हिंस्र प्राणियों की खालों को ही अपना परिधान और आसन बनाता है। इसके साथ ही साथ अपनी इन्द्रियों को दमन करके रखता है। तथा उनके समस्त अघ भीतर से निकल कर बाहर भागते फिरते हैं। वह उन्हीं से अपने आपको ढक लेता है और आत्माराम रूप में मस्त विचरता है। —

पार्वती और डमरू

'हिम आच्छादने'। आच्छादन शब्द अन्धकार का द्योतक है। अन्धकार, जगत् का प्रतीक है और प्रकाश परमात्मा का। मलाच्छादित यह जीवात्मा अन्धकार के द्वारा प्रकाश को प्राप्त होता है इसी से पार्वती प्रकाशवती बुद्धि 'मेना' 'मेरा नहीं—से उत्पन्न होती है, 'इद न मम' भी इसी का विवरार्थ है।

'इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि' में भी सत्य की प्राप्ति अनृत से है, यही बात वर्णित की है। कनोपनिषद् वर्णन है—

'स तस्मिन्नेवाकाशे स्त्रियमाजगाम बहुशोभमानामुमां हैमवतीं तां होवाच किमेतद्यक्षमिति'।

—उस आकाश में एक स्त्री दिखाई पड़ी जिसका नाम 'उमा' था, जो हैमवती थी। मन को 'उमा' का दर्शन उसी प्रकाशवती प्रवृत्ति का परिचायक है।

उ=ब्रह्म मीयते यया सा उमा= ब्रह्म विद्या को कहते हैं।

वह योगी ब्रह्म विद्या को प्राप्त कर लेता है फिर उसका समस्त कार्य—महायोगी कृष्ण के शब्दो में —

'ब्रह्मार्पण ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गन्तव्य ब्रह्मकर्मसमाधिना' हो जाता है।

योगी फिर डमरू बजाता है अपनी भावना का डिडिमघोष करता है। 'डमरू' शब्द भी परोक्ष रूप में है प्रत्यक्ष रूप में तो 'दमरू' है। 'परोक्ष प्रियगा हि देवा प्रत्यक्षद्विष' विद्वान् परोक्ष से ही प्रेम करते हैं प्रत्यक्ष से नहीं।

'दमरू' शब्द का विश्लेषण करने पर दम और रु दो शब्द उपलब्ध होते हैं।

'दमरू: दमन को, और रु: शब्द को कहते हैं अर्थात् उसके प्रत्येक कार्य से 'दमनात्मक ध्वनि' व्यक्त होती है। वह इन्द्रियदमन का पाठ पढ़ाता है। वह योग के रोग से छुडा कर त्रिशूल (त्रिविध ताप) के सकट से मानव मात्र को मुक्त करता है।

भारतवर्ष और शिव

भारतवर्ष योगियो के लिये प्रसिद्ध है। प्राचीन समय में भारतीयों का तीन चौथाई समय योग साधन में ही व्यतीत होता था। रघुवंशियो में तो अन्त में योग द्वारा ही प्राण-विसर्जन की प्रथा थी। कालिदास के शब्दों में—

रघूणामन्वय वक्ष्ये,
योगेनान्ते तनुत्यजाम।
अथवा
अथ स विषय व्यावृत्तात्मा
विधि सूनवे,
नृपति ककुदं दत्त्वा यूने सितात
पत्रारणम्।
मुनिवनतरुच्छायां देव्या तया सह
शिश्रिये,
गलित वयसामिक्ष्वाकूणामिदं हि
कुलव्रतम्॥
मुनियत लेना इक्ष्वाकु वंशियों
का कुलव्रत था।

वेद में भी—उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम्। धिया विप्रो अजायत। पर्वतों की गुफाओं में, नदियों के सगम पर, विप्र उत्पत्ति बुद्धि द्वारा होती है। अस्थियों के भीतर हृदयाकाश में, इडा पिंगला और सुषुम्ना के सगम में बुद्धि से विप्रत्व उत्पन्न होता है। ब्राह्मी बुद्धि उपलब्ध होती है।

ये सब परम्पराए योग साधन की परिचायिका हैं। यहां प्रत्येक व्यक्ति को शिव बनाया जाता था। वह देश-जाति एवं प्राणिमात्र के लिए सच्चा शिव प्रमाणित होता था। प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य था कि वह शिव बने और अपनी सन्तान को शिव बनावे।

आज वह कला हमारे हाथ से निकल गई आज हम हस्तकला कुशल रह गए। पर मन से शिव निर्माण की भावना दूर न हुई और इसी आधार पर उस योगी-निर्मात्री हिमालय की प्रत्येक प्रस्तर-कृति को शिव मान बैठे। शिव का सच्चा स्वरूप भूल गए और एक दिन फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी की अर्द्ध रात्रि मे गुर्जर प्रदेश के टकारा ग्राम मे शिवव्रत के दिन, जिसमें शिवनिर्माण पर स्त्री पुरुष मिलकर विचार करते थे, वहां केवल प्रस्तर-प्रतिमा को ही शिव मानकर करशन जी (कृष्णजी) अपने पुत्र मूल-शंकर के साथ बैठे निद्रा में निमग्न थे और बालक शकर की मूर्ति के सामने जागरूक शिव की सत्यता में व्यग्र था।

गणेश-वाहन के शिव सिर चढते ही शिव की सत्यता समझने का सुअवसर हाथ आया जान पिता जी को जगाकर प्रश्न किए। परन्तु कोई सन्तोषजनक उत्तर न पाकर वह सत्य का पुजारी सत्यान्वेषक सच्चे शिव की खोज में वनो, पर्वतों, गिरिगुहाओ में मारा-मारा फिरा और अन्ततोगत्वा वह स्वयमेव शिवनिर्माता कुशल कलाकार गुरु विरजानन्द के हाथों में पडकर सच्चा शिव बन गया। वह यहीं नहीं रुका, वह और आगे बढा।

शिवरूप दयानन्द

कामदेव को तीसरे नेत्र से भस्म करने वाला त्रिनेत्र, आजन्म ब्रह्मचारी रहा और पार्वती (ब्रह्मविद्या) से पाणि ग्रहण किया। मनुष्य समाज के सिर से पैर तक ब्राह्मण से शूद्र तक ज्ञान गगा को बहाया। सोमरस का पान करने वाला, तीनों शूलों (त्रिशूल) को अपने हाथो में रखने वाला दूसरे हाथ में वेद लेकर वेद का घोष घर घर करने वाला 'ओं' के नाद पर सवार, ससार के कल्याण के लिए एक बार नहीं सत्रह बार विष पान करने वाला पूर्ण दयालु शिव से भी शिवतर पूर्ण योगी महर्षि दयानन्द परमकारुणिक रूप में जनता के समक्ष आया।

उसने शिव बनाने वाली पद्धति का पुनः उद्धार किया—'मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद' के रूप में। इसीलिए उसने स्त्री शिक्षा पर बल दिया, गुरुकुल प्रणाली को प्रोत्साहन दिया, वेदों की शिक्षा पुनः प्रचलित की। निर्जीवों को जीवन दान दिया। वह था सच्चा शिव, जो शिव की खोज में निकला और स्वय शिव बन गया। कबीर के शब्दो में :—

लाली मेरे लाल की जित देखू
तित लाल।
लाली देखन मैं गई मैं भी हो
गई लाल॥

यह है तन्मयता का सुन्दरतम उदाहरण।

शव और शिव

'शव' और 'शिव' में इकार का अन्तर है। इकार शक्ति का प्रतीक है। शव मुर्दे को कहते हैं। मुर्दे मे यदि जीवनी शक्ति हो तो शिव हो जाता है। महर्षि श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती ने शिवतर बनकर शवो मे शक्ति संचार कर दिया, उसने सोई हुई जाति को जगाया।

मानवमात्र शिव और शिवतर बन सकते हैं, शिवतम नही। शिवतम तो केवल परमात्मा ही है। 'यो व शिवतमो रस' आत्मायें शिव बन सकती हैं, शिवतर बन सकती हैं, शिवतम नही। अवतारी पुरुष शिवतर होते हैं जो स्वय पारगत होते हैं और भवसागर से पार करते हैं। स्वय पार होने वाले शिव, दूसरो को पार करने वाले शिवतर और लक्ष्य शिवतम है।

वेद भगवान ने भी प्रात और साय की सन्ध्या मे अन्तिम मन्त्र को लक्ष्य रूप में प्रस्तुत किया है—

नम शम्भवाय च मयोभवाय च,
नम शकराय च मयस्कराय च
नम शिवाय च शिवतराय च।

इस मन्त्र मे वह समस्त पद्धति वर्णित कर दी है जो श्री स्वामी दयानद सरस्वती ने सस्कार विधि एव सत्यार्थ प्रकाश मे व्यक्त की है। शैवो का मन्त्र केवल 1/6 है जब कि वैदिको के पास पूरा मन्त्र है। पौराणिक वर्ग शिव पूजन मे इस मन्त्र का विनियोग करता है। वस्तुत यह मन्त्र शिव निर्माण की कला वैदिको को सिखाता रहा है।

प्रत्येक व्यक्ति को आवश्यक है कि वह सन्तान को 'शम्भवाय च' शान्ति-पूर्वक उत्पन्न करे। अशान्ति को दूर कर शान्त क्रान्ति का सच्चा पाठ पढ़ाने वाली सस्कृति ही वास्तव में शान्ति द्वारा कामुकता को तिलांजलि देकर सुसन्तान उत्पन्न किया करती थी और वह सतान सुखोद्भव होती थी। 'शान्ति और सुख' ये ही तो जीवन के लक्ष्य हैं। जो समस्त भूमण्डल मे शान्त और सुखी मानव बनाना चाहता है, वह अपनी सन्तानो का निर्माण शान्ति और सुख से करे।

आज प्रत्येक व्यक्ति का मानस अशान्त है और प्रत्येक व्यक्ति का मन तथा शरीर आधि व्याधियों से ग्रस्त है। ऐसी स्थिति में सन्तान शान्त स्वभाव और सुखी कैसे हो सकती है।

शान्त्युद्भव और मयोभव

सन्तान ही शान्ति करने वाली हो सकती है और सुखकारी शान्ति और सुख का पाठ माता तथा पिता के अक से ही पढा जाता है। माता शान्ति सिखाती है तथा पिता सुख। जो सतान गर्भ से लेकर समावर्तन काल तक शान्ति और सुख का पाठ पढती है। जो सतान अपनी शतायु के चतुर्थ भाग को शान्ति तथा सुख के सीखने में लगा देती है, वही गृहस्थ मे आकर शान्ति करने वाली और सुख देने वाली होती है और वही गृहस्थी अपने आयुष्य के तृतीय भाग मे पुन पहाडो वनो की शरण लेकर शिव बन जाता है। अशिव सोचने की प्रवृत्ति दग्धमूल हो जाती है।

आयु के अन्तिम भाग मे वह व्यक्ति सन्यासी बनकर शिवतर बन जाता है और ससार मे शिव निर्माता गृहस्थियो को शिव निर्माण का सच्चा पाठ पढ़ाता है तथा मृत्यूपरान्त शिवतम मे लीन हो जाता है।

शम्भू मयोभू =ब्रह्मचारी। शकर मयस्कर =गृहस्थी। शिव=वानप्रस्थ और शिवतर सन्यासी होता है।

महर्षि श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती भी शिवतर बनकर गृहस्थियो को सच्चा शिव निर्माण सिखाते रहे इसीलिए वे जिए और इसीलिए वे मरे और अन्त मे वे शिवतम के सुमधुर क्रोड मे समा गए।

मथुरा की पुण्य भूमि ने साढ़े पाच हजार वर्षों बाद दयानन्द को दया और आनन्द के अवतार के रूप मे समस्त ससार के लिए अनुपम भेंट दी।

शिव रात्रि अनेको बार आई और गई परन्तु आर्यो को नव-जागृति का सन्देश देने वाली शिवरात्रि वस्तुत बोध रात्रि के रूप मे सच्ची शिवरात्रि है जिसको प्रत्येक आर्य बडी श्रद्धा से मानता और मनाता है और ऋषि तुल्य नई से नई शिक्षा ग्रहण करता है।

इस लेख मे लेखक ने पौराणिक शिव के रूपक को वैदिक शिव के रूप मे ढाल कर जो चमत्कार पैदा किया है उसे विज्ञ पाठक देखें। देखें कि कैलाश, तीसरा नेत्र, त्रिशूल, नादिया, वृषभ, मुण्डमाल, भस्म, गगा, चन्द्र, सर्प, नीलकण्ठ, बाघाम्बर, पार्वती, डमरू, आदि आलकारिक भिक्षुको का वास्तविक रूप क्या है।

ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर

शिवशंकर और मूलशंकर

(एक तुलना पद्य में)

—रचयिता स्वर्गीय लालमन आर्य—

शिवशकर कैलाशी ने डेरे बर्फ में लगाये थे,
मूलशकर तप हेतु गये डले बर्फ के चबाये थे ॥

शिवशकर के वर को पाकर दैत्यो ने अत्याचार किया,
मूलशकर ने अबला दीन अनाथों का उद्धार किया ॥

शिवशकर ने तृतीय दृग से पच बाण को दहन किया,
मूलशकर ने ब्रह्मचर्य से पचशत्रु दल हनन किया ॥

शिवशकर ने देवो के हित एक बार विष पान किया,
मूलशंकर ने सकल लोक हित विष था चौदह बार पिया ॥

शिवशकर ने बैल रखा यह थी गाय की सेवकाई,
मूलशकर ने गौ सेवा हित गोशालायें खुलवाई ॥

शिवशकर निज भक्तो में फिर नामी भोलानाथ हुए,
मूलशकर भी दयावान बन दयानन्द विख्यात हुए ॥

शिवशकर केवल देवों में महादेव कहलाये थे,
मूलशकर मानव मडल में महर्षि का पद पाये थे ॥

शिवशकर जी भांग धतूरा खाते और खिलाते थे,
मूलशकर मादक पदार्थ अति हानिपूर्ण बतलाते थे ॥

शिवशकर के भक्त पर्व शिवरात्रि को उपवास करें,
मूलशकर के अनुयायी वैदिक शिक्षा अभ्यास करें ॥

शिवशकर और मूलशकर की तोल लालमन की आये,
मूलशकर ही शिवशकर से भारी अधिक नजर आये ॥

शिवशकर पर मूलशकर के नगर विचार

श्री कर्षण जी ने मूलशकर को मठ में शकर बतलाया,
पर मूलशकर ने मन्दिर के शकर को ककर ठहराया ॥

श्री मूलशकर ने पूज्यपिता कर्षण जी को यह समझाया,
वह शिवशकर है सकल जगत को रचता जो बिना काया ॥

अतीत

विद्या-दान के तीन रूप

अतीत में विद्या-दान का क्या रूप था, वर्तमान में क्या रूप है, और भविष्य में क्या रूप होने की सम्भावना है, इसका चित्रण प्रसिद्ध चित्रकार श्री तुलिकी ने अपनी कल्पना से किया है।

पूर्वकाल में छात्र किसी ऋषि के आश्रम में जाकर ब्रह्मचर्य पूर्वक गुरु के चरणो में वृक्षो के नीचे बैठकर विद्याध्यन करते थे। यज्ञ और गौ सेवा दैनिक जीवन के अंग थे। विद्या समाप्ति से पूर्व घर नहीं आ सकते थे। विद्या समाप्त करके अपनी योग्यता और रुचि के अनुसार समाज-हित और आजीविका के कार्य मे लग जाते थे।

महात्मा आर्य भिक्षु द्वारा अपने 66 वें जन्म दिवस पर 18 हजार रु० दान

31 जनवरी, 88 को प्रातः 7॥ से 9॥ तक महात्मा आर्यभिक्षु जी का जन्मदिवस आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर की यज्ञशाला में समारोह पूर्वक मनाया गया। आचार्य प्रियव्रत जी, माता सत्यवती पुरी स्नातिका, स्वामी जीवनानन्द जी तथा श्री मक्खन लाल मानपाल ने अपनी ओर से शुभकामनाएं प्रकट की। बम्बई के श्री देवव्रत शास्त्री, कर्नाटक के श्री राजीव तैलंग तथा श्रीमती सन्तोष प्रधाना आर्यसमाज हरिद्वार के गीत हुए।

आर्य भिक्षु जी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन करते हुए स्वलिखित वैदिक धर्म और विश्व शान्ति नामक पुस्तिका वितरित की। गत वर्षों की ब्रह्मचारी अखिलानन्द स्मारक आर्य भिक्षु स्थिरनिधि का ब्याज 18000 रु० विभिन्न संस्थाओं को दान दिया। आर्य वानप्रस्थाश्रम को 566 रु० दिये। पौरोहित्य श्री दुबे जी ने किया।

—महेन्द्र मुनि मंत्री

वर्तमान

वर्तमान रूप

आजकल चारों ओर पुरानी गुरुकुल प्रणाली के बजाय स्कूल प्रणाली का ज़ोर है। डेस्क, बेंच, ब्लैक बोर्ड और पुस्तकों तथा कापियों का भारी बस्ती आ गया। गुरु के चरणों में छात्र उपस्थित नहीं होते। स्कूल में ही छात्र और गुरु दोनों जाते हैं। गुरु कक्षा मे अपने पीरियड में पढ़ाकर चला जाता है, फिर उसका छात्रों से कोई लेना-देना नहीं। अधिकाश छात्र भी अ ग्रेजो द्वारा चलाई गई शिक्षा प्रणाली के अनुसार केवल डिग्री प्राप्त करके नौकरी की तलाश करते हैं। शिक्षितो की बेरोजगारी भी वर्तमान युग की विशेष समस्या है।

शिव शंकर विजयी

26 से 28 दिसम्बर को राष्ट्रीय संस्कृत सस्थान द्वारा त्रिचुर (केरल) मे आयोजित अन्तर्विद्यापीठीय युवजन समारोह में हुई विभिन्न प्रतियोगिताओ में गुरुकुल प्रभात आश्रम भोला झाल मेरठ [उ० प्र०] ब्रह्मचारी शिवशंकर निगमाशंकर ने "न्याय वैशेषिक" एव 'वेदान्त दर्शन" इन दो विषयो में प्रथम तथा संस्कृत गान प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

बसन्त मेला

दक्षिण दिल्ली आर्य महिला मण्डल के तत्वावधान में 30 जनवरी को बसन्त मेला आर्य समाज, जगपुरा विस्तार नई दिल्ली में श्रीमती शकुन्तला गुप्ता की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

—कृष्णा ठुकराल, मन्त्रिणी

एटा और बदायूं के गांवो में 500 ईसाई वैदिक धर्म में

ग्राम सराय नवाब जिला एटा में शुद्धि सभा के प्रचार के फल स्वरूप 135 पुरुष स्त्री बच्चो ने वैदिक हिन्दु धर्म स्वीकार किया। ग्राम दीनपुरी कला के 150 ईसाइयों ने ईसाई मत छोड़ने की शपथ ली। मदारपुर जिला बदायू में 46 ईसाई भाइयों को वैदिक धर्म में दीक्षित कराया गया।

ग्राम गढ़ी खानपुर जि० बदायू मे 125 ईसाई स्त्री पुरुष और बच्चों ने वैदिक धर्म स्वीकार किया। प० दीप चन्द शर्मा, श्री अमृतलाल नागर व श्री हरिओम वानप्रस्थ के प्रयत्न और सहयोग से ये शुद्धियां हुई।

वह मन्दिर नदी किनारा

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती—

जहां दयानन्द ने जन्म लिया, वह खास ग्राम टंकारा है।
शिवरात्रि जागरण किया जहां, वह मन्दिर नदी किनारा है॥
है वही नदी डेमी जिसमें, वह कूद-कूद कर नहाते थे।
है ये वही पावन रज-कण, वह जिसमें लोट लगाते थे॥

थे रहे विचरते दयानन्द, यह वही है अति पावन स्थल।
की अगणित मनहर क्रीडायें, हंस हंस कर घुटनों के बल॥
यह तप पूत! शुचि क्रान्ति दूत की जन्म भूमि टंकारा है।
उस महा महिम ने जन्म लिया यह महान स्थान हमारा है॥

सौराष्ट्र प्रान्त गुजरात भूमि को, दिल से नहीं भुलायेंगे।
बोधोत्सव टंकारा नगरी में आकर प्रतिवर्ष मनायेंगे॥
श्रुति सम्मत ऋषि की आज्ञा को जीवन में सदा निभायेंगे।
बलधार 'स्वरूपानन्द' सदा हम वैदिक नाद बजायेंगे॥

पता—15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1

भविष्य

भविष्य का रूप

21 वी सदी में शिक्षा का नया रूप होगा ? अभी से रेडियो, दूरदर्शन, कम्प्यूटरों की जैसी परम्परा प्रारम्भ हो गई है, इससे लगता है कि भविष्य में न पुस्तकों की जरूरत होगी, न अध्यापकों की। अध्यापक के स्थान पर रोबोट होगा और पुस्तक के स्थान पर वीडियो। हरेक काम बटन दबाने से होगा। स्कूल के स्थान पर प्रयोगशालाए होंगी। दूर संचार का विज्ञान भी इतनी तरक्की कर लेगा कि यन्त्रों के अधीन होकर मानव स्वय भी एक यत्र का प्रतिरूप बन जाएगा। कौन जाने, तब धरती प्रदूषण से इतनी घिर जाए कि यहां जीना कठिन हो जाये और मानव अन्तरिक्ष और समुद्र में बस्तियां बसाए।

श्रीमती सुशीला देवी दिवंगत

श्रीमती सुशीला देवी (धर्मपत्नी श्री राम चन्द आर्य ...) का निधन बम्बई मे दिनाक 18 दिसम्बर को उनके निवास स्थान "कृष्णा भवन, पहला माला, 146 डा० ... बगेस स्ट्रीट, रामवाडी के सामने पो० कालबादेवी, बम्बई 400002" प... वे अपने पति के साथ आर्य समाज के कार्य के लिए सदा सन्नद्ध रहती थी।

परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति एवं सद्गति और उनके परिवार को दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

डी ए वी के गौरव : डा. दुखनराम

डा० दुखन राम का नाम लेते ही बिहार के उस व्यक्तित्व का नाम उभरता है जिन्होंने अपना जीवन गरीब व दलित की सेवार्थ समर्पित कर दिया है। डा० दुखनराम बोकारो इस्पात नगर की विख्यात स्कूल "डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल" सैक्टर IV के संस्थापक होने के साथ-साथ आर्य समाज की शिक्षाओं व सिद्धान्तों के प्रचारक भी रहे। डा० राम ने सुप्रसिद्ध नेत्र चिकित्सक होने के नाते कई नेत्र शिविरों में लगभग 10 हजार मुफ्त आपरेशन करने का श्रेय प्राप्त किया है।

डा० राम ने डी० ए० वी० मैनेजिंग कमेटी दिल्ली के प्रधान प्रो० वेद व्यास जी के प्रियतम साथी एवं सहकार्यकर्ता के रूप में कन्धे से कन्धा मिलाकर समाज सेवा एवं दलितोद्धार का कार्य साथ-साथ किया है। प्रो० वेदव्यास जी के निर्देशानुसार डी ए वी अपना आभार प्रदर्शन करने हेतु श्रद्धा के साथ डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल बोकारो स्टील सिटी के भवन में साथ वाली सगमरमर शिला स्थापित कर रही है।

डा० वाचस्पति 'कुलवन्त',
उपनिदेशक डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल्स पो० हेहल-रांची-5

ओ३म् जीवेम शरदः शतम्

डॉ. दुखनराम · समर्पित व्यक्तित्व

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल

बोकारो इस्पात नगर के निर्माता

* 15 दिसम्बर 1899 में निर्धन परिवार में जन्म
* पटना कॉलेज से I Sc उत्तीर्णकर सन् 1926 में मेडिकल कॉलेज कलकत्ता से डॉक्टरी उपाधि प्राप्त।
* सन् 1957 में विधान सभा के सदस्य होने के साथ-साथ भिन्न-भिन्न प्रशासनिक समितियों के अध्यक्ष।
* सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान।
* भारत के 6 राष्ट्रपतियों के नेत्रचिकित्सक।
* अनेक डी ए. वी. स्कूलों एवं चार कन्या उच्च विद्यालयों के संस्थापक।
* 200 निर्धन किन्तु प्रतिभावान् बच्चों को मुफ्त शिक्षा दिलाने में आर्थिक सहायता।
* 30 वर्ष तक नेत्र रोग विशेषज्ञ के रुप में सरकारी सेवा एवं देश में अद्वितीय चिकित्सक के रुप में ख्याति प्राप्त।
* गरीबी के कारण धर्मपरिवर्तित एक हजार हिन्दुओं का शुद्धिसंस्कार तथा उनका आर्थिक एवं सामाजिक उन्नयन
* विभिन्न शिविरों में दस हजार मोतियाबिन्द के मुफ्त आपरेशन।

..... TO ENSHRINE EVERLASTING GRATITUDE OF D A.V's TO A KARMA YOGI .....

DR D RAM

B Sc, M B (CAL) F A M S, DO M S (LOND) PATNA

आ पहुंचा है यह पर्व......

—सत्यदेव प्रसाद आर्य 'मरुत'—

एक बार फिर पुन. बताने आ पहुंचा है यह पर्व तात।
दयानन्द बनने का प्रेरक शुभ बनकर हित ले सौगात।।

जो जन्म लेता है शुभ दुष क्या वह अन्तर्धान हो गया।
पत्थर को आराध्य मान कर किस विधि अन्तस ध्यान खो गया।।
उठो! जगो!! और बोध प्राप्त कर पहचानों अपनी औकात।।

विकृष्ट जानकर शुभ कर्मों को लगे सजाते रोली चन्दन;
सत्पुरुषों का मार्ग छोड़कर वृथा भटकते कर क्रन्दन।
गिरने को उद्यत हों क्यों हम? कुकर्मों से मिले निजात।।

बड़े भाग्य मानुष तन पाया, क्या यह सन्त विचार सही?
दिन दिन आयु क्षीण हो रही फिर भी उपजत प्यार नहीं।
मोक्ष द्वार का नगर अयोध्या बार बार मिलता नहीं तात।।

मात पिता-आचार्य-अतिथि चार देवता घर बैठे,
पति पत्नी तुम स्वयं देवता मूढ़ पांव क्यों ना दौड़ें।
करो सदा सत्कार परस्पर क्यों मूर्खों की बात।।

पता—प्रेम नगर, नेमदार गंज (नवादा-बिहार)

झब्बनलाल डी ए वी पब्लिक स्कूल नई दिल्ली

झब्बन लाल डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल के वार्षिकोत्सव 10 जनवरी 1988 को फाइन आर्ट एण्ड क्राफ्ट सोसायटी के रफी मार्ग स्थित हाल में हुआ। प्रो० वेदव्यास जी ने इसका नूतन नामकरण करते हुए डी ए वी कालेज के आदर्शों पर बल दिया। महर्षि दयानन्द के परम भक्त और दानवीर सेठ चन्दो मल जी, डी ए वी आन्दोलन में नव चेतना जाग्रत करने वाले श्री दरबारी लाल जी तथा प्राचार्या श्रीमती सुदर्शन महाजन भी साथ खड़े हैं।

इस विद्यालय की स्थापना सन् 1982 में हुई थी। गत पांच वर्षों में इसने अद्भुत प्रगति की है।

चिकित्सक की आवश्यकता

आर्य समाज अशोक विहार फेज-I दिल्ली-52 के लिए पार्ट टाइम आयुर्वेदिक तथा होम्योपैथिक कुशल चिकित्सक की आवश्यकता है। अवकाश प्राप्त तथा सेवा भाव वाले सज्जन को वरीयता दी जायेगी। आवेदन पत्र निम्न पते पर भेजें—मन्त्री आर्य समाज, अशोक विहार फेज-I दिल्ली-110052

पुरोहित चाहिए

आर्य समाज कृष्ण नगर भिवानी (हरियाणा) के लिए एक सुयोग्य अनुभवी वैदिक सिद्धान्तों के ज्ञाता संस्कारों में दक्ष पुरोहित की तत्काल आवश्यकता है। शैक्षिक योग्यता आयु तथा अनुभव के विवरण सहित आवेदन पत्र शीघ्र भेजें। आवास सुविधा निःशुल्क होगी। गृहस्थी पुरोहित को वरीयता दी जाएगी। वेतन योग्यतानुसार। पत्र-व्यवहार का पता—मंत्री, आर्य समाज कृष्ण नगर भिवानी (हरि०)।

Arya Samaj–Greater Kailash–I, New Delhi-48

Maharishi Dayanand Charitable Medical Centre

LIST OF DOCTORS
Attending this Organisation

	Name	Day and	Time
1	Dr. K.G S Nanda Physician	—Daily	9 30 A M to 11 A M
2	Dr V P. Verma Physician	—Daily	10 30 A M to 12 P M
3	Dr Kalpana Gupta Physician	—Daily	11 A M to 12 P M
4	Dr (Mrs) P Marwah Gyanecologist	—Every Tuesday, Thursday and Saturday	9 A M to 11 A M
5.	Dr (Mrs) V Wadhawan Gyanecologist	—Every Monday, Wednesday and Saturday	9 A M to 11 A M
6.	Dr V K Nanda (Surgeon for all internal Disorders)	—Every Monday, Thursday	11 A M to 12 P M
7	Dr Umesh Gupta Cardiologist and Heart Specialist	—Every Wednesday	11 A M to 12 P M
8	Dr Sunil Maheshwari Physician and Cardiologist	—Every Tuesday and Saturdy	11 A M to 12 P M
9	Dr O P Chadha E N T Specialist	—Every Tuesnay	10 30 A M to 12 P M
10.	Dr Nitin Verma Eye Surgeon	—Every Sunday	9 A M to 10 A M
		—Thursday	11 A M to 1 A M
11	Dr B K Kohli Dental Surgeon	—Every Monday and Friday	9 A M to 10 A M
12	Dr. O.P. Dhalla Dental Surgeon	—Every Wednesday	9 A M to 11 A M
13	Dr Anil Dhalla Dental Surgeod	—Every Tuesday, Thursday & Saturday	11 A M to 1 P M
14.	Dr M S Chauhan Physiotherapist	—Daily	7 A M to 12 P M
			4 P M to 8 P M
15	Capt Dr Mrnjit Singh Orthodentist	—Every 1st and Third Thursday of Month	9 A M to 10 A M

Under Noted Facilities Are Available

1 X Ray
2 E.C G
3 Clinical and Pathological tests of all kinds
4 Preparation of Dentures fixed or Removable
5 Special arrengment for Gyanecological treatment
6. Physiotherapy treatment for all kinds of body aliments
7 Eye Clinic
8 E.N T Clinic

Ayurvedic Treatment

	Name	Day	Time
1	Pt Shyam Sunderji Snatak Ayurvedalankar-	—Daily	9 A M to 12 P M

Homoeopathic Treatment

	Name	Day	Time
1	Dr J K Narula-Homoeophysician	—Every Sunday, Tuseday	9 A M to 10 30 A M
2.	Dr Renu Gupta-Homoephysician	—Every Monday and Friday	9 30 A M to 11 30 A M

Dr N G S Nanda
Chief Medical Officer

Shant Parkash Bahl
ChiefOrganiser & Administrator

Mahendra Pratap Advocate
President

With

Best Chmpliments

From

Suraj Bhan D.A.V. Public School

F-10/15, Vasant Vihar, New Delhi

The School is a comparatively new addition to the long and illustrious chain of D A V Public Schools It came into being on the 9th of April 1984 in the form of a tiny sapling which has grown and blossomed under the tender and gentle care of the Principal and the Staff In a short span of three years, the School has created a unique place for itself in the field of Academics, Co-curricular Activities, Moral and Religious Studies

T R Gupta — Manager

Smt C K Chawla — Principal

With

Best Compliments

From

D.A.V. Centenary Public School

SIRSA 125055 (HARYANA)

Established 1985

Telphone 22318

S K Sharma

Principal

D.A.V, Public School

and

Bansidhar Modi Primary Section

Sector III, Dhurwa, Ranchi

An English Medium Co-Educational School

Affiliated to the Central Board of Secondary Education, Delhi
Running Classes froum KG to X

Well Qualified Staff, Modern Teaching Methods,
Excellent Results, 100% Board Results

Special Attention on Vedic Values of Indian Culture, and all round Development of Personality of Students

---

STRVING TO ACHIEVE THE IDEALS OF

SWAMI DAYANAND JI

D.A.V. PUBLIC SCHOOL, SUNAM

Dist SANGRUR Punjab

With

Best Comptiments

From

D A V. PUBLIC SCHOOL

RAJNAGAR, GHAZIABAD

R N Sehgal — Manager,

A.K Chawla — Principal

With

Best Complimnts

Form

D A.V CENTENARY PUBLIC SCHOOL

NOIDA (GHAZIABAD, U P)

H R Malhotra — *Manager*

H.G Sapra — *Principal*

With

Best Compliments

From

Management, Principal, Staff and Student

of

Kulachi Hans Raj Model School

Ashok Vihar, DELHI-110052

A Premier D A V Public School, Reputed for Outstanding Achievements in the Fields of Academic, Sports and Co Curricular Activities and a High Standard of Discipline

Santosh Taneja — **Paincipal**

Darbari Lal — **Manager**

D A V Public School, Hissar

(English Medium Co-Educational)

(Dayanand College Hostel Campus)

Managed by D A V College Managing Committee, New Delhi
Affiliated to CBSE, 10+2 Pattern

Enter Fifth Year—Glorious Achievements in the Academic and Co-Curricular Domains

Starting Pre-Nursery and VIth Class this Year (1987)

Also Opening New Branch at Dabra Chowk Hissar

D S Arya — *Manager*

Dr (Mrs) Asha Bhandari — *Headmistress*

D.A.V. Public School Patel Nagar, New *D*elhi

HIGHLIGHTS

D.A V. Public School, Patel Nagar. New Delhi, one of the chain of Public Schools run by the DAV College Managing Committee, started functioning in April, 1982,

This School is all set on Public School lines. Initially, the school started with classes LKG to IV and had 200 students on rolls At present, this School imparts education upto Class IX with about 1,000 students on rolls. It has a team of 35 experienced and well qualified teachers,

The School provides a wide range of activities, such as music (both vocal and instrumental) dance, arts, including drawing painting, craft etc together with sports, dedates, speeches, etc which are considered essential for all-round development of the students

During the year 1986-87, our students participated in the following co-curricular and extra-curricular activities and bagged maximum prizes -

Cultural Functions	*Item*	*Prizes*
1 Indo-Soviet Cultural Programme	—	2nd Prize (Arpita Class Vth)
2 Nehru Bal Samiti	Group Dance (Senior)	3rd Prize
	Group Danee (Junior)	3rd Prize
	Group Song (Senior)	3rd Prize
	Group Song (Junior)	3rd Prize
	Solo Donce	2nd Prize (Shiwani)
3 Arya Samaj (Ashok Vihar	Group Song	3rd Prize
4 Nehru Bal Samiti	Debate (Senior)	Ist Prize (Deepti & Rishi)
5 Arya Samaj (Shalimar Bagh)	Group Song	2nd Prize
6 124th Vivekanand Birth-Anniversary	Story Recitation-English	Ist Prize (Master Hemant
	Hindi	Ist Prize (Ku Deepti)
	English (Jr Group)	2nd Prize (Master Manish)
7 Nehru Bal Samiti	ART	Ist Prize Sakshi Kumar
		2nd Prize (Samriti)
8 Delhi Pvblic School	"	
9 5th Lee Invitational Karate Championship		Ist Prize (Gold Medal)
10 Ram Lal Kumar Memorial Delhi State-Karate Championship		2nd Prize (Silver Medal)
11 4th Delhi State Championship		3rd Prize (Bronze Medal)

(Mrs) Sudershan Mahajan

Principrl

WITH BEST COMLIMENTS FROM

The Principal, Members of the Staff and Students of

D.A V College Cheeka (Kurukshetra)

Engaged in the promotion of our sacred culture.

With glorious record of Excellent Achievements in University Results, Co-Curricular Activities, N S S, N,C C and other allied educational spheres

Hans Raj Gandhar

Principal

With Best Compliments From

D.A.V Centenary public School

Green Road & H.L.F Colony Rohtak

(Affiliated to central Board of Secondary Education New Delhi)

H L Chawla
Manager

M.L Gupta
Principal

With Best Compliments from

D A V. Public School

997/4, Urban Estate, Gurgaon

An English Medium School with Indian Cultural background and emphasis on excellence in academics and creative activities, in the National Capital Region

T R Gupta
Manager

Anita Makkar
Principal

—ओ३म्—

"आ नो भद्रा क्रतवो यन्तु विश्वत "

Creating
Men and Women of
Character and Capability
is certainly more important than
Manufacturing unemployable multitude

It is a TRADITION of which

D.A V. COLLEGE KANGRA H.P.)

can legitimately take pride as it enters its

SECOND DECADE OF EFFECTIVE SERVICE

We present here

A SPECTRUM OF OUTSTANDING PERFORMANCES

ACADEMIC EXCELLENCE

* Winning Top Merit Positions year after year
* Showing Quantitative Quality with always the largest First Divisioners in H P University
* Largest number of scholars qualify for Engineering and Medical Colleges every year
* Coaching imparted for Competitive Examinations

SPORTS DISTINCTIONS

* Winners of Coveted Trophy for General Excellence in Sports.
* We continue to be the largest contributors to various University and State Teams
* Reigning Champions in Weightlifting for the last nine years, Wrestling for last three years Basket Ball for two years
* Coaching facilities provided in all games

With the blessings of His Almighty and patronage of our benefactors, we have added block after block to our buildings and hostels We look to our benefactors for cooperation for service in the Hilly Areas of Himachal

R C Jeewan
Principal

Dayanand Institutions, Solapur

We Serve Through

(1) Damani Bhairuratan Fatehchand Dayanand College of Arts & Science, Solapur

(2) D A V Velankar College of Commerce, Solapur

(3) Damani Premratan Bhairuratan Dayanand College of Education Solapur

(4) Damani Gopabai Bhairuratan Dayanand law College, Solapur

(5) Dayanand College Committee's Rambhau Joshi High School, Karkamb

(6) Dayanand Kashinath Asawa High School, Solapur

(7) Dayanand Model School, Solapur

(8) Motichand Gautamchand Dayanand Charitable Dispensary, Solapur

D A V College, Abohar

(Established -1960)

Entering Its Silver Jubilee

With the stupendous transformation of the Waste Land

To a Sprawling Complex

That now includes a Women's College, a College of Education, a Model School and Mahatma Gandhi Vidyalaya and, besides, has lighted the DAV flame at Malout, Giddarbaha, Bhatinda, and most recently at Jallalabad, Haripura and Fazilka

V B Mehra
Principal

With Best Compliments From

S L Bawa D A V. College Batala

A A famous Arts and Science College of District Gurdaspur with all the modern amenities

B Runs Post Graduate classes in M A in Political Science, Honours in English, Political Science, History

C Diploma Courses of D A V College of Management, Communication and Educational Administration in Business Management, Personnel Management and Indu trial Relations

Madan Lal
Principal

In the Valley of Gods There is a Very Good School for

TINY TOTS

D A V Public School Manali (Distt Kullu)

Under the management of

D.A V College Managing Committee, New Delhi

A well-equipped Co-educational English Medium Junior School With Well Trained Teachers

Classes from Nursery to 7th Class Conveyance arrangements from left bank as well as right bank (By Sud Transport Company)

B B Gakhar
Manager and
Regional Director

Rabinder Sekhon
Principal

Mehr Chand Polytechnic Jalandhar

The only Polytechnic run by the D.A V College Managing Committe in Panjab

Mehr Chand Polytechnic was started in the year 1984 with the following three years Diploma Courses

i) Diploma in Civil Engineering

ii) Diploma in Electrical Engineering

iii) Diploma in Mechanical Engineering

D/man courses were also run and discontinued during the year 1962-63

Mehr Chand Polytechnic has a glorious record of its results and achievements in various extracurricular activities and sports. Mehr Chand Polytechnic has always been securing top positions in the results and sports in Punjab For the last two year Your student Mr Mandeep Singh has won the championship in Badminton of all India Badminton Tournament Championship **Three Years Diploma Course in Electronics & Communication Engineering**

During the year 1982-83 the Government of India and the State Government introduced three years Diploma Course in Electronics and Communication Engineering which is also being run very successfully First batch admitted in the year 1982-83 was out in the year 1985-86 and have shown excellent results

Diploma in Pharmacy Course

The Central and State Govrements have also approved the introductions of two years Diploma Course in Pharmacy at this Polytechnic at the cost of Rs 30 lacs

Direct Centrel Assistance

1 The Government of India has selected our Instiution as Community Polytechnic under the Direct Central Assistance Scheme at the cost of Rs 6 25,000/-

2 The Government of India have sanctioned a sum of Rs.-3,60 000/- for the development of Meteorology Lab under the Direct Central Assistance Scheme The Meteorology Lab is now fully equipped and air-conditioned This Lab is a unique Lab in Punjab State

3 The Government of India have granted a sum of Rs - 2,00,000/- for setting up an Electrical Measurement Lab under Direct Central Assistance Scheme The work for setting up of the Laboratory is in progress.

4. The Government of India have granted a sum of Rs. 4,00,000/- for the development of our existing Library under the Direct Central Assistance Scheme

Computer Course

One and a half year Computer Cours has been approved for introduction at this Polytechnic from the session starting July 1987 The Government have granted a sum of Rs 6,50 000/- for the purpose The Computer at the cost of Rs. 5,00,000 has since been purchased and the room for its placing and operation has also been constructed

Mehr Chand Polytechnic is also an institution of the D.A Vs. Mehr Chand Polytechnic is a leading Polytechnic in the State

B.L. HANDOO
Principal

हमारे लोकप्रिय, ज्ञानवर्धक प्रकाशन

महात्मा आनन्द स्वामी कृत

मानव और मानवता	25.00
तत्वज्ञान	15.00
प्रभु-मिलन की राह	15.00
घोर घने जंगल में	15.00
प्रभु-दर्शन	12.00
दो रास्ते	12.00
यह धन किसका है	12.00
उपनिषदों का सन्देश	12.00
बोध-कथायें	12.00
दुनिया में रहना किस तरह	7.00
मानव जीवन-गाथा	6.00
प्रभु-भक्ति	5.00
महामन्त्र	5.00
एक ही रास्ता	5.00
भक्त और भगवान	4.00
आनन्द गायत्री-कथा	5.00
शंकर और दयानन्द	4.00
सुखी गृहस्थ	3.50
सत्यनारायण कथा	3.00
Anand Gayatri Discourses	10.00
The Only Way	12.00
महात्मा आनन्दस्वामी जीवनी उर्दू	10.00

प्रो॰ सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार कृत

वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार	50.00
सत्य की खोज	50.00
ब्रह्मचर्य सन्देश	15.00

महर्षि दयानन्द सरस्वती

पंच महायज्ञ विधि	3.00
व्यवहार भानु	2.50
आर्योद्देश्य रत्नमाला	0.75
स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश	0.75

डॉ॰ भवानीलाल भारतीय कृत

श्रीकृष्ण चरित	25.00
श्याम जी कृष्ण वर्मा	24.00
आर्यसमाज विषयक साहित्य परिचय	25.00
स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली (सम्पादित) ग्यारह खण्ड	66.00

स्वामी सत्यानन्द सरस्वती

दयानन्द प्रकाश	35.00

प॰ मदनमोहन विद्यासागर

संस्कार समुच्चय	45.00
सत्यार्थ सरस्वती	25.00
ईश्वर प्रत्यक्ष	9.00

By Swami Satya Prakash Sarasvati

Founders of Sciences in Ancient India Tow Volumes	500.00
Coinage in Ancient India Tow Volumes	600.00
Critical Study of Braomagupta and His works	350.00
Gehmatry in Ancient India	350.00
God and His Divine Love	5.00

स्वामी जगदीश्वरानन्द कृत

महाभारतम् (तीन खण्ड)	600.00
वाल्मीकि रामायण	100.00
षड्दर्शन	प्रेस में
चाणक्य नीति दर्पण	50.00
भर्तृहरिशतकम्	15.00
प्रार्थना लोक	25.00
प्रार्थना प्रकाश	4.00
प्रभात वन्दन	4.00
ब्रह्मचर्य गौरव	8.00
विद्यार्थियों की दिनचर्या	8.00
मर्यादा पुरुषोत्तम राम	10.00
दिव्य दयानन्द	8.00
कुछ करो कुछ बनो	8.00
आदर्श परिवार	10.00
वैदिक उदात्त भावनाएँ	10.00
दयानन्द सूक्ति और सुभाषित	25.00
वैदिक विवाह पद्धति	4.00
ऋग्वेद सूक्तिसुधा	25.00
यजुर्वेद सूक्तिसुधा	12.00
अथर्ववेद सूक्तिसुधा	15.00
सामवेद सूक्तिसुधा	12.00
ऋग्वेद शतकम्	6.00
यजुर्वेद शतकम्	6.00
सामवेद शतकम्	6.00
अथर्ववेद शतकम्	6.00
भक्ति संगीत शतकम्	3.00

प॰ गंगाप्रसाद उपाध्याय कृत

जीवात्मा	25.00
मुक्ति से पुनरावृत्ति	3.00

प्रो॰ राजेन्द्र जिज्ञासु सम्पादित

महात्मा हंसराज ग्रन्थावली चार खण्ड।	40.00

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

वेद-मीमांसा	50.00
मैं ब्रह्म हूँ	4.00

प॰ चन्द्रभानु सिद्धान्तभूषण

महाभारत सूक्तिसुधा	40.00

डॉ॰ प्रशान्त वेदालंकार

धर्म का स्वरूप	35.00

स्वामी वेदानन्द सरस्वती

ऋषि बोध कथा	6.00
ईशोपनिषद्	4.50

सुरेशचन्द्र वेदालंकार

महकते फूल	10.00
ईश्वर का स्वरूप	15.00

ओमप्रकाश त्यागी

वैदिक धर्म का संक्षिप्त परिचय	6.00

प्रो॰ नित्यानन्द वेदालंकार

पूर्व और पश्चिम	35.00
सन्ध्या विनय	8.00

प॰ नरेन्द्र

हैदराबाद के आर्यों की साधना व संघर्ष	6.00

प्रो॰ रामविचार एम॰ ए॰

आर्यसमाज का कायाकल्प कैसे हो	4.00

प्रो॰ ओमप्रकाश वेदालंकार

वैदिक पंचायतन पूजा	35.00

प्रो॰ विष्णुदयाल (मॉरीशस)

महर्षि का सच्चा स्वरूप	4.00

म॰ नारायण स्वामी

विद्यार्थी जीवन रहस्य	2.50
प्राणायाम विधि	2.00

प॰ शिवपूजन सिंह कुशवाहा

हनुमान का वास्तविक स्वरूप	5.00

प॰ राजनाथ पाण्डेय

वेद का राष्ट्रगान	1.00
त्रिकालजयी	10.00

मनोहर विद्यालंकार

सरस्वती वन्दना	5.00

कवि कस्तूरचन्द

ओंकार एवं गायत्री शतकम्	3.00

कर्मकाण्ड की पुस्तकें

आर्य सत्संग गुटका	1.50
पंचयज्ञ प्रकाशिका	4.00
वैदिक सन्ध्या	0.75
सत्संग गुटका (छोटा साइज)	1.00

घर का वैद्य

लेखक. सुनील शर्मा

प्याज	3.50
लहसुन	3.50
गन्ना	3.50
नीम	3.50
सिरस	3.50
तुलसी	3.50
आँवला	3.50
नींबू	3.50
पीपल	3.50
आक	3.50
गाजर	3.50
मूली	3.50
अदरक	3.50
हल्दी	3.50
बरगद	3.50
दूध घी	3.50
दही-मट्ठा	3.50
हींग	3.50
नमक	3.50
बेल	3.50

बाल साहित्य

बाल शिक्षा दर्शनानन्द	1.00
वैदिक शिष्टाचार	2.00

त्रिलोकचन्द्र विशारद कृत

महर्षि दयानन्द	2.50
स्वामी श्रद्धानन्द	2.50
गुरु विरजानन्द	2.50
पंडित लेखराम	2.50
स्वामी दर्शनानन्द	1.50
पंडित गुरुदत्त	1.50

सत्यभूषण वेदालंकार एम॰ ए॰

नैतिक शिक्षा	प्रथम	0.75
नैतिक शिक्षा	द्वितीय	0.75
नैतिक शिक्षा	तृतीय	2.00
नैतिक शिक्षा	चतुर्थ	2.00
नैतिक शिक्षा	पंचम	2.00
नैतिक शिक्षा	षष्ठ	2.50
नैतिक शिक्षा	सप्तम	2.50
नैतिक शिक्षा	अष्टम	2.50
नैतिक शिक्षा	नवम	3.00
नैतिक शिक्षा	दशम	3.00

*

गोविन्दराम हासानन्द 4408 नई सड़क दिल्ली-110006

सत्य दृष्टि ही...

(पृष्ठ 5 का शेष)

दिखाना है, चाहे इसके लिए अन्य देवी-देवताओं तथा ऋषि-मुनियों के चरित्र कितने ही क्यों न बिगाड़ने पड़ें।

इस घटना से कुछ पहले, रामायण पृ० 164 पर नारद मोह का वर्णन है। नारद जी प्राचीनतम देव ऋषि हैं, वे ब्रह्मगति हैं, परम भक्त हैं। पर उनके चरित्र की भी छीछालेदर की गई। उन्हें सवत्र अमङ्गल करने में कुशल तथा बुद्धि भ्रम उत्पन्न करने में चतुर दिखाया जाता है। ये कोई एक दो उदाहरण नहीं। सारा प्राचीन पौराणिक साहित्य ऐसी अनगिनत घटनाओं से भरा हुआ है। ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव इन नए उभरते देवों के तथा इनके, विशेष कर विष्णु के अवतारों के महत्व को बढ़ाने के लिए प्राचीन वैदिक देव, इन्द्र, अग्नि, वरुण, यम आदि के रूप को खूब बिगाड़ा गया है। वायु, सूर्य, चन्द्र तो रावण की चारपाई के पायों से बांध दिए गए। महाभारत की कथा चलाने के लिए कुन्ती, माद्री के कर्ण समेत छ पुत्रों के लिए सूर्य धर्म, इन्द्र, वायु तथा अश्विनी कुमार को पकड़ा गया। यह सारा प्रसग बहुत लम्बा है—पर भारतीय चिन्तन पर एक कलंक है।

गुरु विरजानन्द से शिक्षा प्राप्त कर आगरा जाने से अजमेर मे अपने देह निर्वाण तक ऋषि दयानन्द इस प्राचीन भारतीय साहित्य के संशोधन में लगे रहे। उनके बाद एक सौ वर्षों से अधिक समय बीतने पर भी आर्य समाज ने यह काय समाप्त नहीं किया।

संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं उनके जीवन मे आत्मिक जागरण का समय आता है। ऋषि दयानन्द के जीवन में शिव-संकल्प, सत्य-सकल्प का अवसर 14 वर्ष की आयु मे प्रारम्भ हुआ। इस के बाद, साधना पर साधना, और सतत अध्ययन द्वारा यह शिव-दृष्टि अथवा सत्य-दृष्टि प्राप्त करने का प्रयत्न चला। परिणाम रूप मे उन्हें योग साधना और शास्त्राध्ययन द्वारा सत्य की उपलब्धि हुई।

अन्य सन्तों और महात्माओं द्वारा प्राप्त सत्य ज्ञान के रूप में एक मौलिक अन्तर है। प्राय इन सन्तों ने अपने सत्य-ज्ञान को मौलिक और नया समझ अपनी-अपनी वाणी द्वारा नए मत चलाए, जो उनके नाम से प्रसिद्ध हैं। पर ऋषि दयानन्द की सत्यानुभूति वही थी जो प्राचीनतम भारतीय परम्परा में निहित थी। सहस्रों ऋषि मुनियों और योग साधकों ने उसका साक्षात्कार किया था। इसीलिए ऋषि दयानन्द तथा उनके अनुयायियों ने किसी नए मत या धर्म की नींव नहीं रखी। उन्होंने सत्य-सनातन-धर्म के ऐसे उज्ज्वल रूप को प्रस्तुत किया जिसके आधार पर आर्य हिन्दू विचारधारा एक प्रबल विश्व-व्यापी रूप धारण कर सकती है।

इतना ही नहीं, इस विचारधारा का भारत और भारतीयता के साथ प्रचण्ड स्नेह-सम्बन्ध है। भारत इसका सदा-सदा से अपना देश है। भारतीय रहन-सहन, शिक्षा-दीक्षा, आदर्श-लक्ष्य तथा जीवन का प्रत्येक रूप इसके लिए प्रिय है। भारतीय महापुरुष इसके लिए श्रद्धा के स्थल हैं। एक तरह से इस विचारधारा का एक मात्र लक्ष्य भारतीय जीवन, अखण्ड भारतीय परम्पराओं और आदर्शों के महत्व को ससार में प्रकाशित करना है। शिक्षा, व्यक्तिगत जीवन, सामाजिक तथा राजनीतिक व्यवस्था, इन सब में भारतीयता का विकास ही ऋषि दयानन्द तथा आर्य समाज का मुख्य कार्य है। इसलिए इन सब को इनके मूल शुद्ध रूप में देखना परम आवश्यक है। इसके लिये ऋषि दयानन्द की शिव दृष्टि-सत्य दृष्टि अनिवार्य रूप से ही होनी चाहिए। अन्यथा राष्ट्र, जाति और धर्म का कल्याण न होगा।

पता—शान्तिसदन, 145/4
सेंट्रल टाउन, जालंधर

दिव्य दयानन्द का .

(पृष्ठ 7 का शेष)

पहुचते ही स्वामी जी ने प्रबल हुंकार की और भूमि पर वेग से पदाघात किया। हुंकार और पदाघात की वज्रध्वनि सुनकर वे तीनो भूमि पर गिर पड़े और तलवारें हाथ से छूट कर गिर पड़ीं। स्वामी जी ने तलवारें दूर फेंक दी। बड़ी कठिनाई से वे तीनो सभलकर उठे और भाग खड़े हुए।

प्रात होते ही रात की घटना का समाचार नगर मे फैल गया। ठाकुरो ने आकर राव को बुरा-भला कहा और भर्त्संना की। उस समय राजघाट पर पजाबी सेना के कुछ सैनिक स्वामी जी की कुटी पर पहुंचे और कहा, "आज्ञा दीजिए कि राव को दण्ड दें। आप जैसे सन्त पर उसने आक्रमण कराकर हमारा पजाबी खून खौला दिया है।"

परन्तु स्वामी जी ने उन्हें शान्त किया, उपदेश दिया और समझा-बुझाकर लौटा दिया।

राव की ससुराल वालों ने आकर राव को समझाया कि कर्णवास के सब ठाकुर आपके विरुद्ध हो गए हैं, अत अब यहां से चले जाना ही अच्छा है।

राव ने पजाबी सैनिकों के आगमन की बात भी सुनी। वह भयभीत हो उठे थे, उन्होंने तुरन्त अपना डेरा उठा लिया और चल दिए। अपने गाव बरौली पहुचकर वे बीमार हो गये। रोगशैया पर पड़े-पड़े वे प्रलाप करने लगे। ऐसी ही अवस्था में उन्हें सूचना मिली कि इलाहाबाद कोर्ट में उनका पचास हजार रुपये का जो केस चल रहा था, वे उसमें हार गए हैं।

अन्तत: पश्चात्ताप और दुःख के भवर में पड़कर उनका दु:खद प्राणान्त हुआ।

(डा० ज्वलन्तकुमार शास्त्री द्वारा प्रेषित)

जिस अमृत ....

(पृष्ठ 3 का शेष)

गजब का। विचित्र है यह टिकैत। वह कहता है कि पुलिस वाले हमारे भाई हैं, सुरक्षा बल वाले भी और सरकारी अमले के लोग भी हमारे भाई हैं। उनसे हमारा क्या झगड़ा। हम तो भूमिपुत्र होने के नाते सरकार से केवल अपने उचित अधिकारों की मांग करने आए हैं। यह ध्यान रहे कि जिन इलाकों से ये किसान आते हैं—मेरठ, सहारनपुर, शामली, सिकन्दराबाद आदि—वे सब चाहे जाट हों या गूजर—आर्य समाज के गढ़ हैं।

यह है लोक शक्ति का विस्फोट। यही लोक शक्ति वह अमृत है जिसके आगे राजशक्ति को भी झुकना पड़ता है। यही लोक शक्ति भारत के गांवों में पंचायतों के माध्यम से अपना कार्य करती थी। पहले मुगलकाल में, और बाद में ब्रिटिश काल में तथा तदन्तर आजाद भारत के राजनेताओं ने भी न केवल इस लोक शक्ति की उपेक्षा की है, बल्कि उसे सब तरह से विकलांग बनाने का प्रयत्न किया है। अगर यह लोकशक्ति जागृत हो जाये तो मानवीय अन्त करण में जो सर्वमान्य नैतिकता के जो सामान्य सूत्र प्रवाहित होते हैं, वे विजयी होंगे। इसी लोक शक्ति ने सिकन्दर के आक्रमण को विफल किया था। इसी लोकशक्ति ने सन् 1857 की राज्य क्रान्ति में अपना लघु रूप प्रदर्शित किया था परन्तु तब उस पर राजशक्ति हावी हो गई। यह लोक शक्ति ही अपनी सहभागिता से राज शक्ति को प्राणवान् बनाती है। जो राज शक्ति इस लोक शक्ति की उपेक्षा करती है वह एक दिन धराशायी हुए बिना नहीं रहती। नैतिकता के सामान्य नियमों पर चलने वाली यह लोक शक्ति अजेय है। यही भारतीय सभ्यता की रीढ़ है। यही वह अमृत है। टिकैत के इस आन्दोलन का परिणाम क्या होगा, यह हम नहीं जानते। परन्तु लोक शक्ति के इस जाज्वल्यमान रूप को देखकर हमको उस अमृत के आस्वाद का आभास हो गया है, जिसकी हम तलाश में हैं और उसी के आधार पर हम कहते हैं कि ये सपने चूर-चूर नहीं होंगे।

साहित्य समीक्षा

पुस्तक का नाम : प्रेरक प्रवचन (भाषण संकलन)
लेखक : महात्मा हंसराज,
प्रकाशक : डीएवी प्रकाशन संस्थान, चित्रगुप्त मार्ग नई दिल्ली।
पृष्ठ संख्या : 160, मूल्य—15 रुपये।

व्यक्ति और राष्ट्र के लिए उद्बोधक

प्रस्तुत संग्रह में महात्मा हंसराज के विभिन्न अवसरों पर दिए गए भाषणों का संकलन है। महात्मा हंसराज जी ने ये भाषण तत्कालीन राजनीतिक-सामाजिक परिस्थितियों में सुधार और परिवर्तन की कामना से दिये थे। भले ही वह अवसर पर्व उत्सव अथवा किसी महापुरुष के जन्म दिवस का प्रसंग हो, या कुछ भी रहा हो, उनके भाषणों में सुधार ही। स्वर सदा प्रमुख रहा है। इन भाषणों में मन, आत्मा और शरीर के स्वास्थ्य से लेकर जाति, राष्ट्र उत्थान के लिए प्रेरणा शामिल है।

उनकी सरल-सहज शैली में लेख बद्ध किए गए ये लेख सीधे मन-मस्तिष्क में पैठ करते हैं। ऐतिहासिक उद्धरणों और लघु कथाओं के कारण से लेख जन-साधारण के लिए अधिक ग्राह्य के बन गए हैं। स्वाध्याय की महिमा, प्राणायाम-वैदिक धर्म की अनूठी देन और आत्मा को बलवान बनाओ, शीर्षक लेख युवकों को विशेष रूप से प्रेरणा दे सकेंगे। इसी प्रकार शिक्षा विषयक लेखों में सुधनात्मक शिक्षा के विविध पक्षों पर जो प्रकाश डाला गया है वह इस क्षेत्र में कार्यरत सभी लोगों को दिशा दे सकेगा, इसमें सन्देह नहीं है।

—जगन्नाथ

टंकारा में ऋषि बोधोत्सव और दीक्षान्त भाषण

महर्षि दयानन्द सरस्वती ट्रस्ट द्वारा टंकारा में 10 फरवरी, 17 फरवरी तक होने वाले ऋषि बोधोत्सव में श्री पं० राम प्रसाद जी वेदालंकार, आचार्य गुरुकुल कांगड़ी, यज्ञ के ब्रह्मा होंगे। श्रद्धांजलि सम्मेलन की अध्यक्षता महात्मा आर्यभिक्षु जी, और आर्य महासम्मेलन की अध्यक्षता आचार्य प्रियव्रत जी करेंगे। उपदेशक विद्यालय का दीक्षान्त भाषण 'आर्यजगत्' के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालंकार देंगे।

स्वतन्त्रता सेनानी गणपति वेदालंकार दिवंगत

गुरुकुल कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक, हाकी के अप्रतिम खिलाड़ी, इस वर्ष की आयु में अनन्त आयुर्वेद कण्ठस्थ करने वाले, गुरुकुल फार्मेसी के पूर्व व्यवस्थापक और अपने जीवन का अधिकांश भाग गुरुकुल की सेवा, खादी प्रचार तथा राष्ट्रसेवा में लगाने वाले गणपति वेदालंकार का 76 वर्ष की आयु में 29 जनवरी को अकस्मात् एक दुर्घटना में प्राणान्त हो गया। इन दिनों वे सपरिवार ज्वालापुर सेवाश्रम में रह रहे थे।

१६ फरवरी को भाषण प्रतियोगिता

शिवरात्रि के अवसर पर फिरोजशाह कोटला मैदान में आर्ययुवक परिषद् की ओर से दोपहर 12 बजे भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विषय था—स्वतन्त्रता संग्राम में आर्य समाज का योगदान'। प्रतियोगिता में विजयी छात्रों को प्रथम पुरस्कार 300रु और एक शील्ड, द्वितीय पुरस्कार 200रु और एक शील्ड तथा तृतीय पुरस्कार 100 रु० का था। ये पुरस्कार 'नवनीत लाल सत्यप्रिय धर्मार्थ ट्रस्ट, की ओर से दिए गए। विजयी छात्रों को वैदिक साहित्य भी भेंट किया गया।

—मन्त्री आर्य युवक परिषद्

विज्ञान प्रदर्शनी

25 फरवरी को कुलाची हंसराज माडल स्कूल, एच ब्लाक अशोक विहार नई दिल्ली में बच्चों द्वारा एक शानदार प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। साइन्स, कला, संगीत, संस्कृत तथा अन्य विषयों से सम्बन्धित कलाकृतियों में छात्रों ने अपने रुचि का प्रदर्शन किया। उसमें आर्यसमाज एच ब्लाक द्वारा बच्चों द्वारा यज्ञ करते हुए। एक दृश्य भी प्रस्तुत किया गया जिसकी सभी ने प्रशंसा की।

—वेदमूर्ति मन्त्री

तृतीय वेद वेदांग पुरस्कार

आचार्य प्रियव्रत विद्यामार्तण्ड को 21 हजार रु० व श्री शांतिप्रकाश का 11 हजार रु०

आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई द्वारा प्रवर्तित वेद वेदांग पुरस्कार 1988 के लिए आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान्, अनेक ग्रन्थों के प्रणेता, गुरुकुल कांगड़ी के भूत पूर्व आचार्य श्री प० प्रियव्रत जी का चयन किया गया है। आर्य समाज मन्दिर सान्ताक्रुज में 26 जनवरी को प्रात 10-30 बजे आर्य समाज के वार्षिकोत्सव के अवसर पर आचार्य प्रियव्रत जी को अभिनन्द पत्र, रजत ट्राफी, शाल तथा 21000/- रुपए की थैली भेंट कर सम्मानित किया गया। (अस्वस्थ्य होने के आचार्य जी स्वय उपस्थित नहीं हो सके।)

इसके अतिरिक्त श्री पं० शान्ति-प्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी को वेदोपदेशक पुरस्कार से 11000/- की थैली, रजत ट्राफी, शाल तथा अभिनन्दन पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया।

दोनो विद्वानों ने अपना सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज की सेवा मे समर्पित किया है।—विमल स्वरूप सूद

युवा उद्घोष के विशेषांक का विमोचन

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के तत्वावधान मे युवा उद्घोष के 'कुरीति उन्मूलन विशेषांक' का विमोचन समारोह रविवार 14 फरवरी दोपहर 2-30 बजे से आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग मे हुआ।

—अनिल आर्य, सम्पादक

बिश्नोई मेला मुकाम
बीकानेर (राज०)

बिश्नोई समाज की स्थापना का 503वा मेला 17 फरवरी, 1988 को आयोजित हुआ। इस दिन बिश्नोई समाज के संस्थापक श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान ने समाधी ली थी। इस के उपलक्ष्य में हर वर्ष मेला लगता है। 17 फरवरी अमावस्या को प्रात 8 बजे हवन हुआ। वहां से एक किलोमीटर दूर समरायल धोरा मुकाम जिसकी ऊंचाई लगभग 1000 फूट है उसके ऊपर श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान का मन्दिर है। सभी धर्मप्रेमियों हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी मेले में आकर श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के दिए हुए उपदेश (नियमों) को पालन करने का व्रत लिया।

—मदन लाल बिश्नोई भलवा

स्कूल का शिलान्यास

चुनीलाल सचदेवा डी० ए० वी० सैंटीनरी पब्लिक स्कूल जैतू की नई इमारत का शिलान्यास फरीदकोट आई० ए० एस० डिप्टी कमिश्नर सरदार भूपिन्द्र सिंधु ने शिलान्यास किया। इस अवसर पर शहर के दानी लोगों 50,000 रुपये दान में दिये। श्री सिंधु ने भी 11,000 रुपये इमारत के लिए और 500 रुपये बच्चो को देने की घोषणा की।

फिरोजपुर अनाथालय में बसन्त पचमी एव गणतन्त्र दिवस

फिरोजपुर। 23 जनवरी को आश्रम की यज्ञशाला मे बसत पचमी पर्व के उपलक्ष्य में विशेष यज्ञ किया गया। प्रि० चौधरी दम्पत्ति यजमान बने। यज्ञ कार्य पं० मनमोहन शास्त्री ने सम्पन्न कराया। बच्चों ने सुमधुर भजन गाए। अधिष्ठाता जी ने वीर हकीकत राय के बलिदान का रोमाचक वर्णन करते हुए उस बालवीर की धम के प्रतिस्थिरता की भूरि-भूरि प्रशसा की। शान्तिपाठ के पश्चात् प्रसाद रूप मे मिष्ठान्न वितरण किया गया। इसी प्रकार 39वें गणतन्त्र दिवस पर 26 जनवरी को यज्ञ के पश्चात् राष्ट्रीय ध्वज का आरोहण किया गया। अधिष्ठाताजी ने व पुरोहित जी ने गणतन्त्र का महत्व समझाया और राष्ट्र की अखडता तथा लोकतन्त्र की रक्षा के लिए सदा तैयार रहने पर बल दिया। दोनों पर्वों पर बच्चो ने रंगबिरंगी पतगें व गुब्बारे उडा कर हर्षोल्लासित हुए।

दो सौ रुपये मासिक की चालीस छात्र वृत्तियां

स्वामी केवलानन्द निगमाश्रम गज दारानगर जिला बिजनौर मे स्वाध्याय प्रेमी, कर्मठ आर्य समाजी कार्यकर्ताओं के लिये दो वर्ष का तथा वैदिक विद्वान् बनकर धर्म प्रचार में जीवन लगाने के इच्छुक आर्य युवको के लिये पाच वर्ष का प्रशिक्षणपाठयक्रम आरम्भ होरहा है। किसी आर्य सन्यासी विद्वान् आय भजनोपदेशक अथवा आर्य समाज के अधिकारी की संस्तुति के साथ पन्द्रह मार्च, 1988 तक अधिष्ठाता स्वामी केवलानन्द निगम आश्रम, गज दारानगर, जिला बिजनौर (246701) उ० प्र० के पते पर आवेदन करें। साक्षात्कार के पश्चात् ही प्रवेश हो सकेगा।—स्वामी इन्द्रवेश पूर्व सांसद

ऋषि बोधोत्सव

आर्य समाज लक्ष्मणसर अमृतसर मे ऋषि बोधोत्सव, 21 2 88 को मनाया जाएगा। जिसमे प्रो० एम०एल० तुनेजा, प्रो० सी०एल० शर्मा तथा प्रो० ओ०पी० कालिया अपने प्रवचन तथा कविताओं द्वारा महर्षि के प्रति अपने उद्‌गार जनता के समक्ष रखेंगे।

खेल कूद-दिवस

25 जनवरी को डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल, राजनगर, गाजियाबाद, अपना वार्षिक खेल-कूद-दिवस साहिबाबाद स्थित प्रांगण में उत्साह के साथ मनाया। समारोह का उद्घाटन विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री ए० के० चावला ने किया। खेलो में प्रथम-स्थान हंसराज हाउस, द्वितीय स्थान टैगोर हाउस को प्राप्त हुआ।

बलिदान दिवस

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की ओर से 6 मार्च को अमर शहीद प० लेखराम बलिदान दिवस आर्यसमाज राणा प्रताप बाग मे प्रातः 10 बजे मनाया जायेगा।—चन्द्र मोहन आर्य

डीसीएम का उत्सव सपन्न

आर्यसमाज डी०सी०एम० रेलवे कालोनी के वार्षिकोत्सव पर बोलते हुए कार्यकारी पार्षद (स्वास्थ्य) श्री बंसीलाल चौहान ने कहा—आर्यसमाज ने मानव जाति व आजादी की लड़ाई मे जो कुर्बानियां दी हैं वे भुलाई नहीं जा सकती, उसके लिए सारा समाज उनका ऋणी है। युवा वर्ग महर्षि के आदर्शों को अपनाये।

श्री अजय सहगल (उपाध्यक्ष, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्) ने इस अवसर पर किये गये रचनात्मक कार्यो की प्रशंसा करते हुए, देशभक्ति गीत प्रतियोगिता मे भाग लेने वाले सभी प्रतिभाशाली गायको को सजिल्द सत्यार्थ प्रकाश देने की घोषणा की। इस अवसर पर डा० शिवकुमार, शास्त्री जगदीश्वरानन्द प० रन्तिदेव आर्य, श्री सूर्यदेव श्री धर्मेन्द्र पाल शास्त्री, श्री रमेश डावर, व आर्यसमाज डी० सी० एम० कालोनी के प्रधान श्री नरेन्द्र मोहन मलिक के 'आर्यसमाज का कुरीति उन्मूलन मे योगदान' विषय पर भाषण हुए।

देशभक्ति गीत प्रतियोगिता मे कुमारी एकता चौधरी, कु० ऋचा पहवा कुमारी यामिनी चौधरी क्रमश प्रथम, द्वितीय, तृतीय रही व कुमारी रेणु व व सुरेश कुमार को सांत्वना पुरस्कार मिले।

—चन्द्रमोहन आर्य सयोजक

डी०ए०वी० स्कूल पुरस्कृत

31 जनवरी को 'यूनिक ग्रुप' द्वारा म्यूनीसिपल बोर्ड कन्या इन्टरमीडिएट विद्यालय, सिहानी गेट, गाजियाबाद मे आशुकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में डी०ए० वी० पब्लिक स्कूल, राजनगर गाजियाबाद के छात्रो—कु० सपना जैन, आशीष गुप्ता व प्रीति मित्तल को पुरस्कार प्राप्त हुए।

उपायुक्त कार्यालय पर प्रदर्शन

30 जनवरी को चौ० राजेन्द्रसिंह, स्वामी सिंहमुनि एवं शिवराम वाचस्पति के नेतृत्व में आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओ ने प्रातः यज्ञ और 10 से 5 बजे तक फरीदाबाद जिला उपायुक्त के कार्यालय के सामने धरना दिया तथा शराब, दहेज एवं गोहत्या बन्दी के लिए प्रदर्शन किया। इस सम्बन्ध में जिला उपायुक्त को एक ज्ञापन देकर मांग की गई कि शराब के ठेके ग्रामो में बन्द किये जायें।

जिला उपायुक्त ने आर्य कार्यकर्त्ताओं को विश्वास दिलाया है कि ज्ञापन को उचित कार्यवाही के लिए सरकार को भेज दिया जायेगा और जिन ग्राम पचायतों ने शराब बन्दी के प्रस्ताव भेजे है, उनमें आगामी वित्तीय वर्ष से शराब के ठेको की नीलामी नहीं की जायेगी।—केदारसिंह आर्य

स्कूल का उत्सव सम्पन्न

दाऊ दयाल आर्य वैदिक सी० सै० स्कूल, नयाबांस, खारी बावली दिल्ली का वार्षिकोत्सव शाह ऑडिटोरियम, राजनिवास मार्ग दिल्ली में मनाया गया। इस अवसर पर छात्रो ने रगारग कार्यक्रम प्रस्तुत किये। उत्तम परीक्षा परिणाम के लिए प्राचार्य श्री सुन्दर लाल शर्मा सहित कुछ अध्यापकों को सम्मानित किया। श्री द्वारका नाथ ने प्रतियोगिता में विजयी छात्रो को पुरस्कार वितरित किये। प्रधान श्री अमर नाथ अरोड़ा ने अतिथियो को धन्यवाद किया और श्री भास्कर दत्त द्विवेदी ने कुशलता पूर्वक समारोह का सचालन किया।

हिन्दू धर्म स्वीकार

26 जनवरी को आर्यसमाज बहेड़ी (बरेली) में श्री दीन मुहम्मद ने इस्लाम धर्म त्याग कर हिन्दू धर्म स्वीकार किया उनका नाम चैतन्य गिरी रखा गया।

ब्र० आर्य नरेश द्वारा प्रचार

राष्ट्र, संस्कृति तथा युवाशक्ति के उत्थान हेतु उद्गीथ साधना स्थली (हिमाचल) के संस्थापक ब्र० आर्य नरेश द्वारा 19 दिसम्बर से 18 जनवरी तक वेदमन्त्रों, ग्रन्थों तथा दर्शनशास्त्र के सूत्रों की व्याख्या, यज्ञों व स्वास्थ्य रक्षा के लिए योगादि का प्रचार, विद्यालयो, पारिवारिक सत्सगो तथा आर्य समाजों एव मंदिरो में धूमधाम से प्रचार किया गया। नगल में एक केशधारी सिख कहलाने वाले हिन्दू भाई (एस डी ओ) ने भी विशेष आग्रह करके अपने यहा वैदिक यज्ञ व ब्रह्मचारी जी के प्रवचन का आयोजन किया। जिसमे लगभग एक सौ पचास केशधारी व अन्य पजाबियो ने भाग लिया। और इस अवसर पर उस केशधारी भाई ने अण्डा, मांस छोड़ने का भी सकल्प किया।

—अजित सिंह

पदयात्रियों का अभिनन्दन

10 जनवरी को आर्यसमाज भीमगज मण्डी कोटा में एक समारोह का आयोजन किया गया जिसमें स्वामी अग्निवेश के नेतृत्व में सती प्रथा नारी उत्पीड़न के विरोध में निकली दिल्ली से दिवराला पदयात्रा में कोटा-हाड़ौती क्षेत्र से सम्मिलित पदयात्रियों का अभिनन्दन आर्य समाज भीमगज मंडी, आर्य समाज रेलवे कालोनी तथा आर्य वीर दल कोटा द्वारा सामूहिक रूप से किया गया। —कृष्ण गोपाल

वसंतोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम का वार्षिकोत्सव 22 से 25 जनवरी तक धूमधाम से श्री सत्यदेव जी भारद्वाज की अध्यक्षता में मनाया गया। इस अवसर पर राष्ट्रभृत यज्ञ प० सूर्यदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। गुरुकुल में 'श्री भारद्वाज छात्रावास' का शिलान्यास चारों वेदों को नींव में रखकर श्री सत्यदेव जी भारद्वाज के द्वारा सम्पन्न हुआ। श्री भारद्वाज ने छात्रावास के लिए ढाई लाख रुपये देने की घोषणा की, हीरो साईकिल प्रा०लि० के मालिक श्री सत्यानन्द जी मुजाल ने गुरुकुल के भोजनालय के लिए 11 हजार रुपये देने की घोषणा की।—अभयदेव शास्त्री

—आर्य समाज, दसूहा (होशियार पुर) के चुनाव में श्री आदर्श कुमार वर्मा प्रधान, मास्टर रमेश कुमार मंत्री और श्री सुरेन्द्र कुमार कोषाध्यक्ष चुने गए।

स्नेह सम्मेलन

आर्य प्रतिनिधि सभा म० प्र० विदर्भ अधिवेशन एव डी ए वी कान्ट्रेक्ट का स्नेह सम्मेलन 30 व 31 जनवरी को सम्पन्न हुआ। जिसमे दयानन्द आग्ल वैदिक विद्यालय के बालक बालिकाओ का रोचक कार्यक्रम हुआ, और अधिकारी चुने गए। 31 जनवरी को श्री विनय कुमार पाराशर ने होमियोपैथी औषधालय का उद्घाटन किया।

वसन्तोत्सव

आर्यसमाज अब्दालपुर में वसन्तोत्सव उत्साह के साथ मनाया गया। जिसमे स्थानीय समाजों के लोग और स्कूल के बच्चो ने भाग लिया। हवन यज्ञ के बाद बच्चो के गीत और सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए।

—महेशलाल पासन मन्त्री

गणतन्त्र दिवस

26 जनवरी को विभिन्न स्थानो पर गणतन्त्र दिवस समारोह का आयोजन किया गया। निम्नलिखित सस्थाओ के समाचार 'आर्यजगत्' कार्यालय को प्राप्त हुए है।—आर्य युवक सभा पजाब (लुधियाना) 2 डी० ए० वी० सेंटिनरी पब्लिक स्कूल कुटेश्वर(बी०एस०एल०) 3 श्री महर्षि दयानन्द शिक्षण समिति, खण्डवा 4 आर्य समाज सैक्टर 7 बी चण्डीगढ़

गुरुकुल कृष्णपुर का उत्सव

महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर, मधना (फर्रुखाबाद) में विश्वशान्ति यज्ञ व विराट ऋषिमेला 20 से 22 फरवरी तक आयोजित होगा।

—चन्द्रदेव शास्त्री कुलपति

आर्यसमाज नगरा झांसी

आर्य समाज, नगरा झांसी में 14 से 21 फरवरी तक वेदकथा एवं वेदयज्ञ होगा, जिसमें श्री प्रणव शास्त्री के उपदेश और भजन होंगे।

—महेश श्रीवास्तव मंत्री

160 ईसाइयों की शुद्धि

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में और स्वामी सेवानन्द सरस्वती के प्रयत्नो से 160 उरांव जाति जो ईसाई बन गए थे शुद्धि इनकी इच्छा से सम्पन्न हुई इसमें से ग्राम रामपुर (रामगढ़) के 117 और लामकीपाड़ा के 43 ईसाई थे।

आर्य समाज पश्चिम विहार में ऋषि बोधोत्सव

आर्य समाज पश्चिम विहार में 21 फरवरी को ऋषि बोधोत्सव धूमधाम से मनाया जाएगा। इस अवसर पर साम वेद का बृहद् यज्ञ, उच्च कोटि के विद्वानों के भाषण तथा ऋषि लगर की व्यवस्था की गई है। जिसमें अन्य आर्य समाजो को भी आमत्रित किया गया है।

हकीकत राय बलिदान दिवस

कानपुर—आर्य समाज के तत्वावधान में गोविन्द नगर मे वीर हकीकत राय का बलिदान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर बृहद यज्ञ व बसन्त के आगमन पर सगीत का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री देवीदास आर्य ने की। जिसमें श्री जगन्नाथ शास्त्री, मदनलाल चावला, दीवान चन्द्र खन्ना, श्रीमती दर्शना कपूर, शीला उप्पल आदि के भाषण व भजन हुए। —शुभ कुमार मंत्री

'तमस' प्रतिबंध लगाने की मांग

कानपुर—केन्द्रीय आर्य सभा के अध्यक्ष, श्री देवीदास आर्य ने दूरदर्शन की अदूरदर्शिता तथा तुष्टीकरण नीति की आलोचना करते हुए एक वक्तव्य में कहा कि दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले धारावाहिक 'तमस' पर अविलम्ब प्रतिबन्ध लगाया जाए।

श्री वीरेन्द्र और आचार्य भगवान देव

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने 24 जनवरी को आर्य समाज दीवानहाल में हुई अपनी अन्तरग सभा की बैठक में स्वतन्त्रता सेनानी, दैनिक प्रताप के मालिक और अ० भा० सम्पादक सम्मेलन के पूर्व प्रधान श्री वीरेन्द्र को अनुशासन हीनता के आरोप में आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब (जिसका कार्यालय गुरुदत्त भवन, कृष्णपुरा चौक, जालन्धर में है) प्रधान पद से मुक्त कर दिया है और आर्य समाज से सम्बन्धित किसी भी सस्था के चुनावी पद के लिए अयोग्य घोषित किया है।

पूर्व संसद् सदस्य आचार्य भगवान देव को अनुशासन हीनता के आरोप में आर्य समाज की प्राथमिक सदस्य से पृथक् कर दिया है।

डी ए वी शताब्दी का उपहार

संग्रह योग्य पठनीय जीवनोपयोगी पुस्तकें

हमारी नई पीढ़ी को पढ़ने के लिए वांछित पुस्तकें नहीं मिल रही हैं। बाजार में ऐसी पुस्तकों की भरमार है जिनसे उनके मानस पर कुप्रभाव पड़ता है। निरर्थक पुस्तक पढ़ने वाले निरक्षरों से किसी भी हालत में अच्छे नहीं कहे जा सकते। युवकों के उचित मार्गदर्शन के लिए डी ए वी प्रकाशन संस्थान ने "डी ए वी पुस्तकालय" ग्रन्थ माला का अपने शताब्दी वर्ष में प्रकाशन आरम्भ किया है। अब तक निम्न पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। कागज और छपाई अत्युत्तम होते हुए भी मूल्य प्रचारार्थ कम रखा गया है।

		Price Rs. P.
Wisdom of the Vedas Select Vedic mantras with ı(ɔrational English renderings	Satyakam Vidyalankar	15 00
Maharshi Dayanand. A perceptive biography of the founder of Arya Samaj	K S Arya and P D Shastri	20 00
The Story of My Life. Autobiography of the great freedom fighter and Arya Samaj leader	Lajpat Rai	30 00
Mahat ma Hans An inspirin g biography of the father of DAV movement in India.	Sri Ram Sharma	20 00
प्रेरक प्रवचन डी ए वी कालेजों के जनक द्वारा विविध विषयों पर बोधप्रद प्रवचन	महात्मा हंसराज	15.00
सूक्तियां प्रेरक संस्कृत सूक्तियां हिन्दी तथा अंग्रेजी रूपांतर सहित	धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री	15 00
क्रांतिकारी भाई परमानन्द प्रख्यात क्रान्तिकारी तथा आर्य समाज के नेता की प्रेरणाप्रद जीवनी	धर्मवीर एम० ए०	20 00
Reminiscences of a Vedic Scholar. It is a thought-provoking book on many subjects of vital importance for Aryan Culture	Dr Satyavrata Siddhantalankar	20.00
DAV Centenary Directory (1886-1986) (In Two Volumes) A compendium of biographies of over 10000 eminent DAVs, Benefactors and Associates etc with their photographs. Over 1000 pages, 9" X 11" size, printed on very good paper, beautifully bound in plastic laminated card-board	Rs 150/-per set in Delhi. Rs 200/- by Regd Post in India Rs 150/-plus actual postage for Foreign countries.	
Aryan Heritage. A monthly journal for propagation of the Vedic philosophy & culture.	Rs. 60/- per annum Rs 500/- for Life for an individual. Rs. 600/- in lump-sum for Institutions.	

500/- रुपये से अधिक माल मंगाने पर 10% कमीशन दिया जाएगा। डाक व्यय तथा रेल भाड़ा ग्राहक को देना होगा। चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट "डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति, नई दिल्ली, पब्लिकेशन्स एकाउन्ट" के नाम से भेजा जाए।

प्राप्ति स्थान :

(1) व्यवस्थापक, डी ए वी प्रकाशन संस्थान, चित्रगुप्त रोड, नई दिल्ली-55

(2) मन्त्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1

शत हस्त समाहर, सहस्र हस्त संकिर

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा

ऋषि की पवित्र जन्म भूमि एवं बोध भूमि मे निम्नलिखित प्रवृत्तियों के सुचारु रूप से संचालन मे आर्य जनता का सहयोग अपेक्षित है—

(1) अन्तरराष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय।
(2) श्री म द गो-संवर्धन केन्द्र
(3) सार्वजनिक वाचनालय
(4) अतिथि गृह
(5) ऋषि जन्मगृह का प्रबन्ध
(6) दयानन्द दिव्य दर्शन (चित्रालय)
(7) श्रद्धानन्द ब्रह्मचर्याश्रम
(8) ऋषि बोधोत्सव (वार्षिक मेला)
(9) आर्य साहित्य प्रचार केन्द्र
(10) राहत केन्द्र

—निवेदक—

श्री रतनचन्द्र सूद प्रधान	प० आनन्द प्रिय उपप्रधान	श्री ओम्प्रकाश गोयल कार्यकर्ता प्रधान
श्री रामनाथ सहगल महामन्त्री	श्री रामशरण दास आहूजा मन्त्री	श्री ओंकार नाथ आर्य प्रबन्धक ट्रस्टी

Ensure excellent professional instruction and all-round development of personality to young girls by Admission to

D.A.V. College of Education For Women

Karnal

Previous Results

Year	*Total Merit Positions in the University*	*Merit Positions secured by this College*	*Pass%*
1982-83	10	4 (1st, 5th, 7th & 10th)	100%
1983-84	11	11	100%
1984-85	10	6 (1st, 2nd, 3rd, 4th, 6th & 7th)	100%

Raj K. Grover
Principal

Aryan Heritage

(A Link Magazine and Cultural Digest)

ADVERTISEMNT RATES

Mechanical Data

Full Page — Print Area 9"×7" (54M×42M)
3 Columns of 14 M each, or
2 Columns of 21 M each

Rates

Back cover	Rs 2,000
Back cover (inside)	Rs 1,250
Front cover (inside)	Rs. 1,250
Speciol position, per page	Rs 1,000
Other pages, per paeg	Rs 750
Half page	Rs 400

15% disount for 6 insertions in a year
Rates are subject to change from time to time

Please Contact

The Manager, Aryan Heritage,
DAV College Managing Committee,
Chitraguta Road, New Delhi-110055
Phones 527887, 524304

D.A.V. College Lahore) Ambala City

THE FIRST AND MOST PRESTIGIOUS COLLEGE FOUNDED BY MAHATMA HANS RAJ TO ACCOMPLISH SWAMI DAYANAND'S MISSION OF KNOWLEDGE AND EDUCATION

The pristine glory of this seminal college of the D A V. Movement has been striding ahead with dignity through the absolute dedication of teachers and perfect discipline of the students

- Top University results embellished with high merit positions
- Series of co-curricular and Culturel activities, punctuated with maximum awards and prized at University meets.
- Glorious State level functions, hallowed by the presence of the State Governor, Chief Minister, Cabinet Ministers top Executives and public Leaders.

All these besides quality teaching in Arts, Science, Commerce and Post Graduate Management Classes with Arya Samajist aroma and vigour, extensive buildings, lawns, play grounds, hostel and richest library, are just a few glaring glimpses of this great Institution.

G D JINDAL
Principal

With Best Compliments from

Sohan Lal DAV College of Education Ambala City

- The best of all the Colleges of Education of the State of Haryana, as declared by the Government Survey Committee
- The only Post-Graduate Comprehensive College of Education in Haryana.
- Preparing Candidates for M Ed, B Ed and N T T
- The oldest College of Education in Punjab, Haryana, Himachal Pradesh and Chandigarh
- One of the most prestigeous Colleges of Education under DAV College Managing Committee, New Delhi

(Dr V K Kohli)
Principal

D.A.V. Public School R. K. Puram, New Delhi

ACHIVEMENTS OF THE SCHOOL

D A V Public School, R K Puram, New Delhi was set up on h February, 1982 with only 150 students and 6 teachers on roll in the first year Now there are about 575 students and 25 well qualified trained teachers overall.

Proper building is one of the pre-requisites for the growth of a school and proper development of the students To meet this challenge, the school has its own building with 22 rooms and it is stil undergoing construction This year the school has constructed 6 rooms, and one room for the Library The school organised a 'Musical Nite' on 5th March, 1987 to collect funds for the school building For enhancing the attraction of this event, many eminent personalities of the film world were invited Some of them being Mrs. Mala Sinha, Sushma Shreshtha and Junior Kishore. Programme was a great success with the cooperation of well-wishers, donors, parents and the staff

Science being the crucial subject in the school curriculum, it is given due place As the school is upgraded to VIII class, many laboratory equipments were added this year

The school students also participated in competitions organised by different institutions. A number of students have won 1st and 2nd prizes in different competitions. Four children were invited by Nehru Bal Samiti on childrens' audience meet with the President of India, Giani Zail Singh Ji.

In the last, it may be added that the school is aiming at to meet the challenge of the ever growing educational needs and one day it will fulfil its mission.

R. N. Sahgal
Manager

(Mrs.) V Arora
Principal

Dayanand Model Senior Secondary School

Dayanand Nagar, Jalandhar City
Dayanand Model School
Model Town, Jalandhar City
HIGH-LIGHTS 1985-86

Scholastic Field

- Sanjay Pahuja stands FIRST in All India Secondary Examination, securing 90 6% marks with Distinctions in all subjects. Offered National Merit-cum Means Scholarship
- ** Disctinctions Won 82
- *** Number of CBSE Merit-Certificates Awarded

Non-Scholastic Field

- Rajdeep Kalsi—Selected Member of India Cricket Team (Under-10), which played International Youth Match in Australia Adjudged Best Opening Batsman
- ** Shaila Jain — Member Punjab Women Cricket Team (Under-15), captained and led to victory the Punjab Women Cricket Team over West Bengal in the Third All India Top-Junior Women Cricket Championship
- *** Sumeer Mehra—Member, District Cricket Team (Under-17), selected Member for India Camp (Under-15)
- **** Ranjeet Sharma—Member, District Team (Under-17), selected Member, North Zone Cricket Team (Under-15),

New Additions

- Computer Courses
- ** 400 Mts Track provided
- *** Also provisions made for
  (i) Hammer Throw
  (ii) Javeline Throw
  (iii) Short Put
  (vi) Discus Throw

Kanwal Sud
PrinciPal

With Best Compliments From

D.A.V. Public School

Bhai Randhir Singh Nagar

LUDHIANA

S Patial
Principal

With Best Compliments

From

D.A.V. Model School

ND Block, Pitampura
New Delhi 110034

Phone 7116435

Darbari Lal
Manager

S Makhija
Principal

कलकत्ता डी ए वी पब्लिक स्कूल के समारम्भ की झांकी

कलकत्ता के डायमंड हार्बर रोड पर प्रथम डी ए वी पब्लिक स्कूल के अवसर के दो दृश्य। प्रथम चित्र मे दिल्ली से गए डी ए वी कालिज कमेटी के अधिकारी तथा स्थानीय विशिष्ट आर्य बन्धु मिल कर हवन कर रहे हैं। द्वितीय चित्र मे उपस्थित गण्यमान्य व्यक्ति। इस स्कूल के नवनियुक्त मैनेजर श्री आनन्द कुमार आर्य ने शिक्षा क्षेत्र मे डी ए वी की उपलब्धियो की चर्चा करते हुए कलकत्ता जैसे महानगर मे, जहा अभी तक इस क्षेत्र मे ईसाइयो का वर्चस्व रहा है, इस पब्लिक स्कूल की आवश्यकता का प्रतिपादन किया। राज्य सरकार के लोकोपकार परायण मत्री, स्वतत्रता सेनानी और अत्यन्त लोकप्रिय श्री जतीन चक्रवर्ती ने स्कूल का उद्घाटन किया। भवानीपुर आर्य समाज के प्रधान श्री मुलकराज के प्रयत्न से पब्लिक स्कूल को लगभग डेढ करोड रु० लागत की जमीन और बने हुए मकानात उपलब्ध हुए। उन्ही को स्थानीय डी ए वी स्कूल की कमेटी का प्रधान बनाया गया है। यह स्कूल इतना लोकप्रिय हो उठा कि पहले महीने मे ही प्रविष्ट होने वाले छात्रो की सख्या चार सौ से ऊपर पहुच गई।

प्रगति

–श्रीमती पद्मा शर्मा 'साधिका', मेरठ–

हुई है प्रगति, आज तो हर दिशा मे,
धरा को गगन भी, सुलभ हो गया है।
ममता के बन्धन से, मुक्ति मिली है,
अपनत्व मन से विलग हो गया है॥

तिरोहित हुई ओस सी भावनाए,
उदय का तिमिर मे विलय हो गया है।
मनुजता फिरे आज दर दर भटकती,
मनुज तो न जाने कहा खो गया है।

मिला आज, विस्तार तो बस्तियों को,
विकट शून्यता से घिरा किन्तु मन है।
उठे हैं महल और अट्टालिकाए,
हृदय का भवन सकुचित हो गया है॥

उड़ीसा में सूखा राहत कार्य की झांकी

उड़ीसा के सूखा पीड़ित इलाकों में आर्य समाज की ओर से राहत कार्य चल रहा है। चित्र में राज्य के आबकारी मत्री श्री नागार्जुन प्रधान एव स्थानीय विधायक श्री मलिक आर्य राहत कार्य के उद्घाटन से पूर्व यज्ञ मे आहुति दे रहे हैं। द्वितीय चित्र में श्री स्वामी धर्मानन्द जी वस्त्र-वितरण कर रहे हैं।

GRAMS 'MAIDAMILL'

Phones 25811 24403 27369

RAWALPINDI FLOUR MILLS (P) LTD.,

Post Box No 82,

Moradabad-244001

Quality Producer of

TRISHUL BRAND

Maida, Sooji & Atta

Harish Saluja
Executive Director
Phone 27369

Devinder Saluja
Director
Phone 244001

V P Saluja
Managing Director
Phone 23192

(P)

हंसराज महिला महाविद्यालय

जालन्धर शहर

उत्तर भारत की प्रमुख संस्था

मुख्य विशेषताए

1 उच्च शिक्षा स्तर
2 चरित्र निर्माण पर विशेष बल
3 उत्तम परीक्षा परिणाम
4 सुरम्य वातावरण
5 भव्य भवन
6 समृद्ध प्रयोगशालाए
7 धार्मिक शिक्षा विशेष आकर्षण
8 विभिन्न खेलो के लिए सम्पन्न क्रीडा-क्षेत्र

1985 86 के शैक्षणिक वर्ष की उपलब्धिया

गुरु नानक देव विश्वविद्यालय की परीक्षा मे प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली छात्राए —

1 कु० अलका जैन—एम० ए० द्वितीय वर्ष हिन्दी
2 कु० जगजीत कौर—एम० ए० प्रथम भाग कठ सगीत
3 कु० उषा—बी० एस सी० तृतीय वर्ष (मेडिकल ग्रुप)
4 कु० अलका गोयल—बी० कॉम० द्वितीय वर्ष
5 कु० रमन आहूजा—बी० एस सी० द्वितीय वर्ष (मेडिकल ग्रुप)
6 रजनी छाबडा—बी० ए० द्वितीय वर्ष
7 सुनन्दन कुआतरा—बी० ए० प्रथम वर्ष
8 दीपा सूद—बी० कॉम० प्रथम वर्ष

विश्वविद्यालय मे द्वितीय तथा छात्रा परीक्षार्थियो में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली छात्राए :—

1 कु० वरिन्द्र कौर—एम० ए० द्वितीय वर्ष राजनीतिक शास्त्र
2 कु० पूनम जीत कौर—एम० ए० प्रथम वर्ष (वाद्य सगीत)
3 कु० अनिता—एम० ए० द्वितीय वर्ष (कठ सगीत)
4 कु० शेफाली—एम० ए० प्रथम वर्ष हिन्दी

प्राचार्या

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'

डी० ए० वी० कालेज, अमृतसर

उत्तर भारत की एक आदर्श शिक्षा संस्था जो अनुशासन और सुशिक्षा के प्रति समर्पित है

- 1955 में स्थापित और निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर, जिसका वर्तमान विद्यार्थी सख्या 4000 और प्राध्यापक सख्या 135 है।
- हमारे भूतपूर्व छात्र आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे इस सस्था के आदर्शो की पूर्ति कर रहे हैं।
- परीक्षा परिणामों की दृष्टि से गौरवमय सस्था। प्रतिवर्ष अनेक परीक्षाओ में अग्रिम स्थितिया।
- आर्ट्स, साईस, कामर्स, सभी सकायो मे सर्वोत्तम शिक्षा।
- अग्रेजी, हिन्दी, अर्थशास्त्र और गणित में स्नातकोत्तर कक्षाए।
- 'जॉब-ओरियेंटिड' कक्षाओं की व्यवस्था।

अनेक युवको को सफल डाक्टर, इन्जीनियर, प्रशासक, व्यवसायी एव आदर्श सामाजिक बनाने वाली यह आर्य सस्था, इसके प्राध्यापक तथा विद्यार्थी, इस शुभ अवसर पर पधारने वाले सभी प्रतिनिधियो एव अभ्यागतो का हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

धर्मवीर पसरीचा
प्रिंसिपल

ओ३म् स्तुता मया वरदा वेदमाता।
वरदाता वेदमाता की स्तुति मे लगे हुए

डी.ए.वी. कालेज आफ एजुकेशन, अबोहर

के विद्यार्थी एव आचार्य कुल की
हार्दिक शुभ कामनाए

सत्यपाल दुग्गल
प्राचार्य

दयानन्द कालेज हिसार (हरियाणा)

1 शताब्दी वर्ष मे सस्था ने कामर्स ब्लाक का निर्माण किया है, जिस पर लगभग तीन लाख रुपये खर्च आया है।
2 इस वर्ष नर्सरी टीचर ट्रेनिंग व स्टेनोग्राफी के डिप्लोमा प्रारम्भ किए गए हैं।
3 हरियाणा सरकार व कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की अनुमति से इस वर्ष एम० ए० इगलिश कक्षा प्रारम्भ की गई है।

(डा०) एस आर्य
प्राचार्य

ओ३म्
वय राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता ·

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार (हरयाणा)

(अन्तर्गत डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री सभा, नई दिल्ली)

विश्व मे नित्य प्रति पनप रहे भ्रष्टाचार, अनैतिकता, आतकवाद तथा विघटनवाद को निर्मूल कर, आधुनिक परिप्रेक्ष्य मे वैदिक विश्वभ्रातृत्व एव मानववाद के पुनरुत्थान का सुदृढ सकल्प हमारा ध्येय है।

इसी पावन उद्देश्य के हेतु युवा पीढी को सर्वथा निशुल्क प्रशिक्षण देते हुए उसे वैदिक सस्कारो तथा आध्यात्मिक भावनाओ से ओत-प्रोत सात्विक वातावरण प्रदान कर शुद्ध एव सुसस्कृत किया जाता है, जिससे अच्छे मानववाद के आदिम प्रवक्ता, तथा स्रष्टा अग्नि, वायु, आदित्य, अगिरा, गौतम, कपिल, कणाद, व्यास, मनु आदि की इस पावन धरा पर तथा आधुनिक युग मे मन्त्रद्रष्टा महर्षि दयानन्द सरस्वती की इस कर्मस्थली पर वैदिक मन्त्रो के दिव्य स्वप्नो एव सत्सकल्पो को साकार किया जा सके।

इसी के लिये यह सस्था मानवोद्दीपन के इस पावन यज्ञ मे अपने को समिधा के रूप मे समर्पित कर रही है।

सत्यप्रिय शास्त्री, एम० ए०
प्राचार्य

With
Best Compliments
From

Principal Baljwant Rai Gupta

1 Maharaja Harisingh Agricultural Collegiate School, Nagbani—Jammu
2 Maharaja Harisingh D A V Public School, Gandhi Nagar—Jammu
3 Maharaja Harisingh D A V Public School, R S Pura—Jammu
4 Maharaja Harisingh D A V Public School, Poonch
5 Maharaja Harisingh D A V Centenary Public School, Akhnoor—Jammu
6 Maharaja Harisingh D A V Centenary Public School, Trikuta Nagar—Jammu

---

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

देहली इण्डस्ट्रीज

४, पहाड़ गंज लेन
नयी देहली-११००५५

D.A.V. College, Chandigarh

— The College is internationally known for its outstanding accomplishments in academic, sport and cultural activities

— The name of the College has figured in the national T V programme when two of our students entered the semi finals of the Quiz Time Programme by scoring the highest points

— Our is the premier institution affiliated with the Punjab University

— Our boys have topped in the various University Examinations every year We have been excelling our own record Thus, we are our own rivals

—We have bagged the P U Efficiency Shield in Sports for 13 years on end

— In the University teams of different games it is mostly our students who are selected to play and they have won laurels for the Punjab University

— We have produced sportsman of international stature The names of Kapil Dev, Yog Raj Singh, Ashok Malhotra may be mentioned

— It is our boys who embellish the merit lists published by the Panjab University

— In the cultural field, our boys have done remarkably well They have won prizes wherever they have represented the College We bagged the P U Jhanar Trophy for three consecutive years.

— The College runs job-oriented Management Courses in the evening

— The College imparts training in Computer handling A number of batches has already passed out

— The College runs the course leading to Diploma in Rural Development

— The College has been recognised as a Model Institution by the National Institute of Educational Planning and Administration, New Delhi Over 300 Principlas from all over India have been sent here to study its working as a Model College

K S Arya

Principal

DAV Public School Jamul

Has many outstanding achievements to it's credit

* Ours is the only school in this area to introduce audio-visual teaching aids

* D A V Public School, Jamul is the first school to conduct Inter-School Quiz Competetion at Twin District Level

* Our school proudly houses a Hobby Club where children make candless, soaps, tooth powder, boot polish and rakhees etc

* We have adopted a very novel technique—practical manage ment training to the children

* The school is functioning on faculty basis, thus laying emphasis on each subject

DAV Public School

(English Medium)

A C C Jamul Works

Jamul-Bhilai-490024

Durg (M P) (S E. Rly)

D.A V. Secondary School (Lahore)

SECTOR 8, CHANDIGARH

SOME SALIENT FEATURES

1 It is the same school as was established in Lahorein 1886 and rehabilitated at Chandigarh in 1955

2 It is one of the best schools in North India

3 It is the only traditional school with Public School bias in the area

4 It is at the top in C B S E Examinations The school has repeatedly bagged top positions four times

5 The school has produced outstanding players of National and International levels Kapil Dev, Ashok Malhotra, Yog Raj and Chetan Sharma are cases in point

6 The school has a nice hostel complex known Hari Ram Hostel with modern amenities right on the school campus

7 The school has a Punjab National Bank Extension Counter just near its gate

8 The school has four well-equipped Laboratories, a Well-stocked Library, two Workshops and a Book Store

9 Arrangements exist for all co-curricular activities, including N C C , Scouting and Music Club

10 The school has been winning Over-all Efficiency Shield for many years in succession in the U T Tournaments

11 Special sections for purely English Medium with Model School Curriculum, in each class, exist

12 All Groups and all Streams (For + 2 Stage Arts, Commerce, Medical and Non-Medical Subjects) are run by the school.

13 Special arrangements exist for Computer Science classes

14 Scholarships given to brilliant students and stipends to poor deserving students

15 Coaching available for special classes for resident students

Ravinder Talwar

Principal

With Best Compliments fram

DAV Centenary Public School

Cheeka Kurukshetra

(Nursary to VI)

Co-educational quality institution for repeatedly all-round development of Tiny Tots Declared winner in co curricular activities in the whole Subdivision since its inception

(Mrs) **Sudese Gandhar**

Principal

DAV Centenary Public School Malerkotla

Established in the Centenary Years of the D A V Movement

Present Strength of Students from Class IV to Class VII is 400

Junior Wing under construction at Club Road, Malerkotla Construction of Senior Wing shall be started soon on 20 Bighas of land at Ludhiana Road

I J Kansal — *Principal*

Vinod Mehra — *Chairman*

B B Gakhar — *Manager*

Vishveshvaranand Vedic Research Institute

P O Sadhu Ashram, Hoshiarpur 140 021 (Punjab, India)

The Institute was first founded at Shant Kuti, Simla in 1903, for the preparation of a Vedic Lexicon In 1918, it was shifted to Indore and finally to Lahore where it took a regular shape, under the Honorary Directorship of Acharya Vishva Bhandhu, from January 1, 1924 It continued working there until the partition of the country in August, 1947 and was rehabilitated in November 1947 on the Indian side of the Punjab at its present place, namely Sadhu Ashram, Hoshiarpur, through the benevolence of Shri Dhaniram Bhalla

Besides publishing a *Vedic Word Concordance* in 16 volumes, covering 11, 000 pages, the Institute has so far brought out about 800 works on Vedas, Linguistics, Grammer, Literature, Indian History and Philosophy, Astronomy, etc

The publications include the most prestigious 20 volume project of *Maha-Subhasita Samgraha* of Dr Ludwik Sternbach who bequeathed his entire life-fortune to the V V R I, which administers the Dr Ludwik Sternbach Foundation for carrying out the Maha-Subhasita Samgraha project and other allied publications Under the editorship of Prof S Bhaskaran Nair, its four volume had been published during the life-time of Dr Sternbach to his entire satisfaction The volume V was pubilshed by the Institute posthumously, and the printing of the Volume VI is nearing completion The Institute also publishes a cultural Hindi monthly '*Vishva Jyoti* and a Sanskrit quarterly '*Vishva Samskritam*', both edited by Dr Veda Prakash Recently, an endowment fund has been instituted for conducting R B Mulraj Memorial Lecture Series

---

Hans Raj College, Delhi

(University of Delhi)

Delhi-110007

Founded in 1948 in the sacred memory of Mahtama Hans Raj

Premier Co Educatianal Institution of Northern India

Largest Institution of the University of Delhi with highly qualified Faculty

Provides Instructions in Science, Arts and Commerce

Well equipped Laboratories Computer Centre, Central Library, Departmental Libraries and Boys' Hostel

Congenial Atmosphere and Discipline for the Pursuit of Education

Consistent Excellent Results with Top Positions in the University Tops in Debates, Extra-Curricular Activities and Sports

D.A.V. College Malout

D A V College Malout is one of the major links in the long chain of D.A V Movement and sends its felicitations on the Centenary Celebrations and pledges its contribution and dedication for furthering the Movement It is a major College of the Region with over one thousand students in the Faculties of Arts and Science

Salient Features

* A fully developed Campus with Administrative Block, Art Block, Science Block, Canteen Block, Dispensary, a separate Girls Wing and D.A V Edwardganj Public School Campus.
* Excellent Results Seven students in Panjab University MERIT LIST (various classes) and 90 students with FIRST DIVISION in 1986 Examinations
* College is running 30 (thirty) Adult Education Centres under cent per cent U G C assistance, likely to be raised to 90 (ninety) Centres (Regional Centre)
* Extensive play-grounds with facilities for all major games
* Units of N C C & N S S
* Great emphasis on Extra Curricular Activities
* Youth Services Club, catering to the students' urge for Treking, Rock climbing, skiing, Mountaineering and other ac ivities.
* A well-equipped and well maintained Library and well-equipped Science Laboratories
* Provision of Dharma Shikha for moral development of the students
* Arrangement of educational tours both for boys and girl every year.

Phones — *Office* 186, Resi 246

P L Trakru
Principal

M.G. D.A.V. College, Bathinda

Outstanding Achievements of the College

1 The college has been winning top positions in various classes every year in the University

2 Laboratories, Library and Building completely removed

3 Multi ficulty college with Humanities, Science and Commerce Groups upto Under-Graduate level

4 College selected by the University for the prestigious programmes of College of Humanities, Social Science Improvement Programme and College Science Improvement Programme

5 Education through Computers being introduced on experimental basis from 1986-87 session

6 College having most efficiently managed organisation such as N S S, N C C and Youth Welfare

7 College having highly educated and brilliant faculty of 42 teaching and 40 non teaching members

8 Principal V N Chawla held the prestigeous positions of Member, Syndicate and Senate of Punjabi University, Advisory Council N S S, Youth Welfare Department and many other adhoc Committees, President, Principals' Association of Private Colleges affiliated to Punjabi University, Patiala

Principal

With Best Compliments From

Principal Staff & Students

B.B.K. D.A.V. College For Women

AMRITSAR (PUNJAB)

Established 1967, with Arts Subjects Competent Faculty

Over The Years Following Faculties Added

1 Commerce —1976

2 M A Art & Painting —1980

3 Post-Graduate Diplomas —1983

(i) Cosmetology

(ii) Business Management

(iii) Personnel Management

4 Certificate Courses —1983

(i) Photography
(ii) English Speaking
(iii) French Learning

5 DAV Centenary Boutique —1985

Commodious Hostel accommodates 85 inmates

Academic Results—25 Merit positions in Annual University Examination in 1985 Excellent Pass Percentage

Sports College won 1986 General Championship of G N D U Also Champions in Cricket, Table-Tennis, Kho Kho, Foot-Ball, Weight-Lifting, Handball, Swimming & Badminton Runners-up in Basket-Ball

Special Functions held to commemorate DAV Centenary Year

1 Seminar on "Quality Education and the Public School The Role of DAV".

2 Kavi Sammelan

3 Shatayujya Utsav.

4 Flower Show

5 Series of Hundred Lectures

6 100 Red Cross Volunteers donated Blood

7 Twelve Commerce Students went to Padmawati College, Tirupati for Students Exchange Programme

BBK DAV College For Women Amritsar is a sprawling institution covering 65 000 sq yrds DAV Public Schoo stands on its Campus

It is one of the prestigious colleges of North India

(Mrs) S Ahlawat
Principal

D.A.V. College Sadhaura [Ambala]

Started in 1968, this co-educational institution enjoys pride of place in Haryana It caters to the needs of both Science and Arts students

Free from noise-pollution, its class-rooms provide congenial atmosphere for studies. That is why a large number of students from the surrounding areas flock to this fount of knowledge to drink deep at

Its play-grounds and various clubs afford the students opportunities to acquire discipline, shed stagefear and display their dormant qualities

The Annual Rural Sports Melas and Folk-Dance Competitions attract big crowds

The university examination results and the achievements in sports and co curricular activities bear a testimony to the alround progress registered by the College.

B R Relan
Principal

D.A.V. Public School,

GIAN BHAWAN, SANJAULI, SHIMLA-6

(Under the DAV College Managing Committee, New Delhi)

Date of Opening —7th July, 1984 The opening ceremony was performed by the worthy President, DAV College Managing Committee, Shri Veda Vyasa Ji

Achievements —It aimed at the 10 plus 2 Standard In the initial year, Classes upto 5th Standard were started 6th Standard introduced in 1985-86 and 7th Standard in 1986 87 academic years Will continue raising the standard till ultimate aim is achieved The institution not only met the long felt need of the people but it also provided employment to jobless talented educated persons

Year-wise information regarding teaching staff vis a vis student is given below —

Year	*Teaching Staff*	*Students on Roll*	*Number of Resident Students*
1984-85	9	34	4
1985-86	17	334	22
1986 87	23	460	30

It is significant to mention that ab initio hostel facilities were provided enabling people, living in the interior parts of the Prodesh, to avail facilities of better education to their wards, which was not only lacking but in true sense it was also need of the hour The standard both of School and Hostel is so well maintained that every parent and high dignitaries visting the institution, speak highly about it

Building —The School as well as Hostel is housed in rented buildings Annually nearly 2 lakhs is paid as rent alone Efforts are afoot to raise its own building, depending upon the availability of suitable land

Finance —The institution raises funds from its own resources to run the entire show No aid from the Organisation or from Government side is available

Standard —C B S E Syllabus is being followed

Name of Principal —Mrs P Sofat, having 24 years experience in English Medium Schools

Chaman Lal D.A.V. Senior Public School PanchKula (Haryana]

[Affiliated to CBSE for 10 to 2 Stage]

Offers warmest felicitations to the D A V College Managing Committee, New Delhi on their successfully completing 100 Years of gloriaus work and achievement in running a net-work of prestigiows intitutions all over the Land of the Holy Vedas.

Salient Features of This School

* Most Modern Building in Healthly Surroundings
* Well-Equipped New Science Labs
* Cricket Pitch and Sports Track
* Cent Per Cent Resluts in All India C B S E Exams
* Competent and Efficient Staff for + 2 Stage
* A Number of Extra-Mural Activities Winning Laurels in Dance, Music and Declamation
* Started only in 1982 has turned out Players of National Level in Badminton Yoga and Handball
* G K and N T S Exams Conducted
* Hostel and Transport Facilities Provided
* Evening Classes in N T T Busines and Personnel Management as Part of Adult Education
* Creche and Day-Care Centre for Infants
* Both English & Hindi as Medium Encouraged

B.B Gakhar
Manager

V P Paul
Princip..

Parkash Brothers

Engineers & Contractors

Phone : 6417269

E-90, Greater Kailash-1
New Delhi-110048

M/s. Bahl Builders (P) Ltd.

E-90 G. Kailash-1,
New Delhi-110048

M/s. Parmeshri Dass & Sons

Builders & Engineers

DDI Kalkaji

Phones 6437820
6436383

(P)

WHY IS THE DAV PUBLIC SCHOOL A PREMIER INSTITUTION IN PATIYALA ?

IT IS SO

BECAUSE ITS ACHIEVEMENTS DURINGS A SHORT PERIOD OF ONLY THREE YEARS SPEAK VOLUME OF ITS PERFORMANCE

SOME HIGHLIGHTS :

1 The School was started on 1 6 83 and by 1 6 86, i e, within three years only, it has 960 students on its rolls, all of whom were admitted strictly on the basis of their meritorious performance in the entrance test The School is imparting education upto class 7th this year but it shall be upgraded to 10+2 eventually by 1988

2. The teachers are being paid their remunerations as per the salary scales of Central Government The staff is highly qualified and efficient

3 The School offers education in academics, fine arts, sports, moral science and ancient and modern culture o Bhar t Because of these package services offered with full devotion and dedication, there is a great rush for admission to this School

4 The School has negotiated with some local party for the purchase of nearly one acre of land Rs 13 lacs in the mos t posh area of Patiala The construction of the building on this land will commence during the very Centenary Year of of the DAV Movrment

5 The School owns two buses of its own for the conveyance of the childern

6 Our School childern are encouraged to participate in every inter-school competition and they have always returned with distinction A few of them are quoted below —

I (a) Shilpa Wadhwa	1st prize	Organised by Giants C u b
(b) Sanjiv Chopra (Quiz competition)	2nd prize	—do—
II (a) Bhangra team	2nd prize	Organi sed by Indian Red Cross Society on 9 2 85
(b) Gidha team	3rd prize	—do—
(a) III Ella (in flower arrangement	2nd prize	Oranised by the Aorobindo Society Patiala on Mother's Birthday Celebrations
(b) Folk dance team (Dogri dance)	1st prize	—do—
(c) Gidha team	2nd prize	—do—
IV (a) Angel	1st prize	In Art competition organised by Sh Sanatan Dharam Kumar Sabha, Patiala on the 6th Anniversary of Sh Dasondhi Ram Birji Maharaj.
(b) Pankaj	2nd prize	
(c) Jotpreet	3rd prize	
(d) To the School	A Shled	

V Shalu Gupta won Gold Medal in the inter-school competition in 'Manas Examination' organised by Sh Ramayan Prachar Sangh, Raghu Majra, Patiala

VI Jotpreet Singh won 1st prize in declamation contest organised by Municipal Committee, Patiala on Shahid Bhagat Singh Memorial Day

7 Seeing the admirable performance of the childern, Mr R L Gupta, one of the parents, offered to a ward Gold Medal to a pupil who tops academics in the highest class in the School every year. There are other citizens of Patiala namely, Sh R C Kampani, Sh D R Gupta, Dr N S Sodhi, Sh B B Gakhar, Sh M L Gupta, Sh Yogesh Gupta, Sh S K Girdhar who have offered Rs 250/ each to the best child in various fields of academics, arts, sports and cultural activities in the School

We dedicate ourselves to meet the challenge of the ever-growing educational needs of the town and we appeal to our valued parents community to co-operate with the School in bringing about an integrated development of each and every individual child under our care

(Mrs) P Lall
Pricipal

DAV Public School

Vikas Puri/Janak Puri, New Delhi

D A V Public School, Janak Puri was started to vitalise the moral values and Indianize the Public School System of Education.

Student Enrolment and Staff ,

In 1982 with an initial enrolment of about 400 students, it has grown quickly and now more than 1200 students are on its rolls from Nursery to Standard VIII. The teaching staff comprises of 50 highly qualified and devoted teachers to impart general education of high quality

In a short span of 4 years, it has occupied a unique position in all fields of students' activities—academic, sports and co-curicular activities

Building

On account of all-round progress made by the School, the demand for admission to all the classes has accelerated In order to meet the growing need for admission we are very soon shifting some of our classes to Vikas Puri for which we have already been allotted by D D A a plot of land measuring about 4 acres

Co Curricular Activities :

Special stress is laid on Vedic doctrines , and to inculcate moral values and to create awareness of our Cultural Heritage, a whole-time qualified competent Dharma Shiksha teacher has been appointed Emphasis is also given on participation in Inter-School and locally arranged programmes of Arya Samaj and Competitions at city, zonal, district and national levels

Keeping in view all-round development of the child's personality, there are 6 clubs and 6 SUPW groups Efforts at developing team spirit and developing leadership and management qualities are made through House System These Houses organise morning assembly national and social festivals and many other cultural programmes

Our artists and speakers have bagged a large number of trophies, medals and many individual prizes in the various Competitions organised by Nehru Bal Mela Samiti, National Museum of Natural History, Shanker's International and Vivekanand Kendra

Annual Function

The students presented a colourful entertainment programme at the Annual Function of the School, the highlights of which were telecast by Delhi Doordarshan

Educational Trips and Excursions

To inculcate a spirit of adventure, self-reliance and cooperation, the children are encourged to participate in all sorts of educational activities. Many educational-cum-pleasure tours and trips are also conducted for the benefit of the students

Library and Laboratory

The School has a well-equipped Library and a well-eqipped Laboratory for the students

Though yet in infancy, the School has made a mark and has carved place for itself in the locality Our past achievements are a source of legitimate pride for us and we can look forward with confidence to a brighter future

Ever in the Service of the Student Community

With Best Compliments From

The Principal, Staff and Students of

Des Raj Vedhara DAV Centenary Public School

Phillaur (Jalandhar)

Salient Features

1 A co-educational institution, imparting education in the faculties of Arts and Commerce in an educationally Backward Area of Historical Importance

2 Miss Kamaldeep Kaur of B A Part-I stands first in the University Exuberant merit positions and large number of of Ist positions

3 The College Volley-Ball team has bagged the GND University championship for the year 1986-87 in its maiden entry for the Inter-College Tournament

4 Since its inception in 1985 the number of students has risen from 500 to 650

5 Professionally competent and devoted staff with excellent scholastic achievements

6 Serene and sylvan atmosphere, without any psychological strains and obsessions

7 Stress on discipline and moral education.

8 In pursuance of the foot-steps of Swami Dayanand Saraswati, our mission is "Service to the Nation"

M.L. Aeri
Principal

GOODS TRANSPORT HELPS NATIONAL INTEGRATION
Efficient movement of goods is a pre requisite for healthy growth of the economy of any country in fact transport is really the wheels of trade and commerce
We South Eastern Roadways have been in the transport business for three decades We have established regional offices all over India at Bangalore Bombay Delhi Gauhati Hyderabad Patna Poona Ahmedabad and Madras with over 600 branches all over the country We have one of the largest fleets in the country highly trained staff and most modern warehousing facilities
From Kashmir to Kanya Kumari and Kandla to Kohima Thus by associating people from all walks of life in different parts of the country we cut across all barriers of languages caste creed and religion and help national integration
We have Booking and delivery branches at all the industrial complexes and commercial towns We bring raw materials from remote corners and transport finished products to the length and breadth of the country
SER
SOUTH EASTERN ROADWAYS
Roadways House 35, Arakashan Road Ramnagar NEW DELHI 110055
Ph 517001-02-03 516209 Telex ND 2780

रजिस्ट्रेशन न० आर० एन० आई० 39/57 डी० सी०40
N D. P.S.O. ON : 18-2-88, 14 फरवरी, 1988

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री, द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाड़ी धीरज (फोन : 527335) दिल्ली से छपवाकर कार्यालय आर्य जगत्, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित । स्वामित्व—आर्य सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 (फोन 343718)

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य जगत्
साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य —30 रुपये विदेश मे 65 पौ० या 125 डालर वर्ष 51, अक 9 रविवार 28 फरवरी, 1988 दूरभाष। 343718
आजीवन सदस्य-251 रु० इस अक का मूल्य—75 पैसे सृष्टि सवत् 172949088, दयानन्दाब्द 163 फाल्गुन शु०-11, 2044 ई०

टंकारा में ऋषि बोधोत्सव सम्पन्न

देश-विदेश से समागत हजारों श्रद्धालुओं द्वारा श्रद्धांजलि

प्रति वर्ष की भाति इस वर्ष भी महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टकारा मे ऋषिबोधोत्सव 15,16 17 फरवरी 1988 को बडी धूमधाम से मनाया गया। दि० 10 2 88 से प्रो० राम प्रसाद जी वेदालकार, प्रो० वाईसचासलर, गुरुकुल कांगडा के ब्रह्मात्व मे यजुर्वेद पारायण यज्ञ प्रारम्भ हुआ। यज्ञ की पूर्णाहुति शिवरात्रि वाले दिन प्रात 11 बजे सम्पन्न हुई। इसमे हजारो ऋषि भक्तो ने भाग लिया। इस अवसर पर भिन-भिन स्थानो से हजारो ऋषि भक्त पधारे तथा आर्य कन्या महाविद्यालय बडौदा, जामनगर, कन्या गुरुकुल पोरबन्दर, गुरुकुल सूपा, गुरुकुल ध्रागध्रा के छात्र छात्रायें भी आये। दिल्ली से दो बसें, (एक आर्य समाज चूनामण्डी, पहाडगज, से और दूसरी टंकारा सहायक समिति दिल्ली द्वारा), वेस्ट बगाल कलकत्ता से एक बस, हरियाणा से एक बस, पजाब मे इतना आतकवाद होने के बावजूद जालन्धर, लुधियाना, अमृतसर, चण्डीगढ से भी बसें आई। आध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु तथा अन्यान्य प्रदेशो से अपनी-अपनी मेटाडोर करके लोग यहा पधारे। यह मेला गुजरात प्रदेश मे मनाया जा रहा था इसलिये आय समाज सूरत, जामनगर, राजकोट, पोरबन्दर, अहमदाबाद आदि से भारी सख्या मे ऋषि भक्त पधारे। षड्दर्शन एव योग प्रशिक्षण शिविर, आर्य वन विकास फाम रोजड, सागपुर, साबरकाठा से स्वामी सत्यपति परिव्राजक जी अपने ब्रह्मचारियो के साथ पधारे।

इस वर्ष लगर का प्रबन्ध तीनो दिन आय समाज सूरत के प्रसिद्ध कायकर्ता एव प्रसिद्ध उद्योगपति श्री जयदेव आर्य द्वारा किया गया। वे हलवाई तथा अन्य कार्यकर्ता तथा खाद्य सामग्री सूरत से अपने साथ लाये थे। पधारे हुए ऋषि भक्तो ने इस ऋषि लगर की भूरि-भूरि प्रशसा की। ट्रस्ट द्वारा भोजन पहले जहां 500 व्यक्तियो को इकठ्ठा कराया जाता था वहां इस बार 800 व्यक्तियो के लिये एक साथ भोजन करने की व्यवस्था उपलब्ध कराई गई। यह भोजन विगत वर्षों मे जो थालिया तथा कटोरिया एकत्र की गई थी उनमें परोसा गया। अभी भी 500 थाली तथा कटोरियो के सैट की आवश्यकता है, जिसे पूरा होने पर ऋषि लगर के अवसर पर परोसने मे सुविधा हो जायेगी और समय भी बचेगा।

दिनाक 17 2-88 को प्रात 11 30 बजे ध्वजारोहण बम्बई से आये हुए श्री प्राण नाथ सहगल पूर्व म्यूनिसियल काउसिलर एव स्पेशल एगजीक्यूटिव मजिस्ट्रेट, मलाड ईस्ट, बम्बई ने किया। महात्मा आर्य भिक्षु ने उद्बोधन किया इस समय का दृश्य देखने योग्य था जब हजारो ऋषि भक्त पक्तियो मे खडे होकर ध्वज गीत बोल रहे थे। श्री प्राण नाथ सहगल ने, इस सम्मान के लिए सभी का आभार प्रकट किया और भविष्य मे टकारा ट्रस्ट मे चल रहे कार्यों मे पूरा-पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया।

दिनाक 17-2 88 को लगभग 12 बजे भव्य शोभा यात्रा प्रारम्भ हुई जिसमे दिल्ली पजाब, उत्तर प्रदेश, हरियाणा बिहार, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, राजस्थान, जम्मू कश्मीर तमिलनाडू, गुजरात, महाराष्ट्र, आसाम, नागालैण्ड आदि प्रदेशो से आये आर्यजन सम्मिलित हुए। यह शोभा यात्रा टकारा गाव के सब बाजारो से होती हुई ऋषि दयानन्द के जन्म स्थान पर पहुची, वहां पर यज्ञ हो रहा था। ऋषि भक्तो ने वहां अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की। जहा जहा से शोभा यात्रा गुजरी उन सब स्थानो पर आर्य समाज टकारा ने पुष्पो की वर्षा तथा इलायची से इस यात्रा मे सम्मिलित सभी ऋषि भक्तो का स्वागत किया। शोभा यात्रा उस शिवालय मे भी गई जहां पर बालक मूलशकर को बोध हुआ था। शोभा यात्रा में पानीपत हरियाणा से पधारे हुए ऋषिभक्तो ने केसरी रग की पगडी बाधी हुई थी। वह दृश्य देखने लायक था। दिनाक 16-2 88 को भिन्न भिन्न प्रदेशो से पधारे हुए प्रतिष्ठित व्यक्तियो का विशेषकर प० आनन्द प्रिय जी उपप्रधान टकारा ट्रस्ट, का स्वागत किया गया। महात्मा आय भिक्षु जी, टकारा के ब्रह्मचारी श्री भारद्वाज, श्रीमती प्रतिभा पडित ट्रस्टी, श्रीमती वीरावाली ट्रस्टी, श्रीमती स्नेहलता हाण्डा ट्रस्टी, श्री नारायण दास एम कटारिया ट्रस्टी, श्रीमती शिवराजवती ट्रस्टी तथा अन्य प्रदेशो से पधारे हुए प्रतिष्ठित व्यक्तियो का टकारा मे मत्री जी द्वारा पुष्पमालाओ से स्वागत किया गया। प० आनन्द प्रिय जी उपप्रधान टकारा ट्रस्ट ने टकारा मे अब तक जो प्रगति हुई है उसकी जानकारी दी। उसी दिन रात्रि को 8-30 बजे से 11 30 बजे तक महात्मा आर्य भिक्षु जी की अध्यक्षता में श्रद्धाजलि सभा हुई। दिल्ली से पधारे प० क्षितीश वेदालकार, बहन प्रतिमा पडित, प० आनन्द प्रिय, श्री यशपाल शास्त्री, श्री मगलसैन चोपडा, श्री हरिओम् सिद्धातालकार, टकारा के ब्रह्मचारी एव कलकत्ता से आये हुए श्री सीताराम आय आदि ने अपनी भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की। टकारा के मत्री श्री रामनाथ सहगल ने वार्षिक रिपोर्ट पढकर सुनाई और अगले वष टकारा ट्रस्ट मे अन्य क्या क्या काय किये जायेंगे इस विषय पर अपने विचार रखे। इन कार्यों मे भोजनालय मे पक्का फर्श, स्त्रियो के लिए 10 नये स्नानागार, भोजनालय के ऊपर पक्की छत का निर्माण, टकारा मे जो मीठा पानी नीचे निकला है उन स्थानो पर पेड लगाना फूल लगाना और जहा जहा खाली मिटटी के मैदान हैं वहा घास लगाना, टकारा ट्रस्ट की अपनी जो जमीन हैं उसमे गेहू आदि बोने की योजना बताई और इसके लिए उपस्थित ऋषि भक्तो से अपील की कि वे टकारा को विश्वदशनीय बनाने की योजना बनाए और इसके लिए अधिक से अधिक धन राशि एकत्रित करके टकारा को भिजवायें।

टकारा मे इस समय लगभग 30 गायें तथा बछडे आदि हैं, अब पानी की कठिनाई कुछ मात्रा मे कम हो गयी है इसलिए गोशाला के कार्य को आगे बढ़ाना है ताकि विद्यार्थियो को गायो का दूध मिल सके और गो पालन हो सके।

निदाक 17 2 88 को टकारा ट्रस्ट की बैठक हुई उसमे निश्चय हुआ कि उपदेशक विद्यालय के स्तर को ऊचा किया जाये तथा उपदेशक विद्यालय को किसी विश्वविद्यालय से सम्बन्धित किया जाये ताकि विद्यार्थी शास्त्री तथा आचार्य की परीक्षायें दे सकें और विद्यार्थियो की सख्या मे वृद्धि हो। उसके लिये निश्चय हुआ कि अधिक मात्रा मे प्रचार किया जाय। उपदेशक विद्यालय चलाने का उददेश्य यही है कि देश तथा विदेश की आर्य समाजो को पुरोहित, भजनापदेशक तथा अच्छे वक्ता प्रदान किए जा सकें।

ट्रस्ट को बैठक मे यह निश्चय हुआ कि गुजरात सरकार के रेवन्यू मिनिस्टर से सम्पक करके ऋषि जन्म गृह को जल्दी लेने के लिये प्रयत्न किया जाये। अब यह काय इस स्तर पर पहुच गया है कि हमे पूरी आशा है कि इस वष यह स्थान मिल जायेगा।

दिनाक 17 2 88 को जो समापन सम्मेलन हुआ, उसमे टकारा ट्रस्ट के मत्र ने सब समागत ऋषि भक्तो का धन्यवाद किया और प्राथना की कि वे अपने नगरो मे जाकर प्रचार करें और अगले वर्ष अपने अपने नगरो से अधिक बसे लेकर यहा पधारें। पधारे हुए ऋषि भक्तो ने वहा के आवास तथा अन्य सुविधाओ की भूरि भूरि प्रशसा की और विश्वास दिलाया कि अच्छी मात्रा मे दान एकत्र कर टकारा भेजेंगे ताकि टकारा ट्रस्ट की आर्थिक स्थिति को सुदृढ बनाया जा सके।

सम्पादक—क्षितीश वेदालंकार व्यवस्थापक—रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

वेद में सरस्वती देवता

– वीरेन्द्र सिंह पमार, आयुर्वेद शास्त्री –

वेद मन्त्रो मे ईश्वरीय ज्ञान निहित है। यह ज्ञान मनुष्य के लाभार्थ है। इसका लाभ मनुष्य को तभी मिल सकता है, जब इन मन्त्रो का वास्तविक अर्थ उसकी समझ में आ जाये। स्वामी दयानन्द ने इस सम्बन्ध में जो लिखा है उसका अभिप्राय है "ऋग्वेद मे ईश्वर से लेकर प्रकृति पर्यन्त सभी पदार्थों के गुणो का वर्णन है, इसलिये उन सभी पदार्थों के गुणो का ज्ञान प्राप्त करके उनको मनुष्य के लाभ के लिये उपयोग में लाना प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है।" इसलिये दयानन्द ऋग्वेद को चारो वेदो मे पहला स्थान देते हैं। वेद मन्त्रो से प्राप्त ज्ञान का लाभ मनुष्य को भौतिक उन्नति के लिये भी मिलता है। मनुष्य के जीवन का उद्देश्य यदि निःश्रेयस माना जाये तो उससे पूर्व उसको अभ्युदय भी प्राप्त होना चाहिये। वास्तव मे अभ्युदय के लिये ही भौतिक ज्ञान आवश्यक है और वह ऋग्वेद के मन्त्रो में उपलब्ध है। इन मन्त्रो मे निहित ज्ञान किस प्रकार प्राप्त किया जाये, इसके लिये मन्त्र ही स्वय हमे निर्देश देते हैं। दयानन्द ने इस सम्बन्ध मे मार्ग दर्शन किया है—'मन्त्र मे जो अर्थ निहित है उसका ज्ञान मन्त्र के ऊपर लिखे देवता से हो जाता है।' अर्थात् मन्त्र मे वर्णित विषय का सकेत उल्लिखित देवता से मिल जाता है। इसके साथ ही दयानन्द ने वेदो के सहिताकरण का प्रयोजन बताते हुए कहा है 'वेद मन्त्रो को सूक्त, वर्ग आदि मे सकलित करने का प्रयोजन यह है कि प्रकरण के अनुसार मन्त्रो का अर्थ करना सुविधाजनक रहे।'

वेदो की उपादेयता तो यही है कि मनुष्य अपनी ऐहिक एव पारमार्थिक उन्नति के लिये वेद मन्त्रों मे निहित ज्ञान का लाभ उठा सके। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—पुरुषार्थ चतुष्टय—के लिये सतत प्रयत्न करना ही मानव जीवन की सफलता है। मोक्ष को छोडकर प्रथम तीन पुरुषार्थ तो केवल अभ्युदय की प्राप्ति के लिये ही हैं। अभ्युदय के लिये सम्पूर्ण ज्ञान हमे वेद मन्त्रो से प्राप्त होता है। स्वामी दयानन्द ने इसी दृष्टि से वेद मन्त्रो का भाष्य किया है। उनके इसी मार्ग दर्शन से प्रोत्साहित होकर ऋग्वेद के प्रथम मडल के तृतीय सूक्त के अन्तिम तीन मन्त्रों का भौतिक अर्थ नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है। इन तीनो मन्त्रो का देवता सरस्वती तथा ऋषि-मधुच्छन्दा वैश्वामित्र एव छन्द गायत्री है निरुक्तकार वेद में सरस्वती के प्रयोग के सम्बन्ध मे कहते हैं—"सरस्वतीत्येतस्य नदीवद् देवतावच्च निगमा भवन्ति।"

मन्त्र 1 पावका न सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती।
यज्ञ वष्टु धियावसु। ऋ॰ 1/3/10

मन्त्रार्थ—(सरस्वती) जलवती, प्रवाहवती, वृष्टि (पावका) समस्त स्थलाना शोधयित्री पवित्रकारिणी वा (वाजेभि) अन्नै (वाजिनीवती) अन्नवती, अन्नपूर्णा (धियावसुः) विशिष्ट कर्मणा धनान्न प्रदायिनी (न) अस्मदीय (यज्ञ) कृषि कर्म (वष्टु) वहतु, साफल्य प्रापयतु-वृष्टि सिद्धिप्रकाशिका भवेत् इतिभावा "सर उदकनाम" (निघटु), सरस्वती जलवतीति।

वर्षा समस्त धरातल को अपने जल-प्रवाह से पवित्र करती है। गन्दगी रोग कीटाणु आदि को नष्ट करती है। वह अन्नपूर्णा है, और कृषको के कृषि यज्ञ को सफल करती है।

मन्त्र-2 चोदयित्री सूनृताना चेतन्ती सुमतीनाम्।
यज्ञ दधे सरस्वती।
ऋ॰ 1/3/11

मन्त्रार्थ—(सूनृताना) अन्नानां (चोदयित्री) प्रेरयित्री, उत्पादिका (सुमतीना) प्रबुद्ध कृषकाणा (चेतन्ती) मार्गदर्शिका, उत्साह प्रदायिनी (सरस्वती) वृष्टि (यज्ञ) कृषिकर्म (दधे) धारयित्री भवतु, अस्ति। "आयु सूनृतेत्यन्न नामसु पाठात्" (निघटु)

अन्नों के उत्पादन को प्रेरणा देने वाली और प्रबुद्ध कृषकों को अन्नोत्पादन के लिये प्रोत्साहन देने वाली वर्षा कृषि कर्म को सफल बनाती है।

मन्त्र—3 महो अर्ण सरस्वती प्रचेतयति केतुना।
धियो विश्वा विराजति। ऋ 1/3/12

मन्त्रार्थः—(सरस्वती) वृष्टि (महो अर्ण) समुद्र इव जलपूर्णा अस्ति सा (केतुना) विशिष्ठकर्मणा (प्रचेतयति) कृषकान् ज्ञापयति बोधयति वा, सा (धिय) कर्माणि (विश्वा) सर्वाणि (विराजति) प्रकाशयति, कृषि कर्माणि-कर्त्तुं प्रेरयति।

वर्षा करने वाले मेघ जल से भरे हुए हैं और अमित वर्षा करने में समर्थ हैं वृष्टि जल बरसाकर किसानों का उद्घोषण करती है कि अब अन्न बोने का समय है और उन्हें कृषि कर्म में जुट जाना चाहिए।

तीनों मन्त्रों का प्रकरणगत अर्थ करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि इन मन्त्रो का देवता सरस्वती वर्षा ही है। वही जल प्रवाहिका है, अन्नोत्पादिका है तथा कृषको को अन्न बोने के समय की सूचना देती है। सरस्वती कुछ अन्य मन्त्रो की भी देवता है, वहा भी उन मन्त्रो का अर्थ इसी प्रकार जलवाहिनी, वर्षा अथवा नदी के सबध मे किया गया है। उदाहरणार्थ ऋग्वेद द्वितीय मडल के 41 वे सूक्त के मन्त्र 16, 17 और 18 यहा दिये जा रहे हैं।

1 अम्बितमे नदीतमे देवितमे सरस्वती, अप्रशस्ताइव स्मसि। प्रशस्तिमब न स्कृधि।

हे (अम्बितमे) आदर्श मात (नदीतमे) उत्कृष्ट नदी रूपिणि, जल प्रवाहिणि, (देवितमे सरस्वती) धनधान्य-प्रदायिनि वर्षे वय (अप्रशस्ता इव स्मसि) धनाभावादसमृद्धा इव भवाम, अत हे (अब) मात (न प्रशस्ति कृषि) अस्मान् धनधान्य समृद्धा कुरु।

भावार्थ—माता की तरह कृपा करने वाली, जलधारा प्रवाहित करने वाली, धनधान्य से समृद्ध करने वाली, वर्षा हमारे धनाभाव को दूर करके हमें समृद्ध करे।

2 त्वे विश्वा सरस्वति श्रिता आयूषि देव्यां। शुनहोत्रेषु मत्स्व प्रजां देवि दिदिड्ढि न।

हे (सरस्वति) वर्षा रूपिणि देवी (त्वे देव्या) त्वयि दानशीलायां (विश्वा आयूषि) सर्वाणि अन्नानि, मनुष्या वा (श्रिता) आश्रितानि सन्ति, सा त्वं (शुनहोत्रेषु) वायुविज्ञानवित्सु (मत्स्व) आनन्द प्रसारय हे देवि! (प्रजां-दिदिड्ढि) पुत्रान् देहि अथवा प्राण-रक्षकान् अन्नादय देहि। "आयुः सूनृतेत्यन्न नामसु पाठात्" (निघटु), "शुनः वायु" (निरुक्त)।

हे वर्षा देवी सरस्वती सब अन्नादि तथा मनुष्य तेरे ही आश्रित हैं। तु वायु सम्बन्धी विज्ञान वेत्ताओ को आनन्दित कर क्योकि वे जानते हैं कि वर्षा का कारण अन्तरिक्षस्थ वायु भी है। हम सभी मनुष्यो को पुत्रादि से तथा धनधान्य से पूर्ण कर।

3 इमा ब्रह्म सरस्वति जुषस्व वाजिनी वति।

(शेष पृष्ठ 11 पर)

सुभाषित

कृपणानाथ वृद्धानां यदश्रु परिमार्जति।
हर्षं सञ्जनयन् नृणां स राज्ञो धर्म उच्यते ॥

आश्रयहीन, अनाथ और वृद्धों के जो आंसू पोंछता है, वह अपनी प्रजा को प्रसन्न रखता है, यही राजा का धर्म कहा गया है। —महाभारत, शान्ति पर्व

सम्पादकीयम्

सुदृढ़ राष्ट्रीय संगठन की आवश्यकता

आज भारत में चारों ओर विघटन एव विश्रृंखलता ही दिखाई देती है। यह विघटन और विश्रृंखलता इतनी प्रबल हो उठी है कि भारत का प्रबुद्ध नागरिक इसके परिणाम की कल्पना करके ही भयभीत हो उठता है। यदि शीघ्र ही इसका प्रतिरोध न किया गया तो फिर यह इतनी दुर्दम्य हो उठेगी कि हमारे देश की एकता और स्वतन्त्रता सकट मे पड जायेगी। आज एक प्रदेश दूसरे प्रदेश से प्रतिस्पर्द्धा कर रहा है कि कौन कितनी स्थानीय सकीर्णता का आश्रय ले और कौन कितने उच्च स्वर से उच्चारण करे कि उसके साथ शत प्रतिशत अन्याय हो रहा है। क्षेत्रीयतुभुता, सीमा-विवाद आदि आदि इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। ये प्रदेश यह भूलने का यत्न कर रहे हैं कि वे सब के सब एक ही जननी जन्मभूमि के अविभाज्य अग हैं। देश की विभिन्न भाषायें इस सत्य को भुलाने अथवा झुठलाने का यत्न कर रही हैं कि वे सब की सब एक ही गीर्वाण-भारती की गौरवमयी सन्तान हैं और एक ही साहित्य परम्परा की विभिन्न अभिव्यक्तियां हैं। एक भाषा के कर्णधार दूसरी भाषा से स्पर्द्धा कर रहे हैं कि कौन कितनी आत्म प्रशसा का आश्रय ले और कितने रोष के साथ अन्य भारतीय भाषाओ की भर्त्सना करे। राष्ट्र भाषा की स्थिति बडी दयनीय हो गई है तथा भाषाओं की जननी सस्कृत को [कम से कम अनौपचारिक रूप से] तो मृत भाषा घोषित कर ही दिया गया है। नई शिक्षा नीति मे उसके लिए कोई स्थान नहीं है। प्रत्येक जाति-उपजाति दूसरी जाति उपजाति के साथ प्रतिस्पर्द्धा कर रही है कि कौन कितने पक्षपात का आश्रय ले और किस प्रकार अपने सकीर्ण स्वार्थ को सिद्ध करके अन्य जाति-उपजातियो के न्यायिक अधिकार को भी हेय सिद्ध कर सके। अल्पसख्यक समुदाय, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति आदि-आदि का सविधान में विशिष्ट उल्लेख और उन्हें कुछ विशेष अधिकार भी प्राप्त हैं, जिन्हें अब वे अपने मौलिक अधिकार मानते हैं।

इस देश की अनेकानेक अध्यात्म परम्परायें इस बात को भूल गई हैं कि वे सब की सब एक ही सनातन वैदिक अध्यात्म की शाखा प्रशाखायें हैं। ये परस्पर प्रतिस्पर्द्धा कर रही हैं कि कौन कितना बौद्धिक वितण्डावाद उठा कर अपने शास्त्र तथा अपनी साधना पद्धति को सत्य सिद्ध करे तथा अन्याय शास्त्रों तथा साधना पद्धतियो को असत्य सिद्ध कर सके। यही कारण है कि विभिन्न मतो अथवा सम्प्रदायो में नित्य किसी न किसी विषय पर विवाद होते रहते हैं। ये विवाद इतना उग्र रूप धारण करते जा रहे हैं कि परस्पर निन्दा एव अपमान ही नही अपितु हत्यायें तक भी होने लगी हैं और हत्यारों को सम्मानित एव पुरस्कृत किया जाता है। सम्प्रदाय के नाम पर पृथक् प्रदेश की मांग के समर्थन में राष्ट्रीय एकता को दाव पर लगाया जा रहा है।

प्रदेशों, भाषाओं और मत अथवा सम्प्रदायो के इस आन्तरिक कलह का लाभ हमारे विभ्रान्त शासक उठा रहे हैं। ये शासक पाश्चात्य परम्परा के अनुयायी होने के कारण भारत के प्रत्येक प्रदेश, भाषा, जाति-उपजाति तथा अध्यात्म-परम्परा के प्रति विद्वेष की भावना के पोषण में ही अपना लाभ मानते रहे हैं। उनका यही विश्वास है कि भारतवर्ष जब तक अपने अतीत गौरव का पूर्ण परित्याग नहीं कर देता तब तक उनका अपना कल्याण सम्भव नही, भले ही उससे देश रसातल को ही क्यों न चला जाए।

स्वाधीनता प्राप्ति से पूर्व तो आज के ये शासक वर्ग के प्राणी और इनके पूर्वज भी आवेग में कह उठते थे—'हमारी अपनी भी एक सभ्यता सस्कृति है, स्वाधीन होने पर हम उसी सस्कृति का प्रचार एव प्रतिष्ठा इस देश मे करेंगे।' किन्तु स्वाधीनता प्राप्त कर लेने के उपरान्त सत्तासीन हो जाने पर वे लोग इस बात को सहसा भूल गये हैं। भारतवर्ष के इतिहास का अवलोकन करने से विदित होता है कि 'एकोऽहं बहु स्याम, अर्थात् ऐक्य के आधार पर अनैक्य का वहन करना और पराये को भी अपना बना लेना ही इस देश की प्रकृत परम्परा रही है। शक हूण, कुषाण आदि इसके उदाहरण हैं। भारतवर्ष की आर्ष मनीषा ने यह कभी नहीं चाहा कि व्यक्तिगत विशिष्टता उसके समष्टिगत स्वरूप में बाधक अथवा घातक सिद्ध हो। इसी प्रकार पराये को हमने उसके स्वभाव के अनुरूप स्वधर्म का पालन करने की पूर्ण स्वाधीनता देकर उसको अपना बना लेने का प्रयास किया है। किन्तु इसके विपरीत आज का शासक वर्ग परायों को प्रसन्न कर अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए प्रयत्नशील है। मदर टरेसा जैसी महिला को भारत रत्न' जैसे सर्वोच्च अलकरण से अलकृत करना, प्रशासन द्वारा निष्कासित ईसाई पादरियों को अन्त पुर से प्रश्रय प्राप्त होना तथा पोप को राज्य की ओर से आमन्त्रित करना आदि-आदि इस प्रकार के दुष्प्रयत्नो के उदाहरण हैं। यह आत्मसमर्पण देशघाती सिद्ध हो रहा है।

इस परिप्रेक्ष्य मे आज सर्वप्रथम यह निश्चय करने की आवश्यकता है कि भारतवर्ष के राष्ट्रवाद का आधार क्या है। किसी राष्ट्रीय सगठन को सफल बनाने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि उस जन परिवार को राष्ट्र का सुप्रतिष्ठित शरीर मान लिया जाए जो कि पूर्णरूपेण इस भारत भूमि को पूज्य तथा पावन मानता हुआ उसकी उन्नति के लिए न केवल कटिबद्ध और कृतसकल्प है अपितु समय-समय पर सब प्रकार का बलिदान देता आया है। देश के शेष जन-परिवारों को उसके साथ समझौता करना चाहिए। यदि ऐसा करने से कोई कतराता है तो यह समझना चाहिए कि वह सम्प्रदायवाद की भावना से भावित है। उसमे देशप्रेम और मातृभूमि के प्रति समर्पण की भावना का अभाव है, अत वह दण्डनीय है। इमाम बुखारी और शहाबुद्दीन का मुसलमान को प्रथम मुसलमान तदनन्तर भारतीय अथवा कुछ अन्य कहना इसी श्रेणी में आता है।

हिन्दू जाति को एक सम्प्रदाय और अहिन्दू कहे जाने वालो को दूसरा सम्प्रदाय मानकर दोनो को सम्प्रदायवाद के विष से विषाक्त बतलाना और फिर दोनों में समझौता करवाकर राष्ट्रीय सगठन की समस्या को सुलझाने की आशा करना तो अपने विक्षिप्त मानस का परिचय देना है। वैसा समझौता न कभी हुआ और न भविष्य में होने की किंचित् भी सम्भावना हो सकती है। इसके विपरीत जब से इस आधार पर किसी भी नाम का कोई सगठन बनाया है तब से ही भारतवर्ष का रहा-सहा ऐक्य भी दिन-प्रतिदिन क्षीण होता चला जा रहा है। इसे तो वैसा ही कहा जाएगा कि परम्परा से एक परिवार अपने निजी घर मे निवास करता आ रहा है और कोई अन्य बाहरी परिवार बलपूर्वक उसमें प्रवेश कर अपना अधिकार जताने के लिए न्यायालय में न्याय की दुहाई करे। यदि न्यायालय परम्परागत परिवार को बलात् प्रविष्ट होने वाले परिवार के समकक्ष मानकर निर्णय करने का प्रयास करता है तो यह कहना पडेगा कि वह न्यायाधीश या तो पक्षपाती है या फिर विक्षिप्त मस्तिष्क वाला है। ऐसा निर्णय करना उसकी न्यायबुद्धि का परिचायक नही कहलायेगा। आज का शासकवर्ग इसी प्रकार के पक्षपाती एवं विक्षिप्त मानस के न्यायाधीश की श्रेणी मे आता है।

विगत चालीस वर्ष से केन्द्रीय शासन अथवा शासक दल जिस दिशा की ओर अग्रसर है उसकी दिशा यदि न बदली गई तो इसमे सदेह नहीं कि इस देश मे कम्युनिज्म अथवा जडवाद के साथ साथ इस्लाम अथवा ईसाइयत का आधिपत्य हो जाएगा। तब एक प्रकार का राष्ट्रीय सगठन तो अवश्य देखा जा सकेगा किन्तु वह राष्ट्रीय सगठन वैसा ही होगा जैसा कि सोवियत रूस और लाल चीन आदि अन्यान्य कम्युनिस्ट देशो में देखा जाता है। तब राष्ट्रवाद को जडवाद अथवा साम्प्रदायिकता समझकर उसे समूल नष्ट करने का दुष्प्रयत्न किया जाएगा। उस अशुभ घडी को न केवल टालने अपितु उसको न आने देने के लिए ही आज राष्ट्रीय सगठन की नितान्त आवश्यकता है। अत भारतवासियों का, विशेषतया आर्य हिन्दुओ का यह परम कर्तव्य है कि वे इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर गम्भीरता से विचार करें और ऐसे राष्ट्रीय सगठन का गठन करें जो आकलान्त भारतवर्ष की वैदिक परम्परा को अक्षुण्ण बनाये रख सके और सैक्युलरिज्म की संकीर्णता से बचा सके तथा पथभ्रष्ट शासको को भी सन्मार्ग पर ला सके। ऐसा सुदृढ राष्ट्रीय सगठन ही वर्तमान तथा भावी, सभी समस्याओं का समाधान प्रस्तुत कर सकता है। उस सगठन के आधार पर ही यह देश शक्ति सम्पन्न होकर उन्नति के शिखर पर आरूढ हो सकता है, अन्यथा आज जिस अवसरवादिता और सैक्युलरिज्म के साथ-साथ साम्प्रदायिकता का भी नग्न नृत्य इस देश में हो रहा है वह इसको रसातल को ले जायेगा। इस अवसरवादिता को समाप्त करना ही आज की प्रथम आवश्यकता है। यह कार्य निष्ठावान व्यक्ति ही कर सकता है। स्वार्थी और अहवादी [इगोइस्ट] नही।

—अशोक कौशिक

'खुद मियां फजीहत दीगरां नसीहत'

['डेकन हेरल्ड' में प्रकाशित एक लेख और उसके उत्तर में प्रकाशित पत्रों के आधार पर]

12 नवम्बर 87 के डक्कन हेरल्ड (बगलौर) में मिया एम० बशीर हुसैन ने 'सती एण्ड हिन्दू फण्डा-मैंटेलिज्म' शीर्षक लेख में लिखा है "जब डा० राजेंद्र प्रसाद ने पुनर्निमित सोमनाथ मन्दिर का उद्घाटन करना स्वीकार किया तो तत्कालीन प्रधान मन्त्री पंडित नेहरू ने इसका विरोध किया था। किंतु वर्तमान नेताओं ने इस दिशा में एकदम विपरीत आचरण आरम्भ कर दिया है। लोकसभा अध्यक्ष डा० बलराम जाखड़ उस निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं जहां 4 सितम्बर को रूपकंवर को सती होने के लिए विवश किया गया। किसी समाचार पत्र ने एक ऐसा भी चित्र प्रकाशित किया जिसमें नंगे पांव मुस्कुराते हुए लोक सभाध्यक्ष को मचान पर आरूढ़ एक नागा साधू एक प्रकार से उनके सिर पर लात मार कर उन्हें परे कर रहा है। अपने इस लेख में मियां हुसैन ने राष्ट्रपति, उप राष्ट्रपति सहित सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों को कांची के 'हिन्दू पुनरुत्थानवादी' शंकराचार्य का भक्त बताया। उनका कहना है कि जन-सेवकों का आम जनता के सम्मुख धार्मिक समारोहों में सम्मिलित होना संविधान-सम्मत सम्प्रदाय निरपेक्षता के सिद्धान्त के विरुद्ध है और कांची के शंकराचार्य तो राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और विश्वहिन्दू परिषद् से सम्बन्धित हैं। यदि यह सत्य है तो इस से तो हमारे राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्र-पति आदि संविधान की धारा 61 के अन्तर्गत दंड के अधिकारी सिद्ध होते हैं। राजीव गांधी हृदय से सैक्यूलर हो सकते हैं किन्तु प्रधानमन्त्री के रूप में वे भी समय के अनुरूप इन सिद्धांतों की बलि दे देते हैं। राजीव गांधी को यह समझना चाहिए कि जिन आदर्शों पर भारतीय जनतन्त्र की स्थापना हुई है, यदि उन्होंने धार्मिक रूढ़िवाद पर उन आदर्शों की बलि दे दी तो, चर्चिल की चेतावनी के अनुसार भारत मध्यकालीन बर्बर युग में पहुंच जायेगा।

हुसैन मियां को इस सारे प्रकरण में कांग्रेस महासचिव श्री नरेशचन्द्र चतुर्वेदी का यह कहना सर्वाधिक लज्जा-स्पद लगा कि कांग्रेस ने इस लिए इस काण्ड की भर्त्सना नहीं की, क्योंकि कांग्रेस को राजस्थान में रहना और काम करना है। इससे विदित होता है कि केवल भाजपा जैसी साम्प्रदायिक संस्थायें ही साम्प्रदायिकता की जड़ नहीं हैं।

मियां हुसैन को उत्तर

मियां हुसैन के इस लेख पर बगलौर के डा० खादिर अली और चन्नपटन के शौकत अली की प्रतिक्रिया 18 नवम्बर के 'डैक्कन हेरल्ड' में प्रकाशित हुई है डा० खादिर अली का कहना है कि जहां तक सती प्रथा की निर्ममता का प्रश्न है उससे मैं सहमत हूं, किन्तु जिस प्रकार मियां हुसैन ने कुछ लोगों की आलोचना की है, उससे पाठकों के मस्तिष्क में बुरा प्रभाव पड़ा है। हुसैन साहब की ही भान्ति मैं भी मुसलमान हूं। मैं उस प्रगतिशील वर्ग का अनुयायी हूं जो मौलाना आजाद के विचारों का समर्थक है। इसीलिए मैं अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने का साहस कर रहा हूं। एक मुहावरा प्रचलित है—"यदि आप शीशे के मकान में रहते हो तो दूसरों पर पत्थर मत फेंकिए।" जब हमारे अपने समुदाय में ही बहुत सारे सुधारों की आवश्यकता है तो फिर हमारा किसी अन्य समुदाय की आलोचना करना किस प्रकार न्याय संगत हो सकता है?

जब किसी मस्जिद के उद्घाटन पर हिन्दू लोग मौन रहते हैं, कोई विरोध नहीं करते, तो क्या अधिकार है कि हम डा० राजेन्द्र प्रसाद जैसे महापुरुष द्वारा सोमनाथ मन्दिर के उद्घाटन पर अपना असन्तोष व्यक्त करें? जब हम मुसलमानों ने, जिनमें हुसैन भी सम्मिलित हैं, मुसलमान राष्ट्रपति और न्यायाधीश आदि के हज-यात्रा पर जाने नमाज पढ़ने तथा धार्मिक समारोहों में सम्मिलित होने की कभी आलोचना नहीं की तो क्या यह हमारे लिए उचित है कि हम राष्ट्रपति, उनकी धर्मपत्नी, उपराष्ट्रपति और कुछ सर्वोच्चन्यायालय के न्यायाधीशों के कांची शंकराचार्य के भक्त होने पर आपत्ति उठाएं? क्या हमें उनके वैयक्तिक विश्वासों पर आलोचना करने का अधिकार है?

मियां हुसैन ने उस समय कोई आपत्ति नहीं उठाई जब प्रधान मन्त्री राजीव गांधी ने रोमन कैथोलिक पोप का स्वागत किया। मियां हुसैन हमसे कहते हैं कि भारतीय गणतन्त्र का आधार लोकतन्त्र है। हम मुसलमान लोग एक व्यक्ति के कथन पर 'विश्वास' के सिद्धान्त पर चलते हैं। तब व्यक्ति-पूजा और लोकतन्त्र किस प्रकार साथ-साथ चल सकते हैं। यदि मियां हुसैन वास्तविक लोकतन्त्र के पक्षपाती हैं तो उन्हें चाहिए कि वे हमारे समुदाय के विश्वासों के सम्बन्ध में पहले कुछ सुधार करें। मियां हुसैन समस्त मुस्लिम महिलाओं की स्थिति को भुलाकर कुछ थोड़े से हिन्दुओं में प्रचलित सती प्रथा पर अपना ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं। हिन्दू स्वयं भी इस प्रथा के विरुद्ध हैं और वे इसको समाप्त करने के लिए प्रयत्नशील हैं।

यह हमारा कर्तव्य है कि हम सर्वप्रथम अपने समुदाय को सुधारें। मुस्लिम महिलायें चाहती हैं कि पर्दाप्रथा समाप्त हो, वे चलचित्र देखने की स्वतन्त्रता की मांग कर रही हैं और 48 किलोमीटर से अधिक दूरी की यात्रा पर बिना किसी पुरुष सहायक के अकेले जाने की मांग कर रही हैं। वे समान व्यवहार की भी मांग कर रही हैं।

मियां शौकत अली भी

डा० खादिर अली की ही भान्ति शौकत अली साहब का कहना है कि मियां बशीर हुसैन अपनी पीलियाग्रस्त आंखों से देखते हुए हिन्दू रूढ़िवाद पर विचार व्यक्त करने की प्रक्रिया में राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री और लोक सभाध्यक्ष पर छींटा कशी करने का अपराध कर बैठे हैं। यह बहुत ही आपत्तिजनक है। आरंभिक मुस्लिम आक्रमण के समय से ही मुसलमान रूढ़िवादी हिन्दू मन्दिरों और हिन्दुत्व के प्रतीकों को विनष्ट करते रहे हैं। मैं नहीं समझता कि भारत में या पूर्वी एशिया के देशों में कहीं भी किसी हिन्दू द्वारा किसी मस्जिद को नष्ट करने की कोई घटना बताई जा सके। वास्तव में यह हिन्दू धर्म ही है जिसमें सैक्यूलरिज्म को सुरक्षा प्राप्त है, और हिन्दू शासक अपने उन पारम्परिक विचारों से सन्नद्ध हैं जिनके अनुसार सभी एक ही परमेश्वर के पुत्र हैं और सभी मार्ग उस ईश्वर तक ही पहुंचाते हैं।

यदि सती प्रथा के रोकने के लिए मियां हुसैन अपने कोई रचनात्मक सुझाव देना चाहते हैं तो उनका स्वागत है किन्तु उनको चाहिए कि वे सर्व प्रथम अपने घर को व्यवस्थित करें। मुस्लिम महिलाएं नितान्त अशिक्षित हैं और मुस्लिम समाज के पुरुषों द्वारा उनको अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए दुनियादारी से अनभिज्ञ रखा जाता है। उन्हें चाहिए कि चालीस के दशक में जिस भाषा में मियां जिन्ना बोलते थे आजकल उसी भाषा में बोलने वाले जनता पार्टी के सांसद शहाबुद्दीन से वे बात करें। संसार में वास्तव में केवल एक ही सैक्यूलर देश है और वह देश भारतवर्ष है। केवल हिन्दू ही सैक्यूलरिज्म के साथ न्याय कर सकते हैं, हिन्दुस्तान ही ऐसा देश है जहां विभिन्न सम्प्रदायों के लोग प्रसन्नता एवं सुरक्षा से रह सकते हैं।

हमारे प्रथम राष्ट्रपति स्व० डा० राजेन्द्र प्रसाद देश की महान् विभूति थे। उनका पुनर्नवीकृत सोमनाथ मन्दिर का उद्घाटन करना इस बात का द्योतक था कि मन्दिर अब मुसलमानों के विध्वंस के अभिशाप से मुक्त हो गया है। ऐसा ही एक अन्य अवसर आ रहा है जब श्री रामजन्म भूमि को अपनी पूर्ण दीप्ति के साथ पवित्र करके अयोध्या श्रीराम मन्दिर का पुनर्निर्माण होगा। हम मियां हुसैन को सुझाव देंगे कि वे भारत की 85 प्रतिशत जनता की भावनाओं से खिलवाड़ करने से बचे रहें।

विद्वदभिनन्दन समारोह

आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट के अन्तर्गत स्व श्री दीपचन्द आर्य की पुण्य स्मृति में "विद्वदभिनन्दन-योजना" के लिए एक स्थायीनिधि बनायी गयी है जिसके ब्याज से प्रति वर्ष किसी ऋषि भक्त विद्वान् को "आर्यरत्न" की उपाधि स्वर्ण पदक, नकद राशि एवं शालादि से सम्मानित किया जायेगा।

इस वर्ष यह पुरस्कार श्री प विशुद्धानन्द जी मिश्र (बदायूं) को आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली द्वारा समायोजित ऋषि बोधोत्सव पर 16 फरवरी को दिया गया। —धर्मपाल मन्त्री

बसन्त मेला

दक्षिण दिल्ली आर्य महिला प्रचार मंडल की ओर से बसन्त मेला आर्य समाज 1 लिंक रोड जंगपुरा में श्रीमती शकुन्तला गुप्ता की अध्यक्षता में प्रातः 10 बजे से सांय 5 बजे तक समारोह पूर्वक मनाया गया। आर्य समाज विक्रम नगर और राजकीय माध्यमिक विद्यालय स्कूल जंगपुरा स्कूल के बच्चों ने रंगा रंग कार्यक्रम प्रदर्शित किया।

कृष्णा टुकराल मन्त्रिणी

आर्य समाज इन्द्री का उत्सव

आर्य समाज इन्द्री का वार्षिक उत्सव बसन्त पंचमी के अवसर पर 22, 23, 24, जनवरी को आर्य समाज मन्दिर में धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर बहुत से विद्वान् उपदेशक एवं भजनोपदेशक पधारे इस अवसर पर प्रभात फेरी शोभा यात्रा, योग प्रदर्शन आदि कार्यक्रम हुए। बलराम सहगल

सत्संग भवन का शिलान्यास

आर्य समाज मन्दिर, सरस्वती विहार दिल्ली में विशाल सत्संग भवन शिलान्यास स्वामी विद्यानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में डी ए वी कालेज मैनेजिंग कमेटी के श्री खेमचन्द मेहता द्वारा सम्पन्न हुआ।

शोक सभा

आर्य वानप्रस्थ आश्रम बठिण्डा के कार्य कर्ता श्री भगवान दास जी के निधन पर आर्य वानप्रस्थ आश्रम बठिण्डा में शोक प्रकट किया। श्री भगवान दास जी हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के सत्याग्रही आर्य समाज, रामामन्डी व स्वतन्त्रानन्द आर्य हाईस्कूल रामा मण्डी के प्रधान व कमठ कार्य कर्ता थे।

ओमप्रकाश वानप्रस्थी

शोक समाचार

आर्य समाज, रजौली (नवादा) के भूतपूर्व प्रधान, परिवद् सभा सेवी एवं होमियो पैथी के अद्वितीय चिकित्सक डा. शिवनन्दन प्रसाद मिसिर का आकस्मिक निधन 20 1 88 को हो गया। आर्य समाज रजौली ने दिवंगत के प्रति शोक संवेदना प्रकट किया।

रामेश्वर प्रसाद सहमन्त्री

साथियो ! वक्त की आवाज सुनो

—धर्मदेव 'चक्रवर्ती'—

कोई दो तीन वर्ष पूर्व की बात है। 'आर्य जगत्' में प्रकाशित मेरे लेखों से प्रभावित होकर 3-4 सज्जन मेरा पता पूछते मेरे निवास पर पहुचे। मेरी उनसे न जान न पहचान, और वे थे कि मान न मान मैं तेरा मेहमान। घर आये की खातिरदारी तो खैर करनी ही थी, सो की, खान-पान के दौरान मे मैंने उनसे आने का प्रयोजन तथा परिचय पूछा तो उनमें से एक सज्जन—जो होगे यही कोई 40-45 वर्ष के, करबद्ध होकर बोले, "हम अमुक आर्य समाज के अधिकारी हैं। हमारे मन में आर्य समाज को देश के विभाजन से पूर्व की तरह एक जीती-जागती संस्था बनाने की तड़प है। श्री 'धर्म देव चक्रवर्ती' के धुआधार जोशीले लेखों को आर्य जगत् मे पढ़कर हमें लगा कि चक्रवर्ती जी जैसे नौजवान को अपना नेता बनाकर हम आर्य समाज को वर्तमान मृत अवस्था से उबार कर पुनर्जीवित कर सकते हैं एव आर्यों को सगठित करके सुदृढ़ हिन्दू राष्ट्र का निर्माण करके महर्षि दयानन्द के सपनो को साकार कर सकते हैं, आप कृपया श्री चक्रवर्ती जी को हम से मिलवा दीजिए ताकि उनमे विचार विनिमय किया जा सके।

स्पष्ट है कि इन सज्जनों ने मुझे चक्रवर्ती नहीं, बल्कि चक्रवर्ती का कोई बुजुर्ग भाई-बन्धु समझा था। मैंने उन्हे और कुरेदने के लिये पूछा, 'आपके मन में चक्रवर्ती जी की रूप-रेखा कैसी है ?' दूसरे सज्जन बोले, 'एक हृष्ट पुष्ट बलिष्ट जोशीले नौजवान की सी' तीसरे ने हां में हां मिलाते हुए कहा, 'चिनगारियां सदा धधकती आग में से ही निकलती हैं, बुझी राख में से नहीं,' चौथे सज्जन बोले, "बिल्कुल ठीक कहा है इन्होंने मेरे मन में भी चक्रवर्ती जी की रूप-रेखा ऐसी ही है।'

बुरे फसे ! यदि कहूँ कि 'मैं ही चक्रवर्ती हू, तो इन लोगों के मन मे अकित मेरी सुन्दर रूप रेखा का महल ताश के पत्तो के महल की तरह आंख झपकते ही धराशयी हो जाय और यदि मैं चक्रवर्ती होने से इन्कार करता हू तो असत्य भाषण का महापाप सिर पर लू। इधर कुआ उधर खाई। मैं ठहरा बहत्तर वर्ष का सीकिया पहलवान नन्ही चिड़िया सी मेरी जान। कहू तो क्या कहू। महर्षि दयानन्द का अनुयायी होकर असत्य भाषण मुझ से हो नहीं सकता था। अतः दिल थाम कर कह दिया—'चक्रवर्ती मैं ही हू।' मेरा इतना कहना था कि एकाएक इन सब ने तन्दूर का सा मुह फाड़ दिया और फटी-फटी आंखों से मुझे घूरते हुए शायद क्षण भर के लिए सोचते रहे कि वे कहीं किसी पागलखाने में तो नहीं आ गए। मैंने उन सज्जनों को पुन आश्वस्त करने के लिए कहा, विश्वास कीजिए, शत प्रतिशत चक्रवर्ती—जिसकी आप को तलाश है वह मैं ही हूं।'

वे पुन. हक्के-बक्के रह गये। एक ने मेरी दुबली काया देखकर आह भरी। दूसरा सिर खुजलाने लगा। तीसरा सिर झुका कर मुस्कराने लगा। चौथा अविश्वास की मुद्रा में ठगा सा रह गया। मैंने पुन कहा 'मैं आयु के लिहाज से भले ही वृद्ध हू, किन्तु मानसिक रूप से पूर्ण युवा हू। आपको शारीरिक रूप से हृष्ट-पुष्ट किसी युवा नेता की तलाश हो तो वह मैं नहीं, न ही मुझे नेता बनने का कोई शौक है। नेता आर्य समाज मे आज अनगिनत हैं, इतने अधिक कि बिना निशाना साधे पत्थर फेंकिए, वह पत्थर जरूर किसी न किसी नेता को ही लगेगा कार्यकर्ता को नहीं। वे सब हस दिए, यद्यपि यह बात रोने की थी कि इतने अधिक नेताओ के रहते भी आज अधिकाश लोग क्यों आर्य समाज को एक मृत प्राय सस्था समझते हैं।

जब पसीना गुलाब था

अपनी लेखनी से आर्य समाज को एक मृत प्राय सस्था लिखते हुए मेरे मन में एक हूक-सी उठती है। एक दर्द सा होता है। मैं स्वय को आहत सा महसूस करता हू। मेरे मुह से ठण्डी आह निकलती है—हाय ! क्या हुए वे दिन जब पसीना गुलाब था। मुझे याद आते हैं वे सुहाने दिन जब देश के विभाजन से पहले आर्य समाज के साप्ताहिक सत्सगों तथा वार्षिक उत्सवो में श्रद्धालु जन समुदाय उमडा पडता था। गुरुकुलों, कालेजों तथा कन्या विद्यालयो के लिए चदा देने की अपील पर रुपयो की बारिश होने लगती थी। माताए, बहनें अपने स्वर्ण भूषण न्योछावर कर देती थीं, उनसे नेताओ की झोलिया भर जाती थी। झोलिया भर जाने पर नेता लोग मच पर बैठे गिनती करते और कार्यकर्ता पसीने से तरबतर चादरें फैलाए और अधिक चदा बटोरने लगते। यही पसीना था जिससे गुलाब की सी महक उठती थी। इसी पसीने ने एक-एक ईट खडी करके आर्य समाजो गुरुकुलों, कालेजो कन्या पाठशालाओ के अनेक विशाल भव्य भवन खड़े कर दिए थे। इसी पसीने ने स्वामी श्रद्धानन्द के शुद्धि आन्दोलन मे जान फूक दी थी। श्रद्धा, कर्त्तव्य परायणता और सकल्प के इसी पसीने ने हिन्दू-जाति के डगमगाते, जात-पात के कीचड़ से विद्रूप, छूआछूत के कलंक से विवर्ण, अन्ध विश्वासो की सीलन से विगलित नींव वाले भवन को एक बार पुन: सुदृढ़ आधार प्रदान किया था। श्रद्धा प्रेम भक्ति के इसी पसीने ने द्वादश वर्षीय कुम्भ मेलों की अपार भीड़ को चुनौती देते हुए मथुरा नगरी मे अर्ध-शताब्दी के अवसर पर वहां प्रज्ञा चक्षु विरजानन्द की कुटिया में स्वामी दयानन्द ने वर्षों पूर्व वेदो के पुनरुद्धार की दीक्षा ली थी—लाखो आर्य समाजियो का ठाठें मारता समुद्र लहरा दिया था। तभी तो आर्यों के इस पसीने से देश के कोने-कोने मे नगरी-नगरी, द्वारे द्वारे आर्य जगत् के नव-निर्माण तथा स्वर्ण-विहान के गुलाबो की महक आने लगी थी।

मा की कोख बाँझ क्यो ?

और आज ? क्या हो गया उस आर्य समाज को जिस के कार्यकर्ताओ के पसीने मे कभी गुलाब महकते थे। कहा गई आर्य समाज की चकाचौंध कर देने वाली वह अनूठी छवि जिसके होते आर्येतर सभी सस्थाओ के चिरागो की लौ मन्द पड गई थी। कहा गई धर्मवीर प० लेखराम, अमर हुतात्मा श्रद्धानन्द, स्वामी स्वतत्रानन्द, स्वामी दर्शनानन्द, शहीद राजपाल, अमर स्वामी, एव रामचन्द्र देहलवी जैसे ओजस्वी नर-केसरियो की वह दहाड़ जिसे सुनकर विधर्मियों के कलेजे कांप उठते थे, शहीदे-आजम भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव, चद्रशेखर आजाद तथा ऐसे ही अनेकानेक देश और जाति के लिए फासी के तख्तो पर हसते हसते झूल कर अपने रक्त से अपने चोले रगने वाले परमवीर आर्य पुत्रो को जन्म देने वाली माओ की कोख आज सूनी क्यो हो गई है ? है इसका जवाब आजकल के तथाकथित आर्य नेताओं के पास ?

आज आर्य समाज नेतृत्व हीन हो गया है। कहने को इसके पास अनेक नेता हैं पर काम का एक भी तो नहीं। इसमे कोई शक नहीं कि आज हमारे सौभाग्य से डी० ए० वी० जैसी जीवन्त आर्य शिक्षा सस्था है, देश देशान्तर मे अपनी शिक्षा सस्थाओ का जाल बिछा कर लाखो नर नारियों को वैदिक विचारों का अमृत पान कराने वाली यह सस्था यदि दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति कर रही है तो केवल इस लिए कि इसके नेता स्वय को नेता नहीं मानते। महर्षि दयानन्द एव आर्य समाज का विनम्र सेवक समझते हैं।

बात कड़वी है लेकिन है एकदम खरी आर्य समाज की शिरोमणि सभाओ मे नेताओ की भीड़ जुटी है। नेता लोग नेता कम, अभिनेता अधिक हैं, निशान के हाथी की तरह समाज [illegible]िक समारोहो में पुष्पमालाओ से लदे फदे झूम-झूम कर चलते इन्हें देखा जा सकता है। राजनीति की दलदल मे लिप्त भ्रष्टाचरण वाले नेताओ को समारोहों मे बुलाना, उनके साथ अपने फोटो छपवाना और यदा-कदा तिकड़म लडाकर अपने स्वार्थ सिद्ध करना ही इनके लिए आर्य समाज की सेवा करना रह गया है। आर्य समाज की इस उच्चगति का मूल कारण इन कथित नेताओं की पद लिप्सा है। इस ध्येय की पूर्ति के लिए ये अक्सर 'गगा गये तो गगादास—जमुना गये तो जमनादास' तथा 'जहा देखी तवा परात वहा बिताए दिन और रात' इन कहावतो का अनुसरण करते हैं आज भारतीय जनसघ को गले लगाएगे तो कल कांग्रेस की गोद मे जा बैठेंगे। इनकी इन करतूतो के कारण आज आर्य समाज को ये दुर्दिन देखने पड रहे हैं कि लोग इसे मृत-सस्था कहने लगे हैं।

साथियो ! वक्त की आवाज सुनो आगे बढो।

'गरेबा चाक कर लेना बडा आसान है। लेकिन बडी उसकी मुसीबत है जिसे सीना नहीं आता।' विगत 30 35 वर्षों से जिन्होने आर्य समाज का गरेबा चाक-चाक करके रख दिया है। जिनके विचारो का कद ठिगना है लेकिन कुर्सी पर चिपके रहने की लालसा बहुत ऊंची है, ऊंची कुर्सी पर बैठ कर जो आर्य सिद्धातो एव मान्यताओ को भूल चुके हैं, जो एडिया उठा उठा कर हवा में हाथ लहरा कर, स्वामी दयानन्द का अनुयायी होने का दम भरते हैं, किन्तु आर्य समाज के सिद्धान्तों के विरुद्ध गणेशादि मूर्तियो की पूजा अर्चना भी साथ साथ करते हैं। ताकि 'बागवा भी खुश रहे और खुश रहे सय्याद भी, ऐसे तथाकथित आर्यसमाजी नेताओं से मेरे साथियो ! सावधान रहो। स्वय आगे बढो।

साथियो ! यदि तुम्हे आर्य समाज को देश के विभाजन से पहले वाला गौरव दिलाना है तो सगठित होकर आगे बढो। एक नये दौर का आगाज तुम्ही से होगा, और यह तभी सभव होगा जब तुम सडान्ध भरे ठहरे जल जैसे वर्तमान नेतृत्व को महर्षि दयानन्द सरस्वती के द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तो की पावन गगा मे विलीन कर देने का सकल्प करोगे। तुम्हारे सकल्प से ही वर्तमान आर्य नेतृत्व की खुश्क धरती पर सच्चे आर्यत्व की नयी लहलहाती फसल पैदा होगी। नया सवेरा जागेगा और डिक्टेटर शाही का अन्धेरा भागेगा, अत एक बार फिर जोर देकर कहता हू तुम से—'साथियो ! वक्त की आवाज सुनो आगे बढो।'

पता—19 माडल बस्ती,
दिल्ली 110005

वैदिक धर्म प्रचार

आर्य समाज, धौताल महतो टीकारामपुर (मुगेर) का 14वा वार्षिकोत्सव 22 से 25 जनवरी तक मनाया गया, जिसमे डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी, आचार्य प्रेमानन्द, सुश्री मजू कुमारी, आदि के उपदेश और भजन हुए। इस अवसर पर महिला आर्य समाज की स्थापना की गई।

आधुनिक प्लास्टिक सर्जरी के जनक आचार्य सुश्रुत थे

चौंकिये मत ! बात आश्चर्यजनक लगती है। किन्तु है नितान्त सत्य।

विश्वविख्यात प्लास्टिक सर्जन जान मारविटस कनवर्स एम डी लारेंस बेस [प्रोफेसर आफ प्लास्टिक सर्जरी न्यूयार्क यूनीवर्सिटी, स्कूल आफ मेडिसिन] अपनी पुस्तक रीकन्सट्रक्टिव प्लास्टिक सर्जरी [डब्लू बी, साडर्स कम्पनी, अमेरिका] के प्रथम भाग मे लिखते हैं —

भारत मे सातवी शताब्दी ईसा पूर्व के हिप्पोक्रेट [आधुनिक चिकित्सा शास्त्र जनक] ने सुश्रुत संहिता मे मानव नासिका तथा कान के पुनर्निर्माण की शल्य क्रिया का विवरण दिया है। उस काल मे विजित नगर के अपराधियो को दण्ड देने के लिये उनकी नासिका काट लेने का प्रचलन था। कटे हुये अंग के पुनर्निर्माण की शल्य क्रिया "कूमा" नामक कुम्हारों की एक जाति द्वारा की जाती थी। संस्कृत के 'कुम्हार' का ही अपभ्रंश 'कूमा" होगा इस शल्य क्रिया का ज्ञान भारत, ईरान एवं ईराक आदि से होता हुआ यूनानियो, अरबो तथा कुछ ईसाई प्रजातियो यहूदी विद्वानो द्वारा रोम पहुंचा। कुम्हारों को मिट्टी की मूर्ति बनाने के लिए व शरीर के अंगप्रत्यंगो को सुचारू रूप देने की कला आती थी। महर्षि सुश्रुत ने इसीलिए अपने शिष्यो को विशेष रूप से इस कला का अभ्यास कराया होगा।

इसके पश्चात् ही आर्य संस्कृति का अंधकारमय युग आया जिसमें यहां के ज्ञान विज्ञान का लोप हो गया। किन्तु पारिवारिक कला के रूप में कुम्हारों के एक वर्ग मे इस शल्य क्रिया को कुशलता पूर्वक करने का क्रम चलता रहा।

यूरोपीय देशों का ध्यान इस ओर तब गया जब टीपू सुल्तान ने कावसजी नामक एक गाड़ीवान की नाक इसलिये कटवा ली क्यों कि वह उसके शत्रु अंग्रेजो का सामान ढोता था। कावसजी की नाक उसके माथे से मांस की परत उठा कर कूमा जाति के कारीगरों ने सफलता पूर्वक दुबारा बना दी। तब अंग्रेज शल्य चिकित्सको का ध्यान भी इस ओर गया। कारप्यू नामक सर्जन ने दो मनुष्यो पर सफल आप्रेशन का समाचार 1816 ई० में छपवाया इसके बाद तो फ्रांस आदि अनेक देशो में इस प्रकार के सफल आप्रेशन किये गये।

जो पाश्चात्य विद्वान् भारतीय प्लास्टिक सर्जरी को सातवी शताब्दी की उपज मानते हैं वह भूल जाते हैं कि सुश्रुत स्वयं चिकित्सकों की एक लम्बी श्रृंखला की पांचवीं पीढ़ी में थे। जिस ज्ञान का विवरण उन्होंने सुश्रुत संहिता में दिया है वह उसी ग्रंथ के अनुसार ब्रह्मा से प्रजापति दक्ष को, प्रजापति दक्ष से अश्विनी कुमारों को, अश्विनी कुमारों से इन्द्र को, इन्द्र से धन्वंतरी को तथा धन्वन्तरि से सुश्रुत को प्राप्त हुआ था। यदि विद्वानों का यह कथन सत्य हो कि ब्रह्मा प्रजापति इन्द्र इत्यादि नाम व्यक्तियो के न होकर पदों के सूचक हैं तो इस श्रृंखला का छोर सुश्रुत से भी सैकड़ों वर्ष पहले पहुंच जाता है।

प्लास्टिक सर्जरी क्या है ?

सत्य है कि आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है। आधुनिक काल में ही यदि विज्ञान की प्रगति पर दृष्टि डालें तो पिछले दो विश्व महायुद्धों में जितनी प्रगति हुई है वह उससे पूर्व 200 वर्षो में भी कदाचित नहीं हुई युद्ध से उत्पन्न दुर्घटनाओं के फलस्वरूप प्लास्टिक सर्जरी का बीज पश्चिमी देशो की भूमि में जाकर फूला फला। मोटे तौर पर अब प्लास्टिक सर्जरी को दो शीर्षकों में विभाजित किया जा सकता है —

1. पुनर्निर्माण सर्जरी,
2. सौंदर्य सर्जरी

पुनर्निर्माण सर्जरी की आवश्यकता जन्मजात तथा इतर दोषो को दूर करने मे पड़ती है। उदाहरणार्थ

जन्मजात विकार

कुछ बच्चो में जन्म से ही फटा तालु होंठ, कान अथवा कानो की बाहरी रचना का आंशिक अथवा, सम्पूर्ण अभाव जननेंद्रियो के विविध प्रकार के दोष, जैसे पुरुष जननेंद्रिय में मूत्र-छिद्र का गलत स्थान पर होना, शिश्न त्वचा का शिश्न से चिपटा रहना, बच्चियो मे जननेंद्रिय का अभाव अथवा दूसरे विकार

दुर्घटना जनित विकार

किसी प्रकार भी अग्नि, तेजाब अथवा क्षार इत्यादि से जल जाने अथवा जलने के फलस्वरूप कुरूपता, अंग का सिकुड़ जाना या चिपट जाना आदि देहाती क्षेत्रों में बिजली से चलने वाले मोटर, कुट्टी मशीन, थ्रेशर इत्यादि के पहुंच जाने से हाथ के दुर्घटना ग्रस्त हो जाने की आम हो गई है। रसोई में गृहणियों के जल जाने की घटनाएं भी आये दिन समाचार पत्रों में छपती रहती हैं।

शहरों में कार, स्कूटर, ट्रेक्टर, बस ट्रक इत्यादि की संख्या बढ़ जाने से दुर्घटनायें भी बढ़गई हैं। इन सभी दुर्घटनाओं से ग्रस्त लोगों को तुरन्त प्लास्टिक सर्जन के पास ले जाने से प्राण रक्षा तथा भावी विकारों से बचाव सुगम हो जाता है। उपरोक्त दशाओं में घरेलू उपचार अथवा दूसरे प्रकार की चिकित्सा में समय नष्ट करने के परिणाम अनिष्टकारी हो सकते हैं। यदि शरीर का कोई भाग अथवा अंग कट कर अलग हो जाए तो तुरन्त मरीज को प्लास्टिक सर्जन के पास पहुंचा देना चाहिए। कभी-2 कटे हुए भाग को सफलता पूर्वक जोड़ना संभव हो जाता है।

जन्मजात दोषों में जन्म के उपरान्त जल्द से जल्द प्लास्टिक सर्जन की सलाह लेना आवश्यक है फटे तालू वाले बच्चे अथवा गुदा मार्ग या मूत्र मार्ग बंद होने की दशा में दूध पिलाने, टट्टी पेशाब कराने के लिये विशेष उपचार का आवश्यकता होती है जो प्लास्टिक सर्जन की सहायता से ही संभव है।

पुनर्निर्माण सर्जरी मे दुर्घटना के अतिरिक्त रोग जनित उपचार भी शामिल है। जैसे कुष्ठ अथवा यौन रोगों के कारण विकृत नष्ट नासिका को फिर से बना कर कुरूपता एवं इन दुष्ट रोगों के निशान को मिटाया जा सकता है।

चेचक अथवा मुंहासे जैसे रोगों से चेहरे पर जो चिन्ह पड़ जाते हैं उनको भी प्लास्टिक सर्जन कभी-2 समूल मिटा देते हैं अन्यथा उनकी भयंकरता को न्यूनतम तो कर ही देते हैं।

सौंदर्य सर्जरी

इस के अन्तर्गत निम्नलिखित दोषों का निवारण साधारणतया किया जाता है। अधिक मोटे या पतले दिखने वाले होंठ, चपटी, अति छोटी, अति मोटी, अति लम्बी भद्दी नाक, भद्दे कान, जन्म जात अथवा किसी दूसरे कारण से चेहरे, अथवा शरीर से किसी दूसरे भाग के निशान जिनमें तिल, लहसन, लाइनें, अथवा झुर्रियां भी शामिल हैं। अति छोटे अथवा अति मोटे स्तनों का उपचार।

सुंदर युवतियों को कुरूप बनाने वाले उपरोक्त दोषों को दूर कर देना प्लास्टिक सर्जन के लिये साधारण बात है। विदेशों में तो अधेड़ आयु की स्त्रियां और पुरुष भी इसका लाभ उठाते हैं।

जलने के फल स्वरूप पैदा हुई कुरूपता एवं अपंगता को जन्म भर ढोते रहने का अब कोई कारण नहीं है। गृहणियो के कान के छेद अक्सर आभूषण पहनते-पहनते चौड़े हो जाते हैं। इनका उपचार तो दंतचिकित्सक के यहां जाकर दांत निकलवाने से भी अधिक सरल है।

भारतीय सर्जनों द्वारा लगभग 4000 वर्ष पहले विकसित विज्ञान की इस देन से भारत के लोग आज परिचित न होने से लाभ न उठा सकें यह कैसी विडम्बना है ?

इस लेख मे लेखक डाक्टर दिनेश कुमार योग एम बी बी एस एम एस (जनरल सर्जरी) एम सी एच मेरठ के सुविख्यात प्लास्टिक सर्जन है। इस प्रकार की सर्जरी के कठिनतम रोगियो की सफल चिकित्सा योग नर्सिंग होम, विश्व विद्यालय मार्ग, मेरठ, में पिछले 11 वर्ष से करते आ रहे है। अब वे परामर्श हेतु 'सुखदा नर्सिंग होम पापोश एनक्लेव, आर ब्लाक, ग्रेटर कैलाश नई दिल्ली-48 मे हर शनिवार को 11 से 1 बजे तक उपलब्ध रहते हैं।

साहित्य समीक्षा

सैक्यूलरिज्म का सही अर्थ

पुस्तक का नाम	:	दि ओरिजन एण्ड नेचर ऑफ सैक्युलरिज्म (अंग्रेजी)
लेखक	:	ज्योर्ज जैकब होलीयोक
विषय प्रवर्तक		ब्रह्मदत्त भारती (सैक्युलरिज्म इन इण्डिया)
पृष्ठ संख्या	:	132, मूल्य—25 रु० ।
प्रकाशक		इरा बुक्स, 52/47 रामजस रोड, नई दिल्ली-110005

समालोच्य पुस्तक का महत्व श्री भारती की "भारतीय सैक्युलरिज्म" की समीक्षा के कारण अधिक बढ़ गया है। मूल पुस्तक में सैक्युलरिज्म के उद्भव, विकास, स्वरूप और प्रासंगिकता का वर्णन किया गया है। किन्तु अपने परिचयात्मक लेख में श्री भारती ने देश के स्वतन्त्र विचारकों को सैक्युलरिज्म के विषय में सोचने और विचारने के लिये बहुत मसाला दिया है। आज जब देश में चारों ओर सैक्युलरिज्म का बोलबाला है, ऐसे में इस प्रकार की पुस्तक प्रकाशित कर भारती जी ने देशवासियों का बहुत उपकार किया है।

भारती जी का कहना है कि जब भारत ने अपने संविधान में भारत को सैक्युलर घोषित किया था तब सबसे अधिक प्रसन्नता क्रिश्चियन चर्च को हुई थी। क्योंकि इस सैक्युलरिज्म के जामे के भीतर उनको भारत को ईसा की भेड़ों के समूह में सम्मिलित करने में सर्वाधिक सुविधा प्राप्त हो गई। उनका यह भी मानना है कि विगत 300 वर्षों से क्रिश्चियन मिशनरी भारत में जिस कार्य के लिये जुटे हुए थे उन्हें उसमें पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है।

श्री भारती लिखते हैं कि सैक्युलर और सैक्युलरिज्म दोनों पृथक्-पृथक् हैं। सैक्युलर का मत अथवा पंथ से किसी प्रकार का कुछ लेना-देना नहीं है और न ही सैक्युलर और धार्मिक में किसी प्रकार का कोई विवाद है। इसी प्रकार सैक्युलरिस्ट का नास्तिकता और आस्तिकता से भी किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध नहीं। उनका मानना है कि "सैक्युलरिज्म" की समानता केवल 'स्वतन्त्र चिंतन" शब्द से ही की जा सकती है। किन्तु आज भारत में इसको धर्म-निरपेक्ष अथवा सर्व-धर्म समभाव आदि-आदि नामो से व्याख्यात किया जा रहा है जब कि स्वतन्त्र और निर्भीक चिन्तन सैक्युलरिज्म की प्रथम अनिवार्यता है। उनका मानना है कि क्रिश्चियनिटी और इस्लाम में स्वतन्त्र चिन्तन के लिये कोई स्थान है ही नहीं, इसलिए यह सोचा भी नही जा सकता कि कोई ईसाई अथवा मुसलमान सैक्युलरिस्ट भी हो सकता है।

भारत सरकार निरन्तर सैक्युलरिज्म का घोष तो मानती है किन्तु देश की किसी भी समस्या को सुलझाने के लिये वह सैक्युलर सिद्धांतो का किंचित् भी पालन नहीं करती। सरकार अपने राजनीतिक लाभ के लिये अवसरवादिता का आश्रय लेकर तदनुरूप ही प्रस्तुत समस्या का समाधान करने का यत्न करती है। आश्चर्य तो तब होता है जब वह अपने कृत्य में किसी प्रकार सैक्युलरिज्म तलाश ही लेती है, भले ही वास्तविक सैक्युलरिज्म उसका किंचित् भी मेल न हो।

इसका समाधान प्रस्तुत करते हुए भारती जी का कहना है कि हमारे देश वासियो को सैक्युलरिज्म की शिक्षा ग्रहण करनी है तो सर्वप्रथम उस तथाकथित धार्मिक शिक्षा को अलविदा कहना होगा जो ईसाई स्कूलों तथा मुस्लिम मकतबों मे दी जा रही है। सरकार को चाहिये कि वह ऐसे स्कूलों का प्रबन्ध अपने हाथ में ले और जो स्कूल अपने सम्प्रदाय की शिक्षा दिलाने का आग्रह करते हो उनका सरकारी अनुदान बन्द कर दिया जाय।

बालक भावी भारत का निर्माता है। बाल्यकाल मे डाले गये संस्कार चिरस्थायी होते हैं। यदि इस अवस्था में बालक के मन में तथाकथित साम्प्रदायिक शिक्षा के भाव भर दिये गये तो कालान्तर में उनको मिटाना किसी प्रकार भी सम्भव नहीं है। इस प्रकार शिक्षित बालक एक सम्प्रदाय का प्रचारक तो बन जायेगा, किन्तु उसमे राष्ट्रीयता का सर्वथा अभाव होगा। सम्भवतया वह राष्ट्र के लिये घातक भी सिद्ध हो। किन्तु हमारी भारत सरकार इस दिशा में किसी और ढंग से सोचती है। वह बात तो सैक्युलरिज्म की करती है किन्तु उसके सारे क्रिया-कलाप, नियुक्ति, वियुक्ति, निर्वाचन, नामांकन आदि सब कुछ जातीयता एव मत-मतान्तरो का विचार सम्मुख रख कर सम्पन्न होते हैं। यही कारण है कि देश की प्रगति अवरुद्ध है।

पुस्तक आद्यन्त तथ्यो से परिपूर्ण होने से सैक्युलरिज्म पर विस्तार से प्रकाश डालती है। इस पुस्तक को पढ़ने से सैक्युलरिज्म के विषय में सारी भ्रान्तिया मिट जाती हैं। छपाई और साज सज्जा भी सुन्दर है, अत पुस्तक सब प्रकार से पठनीय एव संग्रहणीय है।

—अशोक कौशिक

बलि प्रथा धर्म नहीं, पाप है

पुस्तक का नाम	:	बलि प्रथा निवारण
सम्पादक		डा० जयदत्त उप्रेती
पृष्ठ संख्या		80 मूल्य : 7/- रुपये
प्रकाशक		आर्य समाज, अल्मोड़ा-263601 (उ० प्र०)

पुस्तक की प्रस्तावना में भूतपूर्व राज्यपाल श्री भैरवदत्त पाण्डे लिखते हैं— "भय हरेक के मन में रहता है तथा उसके साथ यह भावना कि "मेरा यह काम हो जाय तो मैं यह वस्तु चढ़ाऊंगा" इसमें कुछ पाने के लिये अपना कुछ देने की इच्छा है, जो त्याग की दृष्टि से श्रेष्ठ है। किन्तु यही आगे चल कर अन्धविश्वास में बदल जाता है। अपना कुछ छोड़ने के बदले पशु बलि की प्रथा चल पड़ी है। अपने कार्य की सिद्धि के लिये दूसरे की बलि देना अनर्थ है।"

समालोच्य पुस्तक उन 16 विशिष्ट निबन्धों का संग्रह है जो "मन्दिरों, पूजा तथा सत्संग के स्थानों में पशुबलि और नरबलि की प्रथा सर्वथा अधार्मिक एवं पापकृत्य है" शीर्षक प्रतियोगिता में उत्तम पाये गये हैं। पुस्तक के सम्पादक डा० उप्रेती का कथन है कि "देव पूजा में न तो प्राणि-हिंसा विहित है और न यह हिंसा पूजा का उपाय हो सकती है। क्योंकि स्वार्थ पूर्ति के लिये, निर्दोष प्राणी का वध करना किसी भी दृष्टि से उचित नही है। प्रत्युत यह सर्वथा घृणित कार्य होने से महापाप है।

अपनी 32 पृष्ठ की भूमिका में सुयोग्य विद्वान् ने केवल धर्म शास्त्रो के अपितु वेदों के अनेक प्रमाण प्रस्तुत कर यह सिद्ध किया है कि दैवी कार्यों के लिये पशु-बलि का विधान भारत में कभी नहीं रहा। अपने पृथक्-पृथक् सोलह निबन्धों में छात्रो ने भी उनकी इस मान्यता की पुष्टि में प्रमाण प्रस्तुत किये हैं। न केवल भूमिका अपितु ये सब निबन्ध भी पठनीय हैं। बलि प्रथा के विरोध में सुपुष्ट प्रमाण उपलब्ध होने से पुस्तक अत्यन्त उपयोगी बन गई है। इस प्रकार की पुस्तकें समाज से कुरीतियां मिटाने एवं राष्ट्र की सहायक होती हैं। इस दिशा में डा० उप्रेती का यह प्रयास सराहनीय है।

—अशोक कौशिक

श्री सीताराम दिवगत

आर्य समाज, रायपुर के पूर्व अध्यक्ष व कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री बलराज बहल के पिता का कुछ दिन पूर्व रायपुर मे 96 वर्ष की आयु मे निधन हो गया, वे स्व० सीमान्त गांधी के सहयोगी रहे।

—आर्य समाज, गोविन्दपुरी, नई दिल्ली के चुनाव में श्री किशनलाल खन्ना प्रधान, श्री रामदुलारे मिश्र मत्री और श्री सोमदेव मल्होत्रा कोषाध्यक्ष चुने गए।

130 कम्बलों का दान

भगवत भिक्षु सेवा सहयोग न्यास पानीपत ने पिछले दिनो 130 गर्म कम्बल इकट्ठे कर निम्न स्थानो पर बांटे। चान्दला महर्षि दयानन्द सेवाश्रम को 40 कम्बल, स्वामी दयानन्द सेवाश्रम दीनापुर नागालैंड को 30 कम्बल, स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, गुरुकुल आश्रम, आमसेना खरियार रोड, कालाहाण्डी, उड़ीसा को 40 कम्बल, स्वामी धर्मानन्द मध्य प्रदेश को 10 कम्बल, राणा बापा आदि वासी हल्दी घाटी को 10 कम्बल।—भगवत भिक्षु

हीरक जयन्ति समारोह

आर्यसमाज औरैया (इटावा) 3000 का हीरक जयन्ती समारोह 16 से 21 फरवरी तक शहीद पार्क में मनाया जायेगा। जिसमें अनेकों आकर्षक कार्यक्रम होंगे। —वेद प्रकाश आर्य मत्री

गीत स्तुति का विमोचन

महर्षि, दयानन्द सरस्वती कृत आर्याभिविनय पर आधारित श्री देव नारायण भारद्वाज रचित काव्य संकलन गीत स्तुति का विमोचन आर्य समाज मंदिर सिविल लाइन्स, वैदिक आश्रम, अलीगढ़ मे श्रीमती डा जानकी देवी वीर (पूर्व रीडर मुस्लिम विश्व विद्यालय अलीगढ़) द्वारा 31 जनवरी को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रतिष्ठित साहित्यकार डा नरेन्द्र तिवारी ने वेद के महत्व पर प्रवचन दिया। रामदीन आर्य मत्री

कटक दूरदर्शन पर वेदप्रचार

22 जनवरी को सायंकाल कटक दूरदर्शन केन्द्र उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का मत्री श्री प्रियव्रत दास का "वेद में मृत्यु का स्वरूप" विषय पर 15 मिनट तक व्याख्यान हुआ।

वैदिक धर्म का प्रचार

नगर आर्य समाज 23 जनवरी को वसन्त उत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसमें यज्ञ के पश्चात् प राम चरित्र पाण्डे तथा पवन कुमार शास्त्री का प्रचार और श्री मुन्ना लाल के भजन हुए। वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार हुआ। कार्यक्रम का संचालन श्री रेवती रमण एडवोकेट ने किया।

पत्रों क दर्पण में

क्या आप आर्यसमाजी है

समाज सुधार आदि का जो कार्य महर्षि दयानन्द या आर्य समाज ने किये वे पहले भी हो चुके थे और आज भी हो रहे हैं। एक ही बात ऐसी है जिसे करना तो दूर, न किसी ने पहले कहा और न कोई आज कहता है। वह है 'वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। वेद का पढना-पढाना, और सुनना—सुनाना सब आर्यों का परम धम है।' यही दयानन्द की विशेषता है और इसी से आर्यसमाजी की पहचान होती है। यह तब तक समव नहीं जब तक उसके घर में वेद न हो। इसलिये प्रत्येक आर्यसमाज का कर्तव्य है कि अपने रजिस्टर मे अकित प्रत्येक सदस्य के घर में कम से कम एक वेद तो पहुचाये ही। मैं जहा जाता हू, इसकी प्रेरणा करता हू। लोग मेरी बात मानते हैं। प्रत्येक समाज स्वामी जी के भाष्य वाले यजुर्वेद की सौ-सौ प्रतियो का आर्डर देती है। परन्तु इस पवित्र काय मे न सावदेशिक सभा सहयोग कर रही है और न परोपकारिणी सभा। दोनो समाओ ने उक्त वेद का मूल्य चालीस रुपये रखा हुआ था। परन्तु जैसे ही सौ सौ प्रतियों के आर्डर पहुचे, वैसे ही पहले से छपे मूल्य को बढ़ा कर पहले परोपकारिणी सभा ने सौ रुपये और तत्पश्चात् सावदेशिक सभा ने साठ रुपये कर दिये। इसे मुझे और मेरे साथ आर्य समाजों और दयानन्द मठ को बडी निराशा हुई। विवश होकर मुझे दूसरी व्यवस्था करनी पडी। मेरे अनुरोध पर 'भगवती प्रकाशन' ने 40) मूल्य पर ही उक्त वेद देने की योजना को स्वीकार कर उसे तत्काल कार्यान्वित करना स्वीकार कर लिया है। यह सस्करण अब तक उपलब्ध सभी सस्करणो से कहीं अधिक सुन्दर, शुद्ध और प्रामाणिक होगा। इस शुभ कार्य में जनता का सहयोग अपेक्षित है। मेरा प्रत्येक आर्य समाज से अनुरोध है कि वह अपनी सदस्यो की सख्या को देखकर 25, 50 व 100 प्रतियो के अग्रिम मूल्य के रूप में एक, दो या चार हजार रुपये ड्राफ्ट द्वारा श्री स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती, मन्त्री भगवती प्रकाशन, एच 1/2 माडल टाउन दिल्ली को तत्का भेज दें। उन्हीं का पैसा यजुर्वेद भाष्य के रूप में उन्हे वापिस मल जायेगा। क्योंकि पुस्तक बिल्कुल लागतमात्र मूल्य पर दी जायेंगी, इसलिये प्रेषण व्यय ग्राहको वहन करना होगा। यह आर्य समाजो और आर्य समाजियों की वेद के प्रति आस्था का प्रश्न है। —विद्यानन्द सरस्वती डी 14/16, मोडल टाउन, दिल्ली-9

डी ए वी आन्दोलन की सफलता

डी०ए०वी० सस्थान ने राष्ट्र के उत्थान में जो भूमिका निभाई है। उसका सही मूल्याकन तो इतिहास ही करेगा। परन्तु भारतीय सस्कृति के उत्थान व राष्ट्र निर्माण मे जो योगदान इस आन्दोलन ने दिया है उसे भुलाया नहीं जा सकता। हाल ही मे नेकटाई के बहिष्कार व केवल नमस्ते को ही अभिवादन स्वीकार करके इस आन्दोलन ने राष्ट्रीयता को एक नई दिशा दी है जो भविष्य में हमारी सस्कृति के लिए एक रक्षा कवच का कार्य करेगा। डी०ए०वी० आन्दोलन चरित्र निर्माण व राष्ट्र निर्माण का पयायवाची रहा है। मेरा एक छोटा-सा सुझाव है कि डी०ए०वी० संस्थाओ मे जहा टाई का बहिष्कार हुआ है वहां स्लीवलेस वस्त्र पहिनना भी वर्जित होना चाहिए। हमारी वैदिक सस्कृति स्त्री जाति के अग प्रदशन की इजाजत नहीं देती क्योकि इसका दुष्प्रभाव जग जाहिर है। —डा० जी०पी० गुप्ता मन्त्री आर्य-समाज बसन्त विहार, नई दिल्ली।

पूर्णाहुति के मत्र

आय समाजो के कर्म काण्डो मे सगति का सर्वत्र अभाव दृष्टिगोचर होता है। ऋषि दयानन्द ने यज्ञ की पूर्णाहुति में केवल एक ही मत्र को विनियुक्त किया है। वह है 'सव वै पूण स्वाहा। किन्तु हम देखते हैं कि प्रायः पूर्णाहुति डालते समय कुछ स्थानों पर 'पूर्णादर्वि परापत सुपूण पुनरापत' (य ✓ 31 49) इस मत्र को पढते हैं साथ ही उपनिषद् का यह शान्ति पाठ जो मूल उपनिषद् का भाग भी नही है, पढा जाता है

पूणमद पूर्णमिद पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूणमेवावशिष्यते॥

कमकाण्ड में मात्र वेदों के मत्रो का ही विनियोग होता है अथवा ऐसे आर्ष मत्र भी विनियुक्त हो सकते हैं जिनका प्राचीन ऋषियों ने विधान किया हो। उदाहरणार्थ यज्ञ मे घी की पांच आहुतिया देते समय 'अयन्त इध्म' जो मत्र पढा जाता है वह आश्वलायन गृह्य सूत्र (1-10 12) का मत्र है तथा ऋषि दयानन्द ने इसे इस स्थान पर विनियुक्त भी किया है किन्तु उपनिषद् का शान्ति पाठ पूर्णाहुति में पढना किसी भी आचार्य को मान्य नहीं है ऋषि दयानन्द निर्दिष्ट पद्धति के तो यह प्रतिकूल ही है अत मेरा याज्ञिकों और पुरोहितों से निवेदन है कि वे पूर्णाहुति कराते समय दयानन्द निर्दिष्ट 'सर्वं वै पूर्णं स्वाहा' को ही बोलें और बुलवावें। आर्ष विधान के प्रति मनमानी करने से कर्म काण्ड का अनुशासन भंग होता है यज्ञ में स्वेच्छाचारिता के लिये कोई स्थान नहीं है।

—स्वामी सर्व भारतीय, चंडीगढ़

'ऐंग्लो' प्रासंगिक है

डी ए वी के 'ए' की प्रासंगिकता पर कई बार चर्चा होती है। कुछ महानुभावों के विचार में 'ए' को ऐंग्लों के स्थान पर 'आर्य' या 'अन्तर्राष्ट्रीय' का सक्षेप मान लेना चाहिए, आशय यह है कि दयानन्द ऐंग्लों वैदिक की जगह दयानन्द आर्य वैदिक जैसा कुछ मान लेना चाहिए, निस्सन्देह इसप्रकार का परिवर्तन व्यवहारिक होगा, क्योंकि डी ए वी नाम को ज्यों का त्यों रहने देकर उसके अर्थ को सुसगत कर लिया जायेगा, 'उत्तर प्रदेश' इसका उदाहरण है। ब्रिटिश काल में युक्त प्रान्त का सक्षेप यू० पी० चलता था। स्वाधीनता के बाद युक्त प्रान्त नाम उचित नहीं समझा गया तो उत्तर प्रदेश कर दिया गया जिससे बहुप्रचलित 'यू पी' सक्षिप्त नाम में कोई अन्तर नहीं आया।

विचारणीय यह है कि ऐंग्लो की जगह कौनसा-शब्द ले, आर्य, अन्तर्राष्ट्रीय अभिनव, अर्वाचीन, आधुनिक, अद्यतन या आदर्श। अपने विचार में इनमें से आदर्श, अधिक उपयुक्त है। दयानन्द मॉडल स्कूल में आदर्श का अग्रेजी पर्याय माडल प्रयुक्त हो भी रहा है। अच्छा हो इस विषय पर एक छोटी सी गोष्ठी का आयोजन कर विचार कर लिया जाय।

अभी डी ए वी शतवार्षिकी के समापनोत्सव पर ऐंग्लो के प्रति आग्रह का स्वर सुनाई दिया। कहा गया कि इस शब्द का चयन बहुत सोच विचार के बाद किया गया था किया गया होगा। किन्तु यदि ऐंग्लो इन्डियन से ऐंग्लों वैदिक को तु ना कर अर्थ करें तो कुछ अटपटा-सा लगता है ऐंग्लो इन्डियन का अर्थ है—एक अग्रेज जो भारत में उत्पन्न हुआ या रहा है। यदि श्वेत-श्याम त्वचाओं के सम्पर्क से भारत में उत्पन्न सन्तति इसका अर्थ मानें तो भी अजीब-सा प्रतीत होगा। डी ए वी के पीछे जो मूलभूत भावना थी यह तो वह थी कि आर्य युवक प्राचीन वैदिक आदर्शों से अनुप्रेरित हों तथा ज्ञान-विज्ञान के लाभ से भी वंचित न हों, अस्तु प्राचीन के साथ नवीन को जोडने की इच्छा से किये गये नामकरण में ऐंग्लो के बजाय अभिनव, अर्वाचीन या आधुनिक शब्द अधिक उपयुक्त रहता। पर यह तो अतीत की बात है। आज तो जैसा है जो है के आधार पर विचारना है, आज के परिप्रेक्ष्य में 'ऐंग्लो' (उपसर्ग) निश्चित रूप से अप्रासागिक है।

धर्मवीर शास्त्री B I/S पश्चिम विहार नई दिल्ली-63

आइस्टीन की मान्यता का खण्डन

विज्ञान के इतिहास में भारत के तीन वैज्ञानिकों ने आइस्टीन की मान्यता को ललकारा है। आइस्टीन का सिद्धान्त था कि प्रकाश की गति तीन लाख किलो मीटर प्रति सैकन्ड है। भारत के वैज्ञानिकों ने अपने शोध कार्यों में सिद्ध किया है कि प्रकाश की गति इससे ज्यादा है। इन वैज्ञानिकों का नाम है डा० राम चौधरी, डा० दत्ता, डा० दीपन्कर होम। ये तीन बगाल के कलकत्ता यूनिवर्सिटी, जादवपुर यूनिवर्सिटी बोस इन्सटीच्यूट से सम्बन्धित हैं तथा, तीनो ही परिचय जर्मनी की यूनिवर्सिटी में अपना शोध कार्य कर रहे हैं। डा० होम ने तो आइस्टीन की जन्म भूमि को सेमिनार में भी अपने विचार रखें थे।

मेरा भारत की सरकार एवं पश्चिम बग सरकार से निवेदन है कि वे इस सन्दर्भ को उच्च स्तर पर विचार विमर्श करके उपरोक्त वैज्ञानिकों की पूर्ण रूप से सहायता करके और भारत के मस्तक को ऊंचा उठावे। अन्यथा डा० जगदीश चन्द्र बोस के आविष्कार की तरह इन पर भी किसी विदेशी का नाम चस्पा कर दिया जायेगा।—सत्यनारायण आर्य 205, लेक टाऊन, ब्लाक 'ए' कलकत्ता-700089

श्रीराम शर्मा की गायत्री साधना या पाखण्ड

प्रभु प्राप्ति हेतु गायत्री साधना मुख्य साधन है। जिस भाग्यशाली मानव ने इस रहस्य को समझकर वेद साधना की है, वेदानुकूल आचरण किया है, उसने निश्चय ही जीवन के चरम लक्ष्य को पाया है। इस प्रकार वेद साधना, गायत्री चिन्तन ये सभी ईश प्राप्ति के साधन है।

गायत्री तपोभूमि मथुरा के जन्मदाता श्रीराम शर्मा ने गायत्री मन्त्र का मिथ्या माहात्म्य फैलाकर तथा एक देवी के रूप में उसकी मूर्ति कल्पित करके, अज्ञान एवं धार्मिक अन्धविश्वास फैलाया है। गायत्री की पूजा पुजापे जैसा भ्रामक और अनर्थकारी जो क्रम चलाया है, वह अमृत में विष के समान है। इससे सभी उत्तमताओ पर पानी फेरकर उन्होंने उसे विचार शीलों के लिये त्याज्य बना दिया है।

अपने को ईश्वरावतार घोषित कराने की अभिलाषा हृदय में सजोकर मानव समाज को सत्य मार्ग से परे हटाते हुए गायत्री महामन्त्र के वास्तविक लाभों से वंचित रखने का पाप कर रहे हैं संयोजक आचार्य श्री राम शर्मा!

श्रीराम पथाइयो के आत्म-निरीक्षण हेतु कुछ पंक्तियां प्रस्तुत हैं—

'वेद विहीन प्रचार किये, गुरु गायत्री पंथ निरालो चलायी।
ऊपर स्वर्ण समान लगे और भीतर पोल हलाहल व्यापी॥
स्वार्थ में श्रीराम फंसे और चेला फंसाए, समाज बिगारी।
लूट खसोट करें फिरते चेले चेलों को मूंडत हैं बन मुण्डी॥

आर्यसमाज सान्ताक्रुज का अनुकरणीय कार्य

वार्षिकोत्सव पर विद्वानो का सम्मान

आर्य समाज सान्ताक्रुज का वार्षिकोत्सव 20 से 26 जनवरी तक सोत्साह मनाया गया। यज्ञ की पूर्णाहुति गणतंत्र दिवस के अवसर प्रात 10 बजे की गई। प्रतिदिन प्रात और साय स्वामी सत्य प्रकाश जी और शास्त्रार्थ महारथी प० शान्ति प्रकाश जी के प्रवचन तथा श्री पन्नालाल पीयूष और श्री सत्यपाल पथिक के भजन होते रहे। 24 जनवरी को आर्य युवा सम्मेलन हुआ जिसमें युवको ने व्यायाम प्रदर्शन किया। सम्मेलन का सचालन श्री विश्वभूषण आर्य ने किया। 25 जनवरी को श्रीमती लज्जारानी गोयल की अध्यक्षता में महिला सम्मेलन हुआ जिसकी मुख्य अतिथि श्रीमती सुशीला विद्यालकृता रही। सम्मेलन की सयोजिका थी श्रीमती प्रभावती मूना। 26 जनवरी को यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् राष्ट्रीय ध्वजारोहण करते हुए राज्य के विधायक श्री मधुदेवनेकर ने कहा कि हिन्दू जाति का वास्तविक रक्षक केवल आर्य समाज है।

इसके बाद वेद वेदांग पुरस्कार समारोह का कार्यक्रम हुआ जिसकी अध्यक्षता स्वामी सत्यप्रकाश जी ने की। मुख्य अतिथि श्री प० सत्यकाम विद्यालकार ने आचार्य प्रियव्रत जी वेद वाचस्पति का जीवन परिचय दिया। आचार्य जी अकस्मात् रुग्ण होने के कारण समारोह में उपस्थित नही हो सके। श्री प० सोमदेव जी ने उनका अभिनन्दन-पत्र पढ़ा और 21000 रु० की राशि का ड्राफ्ट बनाकर आचार्य जी को भेज दिया गया।

इसी प्रकार वेदोपदेशक और शास्त्रार्थ महारथी के रूप मे आर्य समाज की सेवा करने वाले श्री प० शान्ति प्रकाश जी को 11,000 रु० का ड्राफ्ट, रजत ट्राफी, अभिनन्दन-पत्र तथा शाल द्वारा सम्मानित किया गया। स्वामी सत्यप्रकाश जी ने कहा कि जब तक शास्त्रार्थ का युग चलता रहा तब तक आर्य समाज की उन्नति होती रही। शास्त्रार्थों के बन्द होने पर आर्य समाज मे शिथिलता आ गई। श्री शान्ति-प्रकाश जी ने उसी परम्परा को निभाते हुए आर्य समाज को अपना जीवन अर्पित कर दिया है।

समस्त आर्य जगत् में केवल सान्ताक्रुज ही ऐसा आर्य समाज है जिसने वेद-वेदांग निधि के लिए तीन लाख रु० के स्थायी कोष की स्थापना करके विद्वानो को सम्मानित करने का सकल्प किया है। सन् 1985 मे श्री प० युधिष्ठिर जी मीमासक को 75,000 रु० की राशि भेंट की गई। सन् 1986 मे आचार्य उदयवीर शास्त्री को 21,000 रु०, सन् 1987 में श्री प० विश्वनाथ जी विद्यामार्तण्ड को 21000 रु० और पूर्व वर्षों की भांति इस वर्ष आचार्य प्रियव्रत जी को 21 हजार रु० की थैली भेंट की गई है। जो सस्था अपने विद्वानों का उचित सम्मान नही करती उसमे विद्वानों की कमी हो जाती है और अविद्वानो की वृद्धि हो जाती है। इस दृष्टि से आर्य समाज सान्ताक्रुज के इस कार्य की जितनी प्रशसा की जाए, कम है।

आर आर बावा, डी बी कालेज फार गर्ल्ज बटाला

गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी द्वारा आयोजित युवा मेले में कालेज ने कविता प्रतियोगिता क्विज और गिद्धा मे प्रथम तथा ड्राइंग एन्ड पेंटिंग मे द्वितीय स्थान प्राप्त किया, कालेज ने दो दिवसीय अतर कालेज प्रतियोगितायें भी आयोजित की जिसमे काफी शहरों के कालेज छात्र छात्राओ ने बढ़ कर भाग लिया विभिन्न कालेजो, क्लबों द्वारा आयोजित अतर कालेज प्रतियोगिताओ मे बहुत सी ट्राफीया एव अन्य पुरस्कार जीते। पटियाला सांस्कृतिक विभाग पजाब द्वारा आयोजित अतर्राज्य शो में हमारी टीम का गिद्धा अत्यन्त सराहनीय रहा। यूनिवर्सिटी में हमारी छात्राओ ने सभी डिग्री क्लासो मे मे मैरिट प्राप्त की और काफी छात्रायें वजीफे की भी अधिकारिणी हुई, कालेज के एन एस एस यूनिट सप्ताह के अतर्गत निबन्ध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की, छात्राओं ने स्वय अपने हाथो से चीजें बनाकर एक स्टाल लगाया और उससे प्राप्त हुई धनराशि पजाब केसरी द्वारा प्रारम्भ किये गये शहीद परिवार फड के लिए भेजी। एन सी यूनिट के कैडेटो ने भी कैम्पो मे काफी पुरस्कार जीते ऊषा ने प्राथमिक सहायता' मे प्रथम पुरस्कार जीता कालेज मे वार्षिक खेल समाराह बी एस एफ कमाडर एम.एल ए श्री अश्विनी सेखडी की अध्यक्षता मे सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ वार्षिक आर्ट प्रदर्शनी एव ग्रह विज्ञान विभाग की वार्षिक प्रदर्शनी का उद्घाटन क्रमश डा त्रिलोचन सिह (अध्यक्ष रोटरी क्लब बटाला) तथा प्रि० श्री मदन लाल जी के द्वारा हुआ यहा भी बच्चो काम अत्यन्त सराहनीय रहा इन सभी प्राप्तियो का श्रेय प्रिंसीपल, कालेज स्टाफ, एव सहयोगी छात्राओं के अथक परिश्रम एव लगन को जाता है

आर्यों का रोष

दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले तमस कार्यक्रम में आर्य समाज को साम्प्रदायिक दगे आदि कराने का वृथा आरोप दिखाया जाने पर समाज के सभी सदस्यो ने इस कार्यक्रम की कटु आलोचना की है।

चन्द्र भवन शास्त्री

फिर से हमें जगा गया वह देव दयानन्द

—कु० प्रतिभा शुक्ला, शोध सहायिका—

सपने नये सजा गया वह देव दयानन्द !
फिर से हमें जगा गया वह देव दयानन्द !!

दयानन्द का बोध दिवस यह राष्ट्रीय पर्व हमारा
उदित हुआ यह राष्ट्र सूर्य-सम धार्मिक गर्व हमारा
दैन्य-दासता-दुख से पीड़ित थी जब भारत माता
तब स्वराज्य का मन्त्र फूकने आया युग-निर्माता

देश का गौरव बना वह देव दयानन्द !
फिर से हमें जगा गया वह देव दयानन्द !!

त्याग दिए जीवन-सुख सारे वन वन अलख जगाई
देश धर्म पर मर मिटने की जिसने राह दिखाई
तभी क्रांति के पथ पर बढ़ने उमड़ पड़ी तरुणाई
विश्व आर्य कर देने को थी जिसने टेर लगाई

अभय-मन्त्र दे गया चिर युवा दयानन्द !
फिर से हमें जगा गया वह देव दयानन्द !!

मानव-धर्म सिखाने वाला जिसने ज्ञान प्रदान किया
भूल गये थे हम सब जिसको फिर वह वेद-प्रकाश दिया
सबका ईश्वर धर्म एक है जिसने हमें सिखाया
मानव का आर्यत्व लक्ष्य है यह जिसने समझाया

युग-युग को ज्योति दे रहा वह सूर्य दयानन्द !
फिर से हमें जगा गया वह देव दयानन्द !!

पता—वेद संस्थान, सी-22 राजौरी गार्डन, नई दिल्ली 110027

टंकारा बोधोत्सव की चित्रमय झांकी

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के प्रो वाइस चांसलर प्रो॰ रामनाथ वेदालंकार प्रवचन करते हुए।

टंकारा ट्रस्ट के मंत्री श्री रामनाथ सहगल विवरण प्रस्तुत करते हुए।

शोभा यात्रा की एक झलक।

डी ए वी कालेज फरीदाबाद

डी ए वी शताब्दी कालेज फरीदाबाद के छात्र/छात्राओं के दो दल 50 और 100 की संख्या में क्रमशः अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेला प्रगति मैदान देहली और जयपुर गये। इन दोनों दलों का नेतृत्व प्रो अशोक शर्मा ने किया। 25 दिसम्बर 1987 से 3 जनवरी 1988 के दस दिवसीय एन एस एस शिविर का उद्घाटन स्थानीय मिश्रित प्रशासन के मुख्य प्रशासक श्री आर॰ के॰ तनेजा, आई॰ ए॰ एस॰ द्वारा हुआ। श्री आर॰ के॰ तनेजा ने विद्यार्थियों को स्वाव लम्बी बनने और श्रम करने में विशेष रुचि लेने का आग्रह करते हुए अपने कालेज के प्रति दायित्व निभाने के लिए प्रेरित किया। अन्तर्राष्ट्रीय युवा दिवस एवं सांस्कृतिक दिवस संयुक्त रूप से आययुवक समाज के तत्वावधान में 13 जनवरी को उत्साह पूर्वक मनाया गया। डा॰ धर्मवीर सेठी प्रो महेश चोपड़ा, कुमारी सुनीता एवं श्री प्रमोद ने स्वामी विवेकानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला। इस समारोह की अध्यक्षता प्राचार्य पी के बंसल ने की लायन्स क्लब पश्चिम फरीदाबाद एवं डी ए वी शताब्दी कालेज द्वारा संयुक्त रूप से एक रक्त दान शिविर का आयोजन कालेज के प्रांगण में 16 जनवरी को किया गया। क्लब के पदाधिकारी के अतिरिक्त कालेज के 40 विद्यार्थियों और प्राध्यापकों ने भी रक्त दान किया।

डा धर्मवीर सेठी

(पृष्ठ 2 का शेष)

या ते मन्म गृत्समदा ऋतावरि प्रिया देवेषु जुह्वति।

हे (वाजिनीवति, ऋतावरि) अन्नपूर्णा, जलपूर्णा च (सरस्वति) वर्षे। (या ते प्रिया) याते विज्ञानानि (मन्म) सामान्य ज्ञानानि (गृत्समदा) हृष्टा मेधाविन (जुह्वति) प्राप्तु प्रयतन्ति (इमे ब्रह्म) तानि ज्ञानानि (जुषस्व) स्वीकुरु, अर्थात् तव सन्निकाशात् वय प्राप्नुम। "गृत्स मेधाविनाम्, मद-हृषतु, ऋत-जलम्' (निरुक्त)

हे अन्न प्रदायिनी एवं जलधारा से आल्हादित करने वाली वर्षा, तेरे सम्बन्ध में जिस विज्ञान एवं सामान्य ज्ञान की प्राप्ति के लिए विद्वान् प्रयत्न करते हैं, उस ज्ञान-विज्ञान को हमें प्राप्त करा, अर्थात् हम वर्षा विज्ञान को सीखें और समझें और उससे लाभ उठावें।

पता—28 यू॰ बी॰ जवाहर नगर, दिल्ली-110007

यू० 108/81 लाइसेंस टू पोस्ट विदाउट प्रिपेमैंट
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० 39/57 डी० सी० 409
N D. P.S.O. ON : 25-2-88, 28 फरवरी, 1988

D. A. V. PUBLIC SCHOOL

Urvarak Nagar Barauni

A Commendable Blend of Aryan

Heritage and Modern Thought

Is Rendering

Great Service to the People of

Urvarak Nagar in Academics, and

Cultural and Sports Activities.

(A. N. SHARMA)

Principal

(P)

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री, द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाड़ी धीरज (फोन : 527335) दिल्ली से छपवाकर
कार्यालय आर्य जगत्, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 (फोन 343718)

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य —30 रुपये   विदेश मे 65 पौ० या 125 डालर   वर्ष 51, अक 10   रविवार 6 मार्च, 1988   दूरभाष: 343718
आजीवन सदस्य-251 रु०   इस अक का मूल्य—75 पैसे   सृष्टि सवत 172949088, दयानन्दाब्द 163   चैत्र कृ०-3 2044 वि०

संक्षिप्त किन्तु महत्वपूर्ण

पृथ्वी प्रक्षेपास्त्र का सफल परीक्षण

आन्ध्र प्रदेश के हरिकोट अन्तरिक्ष केन्द्र मे भारत ने जमीन से जमीन पर मार करने वाले 'पृथ्वी' नामक प्रक्षेपास्त्र का सफल परीक्षण किया है, जिससे पाश्चात्य जगत भी हैरान रह गया है। अभी तक यह तकनीक सिर्फ चार देशो के पास थी—अमरीका, सोवियत सघ फ्रास और चीन। भारतीय वैज्ञानिको ने बिना किसी बाहरी सहायता के यह मिसाइल तैयार किया है। इसकी मारक क्षमता 250 किलोमीटर तक आकी जाती है इससे पहले भारत टैंक-नाशक नाग' धरती से हवा मे भी मार करने वाला 'त्रिशूल' और हवा से हवा मे मार करने वाला 'आकाश' नामक प्रक्षेपास्त्र भी विकसित कर चुका है।

शकर दयाल शर्मा द्वारा इस्तीफे की धमकी

राज्यसभाध्यक्ष उपराष्ट्रपति डा० शकर दयाल शर्मा ने सत्तासीन पार्टी के सदस्यो द्वारा लगातार हगामे और व्यवस्था न मानने से खिन्न होकर अपने पद से इस्तीफे की धमकी दी। अभी तक इस प्रकार के शोर शराबे के लिए विपक्षी दल ही बदनाम थे। पूर्व राष्ट्रपति नीलम सजीव रेड्डी, पूर्व उपराष्ट्रपति एम हिदायतुल्ला और पूर्व केन्द्रीय मत्री श्री सुब्रह्मण्यम ने इ का सासदो के इस आचरण की निन्दा करते हुए कहा कि इस तरह ससदीय लोकतत्र नही चल सकता। प्रधान मत्री की मौजूदगी मे यह सब हुआ, इसलिए यह और भी खेदजनक है।

आजादी की विशाल दौड

27 फरवरी को प्रधान मत्री राजीव गाधी द्वारा दोपहर 2 बजे हरी झण्डी दिखाने पर हुई आजादी की दौड मे लगभग एक लाख लोगो ने भाग लिया। भाग लेने वाले लोगो मे देश के सभी प्रान्तो, सभी वर्गों और सभी आयु के लोग शामिल थे। आजादी के चालीसवें वर्ष के उपलक्ष्य मे नागरिको मे राष्ट्रीय भावना जगाने के लिए यह आयोजन किया गया। विपक्षी दलो ने इसमे भाग नही लिया। विपक्षी दलो की ओर से प्रात 9 बजे जनपथ के वेस्टर्न कोर्ट से एक दूसरी दौड भी हुई जिसमे प्राय गरीब मजदूरो और झुग्गी झोपडी वालो ने भाग लिया। इस अनुत्पादक श्रम को तमाशा करने वालो की कमी भी नही थी।

दयानन्द के बोध ने राष्ट्र को नई चेतना दी

ऋषि बोधोत्सव पर अनेक नेताओ के उद्गार

16 फरवरी को फीरोजशाह कोटला के मैदान मे शिवरात्रि के अवसर पर दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो की ओर से आर्य केन्द्रीय सभा के तत्त्वावधान मे हुए ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर सभी वक्ताओ ने यह स्वीकार किया कि बालक मूलशकर के मन मे यदि मूर्ति पर चढकर नैवेद्य का भोग लगाने वाले मूषक ने सच्चे शिव के लिए जिज्ञासा पैदा न की होती तो आर्यसमाज का उदय न होता। आर्यसमाज का उदय न होने पर जहा राष्ट्र नई चेतना से वचित रहता, वहा मानव जाति नाना मत मतान्तरो की तर्क विरुद्ध मान्यताओ का खण्डन करने वाले बुद्धिवाद से भी वचित रहती।

सत्तारूढ दल के कोषाध्यक्ष श्री सीताराम केसरी ने कहा कि शिवरात्रि के अवसर पर ही ऋषि दयानन्द के जीवन मे वह सकल्प की ज्योति प्रस्फुरित हुई जिसने निजी और सार्वजनिक के परिष्कार का मार्ग प्रशस्त कर दिया। ससत्सदस्य श्री रामचन्द्र विकल ने कहा कि 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के आदर्श के अनुसार सारी मानव जाति को एकता के सूत्र मे पिरोने के भारतीय सदेश का श्रेय ऋषि दयानन्द की आर्ष वाणी को ही है। आर्यप्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री छुट्टूसिह एडवोकेट ने कहा कि समस्त ससार के बुद्धिजीवियो के समक्ष ऋषि दयानन्द के तर्क सगत विचारो को स्वीकार करने के सिवाय और कोई चारा नही है। दक्षिण भारत मे आर्य समाज के मिशनरी प्रचारक श्री अमरेश आर्य ने आर्यसमाज के क्रान्तिकारी रूप पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आर्यसमाज ने दक्षिण भारत मे जो चमत्कार किया है उसका मूल्याकन करने पर कोई भी आश्चर्य चकित हो सकता है।

सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने कहा कि मूर्ति-की परम्परा मे ही हिन्दू जाति के पतन का इतिहास छिपा है। एक हजार वर्ष की गुलामी इसी महारोग के कारण हुई। ऋषि दयानन्द पहले महापुरुष हैं जिन्होने छोटी-सी घटना से ही बोध लेकर युग-परिवर्तन कर दिया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री आनन्द बोध सरस्वती ने कहा कि आर्यसमाज अपने जन्मकाल से ही सघर्षों से जूझता रहा है। आज भी आर्यसमाज के सामने अनेक चुनौतिया है। आर्यों को सगठित होकर उन चुनौतियो का मुकाबला करना है।

इससे पूर्व ऋषि मेले के उपलक्ष्य मे प्रातःकाल स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने ध्वजारोहण किया और आर्य कुमारो की क्रीडा तथा भाषण प्रतियोगिताए हुई। दोपहर की सभा की अध्यक्षता प्रसिद्ध इतिहास वेत्ता डा० सत्यकेतु विद्यालकार ने की। उन्होने ऋषिकृत सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ को वैदिक धर्म के ज्ञान का अद्भुत कोष बताया। कार्यक्रम का सचालन आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री ने किया। प्रातःकाल यज्ञ श्री यशपाल सुधाशु ने करवाया।

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह सलाहकार समिति की सिफारिश

20 फरवरी को हुई हैदराबाद आर्य सत्याग्रह सलाहकार समिति की बैठक मे सर्वसम्मति से उन कार्यकर्ताओ को सम्मान पेंशन देने की सिफारिश की गई जिन्होने जेल न जाकर भूमिगत रहकर निजामशाही के विरुद्ध कार्य किया। जिन सत्याग्रहियो को अभी तक जेलो के प्रमाण पत्र नही मिले हैं, उनके सम्बन्ध मे गृह मन्त्रालय के अधिकारियो से जेलो मे अधिकारियो को पत्र लिखकर प्रमाणपत्र मगवाने के लिए कहा गया।

इस समिति की सिफारिश पर गृह मन्त्रालय ने 64 अन्य सत्याग्रहियो को भी पेंशन देना स्वीकार कर लिया है। 'सार्वदेशिक' पत्र मे उन व्यक्तियो की सूची है (34 की पहले, और 30 की 28 फरवरी के अक मे)। जिन सत्याग्रहियो के कारावास की अवधि 6 मास से कम है उनकी सम्मान पेंशन के लिए गृहमन्त्रालय की ओर से राज्य सरकारो को लिखा गया है।

डी.ए.वी. स्कूल अजमेर शताब्दी समारोह

डी ए वी स्कूल अजमेर का स्थापित हुए 100 वर्ष पूरे हो जाने पर 10 फरवरी को शताब्दी समारोह मनाया गया। उत्तर प्रदेश के पूर्व गृहमत्री और डीएवी के ही पुराने छात्र श्री जगनप्रसाद रावत ने ध्वजारोहण किया। इस समारोह मे परोपकारिणी सभा के प्रधान श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती, आर्यसमाज आगरा के प्रधान श्री भोजदत्त शर्मा, आर्यसमाज अजमेर के प्रधान श्री दत्तात्रेय वाब्ले और दयानन्द कालेज अजमेर के पूर्व आचार्य श्री कृष्णराव तथा आर्यसमाज के सब अधिकारीगण उपस्थित थे। साय 4 बजे राजस्थान के कृषि एव स्वास्थ्य मत्री श्री गोविन्दसिह गुजर की अध्यक्षता मे श्री रावत का तथा राजस्थान के विधान सभाध्यक्ष श्री किशन मोटवानी का मुख्य अतिथि के रूप मे स्वागत किया गया।

श्रद्धानन्द जयन्ती

24 फरवरी को अमरहुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द की 132वी जन्म जयन्ती पर उन्हे भावभीनी श्रद्धाजलि दी गई। महापौर महेन्द्रसिह साथी और नगर निगम मे सदन के नेता श्री दीपचन्द बन्धु ने चादनी चौक स्थित स्वामी जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। निगम की ओर से आयोजित इस समारोह मे महापौर ने कहा कि स्वामी जी ने अस्पृश्यता, साम्प्रदायिकता तथा सामाजिक कुरीतियो को हटाने के लिए अपना जीवन न्यौछावर कर दिया। श्री बन्धु ने कहा कि आतकवाद आज की सबसे बडी चुनौती है जिसे जनमत जागृत करके ही दूर किया जा सकता है।

आवश्यक सूचना

आर्य जगत्' का 13-3 1988 का अक आर्य समाज स्थापना अक होगा।

सम्पादक—क्षितीश वेदालकार   व्यवस्थापक—रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

अद्‌भुत वैदिक यज्ञ विधि-[6]

महाव्याहृति मंत्रों का गूढ़ अभिप्राय

—आचार्य वेद भूषण—

[इस लेखमाला का पाचवा लेख 10 जनवरी 88 के अक में प्रकाशित हुवा है। आगे से प्रति सप्ताह एक-एक क्रमपूर्वक दिया जाएगा। इन सब लेखो को सभाल कर रखने से एक पुस्तक बन जाएगी जो पाठको का ज्ञानवर्धन करेगी।—सम्पादक

महा व्याहृति मन्त्र—

ओम् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा।
इदमग्नये प्राणाय इद न मम।
ओम् भुववायवेऽपानाय स्वाहा।
इद वायवेऽपानाय इद न मम।
ओम् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा।
इदमादित्याय व्यानाय इद न मम।
ओम् भूर्भुवस्स्वरग्नि वायवादित्येभ्य प्राणाऽपान व्यानेभ्य स्वाहा।
इदमग्नि वायवादित्येभ्य प्राणापान-व्यानेभ्य इद न मम।

[गो० गृ० सूत्र—आर्ष वचन]

प्रत्येक याज्ञिक यह जानता है कि—यज्ञ के आरम मे इन्हीं तीन महा व्याहृतियो के उच्चारण अर्थात् "ओम् भूर्भुव स्व" का उच्चारण करके घृत दीप प्रज्वलित किया जाता है। वर्तमान मे आर्य परिवारो में व आर्य समाजों मे जहा यज्ञ होता है वहा प्राय: घृत का दीपक प्रज्वलित नही किया जाता। इस दोष का निवारण कर यज्ञ पात्रो में दीपक को भी स्थान दिया जाना चाहिए। यज्ञ में दीपक की अत्यन्त उपादेयता प्रत्यक्ष सिद्ध है। दीपक मे अग्नि प्रज्वलन का जो मन्त्र है ये चार मन्त्र उसी मन्त्र के विस्तार मात्र हैं।

ये मन्त्र अत्यन्त सारगर्भित हैं। यदि हम यह कहे कि—ये चारो वेदो की कुंजिया हैं तो अतिशयोक्ति नही होगी। ये मन्त्र विज्ञान के रहस्य को उद्‌घाटित करते हैं। जो इन मन्त्रो की सूक्ष्मता को जान लेगा वह ज्ञान विज्ञान के रहस्यो को जान लेगा। इन चारो मन्त्रो का जो मूल आधार तीन महा व्याहृतिया हैं वे समस्त ज्ञान का आहरण किए हुए हैं। वि एव आङ् उपसर्ग पूर्वक हृञ्-हरणे इस धातु से व्याहृति शब्द की निष्पत्ति होती है। वि अर्थात् विशेष रूप से आ=अर्थात् चारो ओर से जिसने हरण कर रक्खा है ज्ञान का, रहस्य का, उसे ही व्याहृति कहेगे। ये व्याहृतियो जब सयुक्त कर दी जाती हैं तब मन्त्र महत्व प्राप्त कर लेता है। प्रत्येक पदार्थ या मन्त्र लघुता से गुरुता को पा लेता है।

उदाहरण के लिए गायत्री मन्त्र को ही ले लीजिए। गायत्री मन्त्र एक लघु मन्त्र है। गायत्री छन्द भी लघु ही होता है। किन्तु जब उसके साथ भूर्भुव स्व की तीन महा व्याहृतिया सयुक्त हो जाती हैं तब वह लघुमन्त्र गुरु मन्त्र या महा मन्त्र हो जाता है। अर्थ या भावो की सूक्ष्मता आ जाती है। किसी की सूक्ष्मता ही उसे गुरुता प्रदान कर देती है। जो वस्तु जितनी अधिक सूक्ष्म होती चली जाएगी वह उतनी ही अधिक बलवत्तर होती चली जाती है। परमात्मा सर्व शक्तिमान् इसीलिए हैं कि वह सूक्ष्मतम हैं। परमात्मा सर्व व्यापक क्यो है? क्योंकि वह सूक्ष्मतम है। परमात्मा निराकार क्यो है, क्योकि सूक्ष्मतम है। परमात्मा की सूक्ष्मता ही उसके परम होने का कारण है। हिरण्यगर्भ या सब को धारण करने की सामर्थ्य भी उसमे इसी लिए है कि वह परम सूक्ष्म हैं। इसीलिए वह महान् गुरु बृहस्पति कहाता है।

गायत्री छन्द लघु है पर जब उसे बडा कर दिया जाता है तब उस छन्द का नाम भी दैवी बृहती हो जाता है। छन्द बृहती और मन्त्र गुरु या महा कहाता है।

स्पष्ट रूप से बडा [बृहती] गुरु या महा ये शब्द सापेक्ष हैं। कोई छोटा होगा तभी तो कोई बडा होगा। कोई लघु होगा, तभी कोई गुरु होगा। कोई अल्प होगा, तो ही कोई बहु होगा। इससे ही इस शब्द का महत्व सिद्ध हो जाता है। एक मे एक से अधिक होने का या करने का सामर्थ्य होगा तभी वह इन उपाधियो से अलकृत हो सकता है अन्यथा अकेले का महत्व बनता ही नही। बढ़ने का सामर्थ्य ही सबसे महत्वपूर्ण बात है। परमात्मा ने जब कुछ बनाया तभी वह कुछ बना। यदि कुछ न बनाता तो महत्व सिद्ध ही नही होता। एक का होना न होना बराबर है। अकेला मान्यता रहित स्वीकृति रहित होती है। कर्तृत्व शक्ति के कारण ही परमात्मा का अस्तित्व स्वीकारा जाता है। यह विषय कुछ गम्भीर है। विचारशील जब इस पर जितना सोचेंगे उतना कुछ जानते चले जायगे।

प्रत्येक का मूल एक ही होता है। एक सख्या ससार की लघुतम इकाई है। एक सख्या ही सर्वाधार है। सबका आधार है। सख्या को चाहे एक से बढाइए या एक से घटाइए, दोनो स्थितियो मे उसका मूल आधार एक ही होता है। आप कोई सी सख्या लें उस सख्या का मूल्याकन एक से ही होता है। जैसे हम पाच कहे तो हम ने जाना कि-एक को पाच गुणा करें तभी पाच का अर्थ हम जान पाते हैं। वैसे ही आधा कहे तो उसका आधार भी एक ही है। एक होगा तो ही आधा होगा। शब्दो मे अ और सख्या मे एक इन दोनो मे ही सारा ज्ञान विज्ञान का मूल है। एक की पराकाष्ठा क्या है? वह है तीन। एक लघुतम है और तीन महत्तम है। 'अ' आरम्भ हैं और 'म' पूर्णता है। एक से तीन या अ से म् इसे ही परिमाण या मात्रा कहते हैं।

तीन का यदि महत्तम स्वरूप खोजा जाए तो वह बनेगा नौ। तीन का तीन गुना नौ होता है। इस प्रकार सख्या मे सबसे छोटी इकाई एक है और सबसे बडी इकाई नौ बनती है। इसलिए एक आरभाक है और नौ पूर्णांक है। आरभाक या सूक्ष्माक एक ही बात है। इसीलिए यजुर्वेद मे कहा है "न द्वितीयो न तृतीयो न चतुर्थ" आदि। वह परम सूक्ष्म परमात्म एक है। पर जब तक एक ही है तब तक अस्तित्व की मान्यता नही। दो से अस्तित्व की मान्यता तो हो जाती है पर कर्तृत्व की क्षमता का अभाव रह जाता है। वादी प्रतिवादी दो से किसी भी बात का निर्णय सभव नही। व्यवहार सभव नही। वादी-प्रतिवादी और साक्षी। सभी निर्णय, व्यवहार और कर्तृत्व का सामर्थ्य जागृत होता है। तभी पूर्णता बन पाती है। तीन सूक्ष्मतम् पूर्णता हैं। व्यवहार का आरभ तीन से ही सभव है। कार्य को ही व्यवहार कहते हैं। कार्य के लिए कर्त्ता का होना आवश्यक है। व्यवहार केवल कर्त्ता और कार्य से ही नही चलता। व्यवहार आरभ करने के लिए कम से कम तीन की आवश्यकता है। तीसरे को ही हम भोक्ता या उपभोक्ता कहते हैं। इस प्रकार जहा कार्य होगा उसके तीन आधार भी होगें। जैसे स्कूल को ही लीजिए। स्कूल मे कर्त्ता है अध्यापक। कार्य है ज्ञान या पढाई। परन्तु पढाई के लिए पढने वाला भी होना चाहिए तभी स्कूल का व्यवहार आरभ होगा।

जब सूक्ष्म सैद्धान्तिक ज्ञान के आधार पर ससार की खोज की जाती है और उसका लघुतम् पूर्णांक खोजा जाता है तो वह होता है तीन। इस तीन के सिद्धान्त का ही त्रैतवाद कहते हैं। इन्ही तीन तत्वो को ईश्वर जीव प्रकृति कहते हैं। ये नाम लौकिक भाषा मे स्थूल रूप मे हैं। इनका सूक्ष्म वैदिक नाम है "भू भुव स्व।" इसमे भू लघुतम है जो प्रकृति रूप है। जडत्व ही इसकी लघुता है। भुव आत्मा है, महत् है। और महत्तम परमात्मा है। महत्तम को ही स्व कहा जाता है।

वेदत्रयी सूक्ष्मरूप ही महाव्याहृतिया हैं। महाव्याहृतियो का भी सूक्ष्मतम स्वरूप है ओउम्। अ,उ,म्। अ प्रकृति है। उ जीवात्मा और म् परमात्मा। अ,उ,म् का स्थूल रूप है भू, भुव, स्व,। भू का स्थूल रूप है अग्नि। भुव का स्थूल रूप है वायु और स्व का स्थूल रूप है आदित्य। इसी प्रकार अग्नि का स्थूल रूप है प्राण। वायु का स्थूल रूप है अपान। और आदित्य का स्थूल रूप है व्यान।

फिर इन तीनो के भी नौ-नौ भेद हैं। तीन के भेद से भिन्न भिन्न रूप बनते हैं। परमात्मा के भिन्न नौ स्वरूपों का वर्णन महर्षि ने ओउम् की व्याख्या मे दर्शाया है। जो इस प्रकार—प्राज्ञ, आदित्य, ईश्वर, तैजस्, वायु हिरण्यगर्भ, विश्व, अग्नि और विराट्। ये परमात्मा के नौ रूप हैं।

विराट्, अग्नि और विश्व—
ये परमात्मा का कर्म स्वरूप हैं।
हिरण्यगर्भ, वायु और तैजस्—
ये परमात्मा के गुणो के रूप हैं।
ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञ—
ये प्रभु के स्वभावगत् रूप हैं।

इन्हीं के परस्पर योग से जितनी सख्या बनेगी उससे भी असख्य गुण व रूप परमात्मा के हैं।

इसी प्रकार आत्मा के भी प्रथम तीन भेद हैं जिनका आधार गुण कर्म स्वभाव होते हैं सत्, रज और तम। सात्विक राजसिक और तामसिक। इसके प्रत्येक के तीन-तीन भेद इस प्रकार होगें। उत्तम सात्विक, मध्यम सात्विक, अधम सात्विक। उत्तम राजसिक, मध्यम राजसिक और अधम राजसिक। उत्तम तामसिक, मध्यम तामसिक और अधम तामसिक। मनुष्य, पशु-पक्षी, कीट पतगादि इन तीनो प्रकार के प्राणियो मे ये नौ नौ प्रकार के भेद मिलेंगे मात्रा भेद से असख्य रूपो मे यही विभक्त हो जाते हैं।

प्रकृति के भी इसी प्रकार नौ भेद हैं —

मूल द्रव्य मुख्य रूप से अग्नि वायु और आदित्य हैं। अग्नि जल व भूमि। वायु के भी तीन भेद है, आक्सीजन, हाइड्रोजन व कार्बन। आदित्य के भी

(शेष पृष्ठ 10 पर)

कश्चित्सल्लक्ष्यमुद्दिश्य क्रियते यः श्रमो महान्।
शारीरः मानसो वापि ज्ञेयस्तप एव सत् ॥

किसी भी मंगलकारी उद्देश्य से जो महान् श्रम किया जाता है वह चाहे शारीरिक हो या मानसिक श्रम हो, वह तप ही होता है। (निरुद्देश्य श्रम व्यर्थ है।

सम्पादकीयम्

आजादी की यह कैसी दौड़!

आजादी की 40 वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में 27 फरवरी 1988 को नई दिल्ली के विजय चौक से जो दौड़ शुरू हुई उसमें आयोजकों के हिसाब से दौड़ने वालों की संख्या सवा लाख के आस-पास रही थी, परन्तु प्रत्यक्ष दर्शियों का कहना है कि इस दौड़ में बच्चे-बूढ़े-जवान सब मिलाकर ढाई लाख से कम नहीं थे। इस दृष्टि से यह दौड़ "महान्" भी थी और अनुपम भी। इतनी बड़ी दौड़ शायद आज तक संसार के किसी देश में नहीं हुई होगी। पर आजादी के साथ इस दौड़ का क्या सम्बन्ध है, यह बहुत विचार करने के पश्चात् भी हमारी समझ में नहीं आया। यह दोष भी हमारी ही बुद्धि का होगा, क्योंकि राष्ट्र का संचालन करने वाली कुर्सियों पर बैठे महान जिम्मेदार लोगों की बुद्धि तक हम नहीं पहुंच सकते। फिर भी नेताओं की उर्वरता की दाद देनी होगी कि उन्होंने इस दौड़ को भी "आजादी की दौड़" के नाम से प्रसिद्ध कर दिया।

एक ओर महात्मा गांधी की दांडी कूच थी जिसमें मुश्किल से सौ व्यक्ति भी नहीं रहे होंगे। दूसरी ओर यह विशाल दौड़ है, जिसमें संख्या दो लाख से ऊपर पहुंच गई।। गांधी के दांडी कूच में एक संदेश था और सचमुच आजादी की तड़प थी। मुट्ठी मुट्ठी भर नमक बनाने के अपराध में जो लोग गिरफ्तार हो गये, उन्होंने भले ही कोई बहुत बड़ा तीर न मारा हो, परन्तु अंग्रेज सरकार को तो हिला ही दिया। सबसे बड़ी बात तो यह है कि वह एक उत्पादक श्रम का प्रतीक थी। जहां तक आजादी की तड़प का सवाल है, उसके लिए इतना ही कहना काफी है कि तब महात्मा गांधी साबरमती आश्रम से अपने चन्द सत्याग्रही साथियों को लेकर यह कहकर कूच के लिये निकले थे कि अब मैं इस आश्रम में वापस तभी लौटूंगा जब आजादी हासिल कर लूंगा। उसके बाद देश आजाद हो गया, परन्तु महात्मा गांधी लौटकर दुबारा साबरमती आश्रम नहीं गए—नहीं जा सके, क्योंकि उससे पहले ही वे शहीद हो गए।

कहा जाता है कि इस समय की तीन चौथाई पीढ़ी आजादी के बाद पैदा हुई है। कितनी कुर्बानी से वह आजादी प्राप्त हुई थी, इसकी तमीज वर्तमान पीढ़ी को न हो, न सही, परन्तु कृपा करके आजादी के नाम पर दौड़ के रूप में इतने बड़े तमाशे का आयोजन करके उन कुर्बानी करने वालों का मखौल तो न उड़ाइए। क्या आजादी के नाम पर होने वाली इस दौड़ का नेतृत्व करने के लिये सिनेमा के अभिनेता और अभिनेत्रियां ही रह गए थे? देश के सारे बड़े बूढ़े स्वतन्त्रता-सेनानी मर गए थे? जब महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रिका में अहिंसक सत्याग्रह किया था तब स्वामी श्रद्धानन्द ने और गुरुकुल कांगड़ी के ब्रह्मचारियों ने एक-एक समय का उपवास करके जमा की गई राशि गांधी जी को भेजी थी। इस राशि को पाकर वे चकित रह गए थे। तभी तो उन्होंने दक्षिण अफ्रीका से लौटते ही सबसे पहला जरूरी काम गुरुकुल कांगड़ी में जाकर महात्मा मुन्शीराम (बाद में स्वामी श्रद्धानन्द) के चरण-स्पर्श करना समझा था।

दूसरी तरफ नाईजीरिया में तथा अन्य अफ्रीकी देशों में जब भीषण अकाल पड़ा तब अमरीका और जापान ने, और उनकी देखा देखी भारत ने भी, इसी प्रकार लम्बी दौड़ का आयोजन किया। परन्तु क्या इस दौड़ से अफ्रीका निवासियों की भूख मिट गई? उस दौड़ के पश्चात् अमरीका ने तो फिर भी पैसा इकट्ठा करने के लिए एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जिसकी टिकट दर खूब ऊंची रखी गई। सांस्कृतिक कार्यक्रम भी क्या था—रातभर घोर अश्लील नृत्यों का जमघट और उसको देखने के लिए लोगों की भारी भीड़ का जमघट। अमरीकी सभ्यता की दृष्टि से पैसा इकट्ठा करने का ढंग वही हो सकता था जबकि भारतीय संस्कृति का उदाहरण गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने उपस्थित किया था।

स्वास्थ्य के लिए दौड़ना अच्छा है। पर इस महान् दौड़ से सबसे बड़ी शिकायत यह है कि लाखों लोगों के द्वारा किया गया यह कई घंटों का श्रम जितना अनुत्पादक था उतना ही निरर्थक था। घंटों की मजदूरी के हिसाब से इस मानवीय श्रम की कीमत जोड़ी जाय तो उसका मूल्य बहुत कुछ हो सकता था, पर रचनात्मकता के अभाव में यह सारा श्रम केवल अजा-गल-स्तन-वत (बकरी के गले के थन की तरह) व्यर्थ ही रहा। इसी सारे श्रम को किसी रचनात्मक दिशा में मोड़ दिया जाता तो वह कितना सार्थक हो उठता। परन्तु वर्तमान सरकार जिस तरह बजट की अधिकांश राशि अनुत्पादक सरकारी व्यय में और नौकरशाही में नष्ट कर देती है, उसी प्रकार की मनोवृत्ति इस प्रकार के तमाशों में भी दिखाई देती है। इस प्रकार के अनुत्पादक श्रम को महात्मा गांधी कभी सहन नहीं कर सकते थे।

नहीं, इस दौड़ का आजादी से दूर का भी सम्बन्ध नहीं है। आजाद भारत में यह 'दौड़ने की आजादी' का प्रतीक भले ही बन जाये परन्तु सच पूछो तो यह आजादी की दौड़ नहीं, आजादी से पलायन की दौड़ है। इस दौड़ का एक और प्रतीकार्थ है जिसको शायद लोग नहीं समझ पायें। वह प्रतीक अर्थ इक्कीस किलोमीटर की दूरी निर्धारित करने से ध्वनित होती है। अर्थात् 21वीं सदी में पहुंचने की ताबड़तोड़ जल्दी में यह दौड़ लगाई गई है। परन्तु उसके लिये दौड़ने की जरूरत क्या है? गांधी के दांडी कूच को रोकने के लिये सरकार और पुलिस मौजूद थी यहां 21वीं सदी में पहुंचने से आपको रोकने वाला अब कौन है? इक्कीसवीं सदी के शुभागमन में सिर्फ 12 साल ही तो बचे हैं। एक एक साल में एक एक कदम रखते हुए भी आप 21वीं सदी में सही सलामत पहुंच जाते। परन्तु महोत्सवों और तमाशों की संस्कृति में विश्वास रखने वालों पीढ़ी में इतना सब्र कहां? कहीं यह तेज दौड़ दौड़ने वालों का सन्तुलन न बिगाड़ दे।

लोकतंत्र के लिए अशुभ

गत सप्ताह राज्यसभा के अध्यक्ष और उपराष्ट्रपति डा० शंकरदयाल शर्मा के साथ सत्तासीन पक्ष के लोगों ने जिस प्रकार का व्यवहार किया उसे लोकतन्त्र के लिए किसी भी दृष्टि से शुभ नहीं कहा जा सकता। विपक्षी दल तो यह मानकर चलते हैं कि हमारा काम सत्तारूढ़ दल की ओर से प्रस्तुत संसदीय गतिविधियों में अड़ंगा लगाना ही है, इसीलिए उनका दृष्टिकोण प्रायः रचनात्मक न होकर निषेधात्मक ही अधिक होता है। परन्तु फिर भी वे क्षमा के योग्य हैं। यदि उन्हें विरोध करने का कोई रचनात्मक मार्ग दिखाई नहीं देता तब वे कोलाहल करें और संसद का कार्य आगे न बढ़ने दें, तो कुछ कुछ बात समझ में आती है। परन्तु जब सत्तारूढ़ दल का लोक सभा और राज्यसभा दोनों में पूर्ण बहुमत हो और उनकी रजामंदी बिना वहां कोई भी प्रस्ताव पास न हो सकता हो, तब उनकी ओर से अध्यक्ष की व्यवस्था स्वीकार न करना, बार-बार टोका-टोकी करना और कोलाहल करना कहां तक उचित है? आखिर प्रत्येक सभा के कुछ कायदे कानून होते हैं। और संसद की गरिमा का अलग ही महत्त्व है। फिर जब व्यवस्था-निर्माण के प्रति जिम्मेवार लोग ही उसका उल्लंघन करने लगें तो लोक तन्त्र कब तक सुरक्षित रहेगा। यह तो वही बात हुई कि बाड़ ही बाग को खाने लगे तो वृक्षों के फल सुरक्षित नहीं रह सकते।

तेलगु देशम् के पी० उपेन्द्र ने आन्ध्र प्रदेश के राज्यपाल के सबसे द्वारा स्वीकृत सीमा से अधिक व्यय के बारे में जब कुछ विवरण देना चाहा तो सभापति ने उसकी अनुमति दे दी। इंका के सदस्यों को यह सहन नहीं हुआ और वे इस कदर मर्यादा का उल्लंघन करने लगे कि अन्त में डा० शंकर दयाल शर्मा को यहां तक कहना पड़ गया—"जब तक मैं इस कुर्सी पर हूं तब तक राज्य सभा के सदस्यों के अधिकार की अपने खून के आखरी कतरे तक रक्षा करने की कोशिश करूंगा। इस सदन में किसी भी मन्त्री की धौंसपट्टी नहीं चल सकती। हम लोग भारत की जनता के प्रति जिम्मेदार हैं।" जब संसद सदस्यों के साथ इंका के मन्त्रीगण भी कोलाहल में शामिल हो गए तो अन्त में डा० शर्मा को दुःखी होकर यह कहना पड़ा "अब आप लोगों को और कुछ करने की जरूरत नहीं है, आप अपनी पार्टी में सिर्फ यह तय कर लें कि क्या मुझे इस्तीफा दे देना चाहिए? और यदि आप लोग ऐसा तय कर लेंगे तो मैं तुरन्त इस्तीफा दे दूंगा।"

अफसोस की बात यह है उस समय प्रधानमन्त्री भी सदन में मौजूद थे परन्तु संसद की रक्षा करने के लिए कोई कदम उठाने की बजाय वे सदन से उठकर चले गए। कहा जाता है कि उसी दिन शाम को कुछ वरिष्ठ मन्त्री प्रधानमन्त्री से मिले और उन्होंने स्थिति की गम्भीरता से प्रधानमन्त्री को परिचित कराया। तब प्रधानमन्त्री ने कहा बताया जाता है कि यदि डा० शर्मा इस्तीफा देना चाहते हैं तो वे दें, उन्हें रोकता कौन है? तब वरिष्ठ मन्त्रियों ने उन्हें समझाया कि इससे सरकार का संकट बढ़ जायेगा इसलिए यह नौबत नहीं आनी चाहिए। उसके बाद वरिष्ठ मन्त्रीगण डा० शर्मा के पास गये और उनसे जाकर कहा कि आपके आदेश की और व्यवस्था की अवहेलना करना हममें से किसी का उद्देश्य नहीं है। जो अशोभनीय काण्ड हो गया है, उसे भूल जायें। अगले दिन प्रधान मन्त्री भी डा० शर्मा से मिले। वयोवृद्ध कांग्रेसी नेता श्री कमला पति त्रिपाठी ने प्रधानमन्त्री को पत्र लिखकर श्री शर्मा से माफी मांगने की सलाह दी थी।

इस प्रकार यह काण्ड तो समाप्त हो गया, परन्तु सभापति ने जिस प्रकार राज्य सभा की मर्यादा की रक्षा की उसकी पूर्व राष्ट्रपति नीलम संजीव रेड्डी और उपराष्ट्रपति हिदायतुल्ला ने प्रशंसा की और उन्होंने इस प्रकार की घटनाओं को लोकतन्त्र के लिए अशुभ बताते हुए भविष्य में उनकी पुनरावृत्ति न होने देने के लिए सावधान किया।

आर्यों का अतीत वर्तमान और भविष्य

—अमर नाथ आर्य—

पांच सहस्त्र वर्षों की अवनति और शताब्दियों की दासता से हमने अपना और अपने देश का नाम भी भुला दिया था। इस मध्य हमें और हमारे देश को न जाने क्या क्या नाम दिए गए। जिसके साक्षी हैं हमारे रक्तरजित इतिहास के पृष्ठ।

परन्तु 19 वी शताब्दी में यहा एक ऋषि आया जिसने हमें चेताया कि तुम्हारा वास्तविक नाम है-आर्य और तुम्हारे देश का नाम है—आर्यावर्त। तुम्हारा धर्म है-सनातन वैदिक-धर्म और मूल-धर्म ग्रथ है-वेद। अत उठो वीर-भारतीयो वेद तुम्हें आदेश देता है।

उत्तिष्ठत, जाग्रत, प्राप्य वरान् निबोधत ॥

कृत मे दक्षिण हस्ते जयो में सव्य आहित ॥

अर्थात—उठो जागो अपने स्वरूप को पहचानो और दृढ़ता से अपनी मजिल की ओर बढ़ो। तुम्हारा दाहिने हाथ मे कर्म है और बाये हाथ मे फल। सदैव सही ध्येय की ओर बढ़ने वाले तुम्हारे चरणो को सफलता अवश्य चूमेगी।

दयानन्द के इस आह्वान ने बिजली का काम किया और हिमालय और समुद्र से रक्षित भारत के प्रांगण मे चेतना की किरणें लौटने लगी और फूटा फिर यहा जाग्रति का प्रभात। जिससे 'भेड-समूह' मे पले सिंह शावक की नाईं भारत वासी को निज स्वरूप का भान हुआ और उससे अगडाई लेते हुए विद्रोह की दहाड मारी। जिससे विदेशी सियार चौकन्ने हो गए। तब शुरू हुआ एक लम्बा सघर्ष, जो महान स्वतन्त्रता प्राप्ति तक चला।

हमारी जिस पतन—कहानी का सूत्रपात महाभारत से भी पूर्व हुआ था—उसे हमारे मत मतान्तरो से बल मिला। बौद्ध और जैनियो ने जहा पवित्र वैदिक साहित्य को प्रक्षिप्त किया वहा विधर्मियो ने हमारी साहित्य—साधना की खुले आम होली जलाई और अन्य विदेशियो ने इसकी मन मानी व्याख्या से इसे 'कार्टून' बना कर अपनी साध पूरी की। जिससे आत्महीनता पनपी।

ऋषि दयानन्द जब कार्य क्षेत्र मे उतरे तो उनके समक्ष पहला कर्तव्य था अस्वस्थ जन मानस को स्वस्थ करना, ऋषिवर ने रोग चीन्हे निदान ढूढा और योग्य वैद्य की भाति रोग के कीटाणु हटाने मे जुट गए।

फिर इलाज शुरू हुआ—वेद की घुट्टी एव शास्त्रानुपान से। पुन आत्मशक्ति सम्बल, वेद-प्रचार पथ्य और समाधान अनुलेपन प्रदान किया। इस विचार भेषज का जादू असर हुआ रोगी स्वस्थ होने लगा। अब देश प्रेमी व्यक्ति ने उसकी काया ही पलट दी और वह प्राणपण से देश सेवा मे सलग्न हो गया।

इतिहास से खिलवाड़ का एक ध्येय यह भी था कि उन्होने भारत के स्वामी आर्यों को बाहर से आए सिद्ध करने की साजिश रची। जिसका अभिप्राय था उन्हे घुसपैठिए करार दे कर भारत मे अपनी घुसपैठ को उचित करार देना। दूसरे उत्तरी और दक्षिणी भारतीयों को गौर और श्याम-वर्ण भेद से आर्य और अनार्य कह कर, फूट डालने का षड्यन्त्र रचा। परन्तु यहां वे भूल गए कि आर्यों के शिरोमणि योगी महापुरुष राम और कृष्ण श्याम वर्ण थे।

उनकी कुदृष्टि जब वेदो पर पडी तो ये उन्हे गडरियों के गीत मालूम हुए यहां तक कि हमारे सच्चे इतिहास—रामायण व महाभारत को उन्होने काल्पनिक उपन्यास का नाम दे डाला। और रही-सही कसर हमारे अपने कर्णधारो ने पूरी की वही भ्रामक इतिहास सरल बुद्धि विद्यार्थियो को पढ़ा कर। परिणामत अपना महान अतीत उनकी आंखों से ओझल हो गया। खेद है कि आज भी यही इतिहास निर्धारित है—जहां औरगजेब को महान और महाराणा प्रताप व शिवाजी को साम्प्रदायिक कहा जाता है। आश्चर्य है कि हमारे देशभक्त इतिहासकारो ने अथक प्रयत्न से जो सच्चा इतिहास खोज निकाला है, उसे पाठ्यक्रम मे शामिल करने में उदासीनता बरती जा रही है।

मैकाले का कुचक्र

वेद-धर्म की निमल चादर को जहा बौद्धो ने धब्बे लगाए और विधर्मियो ने जिसे तार करने की कुचेष्टा की, वहा फिरंगियों ने इसके अवशेषो को इच्छित रग में रग कर इसकी शक्लोसूरत ही बदल दी। तथा रहती कसर पूरी की, मैकाले की शिक्षा-नीति ने जिसने भारत को क्लर्कों की मडी बना दिया और भारतीय अब ब्रिटिश गाडी हाकने मे अपना गौरव समझने लगे मैकाले यहा एक विशेष ध्येय लेकर आया था। जिसके जिम्मे भारत को ईसाई बनाना था। उसने बडी सूक्ष्मता से शिक्षा के माध्यम से भारतीय-रगों मे आत्महीनता का जहर भरा और नई पौध के विचार बदल दिये। जब उससे रिपोर्ट मांगी गई तो उसने मर्म-वाणी में कहा कि—'यदि मैं इन्हे पूर्णत ईसाई न भी बना पाया तो, भारतीय भी नहीं रहने दिया।' इसका अभिप्राय था कि उसने भारतीयो को अंग्रेजो का 'मानस दास' बनाने में कोई कसर नहीं छोडी और उन्हें वहां ला पटका, जहां अपना तो कुछ नहीं, किन्तु पराया सब कुछ श्रेष्ठ नजर आता है।

प्रस्तुत है—इस आपाद-मूल दास-कृति के कुछ नमूने—अग्रेज भक्त के रूप मे अब हमें पढ़ाया जाने लगा कि—'कालिदास भारत का शेक्सपीयर है'। 'समुद्रगुप्त भारत का नेपोलियन है' और गीता हिन्दुओं की बाइबिल है। भारतीयों ने यह आंख मूद कर मान लिया, प्रश्न उठता है कि—क्या इगलैंड भी शेक्सपीयर को अपना कालिदास, फ्रांस नेपोलियन को अपना समुद्रगुप्त और अग्रेज बाइबिल को अपनी गीता मानते हैं?

अब आईए भूगोल क्षेत्र में—यहां प्रसिद्ध है—'जयपुर भारत का पेरिस, काश्मीर एशिया का स्वीटजरलैंड, बम्बई भारत का न्यूयार्क बगलौर भारत का मानचेस्टर और अबोहर फाजिलका—भारत का कैलिफोर्निया है आदि-2, परन्तु क्या अन्य देश—पेरिस को फ्रांस का जयपुर, स्वीजरलड को यूरोप का काश्मीर आदि उपमाए मानते हैं? उनकी उपमाए अपनी हैं। वे भारत की भांति न अपने को दूसरे के तराजू मे तोलते, और न अपने को दूसरो की आंख से देखते हैं। किन्तु हम हैं, जो इसी में अपना गौरव समझते है।

भारत ऐसा अकेला देश है—जिसका और जिसके वासियो के नाम दूसरी भाषा में रखे जाते हैं—यथा भारत से इन्डिया और भारतीयो से इन्डियन। क्या कमाल है! ऐसा ही उपहास पहले लका से भी होता था, जिसे सिलोन कहते थे। परन्तु गुलामी का जुआ उतरते ही उन्होने अपने देश का नाम श्री लका रखा और अपने स्वाधीन होने का परिचय दिया। परन्तु आश्चर्य है कि आज तक हमारा ध्यान इधर गया ही नहीं और इन्हीं विदेशी नामकरणो में अपना गौरव समझ बैठे हैं।

दुर्भाग्य से भारत को ऐसे कर्णधार मिले जिनकी आत्मा विदेशी थी। वे न केवल अपनी सस्कृति से उदासीन थे बल्कि उन्हें विदेशियत से सीमातीत लगाव भी था। आज भी ऐसे शासकों की कमी नहीं जिन्हें अग्रेजी और अग्रेजियत बिना नींद नहीं। जो विदेशी भाषा और भूषा पर लट्टू हैं।

हिन्दी से दूर-दूर

हमारे नेता, जानबूझ कर जनता को हिन्दी से दूर रखते हैं। अन्यथा जन-मानस हिन्दी से जुड़ा है। जो उसे मां के दूध मे मिली है। जब भी और जहां भी हुआ—सस्कृतनिष्ठ हिन्दी का नहीं बल्कि हिन्दुस्तानी, यानी उर्दू मिश्रित हिन्दी का ही विरोध हुआ है। जिसका अर्थ है कि भारतीय भाषाएं या तो सस्कृत से निकली हैं या उससे प्रभावित हैं। भाषा विवाद, हमारे बड़ों की बड़ी भूलों का परिणाम है। अन्यथा हिन्दी और सस्कृत-जाति की दो आंखें हैं जहां उसकी भावनाए झलकती हैं—आत्मा प्रतिबिम्बित होती है।

आज हमें नए सिरे से सोचना होगा। हर स्तर पर विदेशी अनुकरण देश को खोखला कर रहा है जिसके दूरगामी भयकर परिणाम हुए हैं और आगे हो सकते हैं। उदाहरणत सुविधा की दृष्टि से आज व्यवहार जगत् में ईसवी सन् और विदेशी अक प्रचलित हैं, और देशी-सवत् और अक व्यवहार से बहिष्कृत हैं। जरा सोचो तो—कुछ शताब्दियो बाद की पीढ़ियां क्या सोचेंगी कि विश्व को वेद ज्ञान देने वाली सस्कृति अपनी सन्तति को अपना सवत् व अक ज्ञान भी न दे पायी। इससे यह धारणा बनेगी कि ईसाई मत ही श्रेष्ठ है जिसका कलडर ससार भर मे चलता है। क्या ऐसी धारणा जाति के गौरव पर कुठाराघात नहीं है?

अन्धानुकरण की यह विषबेल दूर-दूर तक फैली है। भारतीय समाज स्वभावत आशावादी है। इसके साहित्य और विशेषकर सस्कृत साहित्य में एकाध को छोड, सभी काव्य-सुखान्त हैं। परन्तु आज बाहरी प्रभाव से दुखान्त कृतियों का प्रचलन है। विचारधारा बदल रही है। इससे हमारी परम्परागत आस्था को धक्का लगा है।

इसमें सशय नहीं कि हमारा इतिहास निहित स्वार्थों से लिखा गया है आत्महीनता फैली और हम अपने गौरव-गुमान से परे हट गए हैं। आज कान्वेंट स्कूल का पठित व्यक्ति अपने को फरिश्ता समझते हैं। जिन्हें अपने माता-पिता तक से बदबू आती है, और वे ऐसा आचरण करते हैं जैसे भारत में न होकर उन्हें विलायत में होना चाहिए। उन्हें अपना सब कुछ तुच्छ और अन्यों का महान लगता है। जरा सोचो देश उनसे क्या आशा कर सकता है। जो मानव-उन्नति का समस्त श्रेय विदेशो को दे डालते हैं और यह भूल जाते हैं कि सब सत्य विद्याओं के मूल परमेश्वर ने जो वेद-ज्ञान मानव को आदि सृष्टि में ही दे दिया था—उसकी बेल पनपी, भारत में ही। यहां वेदागों के पल्लवों में विविध-विद्याओं के सुमन खिले और शास्त्र-फल तैयार हुए। तब ज्ञान-सौरभ से आर्यावर्त का अचल महक उठा तथा ऋषि-मुनि कोकिलाएं वेद-गायन में झूमने लगीं। इस ज्ञानामृत-वर्षण से यहां का कण-कण उज्ज्वल हो उठा और विज्ञान किरणें दिग्दिगन्त को आलोकित करने लगीं, जगद्गुरु भारत ने विश्व की झोली में जो ज्ञानोपहार डाले, उसकी एक झलक देखें—

(शेष पृष्ठ 9 पर)

झूठ को जन्म देता है। अज्ञान उसे सत्य मानकर ग्रहण करता है। समय बीतने पर वह परम्परा बन जाती है। आगे चलकर वह झूठ सत्य पर ही हावी पड़ जाता है और वही इतिहास में भ्रान्ति उत्पन्न कर सर्वमान्य बन जाता है। अरबी भाषा में एक कहावत है "गलतउल आम सहीह" अर्थात् जो गलत बात जन साधारण में बहुप्रचलित हो जाए वह सत्य का रूप धारण कर लेती है।

भारतीय इतिहास में ऐसी अनगिनत भ्रान्तियां प्रचलित हैं जिनको मानकर और शिरोधार्य कर हम भारतीयों का बहुत बड़ा भाग अ-भारतीय बन चुका है और बनता जा रहा है। उर्दू के एक कवि ने ठीक लिखा है कि—

कौम की तारीख से जो,
बेखबर हो जायेगा।
रफ्ता-रफ्ता आदमीयत,
[illegible] के घर हो जायगा।

मैं आज केवल 'आर्य' शब्द को लेता हूं, इसलिए कि यह भारतीय इतिहास की आधारशिला है।

जब मनुष्य की उत्पत्ति हुई तो उन लोगों ने अपने को 'आर्य' कहना आरम्भ किया। इसका अर्थ यह नहीं कि वे अपने नाम के साथ आर्य शब्द भी जोड़ते थे। इतिहास में आपने ऐसा नहीं पढ़ा-सुना होगा कि 'अर्जुन आर्य', 'युधिष्ठिर आर्य', अथवा 'भीम आर्य' इत्यादि। आजकल कुछ आर्य समाजी अपने नाम के साथ आर्य शब्द लगाते हैं तो केवल सभ्य अर्थ के नाते। आर्य नाम की कोई विशेष जाति नहीं थी। वे प्रत्येक व्यक्ति को आर्य कहते थे। [भाषा-विज्ञान के अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति के नाम के अन्त में जो 'जी' लगाने की भारतीय प्रथा है, वह और कुछ नहीं, आर्य शब्द का ही विकृत रूप है। संस्कृत का 'आर्य' शब्द प्राकृत में 'अज्ज' बना, फिर 'अज्ज' से प्रादेशिक भाषाओं में 'अजी' या 'जी' बना है। किसी व्यक्ति को 'जी' के सम्बोधन के साथ बुलाना उसे प्रकारान्तर से 'आर्य' कहना ही तो है।—सम्पादक]

अंग्रेज लोग भारत में आए तो उस समय वे अर्ध सभ्य थे। बड़े बड़े लोगों को अपने हस्ताक्षर करना भी नहीं आता था। उसी काल में भारत में पांडीचेरी के फ्रेंच न्यायाधीश श्री जाक.लैकालियो के शब्दों में "भारत में ऐसा कोई भी हिन्दू बालक नहीं था जो इस्ले [तख्ती की तख्ती] पर लिखना न जानता हो।" अंग्रेजों ने हमें अज्ञता में जकड़कर रखा था, इसलिए उन्होंने अपनी सत्ता के बल पर हमारे इतिहास को दूषित किया, अपनी ओर से कई बातें गढ़कर, मिथ्याकी-गढ़ानी आरंभ कीं, जिनका खण्डन भी हम नहीं देख सकते थे। उनमें से सबसे बड़ी यह थी कि "आर्य लोग भारत के मूल निवासी नहीं, वे भारत में कहीं बाहर से आकर बसे और यहां के मूल निवासी द्रविड़ों अथवा अनार्यों को भगाकर स्वयं अधिकारी बन बैठे।"

आर्य बाहर से आये थे—एक मिथ्या प्रवाद

—श्री गंगाराम सम्राट्—

अब प्रश्न यह उठता है कि 17 वीं शती तक संसार की किसी भी पुस्तक में ऐसी बात कहीं भी लिखी नहीं मिलती। स्वयं किसी अंग्रेजी पुस्तक में भी नहीं। किन्तु 18 वीं शती में जब अंग्रेज अपने पैर यहां जमा सके, व्यापारी से शासक बनने का स्वप्न देखने लगे, तो यकायक आकाशवाणी हो गई कि आर्य लोग भारत में बाहर से आए।

किसी भी देश का इतिहास उस देश के निवासियों के लिखित दस्तावेजों-ग्रन्थों से अथवा लोक कथाओं आदि के आधार पर ही बनाया जाता है। ऐसी बात क्या भारत की किसी भी पुस्तक में लिखी पाई गई है अथवा किसी भी प्रान्त के दन्त-कथा में ऐसा मिला है? कहीं भी नहीं। वेद आर्यों के और मनुष्य जाति के प्राचीनतम ग्रन्थ माने जाते हैं। वेद में भी इस प्रकार का उल्लेख कहीं नहीं मिलता। यही नहीं, वेद में तो द्रविड़-अनार्य जाति का भी उल्लेख नहीं है। पुराण, जो भारतीय इतिहास के प्राण हैं (सब नहीं), उनमें भी ऐसा लिखा कहीं नहीं मिलता, तो फिर यह बात अंग्रेजों ने कहां से प्राप्त की? कहीं से नहीं! केवल स्वार्थ ने इस पाप को जन्म दिया।

इंग्लैंड अंग्रेजों का मूल देश नहीं

इंग्लैंड अंग्रेजों का अपना मूल देश नहीं है, तो भारतीय आर्य हिन्दुओं का देश भारत क्यों कर हो सकता है? अंग्रेज इंग्लैंड में बाहर से आकर बसे तो आर्य हिन्दू भी भारत में बाहर से आए होने चाहिएं। अंग्रेजों के पुरखे मूल इंग्लैंड निवासियों को खदेड़कर स्वयं स्वामी बन बैठे, तो भारतीय आर्यों के पुरखों ने भी ऐसा ही किया होगा। उनके इस प्रलाप को हमने अज्ञानवश सत्य मान लिया। दो-तीन पीढ़ियों के पश्चात् यह परम्परा बन गई, जो सत्य पर हावी हो गयी, हम भ्रान्त हो गये।

ईरान की साक्षी

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि जिस समय हमें यह असत्य बताकर विषपान कराया जा रहा था, लगभग उसी समय हमारे पड़ोसी तथा इस्लामी देश ईरान में बच्चों को यह पढ़ाया जाता था (हिन्दी अनुवाद)—

"एक समूह आर्यों का जो ईरान की ओर आया और यहीं बस गया इसलिए अपने नाम पर उन्होंने इस (देश) का नाम ईरान रखा, और हम उन आर्यों की सन्तान हैं।"

यह पाठ्य पुस्तक की चौथी तथा पांचवीं श्रेणी की पुस्तक का उदाहरण है अब कालेज स्तर वाली भूगोल पुस्तक "जुग़राफ़ए-बार-आस्या" अर्थात् "एशिया महाद्वीप का भूगोल" में श्वेत रंग की जातियों के अन्तर्गत श्रेणी 'अ' में लिखा [हिन्दी अनुवाद]

"सफेद रंग वाली आर्य जातियों में हिन्दू, ईरानी तथा अफगान शामिल हैं।"

यह पुस्तक भी ईरानी सरकार की ओर से सरकारी प्रेस में छपी तथा सरकारी शिक्षा के पाठ्यक्रम में पढ़ाई जाती है। मेरे पास हिजरी सन् 1322 की प्रति है अर्थात् 84 वर्ष पहले की, लगभग उन्नीसवीं शती की।

कहां तो ईरान का विद्यार्थी अभिमान से अपने को आर्यों की सन्तान मानता है और कहां भारत की यह दुर्दशा कि हमें आर्य कहलाते लज्जा आती है। ईरान-सम्राट् रजा शाह पहलवी अपने को 'आर्य मिहिर' (मिहर=सूर्य) कहता था। वहां के विश्वविद्यालय का नाम भी आर्यान् है। वहां की विमान-सेवा का नाम 'आरियाना' है। ईरान के प्राचीनकालीन सम्राट् दारा भी अपने लेखों में अभिमान से अपने को "अदम दारयवुष ....अरीय अरीया चीतर" [मैं दारयवुष......आर्य—आर्य का पुत्र] लिखता है।

यदि आर्य बाहर से आये तो कहां से आए? बस यह प्रश्न सुनते ही उत्तर देने वालों की गर्दन शर्म से नीची हो जाती है, क्योंकि इसका उत्तर किसी के पास भी नहीं है, सिवाय अनुमान के। जब प्रश्न ही गलत हो तो उत्तर की आवश्यकता ही नहीं क्योंकि झूठ की आंखें नहीं होतीं।

भारत के स्कूलों में पढ़ाया जाता है कि आर्य लोग यूरोप से, मध्य एशिया से और ईरान से आए थे। और ईरान के स्कूलों में पढ़ाया जाता है कि आर्य भारत से ईरान में आए थे और उन्होंने ही इस देश का नाम आर्यान अर्थात् ईरान रखा था। भारतवासियों को कैसी उलटी पट्टी पढ़ाई जाती है। मैकाले की शिक्षा धन्य है।

'आर्य जगत्' सम्बन्धी घोषणा

फार्म-4

(नियम 8 देखिए)

1 प्रकाशन स्थान : नई दिल्ली-110001

2. प्रकाशन अवधि : साप्ताहिक

3. मुद्रक का नाम : एस० नाराय एण्ड सन्स
(क्या भारत का नागरिक है) हां

4. प्रकाशक का नाम : रामनाथ सहगल
पता आर्य समाज (अनारकली)
मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1

5. सम्पादक का नाम क्षितीश वेदालंकार
(क्या भारत का नागरिक है): हां

6. उन व्यक्तियों के नाम व पते।
जो समाचार पत्र के स्वामी हों आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा,
तथा जो समस्त पूंजी के एक मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1
प्रतिशत से अधिक के साझेदार
या हिस्सेदार हों।

मैं रामनाथ सहगल एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये हुए विवरण सत्य हैं।

रामनाथ सहगल
प्रकाशक

6-3-1988

महर्षि का महान् संकल्प

संस्कृत भाषा का पुनरुद्धार

—डा० प्रशान्त वेदालंकार—

संस्कृत के विरोध में सबसे बड़ा तर्क यह दिया जाता है कि यह एक अप्रचलित भाषा है, और इसका आज कुछ भी महत्व नहीं है। इसी कारण त्रिभाषा सूत्र और नयी शिक्षा-नीति में संस्कृत की सर्वथा उपेक्षा की गयी है। पर यह धारणा संस्कृत का महत्व न समझने के कारण है। दयानन्द का मत था कि संस्कृत का महत्व अनेक दृष्टियों से है, विशेष रूप से इसमें विद्यमान आध्यात्मिक विद्या से सुखलाभ के लिए इसका अध्ययन आवश्यक है। स्वामी विरजानन्द से शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त दयानन्द सर्व प्रथम आगरा पहुंचे। वहां सुन्दरलाल उनके शिष्य बने। एक आदित्यवार के दिन सुन्दर लाल ने स्वामी जी से निवेदन किया 'संस्कृत भाषा तो मृत मानी जाती है, कहीं व्यवहार में नहीं आती तो आपने इस पर इतना परिश्रम क्यों किया ?" स्वामी जी ने उत्तर दिया—"इससे अपना परलोक सुधारेंगे" दयानन्द का संकेत संस्कृत में विद्यमान अध्यात्म-विद्या की ओर था।

किन्तु दयानन्द संस्कृत का महत्व केवल उसमे विद्यमान अध्यात्म विद्या के ही कारण नहीं मानते थे। उनके मत में अनेक भौतिक विज्ञानो की दृष्टि से भी संस्कृत का महत्व किसी भाषा से कम नहीं है। विशेष रूप से प्राचीन भारत के ज्ञान के किसी भी क्षेत्र का अध्ययन करने के लिए संस्कृत का अध्ययन आवश्यक है। इसके लिए दयानन्द ने दाराशिकोह का उदाहरण दिया है। दाराशिकोह का निश्चय था कि जैसी पूरी विद्या संस्कृत में है वैसी किसी भाषा में नहीं है। वे उपनिषदों के भाषान्तर में लिखते हैं कि मैंने अरबी आदि बहुत सी भाषा पढ़ीं परन्तु मेरे मन का सन्देह छूट कर आनन्द न हुआ, जब संस्कृत पढ़ी और सुनी तब निःसन्देह मुझको बहुत आनन्द हुआ। (सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास)

इसके अतिरिक्त भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से संस्कृत का महत्व संसार की प्रत्येक भाषा के लिए है। अलीगढ में मुसलमानों से बातचीत के मध्य दयानन्द ने कहा कि संस्कृत भाषा एक स्वाभाविक और ईश्वर प्रदत्त भाषा है। इसके स्वरों को लीजिए, इनकी ध्वनि सब देशों में पाई जाती है। सब प्रचलित भाषाओं में इसी की अक्षर माला नैसर्गिक है। छोटा सा बच्चा भी अ, इ उ का उच्चारण बिना सिखाए करने लग जाता है। क, ख आदि व्यंजनों का उच्चारण भी ऐसा ही सुगम और स्वाभाविक है। जो भाषा स्वाभाविक ध्वनि के अक्षरों से बनी वही भाषा स्वाभाविक और आदिम होनी चाहिए। ईश्वरीय आदेश उसी भाषा में होने उचित हैं।

6 सितम्बर 1872 को आगरा में ही तत्कालीन जिला मजिस्ट्रेट मिस्टर एच० डब्ल्यू०-अलेक्जेण्डर से स्वामी जी का मिलना हुआ। स्वामी जी ने उनसे संस्कृत में सम्भाषण किया, जिसे रजनी बाबू अनुवाद करके समझाते जाते थे। मजिस्ट्रेट स्वामी के कथन को बहुत ध्यान से सुनता था। उसने स्वामी जी से संस्कृत बोलने का कारण पूछा तो उन्होंने कहा कि भारत वर्ष में द्राविड़ प्रभृति अनेक भाषाएं बोली जाती हैं। तब मैं किस भाषा में बोलूं ? इसके अतिरिक्त संस्कृत सारे हिन्दुओं की भाषा है, और समस्त भाषाओं का मूल है। अतः संस्कृत बोलना ही अच्छा है।

दयानन्द ने संस्कृत भाषा के उक्त महत्व के कारण उसका प्रचार व प्रसार करना अपना एक कर्तव्य निश्चित किया दयानन्द संस्कृत की कितनी आवश्यकता अनुभव करते थे, यह उनके एक विज्ञापन से पता चलता है। दयानन्द ने लिखा—"आर्यावर्त देश का राजा अंग्रेज बहादुर से यह मेरा विज्ञापन है कि संस्कृत विद्या की ऋषि मुनियो की रीति से प्रवृति कराये। इससे राजा और प्रजा को अनन्त सुख-लाभ होगा। और जितने आर्यावर्तवासी सज्जन लोग हैं, उनसे भी मेरा यह कहना है कि इससे इस सनातन संस्कृत विद्या का उद्धार अवश्य करें। व इससे अत्यन्त आनन्द होगा। और जो यह संस्कृत विद्या लुप्त हो जाएगी तो सब मनुष्यों की बहुत हानि होगी। इसमें कुछ सन्देह नहीं।"

दयानन्द जहां भी जाते वहा संस्कृत का प्रचार करने और स्वयं लोगों को संस्कृत सिखाते। आगरा में दयानन्द ने संस्कृत के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यदि कोई अन्य पुरुष भी स्वकल्याण करना चाहे तो सहायता देने के लिए उद्यत हूं। उन्हीं की प्रेरणा से प० सुन्दर लाल और बालमुकन्द ने अष्टाध्यायी का अध्ययन आरम्भ किया था। लाहौर में उन्होंने संस्कृत के महत्व पर प्रकाश डाला तो प्रायः सभी सभासद् संस्कृत पढ़ने लग गए थे। स्वामी जी के पास भी बहुत से लोग अध्ययन करने आया करते थे। उनके सारगर्भित उपदेशों को सुनकर अनेक लोगों के हृदय में संस्कृत-भाषा सीखने के लिए उत्साह उत्पन्न हुआ। दयानन्द को जब भी अवसर मिला उन्होंने स्वयं अनेक लोगों को संस्कृत पढ़ानी आरम्भ कर दी।

संस्कृत पाठशाला

महर्षि दयानन्द ने जहां कुछ व्यक्तियों को संस्कृत पढ़ने की प्रेरणा दी, वहां पाठशाला आदि खोलकर भी संस्कृत का विकास किया। सन् 1878 में अपने एक विज्ञापन में उन्होंने लिखा कि जैसा आर्यावर्तवासी आर्य लोग आर्यसमाजों के सभासद् करते और कराना चाहते हैं कि संस्कृत विद्या के जानने वाले स्वदेशीयों की बढ़ती के अभिलाषी, परोपकारक निष्कपट हो के सबको सत्यविद्या देने की इच्छा युक्त, धार्मिक विद्वानों की उपदेशक मण्डली और वेदादिसत्य शास्त्रों के पढ़ने के लिए पाठशाला किया चाहते हैं।

16 मार्च 1879 को दीनापुर (दानापुर) के आर्य समाज के मन्त्री को लिखा कि मुझे यह सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई कि आप आर्य-संस्कृत-पाठशाला खोलने का प्रयत्न कर रहे हैं।

महर्षि दयानन्द के ही प्रयत्नो से फर्रुखाबाद में पाठशाला आरम्भ हुई थी, उसमे भी दयानन्द संस्कृत की शिक्षा पर ही विशेष बल देना चाहते थे। 23 मई 1881 को सेठ निर्भयराम को एक पत्र में उन्होंने लिखा—आप लोगों की पाठशाला में आर्यभाषा संस्कृत का प्रचार बहुत कम और अन्य भाषा अंग्रेजी उर्दू, फारसी अधिक पढ़ाई जाती है। इससे वह अभीष्ट जिसके लिए यह पाठशाला खोली गई है, सिद्ध होता नहीं दीखता। वरन् आपका यह हजारों मुद्रा का व्यय संस्कृत की ओर से निष्फल होता जाता है। हमने कभी परीक्षा के कागजात या आज तक की परीक्षा का फल कुछ नहीं देखा। आप लोग देखते है कि बहुत काल से आर्यावर्त मे संस्कृत का अभाव हो रहा है। वरन् संस्कृत कभी मातृभाषा की जगह अंग्रेजी लोगों की मातृभाषा हो चली है। अंग्रेजी का प्रचार तो जगह-जगह सम्राट की ओर से जिनकी मातृभाषा है, भली प्रकार हो रहा है। अब इसकी वृद्धि में हम तुम को इतनी आवश्यकता नहीं दीखती। और न सम्राट् के समान कुछ कर सकते हैं। हां, हमारी अति प्राचीन मातृभाषा संस्कृत जिसका सहायक वर्तमान में कोई नहीं है। यही व्यवस्था देखकर संस्कृत के प्रचारार्थ आप लोगों ने यह पाठशाला स्थापित की है। तो यह भी उचित कर्तव्य अवश्य है कि पूर्ण इष्ट की सिद्धि पर दृष्टि रखी जावे।

12 मई 1881 को लाला कालीचरण जी रामचरण जी को लिखा—इस (फर्रुखाबाद की) पाठशाला में अधिक करके संस्कृत की उन्नति पर ध्यान रहना चाहिए। कुछ दिनों के बाद उन्होंने फर्रुखाबाद पाठशाला के लिए दुर्गाप्रसाद जी को फिर लिखा—यहां इस बात को पाठशाला के उद्देश्य पर कि संस्कृत की उन्नति होनी चाहिए, जो इस पर अच्छी प्रकार ध्यान रहे। 17 जून 1881 को दुर्गाप्रसाद जी को फिर लिखा—पाठशाला में संस्कृत का काम ठीक ठाक होना चाहिए। जैसे मिशन स्कूलों में लड़के अपनी अन्य स्वार्थ सिद्धि के लिए बाइबिल सुन लेते हैं, और कुछ ध्यान नहीं देते, वैसे जो संस्कृत सुन लिया तो क्या लाभ होगा ? इस पाठशाला में मुख्य संस्कृत जो मातृभाषा है, उसकी ही वृद्धि देनी चाहिए। फारसी का होना कुछ आवश्यक नहीं। केवल संस्कृत ही का पठन-पाठन होना आवश्यक है।

दिसम्बर 1882 को दुर्गाप्रसाद जी को पत्र लिखकर पूछा कि पाठशाला में संस्कृत पढ़ के कितने विद्यार्थी समर्थ हुए अथवा अंग्रेजी फारसी में ही व्यर्थ धन जाता है, सो लिखो, जो व्यर्थ ही है तो क्यों पाठशाला रखी जाए। 25 अप्रैल 1883 को लिखा—इससे विदित होता है कि तुम्हारी पाठशाला में अधिक, डो, और कैट, रैट का भरमार है जो कि आर्य समाजों का विशेष कर्तव्य नहीं।

इन सब पत्रों से महर्षि की संस्कृत प्रचार की ललक सूचित होती है। कलकत्ते मे प्रसन्न कुमार ठाकुर ने मूलाजोड़ मे एक संस्कृत कालेज स्थापित किया था। स्वामी जी ने वहां जाकर प्रस्ताव किया केवल इसका नाम ही संस्कृत न हो, प्रत्युत इसमें संस्कृत की शिक्षा भी होनी चाहिए।

उन्होंने भारतीय ही नहीं, वरन् विदेशियों को भी संस्कृत सीखने की प्रेरणा दी। 26 मार्च 1879 के एक पत्र में उन्होंने लिखा—अमरीका वालों से अति प्रेम से हमारा नमस्कार कहना और उनसे कुशलता पूछना कि लाहौर आदि के समाज में आप लोगों के लिए तैयारी कर चुके हैं। यहां कब तक आवेंगे और उन्होंने संस्कृत पढ़ना आरम्भ किया है या नहीं ? 30 जून 1879 को श्याम जी कृष्ण वर्मा को आक्सफोर्ड में दयानन्द ने पत्र लिखा और पूछा—संस्कृत विद्या का वहां कैसा प्रचार है ? और आर्यसमाजों के बावत वे लोग क्या कहते हैं ? 8 अक्तूबर 1880 को एच० पी० मैडम ब्लेवेत्स्की को उन्होंने लिखा: प्रथम संस्कृत पढ़ने, शिक्षा लेने, सोसाइटी को आर्यसमाज की शाखा करार देने आदि के लिए लिखा था, और वे चिट्ठियां जब के सर्वत्र प्रथम प्रसिद्ध भी हैं। और मैंने वहां पत्र भेजे थे उनकी नकल भी मेरे पास उपस्थित है।

दयानन्द की निश्चित मान्यता थी कि भारत विश्व, संस्कृत और संस्कृत में निहित-ज्ञान के रूप में बहुत कुछ दे सकता है। सत्यार्थ प्रकाश में वे लिखते हैं कि जितनी विद्या भूगोल में फैली है वह सब आर्यावर्त देश से मिश्र वालों, उनसे यूनानी, उनसे रोम और उनसे

यूरोप देश में, उससे अमरीका आदि देशों में फैली है। जब तक जितना प्रचार संस्कृत विद्या का आर्यावर्त देश में है उतना किसी देश में नहीं। जो लोग कहते हैं कि जर्मनी देश में संस्कृत विद्या का बहुत प्रचार है और जितनी संस्कृत मोक्षमूलर साहब पढ़े हैं उतनी कोई नहीं पढ़ा। यह बात मात्र कहने की है, क्योंकि 'यस्मिन्देशे द्रुमोनास्ति तत्रै रण्डो द्रुमायते'—अर्थात् जिस देश में कोई वृक्ष नहीं होता उस देश में एरण्ड को बड़ा वृक्ष मान लेते हैं। वैसे यूरोप देश में संस्कृत विद्या का प्रचार न होने से जर्मन लोगों और मोक्षमूलर साहब ने थोड़ा सा पढ़ा, वही उस देश के लिए अधिक है। परन्तु आर्यावर्त देश की ओर देखें तो उनको बहुत न्यून गणना है, क्योंकि मैंने जर्मनी देश निवासी एक प्रिंसिपल के पत्र से जाना कि जर्मनी देश में संस्कृत चिट्ठी का अर्थ करने वाले भी बहुत कम हैं। (सत्यार्थ प्रकाश एकादश समुल्लास, पृ० 275-276) आदि लिखकर दयानन्द ने वस्तुतः उन लोगों को सावधान करने की कोशिश की जिन्होंने सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञान का एक ठेकेदार पश्चिम को मान लिया था और यहां तक कि संस्कृत में भी अपने को जर्मनी से पिछड़ा हुआ मानने लगे थे। आज भी दुर्भाग्य की बात है कि किसी विदेशी विश्वविद्यालय से प्राप्त संस्कृत उपाधि को भारतीय विश्वविद्यालयों की तुलना में अधिक महत्व दिया जाता है। किसी विदेशी विद्वान् द्वारा संस्कृत विषय पर विदेशी भाषा में लिखी पुस्तक को अधिक महत्व दिया जाता है। दयानन्द ने इस कुप्रवृत्ति से बचने के लिए आज से सौ वर्ष पूर्व ही सावधान किया था। वे लिखते हैं कि मोक्षमूलर साहब के संस्कृत साहित्य और थोड़ी-सी वेद की व्याख्या देखकर मुझको विदित होता है कि मोक्षमूलर साहब ने इधर-उधर आर्यावर्तीय लोगों के द्वारा की हुई टीका देखकर कुछ-कुछ यथा-तथा लिखा है। जैसा कि "युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परितस्थुषः। रोचन्ते रोचना दिवि" इस मन्त्र का अर्थ घोड़ा किया है, इससे तो सायणाचार्य ने सूर्य अर्थ किया है सो अच्छा है। परन्तु इसका ठीक अर्थ परमात्मा है, सो मेरी बनाई ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में देख लीजिए। उसमें इस मन्त्र का अर्थ यथार्थ किया है। इतने से जान लीजिए कि जर्मनी देश और मोक्षमूलर साहब में संस्कृत विद्या का कितना पाण्डित्य है। (सत्यार्थ प्रकाश एकादश समुल्लास, पृ० 276) वस्तुतः पश्चिमी ज्ञान की ओर अंधभक्ति यहां तक की संस्कृत व वैदिक ज्ञान के विषय में भी उन्हीं को प्रमाण मानने की गलत प्रवृत्ति पर रोक लगाने के लिए दयानन्द को ये सब स्पष्ट बातें लिखनी पड़ी थीं।

सरल संस्कृत

दयानन्द का मत था कि प्रयोग में अत्यन्त सरल संस्कृत आनी चाहिए। संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित होते हुए भी जन-सामान्य तक अपने विचार पहुंचाने के लिए वे स्वयं अत्यन्त सरल संस्कृत का प्रयोग किया करते थे। यह उल्लेखनीय है कि सन् 1872 से पहले वे संस्कृत में ही भाषण किया करते थे। पर उनकी संस्कृत समझने में किसी को कठिनाई नहीं होती थी।

सन् 1872 में कलकत्ता में श्री केशव चन्द्र सेन ने अपने आवास पर स्वामी जी का व्याख्यान कराना निश्चित किया। अंग्रेजी और बंगला में विज्ञापन बांटे गये। नियत समय पर सहस्रों नर-नारी एकत्रित हो गये। उस समय कलकत्ते के प्रायः सभी गण्यमान्य सज्जन वहां उपस्थित थे। यद्यपि व्याख्यान संस्कृत भाषा में था परन्तु दयानन्द की कथन शैली इतनी सरल थी कि उनका कथन सर्वसाधारण की समझ में आ जाता था।

सन् 1874 में भड़ौंच में वकील जेठालाल जी ने दयानन्द से कहा—आपकी संस्कृत अति सुगम होती है। पण्डितों जैसी जटिल भाषा मैंने आपसे नहीं सुनी। दूसरे, जब आप पण्डितों से शास्त्रार्थ करते हैं तब भी उनका मुख आप केवल युक्तियों और प्रमाणों से ही बन्द करते हैं। पण्डित लोग तो एक-एक शब्द पर ही सारा सारा दिन बिता देते हैं। वैसा आप भी क्यों नहीं करते? दयानन्द ने उत्तर दिया—मैं सुगम संस्कृत इसलिए बोलता हूं कि सुनने वालों को समझने में सुगमता हो। मेरा उद्देश्य जनता को समझाना है, न कि अपना पाण्डित्य छांटना, परन्तु यह भी निश्चय रखिए कि सुगम भाषा बोलने की रीति किसी भाषा के अल्पज्ञान से नहीं प्राप्त हुआ करती। सच तो यह है कि भाषा पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लेने पर ही व्यक्ति सरल भाषा बोल सकता है।

अहमदाबाद में तो एक शास्त्री ने यहां तक कह दिया—महात्मा जी, केवल भवति, वदति मात्र से काम न चलेगा। आज आपको दक्षिणी पण्डितों से पाला पड़ा है। कोई शास्त्रीय पाण्डित्य दिखाना होगा। प्रतिपक्षियों की प्रबल प्रेरणा पर अपनी प्रकृति के प्रतिकूल होते हुए भी दयानन्द ने अप्रसिद्ध शब्द-पूर्ण समास-बहुल व अनेकार्थ-बोधक ऐसी जटिल संस्कृत बोलनी आरम्भ की कि प्रतिवादी देखते रह गये। वे दयानन्द की धारा-प्रवाह संस्कृत के वाक्यों को समझ ही न सके। इस प्रकार स्पष्ट है कि कठिन संस्कृत बोल सकने पर भी दयानन्द सरल संस्कृत का ही व्यवहार जनसामान्य के लिए आवश्यक समझते थे।

15 दिसम्बर 1873 को दयानन्द कलकत्ता गए। उनकी संस्कृत के सम्बन्ध में 'पताका' पत्रिका के सम्पादक ने लिखा था—'हमने जब पहले पहल स्वामी जी की वक्तृता सुनी तो हमने एक नवीन बात देखी कि संस्कृत भाषा में ऐसी सरल और मधुर वक्तृता हो सकती है। वह ऐसी सरलतम संस्कृत में व्याख्यान देने लगे कि संस्कृत से जो महामूर्ख है वह भी उनके व्याख्यान को समझने लगा। इसी प्रकार 'धर्मतत्व' ने मार्च के अंक में 'दयानन्द सरस्वती' शीर्षक देकर इस प्रकार लिखा था—यह एक दिग्गज पण्डित हैं। यह हिन्दू शास्त्र विशारद हैं। संस्कृत भाषा इनके आयत्ताधीन है। विशेषकर इनकी संस्कृत भाषा इतनी प्राञ्जल, श्रुतिमधुर और सरल है कि संस्कृत से अनभिज्ञ पुरुष भी उसे अनायास बहुत कुछ समझ सकते हैं।'

दयानन्द ने 20 अगस्त 1876 को वेदभाष्य करना आरम्भ किया। तब उनके एक विज्ञापन से भी यह प्रकट होता है कि वे सरल भाषा के पक्ष में थे। उस विज्ञापन में उन्होंने लिखा—'यह भाष्य संस्कृत और आर्यभाषा जो कि काशी प्रयाग आदि मध्यदेश की है, इन दोनों भाषाओं में बनाया जाता है। इसमें संस्कृत भाषा भी सुगम रीति की लिखी जाती है और वैसी आर्यभाषा भी सुगम लिखी जाती है। संस्कृत ऐसी सरल है कि जिसको साधारण संस्कृत को पढ़ने वाला भी वेदों का अर्थ समझ ले। तथा भाषा को पढ़ने वाला भी सहज में समझ लेगा। इससे दयानन्द का सरल भाषा रखने का उद्देश्य और अधिक प्रकट हो जाता है।

स्वामी जी ने अपने परमशिष्य श्यामजी कृष्ण वर्मा को संस्कृत में एक पत्र लिखा। श्याम जी कृष्ण वर्मा ने वह चिट्ठी प्रो० मोनियार विलियम्स को दिखाई जिसकी सरल, सुबोध और ललित संस्कृत को देखकर वह इतने मोहित हुए कि उन्होंने उसका अंग्रेजी अनुवाद 'एथिनियम' नाम के पत्र के 23 अक्तूबर सन् 1880 के अंक में प्रकाशित कराया और उस चिट्ठी को आदर्श मानते हुए लिखा कि संस्कृत भाषा अभी तक आर्यावर्त के पत्र-व्यवहार और दैनिक बोलचाल की भाषा है। आर्यावर्त भर के शिक्षित मनुष्यों के बीच यही भाषा विचार-विनिमय का माध्यम है। आर्यावर्त में लगभग दो सौ भाषाएं बोली जाती हैं। यदि यह संस्कृत का माध्यम न होता तो एक प्रान्त के मनुष्य से दूसरे प्रान्त के लोगों को बातचीत करने में अत्यन्त कठिनता होती। ऐसी दशा में जो लोग यह कहते हैं कि संस्कृत भाषा अप्रयुक्त और अवनत दशा में है, वह भूल करते हैं।

महर्षि दयानन्द के संस्कृत सम्बन्धी विचारों को जानने के बाद हम यह कह सकते हैं कि हमें, विशेषतः उनके अनुयाईयों को, राष्ट्र को संस्कृत भाषा के प्रचार और प्रसार को अपना एक मुख्य कार्य समझना चाहिए। आर्य-समाज को इसके लिए अनेक रचनात्मक आन्दोलन चलाने होंगे। इस समय देश में जितने भी संस्कृत के उच्च उपाधि प्राप्त नवयुवक और नवयुवतियां हैं, उनके लिए कार्य की एक सशक्त योजना बनानी होगी। साथ ही भारत सरकार की नयी शिक्षा नीति में संस्कृत को स्थान दिलाने के लिए हमें कुछ रचनात्मक आन्दोलन भी चलाने होंगे। बोध पर्व मनाना तभी सार्थक होगा जब हम महर्षि दयानन्द की भावनाओं के अनुरूप संस्कृत के प्रति अपने को समर्पित कर दें।

पता—7/2 रूपनगर, दिल्ली 110007

डी ए वी स्कूल अजमेर

दि० 10 फरवरी 88 ई० को शताब्दी शुभारम्भ समारोह का प्रारम्भ प्रातः काल यज्ञ एवं ध्वजारोहण से प्रारम्भ हुआ। इस अवसर पर आर्य जगत के सुप्रसिद्ध संन्यासी एवं परोपकारिणी सभा के प्रधान स्वामी ओमनन्द सरस्वती, आर्य समाज आगरा के प्रधान श्री भोजदत्त शर्मा, आर्य समाज अजमेर के प्रधान श्री दत्तात्रेय आर्य दयानन्द कालेज अजमेर के भू० पू० प्राचार्य तथा आर्य समाज शिक्षा सभा के मन्त्री श्री कृष्णराव वाक्ले एवं आर्य समाज के अन्य पदाधिकारीगण उपस्थित थे। राजस्थान के कृषि, स्वास्थ्य एवं आबकारी मन्त्री श्री गोविन्द सिंह गुर्जर की अध्यक्षता, श्री जगत प्रसाद जी रावत भू० पू० गृह मन्त्री [उ० प्र०] के मुख्य आतिथ्य तथा राजस्थान विधान सभा के उपाध्यक्ष श्री किशन मोटवानी के विशिष्ट आतिथ्य में विशेष समारोह हुआ। प्रधानाचार्य श्री रासा सिंह जी ने विद्यालय का संक्षिप्त परिचय, इतिहास प्रस्तुत किया।

मन्त्री आर्य समाज, अजमेर

के आर एम डी ए वी कालेज नकोदर की उपलब्धियां

शैक्षणिक वर्ष 1987 में कालेज के परीक्षा परिणामों का पास प्रतिशत पंजाब बोर्ड तथा गु. ना. देव वि. वि अमृतसर के पास प्रतिशत से अधिक रहा। बी ए द्वितीय वर्ष में विश्व विद्यालय में छठा, सातवां तथा आठवां स्थान प्राप्त बी ए तृतीय वर्ष में वि वि में दूसरा, तीसरा, नौवां, तथा ग्यारहवां स्थान। सांस्कृतिक अन्तर कालेज युवक समारोह (लड़कियां) में कालेज के विद्यार्थियों ने समूह शब्द गायन तथा गजल-गायन में द्वितीय स्थान प्राप्त किया अन्तर कालेज युवक समारोह (लड़के) में कविता पाठ प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। वि वि के संयुक्त युवक समारोह में समूह शब्द गायन प्रथम स्थान प्राप्त किया। संगीत प्रतियोगिता में चल विजयोपहार तथा भजन। शब्द गायन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। अन्तर कालेज भाषण प्रतियोगिता में प्रथम पारितोषिक प्राप्त। राष्ट्रीय और साम्प्रदायिक एकता पर भाषण प्रतियोगिता में कालेज ने प्रथम पारितोषिक प्राप्त किया। खेल खिलाड़ी स्पर्द्धाएं गु ना दे वि वि आयोजित सभी अन्तर कालेज क्रीडा समारोहों के सभी खेलों में हमारे विद्यार्थियों द्वारा योगदान। विश्व विद्यालय की वालीबाल टीम में दो तथा हाकी टीम व भारोत्तोलन टीम में एक एक छात्र नियुक्त। वि वि हाकी टीम टूर्नामेन्ट में सम्पन्न उसमें हमारा द्वितीय स्थान।

डी-आर गुप्ता (प्राचार्य)

पत्रों के दर्पण में

विश्वास जीतना जरूरी

केन्द्रीय सरकार में सिखों का विश्वास नहीं रहा, जब तक सिखों का विश्वास नहीं जीता जाता, तब तक पंजाब मे शान्ति नहीं लौटेगी, सिखों का विश्वास जीतने के लिए जरूरी हैं कि सरकार 1984 के दंगे के दोषियों-आरोपियों को दण्डित करे जोधपुर के बंदियों को रिहा करे, भगोड़े फौजियों को बहाल करे, आतंकवाद के दोषियों आरोपियो को आम-माफी दे काले-कानून वापस ले, आदि ये बातें अनेक सिखों द्वारा प्रतिदिन कही जा रही हैं। बेशक समस्या की जड़ में विश्वास का प्रश्न हैं और उसकी महत्वपूर्ण भूमिका भी है, लेकिन यह भी समझना चाहिए कि अविश्वास एकतरफा नहीं है। कई कारणो से सरकार को भी अविश्वास है, और गैर सिखो को भी है। भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या करना, गत 8-9 वर्षों से हत्या लूटमार, हिंसा, धमकी, आतंक का तांडव जो पंजाब में चल रहा है। इस पूरे दौर में सिखो की जब और जैसी प्रतिक्रिया या प्रतिक्रिया हीनता रही, उसने सारे सिख-समाज और मानस के प्रति देश की जनता में शक पैदा किए, बढ़ाए। यह स्थिति बदलने की जरूरत है, और बदलाव लाने का काम स्वयं सिखों का है। सरकारी रवैया अगर कहीं गलत रहा है, तो यह बात सिखो के रवैये में भी मौजूद है। सिख, 1984 के दंगा पीडितो की बात करते हैं, लेकिन आतंकवाद पीडितो की समस्या को कभी नहीं, उठाते। यही बात तब भी उजागर होती है जब सिख यह तो चाहते हैं कि 1984 के दंगों के दोषियो को सरकार दण्डित करे, लेकिन यह नहीं चाहते कि आतंकवाद के दोषियों को दण्ड मिले, वे आतंकवाद के दोषियो के लिए आम माफी चाहते है। क्यो भला ? दोनो प्रकार के अपराधियों के प्रति एक समान मापदण्ड क्यो नहीं ? ऐसे मे विश्वास कैसे पैदा हो ?

आतंकवादियों के हाथों कई देशभक्त सिख भी मारे गए हैं, निर्दोषो की रक्षा के स्थान पर हत्या हो रही है, यह काम वे लोग कर करा रहे हैं जिनके हाथों में सिखी निशान, निशान साहिब है, इस से सारा सिख समाज बदनाम हुआ है और हो रहा है। इन तथ्यो के बावजूद, अनेक प्रार्थनाओ के बावजूद सिखों की धर्म-पीठ श्री अकाल तख्त ने लगातार इन कार्यों को फतवे के माध्यम से सिखी और सिखों से शत्रुता करार देने से परहेज सिद्ध किया है। इस स्थिति ने सिखों की वास्तविक समस्याओं व चिन्ताओ तक को समझने से गैर-सिखों को दूर कर रखा है। यह स्थिति बदली जानी चाहिए। इसे भी सिख ही बदल सकते हैं।

—कृष्ण गोपाल साहनी, दिल्ली।

बुद्धिजीवी-सम्मेलन आवश्यक

डा० प्रशान्तकुमार वेदालंकार ने "आर्यसमाज की भावी रूपरेखा" विषय पर अपने विचार 'आर्य जगत्", इत्यादि सामाजिक पत्रों में प्रकाशित कर आर्य जनता का ध्यान इस दिशा में आकृष्ट किया है। उनके मन्तव्यानुसार इस सम्मेलन में विचारणीय प्रमुख विषय ये हैं।—आर्य समाज से सम्बद्ध शिक्षा संस्थाओं का क्या स्वरूप हो ? आर्यसमाज की राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान में क्या भूमिका हो ? और —आर्य समाज का संगठन किस प्रकार से अधिक सक्रिय हो ?

आर्यसमाज के सम्मुख अपने कार्यक्रम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उक्त तीन बातें ही नहीं, अपितु अनेक बातें विचारणीय हैं। वस्तुत भारत के स्वाधीन राष्ट्र के रूप में उदित होने के अनन्तर आर्य समाज को अपने कार्यकलापों और दिनचर्या में आवश्यकतानुरूप परिवर्तन और परिवर्धन आरम्भ में ही कर लेना चाहिए था, और उसकी प्रगति की समीक्षा भी समय-समय पर की जानी चाहिए थी। परन्तु ऐसा कुछ नहीं किया गया। फलत आर्य समाज की सभाओं में यत्किंचित् वृद्धि होने तथा कदाचित् उसके द्वारा चलाये जा रहे शिक्षा संस्थाओं का विस्तार होने पर भी आर्य समाज का प्रभाव पूरे राष्ट्र के नागरिकों के जीवन में वैसा नहीं हो सका, जैसा कि होना चाहिए था। प्रत्युत यह भी देखने में आता है कि अनेक लोग आर्यसमाज के नाम और कार्यों से सर्वथा अपरिचित हैं। अभिप्राय यह है कि आर्यसमाज के कार्यक्रमों को लोकोपयोगी, सर्वजनग्राह्य और व्यापक बनाने की दिशा में अभी बहुत कुछ किया जाना है।

अब भी समय है कि जिस उद्देश्य को लेकर आर्य समाज की स्थापना की गई थी, उस पर गम्भीरता से विचार किया जाये। इसी प्रकार यह भी एक विचारणीय बिन्दु हो सकता है कि कौन सी ऐसी राष्ट्रीय समस्यायें या त्रुटियां हैं, जिनका समाधान या निराकरण सरकार या राजनीतिक दल नहीं कर सकते परन्तु आर्यसमाज कर सकता है। आवश्यकता है आर्य समाज के सुसगठित होने का। अत: आर्य समाज की प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं, सार्वदेशिक सभा तथा परोपकारिणी सभा के मध्य-मान्य अधिकारियों तथा सदस्यों का पूरा सहयोग लेते हुए एक बुद्धिजीवी सम्मेलन आयोजित किया जाना समय की मांग है। इस दिशा में डॉ प्रशान्त वेदालंकार का विचार और प्रयत्न सर्वथा प्रशंसनीय और सकल आर्यों के द्वारा समर्थनीय है। यदि इस प्रकार के सम्मेलन से सुप्त समाज के भीतर कुछ जागरूकता आ सकती है, और नवीन उत्साही नेतृत्व इस संगठन को मिल सकता है तो वह सर्वहितकारी कार्य होगा अत आर्य सभा, आर्य वीर दल, आर्य कुमार सभा, तथा गुरुकुल एवम् आर्य विद्यालय —ये सभी आर्य समाज की शाखा प्रशाखायें अपने अपने योग्य प्रतिनिधि इस सम्मेलन में भेजकर उसे सफल बनाने का प्रयत्न करें तो यह एक शुभ और शक्तिवर्धक कार्य होगा। सम्मेलन में अन्य भी उपयोगी और आवश्यक विषयों पर विचार-विमर्श किया जाना चाहिए। कुछ भी हो, इस प्रकार का सम्मेलन बड़े-बड़े उत्सवों की अपेक्षा अधिक लाभदायक सिद्ध होगा।

—डॉ० जयदत्त उप्रेती शास्त्री, मन्त्री, आर्य समाज, अल्मोड़ा।

आर्यसमाज और रामायण

जब से दूरदर्शन पर रामायण धारावाहिक दिखलाया जा रहा है तबसे आर्यसमाजी एक विचित्र धर्म संकट में फंस गये हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह धारावाहिक अत्यन्त लोकप्रिय है। इसे न केवल हिन्दू बल्कि अन्य सम्प्रदायों के लोग भी रुचि से देखते हैं। वैसे तो भारतवर्ष में रामलीला किसी रूप में भी दिखाई जाये तो लोग उसमे रुचि लेंगे ही। फिर जब यह अत्यन्त नाटकीय और फिल्मी अंदाज में दिखाई जा रही है तो इसके लोकप्रिय होने में कोई सन्देह नहीं रह जाता। किन्तु आर्यसमाज के लिए यह एक बहुत बड़ी चुनौती है। आर्य समाज हर तरह के अन्धविश्वास, पाखण्ड, मायाजाल, चमत्कारवाद के विरुद्ध है, और इस रामायण के अनेक दृश्यों का बुद्धि और तर्क से कोई वास्ता नहीं अनेक। दृश्य न केवल अविश्वासनीय बल्कि हास्यास्पद भी हैं।

ऐसे में आर्य समाज का यह कर्त्तव्य है कि वह सरकार को ठीक रास्ते पर आने के लिए विकास कर उसका मार्ग दर्शन करे। सुना जाता है कि महाभारत का धारावाहिक भी बन रहा है। हमें चाहिए कि समय रहते हम सरकार से अनुरोध करें कि उसे बुद्धि और तर्क—संगत बनाया जाय। रामायण धारावाहिक का दुष्प्रभाव सबसे अधिक हमारे साप्ताहिक सत्संगों पर पड़ा है। आम जनता जिसमें बहुत सारे आर्यसमाजी भी शामिल हैं रामायण को किसी भी हालत में नहीं छोड़ना चाहते। इसीलिए कई समाजो ने सत्संग का समय बदल दिया है ताकि इस कार्यक्रम के शुरू से पहले सत्संग समाप्त हो जाये। दिल्ली की कुछ शिरोमणि आर्यसमाजों ने आर्य समाज के मंच से इस धारावाहिक को दिखाना आरम्भ कर दिया है। यह एक विचारणीय बात है कि आर्य समाज मन्दिर से ऐसे भ्रान्ति पूर्ण, अन्धविश्वास के प्रेरक कार्यक्रम दिखाने से आर्यसमाज के किस सिद्धान्त की पूर्ति होती है और कहां तक स्वामी दयानन्द के पाखण्ड-खण्डिनी पताका फहराने का मिशन पूरा होता है। क्या यह समय नहीं है कि हमारे कर्णधार इस समस्या पर मिल बैठकर विचार करें और सब समाजों का मार्गदर्शन करें ? जो कुछ इस समय हो रहा है उससे यह आभास होता है कि हमारे लिए नीति निर्धारित करने वाली शिरोमणि सभा कोई नहीं है। मैं आशा करता हूं कि हमारे नेता इस पर विचार करेंगे और सर्वसाधारण अपने विचार खुले रूप में प्रकट करेंगे।

—हरप्रकाश आहलुवालिया उप प्रधान आर्य समाज अशोक विहार फेज-1 दिल्ली 1100052

वृष्टि यज्ञ की महत्ता ?

(1)

'आर्य जगत्' के 17-1-88 के अंक मे वृष्टि यज्ञ की महत्ता पर श्री रामचन्द्र दापर के पत्र में उन्होंने जयपुर में आदर्श नगर आर्य समाज में रमेश मुनि वानप्रस्थ द्वारा कराये गये वृष्टि यज्ञ के सम्बन्ध में प्रशंसात्मक विचार व्यक्त किये हैं तथा स्थान2 पर इस प्रकार के यज्ञ कराये जाने का आग्रह किया है। श्री वानप्रस्थी जी ने अपने लेख में लिखा है कि 21 से 27 अगस्त 87 तक जो वृष्टि यज्ञ कराया गया था उसके परिणामस्वरूप मूसलाधार वर्षा होने लगी और पूर्णाहुति के दिन 27 अगस्त को तथा 28 अगस्त को राजस्थान के कई स्थानों में भयंकर बाढ़ आ गई। लेकिन वस्तु स्थिति तो यह है कि राज्य भर में इस बार सब से अधिक भीषण सूखे की स्थिति बनी हुई है। पानी के और चारे के अभाव में पशु धन का सर्वाधिक ह्रास हुआ है और पेयजल की इतनी विकट समस्या बनी हुई है कि कई नगरों-कस्बो में 3 से 5 दिन में एक बार एक या 2 घंटे के लिये पेय-जल वितरित किया जाता। ऐसी स्थिति में उक्त अतिशयोक्ति का कथन कहां तक यथार्थ है—सोचनीय विषय है।

यह ठीक है कि वृष्टि यज्ञ से वर्षा हो सकती है, जैसा कि वैदिक वाङ्मय में उल्लिखित है, पर इसके लिये प्रमाणित प्रयासों की आवश्यकता है। गहन अध्ययन अन्वेषण और अनुसन्धान की आवश्यकता है।

—सत्यदेव आर्य एस बी 161, बापू नगर जयपुर-302015

(2)

आपके सम्मानित पत्र में 'यज्ञों के नाम पर बरबादी क्यों' शीर्षक आचार्य राम शास्त्री के पत्र में व्यक्त विचारों से मैं शत-प्रतिशत सहमत हूं। यज्ञों के नाम पर आज आर्यसमाज में भी अनेक प्रकार के आडम्बर और पाखण्ड प्रचलित हो गये हैं। यद्यपि मनुस्मृति और गीता में यज्ञों को वर्षा का कारण बताया गया है, किन्तु आज आर्य समाज में कितने लोग हैं जो 'यज्ञाद् भवति पर्जन्यो' की उक्ति को स्वयं की साधना के द्वारा चरितार्थ करने की सामर्थ्य रखते हैं। 17 जनवरी के आर्य जगत् में वृष्टि यज्ञ की महत्ता शीर्षक पत्र में लिखा गया है। कि आर्य समाज जयपुर में गत अगस्त में रमेश मुनि वानप्रस्थ ने वृष्टि यज्ञ करवाया और उससे इतनी वर्षा हुई कि राज्य में कई जगह बाढ़ आ गई। यह कौन नहीं जानता कि राजस्थान तो कई वर्षों से लगातार अनावृष्टि का शिकार है। जिन सज्जन ने यह यज्ञ कराया उनकी यज्ञ विषयक जानकारी और योग्यता कितनी है, यह भी हमें पता है। इसका यह अर्थ नहीं कि यज्ञ और उसके परिणाम स्वरूप होने वाली वर्षा पर शोध के सभी पहलू हमारे चिंतन की परिसीमा में नहीं आते। किन्तु हमें आडम्बरों से भी सावधान रहना होगा।—[illegible], चंडीगढ़।

आर्यों का अतीत वर्तमान....

(पृष्ठ 4 का शेष)

प्राचीन ज्ञानकी झांकी

ऋग्वेद में उड़ने वाले रथों और नौकाओं का वर्णन है। जिसका उदाहरण हमें अभिज्ञान शाकुन्तलम् मे इन्द्र की सहायतार्थ दुष्यन्त की स्वग यात्रा में मिलता है और सामरिक अस्त्रों का भयावह प्रदर्शन हैं महाभारत युद्ध मे, जो आधुनिक अणु प्रक्षेपास्त्र समान शक्ति शाली थे। वैशेषिक-दर्शन प्रणेता महर्षि कणाद, अणु सिद्धान्त के प्रथम वैज्ञानिक हैं। तथा चिकित्सा शास्त्र के आविष्कार का श्रेय भी भारत ही को है। महर्षि धनवन्तरि, चरक और सुश्रुत जैसे चिकित्सा विज्ञानी और शल्य-क्रिया व पशु-चिकित्सा विशेषज्ञों ने भी भारत की गोदी को ही सुशोभित किया जिन्होंने कटे पाव के स्थान पर धातु का कृत्रिम पैर लगाया था। इतना ही नहीं। वराह-मिहिर, आर्यभट और भास्कराचार्य ने जो हमारे खगोल शास्त्र के देदीप्यमान नक्षत्र हैं—सर्वप्रथम बताया कि पृथ्वी गोल है और अपनी धुरी पर घूमती है। तथा बीज-गणित, ज्योतिष, चन्द्र सूर्य ग्रहण और पृथ्वी की आकर्षण शक्ति आदि की व्याख्या की। लीलावती जैसी गणित रत्नो से मा-भारती-मन्दिर को समृद्ध किया। इसके साथ ही अ कों पर शून्य लगाकर लिखने की विधि, दशमलव की पद्धति और रसायन शास्त्र का चमत्कार भी भारतीय मनीषा की ही देन हैं। एव यह विज्ञान धारा सर जगदीश चन्द्र बसु, डा० भाभा, डा० साहा, डा० विक्रम सारा भाई, डा० सेठना, डा० खुराणा और सहस्रो अन्य सरस्वती पुत्रों के रूप में आज भी प्रवाहित है।

कहने का तात्पर्य यह कि विदेशी विद्वान् विज्ञान के जिस चरण पर आज खडे हैं, भारत वहां शताब्दियो पहले स्थित था। इतनी समृद्ध परम्परा का स्वामी भारतीय, यदि अपने स्वरूप और योग्यता को भूल विदेशी चकाचौंक पर मर मिटे तो यह उनका दुर्भाग्य नहीं तो क्या है? पहले कहा है कि हमारी गिरावट का कारण हमारे इतिहास की तोड मरोड और गलत व्याख्या है। आर्यों को एक 'जाति' माना गया जबकि सही दृष्टिकोण यह है कि—'आर्य' कोई जाति विशेष नही प्रत्युत भाव-वाचक सज्ञा या गुणवाचक शब्द है जिसका अथ है—श्रेष्ठ, गुण-सम्पन्न मानव समुदाय और समुदाय मे कोई भी हो सकता है। जरूरी नही कि एक ही जाति के लोग हो। वेद इसी अथ का प्रकाशक है। देखिए वहां इस शब्द की कितनी सुन्दर व्याख्या है—

—विजानीहि आर्यान् ये च दस्यव। अर्थात् आर्य नाम विद्वानो का है और अन्यो का दस्यु।

आर्या व्रता विसृजतोऽधिक्षमी।—आर्य वह—जो व्रतो का पालन करे।

आर्या: ईश्वर पुत्रा।—यानी ईश्वरीय नियम-पालनकर्ता को आर्य कहते है।

आर्या ज्योतिर् अग्रे।—अर्थात् जो हवन की ज्योति के समान सदैव ऊपर की ओर उठे और उन्नति करे—वह आय है।

अरविन्दघोष ने इन परिभाषाओ को अपने शब्दो में ऐसे पिरोया—मानव प्रगति मे बाधा डालने वाली, अपने अन्दर और बाहर की सभी बुराईयो से सघष करता हुआ जो उन पर विजय पाता है—वह आर्य हैं।

परन्तु ऋषिवर दयानन्द ने बात और भी स्पष्ट कर दी "जो श्रेष्ठ स्वभाव, धर्मात्मा, परोपकारी, सत्यविद्या आदि गुण युक्त और आर्यावत देश में सब दिन से रहने वाले हैं—उनको आर्य कहते हैं।

ऋषि की तपस्या

महर्षि दयानन्द ने देखा कि जब अपना ही देश अज्ञान निद्रा मे डूबा है तो बाहर वालो को जगाने जाना कोई बुद्धिमत्ता नही। इसलिए उन्होने विदेशो से मुह मोड अपने प्यारे देश को ही अपना कायक्षेत्र चुना और वेद का सन्देश घर-घर पहुचाने हेतु, अभियान शुरू किया। राह मे अब चाहे चिल-चिलाता मरुस्थल हो या बीहड वन-प्रसार, दुर्गम पहाड हो या अलघ्य नदी जाल, उन्हे कोई न रोक सका। यहा तक कि एक बार क्षिप्रघाटा अलकनन्दा के हिम प्रवाह की चुनौती स्वीकारते, लील लेने वाली उसकी धवल तरगो मे कूद पडे। इस कठोर साधना और अनुपम सहिष्णुता से उनमें दिव्य तेज उपजा। अब वे जहां जाते, ज्ञान उजाला फैल जाता। इस भारत-गुलामी का जो राहु वेद मार्तण्ड को निगल गया था उसका गला घोट कर देव दयानन्द ने एक बार फिर विश्व में वेदों का वचस्व स्थापित कर दिया।

हम सब जानते हैं कि सभ्यता शिशु ने भारत पलने मे ही आखे खोली और वेद जननी की दुग्ध धाराए पी, यहीं सपुष्ट हुआ। इसी के साथ यहा सस्कृति की पौ फूटी जिसकी दिव्य आभा से विश्व प्रभासित हो उठा और भारत-जगत् गुरु बन 'ऋषि ऋण' चुकाता रहा। जब तक यह व्यवस्था रही, विश्व शान्ति धाम बना रहा। इसके बदलते ही, विश्व विध्वस के कगार पर खडा हो गया।

आज यदि विश्व अशान्त है तो इस लिए कि भारत स्वय अशान्त है क्योकि यह विश्व का मस्तिष्क है। और यदि मस्तिष्क ही अशान्त हो तो मानव शान्त कैसे रह सकता है? अत यदि भारत आज शान्त हो जाए तो दुनिया का युद्ध ज्वर स्वय शान्त हो सकता है। और उसका एक ही उपाय है कि भारतीय इस 'घृणित दास वृत्ति विष' को त्याग 'वेद स्वाभिमान सुधा' का पान करे और अपने को पहचानता हुआ, अपनी परम्पराओ का मान करना और कराना सीख ले, तो अपनी खोई शान से यह 'सोने की चिडिया' भारत को विश्व-नीड' मे उचित स्थान दिला सकता है।

ऐसा सम्भव है—यदि हम 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की सजीवनी स्वय लें और दूसरो को दें।

पता—आर्यसमाज तलवाड़ा (पजाब)

डी ए वी की गतिविधियां

डी ए वी स्कूल गाजियाबाद

डी ए वी पब्लिक स्कूल गाजियाबाद के भवन निर्माण का समारोह को 8-2 88 सपन हुआ। इस अवसर पर प्रो वेदव्यास श्री दरबारी लाल, श्री रामनाथ सहगल श्री जी पी चोपडा श्री एम एल खेखडी, तथा विद्यालय की स्थानीय समिति के अध्यक्ष, श्री बी एस मोहन, प्रो० रत्न सिंह, देहली के डी ए वी पब्लिक स्कूलो के प्रधानाचार्य तथा श्री बी बी गक्खड़ मच पर विराजमान थे। राजेन्द्र नगर गाजियाबाद मे स्थित 10 एकड के विशाल प्रांगण मे बृहद् यज्ञ सम्पन्न हुआ जिसकी मुख्य—यजमाना धम परायणा श्रीमती उमा चावला धर्मपत्नी श्री ए के चावला प्राचार्य डी ए वी पब्लिक स्कूल थीं। हवन के पश्चात श्री दरबारी लाल द्वारा पहली ई ट रखकर भवन का निर्माण का कार्य आरम्भ हुआ। ओमध्वजों से सुसज्जित सभामण्डप मे करतल ध्वनि के बीच श्री बाबू जी ने घोषणा की कि उत्तर प्रदेश का यह सबसे बडा आवासीय विद्यालय होगा समारोह के प्रमुख वक्ता श्री रामनाथ सहगल एव श्री बी एस मोहन ने इस अवसर पर विद्यालय की छात्राओ तथा अध्यापिकाओ द्वारा प्रस्तुत कार्य क्रम की प्रशसा करते हुए कहा कि विद्यालय शिक्षा के साथ साथ नैतिक शिक्षा के माध्यम से छात्र छात्राओं के जीवन का निर्माण करता है। इस अवसर पर श्री बी एस मोहन जी ने 1001/=एव श्री हुक्म चन्द धराई योत्रा ने 501 रु० शुभदान देते हुए अपना सभी प्रकार का सहयोग देने का वचन दिया। अन्त में आदरणीय प्रो० वेदव्यास जी ने अपने आशीवचनो के साथ विद्यालय की उन्नति की कामना करते हुए अपने करकमलो से बच्चो को पुरस्कार वितरण किया।

प्राचाय

डी ए वी पब्लिक स्कूल अमृतसर

सी बी एस ई से मान्यता प्राप्त यह स्कूल नवीन शिक्षा प्रणाली के साथ साथ विद्यार्थियो में अपनी सभ्यता व सस्कृति की गौरवशाली परपरा व आधुनिक जीवन-मूल्यो के प्रति जागरूकता लाने को कटिबद्ध है। परीक्षाओं का भय हटाने के लिए हर सप्ताह अतिरिक्त परीक्षा की जाती हैं। 7000 से भी अधिक पुस्तकों से सम्पन्न पुस्तकालय मे करीब 30 पत्र-पत्रिकाए नियमित रूप से मगाई जाती हैं। सुयोग्य प्रशिक्षण द्वारा छात्रो को उनकी रुचि व योग्यता के अनुसार हस्तकला-प्रशिक्षण, नृत्य-सगीत, सितार वादन, चित्रकला, व्यवसायिक चित्रकला, योगाभ्यास, जूडो, टकण कला, कम्प्यूटर आदि मे प्रशिक्षण दिया जाता है।

खेल कूद के मैदान मे विद्यालय की टीमें क्रिकेट, हाकी, बास्केट बाल आदि में प्रान्तीय व राष्ट्रीय स्तर पर अपनी योग्यता का प्रमाण दे चुकी हैं। इस वर्ष वार्षिकोत्सव मे 2½ घटे का नृत्य-सगीत व अभिनय सबको मन्त्रमुग्ध कर दिया। 1500 छात्रो ने नि शब्द भावाभिनय की क्रमबद्ध प्रस्तुतियो द्वारा प्राचीन सभ्यता के विकास की कहानी को मूर्तिमान् किया गया। इसका श्रेय विद्यालय की कमठ प्राचाय व शिक्षक वग को है जो निरन्तर विद्यार्थियो की प्रगति व विकास के सपने सजोए रहते हैं।

जलालाबाद मे दो भवनो का उदघाटन

ज्ञानी गुरबख्श सिंह डी ए वी कालेज जलालाबाद के नए भवन का औपचारिक उदघाटन श्री दरबारी लाल ने 5 फरवरी को किया। इसके पूर्व कालेज के प्रागण मे श्री गुरु ग्रन्थ साहब के अखण्ड पाठ का भोग, शब्द गायन, हवन यज्ञ और वेद मन्त्रो का उच्चारण धार्मिक विधि के अनुसार किया गया। सन्त ज्ञानी गुरबख्श सिंह जी, की तीसरी बरसी के अवसर पर विभिन्न वक्ताओं ने भाव भीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री दरबारी लाल ने कहा कि जलालाबाद का यह कालेज पजाब मे साम्प्रदायिक सद्भावना का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करता है। श्री रामनाथ सहगल ने जलालाबाद को दानी सज्जनो का नगर बताते हुए उनके द्वारा सूखा राहत के लिए 50 क्विन्टल अनाज कपडे और धन आदि भेजने के लिए भूरि भूरि सराहना की। इसके बाद कालेज का भवन निर्माण के लिए 93,000 रुपये श्री दरबारी लाल जी को भेंट किये गये। उनमे से 21,000 रुपये श्री अमर लाल नरुला (फाजिलका) 21,000 रु श्री पुष्पेन्द्र मलहोत्रा (गन्ने वाले) ने दिये। यह राशि कालेज के प्राचार्य डा० के सी महेन्द्र को अर्पित कर दी गई।

दोपहर के पश्चात् लाला ईशरदास गुम्बर डी ए वी सेन्टिनरी पब्लिक स्कूल में हुए एक अन्य समारोह में स्कूल के नए भवन का विधि पूर्वक उदघाटन हुआ। स्कूल के प्रबन्धक डा० के सी महेन्द्र ने स्कूल की उन्नति और विकास का वणन करते हुए गुम्बर परिवार को धन्यवाद दिया जिसने स्कूल के लिए भूमि और एक लाख रुपये का दान दिया। अन्य दानी सज्जनो की सूची पढ़ कर सुनाई। जलालाबाद के अन्दर डी ए वी सस्थायो द्वारा किये जाने वाले कार्य की भूरि भूरि प्रशसा की जिन्होने दो वष के अन्दर ही अपने लिए सारे क्षेत्र में ही आदर का स्थान बना लिया है। स्थानीय समिति के अध्यक्ष महन्त करतार सिंह जी ने सभी अतिथियो का धन्यवाद किया। राष्ट्र गायन के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

कुरीति निवारण के लिए विशाल महिला मेला

दिल्ली से दिवराला तक 101 सन्यासियो की पदयात्रा के पश्चात् ग्रामीण महिलाओं के अन्धविश्वासों को मिटाने और उनमे अधिकारियों के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए बधुआ मुक्ति मोर्चा के अध्यक्ष स्वामी अग्नि वेश ने गुणगाव के सिधरावली गांव में 28 फरवरी को महिला मेले का आयोजन किया जिसमे हजारो महिलाओंने भाग लिया सम्मेलन दो दिन चला। इस मेले मे आजाद हिन्द फौज की कैप्टिन लक्ष्मी सहगल, मगत सिंह तथा अन्य क्रान्तिकारियो की सहयोग दुर्गा भाभी और पुलिस की बबरता की शिकार बागपत की माया त्यागी ने भी भाग लिया। दोनो दिन तीन तीन घटे तक महिला पचायत की बैठक भी हुई जिसमे महिलाओं ने ही पचराय से फैसले किये महाराष्ट्र की समग्र महिला अघाड़ी की अध्यक्ष विमल ताई पटेल भी सम्मेलन मे शामिल हुई। फिल्म शो, नाटक, लोकगीत तथा अन्य सास्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

इस सम्मेलन में मुख्य रूप से उन छ मुद्दों पर विचार किया गया जो दिवराला पदयात्रा के समय उठाए गए थे। सास्कृतिक और शैक्षिणक कार्यक्रमों के माध्यम से कुरीतियो और अन्धविश्वास के उन्मूलन का निश्चय किया गया। मुख्य मुद्दा यह था कि लडके के पैदा होने पर खुशी और लडकी के पैदा होने पर गमी क्यों मनाई जाती है। डाक्टरी जाच से गर्भ में लड़की होने का सकेत मिलने पर बड़े पैमाने पर होने वाली भ्रूणहत्या के अनौचित्य पर भी विचार किया गया।

यह सम्मेलन धार्मिक परम्पराओं में आस्था रखने वाले प्रगति शील विचारों के लोगों का ही था। इसमें किसी राजनैतिक पार्टी को शामिल नहीं किया गया।

नेपाल मे विश्व हिन्दू सम्मेलन

नेपाल में 25 से 28 मार्च तक विश्व हिन्दू सम्मेलन का आयोजन किया जा है जिसके सयोजक है विश्व हिन्दु सघ के अध्यक्ष, नेपाल के पूव प्रधान मत्री नागेन्द्र प्रसाद रिजाल। इसमें भाग लेने के लिए 60 देशो को आमन्त्रित किया गया है। नेपाल नरेश महाराजाधिराज वीर विक्रमशाह 25 माच को सम्मेलन का उद्घाटन करेंगे। विभिन्न देशो के करीब 500 प्रतिनिधियो के सम्मेलन मे शामिल होने की स्वीकृति आ चुकी है।

तान्त्रिक चन्द्र स्वामी गिरफ्तार

अपने आपको अमरीका के राष्ट्रपति और ब्रिटेन के प्रधान मत्री का परामर्श दाता बताने वाले, सऊदी अरब के एक पूजीपति के साथ विदेशो की हवाई सैर करने वालो, अनेको मत्रियो और सेठ साहूकारो को अपनी तत्रविधि के चमत्कार से भ्रमित करने वाले चन्द्र स्वामी को धोखाधडी के आरोप मे गिरफ्तार किया गया है। फेरा कानून का उल्लघन करने और इगलैण्ड मे बसे लखूभाई पाठक नामक एक भारतीय व्यापारी से 4 वष पूर्व लिये 1 लाख डालर (लगभग 15 लाख रु०) बार बार मांगने पर भी न लौटाने के अभियोग में उन्हे गिरफ्तार किया गया है उनके सहयोगियो के घरो पर भी छापे मारे गयेहैं।

ऋषि बोधोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज नमेदार गज (नवादा) द्वारा निकटवर्ती कई गांवो मे ऋषि बोधोत्सव का सन्देश प्रभातफेरियों द्वारा युवको के सहयोग से सम्पादित हुआ।

—रवीन्द्र प्रसाद 'निर्मय'

आर्य समाज की ओर से डी ए वी माडल स्कूल मे ऋषिबोध उत्सव बडी धूम धाम से मनाया गया। हवन-यज्ञ ऋषि महिमा के गीत के अतिरिक्त श्री मेघराज प्रधान, श्री दशन कुमार सिंगला उपमन्त्री, श्री अमर नाथ जी कोषाध्यक्ष ने महर्षि दयानन्द के जीवन और उपकरों पर प्रकाश डाला। सभासदो, अध्यापिकाओं और विद्यार्थियों ने उत्सव मे भाग लिया।

—ओम्प्रकाश वानप्रस्थी वठिण्डा

योग प्रशिक्षण शिविर।

डी ए वी कालेज करनाल में दिनांक 17 2-88 से 26-2-88 तक दस दिन के लिए 175 युवको का विशेष योग एवं योगासनों से सम्बन्धित आत्मिक, मानसिक एव शारीरिक प्रशिक्षण देने का कायक्रम चला आर्य युवक दल-नवयुवको को शिक्षित एव दीक्षित करते रहे। नवयुवकों को आर्य समाज की ओर आकर्षित करना सबसे महत्वपूण ठोस रचनात्मक कार्य है। —प्रो० वेदसुमन वेदालकार, कार्यकर्ता अध्यक्ष

महाव्याहृति मंत्रों का

(पृष्ठ 2 का शेष)

तीन भेद हैं—सत, रज और तम। सफेद, लाल और काला वण की किरणें।

इन सब बातो का आधार ये चारों महाव्याहृतिया ही हैं। भू तमोगुण है भुव रजो गुण है, स्व सत्व गुण है। भू सत् है, भुव चित् है और स्व आनन्द है। आनन्द सत्व गुण है। परमात्मा तो गुणातीत है। पर सत्व का जो कारण रूप जीव आनद है, प्रभु उससे गुरु है—आनन्दमय हैं। इसी प्रकार भू शब्द का अथ है ऋग्वेद भुव यजुर्वेद और स्व सामवेद वेद का प्रकाशक ऋषि अग्नि है। भुव वेद का प्रकाशक ऋषि वायु है और स्व वेद का प्रकाशक आदित्य है।

ये तीन महाव्याहृतिया मात्रा है—अ इ उ इमी मात्रा के, परिमाण के भेद हैं। चौथी अमात्रा है जो इनके मिश्रण से उत्पन्न होती है वह असख्य अपरिमित असख्य हो जाती है। इन तीन से ही नौ होते हैं और फिर इन्ही के न्यूनाधिक्य मिश्रण से असंख्यात भेद होते हैं। इसीलिए चौथा मन्त्र इन तीनो को मिलाकर पढ़ दिया गया है।

अभी जैनेटिक विज्ञान का विकास हो रहा है। इसमे मूल जीन्स के चार भेद पाए गए हैं जिन्हें गुणसूत्र कहा जाता है जिन्हे अग्रेजी मे ए०डी०सी०पी० कहा जाता है। ए०डी०सी० तो स्वतन्त्र इकाई के रूप मे है और जी० जो है वह मिश्रित है।

इसे ही हम अ इ,उ कहेगे और चौथा रूप है व्यजन। तीन मूल स्वर चौथा व्यजन। सारा शब्द शास्त्र इन्हीं का विस्तार है। इसी प्रकार एक-दो-तीन सख्या है। तीन से नौ तक इसी का बडा रूप है—शेष सख्या इन्हीं का मिश्रण है।

इस प्रकार समस्त सृष्टि का रहस्य जाना व खोजा जा सकता है।

वैदिक शास्त्रो के समझने के लिए ये महाव्याहृतिया बडा महत्व रखती हैं। भू, अग्नि, प्राण ये भू के स्थूल रूप हैं। भू अ का स्थूल रूप है। भुव वायु और अपान। ये भुव के स्थूल रूप हैं और स्व आदित्य और प्राण। ये स्व के स्थूल रूप है। शेष सबको पृथक्-पृथक् मिलाकर जैसे नौ से अनन्त सख्या बनती है। प्रत्येक पदार्थ के तीन मूल सूक्ष्म रूप मिलेंगे फिर उनके भी तीन-तीन भेद नौ हो जाएगे और नौ नौ के फिर तीन भेद। सृष्टि को जानने का यही फामूला है।

वेदों के प्रत्येक अक्षर का एक मूल्य है। उन अक्षरो से जिस पदार्थ का जो नाम बनता है वह नाम उस पदार्थ का मूल्य दर्शाता है।

वैदिक वर्णमाला मे कुल 63 अक्षर हैं। इन अक्षरो के पृथक्-पृथक् स्वरूप में मूल्य हैं जिसमे उस पदार्थ का मूल्य जाना जा सकता है। मूल्य से ही नाम से पदाथ का सरा रहस्य खोजा जा सकता है ऐसा हमारा विश्वास है।

यह सारा वैदिक ज्ञान कम्प्यूटर के विज्ञान की तरह है। स्वर, आयोग वाह एव व्यजन इन्हे भी हम क्रमश भू भुव स्व कहते हैं। अ शब्द का अर्थ अग्नि है। उ का वायु है। म् का आदित्य है। स्वर के तीन-तीन भेद हैं—ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत। इससे अग्नि के भेद जाने जाएगे। अ-इ-उ इन्हीं के तीन-तीन भेद हैं—ह्रस्व दीर्घ प्लुत। अ का अथ अग्नि है तो आ का विद्युत और अ उ प्लुत का सौर ऊर्जा अथ होता हैं। इसीलिए शब्द शास्त्र को अपार कहा है। "अनन्त पार किल शब्दशास्त्रम्।" इसीलिए शब्द को ब्रह्म कहा जाता है।

इस रहस्य को न जान कर कालान्तर मे रूढ़ि शब्दो के प्रयोग से ही सारा विज्ञान लुप्त हो गया।

आरम मे वैदिक काल मे जो सस्कृत भाषा थी वह सर्वथा वैज्ञानिक थी। पदार्थ के नाम से ही उसका मिश्रण जाना जा सकता था। आज भी वेद का प्रत्येक शब्द और अक्षर पूण विज्ञानयुक्त हैं। इस विज्ञान को खोज निकालने की आवश्यकता है। यज्ञ के सारे मन्त्र उसके शब्द और मात्राए भी विज्ञान से परिपूर्ण हैं। आवश्यकता है कि हम इन रहस्यो को खोज निकालें। बुद्धिमान जन इन सूक्ष्म सकेतो और विचारों को समझने का यत्न करेंगे। जैसे गणित में प्रत्येक अक का अपना मूल्य है वैसे ही प्रत्येक अक्षर व मात्रा काअपना मूल्य है, अपना अथ है। यदि यह मूल्य ठीक ठीक पता लगा लिया जाए तो वेदों के अभिप्राय को हम कम्प्यूटर की विद्या के समान सरलता से जान सकते है।

जैसे महर्षि दयानन्द ने अ उ म् इन अक्षरों के अर्थ प्रस्तुत किए हैं वैसे ही इन महाव्याहृतियों के मन्त्रों द्वारा भू भुव स्व के अर्थों को स्पष्ट किया गया है। निघण्टु नामक वैदिक शब्द कोश में ऋग्वेद के शब्दो के अधिकाश अर्थ ज्ञात होते हैं।

महर्षि दयानन्द ने 'उपदेश मजरी, मे जो उनके पूना मे दिए प्रवचनो का सग्रह है, वेद को ईश्वरीय ज्ञान करने में यह तर्क भी दिया है कि वेद सरलतम हैं। चूकि विद्या का लोप हो गया है इसीलिए हमें वेद कठिन जान पडते हैं। निरन्तर प्रयत्न से वेदो को जानने की सरलतम विधि भी निकल आएगी।

इस प्रकार इन चार महाव्याहृतियों में अद्भुत विज्ञान छिपा पडा है। ज्ञान विज्ञान के समस्त फार्मूले इन महाव्याहृतियो मे अन्तर्निहित हैं। आघारावाज्यभागाहुति अर्थात् "ओम् अग्नये स्वाहा" इत्यादि जो चार मन्त्र हैं, महाव्याहृतियां उन्हीं की व्याख्या हैं और शेष मन्त्र महा व्याहृति की व्याख्या हैं। इन मन्त्रो के समस्त आदि भौतिक विज्ञान, आधि दैविक विज्ञान व आध्यात्मिक विज्ञान जाना जा सकता है। समस्त शिल्प विद्या इस से सिद्ध की जा सकती है।

पता—अधिष्ठाता अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान, 4-5-753 सुरभि निकुज, वेदमन्दिर, महर्षि दयानन्द मार्ग, हैदराबाद-500027

✠

टंकारा ऋषिबोधोत्सव की झांकियां

यज्ञ की पूर्णाहुति का दृश्य
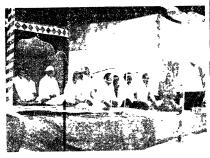
महात्मा आर्य भिक्षु जी प्रवचन करते हुए

ऋषि जन्मस्थान को विश्वमोहक बनाने का स्वप्न संजोने वाले स्व० लाला जगन्नाथ जी की स्मृति मे नल-कूप पर उनके नाम का पत्थर लगाया जा रहा है। साथ मे स्व० लाला जी के सुपुत्र श्री देशबन्धु ट्रस्टी श्री ओंकारनाथ मन्त्री श्री पुरी और श्री सत्यदेव इंजिनियर खडे है।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज नरेला का वार्षिकोत्सव 23, 24 अप्रैल 1988 को उत्साह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस शुभ अवसर पर राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, आर्य समाज सम्मेलन आदि मे साधुओ सन्यासियो तथा राजनेताओ के सम्मलित होने की आशा है।

—मन्त्री

आर्य समाज रामपुरा

आर्य समाज रामपुरा कोटा का 89 वार्षिकोत्सव 16 से 13 2-88 तक बडी धमधाम से मनाया गया। समारोह मे मथुरा से पधारे प्रेम भिक्षु, प्रो० धर्म वीर अजमेर, श्री सतपाल भजनोपदेशक दिल्ली एव श्री शिवानन्द मस्ताना के अलावा अन्य स्थानीय उपदेशको ने भजन एव उपदेश दिये। —मन्त्री।

—कन्या गुरुकुल नरेला का 32 वा वार्षिक महोत्सव दिनाक 12, 13 मार्च 1988 को मनाया जायेगा। इस अवसर पर उच्चकोटि के धार्मिक नेतागण तथा राजनेतागण पधार रहे है। दोनो दिन सायकाल 4 से 6 बजे तक कन्याए योगासन, लाठी, तलवार, मोगरो, धनुषबाण इत्यादि का प्रदर्शन करेगी। नवीन ब्रह्मचारिणियो का प्रवेश प्रथम श्रेणी से आचार्य पर्यन्त प्रारम्भ है।

—वैद्य कर्मवीर आर्य महामन्त्री

आर्य युवक दल हरियाणा

समाचार है कि 22 23, 24 जनवरी 1988 की तिथियो मे आर्य समाज ईन्दरी तथा आर्य युवक दल ईन्दरी क्षेत्र का वार्षिक उत्सव हुआ आर्य युवक दल एव आर्य क्षेत्रीय सभा की महत्वपूर्ण बैठक भी हुई। और शोभायात्रा भी निकाली गई जो कि ईन्दरी क्षेत्र के इतिहास मे दर्शनीय एव अमिट छाप छोडने वाली सिद्ध हुई। चार बजे ईन्दरी की अनाज मण्डी मे श्री ब्र० रामस्वरूप आर्य का योग एव शारीरिक शक्ति प्रदर्शन हुआ। मुख्य वक्ताओ मे डा० गणेश दास श्री सूर्यदेव आर्य, ब्र० रामस्वरूप आर्य व प्रा० वेदमुनि वेदालकार ने ओजस्वी भाषण दिये।

—सूरज गुलाटी प्रधान आर्य युवक दल।

हिलसा आर्य समाज का वार्षिकोत्सव

28, 29 30 एव 31 जनवरी को हिलसा आर्य समाज का वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ जिसमे तपोवन के स्वामी ब्रह्मानन्द जी आचार्य ओम प्रकाश शास्त्री हरयाणा बहन राजबाला आर्य, श्री दयानन्द सत्यार्थी, श्री वीरेन्द्र गाजीपुर, डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी नालन्दा एव श्री प० हरिप्रसाद शास्त्री के प्रवचन हुए

मुसाढी आर्य समाज का वार्षिकोत्सव

मुसाढी आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव बडे धूमधाम से 1, 2, 3 फरवरी 88 को मनाया गया इस अवसर पर वेद सम्मेलन, मजदूर किसान सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन का आयोजन सफल रहा सभा को सम्बोधित करने वालो मे श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी टंकारा वन, बहन राजबाला श्री ओमप्रकाश शास्त्री, दयानन्द सत्यार्थी एव ठाकुर महावीर सिंह पटना का नाम उल्लेखनीय है।

यू० 103/8' लायसेंस ट पोस्ट विदाउट प्रिपेमेंट
रजिस्ट्रेशन न० आर० एन० आई० 39/57
Delhi Postal Regd No D (C) 409
N D -SO ON 33-88 6 मार्च 1988

उदगीर में शहीद स्मृति अर्द्ध शताब्दी समारोह

भारत की स्वतन्त्रता के संघर्ष की कहानी कोई दो-चार वर्षों की कहानी नहीं अपितु पूरे एक शताब्दी का महाकाव्य है।

स्वातन्त्र्य वीरों को प्रेरणा देने वालों में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का नाम और आर्य समाज का काम इतिहास का महत्वपूर्ण अध्याय है। इसी प्रेरणा से उत्तर में जहां लाला लाजपत राय, चन्द्रशेखर आजाद, सरदार भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल जैसे अनेक वीरों ने स्वातन्त्र्य-यज्ञ में अपनी आहुति दी वहां दक्षिण में उदगीर के हुतात्मा भाई श्यामलाल जी ने, गुंजोठी के श्री वेद प्रकाश ने तथा बसवकल्याण के श्री वेद प्रकाश ने भी अन्यान्य वीरों की तरह स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर अपने प्राणों की बाजी लगाकर इतिहास बनाया है।

हैदराबाद मुक्ति संग्राम का मुख्य अध्याय हैदराबाद आर्य सत्याग्रह है — न केवल यह मुख्य अध्याय ही है बल्कि मूल प्रेरणा व ठोस कार्य का उदाहरण भी है, हैदराबाद आर्य सत्याग्रह को पूरे पचास वर्ष होने जा रहे हैं साथ ही इस सत्याग्रह के प्रथम शहीद भाई श्यामलाल जी का बलिदान हुए पचास वर्ष पूरे हो चुके हैं [1938 1988] ऐसे अमर शहीद कर्मवीर युवक की स्मृति में उदगीर में एक आर्य शिक्षण संस्था 'श्यामलाल स्मारक शिक्षण संस्था उदगीर' के नाम से सामाजिक परिवर्तन व सुधार की दिशा में गत 38 वर्षों से कार्यरत है। इस शिक्षण संस्था ने निर्णय किया है कि हैदराबादआर्य सत्याग्रह व भाई श्यामलालजी के बलिदान के उपलक्ष्य एक 'शहीद स्मृति अर्द्ध शताब्दी समारोह' का भव्य आयोजन किया जाए। यह आयोजन ही अपने आप में समाज-परिवर्तन व राष्ट्रीय एकात्मता की दिशा में ठोस कार्य हो—ऐसा सकल्प है।

अर्ध शताब्दी के निमित्त निम्न प्रकार के ठोस रचनात्मक विविध कार्यक्रमों के आयोजन का सकल्प किया गया है—

० उद्घाटन समारोह
(अभियान्त्रिकी महाविद्यालय भवन शिलान्यास के कार्य के साथ),
० क्रीडा स्पर्धाए, ० बौद्धिक स्पर्धाए, ० रक्त सहयोग ० दृष्टि सहयोग ० श्याम स्मृति व्याख्यानमाला, ० वृक्ष संगोपन, ० शिक्षण परिषद, ० पर्यावरण संगोष्ठी ० राष्ट्रीय एकता परिषद, ० शोध प्रकल्प ० चित्र दीर्घा, ० महिला जागरण प्रकल्प, कृतज्ञता ज्ञापन समारोह, स्मारिका प्रकाशन।

अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ की ओर से बम्बई में वेदगोष्ठी का निमंत्रण

कुछ अनिवार्य कारणों से 31 जनवरी 88 को होने वाली वेदगोष्ठी स्थगित करनी पड़ी थी जिसका हमें खेद है। अब वही वेदगोष्ठी आर्य समाज काकड़वाडी, बम्बई के वार्षिकोत्सव के अवसर पर 20 मार्च 198८ को रखी गई है विषय वहां है—"वेदों में पुरुषार्थ प्रेरक यथार्थवाद।" यह गोष्ठी मारीशस के प्रसिद्ध आर्य नेता श्री मोहन लाल मोहित द्वारा निर्मित अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ की ओर से आयोजित की जा रही है।

वेद पीठ के अधिकारियों ने मुझ में बम्बई में इस गोष्ठी के सयोजन के लिए कहा था। यह गोष्ठी पूरे दिन चलेगी। प्रातः 10॥ बजे गोष्ठी शुरू होगी, 1 बजे भोजनावकाश होगा और दूसरी बैठक मध्याह्न 2 बजे से 4 बजे तक होगी।

आपसे प्रार्थना है कि इस गोष्ठी के लिए आप भी अपना आलेख प्रस्तुत करें और अन्य विद्वानों द्वारा पढ़ जाने वाले आलेखों से सम्बन्धित विचार विनिमय में भाग लें। आशा है कि अंग्रेजी, संस्कृत हिन्दी, मराठी और गुजराती में से किसी एक भाषा में टंकित या स्पष्ट और सुपाठ्य अक्षरों में कागज के एक ओर लिखे अपने आलेख की संक्षिप्त रूपरेखा (लगभग एक फुलस्केप) अग्रिम भेज देंगे, जिससे वह गोष्ठी में भाग लेने वाले महानुभावों को वितरित की जा सके।

कृपया बम्बई पहुंचने की तारीख और समय से सूचित करें। बम्बई में आपके निवास और भोजन की व्यवस्था हमारी ओर से होगी। जिस संस्था का आप प्रतिनिधित्व करें उससे अपना यात्रा व्यय लेने का कष्ट करें। यदि पर्याप्त पहले सूचित कर सकें, तो अपवाद स्वरूप हम भी आपके वास्तविक मार्ग व्यय की व्यवस्था कर सकेंगे। कृपया अपनी स्वीकृति निम्न पते पर भेजिए—कैप्टिन देवरत्न आर्य, 603, मिल्टन अपार्टमेंट्स, आजाद रोड, जूहुतारा बम्बई 400049

दूरभाषा 532180 531931

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री, द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाडी धीरज (फोन 527335) दिल्ली से छपवाकर कार्यालय आर्य जगत्, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग नई दिल्ली-1 (फोन 343718)

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य —30 रुपये | विदेश मे 65 पौ० या 125 डालर | वर्ष 51, अक 11 | रविवार 13 माच, 1988 | दूरभाष : 343718
आजीवन सदस्य-251 रु० | इस अक का मूल्य—75 पैसे | सष्टि सवत् 172949088, दयानन्दाब्द 163 | चैत्र ?-10, 2044 वि०

आर्य समाज स्थापना अंक

नारी जागरण का ऐतिहासिक अभियान प्रारंभ

सिधरावली में महिला क्रान्ति का बिगुल

दिल्ली दिवराला पदयात्रा के बाद यह सिद्ध हो गया है कि आर्य समाज ने नारी उत्पीडन के विरुद्ध जोरदार अभियान आरम्भ शुरू कर दिया है। कई स्थानो पर नारी जागरण मेले और महिला पचायतो का आयोजन करने की योजना के अ तर्गत पहला मेला हरियाणा के गुडगाव जिले के सिधरावली गाव में आयोजित किया गया। 27 और 28 फरवरी को देश मे पहली बार हजारो ग्रामीण महिलाओ ने इस आयोजन मे भाग लेकर समाज की मूढ मान्यताओ के खिलाफ बगावत का स्वर गु जाया। घू घट मे मु ह छुपाए गोद मे बच्चे लिये, मीलो दूर से चलकर ये महिलाए सिधरावली पहुची। 'औरतो के लिए औरतो का मेला' मे पहुचने पर जो उत्साह आत्मविश्वास नजर आ रहा था, वह पहले कभी कहीं दिखाई नही दिया। गाव की बुढिया का कहना था—"मैं तो पचास माल से अधेरे मे थी—अब पहली बार समझी हू कि सच्चा धर्म आदमी और औरत की बराबरी सिखता है। भगवान ने बनाए तो सब बराबर हैं किंतु आदमी ने खुद को ऊ चा दिखाने के लिए मनमाना धम चला लिया।" सिधरावली के आस-पास मीलो तक सैकडो गावो में धम की समझ और नर-नारी समता की जो चेतना जगी, वह एक चमत्कार सा ही था। 27 फरवरी की सुबह तेज आधी मे जब एक टैंट तक उखड रहा था, तब हजारो महिलाए अपने बच्चो और सामान को सभालती हुई मेला स्थल की तरफ बढ रही थीं। श्रीमती सुमित्रा अमीन, श्रीमती विद्या देवी, श्रीमती चमेली और श्रीमती ऊषा शास्त्री की देख रेख मे हवन सम्पन्न हुआ तो अनेक महिलाओ को यह देखकर आश्चय हो रहा था कि वेद-मन्त्रो के साथ उच्चारण के साथ बहनें ही यज्ञ का सयोजन और सचालन कर रही हैं।

महिला पचायत मे मन्च सचालन, भजन और सयोजन सभी कुछ महिलाए कर रही थी। मेले के आयोजक स्वामी अग्निवेश और दूसरे युवा साथी प्रो० श्योराज सिह आचाय जगबीर और प्रो धमवीर आदि सिफ जरूरत पडने पर ही मच और माईक पर दिखे और उन्होने नर-नारी समता के समथन मे कुछ महत्वपूण सुझाव व प्रस्ताव अपनी तरफ से रखे जिन पर अनेक महिलाओ ने अपने विचार रखे। श्रीमती गौरी चौधरी के सयोजकत्व मे 'सबला महिला सघ' दिल्ली की बहनो के जागरूकता, समता और अधिकार बोध के भावो से भरे ओजस्वी समूह गीतो ने तो जैसे बिजली की लहर सी पैदा कर दी। शाम तक वृद्धाए, बालिकाए और युवतिया वही गीत गुनगुना रही थी।

प्रो० शमसुल इस्लाम के सयोजकत्व में निशात नाट्य मच द्वारा दिखाए गए नुक्कड नाटक 'औरत और गढ्ढा' ने दशको की चेतना को झकझोर दिया। इन्हे इतना पसद किया गया कि हजारो कठो से इन्हें दुबारा दिखाने की माग होती रही। दिन मे फिर से दूसरी महिला पचायत जुटी जिसमे कई महत्व पूण प्रस्ताव पारित किए गए। रात को श्री अनवर जमाल के सयोजन मे 'मिच मसाला" (1986 वष की सवश्रेष्ठ घोषित फिल्म) दिखाई गई। इस तरह की फिल्में हालाकि देश मे बहुत कम हैं किन्तु यह महसूस किया गया कि समता के सदेश से युक्त ये फिल्मे नारी जागरण का सबसे सशक्त माध्यम साबित हो सकता है।

छ मुख्य प्रश्न

सारी पचायत और मेला छ मुख्य सवालो के परिप्रेक्ष्य मे सम्पन्न हुआ। यह छ मुख्य प्रश्न इस आयोजन के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए व्यापक लोक जागति की ओर सकेत करते हैं —

(1) जब लडका पैदा होता है तो खुशिया मनाते हैं लेकिन लडकी पैदा होने पर ठीकरें क्यो फोडते हैं? (2) लडके को अच्छा खिलाना और अच्छा पढाना चाहते है पर लडकी मे भेदभाव क्यो करते हैं। (3) शादी के समय लडकी वाले से दहेज क्यो मागा जाता है? दहेजखोरो द्वारा मूल्यवान वस्तुओ के नाम पर बहू को सताया जाता है और एक दिन मिटटी का तेल छिडक कर जि दा जला दिया जाता है। (4) पत्नी के मरने के बाद पति की तुरत दूसरी शादी हो जाती है, पर पति मर जाए तो पत्नी को विधवा कहकर, डायन, चुडैल मानकर क्यो सताया जाता है? पुरुष की तरह उसे भी दूसरी शादी का अधिकार क्यो नही? (5) सतीप्रथा के नाम पर मरे हुए पति के साथ औरत को जिन्दा जला देना जुल्म और अधर्म की पराकाष्ठा है। (6) कानून की नजर मे बाप को जायदाद मे बेटा बेटी दोनो का बराबर का हक है पर व्यवहार मे नही। यह उचित होगा कि लडकी को पिता के बदले पति की जायदाद मे हिस्सा मिले।

इन्हीं प्रश्नो के परिपेक्ष्य मे इस महिला पचायत मे छ प्रस्ताव भी पारित किए गए।

महिला पचायत के प्रस्ताव

प्रस्ताव (1)

महिला पचायत खेतो मे काम करने वाले किसान और मजदूर औरतो की हालत के बारे मे गहरी चिन्ता व्यक्त करती है। क्यो कि —

(क) उन्हें खेत खलियान के काम के साथ-साथ घर का काम भी देखना पडता है। जैसे चौका-चूल्हा, बच्चो की परवरिश इस तरह उन्हे रोज 15 16 घटे मेहनत करनी पडता है।

(ख) इसके बावजूद भी औरत के काम को घटिया, सरल और सस्ता माना जाता है। जबकि मर्दों के द्वारा इससे भी अधिक साधारण तथा

(शेष पृष्ठ 9 पर)

आर्य समाज का स्वरूप

स्वामी दयानन्द ने 1875 मे आर्यसमाज की स्थापना की थी जो आस्तिक समाज है। दयानन्द वेदों को निर्भ्रान्त ईश्वरीय ज्ञान मानते थे। आर्यसमाज का वैधानिक मन्तव्य है 'ईश्वर सब सत्य विद्याओ का आदि मूल है। वह सच्चिदानन्द स्वरूप, सवशक्तिमान् न्यायकारी, दयालु अजन्मा, अनन्त निराकार सवज्ञ, सर्वव्यापक और नित्य है। एक मात्र उसी की उपासना करनी चाहिए। वेद सब सत्य विद्याओ का ग्रथ है।"

आर्य जन विधवा विवाह के पक्ष मे हैं। बाल विवाह, जात-पात, मास-भक्षण के विरोधी हैं। हवन यज्ञ आदि सस्कारो को करते हैं। गुरुडम नही मानते।

आर्य समाज 'वेदो की ओर चलो" आन्दोलन का प्रतिनिधित्व करता है जिसके सस्थापक वेदो से निकाल कर ऐसी बातें प्रकाश मे लाए हैं जिनको आधुनिक जगत् मे मान्यता प्राप्त है। उन्होने वेदो के आधार पर एकेश्वरवाद को सिद्ध कर दिया और विविध वैदिक देवताओ को सच्चे परमात्मा का विशेषण बताकर बहुदेवतावाद की मान्यता की निस्सारता प्रतिपादित कर दी। आर्य समाज कम फल और मुक्ति मे विश्वास रखता है। आवागमन के चक्र से छूट जाना मुक्ति है।

दयानन्द उच्चकोटि के राष्ट्रवादी थे। उनका आर्य समाज आन्दोलन भारत मे आधुनिक राष्ट्रीयता का कारण और काय रहा है।

आर्य समाज के प्रति लोगो के आकषण के निम्नलिखित कारण हैं —

1 वेदो की पुन प्रतिष्ठा, 2 एक परमात्मा की उपासना 3 वेदो की अपौरुषेयता, 4 जन्मना जात-पात का खडन, 5 दलितोद्धार, 6 समाजसेवा, 7 अपने उद्योग से प्रत्येक व्यक्ति के अधिक से अधिक ऊ चा उठने की मान्यता, 8 भारत भारतीयो का है—सर्वप्रथम इस आवाज का उठाना, 9 देश भक्ति के भावो भरना।

(एनसाईक्लोपीडिया आफ रिलीज स पृ० 179)

सम्पादक—क्षितीश वेदालकार
व्यवस्थापक—रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

अद्भुत वैदिक यज्ञ विधि [7]

तीन प्रकार के जल कौन से हैं ?

—आचार्य वेद भूषण—

ओम आपो ज्योति रसोऽमृतं।
ब्रह्म भू भु व स्वरोम स्वाहा ॥

महा व्याहृति मन्त्रो का व्याख्या करते हुए पिछले लेख मे यह बतलाया गया था कि—परमात्मा की यह सृष्टि एक पूर्ण रचना है। इसमे श्रेष्ठ रचना सम्भव नही परमात्मा ने सृष्टि को प्रकृति से बनाया। प्रथम महान्, महान् से अहकार, अहकार से पच तन्मात्रा (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध), फिर पच तन्मात्रा स पचभूत बनाए। पर यज्ञ के म त्रो पर चिन्तन करते करते हम इस निष्कर्ष पर पहुचे हैं कि ये पचभूत भी तीन तीन प्रकार के हैं।

यज्ञ के आरम्भ मे घृत दीप प्रज्व-लित करने के लिए तीनो प्रकार की अग्नियो के नाम का उच्चारण करके पुन घृत दीप प्रज्वलित किया जाता है। उन तीनो प्रकार की अग्नियो मे प्रथम अग्नि भूलोक की है जिसे हम भू अग्नि कहते हैं। अन्तरिक्ष की दूसरी अग्नि भुव अग्नि कहाती है जिसे हम विद्युत या इलेक्ट्रिसिटी कहते हैं। तीसरी स्व अग्नि सूर्य मे है।

इसी प्रकार वायु भी मुख्य रूप मे तीन प्रकार की है। प्राण, अपान और व्यान। भू के भी तीन प्रकार हैं एक हमारी धरती की भू। दूसरी अन्तरिक्ष चन्द्र लोक में स्थित जो इससे सूक्ष्म है, भुव कहाती है। द्यु लोक मे इसका तीसरा रूप होगा जो अत्यन्त सूक्ष्म होगा। आकाश के भी तीन भेद हैं वायुमडल-युक्त, भार हीनता युक्त और सौर ऊर्जा युक्त। किन्तु जल के तीन प्रकारो पर जाकर हमारा चिन्तन रुक गया। अन्तत जब आपो ज्योति मन्त्र पर पहुचे तब हमे ज्ञात हुआ कि इस मन्त्र मे तीन प्रकार के जलो क वर्णन है।

वास्तव मे इस मन्त्र का जो पूर्व भाग है उसी का स्पष्टीकरण मन्त्र के उत्तरार्द्ध मे है। यदि आधे मत्र को ऊपर लिखकर शेष आधा मन्त्र ठीक क्रम से नीचे लिखा जाए तो पता चलेगा कि—पूर्व भाग का अर्थ ही उत्तर भाग है।

इसे हम इस प्रकार जान सकते हैं। आप-ब्रह्म। ज्योति भू। रस भुव। अमृत स्व। ओम्। इन युगलो मे पर-स्पर सगति है। इनके साथ ओम् की सगति भी बैठती है। आप ब्रह्म ओम्। ज्योति-भू-अ। रस भुव उ। अमृत स्व-म्। इस प्रकार इस एक ही मन्त्र के आध्यात्मिक आधि दैविक और आधि भौतिक रूप स्पष्टत झलकते हैं।

आप शब्द आप्लृ व्याप्तौ से सिद्ध होता है। आप शब्द यह दर्शाता है कि जल सर्व व्यापक है। कहीं स्थूल रूप मे, कही सूक्ष्म रूप मे, कही सूक्ष्मातिसूक्ष्म रूप मे। स्थूल जल के भी तीन रूप हैं। आप का प्रथम स्वरूप ज्योतियुक्त है। यह वह स्थूल जल है जिससे विद्युत् उत्पन्न करने में हमें सहायता मिलती है।

यह जल समस्त भूलोक मे व्याप्त है। एक समुद्र के रूप मे दूसरा मेघो के रूप मे, तीसरा वाष्प कणो के सूक्ष्म रूप मे। यह समुद्र और पृथिवी के चारो ओर ही नही, पृथिवी के भीतर भी व्याप्त है।

इस अग्निहोत्र के द्वारा सूक्ष्म रूप मे जो जल पृथिवी के सब ओर व्यापत है और मेघो के रूप मे भी जो जल आकाश मे स्थित रहता है उसकी शुद्धि होती है। क्योंकि—जो घृत व वनौषधिया सामग्री के रूप मे हम अग्नि मे जलाते हैं वह जल कर सूक्ष्म हो जाता है और जहा-जहा से गुजरता है वहा वहा के सूक्ष्म जल कणो को प्रभावित करता है। जैसे फिटकरी पानी के मल को फाड देती है, वैसे ही सूक्ष्म जल कणो व मेघो के वाष्प रूप जल को यह शुद्ध कर देता है। जब जल शुद्ध हो जाता है तब वह समुद्र की ओर आकृष्ट होता है, वैसे ही जैसे निर्मल आत्मा परमात्मा की ओर आकृष्ट रहती है।

किसी पदार्थ को शुद्ध करने से उसकी शक्ति और गतिशीलता बढ जाती है। इस गतिशीलता का कारण भी समझ लेना चाहिए।

आधुनिक वैज्ञानिक गुरुत्वाकर्षण के सिद्धान्त को मानते हैं। न्यूटन ने वृक्ष से टूट कर फल को नीचे गिरते देखा तो वह सोचने लगा कि—फल टूट कर नीचे की ओर ही क्यो आता है ऊपर की ओर क्यो नही जाता? इसमे उसने सिद्ध किया कि धरती मे एक आकर्षण शक्ति है उसी के कारण कोई भी वस्तु ऊपर न जाकर नीचे की ओर आती है। पर हम इस सिद्धान्त मे सशोधन करना चाहेगे। वैदिक सन्ध्या के मनसा परिक्रमा मन्त्र मे यह दर्शाया गया है कि प्रत्येक दिशा मे एक एक तत्व का केन्द्र है। या एक-एक दिशा का एक एक भूत अधिपति है। पचभूत और छठा चन्द्रमा—इन छ तत्वो के अपने-अपने केन्द्र हैं। जैसे जल का केन्द्र समुद्र है, अग्नि का केन्द्र द्युलोक है, वायु का केन्द्र अन्तरिक्ष है, पार्थिव कणो का केन्द्र पृथिवी है।

प्रत्येक तत्व सदा अपने केन्द्र के आकर्षण से बन्धा होता है। फल टूटकर नीचे पृथिवी की ओर आता है, इसका अभिप्राय यह है कि उसमे पृथिवी तत्व की मात्रा अधिक है। वह इसी कारण पृथ्वी की ओर आकृष्ट होता है।

ये केन्द्र एक प्रकार से उत्पत्ति केन्द्र या मातृ केन्द्र है। सब पदार्थ अपने मातृ स्थान से बन्धे रहते हैं। केन्द्र सदा उन्हे अपनी ओर आकृष्ट किए रहता है। ठीक वैसे ही जैसे कन्याए सदा मायके से आकृष्ट रहती हैं। मातृ केन्द्र से आक-र्षित होने का कारण प्राकृतिक है। दीपक की ज्वाला सदा ऊपर की ओर ही जाती है। पानी सदा नीचे की ओर ही जाता है क्योंकि समुद्र नीचे की ओर है इस-लिए जल समुद्रोन्मुख ही रहता है। वायु का केन्द्र अन्तरिक्ष है। वायु के एक अश को आप समुद्र के गर्भ मे पृथिवी तल पर छोड दीजिए। पृथिवी तल उसे आकृष्ट नही कर पाता। वह वायु सारे पानी को धकेल कर आकर वायु से मिल जाएगी।

"यस्य विश्व उपासते" सारा ससार परमात्मा की उपासना करता है। चाहे रूप कैसा भी हो। हर मनुष्य उस अज्ञात शक्ति से आकृष्ट रहता है। क्या कारण है? क्योंकि आत्मा चेतन है। चैतन्य का केन्द्र परमात्मा है। अत आत्मा स्वभावत परमात्मा की ओर आकृष्ट रहती है। पर जिसकी आत्मा जितनी अधिक दूषित होगी वह उतना ही परमात्मा के प्रति कम आकृष्ट होगा।

इससे एक तथ्य और उजागर होता है। वह यह कि प्रदूषण के कारण पदार्थ अपने मातृ केन्द्र से अपेक्षाकृत कम आकृष्ट होता है। उसमे गति शून्यता बढ़ती है। प्रत्येक जल कण समुद्रीय आकर्षण से बधा होता है, पर जब वह प्रदूषित हो कर गति शून्य होने लगता है तब उसकी पकड शिथिल हो जाती है वह कटी पतग के समान वायु के झोके के आधीन हो जाता है, क्योंकि प्रदूषित है। जैसे मा मैले बच्चे को गोदी मे लेना पसन्द नही करती वैसे ही प्रदूषित कण का नाता केन्द्र से शिथिल होता जाता है। जब जल कण प्रदूषित हो जाते हैं तब अति वृष्टि और अनावृष्टि की स्थिति जन्म ले लेती है। कटी पतग के समान स्थान भ्रष्ट हो जाता है।

जब यज्ञ मे डाले द्रव्य जल के प्रदू-षण को दूर कर देते हैं तब वह फिर बलत्तर होकर अधिक गतिशील होकर अपने केन्द्र समुद्र के आकर्षण से नीचे की ओर आ जाता है—वर्षा हो जाती है।

इसीलिए गायत्री मन्त्र मे "भर्ग धीमहि" कहा है। परमात्मा के निकट जाना हो तो अपनी आत्मा के प्रदूषण को, दुरितो को, परासुव—दूर कर। भर्ग बन जा तब ही गर्भ मे समाहित हो सकता है, मोक्ष का अधिकारी बन सकता है।

शोधन ही समस्त विकृतियो का उपचार है। दीर्घायु और स्वल्पायु का भी यही सिद्धान्त है। प्रदूषण ही रोग है। मार्जन का अर्थ है शुद्धि अर्थात् पवि-त्रता। अघ मर्षण का अभिप्राय यही है कि ऋत और सत्य को जड और चेतन के अघ का मर्षण करोगे तो स्व-स्थ में स्थित रहोगे। स्व+स्थ रहोगे। अन्यथा अस्वस्थ हो जाओगे।

जिन्होने सृष्टि के नियमो को पैनी दृष्टि से देखा नही, जिन्होने मन्त्रो की सूक्ष्मता विज्ञान—रहस्यो को जाना ही नही वे कहेंगे कि यज्ञ से वर्षा सभव ही नही? जब तक इन सारभूत सिद्धान्तो को समझ नही लेंगे तब तक उनकी बात समझ में आ नही सकती।

इस प्रकार आप भूलोक मे सर्व व्यापक आप को यह यज्ञ पवित्र बना देता है। मन्त्र मे आगे भुव के जल की बात कही है। जिसे वेद भुव कहता है, लोक मे उसे रस कहा जाता है। यह अन्तरिक्षस्थ जल है—रस। वनस्पतियो, फूलो फलो मे व्यापक यह रस दूसरे प्रकार का जल है, यह भुव है।

यदि शन्नो देवी वाले आप से तेरे दोष दूर न हो सके और तू रोगो से घिर गया है, तो भुव दु खहर्ता रस का अर्थात् वनौषधियो का सेवन कर। इस वनस्पति रस पर भी यज्ञ का गहरा प्रभाव होता है। जैसे गाय के सीग पर सोना मढ़ देने से उसके दूध मे सौर उर्जा की मात्रा बढ जाती है, वैसे ही अग्नि होत्र से औषधियो के रसो क पोषण शक्ति बढ जाती है। "पुष्टि वर्धन" यह यज्ञ पुष्टिवर्धक होता है। वनस्पतियो के रसो को भी शुद्ध कर देता है। यह भुवः रस या अन्तरिक्षस्थ जल कहाता है।

तीसरा है स्व जल। जिसे इस आर्ष वचन मे अमृत कहा गया है। यह अमृत क्या है? इसका स्व से क्या सम्बन्ध है? इसे स्व जल क्यो कहा गया है? स्व नाम है द्यु लोक का। जिस जल मे (रस मे) सौर ऊर्जा की मात्रा प्रधान होगी वह स्व की श्रेणी का होगा। इस धरती पर दो पदार्थ ऐसे हैं जिनका सौर ऊर्जा से गहरा नाता है। एक तो है रग बिरगे फूल और दूसरी है—गाय। फूलों मे जो रग बिरगापन है, वर्ण है वह सूर्य द्वारा ही वरण किया जाता है। फूलों पर सूर्य का प्रभाव अधिक पडता है। वृक्ष में पुष्प द्युस्थानी होते हैं। शाखा के

(शेष पृष्ठ 9 पर)

सुभाषित

आने वाले अनेक वर्षों तक हमारे कदम विस्फोटित संसार के मलवे में डगमगाते रहेंगे। हमें शांत करने और प्रेरणा देने के लिए किसी ऐसे महान् उद्देश्य की आवश्यकता होगी जिसकी शक्ति किसी भी व्यक्ति से अधिक होगी और मानव-मात्र के लिए उपयोगी होगी। ऐसा स्वस्थ समाज जिसकी सम्पदा, हसमुख बच्चे और प्रसन्न नर-नारियां हों, जिसकी श्री-सुषमा, शान्ति और सृजनात्मक कार्यों से निर्मित हो, वह किसी के हुक्म से बना बनाया हमें नहीं मिलेगा। वह तो हमें स्वयं अपने हाथों से गढ़ना पड़ेगा। हमारी नियति अपनी जिम्मेदारी है, बिना श्रद्धा के हम इस जिम्मेदारी को पूरी तरह नहीं निभा सकते। हमें यह खूब समझाया जा चुका है कि श्रद्धा बहुत अव्यावहारिक चीज है और जिधर भी हवा बहे हमें अपनी नाव उधर ही मोड़ देनी चाहिए। परन्तु हमारे भीतर अब यह सत्य ज्वलंत है कि उदासीनता और समझौता सिवाय नाश के कुछ नहीं है।

—हेलेन केलर ('मुक्त द्वार' में)

सम्पादकीयम्

आर्य समाज स्थापना दिवस पर

आर्य समाज की स्थापना हुए 113 वर्ष पूरे हो रहे हैं। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा संवत् 1931 (सन् 1875) को बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना हुई। हर वर्ष आर्य समाज बम्बई (काकड़वाड़ी, गिरगांव) इसी अवसर पर वार्षिकोत्सव भी मनाता है। इस वर्ष वह तारीख 17 मार्च को पड़ रही है। परन्तु विक्रमी संवत् उत्तर भारत में प्राय सौरगणना के हिसाब से मनाया जाता है और दक्षिण भारत में प्राय चन्द्रगणना के हिसाब से। इस दृष्टि से चैत्र प्रतिपदा की स्थिति में भी दिन का अन्तर पड़ने की संभावना रहती है। महान् ज्योतिर्विद भास्कराचार्य ने यह भी उल्लेख किया है—

चैत्र मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि ।
शुक्ल पक्षे समग्रन्तु तथा सूर्योदये सति ।

—अर्थात् चैत्र शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय के समय (ब्रह्मा) जगदीश्वर ने जगत् की रचना की। कभी कभी इस को लेकर आर्य बन्धु अपने मन में बड़ा गर्व भी अनुभव करते हैं कि ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना उसी दिन की जिस दिन ब्रह्मा ने सृष्टि रचना प्रारम्भ की थी। परन्तु व्यावहारिक दृष्टि से इस बात का कोई विशेष महत्व नहीं है। क्योंकि किसी भी दिन के शुभ या अशुभ होने की कल्पना केवल मनुष्यकृत है, दैवकृत नहीं।

एक शताब्दी से अधिक वर्ष बीत जाने के पश्चात् इस अवसर पर जब हम विगत अवधि के आर्यसमाज के कार्यकलाप पर विचार करते हैं तो मन में अनायास गर्व और उत्साह की तरंगें उठती हैं। क्योंकि इतने कम समय में जितना विस्तार इस आन्दोलन का हुआ है सम्भवत आज तक संसार के किसी अन्य आन्दोलन का नहीं हुआ है। यह केवल अपने मुंह मियाँ मिठ्ठू बनने वाली बात नहीं है, इतिहास और तथ्यों पर आधारित सत्य है। आर्य समाज के सिद्धान्तों को भी इतने वर्षों में जितनी व्यापक मान्यता मिली है। उतनी अन्य किसी तथाकथित मतमान्तर को नहीं मिली है। सारे संसार के बुद्धिजीवियों पर आर्य समाज की विचार धारा की छाप है। आर्य समाज के सतत विरोधियों की भी अब अगर कोई शिकायत होती है तो आर्य समाज द्वारा प्रचारित वेद पर आधारित सिद्धांतों पर नहीं, बल्कि स्वयं आर्य जनता के व्यवहार पर होता है। अब विरोधी लोग प्राय यही कहते हैं—'बातें तो आपकी सब ठीक हैं, परन्तु जहां तक आचरण का सम्बन्ध है, जब आर्य समाजी खुद अपने सिद्धान्तों पर पूरी तरह आचरण नहीं करते तो वे अन्य मतावलम्बियों से वैसी अपेक्षा कैसे कर सकते हैं।'

किसी हद तक यह शिकायत सही भी है। इसका समाधान हम केवल यह कहकर कर सकते हैं कि किसी चीज की संख्या (क्वांटिटी) ज्यों ज्यों बढ़ती चली जाती है, त्यों त्यों उसकी गुणवत्ता [क्वालिटी] कम होती जाती है। पर यह समाधान केवल आत्मसन्तोष के लिये है, इसके कारण आर्य जनता में छाये गुणवत्ता के प्रति प्रमाद को क्षम्य नहीं समझा जा सकता।

परन्तु एक शिकायत हम स्वयं अपने आपसे खुले आम करना चाहते हैं। वह शिकायत यह है कि ज्यों ज्यों आर्य समाज के आन्दोलन का और उससे सम्बद्ध संस्थाओं का विकास और विस्तार होता चला गया, त्यों त्यों उसका संगठन स्वयं अपने बोझ के नीचे चरमराने लगा। यह सही है कि आज भी आर्य समाज जैसा सुव्यवस्थित और सुसंगठित आन्दोलन और कोई नहीं है, परन्तु आर्य समाज के संगठन में अब वह सौमनस्य दिखाई नहीं देता जिस पर गैर आर्य समाजी भी ईर्ष्या किया करते थे। कभी ऐसा भी समय था कि जब कांग्रेस का कोषाध्यक्ष किसे बनाया जाये, यह पूछने पर सरदार वल्लभभाई पटेल ने अपनी यह स्पष्ट राय दी थी कि इस काम के लिए कोई आर्यसमाजी व्यक्ति ही उपयुक्त हो सकता है। परन्तु आर्य जनता से ही हम यह प्रश्न करते हैं क्या आज भी हम अपनी अर्थ-शुचिता के सम्बन्ध में उसी प्रकार की बात कह सकते हैं?

आज विभिन्न समाजों के न्यायालयों में कितने आपसी अभियोग चल रहे हैं? या कितने चुनाव पुलिस के संरक्षण में और उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों के आदेशों के आधीन हो रहे हैं? चुनावों के समय ऐसी अखाड़ेबाजी दिखाई देती है, कितना कोलाहल और तू तू, मैं मैं होती है, किसी भी आर्य बन्धु के लिये लज्जाजनक है। राजनीतिक पार्टियों में जिस प्रकार सत्तालोलुपता के कारण मानवता के नाम पर पशुता के दर्शन होते हैं, वैसी स्थिति आर्य समाज के संगठन पर भी हावी होती जा रही है। राजनीति के सारे विकार धीरे धीरे आर्य समाज के संगठन में घुसते चले जा रहे हैं। ऐसा कौन सा प्रान्त है जहां दो दो प्रतिनिधि सभायें न हों और एक ओर [illegible] गुट और दूसरी ओर उनकी टांग खींचने वाला उतना ही प्रबल गुट न हो। जिन पदों पर पहले निःस्वार्थ, सेवाभावी और समाज के लिए अपना तन मन-धन

[शेष पृष्ठ 4 पर]

पंजाब का नासूर

पंजाब का नासूर अब इतना बढ़ गया है कि उसने हमारी चेतना तक को भोथरा कर दिया है। हिंसा का ताण्डव उसी प्रकार जारी है और आतंकवादियों का शिकार होने वाले लोगों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जाती है। आये दिन इसके विरोध में जनता 'बन्द' करके अपना आक्रोश प्रकट करती है, परन्तु इन बन्दों से भी किसी के कान पर जूं रेंगती दिखाई नहीं देती। कुछ लोग तो, अपने देश की यही नियति है, ऐसा समझते हैं। इस नियति के साथ जीने को क्या हम अभिशप्त हैं?

अभी हाल में ही सरकार ने पांचों मुख्य ग्रन्थियों को जेल से छोड़ दिया है और पंजाब विधानसभा भी भंग कर दी है। उससे ऐसा लगता है कि पंजाब के नासूर के इलाज के लिये सरकार कोई नई रचनात्मक पहल करना चाहती है। इससे पहले जब प्रकाश सिंह बादल को कारामुक्त किया था तब भी यह अफवाह उड़ी थी कि इस 'बादल' के माध्यम से सरकार पंजाब के धरातल पर छाये भयावह सूखे का अन्त कर सकेगी। पर वह 'बादल' बरसने वाला नहीं था। अब सरकार की नई पहल क्या गुल खिलायेगी, यह देखना है।

पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह कहते हैं कि पंजाब समस्या के हल के लिये मेरे पास एक फार्मूला है और पंजाब के राज्यपाल श्री सिद्धार्थ शंकर राय कहते हैं कि प्रधानमंत्री राजीव गांधी के पास कोई फार्मूला है। इन दोनों के फार्मूलों के बारे में जनता को कोई जानकारी नहीं है। कितना अच्छा हो कि प्रधानमंत्री और पूर्व राष्ट्रपति दोनों आपसी परामर्श के द्वारा एक दूसरे पर पूरा विश्वास करके कोई ऐसा हल निकालें जिससे यह नासूर ठीक हो जाये। परन्तु दोनों की आपसी दूरी कम हुई हो, ऐसा दिखाई नहीं देता। इसे देश का दुर्भाग्य न कहें तो क्या कहें।

प्रधानमन्त्री की सेवा में निवेदन है—कि आपका फार्मूला चाहे कुछ भी क्यों न हो, परन्तु कृपा करके पहले वाली भूल न दोहरायें। तात्पर्य यह है कि केवल अकालियों को सब सिक्खों का प्रतिनिधि मानना गलत है। और पंजाब की समस्या के हल के लिये हिन्दुओं की सर्वथा उपेक्षा कर देना भी गलत है। हरियाणा और राजस्थान के हितों का जहां तक सम्बन्ध है, किसी नये समझौते की झोंक में इन दोनों राज्यों की उपेक्षा कर देना भी गलत होगा। और चौथी बात जिस पर हम सबसे अधिक जोर देना चाहते हैं, वह यह है कि अकाली प्रतिनिधियों से आतंकवाद और खालिस्तान का समर्थन न करने की और स्वर्णमन्दिर को असामाजिक तत्त्वों का केन्द्र न बनाने की जब तक गारण्टी न ले ली जाये, तब तक अपनी ओर से सरकार की ओर से कोई भी "कमिट्मेंट" करना गलती होगी। सिखों में इस समय क्या कोई ऐसा सर्वमान्य नेता है जो अपनी बात सिख जनता से मनवा सके या सबके सब आतंकवाद की छाया में जीते हुए, अपनी प्राण-हानि के भय से कापुरुष बने हुए हैं। इन पांचों बातों पर विचार करके नीति निर्धारण करें तो पंजाब का यह नासूर भी ठीक हो सकता है।

मेजर डा. अश्विनी मानवता की सेवा में शहीद

श्री लका के जाफना द्वीप में कार्यरत भारतीय सेना में एक अनहोनी घटना 3 नवम्बर को उस समय हुई जब तमिल छापामारो ने मेजर डाक्टर अश्विनी कुमार कण्व को अपने मरीजो की मरहम पट्टी करते हुए अपनी गोलियों का निशाना बना दिया। इस घटना की राष्ट्र भर के समाचार पत्रो में भर्त्सना की गई क्योंकि सेना में चिकित्सा सेवा पर हमला करना अन्तर्राष्ट्रीय कानून के खिलाफ है। मेजर डा० अश्विनी कुमार का जन्म अक्तूबर 1958 को दिल्ली मे एक आर्यसमाजी परिवार में हुआ था। डाक्टरी शिक्षा पास करने के पश्चात् वह 1982 मे भारतीय सेना में भर्ती हुए। उनकी प्रथम नियुक्ति लेह [लद्दाख] क्षेत्र मे हुई जहा उन्होने 3 वर्ष से अधिक समय तक परिश्रम, धैर्य व साहस का परिचय देते हुए सेवा की। इसी कार्यकुशलता के कारण उन्हें 26 जनवरी 1987 को विशिष्ट सेवा पदक देने की घोषणा की गई और आगामी दिसम्बर मे उन्हे इस पदक से विभूषित किया जाना था।

मेजर अश्विनी का मृत शरीर 5 नवम्बर को भारतीय वायुसेना द्वारा दिल्ली लाया गया तथा पजाबी बाग मे पूरे सैनिक सम्मान के साथ उनका दाह सस्कार किया गया। उनकी मृत्यु के चौथे दिन पश्चिम विहार, दिल्ली समाज ने इस वीर सपूत को भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की। इस अवसर पर समाज के पदाधिकारियों ने माग की कि मेजर अश्विनी के बलिदान को अमरत्व प्रदान करने के लिए पश्चिम विहार की एक सडक व एक पार्क का नाम मेजर [डा०] अश्विनी मार्ग व मेजर [डा०] अश्विनी कुमार पार्क रखा जाए। इस अवसर पर इस क्षेत्र के महानगर पार्षद श्री भौरे लाल शास्त्री ने विश्वास दिलाया कि पश्चिम विहार समाज की इस माग को पूरा किया जायेगा।

मेजर [डा०] अश्विनी कुमार अपने पीछे अपने माता, पिता, एक बहन तथा भाई को छोड गए हैं।

महात्मा हंसराज दिवस

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, डी०ए०वी० सस्थाओ एव समस्त आर्य सस्थाओ की ओर से सम्मिलित रूप से हर वर्ष की भाति इस वर्ष भी महात्मा हस-राज दिवस रविवार 17 अप्रेल 1988 को प्रात 9 बजे से 1-00 बजे तक तालकटोरा गार्डन इनडोर स्टेडियम (नजदीक बिरला मन्दिर) नई दिल्ली में बडे समारोह पूर्वक मनाया जायेगा।

समस्त आर्य सस्थाओ से प्रार्थना है कि उस दिन अपनी आर्य समाज का साप्ताहिक सत्सग स्थगित कर अधिकाधिक सख्या में उस में सम्मिलित हों। विस्तृत कार्यक्रम प्रकाशित होने पर शीघ्र भेज दिया जाएगा।

दो भाषण प्रतियोगिताएं

आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली के वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य मे दो भाषण प्रतियोगिताओ का आयोजन किया गया है—एक उच्चतर माध्यमिक विद्यालयो के लिए और दूसरी कालेज के छात्र-छात्राओ के लिए। स्कूलों के लिए विषय है—"भारतीय सस्कृति से ही राष्ट्ररक्षा।" इस में प्रथम पुरस्कार 300 रु०, द्वितीय पुरस्कार 200 रु०, तृतीय पुरस्कार 100 रु०, विशेष पुरस्कार (दो)—50, 50, रु० हैं। कालेजो के लिए विषय है—"आधुनिक सन्दर्भ मे नारी प्रतिष्ठा के प्रति युवा पीढ़ी का दायित्व।" इसमे प्रथम पुरस्कार 500 रु०, द्वितीय पुरस्कार 300 रु० और तृतीय पुरस्कार 200 रु० तथा विशेष पुरस्कर (दो) एक-एक सौ रु० निर्धारित हैं। दोनो प्रतियोगिताओ मे एक-एक विशेष शील्ड भी है जो उस सस्था को दी जाएगी जिसके छात्र विजयी होगे। सभी प्रतियोगियो को वैदिक साहित्य और मार्गव्यय दिया जाएगा। ये दोनो प्रतियोगिताए 25 मार्च को लाल किला मैदान में दोपहर एक और दो बजे होंगी। प्रतियोगी अपना नाम, कक्षा, विद्यालय, पिता का नाम, घर का पता यथासमय मन्त्री के पास भेज दें। मन्त्री—मूलचन्द गुप्त, आर्यसमाज दीवाहाल, दिल्ली-6

ईसाई अनाथालयों की जांच

पचहोद मिशन मे अवैध धर्मांतरण की घटनाओ के कारण उस सस्था को बन्द करने की राज्य सरकार द्वारा की गई घोषणा के साथ ही राज्य में ईसाईयों द्वारा सचालित सभी अनाथालयो की व्यापक जाच के आदेश भी दे दिये गये हैं। इस आदेश मे उन 90 केन्द्रो की व्यापक जाच करने के लिये कहा गया है, जो न्यायालय द्वारा सूचित अनाथालय हैं। इनमें से अधिकांश अनाथालय ईसाई मिशनरियों द्वारा सचालित हैं। कई केन्द्रों में हिंदू बच्चो के प्रवेश के समय ही उन्हें 'ईसाई' के रूप में दर्ज किया जाता है।

दयानन्द मठ चम्बा की अपील

दयानन्द मठ चम्बा हिमाचल प्रदेश में रावी नदी के सुरम्य तीर पर पर्वत श्रृखलाओं के मध्य में स्थित एक छोटा सा किन्तु सुन्दर रमणीय आश्रम है। मठ द्वारा सचालित दयानन्द संस्कृत महाविद्यालय एवं आयुर्वेदिक, फार्मेसी से आर्य जन सुपरिचित हैं। शुद्ध जडी बूटियों से निर्मित यहां की आयुर्वेदिक औषधियों यथा च्यवनप्राश, आयुर्वेदिक चाय, चन्द्रप्रभा वटी एवं स्वर्ण मिश्रित औषधियों को लोग बडे विश्वास के साथ लेते हैं। अब मठ में एक भव्य यज्ञशाला निर्माणाधीन है। इस समय भौतिक विलास के अडडे यथा होटल, क्लब एव सिनेमाघर तो भव्यतम बन रहे हैं, किन्तु हा हन्त! जहा से वेद का नाद निनादित होता था एव लोक कल्याण के साधन यज्ञ की सुगन्धि प्रवाहित होती थी उन उपासना स्थलों एवं यज्ञशालाओं के लिए धन नहीं मिल पाता। मेरी मान्यता है कि हमारे उपासना स्थल, हमारी यज्ञ शालाए भी भव्यतम बननी चाहिए।

अत देश भर के आर्य भाई-बहिनों से मेरी प्रार्थना है कि हिमाचल प्रदेश की इस यज्ञशाला के निर्माणार्थ दिल खोलकर दान दीजिए। रावी के तीर पर यह यज्ञशाला सबकी प्रेरणा स्रोत बने। कम से कम तीन लाख रुपये व्यय का अनुमान है। दानियों के नाम का शिलालेख भी स्थापित किया जाएगा। इस यज्ञशाला में यज्ञों पर शोध करने का विचार है। यह भी अभिलाषा है कि यह एक दर्शनीय स्थल बने।

अत सन्यासी की अपील है कि उदारता से दान दें ताकि यज्ञशाला शीघ्र बनकर तय्यार हो सके। अपने दान की राशि का चेक ड्राफ्ट "दयानन्द मठ चम्बा" इस नाम से भेजें। प्रभु आपका कल्याण करें।

निवेदक—
स्वामी सुमेधानन्द

ब्यावर में सूखा राहत कार्य

नवम्बर, 1987 से आर्य समाज ब्यावर के द्वारा अजमेर जिले के हजारों असहाय परिवारो को प्रति मास गेहू, चावल, आटा, दाल, आलू, गुड, कपडे आदि दिए जाते हैं। इस पुनीत कार्य मे आर्य प्रादेशिक सभा दिल्ली के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल का पूर्ण सहयोग रहा है। राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के कर्मठ महामन्त्री श्री ओम प्रकाश खबर, ब्यावर आर्य समाज के निष्ठावान समाज सेवी श्री ब्रजराज आर्य, प्रधान श्री मदन लाल काबरा, प्रि० श्री वासुदेव शास्त्री, मन्त्री श्री विष्णुदेव आर्य, श्री सत्यप्रकाश खबर एव प० अमर सिंह आदि लोग घर-घर जाकर अनाज तथा कपडे इकट्ठे करते हैं।

होली के अवसर पर अनेक गांवो से सैंकडो परिवारो को आर्य समाज मंदिर ब्यावर में बुलाकर यज्ञ के पश्चात् प्रत्येक परिवार को 10 किलो गेहू, 3 किलो चावल, 1 किलो गुड, 1 किलो आलू व कपडे आदि स्थानीय उपखण्ड अधिकार श्री युगल किशोर शर्मा तथा पूर्व सांसद आचार्य भगवानदेव आदि द्वारा वितरित किये गये।

चावल प्रादेशिक सभा दिल्ली ने भिजवाया तथा गुड श्री छगन लाल कांकाणी द्वारा प्राप्त हुआ। चम्पानगर उच्च प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री भेरू-लाल शर्मा ने विद्यालय के छात्रों द्वारा तीन बोरी गेहू व वस्त्र एकत्रित कर भेंट किए।

समस्त कार्य को सफलता पूर्वक चलाने के लिए आर्य समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक प० अमरसिंह जी गांव-गांव जाकर उत्साह से कार्य कर रहे हैं। आर्य समाज के इस सेवा कार्य की सर्वत्र सराहना की जा रही है।

—मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

[पृष्ठ 3 का शेष]

न्यौछावर करने वाले लोगों को आसीन किया जाता था, आज वहां अपने आपको आसीन करने के लिये सारे सगठन का शोषण करने वाले लोग भी पैदा हो गये हैं। हमारा सकेत किसी व्यक्ति-विशेष की ओर नहीं आर्य समाज के सगठन में घुसती चली आ रही इस नई प्रवृत्ति की ओर है।

आर्य समाज में अब भी भले लोगों की कमी नहीं है, विद्वानो की कमी नहीं है। परन्तु स्थिति यह है –"एकोऽपि बलवत्तर शत विज्ञान वतां कम्पयते"—एक भी बलवान आदमी सौ ज्ञानियों को कम्पायमान कर देता है। चुनाव प्रधान राजनीति के खिलाडी तो ऐसे ही अवसरो के लिए कुछ असामाजिक तत्वो को पालते हैं आर्य समाज को ऐसा क्यों होना चाहिए? जिस तरह भगवती भागीरथी के प्रदूषण को निरस्त करने के लिए तीव्र अभियान चल रहा है उसी तरह हमें भी अपने सगठनों में घुस आए प्रदूषणों को निरस्त करने के लिए तीव्र प्रयत्न करना पड़ेगा। पर यह निहित स्वार्थों की आपाधापी से नहीं होगा, जनता जनार्दन के अन्तःकरण में छिपी नैतिकता की अन्त-सलिला के माध्यम से ही सम्भव हो सकेगा। आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर पूर्ण आशा भरे मन से हम उसी अन्त-सलिला का आह्वान कर रहे हैं।

आर्य समाज समस्त मानव मात्र के लिए है

— ज्येष्ठ वर्मन —

आज भी विश्व के लोगों ने आर्य समाज के वास्तविक स्वरूप को पहचाना नहीं। प्राय इसे हिन्दू समाज सुधारक, मूर्ति पूजा का विरोधी, इस्लाम और ईसाइयत के शत्रु समझा जाता है। इस भ्रम के कुछ कारण भी हैं। आर्य समाज और हिन्दू समाज की धार्मिक एव सास्कृतिक परम्परा में पर्याप्त मात्रा मे समानता है। और आजकल बहुधा आर्य समाज के मच से मुस्लिम और ईसाई विरोधी भाषण हुआ करते हैं तथा नारे लगाये जाते हैं। लेकिन सत्य यह है कि आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द महाराज ने हिन्दू शब्द को ही गलत अर्थ के प्रतिपादक होने के कारण अस्वीकार किया है। अपने पूना व्याख्यान में महर्षि ने हिन्दू शब्द के अर्थ बताते हुए लोगो से अनुरोध किया था कि वे अपने आपको आर्य कहें।

आर्य समाज सपूर्ण विश्व के समस्त मानव समाज को एक इकाई (Unit) के रूप में देखता है। अत आर्य समाज केवल भारतीय अथवा हिन्दुओं का कल्याण अर्थात् मानव समाज के किसी एक अग विशेष का कल्याण नहीं चाहता। आर्य समाज मानवमात्र का कल्याण चाहता है। इसलिये आर्य समाज का एक नियम कहता है कि ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। आर्य समाज को हिन्दू सगठन बतानें वाले क्या इग्लैंड, फ्रास आदि ईसाई देशो में, अथवा अन्य किसी अहिन्दू देश में जब कोई आर्य समाज में आ जाती है, तब भी क्या उसको हिन्दू संगठन कहेंगे ?

ब्रह्मा से जैमिनि पर्यन्त

ब्रह्मा से लेकर जैमिनि पर्यन्त, अर्थात्, मानव जाति के इतिहास के प्रारम्भिक काल से महाभारत काल पर्यन्त इस देश में जो एक आध्यात्मिक और सास्कृतिक परम्परा की धारा बहती चली आयी थी उसको आर्ष परपरा कहा जाता है। आर्ष परपरा की मुख्य विशेषता वैज्ञानिक मनोधर्म और विश्व कल्याण की भावना थी। ऋषि कहते हैं तर्क को। तर्क का प्रयोजन है सत्य की खोज। अत सत्य की खोज की प्रवृत्ति ऋषियों की विशेषता थी। ये कभी भी अधविश्वास अथवा पक्षपात को मान्यता नहीं देते थे। वेदों को भी उन्होंने शुद्ध ज्ञान अथवा विचार का भडार माना था। प्राचीन भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परपरा का मूल वेद हैं। अत इस परम्परा में अंधविश्वास, रूढ़िवाद और पक्षपात के लिये कोई स्थान नहीं है। भारत की राष्ट्रीयता की जड़ भी इसी परम्परा में देखी जा सकती है। लेकिन कालक्रमेण यह परम्परा की धारा दूषित होने लगी। तर्क और न्याय की उपेक्षा होने लगी। अंधविश्वास और रूढ़िवाद पनपने लगे। स्वार्थ और इहलोक का महत्व बढ गया। लोगो का दृष्टिकोण भी सकुचित होने लगा। इस दूषित धारा का ही नाम है अनार्ष या हिंदू परम्परा। आर्य समाज इस धारा को स्वीकार नहीं करता। लेकिन आर्य समाज इस धारा के मूल को अवश्य मानता है आर्य समाज की यह मान्यता भी है कि विश्व के सभी धार्मिक सास्कृतिक और सामाजिक परपरायें इसी मूल से निकली हैं। अत आर्य समाज के अनुसार यदि कुछ विदेशी परम्परा शुद्धीकरण के योग्य हैं तो देश की दोषपूर्ण परम्परायें भी शुद्धिकरण के योग्य हैं। विश्व का मानव समाज अनेक भागों मे विभक्त होने का एक मुख्य कारण है इन दोषपूर्ण परम्पराओ के द्वारा खडी की गई मानसिक दीवारें हैं। ये सकीर्ण सम्प्रदायवादी हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि नेता अपने अपने स्वार्थ के कारण इस तथ्य को स्वीकार नहीं करते और अपने स्वार्थ के कारण मानव समाज को हानि पहुचाते हैं।

आर्य समाज में हिन्दू अधिक केवल इसलिये हैं कि ये मूल धारा के अधिक निकट हैं। आर्य समाज का आदोलन भी इनके ही बीच प्रारम्भ हुआ था। लेकिन इस कारण यदि कोई आर्य हिन्दुओं के साथ पक्षपात पूर्ण व्यवहार करता है, ईसाई मुसलमान आदि से द्वेष या घृणा करता है, तो वह गलती करता है।

भय से छुडाने वाला आर्यसमाज

आज हिन्दू सम्प्रदायवादी नेता आर्य समाज के पास इसलिये आते हैं कि ईसाई, मुसलमान, और दलितों की बढ़ती हुई शक्ति और हिन्दुओ के विरूद्ध उनके आन्दोलन से ये भयभीत हैं। उनका सामना करने का अस्त्र इन लोगो के पास नहीं हैं। वह अस्त्र केवल आर्य समाज के पास है। उस अस्त्र का नाम है तर्क अथवा वैज्ञानिक मनोधर्म। लेकिन दिल से ये हिंदूवादी आर्य समाज को स्वीकार नहीं करते। यदि स्वीकार करते तो ये भी अपने आपको आर्य कहते और आर्य समाज मे मिल जाते। लेकिन ऐसे करने में इनकी लीडरी खत्म हो जायेगी। और इनकी लीडरी, इनके सगठन, इनकी जागृति सब कुछ तात्कालिक है। जब तक जिन्ना, शहाबुद्दीन, भिंडरावाले, जैसे हिन्दू विरोधी नेता सक्रिय रहेंगे तब तक इनकी लीडरी, इनके सगठन और इनके अभियान चलेंगे।

जैसे अकाली पथ खतरे में होने की बातें करते हैं और मुसलमान नेता इस्लाम खतरे में होने की बातें करते हैं, ये लोग हिन्दू सकट में होने की बातें करते हैं। आर्य समाज का तर्क, उसका वैज्ञानिक मनोधर्म और न्याय सगत बातें इन हिन्दू नेताओं को पसद नही। ये कहते हैं कि आर्य समाजी हिन्दुओ में ही झगडा पैदा करते हैं। इनकी मानवता देखिये—आज हमारे देश में 70 प्रतिशत लोग गरीबी रेखा के नीचे चले गये हैं। दिन में एक वक्त भी इनको रोटी मिलेगी या न मिलेगी, भरोसा नहीं। इस महान् देश मे अपने सिर छिपाने के लिये इनके पास छत नही, अपनी स्त्रियो का मान बचाने के लिये इनके पास दीवारें नही हैं। कोई झोपडो मे रहता है कोई शहरो के फुटपाथो मे। इनमें अधिकाश हिन्दू हैं। और हिन्दू मदिरो मे अपार धन राशि है। इन गरीबो को उस धन से कोई लाभ नहीं मिलता। लगभग पाच प्रतिशत लोग अर्थ काम मे आसक्त हैं, तथा सुरा और सुन्दरी में लिप्त हैं। शेष पन्द्रह प्रतिशत ईसाई, मुसलमान और नास्तिक हैं। अत हिन्दूवादी नेता केवल दस प्रतिशत भारतवासियो की चिता करते हैं जो अनावश्यक है।

हिन्दूवादी नेता आज पाखण्ड को छोडने को तैयार नहीं, जात-पात को तोडने को तैयार नहीं, अस्पृश्य अथवा हरिजनों पर होने वाले अत्याचारो को रोकने को तैयार नहीं, उनके साथ रोटी-बेटी के सम्बन्ध के लिये तैयार नहीं, कहीं भी न्याय के पक्ष लेकर लड़ने को ये तैयार नहीं, फिर ये किसकी रक्षा करने निकले हैं ? यदि सत्य और न्याय का गला घोटना मुसलमान और ईसाई के लिये पाप है तो वह हिन्दू के लिये भी पाप है। आर्य समाज सत्य और न्याय के शत्रु को मानव समाज का असली शत्रु मानता है। यदि ईसाई, मुसलमान आदि पाखड का प्रचार करते हैं, अन्याय करते हैं, तो हिन्दू भी इन बातों मे उनसे पीछे नहीं हैं।

खतरे में केवल न्याय और सत्य

आज वास्तविकता यह है कि दुनिया में न हिन्दू खतरे मे है न मुसलमान खतरे में है, खतरे मे है केवल सत्य और न्याय, खतरे में है इंसानियत। इसलिये आर्य समाज कहता है कि सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोडने के लिये सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। यही वैज्ञानिक मनोधर्म है जो भारतीय सविधान धारा 51 ए मे उल्लिखित है। आर्य समाज यह भी कहता है कि ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। पर्याप्त मात्रा मे पौष्टिक भोजन, शुद्ध पर्यावरण, सयम आदि से शारीरिक उन्नति होती है, सुन्दर सत्य विचारो से और ईश्वर उपासना से आत्मिक उन्नति तथा वर्णाश्रम धर्म के पालन से सामाजिक उन्नति होगी। वर्णाश्रम पद्धति एक अत्यत वैज्ञानिक पद्धति है। इसकी उपेक्षा के कारण आज विश्व मे पारिवारिक अस्थिरता और सामाजिक अस्थिरता उत्पन्न हुई हैं।

धर्म का अर्थ ही धारण करने वाला है। मानव जीवन को, और उसके पारिवारिक एव सामाजिक जीवन को धारण करने वाला, अर्थात् उसको मजबूत बनाने वाला धर्म है और उसको दुर्बल बनाने वाला अधर्म है। सत्य और न्याय धर्म हैं। असत्य और अन्याय अधर्म है। क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, क्या ईसाई, सब ने अधर्म को धर्म मानकर चलना पसन्द किया है। यही गलती है। आर्य समाज चाहता है कि ये सारे प्रेम से मिलकर रहें। इन्सानियत का सबसे बडा पाठ यही है। लेकिन आज यही अधिक खतरे मे। यदि हम इस खतरे से इन्सानियत की रक्षा नहीं करते, तो इक्कीसवी सदी तक हमारा रहना कठिन होगा।

किसी भी निर्माण कार्य के लिये तीन बातो की आवश्यकता होती है। शिक्षा (education) प्रशिक्षण (training), और व्यावहारिक अनुभव (pratical experience)। हर अच्छे रचनात्मक कार्य के लिये ये जरूरी है। अत विश्व मे एक सभ्य मानव समाज के निर्माण के लिये भी ये तीनों बातें जरूरी हैं। लेकिन आर्य समाज को छोड कर दुनिया में अन्य किसी भी सस्था के पास ऐसी योजना नहीं है। आर्य समाज के दस नियम इसी योजना के अन्तर्गत बनाये गये हैं। नियम 1, 2 और 3 शिक्षा सम्बन्धी योजना की ओर मार्ग दर्शन करते हैं। नियम 4,5, 6, 7, 8, 9 और दस व्यवहार के प्रशिक्षण के लिये हैं। आर्य समाज के अधिवेशन तथा सगठन के कार्यों में सक्रिय भाग लेना व्यावहारिक अनुभव के लिये जरूरी है। अर्थात आर्य समाज के सदस्य, कार्यकर्ता और प्रचारको मे ऐसे व्यवहार अपेक्षित है जो आर्य समाज की शिक्षा के अनुकूल हो। सत्य और न्यायप्रियता, परोपकार के लिये तत्परता, ये आर्यों के कुछ मुख्य लक्षण हैं। यदि आज आर्य समाज के सदस्यो में इन बातो की कहीं कुछ कमी दिखाई देती है, तो उसका कारण यही है कि लोग अपने पुराने हिन्दू सस्कारो से पूर्णतया मुक्त नही हुए हैं।

—एम० एस० 19/660 चेंबूर कालोनी, बम्बई-400074

संघर्ष भरे रोमांचक जीवन के संस्मरण

मैं आर्यसमाजी कैसे बना

—पिशोरीलाल प्रेम—

मेरा जन्म पाकिस्तान स्थित जिला पेशावर के एक गांव मे हुआ। मेरे माता पिता पौराणिक विचारों के थे। परन्तु प्रभु के अनन्य भक्त थे। माताजी अपने विश्वास के अनुसार प्रात साय बिना ईश्वर भजन किए भोजन नहीं करती थी। आर्य विचार हो जाने पर भी बिना सध्या किए अन्न ग्रहण नही करती थीं। पिता जी प्रात काल अपने विश्वास के अनुसार गुरु मन्त्र पढ़कर गीता का पाठ किया करते थे। शाम को मन्दिर में जा कर हनुमान जी की मूर्ति के आगे शीश नवाते, पैसा चढाते, और प्रार्थना किया करते थे। इस नियम को कभी नही तोड़ते थे। स्वय अस्वस्थ होने पर मुझे मत्था टेकने और पैसा चढाने के लिए भेजा करते थे। मन्दिर का पुजारी भी चाहे कितनी ही देर क्यों न हो जाए, चाहे वर्षा हो अथवा बर्फ पड रही हो, पिता जी के पहुचने से पूर्व मन्दिर का द्वार बन्द नहीं करता था।

पिता जी को ईश्वर से भी अधिक हनुमान जी की मूर्ति पर विश्वास था। यही प्रभाव मुझ पर भी पड़ा। मैंने हनुमान चालीसा कठस्थ किया, और मैं प्रति दिन उसका पाठ करने लगा। बचपन में मुझे भूत-प्रेत आदि का बहुत भय करता था। परन्तु मैंने पढ़ा था—'भूत पिशाच निकट नहीं आवें, महावीर जब नाम सुनावें', अत जब मुझे रात के अंधेरे मे कहीं बाहर जाना पडता तब मैं हनुमान जी के नाम को ही रटता रहता था। पिता जी को रामायण महाभारत आदि पढ़ने और सुनने में बहुत श्रद्धा थी। हमारे घर में प्रति दिन रात्रि के समय रामायण या महाभारत की कथा नियमित रूप से हुआ करती थी। बहुधा मैं ही पढ़ कर सुनाया करता था और पिता जी व्याख्या किया करते थे। इस प्रकार छोटी आयु मे ही, जब उर्दू की तीसरी कक्षा में ही था, मैंने पजाबी मे वाल्मीकि रामायण, महाभारत और भागवत पुराण कई बार पढ़ लिया था। हिन्दी सीख लेने के पश्चात तुलसी रामायण भी मैंने कई बार पढ़ी। अच्छी प्रकार न समझते हुए भी पुण्य का लोभ तो था ही। गांव के कई वृद्ध पुरुष मुझे "भगतजी" कहा करते थे। रामायण भागवत आदि पढ़ना, नियमित रूप से मन्दिर जाना, व्रत रखना, पौराणिक मान्यताओ जो जितना भी मैं समझ सकता था उनके अनुसार विश्वास और आचरण करने के कारण मुझे भक्त समझा जाता था। भागवत पुराण में रासलीला आदि की बातो को पढ़ते हुए मैं सशय में पड जाता था। मैंने एकदिन पिताजी से पूछ ही लिया कि 'भोग' क्या होता है। उन्होंने टालने के लिए बताया कि जब स्त्री और पुरुष इकट्ठे मिलकर भोजन कर लेते हैं तो उसे भोग कहते हैं। इससे मेरा सशय और बढ़ गया। परन्तु मैं चुप रहा।

मांस भक्षण का त्याग

उन्ही दिनों एक सन्यासी स्वामी चन्द्र प्रभु जी हमारे गाव मे पधारे। वे लोगो से मांस खाना छुडा कर वैदिक सध्या सिखलाया करते थे। वेद मन्त्रो से यज्ञ भी करवाते थे। वे यह प्रचार आर्य समाज के नाम से नहीं करते थे। गांव के लोग आर्य समाज के नाम से अनभिज्ञ थे। मेरे मन में स्वामी जी के लिए श्रद्धा उत्पन्न हुई और मैं उनके पास जाने लगा। उन्होने मुझ से मास न खाने का सकल्प करा लिया, और वैदिक सन्ध्या सिखा दी। जिसे नियमित रूप करने लगा।

लेखराज जी से सम्पर्क

पिताजी के देहावसान के समय मेरी आयु लगभग पन्द्रह वर्ष थी। मुझ से बडे भाई की आयु अठारह वर्ष, और उनसे बडे भाई की बाईस वर्ष के लगभग थी। हमारे आदरणीय मामाजी जो बटखेल नामक गाव मे रहते थे हम तीनो भाइयो और हमारी माताजी को बटखेल ले आए। हम उनके सरक्षण में अपना कारोबार करने लगे। मामाजी के भतीजे महाशय लेखराज भी बटखेल में ही रहते थे। सम्बन्धी होने के साथ साथ वह मेरे मित्र भी थे। मुझे आर्य समाज की पुस्तकें पढ़ने के लिए देते रहें। एक बार मुझे अपने साथ आर्य समाज मरदान के वार्षिकोत्सव पर भी ले गए। उत्सव का मुझ पर अत्यधिक प्रभाव पडा। इसके पश्चात मैं धीरे धीरे आर्य समाजी बनने लगा।

हिन्दी और उर्दू में मैंने आर्य समाज की बहुत सी पुस्तकें पढ़ी। वेद भाष्य के के अतिरिक्त महर्षि दयानन्द के समस्त ग्रन्थ तथा महर्षि की जीवन चरित्र भी पढ़ा। जो पुस्तक समझ मे न आती उसे भी पढ़ लिया करता था। परन्तु मेरे मामाजी आर्य समाज के विरोधी थे। कठिन परिस्थितियो में मामाजी ने सरक्षण देकर हमारी सहायता की जिसके लिए मैं उनका अत्यन्त आभारी हू। आयु पर्यन्त उनकी उदारता को नही भूला सकता। पर आर्य समाज के प्रति उनके विरोध को भी नहीं भूल सकता। मैं उनसे छिप कर आर्य समाज की पुस्तकें पढा करता था इन पुस्तकों के पढ़ने से मुझे ऐसा अनुभव होता था, कि जैसे मैं गहरे अधकार से प्रकाश की ओर आ रहा हू। -

प्रचार कार्य

जब मेरे विचारों मे दृढ़ता आई और मैं आर्य समाज का श्रद्धालु बना, तब मैंने और महाशय लेखराज जी ने बटखेल में किराये पर कमरा लेकर उसमें आर्य समाज की स्थापना की। प्रचारार्थ आर्य समाज की बहुत सी पुस्तकें, साप्ताहिक पत्र, आर्य वीर, आर्य जगत्, आर्य मुसाफिर, प्रकाश आदि मगवा कर बाटते रहे। उस समय आर्य समाज के केवल आठ सभासद थे। महाशय लेखराज जी प्रधान और मैं मन्त्री था। परन्तु वास्तव में हम दोनों हीं समाज के सब कुछ थे। प्रधान, मन्त्री, कोषाध्यक्ष, पुस्तकाध्यक्ष, पुरोहित, भजनीक, चपरासी और भगी तक का काम भी हम ही किया करते थे। हम बडी श्रद्धा से समाज में झाडू लगाया करते थे। एक बार समाज के उत्सव पर जो प्रचारक आए, उनमे से एक महानुभाव बीमार हो गये। वे शौच के लिए बाहर जाने मे असमर्थ थे। बहुधा उन गावों मे भगी नही हुआ करते थे। तब मैंने स्वय भगी का काम किया और स्थान की सफाई की।

आर्य समाज की स्थापना के पश्चात् सनातन धर्मियों ने सनातन धर्म सभा की स्थापना भी की। आर्य समाज का वार्षिक उत्सव हुआ। सनातन धर्म सभा ने भी उत्सव किया। उन्होने ब्रह्मचारी रघुनाथ आदि को बुलाया। उनका प्रचार क्या था, केवल आर्यसमाज का विरोध करना था। उत्सव के पश्चात् उन्होंने अपने एक साप्ताहिक पत्र मे आर्य समाज के विरोध मे एक लेख छपवाया। मैंने भी 'आर्य वीर' साप्ताहिक लाहौर में उन के लेख का यथा योग्य उत्तर दिया। एक अन्य लेख मे ब्रह्मचारी जी द्वारा दिए गए एक व्याख्यान का खण्डन भी किया। समाचार पत्र में लेख देने का यह मेरा प्रथम अवसर था। मेरे इन लेखों से सनातन धर्म सभा बट० खेल में हल चल मच गई। परन्तु उत्तर देने का साहस किसी ने नहीं किया।

मैं स्वर्गीय प० मेहरचन्द जी शर्मा सम्पादक 'आर्य वीर' साप्ताहिक का अत्यन्त आभारी हू जिन्होने मेरे प्रथम लेखों को 'आर्य वीर' में प्रकाशित करके मुझे उत्साहित किया। यदि वे मेरे इन लेखों को प्रकाशित न करते तो उन के पश्चात् जो मेरे और लेख समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए, और जो छोटी-छोटी पुस्तकें मैंने लिखीं, यह कार्य मैं कदापि न कर सकता। उस समय 'आर्य वीर' मे, म० हसराज जी, प० बुद्धदेव विद्यालंकार, पं० रामचन्द्र जी देहलवी, प० त्रिलोक चन्द्र जी शास्त्री, आचार्य प्रियव्रत जी आदि आर्य समाज के अनेक विद्वानों के लेख, प्रकाशित होते थे। उसी आर्य वीर' में मुझ जैसे साधारण और अल्पायु युवक के लेख भी प्रकाशित होते रहे।

दूसरी बार सनातन धर्म सभा बटखेल ने अपने उत्सव पर चुन्नीलाल जी शास्त्री आदि को बुलवाया। उन्होंने अपने व्याख्यान मे आर्य समाज का बहुत गालियां दी और समाज का अर्थ 'बक-रियो का समूह' किया। मैंने उनके व्याख्यान के बीच मे ही उन्हें टोका और गालिया देने से रोका। इस पर सनातन धर्म सभा के मन्त्री ने कहा—हम आपके उत्सव मे हस्तक्षेप नहीं करते, फिर आप हमारे उत्सव में ऐसा क्यों करते हैं? मैंने उत्तर दिया कि हम अपने व्याख्यानों में गालिया नहीं दिया करते। इस प्रकार मेरे हस्तक्षेप से जनता पर उनके प्रचार का जो बुरा प्रभाव पडता, वह नहीं हो सका।

घर छोडने के लिए तैयार हो गया

एक दिन मामाजी ने मुझे से स्पष्ट शब्दों में कहा कि या तो आर्य समाज छोड़ दो, अथवा घर छोड दो। मैंने 'अच्छा' कहा और चुप चाप सूट केस में कपड़े रख कर बिस्तर बांधा और किसी दूसरे नगर को जाने के लिए उद्यत हो गया। भाइयों ने मुझे समझाया, नाराज भी हुए, उदास भी हुए, माता जी भी रोने लगीं। परन्तु मैं अपने विचार पर दृढ़ रहा। जब मामाजी को यह विदित हुआ तो वे मेरे पास आये और बडे प्रेम से बोले—'आर्य समाज भले ही मत छोडों परन्तु कठोर शब्दो में खण्डन मत किया करो।' इस प्रकार बहुत समय तक बात चीत होती रही मुझ जाने से रोक लिया। मामाजी तो मेरा विरोध करते ही थे, परन्तु मेरे घर के सदस्य आर्य समाज के कारण मेरा विरोध करने लगे। मेरे भाई ने कहा मैं आर्य समाज से एक मुसलमान को अच्छा समझता हू। ईश्वर की कृपा से अब वही भाई स्वय आर्यसमाज का भक्त बना हुआ है। माताजी भी जब तक जीवित रहं, सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय करती रही इस समय तो मेरे परिवार के सभी सदस्य आर्य समाजी हैं।

भोजन में विष

बटखेल आर्य समाज के एक प्रतिष्ठत सभासद् वैद्य कृष्णदत्त जी थे। उन का भोजन होटल से आया करता था। एक दिन जब उन के लिए भोजन आया तो चुपडी हुई रोटी पर कुछ छोटे-छोटे कण चमकते हुए दिखाई दिये। ध्यान से देखने पर वैद्य जी को मालूम हुआ कि यह पारा है। उन्होंने मुझे और महाशय लेखराज जी को बुलाया। तब हमने होटल के मालिक को एकान्त में बुलाया।

→

→

उसे धमकाया और पुलिस का भय दिखलाया। वह थर-थर कांपने लगा। और अपना अपराध स्वीकार करते हुए, हमारे पांव पर गिर कर क्षमा याचना करने लगा। उसने बताया, मैंने किसी के बहकावे में आकर ऐसा घृणित कार्य किया है। हमने अपने गुरु महर्षि दयानन्द जी का अनुकरण करते हुए विष देने वाले को भी क्षमा कर दिया। उसके पश्चात् वह आर्यसमाज के सत्संग में भी नियमित रूप से आने लगा।

बटखेल से आठ मील की दूरी पर थाना नाम के एक गांव मे हमने एक नई आर्यसमाज की स्थापना की। हमने वार्षिकोत्सव के लिए विज्ञापन छपवा कर बांटे। वहां के सनातन धर्मी भाइयो ने परस्पर परामर्श करके आर्य समाज के उत्सव का बहिष्कार कर दिया। हमने इस वर्ष उत्सव अति उत्साह पूर्वक मनाया। मैं उत्सव के दिनो अपनी दुकान का कार्य छोडकर उत्सव के कार्य में लगा रहा। इस उत्सव पर हमने स्वामी चेतना नन्द जी स्वामी सदानन्द जी, एव महाशय शमशेर सिंह जी को आमन्त्रित किया। मैजिक लालटेन का प्रबन्ध भी किया। उत्सव मे बहुत रौनक रही। स्त्री और पुरुषो से समाज भर गया सिक्ख भाई बडी सख्या मे सम्मिलित हुए। जो कट्टर सनातन धर्मी थे वे आर्य समाज मन्दिर के भीतर तो नहीं, आए, परन्तु बाहर दीवारो के साथ खडे हो कर देखते और सुनते रहे। उत्सव सफल रहा। उत्सव के पश्चात् मुझे एक प्रतिष्ठित सज्जन ने बधाई देते हुए कहा कि घोर विरोध के होते हुए भी इस छोटे से गांव में आप के उत्सव की सफलता आप के पुरुषार्थ का ही फल है।

सामाजिक बहिष्कार

अपने गांव में हमें पीटने का कई बार प्रयत्न किया गया। परन्तु सर्व रक्षक भगवान हमारी रक्षा करते रहे सनातन धर्मी भाइयों ने मेरा और महाशय लेखराज जी का सामाजिक बहिष्कार कर दिया। बिरादरी वालो ने स्पष्ट कह दिया कि हम आपके साथ कोई रिश्ता-नाता नहीं करेंगे। मेरे घर वालो ने मुझे समझाया कि आर्य समाजी तो बने रहो, परन्तु आर्य समाज का प्रचार कार्य त्याग दो। अन्यथा आयु पर्यन्त कुंवारे रहोगे। मैंने उत्तर दिया—'मैं आर्य समाज का प्रचार छोड दू, यह नहीं हो सकता। विवाह न होना साधारण बात है। मैं तो आर्य समाज के लिये अपना जीवन तक न्यौछावर करने के लिए तैयार हू।' तात्पर्य यह कि मुझे घोर विरोध का सामना करना पडा। डराया गया, धमकाया गया, प्रलोभन दिए गए, सामाजिक बहिष्कार किया गया, पीटने का यत्न किया गया और जब तक मैं अपने गांव मे रहा मेरा विवाह नहीं हो सका। प्रचार कार्य की धुन से कारोबार में घाटा हुआ। लम्बे समय तक बीमार रहने के पश्चात् बड़े भाई का देहान्त हो गया। निर्धनता और बेकारी से तग आकर बटखेल छोड कर रावलपिंडी आना पड़ा। परन्तु ईश्वर की अपार कृपा से इन सारे कष्टों के होते हुए भी मेरी आर्य समाज के प्रति लगन नहीं छूटी। रावलपिण्डी में भी आर्य समाज का अन्तरग सभासद और आर्य वीर दल का नगर नायक रह कर समाज की सेवा करता रहा। रावलपिंडी में आर्य वीर दल का कार्य करते हुए रामनाथ जी सहगल मेरे निकट सम्पर्क में आए। आर्य वीर दल के कार्य मे मुझे इनसे अत्यधिक सहयोग प्राप्त हुआ। आर्य वीर दल के प्रत्येक कार्य में वे मेरे साथ-साथ रहते थे। इस प्रकार एक साथ कार्य करते हुए हमारा परस्पर स्नेह बढ़ा और हम घनिष्ट मित्र बन गए। उनमे कार्य करने की भारी लगन और योग्यता थी। इस समय भी वे देहली मे आर्य समाज के अनथक कार्य करते हैं। वे आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के महामत्री हैं। अन्य कई आर्य सस्थाओ के मन्त्री अधिकारी और सहयोगी हैं। उनका सारा समय आर्यसमाज समाज के कार्यों में ही व्यतीत होता है। वे ईर्ष्या द्वेष और अभिमान से रहित, निस्वार्थ भावना से कार्य करते हैं। प्रभु उनको चिरजीव रखे ताकि वे इसी प्रकार आर्य समाज का कार्य करते रहें।

पाकिस्तान बनने के पश्चात्

पाकिस्तान बनने के पश्चात् मैं नाहन जिला सिरमौर हि० प्र० मे आ गया। मेरे पास केवल आठ सौ रुपया था जिससे मैंने बिसाती काम का आरम्भ किया। नाहन में मुझे विदित हुआ कि यहां आर्य समाज है, परन्तु उसमे ताला रहता है, साप्ताहिक सत्सग भी नहीं होता। तब श्री ओम्प्रकाश जी, श्री सीयराम जी, (ये दोनो पेशावर से यहां आ गए थे) और मैंने आर्य समाज के पुराने अधिकारियो से मिलकर पुनः आर्य समाज का कार्य आरम्भ किया। साप्ताहिक सत्सग नियमानुसार होने लगे। वार्षिक उत्सव भी अच्छी प्रकार से हुआ। कुछ समय के पश्चात् हम तीनो नाहन छोडकर अन्य स्थानो पर चले गए। परन्तु नाहन में आर्यसमाज का कार्य सुचारू रूप से चलता रहा। अवकाश प्राप्त जिलाधीश श्री चुन्नीलाल जी कपिला, और श्री लक्ष्मण दास जी वकील के पुरुषार्थ से आर्य समाज का नया भवन भी बन गया।

स्वर्गीय प० मेहरचन्द जी शर्मा, साप्ताहिक आर्य वीर के सम्पादक, महर्षि दयानन्द के सच्चे अनुयायी और सिद्धान्त प्रेमी थे वे तन-मन-धन से 'आर्य वीर' द्वारा वैदिक सिद्धान्तो की रक्षा करते थे और आर्य समाज का सन्देश फैलाते थे। पाकिस्तान बनने के पश्चात् वे लाहौर से जालन्धर आ गए और वहा से 'आर्य वीर' का प्रकाशन आरम्भ कर दिया। मेरे आर्य समाजी बनने में स्वर्गीय शर्मा का भी भारी योगदान है। मैं जब तक अपने गांव मे रहा 'आर्य वीर' में मेरे लेख प्रकाशित होते रहे। परन्तु रावलपिंडी आकर आर्य वीर दल के कार्य में अधिक व्यस्त रहने के कारण लेख लिखना बन्द हो गया। भारत के स्वतन्त्र होने पर मैं नाहन आया और नाहन मे रेणुका जिला सिरमौर हि० प्र० में आ गया। यहा भी जब समय मिलता मैं 'आर्य वीर' के लिये एक-आध लेख लिख दिया करता था। कुछ समय के पश्चात् प० मेहरचन्द जी का निधन हो गया। तब आर्यवीर का प्रकाशन भी बन्द हो गया। प० के निधन से आर्य जगत् को और खास तौर से मुझे भारी आघात पहुचा।

इस समय रेणुका मे पांच आर्य परिवार हैं। यहा आर्य समाज मन्दिर नहीं है। हमारे घरो मे बारी बारी से साप्ताहिक सत्सग हवन यज्ञ आदि हुआ करता है। समय-समय पर हम यहा आर्य उपदेशको को बुला कर प्रचार भी करा लिया करते हैं। कुछ समय के पश्चात् मैंने पुनः लेख लिखने का कार्य आरम्भ किया। उस समय 'आर्य जगत्' साप्ताहिक जालन्धर से प्रकाशित होता था। मेरे कई लेख उसमें प्रकाशित हुए। दो चार लेख 'आर्य मित्र' लखनऊ मे भी प्रकाशित हुए। मैंने छ पुस्तकें—'ईश्वर प्रार्थना', 'भूत प्रेत' 'प्रेम गीतांजली', 'चरित्र निर्माण मे रुकावटें', 'राम-कृष्ण-दयानन्द' 'विष्णु भगवान के चौबीस अवतार' लिखकर प्रकाशित कराई। भूत प्रेत, नाम की पुस्तक इतनी लोकप्रिय हुई कि इसके चार सस्करण हो गए। एक और पुस्तक 'देवी देवता', भी लिख ली है। यह भी शीघ्र प्रकाशित होगी, ऐसी आशा है।

वर्तमान समय मे आर्यजगत् साप्ताहिक दिल्ली से प्रकाशित हो रहा है। आदरणीय क्षितीश जी जो प्रमुख पत्रकार और माने हुए लेखक हैं, इसके सम्पादक हैं। उन्होने भी मुझे उत्साहित किया है। मैं इसके लिए उनका कैसे आभार व्यक्त करू? प्रभु मुझे सामर्थ्य दे कि मैं इसी प्रकार यथा शक्ति आर्य समाज की सेवा करता रहू।

पता—पा० ददाहू [रेणुका]
हिमाचल प्रदेश

नारी जागरण का ...

(पृष्ठ 1 का शेष)

कम काम करने पर अधिक मेहनत तथा मजदूरी का काम माना जाता है। मर्दों के काम की अपेक्षा औरत के काम की इज्जत और मजदूरी भी कम है।

(ग) चाहे खेत हो चाहे खदान हो, दूकान हो या कारखाना, जहां कही मशीनीकरण और आधुनिकीकरण होता है वहा-वहा मर्दो का कब्जा पहले हो जाता है। और औरत को अपेक्षाकृत शारीरिक श्रम के काम मे धकेल दिया जाता है।

(घ) काम काजी औरत की जो बुनियादी जरूरतें हैं उसकी ओर कोई ध्यान नहीं देता है। जैसे उन्हे प्रसव अवकाश मिलना चाहिए, छोटे बच्चो के लिये पालनगृह, दोपहर का भोजन, बीमार होने पर छुट्टी, शौचालय आदि की सुविधा और रिटायर्मेंट की सुविधा आदि।

कि हर औरत को उसके घरेलू काम के बदले और जो कल्याणकारी सुविधाए उसे मिलनी चाहिए उनके बदले विशेष मजदूरी कम से कम 50% अतिरिक्त दी जाय। औरतो को दी गई तमाम मजदूरी का खर्चा खेत की जिन्सो के दाम तय करने मे लागत के रूप में जोडा जाय।

प्रस्ताव (2)

पहले जमाने मे कुछ बिरादियों के लोग लडकी पैदा होते ही उसका गला घोट कर मार डालते थे। लेकिन अब विज्ञान ने ऐसे यन्त्र बना दिये है कि गर्भ मे भ्रूण के लडका या लडकी होने का पता लगाया जा सकता है। आज इसका दुरुपयोग हो रहा है। आज कल मां-बाप बहुत बडी सख्या मे यदि लडकी होने वाली हो तो जन्म से पहले गर्भपात के द्वारा उसकी हत्या की जा रही है। अकेले बम्बई महा नगर मे इस प्रकार 50 हजार भ्रूण हत्यायें हुई हैं। अब यह बीमारी उपनगरो और छोटे शहरो तक पहुच रही है। इस पैशाचिक व्यापार से डाक्टरो का एक वर्ग लखपति और करोडपति बनता जा रहा है।

इस लिये देश में जितनी भी गर्भस्था शिशु परीक्षण केन्द्र हैं उन पर रोक लगाई जाय। जिस तरह का कानून महाराष्ट्र में प्रस्तावित है वैसे ही कानून पूरे देश के लिये बने।

प्रस्ताव (3) परिवार मे बच्चे के लालन-पालन पढ़ाई लिखाई आदि मे लडका और लडकी मे कोई भेदभाव नहीं बरता जावेगा। हरियाणा सरकार का धन्यवाद है कि उसने लडकियो के लिये हाई स्कूल तक नि शुल्क शिक्षा प्रदान की है। यह सुविधा आगे बढकर एम०ए० तक की जानी चाहिए और लडकियो को विभिन्न स्तरो पर 50% आरक्षण और प्राथमिकता मिलनी चाहिए।

प्रस्ताव (4) दहेज समाज का कलंक है और नारी जीवन के लिये सबसे बडा अभिशाप है। हाल ही मे कानपुर में तीन शिक्षित बहिनो द्वारा की गई सामूहिक आत्महत्या मे यह और स्पष्ट हो गया है। सभी बहने यह सकल्प लेती है कि अपने बेटे और बटियो की शादी में हम इस दहेज के दानव को हरगिज स्थान नही देंगे।

आर्य समाज के लिए चुनौतियां ही चुनौतियां

—श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती—

आज से लगभग 111 वर्ष पूर्व महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की थी। इसके पीछे उनके त्याग और तपस्या की लम्बी कहानी है। महर्षि ने पहले स्वयं गुरु विरजानन्द के चरणों में बैठकर वैदिक सिद्धान्तों का गहन अध्ययन और चिन्तन किया। जब वे स्वयं इन सिद्धान्तों की मौलिकता और चिरन्तन सत्यता से आश्वस्त हुए उसके बाद ही इन सिद्धान्तों के प्रचार एवं प्रसार के कार्यक्षेत्र मे उतरे।

उन्नीसवीं सदी के आरम्भ मे जब महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ, हमारा देश विनाश के दलदल मे बुरी तरह फँसा हुआ था। भारत का हिन्दू समाज धीरे-धीरे राजनीतिक और मानसिक रूप से अंग्रेजों का गुलाम होता जा रहा था। एक ओर राजनतिक दासता, और दूसरी ओर धार्मिक भ्रष्टाचार ने उसे पंगु बना दिया था। अबलायें अशिक्षा, बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह आदि की चक्की मे पिसकर करुण विलाप कर रही थीं। युवावर्ग सत्य से भटक कर मत-मतान्तरों से दिग्भ्रमित हो किंकर्त्तव्यविमूढ़ होता जा रहा था। हिन्दू जाति मे छूआछूत का विष फैलकर उसे विनाश की ओर ढकेल रहा था। स्वार्थी अर्थलोलुप और मदान्ध मठाधीशों ने वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था को लेकर अर्थ का अनर्थ मचा रखा था। देश की ऐसी दुरवस्था के समय ही परमात्मा ने हिंदू जाति को 'अन्धकार से ज्योति की ओर, मृत्यु से अमरत्व की ओर' ले जाने के लिये ऋषि दयानन्द को इस भारत भूमि पर भेजा। उन्होने अनुभव किया कि हिन्दू जाति को इस दुरवस्था से निकालने के लिए यह परमावश्यक है कि उसे सर्वप्रथम वैदिक सिद्धान्तों की सत्यता से परिचित कराया जाय। जब तक असत्य पर सत्य की विजय नहीं होगी, इसका उद्धार होना असम्भव है। इस कार्य को पूरा करने के लिए उन्होने बड़े परिश्रम से ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, वेदभाष्य, संस्कार विधि और अपना सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' लिखा। इस ग्रन्थ मे जैसा कि इसके नाम से ही परिलक्षित है, स्वामी जी ने वैदिक सिद्धान्तों के सार-तत्व को भारत की जनता के समक्ष उपस्थित किया। उन सिद्धान्तों की मूल सत्य भावनाओं को प्रकाशित किया। मानव-जीवन का शायद ही कोई पक्ष बचा होगा जिस पर स्वामी जी के इस ग्रन्थ मे प्रकाश न डाला हो। सत्यार्थ-प्रकाश को यदि हम न केवल हिंदू जाति, बल्कि समस्त मानव जाति का पथ प्रदर्शक कहे तो कोई अत्युक्ति नही होगी।

स्वामी जी ने अपने मन्तव्यों के प्रचार एवं प्रसार के लिए देश में घूम-घूमाकर अपने व्याख्यानों, शास्त्रार्थों और प्रवचनों के द्वारा जनता का सही मार्ग दर्शन किया। इस कार्य मे उन्हे अनेक कठिनाइयों और समाज मे घुसे स्वार्थी तत्वों की दुरभिसंधियों का सामना करना पड़ा। लेकिन उन्होने कभी हिम्मत न हारी। सत्य के प्रचार और असत्य के खण्डन से वे कभी पीछे नहीं हटे। गुरु विरजानन्द को दक्षिणा मे दिये हुए अपने वचन को पूरा करने में वे प्राण प्रण से लगे रहे। अन्ततः ऋषि का श्रम सफल हुआ जनता ने वेदों के सत्य अर्थ को पहचाना। अनेक कार्यों को आगे चलाने के लिए ऋषि ने एक सगठित समाज की आवश्यकता का अनुभव किया और अन्तत सन् 1875 ई० में, बम्बई में इस प्रकार के समाज की, जिसका नाम उन्होने 'आर्य समाज' रखा था, स्थापना की। महर्षि के प्रयास और उनके समर्थकों के सतत प्रयत्न से धीरे धीरे देश के सभी भागों में आर्य समाज की स्थापना होने लगी और उसने एक आन्दोलन का रूप ले लिया

शिक्षा का महत्व

आज का यह दिन बड़ा महत्वपूर्ण है। उतना ही महत्व है जितना एक व्यक्ति के जीवन में अपने जन्मदिवस का होता है। इस अवसर पर वह अपने कर्मों का लेखा जोखा अपने मन में तैयार करता है, विगत जीवन में उसने क्या किया, क्या खोया, क्या पाया, अब क्या कर रहा है और आगे क्या करना है? आज हमे भी आर्य समाज के बारे में यही सोचना है। विगत सौ वर्षों से अधिक समय में आर्य समाज ने मानव-समाज, हिन्दू जाति और देश के पुनरुत्थान के लिए बहुत कुछ कार्य किया है। स्वामी दयानन्द सरस्वती युगद्रष्टा थे। उन्होंने देख लिया था कि समाज और देश को अज्ञान के अन्धकार से बाहर निकालना है, तो समाज के सभी वर्गों को शिक्षित करना आवश्यक होगा। इसी कारण से उन्होने स्त्री-शिक्षा पर अधिक बल दिया। स्त्री जाति मनुष्य जाति का आधा भाग हैं वे जानते थे कि यदि हमारे समाज का यह अर्द्धांग अविद्या और अज्ञान के अन्धकार में डूबा रहा तो इस समाज का उद्धार होना असम्भव है। उनके प्रयत्नों से जगह-जगह कन्या पाठशालाओं और स्कूलों की स्थापना हुई। युवाओं के लिए वैदिक प्रणाली के आधार पर गुरुकुल, तथा डी०ए०वी० स्कूल और कालेज खोले गए जहां अपनी प्राचीन भारतीय संस्कृति और परम्परा के अनुकूल शिक्षा की व्यवस्था की गई। स्वामी जी उस समय देश मे अंग्रेजों के द्वारा निर्धारित शिक्षा-पद्धति के विरुद्ध थे। लार्ड मैकाले ने भारतीयों के लिए जो शिक्षा-नीति बनाई थी, उसकी जड़ मे छिपी हुई अंग्रेजी की कूटनीतिक भावना को वे पहचान गए थे। अंग्रेज जानते थे कि यदि भारत को गुलाम रखना है तो भारत की जनता को उसके साहित्य संस्कृति और धर्म से काटना होगा। इसीलिए उन्होने स्कूल और कालेज के लिए ऐसी शिक्षा प्रणाली की योजना बनाई, जो इस देश के युवा वर्ग को पाश्चात्य साहित्य और संस्कृति के प्रति आकर्षित और प्रभावित कर सके। कारण भारत का बुद्धिजीवी एक बार यदि मानसिक रूप से गुलाम हो गया तो देश को राजनीतिक गुलामी मे जकड़े रहना कठिन नहीं होगा। खेद की बात है कि अंग्रेज अपनी इस कूटनीति चाल मे काफी हद तक सफल हुए।

महर्षि दयानन्द उनकी इस चाल को समझ गये थे, अतः उन्होंने हिन्दू जाति का पुनः वेदों की ओर लौटने का आवाहन किया और अंग्रेजी की बनाई हुई शिक्षा प्रणाली का खुला विरोध किया। देश की स्व-भाषा, स्व-राज्य और स्व-धर्म के प्रति प्रेरित करने का सतत प्रयत्न किया। आर्यसमाज और आर्यसमाज से सम्बन्धित शिक्षण संस्थाओं ने महर्षि के इस कार्य को पूरा करने में एक पुष्ट भूमिका निभाई।

जन्मना जाति का विरोध

आर्यसमाज के द्वारा अछूतोद्धार और शुद्धि के क्षेत्र में भी बहुत अच्छा काम हुआ है इसमें कोई संदेह नहीं। स्वामी जी ने जन्मजात वर्ण-व्यवस्था का घोर विरोध किया। उन्होंने सिद्ध किया कि ऐसी वर्ण व्यवस्था वेद सम्मत नहीं है। स्वार्थी पण्डितों और मठाधीशों ने वेद मन्त्रों की व्यवस्था करने में अर्थ का अनर्थ किया है। वे सब अमान्य हैं। ईश्वर ने मनुष्य-मनुष्य में कोई भेद नहीं किया। उसकी दृष्टि में सब एक हैं। इसलिए आर्यसमाज ने तथाकथित हरिजनों को सदा ही सवर्ण हिन्दुओं के समकक्ष माना और उनको समाज मे सम्मानित स्थान और मर्यादा प्रदान करने के लिए कठिन प्रयत्न किया। महर्षि के बाद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने हिन्दू जाति से बिछड़े और पिछड़े लोगों को पुनः हिन्दू समाज की पावन-धारा में लाने का जो प्रयत्न आजीवन किया वे आप सब जानते ही हैं। अपने इसी प्रयत्न में वे शहीद भी हो गए। आर्यसमाज के इतिहास में उनका नाम सदा अमर रहेगा।

पिछले सौ वर्षों के कार्यकाल में आर्यसमाज की उपलब्धियां कम नहीं कही जा सकती। उन पर हमें गर्व है। लेकिन कार्य क्षेत्र की विशालता को देखते हुए वे अल्प ही हैं। जितना कार्य आर्यसमाज को करना चाहिए था, उतना नहीं हुआ। इसके लिए हम स्वयं, जो अपने आप को महर्षि दयानन्द का वीर सैनिक कहलाने का दावा करते हैं, जिम्मेवार हैं। इस समय की अवस्था तो और भी खराब है। यह दुख की बात है कि जिस वटवृक्ष को महर्षि दयानन्द ने आज से सौ वर्षों से अधिक समय पहले इस भारत-भूमि पर आरोपित कर आजीवन अपने स्वेद कणों से सींचा था, जिसे स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, लेखराम, आदि ने अपना खून देकर परिपुष्ट किया, आज उसमे पतझड़ लगा हुआ है। सौ वर्षों मे तो इस वट-वृक्ष को फैलकर यही देश नहीं, विदेशों के भी एक बड़े भू-भाग को ढक देना चाहिए था। लेकिन आज जो कुछ हो रहा है वह इसके विपरीत है। इसका कारण क्या है?

कारण यह है कि आज हम स्वयं ही अपने मार्ग से भटक गए हैं। व्यक्तिगत, पारिवारिक और जातिगत स्वार्थों ने हमें अन्धा बना दिया है। हम अपने लक्ष्य को ही भूल गए है, तो आए कहां। आज हम सब, जो अपने-आप को 'आर्यसमाजी' कहते हैं, आपस में एक दूसरे से लड़ रहे हैं, कहीं कुर्सी के लिए तो कहीं अधिकार-लिप्सा के लिए। एक-दूसरे की टांग खींच कर उसे गिराने की चेष्टा कर रहे हैं। इस समय शायद ही कोई ऐसा सौभाग्यशाली आर्यसमाज या आर्य संस्था होगी, जहां इस प्रकार के अखाड़े न खुले हुए हो। हमारी संस्थाएं सामाजिक और धार्मिक धार्मिक कार्यक्रम भूलकर राजनीतिक उठा पटक का क्षेत्र बन गयी हैं। यह बड़ी शोचनीय स्थिति है। हम सबको मिलकर इस का हल ढूंढना होगा। हमे निश्चित कार्यक्रम निर्धारित करके उसपर पूर्ण निष्ठा से अमल करना होगा।

पहले स्वयं आर्य बनें

महर्षि दयानन्द ने हमे 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का नारा दिया था। 'समस्त विश्व को आर्य बनाओ' उनकी केवल मात्र परिकल्पना ही नहीं थी, एक ध्येय था। आज वही ध्येय, वही लक्ष्य हमारा है लेकिन विश्व को आर्य बनाने से पहले हमें स्वयं 'आर्य' बनना होगा। इसके लिए शुरुआत हमें अपने घर से ही करनी होगी। पहले तो हम यही समझें

(शेष पृष्ठ 9 पर)

आर्य समाज के लिए चुनौतियां

(पृष्ठ 8 का शेष)

कि हम क्या हैं ? हमारा धर्म क्या है ? इसके लिए हम सबको वैदिक सिद्धातो का ज्ञान होना परमावश्यक है और यह ज्ञान प्राप्त होगा वैदिक वाङ्मय के निरन्तर अध्ययन, मनन और चिन्तन से। तभी हम वैदिक धर्म की मूल भावना को समझ सकेंगे। हमारे जीवन में अध्ययन और चिन्तन के साथ साथ वैदिक कर्मकाण्ड का भी बड़ा महत्व है। यह हमें अच्छी तरह समझना चाहिए। प्रत्येक आर्य परिवार मे नित्य सन्ध्या, हवन यज्ञादि की व्यवस्था होनी चाहिए जिसमें परिवार के सभी सदस्य, आबाल वृद्ध और नारी सम्मिलित हो। इससे परिवार में, विशेषकर बच्चो और युवओं में, अपने धर्म के प्रति श्रद्धा और जिज्ञासा बढ़ेगी और आगे चलकर वे स्वय आर्यपथ के पथिक बनेंगे। एक बात और! हमे धर्म के विषय मे कट्टर होना चाहिए। कट्टरता से हमारा तात्पर्य मुसलमानो की धार्मिक मतान्धता से नहीं है। हम दूसरे धर्मों के प्रति सहिष्णु रहे, यह ठीक है, लेकिन अपने धार्मिक विश्वासो और सामाजिक मान्यताओ पर अडिग रहें। आज हममें से कितने हैं, जो वास्तविक रूप से वैदिक सिद्धांतों को पूर्ण रूप से मानकर उन पर आचरण करते हैं ?

चारित्रिक प्रदूषण

हमारी सरकार आजकल पर्यावरण के प्रदूषण से बहुत चिन्तित है। उससे बचने के लिए सरकारी वातानुकूलित कार्यालयो मे उपाय सोचे जा रहे हैं। मैं मानता हू कि मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए पर्यावरण का प्रदूषण हानिकारक होता है लेकिन उससे भी हानिकारक होता है समाज मे फैला चारित्रिक प्रदूषण। सरकार का ध्यान इसकी तरफ क्यो नही जाता ? देश भर में आज आर्थिक, नैतिक और सामाजिक भ्रष्टाचार महामारी की तरह फैला हुआ है। सरकार को इस प्रदूषण के निराकरण का भी उपाय सोचना चाहिए। बात लौटकर फिर वहीं—शिक्षा पर चली आती है। जब तक हमारे देश की शिक्षा-प्रणाली वैदिक सिद्धांतो पर आधारित नही होगी, तब तक देश मे भ्रष्टाचार का रोग पनपता रहेगा। यह निश्चित है। मानवजीवन का कोई भी ऐसा अंग नही है, जो वैदिक शिक्षा से अछूता रहा हो। साहित्य, कला, ज्ञान, विज्ञान, दर्शन, संगीत, गणित, भूगोल, खगोल, कौन-सा ऐसा विषय है, जिसका वेदो मे उल्लेख और आदेश नहीं है। यहा तक कि राजनीतिशास्त्र का भी वेदो मे विस्तृत वर्णन है। राजा कैसा हो, प्रजा कैसी हो, राजा-प्रजा के सम्बन्ध कैसे हों, एक देश के दूसरे राजाओं के साथ कैसे सम्बन्ध हों, यह सब "ज्ञान के भण्डार" वेदो में उल्लिखित है। फिर क्यों हमारी सरकार का ध्यान इसकी तरफ नहीं जाता? यदि नहीं जाता, तो हमे सरकार का ध्यान इस तरफ खींचना होगा। वेद सार्वभौम हैं, सार्वकालिक हैं, उनमें दी गई शिक्षायें मानव मात्र के लिए हैं, किसी जाति या वर्ग-विशेष के लिए नहीं। यह हमारे शिक्षाशास्त्रियो के लिए समझने और सोचने की बात है।

राजनीतिक प्रेरणा

महर्षि दयानन्द को हम अधिकाश मे एक समाजसुधारक के रूप मे ही जानते हैं। लेकिन वे एक राजनीतिज्ञ भी थे, यह बात शायद बहुत कम लोग जानते होगे। भारत के स्वतन्त्रता सग्राम में उन्होने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। सन 1857 ई० मे स्वतन्त्रता की प्रथम लडाई लडी गई। उसमे स्वामी जी ने जो योगदान किया, उसका विस्तृत वर्णन "आर्यसमाज के इतिहास" मे उल्लिखित है। इसके बाद भी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने जो स्वतन्त्रता-आंदोलन अंग्रेजी शासन के विरुद्ध आरम्भ किया था, उसमें भी आर्य नेताओं तथा आर्य जनता ने सक्रिय रूप से भाग लिया, और बहुत से आर्य वीरों ने तो उसमे अपने प्राणो की आहुति भी दी। हम इस सन्दर्भ मे सरदार भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, श्याम जी कृष्ण वर्मा, मदनलाल ढींगरा, रोशनसिंह आर्य, गेंदालाल दीक्षित तथा अन्य अनेक आर्यवीरों का नाम बडे गर्व से लेते हैं। उन्होने क्रान्तिकारियो की वेशभूषा में "ओम् वंदेमारम्" पार्टी बनाकर अंग्रेजी साम्राज्यवाद को जड से उखाड़ने मे अपने जीवन का उत्सर्ग कर दिया।

महर्षि दयानन्द ही पहले भारतीय थे जिन्होने अंग्रेजो के इस प्रचार का पर्दाफाश किया कि आर्य लोग मध्य एशिया से भारत आए थे। स्वामी जी ने इस झूठे प्रचार को चुनौती देकर घोषणा की कि आर्यों ने ही सर्वप्रथम आर्यभूमि को बसाया। सृष्टि का आदि स्थान त्रिविष्टप (तिब्बत) है और उसी भूमि पर चारो वेदो का आविर्भाव हुआ था।

दूसरा महत्वपूर्ण कार्य, जो भारत के इतिहास मे हमेशा अमर रहेगा, वह है महर्षि द्वारा वेद के शुद्ध स्वरूप का दिग्दर्शन और 'ईश्वरीय ज्ञान' के गौरवमय इतिहास का प्रकाशन। स्वामी जी ने कतिपय भारतीय और विदेशी विद्वानो द्वारा किए गए वेद-भाष्य को खुले रूप मे अस्वीकार करके घोषणा की कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है और वेद में सभी प्रकार के प्राचीन और आधुनिक विज्ञान का वर्णन है, जो ईश्वरीय ज्ञान मे आवश्यक है। उन्होंने सायण, महीधर, उव्वट तथा विदेशी विद्वानों के वेद-भाष्यों को अमान्य करके कहा कि वेद का विज्ञानमूलक भाष्य ही ईश्वरीय ज्ञान की पहचान है। उन्होने इसी आधार पर 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' लिखने का काय आरम्भ किया। योगीराज अरविन्द तथा अन्य विद्वानो ने महर्षि द्वारा रचित वेदभाष्य को ही वेद-द्वार मे प्रवेश करने की कुजी सज्ञा देकर स्वामी जी के वेदभाष्य की सराहना की है।

विदेशियो का कुचक्र

इस समय देश में विदेशी शक्तियो का एक कुचक्र बडी तेजी मे चल रहा है। पश्चिमी देशो से आए हुए ईसाई मिशनरी और पाकिस्तान-समर्थक मुसलमान मुल्ला-मौलवी, जिन्हें अन्य मुस्लिम देशों का भी आर्थिक सहयोग प्राप्त है, हिन्दू जाति के एक बडे अश, हरिजनो और आदिवासियो का धर्म-परिवर्तन करने मे जी जान से लगे हुए हैं। मीनाक्षीपुरम् की घटनाए अभी बहुत पुरानी नहीं पडी हैं। आर्यसमाज ने इस प्रकार के धर्म परिवर्तन का खुला विरोध किया है जिसके परिणामस्वरूप दक्षिण भारत में हरिजनों के धर्मान्तिरण पर रोक लगी है। लेकिन हमे इस विषय मे आगे भी सतर्क रहना होगा। यदि यह कुचक्र चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब अपने ही देश मे हिन्दू अल्पसख्यक हो जायेंगे। उस समय हिन्दू जाति की क्या दशा होगी वह कल्पनातीत है। आर्यसमाज को इस दिशा मे और भी अधिक सक्रिय बनना पडेगा। विदेशी शक्तियो द्वारा देश के नैतिक विभाजन की यह चाल बहुत गहरी है। हमें उनकी हर चाल को नाकाम करना होगा इसके लिए हमें सगठित होकर अपने आप को तैयार करना होगा।

यह काय बहुत कठिन नही है। केवल लगन और दृढ निश्चय की आवश्यकता है। हम अपने समस्त स्वार्थों और दुष्प्रवृत्तियो को छोड़कर महर्षि के बताए मार्ग पर चलते रहें। तभी हम अपना, अपने समाज और अपने देश का कल्याण का तथा महर्षि के "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का स्वप्न सरकार कर सकेंगे।

तीन प्रकार के जल

(पृष्ठ 2 का शेष)

अग भागो मे विकसित होते हैं। पुष्प सौर ऊर्जा से ही पुष्ट होते हैं। दूसरी है गाय। गौ नाम है सूय की किरणो का भी। गाय सूय की किरणो को अपने सींगो से व त्वचा से ग्रहण करती है। इसीलिए गाय को धूप पसन्द है। आजकल की नकली जर्सी गाय धूप से बचती है, अत वह गाय नही है। वास्तव में भस की सन्तान है। भैस के बीज से ही उसका निर्माण किया गया है। वर्ण सकरता से उत्पन्न सन्तान है। गाय का जल है—दूध व गो मूत्र। पुष्प का रस है—मधु या शहद। ये दोनो रस ही अमृत हैं। गोघृत व शहद अत्यन्त सौर ऊर्जा युक्त हैं। प्रदूषण को नष्ट करने वाले मूल द्रव्य हैं। पिण्ड और ब्रह्माण्ड दोनो को ही पवित्र करने का सामर्थ्य इनमें है। पिण्ड के लिए जठराग्नि मे और ब्रह्माण्ड में यज्ञ कुण्ड मे इसका सिंचन करने से अमृततत्व फैलता है। यह तीसरे प्रकार का जल है स्व जल या अमृत जल।

धन्य हैं हमारे ऋषिगण। इस अग्नि होत्र मे सारा ज्ञान विज्ञान पिरोकर रख दिया है। इसीलिए यज्ञ की महिमा आदि सृष्टि से चली आ रही है।

पाठक माने या न मानें, 21वी सदी मे हम कम्प्यूटर के युग मे प्रवेश न कर यज्ञ युग मे प्रवेश करेंगे। प्रदूषण इतना बढ रहा है कि आने वाले वर्षों मे भीषण रोगो का प्रकोप महामारी के रूप में बढ़ जाएगा। कैंसर जैसे विषैले रोग धरती पर फैल जायेंगे। तब कम्प्यूटर गले मे टागने से कुछ नही होगा। जीवित रहने के लिए सारे ससार में यज्ञ विधि का आरम्भ होगा।

यज्ञ विज्ञान को गम्भीरता से समझने की कोशिश कीजिए। इस पर वैज्ञानिक साधनो से अनुसन्धान कीजिए और यदि इसके परिणाम लाभप्रद दृष्टिगोचर हो तब इसे स्वीकार कीजिए और समस्त विश्व मे इसका प्रचार कीजिए।

हमारे देवगण प्राचीन ऋषि मुनि व हमारे पितर पूर्वज आय लोग जिस ज्ञान विज्ञान के माग पर चलते रहे हैं वही मेधा हमे भी मिले। आगे यही मत्र है जिस पर आगे विचार होगा।

पता—अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान, 4 5-753, सुरभिनिकुज, वेद मन्दिर, महर्षि दयानन्द माग, हैदराबाद-27

उपदेशक चाहिए

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा हि० प्र० के लिये, जिसका मुख्य कार्यालय डी०ए०वी० कालेज, कांगडा [हि०प्र०] है, एक उपदेशक की आवश्यकता है जो हिमाचल प्रदेश की आर्य समाजो मे वेद प्रचार कर सके। प्रार्थना पत्र प्रि० रमेश चन्द्र जीवन, प्रधान आर्य प्रा० प्र० उप सभा हि० प्र०, डी०ए०वी० कालेज कांगडा [हि०प्र०] को भेजें।

— रामनाथ सहगल सभा मंत्री

पत्रों के दर्पण में

ऋषिबोधांक

(1)

ऋषि बोधांक का प्रत्येक लेख अपना एक विशेष महत्त्व रखता है—स्वाध्याय-शील व्यक्ति आपके इस परिश्रम से सुन्दर सग्रहणीय सामग्री प्राप्त कर पाये हैं। एतदर्थ हार्दिक धन्यवाद। इस अक के कुशलता पूर्वक सम्पादन के लिये आपके परि-श्रम की सराहना करते हुए आपको बधाई देते हैं।—कुन्दन लाल आर्य 549/192, अर्जुन नगर, आलमबाग, लखनऊ-5

(2)

तीन अको की जगह आपने यह विशेषांक निकाला है वैसे तो इसमे 56 पन्ने होने से तीनों की पूर्ति हो जाती है मगर देखने से पता चला कि इसमे 38 पन्ने तो केवल विज्ञापन से ही भरे हैं केवल 18 पन्ने ही सामग्री के अर्थात् पढ़ने योग्य हैं इन विज्ञापनो से आपकी तो आय हो गई मगर हम जैसे ग्राहकों की तो हानि ही हुई और इससे भी अधिक दुख की बात यह है कि इन 38 पन्नो मे 24 पन्ने अंग्रेजी के हैं—रामेश्वर दयाल अग्रवाल (यज्ञमुनि) 145 आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर-249407

वर्दी में नेक टाई का प्रयोग

नेकटाई भारतीयता का प्रतीक नहीं है, न इससे किसी की काय कुशलता में कोई वृद्धि होती है। भारत को जब स्वतन्त्रता मिली तब से सरकारी अधिकारियों के लिए बन्द गले का कोट सरकारी पोशाक के लिए स्वीकार किया गया तथा भारत के सभी उच्च अधिकारी औपचारिक समय पर उस प्रकार के ही कोट पहनते हैं, नेकटाई नहीं लगाते। परन्तु ऐसा सर्वत्र नहीं हो रहा है। उदा-हरण के रूप मे गणतन्त्र दिवस के अवसर पर "अमर जवान ज्योति" के पास सभी बेंड वादक, तट रक्षक तथा अग रक्षक आदि नेकटाई पहने हुए थे, इसका दृश्य दूर-दर्शन पर भारत की जनता देख रही थी। अनुरोध है कि न केवल औपचारिक अवसरो पर अपितु सामान्य अवसरो पर भी सभी सैनिको, अर्द्ध सैनिकों तथा सरकार के अन्य कर्मचारियो द्वारा ऐसा ही वेश धारण किया जाना चाहिए, जिसमें नेकटाई शामिल न हो। एशिया के अन्य अनेक देश भी बन्द गले का कोट उपयोग मे लाते हैं तथा उनके उस वेश मे नेकटाई को कोई स्थान नहीं होता। भारत मे ऐसा न होना देश की प्रतिष्ठा को गिराने वाली बात होगी।—आचार्य गिरिराज किशोर विश्व हिन्दू परिषद्, बी-11, साउथ एक्सटेंशन, भाग 2, नई दिल्ली-11049

गायत्री जप-विधि

(1)

31 जनवरी वाले अक मे गायत्री मन्त्र जप की विधि वाले लेख के अन्तर्गत 6 स्थलो पर मुझको पौराणिक विचारधारा की गध आई है। कृपया समाधान करने का कष्ट करें। मेरी शकाओ के स्थलों का विवरण क्रमश इस प्रकार है—

(1) "देवता केवल देव वाणी या वेद वाणी को ही समझते हैं अन्य भाषा को नही।"

(2) "अगर विनियोग नहीं बोला गया तो मन्त्र की शक्ति घट जायगी।"

(3) "यह देवता जपकर्त्ता का हर समय भला करता है।" तथा "इसी प्रकार से गायत्री मे जो प्राथना की गई है उसको देवता का नाम लिये बगैर सफल नही कहा जा सकता।"

(4) गायत्री मन्त्र के जप से पूर्ण लाभ प्राप्त करने के लिये उसको बोलना आवश्यक है।

(5) "जप का लाभ एक महीने बाद ही दिखाई देता है।"

—बाबू लाल गुप्त बुद्धि भवन, चित्रगुप्त गज, लश्कर 4740015

(2)

'गायत्री मन्त्र जप की विधि" मे पृष्ठ 2 पक्ति 26 मे लिखा है 'देवता केवल देववाणी या वेद वाणी को ही समझते हैं अन्य भाषा को नहीं"—कृपया इसका स्पष्टीकरण करें। गायत्री मत्र के देवता के लिए यह अनभिज्ञता सब को समझ में नहीं आ रही है।—श्री बीरबल कडवासरा चौधरी फ्लोर मिल्स बीकानेर रोड सूरतगढ़ श्री गगानगर-335804

(3)

लेख में 3 मुख्य बातें लिखी हैं —

(1) जाप करने से पहले विनियोग अथवा मन्त्र का सवर्ग, ऋषि तथा देवता का नाम अवश्य बोलना चाहिये।

(2) यदि जाप करते 2 कोई व्यवधान हो जाय तो पूर्ण विनियोग फिर बोलना चाहिये।

(3) यदि कोई व्यक्ति मन्त्र का जाप न करके केवल उस के अर्थ का पाठ करे तो उसको कुछ फल प्राप्त नहीं होगा, क्योंकि देवता केवल देव वाणी या वेदवाणी को ही समझते हैं, अन्य भाषा को नहीं। लेखक के अनुसार आर्यसमाज मन्दिरों व अन्य सस्कारों में विनियोग के बिना किया हुआ गायत्री मन्त्रोच्चारण व्यर्थ है तथा सस्कृत से अनभिज्ञ व्यक्ति का मत्र के अर्थ का ध्यान करना विफल रहेगा। क्या अन्तर्यामी परमात्मा भगत के हृदय के भाव नहीं सुनता ? महात्मा आनन्द स्वामी बिना विनि-योग गायत्री मन्त्र से यज्ञ करवाया करते थे और कहा करते थे

तुलसी अपने राम को रीझ भजो या खीझ।
भूमि पडत उपजहिंगे उल्टे सीधे बीज॥

क्या लेखक इस विषय पर अधिक प्रकाश डालने की कृपा करेंगे ?

—रामचन्द्र थापर ए 85, ईस्ट आफ कैलाश, नई दिल्ली

ससद खेलानन्द झा को न्याय दिलाए

बिहार का ब्राह्मण खेलानन्द झा हरिजन युवती से अन्तर्जातीय विवाह करने की सजा आज भी भुगत रहा है। समाज व अपने अधिकारियो की प्रताड़ना झेलने के साथ-साथ उसे अतत नौकरी से भी वचित होना पडा। पहले उसे बिहार के मुख्यमन्त्री व मुख्य सचिव से न्याय और सहायता के कागजी आश्वासन मिले थे। अब उसे मिल रहा है दिल्ली पुलिस का कोप। खेलानन्द झा से कदम-कदम पर बार-बार अन्याय व धोखा हुआ है। यह स्थिति शर्मनाक है। खेलानन्द को अब अविलम्ब वास्तव में न्याय मिलना चाहिए।—प्रेमचन्द शर्मा, महासचिव, भारतीय लेखक मंच।

अल्प सख्यको की वृद्धि

मुझे मद्रास व बगाल के देहातो मे कभी कभी जाने का अवसर मिल जाता है। कई वर्षों पहले जब गया था तब वहां बहुत ही कम मुसलमान या क्रिश्चियन दिखाई दिए थे। थोड़े दिनो पहले जाने का अवसर मिला तो उनकी बड़ी तादाद देखने को मिली। भय, लालच और स्कूल कालिजों के माध्यम से इनकी सख्या इतनी बढ़ रही है कि ऐसा लगता है कि आगामी जनगणना मे बढकर ये बहुसख्यक बन सकते हैं और फिर हमें गुलामी का मुह देखना पडेगा।

इस विषय में हमारे सुझाव निम्न हैं —

शिक्षा प्रणाली में आमूल-चूल परिवतन हो। वेद की शिक्षा अनिवार्य हो। एक ईश्वर की मान्यता हो। ढोंग व गुरुडम प्रतिबधित हो। सब प्रकार के नशे शराब आदि बिल्कुल बन्द होने चाहिए। प्रत्येक नागरिक चरित्रवान बने, ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिए। गौ हत्या बिल्कुल बन्द होनी चाहिए। हमारा सब को सब के लिए समान आचार सहिता बने। राष्ट्र के नेता पहले अपना सुधार करें, शिक्षित व चरित्रवान् बने, तब जनता को कुछ ज्ञान का रास्ता दिखा सकते हैं अन्यथा कुछ भी लाभ नहीं होगा।—पुष्कर लाल आर्य 121, काटन स्ट्रीट, कलकत्ता-7

कैसे होगा उत्थान !

कहलाने वाले ब्राह्मण भी—अगरेजी पढ बने ईसाई।
धोती चोटी जनेऊ त्यागे—गले में बांधे टाई॥
ईसाइयों का नववर्ष जनवरी, इनके मस्तिष्क में छाया।
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा-भारत का—नया वर्ष भुलवाया॥
भूले राम कृष्ण के सवत्, तिथि विक्रमी बिसराई।
अब भारत में लिखे जाते—तारीख—सन्—ईसाई॥
वैदिक सस्कृति अध्यात्मवाद का—लुप्त हो रहा ज्ञान।
देश के जन मानस का—कैसे होगा फिर उत्थान ? ॥

—सुन्दर लाल आर्य—शोहरत गढ (बस्ती) उ० प्र०

आवश्यक सूचना

श्री महर्षि दयानद स्मारक ट्रस्ट, टकारा की रसीद न० 00201 से 00250 तक में तीन रसीदें न० 00234, 00235, 00236 मूल प्रति एव कार्बन प्रति सहित गुम हैं। अत उपरोक्त तीनो रसीद नम्बर रद्द किए जाते हैं। यह रसीद बुक श्री रामलाल जी मलिक को दान एकत्र करने हेतु दी गई थी। अत इन नम्बरों की रसीदें गुम होने के कारण उक्त क्रमांक रद्द माने जावें।

—रामनाथ सहगल मंत्री टकारा ट्रस्ट

ऋषि बोधोत्सव सम्पन्न

—आर्य समाज मोगरगा, लातूर में सम्पन्न उत्सव में श्री इन्द्रजीत गिरी, श्री बांकटराव मुळे तथा अन्नपा महाभुरे के उपदेश हुए।

—आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में महर्षि बोधोत्सव हर्षोल्लास के साथ प्रसिद्ध उद्योगपति श्री सत्यानन्द मुंजाल अध्यक्षता में मनाया गया।

—आर्य समाज प्रतापगढ़ में ऋषि बोधोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया इस अवसर पर देल्हूपुर में नवीन आर्य समाज की स्थापना की गई।

—आर्य समाज नमेदार गंज (नवादा द्वारा निकटवर्ती कई गांवो में ऋषि बोधोत्सव का सन्देश प्रभातफेरिया द्वारा युवको के सहयोग से सम्पादित हुआ।

—आर्य महिला समाज ग्रीन पार्क की ओर से 17,18,19 फरवरी 88 को ऋषि बोधोत्सव आचार्य रामकिशोर जी की अध्यक्षता में बडी धूमधाम से मनाया गया सामवेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति 15 फरवरी को सम्पन्न हुई आचार्य हरिदेव जी के प्रवचन हुए डी०ए०वी० स्कूल युसफ सराय और मस्जिद मोठ के छात्रो ने स्वामी दयानन्द के जीवन पर रंगारंग कार्यक्रम रखा। छात्रो को उदारता से सम्मानित किया गया।

—दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल के तत्वाधान मे आर्य समाज रामकृष्ण पुरम सै०-1 नई दिल्ली में उसके नव-निर्मित सत्संग भवन का पूज्य स्वामी जी आनन्द बोध सरस्वती जी द्वारा उद्घाटन एव ऋषिबोधोत्सव 21 2 88 को सम्पन्न हुआ।

—आर्य समाज की ओर से डी० ए० वी० माडल स्कूल में, ऋषि बोध उत्सव बडी धूम-धाम से मनाया गया। हवन यज्ञ-ऋषि महिला के गीत के अतिरिक्त श्री मेघराज श्री दशन कुमार सिमला उपमन्त्री, श्री अमरनाथ जी कोषाध्यक्ष ने महर्षि दयानन्द के जीवन अ॓ह उपकारो पर प्रकाश डाला। सभा सदों, अध्यापिकाओ और विद्यार्थियो ने उत्सव में भाग लिया।

—परम विदुषी बहिन सत्यवती जी शर्मा की अध्यक्षता में 26 2 88 को सम्पन्न हुआ। इसमे यज्ञ की ब्रह्मा श्रीमती शान्ति देवी अग्निहोत्री, आशा बहिन ध्वजारोहण श्रीमती शकुन्तला सागर ने किया।

आर्य कन्या गुरुकुल की छात्राओं द्वारा वेदगान और गीत, मण्डल की प्रतिनिधि बहिनो द्वारा भजन, गीत, काव्यापाठ तथा स्वामी जी के संस्मरण प्रस्तुत किए गए। अशोक विहार भजन मण्डली, कृष्णा चड्ढा, गुणवती सूद वेद सपरा तथा निधि द्वारा भजन गाए गए। वैदिक मिशनरी बहिनों का भव्य अभिनन्दन किया गया।

—आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान मे ऋषि बोधोत्सव पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं मे आर्य आदर्श विद्यालय आदर्श नगर की परिश्रमी, साहसी, अनुभवी प्रधानाचार्या श्रीमती पुष्पलता की देखरेख मे, छात्र छात्राओ ने बढ-चढ़ कर भाग लिया तथा कई प्रथम पुरस्कार जीतें। कोटला मैदान मे आयोजित विशाल सभा मे आर्य आदर्श विद्यालय आदर्श नगर के छात्रो द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम मे भाग लेने वाले सभी बच्चों को पुरस्कृत किया गया।

—फरीदाबाद 15 फरवरी 88 को डी० ए० वी० शताब्दी कालेज फरीदाबाद में ऋषि बोधोत्सव बडे उत्साह उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर स्थानीय आर्य समाज सै०-7 के पुरोहित प० ब्रह्मप्रकाश शर्मा 'वागीश' और स्वामी सुन्दर स्वरूप के ओजस्वी व्याख्यान हुए। ऋषि के मन्तव्यो, की परम्परा और अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने वाले तत्वो पर प्रकाश डाला गया। अपने अध्यक्षीय भाषण मे प्रिंसिपल बंसल ने सत पथ का अनुगमन करने की विद्यार्थियो को प्रेरणा दी। कार्यक्रम वैदिक यज्ञ से आरम्भ हुआ और अन्त मे प्रसाद वितरित किया।

आर्य समाज कानपुर का उत्सव

आर्य समाज मेस्टन रोड, कानपुर के 13 से 16 फरवरी तक हुए वार्षिकोत्सव में प्रतिदिन प्रभात फेरी के पश्चात् गायत्री महायज्ञ एवं यजुर्वेदपारायण यज्ञ होता रहा। 13 फरवरी सायकाल 4 बजे शोभा यात्रा निकाली गई। जिले के अधिकारी तथा नगर के सभी समाजो के अधिकारी आदि इसमे सम्मिलित हुये। उत्सव मे आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् एव वक्ता स्वामी यज्ञानन्द सरस्वती, प० शिवकुमार शास्त्री, प्रो० रत्नसिंह, प्रो० उत्तम चन्द 'शरर', प० रमेशचन्द्र शास्त्री, कुंवर महीपाल सिंह, सगीत रत्न डा० वेदपाल सिंह, प० देवी प्रसाद, श्री जेलेश्वर सिंह, आदि के प्रवचनों और भजनों के माध्यम से जनता में जागृति आई। —मन्त्री डा० विजयपाल शास्त्री

वैदिक मोहन आश्रम

जिस स्थान पर सवत् 1924 विक्रमी में कुम्भ मेले के अवसर पर महर्षि दयानन्द ने पाखन्ड खण्डिनी पताका गाड कर वैदिक धर्म का प्रचार एव भ्रम का उन्मूलन किया था उसी स्थान पर बडी धूमधाम से मोहन आश्रम का 122 वां वार्षिकोत्सव 6 से 10 अप्रैल 1988 तक मनाया जा रहा है। आश्रम के विशाल प्रागण में निवास भोजन की उचित व्यवस्था होगी।

प्रबन्धक—वी०आर० खन्ना, महामन्त्री—तिलक राज गुप्ता, सहमन्त्री—खेमचन्द मेहता, प्रधान—प्रो० वेदव्यास।

श्री राम जन्मोत्सव

रामनवमी के अवसर पर हिन्दू पर्व समन्वय समिति की ओर से 26-3-88 को श्री राम जन्मोत्सव रामलीला मैदान दिल्ली में धूमधाम से मनाया जा रहा है। समारोह से पूर्व नगर में शोभायात्रा निकाली जायेगी। इस सार्वजनिक सभा में प्रमुख धर्माचार्यों एव सन्तो तथा विद्वानों के विचार सुनने को प्राप्त होंगे।

शराबबन्दी के लिए प्रदर्शन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा ने 8-3-88 को प्रदेश के सभी जिला मुख्यालयों पर शराब बन्दी के लिए प्रदर्शन किए। इन प्रदर्शनो में हरियाणा के स्त्री-पुरुषो ने बडे उत्साह से भाग लिया।

दयानन्द सरस्वती जयन्ती उत्सव

दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार मंडल एव आर्य समाज, मालवीय नगर मे तत्वावधान मे 6-3-88 को महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती उत्सव श्री प्रेमसिंह चौहान कार्यकारी पार्षद के मुख्य अथितत्व मे मनाया गया। पूर्व सांसद श्री शिव-कुमार शास्त्री, डा० धर्मपाल आदि विद्वानो के भाषण तथा भजनोपदेश हुए। आर्य पब्लिक स्कूल का भी उसी दिन उद्घाटन किया गया।

चित्रकला प्रतियोगिता

दिनाक 14-2-88 को डी ए वी स्कूल करनाल मे 'आन द स्पाट पेंटिंग प्रतियोगिता' मे वर्ग ए मे डी ए वी पब्लिक स्कूल समालखा का प्रथम कक्षा का छात्र जगतार प्रथम रहा वर्ग नवी मे कक्षा तीन का छात्र शुभनीत द्वितीय स्थान पर रहा।—प्राचार्य

आर्य समाज शिवाजी चौक खडवा में दिनांक 16-ˆ-88 को श्री मावजी भाई भानुसाली प्रधान आ० स० की अध्यक्षता मे दयानन्द बोध रात्रि एवं शिवरात्रि पर्व समारोह मनाया गया। साय 5 बजे से महिला आर्य समाज की ओर से पर्व पद्धति अनुसार बृहद् यज्ञ प्रार्थना के पश्चात् पर्व की विशेषता पर सर्वप्रथम श्रीमान प्रो० डा० निकम, श्री परमानन्द आर्य, श्री परमानन्द आर्य, श्री लक्ष्मी नारायण भार्गव, श्री जगम्बा प्रसा॰, श्री सुखराम आर्य सिद्धान्त शास्त्री के सारगर्भित ओजस्वी भाषण हुए।

—मन्त्री आर्यसमाज खडवा

योग प्रशिक्षण शिविर

डी ए वी कालेज करनाल मे दिनाक 17 2 88 से 26 2 88 तक दस दिन के लिए 175 युवकों का विशेष योग एव योगासनों से सम्बन्धित आध्यात्मिक, मानसिक एव शारीरिक प्रशिक्षण देने का कार्यक्रम चला, आर्ययुवक दल—नवयुवकों को शिक्षित एव दीक्षित करते हैं। नवयुवको को आर्यसमाज की आकर्षित करना सबसे महत्वपूर्ण से रचनात्मक कार्य है।

—प्रो० वेदसुमन वेदालंकार कार्यकर्ता अध्यक्ष

श्री पेराला रत्नम् का निधन

प्रख्यात राजनायिक तथा विद्वान् श्री पेराला रत्नम् का 10-2-88 को निधन हो गया। श्री रत्नम् अनेक देशों में भारत के राजदूत रहे। वे विद्वान् एव शिक्षाविद् तथा विदुषी प्राचार्या श्रीमती कमला रत्नम् के पति थे। 'आर्य जगत्' की ओर से स्वर्गीय आत्मा के प्रति हार्दिक श्रद्धाजलि।

केन्द्रीय पुलिस सगठनों मे हिन्दी

• भारत सरकार के गृह मन्त्रालय के अन्तगत केन्द्रीय पुलिस सगठनों (सी० आर० पी० एफ, बी० एस० एफ०, आई० टी० बी० पी०) मे उप पुलिस निरीक्षकों, कपनी कमाण्डरो और सहायक कमानडेन्टों के लगभग 225 पदो पर ली जाने वाली आगामी परीक्षा में हिन्दी के वैकल्पिक प्रयोग की सुविधा दे दी गई है।

जगन्नाथ एक्सवाई 68 सरोजनी नगर, नई दिल्ली-23

नवीन उपदेशक महाविद्यालय

अजमेर मे प्रथम अप्रैल से उपदेशक विद्यालय प्रारम्भ हो रहा है। ग्यारहवीं पास प्रतिभाशाली युवको को 3 वर्षों मे। वैदिक, सिद्धान्तो, अन्य सम्प्रदायो संस्कारो, व्याख्यानो संगीत कलाओ एव व्यवहारिक सगठन सूत्रों से सुसज्जित कर विभिन्न भाषाओ मे निष्णात किया जायेगा। भोजन छादन एव पुस्तकों आदि का व्यय भार सस्था स्वय वहन करेगी। उपदेशक बनने पर नियुक्तियो का प्रबन्ध भी सस्था द्वारा किया जाएगा स्थान सीमित है। इच्छुक महानुभाव 25 मार्च तक अपने आवेदन सादे कागज पर निम्नलिखित पते पर भेजे। 31 मार्च को साक्षात्कार के लिए भी वहीं उपस्थित होवें। शारीरिक, मानसिक एव व्यवहारिक परीक्षा करके ही योग्य छात्रो को प्रवेश दिया जायेगा। अपने प्रमाण पत्र साथ लायें। सम्पर्क करें—

प्रवासी गुरुकुल महाविद्यालय आदर्श नगर (नसीराबाद रोड) अजमेर (राजस्थान)

अभयशरण आयुर्वेदालकार दिवगत

पिछले दिन गुरुकुल कांगडी के सुयोग्य स्नातक श्री अभयशरण आयुर्वेदालकार का अकस्मात् हृदय गति रुक जाने स्वर्गवास हो गया। उनकी आयु 76 वर्ष के लगभग थी। फिलहाल वे आर्य समाज नेपियर टाउन (जबलपुर) के पुरोहित थे। अत्यन्त सरल, साधु स्वभाव और कर्मयोगी इम व्यक्ति ने अपना सारा जीवन निष्काम भाव से आर्य समाज की सेवा में लगा दिया। देश-विभाजन से पहले वे सीमान्त प्रदेश में बन्नू आर्य समाज में पुरोहित थे। गुरुकुल के आचार्य स्वामी अभयदेव जी के वे समर्पित शिष्य थे। आर्य समाज उनकी सेवाओ को नहीं भूल सकता।

—कृष्णदेव मदान मन्त्री

महात्मा वेद भिक्षु जयन्ती

दयानन्द सस्थान, हिन्दू रक्षा समिति, जनज्ञान आदि अनेक उपक्रमो के माध्यम से राष्ट्र और धर्म की सेवा के लिए आत्माहुति देनेवाले दिवगत महात्मा वेदभिक्षु की 60वी जयन्ती 13 और 14 मार्च 1988 को मनाई जायेगी। इस अवसर पर यज्ञ वेदोपदेश और श्रद्धांजलि, सभा का आयोजन किया गया है। अनेक विद्वान उनकी स्मृति में अपनी श्रद्धाजलि भेंट करेंगे। वेद प्रचार और हिन्दू जागरण के कार्य को आगे बढ़ाने पर भी विचार विमर्श होगा। कार्यक्रमों का समापन प्रीतिभोज के साथ होगा।

13 मार्च को प्रात. वेद मन्दिर, महात्म वेदभिक्षु सेवाश्रम [इब्राहीमपुर] में हवन यज्ञ होगा। दोपहर दो बजे आर्य समाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में श्रद्धांजलि सभा होगी। डा० वेदप्रताप वैदिक मुख्य अतिथि होगा।

14 मार्च को वेद मन्दिर मे यज्ञ की पूर्णाहुति होगी।

टंकारा के प्रबन्ध की प्रशंसा

ईश्वर की अपार दया से टकारा और सौराष्ट्र की यात्रा करके सब यात्री सकुशल दिल्ली वापिस पहुच गए हैं। टकारा मे आपके प्रबन्ध को देखकर और रास्ते मे भी जहां जहा हम ठहरे उन सब स्थानों पर रहने की उचित व्यवस्था देखकर सब यात्री आपका धन्यवाद करते हैं। हमारे महामंत्री श्री प्रियतमदास रसवन्त और विद्वद्वर श्री यशपाल शास्त्री तथा अन्य सब विशिष्ट व्यक्ति भी आपका गुणगान कर रहे हैं और कह रहे हैं कि ईश्वर ऐसे ही कुछ व्यक्ति आर्य समाज को और दे दे तो समाज को चार चांद लग जाए। भगवान आपको शक्ति दे कि आप इसी तरह समाज की सेवा करते रहे।

—श्यामदास सचदेव,

आर्य समाज चूनामडी पहाड़गज नई दिल्ली-55

[श्री रामनाथ सहगल को लिखे पत्र से]

यशस्तस्यर्षेर्नो धवलयतु चेतः प्रतिदिनम्

—धर्मवीर शास्त्री साहित्याचार्य, एम. ए.

गुणानामागारं विहित-वश-मार मुनिवर
सतां ग्राह्याचार निगम-मल-हार परहिते ।
हुत-प्राण धन्य धृति-धनमनन्य नतशिरा
दयानन्द वन्दे भ्रमित-जन सन्देह-हरणम् ॥1
प्रचक्रे य सर्वानपि गलित गर्वान् बुधवरान्
अमूञ्जेतु योऽलं दिति-सुत-बल वै गतभय ।
समाज य शुद्धा सरणिमविरुद्धां गमितवान्
नमामीड्य लोकैस्तमिह हृद-शोकर्यतिवरम् ॥2
न बुद्धे सा बुद्धिर्न च मुनिसमा शकर मतिर्
व्यधत्तासौ वीरो विदलितकपाटां श्रुतिमिह ।
न तज्ज्ञाने माने मुनिवरसमोऽन्य समभवद्
यथार्थं मन्त्रार्थं प्रकरण-निबद्ध स कृतवान् ॥3
प्रकाश निन्ये यो यजन महिमान भुवि पुन
पुन स्वाहाकारान् श्रुतिपथ गतान् यो विहितवान् ।
बभाषे यो यज्ञ पशुवधविमुक्त दृढमतिर्
नमस्तस्मै नित्य निखिल जनमान्याय मुनये ॥4
पुनर्मन्त्रोच्चारा पुनरिह कथा या श्रुतिमता
नभो व्याप्त यद्वै हविरुदितगन्धे सुखकरे ।
पुनर्भूति स्वस्य स्थितिरिह पुनर्या सुरगिर
फल तत् तस्यर्षे परिणतमिद भो सुतपस ॥5
प्रतीत प्रीतेश्च प्रसरणमनीतेरवनति
जगत्यामैच्छद्य सकल-जन-सौख्यद्यविरतम् ।
उदस्राक्षीद् योऽसून् समिध इव सेवा-हुतवहे
यशस्तस्यर्षेर्नो धवलयतु चेत प्रतिदिनम् ॥6

हिन्दी-अनुवाद

उस प्रात स्मरणीय महर्षि का यश हमारे हृदय को प्रतिदिन उज्ज्वलता प्रदान करें।

गुणो के आगार काम को वश में करने वाले, सत्पुरुषो के लिये भी ग्राह्य चरित्र से सम्पन्न वेदादि सद्ग्रन्थो को अपना कण्ठहार मानने वाले, लोकहित मे प्राणों की आहुति देने वाले, धैर्य ही जिनका धन था तथा भ्रातजनो के सन्देहो को दूर करने वाले महर्षि दयानन्द को मैं प्रणाम करता हू ॥1॥

जिन्होने अपने समय के सभी विद्वानो के गर्व को चूर-चूर कर दिया था, जो निर्भयतापूर्वक आसुरी शक्तियो से जूझते रहे, जिन्होने भ्रांत समाज को सही मार्ग तक पहुचाया, असख्य जनो के वन्दनीय जो उनके मार्ग-दर्शन मे चलकर शोक-रहित हुए, ऐसे यतिवर को मैं प्रणाम करता हू ॥2॥

महर्षि दयानन्द जैसी प्रतिभा न गौतम बुद्ध में दिखाई देनी है और न शकर में। उन्होने वेदाध्ययन पर वर्गविशेष और वर्ण विशेष के लिये लगे प्रतिबन्ध को हटा दिया। वेदो के ज्ञान और प्रामाण्य के विषय मे उनके समान कोई नहीं हुआ। उन्होने ही वेद मन्त्रों के यथार्थ एव प्रकरण-सगत अर्थ किये ॥3॥

जिन्होंने यज्ञ की महिमा को ससार मे पुन प्रकाशित किया जिनके कारण ही स्वाहाकर-ध्वनि पुन श्रुतिगोचर होने लगी जिन्होने दृढ़ता पूवक प्रतिपादित किया यज्ञ मे पशु वध शास्त्रानुमोदित नहीं है, ऐसे उन मानव जाति के लिये सम्मान्य मुनि को नमस्कार ॥4॥

पुन वेद-मन्त्रों का सार्वजनिक उच्चारण, पुन वेद मन्त्रो पर आश्रित प्रवचन और जो यह आकाश घृताहुति की सुखद सुगन्ध से आज व्याप्त है, स्व' की पुनः अनुभूति तथा सस्कृत के गौरव की पुन स्थापना आदि उस ऋषिवर दयानन्द के महान् तप का सुफल है ॥5॥

जिनकी इच्छा थी कि ससार में परस्पर प्रेम और विश्वास की वृद्धि हो, अनीति का निवारण हो तथा समस्त सुख समृद्धि से सम्पन्न हो जिन्होने लोक सेवा के महायज्ञ में अपने प्राणो को समिधा बना दिया, उस महर्षि का शुभ यश हमारे हृदय को प्रतिदिन उज्ज्वलता प्रदान करे ॥6।

पता—B1/51 पश्चिम विहार
नई दिल्ली-63

सूखा राहत कोष के दानदाताओं की सूची

362	राजरानी आहूजा 16 ए चण्डीगढ़	200/-
363	जगत राम मथा बांस, दिल्ली-6	500/-
364	ज्योति स्टेशनर्स विज्ञान नगर, कोटा	39/-
365	वेद प्रकाश अरोड़ा कालकाजी नई दिल्ली	20/-
366	रामशरण विज अशोक विहार-1, नई दिल्ली	50/-
367	गोपा भारद्वाज गोल्फ लिंक, नई दिल्ली	200/-
368	रतनचन्द ग्रोवर प्रीतमपुरा, दिल्ली	खाद्य सामग्री
369	गोपाल जनकपुरी, नई दिल्ली	100/-
370	जयदेव	400/-
371	वेद प्रभा राजौरी गार्डन, नई दिल्ली	वस्त्र आदि
372	रैजचन्द सूद आनन्द निकेतन, नई दिल्ली	वस्त्र
373	जी०एल० खन्ना न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	151/-
374	जय देव आर्य शाहपुर मु० नगर, (उ०प्र०)	105/-
375	डा० सातूराम करौल बाग, नई दिल्ली	50/-
376	त्रिलोक चन्द अरोड़ा कालका जी, नई दिल्ली	50/-
377	प्रिन्सिपल, अनपरा (मिर्जापुर)	378/-
378	अश्वनी ग्रोवर चण्डीगढ़	250/-
379	सुकल मेहरा साउथ एक्स, नई दिल्ली	25/-
380	प्रिन्सिपल, नाहन (हि०प्र०)	610/-
381	देवराज कौशल चकरौता देहरादून	400/
382	रामनारायण, डडकडा (कोटा)	50-
383	श्री कृष्ण सावन, आर्य समाज, डडवाडा (कोटा)	80/-
384	जगन्नाथ गुलाटी अशोक विहार, नई दिल्ली	50/
385	रती राम चौहान मॉडल टाउन, करनाल, हरि०	दो डबल कंबल

दर्शन एव योग शिविर मे प्रवेश की सूचना

(1) दर्शन एव योगप्रशिक्षण-शिविर (तीन वष की नवीन योजना) में भाग लेने वाले ब्रह्मचारियो के लिय चैत्र शु० 1/2045 (18 3 88) को प्रवेश प्रारम है। प्रवेशार्थियों की योग्यता पूर्व प्रकाशित विज्ञप्ति के अनुसार होनी चाहिये।

(2) प्रारम्भिक प्रवेश करने के पश्चात् तीन मास तक प्रवेशार्थी की सब प्रकार से परीक्षा की जायेगी। पुन सुयोग्य सिद्ध होने पर ही उसको स्थायी प्रवेश दिया जायेगा, अन्यथा नहीं।

(3) हमने पूवप्रकाशित सूचना मे मीमासादर्शन के सम्पूण अध्यापन के पश्चात् नवीन ब्रह्मचारियो को प्रवेश देने का निर्णय किया था, परन्तु अब अनेक [बाधाओ के कारण उसे परिवर्तित करके चैत्रशु० 1/2045 कर दिया है।

स्वामी सत्यपति दर्शन एव योगप्रशिक्षणशिविर, आर्यवन विकास फाम रोजड,
प्रो० सागपुर, जि० साबरकाठा (गुजरात) 383307

आर्य युवक अनुपम कमल

4 मई 1985, कडकती गर्मी में कश्मीरी गेट चौराहे के निकट स्कूटर व साईकिल सवार किशोर मूर्छित हो गया। यातायात पुलिस का सिपाही व अन्य लोग तमाशा देख रहे थे, तभी अन्य स्कूटर सवार युवक ने फुर्ती से कूद कर उस किशोर को कृत्रिम श्वास देकर, बन्द हृदयगति को पुन चालित कर प्राणदान दिया। यह साहसी स्कूटर सवार आय स्त्री समाज अनारकली, मन्दिर माग की मन्त्राणी डा० चन्द्रप्रभा तथा डा० हसराज कमल का सुपुत्र श्री अनुपम कमल था।

25 अप्रैल 1986 को आर्य समाज अनारकली मन्दिर माग के निकट एक सडक दुर्घटना में खून से लथ-पथ सिपाही को राम मनोहर हस्पताल में पहुचकर उसकी रक्षा करने के लिए पुलिस आयुक्त श्री वेद मरवाह ने इन्हें 500 रु० का नकद पुरस्कार व दिल्ली पुलिस का विशेष अधिकारी नियुक्त किया। 20 वर्षीय आय वीर अनुपम कमल को उनके साहसिक कृत्यो पर गत 17 दिसम्बर 1987 को राष्ट्रपति श्री वेंकटरमन ने पदक देकर सम्मानित किया।

श्री गुरु जम्भेश्वर बिश्नोई मेला

भारत के आम बिश्नोइयो को बडे हर्ष के साथ सूचित किया जा रहा है कि हर वर्ष की भाति इस वर्ष की 18 माच 1988 को जोधपुर जिले की फलोदी तहसील में ग्राम जम्भोलाव में मेला आयोजित हो रहा है। सभी धम प्रेमी इस मेले मे आकर मेले की शोभा बढ़ायें एवम् अपना धर्म प्रचार करें। इस मेले मे गुरु श्री जम्भेश्वर के हाथ से खुदवाया गया पवित्र तालाब है। सभी बन्धु आकर पवित्र जल से स्नान करें।

—श्री मदन लाल बिश्नोई भवाल (मानेवडा)

सूखा राहत कोष के लिए दान देने वालों की सूची

डीएवी कालेज जालन्धर के प्रोफेसर सुभाषचन्द्र ने आर्यप्रादेशिक सभा से रसीद बुक मगवाकर सूखा राहत के लिए 11745 रु० एकत्र करके भेजा है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि इस समय आर्यप्रादेशिक सभा दिल्ली की ओर से राजस्थान, उड़ीसा और गुजरात में सूखा राहत केन्द्र चल रहे हैं। राजस्थान में सूखा राहत केन्द्र आर्यसमाज ब्यावर मे है, उड़ीसा मे गुरुकुल आमसेना और कालाहाण्डी मे है और गुजरात मे उपदेशक विद्यालय टंकारा मे है। इन तीनों केन्द्रो में स्थानीय कार्यकर्ता सूखा राहत कार्य मे बड़े उत्साह से लगे हुए हैं। प्राध्यापक महोदय द्वारा भेजी गई दान दाताओं की सूची इस प्रकार है—

No	Name Address	AMT
1	Prof Subhash Chander Deptt English D A V College, Jalandhar	100-00
2	M/s Budha Mal Darshan Lal Sabzi Mandi	100-00
3	Mr O P Yadav M/s Yadav Automobiles	100-00
4	O P Sharma, Sharma Automobiles L W Road,	250-00
5	Jatinder Chauhan, Shakti Nagar,	50-(0
6	M/s Jugal Kishore & Bros, Ladowali Road,	100-00
7	Gupat Dan	50-00
8	M/s Frends Lawn Mover, L W Road,	200-00
9	M/s Bocki Industry, N G Road,	100-0
10	M/s Bhagat Rubber & Chemicals, Kotwali Bazar	100-00
11	Kumra Tent House, Bazar Nauhrin,	150-00
12	M/s Punjab Rubber & Allied Industries,	501 00
13	Sandeep Tandon, Adarsh Nagar,	244-00
14	M/s Gujranwala Jewellers,	1100-00
15	M/s Pensla's Industries Sodal Road,	30-00
16	Sat Paul Sikka 101 Shakti Nagar,	50-00
17	S Jiwan Singh, M/s Gurcharan Metal Works,	50-00
18	M/s Sethi Industries Hoshiarpur Road,	30-00
19	M/s Deeso Butt Hoshiarpur Road,	20 00
20	Satish Gupta, D N Ayurvedic College,	145 00
21	Rajiv, Bhupinder & Munesh, (10-1) C3, D.A V College	400-00
22	M/s Indian Youth Forum,	245-00
23	Prof B K Sharma, Deptt Economics D A V College,	101-00
24	Ashok Kumar Tata Print House,	11-00
25	Rakesh Kumar A-Vow Palace,	020-00
26	Suresh Kumar, M/s O P Bharma & Sons,	020-00
27	Peramjit Singh Royal Shoes,	020-00
28.	Bhunpinder Singh, M/s Oberoi Seneral Store,	020-00
29	Vivek Mahajan New Star Surgical Industry,	050-00
30	Rajesh Sandhi, 198 Adarsh Nagar,	101-00
37	Surinder Puri, (10 1) C3 D A V College,	080-00
32	President Arya Yuvak Samaj, Dhariwal	051-00
33	Satish Gupta (IInd Prof) Dava Nand Ayurvedic College Jalandhar	100 00
34	Angrez Singh, H No 33, Manjit Nbgar, Basti Sheikh,	080-00
35	Rth Virender Dhingra, Jalandhar	100-00
36	M/s Techno Enterprises,	200-00
37	M s Kay Bee Enterprises, G T Road,	250-00
38	M/s Deep Enterprises G T Road,	250-00
39	Sanjeev Heera, EK 374, Panjeer Bazar	070-00
40	Gupat Dan	100-00
41	Hemanshu Sharma (10 1) C3, D A V College	125-00
42	M/s Prince Rubber Industries, Industrial Area,	250-00
43	Sh Amarnath Ahuja M/s Imperial Medical Hall	030 00
44	Delight Rubber Industries,	050 00
45	Ram Parkash Sikka M/s Suman Manufacturse So	050-00
46.	Shanti Lal Sikka, M/s Sharp Tools	30-00
47	M/s T M Traders.	50-00
48	Jaswant Singh, M/s S Bhan Singh 8 So	30-00
49	Arson Industries,	30-00
50	M/s Vishal Rubber Industries,	30 00
51	Sudersh Chopra,	50 00
52	Manjit Singh,	050-00
53	Raj Kumar Chopra	50 04
54	M/s. Ram Ditta Mal Kishan Chand,	50-00
55	M/r Bhandari H No 19 New Vijay Nagar,	30-00
56	Jassal Rubber Industries Ram Nagar,	50-00
57	Bharat Rubber products,	30-00
58	M/s Kumar Ayurvedic Trading So, Windsor Park,	50-00
59	M/s Cambel Hut (Tailors & Drapers) Adarsh Nagar.	30-00
60		50-04
61	Umesh Puri, 163, Vijay Nagar,	50-00
62		50 00
63	M/s. Meenu Textiles.	50-00
64	M/s Rajan & Co Basti Nau,	100-00
65	Mr Sanjay Sharma	100-00
66	Mr Prashant Jain, Adarsh Nagar,	050-00
67	Mr Rajesh Kwatra, 42-New Vijay Nagar,	100-00
68	Sunil Talwar, 9-Shivji Park,	100-00
69	Mr Surinder Arora, 37 New Vijay Naggr,	100-00
70	Rohit Mahajan, 36 New Vijay Nogar,	100-00
71	Cheenu, Nakodar Road	100-00
72	Mr Mahesh Singla, New Vijay Nagar	100-00
73	Mr Jagjit Singh V P O Nadala, Kapurthala	50 00
74	M/s Lovely Rubber Industries, Globe Colony, Jalandhar	
75	M/s Bharat Tools, Industrial Area,	250-00
76	M/s Sham Singh (10+1) C3, Paramjit Singh (10+2) CI	145-00
77	M/s Dyal Iron & Steel Traders, Tanda Adda	100-00
78	M/s Sandeep Sobt & Co Tanda Adea,	200-00
79	M/s B Uttam Singh & Sons Basti Nau,	100-00
80	M/s S K Auto Agencies, Phagwara.	200-00
81	M/s Perfect Metal & Brass Inds (Regd) Industrial Area, Jalandhar	130-00
82	M/s Jadco Industries, Industrial Area,	150-00
83	M/s Gupta Glass Traders.	250-00
84	Mrs Surinder Kaur, C/o Arson Oil & Mill Store, Ludhiana	231-00
85	M/s Sita Indusinal Corp,	300-00
86	M/s Engineers Enterprises	500-00
87	Mts Techno Enterprises, Industrial Area,	500-00
88	M/s Deepak Pahwa & Amit Chandhar (10+1), D A V College, Jalandhar 40700	215-00

जिला हिसार में शराब बन्दी अभियान

9 से 18 फरवरी तक शराब बन्दी समिति के प्रधान श्री अतर सिंह आर्य क्रान्तिकारी के नेतृत्व में 11 आर्य विद्वानों और कार्यकर्त्ताओं के एक जत्थे ने जिला हिसार के अनेक गावों में पहुच कर सरकार की शराब बढ़ाओ नीति की आलोचना करते हुए जनता को शराब की बुराइयां समझाईं और हजारों लोगों से शराब न पीने की प्रतिज्ञा करवाई।

टंकारा बोधोत्सव की चित्रमय झाँकी

श्री जयदेव आर्य (आर्य समाज सूरत) जिन्होंने तीन दिन तक टंकारा में ऋषि लंगर का अपनी ओर से संचालन किया, उनका पुष्प माला द्वारा स्वागत करते हुए प्रबन्ध न्यासी श्री ओंकार नाथ।

श्री पं. शान्ति प्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी

अपने जीवन का अधिकांश भाग वैदिक धर्म के प्रचार और शास्त्रार्थों में लगाने वाले श्री प० शान्ति प्रकाश शास्त्रार्थ महारथी का आर्यसमाज सान्ताक्रुज बम्बई ने वेद-वेदांग पुरस्कार के अन्तर्गत अभिनन्दन करते हुए उन्हें 11 हजार रु० देकर पुरस्कृत किया।

जेम्स जोसेफ

डी ए वी स्कूल ककरी, गोरखपुर की 11 वी के छात्र जेम्स को यूनेस्को इन्फार्मेशन टेस्ट में आठवीं पोजीशन प्राप्त करने पर उचित पुरस्कार दिए गए।

सोहनलाल डी ए वी कालिज आफ एजुकेशन अम्बाला

अन्त: कालिज पेपर रीडिंग प्रतियोगिता में अम्बाला के एस० ए० जैन कालिज की छात्राओं को प्रथम आने पर प्रि० जी० डी० जिन्दल चल विजोपहार प्रदान कर रहे हैं।

मनीषी गोयल और लीना वार्ष्णेय

डी ए वी पब्लिक स्कूल राजनगर गाजियाबाद की नवम कक्षा के छात्र मनीष गोयल को और सातवीं कक्षा की छात्रा लीना वार्ष्णेय को अन्त. स्कूल खेल प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित किया गया।

यू० 108/81 लायसेंस टू पोस्ट विदाउट प्रिपेमेंट
रजिस्ट्रेशन न० आर० एन० आई० 39/57
Delhi Postal Regd No D (C) 409

डी ए वी स्कूल रामकृष्णपुरम के वार्षिकोत्सव की झांकी

डी ए वी स्कूल रामकृष्णपुरम के वार्षिकोत्सव पर प्रि० श्रीमती अरोड़ा विशिष्ट अभ्यागतो के साथ। द्वितीय चित्र मे छात्र व्यायाम प्रदर्शन कर रहे हैं। तीसरे चित्र मे मुख्य अतिथि प्रो० वेदव्यास जी के साथ अन्य विशिष्ट जन। पाँच सौ छात्र छात्राओ ने कार्यक्रम मे सोत्साह भाग लिया।

डी ए वी सेंटिनरी पब्लिक स्कूल, करनाल

स्कूल की प्रिंसिपल मैडम राजकुमारी ग्रोवर श्री दरबारी लाल जी को स्कूल का मोमेण्टो भेंट कर रही हैं। दूसरे चित्र में गणराज्य दिवस पर श्रीमती और श्री बवेजा के साथ प्रि० ग्रोवर और डा० गणेशदास विराजमान हैं।

उड़ीसा में सूखा राहत कार्य की झांकी

गुरुकुल आमसेना मे अन्न की सहायता लेने आई सूखा पीडित जनता की भीड का एक दृश्य। दूसरे चित्र मे स्थानीय सांसद श्री जगन्नाथ पटनायक अन्न वितरण करते हुए।

मुद्रक प्रकाशक श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री, द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाडी धीरज (फोन . 527335) दिल्ली मे छपवाकर कार्यालय आर्य जगत्, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—सार्व देशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 (फोन 343718)

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य —30 रुपये | विदेश मे 65 पौ० या 125 डालर | वर्ष 51, अक 12 | रविवार 20 मार्च, 1988 | दूरभाष : 343718
आजीवन सदस्य-251 रु० | इस अक का मूल्य—75 पैसे | सृष्टि सवत् 172949088, दयानन्दाब्द 163 | चैत्र शु०-3, 2045 वि०

संक्षिप्त किन्तु महत्वपूर्ण

सरकारी पुस्तक की बिक्री पर रोक

भारत सरकार के सूचना मत्रालय द्वारा अग्रेजी मे ऋषि दयानन्द की एक जीवनी प्रकाशित की गई थी। उसके कुछ आपत्ति जनक अशो पर सावदेशिक सभा द्वारा ध्यान दिलाये जाने पर सूचना मत्री श्री हरिकिशन लाल भक्त ने 29-2 88 के पत्र मे सभा को सूचित किया है कि पुस्तक के आपत्ति जनक अशो पर पुनर्विचार करने का मत्रालय के अधिकारियो को अदेश जारी किया गया है और अन्तिम निणय लेने तक इस पुस्तक की बिक्री पर प्रतिबध लगा दिया गया है।

रिश्वत के लिये मत्री को दड

सोवियत सघ के उच्चतम न्यायालय ने कजाकिस्तान के एक पूर्व परिवहन मत्री को रिश्वत के आरोप मे दोषी पाकर उसकी निजी सम्पत्ति जब्त करके उसे 13 वर्ष के कारावास का दड दिया है।

ईरान मे महिला मुल्ला

इस वष हज यात्रा के समय मक्का के दगो में मृत यात्रियो की अत्येष्टि जिन चार मुल्लाओ ने की उसमे एक महिला भी थी। इस्लाम के इतिहास में यह पहली घटना है। विश्व में यहा पहली महिला मुल्ला बनी है। अयातुल्ला खुमैनी की पुत्री फरीदा मुस्ताक तेहरान मे एक महिला-मुल्ला-प्रशिक्षण विद्यालय चला रही है जिसमे अब तक 53 महिलायें प्रशिक्षण ले चुकी हैं।

अधी लडकी को कोडे

पाकिस्तान मे एक 18 वर्षीय अधी लडकी को सरेआम कोडे लगाये गये और तीन वर्ष की सजा दी गयी। क्यो कि उसने अपने मकान मालिक और उसके लडके के द्वारा किये गये बलात्कार की शिकायत की थी। अधी होने के कारण वह इन बलात्कारियो को शक्ल से पहचान नही सकी, यही उसका अपराध था।

ईसा की दृष्टि मे नारी

पोप जानपाल द्वितीय अमेरिका गये तो वहा के पादरियो ने उनसे वैवाहिक जीवन बिताने की अनुमति मागी। परन्तु पोप ने उसे स्वीकार नही किया। पोप महिलाओ को पादरी बनाने के विरुद्ध हैं। उन्होने तर्क दिया कि यदि ईसा को यह स्वीकार होता तो वे अन्तिम भोज मे महिलाओं को भी शामिल करते। अमेरिका में इस समय 5 करोड कैथोलिक ईसाई हैं जिनमे से अधिकांश वैवाहिक जीवन बिताने के पक्ष मे हैं।

क्या सरकार आतंकवादियों को सिर चढ़ाएगी ?

जब से भारत सरकार ने पाचो मुख्य ग्रन्थियो को छोड़ा है और पजाब विधान सभा भग की है तब से पजाब के सबन्ध मे तरह तरह की अटकलें लगाई जा रही थीं। अकाल तख्त के नये जत्थेदार जसबीर सिह रोडे के नये पद पर अभिषिक्त होने के बाद कुछ तसवीर सामने आने निखरने लगी है। श्री रोडे ने जेल से छूटने के बाद जो नम रूख अपनाया था, अब वह खत्म होता जा रहा है।

उन्होने जहा सिखो को "अलग कौम" बताया है, वहा यह भी कहा है कि आजादी के वक्त सिखो से जो वायदे किये गये थे उनको पूरा करने की जिम्मेवारी सरकार की ही है। अब तक श्री रोडे 'खालिस्तान' शब्द के बजाय "पूण आजादी" शब्द का प्रयोग करते रहे है। परन्तु जब उनसे इन दोनो में फर्क पूछा गया तो उन्होने यह कह कर टाल दिया-"वक्त बतायेगा।" परन्तु वे यह कहने से बाज नही आये कि अब सरकार से बातचीत सिर्फ उग्रवादी ही करेंगे। उनके अन्य दो साथी मुख्यग्रन्थियो ने जो प्रेस सम्मेलन मे उपस्थित थे, यह साफ साफ दोहराया कि वे 'खालिस्तान परिषद' को मान्यता देते हैं। इससे पहले सितम्बर के महीने मे जब उन्होने खालिस्तान परिषद् का समर्थन किया था तो इसी कारण वे रासुका मे नजरबद किये गये थे।

प्रश्न यह है कि पजाब मे शान्ति कायम करने के लिये क्या सरकार आतकवादियो को सिर चढ़ायेगी ? इस समय जो आतकवादी कभी कभी सुलह की बात करते हैं, हो सकता है कि वे इस बातचीत के बहाने अपने आन्दोलन को और तेज करने के लिये तथा सुरक्षा बल में भी अपना जाल मजबूत करने के लिये कुछ अतिरिक्त समय पाना चाहते हो। इस समय आतकवादियो के भी दो गुट हैं, उनमें से एक तत्काल खालिस्तान चाहता है और दूसरा उसे फिलहाल अव्यावहारिक मानता है। जो लोग दूसरे दृष्टिकोण के पक्षपाती हैं वे कुछ थोडी बहुत नम भाषा का प्रयोग करते हैं। परन्तु लगता यही है कि वे अपनी पकड़ और मजबूत करने के लिये और जनता की ओर अधिक सहानुभूति प्राप्त करने के लिए, जो धीरे धीरे कम होती जा रही है, कुछ और समय प्राप्त करने की कूटनीति पर चलना चाहते हैं।

आजादी प्राप्त करने के समय नेहरुजी ने या गाधी जी ने सिखो से कौन से वायदे किये थे वह सिवाय इन जत्थेदारो के और कोई नही जानता। उन वायदो का कहीं कोई लिखित रिकार्ड भी नही है। परन्तु उस समय सिख नेताओ ने किस तरह जिन्ना को या अग्रेज सरकार को अपने पृथक् स्वायत्त प्रदेश की स्थापना के लिये पटाने का प्रयत्न किया था, उसके लिखित दस्तावेज मौजूद हैं। दोनो स्थानो से निराश होकर ही अन्त में उन्होने अपना भाग्य आजाद भारत के साथ बाधने मे ही भलाई समझी थी। भारतीय सविधान ने अन्य सभी समुदायो के साथ सिखो को भी पूरे देश मे आजादी के माहौल में गौरव और सम्मान के साथ जीने का अधिकार दे रखा है। सवाल यह है कि अपने इस हक का प्रयोग वे पूरे देश मे क्यो नही करना चाहते ? सिर्फ एक इलाका विशेष ही अपने लिये क्यो नही चाहते हैं। इसके जबाब मे वे तुरन्त ब्लू स्टार आपरेशन या नवम्बर 1984 के दगो की बात कहते हैं। परन्तु वह तो केवल क्रिया की प्रतिक्रिया मात्र थी, ब्लू स्टार आपरेशन से पहले जिस प्रकार निहत्थो और निर्दोषो की हत्या हो रही थी वह अब भी ज्यो की त्यों हो रही है। अकाल तख्त की ओर से उन हत्यारो और हत्याओ के विरुद्ध कभी कुछ नही कहा गया। यदि सिख समुदाय के लोगो की ओर से यह हिंसा न हो तो उसकी किसी वैसी प्रतिक्रिया का प्रश्न ही नही पैदा होता।

क्या पूण आजादी के नाम से किसी विशेष समुदाय को देश को तोडने का, अन्य समुदायो पर अत्याचार करने का अधिकार दिया जा सकता है ? जो अपनी आजादी और आत्म सम्मान की बात करते हैं उन्हे अन्य समुदायो को आजादी और सम्मान का पाठ भी पढ़ना चाहिये। क्या सरकार सविधान के आगे जाकर आतकवादियो को सिर चढाने का प्रयत्न करेगी ?

रामजन्म शोभायात्रा में अवश्य सम्मिलित हों

समस्त हिन्दू सस्थाओ की ओर से श्री रामजन्म महोत्सव शनिवार 26 मार्च 1988 को दोपहर 12 बजे रामलीला मैदान, नई दिल्ली मे मनाया जा रहा है। एक बजे रामलीला मैदान से विशाल अभूतपूव यात्रा प्रारम्भ होनी है जो आसफअली रोड, दरियागज, चादनी चौक, घण्टाघर, नई सडक, चावडी बाजार, हौजकाजी, अजमेरी गेट, कमला मार्किट होती हुई वापस रामलीला मैदान पहुचकर विराट सभा मे बदल जायेगी। इस सार्वजनिक सभा मे प्रमुख धर्माचाय एव हिन्दू समाज के मूधन्य नेताओ के भाषण होगे।

आपसे प्राथना है कि आप अपनी आय समाज, स्त्री आर्य समाज की ओर से एक बस अथवा मैटाडोर करके उस पर ओम् के झण्डे, तथा श्री राम, स्वामी दयानन्द स्वामी विरजानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हसराज के चित्रो से बस को खूब अच्छी तरह सजाकर इस यात्रा मे सब सदस्यो सहित, अवश्य सम्मिलित हो।

—रामनाथ सहगल मन्त्री।

आचार्य वैद्यनाथ दिवंगत

सम्पादकीय पढिए पृष्ठ 3 पर
'आचाय वैद्यनाथ जो भी नहीं रहे'

व्यवस्थापक—रामलाल मलिक

सम्पादक—क्षितीश वेदालकार

आओ सत्संग में चलें

अद्भुत वैदिक यज्ञ विधि [8]

यज्ञ–कर्ता को मेधा–लाभ

—आचार्य वेद भूषण—

(13 माच के अक मे छपी सातवीं किश्त से आगे)

ओम् या मेधा देवगणा
पितरश्चोपासते ।
तया मामद्य मेधयाग्ने
मेधाविन कुरु स्वाहा ।
यजु० 32·14

यज्ञ के प्राय सभी मत्रो के अन्त मे स्वाहा के बाद 'इद न मम्' कहा जाता है। किन्तु महा व्याहृति के बाद अन्तिम चार मन्त्रो मे इद न मम् का सयोजन नही है। एक ओर जहा यज्ञ विज्ञान द्वारा ससार मे प्राणियो के हित के लिए स्वार्थ रहित होकर परोपकार की भावना से पवित्र अग्निहोत्र करते हैं, वहीं हम 'न कर्म लिप्यते नरे' अर्थात् कर्म तो करना है पर उसमे लिप्त नहीं होना है की भावना पर भी आचरण करते हैं। जब मनुष्य स्वार्थ-रहित होकर कर्म करता है तो वह सुख और दु ख दोनो से ही बचा रहता है। इसीलिए निष्काम कम को श्रेष्ठ माना जाता है। इद न मम की भावना उसे स्थितप्रज्ञता की स्थिति की ओर ले जाती है।

पर मनुष्य सवथा निष्काम भी नही हो सकता। कम करने या परोपकार के लिए भी तो कामना चाहिए, सामर्थ्य चाहिए, बुद्धि चाहिए। इसीलिए मनु ने कहा है—

कामात्मा न प्रशस्ता
न चैवे हास्त्य कामता।
काम्यो हि वेदाधिगमः
कर्म योगश्च च वैदिक ॥

इसका अथ करते हुए महर्षि दयानन्द लिखते हैं—क्योकि इस ससार मे अत्यन्त कामात्मा और निष्कामना श्रेष्ठ नही है। वेदार्थ ज्ञान और वेदोक्त कर्म ये सब कामना ही से सिद्ध होते हैं।

इससे स्पष्ट है कि यज्ञ परोपकार की भावना से, लोक मगल की कामना से किया जाना है। पर यज्ञ का कुछ सुफल तो यज्ञकर्ता को भी मिलना ही चाहिए। यदि परमात्मा से सदबुद्धि की कामना करें और उसके अन्त मे भी इद न मम' कह दें तो अनर्थ हो जाएगा। इसलिए मन्त्रो के अन्त मे 'इद न मम' का उच्चारण भी विवेक से ही करना चाहिए।

यज्ञ से ससार के प्राणियो को भी लाभ होता है और यज्ञकर्ता को भी लाभ होना है। पर यज्ञ का कुछ विशेष लाभ है उसे भी जान लेना अत्यावश्यक है।

परमात्मा ने मानव के देहरूपी रथ मे चार इजिन लगाए हैं? इन चारो इजिनो का सचालन चारो पचभूतो से होता है। शरीर का सबसे मुख्य यन्त्र है मस्तिष्क। इसकी रचना अत्यन्त सूक्ष्म, जटिल व अद्भुत है। समस्त इन्द्रियो का नियन्त्रण मस्तिष्क द्वारा ही होता है। सौर उर्जा मस्तिष्क का मुख्य तत्व है। यह सूर्य द्वारा नियन्त्रित होता है। हृदययन्त्र का सचालन वायु से और यकृत् (लिवर) का सचालन पृथिवी व कन्न से और वृक्क (गुर्दा) का सचालन जल से होता है।

यज्ञ से निकला वाष्प पचभूतों को प्रभावित करता है, उनको पवित्र बनाता है। जल शुद्धि और अन्न की पुष्टि का लाभ तो तभी होगा जब समस्त विश्व मे प्रचुर मात्रा मे गाय का घी साकल्य आहुति मे डाला जाए।

तो यज्ञकर्ता के यज्ञ करने से उसे हृदय और मस्तिष्क को निश्चित रूप से लाभ मिल जाता है। यज्ञ करते समय गाय का घृत और वनौषधिया जलकर सूक्ष्म रूप मे श्वास द्वारा उसके भीतर जाती हैं और गाय के घृत के कारण याज्ञिक के शरीर मे सौर ऊर्जा का तत्व श्वास द्वारा शरीर मे चला जाता है। इससे मनुष्य के मस्तिष्क को बल मिलता है और शुद्ध ओक्सजन युक्त वायु से हृदय भी स्वस्थ रहता है। यज्ञकर्ता मेधावी बनता है। याज्ञिक का हृदय भी स्वस्थ रहता है। पर यह फल गाय के घी गाय के शुद्ध घृत व उत्तम हवन सामग्री के प्रयोग से ही सम्भव है।

हम पहले बतला चुके हैं कि वेद का ज्ञान अत्यन्त सरल है। जिस समय सृष्टि के आदि में प्रभु वेद का ज्ञान देते हैं तो वे चार ऋषियो के हृदय में वेद-ज्ञान के रहस्य को भी उन पर प्रकट करते हैं। जैसा यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय मे लिखा है—'याथातथ्योऽर्थान् व्यदधात्' यथार्थ अर्थ बोध भी कराते हैं जिससे सृष्टि के रहस्य को आदि मानव सरलता से जान लेते हैं। जैसे गणित शास्त्र को जान लेने से मनुष्य बडी सरलता से अको का जोड व घटाकर लेता है वैसे ही ज्ञान-विज्ञान मे मनुष्य निष्णात हो जाता है। जिस प्रकार घर में झाडू आदि लगाकर शुद्ध रखने की विद्या सदा से लोग जानते हैं वैसे ही यज्ञ से पिण्ड और ब्रह्माण्ड की शुद्धि होनी है।

उपरोक्त मन्त्र मे मेधा शब्द का अर्थ बुद्धि है। मेधा मतौ (निघण्टु 3।19) में स्पष्ट है धारणावती मति या मति (बुद्धि) को धारण करने वाला। मे धृ सगमे धातु से मेधा शब्द बनता है। जब तक गुरु शिष्य का, विद्वान् और अल्पज्ञ का सगम नहीं होता तब तक ज्ञान प्राप्ति सभव नही। 'मेधा-आशु ग्रहणे' धातु से भी मेधा शब्द सिद्ध होता है। जो ज्ञान को शीघ्रता से ग्रहण कर सके।

'मेध इति यज्ञ नामसु पठितम्' (निघण्टु 3।17) यज्ञ के अर्थ मे भी मेधा शब्द का प्रयोग होता है। जैसे अश्वमेध यज्ञ। अश्व शब्द का अर्थ है अग्नि। इस प्रकार अग्नि होत्र का नाम भी अश्वमेध होगा। तैत्तिरीय आरण्यक मे 'मेधो वा आज्यम्'—अर्थात् मेध गाय के घी को भी कहते हैं।

अग्ने हे अग्निरूप यज्ञ! तू मेधया घृताहुति के द्वारा मुझे 'मेधाविन' प्रज्ञायुक्त बना दे।

इसी कारण इस मन्त्र को अग्निहोत्र मे सम्मिलित किया गया है। हमने ऊपर कहा ही है कि गाय के घृत की वाष्प को ग्रहण करने से अथवा यज्ञमय वायु में श्वास लेने से मनुष्य की बुद्धि पवित्र व सूक्ष्मग्राही हो जाती है। गाय के घृत से शुद्ध हुई वायु मे श्वास लेने से हृदयन्त्र भी स्वस्थ रहता है।

'या मेधा' जिस बुद्धि को 'देवगणा' देव यज्ञ करने वाले याज्ञिक गण 'पितरश्च' और ज्ञानी अनुभवी पितर गण 'उपासते' प्राप्त करते थे। 'हे अग्ने' ज्ञान स्वरूप प्रभो आप कृपा कर उस बुद्धि से मुझे युक्त कर दीजिए! अर्थात् यज्ञ के द्वारा हम बुद्धिमान् हो जाए।

गायत्री मन्त्र के नाम से यह भ्रम फैला हुआ है कि इस मन्त्र के जप से बुद्धि शुद्ध हो जाती है या बुद्धि की प्राप्ति होती है। यह बात केवल काल्पनिक है। गायत्री मन्त्र तो कहता है कि—'सवितु देवस्य यत् वरेण्य भर्ग अस्ति तत् धीमहि। अर्थात् सविता देव परमात्मा का जो ग्रहण करने योग शुद्ध पवित्र स्वरूप अर्थात् उत्तम गुण कर्म स्वभाव है हम उसे धारण करें। शुद्ध आहार और शुद्ध व्यवहार से ही हम बुद्धिमान बन सकते हैं। जाप केवल स्मरण के लिए होता है जब विचार या मन्त्र पर अमल होगा तब फल की प्राप्ति होती है।

यह प्रार्थना यजमान अपने लिए करता है इसी लिए 'इद न मम' इस मन्त्र मे नहीं लगेगा। क्योंकि इसमें 'मम्' शब्द का प्रयोग स्पष्ट है जिसका अथ है मुझको मेधायुक्त कीजिए।

याज्ञिक को यज्ञ के परिणाम स्वरूप कितने श्रेष्ठ व उत्तम फल की प्राप्ति होती है। अन्तत मनुष्य बुद्धि के कारण ही सब प्राणियो श्रेष्ठ माना जाता है। इसलिए एक मनुष्य के लिए इससे बढ़कर उत्तम उपहार और हो ही क्या सकता है? जब हम पुरुषाथ पूर्वक प्रयत्न करते हुए प्रार्थना करते हैं तब हमे निश्चित रूप से फल की प्राप्ति होती है।

मेध शब्द का अर्थ पशु भी है। हमें हे प्रभो आप उत्तम पशुओ का स्वामी बनाइए। यह भी अर्थ है इस मन्त्र का। दुधारू पशुओ का हम पालन करें। गाय का और यज्ञ का सम्बन्ध अत्यन्त घनिष्ट है। बिना गाय के यह सभव नहीं है। इसीलिए कर्मकाड के आरम्भ में कम वेद अर्थात् यजुर्वेद मे पहले ही मन्त्र मे 'पशून् पाहि' कहकर स्पष्ट कर दिया है कि पशुधन सवश्रेष्ठ धन है।

पशु पालन से ही मनुष्य के सुखो का विस्तार होता है। अत. प्रत्येक सामथ्यवान व्यक्ति को गाय अवश्य पालनी चाहिए। गाय के बिना यज्ञ निर्विघ्न सम्पन्न हो ही नही सकता। इसीलिए महर्षि दयानन्द जी महाराज ने आर्य समाज के साथ-साथ गो कृष्यादि रक्षिणी सभा की भा स्थापना की थी। आर्य समाज का कर्तव्य है कि—वह गोपालन और सस्कृत के अध्ययन केन्द्रो की स्थापना करे। जब तक इस प्रकार की सुमेधा आर्यों को प्राप्त नहीं होगी तब तक हम ठोस उन्नति नही कर सकते।

पता—अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान,
4 5 753 वेदमन्दिर, महर्षि
दयानन्द मार्ग, हैदराबाद-500027

रामनवमी एव आर्यसमाज स्थापना दिवस

आर्य प्रतिनिधि सभा के पश्चिमी दिल्ली क्षेत्र की शाखा आर्य समाज के तत्वावधान मे आगामी 10 अप्रैल को प्रात 8 00 से 1 00 बजे तक पश्चिमी दिल्ली के नजफगढ़ रोड पर स्थित किरण गार्डन में रामनवमी पर्व एव आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह विशाल स्तर पर मनाने का आयोजन किया जा रहा है। समारोह मे उच्च कोटि के वैदिक विद्वानो, सन्यासी महात्माओं राजनीतिक नेताओं तथा धार्मिक नेताओं को आमन्त्रित किया जा रहा है।

—मन्त्री

सुभाषित

भोगारतुङ्गतरङ्गभङ्गचपला प्राण क्षणध्वसिन·
स्तोका·येव दिनानि योवनसुख प्रीति प्रियेष्वस्थिरा।
तत्ससारमसारमेव निखिल बुद्ध्वा बुधा बोधका
लोकानुग्रहपेशलेन मनसा यत्न समाधीयताम् ॥
—भर्तृहरि (वैराग्यशतक)

भोग तरग भग चचल हैं, और प्राण क्षण भगुर मीत।
थोडे ही दिन का योवन सुख, अस्थिर प्रियजन की भी प्र त ॥
है असार ससार निखिल यह अपने मन में ऐसा जान।
पर उपकार कार्य मे ही निज चित्त लगाओ हे मतिमान् ॥
—स्व० गोपालदास गुप्त

सम्पादकीयम्

आचार्य वैद्यनाथ जी भी नहीं रहे

आर्य समाज की पुरानी पीढी के एक से एक बढ़कर विद्वान् अब धीरे धीरे इस धराधाम को छोडते जा रहे हैं। श्री प० बिहारी लाल जी शास्त्री, श्री अमर स्वामी जी महाराज और श्री वीरसेन जी वेदश्रमी के परलोक-प्रयाण को अभी हम स्मृति के गर्भ मे निकाल भी नहीं पाये थे कि आर्य समाज की एक और विभूति हमसे छिन गई। वैदिक वाङ्मय के प्रकाड विद्वान् श्री आचाय वैद्यनाथ शास्त्री उसी रत्न मञ्जूषा की देदीप्यमान उज्ज्वल मणि थे।

आचार्य जी ने जीवन भर जिस प्रकार सरस्वती की उपासना की और आर्य समाज द्वारा सचालित सारस्वतयज्ञ के वर्षों तक प्रमुख होता बने रहे, वैसा सौभाग्य विरलो को ही मिलता है। वे गत 25 वर्षों से आर्यों की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से जुडे हुए थे। कभी वे वेद भाष्य अभियान के अधिष्ठाता रहे, कभी शोध विभाग के अध्यक्ष रहे, कभी धार्मिक समस्याओ के सुझाने वाले व्यवस्थापक और परामर्श दाता रहे। गत कई वर्षों से वे धर्मार्य सभा क अध्यक्ष के रूप मे कार्य कर रहे थे। इस प्रकार सार्वदेशिक सभा की नाना गतिविधियो के साथ वे जुडे ए थे। इन दिनो वे यजुर्वेद का अग्रेजी मे भाष्य कर रहे थे।

एक बार वार्तालाप मे आत्माभिव्यक्ति करते हुए उन्होने लेखक से कहा था कि यजुर्वेद के इस भाष्य से मुझे यथार्थ मे आत्म सन्तोष हुआ है, यदि परमात्मा की दया से मैं इसे पूरा कर सका तो मेरी ओर से यह न केवल आर्य समाज को अनुपम भेंट होगी, प्रत्युत ऋषि दयानन्द तथा अन्य वैदिक ऋषियो के चरणो मे मेरी विनम्रतम श्रद्धाजलि भी होगी। परन्तु वे वह भाष्य पूरा नही कर पाये। अब से लगभग 3 मास पहले अकस्मात् वे पक्षाघात के शिकार हो गये और उनके शरीर का आधा हिस्सा गति-शून्य हो गया। तुरन्त अस्पताल मे भर्ती करवाया गया। कुशल चिकित्सको के उपचार से धीरे धीरे उनके अंगों में गतिशीलता आने लगी। वाणी भी लौट आई। पर स्मृति पूरी तरह नहीं लौटी। फिर भी उनके चेहरे पर लौटी मुस्कान को देखकर मन आशान्वित होता था। अभी उपचार चल ही रहा था। वे शनै शनै स्वास्थ्य-लाभ भी कर रहे थे। कुछ चलना फिरना भी शुरू किया था कि 9 माच, को फिर अचानक एक और तीव्र झटका लगा और बेहोशी की हालत मे उन्हे फिर अस्पताल मे भेज कर डाक्टरो की स्पेशल केयर यूनिट में रखना पडा। पर इस बेहोशी से वे नहीं उबर पाये और 11 मार्च की आधी रात को अस्पताल में ही इस लोक से विदा हो गये।

अगले दिन निगमबोध घाट पर आर्य विद्वानों, गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारियो और आर्य जनता की उपस्थिति मे उनकी वैदिक विधि से अन्त्येष्टि हुई। पुत्र के अभाव मे उनके दौहित्र ने चिता में अग्नि दी और उसके पश्चात् सबने मिलकर परमात्मा से उनकी आत्मा की सद्गति के लिये प्राथना की।

परन्तु यह कैसे मान लें कि वे सदा के लिये चले गये? जिस व्यक्ति ने अपने जीवन में हिन्दी, सस्कृत और अग्रेजी मे एक से एक बढ़कर वैदिक सिद्धान्तों की पोषक लगभग 60 पुस्तकें लिखी हो, भले हो उसका भौतिक शरीर अग्नि की भेंट हो गया हो परन्तु यश शरीर तो और उज्ज्वल हो उठा, ठीक वैसे ही जैसे सोना अग्नि में पड़कर कुन्दन बन कर निकलता है।

कभी लाहौर में ब्राह्म महाविद्यालय के आचार्य पद को सुशोभित करते हुए और बाद मे डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति द्वारा सस्थापित अनुसधान विभाग में कार्य करते हुए वे आर्य समाज से जुडे थे। उसके बाद गुरुकुल एटा के कुलाधिपति रहे, कन्या गुरुकुल पोरबन्दर के आचाय रहे और जब महामना मदन मोहन मालवीय जी की इस नररत्न पर दृष्टि पडी तो उन्होने काशी विश्वविद्यालय के पुस्तकाध्यक्ष पद पर इन्हें नियुक्त करके बडा सन्तोष अनुभव किया। अलवर के आय महासम्मेलन और मारिशस मे हुए अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सम्मेलन के प्रमुख योजनाकारों मे थे। पूर्वी तथा दक्षिणी अफ्रीका के अनेक देशो में भी उन्होंने वैदिक धर्म की दुदुभि बजाई थी। आर्य समाज द्वारा चलाये गये हैदराबाद सत्याग्रह आन्दोलन, हिन्दी रक्षा आन्दोलन और गोरक्षा आन्दोलन मे भी उनकी बडी सक्रिय भूमिका रही। आर्य समाज के सम्मुख जब भी कभी किसी तरह का सकट आता चाहे वह सकट वैधानिक हो, सामाजिक हो, राजनीतिक हो या धर्मशास्त्र अथवा विद्या सबन्धी हो—उन सभी अवसरो पर आर्य जनता का ध्यान उनकी तरफ जाता था और सब लोग उनके परामर्श को उपयोगी मानते थे। वे शास्त्रीय पाडित्य के अलावा कानून और विधि विधान सम्बन्धी बातो के भी बहुत अच्छे जानकार थ। इसलिये उनके परामर्श को प्रामाणिकता का दर्जा मिल जाता था।

सन् 1912 मे उत्तर प्रदेश के जौनपुर मे जन्म लेकर आचार्य वैद्यनाथ जी 76 वर्ष की आयु तक हमारे बीच रहे। उन्होने विभिन्न रूपो मे आय समाज की सेवा करते हुए दिग्दगत में अपने यश का विस्तार किया।

अन्त में यही कहने को जी चाहता है—

अम्भोजिनी-वन-निवास विलासमेव
हसस्य हन्ति नितरा कुपितो विधाता।
नत्वस्य दुग्ध-जल-भद-विधौ प्रसिद्धा
वैदग्ध्य-कीर्तिमपहर्तु मसौ समर्थ ॥

यदि विधाता हस पर कुपित हो जाये तो वह इतना ही कर सकता है। वह हस के कमलनियों से आच्छादित सरोवर मे विहार को समाप्त कर दे, किन्तु दूध और पानी को अलग-अलग करने की जो हस की विशेषता है उसकी तत्सम्बन्धी कीर्ति को तो विधाता भी नही छीन सकता।

'वायुरनिलममृत मथेद भस्मान्त शरीरम्।'—इस मन्त्र के साथ समाप्त हुई दाह क्रिया में अग्नि ने उनके शरीर को भस्म कर दिया। पाच भौतिक शरीर का जो पार्थिव अश था वह पृथ्वी मे मिल गया। शेष चारो भूतों को भी अग्निदेव ने उनका अ श उन तक पहुचा दिया। शरीर का जलीय अ श जल को और प्राण वायु विश्व में स्थित महान वायुदेव को और अवशिष्ट अ श आकाश को सौंप दिया। परन्तु उसमें जो अमृत तत्व था, वह तो थी आत्मा और जब तक उनका यश-शरीर जीवित रहेगा तब तक उनकी यह अमर आत्मा हमको सदा प्रेरणा देती रहेगी।

सूखा राहत केन्द्रों के लिए गेहूं चावल तुरन्त चाहिए

आर्य प्रादेशिक सभा द्वारा निम्न स्थानो पर सूखा राहत केंद्र चल रहे है। (1) महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट, टकारा (गुजरात), (2) आय समाज ब्यावर (राजस्थान), (3) गुरु कुल आश्रम आमसेना (उडीसा), (4) तपोवन आश्रम चाचीडी (उडीसा) इन केन्द्रो के लिए हमे चावल, और गेहू की तुरन्त अति आवश्यकता है। चारों केन्द्रों से इनकी माग आ रही है। हमारे पास जैसे-जैसे खाद्य सामग्री आती है हम इन चारो केन्द्रों को भिजवा रहे हैं। पर वह इतनी नही होती कि चारो केन्द्रो की पूर्ति की जा सके। आर्य बन्धुओ से प्रार्थना कि एक एक बोरी गेहू और चावल अवश्य भेजे। जो सज्जन खाद्य सामग्री सीधी भेजना चाहे, वे उपरोक्त पतों पर भिजवा सकते है। हमे पत्र द्वारा सूचना भिजवा देवें।

रामनाथ सहगल मन्त्री, आय प्रा० प्र० सभा मन्दिर माग नई दिल्ली

आकाशदीप रत्नम

—डॉ० धर्मवीर भारती—

इंडोनेशिया का स्वतंत्रता दिवस 16 अगस्त को पडता है—हमारे स्वतंत्रता दिवस के एक दिन बाद बहुचर्चित स्व राष्ट्रपति सुकार्नो (सुकर्ण) उसके पहले दिन रात को एक विशिष्ट उत्सव आयोजित करते थे, जिसमे जावा और बाली से सगीत मण्डलिया बुलायी जाती थी जो इडोनेशियाई बहासा (भाषा) मे रामायण गाती थी और श्रेष्ठ मण्डली को वे अपने हाथ से राष्ट्रीय पुरस्कार देते थे ।

जावा की राजधानी जकार्ता का भारतीय दूतावास, ऊचे-ऊचे फूलो लदे वृक्षो और हरे भरे लॉनोवाला एक डच शैली से बना हुआ बगला, उन्ही ऊचे-ऊचे वृक्षो के बीच एक असाधारण ऊचे कदवाला सावला, सौम्य व्यक्तित्व भारतीय राजदूत का वे हाथ मे एक स्वर्णाकित लिफाफा लिये टहल रहे हैं, मैं बाहर आता हू तो मुझे अपने पास बुलाकर लिफाफा दिखाते हैं, मुस्कराते हुए कहते हैं, "आज शाम को तैयार रहना, सुकार्नो ने भारतीय राजदूत और परिवार को विशेष आमत्रण भेजा है सगीत गोष्ठी के लिए, चलेंगे, तुम्हे सुकार्नो से मिलायेंगे।"

सुकार्नो उस समय सारे ससार के अखबारो की सुर्खियो में थे, वे भारत से कुछ असतुष्ट थे और चीन से मेल-जोल बढ़ा रहे थे लेकिन कुछ ही महीनो पहले अनुपस्थिति का लाभ उठा कर इडोनेशियाई कम्युनिस्ट पार्टी की सहायता से चीन ने साजिश कर एक कम्युनिस्ट सैनिक विद्रोह करा दिया था, जनरल सुहार्तो ने दृढ़ता से उस षड्यत्र को विफल बनाया था, प्रेसीडेंट के पद पर थे लेकिन उनके अधिकार सीमित कर दिये गये थे, उनकी गतिविधिया उनके निवास मर्डेका पैलेस तक सीमित कर दी गयी थी। देश भर से देशभक्त छात्रो के गिरोह बसों में भर-भर कर जकार्ता में एकत्र हो गये थे और सुकार्नो के विरुद्ध व्यापक प्रदशन की योजना थी सारे जकार्ता का वातावरण बेहद गर्म था भूमिगत हुए कम्युनिस्ट नेता कामरेड अदिति और उनके गुरिल्ला मध्य जावा के जगलों में छिप गये थे और रह रह कर हमला कर रहे थे मर्डेका महल और उनके आसपास टैंक और मशीनगन लिए सैनिक तैनात थे ।

इस सकट काल मे भारतीय राजदूत ने असाधारण धैर्य और नीति कुशलता का प्रदर्शन किया था । इस सारे तनाव के बीच हमारे राजदूत न केवल शांत थे वरन हसते हसते सारे सबध-सूत्रो को नया आयाम दे रहे थे, दूतावास में सुबह ही हम लोगो ने तिरगा फहरा कर, 'जन गण मन' गा कर अपना स्वतत्रता दिवस मनाया था। जनरल सुहार्तो ने भी शुभकामना सदेश भेजा था और शाम को राष्ट्रपति सुकार्नो का विशेष आमत्रण था भारतीय राजदूत और उनके परिवार और इष्टमित्रो को ऐसा अद्भुद अजात शत्रु, सर्वप्रिय व्यक्ति व था हमारे राजदूत का ।

कथावाचक सुकार्नो

वे असाधारण राजदूत थे—हिज एक्सीलेंसी श्री पेराला रत्नम् उन्होंने मुझें इडोनेशिया आमन्त्रित किया था ताकि इस महान देश की गहरी सांस्कृतिक परम्पराओ, भारतीय सस्कृतिक से उसके जुड़ाव और इस टैंक, मशीनगन, क्रान्ति प्रतिक्रान्ति, रक्तपात और व्यापक राजनीति और उथल-पुथल का प्रत्यक्ष अनुभव कर सकू ।

शाम को हम लोग तैयार हुए वे, उनकी विदुषी पत्नी श्रीमती कमला रत्नम् उनका बेटा अशोक, बेटी माधवी और मैं, गहरे हरे रग के छायादार वृक्षों के बीच सफेद, शानदार मर्डेका महल—टैंको और मशीनगनो के पहरे में सामने जमीन खोद कर बनाये गये सैनिक बकर और एक एटी एयरक्राफ्ट तोप भी कुछ भी उत्पात, किसी भी समय हो जाय, क्या ठिकाना !

माइक पर बोल रहे थे रत्नम् जी को देखते हुए "भारत मेरा प्रिय देश है, लेकिन उसने मेरे प्रिय मित्र आचार्य रघुवीर का समुचित सम्मान नहीं किया" (रत्नम् जी ने इशारे से दिखाया, हाल में एक ही फोटो टगा था डा रघुवीर का जिनसे सुकार्नो ने सस्कृत सीखी थी और दक्षिण-पूर्व एशिया पर भारतीय सस्कृति के प्रभाव का विशद ज्ञान प्राप्त किया था) सुकार्नो की मुद्रा सहसा बदली और हाथ उठाते हुए बोले, "हिज एक्सीलेंसी पेराला रत्नम् को मैं बता चुका हू आज आप सब को बताता हू कि मैं महाभारतकालीन भीम और हिडिबा के वीरपुत्र घटोत्कच का अवतार हू मैं सकटो से घबराता नही मैं योद्धा हू, यह रामायण गायन की गोष्ठी है, लेकिन एक गीत में घटोत्कच की प्रशसा में गाऊ गा सुनिए रत्नम् जी!"

यह रत्नम् जी का अनूठा व्यक्तित्व था कि जिस देश में राजदूत होकर रहे

> **वे** असाधारण राजदूत थे जिस देश में राजदूत होकर रहे, वहा की सास्कृतिक परपराओ में गहरे घुल मिल गये । वे चाहते थे कि दक्षिण पूव एशियाई देशो को उपनिवेशवादी ताकतो से बचने के लिए रामायण कामनवेल्थ जैसी कोई चीज बनायी जाये।

कडी सैनिक जाच के बाद सैनिको के पहरे में हम महल मे दाखिल हुए अदर विशाल समाकक्ष का वातावरण भी अद्भुद था, चारो तरफ अपने-अपने वाद्य यत्र लिये बैठी हुई सगीत मण्डलियां कहा हैं राष्ट्रपति सुकार्नो ? किसी ऊची मखमली कुर्सी पर आसीन ? नहीं, वे तो स्वय अपने सामने एक विशेष प्रकार का बडा-सा काष्ठ तरग रखे, दो छोटी छडिया हाथ मे लिये फर्श पर बैठे थे उन्हीं सगीतज्ञो के बीच कैसा अद्भुद है आदमी है यह भी ? हम लोगो को आते देखकर मुस्कराये, हाथ उठाकर अभिवादन किया हम लोग कुर्सी पर बैठ गये तो सहसा माइक अपने सामने खींचा और बोले, "हमारे भारतीय दोस्त आ गये हैं अब बाकी सब खामोश रहेंगे इनके लिए अब स्वय बापक (बापू) सुकार्नो काष्ठ तरग बजाकर रामायण गायेंगे!"

एक गत काष्ठ तरग पर बजायी—मधुर और रागबद्ध ! हाल में तालिया गूजी वे उत्साहित हो कर खडे हो गये माइक ऊचा किया गया उनके होते ही हाल में हलचल हुई, और हमने अचरज से देखा कि हर गद्दे दार सोफे के पीछे एक-एक सैनिक मशीगन लिये छुपा था वे सब उनके खडे होते ही अटेंशन मुद्रा मे खडे हो गये स्टेगनें चारो तरफ तन गयी सबके चेहरे पर तनाव आ गया, लेकिन बापक राष्ट्रपति सुकार्नो शांत थे.

वहा की सास्कृतिक परपराओ में गहरे घुल-मिल गये और भारत के लिए उन्होंने एक गहरा प्यार उस देश के जन-मन मे जगाया दक्षिण पूव एशिया उनका विशेष प्रिय क्षेत्र था, इडोनेशिया के बाद वे लाओस में रहे, थाईलेंड, वियतनाम, लाओस, कम्बुचिया और उस सारे क्षेत्र में चलते गहरे राजनीतिक तनावो का उन्हें गहरा ज्ञान था और इस सारे क्षेत्र में चीन किस तरह भारतीय प्रभाव को समाप्त करना चाह रहा उन षड्यत्रो के प्रति वे पूरी तरह सावधान थे।

रामायण कामनवेल्थ

उनका एक स्वर था कि सारा दक्षिण एशिया एक बडी सांस्कृतिक और आर्थिक सहयोग-श्रृखला मे बध जाये तो हर प्रकार के उपनिवेशिवादियो के मनसूबे विफल हो जायें वे उपनिवेशवादी शक्तिया पूजीवादी हो या साम्यवादी—भारत इस तमाम क्षेत्र को उपनिवेशवादी षड्यत्रो से मुक्त रख सकता है,

इसके लिए उन्होने एक अभूतपूव कल्पना की थी, उनका कहना था कि श्रीलका, पाकिस्तान, नेपाल, बर्मा, लाओस, थाईलेंड, कम्बूचिया, वियतनाम, इडोनेशिया—ये सभी देश ऐसे हैं जहा रामकथा विविध रूपो मे प्रचलित है, इन सभी जगहों में उसका स्वरूप केवल धार्मिक न हो कर सांस्कृतिक है, इन देशों के जन मानस पर रामायण के सांस्कृतिक मूल्यो का गहरा प्रभाव है, भारत को चाहिए की पश्चिम की ओर देखना छोड कर इस सारे क्षेत्र को अपनी वैदेशिक नीति में प्रमुखता से महत्व दे और एक सांस्कृतिक आर्थिक सहयोग योजना बनाये —इसे रामायण कामनवेल्थ की सज्ञा दे और इन्हे सगठित कर उपनिवेशवादी शक्तियो के प्रभाव से मुक्त कर आत्म निर्भर बनाये और इसके विकास में आगे बढ कर दिशा निर्देश दे, लेकिन उनका यह महान स्वप्न अग्रेजी और अग्रेजियत से प्रभावित सरकार और अफसरशाही की भूलभुलैया में भटक कर रह गया, जब वे मैक्सिको गये तब वहा उन्होने प्राचीन भारतीय सस्कृतिक के अवशेषों को पुनर्जागृत करने का अभियान चलाया। आक्टेवियो पाज से लेकर कितने ही अन्य दक्षिण अमरीकी लेखको, विद्वानों, भारत विशेषज्ञो से उन्होने सपर्क बढाये और उन्हे भारत की ओर अन्मुख किया दक्षिण अमरीका मे चिली के विश्वविख्यात राष्ट्रपति आयदे (जिनकी बाद में हत्या कर दी गयी) से उनका निजी पत्र-व्यवहार हुआ था, चे गुवेरा के कुछ वरिष्ट अनुयायी भी उनसे मिले थे और क्यूबा के राष्ट्रपति फीडेल कास्त्रो से उन्होने मैत्री स्थापित कर ली थी, उन दिनो मैं धुआधार सिगार पीता था, मेरी इस आदत से वे प्रसन्न नहीं थे कई बार टोक चुके थे लेकिन एक बार जब वे मेक्सिको से लौटे तो मुझे बुलाया हवाना सिगारो का एक बडा डिब्बा दिया और फिर अपनी अटैची खोलकर एक विशेष सिगार निकाला, भेंट करते हुए बोले, "देखो, यह फीडेल कास्त्रो के डिब्बे से तुम्हारे लिए लाया हू" उस सिगार के प्लाटिक कवर पर सुनहरे अक्षरो मे राष्ट्रपति कास्त्रो का नाम लिखा हुआ था दक्षिणपूव एशिया के प्रति उनमें जो गहरा लगाव था वही दक्षिण अमरीका के लातीनी देशों के प्रति भी था, उनकी विदुषी पत्नी सस्कृत की प्रकाड आचार्या श्रीमती कमला रत्नम् उनके इन सास्कृतिक अभियानो की प्राण-प्रेरणा रही हैं, उन्होने मैक्सिको के प्रवास काल में हिन्दी कविताओं का स्पेनी भाषा मे अनुवाद कर एक सकलन वहीं प्रकाशित करवाया था और जब मैं बाली द्वीप की राजधानी देनपसार के उदयन विश्वविद्यालय में गया तो प्राचाय और प्राध्यापक तो श्री रत्नम् और कमला रत्नम् की प्रशसा करते नही अघाते थे लेकिन गभीर आत्मसयमी और भारतीय सस्कृति के प्रति अदम्य निष्ठावान पेराला रत्नम् ने कभी भी आत्मविज्ञापन नहीं किया, अपनी स्थितियों का कोई राजनीतिक लाभ नहीं उठाया—और हमारे राजनीतिज्ञो और सांस्कृतिक नेताओं ने कभी उनका समुचित महत्व नहीं पहचाना कैसे चुपचाप चले गये रत्नम् जी !

आज वे नहीं हैं तो याद आ रही है वह जकार्ता की सुबह दूतावास के द्वार पर एक विशाल चंपा का वृक्ष था । चंपा

(शेष पृष्ठ 12 पर)

आर्य समाज और राजनीति

—बलराज मधोक -

गत कुछ समय से आर्य समाज की पत्र-पत्रिकाओं में स्वतन्त्रता से पूर्व भारत की राजनीति में आर्य समाज की भूमिका और स्वतन्त्र देश की राजनीति को आर्य समाज के सिद्धान्तों के अनुरूप ढालने, इसका भारतीय करण करने और राजनैतिक क्षेत्र में भी हिन्दू समाज को दिशा देने सम्बन्धी लेख छप रहे हैं। डॉ॰ हर्ष नारायण और डॉ॰ भवानीलाल भारतीय के "राजनीति का भारतीयकरण" सबधी लेख विशेष रूप से विचारणीय हैं।

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती राष्ट्र के जीवन मे राजनीति के महत्व को समझते थे। इसलिये उनके द्वारा चलाए गए राष्ट्रोत्थान के अभियान में राजनैतिक चेतना पैदा करने और देश की राजनीति को राष्ट्रहित के अनुरूप दिशा देने की ओर विशेष ध्यान दिया गया था। वर्तमान युग में आर्यावर्त्त में आर्य राजनीनि अथवा हिन्दुस्तान में हिन्दू राजनीनि के वे प्रथम व्याख्याता और अग्रदूत थे। उन्होंने न केवल 1857 के सशस्त्र स्वतन्त्रता सग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की, अपितु उसके विफल हो जाने के बाद जब सारा देश कुछ समय के लिये हतप्रभ हो गया था, उन्होने स्वतन्त्रता की आकाक्षा को जीवित रखा। 1857 की क्रान्ति के दमन के बाद सबसे पहले महर्षि ने ही हिन्दुस्तान में राजनैतिक चेतना और राष्ट्रीयता की भावना जगाने और इसे पुन स्वतन्त्र कराने के लिये आवाज उठाई थी। राष्ट्र चेतना के आधार के रूप में राष्ट्रीय सस्कृति के सम्बन्ध में जागरूकता पैदा करना, राष्ट्रीय स्वाभिमान जगाना, राष्ट्रीय एकता के मूल सूत्र के रूप में हिन्दी को राष्ट्रभाषा और देवनागरी लिपि को राष्ट्रीय लिपि के रूप में प्रस्तुत करना, हिन्दू समाज को सुदृढ करने के लिये उसमें व्याप्त छुआछूत आदि कुरीतियो को मिटा कर समाज मे एकरूपता पैदा करना, उनके द्वारा शुरू की गई सर्वतोमुखी समग्र क्रान्ति प्रमुख अग थे। उन्होने अपने जीवन के अन्तिम वर्ष कुछ देसी नरेशो के जीवन और विचारो को बदलने और उन्हें भावी स्वतन्त्रता सग्राम मे प्रभावी भूमिका के लिए तैयार करने में बिताए। वे इस बात को समझते थे कि बिना प्रबल शक्ति सघर्ष के देश को स्वतन्त्र नहीं किया जा सकता। वे देसी नरेशो की शक्ति का उस दिशा में प्रयोग करना चाहते थे। 'सत्यार्थ प्रकाश' में भी पूरा छठा समुल्लास राजनीति पर लिख कर उन्होंने अपने अनुयायियों और अपने द्वारा प्रस्थापित आर्य समाज के सभासदों और समर्थकों को राजनीति की उपेक्षा न करने का सन्देश दिया।

कांग्रेस के अन्दर भी

यह महर्षि दयानन्द के जीवन और चिन्तन का ही प्रभाव था कि उनके निधन के बाद आर्य समाज को ब्रिटिश शासक एक क्रान्तिकारी और राजद्रोही (सिडीशियस) आन्दोलन मानने लगे। आर्य समाज से प्रभावित लोगों के स्वतन्त्रता आन्दोलन में योगदान को आर्य समाज के कट्टर आलोचक भी नकार नहीं सकते। महात्मा गांधी का कांग्रेस पर वर्चस्व कायम होने तक कांग्रेस की नीति-रीति पर महर्षि दयानन्द के चिन्तन का प्रभाव और आर्य समाज की छाप स्पष्ट दिखती थी। परन्तु जब गाधी जी ने खिलाफती मुल्लाओ के प्रभाव में आकर कांग्रेस की नीति-रीति को मुस्लिम पोषक रूप देना और हिन्दुओ में हीन-भावना पैदा करना शुरू किया, तो भाई परमानन्द, लाला लाजपतराय और स्वामी श्रद्धानन्द जैसे अनेक प्रमुख आर्य समाजी नेताओ ने उस नीति के विरोध स्वरूप कांग्रेस को छोड दिया। फिर भी स्वतन्त्रता आन्दोलन मे उनका योगदान बना रहा। राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन और लालबहादुर शास्त्री जैसे अनेक आर्य समाजी बन्धु तब भी कांग्रेस के अन्दर से कांग्रेस की नीतियो को प्रभावित करने का प्रयत्न करते रहे। सरदार पटेल का यथार्थवादी और राष्ट्रवादी चिन्तन महर्षि दयानन्द के चिन्तन के निकट था इसलिये उनके रहते हुए गाधी, नेहरू और मौलाना आजाद की तिकडी के बावजूद कांग्रेस में एक प्रभावी राष्ट्रीय हिन्दुत्ववादी 'लाबी' बनी रही।

1950 में सरदार पटेल के निधन के बाद कांग्रेस शासन पर प॰ नेहरू और मौलाना आजाद पूरी तरह हावी हो गए। पाकिस्तान और खडित भारत में रह गए मुसलमानो की हिन्दुस्तान और हिन्दुओ के हितो की कीमत पर तुष्टीकरण की नीति के कारण आर्य समाजी और अन्य प्रबुद्ध हिन्दुओं में व्यापक रोष फैलने लगा। डॉ॰ श्यामा प्रसाद मुकर्जी ने इस नीति के विरोध में ही प॰ नेहरू के मन्त्रिमण्डल को छोडा था। वे आर्य समाज के भी अति निकट थे। वे एक आर्य महासम्मेलन की अध्यक्षता भी कर चुके थे। इसलिये वे आर्य समाज से सम्बधित तथा अन्य राष्ट्रीय हिन्दुत्ववादी तत्वों की आशा का केन्द्र बन गये।

जनसघ का निर्माण

भारतीय जनसघ का निर्माण इस परिस्थिति का परिणाम था। इसके बनाने में उस काल के प्रमुख आर्य समाजी बन्धुओं—महाशय कृष्ण, आचार्य रामदेव लाला योधराज, लाला बलराज, वैद्य गुरुदत्त इत्यादि—ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। भाई महावीर और मैं उस समय राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के साथ सम्बन्धित थे। परन्तु हमारी भी पृष्ठ भूमि आर्य समाज की ही थी। इसलिये मेरे द्वारा लिखे गए जनसघ के प्रथम घोषणा-पत्र पर महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के चिन्तन की छाप थी।

राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ के कर्णधार भी परिस्थिति से क्षुब्ध थे। परन्तु वे डाक्टर मुकर्जी को समर्थन देने के मामले मे एकमत नहीं हो पा रहे थे। जब डॉ॰ मुकर्जी ने उनके निर्णय की प्रतीक्षा किए बिना समान विचार वाले अन्य लोगों के सहयोग से हिन्दुत्ववादी राजनैतिक सगठन बनाने का फैसला कर लिया जनसघ के नेताओ ने उन्हें सघ का भी समर्थन देने का निर्णय कर लिया।

जनसघ की गाडी चलाने के लिये पहली बडी आर्थिक सहायता महात्मा हसराज के सुपुत्र लाला योधराज से मिली। जनसघ की पहली कार्य समिति में आर्य समाज से सम्बन्धित बन्धुओं की सख्या अधिक थी। जनसघ को एक प्रभावी हिन्दुत्ववादी सगठन बनाने में आर्य समाज का योगदान किसी तरह भी सघ के योगदान से कम नहीं था। यह स्थिति 1967 तक बनी रही। उस समय मैं भारतीय जनसघ का अखिल भारतीय अध्यक्ष था। भारत और भारतीय रणनीति का भारतीयकरण और हिन्दूकरण 1967 के लोकसभा के चुनाव मे जनसघ के मुख्य मुद्दे थे। उस चुनाव में लाला राम गोपाल शालवाले (वर्तमान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती), स्व॰ श्री ओमप्रकाश पुरुषार्थी, श्री यज्ञदत्त शर्मा, श्री शिवकुमार शास्त्री, श्री जगदेव सिह सिद्धान्ती स्वामी रामेश्वरानन्द, स्व श्री प्रकाशवीर शास्त्री, श्री निरन्जन वर्मा इत्यादि अनेक प्रमुख आर्य समाजी बन्धु जनसघ के टिकट पर या जनसघ के समर्थन से चुनकर ससद मे पहुचे थे और उन्होने देश की राजनीति को आर्यसमाज के चिन्तन के अनुसार प्रभावित भी किया था।

जनसघ का विघटन

1967 के अन्त मे मेरे द्वारा जनसघ का अध्यक्षपद छोडने और मेरे उत्तराधिकारी श्री दीनदयाल उपाध्याय की 1968 के शुरू मे रहस्यमय हत्या के बाद जनसघ की बागडोर ऐसे तत्वो के हाथ में आ गई जिनके प्रेरणा-स्रोत न महर्षि दयानन्द थे और न वीर सावरकर और न डा॰मुकर्जी और न डा॰हेडगेवार। उसके बाद जनसघ का भी वही हाल हुआ जो गांधी जी के बाद कांग्रेस का हुआ था। फलस्वरूप वैद्य गुरुदत्त और मेरे जैसे अनेक आर्य समाजी व हिन्दुत्ववादियो ने जनसघ छोड दिया या जनसंघ के नये नेतृत्व ने उन्हें निकाल दिया। फलस्वरूप जनसंघ अपना वैचारिक आधार खो बैठा। यही कारण था कि 1977 मे बनी जनता सरकार का सबसे बडा घटक होने के बावजूद जनसघ उस नीति-रीति को राष्ट्रवादी हिन्दुत्ववादी दिशा देने में पूरी तरह विफल हुआ। यदि इसके नेताओं ने अपना वैचारिक आधार न छोडा होता तो वे वैचारिक स्तर पर चौधरी चरणसिह जैसे आर्य समाजी के साथ तालमेल कर के भारत की राजनीति का भारतीयकरण करके भारत के आंतरिक व बाहरी नीतियों को राष्ट्रवादी दिशा दे पाते।

जनता पार्टी के विघटन के बाद जनसंघ के नये कर्णधारो ने जनसघ के नाम, केसरिया झडे, विचारधारा और प्रेरक तत्वो का परित्याग करके भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नाम से कांग्रेस का अन्धानुकरण करना शुरू कर दिया। दुर्भाग्य से राष्ट्रीय स्वय सघ के गोलवलकर की मृत्यु के बाद उभरे नये नेतृत्व ने भी सघ की मूल विचारधारा से वैसे ही मुह मोडना शुरू कर दिया था जैसे जनसघ के नये नेतृत्व ने जनसंघ की विचारधारा से मुह मोडा था। इस नये नेतृत्व ने तब सघ का पूर्ण समर्थन भाजपा को देना शुरू कर दिया।

भारतीय जनता पार्टी की नयी विचारधारा की हिन्दुत्ववादी राष्ट्रवादी लोगों के लिये कोई अपील नहीं। मगर सघ के समर्थन के कारण वह जनसघ के नाम की कमाई पर अपनी रोटी सेक रही है। परन्तु इसकी अवसरवादिता और हिन्दू हितों की उपेक्षा के कारण सघ और जनसघ के बहुत से पुराने कार्यकर्त्ता इसमें घुटन महसूस करने लगे हैं। सघ के नेतृत्व के दबाव के बावजूद भाजपा से उनका मोह भग हो रहा है। कोई विचारवान और सिद्धान्तवादी आर्यसमाजी तो भाजपा का समर्थन कर ही नहीं सकता।

दूसरी ओर देश की परिस्थितियां जो मोड ले रही हैं उसके कारण जनसघ या जनसघ जैसे हिन्दुत्ववादी-राष्ट्रवादी विकल्प की आवश्यकता और प्रासगिकता 1951 से भी अधिक महसूस होने लगी है। मुसलमानो का बढ़ता हुआ आक्रामक रूख, ईसाईयो पर सोनिया गाधी का वरदहस्त, अकाली उग्रवादियो को पाकिस्तान की सह, राजीव गाधीकी बहुमुखी विफलता और उसकी गिरती हुई साख ऐसी कटु वास्तविकताएं हैं, जिनमे कोई विचारवान् व्यक्ति आखें नहीं मूद सकता।

राजनीति का भारतीयकरण

भारत की राजनीति का भारतीयकरण करना और इसकी नीतियों को राष्ट्रवादी, हिन्दुत्ववादी दिशा देना अब हिन्दुओ और हिन्दुस्तान के अस्तित्व का

(शेष पृष्ठ 9 पर)

हमारी टंकारा यात्रा

—सरला पाल—

दिल्ली से 10 फरवरी 1988 को प्रात काल हमारी बस टकारा के लिये रवाना हुई। सब यात्रियो के मन मे आर्यों के इस पवित्र धाम के दर्शन की उत्सुकता थी। रास्ते भर ऋषि सम्बन्धी और ईश्वर भक्ति के गीत गाते हुए दिन भर का सफर किस तरह पूरा हो गया, उसका कुछ आभास नहीं हुआ। रही सही थकावट शाम को ब्यावर पहुचने पर मिट गई। आर्यसमाज ब्यावर का आतिथ्य आर्य जगत् मे विख्यात है। हर वर्ष शिव रात्रि के अवसर पर बसो से टकारा जाने वाले यात्रियो का जिस प्रेम से वे आतिथ्य करते हैं, वह दुर्लभ है, रात्रि के स्वादिष्ट भोजन के अलावा प्रात काल यज्ञ पश्चात् जलपान करवाके उन्होने विदा किया तो ब्यावर समाज की मधुर स्मृतियो को हृदय मे सजोये हुए हम आबू के लिए रवाना हो गये।

आबू मे सबसे अधिक दर्शनीय कोई स्थान है तो वह दिलवाडा का जैन मन्दिर है। सगमरमर मे मूर्ति कला का ऐसा अद्भुद वैभव है उसे देखने के लिए दूर दूर से केवल यात्री ही नही बल्कि शिल्प और कला के प्रेमी भी भारी सख्या में आते हैं। आबू में सूर्यास्त का दृश्य और नक्की झील का दृश्य भी दर्शको को बिना प्रलोभित किये नही रहता।

अगले दिन आबू से राजकोट पहुचे। यहाँ भी स्थानीय समाज के सदस्यो ने जिस प्रकार भावभीना स्वागत किया उससे मन पुलकित हो उठा। छोटे छोटे बच्चो का यज्ञ मे शुद्ध मत्रोच्चारण सुनकर भी बहुत अच्छा लगा। यहा एक सज्जन से भेंट हुई जिनकी इस समय आयु 85 वर्ष है और जिन्होने लगातार तीस साल तक साईकिल पर भारत भर में भ्रमण करते हुए वैदिक धर्म का प्रचार किया है।

राजकोट से हम सीधा सोमनाथ पहुचे। समुद्र के किनारे पर स्थित इस ऐतिहासिक मन्दिर के साथ भारतीय इतिहास की कुछ ऐसी ददनाक घटना जुडी है जिसको स्मरण करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि ऋषि दयानन्द ने इतने प्रबल रूप से मूर्ति पूजा का खण्डन क्यो किया। जिस मूर्ति के भरोसे रहकर उस समय के हिन्दुओ ने महमूद गजनबी के दात खट्टे करने के बजाय सोमनाथ मन्दिर के विध्वस के साथ पराजय का कलक अपने सिर लिया, वह समस्त हिन्दुओ के लिये लज्जा की बात है। सरदार पटेल की कृपा से हमारी राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक सोमनाथ का जो नया और भव्य मन्दिर वहा बनकर खडा हुआ है वह एक तरह से समस्त भारतवासियों को मूर्ति पूजा के अन्धविश्वास के विरुद्ध चेतावनी देने वाला दृढ स्तम्भ है। पिछले एक हजार साल के इतिहास मे न जाने इस स्थान पर बने मन्दिरों का कितनी बार विध्वस हुआ, उनके स्थान पर मस्जिदें बनीं जब जब कोई प्रतापी हिन्दुराजा आया तब तब उसने मस्जिद को गिराकर फिर मन्दिर बनवा दिया। जब गुजरात मे मराठों का राज हुआ तब अहिल्या बाई ने सन 1783 मे एक छोटा शिव मन्दिर भी बनवाया था जो अभी तक सुरक्षित है। जिस सोमनाथ के चरणो को समुद्र प्रक्षालित करता है उसके सौन्दर्य को और इतिहास के कारण पाठ को हृदय में धारण कर जहा श्रीकृष्ण का देहोत्सर्ग हुआ था उस प्रभास तीर्थ का दर्शन करते हुए हम आगे रवाना हुए। लम्बा सफर तय करके पोरबन्दर के कन्या गुरुकुल मे प्रवेश किया तो जैसे नई दुनिया मे पहुच गये। इस कन्या गुरुकुल की स्वच्छता, अनुशासन-प्रियता और भोजनाच्छादन आदि की अति उत्तम व्यवस्था देखकर मन गदगद हो गया। यह गुरुकुल सौराष्ट्र के महान दानवीर नानजी भाई कालिदास की केवल दान वीरता का ही नहीं, परन्तु अपने धन का समाज के लिये सही उपयोग करने का प्रतीक है। वहीं नानजी भाई की स्मृति में बनाया गया उनका स्मृति-दर्शन निवास भारत मन्दिर, और तारामण्डल (प्लनेटोरियम) भी देखा। पोरबन्दर मे ही महात्मा गाधी का जन्म स्थान, नानजी भाई द्वारा बनवाया गया, उनके साथ ही लगता हुआ कीर्ति मन्दिर भी देखा। गाधी जन्म स्थान के कुछ ही दूरी पर बना हुआ सुदामा का मन्दिर और उसकी कुटिया भी देखी।

सुदामा का मन्दिर देखने के साथ ही श्रीकृष्ण की राजधानी द्वारिका याद आ गई। पोरबन्दर से हम द्वारिका के लिये रवाना हुए। द्वारिका से लगभग 30 मील दूर ओखामण्डल के अन्तर्गत समुद्र के बीच मे बनी द्वारिका बैट भी देखी। द्वारिका नगरी श्रीकृष्ण की

(शेष पृष्ठ 9 पर)

आचार्य विश्व बन्धु शास्त्री – जो अब नहीं रहे

—ब्र नन्द किशोर एम ए.—

आचार्य प० विश्वबन्धु शास्त्री का जन्म 25 अप्रैल 1921 उखलाना (अलीगढ) मे हुआ। उनकी शिक्षा विरजानन्द साधु आश्रम अलीगढ, गुरुकुल सूर्य कुण्ड बदायू, गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन हिन्दू विश्वविद्यालय काशी मे हुई। उन्होने शुजाबाद (मुलतान) कुबेर इन्टर कालेज बुलन्दशहर, महिला विद्यापीठ मुसावर (भरतपुर), आर्य कन्या महाविद्यालय (भरतपुर) मे अध्यापन कार्य किया। तथा उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश पजाब, हरियाणा, आन्ध्र कर्नाटक महाराष्ट्र बिहार दिल्ली आदि उनके प्रचार क्षेत्र रहे।

आर्य सभा जिला अलीगढ आर्य कुमार परिषद् (भारत वर्षीय) आर्य प्रतिनिधि सभा (उत्तर प्रदेश) राजस्थान के बहुत वर्षों तक पदाधिकारी रहे। 1977 से 1980 तक आर्यप्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रधान एव गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के कुलाधिपति रहे।

आचार्य जी का साहित्य निर्माण में योगदान—अथर्ववेद के प्रथम, द्वितीय, षष्ठ काड का सस्कृत हिन्दी में भाष्य, आर्य समाज के दस नियमों पर विस्तृत व्याख्या तथा मुक्तात्मा महर्षि दयानन्द, राधा कौन थी, हिरण्य कश्यप और प्रह्लाद का वैदिक स्वरूप, वैदिक शिव, दीपक इत्यादि पुस्तकों की रचना की। आचार्य जी बडे प्रभावशाली वक्ता होने के साथ साथ उच्चकोटि के कवि भी थे। उनकी लिखी हुई सैकडो कवितायें अप्रकाशित हैं। अथर्ववेद भाष्य भी अभी अप्रकाशित है।

आचार्य जी के पिता जी ने सबको स्वाभिमान से जीना सिखाया। एक बार आचार्य जी अपने पिता से मिलने गए, पिता वहा नहीं थे वे प्रतीक्षा करते रहे, पिता के स्वामी ने उनसे हुक्का भरने के लिए कहा, आचार्य जी हुक्का भरकर ला रहे थे त्योही उनके पिता जी आ गए। पिताजी ने कहा—चौधरी साहब! आपका नौकर मैं हू, मेरा पुत्र नहीं, मैं अपने पुत्र को वेदो का विद्वान् बना रहा हू, नौकर नहीं। इस प्रकार पिता ने आचार्य जी को स्वाभिमान सिखाया। आचार्य कहते थे कि मेरे पिता जी जिस चौधरी के यहा नौकरी करते थे, चौधरी के पुत्र वेद के विद्वान् मानकर आज हमारे चरण छूते हैं, खूब आदर सत्कार करते हैं।

आचार्य जी वेदो के प्रकांड पडित थे सभी शास्त्रो के भी ज्ञाता थे। व्याकरण महाभाष्य पर गहरी पैठ थी। वे वर्तमान समय के अद्वितीय यास्काचार्य माने जाते थे। आचार्य प० विश्वबन्धु शास्त्री ने उत्तर प्रदेश के सभा के प्रधान पद पर रहते हुए जो कार्य किया है वह चिरस्मरणीय है। आचार्य जी ने अपने काल मे सभा के लिए दो जीपें खरीदीं, सभा में सैकडों उपदेशक, प्रचारक रखे पूर्वी पश्चिमी प्रदेश में जीप द्वारा ग्राम ग्राम मे महर्षि के सन्देश का प्रचार प्रसार किया। ऐसा प्रचार किसी प्रदेश मे 'न भूतो न भविष्यति' देखने को मिलेगा। जिसके रोटी कपडा नहीं था, उसके अभाव की पूर्ति आचार्य जी ने किया, वे गरीब अनाथो के रक्षक थे गुरुकुलो के सरक्षक थे, अपने काल मे कन्या गुरुकुल हाथरस को पचास हजार रुपए ततारपुर गुरुकुल प्रभात आश्रम को कई हजार की सहायता दी। गुरुकुल वृन्दावन की स्थिति बहुत खराब थी उसको सुधारा। आपके काल मे दो सौ बच्चे अध्ययन करते थे। आपकी कार्य करने की शैली अद्भुत, निराली थी, आपके वर्चस्व को देखकर लोगो ने कीचड उछालना शुरू किया, आरोप लगाये, आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० से 12 वर्ष के लिये निकाले गए, वेद प्रचार करके अपने परिवार के लिए दक्षिणा लाते थे, वह भी समाजों मे बन्द कर दिया गया। फिर भी आपने धैर्य को नहीं खोया, निन्दा स्तुति से हटकर भारत वर्ष के प्रत्येक प्रान्त में प्रचार किया पुन ख्याति अर्जित की। आपको टकारा उपदेशक विद्यालय के आचार्य पद तथा आर्य वानप्रस्थाश्रम उपदेश विद्यालय के आचार्य पद को अलकृत करने के लिये कहा गया तो आप सोच ही रहे थे कि किधर कार्य किया जाय, आर्य-वानप्रस्थ आश्रम की वेदी से चार दिन व्याख्यान दिया। 25 1 88 को दर्द की शिकायत हुई तो 26 1 88 को रामकृष्ण

अस्पताल में प्रविष्ट हुए और वहीं चुपचाप, 'ज्यों की त्यों रख दीनि चदरिया'।

गुरुकुल कागडी के आचार्य, प्राच्य पक, वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, वेद-मन्दिर, सन्यास आश्रम, आर्य समाज हरिद्वार आदि सभी सस्थाओ ने श्रद्धाजलि अर्पित की तथा अन्त्येष्टि में भाग लिया। 7-2-88 को श्रद्धाजलि अर्पित करने के लिए आर्यनगर ज्वालापुर में सभा हुई, उसमे हरिद्वार, ज्वालापुर, सहारनपुर, मेरठ, मुजफ्फर नगर, अलीगढ मथुरा इत्यादि स्थानो के गण्यमान्य व्यक्तियो ने आचार्य जी को श्रद्धाजलि अर्पित की। आचार्यजी के 22 वर्षीय बड़े पुत्र वेदव्रत आर्य, छोटे देवव्रत आर्य, धर्मपत्नी कान्ति आर्या को अपने पीछे छोड गये हैं। आचार्य जी की श्रद्धांजलि सभा में एकत्र होने वालों ने परिवार की सहायता का आश्वासन दिया।

पता—आचार्य सार्वदेशिक दया० सन्यास वानप्रस्थ मडल ज्वालापुर (हरिद्वार)

साहित्य समीक्षा

सारस्वत सत्र की पूर्णाहुति सदृश है यह ग्रन्थावली

> श्रद्धानन्द ग्रन्थावली (11 खण्डो में)
>
> सम्पादक—प्रो भवानी लाल भारतीय तथा प्रो राजेन्द्र जिज्ञासु
>
> प्रकाशक-गोविन्दराम हासानन्द, नई सडक दिल्ली।
>
> मूल्य 600 रु०

भारत की शिक्षा प्रणाली में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर उसमें पुरातन नैतिक मूल्यों की स्थापना करने वाले स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन बहुआयामी था। वे एक साथ ही समाज सुधारक, धर्म प्रचारक शिक्षा शास्त्री, राष्ट्रीय स्वतत्रता सग्राम के वीर सेनानी तथा कुशल सगठक थे। बहुविध प्रवृत्तियो मे सतत् लगे रहने पर भी उन्होंने प्रचुर मात्रा में लेखनकार्य किया था। स्वामी श्रद्धानन्द कुशल एव प्राणवान् लेखक थे, इस तथ्य का पता हमें उनकी लेखनी से प्रसूत कल्याण माग का पथिक' तथा 'प लेखराम की जीवनी जैसी साहित्यिक गुण सम्पन्न कृतियों से लगता है। 'कल्याण मार्ग का पथिक' का तो हिन्दी के आत्मकथा साहित्य मे अपना विशिष्ट स्थान है और पजाब विश्वविद्यालय ने उसे अपनी हिन्दी एम ए की परीक्षा के पाठ्यक्रम में भी रखा है।

स्वामी श्रद्धानन्द को एक कुशल सस्मरण ...क के रूप में भी स्मरण किया जाएगा ...नके सस्मरणो को अत्यन्त उन्होंने जेल ...क औरयथार्थवादी शैली में बदी जीवन विचित्रअनुभव' में अकित किया है। आय ...माज के सदस्य बनने के उपरान्त उन्होने ...ाध्याय को अपने जीवन का नियमित ...य बना लिया। उनका यही विस्तृत ...ास्त्राभ्यास ससार के समक्ष तब प्रकट ...आ जब उन्होने स्वसम्पादित "सदर्म ...चारक" मे नियमित रूप से "धर्मोपदेश' ...ीर्षक के अन्तर्गत वेद, उपनिषद, गीता ...नुस्मृति आदि शास्त्रों के प्रेरणादायी ...न्त्रो, और श्लोकों की सारगर्भित व्याख्यायें लिखीं। आलोच्य ग्रन्थावली के द्वितीय खण्ड मे इन्हीं प्रवचनो को सग्रहीत किया गया है।

उनका दयानन्द विषयक चिन्तन और मनन अनेक ग्रन्थो में प्रतिफलित हुआ है। "आदिम सत्यार्थप्रकाश और आर्यसमाज के सिद्धान्त" लिखकर उन्होंने दयानन्द रचित सत्यार्थप्रकाश के आद्य सस्करण (1875 में प्रकाशित) की कतिपय विशेषताओं को तो उद्घाटित किया ही है, उसके विषय मे प्रचलित या जान-बूझ कर फैलाई जाने वाली अनेक भ्रान्तियो का भी सतर्क निराकरण किया है। ईसाई प्रचारक और लेखक पादरी जे एन फर्कुहर ने अपने चर्चित ग्रन्थ 'माडर्न रिलिजियस मूवमेंट्स इन इण्डिया" में आर्यसमाज विषयक विवेचन में जो जानबूझ कर गलत बयानी की थी, उसका तर्कपूर्ण उत्तर स्वामीजी के उक्त ग्रन्थ में दिखाई पडता है। स्वामी श्रद्धानन्द ने स्वामी दयानन्द रचित ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका तथा पूना में प्रदत्त उपदेश-मजरी शीर्षक उनके प्रवचनों का उर्दू रूपान्तर भी किया था। स्वामीजी के प्रयत्नों से ही प लेखराम लिखित महर्षि दयानन्द की विशाल उर्दू जीवनी का 1897 में प्रकाशन सम्भव हो पाया और उन्हीं की प्रेरणा से 1925 में परोपकारिणी सभा ने महर्षि के समस्त ग्रन्थों (वेद भाष्य तथा वेदांग प्रकाश को छोड कर) को दो खण्डो में 'दयानन्द ग्रन्थमाला' के नाम से प्रकाशित किया। इन दोनो ऐतिहासिक ग्रन्थो की परिचयात्मक भूमिकायें (प्रथम मे महर्षि के जीवन चरित लेखन विषयक उद्योग की पृष्ठ-भूमि तथा द्वितीय में स्वामी दयानन्द की 'तत्ववेत्ताऋषि" शीर्षक लघु जीवनी) लिखकर स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने आचार्य को भाव भीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। यह सारी सामग्री इस ग्रन्थावली में यथा स्थान समाविष्ट हुई है।

'आर्य धर्म ग्रन्थमाला' शीर्षक से लघु आकार की पुस्तक माला महात्मा मुन्शी राम ने उस समय प्रकाशित की जब वे गुरुकुल कागडी के आचार्य और मुख्याधिष्ठाता थे। इसके अन्तर्गत उनकी 9 लघु रचनायें छपीं। आर्यो के नित्य कर्म, पच महायज्ञों की विधि, तथा सध्या उपासना और कर्मकाण्ड विषयक ग्रन्थ हैं तो 'आचार अनाचार' और 'छूतछात सत्यार्थप्रकाश के दशम समुल्लास के खुलासे के रूप मे लिखा गया एक उपयोगी ट्रैक्ट है। इसी ग्रन्थमाला में "मातृभाषा का उद्धार" शीर्षक वह अध्यक्षीय अभिभाषण भी है जो महात्माजी ने 1913 मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन के भागलपुर अधिवेशन के समय दिया था।

इसी ग्रन्थमाला में स्वामी जी की "पारसीमत और वैदिक धर्म" शीर्षक एक लघु पुस्तिका भी छपी। ग्रन्थमाला के छठे खण्ड मे उपयुक्त लघु ग्रन्थो को सग्रहित किया गया है। 'मुक्तिसोपान' स्वामीजी द्वारा लिखित प्रवचनो का एक अन्य सग्रह था। टकारा में आयोजित दयानन्द जन्म शताब्दी के अवसर पर स्वामी श्रद्धानन्द ने वहां उपस्थित सौराष्ट्र के क्षत्रिय राजाओ को उद्बोधन देने के हेतु रामायण की कथा अपनी ओजस्विनी शैली में प्रस्तुत की थी। छठे खण्ड में ही यह "रामायण रहस्य कथा" भी निबद्ध की गई है।

ग्रन्थावली के सप्तम खण्ड में पं गोपीनाथ द्वारा महात्मा मुन्शीराम और उनके साथियो पर चलाये गये मान हानि के एक अभियोग की पूरी कार्यवाही सकलित कर एक ऐतिहासिक दस्तावेज को सुरक्षित कर लिया गया है।

ग्रन्थावली के 8 वें और नवें खण्ड उनकी उर्दू रचनाओ पर आधारित हैं। स्वामी अनुभवानन्द जी ने कुलियात सन्यासी शीर्षक से स्वामी श्रद्धानन्द के उर्दू ग्रन्थों का सकलन 1927 मे प्रकाशित किया था। इसके कतिपय लेखो तथा उनकी वेद विषयक एक रचना 'सुबह उमीद' का अनुवाद प्रस्तुत ग्रन्थावली के 8 वें और 9 वें खण्ड में आर्यसमाज के प्रसिद्ध अनुसधाता प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु ने उपस्थित किया है। इसी खड में स्वामी जी के म गांधी के नाम तथा अपने पुत्र इन्द्र के नाम पत्रो का भी सग्रह किया गया है। स्वामी श्रद्धानन्द का अग्रेजी साहित्य भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। इसके अन्तगत उनकी चर्तुविध रचनाएं आती हैं।

उक्त सभी अग्रेजी कृतियां को अनूदित कर राष्ट्र भाषा के पाठको के लिये सुलभ कर दिया है। "इनसाइड कांग्रेस" में स्वामी जी के वे 25 लेख अनूदित किये गये हैं जो 'दि लिबरेटर' नामक साप्ताहिक पत्र मे श्रद्धानन्द जी के जीवन के अन्तिम वर्ष (1926) में छपे थे। स्वामी श्रद्धानन्द ने ईसायत और इस्लाम जैसे सामी मजहबो की छद्मवेषी, प्रलोभन भरी तथा आतक उत्पन्न करने वाली दूषित प्रचार प्रणालियों की भी पूरी छानबीन की था। इस विषय को उन्होंने "हिस्ट्री आफ एसेसिन्स" शीर्षक एक जर्मन पुस्तक के अंग्रेजी अनुवाद को प्रकाशित कर स्पष्ट किया है। "हिन्दू सगठन" शीर्षक उनका ग्रन्थ भी म्रियमाण जाति की रक्षा ऐतिहासिक विवेचना युक्त महत्वपूर्ण कृति है।

ग्रन्थावली के दशम खड मे नबद्ध 'आर्यसमाज और उसके निंदक—एक प्रतिवाद" का सक्षिप्त हिन्दी रूपान्तर तथा 'आर्यसमाज और उसका भविष्य' एव 'आर्यसमाज और राजनीति' शीर्षक विशिष्ट निबन्धो और व्याख्यानो के प्रामाणिक अनुवाद आर्यसमाज के भावी इतिहास लेखक के लिए महत्वपूर्ण उपादान सामग्री प्रस्तुत करते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द और आचार्य रामदेव जैसे सिद्धहस्त अंग्रेजी भाषा के लेखको की लेखनी से प्रसूत कालजयी साहित्यिक शैल (क्लासिकल लिटरेरी स्टाइल) तथा उनकी अटूट शब्द सम्पदा को हिन्दी का जामा पहनाना निश्चय ही अत्यन्त कष्टसाध्य था, किन्तु विद्वान् अनुवादक डा० भारतीय ने इसे बाखूबी किया है, जिसके लिये वे पाठकवर्ग के साधुवर्ग के अधिकारी हैं।

ग्रन्थावली के 11वें खड मे प्रस्तुत स्वामी जी की मौलिक और शोधपूर्ण जीवनी तो इस साहित्यमाला का सुमेरु ही है। पुस्तक के तीन चौथाई भाग में लिखी गई जीवनी यद्यपि तथ्यो और घटनाओं के लिए अपने से पूर्व के जीवन-चरितो पर ही निर्भर है, किन्तु चरित लेखक की साहित्यिक शैली, उसके सुष्ठु शब्दचयन तथा प्राजल वाक्य रचना ने इस कृति को अपूर्व लावण्य और चमत्कार प्रदान किया है। कांग्रेस के अमृतसर (1919) में स्वागताध्यक्ष के पद से प्रदत्त स्वामी श्रद्धानन्द के भाषण को इस खड में समाविष्ट किया गया है। इसी प्रकार महात्मा गाधी का एक अनजान अतिथि के रूप में 1913 में प्रथम बार गुरुकुल आगमन का इतिवृत्त भी इसमे दिया गया है। स्वामीजी के बलिदान के पश्चात् उन्हें श्रद्धाजलि रूप मे अर्पित किये गये भावप्रसूनो का सकलन उस महामानव के बहुआयामी व्यक्तित्व की झलक प्रस्तुत करता है। रेम्जे मेकडानल्ड ने उन्हे ईसा के चित्रांकन के लिये सर्वथा उपयुक्त माडल बताया तो महात्मा गाधी ने उनकी देव दुर्लभ मौत से रश्क जाहिर किया। प० मोती लाल नेहरू ने अपने सहपाठी की स्मृति में श्रद्धा-सुमन अर्पित किये, तो प० जवाहर लाल नेहरू ने संन्यासी वेश मे उनकी भव्य आकृति और अन्तर्भेदिनी दृष्टि की सराहना की। हिन्दी के प्रख्यात नाटककार प० नारायण प्रसाद बेताब के उर्दू मुसद्दस 'पिस्तौल का पश्चात्ताप' को मूल रूप मे इस ग्रन्थ के छठे परिशिष्ट में उद्धृत किया गया है। स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या और उसके पश्चात् हत्यारे को सजा दिलाये जाने तक की सम्पूर्ण अदालती कार्यवाही को 'हरियाणा तिलक' नामक एक उर्दू पत्र मे प्रकाशित सामग्री के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

उपर्युक्त विवेचन से यह भली भाति प्रमाणित होता है कि राष्ट्र पुरुष श्रद्धानन्द की साहित्य सम्पदा को सुरक्षित कर भावी पीढियो के लिये उसे उपलब्ध कराने का यह प्रयास एक महान् सारस्वत सत्र की पूर्णाहुति के समान है। 2350 पृष्ठों से भी अधिक विस्तार वाली यह ग्रन्थावली हुतात्मा श्रद्धानन्द की अमर आत्मा के प्रति सम्पादक एव प्रकाशक की अमर श्रद्धाजलि है।

—अशोक कौशिक

पत्रों के दर्पण में

'तमस' पर आर्य जनता की प्रतिक्रिया

'तमस' का धारावाहिक अब कभी का समाप्त हो चुका है। पर इस धारवाहिक ने जैसा जनाक्रोश पैदा किया, वैसा आज तक अन्य किसी धारावाहिक ने नहीं किया। अखबारों में तो तत्सम्बन्धी विवाद काफी चर्चित रहा ही, अदालत तक भी पहुच गया। तथाकथित प्रगतिशील लेखक धारावाहिक के समर्थन में जुट गए और उसका विरोध करने वालों को साम्प्रदायिक और देश विभाजन की मूल प्रवृत्ति का जनक कहने से बाज नहीं आए। फिर भी भीष्म साहनी ने एक साक्षात्कार में यह कह कर तो असत्य की सभी सीमाए तोड दी कि आर्य समाज ने स्वतन्त्रता-संग्राम में कोई हिस्सा नहीं लिया। क्या श्री साहनी भारत का कोई ऐसा नया इतिहास लिखना चाहते हैं जो सत्य पर नहीं, केवल असत्य पर आधारित हो? क्या इसी का नाम प्रगतिशीलता है ?

हम यहां आर्य जनता की प्रतिक्रिया का कुछ अंश दे रहे हैं ?

आर्य समाज का विरोध उचित

भीष्म साहनी के उपन्यास पर आधारित दूरदर्शन पर प्रदर्शित धारावाही तमस को लेकर भिन्न भिन्न प्रतिक्रियायें हुई हैं। साम्प्रदायिक उन्माद ने 1947 तथा उससे पहले हमारे देश में हिंसा, अत्याचार तथा क्रूरता का जैसा अकाण्ड ताण्डव मचाया था, वह इतिहास का निकृष्टतम अध्याय बन चुका है। किन्तु इसके प्रथम अंक में जो दृश्य दिखाया गया, वह सीधे तौर पर आर्य समाज से जुडा था। इसमे आर्य समाज मदिर में सत्सग (साप्ताहिक अधिवेशन) का चित्रण करते हुए यज्ञ की कार्यवाही दिखाई गई, शान्ति पाठ का मत्र पढ़ा गया और उसके पश्चात् ही सत्सग की वेदी से जो बातें कही गई उन्हे किसी भी हालत मे औचित्यपूर्ण नही कहा जा सकता पजाब की इस साम्प्रदायिक हिंसा में उस समय आर्य समाज की करोडों की अचल सम्पत्ति तो वहां रह ही गई। जन धन की अपार हानि का अनुमान भी कठिन है। अत तमस के इस दृश्य पर आर्य समाज का विरोध नितान्त युक्ति युक्त था।

—भवानीलाल भारतीय दयानन्द शोध पीठ चण्डीगढ़

'तमस' को भारत-विभाजन का सही चित्रण कैसे मान लें ?

सीमांत गांधी के सुपुत्र खान वलीखा ने "हकीकत आखिर हकीकत है" नामक पुस्तक में लिखा है 'जिन्ना की एक प्राईवेट सेक्रेटरी अग्रेज महिला थी। उसके माध्यम से जिन्ना और चर्चिल के बीच गुप्त पत्र व्यवहार होता रहा था। सन् 1946 में लदन में जिन्ना गोलमेज कान्फ्रेन्स मे गए थे। गोलमेज कान्फ्रेन्स के अवसर पर जब चर्चिल और जिन्ना की गुप्त बैठक हुयी तब चर्चिल ने ही जिन्ना के दिमाग में पाकिस्तान का विचार भरा। इसी विचार के प्रचार के कारण मुसलमान भारत भर के शहरों में तथा देहातो मे बडे-बडे जुलूस निकालकर "बट के रहेगा हिन्दुस्तान, लेके रहेगे पाकिस्तान" के नारे लगाते थे। यह प्रत्यक्ष दृश्य मैंने स्वय तथा अनेक भारतीयो ने देखा है।

इसका दुष्परिणाम ऐसा हुआ कि बहुल मुस्लिम प्रान्तों में शहरों में दगे-फिसाद शुरू हो गए। दगो में लाखो लोगो की हत्याए हुई। करोडों की सम्पत्ति लूट ली गयी या नष्ट की गई। इस वीभत्स दृश्य से भारतीय नेता तथा जनता भयाक्रान्त हो गये। फलस्वरूप महात्मा गांधी ने भी भारत बटवारे को न चाहते हुए भी मजूरी दे दी।

पाकिस्तान बनने के बाद लियाकतअली प्रधानमंत्री बने। नेतृत्व की होड में जिन्ना और लियाकत अली का मनमुटाव हो गया। जिन्ना को कैन्सर की असाध्य बीमारी थी। मनमुटाव से बीमारी के इलाज की समुचित व्यवस्था नहीं की गयी। बटवारे की भूल जिन्ना ने अपने अन्तिम काल के पूर्व स्वीकार की। वजीरे आजम लियाकत अली पर बरसते हुये कहा था, मैंने पाकिस्तान बनाकर बहुत भयकर भूल की है। मैं खुद दिल्ली जाऊ गा और नेहरू से कहूगा, कि पिछली सब बातों को भूल जाओ। अब हम सब मिलकर भाई-भाई की तरह रहेगे।' यह समाचार 26 नवम्बर 1947 को पेशावर के दैनिक समाचार पत्र "फ्रन्टियर पोस्ट' मे छपा था। इससे निश्चित सिद्ध होता है कि बटवारे की पहल हिन्दुओ ने नहीं की थी।

इसी नाम के उपन्यास के आधार पर बनाए गए 'तमस' को दूरदर्शन पर करोडों लोगों ने देखा है। यह सिरीयल भारत विभाजन के पूर्व की घटनाओं का गलत चित्रण करता है, इसी से दर्शक नाराज हुए।

गोविन्द निहलानी को चाहिए था कि जैसे एक हिन्दू के कहने पर एक हिन्दू ने ही सूअर की हत्या की, एक मुसलमान फेरी वाले की हाफ पैन्ट वाले हिन्दू ने हत्या कर दी, वैसे ही अखड भारत को चाहने वाले देश प्रेमी सिख साई के कातिल का भी दृश्य दिखाना चाहिए था। तब तो निष्पक्षता सही रूप से सिद्ध होती।

कुछ वर्ष पूर्व बम्बई में स्वय श्री बलराज साहनी से भेंट का सुयोग मिला था। वह भी बटवारे के बाद भारत आये थे। उन्होंने मन को द्रवित करने वाली बातें बताई थी। उनके परिवार के कुछ सदस्य पाकिस्तान में रह गये थे। पाकिस्तान में बसने की उस परिवार को कितनी बडी कीमत चुकानी पडी, यह भी उन्होंने बताया था।

घटनाओं के गलत चित्रण के कारण ही लोगो की नाराजगी थी।

—अनन्तलाल राठी, 7 बी 447, फरीदाबाद (हरियाणा)

इतिहास अथवा कुत्सित प्रचार

इण्डियन एक्सप्रेस दि० 24 जनवरी, 1988 में प्रकाशित एक समाचार के अनुसार बम्बई हाई कोर्ट के न्याय मूर्ति लिटेल एव सुजाता मनोहर की न्यायपीठ ने शनिवार (23-1 88) को गोविन्द निहलानी के विवादस्पद दूरदर्शन सीरियल तमस को प्रसारण के योग्य बताते हुये उसे आगे के प्रदर्शन की अनुमति दी थी। प्रश्न यह है "क्या तमस सच्चा इतिहास है ?" अर्थात् क्यों यह सत्य है कि विभाजन पूर्व के दगे आर्य समाज तथा राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ जैसे हिन्दू सगठनो के नेताओं द्वारा प्रारम्भ किये गये तथा मुसलमानों ने उनमें केवल प्रतिक्रिया स्वरूप भाग लिया ? इस विषय में हम मुस्लिम लीग के नेताओं द्वारा 1946 मे दिये गये, डाइरेक्ट एक्शन डे पर दिए भाषाण एव वक्तव्यों के कुछ अंश भारत सरकार द्वारा 1965 में प्रकाशित पुस्तक 'लेट पाकिस्तान स्पीक फोर हरसेल्फ' से उद्धृत कर रहे हैं।

"डाइरेक्ट एक्शन का अर्थ है असवैधानिक उपायों को काम में लाना और वह किसी प्रकार के उपाय को किसी भी प्रकार से काम में लाना है जो भी उस समय की परिस्थिति में ठीक हो। . इसमें हम किसी भी उपाय को नकार नहीं सकते।" लियाकत अली खां द्वारा एसोसियेट प्रेस अमेरिका को दिया गया वक्तव्य, जुलाई 30, 1946)

"हम रमजान के इस महीने में आपके नाम से जिहाद प्रारम्भ करने जा रहे हैं हमे काफिरो पर विजय प्राप्त कराइये जिससे हम भारत में इस्लामी राज्य स्थापित कर सकें।" अगस्त, 1946 के डाइरेक्ट एक्शन डे के अवसर पर एस० उस्मान सैक्रेटरी कलकत्ता मुस्लिम लीग द्वारा प्रकाशित एक पर्चे मे विशेष प्रार्थना।

"हम मुसलमानो ने ताज पहना है तथा भारत पर राज्य किया है। हिम्मत मत हारो। तलवार हाथ मे लेकर तैयार हो जाओ। ऐ मुसलमानो ! सोचो आज तुम काफिरो के गुलाम क्यो हो ए काफिरो ! तुम्हारा सर्वनाश अब दूर नहीं है, कत्लेआम होने ही वाला है।" (कलकत्ता मुस्लिम लीग द्वारा अगस्त, 1946 मे प्रकाशित एक पर्चे से)

"कुफ्र के अन्धकार को दूर करने तथा पूरे विश्व को जगमगाते इस्लाम के प्रकाश से प्रकाशित करने का समय आ गया है। इस पुण्य कार्य के लिये हमें पूर्व काल की भांति काफिरों का कत्लेआम करना आवश्यक है।" (नाजीर के अल्लामा अमीरुद्दीन साहब द्वारा जिन्ना को लिखे गये एक पत्र से जो हैदराबाद दक्खिन में अक्टूबर, 1946 मे बरामद हुआ।

यह उस कुत्सित प्रचार के केवल कतिपय नमूने हैं जो उस समय मुस्लिम लीग द्वारा 'डाइरेक्ट एक्शन डे' के नाम से हिन्दुओं के कत्लेआम की नियोजित योजना के आधीन किया गया था। फिर उसका फल क्या निकला ?

लार्ड माउन्टबैटन के शब्दों में, जो उस समय भारत के वाइसराय थे, लारी कौलिन्स एव डायनीक लैपियर को दिये हुये एक साक्षात्कार में, उन लेखकों की पुस्तक 'माउन्टबेटन एण्ड पार्टीशन आफ इण्डिया' (विकास पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित) में ज्यों के त्यों यों उद्धृत किये गये हैं —

". .. और कलकत्ता के डाइरेक्ट एक्शन डे को मत भूलिये जो इस बात की चेतावनी थी कि वह (जिन्ना) क्या कुछ कर सकता था (अगस्त, 1946)—मेरा आशय है कि उसने केवल प्रदर्शन मात्र के लिये 5,000 मनुष्यों को मरवा डाला और 15000 मनुष्यों को घायल कर दिया था। यह लोग निश्चय ही मुसलमान नहीं थे।"

हम समझते हैं कि उपरोक्त अविवादास्पद तथ्यों के उद्धरण के पश्चात् और किसी साक्ष्य अथवा बहस की आवश्यकता नहीं रहती। कत्लेआम मुस्लिम लीग के नेताओं द्वारा प्रारम्भ किया गया। हिन्दू उसके शिकार हुये। तमस इतिहास नहीं, हिन्दू समाज को कलंकित करने का घृणित प्रयास है।

—जयदेव शर्मा, 84, सदर बाजार, लखनऊ।

हमारी टंकारा...

(पृष्ठ 6 का शेष)

राजधानी थी तो द्वारिका बेंट उनका निवास स्थान था जहां वे सपरिवार निवास करते थे। द्वारिका से रवाना होकर उसी दिन शाम को हम जामनगर पहुंच गये। जामनगर के आर्य बन्धुओं ने भी बड़े प्रेम से आतिथ्य किया यहां की समाज के प्रधान जी से, जो चिन्योट (अब पाकिस्तान मे) के निवासी थे, भेंट हुई तो एक नई आत्मियता का बोध हुआ क्योंकि मेरा और मेरे परिवार का सम्बंध भी चिन्योट से ही जुड़ा हुआ है। जामनगर के दर्शनीय श्मशान गृह के साथ ही वहां का पोर्ट देखा जहा से कराची केवल दो घटे का रास्ता है। समुद्र के पानी से नमक कैसे बनाया जाता है यह भी वहीं जाकर पता लगा। बड़े-बड़े खेतो में ज्वार के समय समुद्र का पानी ...इने आप भर जाता है और वही कड़ी धूप में सूखने के बाद नमक की पर्तों में परिवर्तित हो जाता है कई जगह नमक के टीले देखे। शायद नमक की सबसे बडी मण्डी सारे देश में जामनगर ही है।

जामनगर के बाद अगले दिन हम टंकारा पहुचे तो ऋषि के जन्म स्थान की पवित्रता का ध्यान आते ही मन श्रद्धा से भर गया। टकारा में ठहरने की और भोजन आदि की सुव्यवस्था केलिये टकारा ट्रस्ट के महामन्त्री श्री रामनाथ सहगल का धन्यवाद देना होगा। अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक विद्यालय मे ऋषि बोधोत्सव के इस पवित्र मेले पर गुजरात के अलावा बम्बई कलकत्ता तथा पजाब और दिल्ली से भी सैकडो की सख्या मे यात्री पहुचे हुए थे। टकारा मे शोभा यात्रा, विद्यार्थियों की भाषण प्रतियोगिता, कन्या गुरुकुल बडौदा की लडकियो के व्यायाम के करतब तथा श्रद्धाजलि सभा मे आगन्तुक विशिष्ट महानुभावों द्वारा ऋषि दयानन्द के प्रति दी गई भावभीनी श्रद्धाञ्जलि आसानी से भुलाई नही जा सकती।

परन्तु सबसे अधिक जो चीज याद रहेगी वह है वह छोटसा कमरा जिसमें बालक मूलशकर ने जन्म लेकर अपने माता पिता को ही नहीं, समस्त टकारा ग्राम को धन्य किया था। इसके साथ ही टकारा का वह शिवमन्दिर भी कभी भुलाया नहीं जा सकता जिसमे बालक मूलशकर को बोध प्राप्त हुआ था।

टकारा से अहमदाबाद होते हुए और वहां महात्मा गाधी का साबरमती आश्रम देखते हुए हम उदयपुर पहुचे। उदयपुर देशी और विदेशी पर्यटकों का स्वर्ग माना जाता है। वहा महाराणा प्रताप की चेतक पर आरूढ विशाल मूर्ति सहेलियो की बाड़ी, पन्ना धाय का निवास झीलें, अनेक महल और हल्दी घाटी मे चेतक का स्मारक तथा उदयपुर के साथ ही लगा हुआ एकलिंग महादेव का मन्दिर वहा से कुछ मील दूर नाथ द्वारा को वैष्णव भक्तो की प्रसिद्ध मन्दिर-नगरी और काकरोली आदि स्थान एक से एक बढ़कर दर्शनीय हैं।

शाम को गुरुकुल चित्तौडगढ़ पहुचे। वहा भी गुरुकुल के ब्रह्मचारियो ने ओर वहा के अधिकारियो ने जिस सेवा भाव से सब यात्रियों को आतिथ्य किया उसे हम कभी भूल नहीं सकते। इस समय गुरुकुल मे 150 विद्यार्थी है, गोशाला मे 25-30 गायें हैं, सुन्दर पुस्तकालय है और 22 बीघा जमीन में खेती होती है। सुप्रबालन से इस गुरुकुल के मन्दिर, महारानी पद्मिनी का महल, राजपूत रानियो का जौहर करने का स्थान और पुराने महल आदि देखे।

वहा से अजमेर, पुष्कर और जयपुर होते हुए हम 21 फरवरी को शाम को सबके सब यात्री सकुशल दिल्ली पहुच गये। साथ मे रह गई इस यात्रा की सुखद स्मृतिया।

पता—सी-291 डिफेन्स कालोनी, नई दिल्ली—24

उठो धनुर्धर

—डा० महाश्वेता चतुर्वेदी—

यद्यपि विजय प्राप्त कर आए,
गोद स्वप्न की मन सोआओ।
इस स्वराज्य मे उन्मादित बन,
कर्म योग को भूल गये हो।
सुप्रभात में निद्रित प्रतिपल,
कौन नशे के घूट पिये हो।
मानवता है क्रन्दन करती,
उठो धनुधर वीर सजाओ।
नही विश्राममयी यह वेला,
साध्य कहा अब तक मिल पाया।
कृत्रिम फूलों की मृदु शोभा,
से सुरभित उपवन मुस्काया।
अभी कटकाकीर्ण पन्थ है,
वह प्रशस्त करके हर्षाओ।
झझावात चले थे पहिले
जो अब और बढ़े ही जाते।
कहने को सैनिक, पर दुर्बल,

अरि दल देख न कुछ कर पाते।
जो दिग्भ्रान्त और शकाकुल,
मत उनके याचक बन जाओ।
जब से शौर्य भुलाया अपना,
पराधीन से बन कर रहते।
अन्यायो की करुण कथा को,
सहना अपनी नियति समझते।
यह जीवन सघर्ष व्यथा तज
लोहा लेकर उर विकसाओ।
मेघ समस्याओ के उपर,
घुम आशा की ज्योति छिपाये।
श्रम का तेल, और तन दीपक,
विश्वासो ने पन्थ दिखाये।
तोड निराशा के छन बन्धन,
स्वस्ति पन्थ चल शक्ति बढ़ाओं।

पता—प्रोफेसर कालोनी, श्यामगज, बरेली 243005

आर्य समाज और

(पृष्ठ 5 का शेष)

प्रश्न बन चुका है। आर्य समाज हिन्दू समाज का हरावल दस्ता है। हिन्दुस्तान की पहचान के साथ ही आर्य समाज का अस्तित्व भी जुड़ा हुआ है इसलिये विचार-वान आर्यसमाजियों का इस स्थिति से चिन्तित होना और आर्य समाज की विचारधारा से प्रभावित राजनैतिक सगठन की आवश्यकता महसूस करना स्वाभाविक है।

आर्य समाज के साथ अपने जन्म काल से जुड़े एक राष्ट्रवादी व हिन्दुत्व-वादी होने के नाते मैं भी उस स्थिति से चिन्तित हू। मेरा यह सुविचारित मत है कि यदि आर्य समाजी बधु जनसघ को पुन सबल और प्रभावशाली बनाने की ओर ध्यान दें तो इस स्थिति को सम्भाला जा सकता है। आर्य समाज एक प्रबल शक्ति और सगठन है। इसकी विचार स्वतन्त्रता और उत्कृष्ट विचार-धारा इसका सम्बल है इसके वयस्क सदस्य राजनीति से अलिप्त नहीं रह सकते। देश की राजनीति को वैदिक सिद्धान्तो के अनुरूप प्रभावित करना आर्य समाज का लक्ष्य है। जिस रास्ते पर काग्रेस और भाजपा समेत देश की अन्य राजनैतिक पार्टिया चल रही है और उनका जो मूल चिन्तन है, वह राष्ट्रहित और हिन्दू हित के लिये घातक सिद्ध हो रहा है। उनको अन्दर से प्रभावित करने की बात मृगमरीचिका मात्र है। आव-श्यकता उनका विकल्प तैयार करने की है। यदि कोई राष्ट्रवादी विचारधारा वाला दल उभरे, तब शायद ये भी अपनी नीति-रीति पर पुनर्विचार करने को बाध्य हो।

नया राजनैतिक दल बनाना सरल काम नही है। जनसघ का नाम सारे देश मे फैला हुआ है। आर्य समाजियो का इसके जन्मकाल से इसके साथ गहरा सम्बन्ध सब विदित है। इसलिये यदि आर्य समाज, राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ की तरह अपना सामाजिक और सांस्कृतिक स्वरूप बनाये रखते हुये अपने लोगों को आर्य समाज की विचारधारा से कोसों दूर विभिन्न दलो मे बिखरे रहने के बजाय सामूहिक रूप मे जनसघ को फिर से अपनाने की प्रेरणा दे, तो जनसघ द्रुतगति से फिर भारत की राजनीति को राष्ट्रवादी दिशा देने और इसका भारतीय-करण करने का सफल माध्यम बन सकता है।

यह एक व्यावहारिक सुझाव मात्र है। इससे आर्य समाज के वर्तमान स्वरूप मे कोई परिवर्तन नहीं आयेगा, परन्तु इसका प्रभाव बढ़ेगा और वह देश की बडी आवश्यकता को पूरा करने मे सहायक होगा। इस सुझाव पर सार्वजनिक चर्चा और विवाद हो ताकि सार्थक विचार मथन के बाद आर्य समाज उचित निष्कर्ष पर पहुच सके।

पता—जे 394, शकर रोड राजेन्द्रनगर, नई दिल्ली- 0

डीएवी स्कूल शालीमार बाग

डी ए वी माडल स्कूल, शालीमार बाग, की स्थापना 1981 में हुई थी। श्रीमती आदर्श कोहली प्राचार्या के नेतृत्व मे यह स्कूल दिनरात उन्नति की ओर बढ रहा है।

इस विद्यालय में अब लगभग एक सौ दस अध्यापकों एव तीन हजार बच्चे पढ़ाई, और सगीत, कवितापाठ, खेल और भाषण प्रतियोगिता आदि सभी क्षेत्रो मे बच्चो ने सस्था को गौरवान्वित किया है। स्कूल में अलग से आर्यसमाज स्थापित है। प्रत्येक अध्यापक और कर्मचारी इस आर्यसमाज का सदस्य है। प्रत्येक बुधवार को विद्यालय में आर्य समाज का साप्ताहिक सत्सग होता है, जिसमें प्रत्येक अध्यापक का भाग लेना आवश्यक है। इसके अलावा भी प्रात: काल प० काशीराम, सोमदेव जी एव अन्य विद्वान् अध्यापकों द्वारा प्रतिदिन धर्मोपदेश दिया जाता है। इस वर्ष आदित्य काबरा ने आल इन्डिया महात्मा हसराज खेल प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त किया। दिल्ली से पुरस्कार पाने वाला वह अकेला छात्र है। स्कूल की दो बालिकाए आल इन्डिया खो-खो जूनियर प्रतियोगिता मे भाग लेने हेतु चुनी गई हैं। यह खो खो प्रतियोगिता पूना में होगी।

—काशीराम धर्म-शिक्षक

सगीत मण्डली गठित

टकारा के स्नातक श्री मोहन कुमार शास्त्री जो 'चमन' नाम से प्रसिद्ध हैं, द्वारा गठित सगीत मण्डली पिछले कई वर्षों से आर्य समाजों के उत्सवों तथा साप्ताहिक सत्सगो में बडे जोश से कव्वाली और भजन सुनाती आई है। सभी स्थानो पर इस मण्डली को खूब पसन्द किया गया है। चमन जी हवन सस्कार कराने में दक्ष हैं, फरीदाबाद की आर्यसमाज पुरोहित कार्य हेतु भी रख सकती है। इनका पता है—

मोहन कुमार शास्त्री, चमन' 191, से० 17, फरीदाबाद (हरि०)

हिंदी भक्त डा०सूरजपाल शर्मा दिवंगत

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् के महामन्त्री डा० सूरजपाल शर्मा का 23 फरवरी को 51 वर्ष की आयु में असामयिक स्वर्गवास हो गया। 6 मार्च को सायं 3 बजे उनके निवास स्थान डी० जी० 835, सरोजिनी नगर नई दिल्ली-11023 में उनकी क्रिया-रस्म और शोक हुई। श्री शर्मा ने केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो मे अनेक वर्ष तक कार्य करते हुए विशिष्ट शोध कार्य करके पी०एच०डी० उपाधि प्राप्त की। राजभाषा हिन्दी का सरकारी दफ्तरों में प्रयोग बढ़ाने के लिए कठिन परिश्रम किया, कई प्रतियोगिताए शुरू की और नए कार्यक्रम बनाये।

डी ए वी पब्लिक स्कूल पीतमपुरा दिल्ली

डी ए वी पब्लिक स्कूल, पीतमपुरा के वार्षिक दिवस पर प्रसिद्ध अभिनेता श्री शशिकपूर मुख्य अतिथि बने। श्री दरबारीलाल उनका स्वागत कर रहे हैं।

डी ए वी पब्लिक स्कूल, फरीदाबाद

डी ए वी पब्लिक स्कूल, फरीदाबाद के वार्षिक उत्सव पर हरियाणा के शिक्षामन्त्री श्री खुर्शीद अहमद मुख्य अतिथि के रूप में बालकों को पुरस्कार दे रहे हैं। साथ में खडे हैं प्रि० आयवीर भल्ला।

डी ए वी पब्लिक स्कूल, पीतमपुरा, दिल्ली

डी ए वी पब्लिक स्कूल पीतमपुरा के वार्षिक खेलकूद दिवस पर मुख्य अतिथि थे प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाडी श्री कपिलदेव। प्रि० एस० मल्होत्रा, श्री दरबारीलाल तथा अन्य विशिष्ट व्यक्ति उन्हे लेकर पण्डाल की तरफ जा रहे हैं।

डी ए वी पब्लिक स्कूल, जनकपुरी

वार्षिक क्रीडा दिवस के अवसर पर पूर्व सूचनामन्त्री श्री पाजा डी ए वी पब्लिक स्कूल जनकपुरी में मुख्य अतिथि बने। प्रो० वेदव्यास जी और श्री दरबारी लाल के साथ श्री पाजा बैठे हैं।

डी ए वी स्कूल पीतमपुरा

डी ए वी पब्लिक स्कूल पीतम पुरा, दिल्ली के वार्षिक उत्सव पर प्रसिद्ध संगीतकार श्री मन्ना डे ने अपना मधुर संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किया। श्री हरवंश खेर उनका माल्यार्पण द्वारा स्वागत कर रहे हैं।

दर्शनयोग प्रशिक्षण शिविर के दो वर्ष

'आर्यवन विकास फार्म में दर्शन एवं योग प्रशिक्षण शिविर के दो वर्ष के कार्य का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

1 पांच दर्शनों का अध्यापन हो चुका है तथा मीमांसादर्शन के 12 अध्यायों में से 6 अध्यायों का अध्यापन भी पूरा हो गया है। 2 पांचों दर्शनों को पढाने में अनेक ब्रह्मचारी समर्थ हो गये हैं। 3 वैदिक क्रियात्मक योग में भी अनेक ब्रह्मचारियों ने अच्छी योग्यता प्राप्त की है और वे इसका प्रशिक्षण देने में समर्थ हैं। 4 वैदिक प्रवचन देने में अनेक ब्रह्मचारियों ने उत्तम योग्यता प्राप्त की है। 5 वैदिक सिद्धान्तों का परिज्ञान इन ब्रह्मचारियों को कराया गया है, जिससे वे गूढ प्रश्नों का उत्तर देने में निपुण हैं। 6 यम-नियमों का व्यवहार में कैसे प्रयोग किया जाय इस विषय में भी ब्रह्मचारियों को अच्छी सफलता मिली है। 7 आसन व्यायाम में भी ब्रह्मचारियों ने अच्छी प्रगति की है। वे आसनों का प्रशिक्षण देने में समर्थ हैं। 8 यजुर्वेद के 40 में से 10 अध्यायों के ऋषिकृत भाष्य का अध्ययन कराया गया है। वेदों, दर्शनों एवं ऋषिकृत ग्रंथों की विशेषताएं बतलाई गई हैं।

संसार के कल्याणार्थ यह अद्वितीय कार्य सम्पन्न हुआ है। आर्यसमाज के अतिरिक्त अन्य कोई भी संस्था व देश न तो इस मानव निर्माण के कार्य को जानता है और न ही कर सकता है। आने वाले तीन वर्षों के कार्यक्रम में तन मन धन से यथाशक्ति आप सब सहयोग देने व दिलाने का प्रयास करेंगे, यह आशा है मेरी। यह अभिलाषा विश्वकल्याण के लिये है, लोकैषणा आदि के लिये नहीं।

शिविर का समापन समारोह आर्य समाज सी०/3 ब्लाक जनकपुरी में 27 मार्च को प्रात होगा।

—सत्यपति परिव्राजक

यू० 102/81 लायसेंस टू पोस्ट विदाउट प्रिपेमेंट
रजिस्ट्रेशन न० आर० एन० आई० 39/57
Delhi Postal Regd. No D (C) 409
N D P.S.O ON · 18/19-3-88 20 मार्च, 1988

आर्य समाज स्थापना दिवस

19 मार्च, 88 को मावलकर हाल, रफी मार्ग, नई दिल्ली मे प्रो०शेरसिंह की अध्यक्षता मे आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाया गया। मुख्यअतिथि थे श्री महेन्द्रसिंह साथी महापौर, दिल्ली। आशीर्वादात्मक उद्बोधन दिया स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने। वक्ता थे-श्री रामचन्द्र विकल, डा०वाचस्पति उपाध्याय, डा०प्रशान्त वेदालंकार, श्री नवीन सूरी, सम्पादक 'मिलाप', श्री रामनाथ सहगल, श्रीमती शकुन्तला आर्या, डा० महावीर मीमांसक और श्री गुलाब सिंह राघव।

—मन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री
दूरभाष 310150, 311280

समाज मन्दिर के निर्माण में सहायता कीजिए

आर्य समाज मंदिर लम्बेडी तह० नौशहरा को बने हुये सात वर्ष हो चुके। वह अभी तक एक कच्ची छत और कच्ची दीवारो पर खडा है। पुराना होने की वजह से वह भी गिर रहा है। यह एक ग्रामीण क्षेत्र है। सत्य प्रचारार्थ आर्य समाज मंदिर का पुनर्निमाण होना परमावश्यक समझकर एक हाल और एक यज्ञशाला का निर्माण किया जा रहा है। सभी आय बन्धुओ से प्रार्थना है कि इस पुण्य कार्य मे धन से सहायता करें। दान की राशि निम्न पते पर भेजें।—चुन्नीलाल आर्य मंत्री, आर्य समाज मन्दिर लम्बेडी, तह० नौशहरा, जिला-राजौरी, (जम्मू कश्मीर) 185152

प्रेषक—रोशनलाल शर्मा, 247, तिहाड ग्राम, पो० तिलकनगर, दिल्ली-18

आर्यसमाज पर सीधा आघात

'तमस' की पहली किस्त मे ही आर्य समाज मंदिर मे हवन यज्ञ होता दिखाया गया है उसके उपरान्त अन्तरग सभा की मीटिंग मे एक सदस्य से यह कहलवाया गया है कि हमे अपने घरो मे कोयला और तेल इकट्ठा करके रखना चाहिए ताकि जलता हुआ तेल मुसलमानो पर डाला जा सके उसी मीटिंग में से एक सज्जन एक हिन्दू नवयुवक को अलग ले जाकर एक मुर्गी को काटने का आदेश देते हैं। उस नवयुवक को उल्टी हो जाती है। किन्तु उससे कहा जाता है कि यदि वह मुर्गी को नहीं काट सकेगा तो अपने शत्रुओ को कैसे काटेगा। तब वह स्वय उस मुर्गी को काट देता है और इस तरह उस नवयुवक को मुर्गी काटने के लिये प्रेरित करने मे सफल हो जाता है बाद मे इसी नवयुवक को एक मुसलमान के पीछे जाकर छुरा घोपते हुए दिखाया गया है।

यह कितनी विडम्बना की बात है कि जिस आर्य समाज ने भगतसिंह और बिस्मिल जैसे देश भक्त पैदा किये जिन्होंने सब तरह के भेदभाव भुला कर सब जातियो के देश भक्तो के कन्धे से कन्धा मिलाकर अपने प्राणो की आहुति दे दी, उसी आर्य समाज पर अब कट्टर साम्प्रदायिकता का आरोप मढा जा रहा है। आर्य समाज के जिस रूप को दूरदर्शन पर 'बुनियाद' धारावाहिक मे मास्टर हवेलीराम के रूप मे उज्ज्वल किया था, अब उसी आर्य समाज को एक ऐसे घृणित रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। वास्तव मे तमस की कहानी लिखने वाले कम्युनिस्ट विचार धारा के सज्जन हैं। और इसी लिये यह कोई आश्चर्य की बात नही है कि जहां हिन्दुओ को और विशेष कर आर्य समाज को साम्प्रदायिक सिद्ध करने का प्रयास किया गया वहां केवल कम्युनिस्टो को सच्चे देश भक्त साबित करने की कोशिश की गई हैं और कुछ इनेगिने कामरेडो को अपनी जान पर खेल कर साम्प्रदायिक दगो मे काम करते दिखाया गया है।—हर प्रकाश आहलूवालिया आर्य समाज अशोक बिहार फेज-I दिल्ली-110052

गुरुकुल कांगड़ी का उत्सव

गुरुकुल कागडी हरिद्वार का उत्सव 12 से 17-4 88 तक मनाया जा रहा है 16-4 88 को दीक्षान्त भाषण होगा आर्य परिवारो को हरिद्वार ले जाने के लिये देहली से स्पेशल बसे चलाई जा रही हैं। बसें 12-4 88 रात्री देहली से चलेगी जो 17-4 88 साय वापिस देहली आयेंगीं। यात्री हरिद्वार के साथ साथ ऋषिकेश, लक्ष्मण झूला देहरादून, वैदिक साधना श्रम, सहस्त्र धारा और एक दिन मसुरी का आनन्द भी ले सकेगें। मार्ग व्यय केवल 135/ रुपये प्रति यात्री होगा। निवास एवम् भोजन की व्यवस्था गुरुकुल कागडी मे होगी। शेष स्थानो पर यात्री स्वय अपना व्यय करेगें। विशेष जानकारी के लिये देहली मे श्री प्राणनाथ चई से फोन न 6419914 पर अथवा श्री गजेन्द्र मालवीय, आय समाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली फोन 343718 से सम्पर्क करें।

सूखा राहत कोष में दानदाताओं की सूची

386	श्री आर० एन० मित्तल, पानीपत	51/-
387	श्री भगवानदास, 155 माडल टाउन, पानीपत	100/-
388	गुप्त दान	5/-
389	श्री देवराज आर्य, पानीपत	51/-
390	श्री भगवानदास 576 माडल टाउन पानीपत	10/-
391	श्री एम० सी० दीवान, पानीपत	31/-
392	श्री एस० डी० बोहरा, पानीपत	21/-
393	श्री करताकृष्ण, (जमींदार) पानीपत	96/-
394	श्री मनोहरलाल, पानीपत (जमींदार)	96/-
395	श्रीमती कौशल्या देवी बतरा, 589 मा० टा० पानीपत	50/-
396	श्री एच० एल० वधवा, मा० टा० पानीपत	51/-
397	श्री रामचन्द्र सिधवानी, 633 मा० टा० पानीपत	50/-
398.	श्री आर० एल० चोपडा, सुपरि० इ रिटा० पानीपत	50/-
399	श्री आर० बी० नारायन सिंह प्रतापसिंह ट्रस्ट,	100/-
400	डा० शशि भारती, 3/6014 आर्य समाज रोड नई दिल्ली	वस्त्रादि
401	श्री मनोज विज, ए/बी 8 सी अशोक बिहार दिल्ली	102/-
402	श्री खुबीराम गुप्ता, 21 स्टेट बैंक कालोनी दिल्ली	50/-
403	श्रीमती सुशीला देवी जोहरी, ए 4/43 डी डी ए फ्लेटस, कालकाजी एक्स, न दिल्ली	51/-
404	श्री प्रिंसिपल, दोआब कालेज, जालन्धर	150/-
405	मन्त्री, आर्य समाज, सै० 7 चण्डीगढ़	31/-

आकाशदीप रत्नम् ...

(पृष्ठ 4 का शेष)

वृक्ष कितना विशाल होता है इसका अनुमान यहा से करना कठिन है, श्वेत चपा के फूलो से डालिया लदी थीं बेंत की कुर्सी डालकर वे बैठे थे, चम्पे की महक हवा में गु थी हुई थी, एक-दो फूल हमारी कुर्सियो पर भी पड़े थे।

वे बोले, "डाक्टर भारती, तुम्हे मालूम है, चम्पा इस क्षेत्र का विशेष पवित्र वृक्ष है सच तो यह है कि कम्पूचिया वियतनाम क्षेत्र का प्राचीन नाम चम्पा द्वीप है, प्राचीन भारतीय साहित्य मे भी यही नाम मिलता है चम्पा द्वीप"

मैंने चम्पा का एक फूल उठाते हुए कहा, 'और रत्नम् जी, क्या आपने कभी सुना है कि यह चपा द्वीप नाम एक भारतीय लडकी के नाम पर रखा गया था।"

"कैसे ?" वे अचरज से बोले

मैंने उन्हें प्रसाद जी की 'आकाशदीप' कहानी सुनायी कैसे दस्यु बुद्धगुप्त ने जिसे मारा उसी की रूपवती कन्या चम्पा से वह प्रेम करता था, कैसे चम्पा अपने प्रेम और अपने पिता की हत्या के दुख के अतर्द्वद्व मे उलझ कर टूटती गयी कैसे उसने य द्वीप बसाये और कैसे एक दिन छोडकर भारत लौट गयी, बुद्धगुप्त ने उसकी स्मृति मे अपने द्वीप में राज्यों का नाम 'चम्पा' रखा और कैसे चम्पा के लौटने की प्रतीक्षा मे एक आकाशदीप जलता रहा—निरर्थक, निस्पष्ट चम्पा कभी नही लौटी।

रत्नम् जी कहानी सुनकर आश्चर्य चकित थे, कल्पना है पर कितनी सजीव, कितनी सार्थक इतने वर्षों पहले लिखी गयी यह कहानी "काश इसका अनुवाद होता" वे बोले, "तो कितनी चर्चा होती, इस प्रदेश में लेकिन कौन करता ? हिंदी वाले अपने सकीर्ण स्वार्थों में उलझे हैं और अग्रेजीवालो की तो निरतर साजिश है कि भारतीय भाषाओ के असली महत्व को दुनिया के सामने आने ही न दें।"

उस पूरे प्रदेश मे सचमुच आकाश दीप गाव गाव मे जलते हैं, भगनचु बी बासो के सिरे पर लटके छोटे-छोटे दीपक जाने किस भटके यात्री को रास्ता दिखाने के लिए।

सोचता हू कि अपने रत्नम् जी का व्यक्तित्व भी एक अचर्चित आकाश दीप रहा है, काश कि हमारी अग्रेजी परस्त भटकती हुई अभिजात मानसिकता कभी इस आकाशदीप के द्वारा निर्देशित मार्ग को पहचान पाती। भारतीयता से विमुख अग्रेजीपरस्ती के छिछले, अहकार ग्रस्त जड अधकार में आलोकित इस आकाशदीप जैसे व्यक्तित्व को एक शोक ग्रस्त प्रणाम के अतिरिक्त और देने को हमारे पास है ही क्या ?

[धर्म युग (6 मार्च,) से साभार]

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री, द्वारा इस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाड़ी धीरज (फोन 527335) दिल्ली से मुद्रित
कार्यालय आर्य जगत्, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 (फोन 343718)

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य —30 रुपये विदेश मे 65 पौ० या 125 डालर वर्ष 51, अंक 13 रविवार 27 मार्च, 1988 दूरभाष। 3 4 3 7 8
आजीवन सदस्य-251 रु० इस अंक का मूल्य—75 पैसे, सृष्टि संवत् 1972949089, दयानन्दाब्द 163 चैत्र शु०-10, 2045 वि०

रामनवमी अंक

स्नेहं दयां च सौख्यं च,
यदि वा जानकीमपि ।
आराधनाय लोकानां,
मुंचतो नास्ति मे व्यथा ।
—उत्तर राम चरितम्

इतिहास का अपमान है 'तमस' !

दिल्ली और आंध्र मे कुछ नासमझ लोगो ने तमस के विरुद्ध प्रदर्शन करके रातोरात भीष्म साहनी और गोविंद निहलानी को सुपर-स्टार बना दिया। यदि वे प्रदशन नही होते तो तमस अन्य कई घटिया और उबाऊ सीरियलो की तरह अपनी मौत आप मर जाता—क्योंकि तमस साहित्यिक दृष्टि से एक स्तरहीन और ऐतिहासिक दृष्टि से एक असत्यपूर्ण उपन्यास पर बनाया गया एक नीरस सीरियल था। कहा गया कि तमस इतिहास है। परन्तु सत्य यह है कि तमस इतिहास नहीं, इतिहास का अपमान है—क्योंकि तमस मे आक्रामक और आक्रान्त को, जालिम और मजलूम को, हमलावर और रक्षा का उपाय करने वालो को एक समान बताया गया है।

तमस रावलपिंडी और उसके आसपास की पृष्ठभूमि पर लिखा गया उपन्यास है, पश्चिम पंजाब और फ्रंटियर के इस क्षेत्र मे साप्रदायिक दंगे नही हुए थे, सीधी एकतरफा कारवाई हुई थी। अंग्रेजो के इशारो पर मुस्लिम लीग ने 'डायरेक्ट ऐक्शन' का एलान किया था—क्योंकि उन्हे पाकिस्तान बनाना था, काफिरो को मार मार कर बाहर भगाना था। वली खान ने अपनी पुस्तक फैक्ट्स आर फैक्ट्स मे लिखा है कि अंग्रेजो द्वारा मस्जिद के मौलवियो को माहवार रकम दी जाती थी, ताकि वे अपने भाषणो मे जेहाद और नफरत की आग उगलें। नतीजा यह हुआ कि गुण्डो के सशस्त्र गिरोह हिंदू-सिखो के घरो मे आग लगाते रहे, उन्हे लूटते रहे, उनकी बहू बेटियो के साथ बलात्कार करते रहे। लाशो से भरी रेलगाडिया फ्रंटियर और पश्चिम बंगाल से दिल्ली और अमृतसर पहुंचने लगी।

कहा गया कि भारत के लोगो मे अब तो इतिहास पढने और देखने की हिम्मत होनी चाहिए। परन्तु भीष्म साहनी ने जो लिखा, वह इतिहास नही है, गोविंद निहलानी ने जो दिखाया वह भी इतिहास नही है। तमस मे दिखाया गया है कि साम्यवादी ब्रिटिश साम्राज्य के दुश्मन हैं। वे ईमानदारी से हिंदू-मुस्लिम एकता के दीवाने हैं जबकि इतिहास क्या है ? सत्य क्या है ?

इतिहास यह है कि 1942 के 'भारत छोडो' आंदोलन के समय साम्यवादी राष्ट्रीय आंदोलन की पीठ मे छुरा भोंक कर ब्रिटिश हुकूमत का साथ दे रहे थे। वे अंग्रेजो की मुखबिरी कर रहे थे। कांग्रेसी नेताओ को पकडवा कर जेल भेज रहे थे और ब्रिटिश फौजो के लिए रंगरूटो की भर्ती करवा रहे थे। इतिहास यह है कि साम्यवादी दल की कार्यकारिणी ने प्रस्ताव पास करके पाकिस्तान की मांग का समर्थन किया था, 'भारत छोडो' आंदोलन की निंदा की थी और अंग्रेजो का साथ देने की घोषणा की थी। इतिहास यह है कि 1941 से 1945 तक साम्यवादी और मुस्लिम लीग कंधे से कंधा मिला कर स्थान स्थान पर साथ साथ सभाएं कर रहे थे। इन सभाओ मे सुभाषचंद्र बोस को फासीवाद का कुत्ता बताया जा रहा था और महात्मा गांधी को हिटलर का पिट्ठू। जबकि भीष्म साहनी और गोविंद निहलानी हमे पढाना चाहते हैं कि साम्यवादी अंग्रेजो के दुश्मन थे।

ऐतिहासिक सत्य पर उपदेश देना बहुत सरल है, परंतु ऐतिहासिक सत्य को लिखने और उसे दूरदर्शन पर दिखाने के लिए बड़ा कलेजा चाहिए। डॉ० लोहिया की एक पुस्तक है—गिल्टीमैन ऑफ इण्डियाज पार्टीशन। इसमे कांग्रेसी नेताओ के चेहरो पर पड़े नकाब उतारे गये हैं और बताया गया है कि हमारे बूढे नेताओ मे सत्ता की हविस इतनी प्रबल हो गयी थी कि उन्होने उस हविस की तुष्टि की खातिर भारत का विभाजन स्वीकार कर लिया। क्या कोई दूरदर्शन पर इसे दिखाने का साहस कर सकता है ?

गोविंद निहलानी स्वयं भी जानते थे कि इतिहास को ज्यों का त्यों पर्दे पर नही दिखाया जा सकता। भीष्म साहनी के तमस मे एक सिख को मारते मारते जब लहूलुहान कर दिया जाता है, तो वह मुसलमान बनना स्वीकार कर लेता है। दूरदर्शन के तमस मे वह दृश्य नही है। भीष्म साहनी के तमस मे सुअर कटवाने और उसे मस्जिद के सामने फेंकने का काम एक मुसलमान मुराद अली करता है। गोविंद निहलानी के तमस मे मुराद अली एक ठेकेदार हो जाता है।

और अंत मे, तमस एक नकारात्मक इतिहास है। यह सच है कि भारत मे अंग्रेजो ने सुनियोजित रूप से नफरत के बीज बोये। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि स्वतन्त्रता के चालीस वर्ष बाद भी इस देश मे साम्प्रदायिकता की विभीषिका उसी वेग से विद्यमान है, जिस वेग से वह विभाजन से पूर्व दिखाई देती थी। इस विष को भारतीय शरीर से निकालने के लिए इतिहास के अनेक उज्ज्वल एवं रचनात्मक अध्यायो का सहारा लिया जा सकता है। उदाहरणार्थ, दूरदर्शन आजाद हिंद फौज का सम्पूर्ण अभियान सीरियल बद्ध कर सकता है—जिसमे हिंदू, मुस्लिम और सिख साथ साथ देश की आजादी के लिए लडे थे। झांसी

(शेष पृष्ठ 12 पर)

नव वर्ष की शुभ-कामनाएं

सम्पादक—क्षितीश वेदालंकार
व्यवस्थापक—रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

अद्भुत वैदिक यज्ञ विधि [9]

'विश्वानि देवः' मन्त्र का महत्व

— आचार्य वेद भूषण —

[गताक से आगे]

विगत अक मे 'या मधा देवगणा' मत्र की व्याख्या की थी। अब अगले मत्र 'विश्वानि देव को व्याख्या प्रस्तुत की जा रही है।

कर्म की प्रारम्भिक शर्त पवित्रता होती है। इस रूप मे वैदिक सिद्धात और नियम सार्वभौम है। केवल मनुष्य ही नही, पशु पक्षी भी इन नियमो से बधे हुए हैं।

रात्रि मे शयन कर जब प्राणी प्रात उठता है तो वह मल परित्याग करता है। घर के काम काज भी पहले घर की सफाई से ही आरम्भ होते हैं। रसोई बनाने से पहले बर्तन स्वच्छ किए जाते हैं। अन्न पकाने से पहले अनाज साफ कर लिया जाता है। कही पर भी, किसी भी क्षेत्र मे ध्यानपूर्वक देखिए कार्य का आरम्भ सबधित वस्तु पवित्रता अर्थात् शुद्धि से किया जाता है। स्वर्णकार सोने का आभूषण बनाने से पूर्व सोने को अग्नि मे तपा कर शुद्ध करता है। ऐसे ही लुहार लोहे को पहले तपा कर शुद्ध करता है। कपास को कातने से पूर्व उसे भी पहले धुनक कर स्वच्छ किया जाता है। इस प्रकार आप जहा कही दृष्टि दौड़ाइए, सर्वत्र यही नियम काम करता हुआ दृष्टिगोचर होगा।

प्राय यह समझा जाता है कि सासारिक सुख व ऐश्वर्य प्राप्ति के नियम भिन्न हैं और आध्यात्मिक नियम अर्थात ईश्वर प्राप्ति नियम भिन्न हैं। इस प्रकार की मान्यता अत्यन्त भ्रामक व अज्ञानभरी है। वास्तव मे पवित्र जीवन पद्धति ही अन्तत आत्मा को परमात्मा के निकट ले जाती है।

भौतिक मार्ग और आध्यात्मिक मार्ग पर चलने के नियम व सिद्धात एक ही हैं। अन्तर है तो केवल स्तर का या क्षेत्र का। भौतिक सिद्धात शरीर के स्तर पर चलते हैं और आध्यात्मिक नियम आत्मा के स्तर पर। किंतु नियमो में समानता ही रहती है।

धर्म पूर्वक अर्थात् नियमो का पालन करते हुए जो जीवन जिया जाता है वही जीवन मनुष्य को परमात्मा के निकट ले जाता है। जो नियम या सिद्धान्त जीवन मे बाधक हैं वे ही नियम व सिद्धात परमात्मा की प्राप्ति मे भी बाधक होते हैं। इसी आधार पर हमे वैदिक शिक्षाओ और वेद मन्त्रो को समझने का यत्न करना चाहिए।

प्रस्तुत मत्र उभय प्रकार के जीवन के लिए अत्यन्त उपयोगी योजना प्रस्तुत करता है। मन्त्र इस प्रकार है—

ओम विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्र तन्न आसुव।

यजुर्वेद—30-3

महर्षि दयानन्द ने अपने अमर साहित्य मे किसी मन्त्र का सर्वाधिक उल्लेख किया है तो इसी मन्त्र का। अपने वेद भाष्य के प्रत्येक अध्याय के आरम्भ मे महर्षि ने इसी मन्त्र द्वारा परमात्मा से प्रार्थना की है। महर्षि दयानन्द अत्यन्त व्यावहारिक थे। कहाँ किस मत्र का उपयोग ठीक होगा यह वे भलीभाति जानते थे। यही तो ऋषित्व की कसौटी है।

ऋषि चाहते थे कि मेरा यह भाष्य सर्वथा दोष रहित हो और अधिक से अधिक रहस्यो को उजागर करने वाला हो। इसी उद्दाम भावना से प्रेरित हो महर्षि ने इस उपयोगी मन्त्र को चुना। किसी विशेष सस्कार या विशिष्ट यज्ञ का शुभारम्भ करते समय ऋषि ने सामूहिक स्तुति प्रार्थना और उपासना के क्रम मे भी इसी मत्र को सर्वप्रथम स्थान दिया है। क्योकि महर्षि ने समस्त कर्मों में जो प्रथम कर्त्तव्य था उसको जान लिया था और जानकर ही इस मन्त्र को प्रथम स्थान प्रदान किया है। इस मन्त्र का भाव यज्ञ के महान् उद्देश्य से सर्वाधिक मेल खाने वाला है।

यदि यज्ञ के महत्व को कोई अत्यत सक्षेप मे व सारपूर्ण शब्दो मे जानना चाहे तो वह यही होगा कि—विश्वानि दुरितानि परासुव। यद्भद्र तन्न आसुव।

हे देव सवितर् अर्थात् समस्त अच्छाइयो को पदार्थों मे भर देने वाले हे देव यज्ञ! तुम पदार्थों के तेतीसों देवो के समस्त दोषो को दूर करने वाले हो। तुम न केवल पदार्थों के दोषो को दूर करते हो, अपितु कल्याणकारी व सुखदायक सामर्थ्य से उस पदार्थ को पूरिपूर्ण भी करते हो। प्रत्येक पदार्थ मे नाना प्रकार के गुण होते हैं। यदि उसमे दोष उत्पन्न हो जाता है तो उस पदार्थ के जो गुण हैं वे आहत होने लग जाते हैं और जब उत्पन्न दोषो का निवारण कर दिया जाता है तो उसमे उसके गुण फिर से शक्तिशाली हो जाते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा एक समान ही होती है पर अच्छे गुण, कर्म, स्वभाव के कारण किसी की आत्मा शक्तिशाली होती है जो उसका अपना शुद्ध रूप है। इसी प्रकार गुण, कर्म, स्वभाव में दोष उत्पन्न होने से आत्मा दुर्बल हो जाती है।

तीन स्तरो पर पवित्रता

भौतिक दृष्टिकोण वाले केवल शारीरिक स्तर ही जीते हैं। वे शरीर को स्वस्थ रखने का यत्न करते हैं। पर जो व्यक्ति शरीर के साथ-साथ मन को और मन के साथ साथ आत्मा को भी स्वस्थ (स्व में स्थित) अथवा पवित्र रखते हैं वे तीनो प्रकार के सुखो को प्राप्त कर लेते हैं। जो जिस स्तर पर प्रदूषित होता है वह उसी स्तर के क्लेशो को भोगता है। जीवन के इस सार को समझने की आवश्यकता है।

आजकल अण्डे व मास का प्रचलन बढ रहा है। इनके सेवन से बेशक भौतिक शरीर कुछ पुष्ट हो जाता है, पर मानसिक स्तर दुर्बल अथवा दोषयुक्त हो जाता है। इस प्रकार के आहार से मनुष्य मे तमोगुण की प्रधानता हो जाती है और तमोगुण की प्रबलता से मनुष्य मे आलस्य व जडता बढती है। जडता का असर बुद्धि पर भी पडता है। परिणामत मनुष्य उग्र व क्रोधी होने लगता है। जब ये गुण धीरे धीरे स्वभाव मे उतर जाता है तब मनुष्य हिंसक बन जाता है। उग्रवादी मनोवृत्ति का मूल कारण अण्डा, मास और मद्य का सेवन ही है।

शाकाहार मे भी यदि तमोगुणी पदार्थों का सेवन किया जाए तो भी मनुष्य प्रवृत्ति तामसिक हो जाती है। इसीलिए मानवीय उन्नति का मूल उचित आहार है। जैसा आहार होगा, वैसा ही व्यवहार होगा। इसलिए प्रत्येक मनुष्य को शरीर, मन और आत्मा तीनो स्तर पर उन्नति करने के लिए सात्विक आहारी बनना चाहिए।

जिस स्तर पर भी हम कायरत हैं उसी स्तर पर हमे अपने दोषो की ओर ध्यान देना चाहिए। भौतिक स्तर पर जब हम उन्नति चाहते हैं तो हमें भौतिक स्तर के दोषों को, दुरितों को, दूर करने के लिए यत्नशील होना चाहिए। जब आधिदैविक उन्नति के लिए यत्न करना हो तो मानसिक स्तर के दोषो के निवारण का यत्न करना है और जब आध्यात्मिक स्तर पर उन्नति करनी हो तो आत्मा के दोषो को दूर करने का यत्न करना चाहिए। मनुष्य की पूर्ण उन्नति या पूर्ण सुख तभी प्राप्त होता है जब हम तीनों स्तर के दोषो का निवारण करें इसीलिए मन्त्र मे "विश्वानि दुरितानि परासुव" कहा गया है। विश्वानि से अभिप्राय है कि सपूर्ण सब प्रकार के 'दुरितानि' दोषो को 'परासुव' दूर करें।

परमात्मा का स्मरण करते हुए, अर्थात् परमात्मा की सहायता प्राप्त कर जब हम दोषो को दूर करने का यत्न करते हैं, तब सकल्प मे दृढ़ता आती है। क्योकि परमात्मा की सहायता अन्त प्रेरणा के रूप मे ही उपलब्ध होती है। जैसे माली या किसान पेड-पौधो की जड को सींचता है। वैसे ही प्रभु हमारे सकल्पो को दृढ करते हैं। अन्त प्रेरणा ही मानव जीवन का मूल है। जब प्रेरणा या सकल्प दृढ होते हैं तभी मनुष्य अपने उद्देश्य में सफल होता है। अत वैदिक प्रार्थना मनुष्य को भीतर से अर्थात् जड मूल से ही दोष दुरितो को दूर करने की प्रबल इच्छा जागृत कर देती है। यही अन्त प्रेरणा हमे अच्छे मार्ग की ओर प्रवृत्त करा देती है।

वास्तव मे सन्ध्योपासना विधि मे जो अघमर्षण प्रकरण है वह अब मर्षण ब्रह्माण्ड का है। मार्जन मन्त्र पिण्ड शोधन के लिए हैं और अघमर्षण ब्रह्माण्ड शोधन के लिए है। बाह्य शुद्धि और आभ्यन्तर शुद्धि इस उभयविध शुद्धि के लिए ही हम ब्रह्म यज्ञ और देव यज्ञ करते हैं। ब्रह्म यज्ञ आभ्यन्तर शुद्धि के लिए किया जाता है अत वहा प्रभु से "ओम् ख ब्रह्म पुनातु सर्वत्र" से सम्पूर्ण आभ्यन्तर शुद्धि की कामना करते हुए परमात्मा के ब्रह्म रूप का स्मरण किया जाता है। वे सूक्ष्म हैं अत सर्वव्यापक हैं वे भीतर भी हैं और हमे भीतर के दोषो के निवारण हेतु पवित्र करने के लिए भीतर से बल प्रदान करें।

प्रस्तुत मन्त्र देव यज्ञ के प्रसग मे आता है तो परमात्मा के देव रूप का ध्यान करते हुए उसे देव सविता के रूप में सबोधित कर देव यज्ञ द्वारा बाह्य देवो की शुद्धि की कामना की जाती है। जब तक बाह्य-शुद्धि नही होगी तब आभ्यन्तर शुद्धि सम्भव नहीं है।

त्रिदेव उपासना

जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रार्थना की जाती है उस उद्देश्य की पूर्ति मे परमात्मा का जो स्वरूप सहायक सिद्ध हो उसी स्वरूप का ध्यान करना, उसी रूप मे परमात्मा का स्तवन करना, वैदिक उपासना पद्धति की विशेषता है। इसी विधि का सूक्ष्म प्रभाव वैदिक सस्कृति की विकृति मे भी देखा जा सकता है।

ब्राह्मण प्राय, ब्रह्मा की मूर्ति की पूजा करते हैं तो क्षत्रिय शिव अथवा पार्वती दुर्गा-काली चण्डी आदि की मूर्तियो को पूजते हैं। इसी प्रकार वैश्य लक्ष्मी के प्रलोभन से विष्णु की मूर्ति

(शेष पृष्ठ 12 पर)

राम की याचना

भूयो भूयो भाविनो भूमिपाला
नत्व नत्वा याचते रामचन्द्र ।
सामान्योऽय धर्मसेतुर्नराणा
काले काले पालनीयो भवद्भि. ।

हे भावी भूमिपालो ! यह रामचन्द्र विनम्रतापूर्वक आपके सम्मुख याचना कर रहा है कि धर्म परिपालन की जिस मर्यादा को मैंने सस्थापित किया है आप भी उसका निरन्तर पालन करें ।

'सम्पादकीयम्

मर्यादापुरुषोत्तम राम का लोकाराधक रूप

मर्यादापुषोत्तम श्री राम में जहा अन्यान्य गुणो का विकास हुआ था वहा सुयोग्य सम्राट बनने के लिए नितान्त आवश्यक प्रजानुरजन का गुण उनमें प्रजाराधन की सीमा तक पहुच गया था । वे आदर्श नृपति की भाति केवल प्रजा का पालन ही नहीं करते थे अपितु प्रजा को अपना आराध्य मान कर उसके लिए अपना सवस्व न्यौछावर करने के लिए तत्पर रहते थे । सामान्य प्रजाजन एक रजक के कहने पर कि "रामचन्द्र जी ने दस मास रावण के घर रहने के उपरान्त भी सीता को अपने घर रख लिया है" तथा उक्त मिथ्या प्रवाद के प्रजा में फैलने की आशका मात्र से अग्नि परीक्षा द्वारा शुद्धप्रमाणित अपनी प्राणप्रिया पत्नी का परित्याग कर दिया । यह है प्रजाराधन का आदर्श उदाहरण । रजक के प्रवाद पर जब उन्हें सीता का परित्याग करना पड़ा तो उस समय यदि वह चाहते तो दूसरा मार्ग भी ग्रहण कर सकते थे । अर्थात् सीता के साथ स्वय वन को चले जाते । किन्तु उन्होंने ऐसा नही किया । इसलिए नहीं कि उन्हें सीता से राज्य अधिक प्यारा था । अपितु इसलिए कि सीता से अधिक उन्हें अपनी प्रजा प्रिय थी और प्रजा नहीं चाहती थी कि राम वन को जाये । प्रजा तो सीता के परित्याग के नियमों मे भी परिवतन करवाने के पक्ष में थी किन्तु राम नही चाहते थे कि राजा के रजन के लिए प्रजा के नियम बदले जाये ।

इतना ही नही राजनियम का भग करने पर यदि उन्होने शम्बूक को दण्ड दिया तो अपने सहोदर सदृश भाई लक्ष्मण को राज्य से निष्कासन का कठोर दण्ड देने में वे नही हिचके । वे पक्षपात करना नहीं जानते थे । अपराधी चाहे सामान्य व्यक्ति हो अथवा निकट के सम्बन्धी, वे सबको समान दृष्टि से देखते थे । उनके सबध मे प्रसिद्ध था—

पौरान् स्वजनवन्नित्य कुशल परिपृच्छति ।

अर्थात् अपने स्वजनो की भाति वे नगर वासियो से प्रतिदिन उनका कुशल-क्षेम पूछा करते थे । यही कारण था कि प्रजा की समस्त स्त्रियाँ, बूढे, तरुण तरुणिया, प्रतिदिन दोनो समय भगवान से श्रीराम के कल्याण की कामना करते थे ।

एक समय ऐसा आया जब अयोध्या के राजा कर्तव्यच्युत होने लगे थे । राजा मूलक ऐसा डरपोक निकला कि अन्त पुर मे जा छिपा, उनका नाम ही "नारी कवच" पड गया, कल्माष्पाद के राज्य मे गोवध होने लगा, विश्वमित्र ने वशिष्ट का अपमान करने मे कसर नहीं छोडी और सहस्रबाहु ने तो तपोधन जमदग्नि का सिर ही काट दिया था । परिणाम स्वरूप परशुराम क्षत्रिय जाति के अनन्य शत्रु बन गये और उन्होंने 21 बार क्षत्रिय जाति स्वाहा कर दी । रघु ने दिग्विजय तो की किन्तु उन्होने भी विश्वजित यज्ञ में अपना सर्वस्व दान कर दिया और जब महर्षि कौत्स उनके पास आये तो रघु उनके स्वागत के लिए मिट्टी के पात्र मे जल लेकर आये । रघु से चलकर राजा दशरथ तक रघुकुल की यही दशा रही । राजा दशरथ की भी साढे तीन सौ रानियां और तीन पटरानियां थीं । जब विश्वामित्र राजा दशरथ के पास सुरक्षा के लिए आये तो उनके मुख से सहसा निकल गया —

नाहि शक्तोऽस्मि सग्रामे स्थातु तस्य दुरात्मन
तेन चाह न शक्तोऽस्मि सयोद्धु तस्य वा बले ।

अर्थात् मैं युद्ध मे उस दुष्ट रावण के सम्मुख नहीं ठहर सकता । उससे तो क्या मैं उसकी सेना से भी युद्ध नही कर सकता । यह दशा थी उस वैभवशालिनी अयोध्या के पराक्रमी राजा की । इसके विपरीत एशिया मे दो शक्तिशाली राजा थे । एक बालि दूसरा रावण । उन दोनों मे परस्पर अटूट सन्धि थी ।

विश्वामित्र ने दशरथ से राम और लक्ष्मण की याचना की । दशरथ मोहाच्छन्न हो गये किन्तु वशिष्ट ने समझाया और अन्त में विश्वामित्र राम और लक्ष्मण को अपने साथ ले जाने में सफल हुए । विश्वामित्र ने अपने आश्रम में जा कर राम और लक्ष्मण को न केवल युद्धनीति अपितु दण्डनीति का भी सम्यक् ज्ञान कराया और फिर राक्षसों द्वारा किए जाने वाले अत्याचारों से उन्हें परिचित करा कर उनके हृदय में ऐसे दिव्य भाव भर दिये जो आजन्म स्थिर रहे ।

आदिकाल से आज तक हम यह देखते आयें हैं कि जो व्यक्ति किसी भी कारण से तपस्वी अथवा वनवासी बनता है वह उत्तराखण्ड की पर्वत उपत्यकाओ की ओर ही मुख करता है । किन्तु कैकयी जब राम के लिए वनवास मागती है तो कहती है—नवपच च वर्षाणि दण्डकारण्यमाश्रित, अर्थात् राम चौदह वर्ष तक दण्डकारण्य में निवास करें । इस प्रकार राम उत्तराखण्ड की ओर न जा कर दक्षिणापथ की ओर अग्रसर किये गये ।

किशोरावस्था में विश्वामित्र ने जो भाव राम के भीतर भरे थे उनके ही आधार पर राम ने बालि से कहा था—इक्ष्वाकूणां इय भूमि. सशैलवनकानना । उस समय राम के मन मे एक ही कामना थी, एक ही चिन्ता थी कि 'किसी प्रकार सम्पूर्ण आर्यवर्त को एक बार पुन आर्य-सस्कृति की पवित्र पताका के नीचे देखना । कैकयी राम की महत्वाकाक्षा से परिचित थी । वे वीरागना थीं, अनेक बार राजा दशरथ के साथ युद्ध क्षेत्र मे जा चुकी थीं । वह समझ गयी थीं कि गौरवशाली साम्राज्य शीघ्र ही ध्वस्त होने वाला है । उसे राम से ही आशा थी । उसको राम मे वह शक्ति दिखाई दी थी जिसके बल पर राम बालि और रावण का सहार कर सकते हैं । अपनी योजना को कार्यान्वित करने के लिए उसको अपमान और प्रताडना सहनी पडी, किन्तु कैकयी अपने निश्चय पर अटल रही और भरत के लिए राज्य और राम के लिए वनवास माग कर उसने राम के लिए इच्छित सिद्धि का द्वार खोल दिया । उन्हें राज्य बन्धन से मुक्ति दिला कर स्वतन्त्रतापूर्वक सब काम कर सकने के लिए वन भिजवा दिया । यही कारण है कि लक्ष्मण जब-जब माता कैकयी के प्रति क्रुद्ध होते तब-तब राम उनको वर्जते हुए कहते—

माता न विशकनीया,
कथ नु साम्बा कैकेयी तादृशी क्रूरदर्शिनी ।
न तेऽम्बा मध्यमा तात गर्हितव्या कदाचन ।

अर्थात् माता पर शका नहीं करनी चाहिए, माता कैकेयी इस प्रकार की क्रूर स्वाभाव वाली कैसे हो गई ? तुमको मझली माता की कदापि निन्दा नही करनी चाहिए आदि ।

राम कितने धीर थे इस विषय में रामायण मे लिखा है—

आहूतस्याभिषेकार्थं वनाय प्रस्थितस्य च
न लक्षितो मुखे तस्य स्वल्पोऽप्याकारविभ्रम ।

अर्थात् राज्याभिषेक की सुखद आज्ञा से न तो उनके मुख पर प्रसन्नता के चिन्ह दिखाई दिये और राज्य के बदले वनवास की आज्ञा मिलने पर न ही उनके मुख पर विषाद के चिन्ह दिखाई दिये ।

रावण के मरने पर विभीषण को बडी प्रसन्नता हुई । न केवल इतना अपितु विभीषण रावण की अन्त्येष्टि तक करने को उद्यत नहीं था । वह उसे अपना और राम का शत्रु कह रहा था । उस समय राम ने विभीषण को जो उपदेश दिया वह राम जैसा प्रजाराधक ही दे सकता था । उन्होंने कहा—

मरणान्तानि वैराणि निवृत्त न प्रयोजनम् ।
क्रियतामस्य सस्कारो ममाप्येष यथा तव ।

अर्थात्—हे विभीषण ! वैर विरोध मरण तक ही हुआ करता है । हमारा सारा प्रयोजन अब समाप्त हो गया है । इसलिए अब तुम इसकी राजोचित अन्त्येष्टि करो । क्यों कि यह मुझको भी उतना ही प्रिय है जितना तुम्हे था ।

गुणो की कितनी परख और गुणी की कितनी प्रतिष्ठा राम के मन में थी इसका एक उदाहरण उस समय मिलता है जब रावण आहत हो कर मरने की घडिया गिन रहा था । राम चाहते थे कि मनुष्य जाति की भलाई के लिए उस विद्या का सचय किया जाये जो रावण के पास थी । इसलिए राम ने लक्ष्मण को रावण के पास विद्यार्जन के लिए भेजा । लक्ष्मण के जाने पर रावण मौन रहा, लक्ष्मण वापस आ गये । लक्ष्मण समझता था कि रावण मे अभी अहकार शेष है । किन्तु राम ने लक्ष्मण मे अहकार देखा, उन्होने लक्ष्मण को फिर रावण के पास भेजते हुए कहा—गुरु के सिरहाने खडे हो कर याचना करना अहकार का लक्षण है । लक्ष्मण पुन गये और रावण के पैताने खडे हो कर उससे राजनीति की शिक्षा ग्रहण की ।

(शेष पृष्ठ 11 पर)

रामायण की रहस्य-कथा

42 वर्ष पूर्व टकारा मे मोरवी नरेश की उपस्थिति में महर्षि दयानन्द की जन्म-शताब्दी के अवसर पर श्री स्वामी श्रद्धानन्द महाराज की रामायण की शिक्षाप्रद कथा

कथा-उद्‌भव प्रसंग

संवत् 1982 (उत्तरभारतानुसार सं० 1983) के महाशिवरात्रि के दिन महर्षि दयानन्द जी के जन्म-शताब्दी-महोत्सव के प्रसंग मे श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी काठियावाड में "टकारा" पधारे थे। वहां पर एकत्रित हुए राजपूतों (क्षत्रियों) ने स्वामी जी को कुछ उपदेश देने के लिए आग्रह किया। स्वामी जी ने गहरे दु:ख-भरे स्वर मे उत्तर दिया "मैं किसके सामने बोलूं ? मैंने सुना था कि सौराष्ट्र मे बहुत क्षत्रिय रहते हैं, किन्तु मैं यहां किसी क्षत्रिय को नहीं देखता।" इतना कहकर स्वामी जी मौन हो गए। चौथे दिन उनका मौन टूटा। उनके मुख से गंगा के निर्मल प्रवाह के सदृश रामायण-कथा का अजस्र स्रोत बहने लगा। क्षत्रियों की गीता रामायण ही है और इस कथा के कहने वालों का कण्ठ भी क्षत्रियवर (श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी का जन्म क्षत्रिय कुल मे हुआ था।—यु० मी०) श्री श्रद्धानन्द जी का था। दोनों के उचित मेल से महासंगीत का वातावरण उत्पन्न हो गया। डेढ़ घन्टे तक अखण्ड शान्ति के मध्य वह (रामायण कथा का) पुनीत प्रवाह बहता रहा।

स्वामी जी ने इस कथा को कहा, किन्तु इस (कथा) के लिए शताब्दी के कार्यक्रम में पहले से कोई निर्णय नहीं हुआ था। प्रसिद्ध कथाकार स्वामी सत्यानन्द जी रामायण की कथा करने वाले थे, परन्तु उनके न आने से स्वामी जी (श्रद्धानन्द जी) का नाम कार्यक्रम में लिखा गया। इस प्रकार एक उत्तम योग प्राप्त हुआ)।

स्वामी जी के कथा करने के पश्चात् एक प्रतिष्ठित सद्‌गृहस्थ ने कहा था कि स्वामी जी आज बाजी मार गये। शताब्दी-महोत्सव मे सर्वोत्तम कार्यक्रम यह कथा थी।

जिस तरह स्वामी दयानन्द जी निर्भय होकर राजा-महाराजाओं को उपदेश देते थे, उसी प्रकार की निर्भीक शैली से सौराष्ट्र के राजाओं के समक्ष रामायण-रूप महासागर से संगृहीत रत्नों को निम्नलिखित शब्दों में प्रकाशित किया था। ("हुतात्मा श्रद्धानन्द" से अनूदित।—यु० मी०) —युधिष्ठिर मीमांसक

महापुरुषों के पूजक साधु वसवाणी जी (साधु टी० एल० वासवानी) ने अपने एक व्याख्यान में संसार के विश्ववन्द्य महापुरुषों की नामावली गिनाते हुए बुद्ध, महावीर कृष्ण, क्राइस्ट, कान्फ्युशियस, मुहम्मद नानक, केशव, चन्द्रसेन, राजा राममोहन राय इत्यादि कितने ही नामों का उल्लेख किया, किन्तु एक नाम भूल गये।

वसवाणी जी के श्रोतृवर्ग मे से एक मुसलमान भाई ने खड़े होकर सूचित किया—"महात्मा जी! आपने सब नाम गिनाये, उनमे सर्वश्रेष्ठ (आदर्श चरित्र) राम का नाम भूल गये। राम जैसे आदर्श चरित्र महापुरुष का दर्शन जगत् के किसी भी साहित्य मे मैंने नहीं पाया।"

वसवाणी ने अपनी भूल सुधारकर जाति के आदर्श महापुरुषों के रूप मे राम का नाम जनता को सुनाया।

मैं श्रद्धानन्द स्वयं रामायण का भक्त हूं। मेरे जैसे (रामायणानुरागी) भक्त को एक समय रामायण पर मुग्ध एक अंग्रेज अफसर मिले। (यह अंग्रेज महानुभाव थे ग्राउस, जिन्होंने रामचरितमानस का अंग्रेजी मे अनुवाद किया था। ये बुलन्दशहर मे कलैक्टर रहे थे।) उन्होंने रामायण का अंग्रेजी मे अनुवाद किया था। उस अंग्रेज सज्जन ने मुझसे कहा कि "जगत् के वाङ्‌मय (साहित्य) में राम जैसा (आदर्श) पात्र मुझे कहीं नहीं मिला। मैं धर्म से क्रिश्ती हूं, ईसा का मैं अनुयायी हूं, फिर भी रामचन्द्र जी को एक हिन्दू भक्त जिस भाव से पूजता है उसी भाव से मैं भी राम की पूजा करता हूं। आप रामचन्द्र जी को मर्यादा-पुरुषोत्तम कहते हैं वैसे ही मुझे भी पुरुषोत्तम प्रतीत होते हैं। रामचरित्र का जिसमें वर्णन है वह रामायण मुझे जगत् का अद्वितीय महाकाव्य प्रतीत होता है। राम और रामायण के परिचय से मेरा जीवन सार्थक हो गया।"

इस प्रकार की रामायण की अपूर्वता और श्रेष्ठता को मैं पूर्णतया किस प्रकार बता सकता हूं। उस आदर्श महापुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी के जीवन की मनोहरता को मैं आपके सामने किस प्रकार पूर्णरूप से बता सकता हूं। रामायणरूपी महासागर के अन्तर्हित रत्नों को पूर्णतया आपके समक्ष किसी प्रकार उपस्थित कर सकूंगा ऐसा मुझे विश्वास नहीं। फिर भी कथा के प्रवचन में अनुभवहीन मैं आपके सामने रामायण की कथा कहने का प्रयत्न करूंगा।

हिन्दू समाज की रचना का सबसे महत्वपूर्ण प्रकाश रामायण के रचयिता महर्षि यह लोकप्रसिद्धि के अनुरूप उल्लेख है। इतिहास से ज्ञात होता है कि महर्षि वाल्मीकि भार्गव वंश के महर्षि वल्मीक के पुत्र थे अर्थात् ब्राह्मण-वंशज थे। (यु० मी०) महर्षि वाल्मीकि कौन थे ? वे (महर्षि वाल्मीकि) पूर्वाश्रम मे भील थे। वे अपने गुणों और कर्मों से ऋषि बने थे। यही रामायण का प्रथम उपदेश है। आज तो हिन्दू समाज में वर्ण उनके जन्म के ऊपर ही निर्भर है। आज अन्त्यज-कुल मे जन्म लेने वाले हिन्दुओं को मन्दिर में पैर धरने का भी अधिकार नहीं (ब्राह्मण बनने की बात तो दूर है), परन्तु रामायण तो पुकार-पुकारकर कह रही है कि भील भी ब्राह्मण बन सकता है। रामायण आज के पतित हिन्दू समाज को उपदेश देती है कि वर्ण जन्म से नहीं, गुण कर्म के ऊपर आश्रित है।

राम के पिता दशरथ की तीन रानियां थीं। हिन्दू धर्म का एकपत्नीव्रत का आदर्श चूकने का क्या परिणाम हुआ ? राम का वनवास। अत: रामायण के नायक रामचन्द्रजी ने जीवनभर एकपत्नीव्रत का पालन किया। इस प्रकार रामायण से सब हिन्दुओं के लिए एकपत्नीव्रत पालन के अचल सिद्धांत का प्रतिपादन होता है। आज कितने राजा लोग इस सिद्धांत को भंग करके अनेक पत्नियां करते हैं और उसके परिणाम भी बिना अपवाद के कड़वे (बुरे) ही होते हैं।

राजा दशरथ की सभा में मुनि विश्वामित्र पधारते हैं। राजा सिंहासन से उतरकर ऋषि के चरण-प्रक्षालन करके स्वागत करते हैं। मुनि को राजसिंहासन पर बिठाकर स्वयं हाथ जोड़ उनके सामने (नीचे) बैठते हैं और ऋषि की आज्ञा मांगते हैं। विश्वामित्र जी कुछ कहने से पूर्व राजा को वचन से बांध लेते हैं (वचनबद्ध कर लेते हैं) और उसके पीछे यज्ञ की रक्षा के लिए राम, लक्ष्मण, दोनों को साथ ले जाने के लिए कहते हैं। राजा दशरथ घबराते हैं। दोनों बालक राजकुमारों (राम, लक्ष्मण) को राक्षसों से लड़ने के लिए भेजने को राजा दशरथ का मन नहीं माना। उन्होंने मुनि से विनम्र प्रार्थना की, यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं सम्पूर्ण सेना को साथ ले चलूं। परन्तु विश्वामित्र को तो राम, लक्ष्मण दोनों की ही आवश्यकता थी। राजा दशरथ वचन से बद्ध थे। इसलिए मन न मानने पर भी राम, लक्ष्मण को महर्षि के साथ भेजा। इस प्रसंग में एक वचन-पालन का आदर्श मिलता है। सच्चे क्षत्रिय वचन के लिए अपना सिर उतारने को तैयार थे। आज ऐसे वचन पालन करने वाले क्षत्रिय कहां हैं ? आज तो क्षत्रिय राजाओं के वचन का कुछ भी मूल्य नहीं रहा। सच्चा क्षत्रिय-तेज कहीं भी नजर नहीं आता। यही हिन्दू जाति के अध:पतन का मुख्य कारण है।

ब्रह्मचारी राम और लक्ष्मण ने ब्रह्मचर्य के प्रभाव से सहस्रों राक्षसों का संहार कर विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा की। निर्विघ्न पूर्णाहुति कराके ऋषि के साथ सीता के स्वयंवर दरबार मे गये। स्वयंवर में शिवधनुष भंग करना था। इस शिवधनुष को ब्रह्मचारिणी सीता ने एक समय खेलते हुए सरलतापूर्वक उठा लिया था, ऐसा रामायण में वर्णन है। जिस धनुष को सीता ने बालकपन में उठा लिया था उसको आर्यावर्त के सहस्रों राजाओं में से कोई भी न उठा सका। लंकापति रावण भी न उठा सका अन्त मे विश्वामित्र की आज्ञा से रघुकुल-शिरोमणि रामचन्द्र ने उठाया और धनुष के टुकड़े टुकड़े कर दिये। इस प्रसंग मे ब्रह्मचर्य का प्रताप गाया गया है। आज हमारे जीवन में इस ब्रह्मचर्य का स्थान कहां है ?

सीता ने शिवधनुष को उठाकर ब्रह्मचारिणी की शक्ति का परिचय दिया। उस समय की आर्य नारी के ओज का एक दूसरा ज्वलन्त दृष्टांत रामायण मे मिलता है—

राजा दशरथ एक समय युद्ध के लिए गए। उनके साथ रानी कैकयी भी गई। युद्ध में रथ की नेमि (धुरि) निकल गई। कैकयी ने अपना हाथ (धुरी स्थान पर) रख उसे स्थिर रक्खा और छाती टेक रथ को स्थिर रख दशरथ को विजय प्राप्त कराई। भारत की देवियां इस प्रकार रणस्थली में जाकर विजय पाती थीं। इस कारण भारत स्वतन्त्र था। ऐसी अन्तिम रणचण्डी वीरांगना झांसी की रानी लक्ष्मीबाई थी। एक अंग्रेज इतिहास लेखक लिखता है—'सन् 1857 की क्रांति का झण्डा जब तक लक्ष्मीबाई के हाथ मे रहा और युद्ध की व्यूह-रचना जब तक लक्ष्मीबाई करती रही, तब तक अंग्रेजों की शक्ति नहीं थी कि वे क्रांतिकारियों को पीछे हटा सकें। उस समय क्रांतिकारियों की तलवारों से अंग्रेजों के सिर धड़ाधड़ नीचे गिरते थे और शवों को पैरों से कुचलते हुए क्रांतिकारी आगे बढ़ते थे। जब नाना साहब ने झांसी की रानी के हाथ से झण्डा लेकर दूसरों के हाथ में दे दिया तब क्रांतिकारियों का पराजय हुआ।"

आज भारत में कैकयी अथवा लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगनायें हैं ? आज भारत में रणचण्डियां जन्म लेती हैं ? आज स्त्रियों की दशा कैसी है ?

गुजरात में परदे का रिवाज है ऐसा मैं जानता था, परन्तु काठियावाड़ में भी

→
परदे की प्रथा है, ऐसा मैं नहीं जानता था। परदे की प्रथा मुसलमानों के साथ इस देश में आई है। बारहवीं सदी मे भारतवर्ष में परदा नहीं था, तेरहवी सदी में भी परदा दिखाई नहीं देता। चौदहवीं सदी में परदा भारत में आया। इसके पश्चात् काठियावाड में भी परदे का प्रचलन हुआ। मुसलमान हिन्दु स्त्रियो को उठाकर ले जाते थे। उनके साथ लडने की हमारी शक्ति नहीं थी। इसलिए स्त्रियों के सतीत्व की रक्षा के लिए परदे की प्रथा आरम्भ हुई और उसी के साथ सरक्षण की वृत्ति से बाल-विवाह का अनाचार आरम्भ हुआ। कन्या की रक्षा में अशक्त पिता छोटी आयु में विवाह करने लगे। उससे आज की निबल हिन्दू प्रजा का जन्म हुआ है।

राजा दशरथ को वानप्रस्थ लेना था। राम का राज्यभिषेक करके उसके सिर पर राज्य का बोझा डालना था। किन्तु उस समय आजकल जैसा एकतन्त्र सत्ता का समय न था। उस समय आदर्श प्रजानियन्त्रित राज्यतन्त्र का युग था। राजा ने राज्य के प्रजाजनों को बुलाया, ऋषियों को निमन्त्रण दिया। उनके समक्ष अपनी इच्छा प्रदर्शित की। प्रजा की सम्मति पर राम का राज्यभिषेक निश्चित हुआ।

आज भी राजाओं की रानियों के अन्तःपुर हैं। आज भी राज्यभिषेक होता है किन्तु पुरुष (राजा) के जीवनभर साथ रहने वाली अर्धांगिनी रानी का नही। विलायत में राजा जार्ज और रानी मेरी एक साथ सिंहासन पर बैठते हैं। वहां पति-पत्नी, राजा-रानी दोनों का राज्याभिषेक होता है, परन्तु भारत में इस तरह नहीं होता। राम-युग में आज के जैसी परिस्थिति नहीं थी। राम-युग में पुरुष और स्त्री दोनों का साथ में राज्याभिषेक होता था। उस समय दोनों बने राज्य-धुरा को धारण करते थे।

राजा दशरथ ने राज्याभिषेक की सूचना देने के लिए राम और सीता को बुलाया। दोनों ने पिता की आज्ञा के प्रति सिर झुकाया। राज्याभिषेक की तिथि निश्चित हुई। पिता (दशरथ) ने राम और सीता को राज्याभिषेक के पूर्व-दिन उपवास करने की आज्ञा दी। पूर्व-रात्रि में शिलातल पर घास की शय्या पर सोने का आदेश दिया। इस प्रकार राम और सीता दोनों ने सम्पूर्ण रात्रि तपश्चर्या में व्यतीत की। रामयुग में राज्यधुरा धारण करने वाले प्रजापालक (राजा) को सयम का आचरण करना पड़ता था। इतना तापस जीवन अंगीकार करना पड़ता था।

और आज उस तपश्चर्या का, उस सयम का आदर्श कहां है? आज तो राज्याभिषेक के समय राजकुमार मदांध बन जाते हैं। राजा के लिए अनुचित तमाशे (जलसे) और रागरंग जुटते हैं। हाल में कश्मीर में राज्याभिषेक-महोत्सव मनाया जा रहा है। समाचारपत्रों में छपा कि कश्मीर-नरेश हरिसिंह ने इस प्रसग में पांच लाख रुपये रण्डियों और नर्तकियों के बुलाने के लिए निकाले हैं और इसी तरह पचास लाख रुपये व्यर्थ खर्च करने का कार्यक्रम बनाया है। आज हमारी ऐसी दशा है। आज हमारे राजाओं में से प्रजापति बनने की योग्यता जाती रही प्रजापालक बनने के लिए उपयुक्त तपश्चर्या और सयम का राजाओं में अभाव हो गया है। भारत के देशी राजाओं के (नाश के) लिए स्वेच्छाचारिता की भयकर अग्नि अन्दर-ही-अन्दर उठ रही है। (श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी की उक्त भविष्यवाणी सर्वथा सत्य हुई। सम्पूर्ण रजवाड़े आज समाप्त हो गए। थोड़े दिनों में उनका नाम-निशान भी मिट जायेगा।) वह उन्हें नष्ट कर देगी।

राम के राज्याभिषेक का समाचार सुनकर राम की सौतेली माता कैकेयी के हृदय में द्वेषाग्नि प्रकट हुई। जब रात मे प्रसन्नचित्त दशरथ कैकेयी के महल में प्रविष्ट हुए तब कैकेयी ने राजा से पूर्व-स्वीकृत दो वर मांगे। तदनुसार राम को वनवास और भरत को राजगद्दी की प्राप्ति की कैकेयी ने मांग की। यह सुनकर दशरथ मूर्छित हो गये। सारी रात मूर्छा में बीती। प्रभात वेला में दशरथ और माता कैकेयी को प्रणाम करने के लिए राम कैकेयी के महल मे आए। राम ने पिता को मूर्छित देखा। रामचन्द्र जी ने पिता से बार-बार आज्ञा करने के लिए कहा, फिर भी पिता कुछ नही बोले। तब राम को बहुत दुःख हुआ। पिता जी क्यों नहीं बोलते? मेरे से क्या अपराध हुआ? पिताजी आज्ञा करें तो मैं अग्नि में प्रवेश कर सकता हू, अपना सिर समर्पित कर सकता हू, समुद्र में डूब सकता हू।

अहं हि वचनाद्राज्ञः पतेयमपि पावके।
भक्षयेय विषं तीक्ष्णं मज्जयेमपि चार्णवे॥
(वाल्मीकीय रामायण अयोध्याकाण्ड 18/28,29) पिताजी की आज्ञा का मैंने कभी उल्लंघन नही किया, फिर भी आज पिता जी मुझसे रुष्ट क्यों हैं? राम पिता के पास स्तब्ध होकर खड़े हो गये।

अन्त में कैकेयी ने अपने वचन (वरदान) की बात सुनाई और पिता के वचन पालन के लिए चौदह वर्ष के लिए वनवास मे चले जाने की आज्ञा दी। यह सुनकर राम के मुख-मण्डल की एक रेखा भी विकृत नही हुई। जिस आनन्द से पितृ वन्दना करने के लिए आये थे उसी आनन्द से पिता की आज्ञा पालने के लिए वन में चलने की तैयारी की। कैसी उद्विग्नता से रहित योगी के समान निःस्पृहता थी? राम ने राज्य छोडकर वन का मार्ग लिया। इस प्रसंग में पुत्र धर्म का उपदेश (आदर्श) है। राम जैसे आज्ञापालक पुत्र आज कहां हैं?

राम को जब वनवास मिला, उस समय भरत जी अपने ननिहाल (मामा के घर) में थे। वे वापस आये। कैकेयी ने वात्सल्य-भाव से भरत को राजमुकुट धारण करने को कहा, परन्तु भरत ने उसे स्वीकार नहीं किया। माता को इस अनुचित कृत्य के लिए धिक्करा। भरत अयोध्या के कुछ प्रजाजनो को साथ लेकर राम को वापिस लाने के लिए चित्रकूट गये। राम ने भरत की प्रार्थना स्वीकार नही की और पिता की आज्ञानुसार वन मे रहना ही पसन्द किया। राम की इस अस्वीकृति से शोकान्वित होकर भरत और प्रजाजन वापस लौटे। भरत ने जब तक राम वनवास से वापस न लौटें तब तक तपश्चर्या करने का और राम की पादुका सिंहासन पर रखकर राज्य चलाने का निश्चय किया। चौदह वर्ष तक राम-पादुका के अनुचर बनकर भरत ने अयोध्या का राज्य चलाया। भरत जैसे भ्रातृधर्म पालन करने वाले भाई आज कहाँ हैं?

भरत जब कुछ प्रजाजनों के साथ (रामको लौटाने के लिए) चित्रकूट की ओर आ रहे थे तब मार्ग मे एक नदी के तटपर निषाद राजा उनके स्वागत के लिए खड़े थे। निषाद अर्थात् पञ्चम जाति (शूद्र से भी नीच) की मान्यता को अशास्त्रीय ठहराकर भरत जी ने निषाद राज को गले लगाया। उसके हार्दिक स्वागत को हर्षित हो स्वीकार किया। वेद में चार वर्ण हैं, पांचवा वर्ण कैसे हो सकता है? भरत ने निषादराज और लाखों भीलों को चातुर्वर्ण्य में मिलाकर उनका उद्धार किया।

इस प्रकार भरत के मार्ग पर चलने वाले क्षत्रिय आज कहा हैं? आज तो सात करोड़ अछूत भरत-जैसे उदार क्षत्रिय की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इन अछूतों की कितनी महान् सेवाएं हैं! यदि हमारे में कद्रदानी (कृतज्ञता) हो तो इन अछूतो को, इन भीलों को एक क्षण के लिए भी हम अपने से अलग नहीं कर सकते, इतना महान् उपकार इन अछूतो का हमारे ऊपर है।

हिन्दूपति" विशेषण प्रजा ने एक 'प्रताप" को ही दिया। (हिन्दुपति परताप पत राखी हिंदुवान की।) प्रताप की सब सेना मुसलमान बादशाहों से युद्ध करते-करते नष्ट हो गई और प्रताप अकेले निस्सहाय हो गये। उस समय हिन्दूपति महाराणा प्रताप की रक्षा किसने की? उन अछूत धनुर्धारी भीलों ने ही अपने शरीरो के शवों का परकोटा बनाकर महाराणा प्रताप की रक्षा की तदनन्तर छत्रपति शिवाजी के प्राणों की रक्षा करने वाले अछूत ही थे। तत्पश्चात् गुरु तेगबहादुर का सिर जब शत्रु की तलवार से कटकर पृथ्वी पर गिरा तब सिर को उठाकर यत्नपूर्वक बांस की टोकरी में रखकर गुरु गोविन्द सिंह के पास उस मस्तक को ले-जाने वाला और भक्ति पूर्वक गुरु के सिर को उन (गोविन्दसिंह) के चरणों मे अर्पण करने वाला भंगी ही था। अछूतो की ऐसी दशा इतिहास प्रसिद्ध सेवायें हैं। आज हम उन सेवाओं का बदला किस तरह दे रहे हैं?

राम ने पिता आज्ञा पालन करने के लिए चित्रकूट छोडकर आगे भीषण वन में प्रवेश किया। राम को पिता की आज्ञा थी कि चौदह वर्ष वन मे तपश्चर्या करना राम के साथ स्वेच्छा पूर्वक वनवास स्वीकार करने वाले लक्ष्मण की प्रतिज्ञा थी—चौदह वर्ष बड़े भाई की सेवा करना राम की छाया-सदृश साथ रहने वाली सीता ने व्रत लिया—राम के चरणो का अनुसरण कर राम के साथ सब प्रकार की कठोर तपश्चर्या करूंगी। राम, लक्ष्मण और जानकी, इन तीनो ने उक्त निश्चय किस दृढ़ता पूर्वक पाला, इसके अनेक उदाहरण रामायण मे मिलते हैं। उसमें सबसे ज्वलन्त उदाहरण राम-सीता के अखण्ड ब्रह्मचर्य का है।

रावण ने सीता का हरण किया। राम और लक्ष्मण सीता की खोज में भटकते-भटकते वानरों की किष्किन्धा नगरी के समीप पहुचे। सीता को पीठ पर लादकर जब रावण आकाश-मार्ग से लंका की ओर जाते हुए किष्किन्धा के पास से निकला तब वानरो के झुण्ड मे सीता ने अपने कुछ गहने गिरा दिये। उनमें हाथ के (बाजूबन्द), कान के कुण्डल और पैरो के नूपुर (बिछुए) थे। वानर राजा सुग्रीव ने उन आभूषणो को राम के चरणों में रख दिया। रामचन्द्र जी उनमें से एक भूषण को भी पहचान न सके। तब लक्ष्मण ने उन भूषणों को देखना आरम्भ किया और कहा।

नाहं जानामि केयूरे नाहं जानामि कुण्डले।
नूपुरे त्वाभिजानामि नित्यं पादाभिवन्दनात्॥
(वाल्मीकीय रामायण, किष्किन्धा काण्ड 6/21,22)

अर्थात्—मैं बाजूबन्द और कुण्डलों को नहीं पहचानता, हां नूपुरो (बिछुओं) को अच्छी प्रकार जानता हू, नित्य (सीता माता) के पैरो की वन्दना करने के कारण, ये नूपुर सीता माता के ही हैं।

लक्ष्मण सीता जी के एकमात्र नूपुर (बिछुए) ही पहचान सके और राम किसी भी अलकार को नहीं पहचान सके। इससे विदित होता है कि वनवास की चौदह वर्ष की अवधि मे राम ने सीता की देह पर दृष्टि तक न डाली थी। इस अखण्ड ब्रह्मचर्य के प्रताप से ही राम ने राक्षसों के समूह का सहार किया और रावण के सिर को नीचे गिराने का बल प्राप्त किया। आज भी ऐसा ब्रह्मचारी पैदा होवे तो ससार उसके बल से चकित हो उठे परन्तु आज ऐसा ब्रह्मचारी कहा है?

सीता जी अशोक वाटिका मे अकेली रहती थी। रावण और उसके अनुसार प्रतिदिन सीता के पास जाकर अनेक प्रकार की धमकियां दिया करते थे। परन्तु सीता जी आंख तक ऊपर नही उठाती थी। यदि सती सीता आंख उठा कर भी देख लेती तो राक्षस जलकर भस्म हो सकते थे। फिर भी सीता ऐसा क्यों नही करती थी?

सीता जी को ढूंढने के लिए हनुमान जी समुद्र लांघकर लंका आये और कूदकते-फुदते अशोक वन मे जा पहुचे। वहां देखा कि सीता जी राक्षसियो का सताना चुपचाप सहन कर रही हैं। यह

(शेष पृष्ठ 10 पर)

रघुकुल-भूषण श्रीराम

—भगवानदेव 'चैतन्य' एम ए. साहित्यालंकार

मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम भारतीय संस्कृति के आज्वल्यमान नक्षत्र हैं। बाल्मीकि रामायण में श्रीराम का उज्वल चरित्र वर्णित है। बाल्मीकि के राम सभाव्य और इस ससार के वास्तविक चरित्र लगते हैं मगर कालान्तर मे कई कवियों एव लेखकों ने उनके जीवन चरित्र मनमाने ढग मे लिख कर ऐसे गल्प जोड दिए कि श्रीराम एक काल्पनिक चरित्र लगने लगे। तुलसीदास को ही लें—इसमें कोई सन्देह नही कि एक काव्य के रूप मे उनके द्वारा रचित रामचरितमानस एक उत्कृष्ट ग्रंथ है। मगर जहाँ तक राम के वास्तविक चरित्र-चित्रण का प्रश्न है, तुलसीदास ने तत्कालीन समाज के आधार पर ऐसी-ऐसी बातों की कल्पनायें कर दी कि रामचन्द्र एक काल्पनिक चरित्र लगने लगते हैं। घोर पौराणिकता के उस युग में अवतारवाद, शाप, वरदान आदि उनके उज्वल चरित्र के साथ जोड दिए कि रामचन्द्र इस लोक के मानव ही नही रहे। जिस प्रकार श्रीकृष्ण जैसे महान् योगी के साथ इस पौराणिक वृत्ति के कवियो और लेखकों ने अपने-अपने मन की दूषित भावनाओ को आरोपित करके उन्हें लम्पट और कामी बनाकर रख दिया उसी प्रकार श्रीराम जैसे आदर्श सर्वगुण सम्पन्न चरित्र को आम जनता से बहुत दूर ले जाकर पटक दिया। जहाँ आश्चर्यजनक घटनाओं और रहस्यमय कार्यकलापों का झूम-झूम कर और वाह-वाह करके मनोरन्जन तो किया जा सके मगर उन आदर्शों को अपनाने में असमर्थता प्रकट की जाए, क्योंकि उन जैसे तो वही हो सकते थे। वे साक्षात् परमात्मा के अवतार जो थे। राम ही नहीं रामायण के अन्य पात्रों के साथ भी इन कवियों, लेखको तथा अन्धभक्तो द्वारा बडा भारी अन्याय किया गया है। चाहे वह दशरथ हो, कौशल्या, कैकैयी, सुमित्रा, सीता, लक्ष्मण, भरत, बाली, सुग्रीव हनुमान या रावण और विभीषण ही क्यो न हो।

राम को सब कुछ मालूम था वे तो मात्र लीला कर रहे थे इससे बडा उपहास और भला क्या होगा। रावण को भी सब कुछ पता था तथा उसने तो राम के हाथो मरने के लिए ही सीता को चुराया था। उसे शाप था कि वह सीता को नही छू सकता। इन कपोल कल्पित बातों से राम, सीता और रावण के चरित्रो को शून्य बना दिया गया। वीर हनुमान, बाली, सुग्रीव, तथा तारा आदि पात्रों की भी वह दुर्गति की है कि इतिहास इन्हें कभी माफ नहीं कर सकता। इन योग्य, ज्ञानवान वीरों को मात्र उछलने-कूदने वाले बन्दर कहना कहा तक उचित है? सम्पाति और जटायु जैसे तपस्वियों को गिद्ध जैसा एक पक्षी वर्णित करना कहा तक न्यायसगत है? अपने पूर्वजों के आदर्श जीवन को मलिन करने वाले ये कवि और लेखक तो दोषी हैं ही मगर उनसे भी बडे दोषी हैं वे अन्धभक्त हैं जो इन बातों पर विश्वास करके पाप के भागी बनते हैं। इस मनोरंजन प्रधान युग ने रामलीलाओं के रूप में राम और रामायण के अन्य पात्रों के साथ कितना बडा छल किया है और अपने इतिहास तथा महापुरुषों को कैसे-कैसे कलंकित किया है यह शहर-शहर और गांव-गांव में जाकर देखा जा सकता है। तरह-तरह के नए-नए नाटक लगाकर और लोगों का भरपूर मनोरंजन करने के लिए ऐसे-ऐसे भौंडे प्रदर्शन किए जाते हैं कि बुद्धिवादी और सभ्य लोगों को मात्र माथा पीटकर रह जाना पड़ता है।

आजकल टी० वी० पर रामायण के नाम पर मनोरंजन से भरपूर सीरियल दिखाकर भारतीय जनता को मोहित किया जा रहा है। इस सीरियल के लिए बच्चा-बच्चा पागल हुआ फिरता है। इसका एक पक्ष तो बडा उज्वल है कि अपने महापुरुषों के प्रति आज भी लोगों मे इतना अधिक आकर्षण है। राम और रामायण के अन्य पात्रों से शिक्षा ग्रहण करना बडे सौभाग्य की बात है। मगर यदि केवल अनहोनी, आश्चर्यचकित करने वाली मनोरंजन से भरपूर घटनाएं ही दिखाने का चाव है तो इससे इस राष्ट्र या किसी व्यक्ति का कुछ भी भला होने वाला नहीं। टी० वी० के माध्यम से रामायण के सभी पात्रों को सही ढंग से प्रस्तुत करने का यह बड़ा ही अच्छा अवसर था, मगर इसमें तो मनोरंजन के दृष्टिकोण को सामने रखकर और भी इधर-उधर की सामग्री मिला दी गई है। वही शाप, वरदान और अवतार आदि की कल्पनाएं। मनुष्य का आदमी के रूप में आकर खड़े हो जाना, राम द्वारा शिवलिंग की स्थापना करना आदि एक नहीं सैंकड़ों काल्पनिक कथाओं से लैस "रामायण" का राम होते-होते एक अजूबा मात्र बनकर रह है। इतिहास की रक्षा करने के स्थान पर उसे परिवर्तित करके दूषित कर देना एक ऐसा अपराध है जिसका कोई प्रायश्चित नहीं। क्योंकि आने वाली पीढ़ियां उस पाप के बोझ तले दबकर समाप्त हो जाती हैं। मगर आज वह पाप हर कोई कर रहा है। टी० वी० के इस रामायण में सही इतिहास के परिप्रेक्ष्य में राम और अन्य पात्रों को दिखा कर बड़ा भारी उपकार किया जा सकता था मगर इसमें भी हनुमान, सुग्रीव, बाली आदि को बड़ी-बड़ी पूंछे लगाकर दिखाया जा रहा है मगर उनकी पत्नियों के पूंछ नहीं। यह कैसी करामात है कि बन्दरों के तो पूंछ हैं मगर बन्दरियों के नही? यह प्रश्न हर बड़े बूढ़े के जहन में दृढ़ता के साथ कुलबुला रहा है। मगर आत्मा की आवाज को दबाकर सब देखते और दिखाते चले जा रहे हैं। इस सच्चाई से भी आंखें बन्द की जा रही हैं कि ये असम्भाव्य घटनाएं धीरे-धीरे राम के अस्तित्व को ही समाप्त कर देंगी तथा राम और रामायण एक काल्पनिक मायामात्र घोषित कर दी जाएगी।

वास्तव में रामायण बाल्मीकि द्वारा रचित एक जीवन चरित है। इसके नायक श्री राम किसी कल्पना लोक के पात्र नही बल्कि "रघुकुल" के एक महाराजा थे। आदिकालीन मनु के सात पुत्र थे जिनकी एक शाखा में भागीरथ, अंशुमान, दिलीप और रघु आदि हुए और दूसरी शाखा में सत्यवादी हरिश्चन्द्र आदि। वैवस्वत मनु के पश्चात् इस सूर्यवंश की 39 पीढ़ियों के पश्चात् श्री राम ने अयोध्या में जन्म लिया। उनपर अवतारवाद आदि आरोपित करना एक कल्पनामात्र है वे एक आदर्श पुत्र, पति, सखा, भ्राता थे। वीर, धीर और सर्वमर्यादाओं से विभूषित थे। मूलरूप में वे एक नीतिवान, आदर्शवादी दयालु, न्यायकारी और कुशल महाराजा थे। बाकी समस्त गुण तो उनके पीछे-पीछे अनुसरण करते थे। वे मात्र धार्मिक नेता या महापुरुष नहीं थे बल्कि धर्म तो उनके जीवन के एक-एक कार्यकलाप से स्वयं झलकता था। वैदिक धर्म से विभूषित आर्य पुरुष श्री राम इतने कुशल राजा थे कि उनके राज्य को एक आदर्श राज्य माना गया है। इनके राज्य में हमें महाराज अश्वपति के राज्य की झलक मिलती है जिन्होंने घोषणा की थी—

(शेष पृष्ठ 11 पर)

राम और सीता

—स्वामी विवेकानन्द—

(1) रामायण और महाभारत ये दोनों ऐसे विश्वकोष हैं जिनमें पुरातन आर्य जीवन और मनीषा को चित्रित करने वाली उस आदर्श सभ्यता का वर्णन है जिसकी मनुष्य जाति केवल आकांक्षा ही कर सकती है।

(2) राम और सीता भारतीय राष्ट्र के आदर्श हैं। सीता में भारत का आदर्श बोलता है। प्रश्न यह नहीं है कि सीता कभी जीवित रही या नहीं, उसकी कथा इतिहास-सम्मत है या नहीं, हम यह जानते हैं कि भारतीय नारी का आदर्श वही है। ऐसी कोई पुराण-कथा नहीं है जिसने समग्र जाति को इस प्रकार प्रभावित किया हो, जो इस प्रकार उसके जीवन में घर कर गई हो, जो जाति के रुधिर के कण-कण में घुल-मिल गई हो, जैसा कि सीता का आदर्श है। भारत में जो भी कुछ पवित्र है, शुभ है, उदात्त है—उस सबका प्रतीक है सीता, नारी के नारीत्व का आदर्श।

(3) मैं जानता हू कि जो जाति सीता को जन्म दे सकती है—यदि वह उसका स्वप्न भी ले सके—तो उस जाति के मन में नारी के प्रति इतना आदर होगा जिसकी तुलना ससार में कहीं नहीं हो सकती।

(4) और सीता के बारे में क्या कहा जाए? सारे ससार का जितना प्राचीन साहित्य है उसे उथल डालो, और मैं कहूगा कि सारे ससार के भविष्य में लिखे जाने वाले साहित्य को भी टटोल लेना, तुम्हें सीता जैसा चरित्र नहीं मिलेगा। वह अनुपम है, अद्वितीय, वह चरित्र एक बार ही सदा के लिए चित्रित कर दिया गया। वह असली भारतीय नारी का सही प्रतीक है। सीता के एक जीवन से जितने आदर्शों की सृष्टि हुई है वही परिपूर्ण नारीत्व का भारतीय आदर्श है। इसी लिए सारे आर्यावर्त मे एक छोर से दूसरे छोर तक आबाल वृद्ध नर-नारी उसकी हजारों वर्षों से पूजा करते आए हैं। साक्षात् पवित्रता से भी अधिक पवित्र, धैर्य की निधि, और सब प्रकार के कष्टों से प्रताडित इस गरिमामयी सीता को भारत के जन-जन के मन के सिंहासन से कोई अपदस्थ नही कर सकता। जिसने मुख से एक शब्द निकाले बिना इतने कष्ट सहे, सतीत्व की प्रतिमा और पतिव्रता नारी, शुभ आचरण की आदर्श, यह महिमामयी सीता सदा हमारे राष्ट्र के लिए पूजित रहेगी। हमारा सारा इतिहास और सारे पुराण नष्ट हो सकते हैं, हमारे वेद तक भी हमसे छिन सकते हैं और संस्कृत भाषा भी सदा के लिए लुप्त हो सकती है, परन्तु जब तक पांच हिन्दू भी जीवित रहेंगे—भले ही वे वार्तालाप में कितने ही अशिष्ट क्यों न हो जाए—भगवती सीता की कथा विद्यमान रहेगी। मेरे शब्दों पर ध्यान दीजिए—सीता हमारी जाति की नस-नस में रम गई है। वह प्रत्येक हिन्दू नर और नारी के रक्त में विद्यमान है; हम सब माता सीता की ही सन्तान हैं।

रामायण—कालीन जन-जातियां

—डा. शान्ति कुमार नानूराम व्यास—

यदि रामायण-काल का कोई व्यक्ति किसी तरह आज के युग में चला आवे तो वह यह देखकर चकित हो जाएगा कि इस देश में कितनी तरह के लोग रहते हैं—भिन्न भिन्न भाषाएं बोलने वाले और भिन्न-भिन्न धर्मों के मानने वाले। उसका चकित होना ठीक ही होगा क्योंकि,उसके युग में सामान्यतया केवल दो ही तरह के जन-गण थे—आर्य और आर्येतर।

आर्यों ने मानव-जीवन के वर्ण और आश्रम व्यवस्था के हिसाब से चार विभाग बना रखे थे और कर्मकाण्ड के रूप में वे यज्ञ-याग को महत्व देते थे। राजनीतिक दृष्टि से सिन्धु-गंगा मैदान में एक छत्र आधिपत्य था, जबकि दक्षिण में—जिसमें जंगलों की बहुतायत थी आर्यों से इतर जन-गण रहते थे।

आर्यों से 'इतर' कहने का अर्थ यह नहीं कि उन्हें 'अनार्य' कहा जाए, जैसा कि पाश्चात्य लेखक कहते हैं। केवल इतना ही अर्थ है कि विचारों, रीति-रिवाजों, और रहन-सहन में वे पूरी तरह आर्यों जैसे नहीं थे, उनसे कुछ भिन्न थे।—स०] सांस्कृतिक दृष्टि से औरों से श्रेष्ठ होने के कारण धीरे धीरे आर्यों का सांस्कृतिक और राजनीतिक विस्तार होता जा रहा था। अन्य जन-गण भी उनकी संस्कृति को अपनाते जा रहे थे। राजनीतिक दृष्टि से कुछ जन-गण आर्यों के सहयोगी थे, कुछ अर्ध सहयोगी, कुछसर्वथा विरोधी। यद्यपि दक्षिणका अधिकांश भाग भी आर्य सभ्यता को अपनाता जा रहा था किन्तु भारत के अन्तिम सिरे के पास विद्यमान लंका के लोग आर्य-विरोधी थे, वे आर्य राज्य के विस्तार के बजाय अपने राज्य का विस्तार करना चाहते थे। आर्य लोग उनको राक्षस कहते थे। रामायण में राम का अभियान इन्हीं राक्षसो के विरुद्ध था। रामायण के अनुसार वे राक्षस लोग आर्यो की बस्तियो को उजाड़ते थे, ऋषियों के आश्रमो पर घात लगा कर हमला करते थे और उनके यज्ञों मे विघ्न डालते थे।

भारत के राजनीतिक इतिहास में राक्षसो का महत्वपूर्ण भाग है। राक्षस भौतिक सभ्यता की दृष्टि से समृद्ध थे, किन्तु विलास प्रिय, और इन्द्रियों के दास थे। खानपान और काम सम्बन्धों में वे बिल्कुल बेलगाम थे। निष्ठुर इतने कि पशुओं के अलावा मनुष्यों की भी बलि देने से नहीं कतराते थे। मद्य और मांस का सेवन उनमे आम था।

वानर और निषाद

राक्षसो के अलावा दूसरा जनगण वानरों का था। वे आर्यों के सहयोगी थे और धीरे-धीरे उनके विचारों और कर्म-काण्ड को अपनाते जा रहे थे। यद्यपि उनकी भाषा, रंग और शक्ल-सूरत में कुछ अन्तर था, किन्तु आर्य सभ्यता को अपनाने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं थी। इसीलिये वे राक्षस-विरोधी अभियान में राम के सहयोगी बने। बाली और सुग्रीव उनके राजा थे। वे बन्दर नहीं थे परन्तु वन में रहने के कारण वानर कहलाते थे। सम्भवतः पूंछ उनका जातीय चिन्ह रहा हो। काम सबधों में भी वे आर्यों से भिन्न थे।

राक्षसों और वानरों के अलावा अन्य जनगणों में निषाद, गृध्र, शबर, यक्ष, नाग और गन्धर्वों का भी रामायण में उल्लेख मिलता है। निषाद कोसल और गंगा की सीमाओ के बीच में रहते थे। शृंगवेर पुर उनकी राजधानी थी और गुह उनका सरदार था। वे धनुर्विद्या में निपुण थे और चित्रकूट जाते समय भरत से लोहा लेने को भी तय्यार हो गए थे। वे अच्छे मल्लाह थे और अच्छी नावें बनाते थे। राम जब गंगा पार करने आये, तब गुह ने उनकी सहायता की थी रामायण में राम द्वारा उसका सप्रेम आलिंगन किये जाने का वर्णन है। भरत ने भी गुह द्वारा दी गई सब प्रकार की भोजन-सामग्री स्वीकार की थी। इससे स्पष्ट होता है कि आर्यों को इन लोगों द्वारा दिया भोजन ग्रहण करने और उन्हें छूने में कोई आपत्ति नही थी। कोसल राज्य के निकटवर्ती होने के कारण वे आर्यों की सभ्यता से काफी प्रभावित थे। यद्यपि यह जनगण सारे भारत में ही छाया हुआ था, परन्तु धीरे-2 यह आर्य सभ्यता में विलीन होता गया, यहां तक कि अन्त में जो लोग विलीन होने से बच गये वे बस्तियो के बाहरी छोर पर ही स्थान पा सके।

गृध्र और शबर

कुछ वन में रहने वाले जनगण शायद अपना स्थान परिवर्तन करते रहने के कारण गृध्र या सुपर्ण पक्षी के नाम भी सबोधित होने लगे। रामायण काल में ये गृध्र पश्चिमी घाट की ओर रहते थे। सम्पाति और जटायु नामक सगे भाई उनके शासक थे। दोनों भाइयों के मरने के पश्चात् इस जनगण का राजनैतिक अस्तित्व भी समाप्त प्राय हो गया। रामायण में इस जनगण का कोई विस्तृत विवरण उपलब्ध नही है। दशरथ का मित्र होने के कारण जटायु पचवटी में राम और लक्ष्मण की अनुपस्थिति में सीता की देखभाल करता था। जब रावण सीता का अपहरण करके ले जा रहा था। तब रावण के साथ युद्ध करते हुए वह बुरी तरह घायल हो गया था और राम ने अपने निकट रिश्तेदार की तरह उसका दाह कर्म किया था। गृध्रों ने काफी हद तक आर्यों के रीति-रिवाज अपना लिये थे। यह इस बात से स्पष्ट है कि सम्पाति ने अपने मृत भाई का जलाञ्जलि-तर्पण किया था।

राम और लक्ष्मण जब सीता की खोज में घूम रहे थे तब वे शबरी की कुटिया मे भी पहुंचे थे। इससे स्पष्ट होता है कि वह शबर नामक जनगण की थी। यह जनगण पम्पा सरोवर के पास रहता था। इन लोगों का मुख्य व्यवसाय शिकार करना और जंगली कन्द-मूल और बेर आदि फल चुनना था। ऐसा समझा जाता है कि अब ये लोग कुर्ग (कर्नाटक) की पहाड़ियो में रहते हैं। शबरी की सारी कथा इस बात का उदाहरण है कि एक आर्येतर जनगण किस प्रकार आर्य-संस्कृति से प्रभावित होता गया। शबरी श्रमणी के रूप में रहती थी और सन्यासिनी की तरह तपस्या पूर्ण जीवन व्यतीत करती थी, इसीलिये आर्य राज्य के राजकुमार का दर्शन पाकर उसने अपने आपको धन्य समझा।

यक्ष और नाग

यक्ष अपनी संख्या की दृष्टि से भले ही नगण्य हों, पर वे अपनी सुन्दरता एवं शारीरिक शक्ति के लिये प्रसिद्ध थे। रामायण में राक्षसों के साथ उनके वैवाहिक संबधों का भी उल्लेख है। यक्षाधिपति कुबेर रावण का सौतेला भाई कहा जाता है। वे दोनो महर्षि विश्रवा के वंश मे थे। परन्तु रावण ने अपनी साम्राज्य-लिप्सा के कारण यक्षो से बैर मोल ले लिया। लंका का पूर्व अधिपति कुबेर ही था। परन्तु रावण से पराजित होकर उसे लंका छोड़नी पडी। शुरू मे ये दोनों जातियां शायद दक्षिण भारत में ही रहती थीं पर धीरे-2 यक्षो के भाई भतीजों ने ही उन्हें उत्तर की अर्ध देवता की कोटि में रखा गया है।

यक्षो के साथ एक दूसरी समकालीन जन जाति नागो की थी जिसका जातीय चिन्ह सर्प था। एक समय नाग लंका और मालाबार के प्रदेशों पर शासन करते थे। नागों का सम्बन्ध समुद्र से भी रहा है। वे समुद्रचारी थे। रामायण में सुरसा को समुद्र में रहने वाली नाग कन्या ही कहा गया है। नाग कन्याएं भी, अपने सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध थीं, और रावण ने कई नाग कन्याओ का अपहरण भी किया था। रावण ने नागों की राजधानी भोगवती पर हमला किया और उनके वासुकी तथा तक्षक जैसे प्रसिद्ध सरदारो पराजित किया था।

असुर देव और गन्धर्व

जहां तक असुरों का सम्बन्ध है,रामायण में राक्षसो और असुरों में भेद किया गया है जबकि बाद के पौराणिक साहित्य में उन्हें एक ही माना गया है। असुर, दिति की सन्तान थे और देव अदिति की। असुर आर्यों के विरोधी थे और मांस भक्षी थे। उनके सरदार वातापि को अगस्त्य ऋषि ने मार दिया था। दण्डकारण्य के ऋषियों ने राम से असुरो के संहार की प्रार्थना की थी। इन असुरो को पाताल निवासी बताया गया है और वे देवों और राक्षसों दोनों के शत्रु थे। महाराज दशरथ ने दण्डक वन में ही इन असुरों के विरुद्ध युद्ध किया था और उसी स्थान पर दशरथ ने अपने प्राण बचाने के लिए कैकेयी को दो वर देने का वचन दिया था। गृधो के सरदार सम्पाति ने देवो और असुरों के मध्य युद्ध भी देखा था। जब हनुमान से मार खाकर रावण बेहोश हो गया तब असुर बड़े प्रसन्न हुए थे।

रामायण में जिन अन्य जन-जातियों का उल्लेख हुआ है उनमें देव, गन्धर्व, चारण, सिद्ध, किन्नर और अप्सरायें भी शामिल हैं। किसी स्मरणीय घटना को देखने के लिये बड़ी भीड़ इकट्ठी होने पर इनकी चर्चा आमतौर पर की गई है। देवों के लिए सामान्यतया यह समझा जाता है कि वे स्वर्ग के देवताओं के साथ वहीं रहते हैं। परन्तु रामायण मे वे पृथिवी पर भी निवास करते और पृथ्वी लोक की कन्याओ से प्रेम करते भी दिखाये गये हैं। आर्यों के यज्ञों में शाकल्य आदि के रूप में उनका हिस्सा निर्धारित था। राक्षस उनके कट्टर दुश्मन थे, और देव लोग हमेशा यह प्रयत्न करते रहते थे कि किसी प्रकार राक्षसों का नाश हो।

गन्धर्वों को दिव्य गायक माना गया है। ऐसी कोई सुखद घटना कठिनाई से मिलेगी, जिसमे गन्धर्वों के गान, अप्सराओं के नृत्य और आकाश से देवताओं द्वारा पुष्पवृष्टि का वर्णन न हो। किन्नरो को प्राय स्वर्ण, अश्वमुख और प्रेम-लीलाओं मे निमग्न चित्रित किया किया गया है। सिद्धो और चारणों को प्राय गगनचारी और शूरवीरो की प्रशंसा करते दिखाया गया है।

अप्सराएं कौन ?

रामायण मे स्थान-स्थान पर अप्सराओं का भी उल्लेख है। वे वास्तव मे दरबारी नर्तकियां थीं और अपने असाधारण सौन्दर्य तथा नृत्यकला के कारण देवो के समकक्ष मानी जाती थीं। पौराणिक आख्यानो के अनुसार उन्हें समुद्रमथन के समय निकली माना गया है [कहीं समुद्रपारीय देशों की अंगनाएं तो नहीं थीं !—स०], परन्तु एक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि इन अप्सराओं को देवों और असुरो में से कोई भी पत्नी के रूप में स्वीकार करने को तैयार नहीं था। इसलिए उन्हें 'साधारणत' या सवसुलभ कहा गया है।

(शेष पृष्ठ 11 पर)

पत्रों के दर्पण में

ये घातक सरकारी पाठ्य पुस्तकें

यह आश्चर्य एव दुख का विषय है कि भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय के अन्तर्गत राष्ट्रीय केन्द्रीय शैक्षणिक शोध एव प्रशिक्षण सस्थान नई दिल्ली द्वारा निर्मित पाठय पुस्तको मे छठी कक्षा के बच्चो को यह पढ़ाया जाता है कि आर्य लोग अपने अतिथियो को गोमास भेंट करते थे। इसी प्रकार श्रीमती रोमिला थापर रचित इतिहास पुस्तक ऐनसिमेट इण्डिया के हिन्दी सस्करण प्राचीन भारत में लिखा है 'वास्तव में विशिष्ट अतिथियो को गोमांस का परोसा जाना सम्मान सूचक समझा जाता था।' मगर इस पुस्तक के जुलाई 1987 के सस्करणो के कोष्ठक मे यह लिख दिया गया 'यद्यपि बाद की सदियों मे ब्राह्मणो के लिये इसका सेवन वर्जित माना गया।' वैसे तो इस पाठ्य पुस्तक मे इतिहास को तोड मरोडकर लिखने के कई अन्य विषय भी हैं मगर आर्यों द्वारा 'गोमास परोसना' बहुत बडा असत्य है।

वेदों में गाय को अघ्न्या' अर्थात् अहन्तव्य, न मारने योग्य कहा है। यह शब्द ऋग्वेद मे 20 बार, यजुर्वेद में 5 बार, अथर्ववेद में 6 बार, और सामवेद में 2 बार, इस प्रकार 33 बार आया है। निरुक्त 11-43-3 अनुसार अघ्न्य का अर्थ अहन्तव्य व न मारने योग्य है। इसके अलावा गो उभयलिङ्ग में 'व्यवहार होता है। यानी गाय और बैल दोनों के लिए।

वह सुरभि, कामधेनु पूज्या विश्वमाता तथा विश्व की आयु है।—'गावो विश्वस्य मातर' का घोष सिद्ध करता है कि गाय हमारी माता है। भला मा को भी कोई काटकर अतिथि सत्कार करेगा ? यह सिर्फ रोमिला थापर को ही अपनी पूर्व निर्मित धारणा और अज्ञानता है। इस प्रकार का कोई व्यवहार वेद या वेदानुकूल शास्त्रों मे नहीं हैं। यदि उनको ऐसा कोई उल्लेख किसी वेद मत्र या किसी प्रामाणिक पुस्तक मे मिले तो सिद्ध करें। अन्यथा उन्हें इस वाक्य को पुस्तक से निकाल देना चाहिये। झूठा इतिहास पढ़ाना, लिखना और प्रचारित करना आचार्य पद को शोभा नहीं देता और न इससे छठी कक्षा के बच्चों पर अच्छे सस्कार ही पडते हैं।

इसी प्रकार इस पुस्तक के पृष्ठ 39 पर लिखा है—एक वर्ग ऐसा भी था जो शूद्र कहलाता था। यह वर्ग दस्युओं और उन आर्यों से बना था जिन्हें नीच समझा जाता था।" यह निष्कर्ष भी वेद विरुद्ध, अप्रासगिक एव पूर्णतया असत्य है। वेद और वैदिक वाङ्मय से परिचित कोई भी व्यक्ति इस प्रकार का अनर्गल प्रलाप कर भारतीय जनमानस में घृणा व द्वेष का वमन नहीं करेगा। इस प्रकार की पाठ्य पुस्तकें तो अलगाववाद व घृणा फैलाने वाली है। कम से कम सरकार को ऐसे घृणास्पद विचार नहीं फैलाने चाहिए। 'व्यवसाय धर्मे' विषय के अन्तर्गत पृष्ठ 39 पर ही लिखा है "एक सूक्त में वेदपाठी विद्यार्थियों का बडा दिलचस्प वर्णन है। लिखा है कि शिष्य जब गुरु के पाठ दुहराते हैं तो ऐसा लगता है मानो वर्षा के आगमन के पहले मेढ़क टर्र-टर्र कर रहे हों।" यह कौन-सा वेद सूक्त है ? जिसे आचार्या रोमिला थापर ने वर्णन किया है शायद उन्हें सूक्त न समझने के कारण टर्र टर्र ही लगी हो। वैदिक इतिहास लिखने से पूर्व मेरा सुझाव है कि रोमिला थापर एव पुस्तक के सम्पादकीय मडल के विद्वान् (?) वैदिक सस्कृत एव वाङ्मय को समझने की योग्यता प्राप्त करें। सरकार से पुस्तक लिखने का अनुबन्ध पत्र मिल जाने का अर्थ यह तो नहीं कि शिशुओ को अराष्ट्रीय एव असत्य सस्कारों से प्रशिक्षित करें। इन दोन भागों को 'प्राचीन भारत' से तत्काल निकाल दिया जाय। अन्यथा आचार्या महोदया इनकी सत्यता स्थापित करें। लाखो बच्चों को बाईस साल से गलत इतिहास पढ़ाने की सजा भारत सरकार को उन्हें जरूर देनी चाहिये। यदि सरकार ने कुछ नही किया तो विवश होकर गौ भक्त जनता इस विषय पर कुछ करने को बाध्य हो जायेगी।

—डा॰ कृष्ण वल्लभ पालिवाल, राजौरी गार्डन नई दिल्ली

कम्युनिज्म के चश्मे का असर

'तमस' सीरियल मे मानव मात्र के कल्याणार्थ अग्रसर सामाजिक जागरण की अग्रदूत 'आर्य समाज' को साम्प्रदायिक दगो का दोषी ठहराना जहा सही इतिहास की हत्या करना है वहां आर्य समाज को बदनाम करने की खुली साजिश है। लेखक को देश विभाजन की जिम्मेदार, डायरेक्ट ऐक्शन करने वाली मुस्लिम लीग की गतिविधियों का अध्ययन तो कर लेना चाहिए था। 'जनसत्ता' (8 2 88) में एक भेंटवार्ता मे लेखक ने स्वाधीनता सग्राम में आर्य समाज की भूमिका को नकारा है। हालांकि इतिहास साक्षी है कि 80 प्रतिशत आर्य समाजियों ने स्वातन्त्र्य समर में बढ़ चढ़कर भाग लिया। देवता स्वरूप भाई परमानन्द, लाला लाजपत राय, श्याम जी कृष्ण वर्मा, शहीदे आजम भगतसिह का समूचा परिवार, रामप्रसाद बिस्मिल सैकड़ों क्रान्तिकारी देशभक्त आर्य समाज की ही देन हैं। आर्य समाज की विचारधारा ने ही करोड़ों देशवासियो में स्वातत्र्य प्रेम की अलख जगाई थी। श्री भीष्म साहनी ने एक चिन्तन विशेष (कम्युनिस्ट विचारधारा) का चश्मा लगाने के कारण इतिहास के साथ तो खिलवाड़ की ही, वास्तविकता की भी उपेक्षा की है।

—नरेन्द्र अवस्थी, प्रधान—आर्य समाज श्री निवास पुरी नई दिल्ली-110065

'आर्य बन्धु पहल करें'

आपके सम्मानित पत्र के 28-2 88 के अक में 75 वर्षीय युवा श्री धर्म देव चक्रवर्ती का लेख "साथियो! वक्त की आवाज सुनो" पढ़ा। मेरे विचार से आर्य समाज में नया खून भरने का समय आ गया है। विभाजन पूर्व का आर्य समाज निस्सन्देह शक्तिशाली था और वही शक्ति आज के आर्य समाज में भी आवश्यक है। जन साधारण में आज जो निराशा और हतोत्साही वातावरण है उसकी एक मात्र काट आर्य समाज है। मैं ऐसे बहुत से व्यक्तियों के सम्पर्क में हू जो युवक हैं, प्रबुद्ध और अपना सब कुछ आर्य समाज पर न्योछावर करने को तैय्यार हैं। परन्तु दुर्भाग्य की बात यह है कि आर्य समाज के पास इस समय कोई भी ऐसा सकारात्मक कार्यक्रम नही है। जिस के अन्तर्गत इन उत्साही युवाओं को अपनी सजीव आकांक्षाएं पूर्ण करने का अवसर मिल सके।

क्या आर्य समाज का नेतृत्व कोई ऐसी व्यवस्था बनाने को तैय्यार है जिसमें आर्य युवक और युवतियां दहेज के भस्मासुर को भस्म करने का अवसर पा सकें। आर्य समाज ने एक कुप्रथा समाप्त की थी जब बाल विवाहों के विरुद्ध सघर्ष किया था। जब बाल विवाह थे तब दहेज नहीं था क्योंकि कोई भी वर डाक्टर, वकील, प्रोफेसर आदि नहीं था। अब बडी आयु के डाक्टर, वकील, प्रोफेसर, आदि के पिता या वे स्वय, अपना धन के रूप मे एक स्टैंडर्ड समझते हैं और अपेक्षित से कम धन वाले सम्बन्ध को स्वीकार नहीं करते। क्या आर्य समाज से यह आशा रखना तर्क सगत नहीं है कि उसके सुधारवादी कार्यक्रम से जिस कुप्रथा ने जन्म लिया है उसका उन्मूलन भी वही करे। इसके लिए आवश्यक है कि सर्वप्रथम सभी आर्य समाजियों के विवाह निहायत सादगी से कराये जायें। जिससे कि वर और कन्या के माता-पिता की आर्थिक स्थिति की समता या विषमता का आभास भी न मिल सके। बारात आर्य समाज मन्दिर से चले और कन्या पक्ष के आर्यसमाज मन्दिर में ही जाए, जहां आर्य समाज का पुरोहित संस्कार विधि के अनुसार विवाह सम्पन्न कराए। निश्चय ही आर्य समाज को कुछ विशेष करना पडेगा। मात्र भाषण व लेख पर्याप्त नहीं हैं।—राजेन्द्र पाल गुप्त, जे-2, साकेत, नई दिल्ली-110017

सार्वदेशिक सभा अपना दायित्व समझे

आर्य पत्र-पत्रिकाओं में समय-समय पर आर्य समाजोत्थान, वर्तमान परिस्थितियों में आर्य समाज का दायित्व व उसके क्रियाकलापों में गतिवेग तथा वैदिक मान्यताओं के प्रचार प्रसार में सघनता लाने सम्बन्धी सवाद, सुझाव व विचार प्रकाशित होते रहते हैं। पाठक अपेक्षा करते हैं कि उन पर उच्चस्तरीय नीति-निर्धारण हो, योजना बने और उनके क्रियान्वयन के निर्देश दिये जाय। लेकिन प्रश्न उठता है 'यह निर्देश कौन दें ? निश्चय ही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ही दे।

सरकारी विभागों में इस कार्य हेतु अलग प्रकोष्ठ होते हैं जो विभाग से सम्बन्धित सभी आलोचनात्मक या सुझावात्मक संवादों/समाचारों आदि की दैनिक कतरन मय टिप्पणी के विभागाध्यक्ष या सम्बन्धित अधीनस्थ अधिकारियों को यथोचित कार्यवाही के आदेशार्थ प्रस्तुत करते हैं तथा आदेश मिलने पर तदनुसार कार्य-करके जन सम्पर्क माध्यम से जन साधारण को अवगत कराते हैं।

'सार्वदेशिक सभा' में भी ऐसे ही प्रकोष्ठ का होना वाञ्छनीय है जहां सभी प्राप्त सुझावो का ब्यौरा तैय्यार किया जाकर यथोचित कार्यवाही हेतु निर्देश दिये जायें। एक विशिष्ट समिति का गठन किया जाय, जिसका 'आर्य समाजोत्थान एवं युवा समिति, या ऐसा ही कुछ नाम रक्खा जाय। समिति सभी प्राप्त सुझावों एवं अपनी ओर से भी प्रस्तावित कार्यक्रमों पर विचार विमर्श से नीति-निर्धारित कर निर्देश दे जिसके अनुरूप व्यावहारिक कार्यक्रम की योजनाएं बनें और इनके क्रियान्वयन हेतु प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं, आर्य समाजों व अन्य सम्बन्धित सस्थाओं को आदेश दिये जायें। क्रियान्वयन का समय-समय पर समीक्षण भी हो।—सत्यदेव आर्य एस॰ बी॰ 161 बापू नगर जयपुर-302015

महात्मा हंसराज दिवस

दिल्ली की समस्त आर्य समाजों के अधिकारियों से विनम्र प्रार्थना है कि 17 अप्रैल 88, रविवार को तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम में प्रातः 9 से 1 बजे तक मनाए जाने वाले महात्मा हंसराज दिवस समारोह में अपनी-अपनी समाजों के अधिक से अधिक सख्या में पहुंचने की कृपा करें। महात्मा हंसराज डी॰ ए॰ वी॰ आन्दोलन के सूत्रधार, श्वेत वस्त्रों में संन्यासी, त्याग एवं विनम्रता की मूर्ति अखिल शिक्षा शास्त्री तथा आर्य समाज एव देश के प्रति समर्पित व्यक्ति थे।

महाशय धर्मपाल
प्रधान

डॉ॰ शिवकुमार शास्त्री
महामन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य

डी ए वी कौलेज मलोट के खेल

डी ए वी कौलेज मलोट की 18वीं वार्षिक खेल प्रतियोगिता 12 से 14 फरवरी को सम्पन्न हुई। उद्घाटन फिरोजपुर रेंज के डी आई जी ने किया। प्रतियोगिता में उनके नए कीतिमान स्थापित हुए। एक 'श्रीमान् कौलेज' प्रतियोगिता भी हुई। बी० ए० तृतीय वर्ष की छात्रा कु० वीणा सर्वोत्तम धाविका घोषित हुई। इसी कक्षा के श्री सुखजीत सिंह सर्वोत्तम धावक घोषित किए गए। शिवराज को 'श्रीमान कौलेज' घोषित किया गया।

डी ए वी प्रबन्ध समिति के सगठन सचिव श्री दरबारी लाल जी कार्यक्रम के अध्यक्ष थे। उन्होने विजयी छात्र-छात्राओं को पारितोषिक भी दिए। इस अवसर पर अनेक मनोरजक कार्यक्रम हुए। पजाबी के प्रसिद्ध पार्श्व गायक श्री निर्मल सिद्धू की उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय रही। सभा मे समागत नागरिको ने तत्काल मुक्तहस्त से दान दिया जो श्री दरबारी लाल जी को समर्पित कर दिया गया।

बी ए द्वितीय वर्ष के छात्र देवेन्द्र सिंह ने तत्काल दरबारीलाल जी का जो चित्र बनाया जो उन्हें भेंट किया गया। स्थानीय साप्ताहिक 'कांटो मे फूल' का विशेष अक प्रकाशित हुआ, इसमें श्री दरबारी लाल के व्यक्तित्व की झलक दी गई। इस अवसर पर श्री दरबारी लाल जी ने डी ए वी सेंटिनरी ब्लौक का भी उद्घाटन किया।

—एस० सी० खोमला प्राचार्य।

स्त्री आर्य समाज द्वारा सूखा राहत

आर्य स्त्री समाज, माडल टाउन दिल्ली की ओर से उडीसा के श्री स्वामी ब्रह्मानन्द का भव्य स्वागत किया गया। तथा उडीसा के गुरुकुलो मे पढ रहे अनाथ बच्चो के लिए 3300/ रु० भेंट किये गये पर्याप्त मात्रा मे नये तथा पुराने वस्त्र भी प्रदान किये गये। स्त्री समाज कीवहनो की ओर से छात्र वृत्तिया देने का भी आश्वासन दिया गया। इसके अतिरिक्त स्वामी धर्मानन्द जी को नकद राशि तथा नए वस्त्र भेजे गये।

—मन्त्रिणी

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज एव महिला आर्यसमाज रेलवे रोड, अम्बाला नगर की दिनांक 28 2 88 को हुई विशेष बैठक में अपने वयोवृद्ध एव कमठ सदस्य लाला बाबूराम गुप्ता एडवोकेट के निधन पर शोक व्यक्त किया। वे लम्बे समय तक इस समाज के प्रधान, मन्त्री तथा अन्य महत्वपूण पदो पर कार्य करते रहे।

—मन्त्री

रोहतक में शराबबन्दी के लिए प्रदर्शन

रोहतक के आर्य कार्यकर्त्ताओं ने जिनमे गुरुकुलो के ब्रह्मचारी तथा ग्रामों से आई हुई महिलायें भी सम्मिलित थी, हरयाणा सरकार की शराब की नई नीति बिक्री सुगम करने तथा पिलाने के लिए अहाते खोलने के विरुद्ध विशाल प्रदर्शन किया। इसका नेतृत्व परोपकारिणी सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती तथा आर्य प्रतिनिधि हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने किया। दयानन्द मठ से जलूस आरम्भ होकर जिलाधीश के निवास पर पहुचा जहां ग्राम निन्दाना की महिलाओ ने अपने ग्राम से शराब का ठेका बन्द करने के लिए धरना दे रखा था। प्रो० शेरसिंह ने जिला रोहतक के प्रमुख आर्य नेताओ के हस्ताक्षरों से युक्त ज्ञापन जिलाधीश द्वारा हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री देवीलाल को दिया, जिसमे हरयाणा सरकार से माग की गई है कि सन 1962 के कानून के अनुसार उन ग्रामो मे शराब के ठेको की नीलामी न की जाये जिन पचायतो ने सितम्बर मास तक शराबबन्दी के प्रस्ताव भेज रखे हैं। यदि सरकार ने इस कानून की अवहेलना करके ग्रामीण जनता की इच्छाओं के विरुद्ध ठेको की नीलामी की तो उन्हे रद्द कराने के लिए धरने दिये जायेंगे।

आर्य कार्यकर्त्ताओ का जलूस आकाशवाणी कार्यालय पर भी पहुचा और वहा साग की गन्दी रागनियो के प्रसारण के विरुद्ध नारे लगाये। जलूस की समाप्ति पर दयानन्द मठ के पास गोहाना मार्ग पर स्थित मास की दुकानो के विरुद्ध भी नारे लगाये। शान्तिपूर्वक निकाले गये इस प्रदशन की सर्वत्र सराहना की गई।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

नि शुल्क नेत्र शिविर

वन्दना विशाल गुप्ता चैरिटेबल ट्रस्ट, करनाल व दयानन्द सेवा सदन रजि० करनाल तथा रोटरी क्लब करनाल की ओर से मुफ्त नेत्र शिविर 12 मार्च, 1988 को दयानन्द मिशन धर्मार्थ हस्पताल हरिजन बस्ती सदर करनाल के विशाल प्रांगण मे लगाया गया। इस कैम्प का उद्घाटन आदरणीय सेठ लक्ष्मन दास जी बजाज, एम० एल० ए० प्रधान, नगर पालिका तथा इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट करनाल, के करकमलो द्वारा हुआ, इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सुरेन्द्र कुमार गुप्ता, प्रधान, रोटरी क्लब करनाल ने की। नेत्र विशेषज्ञ डा० जुगल किशोर पसरीचा एम० एस०, मुख्य सर्जन थे। मरीजो के लिए भोजन, दवाइया आप्रेशन और ऐनके भी मुफ्त दी गई।

रामायण की रहस्यमय

(पृष्ठ 5 का शेष)

देखकर हनुमान जी सोचने लगे कि क्षण-मात्र मे त्रैलोक्य को भस्म करने की सामर्थ्य रखने वाली सीता माता इतना त्रास क्यो सहन करती हैं? उन्होने सीता जी के पास से राक्षसियो को भगाकर अपनी समस्या का उत्तर मागा। सीता जी ने उत्तर दिया—

पुत्र हनुमान! मैं अपने पातिव्रत्य के प्रभाव से अपने सतीत्व के तेज से रावण को भस्म कर सकती हू, किन्तु रामचन्द्र जी की अनुपस्थिति मे मैं अपना यह पुण्य-सचय खर्च करना नहीं चाहती। रामचन्द्र जी जब तक मेरे साथ न होगे तब तक अशोक वन मे रहकर उनके नाम की माला फेरती रहूगी।

हनुमान जी ने दर्शन करके और उनके ऊपर राक्षसो द्वारा किये गए अत्याचारो को देखकर सीता जी को अशोक वन मे छोडकर वापस जाना ठीक न समझा। उन्होने सीता जी के चरणो में सिर नवाकर प्रार्थना की—हे मात! आपका दुःख मुझसे सहा नहीं जाता। आपको अकेला छोडकर लौटने को मेरा मन नही चाहता। इसलिए आपको मैं पीठ पर बैठाकर रामचन्द्र जी के पास ले जाना चाहता हू।

सीता जी को ऐसी ब्रह्मचर्य की भावना से और तपश्चर्या के प्रभाव से ही लव और कुश जैसे वीर शिरोमणि पुत्रो की प्राप्ति हो सकी। आज सीता जी के आदर्शो का एक सहस्रांश भी भारत की महिलाओं के आचरण में दृष्टिगोचर नहीं होता। भारत की देवियों के जीवन मे सीता जी का ब्रह्मचर्य नहीं है, सीता जी का तेज नही है, सीता जी की तपश्चर्या नही है। इसलिए आज भारत मे लवकुश के दर्शन अशक्य हैं। इसलिए भारत की आज यह दुर्दशा है।

रावण की मृत्यु हुई। लका मे रामचन्द्र जी के विजय की दुन्दुभी बजने लगी। सीता जी को अशोक वाटिका से सजधज के साथ रामचन्द्र जी के पास लाया गया। सीता जी की विशुद्धि के लिए अग्निकुण्ड तैयार हुआ। सीता जी अग्निकुण्ड में पडकर अपनी पवित्रता की परीक्षा देने को तैयार हुई। तब रामचन्द्र जी सीता जी का हाथ पकडकर बोले—देवि, ऐसा मत करो! हम लोगो को तुम्हारी पवित्रता का पूर्ण विश्वास है। रामचन्द्र जी ने सीता जी को अपने साथ (अयोध्या के) सिंहासन पर बैठाया। सीता राम की युगलमूर्ति सिंहासन पर शोभित हुई। रामायण पूर्ण हुई।

सारी रामायण मे एक बात माननीय है। राम के युग में स्त्रियों को सब प्रकार की स्वतन्त्रता थी। स्त्री पुरुष के समान अधिकार पाती थी, इतना ही नहीं, किंतु पुरुषो से अधिक सम्मान की अधिकारिणी मानी जाती थी। रामायण में सर्वत्र 'सीताराम' ही लिखा गया है। कहीं भी 'राम सीता' नहीं लिखा गया, अर्थात् उस समय पहले सीता और पीछे राम का नाम बोला जाता था। आज जो यूरोप स्त्रियो के बहुमान के लिए ससारभर मे प्रसिद्ध है, वहा भी स्त्रियों का राम युग जैसा गौरवयुक्त स्थान नहीं है। विलायत आज राजा जार्ज और रानी मेरी बोला जाता है अर्थात् रानी का नाम पीछे लिया जाता है, पहले नहीं, किन्तु राम के युग मे कोई सीताराम के बदले रामसीता बोले तो वह अपराधी माना जाता था।

रामचन्द्र जी अयोध्या आए। अयोध्या के राज्यसिंहासन पर रामचन्द्र जी अभिषिक्त हुए। प्रथम बार राजसभा लगी। लका से साथ आये वानर सुभट (वीर) राजसभा मे मानार्ह (उच्च) स्थानों पर बैठे। वानर वीरो के सेनानी हनुमान जी भी अपने आसन पर विराजमान हुए। रामचन्द्र जी सब सुभटो को उनकी वीरता के लिए पारितोषिक देने लगे। सबको पारितोषिक दिये गए। किन्तु हनुमान जी को कुछ भी पारितोषिक न मिला। सीता जी को यह देखकर आश्चर्य हुआ। सीता जी ने अपने गले में से सच्चे मोतियो का महा-मूल्यवान् नवलखा हार उतारकर हनुमान जी के गले मे डाल दिया। हनुमान जी उस हार के एक-एक मोती को तोडकर नीचे फेंकने लगे। इस प्रकार महामूल्यवान् हार के पाच-छः मोती तोडकर फेंक दिये। सीता जी कुछ न समझ सकीं। सीता जी को हनुमान जी का यह वानर-सुलभ चापल्य देखकर दुःख हुआ। उन्होंने हनुमान जी को मोती तोडने से रोका।

तब हनुमान जी बोले—माता जी! आपका यह महामूल्यवान् हार मेरे लिए निष्प्रयोजन है। मैं हार के हर एक मोती को तोडकर भीतर देखता हु, परन्तु उनके भीतर कहीं भी राम नाम दिखाई नहीं देता, और जिसमें राम नाम न हो, ऐसी किसी भी वस्तु की मुझे क्या आवश्यकता? हनुमान जी का उत्तर सुनकर सीता जी चकित हो गई। आज ऐसे हनुमान जी कहा हैं? ऐसा भक्त शिरोमणि कहा है?

राम और दयानन्द

महर्षि दयानन्द जी का जीवन मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी के जीवन से अनेक अशो मे मिलता है। किन्तु रामचन्द्र जी को हनुमान जैसा सेवक मिला, और दयानन्द को नहीं मिला। इसलिए दयानन्द का जीवन-कार्य अधूरा रहा।

ऐ महर्षि दयानन्द के अनुयायियो! ब्राह्मणो! क्षत्रियो! हिन्दुओं! यदि आप दयानन्द जी को चाहते हैं, यदि आप हिन्दुत्व के उद्धार के कार्य की सहायता करना चाहते हैं, तो आप हनुमान जी जैसे सेवक बनें। राम अथवा दयानन्द के चित्र के पीछे पागल बनने वाले झूठे सेवक नहीं परन्तु अन्तर मे राम नाम रखने वाले, और दयानन्द जी का जीवन-कार्य अपनाकर सच्चे सेवक बनो।

रामायण महाकाव्य मे पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी के जीवन मे सब प्रकार का जीवन-धर्म लिखा है। परन्तु आज इस, रामयण का पठन-पाठन नष्ट हो गया। इसलिए उसमें उपदिष्ट जीवन-धर्म के आचरण का अवकाश ही कहा रहा?

भारत के क्षत्रिय वीरो! आप अपने-आपको रघुवश का वशज मानते हैं, उस रघुवश को उज्ज्वल करने के लिए और जिस हिन्दूधर्म के रक्षक के रूप मे आपका गौरवयुक्त यशोगान गाया जाता है उस हिन्दूधर्म की रक्षा करने के लिए आप सच्चे क्षत्रिय बनें। रामायण में बोधित क्षात्र धर्म को अपने जीवन में भरो।

हे भारत की देवियो! जैसे रामचन्द्र जी का सब बल सीता के आधार पर ही था, उसी तरह आज भारत के उद्धार का महान् कार्य आपके बिना, आर्य महिलाओं की सहायता के बिना सिद्ध होना अशक्य है।

ओ देवियो! तुम सीता बनो, तुम लव-कुश की जन्मदात्री वीर माताएं बनो तुम हनुमान जी को अपने उदर में धारण करने वाली अजना देवी बनो।

ऐ आर्य महिलाओ! ऐ क्षत्रियो! आप दोनो के वर्चस्व के ऊपर ही भारत के उद्धार का आधार है।

गायत्री अनुष्ठान यज्ञ

रामनवमी से चैत्र शुक्ला पूर्णिमा (26 मार्च से 2 अप्रैल 1988 तक निष्काम सेवा ट्रस्ट तथा मानव सेवा आश्रम की ओर से गायत्री योग अनुष्ठान महायज्ञ एव योग शिविर का आयोजन किया गया है जिसमे योग के आधार भूत अगों का सैद्धान्तिक ज्ञान कराने के अतिरिक्त आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जएगा। इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले सज्जन नाम भेजने की कृपा करें। अपने पत्र के साथ स्थायी पता अवश्य लिखें साधको के लिये प्रवेश शुल्क 25 रु० है जो साधक पूर्ण रूप से अन्त तक शिविर मे उपस्थित रहेगा। उसे यह धनराशि वापस लौटा दी जायेगी। खाना रहना मुफ्त। दानदाता हर प्रकार का सहयोग देकर शिविर को सफल बनायें। सभी साधक कागज पेंसिल, बिस्तर एवं बर्तन तथा योग दर्शन अवश्य साथ लाए। सम्पर्क करें—पथिक भिक्षु, मानव सेवाश्रम छुटमलपुर (रुडकी मार्ग) सहारनपुर

मर्यादापुरुषोत्तम राम का

(पृष्ठ 3 का शेष)

मित्र के प्रति राम कितने संवेदनशील और उदार थे सुग्रीव इसका उदाहरण है। सुग्रीव अकेला रावण के पास गया और उसको जली कटी सुना कर फिर वापस भी आ गया। किन्तु राम ने कहा—

एवं साहसकर्माणि न कुर्वन्ति जनेश्वरा।
त्वयि किंचित्समापन्ने किं कार्यं सीतया मम।

अर्थात् इस प्रकार का साहस राजा लोगो को नही करना चाहिए। यदि तुम्हे कुछ हो जाता तो फिर मुझे सीता को प्राप्त करने का क्या प्रयोजन था। युद्ध मे लक्ष्मण आहत और मूर्छित हो गये थे। राम को अपने अधूरे कार्यों को देख कर चिन्ता हो रही थी, वे खिन्न थे। उस समय जहा उन्हे अन्य अनेक बातो के अधूरा रह जाने का क्षोभ था वहा उनको यह क्षोभ भी था—यन्मया न कृतो राजा लकाया विभीषण। मैं लका का राज्य विभीषण को न दे सका इसका मुझे खेद है।

बालि ने मरते समय राम से अपने पुत्र अगद के सरक्षण की प्रार्थना की और राम ने उसको कहा कि वे उससे पुत्रवत् स्नेह करेंगे। अपने इस वचन को उन्होने आजीवन निभाया यहा तक की रावण पर विजय प्राप्त करने के उपरान्त राम के शिविर मे जब विजय के बाजे बज रहे थे तो उस समय अगद ने क्रोध मे कहा—"यह बाजे बन्द कर दीजिए, यह विजय अधूरी है। जिसे आप अपनी सफलता समझ रहे हैं, उसे मैं अपनी सफलता मानता हू। मेरे पिता के दो शत्रु थे—एक रावण दूसरा उनका जीवन लेने वाले राम। योग्य पुत्र का कर्त्तव्य है कि वह अपने पिता की भावना का सम्मान करे। अत आपको पूर्ण सहयोग दे कर मैंने अपने पिता के एक शत्रु को समाप्त कर दिया है किन्तु जब तक मैं आपको पराजित नहीं कर लेता तब तक पितृ ऋण से उऋण नहीं हो सकता। अत आपका और मेरा युद्ध होगा उसके बाद जो विजयी होगा वही विजय उत्सव मनाने का अधिकारी होगा।"

राम ने अगद को न तो ललकारा और न फटकारा। उन्होने उसकी पीठ थपथपा कर कहा कि वे इसको अगद की ही विजय मानते हैं। उन्होने अगद को बालि के अतिम समय के वचन स्मरण कराते हुए कहा मैंने तुम्हारे पिता से कहा था कि मैं तुम्हे पुत्रवत् सरक्षण दूगा। इस प्रकार तुम मेरे पुत्र हो और शास्त्रो का वचन है—'सर्वस्माज्जयमिच्छेत् पुत्रादिच्छेत् पराजयम्।' मनुष्य सबसे अपनी विजय चाहे किन्तु अपने पुत्र से अपनी पराजय चाहे। इस रूप मे तुम जीते और मैं हार गया। यह भी प्रजारावन का ही अनन्य उदाहरण है। ऐसे पिता पर कौन प्रजा रूपी पुत्र अपने प्राण न्योछावर नही करेगा?

राम के सभी रूप लोकरजनकारी हैं। आदर्श पुत्र के रूप मे वे कौशल्या के आनन्द वर्धक और दशरथ के आज्ञापालक हैं। बालक के रूप मे अनुजो और सखाओ तथा पुरवासियो के परम प्रिय हैं। किशोर रूप मे मुनियज्ञ मे बाधक राक्षसो के सहारक एव अहिल्या के उद्धारक हैं।। विश्वामित्र के शब्दो मे वे मनुष्यो को ही नही पशु पक्षियो तक को अपने स्वभाव एव शील से सुख देने वाले हैं, तभी तो उनके वन जाते समय उनके घोडे तक भी अति विकल दिखाये गये है। वन जाते हुए मार्गस्थ ग्रामो के नर-नारियो की भी वे चिन्ता करते हैं, अधम जाति के निषादराज को अपना मित्र बनाते हैं, शबरी के झूठे बेरो की सराहना करते नही अघाते, जगली वानर भालुओ को अपना सखा एव सहायक बना लेते हैं जिनकी सहायता से वे लोकविद्रावण रावण का विनाश करते हैं और लका मे सुशासन की स्थापना करते हैं। राम लोकसत्ता और लोकमत मे गहन आस्थावान हैं। लोकरजक आदर्श राजा के जो गुण मानव कल्पना मे आ सकते हैं वे सब राम मे थे। तभी तो तुलसी ने कहा है—

रघुवीर चरित अपार वारिधि पार कवि कौने लह्यो।

समुद्र का तो पार पाया जा सकता है किन्तु राम के गुणो का पार नही पाया जा सकता। भवभूति के शब्दो में राम ने कहा था—

स्नेह दयाच सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
आराधानाय लोकानां मु चतो नास्ति मे व्यथा।

अर्थात् लोकाराधन के लिए मुझे सीता के परित्याग मे भी किसी प्रकार की पीडा नही होगी।

—अशोक कौशिक

रघुकुल भूषण

(पृष्ठ शेष 6 का शेष)

"न मे स्तेनो जनपदे,
न कदर्यो न मद्यप।
नानाहिताग्निर्नाविद्वान्,
स्वैरी स्वैरिणी कुत ॥

अर्थात मेरे राज्य मे कोई चोर नही कजूस, शराबी, हवन न करने वाला, मूर्ख और व्यभिचारी ही नही तो फिर भला व्यभिचारिणी कहा से होगी। श्रीराम का राज्य भी इतना श्रेष्ठ और आदर्श था कि वहा न तो विधवाओ का करुण क्रन्दन था और न ही चोर डाकुओ आदि का भय। सभी अपने अपने वर्णानुसार धर्मकृत्य करते थे। अनावृष्टि और अतिवृष्टि नही होती थी। सभी सन्तोषी और पुरुषार्थी थे। प्रजा के लोग एक दूसरे को सताते नही थे बल्कि अथाह प्रेम करते थे। उनके राज्य मे समस्त प्रजा सत्य परायण थी, झूठ से सदा दूर रहती थी, सब लोग धर्म परायण थे। यह सब इसलिए था क्योकि श्रीराम स्वय इन गुणो से सुशोभित थे। वे बचपन से ही सघर्षो से जूझते रहे। मुनि विश्वामित्र यज्ञ के विध्वसको का सहार करने के लिए इन्हे लक्ष्मण सहित ले गए थे, वह मानो उनके भावी जीवन की तैयारी थी। वैदिक धर्म एव यज्ञ के विरोधियो से उन्होने आजीवन टक्कर ली तभी तो वे राम-राज्य की स्थापना कर पाए। "रक्ष सस्कृति" को समाप्त करके उन्होने "आर्य सस्कृति" की स्थापना की। सुग्रीव, विभीषण आदि के साथ बडी कुशलता के साथ मैत्री स्थापित करना उनकी कुशल नीति का उदाहरण था। वीरता उनका एक और विशेष गुण था। खर, दूषण और उनकी बलशाली सेना का सहार अकेले ही कुछ ही समय मे करना और बाद मे रावण जैसे बलशाली राजा को बिना अयोध्या से सेना बुलाए ही धराशायी कर देना अपने आप मे वीरता का एक अनुपम उदाहरण है।

रघुकुल शिरोमणि आर्य सम्राट श्री राम के जीवन का एक एक कार्य और एक एक क्षण अनुकरणीय है। इस ऐतिहासिक महापुरुष को अवतारवाद, शाप, वरदान आदि के झाड झखाडो मे उलझकर कल्पना लोक तक पहुचाने से काम नहीं चलेगा और न ही तोता रटन्त रामचरितमानस के मात्र पाठ से कुछ मिल सकेगा। आवश्यकता इस बात की है कि उनके आदर्शो को अपने जीवनो मे उतारा जाए। आज जबकि चारो ओर साम्प्रदायवाद, जातिवाद और मजहबवाद का भयकर विष फन रहा है। आर्य सस्कृति पुन विनाश के कगार पर खडी है और राष्ट्र के टुकडे-टुकडे कर देने की साजिश रची जा रही है, इस बात की परम आवश्यकता है कि रामचन्द्र के गुणो और नीतियो को कार्यान्वित किया जाए। उनके चरित्र को अपनाया जाए ताकि इस टूटते-बिखरते राष्ट्र को न केवल बचाया जा सके बल्कि आर्य सस्कृति की पुन स्थापना करके आर्यवर्त के समान एकछत्र अखण्ड साम्राज्य की स्थापना की जा सके, जहा मानव मानव आपस मे मानवो की तरह प्रेम और सौहार्द के साथ रहे, मजहबियो और साम्प्रदायिको के समान डसने वाले विषले सापो की तरह नही। राम राज्य की आज भी सम्भावनायें हैं, मगर सबसे पहले इसके लिए मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम बनना पडेगा।

पता—281/एस-2, सुन्दर नगर-174402
(हि० प्र०)

रामायण—कालीन जन जातियां

(पृष्ठ 7 का शेष)

रावण ने कई अप्सराओ से जबरदस्ती की थी। एक अप्सरा के कई देवो के साथ सम्बन्ध होने एक देव के कई अप्सराओ से सम्बन्ध होने का भी उल्लेख है। अप्सराओ का रोल क्या होता था यह रम्भा के उदाहरण से पता लगता है जिसके साथ रावण ने बलात्कार किया था। ऐसी अप्सराओं का कोई पति नही होता था। पौराणिक परम्परा के अनुसार जब कोई बहादुर व्यक्ति युद्ध मे वीरगति प्राप्त करता है तो स्वर्ग में इन्द्र की अप्सराए उसका अभिनन्दन और मनोरजन करती हैं। अप्सराओ के सम्बन्ध में प्राय ऐसा वर्णन भी किया जाता है कि जब कोई ऋषि या तपस्वी अत्यधिक यज्ञयाग या निरन्तर तपस्या के बल पर इन्द्र के सिंहासन पर अधिकार करना चाहता था तब इन्द्र इन अप्सराओ को उस ऋषि का तप भग करने के लिए पृथ्वीलोक पर भेजता था। ये अप्सराए सगीत और नृत्य की कलाओ मे निपुण होने के कारण लोगो का हृदय जीत लेने मे सफल हो जाती थी।

['इण्डिया इन दि रामायण एज' से अनूदित]

[वाल्मीकि रामायण मे देव, असुर, वानर, राक्षस, यक्ष, गन्धर्व, किन्नर आदि का उल्लेख है। कौन थे ये सब? विद्वान् लेखक द्वारा उन सब की असलियत पर प्रकाश डाला गया है। स०—]

उपदेशकों द्वारा प्रचार कार्य

पं० अमर सिंह, श्री जगतराम तथा श्री बस्तीराम ने फरवरी 88 में आर्य समाज जगाधरी से अपनी प्रचार यात्रा आरम्भ कर नमला, कुरुक्षेत्र, पुन. गजलाना, दसमेश नगर एवं मौडल टाउन लुधियाना, सरहिन्द, रामपुर सैनियम होते हुए आर्य समाज भैणी सुर्द में समाप्त की। सभा इन उत्साही उपदेशको एव भजनोपदेशकों के कार्य की सराहना करती है।

यू० 108/81 लायसेंस टू पोस्ट विदाउट प्रिपेमेंट
रजिस्ट्रेशन न० आर० एन० आई० 39/57
Delhi Postal Regd. No D (C) 409

महात्मा हंसराज दिवस

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा डी० ए० वी० सस्थाओ एव समस्त आर्यजनो की ओर से महात्मा हसराज दिवस रविवार 17 अप्रैल 1988 को प्रात 9 बजे से एक बजे तक तालकटोरा गार्डन, इन्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली मे मनाया जा रहा है। इस समारोह के अध्यक्ष आर्य समाज के प्रसिद्ध सन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज होगे। इस समारोह मे आर्य समाज के विद्वान्, प्रसिद्ध आर्य नेता तथा भारत सरकार के मत्री महोदय भी महात्मा हसराज जी को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करेंगे। डी० ए० वी० शिक्षण सस्थाओ के छात्र छात्राओ द्वारा महात्मा हसराज जी के जीवन पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाएगा। —रामनाथ सहगल

(पृष्ठ 1 का शेष)

की रानी के जीवन चरित्र को दिखाया जा सकता है, जिसने अपने मुस्लिम सहयोगियो के साथ मिल कर वीरतापूर्वक अग्रेजो से लोहा लिया था। 1946 की नौसैनिक क्रांति दिखायी जा सकती है जब सब धर्मों के लोगो ने मिल कर जहाजो पर से यूनियन जैक उतार कर उसके स्थान पर तिरगे झडे लहरा दिये थे।

और हा, अग्रेजो ने हमे साप्रदायिक दगे ही नही दिये, देश का विभाजन भी दिया। यह विभाजन कभी स्वीकार नही किया जाना चाहिए। भीष्म साहनी और गोविंद निहलानी इस विषय पर, इस प्रश्न पर ब्रिटिश षड्यत्र के सामने सिर झुकाते नजर आते हैं।

—डॉ० ओम नागपाल, अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, क्रिश्चियन कॉलेज, इदौर (मध्य प्रदेश)।
(धर्मयुग से साभार)

तपोवन की यात्रा

तपोवन आश्रम देहरादून के कार्यकर्त्ताओ एव महात्मा दयानन्द जी की हार्दिक इच्छा है कि प्रति वर्ष की भाति इस वर्ष भी दिल्ली से भाई एव बहने यहा के यज्ञ मे भाग लें।

तपोवन जाने का कार्यक्रम निम्न प्रकार है—

27 अप्रैल प्रात 6 बजे प्रस्थान आर्य समाज, करोल बाग, से दोपहर को वानप्रस्थ आश्रम, ज्वाला पुर, गुरुकुल कागडी, गुरुकुल कागडी फार्मेसी, हर की पौडी हरिद्वार से होते हुए रात्रि को मोहन आश्रम ठहरेंगे।

28 अप्रैल प्रात हर की पौडी, हरिद्वार, ऋषिकेश, लक्ष्मण झूला, गीता भवन से होते हुए दोपहर को तपोवन आश्रम पहुचेंगे।

29 अप्रैल यज्ञ एव नाश्ता के पश्चात् मसूरी के लिए प्रस्थान करेंगे। मसूरी की आर्य समाज एव ऐतिहासिक स्थान देखते हुए रात्रि को तपोवन लौट आयेंगे।

30 अप्रैल यज्ञ के पश्चात् जलूस मे सम्मिलित होगे जो तपोवन आश्रम से उस पहाड पर जायेगा, जहा महात्मा नारायण स्वामी, महात्मा आनन्द स्वामी, महात्मा प्रभु आश्रित जी की कुटियायें बनी हुई हैं। लौट कर खाना खाने के पश्चात् सहस्र धारा एव देहरादून के ऐतिहासिक स्थान देखने जायेंगे। रात्रि को वापस तपोवन।

1 मई प्रात यज्ञ की पूर्णाहुति महात्मा दयानन्द जी द्वारा 10 बजे सभा 12 बजे ऋषि लगर, 1 बजे प्रस्थान दिल्ली के लिए, 8 बजे रात्रि वापसी आर्य समाज, करोल बाग, इस समारोह मे पाचो दिन विद्वान भजनीक भाग लेंगे।

आने जाने का किराया बसो द्वारा रु० 150/- होगा। सीट सुरक्षित कराने का स्थान आर्य समाज, करोल बाग मे होगा, सीट बुक कराने की तिथि 15-4 1988 तक। सीट का न० क्रम सख्या से होगा। अगर पहले सीटें बुक हो गई, तो बाद मे आने वाले के रु० वापिस कर दिये जायेंगे।

नोट—27 अप्रैल दोपहर का खाना आर्य गुरुकुल ज्वाला पुर हरिद्वार में होगा। रात्री का खाना मोहन आश्रम हरिद्वार मे होगा। 28 अप्रैल से 1 मई तक का खाना तपोवन आश्रम की ओर से होगा।

भवदीय

अजय कुमार भल्ला	राम लाल मलिक	ओम्प्रकाश सुनेजा
प्रधान	सयोजक	मत्री
	दूरभाष 5722510	
शान्ति मलिक	दयाल चन्द गुप्ता	कृष्णा वडेरा
प्रधाना	सहसयोजक	मन्त्रिणी

आर्य समाज, करोल बाग, नई दिल्ली-5 फोन 5727458

आ० प्रा० प्रतिनिधि सभा का अधिवेशन

आर्य प्रा० प्र० सभा मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली का वार्षिक अधिवेशन, 29 मई 1988 को प्रात 10 30 से आर्य समाज मदिर मार्ग नई दिल्ली में होगा। समस्त सम्बन्धित आर्य समाजो एव आर्य सस्थाओ से प्रार्थना है कि वे अभी से यह तिथि अकित कर लें और अपने प्रतिनिधियो के नाम तुरन्त भेजें। —रामनाथ सहगल सभा मन्त्री

मोहन आश्रम मे दयानन्द स्मारक

वैदिक मोहन आश्रम हरिद्वार का वार्षिकोत्सव 6 से 10-4 88 तक होगा जिसका मुख्य आकर्षण दयानन्द स्मारक स्तम्भ का निर्माण है। यह स्तम्भ स्वामी जी की आयु के 59 वर्ष के अनुसार 59 फुट ऊचा बनाया जा रहा है। यह कार्य आर्य जनता के श्रमदान से सम्पन्न हो रहा है। जो व्यक्ति इस श्रमदान मे सम्मिलित होना चाहते हैं वे अपना नाम पता, आयु कार्य तथा किन तिथियो में श्रमदान कर सकते हैं वह सारा विवरण सचालक के नाम पर मोहन आश्रम के पते पर तुरन्त लिख भेजें। वेदव्यास प्रधान/तिलकराज गुप्त मत्री

आवश्यकता

अन्न क्षेत्र सेवा समिति, आर्य समाज, हासी (हरि०) को एक होम्योपैथिक डाक्टर की आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार। सम्पर्क करें—लाला व किशन दास प्रधान मानवती आर्य कन्या हाई स्कूल, हासी। (P)

वैद्य प्रह्लाद दत्त दिवंगत

श्री प्रह्लाद दत्त वैद्य की रस्म पगडी एव श्रद्धाजलि सभा उनके निवास-स्थान 4 02 डि टीगज, सदर बाजार मे 30-3 88 को साय 4 बजे होगी। वैद्य जी का 93 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हुआ, उन्होने अपनी सारी आयु आर्य समाज को जो सेवा की है वह स्वर्ण अक्षरो मे लिखने योग्य है। — रामनाथ सहगल मत्री, आ० प्रा० प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

दानवीर श्री देवराज कोछड़ दिवंगत

आर्य समाज ग्रीनपार्क के सस्थापको मे से एक दानवीर श्री देवराज कोछड का उनके सुपुत्र श्री आर० एम० कोछड 233 वसन्त विहार फेज-1 चकराता रोड, देहरादून मे 9 मार्च, 88 को देहान्त हो गया है। उनका अन्तिम शोक दिवस 12 मार्च को 3 बजे मनाया गया। वे हर वर्ष महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा में ऋषि मेले पर आते थे और अच्छी राशि दान दिया करते थे। वे आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, डी ए वी सस्थायें गुरुकुलो एव अनाथालय आदि समस्त आर्य सस्थाओ को भी दान दिया करते थे। आर्य समाज के सब कार्यों में वे बडे उत्साह से हिस्सा लिया करते थे। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के कार्यालय मे विशेष शोक सभा मे दिवगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की गई। —रामनाथ सहगल

(पृष्ठ 2 का शेष)

को पूजते हैं। शैव और वैष्णव का जो विरोध था वह प्रकारान्तर से क्षत्रियो और वैश्यो का सघर्ष ही था। इस विकृति का मूल भी इनका वेदानुयायी होना ही था। विकृति मे मूल भावना का प्रभाव सरलता से देखा जा सकता है।

इस प्रकार मुख्य रूप से बाह्य शुद्धि के उद्देश्य से किए जाने वाले इस मन्त्र में यज्ञ के उत्तरार्द्ध अथवा अन्तिम चरण मे देव यज्ञ का सार बतलाते हुए देव सवितः से प्रार्थना की जा रही है कि हे देव सवित! आप कृपा करके हमारे इस ब्रह्माण्ड के सम्पूर्ण दोष दुर्गुण और दु ख तथा बाधाओ को दूर कर दीजिए और जिससे पवित्रता के कारण म की प्राप्ति सम्भव हो सके।

निश्चय ही महर्षि को इस सूक्त पर प्रत्येक विचारक का मन्त्रमुग्ध हो जाना स्वाभाविक है कि—प्रत्येक मन्त्र को महर्षि ने अत्यन्त उपयुक्त स्थल पर विनियोजित कर दिया है।

जैसे समारोह के अन्त में उद्देश्य की घोषणा के रूप में उद्घोष या नारे लगाए जाते हैं वैसे ही दैनिक यज्ञ के समापन के निकट यह मन्त्र यज्ञ के परिणाम व उद्देश्य की घोषणा की तरह पर है।

मनीषी जन इस पर विचार करें।

पता : 4-5-753, वेद मन्दिर, हैदराबाद-500027

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री, द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाडी धीरज (फोन : 527335) दिल्ली में छपवाकर कार्यालय आर्य जगत्, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 (फोन 343718)

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य —30 रुपये विदेश मे 65 पौ० या 125 डालर वर्ष 51, अक 14 रविवार 3 अप्रैल, 1988 दूरभाष। 343~18
आजीवन सदस्य-251 रु० इस अक का मूल्य—75 पैसे सृष्टि सवत् 1972949089, दयानन्दाब्द 163 वैशाख० कृ-1, 2045 वि०

संक्षिप्त किन्तु महत्त्वपूर्ण

पजाब इमरजैन्सी बिल पास

ससद के दोनो सदनो मे पजाब इमरजैन्सी बिल भारी बहुमत से पास हो गया परन्तु विपक्षी दलो ने राष्ट्रपति से मिलकर और उन्हें ज्ञापन देकर यह प्रार्थना की है कि वे इस बिल पर हस्ताक्षर करने से पूव उसे पुन ससद मे विचाराथ प्रस्तुत करने को भेजें क्योकि सरकार ने अनावश्यक रूप से जल्दबाजी मे यह बिल पास करवाया है।

भारतीय भाषाओ मे तकनीकी शिक्षा

तकनीकी शिक्षा के लिए अग्रेजी के एकाधिकार को हटा कर भारतीय भाषाओ को माध्यम बनाने की माग करते हुए, जिन युवको ने आमरण अनशन किया था। उन्होने शिक्षा मत्रालय के अधिकारियो द्वारा आश्वासन मिलने पर अनशन समाप्त कर दिया। अब सिद्धान्त रूप से मानी गई इस मांग को किस रूप में चरितार्थ किया जाता है, यह देखना है।

बाबा आमटे पुरस्कृत

प्रसिद्ध समाज सेवी, 'आनन्द वन के सन्त' के नाम से विख्यात, कोढ़ियों की सेवा के लिए समर्पित बाबा आमटे को स्व० घनश्याम दास विरला की स्मृति मे दो लाख रुपये का चैक, स्मृति-चिन्ह और सम्मान-पत्र दिया गया। मानवता की भलाई मे समर्पित लोगो को सम्मानित करने के लिए इस कोष की स्थापना की गई है।

खालिस्तानियों से मुकाबला

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के कायकर्ता 3 अप्रैल को पजाब के एक गाव में हजारों की सख्या मे इकट्ठे होकर खालिस्तानी या सरकारी आतकवाद के विरुद्ध लडाई जारी रखने का फैसला करेंगे। आतकवादियों द्वारा आए दिन हत्या के जवाब मे पजाब के गावो के मजदूर और किसान एकजुट हो रहे हैं।

स्वामी आनन्द बोध का त्याग पत्र

आय समाज में बढती हुई अनुशासन हीनता से खिन्न होकर सावदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने यतिमंडल के अध्यक्ष स्वामी सर्वानन्द जी के परामर्श से सावदेशिक के प्रधान पद से त्याग पत्र दे दिया है। स्वामी सर्वानन्द जी ने उनसे आग्रह किया है कि अन्तरग सभा द्वारा त्याग पत्र स्वीकार होने तक वे प्रधान पद का कार्यभार संभाले रहें।

नेपाल में विश्व हिन्दू सम्मेलन

समस्त हिन्दुओं से एकजुट होकर शक्तिशाली बनने और कुरीतियां छोड़नें की अपील

नेपाल की राजधानी काठमाडू मे विश्व हिन्दू सम्मेलन 25 मार्च को वैदिक मन्त्रो के पाठ के साथ प्रारम्भ हुआ। इस सम्मेलन मे लगभग 29 देशो के पाच हजार प्रतिनिधि उपस्थित थे। अनेक शकराचार्यों के अलावा जैन मुनि सुशील कुमार, बौद्ध भिक्षु श्री अमृतानन्द, सरदार जागीर सिह, तथा अन्य अनेक हिन्दू सम्प्रदायो के प्रमुख व्यक्ति सम्मेलन मे उपस्थित थे। आर्य समाज का प्रतिनिधि मण्डल भी श्री स्वामी आनन्द बोध जी के नेतृत्व मे शामिल हुआ था।

नेपाल नरेश श्री वीरेन्द्र ने दशरथ मैदान मे सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए नेपाल की हिन्दू परम्पराओ का उल्लेख किया। उन्होने कहा कि यह स्थान शैवो, वैष्णवो व बौद्धो का समान रूप से प्रिय स्थल रहा है। उन्होने कहा कि भगवती सीता और महात्मा बुद्ध के जन्म देने का सौभाग्य इसी भूमि को प्राप्त हुआ था। हिन्दू सस्कृति की परम्परा को अक्षुण्य रखने के लिए उन्होने गत वष स्थापित हुए महेन्द्र सस्कृत विश्वविद्यालय की भी चर्चा की।

इस अवसर पर काची कामकोटिपीठम् के श्री जयेन्द्र सरस्वती ने नेपाल नरेश को हिन्दू धम सम्राट् की उपाधि से विभूषित किया।

सम्मेलन मे जहां अनेक धार्मिक नेताओ ने समस्त हिन्दू समाज से एकता की अपील की वहा अनेक वक्ताओ ने भी धार्मिक नेताओ से आग्रह किया कि वे हिन्दू समाज को छुआछूत, महिलाओ के प्रति भेदभाव और विधवा दहन जैसी कुरीतियो के कलक से मुक्ति करने के लिए आगे आए।

धर्मान्तरण पर प्रतिबन्ध की मांग

अनेक वक्ताओ ने यह माग भी की कि जिस प्रकार नेपाल मे धम परिवतन पर प्रतिबन्ध है वैसा ही प्रतिबध अन्य देशो में भी लगना चाहिए। विश्व हिन्दू परिषद के महासचिव श्री अशोक सिघल ने हिन्दू एकता के भावी कायक्रमो की रूपरेखा प्रकट करते हुए कहा कि जब तक हिन्दू समाज के अन्दर से जाति प्रथा और महिलाओ तथा हरिजनो से भेदभाव की प्रवृत्ति समाप्त नहीं होगी, तब तक हिन्दू समाज को विघटित होने से बचाना कठिन होगा। हमारा आध्यत्मिक तत्व ज्ञान जब तक समाज के निचले एव उपेक्षित स्तरो तक नहीं पहुचेगा तब तक एकता की आशा करना कठिन है उन्होने कहा कि सामाजिक विषमता की खाई को पाटने के लिए जब तक धार्मिक नेता पहल नही करेंगे तब तक हिन्दुओ का धर्मान्तिरण रोकना भी कठिन होगा। उन्होने यह भी कहा कि हमे अपने मन्दिरो को केवल देवताओ की पूजा स्थान नही बल्कि समस्त हिंदू समाज के सगठन के लिए उन्हे शक्ति का केन्द्र भी बनाना होगा।

श्री के. सी. पन्त, रक्षा मन्त्री भारत सरकार हंसराज दिवस पर मुख्य अतिथि

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध कर्त्री समिति, एव समस्त आर्य समाजो की ओर से महात्मा हसराज दिवस समारोह 17 अप्रैल 1988 को प्रात नौ बजे से एक बजे तक तालकटोरा गार्डन, इनडोर स्टेडियम, नई दिल्ली में मनाया जा रहा है। इसकी अध्यक्षता आर्य समाज के प्रसिद्ध सन्यासी श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज करेंगे और मुख्य अतिथि माननीय श्री के सी पन्त रक्षा मत्री, भारत सरकार होगे। प्रो० वेद व्यास, श्री एल० एम० सिघवी सासद श्री राम चन्द्र विकल, प्रो० शेर सिंह, प्रि० सर्वदानन्द आर्य, प्रि० वी० बी० मेहरा आदि इसमे मुख्य वक्ता होगे।

डी ए वी पब्लिक स्कूल प्रीतम पुरा द्वारा सास्कृतिक कायक्रम प्रस्तुत किया जायेगा। प्रात 9 बजे से 10 बजे तक यज्ञ तथा प्रसाद वितरण एव दस बजे से एक बजे तक कार्यक्रम होगा समस्त आर्य समाजो, स्त्री आय समाजो, आय सस्थाओ एव डी० ए० वी सस्थाओ से प्राथना है कि वे अपनी समाज का साप्ताहिक सत्सग स्थगित करके अपनी-अपनी बसें लेकर समारोह स्थल पर अवश्य पहुचे। जो व्यक्ति अपनी बसें बुक करवाना चाहे वे 'हाईवे राडवेज' फोन न० 235100 एव 233751 से बुक करवा सकते हैं।

—राम नाथ सहगल, मन्त्री, आ०प्रा०प्र०स०

महात्मा हंसराज दिवस विशेषांक

महात्मा हसराज दिवस के उपलक्ष्य मे 17 अप्रैल को 'आयजगत्' का विशेषाक निकलेगा। यह विशेषाक सुन्दर लेखो से सुसज्जित और 'आर्य जगत् की पराम्परा के अनुसार सग्रहणीय होगा, यह कहने की आवश्यकता नही। विशेषाक की तैयारी के कारण 10 अप्रैल का अक बन्द रहेगा। कृपया पाठक नोट कर लें।

—सम्पादक

✻

आओ सत्संग में चलें

अद्भुत वैदिक यज्ञ विधि [10]

मनुष्य की अन्तिम कामना क्या हो ?

—आचार्य वेद भूषण—

[गताक से आगे]

दैनिक यज्ञ के अन्तिम मत्र है—

ओम् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्
विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो
भूयिष्ठा ते नम उक्ति विधेम ।
(यजुर्वेद 40 16)

यजुवद के अन्तिम अध्याय मे कुल सत्रह मत्र हैं। मन्त्र का सन्दर्भ व प्रकरण जानकर जब उसका अर्थ समझने का यत्न किया जाता है तब वह अपेक्षाकृत अधिक स्पष्ट रूप से समझ में आता है। यजुर्वेद के अन्तिम अध्याय में सक्षिप्त रूप मे सपूर्ण यजुर्वेद सार रूप मे प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत मन्त्र ठीक उस मत्र के बाद यजुर्वेद मे पढा गया है जहा जीवन की व सस्कार विधि की समाप्ति हो जाती है। इस मन्त्र से पूर्व का मन्त्र इस प्रकार है—

वायुरनिलममृतमयेद
मस्मान्त शरीरम्।
ओम् क्रतो स्मर,
क्लिबे स्मर कृत स्मर ॥

इस मत्र में जब आत्मा देह का परित्याग कर देता है तब की स्थिति का वर्णन मन्त्र की पहली पक्ति मे दर्शाया गया है। जिसमे बतलाया गया है कि मृत्यु के बाद आत्मा अगली यात्रा किस क्रम से आरम्भ करता है और आत्मा के विमुक्त हो जाने पर उस देह को भस्म कर देना चाहिए। मन्त्र की दूसरी पक्ति में मरणासन्न व्यक्ति को अन्तिम समय मे क्या विचारना चाहिए उसका उल्लेख है। इस मन्त्र से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि—मनुष्य का या प्राणी का पुन र्जन्म भी होता है।

आज का विज्ञान अभी उस परमाणु के अन्तिम स्वरूप तक भी नही पहुचा जिसे कल्पना से भी खण्डित नही किया जा सकता। उसे वह कभी भी चर्म चक्षुओ से देख नहीं सकता। उसका कारण यह है कि बडे से बडे सूक्ष्मवीक्षण यन्त्र से भी हम किसी पदार्थ को तभी देख सकते हैं जब तक वह रूप को लिए हुए हो। परमाणु वही तक देखा जा सकता है जहा तक उसका सयोग अग्नि के साथ हो। अथवा अग्निमय हो। क्योकि अग्नि से ही रूप की उत्पत्ति होती है। अग्नि तत्व से नीचे की स्थिति को किसी मन्त्र से भी नही देखा जा सकता क्योकि आगे उसमे रूप रह ही नही जाता वह अरूप हो जाता है।

आज का वैज्ञानिक आत्मा के विज्ञान के बारे मे भी कुछ नहीं जानता। इसी-लिए वह आत्मस्वरूप को आत्मा को स्वीकार ही नही कर सकता। पर वेद तथा अन्य वैदिक सत्य शास्त्र आत्मा के अमरत्व तथा पुन पुन जन्म के सिद्धान्त को मानते हैं। हमारे ईसाई व मुसलमान भाई पुनर्जन्म को नही मानते। इसी सन्दर्भ में हम एक दिलचस्प घटना का उल्लेख यहा आवश्यक समझते हैं।

हम एक बार बेंगलूर से हैदराबाद वायुयान द्वारा लौट रहे थे। यह यात्रा कुल पचास पचपन मिनट की थी। जो सज्जन हमारी साथ वाली सीट पर बैठे थे हमने उनका परिचय जानना चाहा तो उन्होंने बतलाया कि—वे मिशन के व्यक्ति हैं, कागज नगर जा रहे हैं। वे ईसाई मत को मानने वाले इजीनियर हैं। हमने उनसे पूछा कि कृपा कर यह बतलाने का कष्ट करें कि जब आदमी मर जाता है तब पीछे क्या शेष रहता है। उन्होने तपाक से कहा 'कुछ भी नही।'

हमने कहा जब कुछ भी नहीं रह जाता तो कयामत का दिन आने पर जब भगवान इन्साफ करेंगे और अच्छे को अच्छा और बुरे को बुरा फल देंगे तो यह फल किसे देंगे ? वे दो क्षण चुप रहे फिर बोले कि ऐसा लगता है कि पीछे कुछ रह जाता है। हमने कहा कि अभी भी आप लगता है कह रहे हैं। पूरे विश्वास के साथ नही कर रहे हैं। परन्तु कयामत के समय इन्साफ वाली बात से अगला जन्म तो स्पष्ट ही हो जाता है पर इस जन्म से भी पहले हम जन्म लेते रहे हैं यह बात अभी विचारणीय है।

इस बारे मे हम किसी भी भारतीय धर्म शास्त्र की चर्चा नही करना चाहते। हम इस बारे मे ईसाईयत के मूल देश से सम्बन्धित कुछ तथ्य रखना चाहेंगे कि जहा ईसाई मत फला और फूला है। ईसाई मत की जन्म भूमि की भाषा अ ग्रेजी है। ईसाई मत से इस भाषा का गहरा नाता है। जिसे आप अस्वीकार नही कर सकते। उस अ ग्रेजी भाषा मे एक शब्द है 'रि टायर्ड'। यहां 'रि' शब्द का अथ है पुन फिर या दुबारा। टायड अर्थात् थकना। आप कृपा कर यह बतलाइए कि रिटायर्ड होने वाला व्यक्ति पहले कब थका था जो आप इसे रिटा-यड कह रहे हैं। इस छोटे से शब्द में यह सार छिपा है कि हम जन्म जन्मान्तरों से टायर्ड होते आ रहे हैं। अर्थात् थकते आ रहे हैं।

वह हमारी इस बात पर अभिभूत हो गया और कहने लगा—आप ठीक कह रहे हैं। मैं आत्मा की अमरता को और उसके बार-बार जन्म लेने की बात को स्वीकार करता हू।

मृत्यु के मुहाने पर खडे होकर प्रभु से प्रार्थना करना 'ओम् अग्ने नय सुपथा।' हे अग्नि रूप ज्ञानमय प्रभो ! आप मुझे सुपथ पर ले जाइए अर्थात ऐसी योनि प्रदान कीजिए कि मैं सुपथ पर चल सकू। मृत्यु शय्या पर पडा मनुष्य प्रभु से पुन जन्म की प्रार्थना कर रहा है। दूसरे शब्दो मे वह उस नियन्ता से अपनी सद्गति की कामना कर रहा है। जीवन यज्ञ के अन्तिम छोर पर खडे होकर वह यजुर्वेद से भजन कर रहा है याचना कर रहा है। यजुर्वेद में जीवन का अन्तिम छोर है और नित्य यज्ञ मे यह यज्ञ रूपी कर्म काण्ड के अन्तिम छोर पर पहुच कर यह प्राथना कर रहा है।

यह प्रार्थना यजुर्वेद के ऋषि ने भी अन्त मे की। ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना का उपासक भी इसे अन्त मे ही पढ रहा है और यज्ञ का याज्ञिक भी अन्तिम आहुति, अन्तिम इच्छा पत्र के रूप मे इस महत्वपूर्ण मन्त्र को पढ रहा है। 'भूयिष्ठा ते नम उक्ति विधेम' हे देव हे अग्निरूप प्रभो ! मैं बार बार आपसे अनुनय विनय कर रहा हू कि नाथ मुझे सुपथ पर उत्तम योनि में ले जाइए। जिस उत्तम योनि में मैं श्रेष्ठ ऐश्वर्य की राशि को प्राप्त कर सकू। जहा मैं उत्तम प्रज्ञान व यज्ञ रूप शुभ कर्म करने का अधिकारी बन सकू। ऐसी योनि प्राप्त करके भी हे नाथ ! आपसे मेरी प्राथना है कि आप मुझे कुटिलता पाप रूप कर्म से सदा बचाइए। सुपथ पर चलते हुए भी जो बाधाए, काटे मेरे मार्ग मे आयें आप उन्हें दूर करने की कृपा कीजिए।

प्रार्थना एक ही है पर अग्नियाँ दो हैं। एक चेतन अग्नि रूप प्रभु इस चेतन आत्मा को अपनी गोद में उठा कर सद्-गति प्रदान करने के लिए उत्सुक है तो उधर भौतिक अग्नि उसके भौतिक देह को अपनी ज्वालाओं मे उठाकर उसके देह के पच तत्वो को शुद्ध कर उसे अपने अपने तत्व मे पहुचा रही है। एक ही मन्त्र से अनेक धाराए प्रवहमान होती हैं और कितने सटीक रूप मे मन्त्र जीवन में चरिताथ होता जाता है। वाहरे प्रभु आपका ज्ञान भी अपरपार है।

जीवन की यज्ञ की प्रथम कामना के रूप मे "दुरितानि परासुव। यद्भद्र तन्न आसुव।" की प्रार्थना है और अतिम कामना के रूप मे "अग्ने नय सुपथा" ये दोनो मन्त्र मानो यज्ञ का सार प्रस्तुत कर रहे हैं। कैसा अद्भुत विनियोजन किया है ऋषि दयानन्द ने। सोच सोच कर उनकी प्रतिभा के चरणो मे मस्तक झुक जाता है।

दुरित के मार्ग से 'जुहुराणं एन' के मार्ग से 'युयोधि' दूर कर दीजिए। 'राये वयुनानि विद्वान' के सुपथ पर भद्र-पथ पर हमे ले चलिए हे नाथ।

यही अग्नि का विज्ञान है। अग्नि हमे ले जाने का कार्य करती है। हमारे

(शेष पृष्ठ 11 पर)

शंकराचार्य के विरुद्ध प्रदर्शन

स्वामी अग्निवेश के नेतृत्व में आर्य समाज की विभिन्न संस्थाओं ने जगन्नाथ पुरी के शकराचाय स्वामी निरजनदेव के निवास स्थान पर सती प्रथा का विरोध मे नारे लगाते हुए प्रदर्शन किया। उच्चतम न्यायालय ने स्वामी अग्निवेश की याचिका पर निर्णय देते हुए पुरी के शकराचाय को चेतावनी दी थी कि वे सती प्रथा के समथन मे बोलते हुये कानून के अनुसार मिलने वाली सजा का ध्यान रखें और सती प्रथा को महिमा मण्डित करने से बाज आए। स्वामी अग्निवेश उच्चतम न्यायालय के इस फैसले की प्रति और एक ज्ञापन देने के के लिए जलूस के साथ वहा पहुचे परन्तु शकराचाय ज्ञापन लेने के लिए बहार नहीं आए।

इसके बाद मे वही जलूस सभा में बदल गया। स्वामी अग्निवेश ने पुरी के शकराचाय को शास्त्रार्थ के लिए अपनी चुनौती फिर दोहराई और कहा कि सच्चा धर्म समाज के हर क्षेत्र मे स्त्री पुरुषों को भागीदारी का उपदेश देता है। सती के नाम पर विधवाओं को जलाना अधार्मिक, अनैतिक एव अमानुषिक कृत्य है। इसे किसी भी हालत मे धर्म नहीं कहा जा सकता।

सुप्रीम कोट के आदेश की अवहेलना करते हुए शकराचार्य द्वारा आयोजित धार्मिक समारोह प्रारम्भ हो गया है। पुरी के शकराचाय ने कहा है कि मैं सती प्रथा का समर्थन करना नहीं छोडूगा, सरकार चाहे मुझे गिरफ्तार कर ले।

सुभाषित

यथा स्याद् दयालोः यथा तस्य शिष्याः ।
मेधाबुद्धिभ्यां श्रद्धया चोपपन्नाः ।
द्रुतं येन वेदोक्त धर्मप्रचारः ।
समस्तेऽपि लोके प्रजायेत नूनम् ॥ —स्व० स्नातक सत्यव्रत

दयानिधान भगवान् की ऐसी कृपा हो कि महर्षि दयानन्द के शिष्य बुद्धि और श्रद्धा से इतने सम्पन्न हो जाएं कि समस्त लोक में वेद विहित धर्म का त्वरित गति से प्रचार हो सके ।

सम्पादकीयम्

आर्यसमाज बम्बई का महत्व

बम्बई देश की अन्यतम विशाल महानगरी है । परन्तु कुल मिलाकर वहां आर्यसमाजों की संख्या बीस से अधिक नहीं होगी । दिल्ली राजधानी होने पर भी बम्बई की तुलना में अभी बच्ची है । पर दिल्ली में समस्त आर्यसमाजों की संख्या कुल मिलाकर दो सौ के लगभग है, यह जानकर आर्य जनता का वक्ष गर्व भर चौड़ा हो सकता है । पर जब यह पता लगता है कि केवल 40 मील लम्बे और 28 मील चौड़े, संसार के मानचित्र में केवल एक बिन्दु मात्र के समान स्थान पाने वाले, 'लघु भारत' के विरुद से विभूषित, मारिशस जैसे छोटे से टापू में चार सौ से अधिक आर्यसमाजें हैं, तो दिल्ली का गर्व स्फीत वक्ष भी संकुचित होता प्रतीत होगा ।

फिर भी समस्त संसार के आर्यसमाजों में आर्यसमाज काकड़वाडी (गिरगांव) का, जिसे 'आर्यसमाज बम्बई' का सही नाम दिया गया है, गौरव अक्षुण्ण है । देश-विदेश में फैले आर्यसमाज के विस्तार की चर्चा करना यहां अभीष्ट नहीं है । आर्यसमाज की संस्थाओं आर्यसमाज मन्दिरों, तथा उन संस्थाओं और मन्दिरों की चल-अचल सम्पत्ति का विवरण देना भी यहां अभीष्ट नहीं है । यह भी निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि उक्त आर्यसमाज के भवन से बड़े भवन अनेक आर्यसमाजों के हो सकते हैं, चल-अचल सम्पत्ति भी अधिक हो सकती है, सम्बद्ध गतिविधियों और संस्थाओं का बाहुल्य भी हो सकता है, पर इस सबसे उक्त आर्यसमाज के गौरव में कमी नहीं होती, प्रत्युत वृद्धि होती है, क्योंकि उसका स्थान पितामह या प्रपितामह का है । जिस तरह बुजुर्ग लोग अपने वंश का विस्तार, यशोवृद्धि और समृद्धि देखकर प्रसन्न होते हैं, उसी तरह आर्यसमाज मात्र के गौरव की वृद्धि के साथ इस समाज का गौरव स्वतः और अनायास बढ़ता जाता है ।

कारण ? यह संसार का सबसे पहला आर्यसमाज है, इसे ऋषि ने स्वयं अपने कर-कमलों से स्थापित किया था । यह आर्य जनता का सबसे प्रमुख तीर्थस्थान और प्रेरणास्थल है । इसकी कुछ ऐतिहासिक विशेषताएं हैं, जो अन्यत्र दुर्लभ हैं । वे इस प्रकार हैं—

1 महर्षि दयानन्द ने स्वयं अपने कर कमलों से इसे स्थापित किया । 2 महर्षि ने स्वयं इसके सर्वप्रथम साप्ताहिक अधिवेशन में भाषण दिया । 3 भवन के लिए भूमि क्रय किये जाने पर महर्षि ने स्वयं मन्दिर की योजना तैयार की । 4 महर्षि ने स्वयं मन्दिर की नींव में अपने हाथों से आधार शिला रखी । 5. इस समाजभूमि में बनाई गई खास कुटी में कुछ समय तक निवास कर ऋषि ने उसे पवित्र किया । 6 महर्षि ने इस समाज के सभासदों में अपना नाम अंकित करने की अनुमति दी ।

एक और विशेषता की ओर भी हम ध्यान खींचना चाहते हैं । लाहौर में सर्वप्रथम आर्यसमाज की स्थापना ऋषि-भक्त मुसलमान डा० रहीम खां के निवास-स्थान पर हुई थी और डा० रहीम खां स्वयं आर्यसमाज के सदस्य बने थे । उसी उसी प्रकार आर्यसमाज बम्बई में लगे एक पचास वर्ष पुराने शिलापट्ट से विदित होता है कि जब भवन के विस्तार की आवश्यकता अनुभव की गई तब हाजी अल्लारखा रहमतुल्ला सोनावाला ने सबसे बड़ी राशि—पांच हजार रु० प्रदान की थी । शिलापट्ट पर सबसे ऊपर उनका नाम अंकित है । पूछताछ से पता लगा कि वे नियमित रूप से समाज के साप्ताहिक अधिवेशनों में उपस्थित होते थे और सभा-समाधान में सबसे आगे होकर भाग लेते थे ।

हम यहां आर्यसमाज बम्बई की प्रशस्ति लिखने नहीं बैठे हैं । परन्तु कुछ ऐतिहासिक तथ्यों की ओर संकेत करने के लिए ही यह चर्चा की है । सबसे महत्त्वपूर्ण बात है—आर्यसमाज की स्थापना की तिथि । कुछ विद्वानों का कहना है कि सर्वप्रथम आर्यसमाज स्थापना की तिथि चैत्रशुक्ला प्रतिपदा है, अन्य विद्वान् कहते हैं कि प्रतिपदा नहीं, पंचमी है—प्रतिपदा के दिन तो केवल आर्यसमाज की स्थापना का विचार किया गया था, विधिवत् स्थापना पंचमी को हुई थी । उस समय के दैनिक समाचारपत्रों में छपी खबरों की अस्पष्टता से यह भ्रम पैदा होता है ।

परन्तु विद्वद्वरेण्य आचार्य वैद्यनाथ जी ने (जिन्हें अब 'दिवंगत' कहते कलम कांपती है) समस्त उपलब्ध दस्तावेजों शिलालेखों समाज के पुराने रजिस्टरों और अन्य प्रमाणों के आधार पर यह सुस्थापित कर दिया है कि आर्यसमाज की स्थापना की तिथि पंचमी नहीं, प्रतिपदा है । पंचमी के दिन तो आर्यसमाज का प्रथम अधिवेशन हुआ था । प्रतिपदा के दिन ही आर्यसमाज की स्थापना हो चुकी थी और 60 सदस्य भी बन चुके थे । उन्होंने 'फाउन्डेशन और फारमेशन' शब्दों का समाधान इसी रूप में किया है कि पहला शब्द 'स्थापना' का सूचक है और दूसरा शब्द 'कार्य आरम्भ होने' का । शिरोमणि सार्वदेशिक सभा ने भी यही निर्णय मान्य किया है ।

चैत्र शुक्ला प्रतिपदा समस्त महाराष्ट्र में 'गुडी पड़वा अर्थात् गुढ़ प्रतिपदा' के नाम से जानी जाती है । इसी प्रतिपदा को परम्परा से सृष्टि-रचना का आदि दिवस माना जाता है । इसलिए ऋषि ने भी वैदिक धर्म के प्रचारक आर्यसमाज को आर्य परम्परा के आदि दिवस के दिन ही स्थापित करना उचित समझा । जिस विक्रमी संवत् 1931 में आर्यसमाज की स्थापना हुई थी उस वर्ष यह दिन ईसवी सन् के हिसाब से 7 अप्रैल, 1875 पड़ता है 10 अप्रैल नहीं । इसलिए निष्कर्ष यह है कि भारतीय पद्धति से प्रतिवर्ष आर्यसमाज स्थापना दिवस चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को मनाया जाए और यदि अंग्रेजी हिसाब से मनाना हो, तो प्रतिवर्ष 7 अप्रैल को मनाया जाए । इस वर्ष यह तिथि 18 मार्च को पड़ती थी । आर्यसमाज बम्बई प्रतिवर्ष अपना वार्षिकोत्सव देसी तिथि के हिसाब से चैत्र शुक्ला प्रतिपदा के अवसर पर ही करता है । हमारे विचार से समस्त आर्यजगत् को भी इसी परम्परा का पालन करना चाहिए और अंग्रेजी हिसाब से मनाने की परम्परा का परित्याग करना चाहिए ।

ऋषि दयानन्द अपने नाम से या अपने व्यक्तित्व के आधार पर किसी संस्था की स्थापना नहीं करना चाहते थे । विभिन्न मतमतान्तरों से आच्छन्न देश की दुर्दशा से वे अत्यन्त दुःखी थे और उस दुर्दशा के निवारण का उपाय सोचते रहते थे । वे राष्ट्र के उद्धार के लिए किस प्रकार आतुर थे और किस प्रकार अपने प्रखर तेजस्वी व्यक्तित्व को भी तिरोहित करने को उद्यत थे, इसकी कल्पना सहज नहीं है । उनका मनोगत भाव क्या था, यह उन शब्दों से प्रकट होता है जो उन्होंने अपने उन भक्तों और प्रशंसकों के समक्ष कहे थे जिन्होंने उनसे आर्य समाज की स्थापना का आग्रह किया था । उन्होंने कहा था—

'आप यदि समाज में पुरुषार्थ कर परोपकार कर सकते हो, समाज करलो इसमें मेरी कोई मनाई नहीं । परन्तु इसमें यथोचित व्यवस्था न रखोगे तो आगे गड़बड़ाध्याय हो जाएगा । मैं तो मात्र जैसा अन्य को उपदेश करता हूं वैसा ही आपको भी करूंगा और इतना लक्ष में रखना कि कोई स्वतन्त्र मेरा मत नहीं है । और मैं सर्वज्ञ भी नहीं हूं । इससे यदि कोई मेरी गलती आगे पाई जाये, युक्तिपूर्वक परीक्षा करके इसी को भी सुधार लेना । यदि ऐसा कोई न करोगे तो आगे यह भी एक मत हो जाएगा, और इसी प्रकार से 'बाबावाक्य प्रमाण' करके इस भारत में नाना प्रकार के मतमतान्तर प्रचलित होके, भीतर-भीतर दुराग्रह रखके धर्मान्ध होके लड़ के नाना प्रकार की सद्विद्या का नाश करके यह भारतवर्ष दुर्दशा को प्राप्त हुआ है इसमें यह भी एक मत बढ़ेगा । मेरा अभिप्राय तो है कि इस भारतवर्ष में नाना प्रकार के मत-मतान्तर प्रचलित हैं तो भी वे सब वेदों को मानते हैं इससे वेदशास्त्ररूपी समुद्र में यह सब नदी नाव पुनः मिला देने से धर्म ऐक्यता होगी । और धर्म एकता से सांसारिक और व्यवहारिक सुधारणा होगी और इससे कला कौशल्यादि सब अभीष्ट सुधार होके मनुष्यमात्र का जीवन सफल होके अन्त में अपना धर्म बल से अर्थ काम और मोक्ष मिल सकता है ।"

ऋषि की इस मार्मिक वाणी के मर्म को समझिए । यह संकेत केवल आर्यसमाज बम्बई के लिए नहीं है, समस्त आर्य जनता के लिए है । आर्यसमाज बम्बई के वर्तमान उत्साही कार्यकर्ता अपनी ओर से भरसक ऋषि के मिशन को पूरा करने का प्रयत्न कर रहे हैं । पर 'श्रेयसि केन तृप्यते'—भले काम में तृप्ति कैसी ? सारे संसार के आर्यबन्धु प्रत्येक दिशा में प्रेरणा प्राप्त करने के लिए सदा इसी आर्यसमाज की ओर आशाभरी दृष्टि से देखेंगे । उससे आर्यसमाज बम्बई का दायित्व और अधिक बढ़ जाता है । पर जो लोग दूसरों को उत्तरदायित्व सौंप कर अपने आपको सब दायित्वों से मुक्त समझना चाहते हैं, उनसे बढ़कर अनुत्तरदायी और कौन होगा ? यदि आप चाहते हैं कि आर्यसमाज बम्बई का वह गौरव—जिसका वह पात्र है—अक्षुण्ण रहे, तो अन्य समस्त आर्यसमाजों को भी अपने अपने दायित्वों का वहन करते हुए उसे सदा अपने से आगे चलने के योग्य बनाए रखना होगा । इसी में समस्त आर्यजगत् का हित है ।

मेरी पाकिस्तान यात्रा

प्रो. शेरसिंह प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

अविभाजित पंजाब में 1937 से पहले विधान परिषद् थी। 1935 के भारत सरकार के कानून के अधीन प्रान्तीय विधान सभायें बनीं। पंजाब की विधान सभा 1937 में बनी। पाकिस्तान में पश्चिमी पंजाब की सरकार और विधानसभा ने 1 और 2 फरवरी 1988 को अपनी स्वर्णजयन्ती मनाई। इस अवसर पर उन्होंने पुराने विधायकों और पाकिस्तान की दूसरी विधानसभाओं के अधिकारियो तथा मुख्यमन्त्रियों को भी बुलाया। इंग्लैंड, तुर्की, मलेशिया, ईरान, मोरिशस, तथा भारत से भी विधायकों को बुलाया। मैं 1946 में पंजाब विधान सभा का सदस्य बन गया था, इसलिए मैं भी उस समारोह में सम्मिलित हुआ। इस समारोह में 'विधानसभाओं की कार्य विधि तथा परम्परायें" "विकासशील देशों में लोकतन्त्र का स्थायित्व" तथा विधायकों के कर्त्तव्य" आदि विषयों पर भाषण हुए। सभी देशो से आए हुए प्रतिनिधि बोले। इन चार-पांच दिनों में पाकिस्तान के राष्ट्रपति, प्रधान मन्त्री, मुख्यमन्त्रियों, विधानसभा अध्यक्षों तथा विधायकों से मिलने का अवसर मिला, विदेशी प्रतिनिधियों तथा कुछ आम नागरिको से भी मिलने और विचार विनिमय करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। रेडियो, टेलीविजन पर भी प्रश्नों द्वारा कुछ विषयों पर मेरी प्रतिक्रियाए जानने के लिए मिले। उर्दू दैनिक जंग के प्रतिनिधि ने भी मुलाकात की। अलग से भी मिलने वालो ने पुराने और नये लाहौर में कितना अन्तर दिखाई दिया, भारत सार्इचिन पर क्यों अड़ा हुआ है, परमाणु, पनडब्बी आदि नए हथियार लेकर भारत पाकिस्तान को चुनौती क्यों दे रहा है, पंजाब की क्या स्थिति है, कश्मीर के प्रश्न का हल क्यो नहीं किया जा रहा, स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर जो विचार लोकतन्त्र के सम्बन्ध में व्यक्त किए गए उन पर क्या प्रतिक्रिया है आदि प्रश्न किये जाते रहे।

इस्लामी लोकतन्त्र?

जियाउलहक और जुनेजो ने लोकतन्त्र में अपनी गहरी निष्ठा दिखाई। परन्तु वह लोकतन्त्र इस्लामी लोकतन्त्र होगा पश्चिम का दिया हुआ लोकतन्त्र पाकिस्तान के लिए उपयुक्त नहीं है। मेरे साथ बैठे सरदार श्योकतहयात खां ने कहा जिन्नाह तो पाकिस्तान में धर्म निर्पेक्ष राज्य के पक्षधर थे। उन्होंने इसे एक राजनैतिक स्टंट कहा। मैंने अलग से कुछ मन्त्रियो और विधायकों से भी पूछा उन्होंने भी श्योकतहयात खां की बात का समर्थन किया। तुर्की के प्रतिनिधियों ने बताया कि उनके देश में 99% मुसलमान हैं, फिर भी वहां धर्म निर्पेक्ष राज्य है। उसमें इस्लाम और मजहब का कोई दखल नहीं। ऐसा लगा कि जिया की बहुत सी बातें लोगों के गले के नीचे नहीं उतरती। मैंने भी दूरदर्शन की मुलाकात में यही कहा कि इस्लाम का मुलम्मा चढ़ी हुई जमहूरियत का क्या स्वरूप होगा यह कोई नहीं जान सका।

भारत पाक सम्बन्ध

जब मुझ से 'जंग' के प्रतिनिधि तथा अन्य लोगों ने प्रश्न पूछे तो मैंने स्पष्ट कहा कि हथियारों की दौड़ तो अमेरिका से मिलकर पाकिस्तान ने ही आरम्भ की। पाकिस्तान एक ओर युद्ध न करने की बात करता है और दूसरी ओर नये से नये हैलीकोप्टर, जंगी हवाई जहाज, रडार, पनडुब्बियां, प्रक्षेपास्त्र आदि लेने में लगा हुआ है। भारत तो निरस्त्रीकरण और मित्रता में विश्वास रखता है। साइचिन के बारे में भी प्रश्न किये गये उस पर मैंने कहा कि वह इलाका तो भारत का है, पाकिस्तान छेड़छाड़ करता है तो जवाब तो देना ही होगा। कश्मीर के प्रश्न के हल के लिए भी सवाल किये गये। मैंने कहा कि सभी मामलों का हल शिमला समझौते के अनुसार आपस में बातचीत करके हो सकता है, बयानबाजी से नहीं हो सकता पंजाब समस्या के बारे में भी सवाल पूछे। मैंने कहा कि सिखो को कोई शिकायत नहीं हो सकती। विदेशी शक्तियों और भारत विरोधी तत्वों ने आतंकवाद को जन्म दिया है। मैंने कहा यह बात भी आम है कि पाकिस्तान आतंकवादियों को प्रशिक्षण और साधन दे रहा है।

सम्पन्नता के चिन्ह

40 वर्ष पुराने लाहौर से नया लाहौर दस गुना हो गया है। पाकिस्तान में आमतौर पर और पंजाब में खासतौर पर अरब देशों में काम करने वाले 16 लाख पाकिस्तानियों द्वारा कमाए हुए धन से खुशहाली आई है। अमेरीका आदि से भी मदद आ रही है। खाने-पीने की चीजें आमतौर पर सस्ती हैं (चीनी को छोड़कर) और मजदूरी महंगी है। आयातित कीमती कारें ही सड़कों पर नजर आती हैं। सुजूकी के पुर्जे जोड़कर कार बनाने का काम कराची में शुरू हुआ है, इस लिए वह भी नजर आती है। शहरों का विस्तार जैसे भारत में हुआ, वैसे ही पाकिस्तान में भी हुआ है, परन्तु उद्योग भारत के मुकाबले में बहुत कम हैं। बातों से पता चला कि लोग या तो अमीर हैं या फिर गरीब, मध्यम श्रेणी के लोग बहुत ही कम हैं। गरीब सन्तुष्ट नहीं हैं। रिश्वत की शिकायत तो आम है।

फिरकापरस्ती का बोलबाला

हिन्दुओं की संख्या पंजाब में दो-तीन लाख के लगभग है और उनका एक सदस्य पंजाब की प्रान्तीय विधानसभा में है। सिन्ध विधानसभा में 6 (छ.) हिन्दू सदस्य हैं। और राष्ट्रीय विधान सभा में चार हिन्दू सदस्य हैं। अहमदिया तो इस्लाम से अलग एक अल्पसंख्यक वर्ग बन गया है। शिया सुन्नी में भी काफी मतभेद और झगड़े हैं। मुहाजिरों और पाकिस्तान के मूल निवासियों में भी झगड़े हैं। कराची में तो उनके फिसाद होते ही रहते हैं। हरयाणा से गए हुये मुहाजिर भी पंजाबियों से घुलमिल नहीं पाये, वे उन पर भरोसा भी नहीं करते। वास्तव में पंजाबियों से दूसरे लोग सन्तुष्ट नहीं हैं और पाकिस्तान की सरकार को पंजाबियों की सरकार मानते हैं। कुछ लोगों ने यहां तक भी कहा कि भारत का बटवारा ठीक नहीं था, हम अपने घरों को छोड़कर खुश नहीं हैं। कुछ लोगों ने अपने पूर्वजों का इतिहास भी जानने की कोशिश की और अपने पूर्वजों के बनाये हुए चित्तौडगढ़ के किले को देखने की तीव्र इच्छा प्रकट की। हथियारों की होड़ और साम्राज्यवादी शक्तियोंकी दोनों देशों को लड़ाने कीसाजिश को भी लोग दिल से नापसन्द करते हैं। बातों बातों में कुछ ने यह भी कहा कि समय है जब दोनों देशों के दूरदर्शी नेता बैठकर तनाव और परस्पर अविश्वास की भावना को दूर करें और दोनों देशों में ऐसा जनमत बनायें कि दोनों ही सरकारों को भी उस पर फूल चढ़ाने पड़ें। पाकिस्तान का न अमीर लडाई चाहता है और न गरीब। भारत बडा देश है शक्तिशाली है वह पहल करे।

अतीत की स्मृति

पांच दिनों मे जो स्वागत सत्कार मिला उसकी हम मीठी याद ही लेकर आए हैं। मेरे साथ मेरी धर्मपत्नी गई। हमने नया पुराना शहर घूमकर देखा, हम गुरुदत्त भवन में भी गये, उसका चित्र लेकर आये हैं वहां बालिकाओं का सरकारी हाई स्कूल चल रहा है जिसमें 2500 छात्राएं पढ़ती हैं। जहां शिक्षा संस्थाएं थी, वहां आज भी शिक्षा संस्थाएं ही चल रही हैं।

पाकिस्तान में आज न तो कहने को फौजी शासन है और न ही आपातकालीन स्थिति, परन्तु पूर्णरूप से लोकतन्त्र स्थापित हो गया है, ऐसा भी नहीं लगा। हमारी भेंट जब राष्ट्रपति से हुई तो उन्होंने औपचारिकता के लिए हमसे [illegible] और उनके साथ ही [illegible] को कहा। प्रधान मन्त्री ने भी [illegible] [illegible] पंजाब के मुख्यमन्त्री और विधानसभा अध्यक्ष ने भी बहुत [illegible]। राष्ट्र- यदि हाउस पंजाब विधानसभा का नियम भी भेंट करवाया और स्वयं भी छोटी-छोटी भेंट दीं। इन सब को चीजें साथ रखेंगी ही। हरयाणा के कुछ [illegible] विधायकों ने तो फिर पाकिस्तान आने और घूमकर सब हरयाणा से आये लोगों से मिलने को कहा। उन्होंने भी [illegible] खिलाया, और और मीठे चावल [illegible] उनमें चावल कम और मेवे अधिक थे। ऐसे वातावरण में एक बार भावविभोर होना स्वाभाविक है।

कुछ प्रशंसनीय प्रयत्न

पाकिस्तान में शराब सर्वथा बन्द है और शराब पीने या बनाने वाले को कड़ी सजा दी जाती है। कालिजों और विश्वविद्यालयों में प्रवेश नम्बरों से ही होता है, अपवाद कोई नहीं होता। परीक्षाओं में नकल करने की परिपाटी बिल्कुल बन्द हो गई है। विधायकों को अपने क्षेत्र में छोटी-छोटी योजनायें चलाने के लिए 20 लाख रुपए मिलते हैं, तथा राष्ट्रीय विधानसभा के प्रत्येक सदस्य को 50 लाख रुपये अपने क्षेत्र में योजनायें चलाने के लिए मिलते हैं। इससे विकास के कामों में क्षेत्रों में भेदभाव कम हो जाता है।

कुल मिलाकर पाकिस्तान की पांच दिन की यात्रा बहुत अच्छी रही। स्वर्णजयन्ती के समारोह के कारण एक ही जगह पाकिस्तान के सभी प्रदेशों के शासकों और विधायकों से मिलने का अवसर मिला। बहुत अच्छा हो यदि दोनों देशों का भाईचारा बहाल हो जाए, हथियारों की दौड़ खत्म हो जाए, व्यापार और सांस्कृतिक सम्बन्ध तेजी से बढ़े, लोगों का आना-जाना भी अधिक हो। अफगानिस्तान का मामला सुलझाने से शायद अमरीका पाकिस्तान को थोड़े हथियार दे और उससे इस क्षेत्र में और भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव समाप्त होने में मदद मिले। जनता की यह इच्छा स्पष्ट रूप से देखने को मिली, पाकिस्तान के शासक भी अपना रुख बदलें तो उसमें भारत और पाकिस्तान दोनों का भला है।

आर्यसमाज बाजार सीताराम

आर्यसमाज, बाजार सीताराम, [illegible] 68 वां वार्षिकोत्सव 4 से 10 अप्रैल तक आर्यसमाज मन्दिर में समारोह पूर्वक मनाया जायेगा। जिसमें आर्य जगत् के पूज्य संन्यासियों, महात्माओं, विद्वानों तथा नेताओं के उपदेश, प्रवचन, एवं मधुर भजन होंगे —मन्त्री

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का उत्सव

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा संस्थापित एवं राष्ट्रीय महत्व की संस्था गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार का वार्षिकोत्सव 10 से 16 अप्रैल को होगा। इसमें वेद पारायण यज्ञ, संस्कृत एवं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आदि का कार्यक्रम किया है। —[illegible]

नेपाल का प्रथम आर्य समाजी जिसे फांसी पर चढ़ना पड़ा

[illegible] वर्ष के [illegible] में 520 मील लम्बा तथा 140 मील चौड़ा नेपाल राज्य एक घाटी में स्थित है। यहां नेवार जाति चिर काल से बसती है। उन्हीं के मल्ल उपनाम वाले राजाओं का यहां राज्य था। उनसे राज्य गोरखा नगर स्थित शाह राजाओं ने छीन लिया। इन शाह राजाओं के भारत के राज परिवारों से विवाह-सम्बन्ध होते रहे हैं। नेपाल में पौराणिक हिन्दू धर्म का अत्यधिक वर्चस्व था। मूर्ति पूजा, पशु-बलि, जादू-टोना और तान्त्रिक विचार न केवल सर्व मान्य थे, वरन् उन्हें कानूनी संरक्षण भी प्राप्त था। उनकी अवहेलना करने पर राजदण्ड की व्यवस्था थी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती से बहुत पूर्व एक राजा रणबहादुर विक्रमशाह, (1778 से 1796 ई०) ने मूर्तियों के चमत्कार पर अनेक प्रयोग किये और उन्हें बिल्कुल असत्य पाया। तब उसने निम्नलिखित कार्य प्रजा को मूर्ति पूजा से उपराम करने के लिए किये, ताकि जनता अन्ध विश्वास से निकल कर कर्मशील जीवन व्यतीत करे—

1—उसने [illegible] भवानी की मूर्ति को [illegible] करवाई और बाग्मती नदी में फिंकवा दिया।

2—गुह्येश्वरी देवी की मूर्ति के छेद में बांस डाल कर मथा, यह दिखाने के लिए कि उसके अन्दर कुछ नहीं है।

3—शीतला देवी की, जो बीमारियों का कारण मानी जाती थी, मूर्ति को कुत्ते की बीट का चूर्ण खिलाया ताकि वह प्रजा को बीमार करना भूल जाये।

4—उसने महाकाल भैरव की मूर्ति की नाक भी कुल्हाड़ी से तराश दी ताकि भैरव जनता को दुःखी करना भूल जावे।

5—अन्यथा जाति प्रथा का उल्लंघन करके उसने तिरहुत की एक ब्राह्मण कन्या से विवाह किया।

कितना ही अच्छा होता कि ऐसा क्रान्तिकारी राजा दयानन्द के समय में हुआ होता। पर राजपुरोहित आदि ने षड्यन्त्र करके मरवा दिया।

इस बीच भारतवर्ष में अंग्रेजी राज्य धीरे-धीरे अपने पांव जमा रहा था। अंग्रेजी पद्धति की और अच्छी बातों की तो नेपाल में नकल नहीं हुई, पर शाह राजाओं के एक प्रधानमंत्री जंग बहादुर राणा ने उन्नीसवीं सदी के प्रारम्भ में ही राजा की शक्ति को निरस्त [illegible] अथवा नेपाल सुरक्षित क्षेत्र में जा बसना बताते हैं। जंगबहादुर राणा ने प्रधानमन्त्री का पद भी वंशानुगत घोषित करवा लिया। आमतौर पर यह अधिकार पुत्रों को मिलता है। उत्तराधिकार बड़े भाई से छोटे भाई को प्राप्त होता था न कि पुत्रों को। जंगबहादुर राणा के सत्रह पुत्र थे। नेपाल का तात्कालिक इतिहास इन भाइयों और इनकी सन्तानों के परस्पर षड्यन्त्र और वध का ही इतिहास है।

सन् 1857 में जंगबहादुर राणा ने अंग्रेजों का साथ दिया, उन्हें धन, सेना और शस्त्र दिये, उनके कहने से लखनऊ को हराया और लूटा। बाद में जब नाना साहब और लखनऊ की बेगम हजरत महल भाग कर नेपाल पहुंचे, तो उसने उन्हें शरण नहीं दी।

पं. माधव राव जोशी

पं० माधव राव जोशी प्रसिद्ध ज्योतिषी पं० जयन्नाथ के घर काशी यात्रा के समय पैदा हुए थे। वे संगीतज्ञ और ज्योतिष के ग्रन्थों के गूढ़ अध्ययन-कर्ता बने। बड़े होकर वे राजा के परिवार के 8 वर्ष तक सहयोगी और शिक्षक रहे। जोशी जी 1876 ई० में काशी गये और वहीं 27 नवम्बर को उत्तम गिरी के बगीचे में दयानन्द सरस्वती के दर्शन किए और उनसे शास्त्र-चर्चा की। उनका एक प्रश्न सांख्य दर्शन के अनीश्वरवादी होने के बारे में था। स्वामी जी ने कहा कि यह तो पूर्व पक्ष है जिसका कपिल ने खण्डन किया है। और उत्तर देते हुए निम्न मर्म-स्पर्शी वाक्य कहा—"अशुद्ध टीकाओं के भ्रम में पड़े हुए वेदवादी कष्टमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं और निज जन्मभूमि भारत में अविद्या अन्धकार फैलाकर विदेशियों के गुलाम बन रहे हैं।' बस जैसे एक दीपक से दूसरा दीपक जलता है, माधव राव जोशी के मन में जन्म-भूमि के उद्धार का संस्कार बीज पड़ गया।

जोशी जी नेपाल लौट गये और तत्कालीन प्रधान मंत्री हर्ष जंग के विश्वास पात्र होकर वीरगंज में सप्लाई आफिसर पद पर नियुक्त हो गये। उन्होंने उस समय के एक राजकीय षड्यंत्र में राजा की तीन रानियों को बचाकर रातों रात सुरक्षित पाल्पा नगर तक पहुंचा दिया, क्योंकि प्रधान मंत्री राणा दार्जिलिंग भाग गये थे। जोशीजी भी भारत भाग आये। यहीं काशी में 1893 ई० में उनके पुत्र शुक्रराज का जन्म हुआ।

इस बीच हर्ष जंग के छोटे भाई [illegible] का संकट जारी हो गया और वे उसके साथ नेपाल आ सके। प्रधान मंत्री होने पर उसने इनके उस राजद्रोह की [illegible] रानियों को शरण पहुंचाने के कारण अक्षम्य अपराध था; माफ कर दिया। परन्तु सीमा पर स्थित नेपाली नगर पोखरा में जा बसने की आज्ञा दी। पोखरा में एक वैद्य के घर में रद्दी कागजों के ढेर में सत्यार्थ प्रकाश की एक प्रति उन्हें मिली। जो बीज वपन दयानन्द ने 1876 ई० में किया था, वह सत्यार्थ प्रकाश के आलोक में अंकुरित हो उठा। वहां स्थित जनरल रणवीर जंग को उन्होंने दयानन्द का भक्त बना लिया और 1896 में पोखरा में उन्होंने नेपाल की पहली आर्य समाज स्थापित की।

1905 में जोशीजी के पिता की मृत्यु हुई। उन्होंने 'संस्कार विधि' के अनुसार वेद मन्त्रों से यज्ञ सहित अपने पिता का अन्त्येष्टि संस्कार किया। नेपाल में पहली बार दयानन्द सरस्वती द्वारा उपदिष्ट वैदिक विधि के अनुसार ऐसा किया था। उन्होंने तेरहवीं आदि पर मांसादि की दावत तथा श्राद्ध पर पशुबलि और उसके मांस के वितरण से इन्कार कर दिया।

पौराणिक पंडितों ने राजपुरोहित के यहां शिकायत की। तब राजकीय सिंह दरबार में शास्त्रार्थ आयोजित किया गया। इसमें राजाओं के बच्चों को अंग्रेजी पढ़ाने वाले एक पंजाबी अध्यापक मास्टर गुरुदयाल बी० ए० ने भी जोशी जी की सहायता की थी। जब पशुपति नाथ की मूर्ति को केवल पाषाण बताते हुए उस पर चढ़े भोग व मांस को ग्रहण करने में अपनी असमर्थता प्रकट की तो प्रधान राज राजपुरोहित ने राजा से आज्ञा लेकर कि ऐसे धर्मद्रोही को वे दंड देना चाहते। आज्ञा दे दी गई और लाठियों से राज-दरबार में ही उन पर तथा मास्टर जी पर मार पड़ने लगी। पर्वतीय ब्राह्मणों ने प्रधान मंत्री को धमकी दी थी कि जोशी जी को जेल में नहीं डाला तो वे नेपाल छोड़कर चले जावेंगे।

वास्तव में जोशीजी नेवार जाति के थे और पर्वतीय ब्राह्मण उनके द्वारा वेदाध्ययन और शास्त्रार्थ करने को बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। बस जोशी जी को दो वर्ष का सश्रम कारावास तथा कारा-वासोपरान्त नेपाल से निर्वासन का दण्ड दिया गया। मास्टर गुरुदयाल जी को राज्य-निर्वासन मिला क्योंकि वे ब्रिटिश भारत की प्रजा थे इसलिए मास्टर जी का बाद में कहीं पता नहीं चला। प्रतीत होता है कि इन्हें बीहड़ और दुर्गम नेपाल-भारत मार्ग तय करते समय मार्ग में ही मरवा दिया गया।

जेल में जोशी जी से सड़क कुटवाई जाती थी। इतना ही नहीं, उनके परिवार को जाति-च्युत करवा दिया गया था तथा पढ़ने वाले बच्चों के स्कूलों से नाम काट दिये गये। उनका परिवार सीमा पर स्थित वीरगंज नगर में जा बसा तथा मेहनत-मजदूरी से जीवनयापन करता रहा। दो वर्ष का समय पूरे होने से पहले ही जोशी जी जेल से भाग आये और अपने परिवार को वीरगंज से लेते हुए भारत की सीमा में चले आए। भारत में गोरखपुर, लखनऊ, देहरादून, मसूरी और टिहरी गढ़वाल में अपना परिवार लिए हुए घूमते रहे कि कहीं जीविका तथा बच्चों की पढ़ाई का प्रबन्ध हो सके। इस यात्रा हेतु मार्ग व्यय का प्रबन्ध भी स्थानीय चंदे से ही हो पाता था। अन्त में मेरठ के पं० तुलसीराम स्वामी (प्रसिद्ध-आर्य पंडित) ने उनके पुत्र शुक्रराज की निःशुल्क शिक्षा का प्रबन्ध गुरुकुल सिकन्दराबाद (जिला बुलन्दशहर) में तथा पुत्री चन्द्रकान्ता की शिक्षा का प्रबन्ध मेरठ के एक कन्या विद्यालय में कर दिया।

जोशी जी वापिस वीरगंज गये, पर वहां वातावरण अनुकूल न देख कर वे कलकत्ता पहुंचे। वहां से फिर दार्जिलिंग में वेद प्रचार करते रहे। अनन्तर आर्य संस्थाओं और आर्य नेताओं से परिचय हेतु वे लाहौर, अम्बाला, हरिद्वार व दिल्ली गये। सन् 1915 ई० दार्जिलिंग में आर्य समाज स्थापित की और नेपाल लौट गये ताकि अपनी जन्म भूमि में आर्य विचारों का प्रचार कर सकें।

शुक्रराज कार्यक्षेत्र में

जोशी जी के द्वितीय पुत्र शुक्रराज ने सिकन्दराबाद गुरुकुल में शिक्षा समाप्त की। वे स्नातक हो गये और फिर पंजाब विश्व विद्यालय से शास्त्री और बी. ए. परीक्षा भी पास की। वे डी ए. वी हाईस्कूल इलाहाबाद में हिन्दी-संस्कृत अध्यापक भी नियुक्त हो गये। परन्तु उनके हृदय में स्वदेश (नेपाल), स्वभाषा (नेवारी) तथा स्वजाति (नेवार) का प्रेम उमड़ रहा था। उन्होंने कुछ मान्यताएं सुस्थिर कीं। दयानन्द सरस्वती ने आदि सृष्टि त्रिविष्टप में होना लिखा था। ईश्वर का आदि वेद-ज्ञान अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा के हृदय में प्रकाशित हुआ—ऐसा ऋषि ने लिखा था। शास्त्री जी की यही सोच रही थी कि त्रिविष्टप और नेपाल की एक ही बात है। 'ने' माने नीचा प्रान्त, जहां मनुष्य रह सके। वही उपत्यका नेपाल है। वहां की भाषा नेवारी है और वही वेद की भाषा से मिलती है। इसे सिद्ध करने के लिए उन्होने नेवारी व्याकरण के ग्रन्थ लिखे। नेवारी अथवा नेवा भाषी लोग ही नेवार हैं तथा नेपाल उन्हीं का देश है। यह सब दयानन्द सरस्वती की आर्य, आर्यभाषा एवं आर्यावर्त के सिद्धान्तों की नकल ही थी। आखिर राणा लोग नेपाल में बाहर से ही गये थे और वहां के अधिपति बन बैठे थे। शास्त्री जी अपने देश में अपने ही लोगों का वर्चस्व चाहते थे। इसी

[शेष पृष्ठ 10 पर]

सांस्कृतिक प्रदूषण बड़ा खतरा

—विश्वम्भर प्रसाद 'गुप्त बन्धु'—

हमारे परिवेश में जल थल वायु ही नहीं बल्कि वे सारे घटक महत्वपूर्ण हैं जिनका थोड़ा बहुत भी प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ता है जैसे हमारे विचार आचरण और संस्कृति आदि। अतः इन सबको प्रदूषण से बचाना चाहिए। विपरीत बुद्धि यानी सदाचरण त्यागकर कदाचरण अपनाने से विनाश ही होता है।

सभ्यता और संस्कृति

भारत में 75 प्रतिशत लोग देहातों मे रहते हैं और उनका मुख्य धंधा कृषि है। भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार कृषि रहा है। भारतीय सभ्यता और वैदिक संस्कृति वनों और खेतो पर ही फली फूली है। अन्य सभी उद्यम इसी के पूरक हुआ करते थे। उद्योग भी जो थे, कुटीरोद्योग या ग्रामोद्योग ही बने रहे। भारतीय संस्कृति उद्यम प्रधान तो थी उद्योग प्रधान कभी नहीं रही, स्वार्थ या सम्पत्ति पर बल कभी नहीं रहा। मानव इसका केन्द्र और मानवता इसका धर्म है।

औद्योगीकरण पर आश्रित पाश्चात्य सभ्यता इसके ठीक विपरीत है। वहां उद्योग के क्षेत्र में युक्ति उपाय या प्रकारांतर से यन्त्रों द्वारा अपनी सम्पत्ति बढ़ाने का प्रयास ही किया गया। इस उद्योग प्रधान सभ्यता का केन्द्र पूंजी है और धर्म स्वार्थ है। तभी तो मालिक मजदूर के झगड़ों से सारा वातावरण विषाक्त होता रहता है।

उत्पादन बढ़ाकर सबको आवश्यकता की चीजें मुहैया करने के लिए औद्योगीकरण आवश्यक है किन्तु किस रूप में यह सोचने की बात है। वर्तमान औद्योगिक प्रगति का मूल उद्देश्य कुछ लोगों द्वारा शेष लोगों के शोषण के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। अधिक से अधिक लाभ कमाने की दृष्टि से उत्पादन बढ़ाया जाता है फिर उसकी खपत के लिए कृत्रिम मांग पैदा की जाती है और इसके लिए व्यापक प्रचार करके जो अधिकांश झूठा होता है जन सामान्य को बहकाया जाता है। इस मनोवृत्ति के उदाहरण बड़े बड़े भड़कीले, रंगबिरंगे और लम्बे चौड़े विज्ञापन हैं, जो लोगों को अहितकर वस्तुएं जैसे शराब सिगरेट, आदि भी शौक से मोटी मोटी कीमतें देकर खरीदने को प्रेरित करते रहते हैं। प्रेस रेडियो सिनेमा, टेलीविजन आदि सब इन्हीं उद्योगपतियों पूंजीपतियों आदि के हाथ में हैं और ये जो विष मनुष्य के मन में घोलना चाहते हैं डाल देते हैं। शुद्ध चिन्तन की शक्ति खोकर व्यक्ति उनके लिए उपभोक्ता बाजार का एक पुर्जा बनकर रह जाता है।

संस्कृति-अपहारक शिक्षा

पहली औद्योगिक क्रान्ति इंग्लैण्ड में हुई थी डरों कच्चा माल एशिया और अफ्रीका के देशों से वहां आता था और पक्का माल बनकर वापस उन्हीं देशों मे बिकने आता था। शोषण की यह मनोवृत्ति 1854 और 1859 के उन खरीतों से साफ झलकती है जिनके फलस्वरूप कलकत्ता में तत्कालीन उदारदलीय हागसन के शब्दों में 'संस्कृति-अपहारक अंग्रेजी शिक्षा देने के लिए विश्वविद्यालय स्थापित हुआ था। खरीतों में कहा गया था कि इससे योग्य और सच्चे कर्मचारियों के चुनाव के लिए पर्याप्त क्षेत्र मिलेगा और साथ ही विदेशी माल के प्रति अभिरुचि उत्पन्न होगी तथा कच्चे माल का उत्पादन बढ़ेगा, ये दोनों ही इंग्लैण्ड के निर्माता उद्योग के लिए संजीवन है। अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से मैकाले की अभिलाषा थी कि भारत का "सभ्य" समाज रक्त और वर्ण से भारतीय रहते हुए भी रुचि प्रवृत्ति और आचार-विचार में अंग्रेज हो जाए।

संस्कृति का प्रदूषण

इस प्रकार पूर्वी देशों की मानसिक शान्ति भंग करके उनमें आचार-विचार और संस्कृति का प्रदूषण आरंभ किया गया और जोर-शोर फैलाया जाता रहा। साम्राज्यवाद का अन्त होने के बाद भी अंग्रेजी शिक्षा से पैदा हुई मानसिक गुलामी फैलती ही गयी, रुचि विचार और चिंतन प्रदूषित होते ही रहे और शिक्षा जैसे पवित्र और सशक्त माध्यम का उपयोग मानव संस्कार और मानवता विकास के लिए न करके हमारा सांस्कृतिक परिवेश बिगाड़ने के लिए किया जाता रहा। इसी अनुपयुक्त शिक्षा ने मानव-मानव में घृणा और द्वेष पनपाया है नितान्त भौतिकतावादी संस्कृति को जन्म दिया है जो पश्चिमी हरें की जीवन पद्धति की देन है जिसमें इस जीवन को भोगना ही आदर्श है जीना नहीं।

पाश्चात्य शिक्षा द्वारा फैलाई हुई आधुनिक संस्कृति नहीं विकृत ही है, शायद मानव इतिहास में पहली संस्कृति है जिसने मानवीयता और मानवीय आधार की सब मौलिक समस्याओं की उपेक्षा की है। भारतीय संस्कृति के अनुसार जीविका उपार्जन के तीन स्पष्ट मार्ग हैं—उत्तम समाज को अधिक से अधिक देकर कम से कम लेना जैसे शिक्षा—मध्यम समाज की उचित सेवा करके उसका उचित प्रतिदान लेना जैसे व्यापार, और अधम कम से कम सेवा करके समाज से ज्यादा से ज्यादा ऐंठ लेना, जैसे चोरी-ठगी।

आजकल जो पैसे में तैयार होने वाली दवा की गोली के लिए उपभोक्ता से तीस-चालीस पैसे वसूल करना व्यवसाय कुशलता और चतुरता समझी जाती है। मूल्य वस्तु का नहीं जरूरत का बल्कि विवशता का ही लिया जाता है। जानबूझकर घटिया माल बनाया जाता है ताकि मांग बनी रहे कारखाने चलते रहें। टिकाऊ माल बनना पैसे के प्रति गद्दारी समझी जाती है। मरम्मत या कुछ पुर्जे बदलायी गई चीज खरीदने से भी महंगी कर दी जाती है, ताकि लोगों की पुरानी चीजें फेंक कर नई खरीदनी ही पड़ें। यह बरबादी का अर्थ शास्त्र ही औद्योगिक प्रगति का मूल मंत्र है।

उपयुक्त शिक्षा का अभाव

बुराई की ओर आकृष्ट होना मनुष्य का स्वभाव है, किन्तु अपने को संयम रखना, मन का निग्रह करना तृष्णा का दमन करना मनुष्य का स्वधर्म है। स्वभाव और स्वधर्म में टकराव होने पर स्वधर्म की ओर झुकने के लिए प्रयास की आवश्यकता होती है जिसकी शिक्षा बचपन से स्कूलों में ही मिलनी चाहिए। क्योंकि बचपन में अपनाए हुए संस्कार और विचार जीवन भर कायम रहते हैं। किन्तु जो सांस्कृतिक प्रदूषण मिटा सके ऐसी उपयुक्त शिक्षा आजकल दी ही नहीं जाती। हमें मिल रही है पाश्चात्य शिक्षा, जिससे हम भी पश्चिमी रंग में रंग जाएं। किन्तु जिस पश्चिम को लोग आदर्श मान बैठे हैं जिन पाश्चात्य विलासी प्रवृत्तियों को अपनाने के लिए लोग लालायित रहते हैं जिन विकसित देशों को लोग अपना स्वर्ग समझते हैं उनका कच्चा चिट्ठा अब सबके सामने है। संसार के सबसे धनी देश संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रति दिन 28800 अपराध होते हैं। वहां प्रति 31 सेकण्ड पर हिंसात्मक अपराध होता है, प्रति 33 सेकण्ड पर एक मोटर गाड़ी चोरी जाती है हर 5 सेकण्ड पर चोरी होती है, प्रति 10 सेकण्ड पर सेंधमारी, हर 78 सेकण्ड पर राहजनी-डकैती, हर आठ मिनट पर स्त्री के साथ बलात्कार तथा हर 27 मिनट पर एक हत्या होती है। वहां के स्वास्थ्य की क्या कहिए ! दुनिया भर में सबसे ज्यादा डाक्टर अमेरिका में है। वहां चिकित्सा पर सबसे ज्यादा खर्च होता है। लोग खुराक में विटामिन भी सबसे ज्यादा खाते हैं, फिर भी फौज के लिए स्वास्थ्य परीक्षा में 70% उम्मीदवार अयोग्य पाए जाते हैं। वहां के विद्यार्थी अल्प पोषित होते हैं। यह है पश्चिम की ऊंची दुकान का फीका पकवान। वहां से हम क्या सीख सकते हैं ?

सांस्कृतिक प्रदूषण का मूल कारण

पश्चिमी सभ्यता दो तीन शताब्दियों में ही पश्चिम को खोखला कर चुका है और पूर्व में भी फैल रही है। सारी दुनिया का माहौल दूषित हो रहा है, परिवेश पूरी गहराई तक दूषित हो रहा है और इसका कारण बताया जाता है औद्योगिक या वैज्ञानिक प्रगति किन्तु मूल कारण तो है दूषित मानसिकता, जो पाश्चात्य शिक्षा से मिल रही है और जिसके तेजी से विश्वव्यापी प्रसार के लिए कलकत्ता विश्वविद्यालय सरीखे सैंकड़ों हजारों गगन चुम्बी अंग्रेजी स्कूल कान्वेन्ट और कालेज दुनिया भर में खुले हैं। इन प्रासाद पुंजों में से निकले हुए स्नातकों का मूल्यांकन करने से पता चलेगा कि भवन तो फैल गये हैं, मस्तिष्क सिकुड़ गये हैं। विश्वविख्यात शिक्षा शास्त्री डा॰ राधाकृष्णन के शब्दों में "भौतिक सुख पाने के लिए आज भीतरी चरित्र की बलि चढ़ा दी गई है। असली शिक्षा वह है जो सम्पूर्ण मानव तैयार करे। ऐसी शिक्षा की जड़ें भारत की पुरानी परिपाटी में है।"

परिवेश सुधारने के लिए समग्र दर्शन जरूरी है। औद्योगिक प्रगति रोकने की नहीं बल्कि उसके पीछे काम करने वाली दूषित विचार धारा ही बदलने की आवश्यकता है। मानव प्रयासों को उपयुक्त दिशा देनी चाहिए संस्कृति को विकृत होने से बचाना चाहिए। इसके लिए एकमात्र इलाज है—भारतीय शिक्षा जिसमें मानवता के तत्व कूट-कूटकर भरे हैं। लोग अपना जीवन ठीक तरीके से बिता सकें यही उसका उद्देश्य है और "सर्वे भवन्तु सुखिन" ही उसका आदर्श है। भारतीय संस्कृति सभी विरोधों का सामना करके भी बनी रहने वाली शाश्वत संस्कृति है, समग्र चिन्तन की संस्कृति है, और सच्चे अर्थों में मानव संस्कृति है। अतियन्त्रीकरण से दूर ग्रामोद्योगों से भरपूर कृषि प्रधान देश की कृषि प्रधान विचारधारा ही ग्राम्य संस्कृति या भारतीय संस्कृति का मूल है।

154 बी लोक विहार, दिल्ली—34

स्व॰ विश्वबन्धु स्मृति समारोह

आर्यजगत के उद्भट विद्वान स्व॰ आचार्य विश्वबंधु शास्त्री की स्मृति में एक समारोह 8 मई 88 रविवार को गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली में आर्य पुरोहित सभा के तत्वाधान में आयोजित किया जायेगा। समारोह के अवसर पर स्व॰ आचार्य जी के परिवार को एक लाख रुपये की थैली एवं प्रशस्ति-पत्र भेंट किया जायेगा। इसमें समस्त आर्य जनों का सहयोग अपेक्षित है। समिति का एक प्रतिनिधि मण्डल शीघ्र ही इसके लिए सम्पर्क अभियान शुरू करेगा।

—[illegible]

लोकशक्ति-राजशक्ति का द्वन्द्व

—विद्यासागर विद्यालंकार—

हमारे स्मृतिकारों ने लोकशक्ति और उसकी सीमाओं को मान्यता प्रदान करने में मतभेद रखते हुए भी 'लोकशक्ति की सत्ता स्वीकार की' गयी। इसी के सीमित रूप ग्राम-व्यवस्था को इकाई रूप में राजनीतिक और धार्मिक स्तर पर 'एक प्रतिष्ठित संस्था' के रूप में मानकर प्राय. सभी स्मृतिकारों ने उसके क्षेत्र और सीमा का उल्लंघन न करने की व्यवस्था की। लोकशक्ति की इसी मूल धारणा और चेतना के विस्तार से समय-समय पर गण-राज्यों का उदय होता रहा, अनेक अपने युग के शक्तिशाली गणराज्य रहे। न केवल आन्तरिक राजशक्ति से लोहा लेते रहे, अपितु सिकंदर जैसे विदेशी आक्रमणकारियों को देश की सीमाओं से बाहर जाने को विवश किया। फिर भी लोकशक्ति पूर्ण विकसित रूप में अपने को स्थापित नहीं कर सकी। राजशक्ति सैद्धान्तिक स्तर पर स्मृतिकारों के 'प्रजा रंजनात् राजा' प्रावधान को सिर आंखों पर बैठाती रही, लोक-कल्याण के कार्यों की घोषणाएं करती रही, आने वाली पीढ़ियों की स्मृति में अपना स्थान बनाये रखने के लिए शिला-लेख भित्तिचित्र, स्तम्भ, उत्खनन आदि अनेक अवशेष छोड़ गयी, पर अपनी सर्वाधिकारवादी प्रकृति को राजशक्ति ने कभी नियन्त्रित नहीं किया। इन प्रावधानों की स्थिति आज के संवैधानिक प्रावधानों से भिन्न नहीं है। लोक और जन को राजशक्ति की 'प्रजा' के रूप में परिवर्तित कर दिया गया, राजशक्ति की श्रेष्ठता प्रतिपादित करने के लिए लोकतंत्र या जनतन्त्र की नहीं प्रजातन्त्र (राजशक्ति की प्रजा, राजा द्वारा शासित जनता) शब्द को प्रचारित किया गया।

वस्तुत लोकशक्ति और राजशक्ति का संबंध व्यष्टि और समष्टि, व्यक्ति और समाज का ऐसा संबंध है जिसमें राजशक्ति तथा समष्टि और समाज की स्थिति ऊंची होती है। यदि समष्टि अथवा समाज सास्थानिक रूप धारण कर लें और वे किसी वर्ग-विशेष, वंश-विशेष या अधिनायक तंत्र के नियन्त्रण में चले जायें तो व्यष्टि और व्यक्ति अन्यथा सिद्ध हो जाता है अथवा वह वर्ग-वंश अधिनायक तन्त्र के हाथों का मात्र खिलौना बन जाता है। इस स्थिति से मुक्ति पाने के संघर्ष होते हैं। लोकशक्ति की आत्म-स्थापना के इन प्रयत्नों के विभिन्न देशो में विभिन्न परिणाम सामने आये हैं। पश्चिमी देशों और भारत में लोकतन्त्र प्रणाली का उदय इन्हीं प्रयत्नों के कारण हुआ। परन्तु दोनों प्रणालियों में उल्लेखनीय अन्तर है। पश्चिमी देशों ने लोकतन्त्रीय प्रणाली विकसित करते समय अपने अनुभवों और संघर्षों, देश-काल को ध्यान में रखकर लोकशक्ति को राज्य-व्यवस्था में सहभागी बनाया, मूल रूप में उसी की प्रभुता को मान्यता प्रदान की। इस व्यवस्था के अन्तर्गत प्रशासनतंत्र के नियामक के रूप में लोकशक्ति के प्रति-निधित्व का विकास किया. परन्तु प्रभुता प्रतिनिधितन्त्र में नहीं, लोकशक्ति में ही निहित रही।

भारतीय लोकतंत्र का आधार लोक-शक्ति और राजशक्ति का दीर्घकालीन संघर्ष और उससे प्राप्त अनुभव नहीं है। हमारे संघर्ष के इतिहास में ब्रिटिश आधिपत्य से पूर्वतक ग्राम-व्यवस्था इकाई रूप में विद्यमान रही जो ब्रिटिश आधि-पत्य के साथ समाप्त हो गयी, जिसका नये रूप में अभी तक उद्धार नहीं हो सका। लोक शक्ति का अधिकतम प्रति-निधित्व करने वाले गणराज्यों की शक्ति के स्रोतों और राजशक्ति के विरोध में उनके पतन के कारणों का कोई ऐतिहासिक और तार्किक विश्लेषण नहीं किया गया जबकि बुद्ध के प्रवचनों मे इनके संकेत उपलब्ध हैं। प्रत्येक विदेशी आक्रमण, प्रत्येक संकटकाल में लोकशक्ति जागृत होकर स्वतन्त्र रूप से अथवा राजशक्ति के सहयोग के साथ दृढ़ इच्छाशक्ति और संकल्प के साथ क्रियाशील हुई है। हमारे अनुभव और संघर्ष-पद्धति पश्चिमी देशों के अनुभवों और संघर्ष-पद्धति पश्चिमी देशों के अनुभवों और संघर्ष पद्धतियों से भिन्न रहे हैं, हमारी शासन प्रणालियां सैद्धान्तिक और व्यावहारिक दोनों स्तरों पर भिन्न रही हैं। परन्तु स्वतन्त्र भारत के नवनिर्माण के लिए इन सम्पूर्ण अनु-भवों को भुला दिया गया। अपने अनु-भवों को पश्चिमी अनुभवों से समृद्ध करने के स्थान पर उन्हें विस्मृतकर दिया गया। प्रतीत यह होता है कि ब्रिटिश शिक्षा-पद्धति ने हमारे अनुभवों को ही हमारे स्मृति-पटल से धो-पोंछ नहीं दिया, अपितु मुस्लिम काल के प्रत्यासन्न अनु-भवों तथा लोक और राजशक्ति की संघर्ष मे सहभागिता को भी अनदेखा कर दिया गया। केवल विभिन्न देशों के विधानों और संविधानों से आकर्षक प्रावधानों का संकलन कर देश का ऐसा संविधान बना दिया गया, अवसर मिलते ही जिसका उल्लंघन करने के लिए सत्ता सदा तत्पर और सजग रहती है।

राजशक्ति और लोकशक्ति (राज-शक्ति के रूप में उभरते चन्द्रगुप्त मौर्य और चाणक्य तथा पुष्यमित्र, आक्रमक जनपद एवं पातनप्रस्थ की प्रबल लोक-शक्ति) की सहभागिता का एक उदाहरण सिकन्दर के आक्रमण का विरोध है। इसी प्रकार का एक और उदाहरण शकों के प्रतिरोध के लिए मालवगणों और गौतमी पुत्र सातकर्णि की सहभागिता है। ऐतिहासिक संदर्भों से यह भी प्रतीत होता है कि सामान्यत. राजशक्ति आज की राज्य-व्यवस्था जैसी कोई कठोर और निश्चित प्रणाली नहीं थी, अधिकांशत लोकानुमोदित थी। इसलिए उनकी सह-भागिता ऐतिहासिक प्रक्रिया का अंग थी। यूरोपीय और केवल अनुकरण पर इतिहास लिखने वालों ने भारतीय लोक-शक्ति और राजशक्ति की इस सहभागिता की परम्परा से अपरिचित के कारण 1857 के स्वतन्त्रता अभियान के विस्फोट को स्वतन्त्रता संग्राम न मानकर उसे 'गदर' या 'विद्रोह' मान लिया। राज-शक्ति और लोकशक्ति के संबंधो के बारे में पाश्चात्य चिन्तन की चाहे जो दिशा रही हो, भारतीय राजनीतिक अनुभव यह है कि सामान्यत दोनों का एक-दूसरे के साथ सामंजस्य रहा है। अनेक बार चतुर राजशक्ति ने इसे लोक-निष्ठा और लोकभक्ति के रूप में परिवर्तित कर लिया है। ब्रिटिश काल की रियासतो के राजा आज तक इस निष्ठा और भक्ति को भुना रहे हैं। एक ओर परम्परागत लोक-भक्ति, दूसरी ओर लोकतन्त्रवाद और समाजवाद की घोषणा करने वाले राज-नीतिक दल पुरानी राजशक्ति का समर्थन और सहयोग प्राप्त करने के लिए उसके अवशेषो को सुरक्षित रखे हुए हैं। वर्त-मान राजशक्ति और पूर्व राज शक्ति की यह सहभागिता न केवल भारतीय राज-नीतिक परम्परा को जीवित रखे हुए है, अपितु इसी सहभागिता के साथ लोक-निष्ठा और लोकभक्ति को अर्जित करने और उसे दीर्घकालीन बनाने के लिए सभी प्रकार के छल-बल-प्रचार आदि विविध साधनों का उपयोग किया जाता है। पूर्व राजशक्ति के प्रति लोकनिष्ठा का लाभ वर्तमान राजशक्ति आज चुनावों में उठा रही है। आज के चुनावों में पूर्व राज-शक्ति के प्रति जिस निष्ठा के दर्शन होते हैं, 1857 के संग्राम में भी वही निष्ठा राजशक्ति को प्राप्त थी, तभी वह संघर्ष जारी रख सकी। यदि यह भक्ति तत्का-लीन बिखरी राज-सत्ताओ को प्राप्त न हुई होती तो सन् 57 का संग्राम चल ही नहीं पाता।

लोकशक्ति की ठीक-ठीक पहचान हमारा संविधान नहीं करता। इसके विपरीत आकर्षक विदेशी वैधानिक प्राव-धानो के संकलन से उद्भूत संविधान मात्र नारा बनकर रह गया है जिसे सत्ता ने केवल ओढ़ा है, उसे आत्मसात् कर लोक-शक्ति को सुदृढ़ बनाने का प्रयत्न नहीं किया, जैसा कि अन्य लोकतन्त्रीय व्य-वस्थाओ में दिखायी देता है। ब्रिटिश लोकतन्त्र में आनुवंशिक प्रधानमन्त्री होने का एक-आध ही उदाहरण है जबकि भारतीय लोकतन्त्र में (राजनीतिक दलों में भी) आनुवंशिक नेतृत्व की एक परम्परा स्थापित हो गयी है। इसी मनो-वृत्ति का यह परिणाम है कि राजशक्ति को आनुवंशिक बनाने के पक्ष-पातियो का हमारी राजनीति मे उल्लेखनीय अभ्युत्थान हुआ है। पूर्व राजवंश, सामन्त, क्षत्रप, जमींदार-नवाब सब एकजुट होकर एक स्थान पर वर्तमान आनुवंशिक राज-शक्ति से जुड़ते जा रहे हैं। वर्तमान आनुवंशिक राजशक्ति के भीतर ही भीतर जो दरारें पड़ रही हैं, उसका लाभ भी इसी वर्ग के अन्य लोगो को मिल रहा है, लोकशक्ति को नहीं।

लोकशक्ति को संगठित होने में पर्याप्त समय लगता है। लोकतन्त्र की स्थापना का यह मूल प्रयोजन है कि वह लोकशक्ति को संगठित और एक सूत्र मे बांधे रखे। परन्तु यह राजशक्ति के हितों के विपरीत है। इसलिए वह लोकशक्ति को धार्मिक, जातिगत, आर्थिक (पूंजी-वादी एवं मार्क्सवादी) आदि वर्गों-खेमो-शिविरों में विभाजित करने के निरन्तर उपाय करती है। कट्टरपंथियों को राज-नीतिक समर्थन और सुविधाएं प्रदान कर उन्हें और अधिक कट्टर पंथी बनाती है, देश-समाज-राष्ट्र को विभाजित करके उनकी मांगे स्वीकार कर उन्हें दृढ़ता और शक्ति प्रदान करती है और इस अजेय शक्ति के आधार पर विघटनशील तत्त्वों को और नयी मांगें प्रस्तुत करने को प्रोत्साहित करती है। राजशक्ति द्वारा लोकशक्ति को विभाजित करने का विरोध होने पर ब्रिटिश काल में आविष्कृत अमोघ अस्त्र का प्रयोग कर विरोधियो को 'साम्प्रदायिक' घोषित किया जाता है, जबकि वह कट्टर साम्प्रदायिक शक्तियो को विभिन्न प्रकार के संरक्षण प्रदान करती है। इस विद्रूपता की सीमा तक पहुंची विसंगति को राजशक्ति देखने में असमर्थ रही है।

लोकतन्त्र के मूल प्रयोजन को सहज शक्ति प्रदान करने के लिए राज्य के धर्म-निरपेक्ष रूप का संविधान मे प्रावधान किया गया था। पश्चिमी लोकतन्त्रो मे भी धर्म-निरपेक्षता की बात की जाती है, परन्तु वह इसलिए अनावश्यक है क्योंकि प्राय वे सभी लोकतन्त्र एक धर्म या उस धर्म की शाखा से बंधे होते हैं। साथ ही इन पश्चिमी देशो मे राज्यतन्त्र का रूप बदलने से पहले और बाद मे बहुमत के धर्म के अतिरिक्त किसी अन्य धर्मको जीवित नहीं रहने दिया गया। परन्तु भारतीय समस्या इससे बिल्कुल भिन्न है। राजनीतिक कारणों से यहां एकदम परस्पर विरोधी धर्म एक साथ रहने को बाध्य हुए। इस बाध्यता का ब्रिटिश काल में ब्रिटिश शक्ति ने लाभ उठाया। अब उनके ही प्रशिक्षित शिष्य स्वतन्त्र भारत में उसका लाभ उठा रहे हैं। आज की राजशक्ति के लोग उसी ब्रिटिश परम्परा के लोग हैं, जो धर्म निरपेक्षता को राज-नीतिक अस्त्र के रूप में प्रयुक्त करते हैं। उसके प्रयोग के लिए किसी औचित्य का प्रश्न नहीं होता, केवल सत्ता से चिपके रहने का लक्ष्य होता है। एक विशेषता यह भी देखने मे आती है कि जो धर्म देश से जितना अधिक कटा रहता है, अथवा कटता जाता है उसके तोषण-

(शेष पृष्ठ 10 पर)

पत्रों के दर्पण में

जिस घर में वेद नही

मानवता के मौलिक सुधार की जड यदि वेद पाठ का प्रचलन रहेगा, तो आज मानव हिंसा वृत्ति, भेदभाव आदि विघटन दूर होगा और कहीं एकता का सूत्रपात होने की आशा किरण दिखाई पड सकती है। इसी अभाव से अत्यन्त दु खी होकर स्व० स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, प० धर्म देव वेदमार्तण्ड ने 1975 में आर्य समाज स्थापना शताब्दी पर देहली के उसी पण्डाल में ही विश्ववेद परिषद् की स्थापना की थी, जिसके सर्व प्रथम अध्यक्ष वह स्वय ही बनायें गये और प० वीरेन्द्र शास्त्री साम-वेद भाष्यकार आदि अनेक अन्य विद्वान् मत्री आदि निर्वाचित हुये। केन्द्रीय कार्यालय प० वीरेन्द्र शास्त्री (वीरेन्द्र मुनि वानप्रस्थ) के गृह निवास सी।817 महानगर लखनऊ मे बनाया गया जो अब भी वही है। चण्डीगढ़ में वि० वे० परिषद का कार्य सर्व प्रथम यहां से आरम्भ किया कि जो परिषद् के सदस्य हैं उनके घरो में तो अवश्य चारों वेद पहुचाये जायें, प्रत्येक पूर्णिमा को वेद गोष्ठियो का आयोजन पौर्णमास्येष्ठि यज्ञ के साथ किया जाय।

अफसोस कि जो धर्म ग्रन्थ सम्पूर्ण विश्व का प्रमुख ईश्वर कृत धर्मग्रन्थ "वेद" है जिस की महिमा सभी मतवादी धर्म ग्रन्थों मे भी गाई गई है और जो सृष्टि का आरम्भिक ज्ञान ग्रन्थ है जिससे ही सभी विश्ववासियों ने रोशनी ली, उसकी ओर केवल महर्षि दयानन्द ने ही प्रबल शक्ति और पूर्ण ओज के साथ ध्यान दिलाया और इसके लिये आर्य समाज की स्थापना कर इसको यह महान कार्य सौंपा और कहा कि जो कोई पूछे कि तुम्हारा धर्म क्या है तो कहना "वेद" परन्तु समाज ने इस पर ध्यान नहीं दिया। जिसके लिय प० धर्म देव जी वेद मार्तण्ड को अलग इसी ही कार्य के लिये विश्व वेद परिषद् की स्थापना करनी पडी। उनके देहावसान के पश्चात् इसके लिये अनेक आय विद्वान मनीषियों से प्रार्थना की गई। केन्द्र भी अति निर्बल हो रहा है प० वीरेन्द्र जी आंखों और टांगों से भी निर्बल हो गये हैं। स्वामी वि[illegible] जी ने यह कार्य आरम्भ ही नहीं किया अपितु वह इसके लिये यह आन्दोलन और अभियान चलाना चाहते हैं, निसदेह आर्यजगत् के लिए [illegible] सौभाग्य प्रद है। अत मेरा विनम्र निवेदन है कि आप सीघ्र ही इस विश्व वेद परिषद् की बागडोर अपने कर कमलों में लें। यथा शक्ति हम इसमें योग दान दे रहे हैं और देते रहेंगे। हां आर्य समाज में अब पहले जैसे दीवानों आर्य मिशनरियों का सर्वथा अभाव है। अन्यथा मैं चण्डीगढ़ में वेद मन्दिर बनवाना चाहता हू, एक दो दानी महानुभाव भी धन देने को तैयार हैं। अगर स्वामी जी महाराज इस कार्य को अपनी इच्छानुसार सम्भाल लें, तो परिषद् का केन्द्रीय कार्यालय और वेद ज्योति पत्रिका भी यहा से निकाली जा सकती है और सरकार से अनुदान भी लेने में सफल हो जायेंगे। वेदपति परमेश्वर का ही कार्य है। महर्षि दयानन्द की विशेष वसीयत है।

—आशुराम आर्य 1594/7 सी चण्डीगढ़-160019

विश्वविद्यालयो में हिन्दी

सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने अपने ग्रन्थ "लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया" में हिन्दी को भारत उप महाद्वीप की लिंग्वा फ्राका का नाम दिया था। इसी क्रम में भारत की स्वतन्त्रता से पूर्व लोकमान्य तिलक, महर्षि दयानन्द, महात्मा गांधी, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, जस्टिस शारदा चरण मित्र, रवीन्द्र नाथ ठाकुर, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी आदि ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार किया। स्वतन्त्रता के बाद राष्ट्रभाषा हिन्दी को भारत सघ की राजभाषा घोषित किया गया और 26 जनवरी 1950 से सविधान लागू होने के साथ-साथ हिन्दी भारत सघ की राजाभाषा हो गई।

देश को स्वतन्त्र हुए 40 वर्ष हो गए हैं किन्तु निहित स्वार्थों के वश मे होकर कुछ लोग हिन्दी के प्रति अनादर की भावना पैदा करने की कोशिश में लगे हुए हैं। कई विद्यालयो और शिक्षा केन्द्रों में देश की राष्ट्रभाषा और राजभाषा हिन्दी के प्रति असम्मान की भावना पैदा करने का प्रयत्न किया जाता है। विद्यार्थियों और शिक्षा केन्द्रों मे देश की राष्ट्रभाषा और राजभाषा हिन्दी के प्रति असम्मान की भावना पैदा करने का प्रयत्न किया जाता है। विद्यार्थियों के मनों में तो हिन्दी को अंग्रेजी की तुलना में घटिया भाषा सिद्ध करने की और उसके प्रति मजाक बनाने की भावना भी पैदा करने की अनुचित कोशिश की जा रही है विश्वविद्यालयों तथा विद्यालयों में युवावस्था के छात्र छात्राओं को हिन्दी के प्रति आकर्षित करना हर भारतवासी का कर्त्तव्य है। ऐसा प्रयत्न करने से अपनी भाषा के प्रति सम्मान की भावना पैदा करने का यह अर्थ नहीं है कि किसी विदेशी भाषा के प्रति कोई असम्मान पैदा करने का यत्न है। अत नवयुवकों/नवयुवतियों को जागृति देने के लिए और वातावरण बदलने की दृष्टि से विद्यालयों/महाविद्यालयों में प्रत्येक माह में सभाए आयोजित की जाए। जिसमें भारतीय भाषाओं की एकरूपता उनकी निकटता, शब्दावली का सामजस्य और वैज्ञानिकता पर विद्वानों के व्याख्यान कराए जा सकते हैं ये सभाए ऐसे समय में की जाए जब सभा के पश्चात् भी अन्य पीरियड होने वाले हों। ताकि ऐसे भाषणों में विद्यार्थियों की उपस्थिति पूरी हो। प्रत्येक कक्षा में हर महीने एक पीरियड ऐसा रहे। जिसमें उन्हें भारत की पुरातन संस्कृति, सभ्यता, सारे देश में एकात्मता और भारतीय भाषाओं की उन्नत स्थिति पर बोलने के लिए कहा जाए। इस महान् कार्य में सभी भारतवासियों का सहयोग अनिवार्य है।

दर्शनसिंह प्रचार मन्त्री केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद्, सरोजनी नगर, नई दिल्ली

बैंक ड्राफ्ट हिन्दी में

अभी तक अनेक लोगों की यह धारणा रही है कि बैंक के डिमांड ड्राफ्ट, केवल अंग्रेजी में ही जारी हो सकते हैं। अत डिमांड ड्राफ्ट के आवेदन कई बार अंग्रेजी में भर दिए जाते हैं और उसके आधार पर बैंक की शाखाएं ऐसे ड्राफ्ट, अंग्रेजी में बना देती हैं। कई बार आवेदन हिन्दी में दिए जाने पर भी बैंक कर्मचारी डिमांड ड्राफ्ट अंग्रेजी में बना देते हैं। इससे जनता को काफी असुविधा होती रही है और हिन्दी प्रेमियों की खिन्नता भी। भारत सरकार के बैंकिंग प्रभाग की राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने अब यह निश्चय किया है कि हिन्दी भाषी क्षेत्रों में ही नहीं गुजरात, महाराष्ट्र पजाब राज्यों में भी सभी राष्ट्रीयकृत बैंकों की शाखाए डिमांड ड्राफ्ट, हिन्दी में तैयार करें। यदि ग्राहक द्वारा आवेदन में व्यक्ति या फर्म आदि का नाम हिन्दी मे लिखा गया है तो डिमांड ड्राफ्ट हिन्दी में बनाने के लिए आवेदन में लिखे गए नाम के अनुरूप ही नाम लिखे जाएंगे, अंग्रेजी में भरे गए आवेदन के प्रसग में ग्राहक की सहमति से हिन्दी में ड्राफ्ट जारी किए जाएगे। उपर्युक्त निर्णय की सार्थकता तभी है जब बैंकों की सभी शाखाए इसका वास्तव में अनुपालन [illegible] हिन्दी प्रेमियों का भी यह कर्तव्य है कि वे डिमांड ड्राफ्ट बनवाते समय आवेदन हिन्दी में भरें।—हरिबाबू कसल ई-9/23, वसन्त विहार, नई दिल्ली-57

गोहत्या और कांग्रेस

कांग्रेस के महामन्त्री ए० ओ० ह्यूम द्वारा स्थायी कांग्रेस समितियों को लिखा गया 5 जनवरी, 1988 का पत्र—

(सर्वथा निजी और गोपनीय)

प्रिय महाशय,

हमारे भूतपूर्व सभापति महोदय की अनेक मुसलमान महानुभावों से बातचीत हुई उससे पता चला कि जो मुसलमान कांग्रेस की हलचल से अपने को अलग रखे हुए हैं उनमें से अनेक के मन में यह आशका घर किये हुए है कि हिन्दुओं की सख्या अधिक होने से वे कांग्रेस में किसी भी समय ऐसा कोई प्रस्ताव पास करा सकते हैं जो मुस्लिम हितों के विरुद्ध हो। यह कहने की तो जरूरत ही नहीं कि मेरी तरह वह (भूतपूर्व सभापति) भी निश्चित रूप से जानते हैं कि एशिया के अन्य देशों और युरोप के निवासियों की तो बात ही क्या, हिन्दू भी कभी कुछ ऐसा नहीं करेंगे, क्योंकि वे मुसलमानों को भी अपने समान इसी देश के निवासी मानते हैं। और उनके हित, सुख और सन्तोष को अपना हित, सुख और सन्तोष मानते हैं। परन्तु अज्ञानी मनुष्यों की किसी भी समुदाय में कमी नहीं। आपको भले आदमियों की याद होगी जिन्होंने एक बार कांग्रेस में गोहत्या को दण्डनीय अपराध करार देने का प्रस्ताव पास कराना चाहा था। उस मामले में भी, मुझे भय है, कुछ मुसलमान यही महसूस करते हैं कि उस समय कांग्रेस के सभापति मुसलमान न होते तो उसे पेश करने से रोका नहीं जा सकता था। ऐसी हालत में यह वांछनीय है कि इसके लिये कोई निश्चित नियम ही बना दिया जाय, जिससे ऐसी गलतफहमी की सभावना ही न रहे अतएव मैंने इस सम्बन्ध मे एक नियम का प्रारूप बनाकर भूतपूर्व सभापति महोदय को पेश किया था, जिनसे निःसन्देह हम आशा करते हैं कि अलग रहने वाले मुसलमानों को आगामी वर्ष में पूरी तरह कांग्रेस का साथ देने को राजी कर सकेंगे। उन्होंने (बदरूद्दीन तैय्यब ने) उसे पसद किया और वहां के अनेक मुसलमानों को भी इसके बारे में बताया, जिन्होंने यही कहा कि ऐसा नियम बन जाय तो इस आंदोलन से हार्दिक सहयोग करने में उन्हें कोई हिचकिचाहट नहीं रहेगी।

यह नियम मैं अब आपके पास भेज रहा हू। मुझे आशा है कि आप मुझे आश्वासन दे सकेंगे कि आगामी कांग्रेस में आपकी समिति ऐसा नियम बनाने का समर्थन करेगी। यदि सभी स्थायी कांग्रेस समितियों की ओर से हमारे भूतपूर्व सभापति महोदय को मैं ऐसा आश्वासन दे सकू तो उससे उनकी कठिनाइयां बहुत हद तक दूर हो जाएगी। निश्चय ही आप इस बात से सहमत होंगे कि यह नियम उचित और आवश्यक ही नहीं है बल्कि मुसलमानों को जबकि हम अपने भाई मानते हैं तो उनके चाहने पर इसे स्वीकार करने में हमें कोई संकोच नहीं होना चाहिए।

हमारे भूतपूर्व सभापति महोदय अपने सभी सहधर्मियों को [illegible] और [illegible] हिन्दुओं को भ्रातृ भावना का [illegible] कि मैं जानता हूं कि [illegible] आश्वासन दे सकें, यह बहुत जरूरी है। अतः मेरा अनुरोध है कि आप [illegible] जल्दी से जल्दी उत्तर भेजने की कृपा करें।—आपका ए० ओ० ह्यूम।

प्रस्तोता—डा० [illegible] कुमार [illegible], [illegible]

नेपाल का प्रथम

(पृष्ठ 5 का शेष)

हेतु पर्वतीय राजपुरोहित ब्राह्मणों का वर्चस्व समाप्त करना जरूरी था। ऐसा दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रस्थापित आर्य मान्यताओ से ही सम्भव था।

इस प्रकार धार्मिक क्रांति और उसके माध्यम से अपने देश में अपना राज अपना धर्म व अपनी भाषा—इन महान् महत्त्वाकांक्षाओ से उद्वेलित हो शुक्रराज शास्त्री इलाहाबाद की नौकरी की उपेक्षा करके पवी मातृ भूमि में जा पहुचे। उन्होंने अपने देश में आकर आर्य समाज का प्रचार आरम्भ कर दिया—अपने पिताजी के समान। अतएव पौराणिक पडितो और राजपुरोहित हेमराज से वे शत्रुता मोल ले बैठे' प्रधान मत्री राणा चन्द्रशमशेर ने सिह दरबार मे उनका शास्त्रार्थ राजपुरोहित से मूर्ति पूजा पर ही करवाया। उन्होने चन्द्रशमशेर की प्रशसा मे काव्यमय प्रशस्ति-पत्र भी प्रस्तुत किया परन्तु मुकदमा चालू रहा और यह माना गया कि यह परिवार नेपाल के धार्मिक नियमो की अवहेलना करता है। तब शास्त्री जी नव विवाहिता पत्नी को लेकर इलाहाबाद चले गये। पर प्रधान राणा ने जो वहा का न्यायाधीश भी होता था और इस प्रकार Judge, Jury तथा Jailor तीनो के कार्य अजाम देता था, फैसला दिया कि—

"दयानन्दी मत प्रचार गरोदे शमा अशान्ति मचाउ। नेह रुलाई। देश निकाला॥"

—अर्थात शुक्रराज शास्त्री को देश निकाला तथा बडे भाई अमर राज व छोटे भाई वाक्पति राज—दोनो को दो दो वर्ष का कठोर सश्रम कारावास का दण्ड दिया गया।

भारत में रहते हुए श्री शुक्रराज महामना मालवीय जी के सम्पर्क मे आए और उन्हीं के कहने से दार्जिलिंग में हिन्दू महासभा की स्थापना की। मालवीय जी के परामर्श से ही उन्होंने स्वदेश अपनी केवल समाज सुधार का काय करने की राणा से अनुमति मागी। राणा की अनुमति मिल गई। मालवीयजी के पत्र से प्रेरित होकर राणा ने नेपाल में हिन्दूसमाज की स्थापना में सहयोग दिया। शास्त्री के कहने से राणा ने बाल विवाह के निषेध का कानून भी पारित किया और कन्याओं की शिक्षा के लिए पाठशाला खोल कर शुक्रराज की बहन चन्द्र कान्ता को सौंप दी।

शास्त्री जी ब्रह्मसूत्र का भाष्य छपवाने के लिए कलकत्ता गए और वहां सुभाष चन्द्र बोस महात्मा गांधी और पडित नेहरू से मिलकर उन्हें नेपाल की राणाशाही के अत्याचारों से अवगत कराया। कलकत्ता में ही उनका और उनके भाई वाक्पतिराज का प्रजा परिषद के विश्वेश्वर प्रसाद कोईराला आदि कार्यकर्ताओ से परिचय हुआ। लौट कर दोनो भाइयों ने प्रजा परिषद् की मांगों के सम्बन्ध मे पत्रक छापकर बांटे अन्त मे नेपाल के इन्द्रचौक मे एक विशाल रैली का आयोजन किया। उस रैली मे शुक्रराज शास्त्री ने तानाशाही के विरुद्ध और प्रजातंत्र के पक्ष में जो ओजस्वी भाषण दिया उसके कारण राजद्रोह के अभियोग में वे गिरफ्तार कर लिए गए।

गिरफ्तारी के पाचवें दिन ही उनकी पत्नी ने एक कन्या को जन्म दिया। पर प्रसूति के समय उचित देखभाल न होने के कारण जच्चा-बच्चा दोनों दिवंगत हो गए।"

अन्त में श्री शास्त्री को इसी अपराध में सर्वस्व-हरण और मृत्युदण्ड का हुक्म सुनाया गया और आदेश के तीसरे दिन ही 29 जनवरी सन् 1941 ई०को सुनसान स्थान पर उन्हें पेड से बांध कर फांसी पर लटका दिया गया।

मरते समय उनसे अन्तिम इच्छा पूछी गयी तो उन्होंने निर्भयता पूर्वक कहा - "मेरा नाम शुक्रराज है। यूरोप में भी मेरी ही नामराशि वाले सुकरात को मृत्यु दण्ड दिया गया था। सुकरात की तरह मैं भी सहर्ष मृत्यु का वरण करूंगा। पर मैं शाप देकर जाऊंगा कि अकारण मेरा प्राण हरण करने वाली यह राणाशाही नेपाल में अब अधिक दिन नहीं टिकेगी।"

सन् 1947 मे भारत स्वतंत्र हो गया। उसके बाद महाराज त्रिभुवन बिक्रमशाह ने किसी तरह आखेट के बहाने तथा नेपाल के भारतीय दूतावास में शरण ली। राजदूत के परामर्श से नेहरू जी के आदेश से जब भारतीय वायु सेना नेपाल के आकाश मे मडराने लगी, तब राणाओ ने हथियार डाल दिये। राणाशाही समाप्त हो गई शुक्रराज शास्त्री का शाप सिद्ध हो गया।

लोकशक्ति और

(पृष्ठ 7 का शेष)

प्रसादन के उतने ही अधिक प्रयत्न किये जाते हैं। यह आत्मघाती प्रवृत्ति आज की राजशक्ति की विशिष्टता है। कोई भी राज्य या राजशक्ति जब किसी धर्म या धर्म समूह के अधिक निकट हो जाते हैं, अपनी लोक-विरोधी आकाक्षाओ की पूर्ति में उसे सहायक बनाता है, वह धर्म-निरपेक्ष नही रह पाता। इस प्रकार लोकतत्र के मूल प्रयोजन की सिद्धि में वह राजशक्ति बाधक बन जाती है और प्रकारान्तर से लोकतत्र को समाप्त करने की दिशा में बढ़ रही होती है। आज की राजशक्ति को यदि इसी शब्दावली से जोडना हो तो यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि यह बहुमत-धर्म-निरपेक्ष, परन्तु अल्पसख्यकधर्म-सलग्न राजशक्ति है।

जिस प्रकार लोकशक्ति को धार्मिक शिविरों में विभाजित कर उनके बीच पहले से विद्यमान दीवारो को और ऊचा उठाया गया है, उसी प्रकार जनजातियों-गिरि-जनो-वनवासियों-प्रान्तरवासियों के मूल रूप उनकी परम्पराओ और उनकी सस्कृति को सुरक्षित रखने का नारा पुन. लगाया गया है। स्वर्गीय नेहरू जी के इस विषय के परामर्शदाता फादर वैरियर एलविन ने यह नारा सबसे पहले स्वतन्त्र भारत मे लगाया था। जब फादर एलविन ने यह नारा लगाया था तब उसके सरक्षण मे देश के पूर्वोत्तर प्रान्तर में झारखण्ड में, मध्यप्रदेश के पर्वतों और वनों में निवास करने वाले देशवासियों का तेजी से ईसाईकरण किया जा रहा था। इस प्रक्रिया का परिणाम यह हुआ कि पूर्वांचल में ईसाई जनसख्या 80 प्रतिशत से भी अधिक हो गयी। झारखण्ड भी पीछे नहीं रहा और मध्यप्रदेश मे भी ईसाईयो ने उल्लेखनीय प्रगति की इन्ही क्षेत्रो मे विघटन के आन्दोलनो और आतंकवाद ने पूरी शक्ति के साथ सिर उठाया। इस नारे की पुनरावृत्ति एक नये राजनीतिक सकेत की सूचक है। जिस प्रकार लोकशक्ति को दुर्बल बनाने के विभिन्न उपाय किये गये हैं, उसी प्रकार यह भी एक उपाय है। यह कार्य लोकतन्त्र की आड़ मे किया जा रहा है और राजशक्ति, विशेषत आनुवशिक राजशक्ति की सुरक्षा के लिए उठाया गया एक नया राजनीतिक और सास्कृतिक आक्रमण है। यदि लोकशक्ति के इस वर्ग का धार्मिक दृष्टि से ईसाई बनना स्वीकार किया जा सकता है, पाश्चात्य जीवन-पद्धति स्वीकार करने की उनकी मांग मानी जा सकती है, पृथक् राज्य-निर्माण कर परिवर्तित लोगों को सन्तुष्ट किया जा सकता है और इस प्रकार लोकशक्ति को क्षीण किया जा सकता है तो तात्कालिक चुनाव-परिणामो को ध्यान में रखकर उन्हें यह भी समझ लेना चाहिये कि वे राजशक्ति का साथ अधिक दिन तक नही दे पायेंगे।

वस्तुत. सविधान के प्रावधान किसी विशिष्टता को बनाये रखने के लिए नहीं हैं। वे तो धीरे धीरे राष्ट्र के विभिन्न अगों को समान स्तर, समान अधिकारों के साथ एक-दूसरे से जोड़ने के हैं। इस प्रक्रिया में स्वय राजशक्ति को लोकशक्ति मे परिवर्तित होना होता है। इसमें आनुवशिक राजशक्ति की स्थापना का कोई विकल्प नहीं है। कोई भी विकल्प अन्तराल को बढ़ाने वाला सकटपूर्ण स्थिति की ओर ले जाने वाला सिद्ध होगा।

स्वामी सच्चिदानन्द योगी के अभिनन्दन की योजना

श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय गुरुकुल गौतम नगर के सस्थापक 82 वर्षीय स्वामी सच्चिदानन्द योगी (पूर्व नाम आचार्य राजेन्द्रनाथ शास्त्री) के अभिनन्दन की योजना बनाई गई है। उसके अन्तर्गत एक अभिनन्दन ग्रन्थ और कम से कम एक लाख रु० की निधि स्थापित करने का निश्चय किया गया है। अभिनन्दन ग्रन्थ में आचार्य जी की जीवनी, योग सम्बन्धी और वैदिक वाङ्मय सम्बन्धी लेख, गुरुकुल गौतम नगर का इतिहास तथा गुरुकुल के पूर्व छात्रो का सचित्र विवरण प्रकाशित होगा।

उनके नाम से स्थापित निधि का उपयोग निर्धन छात्रो की सहायता, आर्ष ग्रन्थों के अनुसन्धान और प्रकाशन तथा सस्कृत के प्रसार में किया जाएगा।

गुरुकुल गौतम नगर के पूर्व छात्रों से, वे भले ही इस समय कहीं भी और किसी भी स्थिति और पद पर हों, निवेदन है कि वे अपना सक्षिप्त जीवन-परिचय और अपना पासपोर्ट आकार का चित्र भेजकर कृतार्थ करें। इस अभिनन्दन-यज्ञ में उचित आहुति प्रदान करने के लिए आपकी आर्थिक सहायता (कम से कम 101 रु०) का भी सहर्ष स्वागत होगा।

स्वामी ओमानन्द सरस्वती
अध्यक्ष

आचार्य हरिदेव व्याकरणाचार्य
सयोजक

अभिनन्दन समारोह समिति, गुरुकुल गौतमनगर, यूसुफ सराय, नई दिल्ली-110049

आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया

आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया जो कि छात्राओ का उच्चकोटि का गुरुकुल है, का वार्षिक उत्सव 14, 15 मई 88 को समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। उत्सव से एक सप्ताह पूर्व यज्ञ होगा। इस समय इस गुरुकुल मे 65-70 बालिकाओं को नि शुल्क शिक्षा दी जा रही है। पिछले वर्ष गुरुकुल की रजत जयन्ती के अवसर पर भारत भर की आर्य समाजों, स्त्री आर्य समाजों एवं आर्यजनों ने जो सहयोग दिया उससे गुरुकुल में नए कमरे बन गए हैं और कुछ चार दीवारी भी बन गई है।

समस्त आर्य जनता से प्रार्थना है वे अभी से यह तिथि अंकित कर लें और यथासमय गुरुकुल के उत्सव पर पधारें यह गुरुकुल दिल्ली से 100 कि० मी० पर है। आप अपनी आर्थिक सहायता चैक बैंक ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया (अलवर) एव आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के पते पर भिजवा सकते हैं।

—रामनाथ सहगल, मन्त्री

अद्भुत वैदक यज्ञ

(पृष्ठ 2 का शेष)

यातायात के जितने साधन हैं उनका मुख्य देवता अग्नि ही तो है। 'इण् गतौ' और 'अगि गत्यर्थे' इन धातुओ से ही अग्नि शब्द बनता है। हममे जब तक प्राण रूप अग्नि है तभी तक हमे गति है। प्राण गए और देह गति शून्य हो गया।

चेतन मे गति आती है ज्ञान से। इन दोनों प्रकार की शक्ति को हम पा सकें। एक प्राणाग्नि तो दूसरी ज्ञानाग्नि। इन दोनो को एक ही शब्द मे कहना चाहे तो "इषे प्रार्पयतु' यजुर्वेद के पहले मन्त्र की प्रथम प्राथना! हे देव इषे उत्तम अन्न अर्थात् "अन्नो वै प्राण" प्राण व ज्ञान की सप्राप्ति मुझे करा दीजिए। जो बात आरम्भ मे कही गई वही बात अन्त मे दोहराई जा रही है।

"उदये सविता रक्त रक्त चास्तमयते तथा' उदय होते समय सुय लाल होता है और जब अस्त होता है तब भी लाल ही होता है। इसी प्रकार सुख हो चाहें दुख 'महता एक रूपता' सज्जन लोगो का रूप सदा एक जैसा ही रहता है।

जब मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र को राज्याभिषेक का समाचार दिया गया कि आपको कल राज गद्दी पर बैठना है तब और जब कुछ समय बाद उन्हें वनवास की सूचना दी गई, तो कवि कहता है कि दानो स्थितियो मे राम के मुख मडल पर एक ही जैसे भाव थे। कर्तव्य का पालन करने वाले के लिए देश, काल, स्थिति का कोई महत्व नही होता वह कर्तव्य के लिए जीता है। 'इद न मम्' वह अपने लिए नही जीता।

याज्ञिक का जीवन यज्ञमय होता है। यजनशील होता है। कत्तव्य प्रधान होता है। वह अग्नि के समान होता है। यही कत्तव्य भावना उसे सुपथ पर ले जाती है। कबीर ने इसी बात को यू कहा है—

लाली मेरे लाल की,
जित देखू तित लाल।
लाली देखन मैं गई,
मैं भी हो गई लाल।।

यज्ञ करते करते याज्ञिक का जीवन यज्ञमय हो जाए। यज्ञाग्नि को प्रदीप्त करते करते उसकी जीवनाग्नि धधक उठे। अग्निमय जीवन ही याज्ञिक का जीवन है।

जो कुछ सग्रह वह करता गया। धन सम्पत्ति ऐश्वय उसे वह औरो के कल्याण के लिए बिखेरता गया। इसी बिखेरन मे "इद न मम" की भावना प्रस्फुटित होती है।

"शत हस्त समाहर,
सहस्र हस्त सकिर"

सौ हाथो से कमाओ और हजारो हाथो से बिखेर दो। कमाने का नाम यदि ज्ञान है तो बिखेरने का नाम विज्ञान है। ज्ञान का नाम आदान है तो विज्ञान का नाम प्रदान है। यही अग्नि का गुण है हर द्रव्य को ले लेती है और उसे हजारगुना करके बिखेर देती है।

सारा विज्ञान इसी अग्नि के आदान प्रदान गुण पर खडा हुआ है। पैट्रोल को खीचना और उसे शक्ति मे बदल कर गतिशील कर देना।

याज्ञिक यज्ञ पर बैठकर इसी विज्ञान का अभिनय करता है। घी को चम्मच मे भरता है और अग्नि मे डाल देता है। इसी प्रक्रिया से समस्त शिल्पविद्या का निर्माण हुआ है। याज्ञिक इजीनियर है, घृत का स्थान, पैट्रोल, ऑयल, डीजल या गस ने लिया है अग्न्याधन होता है तो मशीनें भागने लगती हैं।

यज्ञ मे और शिल्पविद्या मे एक सम रूपता है। सूक्ष्म दृष्टि से जो देख पाएगा वह जान लेगा। इसी अग्नि से ऐश्वय की प्राप्ति होनी है। यही ज्ञान का पथ है।

पर समिधा के लिए एक शर्त अनिवार्य है। जिसे भुला दिया गया। हर समिधा यज्ञ मे जलाई नही जाती। ऐसी समिधा जिसके जलने से प्रदूषण न फैले, दुगन्ध न फैले उसका प्रयोग किया जाना चाहिए।

किन्तु आज जो समिधा शिल्प विद्या के क्षेत्र में जल रही है वह प्रदूषण फैलाने वाली है। अत किसी निरापद साधन की समिधा की खोज होनी चाहिए जो निरापद हो। या फिर मशीनों मे जलने वाले पदार्थों मे गाय का घी मिलाकर परीक्षण किया जाना चाहिए, जिससे यह यज्ञ सुचारु रूप से चले और प्रदूषण न फैलने पाए। अन्यथा हमारा मार्ग कटकाकीर्ण, पाप युक्त कुटिल हो जाएगा। परमात्मा हमारी रक्षा कर, इस प्रदूषण की दुखदायी स्थिति से, विनाश से हमे बचाए। "युयोधि" दूर रखें।

यही शिल्प विद्या और कमकाड की अन्तिम शर्त है कि परिणाम सुखदायी हो। सुपथ पर ले जाने वाला हो। दुखदायी न हो, कुपथ पर ले जाने वाला न हो।

दैनिक यज्ञ की इस विधि के उपरान्त अब हम सामान्य प्रकरणस्थ वहद यज्ञ के विशेष मन्त्रो पर आगे के लेखो मे विचार करेंगे।

—4 5-75?, महर्षि दयानन्द मार्ग,
हैदराबाद 500027

विद्वद भनन्दन—समारोह

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के अन्तगत स्व० श्री दीपचन्द जी आय की पुण्यस्मृति मे "आर्यरत्न" की उपाधि स्वर्णपदक, नकदराशि एव शाल से प्रति वर्ष एक विद्वान सम्मानित किया जायेगा।

इस वष ट्रस्ट की समिति के निणयानुसार यह सम्मान पुरस्कार ऋषि बोधोत्सव पर श्री प० विशुद्धानन्द जी मिश्र (बदायू) को देना था पर अब वह कायक्रम आय समाज, न ? (दिल्ली) के वार्षिकोत्सव पर 3 अप्रैल को होगा।

प्रवासी गुरुकुल का उद्घाटन

प्रवासी गुरुकुल महाविद्यालय, आदश नगर अजमेर का उद्घाटन समारोह 1 से ? अप्रैल तक सम्पन्न होगा। समारोह का अध्यक्षता महाराज सुदर्शन देव शाहपुराधीश और उद्घाटन डा० सत्य केतु विद्यालकार करेगे। स्वामी आनन्द बोध सभा के मुख्यातिथि होगे।

—स्वामी शक्ति वेश

रामलाल कपूर ट्रस्ट की हीरक जयन्ती

रामलाल कपूर ट्रस्ट (पंजीकृत) का हीरक जयन्ती समारोह 10 अप्रैल को प्रात 8 से 3 बजे तक आयोजित किया जाएगा। यह समारोह विरजानन्द आश्रम, बहालगढ मे सम्पन्न होगा।

आर्य समाज करोलबाग का उत्सव

आय समाज मन्दिर, करोल बाग, नई दिल्ली का 56 वां वार्षिक महोत्सव 17 अप्रैल से 8 मई तक धूम-धाम से मनाया जाना निश्चित हुआ है। इस अवसर पर 17 से 24 अप्रैल तक योग शिविर आय समाज मन्दिर मे प्रात 5 30 से 7 30 तक दैनिक सन्ध्या-यज्ञ के साथ ही सम्पन्न होगा। 24 अप्रैल से 30 अप्रैल तक अजमल खा पाक मे कथा, 1 से 8 तक यज्ञ प्रवचन वार्षिक उत्सव आदि। 23 अप्रैल को 1-30 से 5 तक शोभायात्रा आय समाज से आरभ होगी। —रामलाल मलिक सयोजक

आर्ष गुरुकुल होशगाबाद

आर्ष गुरुकुल होशगाबाद का हीरक जयन्ती समारोह बडी धूम धाम के साथ 25 से 29 मई तक मनाया जा रहा है। जिसमे आय जगत के उच्च कोटि के सन्यासी विद्वान, आय नेता एव भजनोपदेशक पधार रहे हैं। समस्त शिक्ष विद, एव धम प्रेमी सज्जनो से निवेदन है कि इस पावन अवसर पर गुरुकुल की सर्वागीण उन्नति हेतु तन, मन, धन से सहयोग करें।

आर्यसमाज स्थापना दिवस

आर्य समाज कोई मत, या सम्प्रदाय नही है बल्कि सत्य सनातन वैदिक धम है जिसने न केवल देश की स्वतत्रता प्राप्ति मे महत्वपूर्ण योगदान दिया है अपितु राष्ट्रीय एकता व अखडता को सुदृढ करने के लिए भी सदैव आगे बढ कर आहवान किया है। यह उद्गार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली द्वारा मावलकर हाल, नई दिल्ली मे 19 मार्च को आयोजित 113वें आय समाज स्थापना दिवस के अवसर पर व्यक्त किए। समारोह के मुख्य अतिथि दिल्ली के महापौर श्री महेन्द्र सिंह साथी ने कहा कि आज हम आर्य समाज के झडे के नीचे आकर ही विदेशी शक्तियो के इशारे पर देश को तोडने वाली ताकतो से लोहा ले सकते हैं, यह केवल आय समाज ही है जो देश की एकता व अखडता को बचा सकता है। आयसमाज ने स्वाधीनता आदोलन को भी नई दिशा प्रदान की।

समारोह मे सासद रामचन्द्र विकल पूव केन्द्रीय मन्त्री एव आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाण के प्रधान प्रो० शेर सिंह दैनिक मिलाप सन्देश के सपादक श्री नवीन सूरी, स्वामी अग्निवेश, डा० महावीर मीमासक, डा० प्रशान्त वेदालकार श्रीमती शकुन्तला आर्य तथा आर्य प्रादेशिक सभा के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल ने भी सम्बोधित किया। सभा की अध्यक्षता स्वामी रामेश्वरानन्द तथा सचालन डा० शिवकुमार शास्त्री ने किया।

आचार्य विश्वबंधु स्मृति समारोह

स्वर्गीय दर्शन वाचस्पति आचाय विश्वबन्धु शास्त्री की स्मृति मे 8 मई, 1988 को प्रात 11 बजे वेदविद्यालय गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली-49 मे समारोह होगा जिसमे उनके परिवार को आर्थिक सहायता के रूप मे आय बधुओ से एकत्रित राशि भेंट की जाएगी।

वे मुलतान मे गुरुकुल रामपुर के आचाय रहे, आय कन्या महाविद्यालय भरतपुर के आचाय रहे गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के कुलाधिपति रहे आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के उपप्रधान रहे और आय प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान रहे। लेखन और वक्तृत्व कला के धनी शास्त्राथ समर के महारथी, वेद-दशन-उपनिषद् व्याकरण निरुक्तादि के अव्याहत गति प्रवक्ता ऐसे व्यक्ति के उठ जाने से आय समाज की अपूरणीय क्षति हुई है।

विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न आचाय विश्वबन्धु की फक्कड स्वभाव के कारण अर्थोपार्जन मे कभी विशेष रुचि नही रही, जिसका परिणाम उनके परिवार को उनके दिवगत हो जाने के पश्चात् अधिक कष्टकारी सिद्ध हो रहा है।

समस्त आर्यजनता से निवदन है कि वह इस देव ऋण को चुकाने मे आर्थिक सहायता देकर कृताथ करें।

प्रेमपाल शास्त्री	मेघश्याम वेदालकार	वेदप्रकाश श्रोत्रिय
प्रधान	मन्त्री	सयोजक

स्व० आचार्य विश्वबन्धु स्मृति समारोह समिति
कार्यालय—आर्यसमाज शक्तिनगर, दिल्ली-7

यू० 108/81 लायसेंस टू पोस्ट विदाउट प्रिपेमेंट
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० 39/57
Delhi Postal Regd. No D (C) 409
N D. P.S.O ON 30/31-3-88, 3 अप्रैल, 1988

कुलाची हंसराज मॉडल स्कूल, अशोक विहार दिल्ली

श्री अरुण गोविल प्रसिद्ध अभिनेता 'रामायण' के राम, नसरी स्कूल का उदघाटन करते हुए।

स्कूल की बालिका श्री एम के० मल्होत्रा ऐजुकेशन एडवाइजर का स्वागत करते हुए

डीएवी पब्लिक स्कूल, मस्जिद मौठ नई दिल्ली

अभिनेता विश्वजीत का स्वागत करते हुए प्रिंसिपल श्रीमती के० महाजन

श्री शान्ति प्रकाश बहल का अभिनन्दन

श्री शान्ति प्रकाश बहल के डी ए वी के मन्त्री निर्वाचित होने पर आय समाज ग्रेटर कैलाश के अध्यक्ष श्री चमन लाल आनन्द उनका माल्यापण करके अभिनन्दन कर रहे हैं।

श्री देवदत्त सन्तोषी

आर्य रविवेद प्रचारिणी सभा तथा इटरनेशनल डी०ए०वी० कालेज मोरिशस के प्रधान श्री देवदत्त सन्तोषी कुछ दिनो से भारत की यात्रा पर आए हुए हैं। दिल्ली मे उनका निवास डी ए वी अतिथि गृह है। उन्होने अपने पवित्र धन मे से पांच सौ रुपये सूखा राहत कोष मे दान किए हैं।

आवश्यक सूचना

'आय जगत्' का 17-4 88 का अक महात्मा हसराज अक होगा। अत 10 4 88 का अक प्रकाशित नही होगा।

—संपादक

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की अमूल्य कृति

कुलियात–संन्यासी

हिन्दी मे पहली बार प्रकाशित हो रही है—

इतिहास के मूल्यवान तथ्यों का अनावरण करने वाली, अनेक चुनौतियों का उत्तर देने वाले महान् सन्यासी की लौह लेखनी का चमत्कार है—कुलियात-सन्यासी। काल के प्रवाह को मोड देने वाले साहसी योद्धा की बेबाक रचनाए पढिये और समय रहते जागिए।

आकार—23 × 36—16 मैपलियो कागज-आकर्षक कपडा बाइंडिंग—लागत मूल्य मात्र 35 रुपये। शीघ्र अग्रिम मूल्य भेज कर अपनी प्रति घर बैठे प्राप्त कीजिए।

क्रान्ति-प्रकाशन

तपोवन आश्रम देहरादून-248008

नारायणदत्त जी का टकारा को दान

मैं दो तीन साल से नियम पूर्वक टकारा जाता हू—प्रबन्ध की दृष्टि से आपकी जितनी सराहना की जावे वह थोडी है—भोजनालय के बतनो के लिए मैंने अपनी सामर्थ्यानुसार सहायता भज दी थी और यह देखकर बडी प्रसन्नता हुई कि दानियों द्वारा दिये गए दान का बहुत सदुपयोग हो रहा है। किन्तु वहा चम्मचो की न्यूनता है। मैंने अपनी ओर से एक हजार चम्मच टकारा के लिए दान देने का सकल्प किया है।—नारायणदत्त विद्यालकार, 568, मोडन टाउन, पानीपत

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री, द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाडी धीरज (फोन 527335) दिल्ली से छपवाकर कार्यालय आर्य जगत्, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—सार्व देशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 (फोन 343718)

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य —30 रुपये | विदेश मे 65 पौ० या 125 डालर | वर्ष 51, अंक 16 | रविवार 17 अप्रैल, 1988 | दूरभाष : 3 4 3 7 18

आजीवन सदस्य-251 रु० | इस अंक का मूल्य – 3 रुपये | सृष्टि संवत् 1972949089, दयानन्दाब्द 163 | वैशाख शु०-1, 2045 वि०

महात्मा हंसराज विशेषांक

सम्पादक—क्षितीश वेदालंकार

व्यवस्थापक—रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

अद्भुत वैदिक यज्ञ विधि [11]

घृत और साकल्य की आहुति का भेद

—आचार्य वेद भूषण—

[तीन अप्रैल के अंक से आगे]

यज्ञ एक व्यावहारिक विद्या है। चाहे सामान्य यज्ञ हो चाहे अन्य कोई विशेष यज्ञ या सस्कार, सव प्रथम दैनिक यज्ञ का कार्य पूर्ण कर लें। यदि प्रात कालीन यज्ञ हो, तो प्रात. कालीन आहुतिया दे दी जाए। यदि सायकालीन आहुतिया भी प्रात काल ही देनी हो तो 'अग्ने नय सुपथा' मन्त्र के बाद पुन सायकालीन मन्त्रो से आहुतिया आरम्भ की जाए। सवप्रथम चार आघारावाज्यभागाहुति की घृताहुति दी जाए तदनन्तर 'अग्निर्ज्योति इन मन्त्रो से घी तथा सामग्री की आहुतिया दी जानी चाहिएं। इस प्रकार पूरी सोलह आहुतिपूर्ण कर ली जाएं।

इसके उपरान्त फिर आघारावाज्यभागाहुति से चार घृत की आहुतिया ही दी जाएं। इसके पश्चात् चार सक्षिप्त महाव्याहृति आहुतिया दी जाएं ये आहुतिया भी घृत की ही होगी। इसमें साकल्य की आहुति नही दी जाएगी। दैनिक यज्ञ मे इन आहुतियो से घृत व सामग्री दोनों से ही आहुतिया दी जाती हैं। पर जब ये मन्त्र सक्षिप्त रूप मे पढे जाते हैं तब इनसे घृताहुति ही दी जाती है। जब मन्त्र में प्राण, अपान और व्यान का सयोजन होता है तब मन्त्र कुछ स्थूल हो जाता है। जब इन तीनो का सयोजन नही होता तब मन्त्र सूक्ष्म ही रहता है। सूक्ष्म मन्त्र से सूक्ष्म की ही आहुति दी जाती है।

घृत तथा साकल्य की आहुति के भेद को भी जान लेना चाहिए।

रसो मे गाय का घृत अत्यन्त सूक्ष्म रस है। जब हम केवल गाय के घृत की आहुति देते हैं तो यह अत्यन्त सूक्ष्म होकर सूय लोक तक [अर्थात् सूर्य की किरणो तक।—स०] पहुच जाती है।

हमारे शरीर में होने वाली समस्त क्रियाओ का मूल हमारा सिर है। चाहे विकृति हो या सुकृति, उसका आरम्भ सिर से ही होता है। पहले सिर मे ही भारीपन अथवा अन्य लक्षण प्रतीत होते हैं। फिर शरीर के शेष भाग मे।

हमारे पिण्ड मे सिर द्यु स्थानी है। जैसे ब्रह्माण्ड में सूर्य द्यु स्थानी है। ब्रह्माण्ड मे भी जो क्रिया प्रतिक्रिया होती है वह द्यु लोक से ही आरम्भ होती है। इसीलिए शान्तिपाठ मे सर्वप्रथम द्यौ शान्ति से ही पाठ आरम्भ होता है। इसका कारण यही है कि जैसे शरीर पर अच्छा या बुरा कोई भी प्रभाव पहले सिर पर ही पडता है। चाहे धूप लगे, चाहे ठण्ड, वह सिर से ही आरम्भ होती है। या यो कहे कि पिण्ड [शरीर] के द्युलोक से आरम्भ होती है। शरीर मे भी कोई विकृति आती है तो पहले सिर से आरम्भ होती है। अत शान्ति पाठ मे द्यु लोक से शान्ति का जो क्रम रखा गया है वह अत्यन्त सटीक है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने यजुर्वेद भाष्य मे अनेक स्थलो पर लिखते हैं कि यज्ञ से सूय की किरणो तक का शोधन होता है। द्यु लोक से ब्रह्माण्ड का नियन्त्रण ठीक वैसे ही होता है जैसे शरीर का नियन्त्रण सिर से।

गोघृत में सौर उर्जा का प्राचुर्य होता है और जब उसे हम यज्ञ मे डालते हैं तो वह द्यु लोक मे पहुच जाता है। इसीलिए जब केवल घृताहुति दी जाती है तो 'इदमग्नये जातवेदसे इद न मम।' या 'इदमग्नये इद न मम' ऐसा कहा जाता है। अर्थात् ये आहुतिया अग्नि लोक के लिए हैं।

'प्राची दिक् अग्नि अधिपति. आदित्या इषव' इस मन्त्र में सूर्य को द्यु लोक का केन्द्र बतलाया गया है इसका अधिपति अग्नि है। हमारी पृथिवी गोल है। इसके चारो ओर आवरण के समान अन्तरिक्ष है और अन्तरिक्ष के ऊपर द्युलोक है। किसी भी गोलाकार वस्तु मे दिशा का निर्धारण बहुत कठिन होता है। फिर पृथिवी घूम रही है। निरन्तर उसकी स्थिति में अन्तर आता रहता है। ऐसी स्थिति मे निश्चित कर दिया गया कि जिधर से सूर्योदय होता दृष्टि गोचर हो उस दिशा को पूव दिशा मान लिया जाए। यह केवल व्यवहार के लिए पृथिवी को चिह्नांकित किया गया है। इसमे सूय को आधार माना गया है। सूय तो सदा द्यु लोक में ही रहता है।

द्यु लोक मे विभिन्न तत्वो के भडार हैं, जैसे बडे-बडे गोदाम होते हैं। इन लोक लोकान्तरो से नित्य सूक्ष्म तत्व के रूप में हमारी पृथिवी पर आपूर्ति होती रहती है। कुछ तत्व सूक्ष्म रूप मे हल्के होकर ऊपर जाते रहते हैं और पुन वे गतिशील होकर नीचे आते हैं। इसमे सूर्य किरणों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

गोघृत के वाष्प से सूर्य किरणो के इस व्यवहार मे सामंजस्य बना रहता है। यज्ञ के आविष्कर्ता ऋषियो ने देखा कि यज्ञ में डाला जाने वाला घृत तो द्युलोक को चला जा रहा है, भूलोक इसके लाभ से कहीं वचित ही न रह जाए। तब उन्होने इस सूक्ष्म वाष्प को कुछ भारी बनाने का उपाय खोज निकाला। इसी उपाय के रूप में सामग्री मोहनभोग, भात आदि की आहुतियों का विधान किया गया। जब सामग्री की आहुति आरम्भ की गई तो भी कुछ क्षण घृत की क्रमबद्धता व मात्राधिक्य से वाष्प का कुछ भाग द्यु लोक तक पहुचता है, फिर आहुतियो द्वारा उत्पन्न वाष्प हो जाता है।

इसीलिए जब 'त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्' इस मन्त्र से सामग्री की आहुतिया आरम्भ की जाती हैं तो आरम्भ के दो मन्त्रों मे 'इदमग्निवरुणाभ्या इद न मम' का पाठ दोहराया जाता है। यह आहुति कुछ तो द्यु लोक तक चली गई और शेष वरुण लोक मे स्थिर हो गई। दो मन्त्रों के अन्तराल के बाद फिर समस्त आहुतिया वरुण लोक में ही स्थिर होने लगीं। परिणामत 'इद' मे वरुण श्रुधि' इस मन्त्र से घोषणा की जाने लगी कि—'इद वरुणाय इद न मम।'

हमारे विचार मे पृथिवी के चारो ओर सूर्य की अल्ट्रावायलेट वैजनी किरणो को नियन्त्रित करने के लिए जो एक आवरण या कवच है, वह कवच वरुण लोक मे स्थित है। वरुण लोक से पृथिवी तक एक क्षेत्र है। यह कवच पृथिवी के पर्यावरण को अनुशासित करता है।

अभी दक्षिणी ध्रुव पर अनुसन्धान करके जो भारतीय वैज्ञानिको का दल लौटा, उसने पत्रकारों से भेंटवार्ता में एक महत्वपूर्ण सकट की ओर ध्यान आकृष्ट किया है। उन्होने बतलाया कि—"अल्ट्रावायलेट" किरणों को नियत्रित कर पर्यावरण मे लेने वाला जो कवच भू मण्डल के पर्यावरण से ऊपर स्थित है उसमे एक छिद्र पाया गया है। यदि यह छिद्र बडा हो जाएगा तो धरती पर प्राणियो के लिए खतरा पैदा हो जाएगा। महामारिया फैलने लगेंगी। इसके बचाव के लिए अभी तक वैज्ञानिको के पास कोई उपाय नही है। वेदो मे जिस यज्ञ या अग्निहोत्र का विधान है, वह प्राचीनकाल के लोगो द्वारा इसका उपचार ही है।

इससे जहाँ यज्ञ का वैज्ञानिक महत्व सिद्ध होता है वहा वरुण लोक की स्थिति पर भी प्रकाश पडता है। इस प्रकार घी और सामग्री के वैज्ञानिक रहस्य को भी समझ लेना चाहिए। हमने इस विज्ञान को केवल मन्त्रो के आधार पर प्रस्तुत किया है। आवश्यकता इस बात की है कि—वैज्ञानिक इन बातो पर क्रियात्मक परीक्षण कर मन्त्रो को विज्ञान की कसौटी पर कसें। हमारा पूर्ण विश्वास है तब इन मन्त्रो की सच्चाई स्वय सिद्ध हो जाएगी।

ऊपर के आठ मन्त्रो से चार आघारावाज्य भागाहुति के तथा 4 व्याहृति के मन्त्रो से घृताहुति दी जानी चाहियें। जब केवल घृताहुति दी जाती है तब उन आहुतियो का प्रभाव प्राण अपान और व्यान पर नही पड पाता अत इन तीनों का पाठ मन्त्र मे से हटा दिया जाता है। जब सामग्री के साथ इन मन्त्रो से दैनिक यज्ञ मे आहुतियाँ दी जाती हैं तब प्राण अपान और व्यान इन मन्त्रो से युक्त कर दिए जाते हैं।

आशा है विद्वान जन हमारे इस समाधान पर और अधिक गम्भीरता से विचार करेंगे। जो कुछ हम यहा प्रस्तुत कर रहे हैं वह हमारा अपना ही वर्षों का चिन्तन है। उस चिन्तन को हम इसी उद्देश्य से लेखमाला द्वारा प्रस्तुत कर रहे हैं कि कहीं हमारा यह चिन्तन हमारे साथ ही नष्ट न हो जाए। आगे आने वाले चिन्तकों को हमारे चिन्तन से कुछ दिशा मिल सके तो हमारा यह लिखना सफल हो जाएगा।

पता—वेद मन्दिर, महर्षि दयानन्द मार्ग
हैदराबाद-500027

उड़ीसा में सूखा राहत कार्य : सहायता जारी रखिये

प्रसिद्ध आर्य सन्यासी स्वामी ब्रह्मानन्द जी के नेतृत्व मे आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे सचालित उडीसा के विभिन्न सूखा राहत केन्द्रों का कार्य अबाध गति से चल रहा है। स्वामी जी का अनुमान है कि ये राहत केन्द्र अगली फसल आने तक अर्थात् दिसम्बर 88 तक चलाने पड़ेंगे। उडीसा मे केवल एक ही फसल होती है। स्वामी जी कोरापुट, फुलबनी, सुन्दरगढ, गजाम और बालासोर जिलो में 6 भोजन केन्द्र चलाना चाहते हैं। इन भोजन केन्द्रो मे प्रतिदिन 200 सूखा पीडित जनो को भोजन दिया जायेगा। इनमे एक केन्द्र का व्यय लगभग नौ हजार और छ केन्द्रो में चौवन हजार रुपया मासिक होगा। इस प्रकार दिसम्बर तक इन केन्द्रों का व्यय लगभग पांच लाख होता है। यह राशि आर्य जगत् के त्यागी, तपस्वी और दानी महानुभावो के सहयोग से ही सग्रहीत होना सम्भव है। आशा है आप सब इस ओर विशेष ध्यान देंगे और इस महायज्ञ मे अपनी आहुति डालने में किंचित् भी संकोच नहीं करेंगे।—रामनाथ सहगल, मन्त्री

आर्यसमाज का वास्तविक स्वरूप

—महात्मा हंसराज जी—

जो लोग यह समझते हैं कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज को एक उपकारक समाज के रूप में स्थापित किया था, वे भी आर्यसमाज तथा स्वामी दयानन्द के मिशन की वास्तविकता को नहीं समझते। इसमें तनिक सन्देह नहीं कि आर्यसमाज का कार्य उपकार द्वारा संसार की सेवा करना है। आर्य-समाज ने उचित रूप में सेवा-कार्य को अपना मुख्य उद्देश्य बनाया हुआ है। यदि राजस्थान तथा मध्यप्रदेश में दुष्काल की विपत्तियों से अनेक घर नष्ट हो गए, यदि कांगड़ा के भूकम्प से सहस्रों कुटुम्ब उजड़ गए, यदि गढ़वाल मे दुष्काल ने जनता को सताया, यदि उड़ीसा में बाढ़ के कारण सहस्रों जन विपदाग्रस्त हुए, यदि मालाबार में मोपलों के अत्याचारों से सहस्रो हिन्दुओ की हत्या हुई तथा अपने धर्म से च्युत किये गए, यदि भिम्बर के क्षेत्र मे हिन्दू मुसलमान अकाल के पंजे मे फँसकर यातनाएँ भोगने लगे, यदि मुजफ्फरगढ जिले में सिंधु नदी ने लोगों को उजाड़ दिया तथा हिसार जिले में सूखा ने लोगो को रोटी के लिए औरों पर निर्भर कर दिया, यदि झेलम नदी की बाढ़ ने आस पास के नगरों को बाढ़ग्रस्त बनाकर विवश किया कि वे सहायता के लिए प्रार्थी बनें, यदि मीरपुर (कश्मीर) के क्षेत्र में मुसलमानों के दंगो से हिन्दू पीड़ित बने, तो आर्यसमाज ने तन मन-धन से सेवा का हाथ पसारकर तथा अपने ऊपर सैकड़ों प्रकार के कष्ट झेल-कर आर्यसमाज के उपकार के भाव को पूर्ण किया। संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, परन्तु यह समझ लेना कि आर्यसमाज इससे बढ़कर कुछ नहीं, बड़ी भयानक तथा हानिकारक भूल है। यदि आर्यसमाज का कार्य केवल लोकोपकार के कार्य करना ही होता तो ऋषि को क्या आवश्यकता थी कि वह आर्यसमाज को आस्तिक-नास्तिक तथा मूर्ति-पूजा के खण्डन इत्यादि विवादों मे डाल देते? उपकार के कार्य भी आर्यसमाज उस समय कर सकता है जब इसको जाति की सहायता प्राप्त हो। मूर्ति पूजा आदि के विवादो में पडकर आर्यसमाज हिन्दू जाति के अधिकांश भाग को रुष्ट ही कर देता है, और इस प्रकार परोपकार के कार्यों मे विघ्न भी पड जाता है। यदि आर्यसमाज का कार्य केवल उपकार के कार्य करना होता तो धार्मिक विवादों में पडना बुद्धिमत्ता का कार्य नहीं था। स्वामी दयानन्द जी महाराज ने काशी तथा चांदपुर में जो शास्त्रार्थ किये और 'सत्यार्थप्रकाश' में पौराणिको, मुसलमानो तथा ईसाइयों का खण्डन किया, वह व्यर्थ कार्य बन जाता।

स्वामी दयानन्द उपकार को अपने मिशन का एक भाग समझते थे, परन्तु उनका यह विचार न था कि दूसरे अंग निरर्थक हैं तथा उपकार के बोझ के नीचे दब जायें। इस महापुरुष का उपदेश उपकार के द्वारा जनसेवा करने का है, परन्तु वह यह भी समझता था कि जब तक लोगों के हृदयों से मिथ्या विचार, अन्धविश्वास दूर न किये जावें, लोगों का कल्याण नहीं हो सकता। उनके मिशन के प्रोग्राम मे मिथ्या विचारो के खण्डन का उद्देश्य विद्यमान है।

यह विचार कि ऋषि दयानन्द एक सच्चा देशभक्त था, सर्वथा सत्य है। आर्य जाति के दु:खों को देखकर कई बार उनकी निद्रा भंग हुई, उनकी आंखो से अश्रु निकले। दिन रैन इस उद्देश्य के लिए वह कार्यरत रहे कि आर्य जाति का कल्याण हो। उन्होंने यह भी प्रकट किया कि आर्य जाति का भला तभी हो सकता है जब इसके अन्दर राजसभा, धर्मसभा तथा विद्यासभा स्थापित हों, उन सब उपदेशों पर आचरण हो जो शुक्र, मनु, विदुर तथा चाणक्य ने अपने अमूल्य ग्रन्थो मे लिखे हैं। महर्षि दयानन्द स्वदेशी के पोषक थे तथा चाहते थे कि आर्य जाति में जो दोष उत्पन्न हो गए हैं वे दूर हों, ताकि आर्य जाति अपने पांवों पर खड़ी हो सके। 'सत्यार्थप्रकाश'' में वह एक स्थान पर आर्य जाति का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि दुष्ट दुर्योधन ने फूट का ऐसा बीज बोया है कि वह इस समय भी हमारा पीछा नहीं छोड़ता तथा इसके प्रभाव से आर्य जाति अब भी दलित हो रही है। स्वामी दयानन्द का देशभक्ति कार्यक्रम रचनात्मक था। वे लोग, जो इस कार्यक्रम को इस समय के सत्याग्रह अथवा अन्य प्रोग्रामों से मिलाना चाहते हैं, अन्याय करते हैं। स्वामी दयानन्द का सम्बन्ध सामयिक राजनीति से नहीं था। वह तो उन दुर्बलताओं को दूर करना चाहते थे जिनके कारण आर्य जाति तथा आर्य धर्म का नाश हुआ। वह इस बात को भली प्रकार से समझते थे कि जबतक दोष दूर न होंगे, आर्य जाति राजनीति के क्षेत्र में भी नहीं बढ़ सकती। जिन्होंने दूसरी गोलमेज कान्फ्रेंस का वृत्तान्त पढ़ा है तथा महात्मा गांधी की वर्तमान चाल को भलीभांति समझा है, वे अवश्य इस परिणाम पर पहुंचेंगे कि जबतक इस देश में दलित हिन्दू जातियां विद्यमान हैं [अर्थात जबतक जातपात, ऊंच-नीच

(शेष पृष्ठ 31 पर)

24 अप्रैल का आर्य जगत्' का अंक नहीं निकलेगा। कृपया पाठक नोट कर लें।

जयतु स यतिवर्यो हंसराजो महात्मा

—धर्मवीर शास्त्री—

सुरभित-फल-पुष्पैः प्रीणयन् नव्य लोक
विलसति विटपी यद्रोपितो ज्ञान-रूप।
जयति यदभिधान त्याग-पर्याय-भूत
जयतु स यतिवर्यो हंसराजो महात्मा ॥1॥

हरति कलुषमस्मच्चेतसो यच्चरित्र
भवति भुवनमद्धा यस्य कीर्त्या पवित्रम्।
पर-हित-रत-चित्तो यो हि धर्मैकवित्तो
जयतु स यति-वृत्तो हंसराजो महात्मा ॥2॥

रविरिव सुगुणै स्वैरंशुरूपैरलम्
कवलयति तमो यः पार्थिव स्व स्थितोऽपि।
विपदि विबुधवर्यैः स्मयते सादर यो
जयतु स शुभ-शीलो हंसराजो महात्मा ॥3॥

भवति दिवस वृत्ति सप्तसप्तिस्तथोष्णः
सतत कलुष-मध्यो दीप्यतीन्दु क्षपायाम्।
समजनि सम-वृत्तिः सर्वथा योऽकलंको
जयतु स मुनि-नम्यो हंसराजो महात्मा ॥4॥

जपत-जपत नित्य मन्त्रवत्तस्य नाम
पठत-पठत पुण्यं भ्रातरस्तच्चरित्रम्।
भवत-भवत योग्यास्तस्य शिष्यत्वमाप्तु
जयतु भुवि यथाऽसौ हंसराजो महात्मा ॥5॥

हिंदी-अनुवाद

यतियो मे श्रेष्ठ महात्मा हंसराज की जय हो।

(1)

सुगन्ध से पूरित फल-फूलों द्वारा संसार को प्रसन्न करने वाले ज्ञानरूपी वृक्ष (डी०ए०वी०) का जिन्होंने आरोपण किया तथा जिनका पवित्र नाम ही त्याग का पर्यायवाची बन गया है, वे यतिवर महात्मा हंसराज जयी हो।

(2)

जिनका पावन चरित्र हमारे हृदय की कालिमा को दूर करता है, जिनकी कीर्ति से संसार पवित्र होता है, जिनका चित्त सर्वदा परोपकार मे रत था एवं धर्म ही जिनका धन था वे यति-तुल्य आचरण वाले महात्मा हंसराज जयी हो।

(3)

जो स्वर्ग मे स्थित अत एव प्रत्यगात्मरूप होकर सूर्य के समान अपने किरण तुल्य सद्गुणों के प्रकाश से पृथिवी के अन्धकार को दूर करते हैं तथा विपत्ति के समय प्रबुद्ध व्यक्तियों के द्वारा मार्ग दर्शन के लिए श्रद्धापूर्वक जिनका स्मरण किया जाता है वे शुभ-शील महात्मा हंसराज जयी हो।

(4)

सूर्य केवल दिन मे ही प्रकाशित होता है तथा उसकी प्रकृति उष्ण भी है, वैसे ही चन्द्रमा केवल रात में प्रकाश करता है और उसमें कालिमा भी है, किन्तु मुनियों के भी पूज्य महात्मा हंसराज सर्व काल मे एक रस एवं सर्वथा निष्कलंक थे, अर्थात् सूर्य-चन्द्र से भी उनकी तुलना नहीं की जा सकती। ऐसे उन महात्मा की जय हो।

(5)

उस महात्मा के नाम को मन्त्र के समान बार-बार जपो—जपो। बन्धुओ, उसके पुण्य चरित्र को पढ़ो—पढ़ो। और करो, करो प्रयास उसके नामलेवा बने रहने की पात्रता प्राप्त करने के लिए। जिससे वह महापुरुष संसार मे जयी हो—उसका नाम अमर रहे।

पता—B-1/51 पश्चिम विहार, नई दिल्ली-63

शिक्षा क्षेत्र की नई चुनौतियों का सामना

17 अप्रैल को महात्मा हंसराज दिवस पर सभापति पद से श्री स्वामी सत्य प्रकाश जी द्वारा दिया जाने वाला भाषण

यदि आज महात्मा हंसराज होते, तो उनकी आयु 128 वर्ष होती तथा स्वामी श्रद्धानन्द 131 वर्ष के और स्वामी दयानन्द 164 वर्ष के होते। स्वामी दयानन्द की मृत्यु को 105 वर्ष हो गए हैं, श्रद्धानन्द की मृत्यु को 62 वर्ष हुए और हसराज की की मृत्यु को पूरे 50 वर्ष होने जा रहे हैं। महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना 1875 ई० में की, महात्मा हसराज ने डी०ए०वी० सस्थाओ को अपने जीवनदान की घोषणा फरवरी 1886 ई० मे लाहौर के वार्षिकोत्सव पर की थी।

बालक हसराज ने 1879 ई० में ऐग्लो वर्नाक्यूलर मिडिल परीक्षा उत्तीर्ण की। 1880 ई० के दिसम्बर मास में लाहौर के मिशन हाई स्कूल से उन्होने कलकत्ता यूनिवर्सिटी की एण्ट्रेन्स परीक्षा पास की। इन्हीं दिनो लाहौर में एक छोटा सा विद्यालय स्थापित हुआ था, जिसका नाम पजाब यूनिवर्सिटी कालेज था (पजाब यूनिवर्सिटी की स्थापना अभी नही हुई थी) यह विद्यालय था तो पजाब मे, पर कलकत्ता विश्वविद्यालय की विभिन्न परीक्षायें दिलवाया करता था। 1881-1882 में इसके छात्रों की सख्या 92 से अधिक न थी। यह विद्यालय ही बाद मे पजाब विश्वविद्यालय का केन्द्र बना। इसी विद्यालय से 1883 में हस राज जी ने एफ० ए० (फर्स्ट आर्ट्स) अग्रेजी, फिलासफी सस्कृत और इतिहास विषय लेकर, और 1885 ई० में उन्होंने बी० ए० परीक्षा उत्तीर्ण की। इस परीक्षा में गुरुदत्त जी प्रथम आये थे, हसराज जी द्वितीय और लाजपतराय भी इसी वर्ष बी० ए० पास हुए थे।

1886 ई० में दयानन्द स्कूल के लिए हसराज जी ने जीवनदान दिया। 2 मार्च 1901 ई० को महात्मा मुशीराम जी अपने दो पुत्रो को लेकर हरिद्वार आये और गुरुकुल कागडी की स्थापना हुई। महर्षि दयानन्द की मृत्यु 1883 ई में हुई और उनकी मृत्यु के बाद उनके अनुयायियो ने ही विभिन्न प्रणालियों की शिक्षा सस्थाओ को जन्म दिया। महात्मा मुन्शीराम ने गुरुकुल खोला। उत्तर प्रदेश में गुरुकुलो की परम्परा की वास्तविक नींव स्वामी दर्शनानन्द जी ने डाली थी, पर गुरुकुलो में परम यशस्वी मुन्शी राम जी का गुरुकुल कागडी रहा। पिछले 90 100 वर्षों मे हमारा देश पूर्णतया बदल गया है—आज भारत स्वतन्त्र है, पुराना युग ब्रिटिश पारतन्त्र्य का था। शिक्षा के क्षेत्र मे उस समय भी हमारा सघर्ष ईसाईयों की सस्थाओं के साथ था, और आज भी हमारी प्रतियोगिता ईसाइयों की संस्थाओं से है। राजनीति के क्षेत्र में हमारा विशेष सघर्ष मुसलमानों के साथ रहा, किन्तु मुसलमानो के मकतबों के होते हुए भी, और गांव-गांव में मौलवियों के रहते हुए भी हमारा सघर्ष उनके साथ गांवों में नहीं हुआ। गांव-गांव में हिन्दू लोग गाव के मौलवी से ही उर्दू पढ़ना प्रारम्भ करते थे। गांव का यह मौलवी हमारे घरेलू परिवार का अग बन गया था।

किन्तु ईसाई (जो तब जनसख्या में हमारे देश में 0 1 प्रतिशत भी न थे) से शिक्षा—क्षेत्र मे हमारी 1880 ई० के लगभग से ही प्रतियोगिता आरम्भ हो गई। यह प्रतियोगिता आज भी विद्यमान है। ईसाईयो ने जो स्कूल हमारे बच्चों के लिए खोले, उनके जवाब में ही हम आज तक स्कूल खोलते आ रहे हैं। आज के डी ए वी माडल स्कूल (विशेषतया अग्रेजी माध्यम के) हम इस तर्क पर स्थापित कर रहे हैं कि हमारे बालक ईसाईयत के प्रभाव से बचे रहेंगे। शिक्षा-क्षेत्र में हमारा मुकाबला ईसाई मिशनरी से है, राजनीति के क्षेत्र में हमारा भय मुसलमानी जमातों से है। वनवासियों के बीच में हमने छोटे-छोटे गुरुकुल भी खोले हैं। डी ए वी सस्था के प्रमुख कार्यकर्त्ता भी इनकी ओर अब गम्भीरता से ध्यान देने लगे हैं। मुसलमानी सघटन शिक्षा के माध्यम से अपने मिशन का प्रचार नहीं करते—उनके ढग अपने निराले हैं जिनसे उन्हें उतनी ही सफलता प्राप्त हो रही हैं, जितनी ईसाईयों को शिक्षा और सेवा के माध्यम से। हिन्दुओं को अपनी रक्षा मुसलमानों से भी करनी है और ईसाईयो से भी। कहा जाता है कि 1881 में ईसाई भारत वर्ष में 0 2 प्रतिशत थे। 20 वर्ष बाद ये 2 प्रतिशत हो गए, आज 3 प्रतिशत हैं। 2050 ई० तक ये 8 प्रतिशत हो जायेंगे। अग्रेजी माध्यम के डी ए वी ईसाईयत की इस उत्तरोत्तर वृद्धि में रोकथाम करके हमारी कुछ सहायता कर सकेंगे। और यदि वे ऐसा न कर सके, तो उनके बढ़ते हुए वर्चस्व से हमें क्या लाभ ?

अग्रेजियत के प्रति मोह

मेरा अपना अनुमान कुछ विचित्र है सम्भव है, मैं गलत होऊं। भारत में आज हिन्दू की दृष्टि में अंग्रेजी माध्यम के सभी स्कूल एक सी ही मान्यता रखते हैं। अगर हिन्दु नागरिक का बच्चा क्रिश्चियन कान्वेन्ट स्कूलों में दाखिल हो तो प्रथम वरीयता वे उन स्कूलों को ही देते हैं। बम्बई आदि नगरों में अमीर 1—1 लाख रुपया अग्रिम भेंट देकर बच्चों को कान्वेट स्कूलों में भरती कराने को प्राथमिकता देते हैं। अगर वहां बालक दाखिल न हो पाया; तो वह अन्य प्राईवेट स्कूलों के दरवाजे पर जाता है, जहा प्रवेश 10 20 हजार रुपये देकर कराया जा सकता है। डी ए वी सस्थाओं का भी इसी श्रृंखला में सस्ता-महगा एक स्थान है। मध्यम वर्ग के सामने बड़े नगरों में एक भयावह समस्या है—बच्चों का स्कूलों में प्रवेश करा लेना आसान नहीं है।

नई दिल्ली में केन्द्रित डी ए वी तन्त्र ने बालकों की शिक्षा के आज के इस चैलेंज को स्वीकार करके नई दिशा से काम करना आरम्भ किया है। यह ठीक है कि डी ए वी सस्थाओं की नीव लाहौर में पडी और महात्मा हसराज के आदर्शमय जीवन ने इसका नेतृत्व किया। 1886 ई० का वर्ष आज के युग से सर्वथा भिन्न था और उस युग में शिक्षा के नवीन प्रयोग दो तपस्वियों के माध्यम से हुए—हसराज और मुन्शीराम। स्वातन्त्र्य से पूर्व अन्य भी प्रयोग इस देश में हुए—रवीन्द्र बाबू का शान्ति निकेतन, गांधी युग के तिलक विद्यालय (1920-23) बाबू शिवप्रसाद गुप्त की काशी विद्यापीठ और गुजरात विद्यापीठ आदि, हिन्दी साहित्य सम्मेलन की प्रथमा-मध्यमा-उत्तमा परीक्षायें, प्रयाग महिला विद्यापीठ का प्रयोग, दक्षिण की राष्ट्र भाषा प्रचार समिति का कार्य, राष्ट्रीय विद्यालय जाति-बिरादरी वाले सरकार के मान्यता प्राप्त स्कूल और कालेज (कायस्थ पाठशाला, अग्रवाल विद्यालय, सनातन धर्म कालेज ऋषिकुल, आचार्य कुल आदि-आदि)।

देश स्वतन्त्र हुआ-राष्ट्र की भावना बदली। स्वाधीनता मिलते ही 1947 में सभी स्कूल राष्ट्रीय हो गए—सरकारी स्कूल भी, गैर सरकारी विद्यालय भी, अर्धसरकारी विद्यालय भी। शिक्षा के प्रश्न को राष्ट्रीय स्तर पर सुलझाने का प्रयास हुआ। अनिवार्य शिक्षा का माग हमारे सामने प्रस्तुत हुआ। शिक्षा के साथ-साथ (उसके अनिवार्य किये जाने के सपने देखने से पूर्व) उद्योग-धन्धों की बात और बेरोजगारी की बात भी सोच ली जाती, तो शायद स्थिति दूसरी होती। समन्वय भाव से हमने शिक्षा आयोजित न की-देश में 10 वर्षों में ही कई सौ गुना शिक्षा बढ़ गई। 1905 से लेकर 1947 तक जितने ग्रेजुएट ब्रिटिश शासन में नहीं पैदा हुए थे—उतने ग्रेजुएट हमने 1950-1951 के एक वर्ष में तैयार कर डाले। इसका परिणाम—(1)ग्रामीण जनता नगरों की ओर दौड़ी घरेलू व्यवसाय (परम्परागत) निरर्थक हो गए (3) बेकारी बढ़ गई, (4) जीवन का स्तर ऊंचा होते ही विदेशी वस्तुओं के भोग की लालसा बढ़ी।

ससार में विज्ञान और तकनीकी जोरों से आगे बढ़ रही थी—स्वतन्त्र होते ही हमारी लालसा भी इन नवीन आविष्कारों के उपभोग के प्रति बढ़ी देश का सन्तुलन समाप्त हो गया—आर्थिक नीति पर हमारा नियंत्रण नही रहा। मुद्रा स्फीति, काला बाजार और काला धन बढते गए। न हम रूसवादी हो पाये, न अमरीकावादी। दोनों मार्गों से भ्रष्ट होकर हम बरबादी की ओर बढ़ चले। इस आर्थिक व्यवस्था के नवीन आयामो के बीच में आज हम अन्धों के समान समाधान टटोलने में लगे हुए हैं।

नई चुनौतियों का सामना

ये सब नवीन चुनौतियां हैं, जिनके बीच में पिछले 10 वर्षों से डी ए वी के वर्तमान नेता मार्ग प्रशस्त करने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होने नये आदर्शों की स्थापना की है, आज के अधिकारी नवीन सज्जा के परिप्रेक्ष्य मे दयानन्द और हसराज की स्थापना करना चाहते है। जैसे त्रेता का राम आज टेलिविजन के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है, इसी प्रकार यदि हमारा दयानन्द या हसराज आज होता तो सचमुच हवाई जहाजो में आता जाता, और आज के से सुसज्जित आडिटोरियम में वक्तव्य देता। उनके व्याख्यान आज टेप रिकार्ड होते, उनके भी वीडियो बनते। यह बात मैं व्यग्य या परिहास मे नहीं कह रहा हू। प्रत्येक युग के आदर्श पुरुष की रूप रेखा उस देशकाल की अनुवर्तिनी होती है, जिस युग में वह कार्य करता है। उसकी त्याग-तपस्या नये युग के विज्ञान और तकनीकी की आश्रित रहती हैं।

डी ए वी हो, या गुरुकुल, या सरकारी अनुसन्धान संस्थान, उन्हे हमे इस नये परिवेश में देखना होगा। उनके तन्त्र की कार्य प्रणाली, उनके संविधान भी हमें अपने वर्तमान युग के रंग में देखने होंगे। इसे हम युग धर्म (जाइट गाइस्ट, ZEIT GIEST, युग दानव) कहते हैं।

महात्मा हंसराज, लाला साईदास, वरिटस महाजन और हमारे दूसरे पुराने डी ए वी महारथियों ने शिक्षा की जो रूपरेखा सोची थी, वह बहुमुखी थी। डी ए वी के अधिकारी विद्यार्थियों को योग्य स्नातक बनाना चाहते थे। वे उन्हें वेद-वेदांग की प्राचीनतम शिक्षा देना चाहते थे। वे उन्हें आधुनिक विज्ञान में भी पारगत करना चाहते थे। वे उन्हें राष्ट्र भक्त भारतीय बनाना चाहते थे। प्लेटो और एरिस्टोटल के युग का दार्शनिक विद्वान् सर्व विद्या-पारंगत होता था;

करने के लिए कमर कसनी होगी

किन्तु आज सर्व विद्या-विद होना गुण नहीं, दोष माना जाता है। सन् 1915 में जो व्यक्ति सब विषयों में एम० ए० करता था वह यशस्वी होता था, पर आज अनेक विषयों को लेकर एम० ए० करने वाले व्यक्ति को दिशा-हीन व्यक्ति (असफल या पथ भ्रष्ट व्यक्ति) समझा जाता है। 60-70 वर्ष मे इतना अन्तर आ गया है। सब दिशाओ में पैर फैलाना गुण नहीं, दोष समझा जाता है। इसीलिए शायद हमारी डी ए वी संस्थायें आधुनिक ढग के अग्रेजी माडल स्कूलों के प्रसार में ही अधिक रुचि ले रही हैं।

हमारी रुचि आजकल स्नातकोत्तर कालेजों के खोलने में नहीं है—इसका भी एक कारण है। ये संस्थायें यूनिवर्सिटियों के शासन में आबद्ध हैं, उन पर हमारा अनुशासन नहीं है। वहां का विद्यार्थी और अध्यापक स्वनिर्मित वातावरण में कार्य करने का अभ्यस्त हो गया है। यही कारण है कि आज के हंसराज दिवस में हंसराज कालेज के अध्यापकों और विद्यार्थियों की कोई रुचि नहीं है। उनकी दृष्टि में करोड़ी मल कालेज का करोड़ी मल और हंसराज कालेज का हंसराज एक समान हैं।

डी ए वी की विशेषता

डी ए वी संस्थाओं को निकट से देखने का अवसर मुझे कुछ वर्षों से मिला है। मन्दिर मार्ग, आर्य समाज के जिस छोटे से कमरे में मैं रहता हू—उससे मिला हुआ कन्याओं का एक अग्रेजी माध्यम का माडल स्कूल है। विस्तृत प्रांगण मे प्रतिदिन जब ये कन्यायें अनुशासित ढंग से खड़े होकर कतिपय वेद मन्त्र पढ़ती हैं और राष्ट्रीय गान गाती हैं तो बड़ा अच्छा लगता है। इसके लिए डी ए वी के अधिकारियों, अध्यापक और अध्यापिकाओं को बधाई। दिल्ली में कई डी ए वी विद्यालय इतने विशाल और सुघटित हैं कि मैं बराबर कहा करता हू कि जो कोई भी दिल्ली आवे, वह इन विद्यालयों की गरिमा को देखे दिल्ली से बाहर भी मैंने इसकी कार्य-प्रणाली को देखा है और इनकी लोक प्रियता को जाना हैं। यह कहने में मुझे कभी भी संकोच नहीं होता कि दिल्ली डी ए वी केन्द्र से अनुशासित विद्यालय जितने हमारे देश में हैं उतने विद्यालय इस देश में और किसी लोक संस्था के नहीं हैं। हमारे गुरुकुलों की संख्या भी बहुत है। पर वे किसी एक केन्द्र से अनुशासित नहीं हैं।

डी० ए वी संस्थान की कार्यकुशलता और उसका वैभवशाली संगठन सर्वथा स्तुत्य है। उनके वैभव को देखकर कभी कभी ईर्ष्या होती है। उनके वैभव के सामने 100 वर्ष पुराना हंसराज और उसका संचालित विद्यालय दरिद्र प्रतीत होता है। कभी लगता है के इस वैभव के पर्यावरण में हंसराज की त्याग-तपस्या सरलता कहीं उसके व्यक्तित्व का परिहास न हो। पर वस्तुत ऐसी बात नही है। सुख सामग्रियो से सज्जित कमरे के बीच में यदि हमारा आज का प्रिन्सिपल बालको को निष्काम स्नेह देता हो और स्कूल के शिक्षा स्तर को ऊंचा उठाने में प्रयत्नशील हो, तो मानना चाहिए कि उसने अपने कर्तव्य का याथातथ्य पालन किया है।

मैंने शिक्षा स्तर को क्रमश ऊंचा उठाने की बात कही। मैं जब 1921 में मेट्रिकुलेशन का विद्यार्थी था, उस समय जो भूगोल, गणित, रसायन आदि विषयों का पाठ्यक्रम था, उतने से अब काम न चलेगा। आज हम प्रगतिशील अनुसन्धानों के जगत में रहते है। पिछले 70 वर्षों मे हमारे सभी शास्त्रों मे विकास हो गया है, और आगे भी निरन्तर होता रहेगा। इस तीव्रता से विकास हो रहा है कि उसकी अनुकूलता मे सदा बने रहने के लिये पाठ्यक्रम हमें प्रति दूसरे चौथे वर्ष बदलने पड़ते हैं। इस तेजी का साथ देने के लिए अध्यापको को भी निरन्तर तैयारी करनी पड़ेगी। चाहे विश्व विद्यालय का अध्यापक हो चाहे माध्यमिक स्कूल का, उसे सभी क्षेत्रो मे निरन्तर बढ़ते हुए आयामो से अपने आपको परिचित कराना पड़ेगा। जिस अध्यापक ने अध्यापनकाल में पढ़ना बन्द कर दिया है, वह बच्चो को पिछड़े हुए युग की बात बतायेगा। यह याद रखना चाहिए कि आज का 12-16 वर्ष का विद्यार्थी बड़ा संवेदनशील है। नवीन विषयों को सीखने की क्षमता मानो उसमे जन्मजात हो गई है। उसकी दृष्टि बराबर आगे आने वाले युग की ओर है। आप अपने बच्चो को देखें—वे आपके रेडियो, टेलिविजन, दृष्टि वीडियो आदि सामग्रियो का किस कुशलता से उपयोग करना सीख जाते हैं। यह देखकर हम वयोवृद्धो को आश्चर्य होता है। आपके माडल स्कूलों को इन नए-नए यन्त्रो से सुसज्जित होना चाहिए। हम कम्प्यूटर युग में हैं—इस युग की समस्त सामग्री आपके स्कूलों में होनी चाहिये जिनके साथ ये बच्चे खेल सकें। समाज का कर्तव्य है कि नवीन विद्याओं से सम्पन्न विद्यालयों की स्थापना में सहयोग दे। दरिद्र विद्यालयों की स्थापना का युग चला गया है।

वैदिक जीवन मूल्य

वैदिक धर्म का आदर्श दरिद्र समाज के निर्माण का कभी नहीं रहा। परन्तु यह भी स्मरण रखना चाहिये कि इस सम्पन्नता और वैभव में मानव मूल्यों का कहीं स्थान रहे जो 5000 वर्ष पूर्व था। वैदिक साहित्य में इसका ही नाम ऋत, सत्य, श्रद्धा, दीक्षा, तप, यज्ञ और ब्रह्मचर्य रहा है। इनकी अवहेलना किसी भी युग में कोई युवक नहीं कर सकता आज के युग में इन्हीं जीवन मूल्यो को हम नवीन नामों से स्मरण करते हैं। ऋत और सत्य के प्रति जो विद्यार्थी समर्पित नहीं हैं, वह वैज्ञानिक नहीं बन सकता। गणित हो, इतिहास हो या साहित्य, समस्त ज्ञान अर्जन के लिए तपस्वी होना चाहिए। विद्यार्थी को अपना अर्जित ज्ञान जनता को अर्पित करना है। इसके लिए उसमें समर्पण की भावना होनी चाहिए यह समर्पण उस ज्ञान के प्रति हो, जिसे उसने प्राप्त किया है, उस समाज के प्रति हो, जिसका वह अंग हैं। उस राष्ट्र के प्रति हो जिसने उसे प्यार से दुलारा और पाला है। उस मानवमात्र के प्रति हो जिस वर्ग मे वह जन्मा है। इसी का नाम ही लोक कल्याण है। ऋषि दयानन्द की भाषा मे इसी का नाम ईश्वर में आस्था, ईश्वर की सृष्टि मे आस्था और ईश्वर की व्यवस्था में आस्था है। महात्मा हंसराज ने इन्ही आस्थाओं से प्रेरित होकर अपना जीवन उन युवको के लिये समर्पित किया जो युग युग में दयानन्द विद्यालयों मे अध्ययन करने के लिये आवेंगे।

हमारे देश में, विशेषतया उत्तर भारत में, उच्छृंखलता और अनुशासन हीनता है। कलकत्ते से लेकर मेरठ तक के विश्वविद्यालयो को देखिए, ईमानदारी से पढ़ने और परीक्षा देने मे तरुण विश्वास ही नहीं रखता। आप कहेंगे कि डी ए वी विद्यालयों मे अनुशासन है, कान्वेन्ट विद्यालयो में अनुशासन है। किन्तु ये ही विद्यार्थी तो कालेजों और युनिवर्सिटयो मे जाते हैं। वहां जाकर ये क्यो बदल जाते हैं। गुरुकुलो में भी अनुशासनहीनता है। और डी ए वी कालेजो में भी (चाहे वे कानपुर के हों चाहे दिल्ली के)। मैं तो प्रयाग विश्व विद्यालय मे रहा। जैसे पंजाब का कोई इलाज नही दिखता, वैसे ही इलाहाबाद कानपुर, लखनऊ के कालेजो के उच्छृंखलता का भी कोई समाधान नहीं दीखता। आपके बच्चे भी आज नहीं तो कल इन्हीं के सम्पर्क मे आयेंगे। अनुशासनहीनता और दिशाहीनता की ऐसी ही समस्या आज आई आई टी और इंजीनियरिंग कालेजो के सामने भी है।

इस समस्या से भी भयकर एक दूसरी चुनौती हमारे युवको के सामने स्मैको की, ड्रगों की, हीरोइन की और एड्स की है जो तरुणों को भयकरता से विनष्ट कर रही है। दिल्ली मे तो यह बीमारी युनिवर्सिटी और कालेजों के फाटको पर मुंह फैलाये खड़ी हुई है, जिसकी चर्चा करते हुए भी दिल थर्राता है।

मेरा अभिप्राय किसी को डराने का नही है। उन चुनौतियों के बीच मे हमको और आपको कार्य करना है। सौ वर्ष पहले शायद महात्मा हंसराज ने इनकी कल्पना भी नहीं की होगी। इस भव्य समारोह के लिए सबको बधाई।

सिद्धांत का सूर्य अस्त हो गया

—आचार्य विश्वश्रवा व्यास—

आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री के दिवगत होने का समाचार मेरी पत्नी ने दिन भर मुझ से छिपाए रखा और रात्रि का भोजन करने के पश्चात ही मुझे यह समाचार सुनाया। यह सुनते ही मेरी आंखो मे आंसू आ गये और पर्याप्त समय तक मेरी घिग्घी-सी बन्धी रही। मुझे लगा कि मैं अब अकेला रह गया हू।

आचार्य जी का जहां वेदों पर अधिकार था वहां भारतीय और पाश्चात्य दर्शन के भी वे अद्भुत विद्वान् थे। अंग्रेजी, संस्कृत और हिन्दी तीनो भाषाओं मे उनके ग्रन्थ उनकी विद्वत्ता के प्रमाण हैं। वैदिक सिद्धान्तों के प्रति और ऋषि दयानन्द के प्रति उनकी निष्ठा अनुपम थी। मैं दस वर्ष तक सार्वदेशिक सभा की धर्मार्य सभा का मन्त्री रहा। मेरे बाद आचार्य वैद्यनाथ जी ही धर्मार्य सभा के कर्ताधर्ता रहे। मेरा और उनका चिरकाल तक साथ रहा। लाहौर के ब्राह्म महाविद्यालय में हम दोनों रहे। वाराणसी के संस्कृत विश्वविद्यालय में भी हम दोनों रहे। अनेक यज्ञो के अधिष्ठाता भी हम दोनो रहे। मैं कभी कभी सोचता हू कि हम दोनों की राम लक्ष्मण की सी जोड़ी थी।

जब आचार्य जी बीमार होकर सार्वदेशिक सभा मे रहकर उपचार करवा रहे थे उन दिनो भी मैं एक बार उनसे मिलने के लिये दिल्ली गया था। आचार्य जी मुझे देखते ही प्रेम से विह्वल हो गये। बीमारी के कारण उनकी बोली स्पष्ट नहीं थी, फिर भी उन्होने अपनी बीमारी का हाल आदि से अन्त तक सुनाया। मैं क्या जानता था कि यह हमारा अन्तिम मिलन है। मुझे लगता है कि हमारी जोड़ी बिछुड़ गई। अब मैं अकेला अपने आपको अनाथ सा अनुभव करता हुआ शोक सागर से उबरने का कोई रास्ता नहीं ढूंढ पा रहा हू। आचार्य जी का वियोग मेरे लिये इतना हृदयग्राही होगा—इसकी मुझे कल्पना नहीं थी।

हिंदू सिख-कितने पास कितने दूर

—आचार्य सत्यदेव विद्यालंकार—

जब कोई धार्मिक विचार धारा राजनीतिक रूप धारण कर ले तो धार्मिक विचारों का कोई महत्व नहीं रह जाता। आजकल हिन्दू-सिख विवाद भयंकर राजनीतिक रूप धारण कर गया है। अधिकारों और आर्थिक-राजनीतिक लाभों के लिए गोलियों के साथ आन्दोलन भी चल रहा है। ऐसे विकट समय में धार्मिक समता या विवेचन कुछ अर्थ नहीं रखता। फिर भी धार्मिक विवेचन चलता रहना चाहिए ताकि विचारशील मनुष्यों में सहिष्णुता और सहयोग की भावना जागती रहे।

अलगाव के तर्क

एक प्रसिद्ध सिख सन्त ने हिन्दू सिख भेदों के विषय में निम्न विचार किए हैं। (उनके विचार पंजाबी में हैं हिन्दी भाषान्तर दिया जा रहा है-)

1 खबर आई है कि इंगलैण्ड में पगड़ी के सम्बन्ध में फैसला हुआ है। यह बड़ी महत्व की बात है। इंगलैण्ड की पार्लियामेण्ट ने फैसला कर दिया है कि सिख केवल एक अलग कौम ही नहीं एक अलग नस्ल भी है।

2 सिख अलग कौम है यह फैसला इंगलैण्ड वालों ने भी कर दिया। यह उन्होंने अब किया है। भाई गुरुदास ने आज से 400 वर्ष पहले कर दिया था। दशम पातशाह ने 300 साल पहले किया। सद्गुरु नानक देव जी ने 500 साल पहले किया था। ग्रंथ पढ़िए तो पता चलता है।

भाई गुरुदास-सबदि जिती सिधि मडली
कीतेसु अपना पन्थ निराला।

दशम पातशाह जी -

जब लग खालसा रहे निआरा
तब लग तेज दीऊ मैं सारा।
जब इह गहे बिपरन की रीत
मैं न करो इनकी परतीत।।

3 सिख कहते हैं हम अलग कौम कैसे हैं। दुनियां में सबसे पहले सिख उत्पन्न हुआ। पीछे चोटी रखके हिन्दू बनाया जाता है। सुन्नत करके मुसलमान कहा जाता है। यदि सुन्नत न हो तो काफिर कहेंगे। यदि चोटी न हो तो सिख कहेंगे।

4 वर्तमान समय में 1947 के समय इस देश का विभाजन हुआ। तिरंगा झंडा बना। तिरंगा झंडा तीन कौमों के ऊपर बना। सफेद रंग बीच में, केसरी रंग नीचे। अंग्रेजों ने मशीन गनें लगाईं। उस समय महात्मा गांधी, मोती लाल नेहरू, पटेल आदि सब कहने लगे—अब झंडा ले के चलना है। आगे किसको करें। विचार किया। सिखों के बिना कोई मर नहीं सकता। शीघ्र बाबा खड्ग सिंह से कह दो कि आगे लग जाएं। उनका विचार था कि यह सीधा-सादा होगा। पढ़ा लिखा भी थोड़ा ही होगा। जब बाबा खड्ग सिंह के पास आए कहा-'बाबाजी आगे चलो' उन्होंने कहा-तैयार हूं। पर पहले फैसला होगा। जिसका रंग ऊपर है वह आगे लगे। जिसका रंग नीचे है वह पीछे लगे। सबके दांत खुट्टे हो गए। कहने लगे रंग बदल देते हैं। बाबा जी ने कहा केसरी रंग ऊपर दिया तो बाबा जी झंडा लेकर आगे चले। जब छाती में गोलियां लगनी लगी थीं तो सिख कौम के बहादुर और बाबा खड्ग सिंह आगे लगे। और अब कुर्सियां सम्भालनी हों तो तुली राम आगे लगे। यह सिख कौम के अलग होने का चिन्ह है।

5 उनको उत्तर दिया कि सिखों का इष्ट अलग है। सद्गुरु ग्रन्थ साहिब के सब भाई, धोबी, नाई, हरिजन, चमार, कुम्हार, सैनी अन्तर्गत हैं। पर किसी कुरान में हिन्दू नहीं किसी गीता में मुसलमान नहीं। इसलिए हम अलग हैं। आप कैसे कह सकते हैं कि सिख कौम अलग नहीं।

समीक्षा

यह सारा उद्धरण मैं इसलिए दे रहा हूं कि हम अपने सिख भाइयों के विचारों को समझ सकें और अपनी कमी अनुभव कर सकें। सामान्यतया पहले नजर जाती है। एक तो सन्त जी ने बहुत सी धारणाएं सुनी सुनाई चर्चाओं आधार पर बना ली हैं। सरदार खड्ग-सिंह सम्बन्धी चर्चा ऐसी है। दूसरी बात यह है कि प्रत्येक नए सम्प्रदाय के प्रारम्भिक नेता यही आशा रखते हैं कि उनकी चलाई हुई विचारधारा एक नया मौलिक और व्यापक रूप धारण कर लेगी। पर ऐतिहासिक परिस्थितियां ऐसा नहीं होने देतीं। प्रारम्भिक सिख

आजकल सिखों का एक वर्ग अपने आपको हिन्दुओं से पृथक् अलग कौम के रूप में स्थापित करने के प्रयत्न में जुटा है। इसके लिए जो तर्क यह वर्ग देता है उनकी युक्तियुक्त समीक्षा करने का कोई प्रयत्न नहीं करता। लेखक ने अत्यन्त सौम्य, शान्त, निष्पक्ष भाव से उन तर्कों का समाधान किया है। स्वयं सिख बन्धुओं को भी ठन्डे दिमाग से वस्तुस्थिति पर विचार करना चाहिए।

6. दरबार साहिब में सबको माथा टेकने का अधिकार है। पर किसी मस्जिद में हिन्दू को अधिकार नहीं। किसी शिवालय में मुसलमान को अधिकार नहीं। इसलिए हम अलग हैं।

7 हिन्दुस्तान ही नहीं सारी दुनिया का चक्कर काट आओ। तुम्हें कहीं लंगर (भोजन) मुफ्त नहीं मिलेगा। यदि लंगर मिलेगा तो गुरु के दरबार में ही मिलेगा। और कहीं नहीं मिलेगा। इसलिए भी हम अलग हैं।

8 किसी धार्मिक ग्रन्थ को मानने वालों में उस पंथ की स्त्रियों को उनके अपने इष्ट की सेवा में जाकर नमस्कार करने का अधिकार नहीं, अपने धार्मिक चिन्ह पहनने का अधिकार नहीं। हिन्दू की घरवाली जनेऊ नहीं पहन सकती, तिलक नहीं लगा सकती। मुसलमान की घरवाली परदे के बगैर नमाज नहीं पढ़ सकती, यदि नमाज पढ़नी हो तो परदा करना पड़ेगा। पर हमारा सिखों का असूल है कि जहां माथा सिख ने टेका है तो उसकी पत्नी ने भी वहां माथा टेका है। सिख के शरीर पर कृपाण है तो पत्नी के शरीर पर भी कृपाण है। यदि सिख अखंड पाठ करता है तो उसकी पत्नी भी अखंड पाठ कर सकती है। सिख कीर्तन करता है तो पत्नी भी कीर्तन कर सकती है। हमारा सारा सिलसिला उनसे अलग है तो

नेताओं की भी यही आशा थी कि उनकी विचारधारा को हिन्दू और मुसलमानों का प्रबुद्ध वर्ग स्वीकार करेगा। पर ऐतिहासिक सत्य यह है कि इस्लाम ने इस नए प्रवाह का प्रत्याख्यान कर दिया। प्रारम्भिक गुरुओं के समय जो परस्पर सहानुभूति थी वह बन्दा-बैरागी का समय आते-आते घोर द्वेष के रूप में बदल गई। अन्ततः सिखधर्म को अपने अस्तित्व के लिए पूर्णतः हिन्दू जनसमाज पर आश्रित रहना पड़ा।

सन्त जी ने जितने भी विचार बिन्दु उठाए हैं प्रायः सब धर्म की बाहरी बनावट के सम्बन्ध में हैं—सिद्धान्त और प्रक्रिया से उनका कोई सम्बन्ध नहीं। सिख धर्म के उदय के समय में भारत में दो ही मुख्य विचार धाराएं थीं। एक सेमेटिक या सामी विचार-धारा जिसका मुख्य आधार था—मनुष्य का केवल एक जन्म होना और उसके बाद प्रलय या कयामत के दिन उसे सदा के लिए स्वर्ग या नरक की प्राप्ति। इस स्वर्ग और नरक प्राप्ति की कसौटी अच्छे या बुरे कर्म नहीं, किसी पैगम्बर पर विश्वास मात्र था। यहूदी-ईसाई तथा इस्लाम इनका यही आधार है। हिन्दू धर्म में जीव का अनन्त सर्वांवक्र [illegible] जन्म-मरण है। इस जन्म-मरण का आधार कर्म है। [illegible] मोक्ष में है। सिख धर्म भी इसी विचार-धारा के अन्तर्गत है।

हिन्दुओं से समानता

इस मूल आधार के अतिरिक्त सिख और पुरानी हिन्दू परम्परा में बहुत-सी समानताएं हैं

1. मौखिक इन्कार करने के बावजूद सिख प्रायः जात-पात के बन्धन को मानते हैं। सम्पूर्ण गुरु परम्परा क्षत्रिय जाति की थी—उन्हें बेदी और सोढी कहा जाता है। उन सब में विवाह सम्बन्ध भी क्षत्रिय जाति में ही हुए। अब भी प्रायः सिख भाई अपनी जाति में ही विवाह सम्बन्ध करते हैं।

2, चमत्कारों का विचार दोनों में बद्धमूल है। स्वयं सन्त जी के शब्दों में —

'साहिब श्रीगुरु गोबिन्द सिंह साहिब सच्चे पातशाहजी ने जिस दिन विश्वमित्र रूप (दिव्य रूप) में, मालौट साहिब, जो हजूर साहिब से 5 मील की दूरी पर है। एक लाख बूचडों—कसाइयों को मौत के घाट उतार कर गाएं छुड़ाई और ग्यारह हजार वर्ष तक राज्य किया।'

इस वर्णन से बढ़कर हिन्दू-सिख साधर्म्य का और क्या उदाहरण होगा।

इसके अतिरिक्त सद्गुरु नानकदेव से लेकर अन्य गुरुओं के साथ अनेक चमत्कारों का सम्बन्ध प्रसिद्ध ही है।

3. भूत-प्रेत का विश्वास भी सांझा है। एक उदाहरण लीजिए। स्वयं जब गुरु तेगबहादुर जी दिल्ली गए, तो भूतों की हवेली में ठहरे। उनके प्रमुख शिष्य भाई मतिदास जी को एक प्रेत ने गन्ने लाकर दिये थे। जिनके खाने से उनमें अपरिमित शक्ति आ गई थी। यह घटना सिख इतिहास में प्रसिद्ध है।

4. जल और स्थल में तीर्थ भावना पवित्रता की भावना दोनों में समान है। स्थान भेद तो हो सकता है पर श्रद्धा की भावना एक जैसी है, मृतकों की अस्थियां एक विशेष स्थान पर डालना भी प्रायः एक जैसा ही है।

5 जड़ वस्तु के आगे माथा टेकना, प्रार्थना करना, इष्टसिद्धि की पूजा करना भी लगभग एकसा है—वस्तु भेद हो सकता है।

6. सैद्धान्तिक दृष्टि से देखने पर भी बहुत भेद नहीं दिखाई देता। ईश्वर का स्वरूप मुख्य रूप से अद्वैतवाद का विचार है। प्रकृति की सत्ता स्वीकार की गई है। आत्मा का चरम ईश्वर से प्रेम-भक्ति सम्बन्ध की स्थापना है। यह सम्बन्ध व्यक्तिगत रूप से भी है—सामूहिक रूप से कीर्तन द्वारा भी होता है। आत्मा के विकास में [illegible] से ब्रह्म लोक तक सात लोकों की कल्पना हिन्दू धर्म में है—अरस्तु, [illegible] से लेकर [illegible] की [illegible] सिख धर्म है। [illegible] कृपा का सिद्धान्त [illegible] उसकी कृपा बिना उसे पाया नहीं जा सकता।

(शेष पृष्ठ 32 पर)

स्वर्णिम क्रान्ति की वाहिका : डीएवी शिक्षा

—दरबारी लाल—

आज देश के सामने अनेक जटिल समस्याएं हैं। स्वतन्त्र भारत सांप्रदायिकता, आतंकवाद, भाषा-प्रांत और क्षेत्रीयता के झगड़ों की ज्वाला में सुलग रहा है। इन व्यवस्थाओं के कारण प्रगति के पथ का पहिया अवरुद्ध हो रहा है। इन सब राष्ट्रीय रोगों का कारण और निदान एक ही है। वह यह कि राष्ट्र की वर्तमान युवा पीढ़ी को सही दिशा का अभाव। इसके अभाव में ही विघटन होता है जैसे प्रकाश के अभाव में अन्धकार पनपता है। इसका निदान भी एक ही है कि युवापीढ़ी को दिशापरक शिक्षा देना। यह दिशापरक शिक्षा होगी भारतीय श्रेष्ठ जीवन मूल्यों पर आधारित शिक्षा। उनका मानना है कि इस शिक्षा के विस्तार से न केवल यह समस्याएं ही तिरोहित हो जायेंगी बल्कि स्वयमेव एक ऐसी स्वर्णिम क्रांति भी देश में जन्म ले सकेगी जो किसी आन्दोलन से संभव नहीं है। इसलिए इस समय देश को एक ही आंदोलन की जरूरत है और वह है संस्कृति प्रधान शिक्षा के व्यापक विस्तार का आंदोलन।

प्रश्न—आपकी इस अवधारणा का आधार क्या है ?

उत्तर—इसे हम एक ऐतिहासिक उदाहरण से समझ सकते हैं। भारतवर्ष के यवनों और मुगलों के काल में लगभग साढ़े सात सौ साल पराधीन रहने पर भी उसकी स्वाधीन चेतना का समाप्त होना। लार्ड मैकाले ने इस पर चिंतन किया कि भारतीयों की यह विजय वृत्ति समाप्त क्यों नहीं हो पाई। उसने देखा कि अपनी संस्कृति और जीवन मूल्यों के प्रति श्रेष्ठता का गर्व ही इन्हें विजयिष्णु बनाये हुए है और इसी श्रेष्ठता के संस्कार ने इनकी संस्कृति को जीवित रखा हुआ है। मैकाले ने यह भी देखा कि इस संस्कृति की वाहक है इनकी संस्कृतिपरक शिक्षा और इनका महान सत्यदर्शन। बस इस सत्य को पहचानते ही उसने हमारी शिक्षा पद्धति के ताने-बाने को नष्ट करने की मुहिम चला दी। उसने गर्व से कहा कि हम इस देश पर अंग्रेजी शिक्षा लादेंगे तो इनकी श्रेष्ठता का सौ वर्ष में समाप्त हो जायेगा और जो काम सात सौ साल तक यवनों की तलवारें-सेनायें नहीं कर सकीं वह हमारी शिक्षा-पद्धति कर देगी। मैकाले ने कहा था कि इससे अंग्रेजी पढ़े लिखे युवक तन से तो भारतीय होंगे किन्तु मन से अंग्रेज बन चुके होंगे और उनके मन में अपनी संस्कृति और इस देश की श्रेष्ठता का कोई भाव नहीं रह जायेगा। मैकाले की इस शिक्षा का ही परिणाम है कि हमारे युवकों के सामने कोई आदर्श नहीं रह गया, राष्ट्र के प्रति कोई [illegible] नहीं रह गई। परिणाम [illegible] के अभाव में सांप्रदायिकता, पृथकतावाद और जातीयवाद के विषधर फन उठे। मेरा दृढ़ विश्वास है कि संस्कार मूलक शिक्षा के अभाव के कारण ही ये समस्याएं पनपी हैं।

प्रश्न—क्या वैदिक शिक्षा इस धर्म निरपेक्ष राष्ट्र के लिए उपयुक्त है, क्या यह विभिन्न धर्मावलम्बियों को स्वीकार्य हो सकती है ?

उत्तर—वैदिक शिक्षा का किसी धर्म से कोई विरोध नहीं है क्योंकि यह किसी धर्म विशेष की शिक्षा ही नहीं। वैदिक शिक्षा से तात्पर्य हमारी हजारों वर्ष की अनुभूत सांस्कृतिक परम्परा से है। हमारा समृद्ध वैदिक वाङ्मय शाश्वत जीवन मूल्यों की स्थापना करता है। यह ऋषि-मुनियों की तप साधना से विस्तृत ज्ञान है। पथ-सम्प्रदायों से इसका कोई विरोध नहीं है। यह तो जागृत राष्ट्र की विकास यात्रा का ज्ञानकोष है। इसमें साम्प्रदायिकता की खोज करना ही सांप्रदायिक दृष्टि है। इसलिए धर्म निरपेक्षता की अवधारणा से इसका कोई विरोध नहीं, मतावलम्बियों द्वारा इसे स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

प्रश्न—वैदिक शिक्षा के वह कौन से आदर्श हैं जो वर्तमान राष्ट्रीय समस्याओं के निदान में सहायक हो सकते हैं ?

उत्तर—जिसे हम वैदिक शिक्षा या भारतीय संस्कृति-मूलक शिक्षा कहते हैं, उसने परमात्मा से लेकर राष्ट्र, समाज, परिवार और व्यक्ति, सभी के लिए महान् आदर्श प्रस्तुत किये हैं। दुनियां की कोई ऐसी शिक्षा व्यवस्था नहीं है जिसने समग्ररूप से व्यक्ति से परमात्मा तक की हर सीढ़ी को बनाने के कर्तव्य निर्धारण का इतना सूक्ष्म चिंतन किया हो। इसे कर्तव्यबोध की व्यष्टि समष्टि परमेष्टि के नाम से अभिहित किया गया है। इसने मनुष्य के विकास की ही चिंता नहीं की बल्कि प्राणिमात्र के सुख की परिकल्पना की है। 'सर्वेभवन्तु सुखिनः' एवं 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' जैसे हमारे बोधवाक्य इसी सत्य के परिचायक हैं। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की हमारी अवधारणा हमारी विश्वबन्धुत्व की दृष्टि के परिचायक हैं तो 'सत्यं वद धर्मं चर' जैसे सत्यवचन जीवन में सत्य और धर्म पूर्ण आचरण का उपदेश देते हैं। यदि राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक के जीवन और व्यवहार में मैत्री और विश्वबन्धुत्व के इन महान् आदर्शों का समावेश हो जावे तो भला कोई पार्थक्य की समस्या कहां रहेगी ?

प्रश्न—डी ए वी संस्थाओं ने इन राष्ट्रीय जीवनादर्शों को कहां तक साकार किया है ?

उत्तर—डी ए वी शिक्षा संस्थाओं में इन आदर्शों की शिक्षा का समावेश किया है। निश्चित रूप से छात्रों पर इसका प्रभाव पड़ता है। आज तक डी ए वी संस्थाओं से निकले हुए हजारों छात्र समाज में वरिष्ठ पदों पर विद्यमान हैं और वे अपने राष्ट्रीय तथा सामाजिक कर्तव्य पालन में अपेक्षाकृत काफी सजग रहते हैं।

प्रश्न—समाज का पिछड़ा वर्ग तो शिक्षा प्राप्त करने की सामर्थ्य ही नहीं रखता, क्या इसके लिए भी आपने कोई योजना बनाई है।

उत्तर—यह सत्य है कि समाज के पिछड़े वर्ग के पास इतने साधन ही नहीं हैं कि उनके बच्चे कोई भी शिक्षा प्राप्त कर सकें। उन्हें तो अपनी आजीविका के संघर्ष में ही जुटे रहना पड़ता है। इसके लिए हमने पंजाबी बाग नई दिल्ली के अपने विद्यालय से यह योजना शुरू की है कि साधन सम्पन्न बच्चे निर्धन बच्चों की शिक्षा के लिए साधन प्रदान करते हैं। इस योजना के अन्तर्गत अब तक 500 बच्चे शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं। जब हम देखते हैं कि पिछड़े परिवेश से आए ये बच्चे सुसंस्कृत हो गए हैं हमें यह विश्वास हो जाता है कि अभावों की बाधा दूर हो जावे तो पिछड़े वर्ग के बच्चों में भी असीम संभावनाएं छिपी पड़ी हैं। इसी प्रेरणा से हमने इस योजना को विस्तार देना शुरू किया है।

इसके अतिरिक्त अशिक्षित महिलाओं को शिक्षा प्रदान करने के लिए उसने कुलाची हंसराज विद्यालय नई दिल्ली आदि मे प्रेरणा के आधार पर उनकी शिक्षा के केन्द्र बताए हैं। इन क्षेत्रों में शिक्षा के प्रकाश के कारण कारण गतिशील परिवर्तन आया है। महिलाओं की शिक्षा के लिए भी प्रेरक योजना रखी गई है जिसके अन्तर्गत 90 प्रतिशत उपस्थिति वाली महिलाओ को एक सिलाई मशीन दी जाती जाती है। शिक्षा प्रेमी दानवीरों द्वारा इस योजना के लिए भरपूर सहयोग रहता है।

प्रश्न—क्या आप अनुभव करते हैं कि दूर दराज वनवासी क्षेत्रों में भी इस शिक्षा के प्रसार की आवश्यकता है जहां कुछ ईसाई मिशनरी इन्हें राष्ट्रीय धारा से पृथक करने की कोशिश करते रहते हैं ?

उत्तर—हमने उन क्षेत्रों में शिक्षा-प्रणाली की महती आवश्यकता का अनुभव तो किया है, किन्तु कुछ क्षेत्रों में

शिक्षा केन्द्र खोलने के लिए शिक्षक योजना काफी दुस्साध्य है। इसलिए फिलहाल उन क्षेत्रों से छात्रों को लाकर दिल्ली के विद्यालयों में उन्हें पढ़ाने की योजना को क्रियान्वित किया गया है। जैसे नागलैंड से 25 छात्र लाए गए हैं। बाद मे इन्हीं छात्रों के द्वारा वनवासी क्षेत्रों मे शिक्षा प्रसार किया जायेगा। डी ए वी संगठन द्वारा राष्ट्रीय संकट में सक्रिय सेवा कार्य भी किया जाता है। संगठन द्वारा कालाहांडी आदि के सूखा-ग्रस्त क्षेत्र, राजस्थान के किशनगढ़ क्षेत्र और गुजरात के टंकारा क्षेत्र में सूखा राहत कार्य भी चलाए जा रहे हैं।

प्रश्न—क्या आप आशान्वित हैं कि संस्कृति प्रधान शिक्षा की मांग बढ़ेगी और इसका अधिक गति से विस्तार हो सकेगा ?

उत्तर—मैं इस सन्दर्भ में पूरी तरह आशान्वित हूं कि संस्कृति प्रधान शिक्षा की ओर देशवासियों का रुझान बढ़ेगा। आज हर कोई समझ रहा है कि युवकों में बढ़ती नशाखोरी, अपराध प्रवृत्ति और निराशा हताशा व पलायनवाद उचित शिक्षा के अभाव के कारण ही है। इसलिए कालचक्र स्वयमेव जनमानस को सही दिशा की ओर आकृष्ट करेगा इसमें सन्देह नहीं है।

(श्री धर्मपाल शर्मा की भेंट वार्ता)

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का शताब्दी समारोह

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की 4 से 6 नवम्बर 1988 तक अलवर में शताब्दी समारोह मनाया जायेगा। महामन्त्री ओम प्रकाश यादव ने बताया कि समूचे राजस्थान के आर्य समाजो एवं आर्यों में समारोह के प्रति भारी उत्साह है। सभा का इतिहास लेखन का काय श्री भवानी लाल भारतीय कर रहे हैं। इसमें राजस्थान के आर्य समाजो की 100 वर्षों की गतिविधियो का लेखा जोखा किया जावेगा इस अवसर पर एक स्मारिका प्रकाशित की जावेगी। जिन समाजों के पास सभा के सम्बन्ध में कोई भी ऐतिहासिक रिकार्ड या जानकारी हो तो वे आय प्रतिनिधि सभा राजस्थान के कार्यालय आर्य समाज कृष्ण पोल बाजार जयपुर में भजने का श्रम करें—मन्त्री

मैं आर्य समाजी कैसे बना ?

—महात्मा हंसराज जी की लेखनी से—

अपने गांव में मैंने केवल एक समय किसी वृद्ध से सुना था कि लाहौर में एक साधु आया हुआ है, जो ईसाइयों से वेतन पाता है और हिन्दू धर्म के विरुद्ध उपदेश करता है। उस समय मुझे मालूम नहीं था कि ये साधु स्वामी दयानन्द हैं, और उनका उपदेश क्या है? मेरी आयु भी उस समय कम थी और न ही मुझे स्कूली ज्ञान था। जब मैं 18,9 में लाहौर आया तो मेरे बड़े भाई ने जो उस समय डाकघर में नौकरी करते थे, मुझे सरकारी स्कूल में दाखिल करवा दिया। उस समय सरकारी स्कूल का अपना मकान नहीं था। राजा ध्यानसिंह की हवेली में क्लास लगती थी। सरदार हरिसिंह जो बाद में अजाल के इन्स्पेक्टर बन कर प्रसिद्ध हुए, वे मिडल स्कूल के मुख्याध्यापक थे। मैं कुछ मास उनकी छत्रछाया मे पढ़ता रहा। फिर अजाल में बीमार होने के कारण मैंने सरकारी स्कूल छोड़ दिया। स्वस्थ होने के कुछ दिन बाद भाई साहब ने मुझे यूक्लिड की शिक्षा स्वय दी। और मुझे रगमहल में मिशन स्कूल में प्रविष्ट करा दिया। मैं वहां पढ़ता रहा। बाबू कालिचरण चटर्जी, जो बाद मे अजाल आर्य समाज में सेवक बने थे, वे हमारे साथ पढ़ते थे। वे अपनी वाणी से हमको बहुत हसाते रहते थे। एक समय की बात है कि उन्होंने उस समय की एक पुस्तक 'मासूमा रसूम हिन्द' के कुछ शब्द पढ़कर बताया कि इसमे हिन्दुओं की कितनी निन्दा की गई है? इस पुस्तक में हिंदुओ के जो चरित्र दिये गये हैं वे गवारो और चोरों के हैं। मुसलमानों के चरित्र सभ्य और धनवानो के हैं।

मैंने होशियारपुर स्कूल में सस्कृत को दूसरी भाषा के रूप मे लिया था। मैं फारसी भी पढ़ता रहता था। मिशन स्कूल में मैंने सस्कृत और फारसी दोनों की पढ़ाई चालू रखी। हमारे स्कूल के प्रधान पण्डित तेजभान थे। वे कहा करते थे कि स्वामी दयानन्द के साथ उनकी एक चर्चा हुई थी। वे अपनी चर्चा मे इसलिए सफल नहीं हुए क्योंकि स्वामी दयानन्द ने कई भूतप्रेतों को वश में कर रखा है। उनके बल पर वे विरोधियो पर सफलता प्राप्त कर लेते हैं। मैंने उस समय तक न आर्यसमाज का मुंह देखा था न ही स्वामी जी कोई पुस्तक पढ़ी थी। आर्यसमाज मे प्रवचन करने वाले भी बहुत कम थे। इसलिए मैंने किसी आर्यसमाजी का प्रवचन भी नहीं सुना था।

विद्रोही स्वर

उस समय मिशन स्कूल में दो अध्यापक प्रसिद्ध थे—पादरी फोरमैन साहब तो स्कूल के प्रिंसिपल थे। स्कूल के हाल में सब लड़कों और और अध्यापकों को इकट्ठा करके नमाज पढ़ते और इन्जील की किसी आयत की व्याख्या करते। विद्यार्थियों के साथ उनका विशेष सम्बन्ध नहीं था। स्कूल के मुख्य-अध्यापक श्री रामचन्द्रदास बहुत योग्य थे। विद्यार्थियों से प्रेम करने वाले, देशप्रेमी, उदार ईसाई थे। दूसरे अध्यापक श्री बोस अपने विषय में कोई विशेष योग्यता नहीं रखते थे। किन्तु मिशन स्कूल के लिए धन इकट्ठा करने में बड़े होशियार थे। लड़के उनसे हंसी खेल भी किया करते थे। कारण यह था कि उनका काम छुट्टी देना और फीस, दण्ड वसूल करने का था। छुट्टी देते समय वे यह देख लिया करते थे कि उस दिन हिन्दुओं का त्योहार है या नहीं? जैसे श्राद्ध के दिनों मे जो लड़का छुट्टी मांगता तो उससे वह एक दिन के हिसाब से दो पैसे वसूल कर लेते थे। कभी कभी झगड़ा भी हो जाता। किन्तु हमारे दूसरे अध्यापक मिशन स्कूल की आर्थिक स्थिति का बहुत ध्यान रखते थे।

मेरे सम्बन्ध में उनकी यह धारणा थी कि मैं होशियार हूं और पढ़ाई में भी रुचि रखता हूं, किन्तु साथ ही गरम भी हूं। क्योंकि मैं कह दिया करता कि जिन त्यौहारो में सम्मिलित होना ईसाई पादरी ठीक नहीं समझते, उनमें सम्मिलित होने पर दण्ड लेते हैं। दण्ड लेना ठीक नहीं। एक दिन हमारी दसवीं क्लास के मुख्य अध्यापक अंग्रेजी की 'सीनियर रीडर' पढ़ा रहे थे। मुख्य अध्यापक जानते थे कि मैंने हजरत ईसामसीह के जीवन चरित्र की पुस्तक को-जो हमारे कोर्स में थी—अच्छी तरह पढ़ा हुआ है। इस पुस्तक में से बहुत से प्रश्न पूछे जाते और मैं उनका सन्तोषजनक उत्तर दिया करता था और वे मुझसे बहुत प्रसन्न थे। सीनियर रीडर में पहला पाठ यह था कि संसार को बने हुए छः हजार वर्ष बीते हैं। जो लोग ससार के आरम्भ में हुए उनका अनुभव, ससार के वर्तमान मनुष्यों से बहुत कम था और इसलिए उनकी योग्यता और उनका ज्ञान भी वर्तमान ससार से निम्न कोटि का था।

मुख्य अध्यापक ने मुझ से यह पूछा कि हंसराज, क्या यह सत्य है? मैंने बचपन के जोश में मुख्य अध्यापक से बेढंगा प्रश्न कर दिया। मैंने निवेदन किया कि पिता का अनुभव अधिक होता है या पुत्र का? इसका उत्तर मुख्य अध्यापक क्या दे सकते थे? यह तो नहीं कह सकते थे कि पिता का अनुभव कम होता है। वे कुछ परेशान से हो गये। उन्होंने कहा—पुराने हिन्दुओं को ईश्वर का ज्ञान नहीं था। वे अग्नि, जल, वायु, सूर्य आदि की पूजा किया करते थे। मैंने कहा—श्रीमानजी, यह गलत है। 'कहानी हिन्द' में मैंने पढ़ा हुआ था कि हिन्दू लोगों को परमेश्वर का ज्ञान था। वे परमेश्वर के सम्बन्ध में मानते थे कि उसके पांव नहीं परन्तु सभी स्थानों पर पहुंच जाता है, उसके हाथ नहीं परन्तु सब कुछ ग्रहण करता है। मैंने यह सब सुना दिया। उस का उत्तर क्या हो सकता था? किन्तु मुझे यह ज्ञान नहीं था अग्नि, वायु की पूजा के सम्बन्ध में सच्चे विचार क्या हैं? मैंने यूं ही यह मनमाना उत्तर दे दिया कि प्राचीन आर्य इन पंचभूतों के माध्यम से परमेश्वर की पूजा किया करते थे, पंचभूतों की नहीं।

मुख्य अध्यापक जी संस्कृत से परिचित नहीं थे, वे क्या कह सकते थे? अन्त में उन्होंने कहा कि देखो, इस रीडर में यह लिखा है, इसलिए यह सत्य है। उनका यह तर्क सही नहीं था। मैंने उसी समय कह दिया—यह रीडर बनाने वाले की मूर्खता है जो इसने ऐसा लिखा है। इस पर उन्होंने मुझे तीन चार बेंत मारी और क्लास से बाहर निकाल दिया। मैं बाहर निकल गया। दूसरे दिन दूसरे अध्यापक के पास गया और कहा कि आप मुख्य अध्यापक को प्रेरणा करें कि वे मुझे क्लास में बैठने की स्वीकृति दें। वे बंगाली थे, उर्दू अच्छी तरह नहीं बोल सकते थे। उन्होंने कहा—हंसराज, मैं तो पहले ही जानता था कि तुम गरम स्वभाव के हो। तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था, मैं प्रयत्न करूंगा। दो-तीन दिन में मुझे क्लास में बैठने की स्वीकृति मिल गई। मैंने भी अपने मन में निश्चय कर लिया कि मैं क्लास में ईसाई धर्म के विरुद्ध कुछ न कहूंगा। वास्तव में बात यह थी कि मैं अपने क्लास में एक होशियार विद्यार्थी था और मुख्य अध्यापक भी मुझसे स्नेह करते थे। यदि मैं भूल न करता तो इस वर्ष मिशन स्कूल के सत्रह विद्यार्थियों में से केवल मैं ही एन्ट्रेंस में पास होता।

जिज्ञासा का उद्भव

श्री रामचन्द्रदास का स्नेह मुझ पर बहुत था। उनकी देश प्रेम की बातों को हम बहुत पसन्द करते थे। वे ईसाई थे फिर भी मेरे मन मे उनके लिए बहुत सम्मान था। यह जानते हुए भी कि मैं आर्य समाजी हूं और ईसाई मजहब की पढ़ाई को गलत समझता हूं, वह कई बार यह कहा करते थे कि मुझे अपने विद्यार्थी हंसराज पर बड़ा अभिमान है। मैं भी जब कभी उनसे मिलता था, उनके घुटनों पर हाथ लगाकर उनसे नमस्ते कहता था। एक समय मैंने उनकी सेवा में मिठाई भेंट की और उन्होंने उसको स्वीकार करके मुझे सम्मानित किया।

मुख्य अध्यापक के साथ जो मेरा मतभेद हुआ, उसने मेरे मन पर विशेष प्रभाव डाला। और मुझे इस बात को जानने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि क्या हमारे पूर्वज जड़पूजक थे या ईश्वर को ही मानते और पूजते थे। इसलिये मैंने इधर-उधर से खोज करके आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में जाने लगा। मैं आर्यसमाज के उपदेशों को सुनता और पत्रिकाओं को पढ़ता। लाहौर आर्य समाज के प्रधान स्वर्गीय लाला साईं दास जी की दृष्टि समाज में आने वाले नये आदमियों पर बहुत शीघ्र पड़ती

(शेष पृष्ठ 12 पर)

सबसे भयानक सांस्कृतिक गुलामी

"जातियों का सांस्कृतिक विनाश तब होता है जब वे अपनी परपराओं को भूलकर दूसरों की परम्पराओं का अनुकरण करने लगती हैं, जब वे अपने रस्म-रिवाजों को छोड़कर दूसरों के रस्म रिवाज अपनाने लगती हैं, जब उन्हें अपने पूर्वजों पर ग्लानि और दूसरों के पूर्वजों पर श्रद्धा होने लगती है तथा जब वे मन ही मन अपने को हीन और दूसरों को श्रेष्ठ मानकर मानसिक दासता को स्वेच्छया स्वीकार कर लेती हैं। पारस्परिक आदान प्रदान तो सस्कृतियों का स्वाभाविक धर्म है, किन्तु जहां प्रवाह एक तरफ हो, वहां यही कहा जायेगा कि एक जाति दूसरी जाति की सांस्कृतिक दासी हो रही है।

"किन्तु सांस्कृतिक गुलामी का इन सबसे भयानक रूप वह होता है, जब कोई जाति अपनी भाषा को छोड़कर दूसरों की भाषा को अपना लेती है और उसी में तुतलाने को अपना परम गौरव मानने लगती है। यह गुलामी की पराकाष्ठा है, क्योंकि जो जाति अपनी भाषा में नहीं सोचती, अपनी भाषा में अपना साहित्य नहीं लिखती, अपनी भाषा में अपना दैनिक कार्य सम्पादित नहीं करती, वह अपनी परंपरा से छूट जाती है, अपने व्यक्तित्व को खो बैठती है और उसके स्वाभिमान का प्रचण्ड विनाश हो जाता है।"

—दिनकर ["राष्ट्र भाषा और राष्ट्रीय एकता" से]

महात्मा जी के जीवन की कुछ झांकियां

—रुद्र दत्त शर्मा—

देश और धर्म की रक्षा के लिये सिर कटाना अथवा हंसते-हंसते फांसी के तख्त पर लटक कर जीवन की बलि दे देना साधारण बात नहीं है। परन्तु जाति के उत्थान, धर्म के प्रचार और विद्या के प्रसार के लिये भूखे और प्यासे रहते हुये आयु भर त्याग और तपस्या की भट्टी में तिल 2 जलते हुए दूसरों को प्रकाश देने का सौभाग्य किसी विरले ही माई के लाल को प्राप्त होता है। आज से एक शताब्दी पूर्व जब वेद का सूर्य अज्ञान के बादलों से ढक जाने के कारण चारों ओर पौराणिक मतों का जाल बिछ रहा था और कुरान एवं बाइबल का बोलबाला हो रहा था ऋषि सन्तान अपने पूर्वजों के मार्ग से भटक कर इस्लाम और ईसाइयत का शिकार हो रही थी। अंग्रेज शासकों ने नाना प्रकार के षड्यन्त्रों द्वारा कुछ ही वर्षों में सम्पूर्ण हिन्दू जाति को ईसाई बनाने का अभियान चला रखे थे। ऐसे समय में, युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म हुआ। जिन्होंने बाल्यकाल में ही घर-बार त्याग कर घोर तपस्या, विद्या, ज्ञान एवं अपूर्व पराक्रम के बल पर देश और धर्म के शत्रुओं को परास्त करके वैदिक धर्म का नाद बजाया। महर्षि और उसके सुयोग्य सपूतों ने देखते ही देखते वेद के प्रकाश से मिथ्या मतो के ढोल की पोल खोल कर रख दी।

त्याग का अनुपम उदाहरण

महर्षि दयानन्द के जी-जान पर खेल जाने वाले अनेकों सपूतों में सर्व श्री महात्मा हंसराज स्वामी श्रद्धानन्द पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी तथा पं० लेखराम आर्य मुसाफिर के नाम विशेष स्थान रखते हैं। महर्षि के परलोक गमन के पश्चात् उनके महान् कार्य्य को पूरे वेग के साथ आगे ले जाने के लिये उनके सपूतों ने जहां वेद प्रचार, शुद्धि, संगठन और शास्त्रार्थों आदि द्वारा जनता को सन्मार्ग दिखाने में कोई कमी न रखी वहां उस समय की अंग्रेज शासकों द्वारा प्रचलित देश और धर्म से दूर ले जाने वाली घृणित एवं विषैली शिक्षा प्रणाली के दुष्प्रभाव से विद्यार्थियों को बचाने और उनमें देश भक्ति और धर्म के प्रति श्रद्धा का संचार करने के लक्ष्य से डी ए वी संस्थाओं की नींव भी रखी। लाहौर में डी ए वी की सर्वप्रथम संस्था के लिये भूमि तथा भवन निर्माण आदि का सम्पूर्ण प्रबन्ध हो चुकने के बावजूद आर्य्य नेता अतीव परेशान थे कि इस आदर्श संस्था के संरक्षण तथा प्रशिक्षण का उत्तरदायित्व किस के कन्धों पर रखा जाये ? उन्हीं दिनों, एक साधारण घराने में उत्पन्न, होनहार युवक हंसराज ने पंजाब विश्व विद्यालय से बी० ए० पास किया था। उन दिनों बहुत कम लोग अपनी सन्तानों को बी० ए० तक की शिक्षा दिला पाते थे और बी० ए० पास करने वाले युवकों को अंगरेज सरकार तुरन्त किसी ऊंचे सरकारी पद के लिये बलोच लेती थी। जैसा कि महात्मा हंसराज जी के सहपाठी राजा नरेन्द्र नाथ पंजाब के मंत्री पद तक आसीन हुये थे। परन्तु युवक हंसराज ने जब डी० ए० वी० संस्था के प्रबन्धकों को संस्था की बागडोर सम्भालने के लिये किसी योग्य व्यक्ति की खोज में परेशान देखा तो वह उच्च सरकारी पदों की आशा को ठुकरा कर अपने भाई श्री मुल्कराज के पास पहुंचे और देश एवं जाति के उत्थान के लिये स्थापित की जा रही डी० ए० वी० संस्था के लिये बिना वेतन अपना जीवन अर्पण करने का विचार प्रकट किया तो देवता स्वरूप भाई लाला मुल्कराज अपने भाई की ऐसी पवित्र भावना को देखकर गद्गद् हो गये और सहर्ष बोले कि वह "अपने वेतन मे से आधी राशि उनके निर्वाह के लिये दे दिया करेंगे।" इस पर महात्मा जी ने अपनी अमूल्य सेवायें निःशुल्क रूप में संस्था के संचालकों के सामने प्रस्तुत कर दी। इस पर आर्य जगत् में हर्ष और उत्साह का सागर ठाठें मारने लगा।

महात्मा जी के तप त्याग और अनुपम योग्यता तथा उनके पद-चिन्हों पर चलने वाले अध्यापकों की निस्वार्थ सेवाओं के परिणाम स्वरूप आरम्भ मे एक हाई स्कूल के रूप में लगाया हुआ पौधा आज महान् वट-वृक्ष के रूप में प्रवर्धित एवं प्रफुल्लित हुआ समस्त देश के कोने-कोने को आच्छादित कर रहा है। विद्यार्थियों में अपने धर्म सभ्यता और संस्कृति के लिये पूर्ण निष्ठा भरने के साथ-साथ हमारी इन संस्थाओ ने शहीद भगत सिंह और राम प्रसाद बिस्मल जैसे देश पर मर मिटने वाले अनेक युवकों का निर्माण किया जिन्होंने स्वतन्त्रता संग्राम में बढ़ चढ़कर भाग लिया।

दृढ़व्रती महात्मा जी

एक बार किसी पारिवारिक विवाद के कारण महात्मा जी के भाई द्वारा मिलने वाली राशि न पहुंचने से इनके परिवार के खानपान आदि-आदि सभी आवश्यकताओं मे बाधा उत्पन्न हो गई। इस पर भी महात्मा जी नियम बद्ध रूप में अपने कर्तव्य निभाते रहे। एक दिन वह परिवार को भूख से व्याकुल देखकर चिन्ता निमग्न बैठे थे कि अकस्मात् अलमारी में से कोई पुस्तक निकालकर पढ़ने लग गये। देव-वशात, अलमारी में से जो पुस्तक महात्मा जी के हाथ लगी, वह गीता थी और पन्ना उलटने पर जो श्लोक सामने आया वह था :—
"कर्मण्येवाधिकारस्ते-मा फलेषु कदाचन"

श्लोक ने सोने पर सुहागे का काम किया। महात्मा जी और भी दृढ़ प्रतिज्ञ होकर परिवार को भी धैर्य्य एवं सान्त्वना देने लगे। दूसरी ओर उसी समय उनके भ्राता श्री मुल्कराज और उनकी पत्नी के हृदय में प्रभु की ओर से ऐसी सद्प्रेरणा उठी कि वह निश्चित राशि लेकर स्वयं महात्मा जी के पास पहुंच गये।

महात्मा जी के सुपुत्र श्री बलराज की देश की स्वतन्त्रता सम्बन्धी विशेष सरगर्मियों के कारण अंगरेज सरकार ने उस पर बगावत का केस चलाकर फांसी का दण्ड दिया। उस समय का गवर्नर चाहता था कि यदि महात्मा हंसराज उन्हें एक बार कहें तो वह बलराज का मृत्यु दण्ड रद्द कर देगा। परन्तु महात्माजी ने गवर्नर के सामने आना और याचना करना स्वीकार न किया तो गवर्नर ने स्वयं एक दिन डी० ए० वी० कालेज देखने का कार्यक्रम निश्चित किया। परन्तु महात्मा जी उस दिन किन्ही और आवश्यक कार्यो में व्यस्त रहे और कालेज से अनुपस्थित रहे, ताकि गवर्नर का समुचित स्वागत और मान करने से, वह यह न समझे कि महात्मा जी बलराज को मुक्त कराने के लिये उनके आगे पीछे फिर रहे हैं। यह है महात्मा जी की सच्चरित्रता और स्वाभिमान का प्रमाण।

लाला खुशहाल चन्द जो प्रतिदिन सूर्योदय से बहुत पहले महात्मा जी के साथ भ्रमण के लिये जाया करते थे। एक दिन प्रातः जब वह महात्मा जी के निवास स्थान पर पहुंचे तो मालूम हुआ कि महात्मा जी अतीव परेशानी में रात भर इधर-उधर चक्कर लगाते रहे हैं। कारण पूछने पर महात्मा जी ने अपने सरहाना के नीचे से निकाल कर एक तार दिखाया। जिसमें मालाबार में मोपलाओं द्वारा सहस्रों हिन्दुओं की निर्मम हत्या तथा लूटमार की दुखद सूचना थी। तार दिखाते हुए महात्मा जी ने कहा कि जिसके कानों को सहस्रों अनाथ बच्चों और विधवाओं की चीखों पुकार चीर रही हो उसे नींद कैसे आ सकती है ? महात्मा जी ने दिन चढ़ते ही एक शिष्ट मण्डल मालाबार भेजा और उपद्रव ग्रस्त हिन्दुओ की सहायता के लिये भारी मात्रा में धन, कपड़े और अनाज भेजने का प्रबन्ध किया।

विनम्रता की मूर्ति

आज से लगभग 55 वर्ष की एक घटना भी पाठकों के लिये रुचिकर होगी जब आर्य युवक समाज अमृतसर के वार्षिक उत्सव के अवसर पर हमने श्री महात्मा हंसराज जी तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी दोनों महानुभावों को आमन्त्रित किया। उस समय के विख्यात सन्यासी स्वामी मुनीश्वरानन्द जी भी हमारे उत्सव में पधारे हुये थे। उन्होंने अपने भाषण के मध्य मे आर्य प्रतिनिधि सभा तथा प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के भेदभाव मिटाने के लिये, मञ्च पर विराजमान उपरोक्त दोनों महारथियों को खड़े होकर परस्पर गले मिलने के लिये कहा। महात्मा हंसराज जी के उस समय के ये शब्द आज भी मेरे कानों में गूंज रहे हैं—"श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी सन्यास धारण कर लेने के कारण मुझ से बहुत आगे निकल चुके हैं। अत. मैं उनसे गले मिलने की बजाय उनके चरण स्पर्श करता हूं।" यह है महात्मा जी की विनम्रता उदारता और हृदय की विशालता का प्रमाण।

सारांश यह कि महात्मा जी का समस्त जीवन ही शिक्षा का स्रोत और त्याग एवं तपस्या का मुंह बोलता चित्र था। उन्होंने आर्य्य समाज तथा आर्य्य संस्थाओं द्वारा देश और जाति के अन्दर नव-जीवन का संचार किया। आज उनके जन्म दिन पर हमें देखना होगा कि उनके खून और पसीने से सींचा हुआ आर्य्य समाज और आर्य्य संस्थायें उनके काम को कहां तक आगे ले जा रही हैं ? आर्य्य समाज भवनो की सुन्दरता और संख्या की दृष्टि से बहुत उन्नति कर रहा प्रतीत हो रहा है परन्तु कार्य की दृष्टि से शुद्धि, संगठन और शास्त्रार्थों को छोड़ कर केवल हवन यज्ञ, भजनो तथा भाषणों तक सीमित होकर रह गया है। जैसा कि निम्न शब्दों से प्रकट होता है :—

समाजों में पहला नजारा नहीं है,
वह उत्साह और प्रेम धारा नहीं है
"विश्वमार्य्यम्" का वह नारा नहीं है,
शास्त्रार्थों में अब मन हमारा नहीं है।

दूसरी ओर हमारी शिक्षण संस्थाओं के सम्बन्ध मे भी दुख से कहना पड़ता है कि यही हमारे स्कूल और कालेज जो महात्मा जी के समय मे वास्तविक अर्थों में विद्या मन्दिर थे और जिन की नींव महर्षि दयानन्द के पवित्र उद्देश्य की पूर्ति के लिए रखी गयी थी और जिनमे से निकले हुये विद्यार्थी न केवल दृढ़ आर्य्य अपितु आर्य्य मिशनरी बन कर निकलते थे आज वही अंग्रेजी वेष भूषा, और अंग्रेजी भाषा के प्रयोग एवं प्रचार में दूसरे विद्यालयो को मात किया जा रहा है और महर्षि दयानन्द के आदेश के नितान्त विरुद्ध लड़के और लड़कियो को एक साथ सह शिक्षा दी जा रही है।

महात्मा हंसराज जी का स्मरण करते समय हमें उनके आदर्श जीवन से शिक्षा प्राप्त करते हुए उनके पद चिन्हो पर चलते आर्य्य समाज तथा आर्य्य शिक्षणालयो रूपी उनकी वाटिकाओं को फिर से पूर्ववत् वास्तविक अर्थो मे उन्नति के शिखर पर पहुंचाने का दृढ़ संकल्प लेना चाहिये।

—"लक्ष्मण वाटिका"
912-L, माडल टाउन पानीपत

महात्मा हंसराज का प्रेरक जीवन

—चमन लाल आर्य, महामंत्री
आर्य युवक दल हरियाणा—

महात्मा जी का जीवन चरित्र पढ़ते हुए सहसा यह मानना असम्भव-सा प्रतीत होता है कि इस प्रकार का त्यागी, तपस्वी व्यक्ति भी इस धरा पर कभी हुआ था। अपने मासिक वेतन से निर्वाह करना और ईमानदारी से काम करना तो माना जा सकता है, परन्तु यह मानने में कठिनाई होती है कि महात्मा हंसराज जीवन पर्यन्त अवैतनिक कार्य करते रहे। यहां तक कि उन्होंने उपहार के रूप में मिले हुए पदार्थों को भी अपने घर में नहीं रखा, वे भी डी०ए०वी० संस्थाओं को दे दिए। जब किसी व्यक्ति ने प्यार में आकर एक कलमदान भी उपहार में दिया तो वह भी अगले दिन उनके आफिस में ही पाया। यदि किसी व्यक्ति ने उनके फटे हुए वस्त्र देखकर उन्हें नए वस्त्र देने का प्रयत्न किया, तो इन्होंने स्वीकार नहीं किए। यदि किसी व्यक्ति ने उन्हें एक-दो कम्बल—सर्दी से बचने के लिए दिए, तो वे भी महात्मा जी ने आर्यसमाज में जमा करवा दिए और आयु पर्यन्त वह अपने भ्राता श्री मुलखराज जी द्वारा दिये गए 40/ रु० मासिक राशि से ही निर्वाह करते रहे। वे एक गज जमीन का टुकड़ा, घर की आवश्यक वस्तुएं और यहां तक कि अपने लिए दो-चार कपड़े के सुन्दर जोड़े भी खरीदने में असमर्थ रहे। रहन-सहन इतना सादा कि उनको देखकर यह कोई भी अन्दाजा नहीं लगा सकता था कि वह किसी भी कालेज के प्रिंसिपल हो सकते हैं।

मन माने या न माने परन्तु ऐसा व्यक्ति हमारी पंजाब की स्थली होशियारपुर जिले में स्थित बजवाड़ा ग्राम ने दिया। 16 अप्रैल 1864 का वह दिन किसी सौभाग्यशाली रहा होगा जिस दिन एक ऐसे 'धरती के लाल' ने जन्म लिया जिस ने 22 वर्ष की आयु में ही निःशुल्क सेवा का महान् व्रत लिया और 52 वर्ष तक वह व्रत उसी गति से निर्विघ्न चलता रहा। वे 25 वर्ष डीएवी स्कूल एवं डी ए वी कालेज के अवैतनिक प्राचार्य के रूप में कार्य करते रहे और लगभग इतना ही समय दूसरे सार्वजनिक कार्यों में निष्काम सेवा करते रहे। ऐसा सर्वस्व त्याग का उदाहरण विश्व के इतिहास में ढूंढने पर भी नहीं मिलेगा।

भारतीयता के पोषक

उस समय हमारा भारतवर्ष ब्रिटिश साम्राज्यवाद के अधीन था। यहां की जनता को वेश-भूषा तथा मन से अंग्रेज बनाने की योजना लार्ड मैकाले ने तैयार की थी। अंग्रेज चाहते थे कि भारतीय जनता, वैदिक संस्कृति को भूल कर पाश्चात्य सभ्यता की गुलाम हो जाए। और भारतीय जन भी अंग्रेजी बोलने के शौकीन हो गए थे। जो भारतीय एक-दो शब्द अंग्रेजी के न बोल ले उसे तसल्ली नहीं होती। स्कूलों तथा कालेजों के माध्यम से ईसाइयत का प्रचार करते थे और हिन्दू धर्म को समाप्त करने में दिल-जान से लगे हुए थे। भारतीय बोलचाल, पहरावे तथा खान-पान में अंग्रेजी की नकल करने लग पड़े थे। भला यह सब कुछ भारतीय संस्कृति के रक्षक महात्मा हंसराज जी को कैसे सहन हो सकता था। उन्होंने लोगों के दिलों और दिमागों का अध्ययन किया और इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि यदि इसी प्रकार का कार्यक्रम कुछ वर्षों तक चलता रहा तो भारतीय संस्कृति का नाम लेवा भी भारत भूमि पर नहीं मिल सकेगा। ऋषियों मुनियों की यह स्वर्ग स्थली पाश्चात्य सभ्यता में परिवर्तित हो जाएगी। तब महात्मा जी के मन में डी ए वी स्कूल खोलने की प्रेरणा हुई। जिन स्कूलों में अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी भी अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाएगी। वैदिक संस्कृति के सुसंस्कार विद्यार्थियों में डालने के लिए धर्म-शिक्षा के पीरियड होंगे। जो विद्यार्थी धर्म-शिक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाए उसे सभी विषयों में अनुत्तीर्ण समझा जाएगा। इन स्कूलों तथा कालेजों में भारतवर्ष को स्वतन्त्र कराने की भावना भी छात्रों में भरी जाएगी। और महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का सत्यार्थप्रकाश का कथन कि 'विदेशी राज्य चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो स्वदेशी राज्य का विकल्प नहीं हो सकता'। बचपन से ही छात्रों भरा जाएगा ताकि वे देश को आजाद कराने के लिए अपना सर्वस्व त्याग करने में तत्पर रहें। तभी अंग्रेज बनने तथा अंग्रेजी पढ़ने की भारतीयों की भावना में कुछ कमी हो सकती है। अन्यथा नहीं। इसी ध्येय को ध्यान में रखते हुए 1885 में लाहौर में डी ए वी स्कूल की स्थापना की गई जिसके महात्मा जी प्रथम अवैतनिक मुख्याध्यापक बने तथा बाद में आप डी ए वी कालेज मे प्राचार्य भी रहे।

यह वास्तविकता है कि अंग्रेज यह समझते थे कि इनके बिना कोई भी भारतीय संस्था स्कूल-कालेज चला ही नहीं सकती और यह उबड़-खाबड़ पगड़ी पहनने वाला सीधा-सादा व्यक्ति भला स्कूल-कालेज चलाने में कैसे समर्थ हो सकता है। परन्तु उनको क्या पता था कि त्यागी तथा तपस्वी व्यक्ति क्या नहीं कर सकता? उस पगड़ी के बाद ने अंग्रेजों को ललकारा, डी ए वी संस्थाओं को कामयाब किया, पाश्चात्य सभ्यता

के प्रचार पर रोक लगाई, भारतीयों के दिलों-दिमागों को बदला, ईसाईत के प्रचार को बेनकाब किया। तभी ये संस्थाएं शहीदे-ए-आजम भगतसिंह जैसे क्रांतिकारी नवयुवक तैयार कर सकीं, जिनके परिश्रम त्याग, तप तथा निष्ठा से ही हम भारतवर्ष को आजाद कराने में समर्थ हो सके। यदि उस समय महात्मा हंसराज भारतीय पर्दे पर न आए होते, तो इस समय का भारतवर्ष कुछ और ही होता। हिन्दू धर्म सदा सदा के लिए समाप्त हो गया होता।

लगन एवं निष्ठा के धनी

महात्मा जी मे वेद प्रचार की सच्ची निष्ठा थी। वे जीवन भर वेद प्रचार का कार्य भारत भर में करते रहे। वे आर्य समाजों के वार्षिकोत्सवों में स्वयं जाते थे आर्य समाज का कार्य करना ही उनके जीवन का लक्ष्य बन गया था। उसी को वे सदैव प्रमुखता प्रदान करते थे। एक बार वे काश्मीर में आर्यसमाज के उत्सव मे गए हुए थे, उनके पास महाराजा प्रतापसिंह ने संदेश भेजा—'दर्शन दीजिए, गाड़ी भेज रहा हूं'। महात्मा जी ने कहला भेजा 'मैं जिस कार्य के लिए यहां आया हूं उसे पहले करूंगा, तत्पश्चात् दर्शन करूंगा।' आर्य समाज के उत्सव के बाद जब महात्मा जी उनके मिलने के लिए गए तो श्री प्रताप सिंह ने पूछा कि ऐसा कौन सा कार्य था, जिसे पूरा किए बिना आप यहां आने में असमर्थ थे'? उन्होंने स्पष्ट कहा 'आर्य समाज की सेवा'। इस पर श्री प्रताप सिंह बहुत ही प्रसन्न हुए और कहा 'धन्य हैं आप'। वेद प्रचार हेतु ही आपने 1863 में आर्य-प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की स्थापना की। आप ऋषि दयानन्द के सच्चे तथा अनन्य भक्त थे। ऋषि के ऋण से उऋण होने के लिए आपने अपना सम्पूर्ण जीवन न्योछावर कर दिया। आपका सिद्धान्त था कि मनुष्य को अपने कर्तव्य का ईमानदारी से पालन करना चाहिए। यह ही सच्चा तप है। आपने एक बार अपने भाषण में कहा था कि 'मानव जीवन का एक ध्येय होना चाहिए, एक केन्द्र, जहां पहुंच कर वह अपना जीवन कुर्बान कर सके, अपनी धन दौलत और बाल-बच्चों को आसानी से छोड़ सके। एक स्थान होना चाहिए, जहां पहुंच कर धर्म के साथ वह कह सके कि चाहे प्राण चले जाएं, चाहे चारों ओर से विनाश का ताण्डव घेर ले, पर वह उस स्थान से लौटेगा नहीं, पीछे नहीं हटेगा। ऐसे ही स्थान पर मानव का वास्तविक चरित्र और उसका वास्तविक मोल होता है।' इसी सिद्धान्त के कारण वे वैदिक धर्म तथा वैदिक धर्म संस्कृति की रक्षा कर सके।

शुद्धि कार्य

वेद प्रचारार्थ हरिद्वार में 'मोहन आश्रम' की स्थापना की। ताकि वहां पर निरन्तर वेद प्रचार होता रहे। कुम्भ तथा अर्धकुम्भ के अवसरों पर लोग विशेषरूप से यहां ठहरते हैं। मुस्लिम युग में हिन्दुओं को तलवार की नोक पर मुसलमान बनाया गया था। उन में से आपने सहस्रों परिवारों को शुद्ध किया तथा हिन्दू धर्म की दुबारा दीक्षा दी। जब आगरा, भरतपुर और मथुरा के मुसलमान मलकाना राजपूतों की शुद्धि का अवसर आया तो आप की तपस्या ने साकार रूप धारण कर लिया। आप कई मास तक केवल गुड़ और जौ के सत्तुओं पर ही निर्वाह करते हुए ग्रीष्मकाल की चिलचिलाती धूप में मीलों पैदल यात्रा कर शुद्धि का प्रचार करते रहे। देश धर्म और जाति की सेवा का आपका व्रत मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम तथा भीष्म पितामह की तरह दृढ़ता से चलता रहा। शिक्षा पद्धति को लेकर 13 वर्ष तक आप की घोर आलोचना होती रही तथा मिथ्या लांछन भी लगाए गए। परन्तु वाणी और लेखनी के धनी अपने पथ से डगमगाए नहीं और उसी प्रकार निष्ठा एवं दृढ़ता से देश-जाति की सेवा करते रहे। आप केवल वेदों का प्रचार ही नहीं करते थे, परन्तु आप स्वयं भी इस रंग में रंग चुके थे। आस्तिकता आप के जीवन का मुख्य अंग बन गई थी। आप सच्चे तथा सुच्चे ईश्वर भक्त थे। आप प्रतिदिन दोनों समय नियमबद्ध संध्या करते थे। आप में विरक्ति तथा अनासक्ति कूट-कूट कर भरी हुई थी। आप संसार में सब कर्म करते हुए भी निलिप्त रहे। आप जीवन भर निष्काम भाव से कार्य करते रहे। आप सफेद वस्त्रों में संन्यासी थे। आप जन्म-जात वैरागी थे। आपके जीवन से ही सहस्रों लोगों ने प्रेरणा पाई।

स्वामी जी के अनुयायी

आप महर्षि स्वामी दयानन्द के सच्चे अनुयायी थे। आपके मन में आर्य-समाज के प्रति सच्चा प्रेम था। आपने आर्यसमाज के लिए सर्वस्व त्याग किया। आपने उस समय फैली हुई कुरीतियों तथा कुप्रथाओं को दूर करने का भरसक प्रयत्न किया। आप छुआछूत के कट्टर विरोधी थे तथा हिन्दू जाति के उत्थान में इसे मुख्य बाधा मानते थे। आप विधवा विवाह का न होना भी जाति पर कलंक समझते थे। आपने आज-

(शेष पृष्ठ 14 पर)

आर्य समाज के लिए एक रचनात्मक योजना

—आचार्य वेदभूषण—

हमें भविष्य के बारे में चिन्ता न कर आर्य समाज के वर्तमान की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए। यदि हम वर्तमान के प्रति जागरूक हैं तो निश्चित ही हमारा भविष्य भी उज्ज्वल होगा।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भारत की जनता में जो रोग था उसे अपनी सूक्ष्म दृष्टि से देखा और उसे ठीक ठीक समझ लिया। भारत की पराधीनता कोई मूल रोग या कोई मौलिक समस्या नहीं थी। पराधीनता तो उस रोग का उपलक्षण या प्रतिक्रिया मात्र थी।

वह मौलिक समस्या थी जनता मे शिक्षा का अभाव। ज्ञान के अभाव में भारत की जनता में आत्महीनता की भावना घर कर गई थी। ससार का पथप्रदर्शन करने वाली भारतीय जनता किस प्रकार पद दलित हो रही थी और कैसे-कैसे अन्धविश्वासों में फस कर पथ भ्रष्ट हो रही थी, इसका महर्षि ने गहराई से अध्ययन किया और सोई हुई भारतीय जनता के नवनिर्माण व जागरण की योजना आर्य समाज के रूप में प्रस्तुत की।

महर्षि का उद्देश्य केवल भारत की उन्नति या हिन्दू समाज की ही उन्नति नहीं था। उन्होंने भारत की जनता को विश्व समाज की सर्वाधिक ह्रासोन्मुख इकाई के रूप में देखा और ऐसी योजना प्रस्तुत की कि जिसमें सबकी उन्नति का भाव अन्तर्निहित था।

सन् 1857 में रजवाड़ों की स्वतन्त्रता के आन्दोलन को महर्षि ने प्रत्यक्षदर्शी बन कर देखा था। वे इस बात को जान चुके थे कि जब तक एक स्वस्थ समाज या एक स्वस्थ सगठन नहीं बनेगा तब तक राजनीतिक उद्देश्य भी सफल नहीं हो सकते। इस तथ्य को जानकर महर्षि ने कांग्रेस, हिन्दू महासभा या आर० एस० एस० जैसा कोई सगठन न बनाया। उन्होंने एक स्वस्थ सशक्त मानव समाज के निर्माण के उद्देश्य से आर्य समाज की स्थापना की।

यथासम्भव देश के महत्त्वपूर्ण भागों मे घूम घूम कर महर्षि ने लोगों में आत्मविश्वास और वैदिक सस्कृति के प्रति स्वस्थ धारणा उत्पन्न करने का अथक प्रयत्न किया। परिणाम स्वरूप जन मानस में आत्मविश्वास और अपनी सांस्कृतिक सुरक्षा की भावना जागी। यही वह मूल आधार था जिस पर स्वतन्त्रता आन्दोलन का भवन खड़ा हो सका।

सन् 1875 में महर्षि ने आर्य समाज का बीज बोया और सन् 1947 में भारत ही स्वतन्त्र नहीं हुआ, अपितु सभी परतन्त्र देशों में स्वतन्त्रता की भावना जाग उठी। महर्षि की दूरदर्शिता ने भारत की सांस्कृतिक चेतना को कुछ ऐसा जागृत कर दिया कि जिन्हें लोग शृगाल-शावक समझ रहे थे वे सिंहपुत्र बन गए।

डा० पट्टाभि सीतारामय्या ने, जो कांग्रेस के अध्यक्ष व स्वतन्त्रता सेनानी रहे, भारतीय कांग्रेस का जो प्रामाणिक इतिहास लिखा, उसमें उन्होंने स्वीकार किया कि महात्मा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस द्वारा जो अहिंसात्मक सत्याग्रह के रूप स्वतन्त्रता आन्दोलन चला उसमें 80 प्रतिशत सत्याग्रही आर्य समाज की विचारधारा से प्रभावित थे।

भारत की स्वतन्त्रता के लिए दो प्रकार के आन्दोलन चले—एक अहिंसक सत्याग्रह के रूप में, दूसरा क्रान्तिकारियों का हिंसात्मक आन्दोलन। इन क्रान्तिकारियों का जब भी कोई प्रामाणिक इतिहास लिखा जाएगा तो पता चलेगा कि तीन चौथाई क्रान्तिकारी आर्य समाजी थे। सरदार भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला खां, चन्द्र शेखर आजाद, राजगुरु और अन्य दर्जनों वीर पुरुष जिन्होंने फांसी के फन्दे को फूल माला के समान गले से लगाया, वे किसी न किसी रूप में आर्य समाज से जुड़े थे।

अशफाकुल्ला खां एक मुस्लिम युवक था पर उसने भी स्वतन्त्रता के लिए मर मिटने की भावना आर्य समाज शाहजहांपुर में रामप्रसाद बिस्मिल के साथ रहकर ही पाई थी।

सचाई और ईमानदारी सौ रास्तों से फूट कर सत्य को प्रकाशित करती है। अत: अत्यन्त ईमानदारी और पूरी सच्चाई के साथ स्वतन्त्रता आन्दोलन के जनक रूप में किसी महान् शक्ति ने पत्थर की नींव का कार्य किया है तो वे थे महर्षि दयानन्द सरस्वती।

किन्तु स्वार्थियों के टोलों ने मिलकर आर्य समाज के प्रवाह को रोकने का [illegible] कर रखा है। आर्य समाज के प्रवाह को रोकने के लिए अनेक छद्मवेशी भी आर्य समाज में घुस आए हैं। पर बात घबराने की नहीं है। हम सब आर्य बन्धुओं को एक ही अमोघ अस्त्र को सदा अपने साथ रखना चाहिए और वह अस्त्र है सत्य का। हमारी वाणी में और हमारे आचरण में सत्य हो। आर्य न जन्म से कोई होता है न आर्य समाज का सदस्यता फार्म भरने से या चन्दा देने से। आर्य तो सत्य और [illegible] मधुर गुण, कर्म और स्वभाव से होता है। इसलिए निराशा से सर्वथा दूर हटकर हम कहना चाहेंगे कि—

> जमाने के चतुर नेता, भले मानें, नहीं मानें।
> कटोरा दूध का पीकर, भले मजनूं कसें ताने।
> सचाई बोलती युग की, चीर हजारों झूठ के पर्दे।
> गर कोई जनक है इस तूफानी जमाने का।
> तो केवल वह दयानन्द था, दयानन्द था, दयानन्द था।।
>
> सचाई के तेज से घबरा, भगे गोरे यहां से फिर।
> कहीं लन्दन में न चिनगारी, पहुंच जाए दयानन्द की।
> मिटा देगी जहां भी हो, जो कल्चर झूठ पर पलती।
> अन्धेरे में ठगी सम्भव, उजाले में नहीं चलती।
> किया युग दीप को रोशन, दयानन्द था, दयानन्द था, दयानन्द था।
>
> सचाई जान चुका है जग, अन्धेरे को सिमटना है।
> अभी तो यह फटी है पौ, दुपहरी को उभरना है।
> निशाचर भाग जाएंगे, जब धधके सत्य की ज्वाला।
> सचाई जीत जाएगी मुंह होगा झूठ का काला।
> दिखाया सत्य पथ जिसने, वह दयानन्द था, दयानन्द था।।

अब आर्यों को वाणी से और आचरण से सत्य को ही अपनी पहचान बना लेनी चाहिए। फिर ससार की कोई शक्ति हमें हिला नहीं सकेगी।

वातावरण तेजी से बदल रहा है। अब आन्दोलन और नारों का युग चला गया। जन-जन में शिक्षा और सूझबूझ का नया परिवेश उभर रहा है। नारों और जोशीले भाषणों का समय जा चुका। अब हमें अपने क्रियात्मक आदर्शों से जनता को वैदिक सिद्धान्तों की ओर आकृष्ट करना होगा। वैसे जो सगठन व गिरोह कल तक हमारी मान्यताओं को नकारते थे वे सब अब आर्य समाज के ही आदर्शों व सिद्धांतों को अंगीकार करते चले जा रहे हैं। समाज सुधार की सारी योजनाएं अब उन सगठनों द्वारा भी अपनाई जा रही हैं जो जातिवाद या वर्णवाद के आधार पर खड़े किए जा रहे हैं। सामाजिक सुधार की योजना ने अब विश्वव्यापी स्वरूप धारण कर लिया है।

ऐसी स्थिति में अब हमें अपने रचनात्मक योजनाओं को आरम्भ करना चाहिए। हम किस प्रकार आर्य समाज के माध्यम से समाज की रचनात्मक सेवा कर सकते हैं, यह देखना है।

हमें अपने साप्ताहिक सत्सगों को नया रूप देना होगा। स्तर रहित अनावश्यक भाषणों की पद्धति को बदल कर हमें स्वाध्याय यज्ञ का आरम्भ करना चाहिए। इस क्रम में हमें सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका तथा उपनिषद् जैसे ज्ञानयुक्त ग्रन्थों का पाठ व उसकी व्याख्या का कार्यक्रम आरम्भ करना चाहिए। कम से कम पैंतालीस मिनट का यह कार्यक्रम दैनिक अथवा साप्ताहिक रखना चाहिए। जिस विषय का स्वाध्याय यज्ञ चले उस स्वाध्याय के उपरान्त उसी विषय पर दस मिनट तक शंका समाधान का कार्यक्रम रखा जाए। इसके बाद आधे घण्टे का समय महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र, स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा लिखित 'कल्याण मार्ग का पथिक' या रामायण, महाभारत या अन्य किसी आदर्श महापुरुष का जीवन चरित्र क्रमश: पढ़ा जाना चाहिए।

भाषण का उपक्रम जब कभी कोई विशेष विद्वान पधारे तब कर लिया जाए अन्यथा सत्सग में भाषण की प्रथा को बदल कर श्रेष्ठ पुस्तकों के स्वाध्याय का क्रम रखा जाए। इस प्रकार पैंतालीस मिनट सन्ध्या व वृहद् यज्ञ, तदनन्तर दो भजन प्रभु भक्ति के, उसके बाद स्वाध्याय यज्ञ, तदनन्तर दस मिनट शंका समाधान फिर तीस मिनट जीवन चरित्र का परायण। यह कार्यक्रम प्रात साढ़े सात बजे से दस बजे तक का रखना चाहिए।

इसके अतिरिक्त प्रत्येक आर्य परिवार में यह आन्दोलन चलाया जाए कि आर्यों को रात्रि में नौ बजे शयन के लिए बिस्तर पर चले जाना चाहिए और प्रात 4 बजे अथवा पांच बजे के बाद नहीं सोना चाहिए। इस प्रकार का सकल्प सभी आर्य परिवार लें।

प्रतिदिन आर्य समाज की ओर से मोहल्ले, अथवा पार्क के किसी मैदान में योगासन व व्यायाम का केन्द्र चलाया जाना चाहिए। इस कार्यक्रम में किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं बरता जाना चाहिए। चाहे मुसलमान हो या हिन्दू, या किसी भी तथाकथित जाति का व्यक्ति क्यों न हो, उसे इस शारीरिक उन्नति के कार्यक्रम में भाग लेने का पूरा पूरा अवसर दिया जाना चाहिए। इस कार्यक्रम में कभी-कभी ब्रह्मचर्य, शारीरिक उन्नति से सबंधित भाषण भी कराए जाने चाहिए। यह कार्यक्रम 5 से 6 बजे तक प्रात होना चाहिए। इसका नाम युवक सघ आदि जैसा उचित लगे अथवा आर्यवीर दल रखा जाए।

प्रतिदिन साय 5 से 7 बजे तक आर्यकुमार सभा के माध्यम से खेलों के सामूहिक आयोजन किए जाए।

(शेष पृष्ठ 14 पर)

प्रशासनिक अधिकारी विदेश में प्रशिक्षण लेंगे ?

—डा. विद्यासागर—

भारत की नोकरशाही में जो स्थान भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई० ए० एस०) का है, वह किसी अन्य सेवा का नहीं है। आई० ए० एस० उस इण्डियन सिविल सर्विस की उत्तराधिकारी मानी जाती है जिसके बल पर अंग्रेजों ने भारत पर लगभग डेढ़ सौ वर्ष शासन किया इन सेवाओं में अन्य सेवाओं की अपेक्षा अधिक मात्रा में वेतनमान एवं अधिकार होने के कारण इनके प्रति सम्मान भी है और ईर्ष्या भी। अत भारत के प्रत्येक शिक्षित युवक में आई० ए० एस० अधिकारी बनने की इच्छा होना स्वाभाविक है। कुछ समय से आई० ए० एस० सेवा किसी न किसी कारण से समाचारो मे विशिष्ट स्थान पाती रही है। पिछली बार डाक्टरों द्वारा की गई हड़ताल का एक मुद्दा आई० ए० एस० अधिकारियों के समान वेतनमान प्राप्त करना भी था। इसके बाद कुछ समाचार पत्रो में प्रकाशित इस समाचार ने तहलका मचा दिया कि नए आई० ए० एस० अधिकारी को विवाह के बाजार में दहेज के रूप में दस से 30 लाख रुपये तक मिलते हैं।

आई० ए० एस० अधिकारी को प्रशिक्षण के लिए यू० एस० ए० के प्रमुख विश्वविद्यालयों में भेजे जाने की भारत सरकार की योजना की ससद व जनता में तीव्र प्रतिक्रिया हुई। जब ससद में यह विषय उठा तो कांग्रेस तथा विरोधी दलो के कई सदस्यों ने इस पर आपत्ति की। सरकार के पास कोई उपयुक्त उत्तर नहीं था। अन्त में लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड के बीच में पड़ने से इस विषय पर ससद में विस्तृत चर्चा करने की दलील स्वीकार कर ली गयी। दरअसल प्रस्तावित प्रशिक्षण व्यवस्था प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी की उस प्रायोजना का अग है जिसमें नौकरशाही के विभिन्न अगों की कार्यक्षमता सुधारने व बढ़ाने पर विशेष बल दिया गया। वैसे भी ढाई-तीन वर्ष में विभिन्न विभागों के अधिकारियो को किसी न किसी रूप में प्रशिक्षण दिया जाता है। सभी प्रभावी प्रशिक्षणों मे विशिष्ट परिस्थितियों और संस्कृति की प्रमुख भूमिका रहती है। प्रशिक्षण देने वालों से यह भी अपेक्षा की जाती है कि उन्हें प्रशिक्षण लेने वालों की आवश्यकताओं और उनके दृष्टिकोण का पूर्ण ज्ञान हो। अत. यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या यू० एस० ए० के विश्वविद्यालयों एव शिक्षा सस्थानों में भारत की आवश्यकताओं का समुचित ज्ञान उपलब्ध है ? कोई भी विदेशी विश्वविद्यालय भारत की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकता। अपनी शिक्षा एवं प्रशिक्षण के कार्यक्रम तथा शिक्षा की रीति उन्होंने अपनी जीवन मीमांसा और आवश्यकताओं के अनुरूप बनाई है। अत इसमें सन्देह है कि भारतीय अधिकारी इनसे वह लाभ उठा सकेंगे जो अपने देश में उपयोगी सिद्ध हो सके। यह भी सत्य है कि भारत से जाने वाले अधिकारी यू० एस० ए० की स्थिति से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकेंगे। वैसे भी वहां की कार्यप्रणाली व आर्थिक-सामाजिक नीति भारत से भिन्न है। वहां स्वतन्त्र आर्थिक नीति पर बल दिया जाता है जबकि भारत में सामाजिक सगठन पर बल दिया जाता है। यही बात अन्य क्षेत्रों के बारे में भी है।

अमेरिका के शिक्षा सस्थानों में योग्यता के आधार पर नियुक्तियां की जाती हैं जब कि भारतीय सस्थानों में निकम्मे समझे जाने वाले भी नियुक्त कर लिए जाते हैं। नोकरी में आने के बाद प्रशिक्षणार्थियों के सबंध में कोई युक्ति संगत नीति नहीं अपनाई जाती। बहुधा ऐसे व्यक्तियों का चयन किया जाता है जिन्हें उपयुक्त स्थान न मिल रहा हो। बहुधा ऐसा देखा गया है कि प्रशिक्षण का चयन करते समय इस बात का ध्यान नहीं रखा जाता कि प्रशिक्षण पूरा होने पर उसकी नियुक्ति किस स्थान पर होगी। अत उसे ऐसे स्थान पर काम करना पड़ता है जो उसके लिए उपयुक्त नहीं है। किसी भी प्रशिक्षण के लिए अधिकारियों का चयन करते समय उसके 30-35 वर्ष के पूरे कार्यकाल को ध्यान में रखा जाना चाहिए न कि आगामी कुछ वर्षों की कालावधि को। परन्तु विशिष्ट पदों की योग्यता की क्षमता को ध्यान में न रखते हुए उसकी पहुच पर सब कुछ निर्भर करता है। राजनैतिक परिस्थितियां भी इसमें अपनी भूमिका निभाती हैं। इस प्रकार न तो देश को व्यक्ति विशेष की योग्यताओं का लाभ मिल पाता है और न अधिकारी ही सन्तुष्ट रह पाता है।

हम बहुधा भारत के आन्तरिक मामलों में विदेशी हस्तक्षेप की बात करते हैं तो क्या राष्ट्र के प्रमुख पदाधिकारियों को विदेशों में प्रशिक्षण के लिए भेजना सुरक्षा की दृष्टि से उचित है ? दुर्भाग्य से हमने वही देश चुना है जिस पर हस्तक्षेप का दोषारोपण करते रहे हैं। यह सही है कि भारत के वरिष्ठ अधिकारी देश भक्त हैं और उनसे देश के हितों को हमेशा ध्यान में रखने की अपेक्षा है। फिर भी इस प्रकार की शंका होना तो स्वाभाविक है

भारत में प्रत्येक विदेशी वस्तु का मोह जिस प्रकार बढ़ रहा है कहीं यह प्रशिक्षण उस का ही अंग तो नहीं ? आई० ए० एस० अधिकारियों की यह शिकायत रही है कि तकनीकी विशेषज्ञों के लिए तो विदेश जाने के अनेक अवसर प्राप्त हैं किन्तु उन्हें इस प्रकार के कोई अवसर नहीं मिलते। कहीं उन्होंने इसी बात को ध्यान में रखते हुए विदेश जाने की योजना तो नहीं बना ली है ? जो भी हो, प्रशिक्षण योजना पर भली-भांति विचार करने की आवश्यकता है। ताकि कहीं देश को इसके विपरीत परिणाम न भुगतने पड़ें।

महात्मा हंसराज

—कविवर प्रणव शास्त्री—

आर्य जाति के गौरव गिरिवर आर्य जगत के सेनानी,
वन्दन है, शतवार तुम्हारा वैदिक सस्कृति अभिमानी ॥

प्रथित प्रेम प्रिय पावनता की प्रतिमा की थे तुम प्रतिमा,
मौन मुनि मतिमान् मनोहर मानवता की मधु महिमा।
सत्य सिन्धु में तरणि तरण की तुमने ठान यहां ठानी।

शिक्षा के शुचि दीप जलाये डाल स्नेह की ध्रुव धारा,
निविड़ तमिस्रा भगी ध्वस्त हो छाया चतुर्दिशि उजियारा।
निज कर्तव्य प्रभा-पथ सूझा मुदित हो रहे मन ज्ञानी ॥

तुमने त्याग सुधा के सुन्दर घट के घट थे भर डाले,
पी पी पावन हुए मनस्वी मधुरिम मुदिता के प्याले।
जय-जयकार हुआ अवनी में प्रगति प्रेरणा पहिचानी ॥

धन्य, आर्य सस्कृति-वीणा के तुम थे गायक नर-नायक,
जीवन का व्यवहार सुजन को मन मोहक था सुखदायक।
कौन नहीं मानेगा तुमको उपकारों का वरदानी ॥

एक लगन थी एक चाह थी, एक भावना विस्तारी,
दयानन्द के दिव्य विचारों की फूले बस फुलवारी।
कोई वंचित बने आर्यों को विफल करे फिर मनमानी ॥

मानस-सर के राजहंस तुम मुक्ता मुक्ति चुगते थे,
इसीलिये हंसों में मुनिवर हंसराज कहलाते थे।
[illegible] ॥

—रामनगर, (कटरा) आगरा-6

मैं आर्य समाजी कैसे

(पृष्ठ 8 का शेष)

थी। उन्होंने विद्यार्थियों का उत्साह बढाने के लिये यह घोषणा की हुई थी कि जो विद्यार्थी सन्ध्या कठस्थ करके सुनाएगा, उसको वे पुरस्कार देंगे। एकाएक मैंने उनको सन्ध्या सुना दी और उनसे दो रुपये का पुरस्कार पाया।

मैं आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संगों में अवश्य जाता। यद्यपि समाज में पण्डित अखिलानन्द जी और पण्डित मूलराज जी के उपदेश ही होते थे। उनके व्याख्यान का ढग इस प्रकार का था कि पहले विद्वान द्वारा उठाया विषय पूरा नहीं होता था तो दूसरा उसी विषय को आगे स्पष्ट करते थे विरोध में कभी नहीं बोलते थे। हम उपदेश को शांति से सुनते रहते थे। बाद में दत्तसिंह जी और जोहरसिंह जी के लेक्चर सिख इतिहास और ईसाई मजहब का खण्डन बड़े मजे से सुनते थे। उस समय ये दोनों आर्यसमाज के सदस्य तथा उपदेशक थे। आर्यसमाज सभा में उनका दर्जा भी ऊंचा था। बाद में अपने विशेष प्रभाव के कारण ये आर्यसमाज के कट्टर विरोधी बन गये।

मुझे साप्ताहिक सत्संगों में सम्मिलित होने की इतनी रुचि थी कि मैं साप्ताहिक सत्संगों में अपनी एन्ट्रेन्स की परीक्षा के दिनों में भी अनुपस्थित नहीं रहा।

("मैं आर्यसमाजी कैसे बना ?" [illegible])

अति दर्शन से दंशित नारी

अपने उद्धार के लिए नारी को स्वयं ही आगे आना होगा

—योगेन्द्र कुमार रावल—

नारी को सदा अतियों के बीच में जीना पड़ा है। एक ओर उसे श्रद्धा और पूजा का पात्र समझा गया, दूसरी ओर पांवों की जूती जितना दर्जा भी नहीं दिया गया। जिसे जगज्जननी, दुर्गा, और भवानी का अवतार कहा गया, उसी को 'नरक का द्वार' कहते भी संकोच नहीं किया गया। नारी न देवी है, न दानवी, न गुणों की खान, न अवगुणों की भण्डार। नारी, मात्र नारी है। उसे न हिमालय पर बिठाने की आवश्यकता है, न रसातल में भेजने की। जिन गुणों और अवगुणों से पुरुष संचालित होता है, उन्हीं से नारी भी। नारी को पुरुषों द्वारा थोपी गई मानसिकता से बाहर निकलना होगा और अपने स्वाभाविक जीवनाधिकार के लिए स्वयं आगे आना होगा।

नारी ! इस सृष्टि की अप्रतिम-सुन्दरतम-सर्वोत्तम रचना !! पुरुष की प्रेरणा, साहित्य कला की साधना, कल्पना व चिन्तन की आराधना का आधार !! आदि अनादि काल से मानव की पुरुष-प्रकृति का प्रवाह, प्रकृति, पशु-पक्षी, वनस्पति से आगे बढ़कर नारी पर केन्द्रित हो गया। नारी की रचना के रोम-रोम में और उसकी क्रियाओं के कदम-कदम में अलौकिकता की अनुभूति से अभिभूत हुआ पुरुष नारी को पूजने की पराकाष्ठा पर पहुंचाकर यहां तक घोषित कर बैठा कि जहां नारी का पूजन होगा वहां देवता निवास करेंगे। नारी के भीने भीने आंचल की भीनी-भीनी सुगन्ध मात्र से बौराया हुआ पुरुष अपने शैशव काल के संरक्षण की स्मृतियों में खोया खोया बोल उठा—"नारी, तुम केवल श्रद्धा हो।" पौराणिक काल में शिव की गोदी में बैठी पार्वती का स्वरूप यह प्रमाणित करता है कि ज्ञान, शक्ति कला और सृजन व संहार के शिवत्व की गोद में कैलाश की ऊंचाई पर नारी का प्रतिष्ठान करके पुरुष ने अपनी समस्त श्रद्धाकृतज्ञता मानो नारी के चरणों में समर्पित कर दी और स्वयं फिर रिक्तता की अनुभूति करता हुआ विधा-किया घोषित हुआ सा, सुध-बुध खोया सा हिमालय की तराई में तृप्ति अनुभव करने का असफल प्रयास करने लगा। हिमालय की ऊंचाई पर नारी को बैठा कर हिमालय की तराई में स्वयं खोया-खोया-सा निहारता हुआ पुरुष भूल गया कि नारी इस धरती को धरा पर जीने वाली मात्र एक जीवन-धारा है जिसे बौराया भरमाया हुआ पुरुष अब तक सही रूप में समझ नहीं सका।

पुरुष की इसी नासमझी की पराकाष्ठा पुरुषों के धर्मराज युधिष्ठिर के धर्माचरण में देखने को मिली जब नारी द्रौपदी के लिए धर्म और नीति ने आदेश दिया—'बांट कर खाओ—दांव पर भी खेलो।' उस समय नारी से न सलाह ली गयी, न अनुमति। चीर हरण करने वाले कृष्ण की लाज की धाक [illegible] बनाने के लिए चीर प्रदान करने का स्वांग रचा गया, जिसका माध्यम बनी—नारी। ठीक इसके बाद, महावीर ने गृह-त्याग प्रसंग नारी-त्याग करते समय नारी की अनुमति की औपचारिकता तो निभाई किन्तु मोक्ष मार्ग में [illegible] है, ऐसा महसूस नहीं किया। [illegible] की ऐसी परम्परा में कोई नई कड़ी जोड़कर नया आयाम पेश कर सके हों—ऐसा भी नजर नहीं आता। ढाई हजार साल बाद कवि पुरुष की कलम यशोधरा नारी की समझदारी की वकालत करे कि—

'सखि वे मुझ से कहकर जाते।
कह तो क्या मुझको वे अपनी पथ बाधा ही पाते?'

सन्त परम्परा

तो मात्र इस वकालत भरी सहानुभूति से न तो नारी की समस्या का समाधान हो सका और न ही नारी के प्रति बुद्ध देव का भ्रम दूर हो सका—मुक्त लोक में भी ! मर्त्य लोक में तो अन्तिम दम तक नारी को मोक्ष मार्ग का बाधक ही माना था—बुद्धदेव ने, और इसीलिए उन्होंने अपनी ओर से अपने शिष्य आनन्द को यह अनुमति नहीं दी कि बौद्ध संघों में नारी को दीक्षा दी जाय। फिर ठीक इसके बाद सन्त-परम्परा में भर्तृहरि के वैराग्य-शतक से लेकर सूर-शतक तक नारी को कहीं पाप का मूल बताया तो कहीं प्रेम का मूल। पर बुनियादी भूल से पुरुष कहीं भी मुक्त होता हुआ नजर नहीं आया। ऐसी भूल कि जो उसे नारी के प्रति अति-दर्शन से प्राप्त हुई। मानव सम्बन्धों को स्वस्थ सामंजस्य पूर्ण 'आधार' प्रदान करते-करते उसी अति-दर्शन से ग्रसित होकर सन्त-परम्परा के महासन्त तुलसीदास भी 'अत्याचार' प्रदान करते हुए लिख बैठे कि नारी ताडन की अधिकारिणी है। ताडन योग्य प्राणियों की पंक्ति में नारी को खड़ा कर देने पर शिव की गोदी में विश्राम करती हुई पार्वती तिलमिला उठी।

साहित्यकारों द्वारा वकालत

महन्तों और सन्तों के बाद बीड़ा उठाया साहित्यकारों ने। धर्म के धनी जब विधाता घोषित कर बैठे, तब तलवार के धनी यह कहकर पूर्ण विराम लगा चुके कि वीर पुरुष ही नारी और भूमि का भोग कर सकते हैं, तब कलम के धनी नारी के घावों को सहलाने के लिए अवतरित हुए। कलम बोली—'है अपना हिन्दुस्तान कहां, वह बसा हमारे गांवों में।' और फिर गांव किसान और नारी की जबरदस्त वकालत करते हुए मुंशी प्रेमचन्द बड़ी हिम्मत के साथ आगे बढ़े। यह नहीं भूलना होगा कि उन्हें भी नारी की वकालत करने के लिए दूसरी नारी का आश्रय लेना पड़ा (प्रेमचन्द ने दो विवाह किये थे)। गांव किसान और नारी के विशेषज्ञ साहित्यकारों ने उभारकर प्राथमिकता देकर, जोर देकर इस बात को महसूस करने की कोशिश नहीं की कि अस्सी प्रतिशत भारत की भारतीय नारी—कोमलांगिनी नारी—बोझा ढोने से लेकर भूसा काटने तक खेती की सब कठोर प्रक्रियाओं को पूर्ण कर रही है। और पुरुष? उकड़ूं बैठा चिलम पी रहा है—वह चिलम कि जिसको भरा भी नारी ने है। इस पर भी तुर्रा यह कि प्रसव और दुग्धपान की शारीरिक रचना की दुहाई देकर नारी को कठोरता से दूर, कोमलता की प्रतिमा घोषित कर नारी को कल्पना, कलम कलम, कर्म और कानून से छला जा रहा है। उधर हकीकत यह है कि तथाकथित कोमलांगी नारी खेती की कठोर कर्म-भूमि पर अन्न उत्पन्न करती-करती सन्तान भी उत्पन्न कर रही है। फिर भी नारी कोमलता के कारण गृह-सीमा में सीमित रहने की अधिकारिणी मानी गई। कैसा विचित्र विरोधाभास है ! कैसी विडम्बना है !! कितनी जबरदस्त आत्म प्रवंचना है !!! अफसोस और अत्याचार की पराकाष्ठा यह है कि लज्जा और शील की दुहाई देकर—पर्दे की ओट में भारत के पांच लाख गांवों की भारतीय नारी घूंघट और घाघरे का वजन ढोती हुई खेती और मजदूरी के कठोर कर्म व कठोर श्रम का वजन ढो रही है। घर और बाहर गांव और शहर दोनों क्षेत्रों में काम करती हुई नारी को पुरुष की वासना की 'वैराइटी' के व्यापार में भी साझेदारी निभानी पड़ती है। इतने पर भी समझदारी और जिम्मेदारी नारी में कम मानी जाती है।

बेलन चलाने से लेकर तलवार तक, सिलाई की मशीन चलाने से लेकर जहाज की मशीन चलाने तक, खेतों की निराई से लेकर हिमालय की चढ़ाई तक, विरह की अग्नि में तपने से लेकर जौहर की ज्वाला में जलने तक गांधी की आंधी में बन्दूकों की नोक के आगे अड़ने से लेकर सुभाष की आजाद हिन्द फौज में बन्दूकों से लड़ने तक, कृष्ण की भक्ति से लेकर रामकृष्ण परमहंस की विरक्ति तक नारी ने क्या नहीं किया? पर बदले में उसे क्या मिला—भ्रूणहत्या, गर्भपात, बलात्कार, वेश्यावृत्ति, अपहरण तलाक विरह-वेदना, विधवा-यातना और मिला—निर्जीव वस्तुओं की भांति पसंद आते ही महलों की रानी और हरमों की बेगम बनाकर, संग्रह कर लिए जाने से लेकर समुद्र पार बिक जाने का व्यापार तथा बहुत ज्यादा मिला—रास्ते चलते मनचलों की फबतियों, चुटकियों और कनखियों का खुदरा बाजार।

पूजा भी, अत्याचार भी

यह सब कुछ आदिकाल से आज तक ऐसा ही चला आया है, चल रहा है। साफ दिख रहा है कि सैक्स के सावन का अन्धा पुरुष सैक्स के ही इर्द-गिर्द नारी को हरा तो देखता आया है, किन्तु आज तक नारी को न पूरा देख सका, न खरा। सैक्स की समस्या को छेनी और उसी के मनगढ़न्त समाधान की रेती से नारी के स्वरूप को तराशा गया है। उस तराशने में पुरुष और उनका समाज नारी को तलाश नहीं सका। ईश्वर के मामले में मानव 'नेति-नेति' कहकर निराश हो गया तो नारी के चरित्र और स्वभाव के लिए 'त्रिया चरित्र' कहकर हताश हो गया। अन्ततोगत्वा चाहे नारी आचार हो या विचार अथवा सदाचार का, किन्तु नारी को तो मिला एक ही अभिशाप—'अत्याचार' का !

किन्तु इस अत्याचारी, बलात्कारी संस्कृति बनाम विकृति से केवल नारी

(शेष पृष्ठ 14 पर)

अपने उद्धार के लिए

(पृष्ठ 13 का शेष)

ही नहीं बल्कि पुरुष की भी मुक्ति तभी सम्भव हो सकेगी जब पुरुष के इस अति दमन से मुक्त होकर, पुरुष द्वारा आज तक थोपे गए इन भ्रामक आदर्शों के स्थान पर नारी स्वयं नारी के स्वरूप को पेश करे और मानव-व्यवहारों का प्रतिष्ठान करे।

जहां तक नारी की बुनियादी समस्या का प्रश्न है—यह समस्या केवल भारतीय सीमाओं और विशेषणों में सीमित नहीं है। नारी की समस्या और समस्या के रूप में नारी एक वास्तविक समस्या है। पुरुष के अति-दमन से ग्रसित नारी युग-युग से जहां स्वयं संत्रस्त रही वहां पुरुष भी तृषित और असंतुष्ट रहा। एक तरफ पुरुष ने भर्तृहरि, महावीर, बुद्ध, दयानन्द और विवेकानन्द बनकर नारी साहचर्य के पावन-प्रवाह को ही अवरुद्ध कर दिया तथा सैक्स को मर्यादित करने की धुन में सात तालों और सत्तर पर्दों में उसे बन्दी बनाने का असफल प्रयास किया तो दूसरी तरफ पश्चिम के देशों ने नारी को शोभन-वस्त्र की तरह परिवर्तनशील रुचि की सामग्री बना दिया। परिणामस्वरूप, यथोचित स्वाभाविक सीमाओं में सैक्स के फूटते हुए निर्मल उन्मुक्त झरने से शीतल तृप्तिदायक सजीवन अमृतपान करने की व्यवस्था सोचने के बजाय जनपथ पर अतिसाम सुलभ बहते हुए नालों में से सैक्स का आचमन करने वाले पुरुष को झरने का अमृतपान आज तक नहीं मिल सका।

अत अतिदमनजन्य अत्याचारी विकृति के स्थान पर स्वस्थ—सदाचारी संस्कृति का निर्माण करने के लिए जागतिक धरातल पर नारी सम्बन्धी मान्यताओं का परिमार्जन करना होगा। सदैव पुरुष द्वारा उसकी शोषन-क्रिया द्वारा, थोपे गये भ्रामक आदर्शों की वर्तमान के मानक व्यवहार का समाज में निर्माण करना होगा। नई पीढ़ी को नये मूल्यों में ढालना होगा। मानव समाज को यह समझना ही होगा कि नारी न देवी है, न दानवी, न पाप की जड़ है, न धर्म का मूल, न गुण की खान है, न अवगुण का भण्डार! नारी, बस नारी है। जिन गुणों-अवगुणों से, दुर्बलताओं से पुरुष सचालित है उन्हीं से नारी भी परिचालित है। शारीरिक-जैविक गठन के अन्तर की दुहाई देकर नारी को न हिमालय पर बैठाने की आवश्यकता है, न रसातल में भेजने की। नारी को इसी धरातल का जीवन जीने का पूर्ण एवं स्वाभाविक अधिकार मिलना चाहिए। और नारी को भी चाहिए कि सदियों-सदियों से पुरुष द्वारा थोपी गयी मानसिकता से स्वयं को मुक्त करे। नारी स्वयं नारी की वकालत करने के लिए आगे बढ़े। अन्यथा नारी की समस्या का सही समाधान कभी नहीं हो सकेगा। सीता-सावित्री-दमयन्ती आदि सबकी व्याख्या देवियों और सतियों के रूप में नहीं बल्कि स्वाभाविक नारी के रूप में करनी होगी। नारी को अपनी सुरक्षा के लिए किन्हीं लक्ष्मणों द्वारा लक्ष्मण रेखाएं खिचवाने के बजाय स्वयं को शारीरिक मानसिक-आत्मिक शक्तियों के बलबूते पर आत्मनिर्भरता के साहस की रेखाएं स्वयं खींचनी होंगी। नारी स्वयं अपने स्वरूप और स्वभाव की सबलताओं की सम्भावनाओं के हर सम्भव आयाम अपनी ही कलम और तूलिका से पेश करे तभी पुरुष के अतिदर्शन जन्य अत्याचारी-बलात्कारी संस्कृति बनाम विकृति का समाधान हो सकेगा।

['व्यक्ति की तलाश' नामक सद्य प्रकाशित पुस्तक से]

आर्य समाज के लिए ....

(पृष्ठ 11 का शेष)

दूसरी ओर आर्य समाजों में अनिवार्य रूप से संस्कृत पाठशाला का संचालन होना चाहिए। प्रत्येक आर्य परिवार के बच्चों के लिए संस्कृत पढ़ना अनिवार्य हो, जिससे आर्य समाज के तीसरे नियम पर आचरण हो सके।

प्रत्येक आर्य समाज में एक पुरोहित की नियुक्ति अनिवार्य हो। बिना पुरोहित वाले आर्य समाज को प्रान्तीय सभा के लिए प्रतिनिधि भेजने का अधिकार न रहे। प्रत्येक आर्य समाज की ओर से हाईस्कूल व कालेज स्तर की वेद प्रतियोगिताएं तथा भाषण वाद विवाद व श्लोकों व मन्त्रों की अन्त्याक्षरी आदि की प्रतियोगिताएं आयोजित की जानी चाहिए। प्रत्येक आर्य समाज में स्थानीय स्कूल और कालेज के अध्यापकों व प्रवक्ताओं के पते होने चाहिए। आर्य समाज के प्रत्येक कार्यक्रम में इन्हें निमन्त्रित किया जाना चाहिए व उनसे सम्पर्क पैदा करना चाहिए।

आर्य समाज के शिक्षण संस्थाओं से अपना गहरा सम्पर्क बनाए रखना चाहिए। शिक्षण संस्थाओं में आर्य विद्वानों के वर्ष में दो तीन बार भाषण कराए जाएं। सत्यार्थ प्रकाश व व्यवहार भानु नामक पुस्तकें अध्यापकों व छात्रों में वितरित करनी चाहिए।

आर्य समाज में होने वाले यज्ञों में गाय के घृत से यज्ञ किया जाना चाहिए। आर्यों में गो दुग्ध के सेवन की प्रतिज्ञाएं कराई जानी चाहिए।

आशा है आर्य समाज के अधिकारी हमारे इन सुझावों पर ध्यान देंगे और आर्य समाज की सर्वांगीण उन्नति के लिए इन योजनाओं को अपने कार्यक्रम में अवश्य सम्मिलित करेंगे। पता—अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान, हैदराबाद-27

महात्मा हंसराज का......

(पृष्ठ 10 का शेष)

विवाह का भी घोर विरोध किया। जात-पात के बन्धन आप हिन्दु जाति के उत्थान में एक बाधा मानते थे क्योंकि इसी के कारण लाखों हिन्दु विधर्मी बन गए थ। उस समय विवाह-शादियों पर वेश्याओं के नाच की कुप्रथा प्रचलित थी। आप ने इस प्रथा के उन्मूलन के लिए उपदेशकों, भजनोपदेशकों द्वारा प्रचार करवाया। आप ने मोपलाओं के मोपलों द्वारा हिन्दुओं पर अत्याचार का प्रतिकार किया। आप ने बिहार और उड़ीसा के भूकम्प पीड़ितों की सहायता की। आप ने राजस्थान, मुम्बई, गुजरात, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, गढ़वाल, और कांगड़ा आदि स्थानों में अकाल पीड़ितों की सहायता की।

आप के हिन्दु जाति पर उपकारों की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सागर के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है—

गिने जाएं मुमकिन है, सहरा के जर्रे, समुन्दर के कतरे, फलक के सितारे, मगर तेरे अहसां, महात्मा जी हैं कैसे सम्भव, गिने जाएं सारे।

यह वैदिक संस्कृति का प्रहरी, डी ए वी संस्थाओं का जन्मदाता, शांति का अग्रदूत, देश की स्वतन्त्रता का कट्टर समर्थक, महात्मा [illegible] 15 नवम्बर 1938 को सदा-सदा के लिए हम से जुदा हो गया।

[illegible]

[illegible]

डी. ए. वी. आन्दोलन और समाज सेवा

—खेमचन्द मेहता—

शिक्षा प्रचार और वैदिक सत्यज्ञान के प्रचार में डीएवी ने आज तक जो कार्य किया है, महत्वपूर्ण है। इस समय तक लगभग 400 डी० ए० वी० सस्थायें, कालेज, स्कूल, तकनीकी, आयुर्वेदिक, शोध तथा वेद प्रचार केन्द्र भारत में काम कर रहे हैं। विदेशों में भी प्रचार तथा प्रसार के केन्द्र खुलने वाले हैं। फिर भी सामाजिक सेवा की जो भूमिका डी०ए०वी० ने निभाई है वह बहुत कुछ आधुनिक पीढ़ी को अज्ञात है। उसका सक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है।

आर्य समाज या डी० ए० वी० की स्थापना से पहले किसी को देश के अन्य प्रांतों एव अपने ही प्रान्त के किंचित दूर के भागों के लोगों से या उनकी सामूहिक विपत्तियो के समय उनके दुःख-दर्द से कोई वास्ता नहीं था। दुर्भिक्ष, बाढ़, महामारी, भूकम्प, उपद्रव आदि में लोग कीड़े-मकोड़ो की तरह बड़ी सख्या में मरते थे। या ढोरो की तरह लोग भूखे स्त्री-बच्चों तथा कुटुम्बियो को बेच डालते अथवा विदेशी पादरियो के चगुल में आकर धर्म परिवर्तन कर लेते थे। ईसाइयों के अतिरिक्त कोई सार्वजनिक सस्था इस कार्य क्षेत्र में नहीं थी। सरकार जो थोड़ा बहुत पग उठाती वह भी मिशनरियों के माध्यम से। भारत में कुछ धनाढ्य व्यक्ति स्थानीय रूप मे अन्न का थोड़ा बहुत वितरण कर देते थे। परन्तु यह आटे मे नमक सदृश होता था।

भला हो महात्मा हसराज का जिसने 1895 में आर्य समाज का ध्यान इस ओर दिलाया। तब से आय समाज, विशेषकर डी० ए० वी० सस्थाए इस कार्य में अग्रसर रहीं और अन्य धर्मावलम्बियो ने भी आर्य समाज की भरपूर सहायता की। मुख्यतया निम्नलिखित समाज सेवा कार्य किये गये।

(क) अकाल मे सहायता

1 बीकानेर का अकाल—अनावृष्टि के कारण खेती नहीं हुई, कुओं और तालाबों का जल सूख गया, मुट्ठी भर अन्न के लिए बच्चे बेचे गये या ईसाई मिशनरी ले गए। उस समय डी० ए० वी० के कर्णधार महात्मा हसराज, लाला लाजपतराय, प० लखपत राय वकील मैदान मे निकले। आर्य प्रादेशिक सभा तथा डी० ए० वी० के समाचार पत्र "आर्य गजट" द्वारा अपील की गई। करुणाजनक समाचार तथा लेख लिखे गये। डी०ए०वी० कालेज के स्वयंसेवक समाज के अधिकारियों के साथ तपते मरुस्थलों से होकर गांव-गांव गये अन्न वस्त्र आदि बांटे गये, कुओं को गहरा कराया गया और सैकड़ो लोगों को मौत के मुह से निकाला। बहुत से अनाथ बच्चों को आर्य समाज के फिरोजपुर, भिवानी, एवं आगरा के अनाथालयों में भेजा गया। इस कार्य से चारों ओर आर्य समाज के प्रशंसक पैदा हो गये।

2. छोटा नागपुर (मध्य प्रदेश, बिहार) का अकाल— इसी वर्ष इन आदिवासी प्रदेशों में भयकर अकाल पड़ा। महात्मा जी तथा उनके सहायक और डी०ए०वी० कालेज लाहौर के विद्यार्थी, स्वय सेवक तथा डी० ए० वी० स्कूल के कुछ अध्यापक फिर मैदान में निकले। इन पर्वतीय भागों में जान जोखिम में डालकर उन लोगों ने सेवा कार्य से लोगों की जान बचाई। इस विपत्ति में बहुत बड़ी सख्या में लोग अकाल का ग्रास बने और हजारो ईसाइयो के हाथ पड़े। जिला रांची (बिहार) के आकाशचुम्बी गिरजाघर प्राय इसी समय बने।

3 राजपूताना का अकाल 1899—यह अकाल राजपूताना में सर्वव्यापी था। लाला दीवानचन्द जो उन दिनों डी०ए०वी० के विद्यार्थी थे, जो बाद में स्कूल के मुख्याध्यापक, कानपुर कालेज के प्रिन्सिपल, आगरा युनिवर्सिटी के उपकुलपति तथा डी० ए० वी० कालेज कमेटी के प्रधान रहे, अन्य विद्यार्थियों और स्वयसेवकों के साथ राजपूताना गए। पीड़ितों की सहायता की। देशी रियासतो के नरेशो को अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक किया। बहुत से शरणार्थियों को हिसार लाया गया। पजाब के कई आर्य समाजों में अस्थायी कैम्प और अनाथालय खोले गये जहा वे दुर्भिक्ष के समाप्त होने तक रहे।

4. अवध का अकाल 1907-1908—भगवान राम की जन्म भूमि अयोध्या के आस-पास भीषण अकाल पड़ा। महात्मा हसराज तथा उनके सुपुत्र लाला बलराज, प्रिन्सिपल मेहरचन्द, लाला हरिश्चन्द्र कपूर, लाहौर के एक व्यापारी तथा पंडित रलियाराम विजवाड़िया सहित आर्य सस्थाओ के कई विद्यार्थी वहा पहुचे और पीड़ितों की सहायता की। कई लोग अन्न लेने से झिझकते थे उनके लिए सस्ते अन्न क्षेत्र खोले गये। अनुमान है कि 5000 लोगो का कल्याण हुआ।

5 गढ़वाल (उत्तराखड) का अकाल 1918—महात्मा जी, स्वामी नित्यानन्द तीर्थ, लाला हरिश्चन्द्र कपूर, लाला खुशहाल चन्द्र प० मस्तानचन्द, डी० ए० वी० हाई स्कूल लाहौर के धर्म शिक्षा अध्यापक तथा कई सभा-प्रचारक कुछ कालेज विद्यार्थियों सहित वहां पहुचे। महात्मा जी की अपील पर 84,000 रु० सेवार्थ एकत्र हुए। गढ़वाल में तीन सहायता केन्द्र खोले गये और लगभग 50,000 लोगों की रक्षा हुई। अन्त में बचे धन से वहां दो स्कूल खोले गये।

6 उड़ीसा का अकाल 1920—सभा के कुछ उपदेशक और मेहता सावनमल कालेज के विद्यार्थियो सहित वहां पहुचे। साखी गोपाल और दामोदर में वहां सहायता केन्द्र खोले गये। साढे सात हजार पीड़ितों की सहायता हुई।

7 छत्तीसगढ़ (मध्य प्रदेश) का अकाल 1920—यहां क्षुधातुर लोगों ने अपने झोंपड़े बेच डाले और इधर-उधर भटकने लगे। कुछ ईसाइयों के चगुल में आ गये। बालादे, दुर्ग, राजनादगाव, अम्बागढ़, पिडरपाव आदि स्थानो मे सहायता केन्द्र खोले गये। सौ अनाथ बच्चों को लाहौर, मुल्तान और भिवानी के अनाथालयों में भेजा गया। तीस हजार नर-नारियों की रक्षा हुई।

8 शिमला, कांगड़ा, जम्मू का अकाल 1921—अन्य प्रान्तों को अन्न भेजने वाले पजाब में ही जब अकाल की दशा उत्पन्न हो गई तो प्रादेशिक सभा तथा कालेज के स्वय सेवको सहित लाला खुशहालचन्द, प० मस्तानचन्द और कांगड़ा के हनुमन्त दयाल एडवोकेट ने वहा सहायता कार्य किया। भिम्बर, राजौरी, कोटली आदि मे सहायता केन्द्र खुले। एक लाख लोगो की सहायता हुई।

9 उड़ीसा और बगाल का अकाल 1933—लाहौर से सभा के उपदेशक मेहता सावनमल और डी० ए० वी० कालेज कमेटी के लिपिक श्री राम मूर्ति, कई आर्य सेवको सहित वहां पहुचे। तीन मास पश्चात स्थिति सुधरी और सेवा दल वापस लौटा।

10 बिहार का अकाल—स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने वहा सभा द्वारा भेजी सहायता से कार्य किया।

(ख) बाढ में की गई सेवा

अकाल की तरह भारत मे बाढ़ें अब भी खूब आती है। अति वृष्टि तथा असमय वृष्टि, नदियों के जल का सदुपयोग न होना तथा उनकी तटीय भागो से चट्टानों का खिसकना बाढ़ो के मुख्य कारण रहे हैं। इन आपत्तियों में भी निम्न अवसरों पर सहायता की गई।

1 1924 में पश्चिमी पंजाब में जिला मुजफ्फर गढ़ और डेरागाजीखां में बाढ़ आ गई। कई देहात बह गए। मेहता सावनमल को सामग्री सहित कई स्वय सेवको के साथ लाहौर से भेजा गया। डेरागाजीखां, मुजफ्फर गढ़, लैया, दायरा, दीनपनाह मे केन्द्र खोले गए। बाढ़ के पश्चात् लोगो को फिर बसाया गया।

2 1929 मे सिंधु, झेलम तथा चनाब नदियो में बाढ के कारण जिला झेलम मे श्री विश्वेश्वर नाथ सेठी, गुजरात मे लाला राम दास वकील तथा जिला झग मे प० मस्तानचन्द को अन्न, वस्त्र, दवाइयो सहित कई आर्य सेवको के साथ भेजा गया।

3 1933 मे आसाम मे बाढ पीड़ितो को सहायता की गई।

4 1977-78 तथा 1985 में आर्य प्रादेशिक सभा नई दिल्ली ने तमिलनाडु तथा आन्ध्र प्रदेश और उडीसा के समुद्री तुफान ग्रस्त लोगो के लिये शोलापुर और हैदराबाद की डी०ए०वी० सस्थाओ द्वारा धन तथा कपड़े भेजे।

(ग) भूकम्पो मे सहायता

सम्भवत कोई भी देश भूकम्पो के प्रकोप से बचा नही है। भारत सरकार भी समय-समय पर रेड क्रास के माध्यम से भूकम्प पीडितो की सहायता करती है। परन्तु भारत मे जब-जब भयकर भूकम्प आये हैं, तब तब डी०ए०वी० सस्थाओ ने जनता की सेवा की है।

1 कांगडा भूकम्प—हिमाचल प्रदेश के कागड़ा जिलो के ज्वालामुखी स्थान पर ज्वाला जी का मन्दिर है, यहां प्राय भूकम्प के झटके आते रहते हैं। 1905 के भूकम्प मे सैकड़ो नर-नारी मलबे मे दबकर मर गए। महात्मा हसराज और लाला लाजपतराय के परामर्श के अनुसार वहा रायबहादूर बख्शी सोहनलाल कालेज के स्वय सेवक पहुचे और घायलो की मरहम पट्टी की तथा मृतको का अन्तिम सस्कार किया और उनके लिए नये झोपड़े बनाये गए। इस पर डी०ए०वी० सस्था का लगभग 50,000/- रु० व्यय हुआ जो दानियो ने सहर्ष पूरा किया।

2 बिहार का भूकम्प 1934—बिहार के उत्तरी जिलों मुगेर तथा चपारण मे अचानक बड़ी तीव्रता से भूकम्प आया। मुगेर नगर मलबे का ढेर बन गया। आस-पास के देहातो मे भूमि नीचे धस गई अथवा ऊपर उभर आई। कुओ और तालाबो का जल लुप्त हो गया। नये अवाछनीय जल स्रोत स्वय फूट पड़े। जल स्थल और स्थल जल हो गया। लाला खुशहाल चन्द, प० ऋषिराम ब्रह्म महाविद्यालय वाले, लाला हरिश्चन्द्र कपूर, महाशय देवराज तथा कई आर्य स्वय सेवक वहा पहुचे। कई सहायता केन्द्र खोले गये, 500 से अधिक कुए साफ किये गए। देहातों मे 50,000 से अधिक नर नारियो को कपड़े तथा घर-गृहस्थी का अन्य सामान दिया गया, मरहम पट्टी की गई। स्त्रियो के लिये पटना के निकट दानापुर मे एक

(शेष पृष्ठ 21 पर)

गायक और कवि स्वर्गीय ज्ञानचन्द धवन

—डा. सीता राम सहगल—

श्री ज्ञान च द धवन उन व्यक्तियों मे से थे जिन्होंने अपनी कलम और कठ से देश की सेवा की। स्वतन्त्रता-संग्राम के सबसे बडे केन्द्र लाहौर में सन् 1903 में उनका जन्म हुआ। उन्होंने मिशन हाई स्कूल से सन् 1919 में मैट्रिक परीक्षा पास की और उत्तर-पश्चिम रेलवे मे नौकरी की। वह स्कूल मे शेरो शायरी भी करते रहे, गाना-बजाना और हसते रहना उनका स्वभाव था। उनकी कविताओ में स्वतन्त्रता के स्वर होते थे। उन दिनो पजाबी भाषा का माध्यम सिखो के हाथ में था और शिक्षित हिन्दू उसमे कम रुचि दिखाते थे। श्री धवन उस युग में अपवाद थे। रेलवे सेवा के कारण वे नि शुल्क रेल यात्रा के अधिकारी थे और लाहौर के आस-पास के शहरो में जाकर कवि दरबारों में सहर्ष भाग लेते थे। इस प्रकार वे मन, वाणी और कम से अपने साहित्य द्वारा देश सेवा को समर्पित व्यक्ति थे। ऐसे सुप्रसिद्ध पजाबी साहित्यकार का 86 वर्ष की अवस्था में 27 2 88 को दिल्ली के सफदरजग अस्पताल में निधन हुआ।

वे अपने गीतों के लिए रेडियो में भी प्रसिद्ध थे। जो श्रोता पजाबी कार्यक्रम सुनने मे रुचि रखते हैं, कवि धवन के नाम तथा गीतो से भलीभांति परिचित होंगे। विभाजन के बाद जब कभी दिल्ली के गांधी ग्राउण्ड, रामलीला ग्राउन्ड में कवि दरबार होते थे तो कविवर ज्ञान चन्द धवन वहा पहुच जाते थे। एक बार उन्होने ऐसे दरबार में गाया था —

पुरुषार्थी पुरुषार्थी,
तैनू कौन कहे शरणार्थी,
गुण गान तेरे भारती,
सदा होसी तेरी आरती,
भारत कदे नहीं भुलानिया
जो तु कीतियां कुर्बानियां।

रेडियो के प्रसिद्ध गायक श्री आसा-सिंह मस्ताना के मधुर कण्ठ को मधुर गीत देने वाले कविवर धवन ही थे जिनके अमृत भरे गीतों को उन्होंने गाया और वे जन-जन के प्यारे हो गए थे।

सन् 1928 में वे इतने प्रसिद्ध हो चुके थे कि ग्रामोफोन रिकार्ड कम्पनियां इनका पीछा करने को मजबूर हो गई। "हिज मास्टर्ज वायस" कम्पनी ने इन्हें गीतकार तथा कम्पोजर के रूप में स्वीकार किया। और इनकी सर्वप्रथम रचना जो 1931 में रिकार्ड हुई थी वह भगवान कृष्ण की मुरली की मधुर तान थी —

सुना वे सुना दे सुना वे कृष्णा
तू बांसुरी दी तान सुना वे कृष्णा।

इसे बजीज बली और औहराबाल अम्बाल वाली दो विख्यात गायिकाओ ने गाया था और यह रिकार्ड पजाब के कोने-कोने में सुना जाने लगा। इस प्रकार भगवान कृष्ण का नाम हिन्दू और मुसलमान दोनों के मुह से सुना जाने लगा। धर्म की झूठी दीवारें टूट गई। मोहम्मद रफी ने भी अपने सुरीले कण्ठ से कविवर धवन के अनेक गीत गाए थे। स्व० श्रीमती प्रकाश कौर ने भी स्विलोक कपूर के साथ इनका गीत गाया था।

—स्व० ज्ञान चन्द धवन (कवि)—

कवि धवन की रचना "संकल्पिनी-सत्यवान" जन-जन की प्यारी कृति थी और आने वाली पीढ़ी के लिए भी हिंदू धर्म में पति-पत्नी के अमर प्रेम को संदेश देती रहेगी। कवि धवन अन्तिम क्षण तक सच्चे कवि की तरह हसते-गाते और अपनी सृष्टि करते रहे। कलम और कापी उनके अभिन्न साथी बने रहे।

पता—डब्ल्यू/43, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-110027

डी० ए० वी० के जन्मदाता महात्मा हंसराज

—स्व. प्रकाशवीर शास्त्री—

अंग्रेजों ने भारत को जब राजनैतिक दासता के साथ मानसिक दासता में भी जकड़ना चाहा तब कुछ ऐसी विभूतियां इस देश में हुईं जिन्होंने उन षड्यंत्रों को भांप लिया। पंजाब में महात्मा हंसराज और लाला लाजपतराय भी उनमें से थे। अंग्रेज शिक्षा के माध्यम से भारत में जो गहरी चाल चल रहा था इन दोनों दूरदर्शी नेताओं ने लाहौर में डी०ए०वी० कालेज की नींव डालकर उसे चुनौती दी। अंग्रेजी सहित सभी आधुनिक विषयों की शिक्षा डी०ए०वी० कालेज में प्रारम्भ हो गई पर शिक्षा का माध्यम हिन्दी रहा। विशेष विषय के रूप में भी हिन्दी और संस्कृत का अध्ययन अनिवार्य था। फारसी और उर्दू का सदियों से जहां बोलबाला था वहां हिन्दी के लिये अनुकूल वातावरण बनाने में दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेजों का योगदान देर तक याद किया जायगा। भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन को भी डी०ए०वी० कालेजों से दर्जनों उभरते हुए नेता, क्रांतिकारी युवक और कुशल प्रशासक मिले। अमर शहीद सरदार भगतसिंह भी लाहौर डी० ए० वी० कालेज के ही छात्र थे। प्रारम्भ में तो यह डी०ए०वी० आन्दोलन पंजाब तक ही सीमित रहा। लेकिन बाद में वह पूरे देश में फैल गया।

स्वामी श्रद्धानन्द ने हरिद्वार के पास कांगड़ी गांव में गंगा के किनारे गुरुकुल पद्धति का श्रीगणेश कर जहाँ अंग्रेजों की शिक्षा प्रणाली को खुली चुनौती दी वहाँ महात्मा हंसराज ने डी० ए०वी० कालेजों की लम्बी शृंखला खड़ी कर उसका सशक्त विकल्प प्रस्तुत किया। लाहौर का डी० ए० वी० कालेज आज के नये बने कई विश्वविद्यालयों से भी बड़ा था। इन कालेजों के प्रारम्भ में जो प्रिंसिपल बने उनका अपना जीवनव्रत और दीक्षा के सांचे में ढला होता था। प्रिंसिपल सांईदास, लाला दीवानचन्द, प्रिंसिपल मेहरचन्द आदि उन्हीं आदर्श आचार्यों में से थे। उन्हीं की देन थी जो चरित्रवान्, देशभक्त और होनहार युवकों की एक नई पीढ़ी इन कालेजों से देश को मिली। भारत विभाजन के समय इन तीनों राज्यों में डी०ए०वी० कालेजों की अरबों रुपये की सम्पत्ति पाकिस्तान में रह गई।

भारत में आज स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर के सौ से ऊपर डी०ए०वी० कालेज हैं। इनमें अधिकांश तो डी०ए० वी० कालेज प्रबन्धकारिणी समिति द्वारा ही संचालित हैं। शेष की प्रबन्ध व्यवस्था उन राज्यों में गठित समितियां कर रही हैं। सर्वोच्च न्यायालय के भूतपूर्व प्रमुख न्यायाधीश स्व० श्री मेहरचन्द महाजन कई वर्षों तक डी० ए० वी० प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष रहे। न्यायाधीश स्व० श्री जीवनलाल कपूर, स्व० श्री खोसला और स्व० डाक्टर गोवर्धनलाल दत्त, पंजाब विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डाक्टर स्व० सूरजभान भी समिति के प्रमुख रह चुके हैं। (आजकल प्रो० वेदव्यास इसके अध्यक्ष हैं। स०) शिक्षा के क्षेत्र में इन सबका प्रमुख स्थान रहा है।

केरल के तटवर्ती क्षेत्र मालाबार में जब मोपला विद्रोह की साम्प्रदायिक लहरें उठी थी तब भी महात्मा हंसराज और उनके साथी पंजाब से हजारों मील की यात्रा करके उन्हें शान्त करने वहां पहुंचे। राजस्थान के ऐतिहासिक अकाल और क्वेटा के भूकम्प में भी स्वयंसेवक बन कर वह जुटे रहे। अब तो प्लेग की बीमारी भारत में लगभग समाप्त सी ही हो चली है। लेकिन ब्रिटिश शासन में प्लेग ने लगभग हर राज्य में ही तबाही मचा रखी थी। ज्यादातर तो गरीब और झोपड़ियों में रहने वाले लोग ही उसकी लपेट में आते थे। लाहौर में महात्मा हंसराज ने इसके लिए डाक्टरों और स्वयंसेवकों की ऐसी टोलियां तैयार कर रखी थी जो पता लगते ही दौड़ पड़ती थीं और सैंकड़ों लोगों को मौत के मुंह में जाने से बचा लेती थी। रचनात्मक सेवा के क्षेत्र में उनकी यह उपलब्धि सबकी जबान पर चढ़ गई थी।

महात्मा हंसराज की मृत्यु पर पंजाब असेम्बली के स्पीकर सर शाहबुद्दीन ने कहा था—आज पंजाब से शिक्षा की ज्योति जलाने वाला एक सन्त उठ गया। वह केवल कुशल शिक्षाशास्त्री ही नहीं थे सच्चे समाज सुधारक भी थे। निर्वाहमात्र लेकर आजीवन आर्य समाज, डी ए०वी० कालेज और दूसरी इसी तरह की सामाजिक और शैक्षणिक संस्थाओं को पनपाने की पद्धति के तो वह जन्मदाताओं में से थे।

सीधी सादी वेशभूषा, सीधी-सादी बोली, स्वच्छ मन और स्वच्छ तन महात्मा हंसराज की अपनी विशेषता थी। उन्हें देखते ही श्रद्धा से माथा झुक जाता था। श्वेत वस्त्र धारी इस सन्यासी को देखने और सुनने के लिए लोग लालायित रहते थे। पिछले सौ वर्षों में आर्य समाज ने शिक्षा शास्त्री, समाजसेवी और महात्मा हंसराज जैसे नेताओं की एक लम्बी श्रेणी देश को दी है उनका लगाया हुआ डी०ए०वी० कालेज का पौधा आज तेजी से फल-फूल रहा है।

('प्रकाशवीर शास्त्री : रचनात्मक भूमिका में' से साभार।)

युवा पीढ़ी से

—सावित्री रस्तोगी—

सो न जायें आज मेरे देश की जवानियां।
खो न जायें अन्तराल में, कहीं कहानियां।।
इसीलिये कलम उठा, गीत यह नया लिखा।
तुम भी गुनगुना चलो, मेरे स्वरों में स्वर मिला।।

शक्ति की ध्वजा अगर हाथ से छिटक गई।
यह समझ लो जिन्दगी, राह से भटक गई।।
है अजीब संस्कृति, इस महानदेश की।
दूसरों पै वार दो, श्वास देश कीमती।।

आज द्वार द्वार से, विनाश का धुआं उठा।
क्योंकि बस गई दिलों में, पश्चिमी बरीयता।।
न्याय की मिटारियो में, घुस गई मदान्धता।
झुस, झुन्दसी, जला रही, संविधान की चिता।।

त्याग और शील मेरे देश की थी सम्पदा।
अंधेरे की आंधियों में, कम हो रही विदा।।
कौलगर्ल बन, अश्लील बेचना, रसज्ञता।
कला की दुकान पर, बना है कोई "अभ्यता"।।

वर्ण लुट रहा न बात, पात्र की सुपात्र की।
कौन सुने बात आज, वेद और शास्त्र की।।
ब्लैक और तस्करी से, भर रही तिजोरियां।
मर रहीं दहेज के कगार पर किशोरियां।।

मोड़ दो दिशा प्रवाह, नाव भंवर से निकाल।
झुक न जाय सर, भविष्य कर सके न कुछ सवाल।।
रुक न जाय आज चरण, रुक न जाय यह रवानियां।
भूल न जांय पूर्वजों की, उच्चतम निशानियां।।

पता—जवाहर नगर मेरठ कैंट

डी०ए०वी० शिक्षा महाविद्यालय, अबोहर

(अध्ययन एवं पाठेतर क्रियाकलापों में अग्रिम)

एम० एड० परिणाम—1987

कुमारी रितु जैन, पंजाब विश्वविद्यालय में प्रथम

कुमारी अंजु बाला, पंजाब विश्वविद्यालय में द्वितीय

बी० एड० परिणाम—

कुमारी कंचन, पंजाब विश्वविद्यालय में सातवां स्थान

65 विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण

पंजाब विश्वविद्यालय वार्षिक खेलकूद—

मेजर सिंह, चक्का फेंक में स्वर्ण पदक।

सुखविन्दर सिंह, गोला फेंक में कांस्य पदक।

सत्यपाल आचार्य

[P]

युवा उद्घोष पाक्षिक का विमोचन

आर्य समाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली के एक समारोह में युवाउद्घोष (पाक्षिक) के "कुरीति उन्मूलन विशेषांक" का विमोचन करते हुए श्री रामचन्द्र विकल (सांसद) बायें व सम्पादक अनिल आर्य बीच। में डी० ए० वी० प्रबन्धकर्त्री सभा के मन्त्री श्री हीरालाल चावला दिखाई दे रहे हैं।

डी ए वी कौलेज कांगड़ा में अध्यापकों एवं अन्तरंग सदस्यों के मध्य डी ए वी प्रबन्ध समिति के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल।

डी० ए० वी० ए० सी० सी० पब्लिक स्कूल, लाखेरी

डी० ए० वी० ए० सी० सी० पब्लिक स्कूल, लाखेरी के प्रथम वार्षिकोत्सव व पारितोषिक वितरण समारोह में 27 फरवरी, 1988 स्कूल के छात्र छात्राओं द्वारा विभिन्न कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। जिनमें नाटक, एकाभिनय, समूह गान व नृत्य कार्यक्रम के प्रमुख आकर्षण रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता एवं पुरस्कार वितरण लाखेरी सीमेन्ट वर्क्स के महाप्रबन्धक श्री पी० एन० माथुर द्वारा किया गया। वर्ष भर में सम्पन्न विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी छात्र-छात्राओं को पारितोषिक प्रदान किये गये। इस समारोह के मुख्य अतिथि श्री दरबारी लाल थे। इनके अतिरिक्त श्री के० एस० आर्य, प्राचार्य डी० ए० वी० कालेज, चंडीगढ़ एव मैनेजर, श्री रामनाथ सहगल मंत्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, श्री प्राणनाथ सहगल, मैनेजर आर्य विद्यालय, बम्बई तथा श्री एस० पी० चोपड़ा, प्राचार्य डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, जयपुर भी समारोह में उपस्थित थे। समारोह को सफल बनाने में छात्र-छात्राओ एवं अभिभावको का विशेष योगदान रहा। विद्यालय में आयोजित कला एव विज्ञान प्रदर्शनी में छात्र-छात्राओ ने अपनी कला के उत्कृष्ट नमूने प्रस्तुत किये।—प्राचार्य

आर्य व्रत गुजराती मासिक

आर्य समाज, सैजपुर बोघा, अहमदाबाद ने गुजराती मासिक पत्रिका 'आर्य व्रत" का प्रकाशन आरम्भ किया है। जिसका प्रथम अंक "आर्य समाज स्थापना दिवस पर प्रकाशित हुआ। पत्र का संपादन व प्रबंध श्री कमलेश कुमार शास्त्री, पं० महेन्द्र नाथ वेदालंकार, हरीलाल पुरुषासमल व गोविंदराम करेंगे। पत्रिका के नमूने की प्रति निःशुल्क मंगाई जा सकती है। वार्षिक शुल्क दस रु० रखा गया है।

डी०ए०वी० स्कूल का उत्सव सम्पन्न

डी० ए० वी० उच्च माध्यमिक विद्यालय अजमेर का 100 वां वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह जिला शिक्षा अधिकारी श्री इन्द्र चन्द मंगल की अध्यक्षता, तथा जिला प्रमुख श्री हनुवन्त सिंह रावत के मुख्य आतिथ्य में समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर वर्ष भर की विभिन्न शैक्षिक, सहशैक्षिक, सांस्कृतिक साहित्यिक एवं खेलकूद संबंधी प्रतियोगिताओं में श्रेष्ठ उपलब्धियों वाले छात्रों को पुरस्कृत किया गया। विद्यालय के छात्रों ने देश भक्ति पूर्ण प्रेरणादायी तथा भारती सांस्कृतिक परिचायक गीत, कविता, एकाभिनय, तलवार प्रदर्शन, लाठी चालन आदि के करतब तथा कौमी एकता संबंधी सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये जिसकी उपस्थित महानुभावों ने सराहना की।—रतनसिंह प्रधानाचार्य

आर्य समाज ग्रेटर कैलाश नई दिल्ली के नवनिर्वाचित प्रधान और मंत्री

श्री चमनलाल आनन्द

श्री गणेशदास ग्रोवर

वेद भिक्षु जयन्ती

महात्मा वेद भिक्षु की 61 वीं जयन्ती 13-3-88 को स्वामी सत्य प्रकाश जी सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इसमें देश भर से समुपस्थित विद्वानों मे प्रमुख थे पूर्व सांसद आचार्य भगवान देव, सुश्री सन्तोष (मिर्जापुर), न्यायमूर्ति जयन्ती पटेल, डा० प्रशान्त वेदालंकार, आर्य जगत् के यशस्वी सम्पादक क्षितीश वेदालंकार, स्वामी अग्निवेश, डा० वेद प्रताप वैदिक, प्रो० शेरसिंह एवं प्रो० रत्नसिंह। सभी विद्वानों ने महात्मा वेद भिक्षु की निष्ठा एव लगन की सराहना करते हुए उनके अवशिष्ट कार्य को पूर्ण करने में सहयोग का आश्वासन दिया। सभा का संयोजन द० प्र० सभा के मन्त्री रामनाथ सहगल ने किया।

संगठन की आवश्यकता

—डॉ॰ स्वराज्यमणि अग्रवाल—

वस्तुत. संगठन का अर्थ बहुत व्यापक है। यह उस सत्ता का परिचायक है जहां व्यक्ति अपने को भूल कर सर्व-जन-सुखाय, सर्व-जन-हिताय ही सोचता है और कार्य भी करता है और इसीलिए सगठन की सर्वाधिक आवश्यकता आज अनुभव हो रही है। आप सूक्ष्म रूप से विवेचन करें तो पायेंगे कि हमारा वर्तमान जीवन भावना-विहीन स्वार्थपरक होता जा रहा है। सम्मिलित परिवार में रहता हुआ भी व्यक्ति आज केवल बीवी बच्चों तक सीमित होकर रहना चाहता है। मां बेटी का, सास बहू का, पुराने जमाने में जो एक अदब कायदा था वह आज समाप्त होता जा रहा है। फिर अकेला व्यक्ति कैसे जीवन यापन करे? यह समस्या अब आने में ज्यादा देर नहीं है। देश की जैसी परिस्थिति है उसमें यदि सगठित समाज न हुआ तो कदम-कदम पर यातना और पीड़ा का नजारा देखने को मिलेगा। इसलिए हमारे समाज का सगठित होना ही आज समाज की मूलभूत आवश्यकता है।

जब मगध का विशाल साम्राज्य लिच्छवियो के ऊपर आक्रमण की योजना बना रहा था तो बुद्ध के एक शिष्य ने उन्हें सूचना दी 'भगवन्! मगध लिच्छवियों पर आक्रमण करना चाहता है।'

बुद्ध ने कहा—'लिच्छवि? एक बहुत बडा सघ है, उसे हराना दुष्कर होगा मगध हार जायेगा।' और इतिहास साक्षी है कि मगध हार गया।

सगठित समाज को कोई हरा नहीं सकता बशर्ते कि उसके सदस्य नि:स्वार्थ, निष्काम भाव से उस सगठन से जुड़े हो। लेकिन होता इसके विपरीत है। हम जब सगठन से जुडते हैं तो हमारे दिल मे लोभ रहता है। लडकी की शादी हो जाये, हमारे पुत्र को नौकरी मिल जाये, या हमें मच मिल जाए। पद मिल जाए, इसी प्रकार के अनेक स्वार्थ हमारे सगठन की दृढ़ता को कमजोर करते हैं, और स्वार्थवश जुडने वाले सदस्य को कुछ नहीं मिलता। सगठन भी इन लोभियों के कारण टूट कर धराशायी हो जाता है।

हजारों वर्ष पूर्व भारत से बोधि धर्म नाम के संत चीन गये। वहा के सम्राट "वू" ने उन्हे चीन घुमाते हुए दिखाया कि उन्होने अपने राज्य मे कितने कुएं, बावड़ी, धर्मशालायें, आश्रम, विहार आदि खुलवाये हैं। अन्त में उन्होंने पूछा - 'क्या यह पुण्य नही है?' बोधि धर्म ने कहा—'नही!' फिर क्या है?' यह तुम्हारी प्रशसा के लोभ में किया गया कार्य है, इसका कोई लेखा वहां नहीं बनता। पुण्य वही है जो निष्काम नि:स्वार्थ भाव से किया जाये।

यह नि:स्वार्थ सेवा आपको सगठन से जुड़कर ही प्राप्त हो सकेगी। जीवन भर तो आप व्यापार करते रहे। संगठन कोई व्यापार तो नहीं है कि वहा भी आप लाभ की कामना करें। हमारे पास कुछ वर्ष पूर्व हुए एक पत्र आया कि हमारी लडकी के लिए वर बताइए। हमने उन्हें तमाम पते लिखा दिए जहां से उन्हें अच्छे वरों का पता लग सकता था, पर उन्होंने उत्तर लिखा कि आपने तो हमें विवाह की दुकानें बता दी हैं। वरिष्ठ उपाध्यक्ष होकर आप इतना भी नहीं कर सकती तो त्याग पत्र दे दीजिए अपने पद से। मैंने उन्हें लिखा कि मेरे त्याग पत्र देने से आपकी लडकी का विवाह हो जाता है तो मैं अवश्य त्याग पत्र दे देती, केवल आपके स्वार्थ के कारण मैं अपना सगठन नहीं त्याग सकती।

हर व्यक्ति सोचता है कि सामाजिक सगठन क्या बन गया है यह तो अपनी दुकान बन गई है। अब चाहे जो माल खरीद लेंगे। हमारे जीवन काल मे न जाने कितने आये और चले गये। जिन्हें सगठन से कुछ स्वार्थ था और पूरा नहीं हुआ—वे चले गये। जिन्हें सगठन द्वारा यश और नाम कमाना था, वे चले गये। इस तरह न जाने कितने लोग अपना-अपना अनुभव लेकर चले गए। सगठन का अर्थ है कर्म का वह क्षेत्र जहा व्यक्ति अपने सारे राग-द्वेष भुलाकर केवल कर्म करने को प्रेरित होता है। वही सगठन फैलता है, जहां नि स्वार्थ सेवा ही सगठन का उद्देश्य होता है।

सगठन प्रेम का ही पर्याय है। आप अपने को एक बार नि स्वार्थ भाव से सगठन से जोड कर तो देखें। आपका जीवन प्रेम का वह प्याला बन जायेगा जिसकी एक एक बूद मे अमृत का सा रस भरा होगा। जिधर देखोगे उधर अपने को ही देखोगे। कोई अपना पराया नहीं रह जायेगा।

सगठन वह मदिरा है जिसका नशा स्वय पर नहीं, दूसरो पर चढ़ता है। मुझसे मुगेर मे कुछ लोगों ने पूछा—'आपकी बोली में इतनी मिठास कहा से आती है? हम लोग तो कितना भी प्रयत्न करें मीठा बोल उभरता ही नही।'

मेरा जो भी गुण-अवगुण है, सगठन की ही देन है—जब से यहा से जुडे हैं मुझे तो यह भी भूल गया कि मैं कौन हू। मुझ में जो कुछ है, वह समाज का ही है—मैं समाज के लिए हू। यही पैदा हुई, यहीं मर जाऊगी। बस यही मेरी आरजू है।

हम तो आपसे यही कहेंगे कि आप अपने सगठन के प्रति वफादार हों। हमारे रक्त मे देश व समाज की वफादारी घुली हुई है। हम तो सगठित ही इसलिए हो रहे हैं कि हम अपने समाज से दहेज प्रथा, अन्ध विश्वास आदि कुरीतियो को दूर कर सकें जो आज देश की ज्वलत समस्यायें हैं।

सगठन द्वारा ही हम अपने परिवार मे खोई हुई सस्कृति को पुन वापस ला सकते हैं। आज पूरे देश म सस्कृति के प्रति उदासीनता भरती जा रही है। जिस प्राचीन परम्परा की हम गौरव गाथा गाते हैं—उसको भूल कर हम कहा जायेंगे, यह आपको गम्भीरता से सोचना है। इसलिये आप सगठित हो। सकुचित मनोवृत्ति को त्याग कर सबके हित मे अपना थोडा सा योगदान दें। यदि प्रत्येक व्यक्ति एक घटे का समय समाज को देने का सकल्प ले ले तो बहुत बडा कार्य हो सकता है।

समाज के बुद्धिजीवी वग को भी सामने आना होगा। हमारे सगठन की सबसे भारी कमी है, बुद्धिजीवी वर्ग का साथ न देना। ये सब अपने 2 खेमे मे अलग अलग बैठे अपनी ढपली बजा रहे हैं। यदि इनका सहयोग मिल जाये तो सगठन मे चार चांद लग जायें। हम तो बुद्धिजीवी वर्ग से इतना ही कहते हैं कि एक बार आप अपने मन के बधन तोडकर समाज मे कदम तो रखें। जो बात आज अनपढ कस्बे, खेडे गाव के लोग समझ रहे हैं उसकी आवश्यक्ता को आप क्यो नही समझ रहे हैं। सगठन बनाये तो आस्था और विश्वास के साथ। जिस पदाधिकारी को चुनें उसके काल मे उसे कार्य करने दें। व्यर्थ आलोचना न करे, आलोचना से उत्साह मदा होता है। कार्यकर्त्ताओं से मेरा अनुरोध है कि वह आलोचना से नही डरें। यह न भूलें कि दूसरो से लडने मे वीरता की जरूरत होती है।

सगठन मे इतनी आस्था रखें कि चाहे चाद तारे इधर से उधर हो जाये पर आपका विश्वास न डिगने पाये। हिम्मत से, धैय से एक एक कदम रखते हुए अपना, अपने समाज का कल्याण करें। यह न भूलें कि यह राह काटों की राह है।

पता—अग्रवाल मोटर्स, जबलपुर

नव शिक्षा का स्रोत बहाते आये

—सत्य भूषण "शान्त" वेदालकार एम ए.—

हसराज जी नव शिक्षा का स्रोत बहाते आये।
त्याग और तप से स्वदेश की नाव चलाते आये॥
धवल हस सम निर्मल जीवन आत्मशक्ति का सबल।
लेकर सुप्त मानवो का वह भाग्य जगाते आये॥
दयानन्द ऐंग्लो वैदिक विद्यालय को खोला था।
परम तपस्वी सच्चा साधु स्वय श्री मुख से बोला था॥
करो साधना ऐसी ऋषिवर की आशा हो पूरी।
अपनी सस्कृति, भाषा पनपे, रहे न बात अधूरी॥
तन, मन, धन सब कुछ अर्पित कर, कार्य क्षेत्र मे आये।
हसराज जी नव शिक्षा का स्रोत बहाते आये॥

भोगवाद को मारी ठोकर, त्यागवाद अपनाया।
सेवा, संयम और सरलता का शुभ पाठ पढ़ाया।
जीवन मे अध्यात्म उतारा, सदाचार सिखलाया।
ऋषिवर के उपदेशो को चरितार्थ किया, यश पाया॥
सादेपन की छटा निराली थाह न कोई पाए॥
हसराज जी नव शिक्षा का स्रोत बहाते आये॥

जहां जहां दुर्भिक्ष, काल की छाया थी मडराती।
प्लेग, महामारी फैली जन जन को थी तडपाती॥
वहां लिये सेवक दल पहुचे किया कार्य दिन राती।
मातृ भूमि की देख दुर्दशा होती आकुल छाती॥
उनकी इस सेवा-वृत्ति का, पार न कोई पाए।
हसराज जी नव-शिक्षा का स्रोत बहाते आये॥

आर्य जाति, पर जहा-जहां भी, देखा सकट छाया।
वहीं उन्होने डेरा डाला, आसन वहीं जमाया॥
स्वय रहे भूखे, औरों की पहले भूख मिटाई।
जोडा कुछ भी नहीं स्वार्थवश, हरली पीर पराई॥
नेक कमाई की जीवन भर, कभी नहीं घबराए।
हसराज जी नव शिक्षा का स्रोत बहाते आये॥

लाखो बालक उनकी करुणा की छाया में पलते हैं।
सन्ध्या, यज्ञ सिखाया था जो उसको नित करते हैं॥
उच्च पदों पर हुए प्रतिष्ठित सब उनकी माया है।
जो भी भी चरणों में बैठा उसने सुख पाया है॥
"शान्त" अमरता, सहज प्राप्त कर, प्रभु के अक समाये।
हसराज जी नव शिक्षा का स्रोत बहाते आये॥

पता—एफ 29, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-16

P

डी ए वी आन्दोलन.... .

(पृष्ठ 15 का शेष)

अबला केन्द्र खोला गया और शेष धन से भूकम्प पीड़ित विद्यार्थियो की सहायता की गई।

3 क्वेटा का भूकम्प—27 मई के भूकम्प में यहाँ 25,000 से अधिक व्यक्ति मारे गये। तुरन्त ही आयुर्वैदिक कालेज के अवकाश प्राप्त प्रिन्सिपल डॉ० आशानन्द एम. बी बी एस को वहां कई डाक्टरों और स्वय सेवकों सहित भेजा गया। उधर मुल्तान से प्रसिद्ध आर्य समाजी राय साहिब, खान लाल वकील, वहां की सेवा समिति का एक दस्ता लेकर पहुचे। लाहौर मे राय बहादुर, डॉ० महाराज कृष्ण, मुकुन्द लाल पुरी, बख्शी टेकचन्द लाला खुशहाल चन्द की क्वेटा में कार्यार्थ एक समिति बनाई गई। रोहड़ी सख्खर, मुल्तान, लाहौर में उपचार के केन्द्र खोले गये। अमृतसर में बाबा प्रद्युम्न सिंह कपड़े वालों ने सहस्रों का दान दिया।

4 कांगड़ा का भूकप—कांगड़ा में एक और भूकम्प आया जिससे पर्याप्त क्षति हुई। आर्य प्रादेशिक सभा ने अपनी उप सभा के प्रधान श्री रमेश चन्द्र जीवन, प्रिन्सिपल, डी० ए० वी० कालेज कांगड़ा के माध्यम से सहायतार्थ राशि, कपड़े और दवाइयां भेजी और पीड़ितों को पुनर्जीवन मिला।

(घ) महामारी में सहायता 1907-1908

1905 मे पहली बार बम्बई मे महामारी आई। अकाल पीड़ितो की सहायता के लिये आये जल पोतो के साथ कुछ प्लेग से प्रभावित चूहे बम्बई आ गये और फिर वहा से भारत के अन्य नगरों मे यह महामारी फैल गई। पंजाब में इसका प्रकोप विशेषतया मुल्तान नगर पर पड़ा। प्रतिदिन 500 से अधिक व्यक्ति रोगग्रस्त होकर मरने लगे। नगर मे रोगियों के उपचार और दाह-कर्म के लिए कोई नहीं मिलता था। महात्मा हंसराज की अपील पर पंडित रलियाराम खिजवाड़िया और कुछ आर्य सेवकों ने अपनी जान हथेली पर रखकर अपने को सेवार्थ अर्पण किया। स्थानीय स्वय सेवक भी इनमें आ मिले जिनमें भक्त मूलचन्द तथा भगत छबीलदास विशेष थे। स्थानीय सेवा समिति बनाई गई। नगर से बाहर रोगियों के लिये क्वारेन्टीन बनाई गई। हिन्दुओं और मुसलमानों ने समान रूप से प० रलिया-राम और आर्य समाजियों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। कुछ समय पश्चात् महा-मारी का प्रकोप घटा। फिर 1922 तक यह कभी न कभी पनपती रही। परन्तु स्थानीय सेवा समिति ने अच्छी सहायता की। देश-विभाजन के पश्चात् यह सेवा समिति फराशखाना दिल्ली में मुल्तान सेवा समिति के नाम से स्थापित हुई। अब भी वहां अनेक सेवा कार्य किए जाते हैं और यज्ञ किया जाता है।

(ङ) उपद्रवों में सहायता

1 मोपला विद्रोह 1921-1922—1921 में भारत के पश्चिमी तट पर मालाबार में मुसलमानो ने सरकार के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और बिना किसी कारण हिन्दुओं पर आक्रमण कर दिया। देहात में उनके मकान जला दिये मन्दिर तोड़ डाले, मार धाड़ करके सैकड़ों मार डाले, और सहस्रों बलपूर्वक मुसलमान बना लिये गये। सैन्सर के कारण पहले तो कुछ पता न लगा, किन्तु जब महात्मा हंसराज के पास सहायतार्थ तार आया तो वे चिन्तित हो उठे। रातों रात सभी की बैठक हुई और तुरन्त मेहता सावन-मल, प० मस्तानचन्द, लाला खुशहाल-चन्द, प० ऋषिराम, प्रो० ज्ञानचन्द मोपलो के अत्याचारो से लोहा लेने के लिये मालाबार चल दिये। स्थानीय हिंदू आतंक, छुआछूत और जातीय भेदभाव के कारण सहयोग से कतराते थे। पहले दिन दो हजार पीड़ितो को खाना दिया गया, जो बाद मे बढ़कर 12000 की सख्या तक पहुच गया। सारे के सारे धर्मान्तरित व्यक्तियो को शुद्ध किया गया, मन्दिरो की आर्य समाज ने मरम्मत कराई। सबने सभा की प्रशंसा की। कालीकट के राजा ने प्रादेशिक सभा को आर्य समाज निर्माणार्थ भूमि दी, जहा अब भी आर्य समाज अच्छा कार्य कर रहा है।

2 कोहाट के साम्प्रदायिक दंगे मे सहायता—मोपलों के विद्रोह से एवं विदेशी राजनीति से देश के मुसलमानो का साहस बढ़ा और स्थान स्थान पर हिन्दू मुस्लिम दंगे होने लगे। मुल्तान का 1922 का दंगा और कोहाट का 1924 का दंगा विशेष स्थान रखते हैं। कोहाट के पठानो ने बन्दूकों और तल-वारो से मोपला विद्रोह का दृश्य दिखा दिया। लाला खुशहालचन्द वहा पहुचे, हिन्दुओ को ढाढस बधाया और उन्हें आर्य समाज की सहायता से पुनः सुस्था-पित किया। इसी प्रकार 1932 में जम्मू कश्मीर में पुंछ, मीरपुर, कोटली आदि मे साम्प्रदायिक दंगों के शिकार लोगों की सहायता की गई।

(च) शुद्धि सेना 1923

सभा तथा डी० ए० वी० सस्थाए 1923 में आगरा तथा मथुरा जिलो के मलकाने राजपूतों की शुद्धि मे अग्रसर हुए। ये राजपूत मुस्लिम काल में अत्या-चारों के कारण पतित हो गये थे। यह हर्ष की बात है कि यह कार्य महात्मा हंसराज स्वामी, श्रद्धानन्द, सनातन धर्मी नेता प० गिरिधर शर्मा के सम्मिलित सहयोग से सम्पन्न हुआ। लाहौर से दयानन्द ब्रह्म-महाविद्यालय के छात्र अपने आचार्य पं० विश्वबन्धु के साथ गये। प० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, कालेज के कैप्टेन अमरनाथ बाली, स्कूल के पंडित मस्तानचन्द, महात्मा जी सहित बहुत परिश्रम करते रहे। अन्त मे हजारों की सख्या मे मलकाने राजपूतो को शुद्ध करने सफलता मिली।

इसके अलावा शुद्धि के अन्य कार्य जो डी० ए० वी० वालों ने किये, उनमें शिमला के पादरी स्टोक्स को 1932 मे शुद्ध करना मुख्य है। यह पादरी अमरीका से आकर कोटखाई से नारकंडा तक ईसाई मत का प्रचार करता था। वह डी०ए० वी० सस्था और उसके कार्यों से प्रभा-वित हुआ। उसने वैदिक साहित्य का भी अध्ययन किया और अन्त मे शुद्ध होकर, सत्यानन्द नाम से वैदिक धर्म का प्रचारक बन गया। वे कई अवसरो पर लाहौर भी आये। बाद मे उन्होंने हिमा-चल प्रदेश की ही एक महिला से विवाह कर लिया। अब इनकी सन्तानें हिमाचल की सामाजिक और राजनीतिक गति-विधियों मे प्रमुख भाग ले रहे हैं।

इसी प्रकार अछूतोद्धार मे डी० ए० वी० ने बड़ा कार्य किया। मालाबार और दक्षिण भारत में अछूतो के लिये कई सड़कें बन्द होती थी और मन्दिरों तथा उत्सवों मे उनका प्रवेश वर्जित होता था डी० ए० वी० के प्रयत्नो से वे उन बन्धनो को तोड़ने में सफल हुए।

यह हैं कुछ सेवा कार्य जो डी० ए० वी० सस्थाओं और आर्य प्रादेशिक सभा ने गत वर्षों में किये।

पता—डी-721, सरस्वती विहार, दिल्ली-34

होता नहीं यदि आर्य समाज

—गंगा प्रसाद विद्यार्थी एम. ए, एम. फिल. (सस्कृत)—

देश में प्यारे बढ़ता जाता अनाचार और पापाचार।
सदाचार पथ कौन गहावे, होवे नहीं यदि आर्य समाज॥
सत्य-अहिंसा लुप्त हो रहे, बढ़ता जाता अत्याचार।
घूस-दलाली-काली कमाई इन्हीं में पलता है व्यभिचार॥
देश की दुर्गति बढ़ती जाती, कौन बचाए इसकी लाज।
सदाचार पथ कौन गहावे बढ़े नहीं यदि आर्य समाज॥

धर्म-कर्म सब लुप्त हो रहे, बन्द यज्ञ और सुविचार।
पाखंडो मे प्रीति लोक की, पुजते झूठे चमत्कार॥
व्यभिचारों को प्रश्रय मिलता, ब्रह्मचर्य का होता नाश।
योगी महावीर बन जावें, जग में फैले यदि आर्य समाज॥

माता-पिता गुरु की सेवा विद्वानों का भी सत्कार।
साधु-अतिथि-अभ्यागत को प्रेम और कुछ भोजन पान॥
पत्नी पति की, पति पत्नी की, सतुष्टि का करे विचार।
प्रेम-प्रीति को कौन बढ़ावे, बढ़े नहीं यदि आर्य समाज॥

चार वेद अरु छह शास्त्रो का, छह वेदांगो का जो ज्ञान।
स्मृति-उपनिषद् तथा उपवेदों का भी सम्यग् हो व्यवहार॥
तर्कपूर्ण, सृष्टिक्रम सम्मत, विद्यायुक्त सभी विज्ञान।
सत्यासत्य को कौन बतावे, होवे नही यदि आर्य समाज॥

पत्थर मे नहिं देवता होते, और न देते वे वरदान।
झूठे भ्रमों के भरमाए, सच्चे देव न सकें पहिचान॥
निराकार प्रभु महादेव है, उससे बढ़कर कौन सरताज।
सच्ची पूजा कौन सिखाता, होता नहीं यदि आर्य समाज॥

अपनी कविता अपना भाषण सब ही जानें श्रेष्ठ महान।
किन्तु सत्य बतलाने वाला ऋषिवर दयानन्द विद्वान॥
"सत्यार्थ" पढ़ो, "सस्कार" जमाओ और "भूमिका" को लो जान।
वैदिक सत्पथ कौन बताता, होता नही यदि आर्य समाज॥

उठो आर्य, पथ भ्रष्ट न होवो, कर्तव्यों को लो पहिचान।
पद का मोह-लोक सब त्यागो, नहीं करो कुछ भी अभिमान॥
जर्जर दशा देश की प्यारे, हुआ हाल-बेहाल समाज।
स्वय जगो, ससार जगाओ, राह देखता आर्य समाज॥

पता—175, जय नगर, जबलपुर सिटी, पिन-482 002

योग प्रदर्शन

आर्य युवक दल (हरियाणा) के शिक्षक बलवीर सिंह ने जिला-जीन्द के ग्राम निडानी में हुई खेल प्रतियोगिता मे योग-प्रदर्शन किया जिसमें बेल तोडना, लोहे की सरीया आख व गले से मोडना आदि कार्यक्रम था। प्रदर्शन से खुश होकर श्री महेन्द्र सिंह मलिक डी० आई० जी० (हरियाणा) ने 1000 रु० नकद इनाम देकर सम्मानित किया। उच्चतर विद्यालय ग्राम लोहला का योग्य छात्र है। इस प्रतियोगिता मे लगभग 20 हजार खिलाड़ियों ने भाग लिया।

—श्रीमति दुर्गा गौड प्रधानाचार्य

महात्मा हंसराज दिवस

पर

शुभ कामनाएं

पोप भारत से लौटकर वेटिकन पहुचे तो एक पत्रकार ने पूछा अस्पृश्यता और कुरीतियों के बारे में हिंदू धर्माचार्यों से क्या आपकी बातचीत हुई ? पोप का जवाब था वार्तालाप सम्भव नहीं था, क्योकि हिन्दुओ का कोई एक धार्मिक प्रतिष्ठान, ग्रथ या धर्माचार्य नहीं है, यह तथ्य हिन्दू धर्म को दुनिया के सभी बड़े धर्मों से अलग कर देता है, हिंदू विचार धारा कट्टर मतवाद के रूप में नहीं, सदियो से साझा विचार प्रवाह के रूप मे विकसी है। उसमे अनेक दर्शन समाहित हैं, जिन्हें कुछ निर्विकार सिद्धांत भीतर ही भीतर जोडते हैं। इसलिए हिंदुओ का धर्म विज्ञान विकेन्द्रित और अनेकवादी प्रणाली के अनुरूप है। भारत में गरीबी के बावजूद लोकतत्र जीवित है तो इसीलिए कि अधिकतर भारतवासी हिन्दू हैं। मसीही राष्ट्रो को औद्योगिक क्राति के बाद ही लोकतत्र मिला और इस्लामी राष्ट्रो को तो वह आज भी नसीब नही है।

धार्मिक सस्था की अनुपस्थिति हिंदुओं को दूसरे धर्मों के प्रति सहिष्णु बनाती है। यहूदी जहां भी गये, सताये गये सिवाय भारत के पारसी भी भारत आये और फले फूले। इस्लामी हमले के बाद पारसी दूसरे देशों में भी गये, लेकिन उनका कहीं अता पता नहीं है।

भारत अपने गौरवशाली अतीत के अनुसार किस प्रकार पुन शक्ति शाली बन कर ससार मे अपनी विशेष पहचान बना सकता है—इसके लिए अर्थशास्त्र, राजनीति और प्रतिरक्षा सम्बधी मामलो के विशेष अध्येता और व्याख्याता डा सुब्रह्मण्यम स्वामी ने एक रामबाण उपचार बताया है—हिन्दू पुनर्जागरण। इस हिन्दू पुनर्जागरण से उनका क्या अभि-प्राय है और वे इसे किस प्रकार व्यावहारिक रूप देना चाहते हैं, इसके लिए उन्होने सात मुद्दे गिनाए हैं। वे सात मुद्दे कौन से हैं—यह इस लेख मे देखिए। 9 नवम्बर 87 के 'दिनमान' मे यह लेख छपा था। वही से लेकर साभार यह लेख प्रकाशित कर रहे हैं। समस्त हिन्दू समाज को इस विचारोत्तेजक लेख पर चिन्तन और मनन करना चाहिए।

आंदोलन से प्रभावित गुरु नानक ने सिखो की नींव रखी सिखो को हिन्दुओं की रक्षा का भार सोंपा और सामूहिक मानसिकता पैदा की।

हर नवजागरण के बाद हिन्दुत्व की शक्ति बढ़ी है। विवेकानन्द, अरविंद और महात्मा गाधी से प्रेरित जागरण को छोडकर पहले के सभी नवजागरण राजनैतिक उत्कर्ष के कारक बने। आदि शकराचार्य ने चाणक्य के लिए आधार भूमि तैयार की जिन्होने मौर्य साम्राज्य की नीव रखवायी (चाणक्य का अग्रेजों द्वारा निर्धारित काल मुझे मान्य नही) दक्षिण मे विजय नगर साम्राज्य 350 बरस चला, गुरु रामदास प्रेरित शिवाजी यशस्वी हुए और मराठो ने तो मुगल साम्राज्य लगभग खत्म ही कर दिया था।

भारत को एक सूत्र मे बाधने वाले उपकरण—प्रशासनिक तत्र (पुलिस और सेना समेत) और राजनैतिक दल—कुद हो गये हैं, प्रशासन तदर्थ-वाद और भाई भतीजावाद में डूबा है सेना के दो घटक सिख और गुरखा परित्यक्त महसूस कर रहे हैं। राजनैतिक दलो मे दादाओ की चलती है। इस लिए सब को एक सूत्र मे बाधने वाला कौन सा भावनात्मक आधार बचा है ? मेरी राय में एक कालजयी चेतना ही बच रहती है जो देश को जोड रख सकती है। यह है सकारात्मक हिन्दू चेतना का पुनर्जागरण

नेतृत्व के अभाव मे यह चेतना नकारात्मक और प्रतिगामी हो चली है, उसका इस्तेमाल दूसरे धर्मानुयायियो के प्रति नफरत बढ़ाने के लिए हो रहा है।

दूसरा वह सगठन जो हिन्दू जागरण की बात करता है वह न मुद्दे स्पष्ट कर पाता है और न उनके सामने उदात्त लक्ष्य हैं।

मैं और कुछ दूसरे लोग सोचते थे कि राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ हिन्दू नव-जागरण का वाहक हो सकता है। लेकिन अब कोई भी। विचारशील हिंदू ऐसा नही मानता। इसमे वह रोग है जिसके चलते आदिकालीन डायनासोर अपने बड़े आकार के बावजूद परिस्थितियो के अनुकूल नहीं ढाल सका और नष्ट हो गया। इसके नेताओ मे धारणा का वाग्मिता का अभाव है। सघ की सगठनात्मक सकृति मे बुनियादी हिन्दू चरित्र का अभाव है। वह फासीवाद की ओर झुका है यह हिन्दुत्व के विपरीत है।

मूलतः हिन्दू चेत्र की तीन विशेष-ताए हैं, सत्य ही परमेश्वर है, गाधी जी भी यही कहते थे। राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ झूठ की सस्कृति मे विश्वास करता है (2) सारग्राही हिंदू आत्मसात करने और बाहरी परिवेश के अनुकूल बनने में विश्वास करता है, जो कुछ शाखा प्रणाली मे विकसित नही हुआ उसे नहीं स्वीकार करता। बाहरी लोगो के अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करके उन्हें फेंक देता है (3) हिन्दू दिमाग मूलत जिज्ञासु है। दुनिया भर मे उसे दो मुहा और

हिंदू नवजागरण के सात शील

—डा सुब्रह्मण्यम स्वामी—

सामूहिक धार्मिक प्रतिष्ठान हिन्दू धर्म विज्ञान का अनिवार्य अग नहीं है। फिर भी आपातकाल मे हिदू धर्म चिंतकों ने हिन्दुत्व की रक्षा के लिए प्रतिष्ठान जरूर बनाये हैं। जब बौद्ध और मीमासा दर्शन हिन्दू धर्म की मुख्य धारा पर हावी हो गये तो आदि शकराचार्य का अविर्भाव हुआ और उन्होने हिन्दुओ की पुनर्स्थापना के लिए देश के चारो सिरों पर मठ कायम किये।

चौदहवी सदी में इस्लामी आक्रमण से बचाव के लिए श्रृंगेरी शकराचार्य ने धर्मपरिवर्तन करने वाले दो लोगों को फिर हिन्दू बनाया और हपी (कर्नाटक) में हिन्दू पुनर्जागरण के लिए विजयनगर साम्राज्य की नीव रखवायी। शिवाजी के उत्कर्ष के पीछे भी धार्मिक प्रेरणा ही थी। अग्रेजों के खिलाफ स्वाधीनता सग्राम को दो योगियों—स्वामी दयानन्द और महर्षि अरविंद से प्रेरणा मिली। इनसे प्रेरित राजनैतिक योगी महात्मा गांधी ने कांग्रेस पार्टी को पुनर्गठित किया और आजादी दिलायी।

स्थानीय स्तर पर भी प्रतिष्ठान बने दक्षिण भारत के रामानुजम भक्ति

बीसवीं सदी मे दो जनों की मृत्यु से नवचेतना की लहर थम गयी। ये हैं महात्मा गांधी और सरदार पटेल, इनकी मृत्यु से नेहरू के नेतृत्व मे अतग्लीकृत कुलीन सत्ता पर काबिज हो गये। उन्हें काग्रेस के भीतर पुरुषोत्तमदास टडन और राजेन्द्र प्रसाद सरीखे पुनरुज्जीवन के विरोध से मदद ही मिली, क्योंकि ये भारत को अतीत की ओर धकेलना चाहते थे। नेहरू ढोगी थे, न तो उन्होंने भारत को कट्टर पथ से मुक्ति दिलायी जैसी कि कमाल आतातुर्क ने तुर्कों को दिलायी थी न पुनर्जागरण की लहर को ही आगे बढ़ने दिया।

प्राचीन दर्शन और आधुनिक दृष्टिकोण से उपजा लोकाचार विकसित करके ही देश पर आये सकट का सामना किया जा सकता है। राजनीति और समाज के बिखराव के कारण देश की एकता खतरे मे है। पजाब मे सिख आतकवादी हिंदू सरकार के खिलाफ हथियार उठाये हैं। गुजरात में पिछड़ी अगाडी जातिया गुत्थम गुत्था है शाहबानो और बाबरी मस्जिद ने हिन्दुओं और मुस्लिमों को पूरी तरह दो खेमो में बांट दिया है।

नतीजा होगा खेमेबंदी और अधिक बिखराव।

इससे बड़ा खतरा क्या हो सकता है कि शिव के प्रतीक त्रिशूल का प्रयोग सिखो के विरुद्ध हो—उन सिखो के खिलाफ जिनके गुरुओ ने हिन्दुओ की रक्षा के लिए बलिदान किये। नयी हिन्दू चेतना का दूसरा प्रतिगामी तत्व खुद हिन्दुओ को ही बाट रहा है। गुजरात मे पिछडी और अगाडी जातियो मे युद्ध छिडा है। यदि हिन्दू चेतना प्रबुद्ध हो तो कोई आरक्षण की चुनौती नहीं देगा खेती में और अधिकतर नौकरियो मे आरक्षण नही है निजी क्षेत्र में सेना में गुप्तचरी में और सार्वजनिक उद्यमो के वरिष्ठ पदो में आरक्षण नहीं है, अगाडी जातियों मे मेडिकल और इजीनियरी कालेजों के दाखिले मे और पदोन्नति के मामले मे आरक्षण को लेकर असतोष है।

दुर्भाग्यवश हिन्दुओ में जागती चेतना पर दो नकारात्मक प्रवृतिया हावी हो गयी हैं। यह है ध्रुवीकरण और बिखराव। इसके दो कारण है एक हिन्दुओ ने सामूहिक रूप से नवजागरण का समयबद्ध कार्यक्रम नही अपनाया।

झगडालू माना जाता है। राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ में सवाल पूछने की अनुमति नही है। शाखा मे दिये गये फतवे बाहर भी तोते की तरह दोहराये जाते है।

अपने अधफासी स्वभाव और मूलत अहिन्दू चरित्र के कारण राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ हिन्दू नवजागरण का वाहक नही हो सकता है, पहले हमे हिन्दू नव जागरण कार्यक्रम की परिभाषा करनी होगी और तब उसे साकार करने के लिए एक माध्यम विकसित करना होगा

क्या ऐसे कार्यक्रम की जरूरत है ? है, क्योकि यदि सुविचारित कार्यक्रम नही है और उसे ढग से वाणी नहीं दी जाती तो एक अनिश्चित भ्रामक कार्यक्रम हवा मे तैरते रहेगे। जनता सरकार का एक कार्यक्रम था, लेकिन उसकी सही व्याख्या नही की गयी। उसके सामने चारसूत्री कार्यक्रम था मद्यनिषेध, गोवध निषेध, धर्म स्वातत्र्य विधेयक इतिहास का पुन-र्लेखन। मूलत ये बुरे नही थे लेकिन क्योकि इनका उद्देश्य जनचेतना का स्तर ऊचा उठाना नही था इसलिए प्रतिगामी कहकर उन्हे मार दिया गया। भारत के वामपथियो को हिन्दू पुनर्जागरण के नाम से दौरे पडने लगते हैं। उन्हे इनको

हिंदू नवजागरण के ....

(पृष्ठ 23 का शेष)

बदनाम करने मे दिक्कत नही हुई। इदिरा गाधी के सामने भी एक अव्यक्त कायक्रम था। वह तांत्रिकों मे और ऊची जातियो के दृष्टिकोण मे विश्वास करती थी। इससे जाति व्यवस्था और धर्माचरण दोनो रूढ़ हुए और अधविश्वास बढा। पिछले अनुभव से एक ही सबक सीखा जा सकता है कि या तो भारत स्पष्ट रूप से हिन्दू नवजागरण कायक्रम अपनाये और तेजी से आगे बढ़े या निर्जीव कार्यक्रम अपना कर पीछे लौटे और देश को कमजोर होने दे।

यह हिन्दू कार्यक्रम क्या हो जो सब को स्वीकार हो? कार्यक्रम का पहला मुद्दा सब लोगो के, खास कर नई पीढी के दिमाग मे यह बात बैठाने का है कि हिन्दू धर्म का एक सारा साझा विश्वास है जो नैतिकता और नैतिक लोकाचार को ऊचा उठाता है। इस धार्मिक विरासत को समझे बिना तर्कसगत और सर्व सम्मत मूल्य प्रणाली को अपनाना बहुत कठिन है।

मर्यादा और मूल्य के बिना नयी पीढी अपने अनैतिक पुराने ग्रथो में अतर्निहित नैतिकता को अच्छी तरह समझे बिना सही ठहराने की कोशिश करेगी बहुत से नौजवान छात्र महाभारत से अश्वत्थामा का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि झूठ बोलना उचित है, कौटिल्य अर्थशास्त्र का भी उदाहरण दिया जाता है, पर न महाभारत और न अर्थशास्त्र व्यक्तियो या सगठनों को झूठ बोलने की अनुमति देते हैं

लोकतत्री समाज में हमारी धर्म परम्परा झूठ बोलने की इजाजत नही देती। फिर भी हम रोज हजारों झूठ बोलते हैं। इससे नैतिक बल क्षीण होता है। सच बोलने की शक्ति व्यावहारिक उदाहरणो से भी दी जानी चाहिए। सत्यवादी हरिश्चन्द्र की कथा के माध्यम से नहीं क्योंकि उस पूर्णता तक नही पहुचा जा सकता। हिन्दू कार्यक्रम का दूसरा मुद्दा यह होना चाहिए। लोगो को बताया जाये कि हम क्या है। यह दृष्टि हमें इतिहास से मिल सकती है। लेकिन उस इतिहास से नहीं जो अग्रेजों ने स्कूलो और कालेजो में पढ़ने के लिए लिखवाया था। इनमें यह दिखाया गया है कि भारत दूसरी नस्लो द्वारा हमेशा जीता जाता रहा है। पहले द्रविड आये, फिर आर्य, मुसलमान और आखिरकार अग्रेज, वे अपनी मोजूदगी को जायज साबित करना चाहते थे। इस इतिहास में अग्रेज शासन के फायदे गिनाये गये हैं, मसलन उपनिवेशवाद ने भारत को एक किया यानी कि अग्रेज नहीं होते तो भारत कभी एक न होता

क्योकि मोजूदा चोहद्दी वाला राष्ट्र राज्य भारत पहले नहीं था तो इसका मतलब नहीं कि भारत था ही नहीं। जिस तरह एक चर्च, ग्रन्थ या पोप के बिना हिन्दू धर्म प्राचीन काल से रहा है उसी तरह राज्य के आधुनिक तामझाम के बिना भारत का अस्तित्व आदिकाल से है। उत्तर से दक्षिण तक अग्रेजो ने परम्परागत ढाचे और वैचारिक आदान प्रदान के रास्ते नष्ट करके भारत की एकता समाप्त करने की कोशिश की। इसलिए हिन्दू कार्यक्रम का दूसरा मुद्दा है अपने इतिहास का वास्तविक परिचय देना और यह बताना कि भारत को लगातार राष्ट्र के रूप मे बनाये रखने की कोशिश होती रही। इतिहास के विदेशी सस्करणो ने बहुतो को अपने देश में ही विदेशी बना दिया है।

हिन्दू कार्यक्रम का तीसरा मुद्दा है धर्मनिरपेक्षता इस शब्द के अर्थको लेकर देश मे बहुत भ्रम है। इसका मूल अर्थ है राज्य की सत्ता और धर्म की सत्ता में अलगाव, अपने मूल अर्थ में इस शब्द के लिए भारत में कोई जगह नहीं है। इस शब्द का एक और अर्थ है कि धर्म-निरपेक्ष राज्य को धर्म विरोधी होना चाहिए। हाल मे एक मार्क्सवादी ससद सदस्य ने ऐतराज किया था कि प्रधान मत्री ने दीपक जलाकर और नारियल तोड कर सरकारी क्षेत्र की परियोजना का उद्घाटन किया। उनको ऐतराज था कि दीपक और नारियल हिन्दू धर्म के प्रतीक हैं और धर्मनिरपेक्ष राज्य के प्रधान मन्त्री को इनका बहिष्कार करना चाहिए। धर्मनिरपेक्षता की यह धारणा रद्द की जानी चाहिए। मैं इसे आक्रामक वामपथी धर्मनिरपेक्षता कहूगा। 1969 से इस किस्म के धर्मनिरपेक्षता को बढावा मिला है, क्योकि काग्रेस सरकार वामपथी विद्वानो को अनावश्यक महत्व देती रही है।

बहुत से मुस्लिम बुद्धिजीवी इस आक्रामक वामपन्थी धर्मनिरपेक्षता के कायल हैं। यह राष्ट्रीय विपत्ति ही है कि आजादी के 40 साल बाद मुस्लिम बुद्धिजीवी यह समझें कि उन्हें कठमुल्लेपन और आक्रामक वामपन्थी धर्मनिरपेक्षता में से एक का चुनाव करना है। मुस्लिम बुद्धिजीवी बीच का रास्ता भी अख्तियार कर सकते हैं, जिसकी जगह हिन्दू नवजागरण की परिकल्पना में है।

राज्य धर्म से कोई वास्ता न रखे यह नामुमकिन है अगर कुभ मेला होता है तो राज्य को सुरक्षा और व्यवस्था का इन्तजाम करना होगा। यही बात धार्मिक जुलूसो पर लागू होती है। आक्रामक वामपन्थी धर्मनिरपेक्षता मार्क्सवादी राज्य में ही चल सकती है, क्योकि वहा धर्म को विध्वसात्मक शक्ति माना जाता है।

दूसरे छोर पर कट्टरवाद है जो दूसरे धर्मों की स्वाधीनता घटाना चाहता है, लेकिन अपने धर्म की मनचाही व्याख्या करने की पूरी छूट चाहता है। वह धार्मिक राज्य में ही सभव है। भारत मे कट्टरवादी हिन्दुओं का अनुपात कम है। वे जाति प्रथा, छुआ-छूत समाज में औरतों की नीची स्थिति को जायज ठहराना चाहते हैं लेकिन मुसलमानो के तौर तरीको का विरोध करते हैं भारत के कट्टरवादी मुसलमान भी दोहरे मानदड अपनाते हैं। इस्लामी देशों में हिन्दुओ के साथ होने वाले दुर्व्यवहार को वे उचित ठहरायेंगे लेकिन धर्मनिरपेक्षता के नाम पर भारत मे सभी तरह की सुरक्षा और गारन्टी पाना चाहते हैं। अगर सऊदी अरब मे भारत से गये हिन्दू मजदूर मूर्ति की पूजा करते या दीवाली मनाते देखे जायेंगे तो उसे सख्त सजा दी जाएगी। भारत के कट्टर-वादी मुसलमान कहेंगे कि सऊदी अरब इस्लामी राज्य है। फिर भी अगर भारत में धर्मनिरपेक्षता के नाम पर छोटी से छोटी पाबदी लगायी जाये तो कट्टरवादी मुसलमान आसमान सिर पर उठा लेंगे। शाहबानो के मामले मे सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद यही हुआ ऐसे दोहरे मानदड के कारण हिन्दुओ की निगाह मे धर्मनिरपेक्षता की साख खत्म हो गयी है। इसलिए मैं इसे प्रतिक्रियावादी धर्मनिरपेक्षता कहूगा।

धर्मनिरपेक्षता की भावना उत्तम है और हिन्दू स्वभाव के अनुकूल है। केवल बौद्धो और मुगलो के शासनकाल में धार्मिक राज्य से भारत का वास्ता हुआ। साधारणत हिन्दू राजा धर्म-निरपेक्षता में विश्वास करते थे जो आक्रामक वामपन्थी प्रतिक्रियावादी सस्करण से अलग था।

सबसे पहले हमे समझना होगा कि हम सब हिन्दू अतीत से जुडे हैं। देश की 82 फीसदी आबादी हिन्दू हैं। सबसे बडी अल्पसख्यक बिरादरी को भी स्वीकार करना होगा कि उनमें बहुतो के पूर्वज हिन्दू थे। उन्हें अच्छा और सच्चा मुसलमान बनने की आजादी है, लेकिन उन्हें अपने हिन्दू अतीत को निदनीय समझने की प्रवृति छोडनी होगी इस अतीत मे साहित्य मूर्तिकला सगीत भाषा और सास्कृतिक पक्ष सभी कुछ शामिल है। अगर आज कोई मुस्लिम सस्कृत पढ़ता है तो कट्टरवादी उसे आधा हिन्दू कहने लगते हैं। अगर मुस्लिम पिता अपने बेटे का नाम 'आफताब' की जगह सूरज रख दे तो कट्टरवादी उसकी भर्त्सना करेंगे हालाकि दोनों शब्दो का एक ही अर्थ है।

प्रतिक्रियावादी धर्मनिरपेक्षता की ओट में कट्टरपन्थी चाहते हैं कि आज के मुसलमान अपने हिन्दू अतीत से कट जायें और दोनों सम्प्रदायो में अलगाव का सिलसिला बढ़े। इडोनेशिया के उदाहरण से स्पष्ट है कि इस्लाम और ऐतिहासिक विरासत में मौलिक टकराव नहीं है।

नेहरू के लिए धर्मनिरपेक्षता का मतलब था वैज्ञानिक मानववाद और ऐतिहासिक परिवर्तन की प्रगतिशील दृष्टि में आस्था। गाधी जी के लिए भी वह धार्मिक भाईचारे, सम्मान और सत्य का पर्याय था। गाधी जी के लिए धर्मनिरपेक्षता की कसौटी थी सत्य और सत्य आचरण। इसी को मैं बुनियादी धर्मनिरपेक्षता कहता हू। हिन्दू कार्यक्रम में धर्मनिरपेक्षता की यही परिभाषा होनी चाहिए।

अगर मुसलमान हिन्दू अतीत को स्वीकार करे तो हिन्दू-मुसलमानों के बीच तनाव तुरन्त खत्म हो जायेगा। रामजन्मभूमि विवाद पैदा नहीं हुआ होता। हिन्दू कट्टर पन्थी यह असलियत स्वीकार करने के लिए तैयार नही कि राम हिन्दुओ के लिए ही नहीं उनके अपने पूर्वजो के भी पूज्य थे।

हिन्दुओ को रामजन्मभूमि देकर मुस्लिम नेताओं ने हिन्दू समाज की कृतज्ञता अर्जित करने और हिन्दू साप्रदायिकता पर चोट करने का सुनहरा अवसर खो दिया।

मोटे तौर पर मुस्लिम बुद्धिजीवियो से मेरा अनुरोध है बुनियादी धर्म-निरपेक्षता को बढ़ावा देने और हिन्दू मुस्लिम सौहार्द्र की खातिर उन मदिरो का उद्धार होने दें जिन पर मस्जिदें बनी हैं। इसकी एवज मे हिन्दू मुसलमानो के लिए पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद की फैसल मस्जिद से सुन्दर अनेक मस्जिदें बना देगे। मन्दिरो पर बनी मस्जिदें राजकीय हिंसा की देन हैं। इसलिए वे हमारे इतिहास के झूठ हैं जिन्हें मिटाने की जरूरत है। जब हिंसा के ये प्रतीक बने रहते हैं, धर्म-निरपेक्षता के उपदेशक मक्कारी के सिवा कुछ नहीं होंगे।

बुनियादी धर्मनिरपेक्षता का एक सिद्धात यह भी है कि मुसलमान पूरी तरह सुरक्षित अनुभव करें। बहुसख्यक समुदायों की एकता के लिए खुशहाल आर्थिक वातावरण और सामाजिक न्याय जरूरी है। जब अवसर सीमित हो तो ईर्ष्या और बदले की भावना की खूख्वार प्रवृत्तियां हावी हो जाती हैं इसलिए हिन्दू पुनर्जागरण के लिए तेज आर्थिक विकास की अर्थनीति और अधिकाधिक सामाजिक न्याय आवश्यक है।

हिन्दू स्वभाव में व्यक्तिवाद की प्रधानता है। इसमे निहित सामाजिक चेतना तभी जागती है जब सामने खतरा खडा हो। इस स्वभाव के अनुरूप आर्थिक दर्शन महात्मा गाधी ने विकसित किया था लेकिन शीर्षस्थ नेताओ मे केवल सरदार पटेल और राजगोपालाचारी ने उसे प्रचारित किया। उसमें नेहरू का विश्वास नहीं था। निर्विवाद नेता बनते ही उन्होंने उसे छोडकर दूसरी पच-वर्षीय योजना बनायी और देश की अर्थ व्यवस्था पटरी से पूरी तरह उतर गयी। तब से खाद्य पदार्थों, विदेशी मुद्रा और बेरोजगारी ने हमारा पीछा नहीं छोडा।

(शेष पृष्ठ 25 पर)

हिंदू नवजागरण के ..

(पृष्ठ 24 का शेष)

देश में हिन्दुओं की सख्या 82 फीसदी है और वे व्यक्तिवादी है। इसलिए बाजार पर आधारित आर्थिक नीति ही सही नीति होगी। सरकार को हस्तक्षेप का अधिकार तो हो, जिससे लोगो की अनुचित होड से रक्षा हो सके। छोटे निर्माताओं को आसानी से कर्ज मिले। किसानो और छोटे उद्यमियों के माल की निकासी का बन्दोबस्त हो सके। ऐसी अर्थव्यवस्था मे सरकार को ऊचे शिखर पर बैठने का अधिकार नहीं होगा। ऐसी अर्थव्यवस्था न पूजीवादी होगी, न समाजवादी, बल्कि गांधी जी के विचारों का आधुनिक सस्करण होगी।

इसलिए हिन्दू पुनर्जागरण का चौथा मुद्दा है एक ऐसे आर्थिक दर्शन का स्वीकार जो उदार हो और जिसमे सरकार की भूमिका भौतिक सुविधाए और नीतिगत ढाचा मुहैया करने तक सीमित रहे। दुनिया भर मे समाजवाद विफल रहा है और पूजीवाद ने शोषण और सामाजिक असन्तोष पैदा किया है।

अगर बाजार पर आधारित अर्थ-व्यवस्था स्वावलम्बन बढ़ाती है और हिन्दू पुनर्जागरण के लिए आदर्श है तो ऐसी स्वतन्त्र विदेशी नीति भी होनी चाहिए जो भारत को स्वतन्त्र ध्रुव के रूप मे स्थापित करे। भारत में महान देश बनने की सम्भावनाए हैं। उसकी भौगोलिक स्थिति सामरिक महत्व की है। इसके बावजूद भारत मे शक्ति का इस्तेमाल करने और क्षमता भर आगे बढ़ने की इच्छा नहीं है। भारत सरकार मानकर चलती है कि दुनिया रूसी और अमेरिकी खेमों मे बटी है। निर्गुटवाद यथास्थिति कायम रखता है। सैनिक शक्ति के रूप में चीन के और आर्थिक शक्ति के रूप में जापान के उदय से दो ध्रुवो की स्थिति समाप्त हो गई है।

जब भी हिंदू शासक अपनी महानता के बारे मे सचेत थे उन्होंने अपने देश के आकार के मुताबिक शक्ति का प्रयोग किया। दक्षिण मे चोल राज्य के नौ बेडे ने बहुत तरक्की की और इन्दोनेसिया कम्बुजिया और वीएतनाम मे भारत का प्रभाव कायम हुआ। अरब सागर पर शिवाजी का नियन्त्रण था और महाराजा रणजीतसिंह का राज्य अफगानिस्तान तक फैल गया था। इसलिए हिन्दू पुनर्जागरण का मतलब ही यह है कि वह अन्तरराष्ट्रीय मामलों में केवल राय न दे बल्कि दुनिया की घटनाओं को प्रभावित करे।

परमाणु अस्त्रो के निर्माण नौसेना के विकास भारत-रूस सधि के परित्याग और चीन तथा पाकिस्तान से नये सम्बन्ध बनाकर भारत विश्व का चौथा ध्रुव बन सकता है। यह हिन्दू पुनर्जागरण की आकाक्षा के अनुरूप होगा। अगर हम सकल राष्ट्रीय उत्पादन का 7 प्रतिशत सेना पर खर्च करें तो यह लक्ष्य प्राप्त हो सकता है। प्रतिरक्षा और विदेशी नीति को पुनर्गठित करना हिन्दू कार्यक्रम का पांचवा मुद्दा है।

हमारा राष्ट्र आज भाषा और जातियों के कारण बटा हुआ है। आजादी के बाद यह अलगाव बढा है। भाषा के चलते चडीगढ़ और बेलगाव के विवाद से बढ़कर हास्यास्पद बात और क्या हो सकती है। हिन्दू पुनर्जागरण मे भाषा और जाति का धर्म से कोई सम्बन्ध नही होगा। भृगु और भार्गव के शास्त्रार्थ से स्पष्ट है कि जाति जन्म से नहीं। पेशे के गुणो से बनती है। वेद और अन्य श्रुतियो में जाति का कोई उल्लेख नही। वह 'स्मृति' साहित्य में जरूर है। लेकिन स्मृतियों को छोडा जा सकता है, या उन्हें फिर से लिखा जा सकता है। निकट भविष्य मे जाति प्रथा समाप्त नहीं की जा सकती, लेकिन जरूरी है कि उसके खिलाफ अभियान छेडे।

व्यावहारिक दृष्टि से हिन्दी सर्वोत्तम सम्पर्क भाषा है, लेकिन यह भविष्य की भाषा नही है। आने वाली शताब्दियो में सस्कृत ही हमारी राष्ट्रभाषा बन सकती है। दो कारण है, भारतीय भाषाए सस्कृत बहुल है। तमिल को सस्कृत की बहन कहा जा सकता है। तमिल शुद्धिकरण अभियान के क्षेत्र में अन्तरराष्ट्रीय शोध से सकेत मिलता है कि कम्प्यूटर मे जानकारी जमा करने के लिए सस्कृत ही सबसे अच्छी भाषा है। अमेरिकी सेना की एक परियोजना मे सस्कृत के इस्तेमाल का फैसला किया गया है। अगर तीन भाषाए सीखने का फार्मूला ईमानदारी से लागू हो तो सस्कृत पुन भारत की राष्ट्रभाषा बन सकती है। इसलिए जातिप्रथा समाप्त करने और सस्कृत को राष्ट्रीय भाषा बनाने का लक्ष्य सामने रखकर हिन्दू चेतना विकसित करना छठा मुद्दा हो सकता है।

ये छहों मुद्दे हिन्दू पुनर्जागरण के महत्वपूर्ण अग है। हिन्दू पुनर्जागरण किसी समुदाय के विरुद्ध नही होगा, हालांकि मुस्लिम कट्टरवादी इसे सांप्रदायिक कहेंगे।

मेरी राय में हिंदू मुसलमानो के निजी कानून के बारे मे बेकार चिंता करते हैं। हमें सबसे पहले अपना घर सभालना चाहिए। एक सर्वेक्षण से पता चलता है कि मुसलमानों की अपेक्षा बहुपत्नीवादी हिन्दुओ की सख्या अधिक है। मैं यह साफ कर देना चाहता हू कि समान सिविल कोड बनाने के मुद्दे को प्राथमिकता नहीं दी जानी चाहिए। फाह्यान से लेकर बाहर से आने वाले सभी लोग भारत को हिन्दुस्तान कहते आये हैं। इकबाल के गीत 'सारे जहा से अच्छा' मे भी हिन्दुस्तान का जिक्र है। इसलिए हिन्दुस्तान कहने से हिन्दू धार्मिक राज्य का बोध नही होता, मेरी समझ मे नही आता कि सविधान मे भारत की जगह हिन्दुस्तान का इस्तमाल क्यो नहीं किया गया। इसलिए हिन्दू पुनर्जागरण कार्यक्रम का सातवा मुद्दा है कि भारतीय सविधान मे सशोधन करके कहा जाय कि यह देश 'हिन्दुस्तान' है।

यह सातो मिलकर भारत को शक्तिशाली और खुशहाल देश बनायेंगे, कार्यक्रम बनाने जितना ही महत्वपूर्ण काम है एक ऐसे माध्यम का विकास करना जो इस कार्यक्रम को प्रचारित करे। तभी हिन्दू पुनर्जागरण हो सकेगा।

पत्रों के दर्पण में

मन्त्र का विनियोग क्या होता है ?

31 जनवरी के अ क में गायत्री मन्त्र विषयक लेख के लेखक को यह पता नहीं कि वेद मन्त्रों का विनियोग क्या होता है। वह विनियोग का अर्थ सदर्भ या Reterence करता है और गायत्री मन्त्र का वेद संहिता में पता (अध्याय एव मन्त्र सख्या) बताने को ही विनियोग कहता है। वास्तव में विनियोग होता है कर्मकाण्ड की किसी शास्त्रोक्त विधि में मन्त्र का प्रयोग। उदाहरणार्थ, सध्या करते समय हम 'शन्नो देवी' इस मत्र को बोलकर आचमन करते हैं तो यह मन्त्र आचमन कर्म में विनियुक्त कहा जायगा। वेद पर कलम चलाने से पहले कुछ गम्भीर स्वाध्याय श्रेयस्कर होगा।

—डा० भवानीलाल भारतीय चण्डीगढ़

निरुक्त का अध्ययन करने वाले

इस समय तक निरुक्त पर 25 टीकायें हो चुकी हैं, जिनमें पांच टीकायें आर्य विद्वानों की भी हैं। ये सब टीकायें स्वामी दयानन्द सरस्वती के मन्तव्य के विरुद्ध हैं। मैं निरुक्त पर 'महर्षि भाष्यम्' लिख रहा था। परन्तु अब मेरी आंखों की रोशनी मन्द पड गई है, अतः यह काम बन्द हो गया। अब मुझे ऐसे सहयोगी की आवश्यकता है जो व्याकरण पढ़ा हो और अग्रेजी भाषा भी जानता हो क्योंकि निरुक्त का साहित्य अ ग्रेजी भाषा में भी है। मैं मौखिक बोलकर भाष्य लिखाऊ गा। कोई सन्यासी, वानप्रस्थी या विद्यार्थी इस योग्यता का हो, वह मुझ से पत्र व्यवहार करे। मेरा निजीम कान है। लाखो का विशाल पुस्तकालय और प्रेस भी है। मेरे पास निघन्टु निरुक्त का जो साहित्य है वह इस प्रकार है —1 पाच टीकायें प्राचीन हैं। दुर्ग, स्कन्द, देवराज यज्वा, वररुचि, निरुक्त श्लोक वार्तिक। 2 पांच ग्रन्थ पाश्चात्य विचारधारा वालों के हैं —डा० लक्ष्मणस्वरूप, प० सत्यभूषण योगी, सत्यव्रत साम श्रमी, राजवाडे, सिद्धेश्वर वर्मा। 3. पाच ग्रन्थ पौराणिक विचारधारा वालों के हैं —पं० मुकुन्द झा बख्शी; प० सीताराम शास्त्री, प० छज्जूराम शास्त्री, प० शिवनारायण अग्निहोत्री, ब्रह्मकुशल उदासीन। 4 पाच टीकायें आर्य विद्वानो की हैं —प० चन्द्रमणि, स्वामी ब्रह्म मुनि, पं० भगवत दत्त, प० राजाराम शास्त्री, आचार्य विश्वेश्वर, पं० कपिलदेव द्विवेदी; 5 इनके अतिरिक्त कुछ विद्वानों ने निरुक्त पर छोटे-छोटे निबन्ध लिखे —प० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, आचार्य विश्व श्रवा, प० युधिष्ठिर मीमांसक, डा० विजयपाल शास्त्री, प० चमूपति।

उपर्युक्त सब ग्रन्थ मेरे पास हैं। इनके अतिरिक्त कोई और ग्रन्थ किसी विद्वान की निगाह में हो तो मुझे सूचना दें।

—आचार्य विश्वश्रवा व्यास वेदाचार्य, वेद मन्दिर 103, बाजार मोतीलाल, बरेली

पाखण्ड का प्रचारक—'होनी अनहोनी'

'आर्य जगत्' का राम नवमी अ क देखा। उसमे मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के सम्बन्ध में बहुत अच्छी सामग्री है। इसी अ क में 'तमस" सम्बन्धी लेख भी अति उत्तम है। परन्तु यह सीरियल समाप्त हो चुका है। उसका जो बुरा प्रभाव पडना था वह पड चुका है। आजकल एक और सीरियल "होनी अनहोनी" चल रहा है। यह असत्य, बुद्धि के विपरीत भ्रान्तियों और पाखण्डी लीला को प्रचारित करने वाल है। यह शीघ्रातिशीघ्र बन्द होना चाहिए। इसके लिये प्रदर्शन करने की आवश्यकता नहीं है। आर्य समाज के विद्वानों का एक शिष्टमण्डल दूरदर्शन के अधिकारियो से मिलकर उन्हें समझाये और इस सीरियल को बन्द करवाने का प्रयत्न करे। समाचार पत्रों में भी उसका विरोध होना चाहिए। यह सीरियल "तमस" से भी अधिक बुरा है।

— पिशोरी लाल "प्रेम" ददाहू (रेणुका) हिमाचल प्रदेश

2 आपका पत्र जिस प्रकार पाखण्ड और अन्ध विश्वास को दूर करने का प्रयत्न करता है उसके लिए आप बधाई के पात्र हैं। मैं आपका ध्यान "होनी-अन-होनी" सीरियल की ओर दिलाना चाहता हू जिसका प्रत्येक प्रसग अन्ध विश्वास और पाखण्ड को बढ़ावा देने वाला है क्या सरकारी माध्यम द्वारा प्रचारित पाखण्ड अन्य पाखण्डों से भिन्न होता है ? इस सीरियल को बन्द करवाने का तुरन्त प्रयत्न होना चाहिए।

—यश पाल, ददाहू, हिमाचल प्रदेश

आर्य समाज और राजनीति

श्री हसराज मघोक का उक्त शीर्षक का लेख पढ़ा। आजकल हमारे देश की राजनीति स्वार्थियों और भ्रष्टाचारियों की भोग लिप्सा का साधन बन गई है। ऐसी राजनीति में केवल गुण्डे ही आगे आ सकते हैं। जब तक आर्य विचार धारा के लोगो का विधानसभाओं और ससद में प्रवेश नहीं होगा तब तक देश के उद्धार की कल्पना करना कठिन है। आर्य विचारधारा से ओत प्रोत व्यक्तियों का एक राजनैतिक मंच अवश्य बनना चाहिए। जो राष्ट्र को नया जीवन दे सके। जिस तेजी से राष्ट्र विरोधी शक्तियां बढ़ रही हैं उसको देखते हुए ऐसे राजनैतिक मच का निर्माण करने में विलम्ब किया गया तो आर्य जनों को पीछे पछताना पड़ सकता है।—रामचन्द रिवारिया, सदस्य हरिजन वेलफेयर बोर्ड, दिल्ली प्रशासन, 3441 चौक हौज काजी, दिल्ली-6

पजाब का हत्याकाण्ड और राष्ट्रीय सुरक्षा समिति

आजकल पजाब मे जिस प्रकार हत्याओं का दौर बढ़ रहा है उससे पजाब के हिन्दू गांवों को छोडकर शहरो की ओर पलायन करने को विवश हो गए हैं। सरकार की ओर से कोई सुरक्षा और सहायता का साधन न मिलने के कारण वे लोग पंजाब से बाहर भी नहीं जाना चाहते। स्थान स्थान पर हिन्दू सम्मेलन बुलाकर गांवो के हिन्दुओं को शहरों में लाकर उनकी सुरक्षा का प्रबन्ध किया जा रहा है। राष्ट्रीय सुरक्षा समिति इस कार्य में बडी तत्परता से लगी हुई है। डॉ० बलदेव राज चावला इस समिति के प्रधान हैं और श्री जयकिशन शर्मा प्रान्तीय सयोजक हैं। समिति की ओर से कई स्थानो पर इन पीडित हिन्दू परिवारों के लिए रहने और खाने आदि का प्रबन्ध किया जा रहा है। इन पीडित परिवारो की सहायता के लिए समस्त हिन्दू समाज से प्रार्थना है कि वे धनादि की जो भी सहायता भेजना चाहें वे इस पते पर भेजने की कृपा करें —राष्ट्रीय सुरक्षा समिति, श्री दुर्गयाणा तीर्थ, अमृतसर, पजाब

मैं कहाँ जाऊ ?

मैं एक गरीब तथा भूमिहीन व्यक्ति हू। पिछले साल आर्य समाज बक्सर में ईसाइयत छोडकर मैं पुन वैदिक धर्म मे प्रविष्ट हो गया। मेरे आस पास ईसाइयों की संख्या ही अधिक है। पादरी लोग अपने अनुयायियो के पक्के मकान बनवा रहे हैं और उनको अन्य तरह से भी सहायता देते रहते हैं। मैं गरीब मिट्टी के मकान में रहता हू और बाढ़ के प्रकोप से वह भी दुर्दशाग्रस्त है। आसपास कोई अन्य शिक्षा सस्थान न होने के कारण मुझे अपनी दोनों बच्चियो को ईसाइयो के विद्यालय में ही भेजना पडता है और उनकी फीस भी देनी पडती है, जबकि ईसाई होने पर वह फीस माफ हो जाती है। मेरी पत्नी, बच्चो व मुझे अपने पडोसी ईसाइयों के खूब ताने भी सुनने पडते हैं। परन्तु मैं जिस किसी तरह वैदिक धम पर दृढ हू। यदि आपके पाठक मेरी कुछ आर्थिक सहायता कर सकें तो मेरा मनोबल कायम रह सकता है। छोटी-छोटी पत्रिकायें और पुस्तिकायें भी मुझे कृपा करके भिजवा सकें तो मैं अपने पडोसियो में भी वैदिक धर्म का प्रचार कर सकता हू।—शिवमुनि प्रसाद आर्य, ग्राम पोस्ट ईटाईढ, जि० भोजपुर, बिहार

हिंदू धर्म को बचाओ

पुरी के शकराचार्य ने हिन्दुओं से आग्रह किया है कि वे कांग्रेस को वोट न दें। किसको वोट दें —यह वे कुछ नहीं बताते। चारों शकराचार्यों के विचार भी परस्पर भिन्न हैं और वे हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए कभी आपस में मिल बैठकर विचार भी नहीं करते। वे तो हरिजनों को अपने चरण भी स्पर्श नहीं करने देते। जब तक हिन्दुओं में अछूतों के प्रति घृणा बनी रहेगी और शकराचाय जैसे व्यक्ति इस प्रकार की छूआछात का समर्थन करते रहेगे तब तक हिन्दुओं के विघटन को रोकना कठिन है। हिंदुओं को बचाने का केवल एक ही उपाय है कि वे आर्य समाज की मान्यताओं को ग्रहण करें और समस्त कुरीतियो को तिलाजलि दें। प्रसन्नता की बात है कि नेपाल मे हुए विश्व हिंदू सम्मेलन में भी हिंदू समाज की इस दुर्बलता को हटाने का आग्रह किया गया है।—कैलाश चन्द्र आर्य, उपमन्त्री, मेरठ शहर समाज

दिवराला का सकेत

यह सती काण्ड दिवराला का, जिस पर तूफान उठा भारी।
धर्मान्ध जनो ने अग्नि को, अर्पित की एक युवा नारी।।
घटना घटी वहा पर जब, तब थी दर्शक सख्य भारी।
घर, ग्राम, नगर और शहरी भी, कुछ थे सरकारी अधिकारी।।
पर नहीं किसी ने रोका था, उत्सव भी खूब मनाया था।
कानून बनाने वालो ने, भी जय जयकार सुनाया था।।
हम यही मानते दृढ़ता से, यह धर्म न वेदो शास्त्रों का।
यह मानवता का कर्म नहीं, है कर्म अस्त्र औ' शस्त्रों का।।
प्राचीन काल मे नारी का, सत था, पर सती न होती थी।
अनुसूया, सावित्री जैसी पतिव्रता, अनुपम ज्योति थी।।
इतिहास उठाकर देखो यदि, तो वह साक्षी है जोहर का।
औ' धर्म-कर्म का, साहस का, आदेश उन्हीं के शोहर का।।
जब निज 'अस्मत' सकट में हो, रक्षा-हित कुछ भी कर डालो।
है क्षमा शास्त्र विधि से भी यह जैसे हो धम बचा पा लो।।
सरकार न जोशी को दोषी, पर केन्द्रीय सत्ता दोषी है।
जिसकी सत्ता में नित ही तो, नववधू होलिका होती है।।
कारण ? है दान-दहेजों का दानव कितनो को खाता है।
फासी के झूले पर कितनी नववधुओ को लटकाता है।।
शासकीय नाक के नीचे ही, नित नये काण्ड ये होते हैं।
लेकिन सत्ताधारी प्रतिदिन निज नयन मु ह कर सोते हैं।।
अब भी चेतो सत्ताधारी ! मानवता तुम्हें पुकार रही।
प्रतिदिन के ऐसे काण्डो मे 'दिवराला का सकेत' यही।।

—ब्रजवासीलाल श्रीवास्तव, 119 गौतमनगर, नई दिल्ली-110049

डी ए वी शताब्दी का उपहार

संग्रह योग्य पठनीय जीवनोपयोगी पुस्तकें

हमारी नई पीढ़ी को पढ़ने के लिए वांछित पुस्तकें नहीं मिल रही हैं। बाजार में ऐसी पुस्तकों की भरमार है जिनसे उनके मानस पर कुप्रभाव पड़ता है। निरर्थक पुस्तक पढ़ने वाले निरक्षरों से किसी भी हालत में अच्छे नहीं कहे जा सकते। युवकों के उचित मार्गदर्शन के लिए डी ए वी प्रकाशन संस्थान ने "डी ए वी पुस्तकालय" ग्रन्थ माला का अपने शताब्दी वर्ष में प्रकाशन आरम्भ किया है। अब तक निम्न पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। कागज और छपाई अत्युत्तम होते हुए भी मूल्य प्रचारार्थ कम रखा गया है।

		Price Rs. P
Wisdom of the Vedas. Select Vedic mantras with inspirational English renderings.	Satyakam Vidyalankar	15 00
Maharishi Dayanand. A perceptive biography of the founder of Arya Samaj.	K S. Arya and P D Shastri.	20 00
The Story of My Life. Autobiography of the great freedom fighter and Arya Samaj leader	Lajpat Rai	30.00
Mahatma Hans Raj An inspiring biography of the father of DAV movement in India	Sri Ram Sharma.	20.00
प्रेरक प्रवचन डी ए वी कालेजों के जनक द्वारा विविध विषयों पर बोधप्रद प्रवचन	महात्मा हंसराज	15.00
सूक्तियां प्रेरक संस्कृत सूक्तियां हिन्दी तथा अंग्रेजी रूपांतर सहित	धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री	15.00
क्रांतिकारी भाई परमानन्द प्रख्यात क्रान्तिकारी तथा आर्य समाज के नेता की प्रेरणाप्रद जीवनी	धर्मवीर एम० ए०	20.00
Reminiscences of a Vedic Scholar. It is a thought-provoking book on many subjects of vital importance for Aryan Culture	Dr Satyavrata Siddhantalankar.	20.00
DAV Centenary Directory (1886-1986) (In Two Volumes) A compendium of biographies over 1000 eminent DAVs, Benefactors Associates etc with their photographs Over 1000 pages, 9" X 11" size, printed on very good paper, beautifully bound in plastic laminated card-board	Rs 150/-per set in Delhi Rs. 200/- by Regd. Post in India. Rs.150/-plus actual postage for Foreign countries.	
Aryan Heritage A monthly journal for propagation of the Vedic philosophy & culture.	Rs. 60/- per annum Rs. 500/- for Life for an individual. Rs. 600/- in lump-sum for Institutions.	

500/- रुपये से अधिक माल मंगाने पर 10% कमीशन दिया जाएगा। डाक व्यय तथा रेल भाड़ा ग्राहक को देना होगा। चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट "डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति, नई दिल्ली, पब्लिकेशन्स एकाउंट" के नाम से भेजा जाए।

प्राप्ति स्थान :

(1) व्यवस्थापक, डी ए वी प्रकाशन संस्थान, चित्रगुप्त रोड, नई दिल्ली-55

(2) मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मंदिर मार्ग नई दिल्ली।

डीएवी संस्थाओं के प्रिंसिपल महोदयों, से निवेदन

डी ए वी कालेज ट्रस्ट एण्ड मैनेजमेंट सोसायटी की स्थापना करने वाले महानुभावों ने उसके संविधान में आयुर्वेद के महत्त्व पर जोर दिया था। जालन्धर शहर में हमारा आयुर्वेदिक कालेज चल रहा है जो मूलत 1898 में लाहौर में शुरू हुआ था। गुरुनानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर से सम्बन्धित यह हमारी गौरवशाली संस्था है। यहां से प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले वैद्य समस्त उत्तर भारत में विद्यमान हैं और उनकी प्रैक्टिस खूब अच्छी चल रही है। इस कालेज की आयुर्वेदिक फार्मेसी बहुत ही उपयोगी आयुर्वेदिक औषधियों का निर्माण कर रही है। उनका मूल्य भी अधिक नहीं है। डी ए वी संस्थाओं के सभी प्रमुख से प्रार्थना है कि वे अपनी संस्थाओं के माध्यम से इन आयुर्वेदिक औषधियो को लोकप्रिय बनाने का प्रयत्न करें। इसके लिए डी ए वी फार्मेसी द्वारा निर्मित आयुर्वेदिक औषधियों का समुचित स्टाक अपने यहां रखें और कार्यालय के किसी कर्मचारी को उनकी बिक्री का काम सौंपे। उस कर्मचारी को बिक्री पर साधारण कमीशन अथवा कुछ मासिक भत्ता दिया जा सकता है। आप मैनेजर, आयुर्वेदिक फार्मेसी, डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति, चित्रगुप्त मार्ग, नई दिल्ली से भी सम्पर्क कर सकते हैं।

वेद व्यास,
प्रधान डी० ए० वी० कालेज ट्रस्ट एण्ड मैनेजिंग कमेटी,
चित्र गुप्ता रोड, नई दिल्ली।

दवाइयों की सूची

1 अंगूरासव	450 मि० रु० 16	6 ब्राह्मी घृत	100 मि० रु० 20
2 द्राक्षासव	450 मि० रु० 16	7. ब्राह्मी तेल	100 मि० रु० 8
3 फलासव	450 मि० रु० 18	8 महाभृंगराज तेल	100 मि० रु० 15
4 च्यवनप्राश	500 ग्राम रु० 25 1 कि० रु० 48	9 लवण भास्कर 10 स्वादिष्ट पाचक चूर्ण	100 ग्राम रु० 8 100 ग्राम " 8
5 देसी चाय	100 ग्राम रु० 6 200 ग्राम रु० 11	11 चन्द्रप्रभावटी 12 महायोगराज गुग्गुल	50 ग्राम " 23 100 ग्राम " 14

दयानन्द कालेज हिसार (हरियाणा)

1 शताब्दी वर्ष में संस्था ने कामर्स ब्लाक का निर्माण किया है, जिस पर लगभग तीन लाख रुपये खर्च आया है।

2 इस वर्ष नर्सरी टीचर ट्रेनिंग व स्टेनोग्राफी के डिप्लोमा प्रारम्भ किए गए हैं।

3 हरियाणा सरकार व कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की अनुमति से इस वर्ष एम० ए० इंगलिश कक्षा प्रारम्भ की गई है।

(डा०) एस० आर्य
प्राचार्य

"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"

डी ए वी कालेज, अमृतसर

उत्तर भारत की एक आदर्श संस्था जो अनुशासन और सुशिक्षा के प्रति समर्पित है

धर्मवीर पसरीचा
प्रिंसिपल

ओम् स्तुता मया वरदा वेदमाता।
(वरदाता वेदमाता की स्तुति में लगे हुए)

डी.ए.वी. कालेज आफ एजुकेशन, अबोहर

के विद्यार्थी एवं प्राचार्य कुल की
हार्दिक शुभ कामनाएं

सत्यपाल कुशल
प्राचार्य

आवश्यकता है

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली को अपने कार्यालय आर्य समाज कबीर बस्ती में कार्यालय प्रबन्ध हेतु "अ शकालीन कार्यकर्ता" की आवश्यकता है। दसवीं कक्षा उत्तीर्ण युवक अथवा सेवा भावी वानप्रस्थी आवेदन करें। हिन्दी टाइप अतिरिक्त योग्यता। वाञ्छित वेतन के उल्लेख के साथ महामन्त्री के नाम शीघ्र आवेदन दें।—बृजेश आर्य, मन्त्री दूरभाष-7216173

उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर में प्रवेश

वैदिक साधन आश्रम यमुनानगर मे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा प्रबुद्ध प्रचारक तैयार करने के लिए सिद्धात प्रवेशिका, भूषण विशारद, शिरोमणि शास्त्री की मान्यता प्राप्त उपाधि का प्रवेश 1 मई से प्रारम्भ होकर, अध्यापन 1 जुलाई को प्रारम्भ हो जावेगा। प्रवेशार्थी अभी से ही पत्र व्यवहार करके अपना स्थान सुरक्षित करा लें। आर्ष साहित्य पठन-पाठन के साथ भोजन आवास व्यवस्था सर्वथा नि शुल्क रहेगी। प्रवेशार्थी की योग्यता संस्कृत के साथ दसवीं प्राज्ञ, प्रथमा या इसके समकक्ष होनी चाहिए। 16 वर्ष से अधिक आयु के अविवाहित छात्र ही प्रवेश प्राप्त कर सकेंगे। प्रवेशार्थी ऋतु अनुकूल वस्त्र व बर्तन साथ लावें।

पत्र-व्यवहार निम्न पते पर करें— प्रबन्धक—श्री महेन्द्रसिंह शास्त्री, श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय, शादीपुर, यमुनानगर (हरियाणा)।

हंसराज महिला महाविद्यालय

महात्मा हंसराज मार्ग, जालंधर

उत्तर भारत की प्रमुख महिला संस्था

मुख्य विशेषताएं :—

- उच्च शिक्षा स्तर
- चरित्र निर्माण पर विशेष बल
- उत्तम परीक्षा परिणाम
- सुरम्य वातावरण
- भव्य भवन
- समृद्ध प्रयोगशालाएं
- धार्मिक शिक्षा—विशेष आकर्षण
- विभिन्न खेलों के लिए सम्पन्न क्रीड़ा-क्षेत्र
- पढ़ाई के अतिरिक्त छात्राओं में अन्य गुणों एवम् योग्यताओं के विकास हेतु उचित वातावरण

श्रीमती कान्ता सरीन
प्रिंसिपल

[P]

महात्मा हंसराज—एक आदर्श व्यक्तित्व

—डा० के० सी० महेन्द्र—

आज जब स्वार्थ, धर्मान्धता, अनुशासनहीनता, भौतिक आसक्ति और पक्षपात, हमारे समाज का अंग बन चुके हैं। ऐसी स्थिति में महात्मा हंसराज का जीवन एक प्रकाश स्तम्भ के समान हमारा मार्ग दर्शन करता है। महात्मा हंसराज कोई दैवीय शक्तियों से सम्पन्न व्यक्ति नहीं थे। उनका महान व्यक्तित्व उनकी अपनी ही रचना है।

19 अप्रैल 1864 को बजवाड़ा में जन्में वे सादगी, निस्स्वार्थ समाज सेवा, धर्म के पुंज, एक माध्यमवर्गी परिवार से सम्बन्ध रखते थे। ईमानदारी, धर्म परायणता और आत्म-सम्मान और धन के प्रति अनासक्ति इन्हें विरासत में प्राप्त हुई। पिता श्री चुन्नी लाल शारीरिक चिकित्सा के ज्ञाता होते हुए भी कभी धनोपार्जन की तरफ नहीं मुड़े। बड़े भाई मुल्कराज ने सहर्ष अपनी कमाई का आधा भाग हंसराज को देना स्वीकार कर लिया ताकि छोटा भाई दयानन्द स्कूल (1886 में स्थापित) लाहौर और कालेज में नि.शुल्क सेवा कर सके।

महात्मा हंसराज जब स्कूल के मुख्याध्यापक नियुक्त हुए तो उनकी उम्र केवल 22 वर्ष थी। लोगों द्वारा आपत्ति की गई। लेकिन शायद वे लोग महात्मा हंसराज की लगन, प्राशासनिक योग्यता और बहुमुखी प्रतिभा से अनभिज्ञ थे। सामाजिक प्रतिरोध, वित्तीय सकट, प्रतिकूल अंग्रेजी प्रशासन उनके रास्ते में रुकावट नहीं बन सके। आरम्भ में ही डी ए वी स्कूल और कालेज की सेवा का ऐसा उदाहरण स्थापित किया जो आज तक अनुकरणीय माना जाता है। आदर्शों के प्रति इस निष्ठा के कारण ही डी ए वी कालेज शिक्षा, अनुशासन सामाजिक भलाई, और देश भक्ति के क्षेत्र में समकालीन सभी शिक्षण संस्थाओं को पीछे छोड़ गया। इसी के माध्यम से उन्होने अपने आदर्शों को मूर्तिमान् किया। इनके व्यक्तिगत जीवन पर यदि इकबाल का एक शेर लिखा जाए तो ना काफी होगा —

> मैं उनकी महफिले
> इशरत से कांप जाता हूं
> जो घर को फूक के
> दुनिया मे नाम करते हैं।

आर्य समाज को देन

महात्मा हंसराज सामाजिक धार्मिक थे। महर्षि दयानन्द के इस अनुयायी ने अपना सारा जीवन महर्षि के स्वप्नों को पूरा करने में लगा दिया। स्वामी दयानन्द का 1877 में लाहौर में आगमन इनके सम्पूर्ण जीवन को नया मोड दे गया। महर्षि तो अपने अतुल्य आत्म-बल से हिन्दू समाज में वैदिक धर्म की चेतना छोड गए लेकिन महात्मा हंसराज ने अपने अतुल्य सकल्प से हिन्दू समाज को शक्ति विहीन करने वाले जातिवाद, और धर्मान्धता को जड़ से उखाड़ दिया। अंग्रेजी शिक्षा को जो हिन्दू धर्म के विरुद्ध थी, को रोकना, "The Regeneviator of Arya Varta" द्वारा लोगों में वैदिक जागृति लाना, और समाज सेवा से देश भक्ति पैदा करना महात्मा हंसराज का जीवन लक्ष्य हो गया।

आर्य समाज के सहयोगियो से मिल कर महात्मा हंसराज ने जातिवाद, छूतछात, बाल विवाह और विधवा विवाह के लिए युद्ध स्तर पर कार्य किया। स्कूल और कालेज के द्वार विवाहित किशोरो के लिए बद कर दिए। सभी जातियो के समान अधिकारो के लिए सघर्ष किया। अवध और गढ़वाल के अकाल में महात्मा हंसराज के नेतृत्व में महत्वपूर्ण कार्य किया गया। यह केवल समाज सेवा ही नहीं, बल्कि धर्म रक्षा का कार्य भी था, क्योंकि इन्हीं अकाल पीडितों को ईसाई बनाने का प्रयास किया जा रहा था। उनका कार्य क्षेत्र केवल पजाब तक ही सीमित नही था, बल्कि समाज सेवा के लिए वे बलोचिस्तान, कश्मीर, सिंध और उड़ीसा तक जाने से नही हिचकते थे।

लाला लाजपत राय अपनी पुस्तक 'आर्य समाज" में महात्मा हंसराज के विषय में लिखते हैं —"महर्षि दयानन्द के बाद महात्मा हंसराज और महात्मा मुशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) के बिना आर्य समाज असभव था। डी ए वी कालेज तो लाला हंसराज के बिना सर्वथा असम्भव ही था।"

महात्मा हंसराज ने समाज मे ईमानदारी और लगन की ऐसी छवि भर दी कि लगातार दान राशि आने लगी जिससे दयानन्द कालेज जैसी विशाल सस्था चल सकी, आर्य समाज द्वारा समाज सेवा वैदिक धर्म का प्रचार सभव हुआ।

पता—G G S D A V Centenary College, Jalalabad (w)

श्री हंसराज दिवगत

आर्य समाज पत्रिका के सदस्य कर्मठ कार्यकर्त्ता पटेल नगर निवासी श्री हंसराज चीटकारा का 60 वर्ष की आयु में 13 मार्च को निधन हो गया।

शोक समाचार

मुसाहब गंज (ठाकुर गज) लखनऊ के प्रतिष्ठित नागरिक श्री बाबूलाल आर्य का 6 मार्च को निधन हो गया है। 7 3-88 पूर्वान्ह जनता श्मशान घाट चौक पर पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार दाह संस्कार हुआ उनके पुत्र श्री ओम प्रकाश आर्य ने विभिन्न वैदिक सस्थाओं सहित टंकारा ट्रस्ट को भी 200) दान में दिये।

—जयदेव शर्मा

19 3-88 को 113 वा समाज स्थापना दिवस भीलपरा आर्य समाज राजकोट में मनाया गया इस अवसर पर राजकोट के नोटरी श्री बी० टी० उपाध्याय श्री हीरा भाई कोठारी, श्री गिरधारी भाई मसला और लोक साहित्य कार राम भाई गढवी और भजनीक श्री कसुमा जाडेजा ने अपने अपने विचार रखे। इस अवसर पर शंकरानन्द शिशु विहार और महर्षि दयानन्द उद्योग मन्दिर की बहनों का सास्कृतिक कार्यक्रम और भजन हुआ।

आर्य समाज का वास्तविक......

(पृष्ठ 9 का शेष)

का बड़ा भाव है], हिन्दुओं में सुदृढ़ता नहीं आ सकती। कारण ?—विरोधियों के हाथ में हिन्दुओं को फोड़ने का यह एक प्रबल शस्त्र है। यही कारण है कि महात्मा गांधी ने अपने कार्यक्रम में दलितोद्धार को सर्वोच्च स्थान दिया है।

यदि ऋषि दयानन्द का मिशन केवल समाज-सुधार, उपकार तथा देश-भक्ति का कार्यक्रम नहीं तो स्वामी दयानन्द का मिशन क्या था ? जहां तक मेरा विचार है, स्वामी दयानन्द ने वेदों का प्रचार किया। इसी-ज्ञान का फैलाना स्वामी दयानन्द का मिशन था। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने आर्य समाज स्थापित किया। वेदों में उपदेश है कि सामाजिक तथा राजनैतिक बुराइयों को दूर करो! दूसरों का हित करो! अज्ञान का नाश करो! स्वामी दयानन्द ने यह भाव देश में फैलाया। वेद ऊचे से ऊचे ज्ञान का प्रकाश करते हैं तथा बताते हैं कि मनुष्य का मनुष्य के साथ कैसा व्यवहार होना चाहिए। प्रकृति, आत्मा तथा परमात्मा का स्वरूप क्या है ? जीव किस प्रकार से परमात्मा तक पहुंच सकता है ? आदि। जो अन्धविश्वास हिन्दुओं, मुसलमानो तथा ईसाइयों मे हैं, उन सबका खण्डन किया गया। वैदिक सत्य का प्रकाश लोगों तक पहुंचाया गया। इस धर्म के सम्बन्ध मे वह 'सत्यार्थप्रकाश' के अन्त में इच्छा प्रकट करते हैं—

"जो वेद आदि सत्य शास्त्र तथा ब्रह्मा से जैमिनि मुनि पर्यन्त माने हुए ईश्वर आदि पदार्थ हैं, उनको मैं भी मानता हू तथा सब सज्जन महाशयो के सम्मुख प्रकाशित करता हू। मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हू जो कि तीन काल में सबको एक-जैसा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना वा मत-मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभि-प्राय नहीं।" [शब्दों का अन्तर हो सकता है, भाव यही है।—स०]

वेदो तथा उनमें प्रकाश किये सत्य सिद्धान्तों का प्रचार करना स्वामी जी के जीवन का उद्देश्य था। धर्म का द्वार सबके लिए खुला है। कोई भी व्यक्ति हो, पुण्यात्मा हो अथवा पापी, हिन्दू-मुसलमान हो कि वा ईसाई, वह अपने मिथ्या विश्वास तजकर वैदिक धर्म में प्रविष्ट हो सकता है। यह सार्वभौम धर्म है। इसके सिद्धान्त अटल हैं। वेदों के पठन-पाठन और उसमें दिये हुए उपदेशों को ग्रहण करने से आर्य जाति की बुराइयां दूर होकर इसका कल्याण होगा, परन्तु यह धर्म केवल आर्य जाति के लिए ही नहीं, वेद प्रत्येक देश तथा जाति का कल्याण करना चाहता है। शर्त केवल यह है कि उन पर आचरण किया जावे। जो लोग आर्यसमाज को केवल सामाजिक सुधार करने वाली अथवा केवल एक लोकोपकारी सस्था, अथवा राजनैतिक दल बनाना चाहते हैं, वे भयकर भूल करते हैं। आर्यसमाज के द्वारा इन सब पहलुओं में लोगो का कल्याण होगा, परन्तु यह कल्याण वेदो के प्रकाश तथा अनुकरण से ही सम्भव है।

मत समझो कि आर्यसमाज केवल हिन्दू जाति के कल्याण के लिए ही है अथवा भारतवर्ष का कल्याण ही इसका उद्देश्य है, आर्यसमाज तो समस्त ससार के लिए है। यद्यपि इस समय हमारा ऐसा 'छोटा मुंह बड़ी बात' की लोकोक्ति जैसा है, परन्तु जिस समय ईसा का उपदेश हुआ तो किसे ज्ञात था कि फिलस्तीन के निवासी एक फकीर के सामने ससार के बड़े-बड़े शासक अपना सिर झुकाएगे तथा उसके उपदेश ससार के विभिन्न देशों में फैलेंगे ? इसी प्रकार इस समय यह विश्वास करना कठिन है कि वैदिक धर्म योरुप, अमरीका अथवा एशिया के अन्य भागों में फैलेगा, परन्तु सच्चे विश्वास में बड़ी शक्ति है और ऋषियों का बल (तपोबल, साधना) भी अगाध होता है। परमात्मा की शक्ति अनन्त है।

हमारा विश्वास है कि ऋषि दयानन्द का उपदेश जो उन्होने वेदो से लिया है तथा जिसका प्रकाश करने के लिए उन्होने सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका आदि ग्रन्थ लिखे हैं, किसी-न किसी समय ससार को अपना चमत्कार दिखाएगे।

['आर्यजगत्' के ऋषिबोधांक में छपा लेख। यहां प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु द्वारा अनूदित और सम्पादित 'हंसराज ग्रन्थावलि से उद्धृत]

आर्य कन्या गुरुकुल नरेला का महोत्सव

आर्य कन्या महाविद्यालय गुरुकुल नरेला (दिल्ली) का 36 वां वार्षिक उत्सव पूर्ण उत्साह के साथ 12, 13 मार्च को धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

उत्सव से पूर्व अथर्ववेद महायज्ञ ब्रह्मचारिणियों के मधुर वेद पाठ द्वारा आचार्या सुशीला वेदविभूषिता के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। यज्ञ के अन्त में कुलपति स्वा० ओमानन्द जी सरस्वती का आध्यात्मिक उपदेश हुआ तथा दिल्ली से पधारे आर्य समाज के कर्मठ नेता एवं आर्य प्रादेशिक सभा के उत्साही महामन्त्री श्री रामनाथ जी सहगल ने अपने भाषण में कन्या गुरुकुल की चौमुखी उन्नति की प्रशंसा की एवं अपनी ओर से सभी प्रकार का पूर्ण सहयोग का वचन दिया। श्री सहगल के करकमलों द्वारा ओमध्वजारोहण से उत्सव की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। उत्सव में स्वामी ओमानन्द, स्वामी सत्य प्रकाश, प्रो० शेरसिंह, चौ० हीरासिंह, श्री धर्मपाल, स्वामी योगानन्द आदि के विचारोत्तेजक प्रवचन हुए।

—कमवीर आर्य महामंत्री।

डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल फरीदाबाद

डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, फरीदाबाद का तृतीय वार्षिकोत्सव 13 फरवरी 1988 को प्रो० वेद व्यास जी की अध्यक्षता में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया, इसके मुख्य अतिथि हरियाणा के शिक्षा मंत्री श्री खुर्शीद अहमद थे। श्री दरबारी लाल संगठन सचिव डी ए वी, श्री बी० बी० गक्खड़ निदेशक डी० ए० वी० श्री रामनाथ सहगल प्रबन्धक डी० ए० वी पब्लिक स्कूल, फरीदाबाद आदि इस अवसर पर उपस्थित थे। वन्दना से सांस्कृतिक कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। विद्यालय के प्राचार्य श्री ए० बी० भल्ला द्वारा वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी गयी। सेक्टर तीन में स्थापित इसी विद्यालय की एक शाखा की गतिविधियों का उल्लेख वहां की प्रधानाचार्या श्रीमती नीलम भल्ला ने किया। मुख्य अतिथि श्री अहमद ने विद्यार्थियों के द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रमों की प्रशंसा की और शिक्षा में कम्प्यूटर के महत्व को बताते हुए उन्होंने आश्वासन दिया कि विद्यालय में प्रारम्भ किए गए कम्प्यूटर कोर्स को वह हरियाणा राज्य सरकार द्वारा मान्यता दिलवाएंगे। चौधरी साहब द्वारा उन विद्यार्थियों को पुरस्कार दिए गए जिन्होंने शिक्षा क्षेत्र में प्रथम और द्वितीय स्थान प्राप्त किये थे। —ए० बी० भल्ला, प्राचार्य

पं० देव दत्त का निधन

पं० देवदत्त जी आर्य ग्राम कुआ निवासी का 90 वर्ष की आयु में एक मार्च 1988 को निधन हो गया। वे लम्बे समय से अस्वस्थ थे। उनका अन्तिम संस्कार नर्मदा नदी के किनारे वैदिक रीति से सम्पन्न किया गया। वे अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं।

पं० देवदत्त जी जीवन भर आर्य समाज की सेवा में संलग्न रहे। समाज-सुधार के कार्यों में सदैव अग्रणी रहे। उनके त्याग एवं सेवा से ही आर्य समाज कुआ फलता फूलता रहा। सन् 1939 में निजामशाही हैदराबाद के खिलाफ उन्होंने सत्याग्रह में एवं पंजाब हिंदी आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। इसके दौरान उन्हें कारावास भी जाना पड़ा। आर्य समाज कुआ उनके प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

—आर्य समाज दरियागंज के निर्वाचन में सर्वसम्मति से प्रधान श्री बी० बी० सिंगल इन्जीनियर तथा मन्त्री श्री वीरेन्द्र पाल रुस्तगी एम० ए० चुने गये।

हिंदू सिख कितने पास..

(पृष्ठ 6 का शेष)

पीरी मीरी हलाल झटका

6 संक्षेप से कहा जाय तो मौलिक भेद दो विचारों में है जो सम्भवत इस्लाम से लिए गए हैं। एक तो पीरी-मीरी को इकट्ठा करना है। अर्थात् ब्राह्मण धर्म और क्षत्रिय धर्म को एकत्र किया जाना है। सन्त सिपाही का यही रूप है। हिन्दू धर्म में यह मान्य नहीं।

दूसरा विचार झटके और हलाल का है—यह भी हिन्दू धर्म में मान्य नहीं।

7 आजकल जो राजनीतिक झगड़ा चल रहा है—उसका मूल भी मेरे विचार में सामी—सैमेटिक विचार धारा है। ईसाइयों द्वारा अफ्रीका—अमेरिका आदि देशों पर आक्रमण का आधार धर्म प्रचार की भावना कम और राज्य प्राप्ति की लालसा अधिक था। इस्लाम ने भारत पर आक्रमण भी—मुख्यत धर्म प्रचार के लिए नहीं किया साम्राज्य बढ़ाने, धन की असीमित आकांक्षा तथा अपना वर्चस्व बढ़ाने की लालसा ही मुख्य लक्ष्य था। पाकिस्तान बनने से वहां शराब भ्रष्टाचार या बेईमानी इन में कोई कमी नहीं हुई। जिनको हकूमत की लालसा थी उनको सफलता मिली। यदि कल खालिस्तान बन भी जाय तो शराब पीना कम होगा, भ्रष्टाचार कम होगा, लूट पाट कम होगी, सन्तों का राज होगा, ऐसी कल्पना कोई समझदार नहीं करता। देश के अन्दर और बाहर के कुछ राजनीतिज्ञों की राजनीतिक लालसाएं अवश्य पूरी होंगी।

हिन्दू धर्म जैन धर्म बौद्ध धर्म का भी प्रसार हुआ, पर राज्य लालसा के लिए नहीं। इतिहास इसका साक्षी है।

पता—शान्ति सदन, 145/4 सैन्ट्रल टाउन, जालन्धर

स्व० लालमन आर्य जी को याद किया गया

महान् समाजसेवी व आर्य समाजी

स्व० लालमन आर्य जी की

पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में दयानन्द महाविद्यालय हिसार में 16 व 17 मार्च को भाषण प्रतियोगिता, कवि सम्मेलन तथा श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि संसद सदस्य श्री ओमप्रकाश चौटाला ने लालमन आर्य महिला छात्रावास का उद्घाटन किया। समारोह की अध्यक्षता हरियाणा के उपमुख्यमन्त्री श्री बनारसीदास गुप्त ने की।

—डा० सर्वदानन्द आर्य
आचार्य, दयानन्द महाविद्यालय, हिसार

[P]

अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ द्वारा आयोजित वेद गोष्ठी

20 मार्च, '1988 को काकडवाडी आर्यसमाज बम्बई मे अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ द्वारा वेद-गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी का विषय था—"वेद में पुरुषार्थ प्रेरक यथार्थवाद"। वेदपीठ के अध्यक्ष प्रो० शेर सिंह ने सस्था का परिचय कराते हुए उसके उद्देश्यों की विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा-पश्चिमी देशो के लोग अपने एकांगी भौतिक जीवन दर्शन से अशांत और त्रस्त हैं और वे मानवीय सम्बन्धो तथा एक दूसरे के लिए त्याग और सेवा के माध्यम से अपने जीवन में सुख और शांति प्राप्त करना चाहते हैं। वेदो के पुरुषार्थ प्रेरक यथार्थवाद का सन्देश स॰ ॰ के कोने-कोने मे फैलाकर ही दयानन्द के 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' लक्ष्य की ओर हम मानव समाज को ले जा सकेंगे। जगत् में जो कुछ दिखायी दे रहा है और जो कुछ हो रहा है उसे वेद 'माया' और 'भ्रम' नही मानता उसके अस्तित्व को स्वीकार करता है। उसमें पलायनवाद के लिए कोई स्थान नही। जीवन के तथ्यो को मानकर, समस्याओं की चुनौतियो को स्वीकार करके अपने पुरुषार्थ से उन पर विजय प्राप्त करता है और जीवन को सुखी और सार्थक बनाता है। परोपकार तथा परस्पर उपकार और सेवा के चप्पुओं से भव-सागर को पार करता है।

उन्होने सूचना दी कि वेदपीठ के तत्त्वावधान मे अगली वेद गोष्ठी चण्डीगढ़ में होगी जिसके सयोजक डा० भवानीलाल भारतीय होगे। उससे अगली गोष्ठी दीपावली के अवसर पर अजमेर में होगी।

सगोष्ठी की अध्यक्षता स्वामी सत्यप्रकाश जी ने की। डा० सोमदेव शास्त्री (बम्बई), श्री डा० थिटे (पुणे विश्वविद्यालय), डा० भवानीलाल भारतीय (चण्डीगड), डा० ब्रह्ममित्र अवस्थी (गगानाथ झा शोध सस्थान इलाहबाद), डा० वागीश शर्मा (आचार्य आर्ष गुरुकुल एटा), डा० एस के लाल (पुणे विश्वविद्यालय), श्री जयपाल विद्यालकार (हसराज महाविद्यालय दिल्ली), प० सत्यकाम विद्यालकार (बम्बई) ने अपने लिखित भाषण पढ़े। आचार्य रुद्रमित्र शास्त्री (बम्बई) तथा प० क्षितीश वेदालकार (सम्पादक आर्य जगत) ने भी खुलकर अपने विचार दिये। स्वामी सत्यप्रकाश जी का अध्यक्षीय भाषण बहुत मार्मिक था, उन्होने उसे अग्रेजी मे लेखबद्ध भी कर दिया था। डा० सत्यव्रत सिद्धांतालकार ने भी अपने विचार लिखकर भेजे थे। ये सभी भाषण जनता को जानकारी और अध्ययन के लिए पुस्तिका के रूप में छपवा दिये जायेंगे।

वेदपीठ की अपनी एक पत्रिका का पहिला अक प्रकाशित कर लिया है। पत्रिका मे लेख दो भाषाओ में छपेंगे, सस्कृत तथा अग्रेजी। ऊचे स्तर के विद्वत्तापूर्ण लेख ही इस पत्रिका मे छपेंगे। पत्रिका के आजीवन ग्राहको को एक हजार रुपये (1000) देने होगे। बम्बई मे गोष्ठी समाप्त होने पर लगभग दस आजीवन ग्राहक बन गये। जितनी प्रतिया वहा उपलब्ध थीं व 25) मूल्य देकर सभी खरीद ली गई।

सगोष्ठी मे भाषण के पश्चात् प्रश्न पूछने का अवसर दिया गया था। आर्यसमाज का हाल खचाखच भरा था। यह अपने ढग का पहिला प्रयास था। सभी आर्य सज्जनो ने यह अनुभव किया और कहा कि वेद सम्मेलनो की बजाय-वेद गोष्ठियो का आयोजन बहुत लाभकारी होता है।

गोष्ठी के व्यय तथा आतिथ्य आदि का भार काकडवाडी आर्यसमाज तथा कैप्टन देवरत्न आदि बम्बई की आर्य-समाजो के अधिकारियो और सदस्यो ने बड़े प्रेम से वहन किया।

इससे पूर्व 17 से 19 मार्च तक आर्यसमाज काकडवाडी का वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ। तीनो दिन प्रात और साय आर्यजगत् के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालकार, आर्ष गुरुकुल एटा के आचार्य डा० वागीश, दयानन्द मठ दीना नगर और यति मण्डल के अध्यक्ष स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के विभिन्न सैद्धान्तिक विषयो पर गम्भीर व्याख्यान होते रहे। 18 मार्च को आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाया गया जिसमे अन्य आर्यसमाजो के सदस्य भी प्रभूत सख्या मे उपस्थित हुए।

19 मार्च को प्रो० ज्येष्ठ वमन के प्रयत्न से रायल एशियाटिक सोसायटी के विशाल सभागार में विद्वानो की एक गोष्ठी हुई जिसमें सृष्टि के आदि ज्ञान की समस्या पर विभिन्न विद्वानों ने अपने विचार प्रकट किए। आर्य विद्वानो के तर्क पूर्ण विचारो को अन्य विद्वानो ने भी सराहा।

19 मार्च को ही रात को हैदराबाद के सत्याग्रहियो का शाल और पुष्पमाला से सत्कार किया गया।

सद्बुद्धि के प्रेरक : महात्मा हंसराज

—श्रीमती प्रकाश सूद, एम० ए०, बी० टी०—

आज चारों ओर अशान्ति और हाहाकार का वातावरण है, लोग सन्तप्त हैं और त्राहि-त्राहि के करुण क्रन्दन की आवाज चारों ओर से मुखरित हो रही है। करोड़पति भी सन्तुष्ट नहीं दृष्टिगोचर हो रहे। इसका कारण यही है कि आज बाह्य सुख साधन तथा सब प्रकार की सम्पन्नता होते हुए भी मनुष्य के पास मानव प्रेमी बुद्धि का नितान्त अभाव है। मनुष्य अपनी बुद्धि के अनुसार सात्विक, राजसी और तामसी प्रवृत्तियों के ही कार्य करता है। जिनकी बुद्धि शुद्ध निर्मल होती है वे विवेकशील होते हैं और भले-बुरे को सोच कर सदैव अच्छे कार्य करते हुए दूसरों को भी सत्यमार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं, हमेशा समाज हित और मानव कल्याण के कार्यों मे ही रुचि लेते हैं। शुद्ध बुद्धि होने से वह कभी किसी के अनिष्ट की भावना नहीं रखते, हमेशा अच्छे कार्यों मे प्रवृत्त रहते है।

स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, गुरु नानक महात्मा कबीर, महात्मा हंसराज आदि ने इसी सात्विकी बुद्धि द्वारा 'श्रेय' मार्ग को अपनाया और प्राणिमात्र की भलाई करते हुए संसार मे अमर ख्याति प्राप्त की। ऐसी बुद्धि, सच्चे ईश्वर की गोद मे बैठकर सत्शास्त्रों का अध्ययन करने व सत्संग मे जाने से ही प्राप्त हो सकती है। झूठे आडम्बरों व अन्ध-विश्वासों का खण्डन करती है, पथ से भटकों को मार्ग दिखाती है और यही उत्तम बुद्धि है सफल व सुखी जीवन के लिए जिसकी पग-पग पर अति आवश्यकता है।

जहां हमने सर्वोत्तम बुद्धि का विवेचन किया वहां हमे रजोगुणी व तमोगुणी बुद्धि को भी समझना चाहिए जिससे कि हम बुराई से बच सकें। श्रीकृष्ण ने गीता मे राजसी बुद्धि के विषय मे लिखा है कि 'जिस बुद्धि द्वारा मनुष्य धर्म अधर्म तथा कर्तव्य अकर्तव्य को भली प्रकार नहीं समझ पाता वह राजसी बुद्धि है।' राजसी बुद्धि मध्य दर्जे की बुद्धि मानी जाती है ऐसे लोग ही समाज मे बुरे काम करते हैं और निन्दा के पात्र बनते हैं। समाज भी उनकी निन्दा करता है ऐसे लोगों की टिकट यात्रा अवस्था बिना करने वाले यात्री की सी होती है जिसे हमेशा भय बना रहता है कि टिकट देखने वाला न आ जाए और वे हर घड़ी सहमे-सहमे रहते हैं। जब मार्ग दर्शन के अभाव के कारण बुद्धि अधिक गिरावट की ओर बढ़ेगी तो तामसी कहलाएगी और यदि अच्छाई की ओर बढ़ेगी तो सात्विकी कहलाएगी। इसलिए सत् पुरुषों के सत्संग की अति आवश्यकता है। यदि किसी कारण सत्संग मे न जा सके तो अच्छे आदर्श ग्रन्थों का स्वाध्याय तो करना ही चाहिए कि मैं कहीं गिरावट की ओर तो नहीं जा रहा आदि।

अपने जीवन मे सुधार लाने के लिए अब हम तामसी बुद्धि को भी समझ लें, ताकि अपने लिए व समाज के लिए अनर्थ करने से बच सकें। गीता मे श्रीकृष्ण ने कहा—'उल्टी बुद्धि का नाम ही तामसी है। ऐसी बुद्धि सब कार्य उल्टे ही करती है और अधर्म को धर्म तथा गलत को ठीक मानती है और भले कार्य सोचने के विवेक को खो बैठती है।' प्राय कहा जाता है कि ऐसे लोगों की उल्टी खोपड़ी होती है। तामसी लोग कभी अच्छा सोच नहीं सकते और न ही अच्छा कार्य करेंगे। वे ईश्वर की भक्ति नहीं करते, धर्म की तथा महापुरुषों की अवहेलना करते हैं। तुलसीदास जी ने रावण से कहलाया है कि तन मन देह से भगवान का भजन नहीं किया जा सकता। जैसे पित्त के रोगी को मीठी वस्तु भी कड़वी लगती है इसी प्रकार तामसी बुद्धि वालों को धार्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय, महात्माओं के प्रवचन आदि अच्छे नहीं लगते। 'करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान' इस उक्ति के अनुसार तामसी बुद्धि को सुधार की अति आवश्यकता है। जिससे जो आज समाज व राष्ट्र की अधोगति हो रही है वह रुक सके और मनुष्य मे मनुष्य के लिए सद्भावना पैदा हो सके। मनुष्य गिरे हुए व्यक्तियों को उठा सके और सच्चा नागरिक बनकर अपने समाज व परिवार का नाम अमर कर सके। इससे राष्ट्र का उत्थान अपने आप हो जाएगा। इतिहास मे बुद्धि के उदाहरण भरे पड़े हैं। जिसके पास बुद्धि है वही बलवान है, निर्बुद्धि व्यक्ति कभी भी बलवान नहीं हो सकता। चाणक्य ने कहा था चाहे मेरा सब कुछ चला जाए पर मेरी बुद्धि मेरे पास रहे। और शिवाजी, चाणक्य, भगवान कृष्ण बुद्धि के ज्वलन्त उदाहरण हैं। जिन्होंने अपने बुद्धिबल से दुष्टों का विनाश करके, राष्ट्र की रक्षा की। 'मूर्ख मित्र की अपेक्षा बुद्धिमान शत्रु भी अच्छा होता है।' यह सूक्ति बुद्धि की महिमा का प्रत्यक्ष प्रमाण है। आज के युग मे लच्छेदार भाषणों के स्थान पर सद्बुद्धि की प्रेरणा की अधिक आवश्यकता है। तभी समाज तनाव मुक्त व क्लेश मुक्त हो सकता है। और समाज का उपकार करना तथा सब की उन्नति मे अपनी उन्नति समझना महर्षि दयानन्द और म० हंसराज के विचारों का निचोड़ना है। उच्च विचारों द्वारा ही हम समाज से अधम स्वार्थपरता, द्वेषभाव संकीर्णता को दूर कर मानव प्रेम का प्रादुर्भाव कर सकते हैं। सारा भार जो ऋषि समाज पर छोड़ कर चले गए अब हमारा कर्तव्य है कि सद्बुद्धि द्वारा उसे पूर्ण करने का व्रत लें और गुरुडम तथा वेद विरुद्ध मत-मतान्तरों से मानव की रक्षा करें। वेद प्रचार सत्य शिक्षा प्रसार, दलितोद्धार, विधवाओं तथा अनाथों का उपकार करके समाज से रूढ़िवाद, अज्ञान वैमनस्य को दूर करें और निम्न मन्त्र का अनुसरण करें—

स्वस्ति मित्रावरुणा
स्वस्ति पथ्ये रेवति।
स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च
स्वस्ति नो अदिते कृधि।

पता—एच 2 ए, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन
नई दिल्ली 16

आर्यजगत् के प्रकाश स्तम्भ महात्मा हंसराज

—हरिचन्द "स्नेही"—

मेरी नन्ही कलम मे इतनी शक्ति कहां जो उस आर्य जगत् के देदीप्यमान, त्यागी, तपस्वी, समाज सुधारक, निर्धनों अनाथों, विधवाओं तथा शोषित प्राणियों के सेवक, कर्मयोगी, कर्तव्यपरायण, अनुशासनप्रिय, सादगी तथा सौम्यता की मूर्ति, आर्य समाज के प्रकाश स्तम्भ और भारत माता के सच्चे सपूत के गुणों का वर्णन कर सके।

19 अप्रैल 1864 का शुभ दिन भारतीय इतिहास के स्वर्णिम पन्नों मे लिखा जाएगा जिस दिन होशियारपुर के बजवाड़ा कस्बे मे लाला चुन्नीलाल भल्ला की धर्मपत्नी गणेश देवी ने एक होनहार एवं तेजस्वी बालक हंसराज को अपनी पवित्र कोख से जन्म देकर भारत माता को एक सच्चा सपूत दिया।

हंसराज को महान बनाने मे उनके बड़े भाई मुलखराज का भी विशेष योगदान था जिसने पिता का अल्पायु मे सर पर साया न रहने पर भी इनकी शिक्षा मे कमी नहीं आने दी। यह होनहार बालक सन् 1885 मे बी०ए० की उपाधि से विभूषित हुआ। परिवार के सभी सदस्यों माता गणेश देवी, पत्नी ठाकुर देवी एवं भाई सभी के हृदय मे निर्धनता की बेड़ियों से छुटकारा पाने की आशा का संचार हुआ।

परमात्मा ने महान विभूति को इस संसार मे केवल ऐश्वर्य भोगने के लिए नहीं भेजा था। यह नवयुवक युग प्रवर्तक, राष्ट्र निर्माता महर्षि दयानन्द के सम्पर्क में आने से कुन्दन बन गया। उसका मन जाति की दुरावस्था तथा सामाजिक बुराइयों ने छलनी कर दिया। आर्थिक विषमताओं की बेड़ियों के बावजूद इस महान पुरुष ने 'सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते' की भावना को साकार करने हेतु अपना जीवन दान कर दिया। जून 1986 मे डी ए वी स्कूल की स्थापना से अवैतनिक मुख्याध्यापक का पदभार ग्रहण करने से ही अर्पित कर दिया। वे आदर्शों के प्रति इतने सजग थे कि अपने व्यक्तिगत कार्य के लिए विद्यालय की कलम, स्याही और कागज भी प्रयोग नहीं करते थे। क्या आज के युग मे ऐसी कल्पना की जा सकती है? उन्होंने प्रकाश स्तम्भ बन कर आधुनिक शिक्षा के साथ साथ राष्ट्रभक्ति, वैदिक धर्म एवं वैदिक संस्कृति को जग मे फैलाया, राष्ट्र की सम्पत्ति बैंकों मे नहीं बल्कि विद्यालयों मे ही सुरक्षित है। डी ए वी संस्था को उन्होंने अपनी सम्पूर्ण समर्पण भावना, अपने आदर्शों अपने चारित्रिक बल से सिंचित किया जिसकी शीतल छाया का आज हम आनन्द लेकर आत्म विभोर हो रहे हैं।

महान् पुरुषों के जन्म दिन एवं उनकी पुण्य तिथियां हमारे लिए शक्ति का संचार करने तथा उनके आदर्शों पर चलकर अपना जीवन उज्ज्वल और पवित्र बनाने के लिये प्रेरणा स्रोत होते हैं। परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह हमे इतनी शक्ति और साहस प्रदान करें ताकि हम भी महात्मा हंसराज के आदर्शों पर चल कर उनका नाम अमर रख सकें।

जरो लालो गुहर के
दफीने हैं यहां लाखों।
निकालो चीर कर सीना,
जमीं के इन खजानों को।।
कुछ ऐसे कारनामे छोड़
जाओ यादगार अपनी।
कि झूमें लोग सुन सुन
कर तुम्हारी दास्तानों को।।

उस युग प्रवर्तक तपोनिष्ठ कर्मवीर को मेरा कोटि प्रणाम।

पता—आर्यसमाज शान्ति नगर, सोनीपत
(हरियाणा) 131001

आर्यसमाज, किरण गार्डन की स्थापना

आर्य समाज किरण गार्डन नई दिल्ली की स्थापना इस वर्ष की गई इस समाज का उत्सव 10 अप्रैल को सम्पन्न हुआ इस अवसर पर आर्य महा-सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसके अध्यक्ष स्वामी आनन्द बोध सरस्वती थे।—अशोक कुमार सयोजक

318 ईसाइयों की शुद्धि

ग्राम गुड़बहाल थाना लैलूगा जि० रायगढ़ (म० प्र०) मे स्वामी सेवानन्द (महामन्त्री हिन्दू शुद्धि सरक्षणीय समिति हरियाणा) के पूर्ण सहयोग से यज्ञ आदि का आयोजन करके आदिवासी उरांव जाति के लोग जो इसाई बन गये थे उनकी शुद्धि कर पुन हिन्दू धर्म में दीक्षित किया गया, इस काय मे श्री मगल देव, श्री धर्नसिह, श्री करमदेव, श्री महिपत लाल, श्री मनोहरलाल, स्वामी शकरानन्द आदि ने सहयोग दिया।

आर्य समाज कुल्टो का उत्सव

आय समाज, केन्दुआ बाजार, कुल्टी का वार्षिकोत्सव 1, से 21 मार्च तक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर नगर कीतन महिला सम्मेलन व अन्य कार्यक्रम आयोजित किये गये।

—गगा दयाल आर्य मन्त्री

गाजियाबाद मे यज्ञोत्सव

शम्भूदयाल दयानन्द वैदिक सन्यास आश्रम महर्षि दयानन्द मार्ग, गाजियाबाद का 31 वा वार्षिक यज्ञ महोत्सव 12 से 17 अप्रैल 1988 तक आश्रम के प्रांगण में समारोह पूर्वक सम्पन्न होगा। जिसमें स्वामी ओमानन्द, स्वामी मुनीश्वरानन्द त्रिवेदतीथ, स्वामी यज्ञानन्द, स्वामी चन्द्रदेव एव प० सत्यानन्द वेदवागीश के वेदोपदेश तथा श्री सत्यदेव स्नातक आदि सगीतज्ञो के मनोहर भजन होगे।

यज्ञ के ब्रह्मा सन्तस्वभाव प० सत्यानन्द वेदवागीश (अलवर) होगे।

—स्वामी प्रेमानन्द सरस्वती

वैदिक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर

अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद ने 11 मई से 11 जून 88 तक तपोवन आश्रम देहरादून मे एक महीने का वैदिक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया है। जिसमे प्रतिभावान छात्र-छात्राओं, कालेज के प्राध्यापको, स्कूलो के अध्यापको तथा प्रतिभावान् व्यक्तियो को प्रभावोत्पादक शैली मे पौरोहित्य का प्रशिक्षण दिया जाएगा। पुरोहित प्रशिक्षण के सयोजक आचार्य वेदभूषण है। अन्य जानकारी हेतु अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान, 4 5-753 महर्षि दयानन्द मार्ग हैदराबाद-27 से सम्पर्क करें।

डा० रामनाथ वेदालकार की वानप्रस्थ दीक्षा

यशस्वी विद्वान् आचार्य रामनाथ वेदालकार ने 24 मार्च को वेदमन्दिर (गीता आश्रम), ज्वालापुर में विधिवत् वानप्रस्थ की दीक्षा ग्रहण की। इस अवसर पर आचाय प्रियव्रत वेदवाचस्पति, माता आनन्दा यति, आचार्य रामप्रसाद वेदालकार, प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री, आश्रम के उपप्रधान श्री जगदीश मुनि, श्री शिवपूजन सिंह कुशवाह आदि ने आचार्य जी की वेद सेवाओं का उल्लेख करते हुए उनके प्रति अपनी शुभकामनाए प्रकट की। अन्त में आचार्य जी ने अपना यह सकल्प व्यक्त किया कि भविष्य मे भी मेरे जीवन का व्रत वेद सेवा ही रहेगा।

डा० भारतीय का अभिनन्दन

वैदिक साहित्य की विशिष्ट पुस्तकों की रचना करने वाले आर्य विद्वान् को प्रति वर्ष आर्यसमाज फुलेरा की ओर से 1101 रुपये का महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार, उत्तरीय तथा प्रशस्ति पत्र अभिनन्दन स्वरूप प्रदान किया जाता है। इस वष 1988 के लिए डा० भवानी लाल भारतीय का नाम चयन किया है। यह पुरस्कार 105 वें निर्वाण दिवस पर श्रीमती परोपकारिणी सभा अजमेर के तत्वावधान मे आयोजित होने वाले ऋषि मेला 1988 के अवसर पर प्रदान किया जायेगा।

—आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना मे आय समाज स्थापना दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता आर्य समाज के प्रधान श्री नरेन्द्र सिंह जी भल्ला ने की।

विवाहोत्सव पर दान

आय समाज, पश्चिम विहार दिल्ली के कमठ कायकर्त्ता श्री हसराज निवासी ए-1/94 ने अपने पुत्र श्री बलराज सिंह के शुभ विवाह के उपरान्त अपने घर पर यज्ञ का आयोजन कर विभिन्न सस्थाओ को हजारो रुपये और वेद तथा गीता की पुस्तकें भेंट की।

आर्य समाज, शकूरबस्ती की गतिविधियां

आर्य समाज दयानन्द मार्ग (रेलवे रोड), मार्ग स० 43 शकूरबस्ती, दिल्ली मे 6 माच को प० लेखराम बलिदान दिवस समारोह के साथ मनाया गया। इसके अतिरिक्त इस वष समाज मन्दिर मे चार विवाह, पारिवारिक सत्सग, नागरिक जनसेवा काय, आदि हुए इस समाज मे निश्शुल्क औषधालय, वैदिक वाचनालय और समस्त सस्कार करवाने हेतु पुरोहित जी की सेवाए उपलब्ध हैं।—डा० भारत भूषण

—शिवानन्द नगर अहमदाबाद की स्थापना 13 माच को हुई जिसके श्री कमला प्रसाद आय प्रधान, श्रीमति चन्द्रिका बहन देसाई मन्त्री और श्री सुरेन्द्र नारायण चौबे सदस्य चुने गये।

"वेदार्थ कल्पद्रुम" के रचयिता का अभिनन्दन

आचाय सायण और महीधर कितने ही बड़े विद्वान क्यो न हो किन्तु अपने समय मे हिन्दू धम मे प्रविष्ट वाममार्गी प्रवृत्तियो से वे अवश्य प्रभावित थे। इसी कारण उन्होने अपने भाष्य मे यज्ञो मे पशु हिंसा का समथन किया और मद्यपान तथा द्यूत आदि दुगुणो की पुष्टि भी की। "गणाना त्वा गणपति" मन्त्र की ऐसी अश्लील व्याख्या की कि समस्त पाश्चात्य विद्वान उसका सहारा लेकर वैदिक धर्म को लाछित करने से भी नही चूकते।

उनके उत्तर मे महर्षि दयानन्द ने अपना अद्भुत ग्रन्थ 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका" लिखा जिसमें उन्होने सिद्ध किया कि वेद मे हिन्दू समाज में प्रचलित धार्मिक और सामाजिक कुरीतियो का वर्णन तो है ही नही, प्रत्युत उसमे ससार के समस्त ज्ञान विज्ञान का मूल रूप से वर्णन है।

स्वामी करपात्री जी ने 14 पौराणिक विद्वानो की सहायता से 'वेदार्थ पारिजात' नामक ढाई हजार पृष्ठो का विशाल ग्रन्थ लिखा जिसमे 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' और ऋषि दयानन्द के मन्तव्यो का खडन था। इस ग्रन्थ पर पौराणिको को बडा अभिमान था और और वे समझते थे कि आय विद्वान् इसका उत्तर देने की हिम्मत नहीं करेंगे।

परन्तु बदायू के आचाय विशुद्धानन्द मिश्र और उनकी विदुषी पत्नी आचार्या निमला देवी ने 'वेदार्थ पारिजात' के उत्तर मे 'वेदार्थ कल्पद्रुम' नामक ग्रन्थ लिखकर समस्त पौराणिक जगत के पडितो का ऐसा सप्रमाण, युक्तिवाद और विद्वत्तापूर्ण उत्तर दिया है कि पौराणिक पडित भी चकित रह गए। उत्तर प्रदेश की सस्कृत अकादमी ने भी आचाय जी को इस ग्रन्थ पर पुरस्कार देकर सम्मानित किया। वेदार्थ कल्पद्रुम का अभी एक खड सार्वदेशिक सभा की ओर से प्रकाशित है। द्वितीय खड प्रकाशनाधीन है।

3 अप्रैल को आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट की ओर से आर्य समाज नया बास मे आचार्य दम्पती का सुन्दर शाल, सस्कृत मे लिखित अभिनन्दन पत्र तथा 21000/ (इक्कीस हजार) रु० की नकद राशि देकर भावभीना स्वागत किया गया। अनेक आय विद्वानो ने आचाय जी के पाडित्य और गीर्वाणवाणी मे गद्य पद्य रचना के नैपुण्य की प्रशसा की।

उसी अवसर पर वयोवृद्ध भजनोपदेशक श्री प० आशानन्द जी ने आय समाज रोहताश नगर (शाहदरा) को वेद प्रचार तथा यज्ञ विस्तार के लिये रु० 50000/ [पचास हजार] की राशि भेंट की।

आचार्य विशुद्धानन्द दम्पती का अभिनन्दन

आचाय विशुद्धानन्द और आचार्या निमला देवी का 3 अप्रैल को आय समाज नयाबांस के वार्षिकोत्सव के अवसर पर आय साहित्य प्रचार ट्रस्ट की ओर से अभिनन्दन पत्र और 21 हजार रु० की राशि सम्मानार्थ भेंट की गई।

योग्य वर चाहिए

उम्र 24 वष, कद 5 फुट 1 इन्च, रग गेहुआ, शिक्षा एम०ए० फाइनल, आयुर्वेदरत्न गृह काय मे दक्ष कन्या के लिए योग्य, आय समाजी, सरकारी सर्विस वाला शाकाहारी ब्राह्मण वर चाहिए। सनातन धर्म के युवक आवेदन न करें।

—सम्पर्क सूत्र डा० दयाकिशन शर्मा C/o अन्तर जातीय विवाह केन्द्र, आय समाज मन्दिर, मार्ग नई दिल्ली।

(P)

उद्धरेदात्मनात्मानम्

महात्मा हंसराज के पद चिन्हों पर
चलने के लिए कटिबद्ध

डी ए वी पब्लिक स्कूल
मनाली, (कुल्लू)

रविन्दर सेखो
प्राचार्य

ज्ञानाग्निदग्धकर्माण तमाहु पंडित बुधा

शुभ कामनाओ सहित

मेहरचन्द पौलिटैकनिक, जालन्धर

(डी ए वी प्रबन्ध समिति द्वारा पंजाब मे
संचालित एकमात्र पोलिटैकनिक)

बी एल हाण्डू
प्राचार्य

'ज्ञान लब्ध्वा परा शान्तिमचिरेणाधिगच्छति'

शुभ कामनाओ सहित

डी ए वी कालेज औफ एजुकेशन
फौर वुमैन
करनाल

राज के ग्रोवर
प्राचार्या

उदात्ताना कर्मतंत्र दैव क्लीबा उपासते

शुभ कामनाओं सहित

डी ए वी सेन्टिनरी पब्लिक स्कूल
(अंग्रेजी माध्यम)
रेलवे रोड, करनाल

श्रीमती राज के. ग्रोवर
प्राचार्या

यो वै युवाप्यधीयानस्त देवा स्थविरं विदु

डी ए वी कालेज, पिहोवा

के

स्थानीय समिति के सदस्य

प्राचार्य, अध्यापक गण
तथा छात्राओ की
शुभ कामनाओ सहित

वी. के. चावला
प्राचार्य

वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम

शुभ कामनाओ सहित

डी ए वी पब्लिक स्कूल

(प्रमुख शिक्षा संस्था)

पटियाला

(श्रीमती) पी. लाल
प्राचार्या

स्वाध्याय योग संपत्त्या परमात्मा प्रकाशते

शुभ कामनाओं सहित

डी ए वी पब्लिक स्कूल
विकासपुरी/जनकपुरी
नई दिल्ली

(श्रीमती) चित्रा नाकरा
प्राचार्या

त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्

देशराज वढेरा
डी ए वी पब्लिक सेन्टिनरी स्कूल
फिल्लौर, जालन्धर

के

प्राचार्य, अध्यापकगण एव छात्रो की

शुभ कामनायें

एम. एल. ऐरी
प्राचार्या

हरिद्वार में दयानन्द स्मारक स्तम्भ

वैदिक मोहन आश्रम के जिस ऐतिहासिक स्थान पर स्वामी दयान्द ने 1866 से पाखण्ड खण्डनी पताका लहराई थी, उसी स्थान पर ऋषि की आयु के आधार 59 फुट ऊचे संगमरमर के स्मारक स्तम्भ का निर्माण कार्य आरम्भ हो गया है। आधुनिक कला का प्रतीक यह स्मारक हरिद्वार मे दूर दूर से दिखाई देगा जिसके षट्कोणी चबूतरे पर फव्वारे होंगे तथा वेद मन्त्र, सत्यार्थ प्रकाश के उद्धरण और स्वामी जी के जीवन की कुछ प्रमुख घटनाए भी अंकित होंगी। इसका नक्शा तथा डिजाइन रुड़की के प्रमुख आर्कीटेक्ट श्री विजयजवानी (स्वर्ण पदक प्राप्त) ने बनाया है।

नव संवत्सर एव आर्य समाज स्थापना दिवस पर महात्मा आर्य भिक्षु जी द्वारा यज्ञ के पश्चात् स्तम्भ निर्माण का कार्य आरम्भ हो गया है।

स्मारक पर लगभग 10 लाख रु० व्यय का अनुमान है और छः मास के भीतर इसके बन जाने की आशा है। इस कार्य के लिये किसी आर्य इन्जीनियर या योग्य व्यक्ति की तुरन्त आवश्यकता है जो डिजाइन तथा नक्शे अनुसार स्थल पर देख रेख कर सके। जो महानुभाव इसमे श्रम दान अथवा आर्थिक योग दान देना चाहें, अथवा अपनी, आर्य समाज तथा किसी संस्था की ओर इस ऐतिहासिक स्मारक पर कोई शिलालेख लगवाना चाहें वे मन्त्री वैदिक मोहन आश्रम भूपतवाला हरिद्वार 249410 से सम्पर्क करे। —बी० आर० खन्ना मैनेजर आश्रम

डी ए वी सेंटिनरी पब्लिक स्कूल, पानीपत

वार्षिक समारोह में श्री दरबारी लाल समारोह के अध्यक्ष श्री ओ० पी० सिंगला का स्वागत कर रहे हैं।

सोहन लाल डी ए वी कालिज आफ एजुकेशन

चतुर्थ दीक्षान्त समारोह में राष्ट्रीय शिक्षा परिषद के शिक्षक प्रशिक्षण विभागाध्यक्ष श्री ए० के० शर्मा नव स्नातकों को सम्बोधित कर रहे हैं।

डी ए वी पब्लिक स्कूल सोनीपत

हरियाणा के उद्योगमंत्री का स्वागत करते हुए प्रा० वेदव्यास तथा प्रि० मदनमोहन कटयाल

धर्म शिक्षा के लिए अध्यापक

धर्म शिक्षा तथा वैदिक हवन आदि सिखाने के लिए एक अनुभवी गुरुकुल स्नातक (पुरुष) की आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार।

विज्ञापन के एक सप्ताह तक अधोलिखित हस्ताक्षरी को आवेदन करें।

मैनेजर
आर्य शिशु शिक्षालय,
(हरियाणा) हांसी

आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह

मावलंकर हाल दिल्ली में मनाए गए आर्य समाज स्थापना दिवस पर स्वामी अग्निवेश भाषण दे रहे हैं। मंच पर विराजमान हैं श्री रामचन्द्र विकल, स्वामी रामेश्वरानन्द जी, डा० प्रशान्त कुमार, श्रीमती शकुन्तला आर्य तथा अन्य

राष्ट्रीय विकल्प और जनसंघ

भारत की राजनैतिक स्थिति दिनोदिन बिगड़ रही है। सत्तारूढ़ दल जनादेश के द्वारा सत्ता में बने रहने का अधिकार खो चुका है। गत तीन वर्षों के चुनाव और हाल के चुनावों में यह स्पष्ट हो गया है। इस स्थिति को बदलने के लिये जिस राष्ट्रीय विकल्प की आवश्यकता है वह इस समय नहीं है। जनता पार्टी, लोक दल, मोर्चा में पुराने कांग्रेसी ही भरे पड़े हैं उनकी राजनैतिक संस्कृति और वैचारिक भूमिका वही है जो कांग्रेस की है। इसलिये यदि वे इकट्ठे होकर 1977 की जनता पार्टी की तरह कोई विकल्प बना भी लें तो वह केवल चेहरों का परिवर्तन मात्र होगा।

भारतीय जनसंघ में राष्ट्रीय विकल्प बनने की क्षमता थी। उसके पास वैकल्पिक, विचारधारा और नीतियां भी थीं। जिन्होंने कांग्रेस और कम्युनिस्टों के हाथ में खेलकर जनसंघ का अन्दर से घात किया वे केवल जनसंघ के ही नहीं राष्ट्र के भी शत्रु सिद्ध हुए और वे ही लोग अब भारतीय जनता पार्टी में हैं। भारतीय जनता पार्टी जनसंघ नहीं है। किसी पार्टी की पहचान उसके नाम, झण्डे, विचारधारा और प्रेरणा स्रोतों से होती है। उनमें जनता पार्टी का नाम, झण्डा, विचार धारा और प्रेरणास्रोत अपनाये हैं अतः वह जनता पार्टी की शाखा मात्र है। परन्तु हिन्दुओं को धोखा देने के लिये वह अपने आपको जनसंघ की प्रतिनिधि कहती है। किन्तु अब लोग भाजपा के दोगलेपन को और जनसंघ की प्रासंगिकता को समझने लगे हैं। भारतीय जनसंघ राष्ट्रीय विकल्प का केन्द्र बिन्दु बन सकता है। इसके लिये आवश्यक है कि सब दलों में बिखरे हुए पुराने जनसंघी और अन्य समान विचार वाले लोग आपस के छोटे मोटे पूर्वाग्रहों को भुलाकर एक जुट होने के लिये प्रयत्नशील हों।—बलराज मधोक

आर्यसमाज क्या मानता है ?

आर्यसमाजों के उत्सवों पर तथा सर्व साधारण जनता में वितरण के लिए उक्त पुस्तिका निःशुल्क भेजी जाती है। पुस्तिका के लेखक हैं कविराज हरनामदास आप जितनी प्रतियां चाहें, मंगा सकते हैं।

—सुखदाता फार्मेसी, चांदनी चौक दिल्ली 6

वेद रहस्य

आर्य समाज स्थापना के उपलक्ष्य में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी का उपहार ग्रन्थ 'वेद रहस्य' जो 416 पृष्ठ का प्लास्टिक कवर वाला है प्रचारार्थ मात्र सत्तरह 17/ में भेजना निश्चित किया गया है वेद प्रेमी अवसर का लाभ उठावें।

लेखक एवं प्रकाशक—रामसिंह आर्य 17 गांधी नगर, अजमेर।

पुरोहित एवं कार्यालय अध्यक्ष की आवश्यकता

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना को एक सुयोग्य पुरोहित एवं कार्यालय अध्यक्ष की आवश्यकता है जो वैदिक रीति से संस्कार यज्ञ तथा प्रवचन कर सके एवं कार्यालय का कार्य स्वतन्त्र रूप से चला सके हिन्दी टाईप जानने वाले को वरीयता दी जाएगी। इच्छुक व्यक्ति मन्त्री से सम्पर्क करें।

नरिन्द्र सिंह मन्त्री ...।

[फ० 105/81 आयकर दृ० पोस्ट विवाद अवम्ब
रजिस्ट्रेशन न० आर० एन० आई० 39/57
Delhi Postal Regd. No D (C) 409

शंकराचार्य को गिरफ्तार करने की मांग

शास्त्रार्थ नहीं हो सका पर शंकराचार्य के ढोल की पोल तो खुल गई

(हमारे विशेष सवाददाता द्वारा)

जगन्नाथपुरी के शकराचार्य श्री निरजन देव तीर्थ द्वारा सती प्रथा को वेदविहित सिद्ध करने की चुनौती देने पर स्वामी अग्निवेश के नेतृत्व मे आर्य वीरो ने 31 मार्च से दिल्ली से पद यात्रा प्रारम्भ की थी। वह पद यात्रा पुलिस द्वारा 144 धारा लगा दिये जाने के कारण पुरा महादेव नही पहुच पाई। पहले स्वामी अग्निवेश ने शकराचार्य से दिल्ली के रामलीला मैदान मे शास्त्रार्थ करने को कहा था पर शकराचार्य मेरठ के निकट पुरा महादेव गाव मे ही शास्त्रार्थ करने की जिद पर अडे रहे तब पद यात्रा करते हुए पुरा महादेव मे ही शास्त्रार्थ करने के लिए यह टोली दिल्ली से रवाना हुई थी। बीच के गावो मे जन जागरण करते हुए सती प्रथा के विरुद्ध आन्दोलन करते हुए जब यह टोली पुरा महादेव से केवल चार मील की दूरी पर रह गई तब पुलिस ने उस सारे इलाके मे धारा 144 लगाकर पद यात्रियो को पुरा महादेव जाने से रोक दिया। तब तक आर्य जनता की भारी भीड पदयात्रियो के साथ शामिल हो गई थी। अनेक आर्य विद्वान और सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती भी घटनास्थल पर पहुच गये थे। जब आर्य बन्दओ ने धारा 144 को तोडकर पुरा महादेव की ओर बढ़ने का प्रयत्न किया तो पुलिस ने सबको गिरफ्तार कर लिया और दिल्ली की सीमा पर छोड दिया।

इस प्रकार यह शास्त्रार्थ तो टल गया, परन्तु प्रतिदिन शकराचार्य जिस तरह पैतरा बदलते रहे उससे देशवासियो के सामने उनके ढोल की पोल खुल गई। पहले तो वे यह कहते रहे कि जब तक स्वामी अग्निवेश उच्च न्यायालय से अपनी याचिका वापस नही लेगे तब तक उनसे शास्त्रार्थ नही करुगा। परन्तु उसके बाद स्वय अपने धर्मसघ के अधिकारियो की ओर से उच्चतम न्यायालय मे याचिका दायर की कि इस पदयात्रा टोली को पुरा महादेव न पहुचने दिया जाये। फिर अगले दिन शकराचार्य ने कहा कि भले ही सरकार मुझे गिरफ्तार कर ले, परन्तु मैं सती प्रथा का समर्थन करना नही छोड़ूगा फिर उसके बाद उन्होने यह भी बयान किया कि मै सती प्रथा का समर्थन नहीं करुगा, क्योकि इससे सरकारी कानून का उल्लघन होता है। फिर तीसरे दिन यह कहा कि मैं शास्त्रार्थ केवल सस्कृत भाषा मे करूगा क्या इसलिए कि सस्कृत से अनभिज्ञ आम जनता के सामने उनकी अनुचित हरकत उजागर न हो सके) फिर एक दिन यह स्पष्टीकरण भी किया कि विधवा दहन के तो हम भी विरोधी है, हम तो केवल सतीत्व अर्थात् पतिव्रत के महत्त्व का धर्म का अग सिद्ध करना चाहते हैं। परन्तु जब उनसे पूछा गया कि यदि आप पति के मर जाने पर पत्नी के जल मरने का समर्थन करते है तो क्या पत्नी के मर जाने पर पति के जल मरने का भी समर्थन करेगे तब वे बगलें झाकने लगे।

इस प्रकार बारम्बार पैतरा बदलते रहने से जनता के सामने यह बात स्पष्ट हो गई कि शकराचार्य शास्त्रार्थ करना नही चाहते परन्तु अपने दम्भ से बाज भी नहीं आते और किसी न किसी बहाने जनता के अधविश्वासो को भुनाकर ही अपनी गद्दी सुरक्षित रखना चाहते हैं।

इस सारी परिस्थिति से खिन्न होकर अनेक सासदो ने लोकसभा में सरकार से माग की है कि सरकार को शकराचार्य को गिरफ्तार करना चाहिए क्योकि बार बार जहा वे सरकारी कानून का उल्लघन कर रहे हैं वहा उच्चतम न्यायालय के आदेश की भी अवहेलना कर रहे हैं। परन्तु हमारी सरकार भी कभी विचित्र है कि बजाय शकराचार्य के वह गिरफ्तार करती है स्वामी अग्निवेश को और उनके साथियो को। इसका अर्थ यह है कि अपने कानूनो का पालन करवाने की हिम्मत सरकार मे नहीं और वह किसी न किसी तरह यथास्थिति कायम रखना चाहती है।

अब जन जागरण और नारी जागरण के अभियान को और तेज करना ही बाकी रह जाता है। आखिर हर चीज का अन्तिम फैसला तो राज दरबार मे नही, बल्कि जनता के दरबार मे ही होता है।

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया के लिए

अपील

इस सस्था को सुचारु रूप से चलते हुए 25 वर्ष हो चुके हैं। यहा इस समय 50 कन्यायें वेद की शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। गुरुकुल महर्षि दयानन्द विश्व-विद्यालय रोहतक से सबद्ध है तथा यहा निशुल्क शिक्षा दी जाती है। यहा की जलवायु स्वास्थ्यप्रद एव वातावरण अत्यन्त शान्त है। गुरुकुल का समस्त कार्य दानी महानुभावो की सहायता से चल रहा है। इस समय गुरुकुल मे 12 आवश्यक करणीय कार्य हैं। इन सभी कार्यों की पूर्ति हेतु साढे आठ लाख रुपयो की आवश्यकता है। अत सभी दानदाताओ से विनम्र निवेदन है कि सारे कामो को सुचारु रूप मे करने के लिए अपना आर्थिक सहयोग अवश्य भेजें। यह राशि क्रास चैक, क्रास बैंक ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर से आचार्या आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया जिला अलवर के नाम से या महामत्री श्री रामनाथ सहगल कार्यालय आर्यसमाज मन्दिर, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली 110001 के पत्ते पर भेज सकते हैं।

—प्रेमलता आचार्या

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया छब्बीसवां महोत्सव

कन्या गुरुकुल दाधिया का छब्बीसवा महोत्सव 14 15 मई, 1988 को बडी धूमधाम से मनाया जा रहा है। आप इस पवित्र अवसर की शोभा बढावें। इस शुभ अवसर पर प्रसिद्ध सन्यासी, विद्वान, एव भजनोपदेशक, ओमानन्द जी सरस्वती कुलपति कन्या गुरुकुल नरेला, अन्य वक्तागण राजनैतिक नेता एव अधिकारीगण पधार रहे हैं। 8 मई रविवार से चतुर्वेद पारायण महायज्ञ प्रारम्भ होगा। यज्ञ की पूर्णाहुति 15 मई रविवार को प्रात 9 बजे होगी। उत्सव पर निवास तथा भोजन का प्रबन्ध गुरुकुल की ओर से किया जायेगा। पांचवी कक्षा उत्तीर्ण कन्याओ का प्रवेश भी होगा 501 रु० या अधिक दानी के नाम का पत्थर लगाया जायेगा।

—प्रेमलता, आचार्या

रानीबाग मे शहीद दिवस

आर्यसमाज ने सदव ही क्रान्तिकारी को जन्म दिया है, उन्ही के बलिदान स्वरूप हमारा राष्ट्र आज स्वतन्त्र है। युवको को उन शहीदो से प्रेरणा लेकर राष्ट्र की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। उद्गार सासद श्री रामचन्द्र विकल ने केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् सुभाष शाखा के तत्वावधान मे आर्यसमाज रानीबाग मे आयोजित 'शहीद दिवस के अवसर पर कहे। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के महामत्री डा० शिवकुमार शास्त्री ने कहा कि शान्ति क्राति मे ही निहित है।

अध्यक्षीय भाषण मे प्रान्तीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य ने कहा कि शहीदो को हम श्रद्धाजलि दे सकेंगे यदि उनके जीवन से प्रेरणा लेकर राष्ट्र की एकता के लिए व कुरीतियो को दूर करने मे योग दान दे सकें। आर्य विद्या मन्दिर के प्रधान श्री ओमप्रकाश गुप्ता मुख्य अतिथि ने सक्रिय कार्यकर्ताओ को पुरस्कार वितरण किया व अपनी शुभकामनाय दी। समाज के प्रधान श्री ओमप्रकाश मन चन्दा व शाखा सरक्षक श्री प्रभुदयाल भाटिया ने युवको को पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। श्री विजय भूषण सागर जी, बब्बर जी आदि के प्रेरणाप्रद गीत हुए। श्री विमल दुबे व अनिल शर्मा ने सचालन किया। श्री दुर्गेश आर्य व वीरेन्द्र आर्य ने सभी का आभार व्यक्त किया।

—धर्मपाल आर्य मत्री

बाल समन्द का उत्सव

25 26 27 मार्च को आर्य समाज बाल समन्द का वार्षिकोत्सव उल्लास के वातावरण मे सम्पन्न हुआ। जिसमे प० सत्यप्रिय, प्रो० ओम कुमार आर्य, प्रो० राम विचार, आनन्द मुनि वानप्रस्थी एव श्री आर अतर सिह आर्य क्रान्तिकारी आदि ने राष्ट्र रक्षा गौरक्षा, नारी शिक्षा आर्यों का इतिहास आर्य समाज क्या चाहता है। तथा शराबबन्दी आदि विषयो पर अपने विचार रखें।

—आर्य समाज, नगरा झांसी के चुनाव मे श्री हरि सिह यादव प्रधान, श्री आर के सिह मत्री और श्री बृजेन्द्र पाल सिह कोषाध्यक्ष चुने गये।

हावड़ा आर्य समाज

आर्य समाज हावडा का वार्षिक उत्सव 24 से 28 फरवरी तक सम्पन्न हुआ। इस उत्सव मे स्वामी जगदीश्वरानन्द, दिनेश कुमार, महेश कुमार आदि के उपदेश और भजन हुए इस अवसर पर वेद गोष्ठी, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन आदि का आयोजन हुआ।

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाड़ी धीरज (फोन 527335) दिल्ली से छपवाकर कार्यालय आर्य जगत् मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 (फोन 343718)

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य जगत्
साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य —30 रुपये विदेश मे 65 पौ० या 125 डालर वर्ष 51, अक 18 रविवार 1 मई, 1988 दूरभाष। 343718
आजीवन सदस्य-251 रु० इस अक का मूल्य— 75 पैसे सृष्टि सवत् 1972949089, दयानन्दाब्द 163 वैशाख शु०-15 2045 वि

आर्य समाज ने सदा जोड़ने का कार्य किया है, तोड़ने का नहीं
चुनौतियों का सामना आज भी आर्यसमाज ही कर सकता है

आर्य समाज ने सदा देश और समाज को जोडने का काम किया है, तोडने का कभी नहीं, वह साम्प्रदायिक सकीर्णता और परस्पर द्वेष से रहित है। भारत की आजादी के लिये और देश की अखडता के लिए तथा शिक्षा जगत् और सामाजिक क्षेत्र मे जिन सस्थाओ ने सब से अधिक बढ़ चढ़ कर भाग लिया है उनमे आर्य समाज अग्रणी है। उसी आर्य समाज की एक प्रबल धारा डी ए वी आन्दोलन है। शिक्षा के क्षेत्र मे इस आन्दोलन ने जो कार्य किया है वह स्वर्णाक्षरो मे लिखने योग्य है। महात्मा हसराज जी ने अपने जीवन मे त्याग और तपस्या का उदाहरण उपस्थित कर देश की नई पीढ़ी को राष्ट्र भक्ति और नैतिकता के साचे मे ढाला है। डी ए वी आन्दोलन के अभाव मे मेरे जैसे लाखो लोग अनपढ ही रह जाते। मैं तो जो भी कुछ हू वह डी ए वी सस्थाओ की ही देन है—ये शब्द 17 अप्रैल, 1988 को तालकटोरा गार्डन के विशाल सभागार में सूचना एव प्रसारण मन्त्री श्री हरिकृष्ण लाल भगत ने महात्मा हसराज दिवस के अवसर पर कहे।

"भारत के सामने आजादी प्राप्त करने से पहले और उसके बाद जितनी चुनौतिया आई हैं उनका सामना जिस उत्साह के साथ आर्य समाज और उसके सेवको ने किया उसकी तुलना नही है। वर्तमान चुनौतियो का सामना भी आर्य समाज ही सफलता के साथ कर सकता है। डी ए वी आन्दोलन के माध्यम से महात्मा हसराज जो त्याग और तपस्या का उदाहरण हमारे सामने रख गये है वह आज भी हमारे लिये उतना ही प्रेरणादायक है"—ये शब्द उपस्थित जन समुदाय को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि के रूप मे रक्षा मन्त्री श्री कृष्ण चन्द्र पन्त ने कहे।

समारोह की अध्यक्षता श्री स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती ने की। उन्होने अपने भाषण में कहा—हर एक युग की अपनी अलग अलग चुनौतियां होती हैं। इन चुनौतियों का सामना करने में जो व्यक्ति और आन्दोलन जितने अधिक समर्थ होते हैं वे उतने ही अधिक चिर-जीवी होते हैं। मुझे विश्वास है कि

श्री कृष्ण चन्द्र पन्त

डी ए वी आन्दोलन ने जिस प्रकार अतीत और वर्तमान काल की चुनौतियो का सामना किया है उसी प्रकार भविष्य की चुनौतिया का भी वह सामना कर सकेगा। आधुनिक विज्ञान जो नये रास्ते और नई समस्यायें हमारे सामने उपस्थित कर रहा है उसको हमारे छात्र सही रूप से समझ कर उनका हल निकाल सकेंगे, ऐसा मुझे विश्वास है।"

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एव डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के प्रधान प्रो० वेद व्यास जी ने कहा कि एक बार अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय के सस्थापक सर सैयद अहमद ने लाहौर मे आकर कहा था कि 'मेरे पास भूमि है धन है, छात्र और अध्यापक भी है, परन्तु हसराज जैसा व्यक्तित्व नही है इसका मुझे खेद है।" उन्होने कहा कि पजाब विधान सभा के अध्यक्ष सर शाहबुद्दीन ने सन् 1938 मे महात्मा हसराज के निधन पर कहा था कि 'जब मेरे पिता की मृत्यु हुई तो मैं अनाथ नही हुआ था, परन्तु आज महात्मा जी के निधन पर मैं अपने आपको एक दम अनाथ अनुभव करता हू।" उस समय के मुख्य मत्री सर सिकन्दर हयात खा ने महात्मा जी के शोक मे पजाब विधान सभा का अधिवेशन स्थगित कर दिया था। श्री लक्ष्मी मल सिंघवी ने भी महात्मा हसराज जी के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धाजलि प्रकट की।

श्री हरिकृष्ण लाल भगत

हिसार के दयानन्द कालज के प्रिंसिपल श्री सवदानन्द आर्य ने महात्मा हसराज जी के जीवन के कई अछूते प्रसग सुनाते हुए कहा कि उनका लगाया हुआ छोटा सा पौधा आज विशाल वट-

(शेष पृष्ठ 10 पर)

'आर्य जगत्' विशेषॉक का विमोचन

'आर्य जगत' का महात्मा हसराज विशेषांक का विमोचन करते हुए श्री कृष्णचन्द्र पन्त रक्षामत्री साथ मे खडे हैं बाये से 'आर्य जगत्' के सम्पादक क्षितीश वेदालकार, प्रो० वेदव्यास एडवोकेट, श्री रामनाथ सहगल और श्री दरबारी लाल।

आओ सत्संग में चलें

(17 अप्रैल के अंक से आगे)

अद्भुत वैदिक यज्ञ विधि [12]

स्विष्टकृत् आहुति का अर्थ

— आचार्य वेद भूषण —

बृहद् यज्ञ का शुभारम्भ स्विष्टकृत् मंत्र से होता है। इसे प्रायश्चित्ताहुति भी कहते हैं। प्रश्न उठता है कि—इसे स्विष्टकृत् मन्त्र क्यों कहते हैं। स्विष्ट कृत् शब्द तीन शब्दों के मेल से बनता है—सु+इष्ट+कृत्=स्विष्ट कृत्। सु अर्थात् अच्छा, इष्ट अर्थात् प्रिय जो हमे लगता है उसे स्विष्ट कहते हैं। संसार में सब मधुर खानपान तथा मधुर व्यवहार प्रिय होता है।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है और यज्ञ एक सामूहिक कर्म है या सामाजिक धर्म है। सन्ध्या व्यक्तिगत धर्म है या व्यष्टि धर्म है। उसका मुख्य उद्देश्य मनुष्य की अपनी शारीरिक मानसिक और आत्मिक उन्नति मात्र है। पर यज्ञ तो एक समाजवादी योजना या सहकारिता पर आधारित समष्टि धर्म है। संगतिकरण से यही भाव प्रकट होते हैं कि हम अपने लिए ही न जिएँ, बल्कि औरों के लिए जिएँ। सामूहिक विकास और उन्नति के लिए संगति करण एक अनिवार्य प्रक्रिया है।

जब व्यष्टि से समष्टि की ओर मनुष्य उन्मुख होता है तो सबसे पहली बात है परस्पर स्विष्टाचार अर्थात् मधुर व्यवहार।

आर्यों की पहिचान का यही प्रथम सूत्र है कि वह मिष्ट भाषी हो। "जिह्वा मे मधुमती वाच वदतु भद्रया"—मेरी वाणी शहद के समान मधुमती होवे। इसीलिए सन्ध्या में उन्नति के विधान में सर्वप्रथम ओम् वाक् वाक् कहा गया है। आर्य परिवार में शिशु के जन्म लेते ही उसकी जिह्वा पर स्वर्ण शलाका से शहद द्वारा ओम् लिखने का जो विधान है उसके पीछे भी यही भावना अन्तर्निहित है। इतना ही नहीं जब बालक का उपनयन किया जाता है तब भी यज्ञ मण्डप में बालक को मिष्टान्न खिलाया जाता है। विवाह से पूर्व जब वधू के घर विवाह संस्कार के लिए वर आता है उस समय वधू वर का मधु पर्क से ही सत्कार करती है। उस समय भी वर परमात्मा से मधुमय वातावरण में रहने की प्रार्थना करता है।

वानप्रस्थाश्रम में तो उसे एकान्त साधना करनी होती है। समाज से दूर एकान्त में वृक्ष के मूल में वह योगाभ्यास का आरम्भ करता है। योगाभ्यास की पहली शिक्षा अहिंसा ही है कि वाणी से भी किसी का हृदय न दुखाए। फिर सन्यासाश्रम के समय सन्यास में भी सन्यासी का मधु पर्क कराया जाता है इसीलिए कि—सन्यासी भी कटु सम्भाषण न करे।

यह कितना प्यारा और मंगलमय विधान है। वास्तव में मरणोपरान्त स्वर्ग और नरक की कल्पना भूलोक से हटकर अन्यत्र कहीं नहीं होती। इस धरती पर रहते हुए जिन परिवारों में परस्पर मधुर सम्भाषण होता है, वहीं स्वर्ग है चाहे परिवार के लोग पर्णकुटी में ही क्यों न रहते हैं। इसके विपरीत लोग बड़ी-बड़ी अट्टालिकाओं में या राज भवनों में ही क्यों न रहते हों, यदि वहां परस्पर मधुर वाणी से भाषण नहीं होता, उस घर को ही नरक धाम जानना चाहिए।

स्विष्टकृत् मन्त्र समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाला मन्त्र माना जाता है। यह बात सुनने में अटपटी लगती है कि—मन्त्र से समस्त कामनाएँ पूर्ण होती हैं। पर विचार करने पर यह बात सत्य प्रतीत होती है। किसी भी कार्य का आरम्भ विचार से ही होता है। पहले विचार फिर कर्म होता है। विचार का ही नाम मन्त्र है। कार्य की सफलता के लिए जो विचार मन्त्र में दिया जा रहा है तदनुसार आचरण करने से कामना पूर्ण होती है यह बात सत्य है।

संसार में प्रचलित पारस्परिक व्यवहार रूपी कर्म में 'मधुर भाषण' समस्त कामनाओं को पूर्ण कर देता है।

शिष्य का व्यवहार गुरु के प्रति मधुर होगा तो गुरु उसको अत्यन्त आत्मीयता से शिक्षा का दान देगा। शिष्य की कामना पूर्ण हो जाएगी। उसे उत्तम ज्ञान की प्राप्ति हो जाएगी। दुकानदार मधुर भाषी होगा तो ग्राहकों की संख्या बढ़ जाएगी। धन की प्राप्ति होगी। चुनाव में खड़े होने वाले उम्मीदवार का अतीत मधुर व्यवहार से युक्त रहा होगा तो वह अवश्य विजयी होगा। जो संसद सदस्य मधुर-भाषी होगा वह अवश्य ही किसी दिन मन्त्री पद प्राप्त कर सकता है। इस रहस्य को जानकर आचरण करने वाले की मनोकामना पूर्ण होने में इन्च मात्र भी सन्देह नहीं।

संस्कृत के 'स्विष्ट' शब्द से ही अंग्रेजी का 'स्वीट' शब्द बना है। इस मन्त्र से घृत और भात की आहुति दी जाती है। इसका रहस्य भी जान लेना चाहिए कि ऐसा क्यों है।

स्विष्ट शब्द का अर्थ स्वीट या मीठा है। जिस प्रकार से धातुओं में सोना सर्वश्रेष्ठ माना जाता है वैसे ही समस्त अन्नों में चावल श्रेष्ठ माना जाता है। चावल में मिठास भी अधिक होती है। इसीलिए मधुमेह अथवा शुगर के रोगी के लिए चावल निषिद्ध है। चावल अर्थात् पके हुए भात की आहुति सब अन्नों के प्रतिनिधि के रूप में दी जाती है। समस्त वातावरण में माधुर्य, की लोक मंगल की कामना से यह यज्ञ किया जा रहा है। हम जो कुछ दैनिक यज्ञ करते हैं स्वाभाविक रूप से उसमें न्यूनाधिकता हो ही जाती है। कभी परिवार में सदस्यों की संख्या सगे सम्बन्धियों के आने से बढ़ जाती है। कभी स्वजनों के अन्यत्र जाने से संख्या घट जाती है। इस कारण प्रदूषित वातावरण के अनुपात में आहुतिओं के परिमाण का घटना बढ़ना स्वाभाविक है। इस न्यूनाधिकता की पूर्ति के लिए उससे प्रायश्चित स्वरूप यह बृहद्यज्ञ आयोजित कर दिया गया। जिससे प्राणी मात्र का मंगल हो, वातावरण मधुरिमा से युक्त रहे। निरन्तर परिश्रम व पुरुषार्थ से सबकी कामनाएँ पूर्ण हों।

इस मन्त्र को बृहद् यज्ञ के आरम्भ में क्यों पढ़ें, इसे अन्त में पढ़ना व्यावहारिक होगा—आदि अनेक अनावश्यक प्रश्न उठाए जाते हैं। इस प्रकार की शंकाएँ तब उत्पन्न होती हैं जब इस मन्त्र के अभिप्राय को ठीक-ठीक नहीं समझा जाता। ऐसी स्थिति में शंकाओं का उठना स्वाभाविक ही है।

सामान्य भूतकाल के क्रियापद 'अकरम्' का प्रयोग ही स्वयं हमारे इस पक्ष का समर्थन करता है कि प्रतिदिन किए जाने वाले बीते यज्ञों के संदर्भ में ही यह कहा जा रहा है न कि वर्तमान यज्ञ के सन्दर्भ में नित्य दैनिक यज्ञों में जो न्यूनाधिकता हो जाती है उसके प्रायश्चित रूप में उसकी पूर्ति हेतु ही इन बृहद् यज्ञों का आयोजन होता है। इसीलिए इस बृहद् यज्ञ के एक दम आरम्भ में प्रथम क्रम पर ही उक्त मंत्र रखा गया है। यह मन्त्र इस प्रकार है—

'ओम् यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत् स्विष्टकृद्विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये स्विष्टकृते सुहुत हुते सर्व प्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्धय स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते इदं न मम।' (आश्वलायन गृह्य सूत्र)

यह अज्ञात किसी ऋषि का वचन है जो आश्वलायन गृह्य सूत्र में उपलब्ध होता है। यह वेदमन्त्र नहीं है। कर्म-काण्ड में अर्थात् यजुर्वेद में क्रिया के साथ पद व्यवस्था मानी जाती। उसी दृष्टि से इसमें पूर्ण विराम जानें। किंतु पूर्ण मंत्र के शब्दों की उचित संगति इस प्रकार अधिक उचित प्रतीत होती है।

इह अकरम् अग्नि कर्मण यत् अरीरिच यत् वा न्यून अग्नये सुहुतहुते तत् सर्वं सुहुतं स्विष्ट मे स्विष्ट कृत् विद्यात्। अस्य सर्व प्रायश्चित्त कामानां आहुतीनां स्विष्टकृते समर्द्धयित्रे करोतु। सर्वान् न स्वाहा कामान् समर्धय। इद अग्नये स्विष्टकृते न इदं केवल मम।

यहां मेरे द्वारा जो नित्य अग्निकर्म (देवयज्ञ) किया जाता रहा है—उसमें जो कुछ अग्नि में सरलतापूर्वक भस्म करने के लिए न्यूनाधिक्य डाला जाता रहा है वह सब जो अग्नि को इष्ट है वह स्विष्ट भली भांति जलकर वह हम सबके लिए मधुरिमा युक्त मंगलमय तथा इष्ट कामों को पूर्ण करने वाला है, ऐसा जानो। प्रायश्चित अर्थात् न्यूनता की पूर्ति की कामना से डाली जा रही आहुतियों का परिणाम हम सबके लिए मंगल एवं सुख समृद्धि को बढ़ाने वाला हो। हम में इसी प्रकार कर्म में अलिप्तता की कामना सदा बढ़ती रहे। अग्नि में यह आहुति केवल मैं अपने लिए ही नहीं अपितु सबके मंगलमय माधुर्य भरे व्यवहार की कामना के लिए ही अर्पित कर रहा हूं। ये ही वे भाव हैं जो स्विष्ट कृत् मंत्र में समाहित हैं। इसी घोषणा के साथ इस बृहद् यज्ञ विशेष अवसरों पर हम सब करते हैं। तथा परमात्मा से कामना करते हैं कि सब की भद्र कामनाओं को आप पूर्ण कीजिए। यज्ञ में ऐसे ही द्रव्य डाले जाते हैं जो इष्ट काम में सहयोगी हों। उस कर्म की या कामना की सिद्धि का जो उपाय है उसी से सम्बद्ध मंत्रों का पारायण कर आहुतियां दी जाती हैं!

'यत्कामास्ते जुहुम तन्नो अस्तु।' जिस-जिस कामना वाले होकर हम होम करें वह कामना हमारी पूर्ण होवे। कामना के अनुकूल कर्म यज्ञ ही है जिस से हम सब कामों को पूर्ण कर सकते हैं। इस विधि से यज्ञ द्वारा सब कामनाओं को पूर्ण किया जा सकता है इसमें इन्चमात्र भी सन्देह नहीं।

यज्ञ एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसमें मन व क्रिया दोनों में समन्वय स्थापित कर सफलता प्राप्त की जाती है।

पता—अन्तर्राष्ट्रीय वेदप्रतिष्ठान, वेद मन्दिर, हैदराबाद-500027

सुभाषित

अहिंसा परमो धर्म. ब्राह्मणस्य प्रकीर्तित·।
क्षत्रियस्य तु दुष्टानां दलनं पालन सताम् ॥

अहिंसा परम धर्म है, परन्तु ब्राह्मण के लिए। क्षत्रिय का (और राजा का) धर्म तो यही है कि वह दुष्टों का दलन करे और सज्जनो का पालन करे।

सम्पादकीयम्

बाज पराये पाणि पै...

राजनीति की बिसात भी कैसी विचित्र है। अफगानिस्तान से सोवियत सघ द्वारा अपनी सेना हटाये जाने की घोषणा के साथ जहा महाशक्तियों के व्यवहार में एक नया समीकरण आया और सारे संसार ने राहत की सास ली, वहा पाकिस्तान का एक खेल खत्म हुआ और दूसरा शुरू हो गया। अब तक अफगानिस्तान में रूसी सेना का हौआ दिखाकर वह अमरीका से मन चाही मदद पाता रहा, पर अब होए का डर नहीं रहा तो उसने भारत के विरुद्ध बाकायदा मोर्चा खोल दिया। अफगान शरणार्थियों के नाम पर पाकिस्तान जिस प्रकार के हथियारों की मदद मागता रहा है उसका उपयोग अफगान-सीमा के बजाय भारत-पाक सीमा पर ही अधिक सम्भव था। अवाक्स विमानों का अफगानिस्तान के लिये कैसे उपयोग होता। परन्तु फिर भी एक परदे की ओट तो थी। अमरीका की कूटनीति को शाबाशी देनी होगी कि उस ओट के खत्म हो जाने पर भी पाकिस्तान को मिलने वाली मदद मे किसी प्रकार की कमी न करने का आश्वासन दिया गया है। फिर वहां राजनीतिक शतरज की बात आखिर अफगानिस्तान की सीमा के खाली हुए अफगान मुजाहिद और सऊदी अरब से लौटे पाकिस्तानी सैनिक अब खाली थोडे बैठेंगे? उनको भी तो कुछ न कुछ काम चाहिये। इसीलिये भारत पाक सीमा फिर गर्म हो उठी है और पजाब में आतकवादियो की कार्रवाइयो में अपने पुराने सब रिकार्ड तोड दिये हैं।

भारत सरकार पिछले तीन वर्षों से कहती चली आ रही है कि आतकवादियो के पीछे पाकिस्तान का हाथ है। अब वही राग उसने और जोर से अलापना शुरू कर दिया है। अब से तीन वर्ष पहले जब पत्रकारो ने प्रधान मन्त्री से कहा कि यदि आप यह समझते हैं कि पाकिस्तान आतकवादियों को प्रशिक्षण, हथियार और धन की सहायता दे रहा है और जहां-जहा उनके प्रशिक्षण कैम्प हैं उनकी भी जानकारी आपको है तो आप कोई सीधी सख्त कार्यवाही क्यो नही करते? जिस तरह इजराइल ने ईराक के अणु शक्ति के अड्डो को ध्वस्त कर दिया या अमरीका ने खाडी क्षेत्र मे केवल सदेह का लाभ लेकर ही ईरान के टैंकरो पर हमला कर दिया, उसी तरह की कार्यवाही पाकिस्तान के विरुद्ध भारत क्यो नही करता? इस प्रकार की कार्यवाही से सारे ससार के सामने पाकिस्तान की खालिस्तान-समर्थक साजिश का भडाफोड हो जाता। तब प्रधानमन्त्री ने यह कहकर इस बात को टाल दिया कि इस प्रकार की बात सार्वजनिक रूप से नहीं की जाती। परन्तु अब यदि आतकवादियो को सब तरह की शह देने के लिये पाकिस्तान को पुन दोषी ठहराया जा रहा है तो पिछले तीन वर्ष का समय बर्बाद क्यों किया?

इसके अलावा सरकार ने पिछले साल सीमा पर सुरक्षा पट्टी बनाने का और उसे सेना के हवाले कर देने का अधिकार तो ससद से प्राप्त कर लिया परन्तु उस पर कार्यवाही अब तक नहीं हुई। अब हाल मे ही सरकार ने सविधान का 59वा सशोधन स्वीकार करवा कर विपक्षी दलों के विरोध के बावजूद ससद में अपने प्रबल बहुमत के आधार पर पजाब मे आपातकाल लागू करने का और सीमा को सील करने का अधिकार भी प्राप्त कर लिया। परन्तु अब सीमा को पूरी तरह सील करने की बात भी अव्यावहारिक बताई जा रही है। यदि इमरजेंसी का अधिकार प्राप्त करके सरकार कोई सख्त कदम उठाना चाहती है तो उसका कहीं आभास दिखाई नहीं देता। मखमली दस्ताने के नीचे फौलादी हाथ के दर्शन अभी तक तो हुए नहीं हैं।

हां इतना जरूर है कि जिस प्रकार अब पाकिस्तान और दिल्ली में स्थान-स्थान पर हथियारों के जखीरे पकडे गये हैं और आतकवादी भी आये दिन पकडे जा रहे हैं या मारे जा रहे हैं, उससे ऐसा लगता है कि इस बीच पुलिस का जो मनोबल शिथिल हो गया था उसमे फिर तेजी आई है। सरकार ने जिस प्रकार बडे पैमाने पर अफसरो के तबादले किये हैं उससे भी राज्य सरकार की पूर्वापेक्षा अधिक सतर्कता की गध है। बीच में जिस प्रकार केन्द्र ने आतकवादियों से भी बातचीत के लिये रजामन्द होने का आभास दिया था और जसवन्त सिह रोडे तथा अन्य व्यक्तियो को जेलो से छोडा था उससे सरकार की ढुलमुल नीति के साथ यह भनक मिलती थी कि शायद वह कुछ राजनीतिक पहल भी करना चाहती है। परन्तु सिखो मे जिसने भी इस प्रकार सरकार से बातचीत करने की दिशा मे चलने की कुछ भी मशा दिखाई उसे उग्रवादियों ने और पथिक कमेटी ने सर्वथा ठुकरा दिया। दर्शन सिह रागी को कभी धूमधड़ाके से मुख्यग्रन्थी बनाया गया था और उन्होने उग्रवादियो सहित सभी सिक्खों का विश्वास प्राप्त किया था। पर सुशील मुनि के साथ वार्तालाप के बाद वह सब ऐसे हवा हो गया कि रागी को स्वर्ण मन्दिर छोड कर अपने गांव में जाकर बैठना पडा। आतंकवादी यह बखूबी जानते हैं कि सब सिक्खो को अपने बाडे मे बनाये रखने के लिए मुख्यग्रथियों को और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी को अपने कब्जे मे रखना होगा। अपनी बात मनवाने के लिए उनके हाथ मे बन्दूक है और साथ मे यह धमकी भी कि जो हमारे बताये रास्ते पर नहीं चलेगा उसकी खैर नहीं।

इस समय स्वर्ण मन्दिर पर पूरी तरह आतकवादियों का कब्जा है। जसवन्त सिह रोडे को लाचार होकर वैशाखी के दिन सर्बत खालसा स्वर्ण मन्दिर के बजाय दमदमी टकसाल में करना पडा। परन्तु पथिक कमेटी ने उसी दिन स्वर्ण मन्दिर मे गोलियो की बौछार के साथ खालिस्तान के झडे फहराये। रोडे अभी तक खालिस्तान का नाम नहीं लेते, वे "पूर्ण आजादी" की बात कहते हैं। परन्तु 'पूर्ण आजादी' से उनका क्या अभिप्राय है, इसे स्पष्ट नही करते। यदि उनका मतलब सविधान की सीमा मे सिक्खों को सम्मानजनक दर्जा दिलवाना है तो वे तुरन्त 'दिल्ली दरबार के एजेंट' घोषित कर दिए जायेंगे और उनकी भी वही गति होगी जो दर्शन सिह रागी की हुई है। और अगर यदि वे 'पूर्ण आजादी' का मतलब खालिस्तान बतायेंगे तो सरकार से बातचीत का रास्ता ही बन्द हो जायेगा। इसी लिये वे सभल-सभल कर चलना चाहते हैं। परन्तु पथिक कमेटी का रास्ता बिल्कुल साफ है।

आम जनता की यह धारणा है कि पथिक कमेटी का निर्माण पाकिस्तान के इशारे पर ही हुआ है और गत वर्ष वैशाखी के दिन उसने जो खालिस्तान की घोषणा की थी उसका मसविदा भी पाकिस्तान ने ही तैयार करके भेजा था। जीवनसिंह उमरानागल तो अर्से से खुल्लमखुल्ला यह घोषणा करते आ रहे हैं कि पथिक कमेटी की मार्फत न केवल स्वर्ण मन्दिर पर बल्कि सभी मुख्य गुरुद्वारो पर पाकिस्तान का नियन्त्रण है। इसीलिए उमरानागल का सारा परिवार आतकवादियो की हिट लिस्ट में है। वे उनके पुत्र को मार चुके हैं और उनके घर पर राकेटों से हमला कर चुके हैं। परन्तु वाह रे उमरानागल! वे जिस बात को सही समझते हैं, उसको कहने से बाज नही आते। यदि सिक्ख सम्प्रदाय मे ऐसे निर्भीक और सही बात कहने वाले कुछ और नेता होते तो आज पजाब की यह दुर्दशा न होती।

पाकिस्तान जो खेल खेल रहा है वह कोई छोटा-मोटा खेल नहीं है। बगला-देश के निर्माण से जो उसकी नाक नीची हुई है उसका बदला वह किसी न किसी तरह लेना ही चाहता है। और इसके लिए वह किसी भी हद तक जाने को तैयार है। भारत में अस्थिरता पैदा करने के इच्छुक और भी कई देश पाकिस्तान के इरादों मे उसके साथी बन सकते हैं। जिस प्रकार के आधुनिकतम हथियार पाकिस्तान इस समय अमरीका से प्राप्त कर रहा है और बडे पैमाने पर आतकवादियो को सप्लाई कर रहा है उससे तो यह पूरी झलक मिलती है कि पाकिस्तान ने आतकवादियो के माध्यम से पजाब में गृह युद्ध का प्रारम्भ कर दिया है। सीमावर्ती जिलों पर उसने पाक रेंजर्स भेज दिये हैं। वहां बकर भी तैयार हो गए हैं। आतकवादियो की सबसे अधिक वारदातें उन्ही चार जिलों में हो रही हैं। आतकवादी उन चारो जिलों को हिन्दुओं से और सब राष्ट्र भक्त सिक्खो से शून्य कर देना चाहते हैं ताकि पाकिस्तान द्वारा किसी बडी कार्यवाही के समय वहा जनता मे भारत का पक्ष लेने वाला कोई न बचे और ऐसा भी कोई व्यक्ति न बचे जो पाकिस्तानी गतिविधियो की सूचना भारतीय सुरक्षाबल या भारतीय सेना तक पहुचाने की हिम्मत करे। सीमावर्ती जिलो से पलायन शुरू हो ही गया है। इन चारो जिलो को भारत से कटकर खालिस्तान के रूप में उनको अलग प्रदेश बनाने में शायद उसे कोई मुश्किल नजर नही आती। जबसे खालिस्तानियो ने पाकिस्तान को यह आश्वासन दे दिया है कि हम जिस खालिस्तान की माग कर रहे हैं उसमें पाकिस्तान का कोई हिस्सा शामिल नहीं होगा, तब से पाकिस्तान पूरी तरह आतकवादियो की सहायता करने में जुट गया है। अब उसकी ओर से आतकवादियो को चीनी राइफलें, राकेट और राकेट लाचर भी सप्लाई किए जा रहे हैं। इसका सीधा मतलब क्या होता है, यह किसी को बताने की आवश्यकता नहीं है।

पजाब के राज्यपाल ने कहा है कि इस समय राज्य में नेताओ, तस्करो और आतकवादियों का जो प्रच्छन्न गठबन्धन है उसको तोडे बिना पजाब की स्थिति नहीं सुधर सकती। परन्तु उन आतकवादियो को क्या कहें जिनके पास न गाठ की अक्ल है, न गाठ का पैसा है, न गांठ के हथियार हैं और न गाठ की हिम्मत है। वे तो पाकिस्तान के इशारे पर नाच रहे हैं। ये सीधे भाडे के हत्यारे हैं। इनका किसी दीन ईमान से कोई वास्ता नही। इनको हत्या करने में आनन्द आता है। ये कायर और बुजदिल हैं। पराए हाथ पर पैठे बाज की तरह ये स्त्रियो, बच्चो, बूढो और हिन्दू-सिख सभी को निरीह पक्षियो की तरह मार रहे हैं। इनके साथ दया माया कैसी? इनको जो किसी प्रकार का प्रश्रय देते हैं वे भी उतने ही बडे अपराधी है जितने कि ये हैं। भारत के राष्ट्र-राज्य की अखण्डता के लिए "पराए पाणि पर बैठे इन बाजो" को सही सबक सिखाने के लिए सारे राष्ट्र को दृढ सकल्प का परिचय देना होगा।

जहां 'सत' चढ़ने का रिवाज है। झूठा वह धर्म समाज है ।।

—दिलचस्प—

नारियलों की भरमार, नव दुल्हन-से शृंगार म्यानों से निकली तलवार एव हजारो मुखो से निकली जय जयकार के मध्य रूप कवर अपने पति के पार्थिव शरीर के संग जल मरी और हमारी सामाजिक, धार्मिक व कानूनी मान्यताओ पर कई प्रश्न चिन्ह छोड गई ?

पूरे देश में इसकी व्यापक प्रतिक्रिया हुई। देखते ही देखते दो वर्ग बन गये। एक उसका समर्थक और दूसरा विरोधी।

किसी के जल मरने को सनातन प्रथा, सत व चमत्कार बताना हमारे जगलीपन की जिन्दा मिसाल है। सघर्षो से घबराकर जीवन का अन्त करना केवल कायरता है। बहादुरी व पूजनीय स्थिति तो तब है जब जिन्दा रहकर कोई अपने जीवन और आचरण से समाज में चमत्कार प्रस्तुत करे बहादुर तो सीमा पर प्राण न्यौछावर करने वाले वे सैनिक हैं जो अपना जीवन देकर देश की लाज रखते हैं।

लगभग 7 वर्ष पूर्व दिल्ली में राणी सती के झाकीमय जुलूस के निकाले जाने पर अन्य लोगों के अलावा श्रीमती इन्दिरा गांधी तक ने उसका विरोध किया था एव झाकी पर प्रतिबन्ध भी लगाया था। मगर न्यायालय ने सती-जुलूस की इजाजत दी और वह झाकी निकली भी। इधर राजस्थान उच्च न्यायालय ने चूदडी काड पर रोक लगाई। दरअसल दोहरे माप दण्ड पर चलने वाली न्याय प्रक्रिया के कारण ही गम्भीरता से इसकी अनुपालना नहीं हो पा रही है ?

दोहरी न्याय प्रक्रिया के कारण युवावस्था के वैधव्य जीवन से मुक्ति चाहने अथवा असुरक्षा की भावना से किसी नारी का आत्महत्या करना गलत-होकर भी गलत नहीं है। सितम्बर, 1986 के अतिम सप्ताह मे बम्बई उच्च न्यायालय ने भारतीय दण्ड सहिता की धारा 309 को सविधान के विरुद्ध करार देते हुए एक फैसले में कहा कि इम गरीब देश मे गरीबी से जीने का हक तो अदालत दिलवा नहीं सकती, लेकिन वैयक्तिक स्वतन्त्रता की न्यायपालिका उसे मरने की छूट तो दे ही सकती है। गलत तो वह है जो इस कृत्य को चमत्कार बताकर, मन्दिरों का निर्माण करवाकर भावनाओं का दोहन करते हैं, चढावे की चाहना करते हैं, दो नम्बर की राशि को एक नम्बर मे करने के लिए ट्रस्ट बनवाते हैं, बडे-बडे भव्य मेले लगवाकर इस कुरीति को स्थापित करते हैं ?

दिवराला की रूप कवर की शादी के वक्त जिस फोटोग्राफर ने इनकी फोटो उतरी थी उसी ने 'ट्रिक' का सहारा लेकर रूप कवर के पति को रूप कवर की गोद में देकर एक नई फोटो तैयार की और 20-20 रुपए में वह फोटो बेची। अखबारों के मुताबिक एक लाख से अधिक फोटुए बेची गई। 50 (पचास) हजार फोटुओं की बिक्री ही मानी जाये तो 10 लाख रुपयों की फोटुए बेची गई। 'साइड बिजनस' में नारियल, धूप, अगरबत्ती, बताशे, फल, फूल, प्रसाद, पत्रकारो व समाचार एजेन्सियो को अलग से बेची गई फोटुए चिता की राख आदि की बिक्री अलग से हुई। इस व्यावसायिकता का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। रूप कवर की चिता को आग लगाने वाला उसका देवर, उसको बाध्य करने वाले उसके परिजन जितने दोषी हैं उतना ही दोष, बल्कि उससे अधिक दोषी वह ट्रिकबाज फोटोग्राफर भी है। और भी जोर-शोर से अपने नये प्रचारक सती को 'करामाती' सिद्ध करने के लिए एक शगूफा छोड रहे हैं जो इस देश की भोली-भाली जनता के गले आसानी से उतर जावेगा। वह शगूफा है—'सती मे करामात थी, तभी तो पूरे देश मे इसकी गूज हो गई। अब इन समझदारो को कौन कहे कि इससे सौ गुनी अधिक गूज तो क्रिस्टन कीलर की भी रही थी। क्या वह भी करामात थी ? करामात तो तब होती जब रूप कुवर अपने मृत पति को जिन्दा कर देती।

जलकर नहीं मरी, बल्कि 'खूब लडी मरदानी वह तो झांसी वाली रानी थी' के रूप में इतिहास को गौरवान्वित कर गई। फिल्मी गायिका आशा मगेशकर (आशा भोसले) अपने पति भोंसले की मृत्यु पर मरी नहीं बल्कि आर०डी० बर्मन से शादी करने के पश्चात् भी असख्य लोगों की चहेती गायिका हैं। और आशा की बहिन लता तो कुआरी रहकर भी पूरे विश्व में साम्राज्ञी के रूप मे सम्मानित हैं।

सती होने को सच्चरित्रता का प्रमाण घोषित करने वाले व्यक्ति दुर्भावनापूर्वक हजारो-हजार उन विधवाओं के चरित्र के प्रति सन्देह उत्पन्न कर रहे हैं जो दकियानूसी समाज में सघर्षों के साथ जी रही हैं ? यह एक खतरनाक प्रवृत्ति है। इसको रोका जाना नितान्त आवश्यक है।

स्वय अग्नि प्रज्वलित होने का चमत्कार

सतियों के प्रचारक सतियों से भावी फायदा उठाने के लिए मनगढन्त चमत्कारों को फैलाते हैं। सती होने वाली नारी को दैविक शक्तियों से परिपूर्ण एव चमत्कार का प्रति रूप बताते हैं। सती होते समय 'चिता मे स्वय

'सत' चढ़ने की गप्प

'सत' चढ़ जाने की गप्प के सहारे मृतक पति के सग जिन्दा जल मरने को उचित बताने वाले लोगों के पास इस बात का कोई जवाब नहीं है कि बेरोजगारों के भी 'निराशा' चढ़ जाये और इस समस्या का निदान अग्नि स्नान हो, तब कैसा रहे ? उल्टे भ्रमजाल और शब्दजाल में वे यह कहते नहीं थकते कि जिन्दा आदमी की एक अगुली का अग्र भाग जलने पर ही कितनी पीडा होती है, तब भला कहीं दबाव से सम्पूर्ण जिंदा शरीर जलाया जा सकता है ? यह तो हजारों विधवाओं में किसी एक विधवा विशेष के 'सत' चढ़ने पर ही ऐसा होता है। मगर वे आडम्बरबाज सत चढ़ने की उस प्रक्रिया का उल्लेख कतई नहीं करते जिसके तहत पचामृत रूप में अफीम एव ज्वलनशील कपूर जैसे पदार्थ एव इसके सहायक घृत, चीनी, शहद आदि खिला कर विधवा नारी को दहन-जलन के लिए चमत्कारों की पुट के साथ हजारों की भीड के मध्य देवी व सती के रूप में पेश करते हैं एवं ढोल-ढमाको, जय जयकार के उद्घोषों तथा नारियलों के अम्बार के साये में इस दानवी 'खेल' का श्रीगणेश करते हैं।

श्रद्धालु लोग भी कैसे दोहरे माप-दण्ड अपनाते हैं। पति की मृत्यु के उपरान्त जहर खाकर रेल के नीचे कट-कर या पखे से लटक कर मरने वाली सती नही कहलाती। दहेज की माग से पीडित होकर जल मरने वाली नारी भी सती नहीं कहला सकती। सती का अलकार तो मृत पति को गोद में लेकर अग्निदाह करने पर ही मिल पाता है। यहा जलकर मरने पर फिर वर्गीकरण है। मरने वाली निहितस्वार्थ प्रचारक न हुए तो गुमनामी अधेरे में लुप्त होना पडता है। कभी-कभी तो अपयश व गाली रूप मे यह भी सुनने को मिल जाता है—'तिरिया चरित जाने ना कोय, पति मार कर सती होय।'

पति की मृत्यु पर स्त्री के मरने अर्थात् सती होने को उचित ठहराने वालो के पास इस बात का कोई जवाब नहीं है कि अनुसूया व सावित्री अपने पति की मृत्यु के उपरान्त जीवित रहकर सती ही नहीं, अपितु 'महासती' क्यों कहलाईं ? झांसी की रानी लक्ष्मीबाई अपने पति गगाधर राव की मौत पर

अग्नि प्रज्वलित' होने की बात कहकर अन्धविश्वास फैलाते हैं। क्या दैविक शक्ति का चमत्कार चिता पर जल जाना ही है ? वह अपने चमत्कारों से नगर, समाज व देश का भला क्यों नहीं करतीं।

मेरे एक प्रख्यात जादूगर साथी ने बताया कि स्वत अग्नि प्रज्वलित वाला चमत्कार तो हम रोज अपने खेलो में दिखाते हैं, मगर पब्लिक इसे 'ट्रिक' या जादू की दृष्टि से देखती है। स्वत अग्नि प्रज्वलित होने का रहस्य खोलते हुए उन्होंने बताया कि कोई पहुचा' हुआ व्यक्ति चिता में अग्नि 'प्रकट' करने से पूर्व उस स्थल विशेष पर बूरा मिली हुई पोटाश की पुताई कर देते हैं और उस पर लकडियां इस रूप में जचाते हैं कि उसमें लौंग, चावल या घृत डाला पुताई मिश्रण स्थल तक पहुंच जाये। तत्पश्चात् मन्त्रोच्चारण के बहाने पहले से ही तेजाब में डुबोकर सुखाये गये लोग और चावल उन लकडियों पर डालते हैं। जब तेजाब वाली वस्तु पोटाश से छूती है तब दोनों के मिलन से स्वत: अग्नि प्रकट हो जाती है।

धन्य हैं हमारे धर्माधिकारी, धन्य है हमारा प्रगतिशील समाज और धन्य है—समस्याओ के हल की नायाब व्यवस्था !

सती की जय जयकार करने वाले एवं इस सामाजिक कलक को प्रथा का अजाम देने वाले जबरदस्ती सती होने का तो विरोध करते हैं, मगर 'स्वेच्छा' से हुई सती को सम्मान देते हैं। यहा कई प्रश्न पैदा होते हैं। प्रथम तो यही कि अगर स्वेच्छा से कोई काम होता हो तो उस पर ढोल-धमाके व प्रचार की क्या आवश्यकता है ? सम्भवत मन में छिपे उस चोर से बचने के लिए कि लोगों की साक्षी के अभाव में हत्या जैसा आरोप न लगे।

बन्द कमरे मे पति-पत्नी का शारीरिक समर्पण स्वेच्छा से होता है। क्या इस स्वैच्छिक क्रिया को प्रदर्शन की वस्तु बनाकर आम लोगों के समक्ष प्रस्तुत करना सभ्यता की सीमा में होगा।

(शेष पृष्ठ 10 पर)

सिखों के बहिष्कार के आह्वान में गलत क्या था ?

— सर्वदमन दीक्षित —

शिवसेना प्रमुख श्री बाल ठाकरे ने पहले 20 मार्च से सिखो के बहिष्कार का आह्वान किया था। फिर अपने आन्दोलन को 20 अप्रैल तक स्थगित करते हुए कहा कि इस बीच महाराष्ट्र के सिख अमृतसर जाकर मुख्य ग्रन्थियो से आतंकवादियो के विरुद्ध हुक्मनामा जारी करवाए। श्री ठाकरे के इस आह्वान की सब तरफ आलोचना हुई। अब उन्होने स्पष्टीकरण किया है कि मेरा आह्वान बम्बई के केवल उन सिखो के बहिष्कार का है जो यहा से आतंकवादियों को पैसा भेजते हैं, आम सिखों के बहिष्कार का नही है। यह स्मरणीय है कि भिंडरावाले को बम्बई के सिखो ने एक दिन मे चालीस लाख रु० दिया था।

बाल ठाकरे द्वारा सिखों के बहिष्कार की अपील के बाद उठे विवाद और खासतौर से इस पर हिन्दू और सिख प्रतिक्रिया के सदर्भ में यह आवश्यक हो गया है कि इस आह्वान का तर्क पूर्ण मूल्यांकन किया जाए। इसके साथ ही हिन्दू मानस का यह कर्तव्य हो जाता है कि इस मुद्दे पर प्रभावी बहस छिड़े।

जहां तक सिखों के इतिहास का संबध है गुरुओं के बलिदान से समस्त हिन्दू समाज परिचित है और वह उनका कृतज्ञ भी रहा है। यही कारण है कि अभी तक सिखों को 'सरदार' से नहीं, 'सरदार जी' नाम से ही सम्बोधित किया जाता रहा है। मुसलमानों से मिल कर वीर बैरागी से गद्दारी करने की, 1857 के स्वतंत्रता समर मे अंग्रेजों के पिट्ठू बन राष्ट्र से दगा करने की घटनाओं को भुलाकर भी हमने सिखो को सम्मान दिया है, तो केवल इसलिये कि हम गुरुओ की हिन्दुत्व निष्ठा को भुला नही सके। वैसे भी हिन्दू मानस में सिखों की इमेज 'मिलिटेंट हिन्दू' की रही है। जिस प्रकार किसी देश के लोग अपने देश के सैनिकों के प्रति कृतज्ञ होते हैं, उनका सम्मान करते हैं, इसी तरह से सिखों को हिन्दुओं का सम्मान मिलता रहा है। व्यावसायिक क्षेत्र में भी सिखों के सफल रहने का यह एक बडा कारण है। हिन्दू और विधर्मी समाजों में एक दूसरे के प्रति अज्ञानता या सस्कृतियों के बीच की दूरी रही हो, हिन्दू समाज यथासम्भव ऐसे सभी मुद्दों को टालता रहता है जो उसे विधर्मी समाज के निकट ले जाए। यह सत्य है कि अनेक स्थानों पर हिन्दू और मुस्लिम या हिन्दू और इसाई परिवारों में बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध देखे जाते हैं, लेकिन साथ ही यह भी एक सत्य है कि अगर एक औसत हिन्दू को चुनाव का मौका दिया जाए तो वे मुस्लिम रेस्तरां की अपेक्षा हिन्दू ढाबे में भोजन करना अधिक पसद करेगा। यह मनोवृत्ति काफी हद तक सिखों के व्यावसायिक लाभ का हेतु बनी है। देखने भर से हिन्दू और मुसलमान में अन्तर करना कठिन है, दूसरी, ओर सिखों की दूर से ही पहचान हो जाती है ऐसे में एक औसत हिन्दू को किसी गैर सिख की अपेक्षा सिख से सम्बन्ध स्थापित करना अधिक आकर्षक प्रतीत होता है वह तो निश्चय रहता ही है कि जिससे सबंध बन रहे हैं वह हिन्दू ही है। इस प्रकार के भेदभाव की नीति ठीक है या गलत, औसत हिन्दू का यह व्यवहार उचित है या अनुचित, इस समय यह विषय विचारणीय नहीं है। यह सब लिखने का अभिप्राय यही है कि ऐसा होता आया है और सिखों ने इसका भरपूर लाभ भी उठाया है।

अब बहिष्कार के प्रश्न पर विचार करें। बाल ठाकरे ने सिखों का आह्वान किया है कि वे मुख्य ग्रन्थियों से खालिस्तान का स्पष्टीकरण मांगे और आतंकवादियों को तनखैया घोषित करने की मांग करें। ऐसा न करने की स्थिति में श्री ठाकरे ने हिन्दुओ को सिखों का अहिंसक बहिष्कार करने का परामर्श दिया है। अनेक राजनीतिज्ञों, सामाजिक सगठनो आदि ने इस अपील की खूब आलोचना की है। इसे सांप्रदायिक द्वेष भड़काने वाली कार्यवाही की सज्ञा दी गई। इस आह्वान में बुराई क्या है यह हमारी समझ में नहीं आया।

सिखों के अनुसार मुख्य ग्रन्थियों की घोषणाओं और आतंकवादियों के आतक के लिये उन्हें दोषी ठहराना उचित नहीं है। साथ ही वे सिखों की राष्ट्रभक्ति के इतिहास का भी हवाला देते हैं। जहां तक हम समझते हैं, शिव सेना प्रमुख के आह्वान में ऐसा कुछ भी नहीं हैं जिससे यह लगता हो कि वे आम सिख को दोषी करार दे रहे हो। इस लिये ऐसा कह कर श्री ठाकरे की निन्दा करना, हमें चोर की दाढ़ी में तिनके के समान ही लगता है। दूसरी ओर जब सिख अपनी राष्ट्रभक्ति के इतिहास का वर्णन करते हैं तो अनजाने में ही वे एक दोगली बात कर जाते हैं। सिख गुरुओ और आम सिख के बीच जो सस्थागत सबध है वही सबध आतकवादी सिखों और आम सिखों के बीच भी है। अगर यह मान लिया जाए कि सिख गुरुओ के त्याग को स्मरण कर समूचे पथ को सम्मान देना उचित है तो सिख आतकवाद की वर्तमान विभीषिका को देख उसकी निंदा करना भी तो उचित ही होगा। जिस प्रकार यह सत्य है कि आम सिख आतकवादी नहीं होता, उसी प्रकार यह भी सत्य है कि आम सिख बलिदानी अथवा राष्ट्रभक्त भी नहीं होता। ऐसा क्यों है कि अपने समाज में अवतरित महापुरुषों की 'श्रेणी' से सुशोभित होना तो आप अपना अधिकार समझते हैं, परन्तु अपने ही समाज में जन्मे दुष्टों का कलंक झेलने को आप तैयार नहीं हैं। यदि वह गौरव आपका है तो यह कलक भी आपका ही है।

आतकवाद को मौन स्वीकृति

अगर किसी सस्था या सगठन के प्रमुख लोग देश और धर्म के विरुद्ध जहर उगलने लगें और उसके अनुयायी या सदस्य चुपचाप देखते रहें तो निष्कर्ष क्या निकलता है ? 'मौनं स्वीकृति लक्षणम्' के अनुसार यह मानना ही होगा कि सस्था प्रमुख के सभी कार्यों में सस्था सदस्यो की पूर्ण सम्मति और सहमति रही है। इसी आधार पर क्यों न हर सिख को आतकवाद में हिस्सेदार मान लिया जाए ? वे क्या तथ्य हैं जिनसे आतकवाद के प्रति आम सिखो का विरोध सिद्ध होता हो ? क्या कभी सिखों ने प्रभावशाली ढग से अपने आतकवादी नेतृत्व के विरुद्ध आवाज बुलन्द की है ? अगर शिव सेना प्रमुख सिखों से आतकवाद का विरोध करने को कहते हैं तो क्या गुनाह करते हैं ? यह कार्य तो सिखो को स्वत: ही बहुत पहले कर लेना चाहिए था। आपके घर का लडका मोहल्ले भर में गुडागर्दी करता फिरे और अगर कोई आपसे उसे रोकने को कहे तो आप उल्टा उस पर ही बरस पड़े ! वाह री शराफत ?

पथ से निकालो या निकलो

ऐसा भी हो सकता है कि आप अपनी मौत के डर से आतंकवादियो का विरोध न करते हो। उस अवस्था मे 'पाच ककके' धारण करने का और सिख कहलाने का आपको क्या हक है ? शौर्य और बलिदान ने इन प्रतीक चिन्हो को धारण कर, दुम दबाकर बैठ जाने से क्या ये पवित्र प्रतीक कलकित न होंगे ! जिस परम्परा की नींव गुरुओं ने अपने बलिदान से रखी, जिन प्रतीको को उन्होने अपने रक्त से सींचा, उन्हे कलंकित करने का आपको क्या हक है ? गलत तत्वों को अलग-थलग तो करना ही होगा। या तो उन्हे सगठन या पथ से निकाल दो, या फिर स्वय पथ छोड दो। फिर चाहो तो किसी अन्य पंथ की स्थापना कर लो। यह तो उचित नहीं है कि पथ के अनुयायी भी बने रहो, पंथ प्रमुख के कार्यों से असहमति भी व्यक्त न करो और जब पथ की गतिविधियों का लेखा-जोखा होने लगे तो जवाबदेही से मुह फेर लो।

समय आ गया है कि सिख अपने पत्ते खोल कर लोगो को दिखाए, अपना मतव्य प्रकट करें। हम अब और अन्धेरे में नहीं रह सकते। निश्चय ही हमें यह जानने का हक है कि इन गतिविधियों और उग्र घोषणाओ के बारे में सिख क्या कर रहे हैं ? अगर वे कुछ भी नहीं कर रहे हैं तो आतकवाद को मूक समर्थन दे रहे हैं, इस कारण उन्हें भी दोषी माना ही जाना चाहिए। ऐसी परिस्थिति में उनके बहिष्कार के अलावा और चारा भी क्या है ? अपनी कोख की पहली सतान गुरु के चरणो में अर्पित करती हिन्दू माता क्या कभी कल्पना भी कर सकती थी कि उसका वही लाडला न जाने कितने हिन्दू परिवारो की तबाही का कारण बनेगा ? जो आज उसकी गोद में खेल रहा है। वही कल उस गोद को उजाड़ेगा ? यह समाज सिखों पर विश्वास करने की पहले ही बहुत कीमत दे चुका है। अब अगर यह फूक फूक कर कदम रखना चाहे तो किसी को आपत्ति नही होनी चाहिए।

कायर मत बनो

बहिष्कार के प्रश्न पर जहां एक ओर सिखो ने आक्रामक रवैया अपनाया है वही हिन्दू पक्ष भी कम दोषी नही है। सौभाग्य से हमारे बीच आज एक ऐसा व्यक्ति है जो आतकवादियो के आतक के समक्ष घुटने नही टेकता, जो निर्भीक हो स्पष्टीकरण मागने की क्षमता रखता है। बजाय इसके कि उसके साथ कधे से कधा मिलाकर न्याय का पक्ष मजबूत करें, अधिकाश हिन्दू उदासीनता का रुख अपना लेते हैं। सारी दुनिया के तथाकथित प्रगतिवादी बुद्धिजीवी उसे कोसने में अपनी विद्वत्ता सार्थक कर रहे होते हैं और कायरता का चोगा ओढ़ हिन्दू समाज मूक दर्शक बना रहता है। किसी समझदार व्यक्ति के लिए यह सभव नही कि चुपचाप बैठकर न्यायपूर्ण पक्ष की आलोचना सुनता रहे। हम आखें खोल कर सत्य के साक्षात्कार की क्षमता का दावा करते हैं, क्योंकि हमने ही सत्य को अपनाने की शपथ ली है।

पता—डब्ल्यू 8, हनुमान मन्दिर मार्ग, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-27

*

'नारी का उत्थान आर्थिक स्वतंत्रता से ही सम्भव है'

भारतीय मनीषियों ने कहा है—'जहा नारियों को आदर और सम्मान दिया जाता है, वहां देवता विचरण करते हैं जहां इनका आदर सम्मान नहीं होता, वहा सभी कार्य निष्फल हो जाते हैं।'

आधुनिक भारतीय महिलाएं जीवन के विभिन्न क्षेत्रो मे निरतर प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रही हैं। युग-युग से प्रताडित भारतीय नारी अब अपने अधिकारों की रक्षा के लिये जागरूक हो गई है। प्राचीन काल में पुरुष नारी को अपनी सम्पत्ति समझता था। नारी पुरुष को अपने हृदय के अमृत से जीवन देती थी, परन्तु पुरुष उसे सदैव कुचलने का प्रयास करता था। मध्यकाल में भी नारी की स्थिति अत्यन्त शोचनीय रही। नारी की शक्ति को महत्व देने के स्थान पर नारी का शोषण किया गया। कविवर पन्त ने भी स्त्री की दीनदशा से द्रवित होकर उसकी मुक्ति के लिए आह्वान करते हुये लिखा था—

'मुक्त करो नारी को मानव,
चिरवंदिनी नारी को।
युग युग की बर्बर कारा से,
जननी सखी प्यारी को।'

परन्तु भारतीय नारी अब प्राचीन युग की स्त्रियों की तरह पुरुष के हाथों की कठपुतली नहीं है बल्कि वह अपने अस्तित्व के प्रति पूर्ण रूप से सजग हो गई है। आधुनिक नारी पुरुष पर आश्रित नहीं रहना चाहती। वह आर्थिक क्षेत्र मे आत्म निर्भर होना चाहती है। पुरुषों की तरह वह भी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति के पथ पर अग्रसर है। नारी अपनी योग्यता से देश का सर्वोच्च पद भी प्राप्त कर सकती है। हमारी भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी भी तो एक महिला ही थी। आज की भारतीय नारी पूर्ण आर्थिक एव सामाजिक स्वतन्त्रता में विश्वास रखती है।

परिवार में नर और नारी की उपमा रथ के दो पहियो से की गई है। जिस प्रकार एक पहिए से गाडी नहीं चल सकती, उसी प्रकार परिवार और समाज रूपी गाडी चलाने के लिए पुरुष और नारी दोनो का अस्तित्व आवश्यक है। इसलिये नर और नारी को परिवार में समान रूप से आर्थिक स्वतन्त्रता मिलनी चाहिये। आज महगाई का युग है—ऐसे समय में केवल एक ही व्यक्ति कमाकर घर की अर्थ-व्यवस्था भली प्रकार नहीं चला सकता। यदि नर और नारी दोनों ही धनोपार्जन करेंगे तो घर की आर्थिक स्थिति सुव्यवस्थित रखने में समर्थ हो सकेंगे। धनोपार्जन करने वाली नारी का दाम्पत्य जीवन सुखदायक होता है क्योंकि आज के महगाई के युग में अकेला पति अपने परिवार का पालन-पोषण करने में असमर्थ है। यदि वे अपने बच्चों को अच्छे स्कूल में पढ़ाना चाहते हैं, अच्छा खान-पान और रहन-सहन देना चाहते हैं तो नारी को भी धनोपार्जन करके घर के व्यय में सहयोग देना आवश्यक है।

कई लोगों के कथनानुसार, यदि स्त्रियों को आर्थिक स्वतन्त्रता चाहिए तो वे घर से बाहर निकलकर नौकरी करेंगी और इससे उनकी भारतीय सस्कृति भ्रष्ट हो जायगी। परन्तु मैं आपसे पूछना चाहूंगी कि इन्दिरा गांधी, सरोजिनी नायडू, विजय लक्ष्मी पंडित, लीलावती मुन्शी आदि महान स्त्रियों ने भारत की सस्कृति को घटाया है अथवा इसमें चार चाद लगा दिये हैं? आज कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं जो नारी से अछूता रह गया हो। कार्य करने वाली स्त्रियां अपने परिवार की ओर अधिक ध्यान देती हैं, उन नारियों की अपेक्षा जो घर में रहती हैं। धनोपार्जन करने वाली नारी अपने एक-एक पल का सही उपयोग कर अपने परिवार को महान बनाने मे योगदान देती है।

यह बिल्कुल मिथ्या दलील है कि स्त्री के पास नौकरी करने के बाद घर के काम धन्धे करने का समय नहीं होता। जब किसान की स्त्री खेत पर जाकर पति के साथ काम कराने में पूरा हाथ बटाने के साथ-साथ घर पर भी सारा काम समाल सकती है तो नगर को स्त्रियां ऐसा क्यों नहीं कर सकतीं। जो स्त्रियां धनोपार्जन नही करती वे अपनी इच्छाओं को दबाकर रह जाती हैं। यदि किसी वस्तु को प्राप्त करना चाहती हैं तो पति के विचार तथा उसका बजट अनुमति देता है तभी उसकी इच्छा की पूर्ति होती है अन्यथा वह अपना मन मसोस कर रह जाती है तथा विवशता का सा जीवन व्यतीत करती है।

यह धारणा भी मेरे विरोधी वक्ताओं का भ्रम ही है कि आधुनिक शिक्षित नारी आदर्श गृहिणी नहीं बन सकती। विवाह के पश्चात् स्त्री एक परिचित ससार को छोड़कर नये ससार में प्रवेश करती है। सयुक्त परिवार में तो वह जल्दी ही अपनी स्थिति समझ लेती है किन्तु एकाकी परिवार में वह पिंजरे के पक्षी की तरह अकेली पड़ जाती है इससे उसे एक अभाव सा खलने लगता है। अतः उसे घर से बाहर काम करने की छूट देने से उसके उस अभाव की पूर्ति की जा सकती है।

स्त्री बाहर काम करेगी तो कुल की मर्यादा नष्ट हो जायगी यह भी पुराना और गलत विचार है। क्या किसानों और श्रमजीवियों की पत्नियां घर के बाहर काम नहीं करती! घर से बाहर काम करने वाली स्त्री सन्तान का पालन-पोषण भली-भांति नहीं कर सकती। मेरे विरोधी वक्ताओं की यह धारणा भी व्यर्थ ही है। बल्कि घर से बाहर काम करने वाली स्त्री की जानकारी अधिक विस्तृत होती है। वह अपनी तथा अपनी सन्तान की अधिक देखभाल कर सकती है। कहने का तात्पर्य यह है कि पुरुष को अब यह मान लेना चाहिये कि शिक्षा, रुचि और अवसर के अनुसार स्त्री को घर से बाहर काम अवश्य करना चाहिये और आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्त करनी चाहिये।

कभी-कभी जब नदी का प्रवाह तीव्र होता है तो वह अपने साथ बहुत कुछ गन्दगी भी बहाकर ले जाता है परन्तु कुछ समय के पश्चात् तलछट नीचे बैठ जाती है और स्वच्छ जल की उपलब्धि होती है। अतः अब स्त्री को आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिये कवि की इस चुनौती को स्वीकार करना होगा—

कर पदाघात अब
मिथ्या के मस्तक पर,
सत्यान्वेषण के पथ
पर निकलो नारी।
तुम बहुत दिनों तक
बनी दीप कुटिया का,
अब बनो क्रांति की
ज्वाला की चिंगारी॥

कु० नीरज गोयल

—कु० नीरज गोयल, IX ए, सुपुत्री श्री एस आर. गोयल 219, विनोबापुरी, लाजपतनगर नई दिल्ली-24

पिछले दिनो डी ए वी स्कूल यूसुफ सराय में हायर सेकंडरी स्कूल के छात्र छात्राओं की भाषण प्रतियोगिता हुई थी, जिसका विषय था—'क्या नारी का उद्धार आर्थिक स्वतन्त्रता से सम्भव है?' इस प्रतियोगिता में बाबा नेमराज सीनियर सेकन्डरी स्कूल, लाजपत नगर की छात्राए विजयी रहीं। विजयी छात्राओं के भाषण यहां दिये जा रहे हैं।

सत्यार्थ प्रकाश दान कीजिए

उत्तराखण्ड अभी भी बहुत पिछड़ा हुआ क्षेत्र है। जात-पात और छुआछूत का यहां बोलबाला है। वैदिक संस्थान, नजीबाबाद बिजनौर के संस्थापक अध्यक्ष स्वामी वेदमुनि परिव्राजक समय-समय पर उत्तराखण्ड में आर्य समाज का प्रचार करने के लिए भ्रमण करते रहते हैं। उनके प्रयास से वहां कुछ जागृति करने लगी है। वे शीघ्र ही अपनी प्रचार यात्रा आरम्भ करना चाहते हैं। उन्हें पांच सौ सत्यार्थ प्रकाश वितरण के लिए चाहिए। दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि वे पांच सौ रुपया सैंकड़ा वाले सत्यार्थ प्रकाश आर्य प्रचार ट्रस्ट, खारी बावली दिल्ली से खरीद कर उन्हें सीधे ही स्वामी जी के पास भेजने निर्देश देकर यह पुण्य का कार्य कर सकते हैं। इसकी सूचना इस कार्यालय को भी भेजिए। दानी महानुभाव यदि प्रादेशिक सभा की मार्फत ही यह कार्य चाहते हो, तो वे हमें उचित राशि भेजने की कृपा करें।

—रामनाथ सहगल, मंत्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

जीवित नारी नहीं जलेगी

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, कानपुर महानगर के तत्वावधान में जनपद की समस्त आर्य समाजों की ओर से विशाल व भव्य शोभा यात्रा आर्यसमाज गोविन्दपुरवा से प्रारम्भ होकर, मोतीझील में जनसभा में परिवर्तित हो गई। मुख्य नारे थे थे—'जीवित नारी नहीं जलेगी, अब मुर्दों के साथ में। अपना जीवन आप जीयेगी आदर सहित समाज में' 'वेदों का है यह ऐलान, नर और नारी है समान' 'छुआछूत मिटाने को—ऋषि दयानन्द आये थे' 'दहेज प्रथा समस्या है, धर्म नहीं यह हत्या है'। जनसभा में स्वामी अग्निवेश ने नई पीढ़ी को सम्बोधित करते हुये विशेष रूप से नारी उत्पीड़न, भ्रूणहत्या, विधवा दहन के विरोध में अग्रसर होने का आह्वान किया। कानपुर में हुई दहेज की हत्याओं के प्रति क्षोभ प्रकट करते हुये बिना दहेज व जाति बन्धन के विवाह करने व युवक और युवतियों को संकल्प लेने के लिये प्रेरित किया।

—डा० हरपाल सिंह शर्मा

नारी का उत्थान आर्थिक स्वतंत्रता से सम्भव नहीं

भारतीय स्त्री सदा से ही अपने परिवार के प्रति बहुत चिन्तित रही है। अपने परिवार के भले के लिये वह कोई भी कुर्बानी देने के लिए तत्पर रहती है। वह अपना पूरा-पूरा ध्यान व समय अपने परिवार वालों को देती थी। परन्तु आज पश्चिमी देशों की देखा-देखी भारतीय स्त्री भी अपनी स्वतंत्रता के नाम पर और पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने के लिए घरों से बाहर निकल आई है और नौकरी करने लगी है। अगर वह सोचती है कि केवल आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त कर स्त्री पुरुषों के बराबर आ खड़ी होगी तो यह बिल्कुल गलत है क्योंकि अब उसकी भूमिका दोहरी हो गई है। उसे घर और बाहर दोनों जगह काम करना पड़ता है। अब उसकी दशा और भी हीन और दयनीय है।

आज स्त्री अपने घर का तो सारा काम करती ही है। परन्तु उसे सफलता कहीं भी प्राप्त नहीं होती, क्योंकि न तो वह अपने परिवार वालों की प्रत्येक आवश्यकता का ध्यान रख पाती है और न ही अपने बास के इशारों पर नाच कर उसे ही खुश रख पाती है। वह चक्की के दो पाटों के बीच बुरी तरह से पिस कर रह जाती है। और पुरुष उसके तो कहने ही क्या, वह अपने अहंकार के कारण अपनी पत्नी के किसी भी कार्य में हाथ बटाना अपना अपमान समझता है। अगर कोई अतिथि घर में आ जाए तो पत्नी चाहे कितनी भी थकी हुई क्यों न हो, अतिथि सत्कार के लिए तो उसे ही आना पड़ेगा। और पति महाशय तो आराम से बैठकर हुक्म देते रहेंगे कि अब यह लाओ और अब वह लाओ, अतिथि सत्कार के लिए वह स्वयं कभी आने का कष्ट नहीं करेंगे।

अगर कभी नौकरी काम पर नहीं आती तो पुरुष कभी बर्तन साफ नहीं करेगा। बर्तन तो उसकी पत्नी को ही

कु० मोनिका मिनोचा

आकर साफ करने पड़ेंगे, क्योंकि संविधान में यह थोड़े ही लिखा है कि बर्तन पुरुषों को साफ करने चाहिए। उसमें तो एक यह छोटा सा वाक्य लिखा है कि स्त्रियों और पुरुषों को समान अधिकार प्राप्त हैं। और यह छोटा सा वाक्य मोटी-मोटी पुस्तकों में केवल दब कर रह गया है।

अति प्राचीन काल से बच्चों के चरित्र-निर्माण में नारी का बहुत बड़ा योगदान रहा है। अंग्रेजी में भी कहा गया है कि "Mother is the first teacher of the Child।" बच्चे के ऊपर सबसे अधिक प्रभाव उसकी माता का पड़ता है। यह पूरी तरह से माता पर ही निर्भर है कि वह अपने बच्चे को किस प्रकार की शिक्षा देती है। वह चाहे तो उसमें अच्छे संस्कार, देश प्रेम व अपनी संस्कृति व सभ्यता के प्रति प्यार कूट-कूट कर भर सकती है और चाहे तो उनको विदेशी रंग में भी रंग सकती है। परन्तु आज की आर्थिक रूप से स्वतंत्र नारी के पास अपने बच्चों के व्यक्तित्व को निखारने का समय कहां? वह तो धन कमाने और उसके बल पर अपनी स्थिति मजबूत करने में लगी हुई है। आज भारतीय नारी ब्राउनिंग की इन पंक्तियों को भूल गई है—

"Womanliness means only motherhood All love begins and ends there"

अगर पत्नी अपने पति की ओर ध्यान न दे पाए तो पति नाराज, बच्चों की ओर से थोड़ी लापरवाह तो वे नाराज और अगर अपने सास-ससुर की आवश्यकताओं की पूर्ति न कर पाए तो वे भी नाराज। तो फिर उसके घर में उसका अपना, उसकी मजबूरियों को समझने वाला रह कौन जाता है? वह तो अपने ही घर में एक अनजान प्राणी की तरह दिन व्यतीत करती है। वह सबसे कट कर रह जाती है। इस तरह सभी कार्य करते हुए भी न तो वह अच्छी पत्नी, न अच्छी मां और न ही अच्छी बहू बन पाती है। और रह जाती है पैसा कमाने की एक मशीन, बस।

इस तरह इतना श्रम करने के बाद भी जब उसे किसी का सहयोग प्राप्त नहीं होता और केवल एक ही वाक्य सुनने को मिलता है कि 'यह कार्य क्यों नहीं किया?' तो वह मानसिक चिंताओं से पीड़ित रहने लगती है। उसे कई बीमारियां आ घेरती हैं। परिणामस्वरूप वह असमय ही मृत्यु का ग्रास बन जाती है। चन्द पैसों के लिए वह अपना और अपने परिवार के सदस्यों का जीवन नष्ट कर देती है। क्या इन जिन्दा लाशों पर ही नारी अपनी स्वतंत्रता को कायम रखना चाहती है? क्या इससे उसका उत्थान सम्भव है?

अभी-अभी मेरी एक विरोधी वक्ता ने कहा कि नौकरी करने वाली स्त्री की शादी जल्दी हो जाती है और दहेज की समस्या का सामना नहीं करना पड़ता। मुझे तो इस कथन पर हंसी आती है। इसका मतलब तो यह हुआ कि आपने अपनी बेटी को ही दहेज की एक वस्तु के रूप में दे दिया। तो क्या इससे दहेज को बढ़ावा नहीं मिला?

आर्थिक स्वतन्त्रता से नारी का उत्थान तब सम्भव है जब उसके परिवार के सदस्य उसकी कठिनाइयों को समझें। और क्योंकि देश के लोगों का व्यक्तित्व बनाना नारी के हाथ में है तो उसे चाहिए कि घर से निकल कर पैसा कमाने के सपने देखने से पहले वह ऐसे व्यक्ति तैयार करे जो उसको अपना पूरा सहयोग दें। तभी आर्थिक स्वतन्त्रता नारी के उत्थान में सहायक होगी।

कु० मोनिका मिनोचा सुपुत्री सतीश कुमार मिनोचा 3/16, जल विहार, नई दिल्ली-110024

ठाकरे के खिलाफ ही क्यों?

'अकाल तख्त से आतंकवादियों को तनखैया करार देने वाला हुकुमनामा जारी न हो तो सिख समुदाय का आर्थिक बहिष्कार किया जाए,—शिव सेना के अध्यक्ष बाल ठाकरे के इस बयान के कारण बम्बई पुलिस ने उनके खिलाफ मामला दर्ज किया है। बाल ठाकरे की गिरफ्तारी के लिये इण्डियन नेशनल सिख यूथ फोरम ने दिल्ली में बोट क्लब पर धरना भी दिया।

यह ठीक है कि हत्याएं सारा सिख समुदाय नहीं कर रहा और न सभी सिख खालिस्तान मांग रहे हैं। लेकिन सवाल है कि क्या सिख समुदाय हत्याओं और पृथकता की मांग का सक्रिय विरोध भी कर रहा है? यदि नहीं तो क्या यह कार्य जिम्मेदाराना है? और हत्यारों को गुरुद्वारों व संगतो और दीवानो में जो सरोपे दिये जाते रहे, वह क्या था? सिख समुदाय जिस उग्रता और तेजी के साथ सरकारी दमन का विरोध करता है, क्या उसी उग्रता और तेजी के साथ उसने कभी हत्याओं और पृथकता की मांग के लिए आतंकवादियों की भी निन्दा की? अकाल तख्त के पास इसके विरुद्ध विरोध दर्ज कराया? जो काम आतंकवादी अलगाववादी कर रहे हैं, क्या वह सिखी मान्यताओं के अनुरूप है? सिखो की मानवतावादी, देशभक्त छवि के पक्ष में है? आज बड़ी संख्या में सिख भी आतंकवादियो द्वारा मारे जा रहे हैं, उसे भी क्या पंथ सेवा माना जायेगा?

सवाल है कि जिस अकाल तख्त ने, मुख्यमन्त्रियों ने, राष्ट्रपति, गृहमन्त्री, मुख्यमन्त्री तक के खिलाफ हुकुमनामे जारी करने में जरा भी संकोच नहीं किया और निर्दोषों की हत्याओं के खिलाफ हुकुमनामे जारी करने में जिसे लगातार संकोच है, उसका आचरण क्या आपत्तिजनक नहीं है? क्या पुलिस ने तब अकाल तख्त के जत्थेदार के खिलाफ मामला दर्ज किया था, जब उन्होंने राष्ट्रपति जैलसिंह, गृहमन्त्री बूटासिंह, मुख्यमन्त्री सुरजीतसिंह बरनाला के बायकाट का सिखों को हुक्म दिया था? सिखों ने क्या तब अकाल तख्त पर भी धरना दिया था उन हुकुमनामों के खिलाफ? फिर बाल ठाकरे के ही खिलाफ क्यों?

—सुरेन्द्र मोंगिया, 29/33, वेस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली

योग्य शाकाहारी वर चाहिए

20 वर्षीय, 160 सें०मी०, एम० ए० (फाइनल) अरोड़ा (बागिया), सुन्दर स्वस्थ कन्या के लिए शाकाहारी आर्य परिवार का उत्तम वर चाहिए। पिता रेलवे पी० डब्ल्यू० डी० के सेवाकाल में दिवंगत। माता रेलवे टेलिफोन आपरेटर। ताया जी का पूर्ण संरक्षण। विवाह साधारण। शीघ्र सम्पर्क करें—

—श्री एस० एस० कामरा, 35 रतन नगर करोलबाग, रोहतक रोड, नई दिल्ली-5, फोन. 726699 (P)

उत्कल में सूखा राहत कार्य

सूखा राहत केन्द्र कालाहांडी में प्रति व्यक्ति को एक मास के लिए पांच-पांच किलो अन्न देने की व्यवस्था है। फुलावाणी केन्द्र में भी मास में एक बार ही वितरण की व्यवस्था की जा रही है। आर्य समाज सिविल लाइन लुधियाना की ओर से एक केन्द्र के लिए 18 क्विंटल, चावल प्रतिमास भेजा जा रहा है। इन केन्द्रों में एक हजार धोती और एक हजार, साड़ियां भी गत मासों में वितरित की गई। इन वितरण समारोहों में बी० डी० ओ० तथा सांसद भाग लेते रहे हैं। कार्यकर्ताओं में उत्साह है। अन्न, वस्त्र आदि की आवश्यकता निरन्तर बनी रहती है। दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि यथाशक्ति दान देकर पुण्य एवं यश के भागीदार बनें।

—स्वामी धर्मानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, खरियार रोड काला हाण्डी (उड़ीसा)

पत्रों के दर्पण में

आर्य समाज स्थापना दिवस

13 मार्च के सम्पादकीय में आपने आर्यसमाज स्थापना दिवस 17 मार्च को मनाने की बात लिखी है। जब कि सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित आर्य पर्व सूची में 19 मार्च को मनाने का आदेश है। किसे प्रामाणिक माना जाए ?

परन्तु मैं पत्र आपको दूसरे प्रयोजन से लिख रहा हू। पिछले वर्ष की आर्य पर्व सूची मे आर्य समाज स्थापना दिवस के साथ 'नव सवत्सरोत्सव' भी दर्ज था। इस वर्ष 'नव सवत्सरोत्सव' शब्द हटा दिया गया है। ऐसा क्यों किया गया है—यह समझ में नही आया।

इसी वर्ष की पर्व सूची मे 3 3-88 को होली पर्व और 4-3-88 को धुलेंडी मनाने का आदेश है और तिथि चैत्र कृष्णा 1 दी है। इसका सीधा अर्थ यह है कि 3-3 88 को होली पूर्णिमा के दूसरे दिन चैत्र प्रारम्भ हो गया। तदनुसार चैत्र शुक्ला 1 को नव सवत्सरोत्सव ठीक ही था। पर इस बार वह नव सवत्सरोत्सव गायब है। आर्यों को नव सवत्सरोत्सव नही मनाना चाहिए ? या इसका अभिप्राय यह है कि आर्यो को भी अब 1 जनवरी को ही नव सवत्सरोत्सव मना लेना चाहिए।

—स्वामी ओम् प्रेमी चतुर्थाश्रमी, गुरुकुल होशगाबाद (म० प्र०)-461001

[इस वर्ष चैत्र शुक्ला प्रतिपदा और नव सवत्सरोत्सव 18 मार्च को ही पडता था। हमारा 17 मार्च लिखना भ्रम पर आधारित था।—स०]

ऋषि दयानन्द की जन्मतिथि

आर्यों की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक ने कोटा निवासी प० भीमसेन शास्त्री द्वारा निर्धारित फाल्गुन कृष्णा 10, 1881 वि० तदनुसार 12 फरवरी 1885 ई० को स्वामी दयानन्द की जन्म तिथि स्वीकार किया है। भारतीय परम्परा के अनुसार हम अपने महापुरुषों का जन्म दिन विक्रम की गणना के अनुसार देशी तिथि क्रम से मनाते हैं। किन्तु अब हम समाचार पत्रो मे पढ़ते हैं कि 'महर्षि दयानन्द का 164 वा जन्मोत्सव 12 फरवरी 1988 को आयोजित किया गया' तो हमें बड़ी हैरानी होती है। आर्यो के समस्त उत्सव, पर्व और त्योहार स्वदेशी काल गणना के अनुसार ही मनाये जाने चाहिए। अत निवेदन है कि महर्षि का जन्मदिन भी देशी तिथि के आधार पर ही मनाया जाये। वैसे स्व० मामराज सिंह जी ने आर्यसमाज गणेश गज लखनऊ में विद्यमान स्वामी दयानन्द के जीवन चरित के एक हस्तलेख (केशवराम विष्णुराम पण्ड्या लिखित) के आधार पर ऋषि की जन्मतिथि भाद्रपद शुक्ला नवमी 1881 वि० स्थिर की थी और इसे ही मैंने स्वलिखित ऋषि के जीवन-चरित्र में मान्यता दी है।—भवानी लाल भारतीय चडीगढ़।

'अपना जन्म चरित्र' पर गोष्ठी हो

मेरे और डा० वेदव्रत आलोक द्वारा सम्पादित पुस्तक 'अपना जन्म चरित्र' की समालोचनाए 'वेदवाणी' और दयानन्द सन्देश' नामक मासिक पत्रिकाओ में प्रकाशित हुई हैं। इधर मैंने डा० भवानी लाल भारतीय से भी निवेदन किया है कि वे भी अपनी समालोचना 'परोपकारी' में प्रकाशित कर दें। इसके अनन्तर मैं चाहूगा कि प० युधिष्ठिर मीमांसक, डा० भवानी लाल भारतीय, प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु, प० राजवीर शास्त्री एव प्रो० दयाल आर्य इत्यादि विद्वान् मेरे निमन्त्रण पर किसी पूर्व निर्धारित दिवस पर भोपाल पधार कर प्रत्यक्ष वार्तालाप और शका समाधान करें। क्योकि मेरे अकेले के लिए इन पाचों लोगो के पास सारी अनुसधान सामग्री लेकर पहुचना कठिन है, जब कि इन पांचो लोगों का मेरे स्थान पर आना सरल होगा।

मैंने अपनी पुस्तक में ऋषि दयानन्द की तीनों ही आत्म कथाओं की सगति लगाते हुए उनके प्रतिपादनो के समर्थन में जो प्रमाण जुटा दिए हैं उन पर तो किसी भी समालोचक ने विचार नहीं किया। केवल पूर्वाग्रहवश पुरानी बातों को दुहराया है।—आदित्यपाल सिंह, एफ 5/52, चार इमली, भोपाल 462016

रामायण का विरोध अनुचित

हरप्रकाश आहलूवालिया का 'आर्य समाज और रामायण' शीर्षक पत्र पढ़ा। मैं उनके विचारों से सहमत नहीं हू। रामायण समस्त आर्यो का सत्सग ग्रन्थ है। राम ने स्वय अपने आचरण द्वारा वैदिक सस्कृति को उजागर किया। रामायण एक निर्विवाद आर्य ग्रन्थ है। इसके पात्र और चरित्र वैदिक सस्कृति से ओत-प्रोत हैं।

रामायण मे विद्यमान उदात्त आदर्शो से समस्त मानव जाति प्रेरणा ग्रहण कर सकती है। इसलिए उसका विरोध करना अपनी ही जड़ों पर कुठाराघात करना है।

—कालूराम सोलकी आर्य, उपप्रधान महर्षि दयानन्द सेवाश्रम थान्दला-457777. जि० झाबुआ (म० प्र०)

टकारा यात्रा का आनन्द

10-2-88 को हमारी बस करोलबाग से टकारा के लिये रवाना हुई थी। 21-2-88 को सायकाल करोल बाग वापिस पहुच गई। बस का संचालन श्री रामनाथ सहगल ने मुझे सौंपा था परमात्मा की कृपा से यात्रा कुशलता पूर्वक सम्पन्न हुई।

टकारा पहुचते ही श्री सहगल ने कहा—जिनको गर्म पानी से नहाना हो उसके लिए गर्म पानी तैयार है। प्रत्येक यात्री को चाय पिलाने का प्रबन्ध किया गया। दिल्ली आते समय सहगल जी ने रोटी व प्रसाद प्रत्येक यात्री के लिये दिया। टंकारा में आपके तथा अन्य विद्वानो के भाषण सुनने का सौभाग्य मिला। सब यात्रियों को बड़ा आनन्द आया।

—पी० डी० भाटिया, 1714 मुलतानी मुहल्ला, रानी बाग, दिल्ली 34

हमने भरी बहार में अपना चमन लुटा दिया

28-2 88 के अक में सर्व श्री राजेन्द्रपाल गुप्त एव सत्य देव आर्य ने आर्य समाज को पुन गतिशील बनाने तथा इसे देश के विभाजन से पूर्व वाली प्रतिमा दिलाने के लिए अत्यन्त उपयोगी महत्त्व पूर्ण सुझाव प्रस्तुत किये हैं।

पहला सुझाव है कि दहेज उन्मूलन के लिए सभी आर्यों के विवाह संस्कार केवल आर्य समाज मन्दिरो में सम्पन्न हों, वर पक्ष की बरात आर्य समाज से चलकर कन्यापक्ष की आर्य समाज मे पहुचे और वहां पर अत्यन्त सादगी से दहेज रहित विवाह सम्पन्न हो। मैं यह और जोड़ना चाहूगा कि ऐसे विवाह सामूहिक रूप से एक ही स्थान पर सम्पन्न हो जैसा नामधारी सिख समाज में होता है। आज के युग में सच्चाई उगलना मौत को निमत्रण देना है और यह भी जानता हू कि—फरिश्ते भी आस्मा से गर उतारे जाए गे, वो भी इस दौर में सच बोले तो मारे जाए गे।" इस पर भी मैं सच्चाई कहने से बाज नहीं आऊ गा, आर्य समाज की कई पत्रिकाए वर्षों से हमारे तथाकथित नेतृत्व पर तरह-तरह के आरोप लगा रही हैं पर ये हैं कि मुह दूधनियां डाले चुप बैठे हैं।

अन्त में इतना ही कह सकता हू—

की न खिजां की रोकथाम दामने इख्तियार मे।
हमने भरी बहार में अपना चमन लुटा दिया॥

—धम देव चक्रवर्ती, W Z, 124 शिवनगर, जेल रोड, दिल्ली 58

आर्य समाज और राजनीति

श्री बलराज मधोक का लेख बहुत ही मार्मिक था। आर्य समाज को राजनीति में आने के लिए उन्होंने बहुत कुछ लिखा। उनका लेख हमारे हृदय को छू गया।

प्रशांत वेदालकार ने भी अपने लेख में आर्य बुद्धि जीवी सम्मेलन के विषय में अच्छा प्रकाश डाला था। उनका लेख भी बहुत उचित और समयानुकूल प्रतीत हुआ। मैं आर्य जगत् के उच्चकोटि के विद्वानों एवं अधिकारी गणों से प्रार्थना करता हू कि एक आर्य महा सम्मेलन बुलाया जाय, जिसमें सभी बातों पर उचित निर्णय लिया जाय जिससे हम देश को उचित दिशा दे सकें।

—जगन्नाथ प्रसाद आर्य पुरोहित डेहरी-ओन-सोन (बिहार)

मन्त्रोच्चारण में समानता

बस द्वारा टकारा जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मार्ग में कई स्थानों की आर्य समाजो यथा ब्यावर, राजकोट, कन्या गुरुकुल पोरबन्दर तथा जाम नगर इत्यादि पर रात्रि निवास एव प्रात या सायम् उनके साथ यज्ञ करने का भी सुअवसर प्राप्त हुआ यह देखकर दुख हुआ कि सब स्थानों पर यज्ञ करने की विधि पृथक् 2 हैं।

इसी यात्रा में कन्या गुरुकुल पोरबन्दर में सध्या हवन में भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सन्ध्या में तो ऐसा लगा जैसे किसी राग में गाई जा रही हो अन्तरा और स्थायी के रूप में और हवन में 'ओं अयन्त इध्म आत्मा' का मन्त्र कुछ इस प्रकार बोला गया। ओम् अ-य-न्त इ-ध्म--आ त्मा जा-त वेद-स्ते-ने ध्य-स्व और पशुभि ब्र ह्म-वचसे इदमग्नये जात वेद से इदन्नमम—कुछ इस प्रकार कि पहाड़ पर जा रही रेलगाड़ी अचानक उतराई पर लुड़कने लगी हो बिना ब्रेक के। यह दोष ब्रह्मचारिणियों का नहीं। जो अध्यापिका सर्व प्रथम वहां यज्ञ की इच्छार्थ बनी होंगी उन्होंने जैसी प्रथा चला दी वह आज भी बरकरार है।

अत मैं सब समाजों के कर्णधारों का ध्यान इस ओर आकृष्ट करना चाहता हू—वर्ष में समय-समय पर देश की भिन्न-भिन्न समाजों से पुरोहित किसी स्थान पर एकत्र कर उन्हें विद्वानों द्वारा निश्चित की हुई (भेदभाव, स्वार्थ, अभिमान, बड़प्पन छोड़कर) पद्धति से मन्त्रों का सही उच्चारण—लय,=गति एव उतार, चढ़ाव इत्यादि सिखाएँ। इस शुभ कार्य में लगाया हुआ समय और धन सोद्देश्य माना जाएगा। मन्त्रोच्चार से पूर्व 'ओम्' लगाए अथवा न लगाये जाने के विषय में भी निर्णय कर लेना उपयुक्त होगा।—बलबीर सिंह सूद, एन०-2-ए ग्रीन पार्क विस्तार नई दिल्ली

डी ए वी के बढ़ते कदम

हरियाणा मे 44 सस्थाएं

हरियाणा में गतवर्ष तक 24 विद्यालय और 12 महाविद्यालय थे। इस वर्ष डी ए वी प्रबन्धक समिति ने प्रदेश मे 8 अन्य विद्यालय खोले हैं। इस प्रकार अब प्रदेश में विद्यालय-महाविद्यालयों की सख्या 44 हो गई है। हरियाणा सरकार ने इसमें सहयोग दिया है तथा स्टील प्राधिकरण, कोल इन्डिया, सीमेट निगम तथा हिन्दुस्तान उर्वरक आदि सस्थानों ने भी स्थान-स्थान पर डी ए वी स्कूल खोलने मे विशेष रुचि प्रकट की है। आज भारत मे गैर सरकारी क्षेत्र मे डी ए वी सगठन सबसे बडी शिक्षा सस्था है। हरियाणा मे तहसील व ब्लाक स्तर पर डी ए वी स्कूल खोले जाने की योजना है।

दयानन्द महाविद्यालय हिसार

दयानन्द महाविद्यालय हिसार इस वष खेल-कूद मे हरियाणा मे अग्रणी स्थान पर रहा है। उसके छात्रो ने मुक्केबाजी, योगासन, एथलीटिक्स और बास्केट बाल में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय मे प्रथम स्थान प्राप्त कर ट्राफी जीती। हैण्डबाल मे इसका द्वितीय स्थान रहा। भाला और चक्का फेंकने मे रजत पदक प्राप्त किया। कुश्ती मे स्वर्ण एव रजक पदक प्राप्त किये। टेबल टैनिस मे सर्वश्रेष्ठ खिलाडी की उपाधि अर्जित की। जूडो मे रजत पदक, राइफल में विश्वविद्यालय स्तर पर स्वण एव रजत, एथलीटिक्स मे राज्य एव विश्वविद्यालय स्तर पर स्वर्ण पदक, 400 मीटर दौड मे स्वर्ण, निशानेबाजी मे 2 रजत एव 3 कास्य पदक जीते। इन विजयों एव उपलब्धियो से कालेज के छात्रो एव प्राध्यापको मे असीम उत्साह है।

यशस्वो छात्र छात्राए —

सुनील कुमार (योग, राष्ट्रीय चैम्पियन), ज्योत्स्ना मदान (हाकी), सुनीता (एथलेटिक), धर्मेन्द्र कुमार (मुक्केबाजी), सतीश शर्मा (एथलेटिक), पद्मा जैन (जूडो)

—डा० सर्वदानन्द आर्य, प्राचार्य

मस्जिद मोठ मे उपराज्यपाल

डी ए वी पब्लिक स्कूल, मस्जिद मोठ, नई दिल्ली को आरम्भ हुये अधिक समय नहीं हुआ तदपि आज वहां 700 से अधिक विद्यार्थी अध्ययन रत है। स्कूल में विद्याभ्यास के साथ साथ चित्रकला, बासुरी-वादन, योगासन, नृत्य, पाक कला, सूची कर्म इत्यादि पाठेतर शिक्षा भी दी जाती है। यहाँ के विद्यार्थी अन्त स्कूल प्रतियोगिताओ में भाग लेकर पदक, पुरस्कार, पारितोषिक प्राप्त करते रहते हैं। स्कूल मे नैतिक-शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता है। 8 अप्रैल को दिल्ली के उपराज्यपाल श्री हरिकिशन लाल कपूर, डी० डी० ए० के उपाध्यक्ष दिल्ली नगर निगम के स्थानीय सदस्यो ने स्कूल मे पधार कर विद्यार्थियो एव अध्यापको को प्रोत्साहित कर विद्यालय की अल्पावधि मे हुई प्रगति पर हर्ष व्यक्त करते हुये विद्यालय को चार एकड भूमि की व्यवस्था का आश्वासन दिया। उसी दिन नीदरलैंड के कुछ प्रवासी भारतीय भी स्कूल मे पधारे और विद्यालय एव विद्यार्थियो की गतिविधियो की वीडियो-फिल्म तैयार की और अपनी ओर से विद्यालय को एक वाटर कूलर प्रदान किया।

—प्राचार्य

पजाब आर्य युवक परिषद्

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् गुरुदासपुर के तत्वावधान मे 9 4 88 को डी ए वी हाईस्कूल मे विशाल आर्य-महासम्मेलन का आयोजन हुआ। इस सम्मेलन की अध्यक्षता श्री ओमप्रकाश आर्य ने की। आतकवाद की शिकार विधवाओ को इस अवसर पर सिलाई मशीनें भेंट की गई। जिला गुरुदासपुर के आर्य उपदेशको को एक-एक कम्बल तथा एक सौ एक रुपया दक्षिणा देकर सम्मानित किया गया। सम्मेलन मे अनेक विद्वानो के प्रेरक और उत्साहवर्धक व्याख्यान हुए।

— वेदप्रकाश आर्य, मन्त्री

दाहा मे आर्य युवक दल

दाहा, करनाल मे 10-4-88 को एक सौ युवको की उपस्थिति तथा श्री रामस्नही एव श्री चमनलाल के सान्निध्य मे आर्य युवक दल की स्थापना एव अधिकारियों का निर्वाचन हुआ। अध्यक्ष —सत्यदेव आर्य, मन्त्री—सुरेन्द्र आर्य तथा कोषाध्यक्ष—नवीन आर्य निर्वाचित हुए। यह कार्यक्रम दाहा आर्य समाज के वार्षिकोत्सव के अवसर पर सम्पन्न हुआ।

वैदिक मोहन आश्रम हरिद्वार का चुनाव

वैदिक मोहन आश्रम भूपतवाला, हरिद्वार का चुनाव 15 अप्रैल को सम्पन्न हुआ जिसमे प्रो० वेदव्यास एडवोकेट प्रधान, श्री खेमचन्द्र मेहता कार्यकर्त्ता प्रधान, कवर बृजभूषण (देहरादून वाले) उपप्रधान, श्री तिलक राज गुप्त मत्री, श्री राज कुमार सेठ उपमन्त्री, श्री देशकुमार (हरिद्वार वाले) कोषाध्यक्ष और श्री शान्ति स्वरूप कपूर लेखा निरीक्षक चुने गये। कंवर बृजभूषण से विशेष निवेदन किया गया कि वे आश्रम के कार्य भार को भी देखते रहें।—खेमचन्द मेहता

जहां 'सत' चढ़ने का ..

(पृष्ठ 4 का शेष)

सन्तोषी माता कौन से वेद में है ? ग्रन्थों में 'सन्तोषी माता' का कहीं उल्लेख नहीं है। बावजूद इसके समस्त भारत में श्रद्धालुओं के लिए इसकी मान्यता बरकरार है। इस बारे में ग्रंथों को महत्व देने वाले क्यों नहीं बोलते, अथवा संतोषी माता का विरोध क्यों नहीं करते।

और उस गप्प को क्या कहा जाये जिसके तहत यह प्रचारित किया जा रहा है कि 'सती' होते वक्त पूर्व में पुलिस द्वारा 'बचाई' गई तीन विधवाएं वर्षों से अन्न जल ग्रहण नहीं कर रही हैं। सती समर्थक एवं भोले श्रद्धालु बिना यह सोचे समझे कि जल के बिना कोई जीवित नहीं रह सकता, चटखारों के साथ उक्त उदाहरणों का वामन थामे हैं। यहां भी कुछ प्रश्न पैदा होते हैं जिनमे प्रमुख तो यही है कि उस वक्त तो पुलिस ने उन्हें बचा लिया, मगर जब उन पर 'सत' चढ़ ही चुका था तो अब तक वे जिन्दा क्यों हैं ? क्या इतने वर्षों तक दिन रात पुलिस उनकी निगरानी कर रही है अथवा उनका सत इतना कमजोर है जो पुलिस के सामने परास्त हो गया ?

फिर मर्दों पर सत क्यों नहीं चढता ? बलात्कार की शिकार महिला ताउम्र नापाक नजरों का शिकार होती रहेगी पर कोई साहसी मर्द उस महिला से शादी करने को तैयार नहीं होगा। जबकि बलात्कारी पुरुष अगर अविवाहित है तो गाजे-बाजे के साथ कोई 'कोरी' षोडशी दुल्हनियां लायेगा, समाज में सम्मानपूर्वक सम्मिलित होगा। उल्टे ओछेपन में चार लोग उसकी 'जवामर्दी' के कुकृत्यों का 'गुणगान' भी करेंगे ?

और वे मर्द जो औरतों के जिस्म की दलाली करके भडुआगिरी धारण किये हैं, उनको क्या कहा जाये ? वेश्यावृत्ति, व्यभिचार, अपहरण का पुराणों में भी उल्लेख है। लगता है कि पुराणों को मान्यता देने के लिए ही इस प्रकार की असभ्यताएं हम बरकरार रखे हुए हैं। फिर तो किसी भी सती समर्थक के घर की किसी स्त्री का अपहरण हो जाता है अथवा उसके साथ दुराचार व व्यभिचार होता है तो उन्हें प्रसन्न होना चाहिए क्योंकि पुराणों में इन सबका उल्लेख है ?

वर्तमान समय में सती होना कायरता व आत्महत्या है और सती बनाकर जलाया जाना अपराध भी। दुख से दुखी होकर जाने कितने मरते हैं प्रतिदिन। उनका कोई गुणगान नहीं करता। परन्तु एक औरत भावुकता, कायरता, धर्मान्धता या पति के वियोग में स्वेच्छा से (अथवा जबरदस्ती ?) जब मरती है तो ऐसा कौनसा काम करती है कि उसे पूजा जाये। हां, इस नश्वर जीवन में जीवित रहकर अपने पति की याद में देश या समाज के लिए कोई उल्लेखनीय कार्य करे तो वह अवश्य पूजनीय है।

जाने क्यों लोगों की रुचि विधवा को जिन्दा रखने की बजाय सती बनाने में है ? क्या मानव का जीवन इतना सस्ता है कि उसे यूं ही होम दिया जाये और एक नव वधू, निसंतान विधवा नारी को 'सती-माता' के जयघोष के साथ चढा दिया जाये चिता पर। विधवा अगर जीवित रहे, घर और समाज पर भार मृत पति संग जल मरे, तब सती जय जयकार वाह री पौराणिक प्रथा, तुझे धिक्कार है धिक्कार !

घूम फिर कर व्यवस्था यहीं आकर फिर से प्रश्न वाचक बन जाती है—
मर्द हमेशा औरत से कमाता आया है—
कभी कला के रूप में अभिनेत्री से,
कभी विज्ञापन के रूप मे माडल से,
कभी दहेज के रूप में पत्नी से,
कभी दलाल के रूप में वेश्या से,
तो
कभी भक्त के रूप में सती से ?

पता—चूरू—331001 (राजस्थान)

मंजुला शर्मा को पी. एच-डी.

रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर में मंजुला शर्मा को उनके शोध प्रबन्ध 'भारत (विशेष कर मध्य प्रदेश) में आर्य समाज की शैक्षणिक गतिविधियों का समालोचनात्मक अध्ययन' पर पी० एच डी० की उपाधि प्रदान की है। आप आर्य समाज जी० सी० एफ० क्वार्टर्स जबलपुर के स्तम्भ व कर्मठ कार्यकर्ता स्वर्गीय डा० श्रीराम शर्मा भूतपूर्व प्रधान, आर्य समाज जी० सी०एफ० क्वाटर्स, जबलपुर की पौत्री व डा० रवीन्द्रनाथ शर्मा, भूतपूर्व मन्त्री आर्य समाज जी० सी० एफ० क्वार्टर्स जबलपुर की पुत्री हैं। यह शोध प्रबन्ध उन्होंने डा० सुश्री सुशीला वैद्य, भूतपूर्व

प्रोफेसर शिक्षा विभाग शासकीय शिक्षण महाविद्यालय जबलपुर के निर्देशन में सम्पन्न किया।

आ. स. सीताराम बाजार का वार्षिकोत्सव

4 से 10 अप्रैल तक आर्य समाज बाजार सीताराम दिल्ली के 68 वें वार्षिकोत्सव में यज्ञ तथा स्त्री सम्मेलन और राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में स्वामी रामेश्वरानन्द, स्वामी आनन्दबोध, सांसद रामचन्द्र विकल, प्रो० बलराज मधोक, आदि अनेक विद्वानों के ओजस्वी एवं ज्ञानवर्धक भाषण हुए। स्त्री समाज के 43 वें वार्षिकोत्सव को श्रीमती शकुन्तला दीक्षित ने सबोधित किया। समाज की ओर से कर्मठ एवं प्रबुद्ध आर्य पुरुषों का अभिनन्दन भी इस अवसर पर किया, इनमें श्री न्यादरमल गुप्ता का नाम विशेष उल्लेखनीय है।—बाबूराम आर्य मन्त्री।

आर्य समाज बाजार सीताराम दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर सम्मानित व्यक्ति बांये से—वैद्य धर्मेन्द्र नाथ शास्त्री (81 वर्ष) श्री न्यादर मल गुप्ता (81 वर्ष) और श्री रामचन्द्र मिस्त्री (81 वर्ष)।

आर्य वीर दल उ. प्र.

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० ने 1988 वर्ष आर्य युवक वर्ष घोषित किया है। प्रत्येक आर्यसमाज एवं जिला सभाओं से निवेदन है कि अन्तरंग सभा द्वारा आर्य वीर दल के लिए अधिष्ठाता की नियुक्ति करें तथा अपने वार्षिक उत्सव पर अपनी सुविधानुसार 'आर्य युवक सम्मेलन' रक्खें उसमें युवकों को ही बोलने के लिए समय देवें। अपनी आय का कम से कम 10% भाग नवयुवकों के प्रतियोगिता एवं पुरस्कार पर खर्च करें। अपने अपने आर्य समाज में शाखा लगाने की स्वीकृति प्रदान करें।

—धर्मपाल आचार्य, मुख्य सचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल उत्तर प्रदेश प्राचार्य गुरुकुल महाविद्यालय, ततारपुर, गाजियाबाद (उ० प्र०)

आर्य समाज सदा जोड़ने का

(पृष्ठ 1 का शेष)

वृक्ष का रूप धारण कर चुका है। इसकी छत्रछाया में हम भावी पीढ़ी के निर्माण मे दत्तचित्त होकर लगे हुए हैं।

स्वामी सत्यप्रकाश जी ने इस अवसर पर स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती द्वारा लिखित 'भूमिका भास्कर (प्रथम खण्ड)' का विमोचन किया। प्रो० रत्नसिंह तथा बम्बई के श्री देवेन्द्र कपूर ने—जिनकी सहायता और प्रयत्न से पुस्तक प्रकाशित हुई है—इस पुस्तक की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। इसी अवसर पर श्री कृष्ण चन्द्र पन्त ने 'आर्य जगत्' के महात्मा हंसराज विशेषांक का भी विमोचन किया।

श्री भगत ने आर्य समाज के उन कर्मठ कार्यकर्ताओं और उपदेशकों का शाल और प्रशस्तिपत्र देकर सम्मान किया जिन्होंने अपने जीवन का अधिकांश भाग आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में प्रचार कार्य में लगाया है अथवा अन्य रूप में आर्य समाज की सेवा की है। सम्मानित सज्जनों के नाम इस प्रकार हैं—

1 श्री प्रि० राम दास खोसला
2. श्री राम चन्द्र महाजन
3 श्री नवनीत लाल एडवोकेट
4 महाशय किशन चन्द
5 श्री हरिश्चन्द्र थापर
6 प० हरिदत्त जी
7 ठा० दुर्गासिंह आर्य "तूफान"
8 ला० खेमचन्द मेहता
9. श्री प प्रभु दयाल आर्य भास्कर
10. श्री यश पाल वढेरा
11 श्री प्रि० त्रिलोकी नाथ(अनुपस्थित)

सोनीपत के डी ए वी कालेज ऑफ एजुकेशन एण्ड वोकेशनल स्टडीज की छात्राओं ने ऋषि भक्ति का गीत सुनाया और डी ए वी पब्लिक स्कूल पीतमपुरा दिल्ली के छात्र-छात्राओं ने महात्मा हंसराज जी के जीवन पर एक सांस्कृतिक नृत्य नाटिका प्रस्तुत की।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के कार्यकर्ता प्रधान एवं डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के संगठन सचिव श्री दरबारी लाल ने एव सभा मन्त्री श्री राम नाथ सहगल ने मंच के सचालन तथा अन्य व्यवस्थाओं को जिस सुचारू ढंग से निभाया उसकी सब ने प्रशंसा की।

✻

टंकारा सूखा राहत केन्द्र

टंकारा सूखा राहत केन्द्र मे अनाज वितरण करती हुई टंकारा ट्रस्ट के प्रबन्धक डा० आर० के० पुशी की धर्मपत्नी, साथ मे खड़े हैं श्री पुशी जी।

कु० ममता भगत (सातवी कक्षा), जिसने राष्ट्रीय जूनियर खो खो खेल प्रतियोगिता मे स्थान पाया और पूना के निकट पिम्परी मे महाराष्ट्र प्रान्तीय प्रतियोगिता मे सराहनीय प्रदर्शन किया।

धर्मशाला (हि. प्र.) में संवाददाता सम्मेलन

प्रो० वेद व्यास, श्री दरबारी लाल श्री रामनाथ सहगल, प्रि० रमेश चन्द्र जीवन प्रि० त्रिलोकी नाथ तथा प्रि० बी० एस० बहल, एव डी० ए० वी० के अन्यान्य अधिकारी गण संवाददाता सम्मेलन मे।

डा० (स्व०) मेजर अश्विनी कुमार

(जिनके बलिदान का विवरण आप 13 3 1988 के अक के पृष्ठ 4 पर पढ चुके हैं।)

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज खण्डवा को एक पुरोहित की आवश्यकता है, जो सभी संस्कार सम्पन्न करा सके साथ ही मधुर संगीत के साथ उपदेश भी दे सके। मकान किराया सहित दक्षिणा कितना देय होगी —सभी विवरणों के साथ शीघ्र आवेदन करें

—लक्ष्मीनारायण भार्गव, मन्त्री
आर्यसमाज शिवाजी चौक खण्डवा 450001

डी ए वी कौलेज कागड़ा

प्रि० आशापुरी एव प्रि० रेणु कोचर प्रो० वेद व्यास की अगवानी कर रही हैं। प्रि० रमेश जीवन तथा प्रि० दयाकृष्ण महाजन भी साथ मे चल रहे हैं।

डी ए वी स्कूल गगन विहार, दिल्ली

रामकृष्णपुरम तथा गगन विहार डी ए वी की सास्कृतिक सध्या के अवसर पर स्कूल के प्रबन्धक श्री रामनाथ सहगल के साथ स्कूलो के अध्यापक अध्यापिकाए

यू० 108/81 लायसेंस टू पोस्ट विदाउट प्रिपेमेंट
रजिस्ट्रेशन न० आर० एन० आई० 39/57
Delhi Postal Regd. No D (C) 409
N D. PSO ON 27/28 4-88 1 मई 1988

आर्य प्रादेशिक सभा का वार्षिक अधिवेशन 29 मई को

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन रविवार 29 मई 1988 को प्रात 10 बजे से आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के सभागार मे होगा। इस वर्ष प्रादेशिक सभा के लिये वर्ष 1988, 89, 90 (तीन वर्ष) के लिये सभी आर्यसमाजों से प्रतिनिधि चुनकर आने हैं।

सभा से सम्बन्धित समस्त आर्य समाजो को 'क" "ख" फार्म भिजवा दिये गये हैं। "क' फार्म पर आर्य समाजों के सभी सदस्यो के नाम तथा पते एवं वार्षिक चन्दे का उल्लेख होगा और "ख" फार्म पर उन प्रतिनिधियो के नाम पते होंगे जो सभा के वार्षिक अधिवेशन में भाग लेंगे। सभा को वर्ष 1987 88 का दशांश भिजवाना आवश्यक है। यदि किसी आर्य समाज के पास "क' "ख" फार्म नहीं पहुंचे हैं तो वे सभा कार्यालय को सूचित कर फार्म मंगा लें।

जिन समाजों ने ऋषि निर्वाण (दिवाली) और ऋषिबोध पर्व (शिवरात्रि) के लिए धन एकत्र किया है वे भी सभा कार्यालय को शीघ्र धन भिजवाने की कृपा करें।

समस्त आर्य समाजो से प्रार्थना है कि वे अपनी अपनी आर्य समाज की वार्षिक रिपोर्ट एवं आय व्यय का ब्योरा एक सप्ताह के अन्दर भिजवाने की कृपा करें ताकि वह ब्योरा सभा की वार्षिक रिपोर्ट मे प्रकाशित किया जा सके।

—राम नाथ सहगल, मन्त्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग

नेत्र चिकित्सालय का उद्घाटन

श्री प० आशानन्द जी भजनोपदेशक द्वारा 51 हजार रु० की राशि के दान से उत्साहित होकर अन्य दानियों के सहयोग से शिवाजी पार्क शाहदरा मे ... प्रात 9 बजे यज्ञ के पश्चात् नेत्र चिकित्सालय का उद्घाटन होगा।

कन्या गुरुकुल दाधिया के लिए बस

आर्य कन्या गुरुकुल ... 15 मई 1988 को समारोह पूर्वक मनाया ज... 15 मई को प्रात 10 बजे ... मी० है। दिल्ली से ... 'अनारकली" मन्दिर मा... तथा भोजन का प्रबन्ध ... भाग व्यय पचास रु० होगा। जो यात्री ... ठा० यशपाल के पास अपनी राशि जमा करवा के अपने ... लें। उन्हें 14 मई को अपराह्न 3 बजे आर्य समाज "अनारकली" ... विदाई एवं जलपान का आयोजन किया जायेगा।

—घनश्याम आर्य निबर आर्य समाज "अनारकली", मन्दिर मार्ग नई दिल्ली

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का त्यागपत्र अस्वीकार

17 अप्रैल को आर्यसमाज दीवानहाल में हुई सार्वदेशिक की अन्तरंग सभा ने श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के त्यागपत्र को अवैधानिक और आर्य समाज के लिए अहितकर समझकर अस्वीकार कर दिया है। यतिमण्डल के अध्यक्ष श्री सर्वानन्द जी महाराज ने 23 मार्च के पत्र में आनन्द बोध जी को लिखा है—"मैंने जिस प्रेम से आपमे सभा प्रधान पद से त्यागपत्र देने को कहा था उसी प्रेम से आपने उसे तुरन्त स्वीकार किया था। अब आर्य समाज के हित को दृष्टि मे रखते हुए जैसा आपका आत्मा स्वीकार करे, कीजिए।"

श्री पं० भगवद्दत्त वेदालंकार दिवंगत

गुरुकुल कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक, श्री प० बुद्धदेव विद्यालंकार के बहनोई, देवताओ के सम्बन्ध मे अनेक पुस्तको के प्रणेता, वैदिक रिसर्च स्कालर श्री भगवद्दत्त वेदालंकार का ज्वालापुर मे 75 वर्ष की आयु मे अकस्मात् हृदयगति रुक जाने से अप्रैल के प्रथम सप्ताह मे देहावसान हो गया।

डी ए वी संस्थाओं के प्रिंसपल महोदयों से निवेदन

डी ए वी कालेज ट्रस्ट एण्ड मैनेजमेंट सोसायटी की स्थापना करने वाले महानुभावो ने उसके संविधान मे आयुर्वेद के महत्व पर जोर दिया था। जालन्धर शहर मे हमारा आयुर्वेदिक कालेज चल रहा है जो मूलत. 1898 मे लाहौर मे शुरू हुआ था। गुरुनानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर से सम्बन्धित यह हमारी गौरवशाली संस्था है। यहा से प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले वैद्य समस्त उत्तर भारत में विद्यमान हैं और उनकी प्रैक्टिस खूब अच्छी चल रही है। इस कालेज की आयुर्वेदिक फार्मेसी बहुत ही उपयोगी आयुर्वेदिक औषधियों का निर्माण कर रही है। उनका मूल्य भी अधिक नहीं है। डी ए वी संस्थाओ के सभी प्रमुख से प्रार्थना है कि वे अपनी संस्थाओं के माध्यम से इन आयुर्वेदिक औषधियों को लोकप्रिय बनाने का प्रयत्न करें। इसके लिए डी ए वी फार्मेसी द्वारा निर्मित आयुर्वेदिक औषधियों का समुचित स्टाक अपने यहा रखे और कार्यालय के किसी कर्मचारी को उनकी बिक्री का काम सौंपे। उस कर्मचारी को बिक्री पर साधारण कमीशन अथवा कुछ मासिक भत्ता दिया जा सकता है। आप मैनेजर, आयुर्वेदिक फार्मेसी, डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति, चित्रगुप्त मार्ग, नई दिल्ली से भी सम्पर्क कर सकते हैं।

वेद व्यास,
प्रधान डी० ए० वी० कालेज ट्रस्ट एण्ड मैनेजिंग कमेटी,
चित्र गुप्ता रोड, नई दिल्ली।

दवाइयों की सूची

1 अंगूरासव	450 मि० रु० 16	6 ब्राह्मी घृत	100 मि० रु० 20
2 द्राक्षासव	450 मि० रु० 16	7. ब्राह्मी तेल	100 मि० रु० 8
3 फलासव	450 मि० रु० 18	8 महामृगराज तेल	100 मि० रु० 15
4 च्यवनप्राश	500 ग्राम रु० 25	9 लवण भास्कर	100 ग्राम रु० 8
	1 कि० रु० 48	10. स्वादिष्ट पाचक चूर्ण	100 ग्राम " 8
5 देसी चाय	100 ग्राम रु० 6	11 चन्द्रप्रभावटी	50 ग्राम " 23
	200 ग्राम रु० 11	12 महायोगराज गुग्गुल	100 ग्राम " 14

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाड़ी धीरज (फोन 527335) दिल्ली से छपवाकर कार्यालय आर्य जगत् मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 (फोन 343718)

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य —30 रुपये | विदेश मे 65 पौ० या 125 डालर | वर्ष 51, अक 19 | रविवार 8 मई, 1988 | दूरभाष : 3 4 3 7 18

आजीवन सदस्य-251 रु० | इस अक का मूल्य— 75 पैसे | सृष्टि सवत् 1972949089, | दयानन्दाब्द 163 | ज्येष्ठ कृ०-7, 2045 वि०

पंजाब को खास दर्जा यानी खालिस्तान को मंजूरी

पिछले कुछ दिनो से यह चर्चा चल रही है कि कश्मीर की तरह पजाब को भी विशेष दर्जा देकर उसकी समस्या हल की जाए। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और अ० भा० हिन्दू शक्ति दल ने इस बात का विरोध किया है और कहा है कि यह देश की अखण्डता के लिए खतरनाक है—पजाब को विशेष दर्जा देने का अर्थ खालिस्तान के अस्तित्व को स्वीकार करना है।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, गोस्वामी गिरधारीलाल, श्री हरदयाल देवगुण और श्री वीरेन्द्र हिन्दू ने अपने वक्तव्य मे कहा है कि पण्डित नेहरू ने कश्मीर के सम्बन्ध मे जो गलती की थी उसका नतीजा पूरा देश आज भी भुगत रहा है। पिछली भूलो से सबक लेने के बजाय उन्हे दोहराना देश के विघटन का रास्ता खोल देना है। सरकार की इस नीति से हमे अपने ही देश मे एक राज्य से दूसरे राज्य मे जाने के लिये पासपोर्ट या वीसा लेना पडेगा।

अब रोडे की भी खैर नहीं : शरणार्थियों की सहायता के लिए फिर आर्य समाज आगे आया

रोडे की भी खैर नहीं

पथक कमेटी ने पहली बार अकाल तख्त के जत्थेदार जसवन्त सिह रोडे को धमकाया है कि यदि वे खालिस्तान के लिए लडने को आमादा नही होगे, तो उनकी खैर नहीं। कमेटी ने कहा है कि बातचीत का मुद्दा केवल खालिस्तान होगा—इसके बिना सिखपथ की ओर से किसी को बातचीत का अधिकार नहीं होगा। अपनी रिहाई के बाद श्री रोडे ने अब तक खालिस्तान का नाम नहीं लिया है और यह भी कहा कि सरबत खालसा के प्रस्तावो की समीक्षा की जायेगी। पथक कमेटी को रोडे का यह बयान नागवार गुजरा है।

शरणार्थियों का पलायन

सीमावर्ती चारो जिलो के देहातो से शरणार्थियो का पलायन शुरू हो गया है। व्यास नदी के पार के इलाको मे आतक की छाया बहुत गहरी है। वहा हिन्दू और सिख कोई भी सुरक्षित नहीं हैं। इसलिये गांवों से पलायन कर लोग शहरों मे आ रहे हैं। कई परिवार दिल्ली, हरियाणा और उत्तर प्रदेश मे गए हैं, पर अधिकाश परिवार अभी तक पजाब छोडने के पक्ष मे नहीं हैं। दिल्ली मे कुछ परिवारो ने आर्यसमाज दीवानहाल मे शरण ली है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने राज्य की सब समाजो को निर्देश दिया है कि इन शरणार्थियो की सहायता के लिये सब आर्यसमाज मन्दिरो के द्वार खोल दिये जाए और जब तक उनकी कोई अन्य बेहतर व्यवस्था नहीं हो जाती या पजाब की हालत नही सुधरती, तब तक उनके भोजन और निवास की व्यवस्था आर्य समाज की ओर से की जाये। यदि कोई आर्य समाज ऐसे निराश्रित परिवारो को अपने यहा ठहराए और उनकी सहायता करने में अपने को असमर्थ पाता हो तो पजाब सभा उनके भोजन और कपडे का सारा व्यय वहन करेगी।

सभा प्रधान ने अपने वक्तव्य में यह भी कहा है कि हमने जालन्धर की नीलमहल स्थित सेवासदन सस्था के अधिकारियो से बात की है। वे अपने यहा 6 वर्ष से ऊपर की 25 निराश्रित लडकियो को और 25 विधवाओ को रखने को तैयार हैं। उनका सारा व्यय सेवासदन उठाएगा। वे अपने यहा लडको को नही रखते।

उन्होंने समस्त आर्य बन्धुओ से आर्थिक सहायता की अपील करते हुये कहा है कि आर्य समाज के लिए जनता की सेवा का जब जब अवसर आया है, वह कभी पीछे नही रहा, अब भी उसे इस सकट के समय पीछे नही रहना चाहिए।

लज्जारानी गोयल का सम्मान व पुरस्कार

महिला आर्य समाज माटुंगा बम्बई की सचालिका, दयानन्द बालिका विद्यालय की सस्थापिका महिलाओ के उत्थान के लिए अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमो की आयोजिका, प्रसिद्ध समाज सेवी श्रीमती लज्जारानी गोयल को महाराष्ट्र के राज्यपाल की पत्नी श्रीमती रेड्डी ने 11,000 रु० के पुरस्कार के अतिरिक्त 'राजस्थान 88' और 'नाहर सम्मान पुरस्कार' की ओर से एक विशेष स्वर्ण-पदक भी प्रदान किया।

1984 के दंगों के अल्पसंख्यक मुजरिमो के विरुद्ध मामले वापिस लिए जाएंगे ?

वर्ष 1984 के दगो से सम्बद्ध अल्पसख्यको के खिलाफ अभी तक जो मुकदमे चल रहे हैं, दिल्ली प्रशासन उन्हे वापस लेने पर विचार कर रहा है। राजधानी मे साम्प्रदायिक सौहार्द को पूरी तरह से कायम करने और अल्पसख्यको का विश्वास प्राप्त करने के लिए ऐसा किया जा रहा है।

गत वर्ष ऐसे ही कुछ मामले वापस ले लिए गए थे, लेकिन अभी लटके पडे हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार लगभग चालीस मामले दिल्ली के न्यायालयों मे चल रहे हैं। अधिकाश मामलो मे अभियुक्तो का यही कहना है कि 1984 के दंगो के दौरान उत्तेजित भीड से अपने को बचाने के लिए ही उन्हें गोली चलानी पडी थी। इन मामलो को एक साथ वापस लिया जाएगा या थोडे थोडे समय के अन्तराल से एक-एक करके वापस लिया जाएगा इस पर फिलहाल विचार विमर्श जारी है।

दिल्ली के सिख नेता अपनी अन्य मांगो के साथ साथ इस बात पर भी जोर देते रहे हैं कि अल्पसख्यको के खिलाफ 1984 के दगो से सम्बद्ध जो भी मुकदमे हैं वे तत्काल वापस ले लिए जाए, ताकि सिखो मे प्रशासन के प्रति पुन विश्वास कायम हो सके।

सम्पादक—क्षितीश वेदालकार

व्यवस्थापक—रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

अद्‌भुत वैदिक यज्ञ विधि [13]

प्राजापत्याहुति का रहस्य

—आचार्य वेद भूषण अधिष्ठाता अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान—

(1 मई के अक से आगे)

स्विष्टकृत् आहुति के पश्चात् अब प्राजापत्य आहुनि पर विचार करेंगे।

यज्ञ में जितने भी म त्र पढे जाते हैं उनमें यह मन्त्र सबसे छोटे मन्त्रो मे ही माना जाता है। आधारावाज्यभागाहुति के मन्त्र पूर्ण यज्ञ का सक्षिप्त रूप हैं। उन मन्त्रो मे भी तीसरे क्रम पर प्राजापत्याहुति का ही मन्त्र पढा जाता है। पर वहा इसका सदर्भ वायुमडल के जल के लिए है। यहा जो प्राजापत्याहुति का मन्त्र है वह उस परम प्रजापति प्रजाओ के स्वामी परमेश्वर को स्मरण रूप मे है। इसीलिए इससे मौन घृताहुति का विधान है।

ब्रह्मचर्याश्रम मे जहा ब्रह्मचारी का मुख्य कर्त्तव्य ज्ञानजन है वहा परमात्मा के बृहस्पति स्वरूप का स्मरण किया जाता है और गृहाश्रम मे परमात्मा के प्रजापति स्वरूप का विशेष स्मरण किया जाता है। प्रजापति स्वरुप मे परमात्मा का स्मरण दो रूपो मे होता है! प्रथम रूप तो यह है कि—हे पिता आप ही हमे जन्म देने वाले हो। हम आपके प्रजा रूप हैं और आप हमारे स्वामी अथवा पति रूप हो, हम आपका अपने जनक के रूप मे स्मरण करते हैं।

इस आहुति का दूसरा एक विशेष रूप भी है। प्रथम सामान्य रूप है सभी के लिए समान है। इस प्रथम रूप मे ही मौन होकर स्वाहा कहकर आहुति देनी होती है।

जब मौन हो, तब प्रभु का एक क्षण अपने जनक के रूप मे स्मरण कर पूर्ण समर्पण भाव से स्वाहाकार करना चाहिए। दूसरे स्वरूप में गृहस्थ जन प्रभु से इस भावना से युक्त होकर प्रार्थना करते हैं कि—हे प्रजापति देव! आप हमे भी अपने समान ही प्रजापति बना दीजिए। हमे भी उत्तम सन्तान दीजिए। इस दूसरो सन्तान कामना के रूप मे जब इस मन्त्र से स्वाहाकार होगा तो वहा मौन आहुति न होकर प्रार्थना रूप मे आहुति दी जाएगी और ऐसी आहुति प्राय स्विष्टकृत् से पहले ही इस मन्त्र का उच्चारण करके दी जाएगी।

इस व्यवस्था को समझने के लिए समस्त सस्कारो मे इसका कहा कैसा विनियोग है, उस पर दृष्टि पात करना होगा। देखिए सर्वप्रथम गर्भाधान सस्कार—

इस प्रथम सस्कार मे जहा भात की छह विशेष आहुतियो का विधान हैं, वहा प्रथम—ओ प्रजापतये स्वाहा। इद प्रजापतये इदन्नमम। इससे पाचवें क्रम पर प्रथम आहुति देकर पश्चात् 'यदस्य कर्मणो' का विधान किया गया है।

दूसरा सस्कार पुसवन सस्कार है—इसमे भी सस्कार के विशेष मन्त्रो मे सर्वप्रथम प्राजापत्याहुति से ही प्रथम आहुति देकर तदनन्तर स्विष्टकृत् का विधान है।

तीसरे सस्कार सीमन्तोनयन मे विशेष मन्त्रो की आहुति के बाद प्रथम प्रजापतये स्वाहा से आहुति का विधान है, बाद में स्विष्टकृत् मन्त्र का।

महर्षियो की दृष्टि कितनी सूक्ष्म और कितनी व्यावहारिक थी इसे वह व्यक्ति ही जान सकता है जो गभीरता से इन विधियो को जानता है!

चौथा सस्कार जातकर्म सस्कार है। गृहाश्रमी की तपस्या आज फली भूत हुई है। आज उसकी प्राजापत्याहुति द्वारा निरन्तर की जा रही प्रार्थना फली भूत हो गई है। अत आज के प्रसग मे इस मन्त्र से आहुति की अब आवश्यकता नही रही। इसीलिए इस सस्कार मे उक्त प्राजापत्याहुति का विशेष विधान नही किया गया।

इसके बाद पाचवें क्रम पर नामकरण सस्कार है—इस सस्कार मे पुन सस्कार की विशेष आहुति आरम्भ करने से पूर्व सर्वप्रथम प्राजापत्याहुति का विधान किया गया है।

छठे निष्क्रमण सस्कार मे 'यदस्य कर्मणो' के पश्चात् सामान्य रूप मे प्रजापति प्रभु का मौन धन्यवाद किया गया है! नामकरण सस्कार तक माता-पिता का सस्कारो से विशेष सम्बन्ध है। निष्क्रमण से बालक का सम्बन्ध विशेष हो जाता है। इसमे भी प्रथम स्विष्टकृत् आहुति है, पश्चात् प्राजापत्याहुति, जैसा कि सामान्य प्रकरण मे मौन करके देने का विधान है।

अन्न प्राशन सातवा सस्कार है—इस सस्कार का सम्बन्ध प्रजापति से न होकर अन्नपति से विशेष है। यहा इसीलिए इस प्राजापत्याहुति का विधान नही किया गया! अन्नपति के रूप में प्रभु से प्रार्थना की गई है।

आठवा सस्कार चूडा कर्म सस्कार है—इसमे परमात्मा के बृहस्पति स्वरुप का विशेष स्मरण है अत इस सस्कार में भी प्राजापत्याहुति नही है।

नौवा सस्कार कर्ण वेध सस्कार है। इसमे स्विष्टकृत् प्रथम है पश्चात् मौन करके प्राजापत्याहुति है!

दसवा सस्कार उपनयन [यज्ञोपवीत] सस्कार है इसमे भी बालक प्रथम स्विष्टकृत आहुति देगा। पश्चात् मौन करके प्राजापत्याहुति देगा!

ग्यारहवें वेदारम सस्कार मे भी प्राजापत्याहुति स्विष्टकृत के बाद है जो मौन करके दी जाएगी!

बारहवा समावर्तन सस्कार है, जब ब्रह्मचारी स्नातक होकर गुरुकुल से घर वापस लौटता है। इस सस्कार में भी प्रथम स्विष्टकृत् पश्चात प्राजापत्याहुति है!

तेरहवा सस्कार है विवाह सस्कार! इस संस्कार का प्रमुख उद्देश्य ही है सुसन्तान को जन्म देकर उसका आदर्श रूप मे निर्माण करना।

इसीलिए यहा लाजा होम के पश्चात् वर—'ओ प्रजापतये स्वाहा, इद प्रजापतये इद न मम—इस मन्त्र से घृत की आहुति देता है।

यहा यही आहुति वास्तव में विवाह सस्कार की अन्तिम आहुनि है। पुन विवाह का क्रिया विधान व आशीर्वाद करके इस प्राजापत्याहुति के बाद स्विष्टकृत् आहुति देकर चार व्याहृति आहुति देकर पूर्व विधि समाप्त की जाती है।

उत्तर विधि मे विशेष आहुतियो मे अग्नये स्वाहा के बाद दूसरी आहुति पुन प्रजापतये स्वाहा की ही हैं।

इससे भी स्पष्ट है कि—जहा सतान प्राप्ति उद्देश्य है वहा प्रजापतये स्वाहा की आहुति स्विष्टकृत् से पूर्व दी जाती है और उच्चारण पूर्वक दी जाती है। जहा परमात्मा को प्रजापति के रूप में मानकर आहुति दी जाएगी वहा मौन आहुति होगी और वह स्विष्टकृत् के बाद ही होगी।

चौदहवें सस्कार वानप्रस्थ मे तो प्राजापत्याहुति से आहुति का विधान ही नही है।

सन्यासाश्रम मे प्रवेश करते समय अन्तिम बार यज्ञ मे सन्यासी तीन विशेष आहुतियाँ देता है उसमे प्रथम आहुतिओं भुवन पतये स्वाहा। दूसरी ओ भूताना पतये स्वाहा और तीसरी ओ प्रजापतये स्वाहा! इस आहुति के बाद भी और भिन्न स्थानो पर और तीन बार प्रजापति परमात्मा के रूप मे उन्ही का स्मरण कर आहुति देना है।

यहा इस आहुति का अनेक बार देना एक विशेष कारण से है। क्योकि—सन्यासी अब सबका सहारा छोडकर केवल मात्र प्रभु के सहारे ही सन्यास ले रहा है। अब चारो दिशाओ मे उसका पालन पोषण करने हारे तो प्रभु ही है, वह प्रजापति के ही आश्रित हो रहा है।

सोलहवें अन्तिम सस्कार अन्त्येष्टि मे तो प्रसग ही देहावसान का है। वहां प्रजापति का सन्दर्भ ही नही है। क्योकि 'प्रजा' शब्द का सदर्भ ही देह युक्त जीवन से है। वहा मृत्यु का प्रसग है, जन्म का नही, अत वहा इस मन्त्र से आहुति का विधान नही है।

इस प्रकार समस्त सस्कारो की विधि पर दृष्टि पात करने से स्पष्ट हो जाता है कि—जब स्विष्टकृत् से पूर्व या स्वतन्त्र रूप मे इस मन्त्र का उल्लेख होगा वहा इस मन्त्र का उच्चारण करके आहुति देनी है, और जहा स्विष्टकृत् के बाद इससे घृताहुति देनी है तब मौन होकर आहुति दी जाएगी।

प्रत्येक स्थान पर भिन्न-भिन्न प्रसगो मे इस मन्त्र के भाव भी भिन्न-भिन्न ही हैं, इसे भली-भांति समझकर ही इस मन्त्र से आहुति दी जानी चाहिए!

इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि जब मौन आहुनि दी जाए तो क्षण भर मौन होकर उस विराट् प्रजापति परमात्मा का अत्य त श्रद्धापूर्वक अन्त करण से स्मरण कर फिर आहुति दी जानी चाहिए। मौन आहुति का यह अभिप्राय नही है कि—मन्त्र पढा ही न जाए, और ओ स्वाहा कहकर आहुति दे दी जाए। बल्कि विशेष रूप से परमात्मा का स्मरण करना ही मौन आहुति का ध्येय है।

प्रजापति शब्द का यज्ञ से गहरा नाता है। इसमे पालन पोषण की विशेष भावना है। वह भावना याज्ञिक भावना है। निर्माण करना, उत्पादन करना, पालन पोषण करना इन समस्त भावो का प्रजापति से गहरा नाता है।

प्रजापतित्व का स्वरूप ही यजमान का स्वरुप है यज्ञकर्ता का स्वरुप है।

प्रभु पिता परमेश्वर ने सृष्टि का निर्माण प्रजापति भाव से ही किया है। प्रत्येक याज्ञिक को जीवन यज्ञ मे इस भावना को धारण करना होता है। इसलिए यज्ञ कर्म मे इस मन्त्र का विशेष महत्त्व है—

पता—वेद मन्दिर, महर्षि दयानन्द मार्ग, हैदराबाद 27 (आन्ध्र प्रदेश)

❀

सुभाषित

सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै ।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥
—बृहदारण्यकोपनिषद्

गुरु और शिष्य दोनों मिलकर पाठ प्रारम्भ करने से पूर्व कहते हैं—'हमारा अध्ययन और अध्यापन हमें आत्म रक्षा में समर्थ बनावे, हमें भोजनाच्छादन के लिए निराश्रित न होना पड़े, हम मिलकर सामाजिक पराक्रम कर सकें, हमारी विद्या हमें जीवन संग्राम में विजयी और तेजस्वी बनावे और हम समाज में से द्वेष भावना निकाल कर उसे राष्ट्र की प्रगति में सहायक बना सकें ।'

सम्पादकीयम्

अनुकरणीय कदम

वैज्ञानिकों ने पशुओं, पक्षियों, नाना पेड़ पौधों और फल-फूलों की अच्छी किस्में तैयार करने के लिए बड़ा भारी परिश्रम किया है। गेहूं और चावल जैसे अनाजों और दलहनों की भी अधिक से अधिक उपज देने वाली किस्में तैयार करने के लिए होड़ लगी हुई है। परन्तु आज तक मनुष्य के निर्माण की विद्या का किसी वैज्ञानिक ने आविष्कार नहीं किया। यह काम भारत के प्राचीन ऋषियों ने किया। वैदिक धर्म का सारतत्व केवल इसी एक बात में निहित है कि वह सामान्य मनुष्य को उत्तम मनुष्य (आर्य) बनाने की विधि सिखाता है। स्वयं वेद ने 'जनाय दैव्यं जनं' कहकर मनुष्य को दिव्यगुणों से सम्पन्न बनाने की ओर संकेत किया है। इसी में मानव जीवन की सार्थकता है।

मनुष्य निर्माण की इस प्रक्रिया के रूप में ही जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त 16 संस्कारों का विधान है। ये संस्कार मात्र कर्मकाण्ड का अंग नहीं हैं प्रत्युत उत्तरोत्तर मनुष्य को श्रेष्ठ से श्रेष्ठतर बनने की ओर अग्रसर करने की विधि हैं। मनोविज्ञान की दृष्टि से भी मनुष्य का निर्माण दो ही बातों पर निर्भर है—आनुवंशिकता और पर्यावरण (हैरेडिटी एण्ड एनवायरनमेंट)। आनुवंशिकता को नियन्त्रित करना हमारे हाथ में नहीं है। हालांकि सूक्ष्म रूप से विचार किया जाए तो पूर्ण ब्रह्मचर्य धारण करने के पश्चात् युवक और युवतियों के विवाह के माध्यम से उस आनुवंशिकता को भी प्रभावित किया जा सकता है। परन्तु पर्यावरण तो पूरी तरह से हमारे हाथ की बात है। अध्यात्मवादी लोग जहां आनुवंशिकता पर अधिक जोर देते हैं, वहां भौतिकवादी लोग पर्यावरण पर अधिक जोर देते हैं। जबकि अभीष्ट फल की प्राप्ति में इन दोनों का ही महत्वपूर्ण स्थान मानना चाहिए। जबसे मानवजीवन में जीन्स के प्रभाव की खोज हुई है, तब से आनुवंशिकता का भी महत्व बढ़ गया है। परन्तु फिर भी वैज्ञानिकों का सारा जोर अभी तक पर्यावरण को ही अपने अनुकूल बनाने पर है।

पर्यावरण पर जितना जोर हम भौतिक पदार्थों के बारे में देते हैं, उतना ही जोर मानव के लिए उसकी उपयोगिता पर क्यों नहीं देते ? औद्योगिक सभ्यता के कारण प्रकृति में दिन प्रतिदिन होते जाने वाले विपर्ययों की ओर संसार के बुद्धिजीवियों में नई चेतना जागी है और पर्यावरण के प्रदूषण को रोकने के लिए आंदोलन भी चल रहा है। परन्तु मानव निर्माण की दिशा में अनुकूल पर्यावरण के प्रति चेतना का वहां भी अभाव है।

संस्कार क्या हैं ? मनुष्य का शारीरिक और मानसिक तथा सामाजिक वातावरण तैयार करने की विधा ही तो है। इसीलिये वैदिक धर्म में संस्कारों को इतना महत्व दिया गया है। यह भी ऋषि दयानन्द का महान उपकार है कि संस्कारों के सम्बन्ध में समस्त हिन्दू समाज में जो अराजकता और उच्छृंखलता फैली हुई थी उसका निराकरण करने के लिये उन्होंने 'संस्कारविधि' जैसा अद्भुत ग्रंथ तैयार करके समस्त संस्कारों की एक संहिता तैयार कर दी। अब उसमें कहीं स्वैराचार की गुंजाइश नहीं रही। सारा हिन्दू समाज उस विधि-विधान को अपना कर मनुष्य निर्माण की इस विधि से लाभ उठा सकता है। हिन्दू समाज ही क्यों ? हम तो कहेंगे—समस्त मानव समाज। क्या चिकित्सा की कोई पद्धति किसी देश-विशेष या वर्ग-विशेष के लिए होती है ? चाहे ऐलोपैथिक पद्धति हो, चाहे होम्योपैथिक, चाहे आयुर्वेदिक और चाहे हिकमत—क्या इनमें से कोई पद्धति केवल भारतीयों, यूरोपीयों या किसी देश-विशेष के लोगों के लिए ही लाभदायक है ? ये समस्त पद्धतियां मानव मात्र के लिए हैं। उसी प्रकार संस्कारों के माध्यम से मनुष्य-निर्माण की यह पद्धति भी समस्त मानव समाज के लिए है।

शिक्षा ग्रहण करने को मनुष्य का दूसरा जन्म कहा जाता है। जब तक गुरु के चरणों में बैठकर मानव ज्ञान प्राप्त नहीं करता तब तक वह द्विजन्मा (अर्थात द्विज) नहीं बनता, संस्कार-शून्य, (शूद्र) ही बना रहता है। इसीलिए वेदारम्भ संस्कार और उपनयन संस्कार को दूसरे जन्म की दीक्षा का अवसर माना जाता है। उपनयन का अर्थ है—विद्यार्थी का गुरु के समीप जाना और वेदारम्भ का अर्थ है—वेद अथवा ज्ञान को ग्रहण करने की दीक्षा लेना। प्राचीन गुरुकुलों में ब्रह्मचारी जब गुरुकुल में जाता तो इन दोनों संस्कारों के पश्चात् ही गुरु के सान्निध्य में उसकी शिक्षा प्रारम्भ होती। यह शिक्षा केवल पुस्तक सम्बन्धी या शास्त्रीय ज्ञान तक ही सीमित नहीं रहती। परन्तु समस्त दिनचर्या और जीवनव्यापी आचार विचार को परिष्कृत करने से भी जुड़ी होती थी। आचार्य को 'आचार्य' इसलिए कहा जाता था, क्योंकि वह अपने शिष्यों को आचारवान् बनाने की जिम्मेवारी मुख्य रूप से ग्रहण करता था। ऋषि दयानन्द ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की ओर दिशा-निर्देश करके और स्वामी श्रद्धानन्द ने उसे क्रियात्मक रूप देकर इस युग में पुनः उसे प्रचलित किया। गुरुकुलों में अब भी यथाविधि वेदारम्भ और उपनयन संस्कार की प्रथा प्रचलित है। गुरुकुल से भिन्न अन्य संस्थाओं में इन संस्कारों का स्थान नहीं है।

कान्वेंट स्कूलों के मुकाबले में आर्य समाज ने डी ए वी के माडल स्कूलों और पब्लिक स्कूलों का सिलसिला शुरू किया। वे खूब लोकप्रिय भी हुए। अब तो जैसे सारे देश में इस प्रकार के डी ए वी पब्लिक स्कूलों को खोलने की मांग दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। यह एक शुभ लक्षण है। भारत की नई पीढ़ी को विदेशी और विधर्मी संस्कृति से बचाकर अपनी संस्कृति के अनुरूप शिक्षा देना, उनमें नैतिकता और राष्ट्रीयता की भावना भरना और उनको वैदिक धर्म के प्रति आस्थावान् बनाना बहुत आवश्यक है। आज की नई पीढ़ी जिस प्रकार दिशाहीन हो रही है उसको दिशा देने के लिए स्कूलों की यह नई परम्परा बहुत आवश्यक है। क्या यह हमारे लिए लज्जा की बात नहीं है कि विदेशी और विधर्मी लोग मैकाले के बताए रास्ते पर चल कर हमारे बच्चों को हमारे लिए ही अजनबी बनाते रहें और हम लाचार होकर इस विडम्बना को चुपचाप देखते रहें ? सरकार के भरोसे बैठे रहने से बात नहीं बनेगी। सरकार में जितने लोग बैठे हैं उनके पास वह दृष्टि ही नहीं है। वे तो भारत को "इण्डिया" बनाने पर तुले हुए हैं। भारत को 'भारत' ही बनाए रखने के लिए और उसको आधुनिक ज्ञान-विज्ञान से सम्पन्न बनाने के लिए हमको स्वयं ही प्रयत्न करना होगा। आर्य समाज और डी ए वी आन्दोलन ने इस दृष्टि से देश का बहुत उपकार किया है।

इन पब्लिक स्कूलों में बच्चों की ड्रेस पर, उनके टिप टॉप रहने पर और बाह्य आडम्बर पर खर्च भी कम नहीं होता। आज के युग में वह सब आवश्यक है। परन्तु हमारी इन संस्थाओं की मूल आत्मा यह बाहरी परिवेश नहीं, बल्कि भारतीय और वैदिक संस्कृति के प्रति निष्ठा ही है। उसकी ओर हमें न केवल विशेष ध्यान देना होगा बल्कि इसके लिए निरन्तर जागरूक भी रहना होगा।

हाल में ही यूसुफ सराय के डी ए वी पब्लिक स्कूल में नर्सरी में दाखिल हुए बच्चों के विद्यारम्भ (पब्लिक स्कूलों के सन्दर्भ में हमें 'वेदारम्भ' को 'विद्यारम्भ' का रूप देना अधिक उचित होगा) संस्कार को देखने का अवसर मिला। किसी भी पब्लिक स्कूल के लिए इस प्रकार के संस्कार की कल्पना करना एक नई बात थी। गुरुकुलों में तो यह परम्परा सर्वत्र जारी है किन्तु किसी पब्लिक स्कूल के सम्बन्ध में अब तक ऐसी बात नहीं सुनी गई थी। छोटे छोटे बच्चे जब पीले रूमाल गले में बांधे अपने गुरुओं और अभिभावकों के साथ इस संस्कार की प्रक्रिया से गुजरे तो उस दृश्य को देखकर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों की सी भावना सहज ही उदित होती थी। यद्यपि संस्कार की प्रक्रिया में आधुनिक सन्दर्भ के अनुसार काफी कुछ संशोधन कर दिया गया था, परन्तु कुल मिलाकर दृश्य बड़ा मनोहर और प्रेरणादायक था। सब बच्चे जब एक साथ मिलकर प्रार्थना मन्त्रों का उच्चारण करते थे तो नए प्रविष्ट होने वाले बच्चे और उनके अभिभावक भी उस वातावरण से प्रभावित हुए बिना कैसे रहते ? वहां की आचार्या ने बच्चों को गायत्रीमन्त्र का उपदेश दिया, नये बच्चों से उसका उच्चारण करवाया। बच्चों के अभिभावक भी किसी न किसी रूप में संस्कार से जुड़े रहे। वहां के प्राचार्य महोदय ने पण्डित विद्यारत्न जी के सहयोग से समस्त कार्यक्रम में पूरी निष्ठा के साथ सहयोग दिया और भविष्य में भी इस परम्परा को जारी रखने का निश्चय किया।

इन्हीं प्राचार्य महोदय ने एक वर्ष पहले 26 जनवरी के अवसर पर गणराज्य दिवस की परेड में, जहां विभिन्न स्कूलों के बच्चे तरह-तरह के सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश करते हैं, अपने स्कूल के बच्चों की ओर से योगासनों का कार्यक्रम किया था। उस समय जहां सभी दर्शकों ने उसे सराहा था वहां समाचार पत्रों में भी वह कार्यक्रम काफी चर्चित रहा था। योगासनों को आश्रमों की चारदीवारी तक ही क्यों सीमित रखा जाए ? उसे भी आम जनता का विषय क्यों न बनाया जाय ?

इन्हीं प्राचार्य महोदय ने अपने स्कूल की ओर से एक वैदिक शिक्षा केन्द्र भी प्रारम्भ किया है जिसके माध्यम से प्रति दो सप्ताह बाद स्कूल के सभागार में ही सायंकाल 5-30 से 6-30 तक आर्य समाज के सत्संग का कार्यक्रम चलेगा। जिसमें किसी न किसी विशिष्ट विद्वान् का व्याख्यान होगा और स्कूल के 11वीं और 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों के अलावा आसपास की अन्य समाजों के नर नारियों को भी आमन्त्रित किया जाएगा। नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी को एक साथ आर्य समाज के सत्संग में शामिल करने की परम्परा शुरू करना ही इसका मुख्य लक्ष्य है।

हम समझते हैं कि ये अनुकरणीय कदम हैं। हमारे अन्य स्कूलों में भी विद्यारम्भ संस्कार और वैदिक शिक्षा केन्द्र की इसी प्रकार की प्रवृत्ति प्रारम्भ हो, तो बहुत अच्छा है। आर्य समाज और डी ए वी के साथ जुड़े जितने स्कूल हैं उनमें इन विशेषताओं को लाना हमारे उस उद्देश्य की पूर्ति में सहायक होगा जिनके लिए इन संस्थाओं को चलाया गया है। ये विशेषतायें ही हमारी इन संस्थाओं को और अधिक सार्थक बनायेंगी।

भारतीयताभियान : दशा और दिशा

हिन्दुओं को न जाति-बोध है, न इतिहास-बोध, न संस्कृति-बोध

— डॉ हर्ष नारायण —

इस भूमण्डल पर हिन्दू प्रेस जैसी कोई चीज नहीं। एक भी दैनिक नहीं जो हिन्दू का प्रतिनिधित्व करता हो, घटनाचक्र के प्रति हिन्दू दृष्टिकोण को प्रतिष्ठापित करता हो। फलत वर्तमान इतिहास के प्रति हिन्दू जाति की कोई आम सहमति बनने नहीं पाती।

अधिकतर दैनिक पत्र जाने या अनजाने हिन्दुत्व-द्वेषी कहे जा सकते हैं। उनमें हिन्दुओं की निन्दा अथवा दोषारोप के लिए कभी स्थानाभाव नहीं होता। किन्तु हिन्दुओं की प्रतिक्रिया के लिए स्थान का सदा अभाव रहता है। अधिकतर साप्ताहिक और मासिक भी हिन्दुत्व निरपेक्ष हैं, और जो दो-चार हिन्दुत्व प्रेमी साप्ताहिक एव मासिक हैं भी उनकी पहुच अत्यन्त सीमित होने से उनमे प्रकाशित सामग्री से सब तक नहीं पहुच पाती। यह विडम्बना हमारे सारे प्रचारतन्त्र को पगु कर देती है। पूरी जाति तो वह सब पढ़ती है जो हिन्दुत्व के प्रति दोष भावापन्न लेखक लिखा करते हैं, जिसके परिणामस्वरुप का हिन्दू आत्मग्लानि का शिकार हो जाता है।

यह सोचकर तो विडम्बना दूनी हो जाती है कि सारा उर्दू प्रेस मुस्लिम प्रेस है। उन्होंने तो एक स्वतन्त्र "मुस्लिम न्यूज-सर्विस" (एम एन एस) की भी स्थापना कर ली है। उसके अतिरिक्त उनका एक शक्तिशाली अग्रेजी प्रेस भी हैं। शहाबुद्दीन का अग्रेजी और उर्दू दोनों भाषाओ मे प्रकाशित होने वाला मासिक 'मुस्लिम इण्डिया' कितना गजब ढा रहा है, इसका अनुमान अनेक प्रबुद्ध हिन्दू नेताओ को भी नहीं है।

मैं समझता हू कि हिन्दुत्व के योग-क्षेम के प्रयत्नो में हिन्दू प्रेस के प्रवर्तन का कार्य सबसे महत्वपूर्ण हैं। जो भी संस्था हिन्दुत्व के प्रतिनिधित्व का दावा करती है उसे इसकी ओर अविलम्ब ध्यान देना चाहिए।

कुछ हिन्दुत्ववादी लेखक पुस्तकें रचकर हिन्दुत्व की रक्षा के प्रति प्रयत्नशील है। किन्तु उनके सामने भी कई विकट समस्याए है। उनकी पुस्तकों के सामने जब्ती और फौजदारी कानून के अन्तगत गिरफ्तारी और अन्य विभीषिका निरन्तर बनी रहती है। आज स्थिति यह है कि इस्लाम के विरुद्ध कलम उठाने में बड़ा से बड़ा लेखक कापने लगता है। हिन्दुत्व के विरोध में स्वयं हिन्दू सबसे आगे रहता है और वह सबसे पूजा भी जाता है। किन्तु इस्लाम पर प्रमाण पुरस्सर, शास्त्रीय (एकेडेमिक) लेख भी लेखक पर हिन्दू-साम्प्रदायिकता के आरोप का द्वार खोल देता है। अभी पिछले 19 दिसम्बर को श्री सीताराम गोयल जैसे प्रसिद्ध लेखक और प्रकाशक को एक अग्रेजी पुस्तक का अनुवाद छापने के आरोप मे गिरफ्तार कर लिया गया था। लेखक ऐसी स्थिति उत्पन्न होने पर अकेला पड जाता है। कोई सस्था उसके आसु पोछने के लिए शासन के पास कोई प्रस्ताव भी नहीं भेजती।

इस सदर्भ मे स्वामी दयानन्द से सम्बद्ध एक घटना स्मृति पटल पर उभरती है। मुरादाबाद निवासी, इस्लाम के मर्मज्ञ मुशी इन्द्रमणि की एक पुस्तक पर तत्कालीन शासन ने जब मुकदमा चलाया तो स्वामी दयानन्द ने प्रिवी काउसिल तक उस मुकदमे की पैरवी करायी, चन्दा इकठ्ठा किया और एक स्थायी निधि की योजना बनाई जिससे इस प्रकार शासन के कोप भाजन लेखकों की सहायता की जा सके। किन्तु आज कोई सस्था स्वामी जी की दूरदर्शिता से लाभान्वित होने की नही सोचती।

होना यह चाहिए कि हिन्दुत्व की पोषक सस्थाए निरन्तर जागरुक रहकर उस सभी साहित्य का पर्यवेक्षण करें जो हिन्दू द्वेष से प्रेरित होकर प्रणीत हो। उसका समुचित उत्तर दिया जावे, और यदि इस सम्बन्ध मे किसी दिशा से किसी प्रकार की बाधा खडी हो तो उसका डटकर मुकाबला किया जाये। आर्य समाज की उस परम्परा का भी पुनः जीवित करने की आवश्यकता है जिसमें विधर्मियों और विसस्कृतियो की पोल खोलकर जाति को उनके गर्त मे गिरने से बचाने के लिए जवाबी साहित्य का निर्माण होता था। इस मार्ग में भी यदि जब्ती, न्यायालयीय कार्यवाही, अथवा गिरफ्तारी का सकट उत्पन्न हो तो उससे भी निपटने का साहस होना चाहिए। जो समाज हैदराबाद सत्याग्रह जैसा सफल अभियान चला चुका हो उसके लिए कोई बडी बात नहीं है।

इतिहास में दृष्टि भेद

जातीय पुनरुत्थान के लिए सही इतिहास बोध की नितान्त आवश्यकता है। आज हिन्दू जाति में वर्तमान घटना गति के प्रति कोई समान दृष्टिकोण उदित नहीं हो पा रहा है। किन्तु इससे भी भयावह स्थिति यह है कि अतीत के इतिहास के प्रति भी हिन्दू जाति में समान दृष्टि बिन्दु नहीं उभर सका है। इतिहास की कोई घटना ले लीजिए। उस पर मतभेद ही मतभेद मिलेगा। 1857 ई० में उत्तर भारत में जो विद्रोह की आंधी आयी थी उसे कोई सिपाही विद्रोह से जन्मा कम्पनी सरकार द्वारा वचित प्रवचित जागीरदारों का विद्रोह कहता है। अन्यों का मत है कि वह स्वाधीनता का प्रथम समर था। इन दोनों दृष्टिकोणो में कितना भारी भेद है। इसी प्रकार अकबर हिन्दुओं का मित्र था अथवा शत्रु इसे लेकर भी उग्र मतभेद पाया जाता है। इसी प्रकार भक्ति-परम्परा जाति के लिए वरदान सिद्ध हुई अथवा अभिशाप, बौद्ध जैन अहिंसावाद जाति के लिए अमृत सिद्ध हुआ अथवा विष, आर्य यहा के मूल निवासी हैं अथवा आगन्तुक, इत्यादि सभी प्रश्न ऐसे हैं जिन पर विचारैक्य का हिन्दुओं मे अभाव दिखायी देता है। जातीय एकता, के लिए समान इतिहास दृष्टि की नितान्त आवश्यकता है। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए हम कुछ नही कर रहे। इतिहास-पुनर्लेखन समितियों के नाम यदा कदा सुनने को मिल जाते हैं किन्तु अभी तक कुछ बना नहीं। अत हिन्दुत्व के समुत्कर्ष का स्वप्न देखने वाली सस्थाओं का परम कर्तव्य है कि वे सब मिलकर एक इतिहास-सकलन समिति का गठन करे जिसकी खोज के परिणाम कम से कम प्रतिवर्ष प्रकाशित हुआ करें।

सांस्कृतिक दृष्टि का अभाव

इसी प्रकार हिन्दू जाति मे सस्कृति बोध की भी कमी खटकती है। आज देश मे शासन, तथोक्त सेक्युलरवादियो, और मुस्लिम समाज की ओर से सम्मिश्र सस्कृति (कम्पोजिट कल्चर) का प्रबल उद्घोष हो रहा है, किन्तु हिन्दू समाज की ओर से इस पर कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं होती। अत: हिन्दू का मस्तिष्क इस विषय में साफ नहीं है कि भारतीय सस्कृति वस्तुत: सम्मिश्र सस्कृति है अथवा कुछ और स्व-सस्कृति की सुस्पष्ट अवधारणा के अभाव में जाति समान सांस्कृतिक दृष्टि का जन्म नहीं हो पा रहा है। इस प्रकार संगठन का सांस्कृतिक आधार भी निर्बल ही है।

अग्रेजों के काल से लेकर अब तक चल रही आधुनिक शिक्षा नीति हमारी धार्मिक सांस्कृतिक चेतना अथवा भारतीयता की चेतना को प्रखर करने के लिए नितान्त अपर्याप्त है, हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों के लिए। मुस्लिम लेखकों को इसका कटु अनुभव है और वे इस कमी की पूर्ति के लिए सस्थाबद्ध रूप से प्रयत्नशील हैं। नदवतुऽल्-उलमा, देवबन्द, सुल्तानुऽल्-मदारिस, मद्रसतुऽल् वाइजीन, दारुल्-मुसन्निफीन, नद्वतुऽल् मुसन्निफीन, मक्तब-ए इस्लामी प्रभृति सौ से अधिक सस्थाए अहर्निश सामयिक इस्लामी साहित्य के प्रकाशन और अध्ययनाध्यापन में प्रवृत्त हैं। किन्तु हिन्दू जाति की ओर से इस प्रकार का कोई प्रभावी सगठित प्रयत्न नहीं। प्रस्तुत सदर्भ मे हम 'हनुमान चालीसा' और रामचरित मानस, अथवा कुर्आन और हदीस छापने वाली सस्थाओं की चर्चा नहीं कर रहे हैं, एतत्कालीन समस्याओं से उलझने के लिए जाति को सम्बल प्रदान करने वाले साहित्य की चर्चा कर रहे हैं। देश मे मुस्लिम मदर्सों और सस्थानों की बाढ़ सी आयी हुई है। किन्तु हिन्दू जाति के पास उस प्रकार की पाठशालाए और धर्म सस्थान नहीं के बराबर है। और तो और, लखनऊ जैसी महानगरी में किसी ऐसे पुस्तकालय का अस्तित्व नहीं है जहां हिन्दुत्व के पुनरुद्धार, पुनर्निमाण और पुनरुद्बोधन में सहायक साहित्य सुलभ हो।

व्रत भावना का अभाव

जातीय उत्कर्ष को सर्वाधिक बल मिलता है जाति में व्याप्त व्रत-भावना से। व्रतबोध के बिना जाति में अभिमानी आत्मा का सचार नहीं हो पाता। मानव शरीर में अनेक प्रकार के अनुशयी जीव पाये जाते हैं। वे जीव शरीर के निष्प्राण हो जाने पर भी विद्यमान रहते हैं, किन्तु उसका अभिमानी जीव एक होता है, जिसका शरीर से बहिर्गत हो जाना ही मृत्यु है। हिन्दू समाज रूपी शरीर मे अभिमानी जीव की कमी प्रतीत होती है। इस प्रकार कहा जा सकता है हिन्दू समाज शरीर है किन्तु उसमे शरीरी नदारद है। व्रत-बोध से ही समाज-शरीर में शरीरी का आधान होता है, व्रत ही उसका शरीरी है, व्रत ही उसका अभिमानी आत्मा है, व्रत ही उसका निजी आत्मा है। इस्लाम के उत्कर्ष के पीछे तौहीद-प्रचार व्रत का हाथ है, ईसाई धर्म के प्रचार के पीछे मानव मात्र को मूलपाप (ओरिजन सिन) से त्राण दिलाने की भावना का हाथ है, मार्क्सवाद के उत्कर्ष के पीछे शोषण विहीन समाज की स्थापना के व्रत का हाथ है। हिन्दू समाज को भी व्रत के

(शेष पृष्ठ 10 पर)

सन् १८५७ की राज्य क्रान्ति के स्मृति दिवस (१० मई) पर विशेष

द्वारिका में अंग्रेजों के छक्के छुड़ाने वाले बाघेर लोग कौन थे ?

—प्रो दयाल—

ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में मूर्तिपूजा को अयुक्तियुक्त बताते हुए महमूद गजनवी द्वारा सोमनाथ के प्रसिद्ध मन्दिर के विध्वंस का मार्मिक वर्णन करते हुए लिखा है—'जब ऊपर की छत टूटी तब चुम्बक पाषाण पृथक् हो जाने से मूर्ति गिर पड़ी। जब मूर्ति तोड़ी तब सुनते हैं उसमें से अठारह करोड़ के रत्न निकले। जब पुजारी और पोपों पर कोड़े पड़े तब रोने लगे। कहा कि कोष बतलाओ। मार के मारे झट बतला दिया। तब सब कोष लूट मार कूट कर पोप और उनके चेलों को 'गुलाम' बिगारी बना, पिसना पिसवाया, घास खुदवाया, मल मूत्रादि उठवाया और चना खाने को दिये। हाय! क्यों पत्थर की पूजा कर सत्यानाश को प्राप्त हुए? क्यों परमेश्वर की भक्ति न की? जो म्लेच्छों के दांत तोड़ डालते और अपनी विजय करते। देखो, जितनी मूर्तियां हैं उतनी शूरवीरों की पूजा करते तो भी कितनी रक्षा होती? पुजारियों ने इन पाषाणों की इतनी भक्ति की परन्तु मूर्ति एक भी उनके सिर पर उड़के न लगी। जो किसी एक शूरवीर पुरुष की मूर्ति के सदृश सेवा करते तो वह अपने सेवकों को यथाशक्ति बचाता और उन शत्रुओं को मारता।"

इसी के आगे ऋषि प्रश्नोत्तर के रूप में लिखते हैं—

"(प्रश्न) द्वारिका जी के रणछोड़ जी जिसने नर्सी मेहता के पास हुंडी भेज दी और उसका ऋण चुका दिया—इत्यादि बात भी क्या झूठ है?"

(उत्तर) 'किसी साहूकार ने रुपये दे दिये होंगे। किसी ने झूठा नाम उड़ा दिया होगा कि श्री कृष्ण ने भेजे। जब संवत् 1914 (अर्थात् सन् 1857 ई०) के वर्ष में तोपों के मारे मन्दिर मूर्तियां अंग्रेजों ने उड़ा दी थीं तब मूर्ति कहां गई थी? प्रत्युत बाघेर लोगों ने जितनी वीरता की और लड़े, शत्रुओं को मारा, परन्तु मूर्ति एक मक्खी की टांग भी न तोड़ सकी। जो श्री कृष्ण के सदृश कोई होता तो इनके धुर्रें उड़ा देता और ये भागते फिरते फिर भला यह तो कहो कि जिसका रक्षक मार खाय उसके शरणागत क्यों न पीटे जायें?"

एकमात्र यही ऐसा सन्दर्भ है जिसमें ऋषि ने सन् 1857 का स्पष्ट उल्लेख किया है। पूर्वापर ऐतिहासिक प्रसंगों से इस सन्दर्भ की पुष्टि होने पर सन् 1857 के इतिहास पर नया प्रकाश पड़ सकता है।

जामनगर के आयुर्वेदिक कालेज में प्राध्यापक और ऋषि दयानन्द के प्रारम्भिक जीवन के सम्बन्ध में अनेक वर्षों तक शोध करने वाले प्रो० दयाल को सत्यार्थ प्रकाश में उल्लिखित उक्त सन्दर्भ का हवाला देते हुए हमने पत्र लिखा था कि वे द्वारिका जाकर बाघेर लोगों के इतिहास की जानकारी प्राप्त करें और यह खोज करें कि ऋषि ने सन् 1857 की जिस घटना की ओर संकेत किया है उस पर उस इतिहास से कुछ प्रकाश पड़ता है या नहीं। प्रो० दयाल जी ने हमारे पत्र के उत्तर में बाघेरों के इतिहास के सम्बन्ध में जो जानकारी भेजी है, वह यहां दी जा रही है।

सत्यार्थ प्रकाश में वर्णित द्वारिका की इस घटना से ऋषि का 1857 से क्या सम्बन्ध हो सकता है?—इस विषय में मैंने बाघेर जाति की उत्पत्ति से वर्तमान तक का इतिहास, द्वारिका मन्दिर, उस पर कितनी बार—किसने तोड़ा—आदि जानकारी एकत्र करने का प्रयत्न किया है। मैंने ऋषि की प्रारम्भिक जीवनी के शोध कार्य में द्वारिका के पण्डों के चोपड़े (रजिस्टर) में आता-जाता, बहुत के नाम और अन्य बातों की जानकारी हेतु भी प्रयत्न किया। उस समय और तदनन्तर भी द्वारिका एकाधिक बार हो आया हूं। कुछ समय पूर्व वहां की पंचायत ने चिकित्सा शिविर रखा था उसमें मैं चिकित्सक रूप में तीन दिन तक वहां रहा था। दो मास पूर्व हमारे कालेज में द्वारिका पुरातत्व विभाग की ओर से एक प्रदर्शनी आयोजित हुई थी। उसके वरिष्ठ अधिकारी डा० राव ने समुद्र में डूबी प्राचीन द्वारिका के पुराने अवशेष आदि भी ढूंढ निकाले हैं। कुछ इतिहासकार वर्तमान द्वारिका को ही प्राचीन मानते हैं। इस विषय में गुजरात के पत्र पत्रिकाओं में पक्ष-विपक्ष में लेख प्रकाशित होते रहते हैं।

बाघेर कृष्ण के द्वारिका बसाने से पूर्व समुद्र तट पर रहने वाली जाति थी। उसका मूल पुरुष कालयवन माना जाता है। अर्जुन को लूटने वाला काबा भी बाघेर था, ऐसा उल्लेख मिलता है। यह जाति समुद्र युद्ध में दक्ष थी। द्वारिका विस्तार 'ओखा मंडल' नाम से ख्यात है। ओखा द्वारिका से 30 कि० मी० की दूरी पर स्थित है। मंडल के चालीस गांवों में बाघेर राजा की सत्ता थी।

सन् 1459 में महमूद बेगड़ा ने द्वारिका का जगत् प्रसिद्ध मन्दिर (रणछोड़ जी का मन्दिर) जो 180 फुट ऊंचा था उसका चालीस फुट भाग तोड़ कर उस पर मस्जिद जैसा मीनार बनायी था। मूर्ति तोड़ डाली थी। उसका एक टुकड़ा आज भी मन्दिर के चौक में विद्यमान है। इस लड़ाई में बाघेर राजा को हारकर भागना पड़ा था।

सन् 1573 में अकबर गुजरात के बादशाह मुजफ्फरशाह को हराकर, कैद कर दिल्ली ले गया था। वह जेल से भाग कर द्वारिका आया उस समय द्वारिका के बाघेर राजा ने आश्रय दिया था।

सन् 1624 में वर्तमान मन्दिर का जीर्णोद्धार हुआ था।

सन् 1804 में ईस्ट इण्डिया कम्पनी सरकार का एक जहाज बंबई से कराची जा रहा था। उसको बाघेर सरदारों ने लूटा और अंग्रेजों को मारा। बंबई की कम्पनी सरकार की नौ-सेना ने द्वारिका पर चढ़ाई की परन्तु वे बाघेरों से हारे। 1807 में बड़ौदा नरेश गायकवाड़ की सहायता से कम्पनी सरकार ने बघेरा से समझौता किया, परन्तु बाघेरों ने उसका पालन नहीं किया। 1816 में ओखा मंडल के बाघेर राज्य को कम्पनी सरकार ने अपने अधिकार में ले लिया। 1817 नवम्बर 6 को कम्पनी ने यह राज्य बड़ौदा नरेश आनन्द राव गायकवाड़ को सौंप दिया। बाघेरों ने पुनः सत्ता-प्राप्ति का 1860 तक बार-बार प्रयास किया। 1820 नवम्बर 6 को गायकवाड़ सहायता से अंग्रेज सैन्य ने बाघेरों से जोरदार युद्ध किया। बाघेर हार गये। बाद में बाघेर लोग लूट डकैती आदि उपद्रवों में लगे रहे।

1857 में कम्पनी सरकार अन्य स्थल पर युद्ध रत रहने के कारण गायकवाड़ की सहायता नहीं कर सकेगी, यह सोचकर द्वारिका में गायकवाड़ के शासनाधिकारी को खदेड़ कर उसने अपनी सत्ता स्थापित कर ली। परन्तु गायकवाड़ की सेना आने पर भागना पड़ा। बाघेरों के उपद्रवों के शमनार्थ 1859 में कम्पनी सरकार ने गायकवाड़ की सहायतार्थ राजकोट, अहमदाबाद बम्बई से भी सेना के साथ कर्नल डोनावन को ओखा भेजा। 4 अक्तूबर को तोपों का घमसान युद्ध हुआ। फिर भी अंग्रेजों को ओखा का किला सर करने में सफलता नहीं मिली। अनेक सैनिकों के साथ कैप्टिन मेक-कोर्मेक और एडवर्ड विलियम जैसे सेनानी मारे गये। दोनों को एक ही कब्र में दफनाया गया। आज भी उनकी कब्र ओखा टापू में स्थित है। दूसरे दिन अंग्रेजों ने पूरे जोश से युद्ध किया, जिससे बाघेर लोग हार कर द्वारिका की ओर भागे। अंग्रेजों ने पीछा किया। 6 अक्तूबर 1859 को विजयादशमी के दिन द्वारिका में तोप के गोले बरसाये गये। कई मन्दिर गिराये गये। रण छोड़ जी के प्रसिद्ध मन्दिर के एक स्तम्भ को क्षति पहुंची। बहुत से बाघेर मारे गये, शेष जंगल में भाग गये।

उस समय बम्बई के वैष्णव महाजनों ने प्रस्ताव पास कर दीपावली न मनाने का निर्णय किया और कम्पनी सरकार के सामने अपना विरोध प्रदर्शित किया। उसकी एक रिपोर्ट टाइम्स आफ इण्डिया के 27 अक्तूबर 1859 में प्रकाशित हुई थी। तदनन्तर बाघेर सरदार जंगल में भटकते रहे। डकैती आदि उपद्रव मचाते रहे। उनका दमन करने का भी अंग्रेज प्रयत्न करते रहे। इस संघर्ष में अनेक अंग्रेज मारे भी गये। उनकी कब्रें आज भी विभिन्न स्थलों पर विद्यमान हैं।

बाघेरों के सम्बन्ध का कोई प्रमाण नहीं मिलता। 1857 में गायकवाड से युद्ध अवश्य हुआ था 1859 में गायकवाड की सहायतार्थ अंग्रेजों ने युद्ध किया था। ऋषि दयानन्द का इस घटना से कोई सम्बन्ध प्रतीत नहीं होता। सत्यार्थ प्रकाश का उक्त वर्णन 1559 के ओखा के युद्ध से अधिक सुसंगत प्रतीत होता है। मेरे अब तक के शोध कार्य में ऋषि की प्रारम्भिक जीवनी और सन् अठारह सौ सत्तावन की राज्य क्रान्ति के सम्बन्ध में कोई विशेष जानकारी प्राप्त नहीं हुई है। भविष्य में कोई नया तथ्य प्राप्त हो तो सम्भवत ऋषि के लेख की सार्थकता पुष्ट हो सके।

एक और निर्देश कर दूं—क्रान्ति के बाद नाना साहब मोरवी में रहे—यह संकेत प० युधिष्ठिर जी मीमांसक ने 'वेदवाणी' जनवरी 88 के अंक में श्री इन्दु भाई पटेल के लिखे अनुसार किया है। 'अपना जन्म चरित्र' में श्री कृष्ण शर्मा के अनुसार यह लिखा है कि नाना-साहब ऋषि दयानन्द का पत्र लेकर मोरवी आए थे। ये दोनों बातें अप्रामाणिक हैं। किंवदन्तियों के आधार पर ऐतिहासिक बातों का निर्णय करना उचित नहीं होगा।

आगामी वर्ष

हैदराबाद सत्याग्रह अर्ध शताब्दी समारोह

सत्याग्रह आन्दोलन के इतिहास में हैदराबाद आर्य सत्याग्रह का स्थान सर्वोपरि है। इस सत्याग्रह में निजामशाही की जेलो मे लगभग बाईस हजार सत्याग्रहियों ने भाग लिया था और लगभग डेढ दजन आर्य वीरो ने अपना बलिदान दिया था। उन दिनों हैदराबाद रियासत निजाम के अधीन थी। बहुसख्यक हिन्दू प्रजा की स्वतन्त्रता को कुचल कर अत्याचार एवं उत्पीडन का बोलबाला था। ऐसे समय आर्यसमाज ने धार्मिक और नागरिक अधिकारो की माग लेकर इस सत्याग्रह आन्दोलन का नेतृत्व किया।

अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान स्वतन्त्रता सग्राम समिति तथा अन्य अनेक सस्थाओं ने आगामी वर्ष इस सत्याग्रह की स्मृति में अर्ध शताब्दी समारोह मनाने की अपील की है। इसके लिए सर्वत्र हैदराबाद सत्याग्रह अर्ध शताब्दी समारोह समितियां गठित की जाएं। सत्याग्रह में भाग लेने वाले सैनिको का सार्वजनिक सम्मान किया जाए और इस महान् आन्दोलन में ऐतिहासिक महत्त्व पर भाषणों के आयोजन किये जाए। सरकार से हैदराबाद सत्याग्रह की फिल्म बनाने और उसे देशभर में प्रदर्शित करने का आग्रह किया जाय। सुझाव यह भी है कि हैदराबाद में सार्वदेशिक स्तर पर अर्ध शताब्दी समारोह का सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आयोजन करे।

अन्तर्राष्ट्रीय वेदप्रतिष्ठान के अधिष्ठाता आचार्य श्री वेदभूषण ने इस सम्बन्ध मे एक अपील में कहा है—सन् 1989 में जो हैदराबाद सत्याग्रह का अर्ध शताब्दी समारोह मनाया जायेगा उस अवसर पर लगभग 500 से भी अधिक पृष्ठों की ऐतिहासिक हैदराबाद आर्य सत्याग्रह स्मारिका बडी साज-सज्जा के साथ प्रकाशित की जाएगी। प्रत्येक स्वतन्त्रता सेनानी से प्रार्थना है कि वे अपना सत्याग्रह संबन्धी विवरण एव सस्मरण सक्षप में लिखकर अपने पासपोर्ट साइज चित्र, जिसके पीछे आपका नाम व पता सुन्दर अक्षरो में लिखा हो, निम्न पते पर तुरन्त भेज द। यदि किसी के पास अपने सत्याग्रही जत्थे का ग्रुप फोटो है तो वह भी भेजिये। यदि आपके ग्राम का कोई वीर पुरुष इस सत्याग्रह मे शहीद हुआ है तो उसका जीवन चरित्र भी लेख के रूप में भेजने की कृपा कीजिए। इन लेखों, संस्मरणों व चित्रो को ऐतिहासिक स्वरूप देने और उसे स्थायी बनाने का हमारा सकल्प है।

पता—आचार्य वेदभूषण,
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य समाज,
4 5 754, सुलतान बाजार, हैदराबाद—500027

आर्य सत्याग्रह स्वाधीनता संग्राम का अंग कैसे बना

हैदराबाद का आर्य सत्याग्रह किस प्रकार स्वाधीनता-सग्राम का अंग बना—इसकी कथा लिख रहे हैं श्री ब्रह्मदत्त स्नातक जो स्वय स्वतन्त्रता सेनानी हैं और पूर्व पत्रकार हैं। वे अपने ही हवाले से यह विवरण दे रहे हैं कि आर्य सत्याग्रह को स्वतन्त्रता सग्राम का अग मनवाने के लिए उन्हें व्यक्तिगत रूप से भी कितना श्रम करना पड़ा और किस प्रकार कष्ट परम्परा से जुड़ना पड़ा।

वे लिखते हैं—

इस कहानी का पहला बिन्दु तब शुरू हुआ जब मैंने सघ लोक सेवा आयोग को भेजे आवेदन पत्र में हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में अपने सजायाफ्ता होने का उल्लेख किया था। उसके बाद ही सरकारी सेवा में भाग लिया। दूसरा बिन्दु तब शुरू हुआ जब 1968 में सरकारी सेवा सूचना सबन्धी पुस्तक में मैंने यह पढा—कि राजनैतिक पीडितों को नौकरी में कुछ रियायतें या प्राथमिकताएं दी जाती हैं। तब मैंने इस सम्बन्ध में सूचना एव प्रसारण मन्त्रालय को आवेदन दिया। इस आवेदन को मन्त्रालय के अधिकारियों ने अनेक ऊटपटांग आपत्तियां लगाकर अस्वीकार कर दिया। फिर तीसरा बिन्दु तब शुरू हुआ जब 1972 में स्वतन्त्रता सेनानी योजना चालू होने पर मासिक आय 500 रु० से ऊपर होने के कारण ताम्रपत्र पाने के लिये मन्त्रालय के माध्यम से मैंने सरकार से आवेदन दिया। तब हैदराबाद आर्य सत्याग्रह को साम्प्रदायिक बताकर या उसे विचाराधीन कहकर मेरा आवेदन खारिज कर दिया गया। तब मैंने हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह की राष्ट्रीय पृष्ठभूमि बताने के लिए ऐतिहासिक प्रमाणों को समाचार पत्रों में प्रस्तुत किया। भारत सरकार को भी प्रतिवेदन दिये, जो निष्फल रहे। मध्यप्रदेश विधान सभा के भू० पू० अध्यक्ष एव ससद सदस्य स्व० श्री घनश्याम सिंह गुप्त, स्व० यशपाल सिंह संसत्सदस्य, स्व० श्री ओम्प्रकाश त्यागी ससत्सदस्य एव श्री नरदेव स्नातक ससत्सदस्य (जेल में मेरे साथी) ने आंदोलन के राष्ट्रीय आधार पर और उसमें मेरे भाग लेने की यथार्थता पर अपने पत्रों में प्रकाश डालते हुए केन्द्र के तत्कालीन सूचना मन्त्री स्व० सत्यनारायण सिंह को भेजे। पर नतीजा वही रहा।

चौथा बिन्दु तब शुरू हुआ जब मन्त्रालय के कहने पर हैदराबाद की उन चारों जेलों के प्रमाण-पत्र भी मगवा दिये जिनमें कैदी के रूप में मुझे रहना पडा था। परिणाम वही रहा। मन्त्री महोदय, सचिव, सह सचिव से लगाकर सभी अधिकारियों को मिला, पत्र लिखे, कोई परिणाम नहीं निकला। अन्त में 30 नवम्बर, 1976 को गृह मन्त्रालय के सतर्कता आयुक्त ने मुझे सेवा-निवृत्त होने का पत्र लिखकर अपने काम से छुट्टी पा ली। सेवाकाल में दो वर्ष की वृद्धि या अन्य रियायतें जो नियमानुसार मुझे मिल सकती थी, वे भी नहीं दी। पर मैंने हिम्मत नहीं हारी। उसके बाद प्रधानमन्त्री को अनेक पत्र लिखे। कोई लाभ नहीं हुआ। अन्त में 1982 में सब ओर से निराश होकर मैंने निजाम रियासत की जेलों से प्राप्त चारों प्रमाण-पत्र फाडकर फेंक दिए।

इसी बीच हैदराबाद मुक्ति-सग्राम में भाग लेने वाले सभी सत्याग्रहियों को, जिनमें कांग्रेसियो के अलावा आर्यसमाजी बन्धु भी बड़ी सख्या में थे, आंध्र, कर्नाटक और महाराष्ट्र सरकारों ने पेंशन सुविधाएं दीं।

तब मेरे अनुरोधों पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री लाला रामगोपाल शालवाले ने 1977 में इस दिशा में भारत सरकार से पत्र-व्यवहार किया। मैंने भी पत्रों में लेख लिखे और अनेक जनतिनिधियों संस्थाओं से मिलकर समर्थन जुटाया। अन्ततोगत्वा, इतने प्रयत्नों के बाद, 30 सितम्बर 1985 को, अभी तक साम्प्रदायिक एव विचाराधीन बताए जाते रहे आर्य सत्याग्रह में भाग लेने वालों को भारत सरकार ने स्वाधीनता सेनानी सम्मान योजना का अधिकारी घोषित किया।

मैंने फिर चारों जेलों में जाकर वहां के अधिकारियो से सम्पर्क कर प्रमाण पत्र एकत्र किये। इसमें मेरे 2000 रुपए व्यय हो गए। 30 अक्तूबर, 1985 को पुन आवेदन किया। जुलाई में आंशिक परिणाम निकला। श्री नरदेव स्नातक ने जो ससत्सदस्य और रेलवे बोर्ड के वरिष्ठ अधिकारी रहे थे, मेरे साथ जेल में रहे थे और मेरे साथ ही रिहा हुए थे, इन प्रमाणपत्रों की पुष्टि की। पर तब भी लोकनायक भवन के स्वतन्त्रता सेनानी कक्ष के बाबुओं ने केस को आगे नहीं बढने दिया।

इस प्रकार करीब 50 साल पुराना मेरा केस सरकार के दफ्तरों में 18 साल से अधिक समय तक धक्के खाता रहा। हैदराबाद के बाईस हजार सत्याग्रहियों में से आज मुश्किल से 10 या 15 प्रतिशत व्यक्ति जीवित हैं। बाबुओं की लटकाऊ नीति के कारण न जाने पेंशन पाने से पूर्व और कितने सत्याग्रही दिवंगत हो जाएंगे।

भारत सरकार द्वारा गठित गैर-सरकारी जांच समिति में आर्य सत्याग्रह (1938-39) में स्वयं जेलयातना भुगतने वाले कम से कम 14 सत्याग्रहियों को नामजद किया जाना चाहिए जिससे सत्याग्रहियों के साथ न्याय हो सके।

सारे देश में अगले वर्ष हैदराबाद आर्य समाज सत्याग्रह की अर्ध शताब्दी मनाने की तैयारी शुरू हो गई है।

भाई शामलाल जी का बीदर में शहीद स्मारक

बीदर जिला स्वातन्त्र्य सग्राम समिति की ओर से हैदराबाद आर्य सत्याग्रह की नींव स्वरूप अमर हुतात्मा भाई श्यामलाल जी की स्मृति में बीदर में उनका एक स्मारक बनाया जा रहा है। इस स्मारक के लिए अब तक दस हजार रु० प्राप्त हो चुके हैं। श्रीमती सीताबाई शुकर मनबसकर ने अपने पति की स्मृति में 1001 रु० दिए हैं। एक कमरा और चहारदीवारी बन चुकी है।

आर्य सत्याग्रह में बीदर जिले के 27 व्यक्ति शहीद हुए थे। सन् 1903 में भालकी नामक गांव में भाई श्यामलाल जी का जन्म हुआ। वकालत पास करके उद्गीर को उन्होंने अपना कार्यक्षेत्र बनाया। अपने मामा श्री मुरारी प्रसाद तिवारी के घर पर ही आर्यसमाज की स्थापना की और युवकों को अन्याय एव अत्याचार के विरुद्ध सघर्ष करने के लिए तैयार किया। स्थान-स्थान पर आर्यसमाज की स्थापना करके उन्होंने नर-नारी में देशप्रेम की ज्वाला जगाई। निजामशाही के अत्याचार ज्यों ज्यों बढ़ते गए त्यों त्यों जनता के विद्रोही तेवर भी बढ़ते गए। अन्त में निजाम ने भाई श्यामलाल जी को झूठे मुकदमे में फसाकर जेल में डाल दिया और बीदर जेल में ही उन्हें जहर देकर मार दिया।

उनके बलिदान से जनता में नया जोश उभरा। समस्त आर्य जनता ने निरकुश निजामशाही के विरुद्ध सत्याग्रह का बिगुल बजा दिया जिसकी अन्तिम परिणति भारत की आजादी के साथ हैदराबाद रियासत की पूरी तरह समाप्ति हुई।

ज्यों ज्यों आर्थिक सहायता मिलती जाएगी, त्यों त्यों स्मारक का काम आगे बढ़ता जाएगा। —जगन्नाथ नाईक, भालकी, जि० बीदर

पत्रों के दर्पण में

'मुझे आत्मदाह की अनुमति दीजिए'

साप्ताहिक 'हाथरस समाचार' के सम्पादक श्री भोजराज सिंह आर्य ने प्रधान मंत्री को पत्र लिख कर अपने क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार, अन्याय और शोषण के उदाहरण देते हुए उनकी जांच करके उचित कार्रवाई करने का आग्रह किया है। उनके आरोप ये हैं—

1. मेरे क्षेत्र में गुण्डे और तस्कर समानान्तर सरकार चला रहे हैं जिसका सरगना शराब का ठेकेदार राजकुमार उर्फ तिलकराज है। उसका घनिष्ठ सम्बन्ध गृहराज्यमंत्री से है जो इसी जिले के हैं। इसलिए पुलिस और प्रशासनाधिकारी उसी का पक्ष लेते हैं।

2. स्थानीय सरकारी अस्पताल में रोगियों के लिए इलाज और दवा नहीं, फर्जी मेडिकल सार्टिफिकेट बनाने का अड्डा है। खुलेआम रिश्वत चलती है।

3. हाथरस कभी मशहूर व्यापारिक मंडी थी, पर आज सेल टैक्स और इन्कम टैक्स अधिकारियों की पैसे की भूख के कारण व्यापार को लकवा मार गया है।

4. विद्युत् विभाग की धांधली से जनता परेशान है। मनचाहा रीडिंग नोट करना, बिना सूचना सप्लाई रोक देना या कनेक्शन काट देना और लम्बा चौड़ा ऐस्टिमेंट बनाकर किसानों को लूटना उसका धंधा है।

5. राशन की दुकानों पर सही समय पर राशन नहीं मिलता, कभी पूरा राशन नहीं मिलता। अधिकारी दुकानदार से माहवारी वसूल करके उसे फर्जी राशन-कार्डों पर या ब्लैक में सामान बेचने की छूट देते हैं।

6. स्थानीय नगरपालिका क्षेत्रीय विधायक के इशारे पर चलती है। शहरी जन-जीवन बिना सफाई के नरक बना हुआ है। विधायक या उसके बताए घरों के आसपास ही सफाई होती है। निर्माण के नाम पर आया लाखों रु० विधायक और अधिकारी मिलकर खा जाते हैं।

7. खाद्य विभाग के अधिकारी गल्ला व्यापारियों को मुंह मांगी रिश्वत लिये बिना लाइसेंस नहीं देते।

सत्य लिखने के अपराध में मुझ अस्सी वर्षीय पत्रकार पर और मेरे कुछ साथियों पर फर्जी मुकदमे चलाए जा रहे हैं। पुलिस और गुण्डों द्वारा उत्पीड़न का शिकार होना पड़ रहा है। जिस विधायक और समानान्तर सरकार चलाने वाले करोड़पति शराब ठेकेदार का मैंने उल्लेख किया है, उसकी केन्द्रीय स्तर पर जांच करवाइए और यदि मेरा कहना असत्य हो तो मुझे दण्डित कीजिए। यदि आपने कोई कार्रवाई नहीं की तो मैं 2 मई से स्थानीय परगनाधिकारी के समक्ष आमरण अनशन करूंगा और 16 मई, 88 को इस अन्यायपूर्ण व्यवस्था के विरोध में आत्मदाह करूंगा।—भोजराज सिंह आर्य, सम्पादक 'हाथरस समाचार' हाथरस, अलीगढ़-204101

इन्स्टीट्यूशन आफ इंजिनियर्स द्वारा अंग्रेजी माध्यम की बाध्यता (8 गोखले रोड कलकत्ता)

इन्स्टीट्यूशन ऑफ इंजिनियर्स द्वारा ए०एम०आई०ई० की परीक्षाएं अंग्रेजी माध्यम से ही ली जाती हैं जबकि इस परीक्षा में बैठने वाले छात्र हिन्दी माध्यम में शिक्षित होते हैं। ये छात्र इन्टर बी०एस०सी० एवं डिप्लोमा स्तर तक हिन्दी माध्यम में पढ़ते हैं और जब ए०एम०आई०ई० की परीक्षाओं में बैठने के योग्य होते हैं तो संस्थान अंग्रेजी माध्यम में ही परीक्षायें देने के लिए बाध्य करता है। क्या यह हिन्दी प्रेमी छात्रों के साथ भेदभाव और राष्ट्र भाषा हिन्दी का अपमान नहीं है? आज हिन्दी प्रेमी छात्रों को भी हिन्दी माध्यम से ए०एम०आई०ई० की परीक्षाएं देने की अनुमति क्यों नहीं दी जा रही है।

अखिल भारतीय सर्वेक्षण के अनुसार देश में केवल 7.5 प्रतिशत छात्र ही अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा पा रहे हैं और हिन्दी माध्यम में पढ़ने वाले छात्र 66% हैं। ए०एम०आई०ई० की परीक्षाएं केवल अंग्रेजी पढ़े वर्ग के लिए, संविधान की भावना के विपरीत आरक्षित हैं अर्थात् देश की 66 प्रतिशत प्रतिभा अंग्रेजी न जानने के कारण बर्बाद हो रही है।

जब सबसे महत्वपूर्ण सिविल सेवा परीक्षा हिन्दी माध्यम से हो सकती है। आई०आई०टी० में एम० टेक० की परीक्षा हिन्दी में हो सकती है, रुड़की विश्वविद्यालय में इंजिनियरिंग की परीक्षाएं हिन्दी माध्यम से दी जा सकती हैं, एम०ई० व एम०डी० के शोध ग्रन्थ हिन्दी में लिखे जा सकते हैं फिर ए०एम०आई०ई० की परीक्षा केवल अंग्रेजी माध्यम से क्यों?

—विनोद कुमार गौतम (ए०एम०आई०ई० छात्र) कस्बा पहासु (बुलन्दशहर) 202396

कुंवर चांदकरण शारदा जन्म शती समारोह

आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध नेता, हैदराबाद सत्याग्रह के द्वितीय सर्वाधिकारी, विख्यात समाजसुधारक, कुंवर चांदकरण शारदा की जन्म शताब्दी सन् 1988 में अजमेर नगर में समारोह पूर्वक मनाई जायेगी। इस अवसर पर 'जन्मशताब्दी ग्रन्थ' प्रकाशित करने की योजना है। जिसका सम्पादन विद्वान् मनीषी पद्मश्री क्षेमचन्द्र सुमन करेंगे। इस हेतु आप शारदाजी के जीवन सम्बन्धी अपने लेख, संस्मरण, कविता, राजस्थान में समाज सुधार, नारी शिक्षा, आर्यसमाज के कार्य, शुद्धि कार्य, दलित व पीड़ितों की सेवा, राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास व प्रचार में योगदान आदि विषयों पर लेख/सन्देश मई 1988 तक भेज कर अनुगृहीत करें। इस शताब्दी के अवसर पर श्री शारदाजी के नाम का सभा भवन, पुस्तकालय तथा वैदिक संस्कृति का गौरव विद्यालय खोलने की भी योजना है। दानी महानुभाव उनके जन्मशताब्दी समारोह में तन, मन, धन से योगदान प्रदान करने की कृपा करें। इस सम्बन्ध में समस्त पत्र व्यवहार तथा सामग्री निम्न पते पर भेजने की कृपा करें।

—सरला शारदा, शारदा भवन, चांदकरण शारदा मार्ग, अजमेर—305001

शंकराचार्य वेदों को कलंकित न करें

पुरी के शंकराचार्य स्वामी निरंजन देव तीर्थ वेदों का नाम लेकर जिस प्रकार से महिलाओं की स्थिति को दयनीय बनाने का खिलवाड़ कर रहे हैं उसकी जितनी भी जितनी भी निन्दा की जाये, कम है। उन्हें तो वेदों को कलंकित करने का प्रयास तुरन्त बन्द कर देना चाहिए। स्वामी निरंजनदेव तीर्थ वेदों के मानवीय दृष्टिकोण की उपेक्षा करके अमानवीय पापपूर्ण कुकृत्यों के समर्थन के लिए पवित्र वेदवाणी का अनुचित प्रयोग कर रहे हैं। एक तरफ वे सभी के लिए समान कानून बनाने की बात करते हैं तो दूसरी ओर स्त्रियों को आज भी वेदों के अध्ययन से वंचित रखना चाहते हैं। उन जैसों के कारण ही आज सनातन धर्म हंसी का पात्र बनता जा रहा है तथा शिक्षित जनता को धर्म से घृणा होती जा रही है।

—ओम्प्रकाश आर्य, 119/122, बम्बारोड, कानपुर-12

वैदिक गीत माला

यह धार्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं ऐतिहासिक गीतों का सुन्दर संकलन है इसमें लोकगीत, फिल्मी गीत, गजल, कव्वाली भोजपुरी आदि विभिन्न तर्जों पर 140 चुने हुए गीत हैं। पुस्तक डा० कपिल देव द्विवेदी कुलपति गुरुकुल ज्वालापुर (हरिद्वार) डा० प्रज्ञा देवी आचार्या पाणिनी कन्या महाविद्यालय वाराणसी तथा श्री कैलाशनाथ सिंह भू० पू० शिक्षा मन्त्री उत्तर प्रदेश द्वारा प्रशंसित है। वैदिक धर्म एवं आर्य समाज के प्रचार के लिए पुस्तक अत्यन्त उपयोगी पृष्ठ सं० 160 तथा डायरीनुमा प्लास्टिक का कवर है। मूल्य 10 रुपये।

—संकलनकर्त्ता डा० रामकृष्ण आर्य प्रधान आर्यसमाज ग्रा० माधोरामपुर, चौरी पो० परसीपुर, जि० वाराणसी (उ० प्र०)

कुलटा नार

कुण्डली 1 पति शव ले तिय गोद निज, चिता संग जल जाय।
लोकलाज में जल मरे, सती नहीं कहलाय॥
सती नहीं कहलाय, आत्महत्या यह होती।
जड़ है अन्धविश्वास, सुजन की काया रोती॥
'मौनी' विधवा नार, आचार-संहिता पाले।
सती समयानुसार, पुनर्विवाह करवा ले॥

कुण्डली 2 सत्य पर निर्भर है सती, सधवा विधवा होय।
वैधव्य काल में भी सती, सत्य आचरण होय॥
सत्य आचरण होय, पति संग जो जल जाती।
दुर्गति है सद्गति नहीं, सती वह नहीं कहलाती॥
'मौनी' कुलटा नार, संग पति के जल जावे।
जगत सती कहलाय, सती का अर्थ न पावे॥

—मथुरा लाल 'मौनी' साहित्य रत्न, पंच पहाड़, झालावाड़-326512

पंजाब समस्या का हल

(1) पाकिस्तान ने पंजाब के आतंकवादियों को प्रशिक्षण, हथियार और छत्रछाया देकर एक तरह से भारत में गृह युद्ध के हालात पैदा कर दिए हैं। बंगलादेश के उदय और पाकिस्तान के टूटने का वह बदला लेना चाहता है। घास खाकर भी अणु बम बनाने और एक हजार साल तक भारत से युद्ध करने का संकल्प जताने वाले पाकिस्तान से दोस्ती सम्भव नहीं है। इसलिए पाकिस्तान को जब तक 'जैसे को तैसा' की धमकी नहीं दी जाएगी, धमकी ही क्यों, जब तक उस पर अमल नहीं किया जाएगा, तब तक पाकिस्तान की अक्ल ठिकाने आने वाली नहीं है।

(2) पंजाब में राष्ट्रपति शासन अधिक देर तक लागू नहीं रहना चाहिए। वहां लोकतन्त्र के द्वारा चुनी हुई सरकार स्थापित होनी चाहिए।

(3) चण्डीगढ़, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल और उत्तर प्रदेश का कुछ भाग मिलाकर एक नया राज्य बना देना चाहिए।

(4) पंजाब में न्यायपालिका सुदृढ़ होनी चाहिए। पंजाब के आम लोगों का केन्द्र के प्रति अविश्वास बढ़ता जा रहा है। इसलिए नगर निगम, पंचायतों और विधान सभा के निष्पक्ष चुनाव की व्यवस्था होनी चाहिए, भले ही वे सेना की निगरानी में हों।

—रूपलाल शर्मा, मंत्री केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, लुधियाना

डी ए वी शताब्दी का उपहार

संग्रह योग्य पठनीय जीवनोपयोगी पुस्तकें

हमारी नई पीढ़ी को पढ़ने के लिए वांछित पुस्तकें नहीं मिल रही हैं। बाजार में ऐसी पुस्तकों की भरमार है जिनसे उनके मानस पर कुप्रभाव पड़ता है। निरर्थक पुस्तक पढ़ने वाले निरक्षरों से किसी भी हालत में अच्छे नहीं कहे जा सकते। युवकों के उचित मार्गदर्शन के लिए डी ए वी प्रकाशन संस्थान ने "डी ए वी पुस्तकालय" ग्रन्थ माला का अपने शताब्दी वर्ष में प्रकाशन आरम्भ किया है। अब तक निम्न पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। कागज और छपाई अत्युत्तम होते हुए भी मूल्य प्रचारार्थ कम रखा गया है।

		Price Rs. P.
Wisdom of the Vedas. Select Vedic mantras with inspirational English renderings.	Satyakam Vidyalankar.	15.00
Maharishi Dayanand A perceptive biography of the founder of Arya Samaj	K. S. Arya and P. D. Shastri.	20.00
The Story of My Life. Autobiography of the great freedom fighter and Arya Samaj leader.	Lajpat Rai.	30.00
Mahatma Hans Raj An inspiring biography of the father of DAV movement in India	Sri Ram Sharma.	20.00
प्रेरक प्रवचन डी ए वी कालेजों के अवसर द्वारा विविध विषयों पर बोधप्रद प्रवचन	महात्मा हंसराज	15.00
सूक्तियां प्रेरक संस्कृत सूक्तियां हिन्दी तथा अंग्रेजी रूपांतर सहित	धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री	15.00
क्रांतिकारी भाई परमानन्द प्रख्यात क्रान्तिकारी तथा आर्य समाज के नेता की प्रेरणाप्रद जीवनी	धर्मवीर एम० ए०	20.00
Reminiscences of a Vedic Scholar. It is a thought-provoking book on many subjects of vital importance for Aryan Culture.	Dr. Satyavrata Siddhantalankar.	20.00

DAV Centenary Directory (1886-1986)

(In Two Volumes)

A compendium of biographies over 1000 eminent DAVs, Benefactors Associates etc with their photographs. Over 1000 pages, 9" X 11" size, printed on very good paper, beautifully bound in plastic laminated card-board — Rs. 150/-per set. in Delhi; Rs. 200/- by Regd. Post in India. Rs.150/-plus actual postage for Foreign countries.

Aryan Heritage: A monthly journal for propagation of the Vedic philosophy & culture. — Rs. 60/- per annum; Rs. 500/- for Life for an individual. Rs. 600/- in lump-sum for Institutions.

500/- रुपये से अधिक माल मंगाने पर 10% कमीशन दिया जाएगा। डाक व्यय तथा रेल भाड़ा ग्राहक को देना होगा। चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट "डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति, नई दिल्ली, पब्लिकेशन्स एकाउंट" के नाम से भेजा जाए।

प्राप्ति स्थान :

(1) व्यवस्थापक, डी ए वी प्रकाशन संस्थान, चित्रगुप्त रोड, नई दिल्ली-55

(2) मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1

BEST WISHES FROM

STUDENTS, STAFF & PRINCIPAL

D.A.V. CENTENARY PUBLIC SCHOOL

MAHAM ROAD

BHIWANI.

RAJESH JAIN (Principal)

H.L. CHAWLA (Manager)

डा० भारतीय की पुनर्नियुक्ति

पंजाब विश्वविद्यालय की दयानन्द शोध पीठ के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा० भवानीलाल भारतीय को उनकी योग्यता एवं शोध प्रवृत्ति को ध्यान में रखकर विश्वविद्यालय ने आगामी तीन वर्षों के लिये उनके कार्यकाल में वृद्धि कर प्रोफेसर पद पर उनकी पुनः नियुक्ति की है। साथ ही उन्हें होशियारपुर स्थित विश्वेश्वरानन्द विश्वबन्धु संस्कृत तथा प्राच्यविद्या संस्थान का आदरी निदेशक भी नियुक्त किया है। उपर्युक्त शोध संस्थान प्राच्यविद्या विषयक अध्ययन एवं शोध का एक विश्वविख्यात केन्द्र है जहां विश्वविद्यालय की एम०ए० पी० एच० डी० आदि उपाधियों के पठन-पाठन के अतिरिक्त उच्चतर वैदिक शोध की व्यवस्था है तथा इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु सहस्रों पांडुलिपियों तथा महत्वपूर्ण ग्रन्थों से सुसज्जित पुस्तकालय भी विद्यमान है।

मादक-द्रव्य विक्रेता को फांसी दो

नशीली औषधि विक्रेताओं को प्राण-दण्ड दिया जाना चाहिये, नशीली दवा विक्रेता मूक हत्यारे हैं, वे अबोध युवकों को अपने व्यापार का शिकार बनाते हैं। इन व्यसनों में फंसे मनुष्य यदि सुधारना भी चाहें तो ये विक्रेता उसमें बाधा उत्पन्न करते हैं। मादक द्रव्यों का सेवन करने वाला व्यक्ति समाज एवं परिवार के लिये संकट बन जाता है। कभी-कभी तो उसका सामाजिक एवं पारिवारिक बहिष्कार तक करना पड़ जाता है, किन्तु बहिष्कार के बजाय उसके साथ सहानुभूति का व्यवहार करते हुये उन्हें जीवन में पुनर्स्थापित किया जाना चाहिये।' दिल्ली के उप. राज्यपाल ने 7.4.88 को रघुबीरनगर में 'नशाखोरी के विरुद्ध जिहाद' कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुये उक्त शब्द कहे।

—आर्य समाज नई बाजार बस्सर (सोनपुर) का वार्षिकोत्सव 25 से 27 मार्च को सोत्साह मनाया गया जिसमें स्वामी सत्यानन्द, श्री सुदर्शन सिंह के उपदेश और श्री वीरेन्द्र आर्य व श्री इन्द्रदेव सिंह के भजन हुए। अयोध्या प्रसाद आर्य मंत्री

सेवक चाहिए

आर्य समाज मन्दिर ए-6/6 राणा प्रताप बाग, दिल्ली को एक सेवक की आवश्यकता है। आवेदन मन्त्री जगदीश आर्य के नाम उपरोक्त पते पर करें।

समर्पण शोध संस्थान का उद्घाटन और विद्वत् संगोष्ठी

स्थान—4/42 राजेन्द्र नगर, सेक्टर 5, साहिबाबाद, गाजियाबाद

समर्पण शोध संस्थान के उद्घाटन के अवसर पर 20, 21, 22 मई को विद्वत् संगोष्ठी का भी आयोजन किया जा रहा है। अपने शोध लेख या उसका सार 15 मई तक भेज दें। शोध लेख हिन्दी या संस्कृत मे अपेक्षित हैं। निबन्ध वाचन का समय 20 मिनट होगा। संगोष्ठी का कार्यक्रम इस प्रकार है—

20 मई। विषय—स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती का व्यक्तित्व और कृतित्व। समाज शास्त्र एवं वर्ण व्यवस्था। ऋग्वेद के मन्त्रो की सगति—मणिसूत्र, शतपथ ब्राह्मण और स्वामी समर्पणानन्द। साहित्य और संगीत।

21 मई। विषय—वेदाथ की प्रतीकशैली। ब्राह्मण ग्रन्थो के आख्यानो की उपयोगिता। दर्शपौर्णमासादि की प्रासगिकता। ब्राह्मणोक्त याज्ञिक प्रक्रिया।

22 मई। विषय—वेदो के आविर्भाव की दार्शनिक पृष्ठ भूमि। वेदाविर्भाव और महर्षि मन्तव्य। पाश्चात्य विद्वानो के दृष्टिकोण की समीक्षा। चार ऋषियो की आत्मा में ज्ञान समर्पण की प्रक्रिया।

सभी आगत विद्वानो के भोजन और निवास की निःशुल्क व्यवस्था होगी। दानी महानुभाव आर्थिक सहायता देकर यश के भागी बनें।

प० शिवकुमार शास्त्री, प्रधान — स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती, संस्थापक

हरयाणा के कई गांवों में शराब के ठेके बन्द : लोक शक्ति की विजय

हरयाणा सरकार ने जन-भावना के विरुद्ध और शराब बन्दी के प्रस्तावो के विरुद्ध सोनीपत के ग्राम कथूरा और रोहतक के ग्राम निदाणा मे शराब के ठेके खोल दिए थे। पर औरतों ने जिलाधीश की कोठी के सामने और आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं ने ठेके के सामने धरना दिया। हरयाणा सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह उपप्रधान महाशय भरतसिंह और मन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री भी धरने मे शामिल हुए। स्वामी ओमानन्द जी भी आए। ग्राम पचायत और किसानो ने भी ठेको का विरोध किया। आर्यसमाज की भजन मडलियो ने गाव-गाव में शराब के विरुद्ध प्रचार किया। अन्त मे सरकार को ये ठेके बन्द करने के लिए विवश होना पडा। इसी प्रकार ग्राम मडेरी और ग्राम मदीना मे भी ठेके बन्द हो गए। आर्यसमाज के सहयोग से लोक-शक्ति की विजय हुई।

जिन ग्रामों में शराब के ठेके बन्द हुए हैं उनमे नई आर्यसमाजो की भी स्थापना हुई है और ग्राम वाले उनमे उत्साह से भाग ले रहे हैं।

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल गाजियाबाद

डी ए वी पब्लिक स्कूल गाजियाबाद का उद्घाटन डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के सगठन सचिव श्री दरबारी लाल ने किया।

आर्य समाज, हनुमान रोड, नई दिल्ली का वार्षिक अधिवेशन

आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का वार्षिक साधारण अधिवेशन रविवार 8 मई 1988 को प्रात 10 बजे आर्य समाज मन्दिर में होगा।

आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के 1988-89 के लिए घोषित सभासदों की सूची आर्य समाज के कार्यालय में सब की जानकारी के लिए रखी गई है। आर्य समाज की उन्नति और इसकी गतिविधियों को अधिक सक्रिय बनाने के लिए अपने सुझाव 7 मई 1988 तक भेज दें। नए अधिकारियो एव अन्तरग सभा का निर्वाचन भी होगा। तत्पश्चात् प्रीतिभोज होगा।—के० एल० भाटिया मन्त्री।

आर्य पुरोहित को पी.एच-डी.

आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली के पुरोहित एव अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टकारा के स्नातक प० रामसुमरसिंह 'राजीव' शास्त्री को दिल्ली विश्वविद्यालय के 65 वें दीक्षान्त समारोह मे बौद्ध साहित्य सम्बन्धी शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करने के लिए पी० एच-डी० की उपाधि से सम्मानित किया गया। श्री शास्त्री ने विश्वविद्यालय के बौद्ध विभागाध्यक्ष प्रो० सघसेन सिंह के निर्देशन मे कार्य किया था।

चित्र मे दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० मुनीस रजा श्री शास्त्री जी को उपाधि प्रदान करते हुए दिखाई दे रहे हैं।

रामकिशन बत्रा दिवंगत

आर्य समाज माडल टाऊन, पानीपत के कर्मठ सदस्य श्री रामकिशन बत्रा का 11-4-88 को 82 वर्ष की आयु मे स्वर्गवास हो गया। आप सदा अन्तरग सभा के सदस्य रहे। आप एक महान दानवीर थे।

हम परम पिता परमात्मा से दिवगत आत्मा शान्ति के लिए प्रार्थना करते हैं।

—चमन लाल [illegible], मन्त्री

उड़ीसा में सूखा राहत कार्य

आर्य प्रादेशिक सभा मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली की सहायता से उडीसा में स्वामी धर्मानन्द के नेतृत्व मे जो सूखा राहत कार्य चल रहा है उसकी व्यवस्था करने वाले विशिष्ट कार्यकर्ता

आर्यसमाज क्या मानता है ?

'आर्य जगत्' में उक्त पुस्तिका के निःशुल्क मिलने की सूचना छपने के पश्चात् अनेक पाठको ने वह पुस्तिका मगवाई, किन्तु अब वह पुस्तिका समाप्त हो चुकी है और स्टाक मे बिल्कुल उपलब्ध नहीं है। इस लिए अब कोई सज्जन पुस्तिका न मगाएं।—[illegible] पुस्तकालय कार्यालय गौरीशंकर मंदिर, चांदनी चौक, दिल्ली 6

हिन्दुओं को न जाति-बोध

(पृष्ठ 4 का शेष

लेना चाहिए। आर्यसमाज ने "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का व्रत लिया था। वह व्रत सम्पूर्ण हिन्दू जाति को ग्रहण कर लेना चाहिए। तभी हमारी अधोलिखित वैदिक प्रार्थना सार्थक होगी—

अग्ने ! व्रतपते ! व्रतं चरिष्यामि,
तच्छकेयं, तन्मे राध्यताम्।
इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि॥

वेद में इस सम्बन्ध में एक अन्य अर्थगर्भ मन्त्र आता है, जिस पर पुनः पुनः मनन की आवश्यकता है—

व्रतेन दीक्षामाप्नोति,
दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम्,
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति,
श्रद्धया सत्यमाप्यते॥

यजु॰ 19/30

वस्तुतः जातीय संगठन का मूलाधार व्रतबोध, लक्ष्य बोध अथवा मिशन का बोध ही होता है। मैं समझता हूं कि जातीय संगठन के इस आधार की ओर ऋग्वेद के अंतिम सूक्त में महत्त्वपूर्ण संकेत पाये जा सकते हैं। उसमें समान मन्त्र (समान दृष्टि भंगी), समान अध्यवसाय (आकृति) समान लक्ष्य, समान व्रत के लिए जाति को प्रेरित किया गया है। तदर्थ समान मन, बुद्धि, और चित्त भी आवश्यक हैं। जाति में संगठन इन्हीं सबसे आ सकता है। हम चिरकाल से हिन्दू संगठन का नारा लगाते आ रहे हैं, किन्तु संगठन की प्रक्रिया क्या हो इस पर विचार करने से कतराते हैं।

अब एक और महत्त्वपूर्ण समस्या की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करना आवश्यक प्रतीत होता है। हमारे राजनीतिक अभियान भी अन्ततः निरर्थक और अप्रासंगिक हो जाते हैं। देश का विभाजन हो गया और हमारी किसी सुव्यवस्थित संस्था की ओर से उसका प्रतिरोध नहीं हुआ। उस समय हिन्दू महासभा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सक्रिय थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तो अत्यन्त बलशाली भी हो गया था, किंतु वह अजगर के समान निष्क्रिय पड़ा रहा। उसका राजनीतिक मंच, भारतीय जनसंघ, कालान्तर में भारतीय जनता पार्टी का चोला धारण कर कांग्रेस के स्वर में स्वर मिलाकर सेक्युलरवादी बोली बोलने लगा और हिन्दुत्व से किनारा कर गया।

हिन्दू राज्य का क्या अर्थ हो ?

यह सब क्यों हो रहा है ? संस्थाएं बड़े उत्साह से बनायी जाती हैं, किन्तु वह उत्साह सोडावाटर की बोतल के समान शीघ्र ही ठण्डा हो जाता है। मैं समझता हूं कि इसके पीछे एक महत्त्वपूर्ण कारण है। हम हिन्दूराष्ट्र हिन्दू-राज्य, भारतीयीकरण जैसे आकर्षक नारे तो लगाते हैं, किन्तु जानते नहीं कि उनका अर्थ क्या है। आज किसी हिन्दू संस्था के पास ऐसी कोई योजना नहीं है जिससे पता चले कि शासन-सत्ता हाथ में आने पर वह ऐसा क्या करेगी जिससे हिन्दुत्व की अस्मिता प्रतिफलित हो। इस पर कोई विचार नहीं करता कि जिस हिन्दुत्व के आधार पर राष्ट्र का हिन्दूकरण करना है उसका स्वरूप क्या है। हिन्दू राज्य की स्थापना का क्या अर्थ है ? राज्य का स्वरूप संसदीय होगा, राष्ट्राध्यक्षीय होगा, राजसत्तात्मक होगा, अथवा क्या होगा ? स्त्री और शूद्रों की क्या स्थिति होगी ? हमारी न्यायव्यवस्था अथवा दण्डव्यवस्था क्या होगी ? शिक्षा-पद्धति क्या होगी ? प्रशासन-तन्त्र का क्या स्वरूप होगा ? आरक्षण और विशेषाधिकारों के प्रति हमारी क्या दृष्टि होगी ? इत्यादि प्रश्नों पर विचारशून्य होने के कारण किसी में हिन्दुत्व को लेकर बहुत दूर तक चलने का उत्साह नहीं हो पाता। फलतः हमारी राजनीतिक गतिविधियों में दिङ्मूढ़ता और बिखराव की स्थिति आ जाती है और हमारी राजनीति कहीं की नहीं रह पाती। इसके विपरीत इस्लाम में सब कुछ सुस्पष्ट है। पूरी मुस्लिम जाति की भाषा एक है, संस्कृति एक है, उपासना पद्धति एक है। अतः वह स्वभावतः सुसंगठित हैं और सम्भूय समुत्थान में हमसे सदा आगे रहती है।

हम शासन को दोष देते हैं कि वह मुसलमानों का पक्षपात करता है। अंग्रेजों के काल में भी हम शासन को कोसा करते थे। यह सही भी है कि शासन बात-बात में मुसलमानों की तरफदारी करता पाया जाता है। किन्तु इसके पीछे एक मनोवैज्ञानिक कारण है जिसकी ओर हमारा ध्यान नहीं जाता। शासन का स्वभाव है कि वह सबल जाति को प्रसन्न रखने की चेष्टा करे। जो जाति अपना दायित्व वहन करने के प्रति जागरूक ही नहीं है उसका साथ देकर शासन को क्या मिलेगा ? शासन का सीधा सम्बन्ध शक्ति से है। अतः जिस जाति पर शक्ति भवानी की कृपा होगी उसी की ओर शासन का झुकाव भी होगा। शासन जानता है कि हिन्दूमत विभाजित है और मुस्लिम मत सामूहिक है। अतः मुसलमानों के मत का मूल्य है और हिन्दू का मत अकिंचित्कर है। भला कौन उस जाति के फेर में पड़ेगा जिसका अपना कोई सामूहिक मत ही न हो।

और यह बात तो माननी ही होगी कि वर्तमान शासन भारतीयता से कटा हुआ है। उसे इसकी कोई चिन्ता नहीं कि भारत की कोई स्वाभाविक सांस्कृतिक पहचान उभरे, भारतीय अस्मिता तेजस्वी बने, भारतीय संस्कृति का अभ्युदय हो। वह तो ऐसे महानुभावों द्वारा संचालित है जो भारतीयता को दांव पर लगाकर सदा अपना उल्लू सीधा करने के चक्कर में रहते हैं। वस्तुतः हमारी सम्पूर्ण राजनीति अजातीय बन गयी है। इस कारण भी शासन हिन्दू जाति के प्रति उपेक्षा का भाव रखता है।

पाखण्ड का गढ़ ?

एक बात और उल्लेखनीय प्रतीत होती है। यह एक कटु सत्य है कि सारे सेक्युलरवादी भारतीयता एवं हिन्दुत्व के विरोधी पाये जाते हैं। वे सारी बुराइयों का कारण हिन्दुत्व के विरोधी पाये जाते हैं। वे सारी बुराइयों का कारण हिन्दुत्व को समझते हैं और इस्लाम के प्रति मौन वृत्ति रखते हैं। कारण क्या है ? यहां भी एक मनोवैज्ञानिक नियम प्रतीत होता है। मानना होगा कि हिन्दुत्व में चाहे जितनी अच्छाइयां हो वह पाखण्ड का गढ़ बना हुआ है और दिनानुदिन पाखण्ड और दम्भ का गहराव बनता जा रहा है। कोई शंकराचार्य कभी छुआछूत के पक्ष में बोल देता है, कभी हरिजनों के मन्दिर-प्रवेश का विरोध करने लगता है। कभी कोई स्वामी योगविद्या के बल पर साधकों को आकाशचारी बनाने के लिए उनसे डालर ऐंठता है। कभी कोई स्वामी तस्करवृत्ति अथवा पाखण्ड के बल पर करोड़ों का स्वामी बन बैठता है। कभी मन्दिर से भगवान् ही चोरी चले जाते हैं। कभी मन्दिर अनाचार के अड्डों के रूप में प्रकट होते हैं। कभी भगवती जागरण और अखण्ड मानस पाठ के नाम पर सब का सोना हराम कर दिया जाता है, कभी होली के नाम पर लोगों का बाहर पड़ा फर्नीचर आग में झोंक दिया जाता है। कहां तक कहा जाय, यह जाति आज तक मूढ़ग्राह और पाखण्ड से इस प्रकार ग्रस्त है कि अनेक प्रबुद्ध व्यक्तियों को इससे घृणा होने लगती है और वे इसे कोसने का कोई अवसर हाथ से नहीं जाने देते। हमारे सेक्युलरवादी हिन्दू जाति के पाखण्ड से इतने क्षुब्ध हैं कि उन्हें इसे कोसने से अवकाश नहीं मिलता और इस्लाम की ओर उनका ध्यान ही नहीं जाता। फलतः वे हिन्दू-द्वेषी और इस्लाम के समर्थक के रूप में आचरण करते हैं। आर्यसमाज ने पाखण्ड खण्डन के मार्ग को तिलांजलि दे दी है, अन्यथा स्थिति इतनी भयानक नहीं होने पाती। अतः हिन्दुत्व के समूहन सहनन-संघटन के प्रयत्न उतने प्रभावी नहीं हो सकते जब तक जाति को पाखण्ड और मूढ़ग्राह के दल-दल से उबारने का भी उपक्रम साथ-साथ न चले।

वस्तुतः हमारे देश में हिन्दुत्व को लेकर संस्थाएं तो हैं, किन्तु हिन्दुत्व अब तक एक आन्दोलन का रूप नहीं ले सका है। हिन्दुत्वपोषक संस्थाएं औपचारिक सदस्यता पर बल देते हुए अपना क्रियाकलाप अपने लोगों तक सीमित रखना चाहती हैं जब कि आन्दोलन एक झंझावात के समान होता है जो सारी औपचारिकताएं छोड़ पूरी जाति को समेटने की चेष्टा करता है।

वस्तुतः हिन्दू जाति अवयवों की समष्टि मात्र है, अभी तक अवयवी के रूप में उभर नहीं सकी है। न्याय के अध्येता जानते हैं कि अवयवी अवयवों की समष्टि मात्र नहीं होता, वह अवयवों को समेटते हुये भी कुछ और होता है। मुस्लिम समाज को इस देश का सबसे बड़ा अवयवी कहा जा सकता है। बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक का भेद कृत्रिम है, हिन्दू बहुसंख्या में होने पर भी एक अवयवी के रूप में आचरण के अयोग्य रहे। अतः आवश्यकता है कि हिन्दू समाज में इस प्रकार एक सुमति उत्पन्न हो कि वह एक अवयवी, एक महाव्यक्ति, एक महासत्ता के रूप में समस्याओं से जूझने की क्षमता प्राप्त करे।

बहुजन द्वारा स्वीकार्य सांगोपांग विचार-व्यवस्था (आइडियालोजी) की उद्भावना हमारी तात्कालिक आवश्यकता है। विचार व्यवस्था ही जाति में केन्द्रोन्मुखता (सेन्ट्रीपीटल फोर्स, नुक्त-ए-इत्तिफाक) उभारती है।

ऐसी ही बातों को ध्यान में रखकर मैंने प्रस्ताव किया था कि राष्ट्रीय सभा के नाम से एक व्यापक आन्दोलन का सूत्रपात करना चाहिये, जिसमें हिन्दुओं की सभी संस्थाओं का योग हो, संकुचित दृष्टिकोण और पिटे-पिटे मुद्दों पर अवलम्बित रहने से प्रस्तावित आन्दोलन भी मात्र एक संस्था का रूप लेकर रह जायेगा और वह भूमिका नहीं अदा कर सकेगा जिसके लिए उसकी परिकल्पना की जा रही है। स्मरण रहे कि स्वामी दयानन्द ने आर्यसमाज की परिकल्पना भी मात्र एक संस्था अथवा सम्प्रदाय के रूप में नहीं की थी, जिसमें निर्वाचन, पदाधिकार और कार्यालयीय हिसाब-किताब मात्र को ही अपनी इतिकर्तव्यता समझ लिया जाये, जैसा कि अब हो रहा है। आन्दोलन के लिये दो मूलभूत शर्तें अवश्य पूरी होनी चाहिये ! स्वाधिकृत कार्यशालाएं और स्वयंसेवक-समूह। आर्यसमाज आन्दोलन में आरम्भ में ये दोनों शर्तें पूरी होती रहीं। फलतः देश में आर्यसमाज मन्दिरों का एक जाल बिछ गया था और वैतनिक तथा अवैतनिक उपदेशकों, प्रचारकों—भजनीकों की एक विशाल सेना कार्यक्षेत्र में उतर आयी थी। वस्तुतः कांग्रेस जैसे व्यापक जन-आन्दोलन के पास भी वह ठोस साधन सम्भार उपलब्ध नहीं जो आर्यसमाज के पास था। अब आर्यसमाज मंदिर किराये पर उठाये जा रहे हैं। उपदेशकों की ट्रेनिंग को लेकर एक महाशून्य उत्पन्न हो गया है। आर्य पुस्तकालयों—वाचनालयों का अभाव हो गया है। आर्य विद्वानों की टोली क्षीणतर होती जा रही है। सारांश यह है कि आर्यसमाज अब एक संस्था अथवा सम्प्रदाय मात्र होकर रह गया है। व्रत के धनी आर्य पुरुषों का भी दूर दूर तक पता नहीं चलता। फलतः लोकमानस में आर्यसमाज की स्मृति एकदम धुंधली पड़ गयी है।

यदि जाति को जीवित रहना है तो इस स्थिति का अविलम्ब अन्त होना चाहिये।

पता—42/59 समरत्न वाजपेयी मार्ग, बरही, लखनऊ-226001

महात्मा हंसराज दिवस पर विशिष्ट लोग

17 अप्रैल को महात्मा हंसराज दिवस पर मंच पर विद्यमान हैं श्री स्वामी सत्य प्रकाश जी (अध्यक्ष), प्रो० वेदव्यास जी, सूचना और प्रसारण मंत्री श्री हरि कृष्ण लाल भगत, वरिष्ठ अधिवक्ता श्री लक्ष्मी मल सिंघवी, दानवीर श्री ० ग्पाल वडेरा।

आर्य युवक दल हरियाणा के आर्यवीर

आर्य युवक दल हरियाणा के सभी अधिकारी और कार्यकर्त्ता पूरे दल-बल के साथ महात्मा हंसराज दिवस मे भाग लेने के लिए आए। उनकी कमठता दर्शनीय थी। श्री रामनाथ सहगल के साथ दल के कार्यकर्त्ताओं का एक समूह-चित्र।

श्री देवीदास आर्य का अभिनन्दन

श्री देवीदास आर्य जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन महिला उद्धार के कार्य मे अर्पित कर रखा है उनके 67 वे जन्म दिवस के शुभ अवसर पर आगामी 3 जून 1988 को नागरिक अभिनन्दन किया जायगा।

इस अवसर पर 'महान महिला उद्धारक श्री देवीदास आर्य' नामक पुस्तक तथा समारोह स्मारिका का विमोचन किया जायगा।

—बाबूलाल सविता संयोजक

मुस्लिम युवक वैदिक धर्म मे

20 मार्च को आर्य समाज, गारुलिया जिला 24 परगना प० बंगाल मे श्री मुहम्मद युनुस की शुद्धि करके वैदिक धर्म मे दीक्षित किया गया पौरोहित्य प० सत्यनारायण शर्मा ने की।

—आर्य समाज, सी ब्लाक, पखा रोड, जनकपुरी नई दिल्ली के चुनाव में श्री गुरुमुखराय दुग्गल प्रधान, श्री रामकृष्ण सलोजा मंत्री और श्री हरिकिशन लाल गुलाटी कोषाध्यक्ष चुने गये।

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज खडवा वेदो के उद्भट विद्वान् आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री जिन्होने लगभग 60 ग्रन्थो को लिपिबद्ध किया है। एव अन्तिम क्षणो तक आर्य जगत की सेवा मे लगे रहने वाले समाज सेवी को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

—मन्त्री

मुण्डन संस्कार

27-3 88 को श्री कृष्णलाल जी आर्य के पौत्र एव श्री मदनकुमार आर्य के पुत्र चि० विशाल का मुण्डन संस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। उपस्थित लोगो ने बालक को आशीर्वाद दिया।

—कृष्णलाल आर्य

वन्दनीय महात्मा हंसराज

आर्य समाज के महान त्यागी, तपस्वी तथा शिक्षा हेतु सम्पूर्ण जीवन समर्पित करने वाले महात्मा हंसराज जी हम सबके वन्दनीय हैं। शिक्षा के क्षेत्र मे भारतीय इतिहास मे उनका नाम सदा स्वर्णाक्षरो मे अंकित रहेगा। जीवन आने वाली पीढियो को निष्काम सेवा, देश प्रेम, कला विज्ञान, वैदिक शिक्षा आदि लोकोपयोगी विद्याओ का अनुपम सन्देश देता रहेगा। उन्होने ऋषि दयानन्द की स्मृति को चिरस्थायी बनाने की दृष्टि से उनके स्मारक के रूप मे दयानन्द ऐंग्लोवैदिक कालेज स्थापित करने हेतु अपने जीवन को समर्पित कर दिया। निष्काम सेवा का ऐसा अनुपम उदाहरण भारतवासियो को ही नहीं अपितु विश्वभर को अमर सन्देश देता रहेगा। आज सैकडो की संख्या मे डी ए वी स्कूल और कालेज महात्मा जी के तप-त्याग का फलते, फूलते उपवन हैं। विदेशों में भी आज इस उपवन के फूल खिल रहे हैं।

महात्मा जी ने एक बार कहा था, 'आर्य समाज का सुधार उस वक्त होगा, जब अच्छे घरो के लोग सब कुछ त्याग कर देश के सुधार के लिये कार्य क्षेत्र मे उतरेंगे।' यह उनका अमर सन्देश था। 25 वर्ष तक बिना वेतन लिये पवित्र लगन से कालेज और आर्य समाज की निष्काम सेवा करना हम सब के लिये प्रेरणादायक है। आज उन जैसा त्याग मूर्ति मिलना असम्भव है। वास्तव मे वे महान थे। जब तक ये डी०ए०वी० स्कूल एवं कालेज रहेंगे तब तक उनका नाम और उनका त्याग अमर रहेगा।

उनको श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये हम सब संकल्प लें कि परमपिता परमात्मा हम सबको ऐसा त्यागमय जीवन प्रदान करें।

—सरला मेहता प्रधाना प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली राज्य

आर्य युवक परिषद पट्टी

आर्य युवक परिषद् पट्टी का पाचवा वार्षिक अधिवेशन 14 2 88 को आर्य-समाज पट्टी के तत्वावधान मे प्रि० डी० वी० पसरीचा डी० ए० वी० कालेज अमृतसर की अध्यक्षता मे धूमधाम से सम्पन्न हुआ। यज्ञ के पश्चात् प्रि० रतनदास जी ने मुख्य अतिथि प्रि० पसरीचा का जो कि परिषद् के मुख्य संरक्षक हैं स्वागत किया। इस अवसर पर पट्टी शहर तथा अमृतसर जिला के प्रतिष्ठित लोग और पंजाब प्रांतीय आर्य युवक परिषद के प्रधान श्री ओम्प्रकाश आर्य तथा महिला वर्ग की प्रधाना श्रीमती जगदीश रानी तथा डी०ए०वी० सी० सै० स्कूल के मैनेजर श्री ओम्प्रकाश भल्ला इस कार्यक्रम मे सम्मिलित हुए। विभिन्न स्कूलो के विद्यार्थियो ने रंगारंग प्रोग्राम प्रस्तुत किये। डी०ए०वी० शिक्षण संस्थाओ से सम्बन्धित स्वर्गीय ला० मुलख राज जी भल्ला को जो पट्टी शहर के ही रहने वाले थे, को सम्मेलन के अवसर पर भावभीनि श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

गोरखपुर मे राष्ट्र रक्षा यज्ञ

गोरखपुर 29 मार्च। जिला आर्योप-प्रतिनिधि सभा, आर्य युवक परिषद, विश्व हिन्दू रक्षा समिति गोरखपुर के तत्वावधान मे पंजाब मे आतंकवादियो द्वारा निरीह हिन्दुओ की जघन्य हत्याओ के विरोध मे जिलाधिकारी कार्यालय पर 'राष्ट्र रक्षा यज्ञ' किया गया। यज्ञ का संचालन आर्यसमाज की महिला सदस्याओ ने किया। यज्ञ मे आतंक-वादियो द्वारा मारे गये निरीह नागरिको की आत्मा की शांति के लिये प्रार्थना की गई। यज्ञोपरान्त एक जनसभा का आयोजन किया गया जिसको जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष प० द्विजराज शर्मा, जिला मंत्री श्री अशोक लोहिया नगर आर्य समाज के मंत्री श्री रमेश प्रसाद गुप्त, श्री राममंगल, श्री कल्पनाथ सिंह ठाकुर देवो, विद्यावती, विंध्यवासिनी प्रसाद आदि ने सम्बोधित किया। इस सभा ने पंजाब मे हो रहे जघन्य हत्याओ का विरोध करते हुये खालिस्तान न मागो तुम, सारा हिन्दुस्तान तुम्हारा है' नामक गीत प्रस्तुत किया गया।

—अशोक लोहिया

यू० 108/81 लायसेंस टु पोस्ट विदाउट प्रिपेमेंट
रजिस्ट्रेशन न० आर० एन० आई० 39/57
Delhi Postal Regd. No D (C) 409
N D. P.S.O ON 4/5-5-88 8 मई, 1988

आर्य प्रादेशिक सभा का वार्षिक अधिवेशन 29 मई को

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन रविवार 29 मई 1988 को प्रातः 10 बजे से आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के सभागार में होगा। इस वर्ष प्रादेशिक सभा के लिये वर्ष 1988, 89 90 (तीन वर्ष) के लिये सभी आर्यसमाजों से प्रतिनिधि चुनकर आने हैं।

सभा से सम्बन्धित समस्त आर्य समाजों को "क" "ख" फार्म भिजवा दिये गये हैं। "क" फार्म पर आर्य समाजों के सभी सदस्यों के नाम तथा पते एवं वार्षिक चन्दे का उल्लेख होगा और "ख" फार्म पर उन प्रतिनिधियों के नाम पते होंगे जो सभा के वार्षिक अधिवेशन में भाग लेंगे। सभा को वर्ष 1987 88 का दशांश भिजवाना आवश्यक है। यदि किसी आर्य समाज के पास "क" "ख" फार्म नहीं पहुंचे हैं तो वे सभा कार्यालय को सूचित कर फार्म मंगा लें।

जिन समाजों ने ऋषि निर्वाण (दिवाली) और ऋषिबोध पर्व (शिवरात्रि) के लिए धन एकत्र किया है वे भी सभा कार्यालय को शीघ्र धन भिजवाने की कृपा करें।

समस्त आर्य समाजों से प्रार्थना है कि वे अपनी अपनी आर्य समाज की वार्षिक रिपोर्ट एवं आय व्यय का ब्यौरा एक सप्ताह के अन्दर भिजवाने की कृपा करें ताकि वह ब्यौरा सभा की वार्षिक रिपोर्ट में प्रकाशित किया जा सके।

—राम नाथ सहगल, मन्त्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग

कन्या गुरुकुल दाधिया के लिए बस

आर्य कन्या गुरुकुल दाधिया का वार्षिक उत्सव 14, 15 मई 1988 को समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। 8 मई से यज्ञ आरम्भ होगा और पूर्णाहुति 15 मई को प्रातः 10 बजे होगी। गुरुकुल दाधिया नई दिल्ली से लगभग 125 कि० मी० है। दिल्ली से उत्सव में सम्मिलित होने वालों के लिये विशेष बस आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से 14 मई को सायं 5 बजे चलेगी। ठहरने तथा भोजन का प्रबन्ध गुरुकुल दाधिया की ओर से होगा। आने जाने का मार्ग व्यय पचास रु० होगा। जो यात्री जाना चाहें वे यात्रा के संयोजक ठा० यशपाल के पास अपनी राशि जमा करवा के अपनी सीटें सुरक्षित करवा लें। उन्हें 14 मई को अपराह्न 3 बजे आर्य समाज "अनारकली" की ओर से विदाई एवं जलपान का आयोजन किया जायेगा।

—घनश्याम आर्य निदेशक आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग नई दिल्ली

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का

युवक निर्माण शिविर

17 जून से 26 जून तक

योगसाधना शिविर का आयोजन

स्थान गुरुकुल कण्वआश्रम, कोट द्वार, पौडी गढ़वाल

स्वामी जगदीश्वरानन्द जी शिविराध्यक्ष होंगे। स्वामी जीवनानन्दजी व स्वामी दिव्यानन्दजी भी समय देंगे। ब्र० विश्वपाल जयन्त, श्री धर्मवीर ब्रह्मचारी राजकुमार आर्य आदि व्यायामाचार्यों की देख रेख में शिक्षण दिया जायेगा। शिविर शुल्क युवकों हेतु 60 रु० तथा योगसाधकों हेतु 100 रु० रहेगा। शुल्क जमा कराने की अन्तिम तिथि 10 जून 88 सायं 5 बजे तक। भोजन व आवास का निःशुल्क प्रबन्ध रहेगा। क्षेत्रीय शाखाध्यक्ष के अनुमोदन पर ही युवक लिए जायेंगे। शीघ्र स्थान सुरक्षित करवालें अन्य जानकारी हेतु बृजेश आर्य 7216173 और चन्द्रमोहन आर्य 519247 फोन से सम्पर्क करें।

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाड़ी धीरज (फोन 527335) दिल्ली से छपवाकर कार्यालय आर्य जगत् मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 (फोन 343718)

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य —30 रुपये   विदेश मे 65 पौ० या 125 डालर   वर्ष 51, अक 32   रविवार 7 अगस्त, 1988   दूरभाष 343718
आजीवन सदस्य-251, रु०   इस अक का मूल्य— 75 पसै   सृष्टि सवत 1972949089   दयानन्दाब्द 163   श्रावण कृ० 9, 2045 व०

सक्षिप्त किंतु महत्वपूर्ण

हैजे की गाज राज्यपाल पर

दिल्ली मे बढ़ते हैजे के प्रकोप को रोक पाने मे असमर्थ रहने पर केन्द्रीय सरकार ने दिल्ली के उपराज्यपाल तथा विकास प्राधिकरण और नगरनिगम के उच्च अधिकारियों की छुटी कर दी है। ये तीनों एक दूसरे पर दोषारोपण ही करते रहे और हैजे के केस बढ़ते रहे।

समाजवादी जनता दल

चार विपक्षी दलो ने मिलकर, चौ० देवीलाल की पहल पर, कांग्रेस के विकल्प के रूप मे नई समाजवादी जनता दल नामक पार्टी बनाई है। इसके सम्भावित अध्यक्ष श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह हैं। 15 अगस्त तक इसकी सही रूपरेखा सामने आ जाएगी।

सती मेला नहीं

राजस्थान सरकार ने इस वर्ष झुझनू में रानी सती के मन्दिर पर होने वाले सतीमेले पर प्रतिबन्ध लगाने का निश्चय किया है। इससे पहले सरकार की ओर से मेले के यातायात आदि सब सुविधाओ की व्यवस्था की जाती थी।

अयोध्या मार्च नहीं रुकेगा

मुफ्तियो द्वारा अयोध्या मार्च को गैर इस्लामी बताने के बावजूद राबिता कमेटी 12 अगस्त को लघु मार्च और 14 अक्तूबर को विशाल मार्च करने पर आमादा थी। विश्व हिन्दू परिषद् उस मार्च को न होने देने के लिए दृढ सकल्प थी। मुस्लिम लीग के अध्यक्ष और सासद सुलेमान सेठ ने केवल 14 अक्तूबर के ही मार्च की घोषणा की है, सो भी शान्ति पूर्ण। उन्होने प्रधानमत्री को भी इस प्रश्न के शान्ति पूर्ण समाधान के लिए लिखा है।

शिक्षक 'सामान्य कर्मचारी' नहीं

उच्चतम न्यायालय ने निर्णय दिया है कि स्कूल और कालेजो के अध्यापको को औद्योगिक विवाद ऐक्ट के अन्तर्गत सामान्य कर्मचारी या मजदूर नहीं गिना जा सकता इसलिए प्रबन्धको से उनके विवाद को श्रमिक न्यायाधिकरण में नहीं ले जाया जा सकता। शिक्षक आदर्श नागरिक तैयार करने के लिए मिशनरी की भावना से काम करता है।

तीन लाख भारतीयों का धर्मान्तरण?

फिजी को ईसाई राष्ट्र बनाने का षड्यंत्र

गत वर्ष दो बार तख्ता पलट क्रान्ति के बाद जबर्दस्ती फिजी की सत्ता हथियाने वाले ब्रिगेडियर जनरल राबुका ने घोषणा की है कि मैं सब भारतीयो को चाहे वे हिन्दू हो या मुसलमान–धर्मान्तरण करके ईसाई बनाना चाहता हू और फिजी को ईसाई राष्ट्र घोषित करना चाहता हू।

हाल में ही छपी एक पुस्तिका मे इस दक्षिण प्रशान्त महासागरीय द्वीप-राष्ट्र के अधिनायक ने साफ-साफ कहा है कि मैं भारतीयो का विश्वास नहीं करता। झूठ बोलना उनकी नस्ली खासियत है, वे कहते कुछ हैं। करते कुछ हैं फिजी के मूल निवासी ऐसे नही हैं।

तानाशाह को यही शिकायत है कि जब और फिजी वालो ने ईसाइयत को सहज ही अपना लिया, तब ये भारतीय उसे क्यो नही अपनाते ईसाइयत को अपनाकर फिजी के लोगो ने अपनी नरभक्षण की जगली आदत से मुक्ति पाई हैं। उसे यह भी डर है कि यदि इन भारतीयों को ईसाई नही बनाया गया, तो ये सबको भी हिन्दू बना लेंगे। इस चुनौती को हमे स्वीकार करना है।

इस समय फिजी मे तीन लाख भारतीय रहते हैं। वहा की कुल आबादी सवा सात लाख है, जिसमे भारतीय 48 2 प्रतिशत हैं, 46 4 प्रतिशत फिजीयन हैं और शेष यूरोपियन हैं।

जनरल ने कहा है कि हम सबका बलात धर्मान्तरण करेंगे, जो ईसाई बनने से इन्कार करेंगे उनका फिजी मे रहना हम मुश्किल कर देंगे। जनरल ने हाल मे ही सारे राष्ट्र मे रविवार को छुटटी का दिन घोषित करके उस दिन सब व्यावारिक गतिविधियो और यातायात तक पर रोक लगा दी है। मत्रिमण्डल के सदस्यो का कहना है कि नए सविधान में फिजी को ईसाई राष्ट्र घोषित करने की व्यवस्था की जा रही है।

60 प्रतिशत भारतीय खेती बाडी करते हैं उन्हें डर है कि इस सदी के अन्त तक उनकी पट्टेदारी खत्म होने पर उनसे जमीने वापिस ले ली जाएगी। क्योकि फिजी के नए कानून के अनुसार सारी जमीन पर केवल सरकार का या फिजियनो का ही कब्जा हो सकता है, कोई भारतीय जमीन का मालिक नही हो सकता।

'आर्यजगत्' का आगामी अक (14 अगस्त) स्वाधीनता दिवस अक होगा। कृपया पाठक नोट कर लें।

धूम्रपान के विरुद्ध देश-विदेश में व्यापक अभियान

दिल्ली प्रशासन ने राजधानी में सिगरेट के विज्ञापनो पर प्रतिबन्ध लगा दिया है। नई दिल्ली नगरपालिका, दिल्ली नगर निगम और दिल्ली विकास प्राधिकरण से कहा है कि वे शहर के किसी भी भाग में तमाखू सम्बन्धी किसी भी विज्ञापन के लिए स्थान न दे। प्रशासनिक या नगरपालिका सस्थाओ की कान्फ्रेंसो मे धूम्रपान की अनुमति नहीं होगी।

विश्व स्वास्थ्य सगठन ने एक प्रस्ताव मे ससार के सभी देशों से तमाखू से होने वाली हानियो के विरुद्ध सघर्ष करने का आह्वान किया था। सार्वजनिक वाहनो में भी इस प्रस्ताव पर सख्ती से अमल किया जाएगा—हालाकि उन वाहनो 'धूम्रपान निषेध' लिखा होने पर भी उसका उल्लघन ही अधिक होता है। खास तौर से बसो के ड्राइवर और कंडक्टर उसका सबसे अधिक उल्लघन करते हैं।

महाराष्ट्र सबसे पहला राज्य है जिसमे सरकारी और अर्ध सैनिक कार्यालयो और इमारतो में धूम्रपान तथा थूकने पर पाबन्दी लगी थी। अब राज्य सरकार नाबालिग बच्चो द्वारा सिगरेट बेचने को अपराध घोषित करने की सोच रही है। उन्होने केन्द्र को भी सुझाव दिया है कि अखबारो और पत्र पत्रिकाओ में सिगरेट और शराब के विज्ञापनो पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाए।

सिगरेट हेरोइन जसी हानिकारक

अमरीका के एक बड़े डाक्टर ने कहा है कि निकोटीन का सेहत पर उतना ही बुरा असर होता है जितना हेरोइन का अन्य अनेक डाक्टरो ने भी इसका समर्थन किया है।

खुद धूम्रपान न करने पर भी उसका धूआ अन्दर जाने से ही कैसर हो सकता है। आस्ट्रेलिया मे एक बस ड्राइवर ने अदालत में मुकदमा किया कि मैं स्वय धूम्रपान नही करता परन्तु 20 साल तक धूम्रपान करने वाले मुसाफिरो से मेरा पाला पडा है इसी लिए मुझे फैफडो का कैसर हो गया हैं। आखिर अदालत ने हर्जाने के तौर पर ड्राइवर को 52,200 डालर दिलवाए। उसके बाद से, सन् 1976 से, आस्ट्रेलिया ने सब सार्वजनिक वाहनो पर धूम्रपान निषिद्ध कर दिया है और धूम्रपान करने वाले ड्राइवर रखना भी बन्द कर दिया है।

बगलादेश की सरकार ने अपने दफ्तरो मे धूम्रपान पर प्रतिबन्ध लगा दिया है।

श्रीलका मे दुकानदारो ने सिगरेट बेचना बन्द कर दिया है, क्योकि ऐसे दुकानदारो को उग्रवादी अपनी गोलियो का निशाना बना देते हैं।

पाश्चात्य देशों मे धूम्रपान विरोधी अभियान के परिणामस्वरूप कनाडा मे 55 लाख, ब्रिटेन मे दस लाख और अमरीका मे 40 लाख लोग धूम्रपान छोड चुके हैं।

इंडियन कौंसिल आफ मेडिकल रिसर्च की रिपोर्ट के अनुसार सारे देश में कैंसर के जितने केस होते हैं उनमे से पुरुषो मे आधे केस और महिलाओ मे चौथाई केस केवल धूम्रपान के कारण होते हैं।

सम्पादक—क्षितीश वेदालकार   व्यवस्थापक—रामलाल मलिक

सामवेद—एक काव्यांजलि (3)

—प. लेखराम, वरिष्ठ पत्रकार—

1 अग्नि वो वृधन्तमध्वराणा पुरूतमम् ।
अच्छा नेप्त्रे सहस्वते ॥ 1 ॥

2 अग्निस्तिग्मेन शोचिषा यसद् विश्व न्यात्रिणम् ।
अग्निर्नो वसते रयिम् ॥ 2 ॥

3 अग्ने मृड महाँ अस्यय आ देवयु जनम् ।
इयेथ बर्हिरासदम् ॥ 3 ॥

4. अग्ने रक्षाणो अहस प्रति स्म देव रीषत ।
तपिष्ठैरजरो दह ॥ 4 ॥

5. अग्ने युड्क्ष्वा हि ये तवाश्वासो देव साधव ।
अर विहन्त्याशव ॥ 5 ॥

6 नि त्वा नक्ष्य विश्पते द्युमन्त धीमहे वयम् ।
सुवीरमग्न आहुत ॥ 6 ॥

7 अग्निमूर्धा दिव ककुत्पति पृथिव्या अयम् ।
अपा रेतासि जिन्वति ॥ 7 ॥

8 इमम् षु त्वमस्माक सनि गायत्र नव्यांसम् ।
अग्ने देवेषु प्र वाच ॥ 8 ॥

9 त त्वा गोपवनो गिरा जनिष्ठदग्ने अड्गिर ।
स पावक श्रुधी हवम् ॥ 9 ॥

10 परि वाजपति कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् ।
दधद्रत्नानि दाशुषे ॥ 10 ॥

11 उदु त्य जातवेदस देव वहन्ति केतव ।
दृशे विश्वाय सूर्यम ॥ 11 ॥

12 कविमग्निमुप स्तुहि सत्यधर्माणमध्वरे ।
देवममीव चातनम् ॥ 12 ॥

13 श नो देवीरभिष्टये श नो भवन्तु पीतये ।
श योरभि स्रवन्तु न ॥ 13 ॥

14 कस्य नून परीणसि धियो जिन्वसि सत्पते ।
गोषाता यस्य ते गिर । 14 ॥

तृतीय दशति

21—उचित उपासना करें हम ।
निज ज्ञान अरु निज कर्म मे
क्रम बद्ध अभिवृद्धि कर हम
सम्यक विधि विधान पूर्वक
निशि दिन प्रार्थना करें हम ।
उचित उपासना करें हम ।

है बन्धु समान सहायक
तेजोमय वह पिता परम
अच्छी प्रकार सेवें, हो
विनीत याचना करें हम ।
उचित उपासना करें हम । 1 ।

22—प्रभु जी तुम ही हो दाता ।
वज्र तुल्य तीक्ष्ण तेज से
तेजोमय निज विवेक से
करते दुष्ट दल सहार
हो सर्व जगत के त्राता ।
प्रभु जी तुम ही हो दाता ।

है अग्नि रूप पुरुष वही
परम ईश्वर त्राता मही
हमारे हित अथ सदैव
धन-धान्य समृद्धि जुटाता ।
प्रभु जी तुम ही हो दाता । 2 ।

23—हे परमेश हमे सुख दो ।
अग्नि रूप तुम हो महान्
भक्त जन पर कृपा निधान
प्राप्त मात्र देवी नर को,
दे आनन्द हमे सुख दो ।
हे परमेश हमें सुख दो ।

ज्ञान, कर्म स्थल मे विराज
कर उन्नति अग्रसर आज
भर-भर दो हमे मोद से
परमानन्द हमे सुख दो ।
हे परमेश हमें सुख दो । 3 ।

24—देव हमारा रक्षण करो ।
अग्नि रूप आप हैं अजर
दिव्य गुण युक्त, बली, अमर
पापी, अन्यायी जन को
शमित तेज से भस्म करो ।
देव हमारा रक्षण करो ।

हैं तीव्र ओज युक्त आप
है सवत्र तेरा प्रताप
अपने तेज, ओज, बल से
हिंसक जन का हनन करो ।
देव हमारा रक्षण करो । 4 ।

25—हैं गुण तेरे बहुतेरे ।
दिव्य गुण युक्त अग्नि रूप
परम ईश्वर तेज स्वरूप
व्यापक समस्त गुण तेरे
अरु साधन युक्त घनेरे ।
है गुण तेरे बहुतेरे ।

ये हैं शीघ्र कार्य कारी
पूर्ण प्रभावी गुणकारी
तुरन्त युक्त, हित करते
भरपूर, निपुण गुण तेरे ।
हैं गुण तेरे बहुतेरे । 5 ।

26—करते हम ध्यान निरन्तर ।
हे शरण्य, हे प्रजापते
आह्वान करते नित तुझे
प्रकाश स्वरूप तुम्हे नित
जपता प्रति क्षण मम अन्तर ।
करते हम ध्यान निरन्तर

श्रेष्ठ भक्त जन से सेवित
द्युतिमान युग युग पूजित
तुम्हे सुमरते सर्व जन
देश मे और देशान्तर ।
करते हम ध्यान निरन्तर । 6 ।

27—कर्म गति जाने मात्र तू ।
सर्वोच्च, उच्चता निकुंज,
प्रकाश का उत्तुङ्ग पुंज,
हैं पृथिव्यादि का पालक
है अग्नि स्वरूप ईश तू ।
कर्म गति जाने मात्र तू ।

समस्त कर्मों का साक्षी
सब जन का शुभ आकांक्षी
कर्म बीज का ज्ञाता अरु
फलदाता एकमात्र तू
कर्म गति जाने मात्र तू । 7 ।

28—हो तुम दयालु उपदेशक ।
अग्नि रूप ज्ञान प्रदाता
सब जग तेरे गुण गाता
हमारे नवीनतम हृष्य
के हो उत्तम शुभ प्रेरक ।
हो तुम दयालु उपदेशक ।

दैवी प्रवचन से सम्बद्ध
श्रेष्ठ विद्या से आबद्ध
गायत्री आदि छन्दो के
हो तुम गायक अनुप्रेरक ।
हो तुम दयालु उपदेशक । 8 ।

29—मम स्तुति अंगीकार करो ।
अग्नि स्वरूप ज्ञान सागर
सर्व गुणों के हो आगर
पवित्र वाणी से करूं स्तुति
तुच्छ भेंट स्वीकार करो ।
मम स्तुति अंगीकार करो ।

हे पवित्र कारक ज्ञान निधि
हे पतित पावन दया निधि
विनीत स्तुति सुन अब मेरी
कृपालु तुम स्वीकार करो ।
मम स्तुति अंगीकार करो । 9 ।

30—तु है समृद्धि का दाता ।
हे अन्न पति, अन्न दाता
कवि, बुद्धिमान अरु धाता
धन समृद्धि प्रदान कर्त्ता
सर्व व्यापक हे विधाता ।
तु है समृद्धि का दाता ।

दानी जन को ग्रहण योग्य
देता समृद्धि उचित भोग्य
कर्म अनुसार दे सब को
कैसा न्याय युक्त नाता ।
तु है समृद्धि का दाता । 10 ।

31—हम कैसे जानें तुझ को ।
हे ईश्वर ज्ञान प्रकाशक
दिव्य गुण पूर्ण जग शासक
सूर्य सदृश ज्योति युक्त तु
कैसे पहचानें तुझ ।
हम कैसे जानें तुझको ।

जस सूर्य हम पहचानते
किरणो से उसे जानते
प्रज्ञान, चेतना आदि गुण
से तुम पहचानो उसको ।
हम कैसे जानें तुझको । 11 ।

32—करो उपासना और स्तुति ।
कवि, सर्वज्ञ, सत्य धर्म युत
रोग विनाशी प्रकाश युत
है सब विधि वह पूजनीय
मिल कर सब करो नित्य स्तुति ।
करो उपासना और स्तुति ।

ज्ञान ध्यान मे हो नियमित
कर्म क्रिया द्वारा पूरित
उसी दशा मे हो सम्यक्
उस परमेश की उचित स्तुति ।
करो उपासना और स्तुति । 12 ।

33—भगवन सुख की वर्षा कर ।
दिव्य शक्ति से युक्त पिता
प्रकाशवान, ज्योति सविता
मन चाहा सुख प्रदान कर
हमारा नित कल्याण कर ।
भगवन सुख की वर्षा कर ।

दिव्य शक्तियाँ होवें तब
आनन्द दायिनी नित सब
पिता पूर्ण तृप्ति के लिए
हमारी, हो सदा सुखकर ।
भगवन सुख की वर्षा कर । 13 ।

34—बुद्धि से करते भरपूर ।
सत्य अरु सन्तो के रक्षक
पाप और दुष्ट विनाशक
जिस की वाणी अमृत भरी
उसे करो कष्ट से दूर ।
बुद्धि से करते भरपूर ।

वे उसे बुद्धियाँ अनेक
होती जो पूरित विवेक
कृपा कर तुम हे जगदीश
करते उसे सुख से पूर ।
बुद्धि से करते भरपूर । 14 ।

पता—18 आनन्दलोक नई दिल्ली 49

सुभाषित

भीतर ही भीतर
उमड़ते-घुमड़ते बादलों को
दौड़ने के लिए चाहिए आकाश,
केवल आकाश !
क्या है तुम्हारे पास ?

भीतर ही भीतर
उमड़ते-घुमड़ते बादलों को
दौड़ने के लिए चाहिए विश्वास,
केवल विश्वास ।
क्या है तुम्हारे पास ?

मैं जानता हू,
न तुम्हारे पास है आकाश,
न विश्वास ।

तुम मेरे हाथ में
पकड़ा सकते हो,
केवल एक टुकड़ा इतिहास ।
कैसा उपहास !

—मुनि रूपचन्द्र ('भूमा' से)

सम्पादकीयम्

अन्धविश्वासों की बाढ़

पहले देश के अधिकांश भागों में भयकर सूखा पड़ता रहा, अब जब बरसात की झड़ी लगी तो अनेक राज्यों को बाढ़ के सकट ने आ घेरा । यह तो भौमिक धरातल की बात है जिसमें प्रकृति के पट-परिवर्तन के साथ इस प्रकार के परिवतन आते ही रहते हैं । पर देश का एक मानसिक धरातल भी है जिसको आज से नहीं, चिरकाल से, अन्धविश्वासों की बाढ़ ने घेरा हुआ है । बरसात का मौसम खत्म होन पर इस बाढ़ का सकट तो धीरे-धीरे टल जायेगा, पर अन्धविश्वासो की बाढ़ ने जिस तरह से देश के सामान्य जन को घेरा हुआ है, वह आसानी से टलने वाला नहीं है । आश्चर्य की बात यह है कि हमारे अधिकाश राजनेताओं का ध्यान इस प्राकृतिक बाढ़ की ओर तो जाता है, परन्तु मानसिक अन्धविश्वासों की उस बाढ़ की ओर नहीं जाता । कुछ धर्मनेता तो दिन रात उन अन्धविश्वासो का समर्थन करने में ही अपने कर्तव्य की इतिश्री समझते हैं क्योंकि उन अन्धविश्वासो के रहते हुए ही इन धर्मनेताओ की स्वार्थ-सिद्धि सम्भव है । जिस दिन वे अन्धविश्वास दूर होंगे उस दिन सबसे पहले ये धर्मनेता ही अन्यथासिद्ध होंगे ।

हम बड़े गर्व के साथ यह घोषणा किया करते हैं कि इस देश में हिन्दुओ की संख्या सबसे अधिक है, वे 85 प्रतिशत हैं, इसलिए समस्त सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक लाभों पर उन्हीं का वर्चस्व होना चाहिए । जिस विशाल हिन्दू समाज पर हम गर्व करते हैं, वह है कहां ? अगर वह एक सुसूत्रित, सगठनबद्ध और किन्हीं समान आदर्शों पर चलने वाला एक अनुशासित समाज होता तो क्या इस राष्ट्र को हिन्दू राष्ट्र बनाने की मांग करनी पड़ती ? वह एक स्वय सिद्ध हिन्दू राष्ट्र होता ही । पर दुःख इसी बात का है कि हिन्दू राष्ट्र का द्योतक वैसा संगठित समाज कहीं है नहीं । हिन्दू समाज नहीं—वह तो केवल विभिन्न जातिवादी समुदायों में बटा अल्पसख्यक वर्गों का एक जमघट मात्र है । क्षुद्र जातीय भावनाओ, प्रादेशिक भाषाओं और सकीर्ण स्वार्थों से घिरा यह समाज राष्ट्रीय चेतना से शून्य है । हम जिस राष्ट्रीय एकता की बात करते हैं, वह केवल कल्पना में है, व्यवहार में नहीं है । इसलिये जब भी कभी राष्ट्रीय एकता की बात होती है तब ऐसा लगता है जैसे वह कोई ऊपर से थोपी जाने वाली और आसमान से उतरने वाली चीज है, हमारे अन्तःकरण से स्वतः उपजी कोई स्वाभाविक अनुभूति नहीं है । आज देश की सबसे बड़ी विडम्बना यही है ।

हमारे जितने बड़े-बड़े शूरवीर योद्धा हुए या अखिल विश्व में ख्याति अर्जित करने वाले विद्वान, वक्ता, मनीषी और राजनेता हुए, वे सब अपने-अपने अवदानो के लिये इस राष्ट्र में सदा वन्दनीय और महनीय रहेंगे । परन्तु उनमें से कितने हैं जिन्होने हिन्दू समाज के अन्धविश्वासों को या अन्धरूढ़ियों को, जिनके नीचे समाज निरन्तर जीर्ण शीर्ण होकर बिखर रहा है, तोड़ने को अगुली भी उठाई हो ? उन अन्धविश्वासों को हटाये बिना जितने भी राजनैतिक या सामाजिक सुधार हैं वे सब पत्तियो को सींचने के बराबर रह जायेंगे । उस समाज मे हरियाली कभी नहीं आयेगी ।

कहने को ये अन्धविश्वास सारे ससार मे हैं, और केवल अनपढ लोग ही नहीं, बल्कि बड़े-बड़े विद्वान और सुशिक्षित लोग भी ऐसे अन्धविश्वासो से घिरे हुए हैं । यह शायद उनका अपना दोष न भी हो क्योंकि वे जिस पुराने सस्कार की जड़ता में पले हैं और बढ़े हैं वहां कभी तर्क और बुद्धि सगत बातो की हवा पहुच ही नहीं पाई और जब हवा पहुची भी तो वे अपने सस्कारो में इतने जकड़े जा चुके थे कि वे उनकी आदत में शुमार हो गए थे । आदतों का छूटना तो आसान नहीं होता न !

यहीं से बुद्धिवादी समाज सुधारकों का सघर्ष शुरू होता है । यह एक ऐसा सघर्ष है जिसकी कभी अन्तिम सीमा तय नही की जा सकती । जब तक मानव जाति है तब तक कम से कम कष्ट उठाकर अधिक से अधिक लाभ पाने के लिये—फिर वह लाभ चाहे धार्मिक हो, आध्यात्मिक हो या राजनैतिक, मनुष्य की प्रवृत्ति बनी ही रहेगी । यह उसकी मनोवैज्ञानिक दुर्बलता है । इसीलिये जो सरलतम मार्ग से स्वर्ग या मोक्ष पहुचने का मार्ग बता सके, चुटकी भर राख से ही असाध्य रोगों का इलाज कर सके, ग्रहों को प्रसन्न कर लॉटरी खुलवा सके या किसी तन्त्र मन्त्र के द्वारा सत्ता के शिखर तक पहुचा सके उस धर्म गुरु की पूछ होती है । उन तथाकथित भगवानों के पीछे जनता भेड़ के भाव से भागती है और उन भगवानों में भी अपनी सिद्धियो और चमत्कारों के प्रदर्शन की होड़ लगी रहती है । दुनिया का यही क्रम है । मेरे पीछे तू और तेरे पीछे मैं का एक महाअभियान चलता रहता है—गतानुगतिको लोकः न लोक पारमार्थिक ।

—एक दूसरे की देखा देखी लोग चलते चले जाते हैं और वास्तविकता को जानने का प्रयत्न नही करते । इस दृष्टि से हिन्दू समाज जितना विशाल है, उसके अन्धविश्वासों का जाल भी उतना ही विशाल है ।

इन अन्धविश्वसों की गिनती कहा तक गिनायें ? कोई अपनी कामना-पूर्ति के लिये देवता के आगे पशु की बलि चढ़ाता है, कोई दुधमुहें बच्चे का अपहरण कर उसकी हत्या कर उसके ताजा रक्त से अपने माथे पर तिलक लगाता है, कोई अपनी जीभ काट कर देवी की भेंट चढ़ाता है और कोई किसी तान्त्रिक के कहने से अपने सगे बेटे की ही बलि चढाने से बाज नही आता । अन्धविश्वासो का रग इतना गहरा होता है कि इस प्रकार के कुकृत्य करने वालों को अपनी आत्मा मे कभी अपराध बोध नही होता । इनमे इतनी सामाजिक चेतना ही नहीं होती ।

इन व्यक्तिगत अन्धविश्वासो के अलावा कुछ सामाजिक अन्धविश्वास भी होते हैं जिनके विरुद्ध केवल कानून बना देने से उनको समाप्त नहीं किया जा सकता । इसका अर्थ यह नहीं है कि वे कानून निरर्थक हैं । उन कानूनो की अपनी उपयोगिता है, परन्तु मूल समस्या यह है कि उन कानूनो का पालन करवाने की जिम्मेवारी जिनके ऊपर है, उनमे उन्हें लागू करने की हिम्मत नहीं है । या शायद उन अधिकारियों के मन में भी उन अन्धविश्वासों के प्रति कोई कोमल भावना छिपी हुई है जिसके कारण उनका उल्लघन करने वालों के प्रति वे कोई कठोर रवैया नहीं अपना पाते । हम सती प्रथा, बाल विवाह और छूआछूत को ऐसे सामाजिक अन्धविश्वासों में ही गिनते हैं ।

हाल में ही एक सर्वेक्षण के बाद यह पता लगा है कि इस देश में कम से कम एक करोड़ लड़कियां ऐसी हैं, जिनका विवाह ग्यारह वर्ष की आयु से पहले ही हो गया था । बाल विवाह की प्रथा हमने मुगल काल मे सीखी या किसी और काल में, यह अलग बात है, परन्तु यह ऐसी प्रथा है जिसने सारे हिन्दू समाज को दुर्बल बना दिया है । इस सर्वेक्षण से यह भी पता लगा कि बाल विवाह का सम्बन्ध अशिक्षा के साथ जुड़ा हुआ है । एक कुप्रथा दूसरी कुप्रथा को जन्म देती है । पहले स्त्रियो को शिक्षा से वंचित किया, उसके बाद अबोध अवस्था में ही उन्हें विवाह के बन्धन मे बांध कर कन्या के पितृत्व के अभिशाप से मुक्ति पाई और गगा स्नान का पुण्य लाभ प्राप्त कर लिया ।

सर्वेक्षण से यह भी पता लगा है कि जो मातायें केवल प्राईमरी तक पढी हैं या अशिक्षित हैं उनके छ से अधिक बच्चे हैं, और जो माताए मिडिल कक्षा तक पढ़ी हैं, उनके पांच बच्चे हैं, जो मैट्रिक तक पढ़ी हैं उनके चार और जो कालेज तक पढ़ी हैं उनके दो बच्चे हुए हैं । इस प्रकार शिक्षा परिवार नियोजन से किस हद तक जुड़ी हुई है, इसकी कल्पना की जा सकती है । गरीबी और अशिक्षा ये दोनों मिल कर बाल विवाह का कारण बनती हैं और सरकार की परिवार नियोजन सम्बन्धी सारी योजनायें रखी रह जाती हैं । बाल विवाहो के कारण पैदा हुये बच्चे ही प्रसव काल में सबसे अधिक मौत के शिकार होते हैं । इस तरह से बाल विवाह सीधा मानव हत्या का साधन बनता है ।

जिस राजस्थान के एक अग्रणी आर्य समाजी नेता, समाज सुधारक और ऋषि दयानन्द से प्रेरणा ग्रहण करने वाले हरबिलास शारदा ने शारदा ऐक्ट के नाम से बाल विवाह के विरोध में सन् 1930 में कानून बनवाया था, उसी राजस्थान मे उसका सबसे अधिक उल्लघन होता है । हर वर्ष अक्षय तृतीया के दिन तो हजारों की सख्या में अबोध बालको और बालिकाओं के विवाह का पर्व भी सिवाय राजस्थान के ससार के किसी और प्रदेश में नहीं मिलेगा । और तो और, स्वय राजस्थान के एक मन्त्री महोदय भी इस कानून का उल्लघन करने से बाज नहीं आये, पर सरकार ने कोई कदम नहीं उठाया । यदि सरकार स्वय अपने कानूनों का पालन करने की चिन्ता नहीं करेगी तो आसमान के देवता तो उसके लिए आएंगे नहीं । इस प्रकार के सामाजिक अंधविश्वासों को बढ़ावा देने में जितना दोष उनका समर्थन करने वाले पुरी के शंकराचार्य जैसे धर्मनेताओं का है, उतना ही बड़ा दोष उन राजनेताओं का है जो सती प्रथा या छूआछात या बालविवाह विरोधी कानूनों का पालन न करते हैं, न करवाते हैं, समाज को इन दोनों से ही जवाबतलब करना चाहिये ।

संविधान-विरोधी गुरुद्वारा ऐक्ट को समाप्त करो

—पी० सी० चटर्जी —

पिछले कुछ दिनो में बार-बार अपने रुख में परिवंनन करके शिरामणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी ने अपने आश्चर्यजनक राजनीतिक छल का प्रदर्शन किया है। आपरेशन ब्लेक थडर के तुरन्त पश्चात उसने सरकार की इस माग को मानने से इन्कार कर दिया कि वह स्वर्ण मदिर का आतकवाद और राजनीतिक प्रयोजनो के लिए इस्तेमाल नहीं होने देगी। इस आपरेशन को भी कमेटी ने सिक्खो और सिक्ख पन्थ पर हमला ही बताया था। उसके बाद अचानक ही उन सब शर्तों को उसने मानना स्वीकार कर लिया जिनसे पहले उसने इन्कार कर दिया था और मुख्य ग्रथियों को हटा दिया।

ऐसा लगता है कि पाकिस्तान यह आशा लगाये बैठ था कि आपरेशन के बाद सिक्ख जनता विद्रोह के लिए उठ खडी होगी, परन्तु जब उसकी यह आशा पूरी नही हुई तो उसने कमेटी को उक्त प्रकार का आदेश दिया। इस्लामाबाद ने अपना खेल खेलते हुए कमेटी से कहा कि वह गेंद सरकार के पाले मे ही फेंक दे। परन्तु जैसे इतनी पुलाट काफी नहीं थी। कुछ दिन बाद कहा गया कि मुख्य ग्रथियो को हटाया नहीं गया। फिर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी ने अपनी एक गुप्त बैठक की जिसमें यह निश्चय किया कि कमेटी केवल सिक्ख पन्थ के लिए जिम्मेदार है और भविष्य में वह सिक्खो के धार्मिक मामलों में सरकार के किसी प्रकार के दखल को सहन नहीं करेगी।

राजनीतिक लाभ के लिए

इस सबसे इस बात को पुष्टि होती है कि जिस अकाली दल ने ब्रिटिश सरकार का एक तरफ सरका दिया था और फिर वह स्वय उसके घेरे से निकल नहीं सका था, उसके द्वारा बनाई गई यह कमेटी भी उसी आत्मघाती रास्ते पर चल रही है। अपने तात्कालिक राजनीतिक लाभ की दृष्टि से कांग्रेस पार्टी ने अकालियो के साथ सहयोग किया था, जबकि गांधी जी उसके पक्ष में नहीं थे। उसी के फलस्वरुप सिक्ख गुरुद्वारा ऐक्ट बना था जिसके तहत शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी का निर्माण किया गया। वह ऐक्ट भारत के सम्प्रदाय-निरपेक्षता के सिद्धान्त के अनुकूल नही है और संविधान का भी उल्लघन करने वाला है। फिर भी सन् 1920 के दशक में यदि कांग्रेस ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी का समर्थन किया था, तो इस आशा में कि वह राजनीति से परहेज करेगा। परन्तु शुरू से ही वह इस विश्वास को झुठलाती रही तो। फिर अब उसी गुरुद्वारा ऐक्ट की और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी की गलती को दोहराते चले जाने की क्या तुक है जबकि उनकी विश्वसनीयता सर्वथा समाप्त हो चुकी है। 1925 के गुरुद्वारा ऐक्ट में कमेटी के 160 सदस्यों की व्यवस्था है जिनमें से 140 चुने जायेंगे और बाकी के सिक्खो के विभिन्न वर्गो द्वारा नामजद किये जायेंगे। केवल सिक्ख ही इस चुनाव में भाग ले सकते थे, वही वोट दे सकते थे और वही उसके सदस्य भी हो सकते थे। सिक्ख की परिभाषा यह की गई थी कि जो दस गुरूओं और ग्रन्थ साहब मे आस्था रखे, भिन्न-भिन्न किसी अन्य मत को न माने, वही सिक्ख है, अन्य कोई नहीं। हरेक मतदाता को यह घोषणा करनी पड़ती थी कि वह इसी अर्थ में सिक्ख है और सिक्ख से भिन्न किसी अन्य मत में विश्वास नहीं करता। घोषणा का यह अन्तिम हिस्सा ही उन सहजधारी सिक्खो को मतदान के अधिकार से वंचित कर देता है जो सिक्ख मत में तो आस्था रखते हैं, परन्तु हिन्दुत्व के प्रति भी अपनी निष्ठा छोड़ने को तैयार नहीं। वे सिक्खों को भी हिन्दू धर्म का ही अंग मानते हैं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी की कार्य समिति का कार्यकाल पांच वर्ष होता है और उसमें कमेटी द्वारा चुने गये 15 व्यक्ति होते हैं। कमेटी का न्यायिक पक्ष भी होता है जिसमें तीन रिटायर्ड जज होते हैं जिन्हें सरकार कार्य समिति द्वारा तैयार किये गये पेनल में से चुननी है। इस ऐक्ट में कई बार संशोधन हुए हैं, खास तौर से हरियाणा और हिमाचल प्रदेश के अलग राज्य बन जाने से होने वाले परिवर्तनों के कारण। लेकिन कमेटी का बुनियादी ढांचा ज्यों का त्यो रहा है।

किन ऐतिहासिक परिस्थितियों में वह ऐक्ट अस्तित्व में आया था और उसका महत्त्व क्या था, यह आज के प्रसंग में विशेष महत्व की बात नहीं है। जब प्रथम विश्व युद्ध समाप्त हुआ तब सिंह सभायें गुरुद्वारों को महन्तो के नियन्त्रण से मुक्त करने का आन्दोलन चला रही थीं। जब वह आन्दोलन विफल हो गया तब उन गुरुद्वारों पर ताकत के द्वारा अपना नियन्त्रण स्थापित करने के लिए 15 नवम्बर, 1920 को यह ऐक्ट बना और उसके एक महीने बाद शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी की लड़ाकू भुजा के तौर पर शिरोमणि अकाली दल अस्तित्व में आया। अपने जन्म काल से ही इस दल में अनेक गुट रहे हैं और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी पर अकाली दल का वर्चस्व है।

साझी लड़ाई

ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध साझी लड़ाई के रूप में गुरुद्वारों पर नियन्त्रण की सिक्खो की मांग का कांग्रेस ने समर्थन किया था और इसके बदले में सिक्ख और अकाली दल असहयोग आंदोलन में शामिल हुए थे। इस सहयोग को और पुख्ता करने के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के अध्यक्ष बाबा खड़ग सिंह को पंजाब प्रदेश कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया गया। इस प्रकार शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी और अकाली दल राजनीतिक गतिविधियों में हिस्सा लेने लगे। यह ध्यान देने की बात है कि गांधी जी ने 20 अप्रैल 1924 को ही शिरोमणि कमेटी के सचिव को पत्र लिखकर कहा था कि अकाली नेताओं को यह घोषणा करनी चाहिए कि हमारी संस्था केवल धार्मिक है, उसका कोई राजनीतिक उद्देश्य नहीं है, सिक्ख राज्य स्थापित करने का उसका कोई इरादा नहीं है और शिरोमणि कमेटी हिन्दुओं के या किसी अन्य जाति या सम्प्रदाय के विरुद्ध नहीं है।

ब्रिटिश सरकार को इस ऐक्ट से एक अलग वितृष्णा थी। उस समय पंजाब के गवंनर लार्ड हेली ने कहा था—"यदि हम कोई केन्द्रीय कमेटी बनाने की बजाय गुरुद्वारों को पूरी तरह से स्थानीय कमेटियों के प्रबन्ध के आधीन रखें तो मुझे तथा और बहुतों को प्रसन्नता ही होगी। एक केन्द्रीय सिक्ख कमेटी बनाने का विचार ठीक नहीं है क्योंकि तब धार्मिक कारणों के नाम पर उसका राजनीतिक दुरुपयोग करने की गुंजाइश हमेशा बने रहेगी।

निकट अतीत के इतिहासकारो ने यह बात भली-भांति देख ली है कि इस ऐक्ट से सिक्खो के सांप्रदायिक अलगाव को और सिक्ख समुदाय मे शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी को अनुपम अधिकार प्राप्त हो गया है। शिरोमणि कमेटी एक राज्य के अन्दर इस हद तक दूसरा राज्य बन गई है कि वह यह कहने लगी है कि वह पन्थ के सिवाय किसी और के प्रति जिम्मेवार नहीं है। शिरोमणि कमेटी और अकालियों की ओर से बार बार गुरुद्वारा ऐक्ट को सारे भारत पर लागू करने की जो मांग की जाती है उससे उसी उद्देश्य की और पुष्टि होती है।

शिरोमणि कमेटी का वार्षिक बजट लगभग 20 करोड रुपये का होता है जिसमें ग्रन्थियों, रागियों, प्रोफेसरो, डाक्टरों और मैनेजरों की नौकरशाही की अलग व्यवस्था करनी होती है। गुरुद्वारा में धार्मिक संगतों मे और धार्मिक पर्वों पर इकट्ठे होने वाली भीड के रूप में सिक्ख जनता को प्रभावित करने का शिरोमणि कमेटी को अच्छा अवसर

(शेष पृष्ठ 9 पर)

हुक्मनामा केस : धर्म के नाम पर अपील भ्रष्ट आचरण

चुनावो में धर्म के नाम पर अपील करना भ्रष्ट आचरण में शामिल है और संविधान के जनप्रतिनिधित्व सम्बन्धी अधिनियम (अनुच्छेद 123) के विरुद्ध है—इस विषय मे एक केस सन् 1985 में उच्चतम न्यायालय में दर्ज किया गया था। यह केस 'हुक्मनामा केस' के नाम से मशहूर है। उच्चतम न्यायालय के तीन न्यायाधीशो की एक बेंच ने इस केस में निर्णय दिया था। मूलतः इस केस का नाम था—सुरिन्दर सिंह बनाम हरदयालसिंह तथा अन्य। सफल उम्मीदवार के चुनाव को इस केस में इस आधार पर अवैध घोषित किया गया था कि अकाल तख्त ने हुक्मनामा जारी करके उसका समर्थन किया है।

माननीय न्यायाधीशो ने उस उम्मीदवार के चुनाव को रद्द करते हुए कहा था कि साक्षियों से इस बात की पुष्टि होती है कि अकाल तख्त ने किसी भी प्रकार की प्रचार कारंवाई से, भले ही उसे हुक्मनामा कहे या कुछ और कहें, पन्थ के नाम पर अपील की थी। 'अकाली टाइम्स' में इसी प्रकार के सम्पादकीय भी लिखे गए थे।

उच्चतम न्यायालय ने चुनावों मे धर्मो और धार्मिक नेताओं के विधि सम्मत रोल को स्पष्ट करते हुए कहा था—यदि किसी पार्टी या व्यक्ति के सम्बन्ध मे यह प्रचारित किया जाए कि उसे वोट देना धर्म विरोधी या अधार्मिक है, तो यह गलत है। उम्मीदवारों के गुण-अवगुण के आधार पर उसके पक्ष-विपक्ष में प्रचार किया जा सकता है, किसी को अच्छा सिख, अच्छा ईसाई या अच्छा मुसलमान कह कर उसके पक्ष में वोट मांगे जा सकते हैं, परन्तु यह कह कर प्रचार करना कि अमुक को वोट न देना अमुक धर्म के विरुद्ध कार्य माना जाएगा, अनुचित है।

जनता को बरगलाने वाला धारावाहिक

अमीर खुसरो

—लक्ष्मीकांत वर्मा—

हमारे शासकों ने साम्प्रदायिक एकता के प्रतीक के रूप में 'अमीर खुसरो' धारावाहिक दूरदर्शन पर दिखाना प्रारम्भ किया। पर वह प्राय निराधार किंवदन्तियों पर आधारित है। पर जब वह आर्यों को विदेशी आक्रमणकारी बताकर उन्हें महमूद गजनवी और नादिरशाह के समकक्ष रखता है, औरंगजेब की प्रशंसा करता है और छत्रपति शिवाजी और महाराणा प्रताप को सामन्तवादी बता कर उनकी अवहेलना करता है, तब वह सीधा राष्ट्रीय अपमान का वाहक बन जाता है। क्या किसी अन्य देश में भावी पीढ़ी को इस प्रकार के गलत इतिहास की शिक्षा देना सम्भव है?

इन दिनों साम्प्रदायिक एकता के जिस प्रतीक को सबसे ज्यादा उछाला जा रहा है वह है अमीर खुसरो। अमीर खुसरो के बारे में उसके कोई खास ऐतिहासिक जानकारी नहीं मिलती। ऐसा लगता है जैसे एक से अधिक अमीर खुसरो हुए हैं और उन्हें गड्डमड्ड करके एक कर दिया गया है। अमीर खुसरो के नाम पर जो भी बातें कही जाती हैं वे एक-दूसरे की इतना विरोधी हैं कि उन्हें साम्प्रदायिक एकता जैसी किसी चीज का प्रतीक तो बनाया ही नहीं जा सकता। अधिकांश बातें तो उन्हें सांप्रदायिक और घोर हिन्दू-विद्वेषी ही साबित करती हैं। कुछ बातें ऐसी भी हैं जो उन्हें हिन्दू-मुसलमानों की मिली-जुली संस्कृति में योगदान करने का श्रेय देते हैं। ये दोनों तरह की बातें एक ही आदमी के बारे में कैसे कही जा सकती हैं? जब तक इस गुत्थी को सुलझा न लिया जाए तब तक उन्हें सांप्रदायिक एकता का प्रतीक बनाने से बचा जाना चाहिए था। मगर लगता है कि हमारे प्रगतिशील लोगों ने यह आसान सा नुस्खा ढूंढ रखा है कि जिस व्यक्ति के मां बाप में से कोई एक हिन्दू हो और दूसरा मुसलमान, उसे दोनों की एकता का प्रतीक बनाया जा सकता है।

अमीर खुसरो के बारे में जो थोड़ी-बहुत ऐतिहासिक बातें मिलती हैं उनके अनुसार यह व्यक्ति उत्तर प्रदेश में एटा जिले के पटियाली गांव में पैदा हुआ था। उसका अपना नाम क्या था यह किसी को नहीं मालूम। अमीर खुसरो नाम तो दो राजाओं द्वारा दिए गए खिताब से बना है। 'अमीर' खिताब जलालुद्दीन का दिया हुआ है और 'खुसरो' खिताब अलाउद्दीन खिल्जी का। इसका पिता तुर्क था और मां हिन्दू। अमीर खुसरो ने अपने नाना का जिक्र बड़े गर्व से किया है। वे रावत थे और शायद धर्म-परिवर्तन के बाद उन्हें दिल्ली दरबार से 'इमादुल मुल्क' का खिताब मिला था। अपने नाना की दानशीलता का बखान करते हुए अमीर खुसरो ने लिखा है कि वे हिन्दू और मुसलमानो पर समान रूप से मेहरबान थे। फर्क इतना ही है कि मुसलमानों पर वे अशर्फियां बरसाया करते थे और हिन्दू काफिरों पर तलवार बरसाते थे। इस टिप्पणी के बाद अमीर खुसरो को क्या सांप्रदायिक एकता का वाहक बताया जा सकता है?

खुशामदी और स्वार्थी

यह अमीर खुसरो कैकुबाद से लेकर मोहम्मद तुगलक तक राजसत्ता के समर्थक के रूप में ही सामने आता है। कैकुबाद की उस पर हुई कृपा का कारण यह बताया जाता है कि दोनों की मां हिन्दू थीं। कैकुबाद ने 1288 में उसे राजकवि बनाया था। लेकिन यह ऐसा राज कवि था कि दो साल बाद जब जलालुद्दीन खिल्जी ने कैकुबाद को कत्ल करके राज हड़प लिया तो उसने गिरगिट की तरह रंग बदल लिया और नए बादशाह का गीत गाने लगा। 1296 में जब अलाउद्दीन ने जलालुद्दीन की हत्या की तो उसके स्वागत में भी अमीर खुसरो ने जो कसीदा लिखा और इनाम पाया। अमीर खुसरो में न तो कोई शील था न कोई संकोच। दो जनवरी 1316 को जब अलाउद्दीन खिल्जी की मृत्यु हुई तो उसके सबसे छोटे बेटे उमर खां को गद्दी पर बैठा कर खुद गद्दी पर बैठने वाले सेनापति मलिक काफूर की तारीफ मे भी उसने कसीदे लिखे। जब अलाउद्दीन के दूसरे बेटे कुतुबुद्दीन खिल्जी ने मलिक कफूर का कत्ल किया तो अमीर खुसरो उसका भी भक्त बन गया और राज कवि बना रहा।

कुतुबुद्दीन खिल्जी की हत्या खुसरू खां नसीरुद्दीन ने की और छह महीने गद्दी पर बैठा। खिल्जी सेना के एक सेनापति गाजी मलिक ने खुसरू खां की हत्या कर दी और गयासुद्दीन तुगलक के नाम से गद्दी पर बैठा। इसके शासन-काल में भी खुसरो राज कवि बना रहा और कसीदे लिखता रहा। गयासुद्दीन तुगलक की हत्या के बाद जब मोहम्मद तुगलक गद्दी पर बैठा तो उसे भी अमीर खुसरो ने अपनी तारीफ से मोह लिया। इस तमाम दौर में वह न केवल अपनी पदवी बनाए रहा बल्कि उसके वजीफे की रकम भी बढ़ी। इस खुसरो की विशेषता यही है कि वह बिना किसी लिहाज-संकोच के अपनी निष्ठा बदल लेता है और बादशाहों के बुरे से बुरे काम के गीत गा सकता है।

अमीर खुसरो की एक और छवि निजामुद्दीन चिश्ती के भक्त की है। निजामुद्दीन औलिया ने उसका नाम 'तुर्के अल्लाह' रखा था। फारसी मे तुर्क का अर्थ होता है—माशूक, यानी निजामुद्दीन औलिया उसे अल्लाह का माशूक मानते थे। लेकिन उन्होंने अपने और अमीर खुसरो के रिश्ते के बारे में भी लिखा है और कहा है कि कोई उनके माथे पर आरा चलाए तो भी वह अमीर खुसरो से मुझ से अलग नहीं कर सकता। अमीर खुसरो को निजामुद्दीन चिश्ती के यहां ही शिक्षा दीक्षा मिली थी और यहीं से वह दिल्ली दरबार में गया था। निजामुद्दीन चिश्ती के ही दरबार में एक व्यक्ति और था जिसका नाम था हरदेव और जिससे उन्होंने इस्लाम कबूल करवा लिया था, मगर इस बात को छुपाए रखा। इस हरदेव ने ही गयासुद्दीन तुगलक के लिए वह महल बनवाया था जिसमें हाथी पर बैठ कर प्रवेश करते ही इमारत के ढह जाने से गयासुद्दीन की मौत हो गई थी ऐसी ही घटना कुतुबुद्दीन खिल्जी के साथ हुई। वह भी चिश्ती का विरोधी था और उसकी मृत्यु मे जिस युवक का हाथ था उसका नाम खुसरो था जो बाद में दिल्ली के तख्त पर बैठा। हरदेव, खुसरो और अमीर खुसरो तीनों घनिष्ट मित्र थे बहरहाल कुछ इतिहासकारों का कहना है कि अमीर खुसरो दिल्ली के बादशाहो और निजामुद्दीन चिश्ती के बीच की कड़ी था।

अतिरंजित बातें

अमीर खुसरो की एक और छवि है जहां वह एक प्रतिभाशाली कवि दिखाई देता है वह फारसी और ब्रज भाषा के मेल से एक नई भाषा रचना चाहता है। वह मध्यकालीन संवेदनाओं से ओत प्रोत है और तरह तरह के प्रयोग करना चाहता है। अमीर खुसरो मुकरियां लिखता है, पदावलियां रचता है। वह अमीर खुसरो हिन्दू संगीत, हिन्दू काव्य शास्त्र और हिन्दू छंद का बड़ा भक्त है। वह ब्राह्मणों को आदर देता है और हिन्दू धर्म में बड़ा श्रद्धा भाव रखता है। उसने 'खालिकबारी' के नाम से पद्य में एक कोष भी लिखा है। उसी ने कौल और कव्वाली लिखी है जो ख्वाजा निजामुद्दीन चिश्ती के दरबार में गाई जाती है। इससे अमीर खुसरो को कव्वाली का जनक भी बताया जाता है।

संगीतकार के रूप में अमीर खुसरो की छवि और भी गहरी है। उसे ईरानी संगीत का माहिर बताया गया है। भारतीय संगीत में भी उसने कई राग और रागनियां बनाई हैं। करीब 32 रागनियां उसके नाम से उल्लिखित की गई हैं। इन रागनियों की विशेषता यह है कि वे ईरानी और भारतीय संगीत के मिश्रण से बनाई गई हैं। लोग तो यह भी मानते हैं कि तराना और ख्याल की परम्परा भी अमीर खुसरो ने ही डाली। अमीर खुसरो की कई बंदिशें भी हैं जो संगीत समारोहों में उसी के नाम से गाई जाती हैं। इतना ही नहीं, अमीर खुसरो को ढोलक ईजाद करने का श्रेय भी दिया जाता है। कहा जाता है कि उसने पखावज को बीच से काटकर तबला बनाया। कुछ लोग उसे वीणा के तार का श्रेय भी देते हैं। कभी-कभी तो यहां तक कह दिया जाता है कि सात पर्दों को सितार पर सबसे पहले उसी ने साधा।

इन सब अतिरंजित बातों की बारीक जांच-परख होनी चाहिए। अधिकांश बातें इतिहास की गलत समझ और जानकारियों पर आधारित हैं। जिस अमीर खुसरो ने 'देहलरोजा' या 'तहफतुस्सग' और 'खजाईनुलफतह' या 'सिफतोतुलफतूह' जैसे ग्रन्थ लिखे हैं वह एक दरबारी मुसाहिब था। वह इस्लाम का कट्टर प्रचारक था। हो सकता है, वह निजामुद्दीन चिश्ती के यहां भी आता-जाता रहा हो। पर मूलत वह सत्ता के इर्द-गिर्द रहा है और चारित्रिक रूप से काफी निकृष्ट व्यक्ति दिखाई देता है।

जिस अमीर खुसरो ने फारसी और ब्रजभाषा को मिला कर कुछ कविताएं या मुकरियां लिखी हैं वह इस दरबारी मुसाहिब से अलग और बाद का कोई व्यक्ति ही जान पड़ता है। इस अमीर खुसरो ने ब्रज भाषा की बनावट और उसके मुहावरे इस्तेमाल किए हैं वे बलबन या तुगलक के जमाने के नहीं लगते। जहां तक खालिकबारी' के फारसी-हिन्दू कोष का सवाल है वह भी दरबारी अमीर खुसरो का लिखा हुआ नहीं लगता। ऐसा लगता है कि वह उसके सौ बरस बाद किसी ने लिखा था।

(शेष पृष्ठ 10 पर)

भूमिका भास्कर—एक समीक्षा

पुस्तक का नाम—भूमिका भास्कर
लेखक—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती
प्रकाशक—इन्टरनेशनल आर्यन फाउंडेशन, 302, कैप्टन विला, मौंट मेरी रोड, बांदरा, बम्बई-400050
मूल्य—दोनों भाग—तीन सौ रु०

हंसराज जन्मदिवस के भव्य समारोह के अवसर पर नई दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में 19 अप्रैल 1988 को मुझे स्वामी विद्यानन्द सरस्वती महाराज के एक बहुचर्चित बृहद ग्रन्थ के विमोचन का सुअवसर मिला, जिसका नाम "भूमिका भास्कर" है। ग्रन्थ का पहला भाग ही अभी मुद्रित हो पाया है, दूसरा भाग प्रेस में है। प्रस्तुत प्रथम भाग में वृहद साईज के 600 पृष्ठ हैं। पुस्तक के प्रकाशन का दुस्तर भार "इण्टरनेशनल आर्यन फाउण्डेशन, बम्बई ने वहन किया है जिसे बम्बई के श्री देवेन्द्र नाथ कपूर का वरद हस्त प्राप्त है। लेखक और प्रकाशक दोनों ही आर्य जगत् के विख्यात व्यक्ति हैं।

ऋषि दयानन्द के एक युग प्रवर्तक ग्रन्थ का नाम "ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' है। कुछ समय पहले स्वामी करपात्री ने अन्य पौराणिक विद्वानों की सहायता से इस ग्रन्थ के परिहास में एक पुस्तक 'वेद पारिजात" लिखी थी। किन्तु स्पष्ट है, कि लेखक भी चला गया, और 'वेदपारिजात" का समवतया दुबारा मुद्रण भी न होगा, किन्तु युग-प्रवर्तक के कारण ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' के आवश्यकतानुसार नये-नये मुद्रण होवें, और चिन्तक मनीषी इस ग्रन्थ का निरन्तर अध्ययन अध्यापन करते रहेंगे, और इससे नित्य नया आलोक विद्वानों को मिलेगा। स्वामी विद्यानन्द जी महाराज का यह बृहद ग्रन्थ भी गम्भीर अध्ययन का परिणाम है। लेखक और प्रकाशक दोनो को इसके लिए—प्रकाशन के लिए हमारा साधुवाद। समवतया इस प्रकार के ग्रन्थ का दूसरी बार प्रकाशन शीघ्र न हो पाये। आजकल की मुद्रा स्फीति को देखते हुए दो भागो मे प्रकाशित होने वाले इस ग्रन्थ का 300/- रुपये मूल्य सर्वथा उपादेय प्रतीत होता है। खेद इसी बात का है कि आर्य समाज में पठन-पाठन का युग चला गया। पुस्तकालयों का होना समाज मन्दिरों में व्यर्थ समझा जाने लगा है।

'भूमिका—भास्कर' के प्रारम्भ में योग्य लेखक ने 98 पृष्ठों की लम्बी अवतरणिका दी है, जिसे 'भूमिका—भास्कर' की भूमिका समझनी चाहिए। चार वेदसंहितायें—उनका प्रस्तावित भाष्य—इस भाष्य पर महर्षि दयानन्द लिखित 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका'—इस भाष्य भूमिका पर स्वामी विद्यानन्द द्वारा लिखित भूमिका (भूमिका भास्कर)—इस भूमिका भास्कर की भूमिका अर्थात् विद्यानन्द जी महाराज की विस्तृत अवतरणिका।

प्रस्तुत प्रथम भाग में स्वामी दयानन्द के ग्रन्थ से 'ईश्वर प्रार्थना विषय" से लेकर "पुनर्जन्म विषय" तक 19 विषय सम्मिलित किये गये हैं। महर्षि दयानन्द की इस भाष्य भूमिका में जो कठिनाई हम लेखको और पाठकों को अखरती है, वह है क्रमोल्लिखित अध्यायों का अंकन न होना (सत्यार्थ प्रकाश में जिस प्रकार प्रथम से चतुर्दश तक नियमित क्रम से समुल्लासों का अंकन है।)

बहुत दिनो से सुनने में आ रहा था कि "इण्टर नेशनल आर्यन फाउन्डेशन' ने बृहद् भाष्य लिखाने के अभिप्राय से ग्रन्थ के पृथक्-पृथक् शीर्षकों का काम विभिन्न आय विद्वानों को बांट रखा है, पर ग्रन्थ अब एक मात्र स्वामी विद्यानन्द के नाम से प्रकाशित हुआ है—14 सहयोगी लेखको की नामावली प्रारम्भ में 98 वें पृष्ठ पर सलग्न कर दी गयी है।

वैदिक वाङ्मय में भाष्य, वृत्ति, टीका आदि की परम्परा—

वैदिक वाङ्मय में "महाभाष्य" शब्द रूढ़ि हो गया है—"महाभाष्य" शब्द का उच्चारण होते ही पतञ्जलि ऋषि की उस रचना की ओर ध्यान जाता है जो उसने पाणिनि की अष्टाध्यायी को आधार बना कर लिखी। अष्टाध्यायी पर प्रत्येक युग में छोटी-बड़ी टीकाए तो अनेक हुईं, किन्तु "महाभाष्य" का अपना निजी स्थान भी है। अष्टाध्यायी व्याकरण का सर्वोपरि ग्रंथ है और 'महाभाष्य" भाषा तत्व ज्ञान (Linguistics) की अद्भुत रचना।

यास्क मुनि ने निघण्टु शब्द संकलन किया, और निरुक्त नामक अद्वितीय ग्रन्थ की रचना की (कहा जा सकता है कि निघण्टु का भाष्य ही निरुक्त है)।

महर्षि दयानन्द 'भाष्य" शब्द का विशेष अभिप्राय भी लेते हैं। 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' उन्होंने अपना अभिप्राय इस प्रकार व्यक्त किया है—'मैं अपने इस वेद भाष्य में कर्म-प्रेरक विषयों का ही वर्णन शब्द और उनके अर्थों द्वारा करूंगा, किन्तु कर्मकाण्ड में विनियोजित अर्थ देखना हो, तो यह तो ऐतरेय, शतपथ आदि ब्राह्मणों में, अथवा पूर्व मीमांसा श्रौतसूत्र आदि ग्रन्थों में मिल जायेंगे (स्वामी दयानन्द इन ग्रन्थों को वेद का कर्मकाण्डी भाष्य मानते हैं)। इसी शैली को अपने ग्रन्थ में अपनाना 'पिष्टपेषण दोष' मानते हैं।

"पुनस्तत्कथनेनानृषिकृतग्रन्थवत् पुनरुक्त पिष्टपेषणदोषोपपत्तेश्चेति।"

इसी प्रकार स्वामी जी के अभिप्राय से पातञ्जल योग शास्त्रादि ग्रन्थों को वेद का उपासना-काण्ड परक भाष्य मानना चाहिए। वेदान्तदर्शन, सांख्यदर्शन और उपनिषदादि ग्रन्थ वेद के ज्ञान-काण्डी भाष्य हैं। स्वामी दयानन्द ने अपना भाष्य इन तीनों काण्डों से पृथक् 'विज्ञान-कांड" विषयक किया है—इस बात में यह ग्रन्थ अन्य आचार्यों के भाष्यों से भिन्न है।

कहा जाता है कि आदि शंकराचार्य ने गीता-काव्य ग्रन्थ की स्वयं रचना की, और उसे प्रस्थान—त्रयी में स्वयं स्थान देकर आगे के आचार्यों के लिए वेदान्त दर्शन, उपनिषद् और गीता पर भाष्यों की परम्परा डाली।

सूत्र ग्रन्थों पर भाष्यों का होना परम आवश्यक था, पर वेद भाष्य की परम्परा कितनी पुरानी है, यह कहना कठिन है। ऋग्वेद की ऋचाओं पर यास्क की विवेचनायें ही सम्भवतया उपलब्ध सामग्री में प्राचीनतम है (यद्यपि निरुक्त शास्त्र की परम्परा यास्क से पूर्व से भी प्रचलित थी यास्क से पूर्व भी नैरुक्तिक थे)।

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' या 'सत्यार्थ प्रकाश' पर भी भाष्य होना चाहिए, इसके औचित्यानौचित्य के विवाद में, मैं नहीं पड़ना चाहता। भाई विद्यानन्द जी का भूमिका भास्कर' ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ का 'भाष्य' है—मैं यह भी नहीं कह सकता, यद्यपि मूल-ग्रन्थ की पंक्ति—प्रतिपंक्ति को लेकर विवेच्य सामग्री की विस्तार से विवेचना प्रस्तुत की गयी है। इतनी अधिक सामग्री को एक स्थल पर सुसज्जित करने में लेखक को पूर्ण सफलता मिली है, इसके लिए उनको बधाई।

शंकर के वेदान्त-भाष्य और अनेक भाष्य और वृत्तियां लिखी गयी, जो शंकर के वेदान्त विचारों को विकसित ढंग से प्रतिपादित करती हैं। यह कहना कठिन है कि 'भूमिका भास्कर' में योग्य लेखक ने ऋषि दयानन्द के मूल विचारों का स्पष्टीकरण और समर्थन ही किया है या दयानंदीय विचारों का 'विस्तार' भी किया है अथवा उनमें परिमार्जन भी किया है, नये ज्ञात तथ्यों के आधार पर उनका परिष्करण भी किया है। शंकर के वेदान्त ने अनेक कोटि के नूतन वेदान्तों को जन्म दिया था—अद्वैतवाद विशिष्टाद्वैतवाद, द्वैताद्वैतवाद, और वहां से लेकर विवेकानन्द के अद्वैतवाद तक 'भूमिका भास्कर' भी इसी प्रकार के प्रवाह का प्रेरक हो सकेगा, या यह निरन्तर ऋषि दयानन्द के वेद सम्बन्धी निजी विचारों के वृत्त के अन्दर ही चक्कर लगाता रहेगा—यह हमें देखना है।

इसमें संदेह नहीं कि स्वामी विद्यानन्द महाराज ने इस ग्रन्थ को लिखकर प्रचुर सामग्री हमारे सामने प्रस्तुत की है। मैंने उनका "वेद संज्ञा विचारः" प्रकरण पढ़ा। "मंत्र ब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्'—यह वाक्य कात्यायनोक्त माना जाता है। मेरे समक्ष विचार यह रहा है, कि मूलत यह कृष्णयजुर्वेद के सम्बन्ध में कहा गया था। किन्तु बाद में अनतो के महीधरादि विद्वान् शतपथ ब्राह्मण के उद्धरण को भी "इति श्रुतेः' इस प्रकार सम्बोधित करने लगे। उदाहरणार्थ—यज्ञो हि देवानामन्नम्—इति श्रुतेः" [यजु० 1119] महीधर। स्वामी विद्यानन्द जी का वेदसंज्ञा प्रकरण—लगभग सभी सदेहों को दूर करता है, उनकी समस्त विवेचना मुझे पसंद आयी। मैंने 'वेदानां नित्यत्वविचारः'—इस विषय को स्वामी विद्यानन्द जी की सामग्री से समझने का प्रयास किया, पर संतोष नहीं हुआ। विषय स्वयं में अस्पष्ट होने के कारण उसे अधिक स्पष्ट करना ही कठिन है। शब्द के नित्य या अनित्य होने से वेद का नित्यत्व क्या सम्बन्ध रखता है, यह समझना कठिन है। 'वेद के नित्यत्व' का वस्तुत अभिप्राय क्या है—जब तक इसका स्पष्टीकरण नहीं होगा, वैयाकरणों और दार्शनिकों के विवाद से इस विषय को समझना आसान नहीं है। महर्षि दयानन्द ने भारतीय षड् दर्शनकारों के सूत्र दिये हैं, और स्वामी विद्यानन्द जी ने भी उन्हीं सूत्रों की व्याख्या की है, पर क्या प्रत्येक सर्ग में 'अग्निमीडे पुरोहित' आदि शब्दों के माध्यम से वेद-ज्ञान प्राप्त होता है, और क्या विस्तृत ब्राह्माण्ड में यदि किसी भी पिण्ड पर मनुष्य ऐसा प्राणी हुआ, तो उन्हें भी हमारी ही वेद संहितायें प्राप्त हुई होंगी—विषय का स्पष्टीकरण नहीं हुआ, जो आवश्यक था।

वस्तुत वेद का नित्यत्व या शब्द का नित्यत्व—इस प्रकार के प्रश्न उठाना हमारे देश के विद्वानों की ही परम्परा रही है अन्यों की नहीं।

अब हम 'भूमिका—भास्कर' के दूसरे भाग के लिए उत्सुक हैं। इन्टरनेशनल आर्यन फाउण्डेशन के इस महत्त्वपूर्ण प्रकाशन के लिए हम कृतज्ञ हैं।

(शेष पृष्ठ 10 पर)

पत्रों के दर्पण में

हरिजन नहीं आर्यजन

एक आर्य सन्यासी जो वैदिक धर्म और निराकार ईश्वर की उपासना में आस्था रखता है, पौराणिक मन्दिरों में हरिजनों को ले जाकर उनके द्वारा मूर्ति-पूजा कराने के लिये क्यों प्रयत्नशील रहा है। क्यों नहीं हरिजनों को आर्यसमाज की ओर आकृष्ट किया जाता? पौराणिक मन्दिर में तो उन्हें चौपाइयां गाने-सुनने को मिलेंगी, वहां (आर्य मन्दिर में) तो वेद मन्त्रों से यज्ञ करने का सीधा अवसर मिलेगा। वेद-मन्त्र जिन्हें पढ़ना तो दर किनार, सुनने के भी अधिकार से आद्य शंकर से बबतन (निरंजन देव) तक सभी उनको वंचित करते आये हैं। और मान भी लें कि हिन्दू-मन्दिरों में हरिजनों को एक-आध बार प्रवेश दिला भी दिया जाय तो क्या हिन्दुओं के दिल-दिमाग से छुआछूत के विचार भी निकाले जा सकेंगे। यदि इन पौराणिकों को इतनी सामयिक सूझ होती तो क्या वे पुरी महादेव में निरंजन देव जैसे नैतिक को ऊल जलूल बातें सुनते रहते।

हरिजनो से निवेदन है कि वे आर्यसमाजों में सदस्यता ग्रहण करें। आर्य-समाज निश्चित रूप से उनका स्वागत करेगा। मन्दिरों में केवल राम और कृष्ण के नाम पर लूट-खसोट है।

आओ, 'हरिजन' से आर्यजन बनो और निर्द्वन्द्व होकर बराबर मे वेद समस्त वर्णों को मात्र कर्म की दृष्टि से विभाजित करता है, सामाजिक स्तर की दृष्टि से नहीं। भारतीय संविधान ने आपको कानून से बराबरी का अधिकार दिया है, हम दयानन्द के सिपाही आपको हृदय से वही अधिकार देते हैं।

—यशवीर शास्त्री, उपप्रधान, आर्य समाज पश्चिम विहार नई दिल्ली 63

नाथद्वारा आर्यसमाज क्या कर रहा है?

स्वामी अग्निवेश की नाथद्वारा यात्रा आर्य समाज के सिद्धान्तो के विपरीत है। स्वामी अग्निवेश को यदि कुछ करना ही था तो नाथद्वारा आर्य समाज में हरिजन सम्मेलन का आयोजन कर उनके साथ प्रीति भोज करते। यदि वहां आर्य समाज नहीं थी तो उसकी स्थापना के लिये यह स्वर्णावसर था। आर्य समाज के माध्यम से यह प्रचार होता तो इसमें आर्य समाज की भी गरिमा थी, मानवाधिकार के नाम पर मंदिर प्रवेश का तमाशा सस्ती प्रसिद्धि के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं है। इससे न हरिजनों को कुछ लाभ होगा न आर्य समाज को। आर्य समाज तो मूर्ति पूजा का विरोध करता है। यह अवसर आर्य समाज के लिए अत्युत्तम है, वह जनमत को मूर्ति पूजा के विरुद्ध और अपने पक्ष मे करने का प्रयत्न करे तो इससे समाज को और संस्था को भी लाभ होगा।

—माधोसिंह, विनोद निवास, पट्टी चौधरान, बड़ौत, मेरठ

हरिजन पशुओ से निम्न है?

इस देश में हरिजनों की स्थिति पशुओं से भी निम्न स्तर की है। पशु का मन्दिर प्रवेश वर्जित नहीं, कुत्ता, बिल्ली, कौवा, चूहा, सब मन्दिर में प्रविष्ट हो सकते हैं किन्तु हरिजन कहलाने वाला मनुष्य मंदिर मे प्रविष्ट नहीं हो सकता। हरिजन ही मन्दिर अथवा कुएं का निर्माण करता है और वही हरिजन न मंदिर में प्रविष्ट हो सकता है न कुएं से जल भर सकता है। स्वामी निरंजन देव की यह घोषणा देशघातिनी है। वेद शंकराचार्य की गद्दी से बड़ा है।

—शिवनाथ आर्य, देहरादून

वानप्रस्थ तो वन में ही

'गृहस्थ में वानप्रस्थ' महर्षि के इन शब्दों पर ध्यान दीजिए, 'मनुष्यों को उचित है कि ब्रह्मचर्य की समाप्ति करके गृहस्थ होके वनी अर्थात् वानप्रस्थ होवे, और वानप्रस्थ होके संन्यास ग्रहण करे।' वानप्रस्थ का अर्थ यही है, वन में भली प्रकार स्थिर रहना। क्योंकि जब तक आप घर में रहेंगे, पुत्र-कलत्र का मोह बना रहेगा। गृहस्थ की समस्याएं मुंह बाये खड़ी रहेंगी। सब राजा जनक की तरह विदेह तो हैं नहीं, न हो सकते हैं, अत गृहस्थ में रहते हुए आप अनासक्त रह ही नहीं सकते।

आर्यसमाज के वानप्रस्थी भी यदि समाजों में बैठ कर लोगों को सही मन्त्रोच्चारण सिखाएं, निस्स्वार्थभाव से चिकित्सा आदि सेवा कार्य करें। [दुकानदारी न चलावें], तो कितना अच्छा हो।

—सत्यभूषण वेदालंकार, ग्रीन पार्क नई दिल्ली

संन्यासी रचनात्मक कार्य करें

स्वामी अग्निवेश के व्यस्त सामाजिक सुधार कार्यक्रम के आये दिन दैनिक अखबारों में छपने के कारण नई पीढ़ी के लोगों को भी समाज के बारे में काफी जानकारी हो रही है। साथ ही आर्य समाज की ख्याती भी बढ़ रही है। आर्यसमाजी सन्यासी इसी तरह अपना-अपना कार्यक्षेत्र बांटकर देश के विभिन्न भागों में सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन का बिगुल बजा दें तो आर्य समाज पुन एक बार पूर्व अवस्था में आ जावे। इससे घुन की तरह समायी सामाजिक कुरीतियों का भी सफाया होगा। आर्य समाज के सन्यासी सम्पूर्ण देश में योजनाबद्ध ढंग से समाज-सुधार का बीड़ा उठावें। इससे देश और समाज का बहुत बड़ा कल्याण होगा।

—वचनेश्वर सिंह ग्राम पोस्ट—मेहसी, जिला – पूर्वी चम्पारण [बिहार]

अद्भुत वैदिक यज्ञ-विधि

यज्ञ-विधि पर आ० वेदभूषण जी द्वारा विस्तृत व्याख्या लेखमाला के अध्ययन से बहुत-सी शंकाओ का निराकरण हुआ जिसके लिए हम सभी आपके तथा आचार्य जी के अत्यन्त आभारी हैं। 'पावमानी' मन्त्रों के पश्चात् अष्टाज्याहुति के मन्त्रों की भी व्याख्या के बिना यह श्रृंखला अधूरी प्रतीत होती है। आचार्य जी से इन मन्त्रों की भी व्याख्या लिखवा कर उसे पत्र में यथा समय छापने का कष्ट करें। यदि ऐसा किसी कारण से सम्भव न हो सके तो आप स्वयं या किसी अन्य विद्वान से यह कार्य पूर्ण करवाने की कृपा करें ताकि सभी मन्त्रों के विषय में बोध हो सके। इस लेखमाला को पुस्तक-रूप में छपवाने का कष्ट करें।

—डा० वेदप्रकाश गुप्त, रेलवे रोड, अम्बाला

आकाशवाणी द्वारा अंडे खाने के लिए प्रोत्साहन

आजकल रेडियो द्वारा लोगो को शारीरिक शक्ति बढ़ाने के लिये अंडे खाने का प्रचार किया जाता है, जब कि भारत के तथा विदेशो के विशेषज्ञो द्वारा अंडे को हृदय रोग का कारण बताया गया है। अंडे के पक्ष में प्रचार रेडियो तथा अन्य सरकारी साधनों द्वारा करना लोगों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करना है, और उनमें हिंसक तथा तामसी वृत्ति बढ़ाना है। इस प्रकार का दूषित प्रचार बन्द होना चाहिये। —यशपाल ठाकुर, ए/153 प्रशान्त विहार, दिल्ली

जन-प्रतिनिधि का कैसा पक्ष-विपक्ष?

सभी संसद या विधायक समानरूपेण जन प्रतिनिधि होते हैं। हर जन-प्रतिनिधि का अधिकार और कर्तव्य एक समान होता है। इस तथ्य के बावजूद सत्तारूढ़ दल से इतर सदस्यों को विपक्ष के रूप में जाना जाता है। यानी एक ऐसा पक्ष जो सत्ता पक्ष का विरोधी, प्रतिद्वंद्वी अथवा बाधक है। ऐसा चिन्तन लोकतन्त्र की भावना के सर्वथा विपरीत है।

सत्तारूढ़ दल का काम सरकार के हर कार्य व पग का अनिवार्य रूप से समर्थन करना गलत चिन्तन का प्रभाव है। यह समझ कर चलना भी गलती है कि सत्तारूढ़ दल से जुड़े हुये जन प्रतिनिधियो से इतर जन प्रतिनिधियो का काम सरकार के हर काम का विरोध करना मात्र है। मूलत इस तरह के पक्ष और प्रतिपक्ष की धारणा लोकतन्त्र की भावना के विरुद्ध है। संसदीय संस्थाओ मे किसी को भी विपक्षी मानना बहुत अनुचित है। संसदीय संस्थाओं में यदि दो ही पक्ष माने जाएं तो वे हैं—[1] सरकार, और [2] सदन के अन्य सदस्य। सरकार से इतर [सत्तारूढ़ दल के सदस्यों सहित] प्रत्येक जन-प्रतिनिधियो का कर्तव्य है कि वह सरकार को वास्तविक रूप मे जनहित के कार्य में लगाए, सरकार के हर काम का अपने स्वतन्त्र विवेक के आधार पर आकलन करे, उचित कामो में योगदान करे तथा जनहित के विरुद्ध कामो से सरकार को सचेत करे, रोके तथा आवश्यक हो जाने पर सरकार के विरुद्ध अविश्वास का मत देकर उसे सत्ता से हटा दे। प्रत्येक जन-प्रतिनिधि जनता का प्रतिनिधि पहले है तथा अपने दल या नेता का बाद में। दल या नेता से अपने जुड़ाव के कारण यदि वह अपने जन-प्रतिनिधित्व कर्तव्य से विमुख होता है तो वह जन-प्रतिनिधि रहने का अधिकारी नहीं है। जन प्रतिनिधित्व कर्तव्य करने के कारण यदि उसकी सदस्यता समाप्त होती है तो यह बात लोकतन्त्र पर चोट के समान है। इस दृष्टि से दल-बदल विरोधी कानून के कुछ प्रावधान लोकतन्त्र के सामान्य तरीकों के विपरीत हैं, ये जनता और जन प्रतिनिधियों के बीच के स्वाभाविक सम्बन्ध को तोड़ते हैं। ऐसे प्रावधानो को कानून से तत्काल हटा दिया जाना चाहिये। दलीय अध्यक्ष द्वारा निर्वाचित जन प्रतिनिधियो को बंधुआ बनाने का प्रयास हर तरह से त्याज्य है। जनता और जनप्रतिनिधियो में सीधे रिश्तों को मजबूत बनाना चाहिए। उचित यह है कि मतपत्रों पर किसी भी दल का चुनाव चिन्ह नहीं, अपितु उम्मीदवार का चित्र और उसका नाम-पता हो बस।

—कृष्ण गोपाल साहनी, 10/824 चांदनीमहल, नई दिल्ली-2

'आर्य जगत्' के नए आजीवन सदस्यों की सूची

ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे ग्राहकों और पाठकों को (यह हमें मालूम है कि 'आर्य जगत्' के पाठकों की संख्या हमारे ग्राहकों से बढ़ चुकी है, क्योंकि एक-एक अंक को कम से कम दस व्यक्ति पढ़ते हैं) अब यह बात समझ में आने लगी है कि हमारे द्वारा बारम्बार स्मरण-पत्र भेजने पर प्रतिवर्ष वार्षिक शुल्क भेजना एक झंझट का काम है, इसलिए क्यों न इकट्ठे 251 रु० भेजकर जीवन भर के लिए निश्चिन्त हो जाएं। जीवन भर ही क्यों, आपके बाद भी आपकी स्मरणीय धरोहर के रूप में प्रति सप्ताह 'आर्य जगत्' आपके परिवार में पहुंचता रहेगा और आपके पारिवारिक जन आपके इस उपहार से लाभ उठाते रहेंगे। आप अपनी कन्या और पुत्र के विवाह के अवसर पर अन्य उपहारों के साथ 'आर्य जगत्' की आजीवन सदस्यता का भी एक उपहार क्यों न दें। वे भी इस बहाने प्रति सप्ताह अपने माता-पिता की स्नेह स्मृति में सजोए रखेंगे। हम नीचे नए आजीवन सदस्यों की सूची प्रकाशित कर रहे हैं।—

क्र० सं० नाम पता

1037. श्री अमृतपाल एन-31, ग्रेटर कैलाश 1, नई दिल्ली-48
1048 श्री हरिशचन्द्र 1143, न्यू हाउसिंग बोर्ड, करनाल
1039. प्रिंसिपल डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, माडल टाउन, पानीपत,
1040 प्रिं० नीलम मल्ला डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, 3 ए/17, एन० आई० टी० फरीदाबाद
1041 प्रिंसिपल डी० ए० वी० श० प० स्कूल, कुरुक्षेत्र,
1042 श्री तेजकरण ओझा धनुपालि चौक, सम्बलपुर (उड़ीसा)
1043 श्री राजकुमार आर्य ग्रा० देवनपुर, पो०—नदेनगर, कलहा, वड़ा पो० इस्माइल नगर (समस्तीपुर) बिहार
1044 कार्यालयाध्यक्ष आर० एस० एस० कार्यालय, भाटिया महाजन वाली गली, नदवाणा चौक, अंजार [कच्छ]
1045 श्री राकेश बाली सिंडीकेट बैंक [डीलिंग] 6 भगवानदास मार्ग नई दिल्ली
1046 श्री सत्यदेव आर्य एफ० बी०—161 बापूनगर, जयपुर
1047 श्रीमती विमला जवाहर आहूजा टी० डी० एस०—290, आदिपुर (कच्छ) गुजरात
1048 श्री श्यामलाल सचदेव 2613 भगतसिंह गली-9, चूनामंडी नई दिल्ली
1049 श्री फूल सिंह साहू मु० पो० आमदी ता--धमतरी, जि०-रायपुर, म० प्र०
1050 श्री नीरज कुमार आर्य सुपुत्र मोहनलाल आर्य पो०—केराना, मुजफ्फर नगर, उ० प्र०
1051. श्री राकेश कुमार वर्मा क्वाटर—टी-III/11, टेलिफोन एक्सचेंज कम्पाउन्ड महानगर, लखनऊ
1052 प्रिंसिपल डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, 61 डायमन्ड, हारबर रोड, कलकत्ता-28
1053 श्री दयानन्द आर्य एडवोकेट 13—न्यू राजा मंडी, आगरा, उ० प्र०
1054 प्रिंसिपल अनीता मक्कड़ डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, 997/4, अरबन स्टेट गुडगांव
1055 श्री मुकन्द सिंह द्वारा सुखदेव आटोमोबाइल्स, महूरोड, नीमच कैंट
1056 श्री मंत्री आर्य समाज, अल्मोड़ा, उ० प्र०
1057 श्री सुरेन्द्र, प्रकाश 19/2, कालका जी, नई दिल्ली
1058. श्री महेश भाई मगन भाई परमार 2 पुंजारा प्लाट, शक्ति नगर सोसायटी, राजकोट
1059 श्री इन्दु आहूजा 1007/19 बी चंडीगढ़
1060. प्रिंसिपल डी० ए० वी० श० प० स्कूल, कुटेश्वर, पो० बरही जबलपुर
1061 श्रीमती परवीन लोहिया मेरिनो प्लाई एण्ड कैमिकल्स लि० पो० बाकुम चकसन आसाम
1062 श्री सुरेश कुमार नरेश कुमार सुपुत्र भरत सिंह चुलकाने वाले रि० पो० मास्टर ग्रा०—नोहरा, पो——छोटापुर पानीपत
1063 श्री सी० डी० चौहान ए—2/85, ए० लारेन्स रोड, दिल्ली-35
1064 श्रीमती सुशीला कल्याण बी 2/7 टेल्को, प्लाट न० 30, से० 17, वाशी, न्यू बम्बई
1065. मैनेजर वैदिक मोहन आश्रम, भूपतवाला, पो०—भीमगोड़ा हरिद्वार
1066. श्री रामशरण शर्मा 11-रामपुरा, मेन बाजार, दिल्ली-35
1067 श्री आनद कुमार आर्य 77 वाई/1 ए, पार्क स्ट्रीट, 20 जानकी मेन्सन्स, कलकत्ता
1068. श्री मंत्री जी आर्य समाज सोहन गंज, दिल्ली-7
1069 प्रिंसिपल डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, ज्ञान भवन, सजोली शिमला
1070 प्रिंसिपल जी० जी० एस० डी० ए० वी० श० कालेज, जलालाबाद (वेस्ट)
1071. प्रिंसिपल डी० ए० वी० श० प० स्कूल, वैदिक मोहन आश्रम, भूपत वाला हरिद्वार
1072 प्रिंसिपल डी० ए० वी० श० प० स्कूल, जलालाबाद, (वेस्ट)
1073 श्री गणपत राव आर्य 78 दादी सेठ, अग्यारी लेन, बम्बई-400002
1074 प्रिंसिपल डी० ए० वी० प० स्कूल 93 अम्बिका विहार, दिल्ली

क्र० स० नाम पता

1075 प्रिंसिपल डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल पिहोवा, कुरुक्षेत्र
1076 श्रीमती धर्मवती देवी शर्मा, शर्मा इन्जीनियरिंग कं०, स्टेशन रोड, प्रतापगढ़
1077. श्री कान्ति भाई चोटलिया आई० के० जी० आर० सोसायटी 6 मूला रोड, खिरकी, पूणे-3
1078 प्रिं० वाई० पी० शर्मा डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, बी० ई० एल० कालोनी ब्रज विहार, गाजियाबाद
1079 श्री शूरजी भाण जी भानुशाली सीताराम भुवन, रूम नं० 26, लाल बहादुर शास्त्री मार्ग, घाटकोपर (प०) बम्बई
1080 श्री सूरज प्रकाश गुलाटी 2144/13, अरबन स्टेट, करनाल,
1081. श्री अवध बिहारी प्रसाद आर्य किसुनराम मन्त्री, आर्य समाज, भवनाथपुर पलामू, बिहार
1082 श्री वेद प्रकाश अग्रवाल द्वारा राधेलाल मित्तल, 3—कायस्थवाड़ा खुरजा
1083 प्रिंसिपल डी० ए० वी० सैन्टनरी पब्लिक स्कूल, नाभा
1084 प्रिंसिपल डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, जींद हरि०
1085. सैक्रेटरी दयानन्द माडल स्कूल, शोलापुर, महा०
1086 हैडमास्टर जी० ए० हाई स्कूल, पट्टा जेतियान कांगड़ा,
1087 प्रिंसिपल डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, गोयल सीमेन्ट वर्क्स पो० बरलाका बिलासपुर, हि० प्र०
1088 वेद रत्न गौतम 126-27, एच०—ब्लाक, गोविन्द नगर कानपुर,
1089. प्रिंसिपल डी० ए० वी० श० पब्लिक स्कूल, रेलवे रोड, करनाल
1090 प्रिंसिपल डी० ए० वी० ए० सी० सी० पब्लिक स्कूल, पो०—लखेरी, राजस्थान
1091 श्रीमती सरला देवी मल्होत्रा 1506, गली न० 27, नाईवाली, करोलबाग नई दिल्ली
1092 मन्त्री आर्य समाज, आसनसोल-713301
1093 श्री सुरेन्द्र गुप्ता ए-87/6, वजीरपुर इण्डस्ट्रीयल एरिया दिल्ली
1094 श्री कृष्ण बंसल ओ० सी० एम० होजरी, 4636/15, जयमाता मार्किट, त्रिनगर दिल्ली
1095 लाईब्रेरियन हार्डिंग लाईब्रेरी, पुरानी दिल्ली स्टेशन के सामने, दिल्ली-6
1096 प्रिंसिपल डी० ए० वी० प० स्कूल, मरहदीवाला, होशियारपुर
1097 श्री सूर्यनारायण विद्यासागर द्वारा चिन्नस्वामीनप्रस्थ 1-7-262, निकट फायर स्टेशन महबूब नगर आ० प्र०
1098 श्री वाई० के० गुप्ता 60 बसन्त सागर, नेहरू पार्क, जोधपुर,
1099. श्री सदीप शर्मा सपुत्र शंकर दयाल शर्मा, गंगा मंदिर, भरतपुर राज०
1100 श्रीमती सुशीला आर्य 186—तेलीवाड़ा, शाहदरा, दिल्ली-32
1101 श्री एस० सरीनीवासा राव ए 2 रेलवे क्वाटर, सीताफल मण्डी, सिकन्दराबाद,
1102 श्री राम लुभाया, प्रधान आर्य समाज शास्त्री नगर, बस्ती गुजां, जालन्धर
1103 प्रिंसिपल डी० ए० वी० सी० स० स्कूल, यमुनानगर
1104 मैसर्स भगवानदास हेटाराम 1 माडा-खिमडा के पास, साबू गली, माणेक चौक, अहमदाबाद
1105 सोहनलाल गोम्बर 166, सैं० —16 ए, फरीदाबाद
1106 श्री विजय आर्य पाकेट—के जी 1/416, एम० आई० जी० फ्लैटस, विकासपुरी, नई दिल्ली
1107. प्रिंसिपल डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, गांधी नगर, जम्मू
1108. श्री मन्त्री आर्य समाज, वी० की० पुरम, बैंगलौर 4,
1109 श्रीमती वेद सुराना डी 4, अजय इन्क्लेव, नई दिल्ली-18
1110. प्रिंसिपल डी० ए० वी० सी० सै० स्कूल, बेयर्ड रोड, नई दिल्ली-1

(शेष पृष्ठ 10 पर)

संविधान–विरोधी

(पृष्ठ 4 का शेष)

मिल जाता है। यदि धार्मिक कट्टरता में कुछ भी ढील कर दी जाये तो उसका अर्थ होगा कि धर्म विश्वासी जनता में उसकी पकड़ कम हो जायेगी। कोई आश्चर्य की बात नहीं कि इसीलिए शिरोमणि कमेटी पर शुरू से ही अपना प्रभुत्व रखने वाला अकाली दल धार्मिक कट्टरता का जोरशोर से प्रचार करता रहा है और सन्त निरकारियों जैसे अन्य सिक्ख पन्थों को भी, जो अपनी कथनी और करनी में सिक्खों और हिन्दुओं में भेद नहीं करते, दण्डित करता रहा है।

अकाली दल जितना-जितना अपना राजनीतिक महत्त्व शिरोमणि कमेटी और उसकी सियासी नीतियों से ग्रहण करता है, उतना-उतना ही शिरोमणि कमेटी का अधिकार और प्रतिष्ठा भी बढ़ती जाती है। यह ध्यान देने की बात है कि सियासी मामलों के कई महत्वपूर्ण निर्णय स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद के अकाल तख्त के द्वारा ही लिये गये हैं। 1960-61 का पंजाबी सूबे का नारा और 1965 का पंजाबी सूबे का आन्दोलन तथा 1975-76 में इमरजैन्सी के विरोध में आन्दोलन इसके उदाहरण हैं।

26 वां अनुच्छेद

गुरुद्वारा ऐक्ट भारतीय संविधान का भी उल्लंघन करता है। धार्मिक स्वतन्त्रता सम्बन्धी अनुच्छेद में हरेक धार्मिक संस्था को यह अधिकार दिया गया है कि वह धार्मिक संस्थायें स्थापित करने, उनकी व्यवस्था करने और कानून के अनुसार जायदाद प्राप्त करने जैसे धार्मिक मामलों में स्वतन्त्र है। पर उस अनुच्छेद में कहीं भी यह नहीं कहा गया कि किसी धार्मिक अल्पसंख्यक समुदाय के लिए सरकार कोई अलग से संस्था बना ले। गुरुद्वारा ऐक्ट ने सिक्ख पन्थ के लिए ऐसी व्यवस्था कर दी है जो देश के किसी अन्य सम्प्रदाय के लिए नहीं है।

इसके अलावा 27वें अनुच्छेद में यह भी कहा गया है कि किसी भी खास सम्प्रदाय और साम्प्रदायिक संस्था की अभिवृद्धि या पोषण के लिए ही होने वाले खर्चों के निमित्त किसी भी व्यक्ति को किसी भी प्रकार का टैक्स देने के लिए बाधित नहीं किया जा सकता। उदाहरण के लिए यदि सरकार कुम्भ मेले पर या अमरनाथ यात्रा पर जाने वाले तीर्थ यात्रियों के लिए सुविधाओं की व्यवस्था करती है तो उनके खर्च की अदायगी साधारण आय में से नहीं की जा सकती। फरवरी 1984 में उच्चतम न्यायालय में एक याचिका स्वीकार की थी जिसमें गुरुद्वारा ऐक्ट की वैधता को इसी आधार पर चुनौती दी गई थी कि वह 27वें अनुच्छेद का उल्लंघन करता है। अभियोगकर्ता की ओर से कहा गया कि पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और चण्डीगढ़ का संघीय प्रदेश ये सब गुरुद्वारों की प्रबन्ध व्यवस्था में और उनकी सहायता करने में शामिल होते हैं। इसके अतिरिक्त गृह मन्त्रालय में एक अतिरिक्त संयुक्त सचिव गुरुद्वारा चुनाव के मुख्य आयुक्त के रूप में नियुक्त किया जाता है जिसका वेतन भारत सरकार देती है।

इस केस के बारे में आगे कुछ पता नहीं लगा। परन्तु इसमें जो मुद्दा उठाया गया था वह राष्ट्रीय महत्त्व का है। अब उस पर अमल करने का समय आ गया है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी का कार्यकाल पांच वर्ष होता है। मौजूदा कमेटी 9 वर्ष पहले निर्वाचित हुई थी इसलिए उसका अब कोई कानूनी दर्जा नहीं है। वह किसी का प्रतिनिधित्व नहीं करती, इसलिए अब उसको समाप्त कर देना चाहिए।

['हिन्दुस्तान टाइम्स' (27-6-88) से अनूदित]

हरियाणा उपसभा के प्रधान चौ. किशनलाल

चौधरी किशनलाल जी पिछले 50 वर्षों से आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्ता रहे हैं। आर्य प्रा० प्र० उपसभा हरियाणा के अधिकारी रहे हैं। हरियाणा में उपसभा के शताब्दी समारोह की सफलता में इनका मुख्य हाथ था। वे पुलिस विभाग से रिटायर्ड डी०एस०पी० हैं। शुद्ध एवं सात्विक प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं। प्रो० वेदव्यास जी द्वारा उपसभा हरियाणा के प्रधान मनोनीत किए गए हैं।

हरियाणा में वेद प्रचार का कार्य कैसे बढ़े इसके लिए कई योजनायें बना रहे हैं।

उपराष्ट्रपति द्वारा सामवेद का विमोचन

दिनांक 20-7-88 को उपराष्ट्रपति डा० शंकर दयाल शर्मा ने पं० आशुराम आर्य चंडीगढ़ द्वारा संस्कृत उर्दू तथा हिन्दी में त्रिभाषा-युक्त सामवेद भाष्य का विमोचन करते हुए कहा कि वेद विश्व की एक अपूर्व विभूति है जिसका कोष नितान्त अमूल्य है, उसी से आर्य संस्कृति अनादि काल से जगमगाती हुई आ चली रही है।

(पं० आशुराम आर्य)

सुरीनाम गायना की अपनी यात्रा का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा कि भारत से ले जाये गये चारों वेदों के जब मैंने उन्हें दर्शन कराये तो वे गद्‌गद् होकर हर्षोल्लास से नाचने लगे। दायें बायें बैठे स्वामी आनन्द बोध सरस्वती और प्रो० वेद व्यास जी की ओर संकेत करते हुए उन्होंने अनुरोध किया कि यहां से आर्य विद्वानों और सन्यासियों को वैदिक धर्म के प्रचार के लिए वहां निरन्तर भेजते रहना चाहिए। इस वेदभाष्य की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि इसके पहले ऋग्वेद और यजुर्वेद के उर्दू ग्रन्थों को भी मैंने पढ़ा है और अब उर्दू वेद व्याख्या के तीसरे ग्रन्थ के प्रकाशन को देखकर मुझे अतीव हर्ष हो रहा है। इनके अनथक परिश्रम और अडिग संकल्प की मैं प्रशंसा करता हूं। इस कार्य में यथासम्भव सहायता के लिए प्रयत्नशील रहूंगा।

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा कि वेदों को एक साथ संस्कृत से उर्दू और हिन्दी में लिखना लिखाना, जबकि उर्दू लिखने वाले कातिब भी आजकल नहीं मिल रहे हैं, कितना परिश्रम साध्य कार्य है, यह मैं समझता हूं और जनता तथा सरकार दोनों से ही अनुरोध करता हूं कि पं० आशु राम आर्य जी की जितनी सहायता हो सके करते जायें जिससे वेदामृत की ज्ञानगंगा बहती रहे।

प्रो० वेद व्यास ने वेदों की महिमा पर अपने विचार प्रकट करते हुए बड़े हार्दिक स्नेह से पंडित जी के इस प्रकाशन की प्रशंसा की। श्री रामनाथ सहगल ने बधाई देते हुए डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति की ओर से सामवेद की 100 प्रतियों के क्रय का आदेश दिया। रु० 1000/- 'आर्यजगत्' के व्यवस्थापक श्री राम लाल मलिक ने भी प्रदान किये तथा चौ० प्रियव्रत आर्य ने भी। मिलाप और मिलाप सन्देश दिल्ली के मुख्य सम्पादक श्री नवीन सूरी ने उपराष्ट्रपति जी और सभी निमन्त्रित महानुभावों को हार्दिक धन्यवाद दिया। समारोह में श्री सूर्य देव जी, श्री शान्ति-प्रकाश बहल, श्री दरबारी लाल जी और 'प्रताप' 'वीर अर्जुन' के मालिक श्री के० नरेन्द्र जी आदि अनेक गण्य-मान्य आर्यजन विराजमान थे। जलपान के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

—पं० आशु राम आर्य, 'आर्य भवन' 1594 सेक्टर 7 सी, चण्डीगढ़ 160019

नया उपदेशक विद्यालय : रोजगार की गारंटी

निष्ठावान एवं तपस्वी दसवीं पास आर्य युवकों को तीन वर्ष के उपदेशक प्रशिक्षण के पश्चात् रोजगार की गारंटी दी जायेगी। यहां सिद्धांत विशारद, सिद्धांत शास्त्री, तथा सिद्धांत आचार्य की उपाधियां दी जायेंगी। प्रशिक्षणार्थियों को भोजन, आवास, वस्त्र, बिस्तर तथा पुस्तकें सब निःशुल्क। आज अच्छे उपदेशकों के अभाव में कोई भी उचित मार्ग दर्शक दिखाई नहीं देता। उधर रोजगार की समस्या मुह बाये खड़ी है। योग्य युवक शीघ्र सम्पर्क कर अवसर का लाभ उठा सकते हैं। संस्कृत, हिन्दी व इंगलिश में धारा प्रवाह युक्ति व प्रमाण सहित वक्ता, शास्त्रीय रीति से भजन संगीतकार तथा सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक समस्याओं पर वक्ता के रूप में नेता उभारने के लिए योग्य आचार्यों की व्यवस्था की गई है। आप समस्त गुरुकुलों तथा अन्य आर्य संस्थाओं के प्रबन्धकों को योग्य युवकों को इस प्रशिक्षण के लिए प्रेरित करना चाहिए। उपदेशक महाविद्यालय प्रारम्भ हो चुका है।

—संचालक स्वामी शक्तिवेश प्रवासी गुरुकुल महाविद्यालय, आदर्श नगर, अजमेर-1

जनता को बरगलाने वाला अमीर खुसरो...

(पृष्ठ 5 का शेष)

अमीर खुसरो की संगीत के बारे में बताई जाने वाली करामातें भी प्रामाणिक नहीं लगतीं। अब यह साबित हो गया है कि तराना खुसरो के बहुत पहले से चला आ रहा था। कव्वाली की गायकी निजामुद्दीन चिश्ती के पुरखे मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी के दरबार में बहुत पहले से गाई जाती थी। उस समय उसे कौल कहा जाता था। कौल का मतलब होता है सूक्ति। यह रूबाई छंद में होती थी। धीरे धीरे वहीं अजमेर में इस विधा ने कव्वाली का रूप ले लिया। मुस्लिम संगीत के इतिहासकार रफीक गजनवी ने लिखा है कि अमीर खुसरो का कव्वाली ईजाद करने से दूर का भी कोई रिश्ता नहीं है। यही बात खयाल गायकी के बारे मे कही जा सकती है। खयाल मूलत जोनपुर घराने की चीज है। उसके जनक जोनपुर के सुलतान हुसैन शर्की थे। ये सब चीजें अमीर खसरो के नाम से कैसे चला दी गईं, यह अपने आप मे एक खोज का विषय है।

ईरानी नहीं, भारतीय

अमीर खुसरो को ढोल का आविष्कारक कहना भी ज्यादती ही है। ईरानी वाद्य यन्त्रो में दुहल न जाने कब से चला आ रहा है। उसे भारतीय संगीतज्ञो ने म्लेच्छो का वाद्य बताया है। भारतीय वाद्य तो मृदग या पखावज हैं। ईरानी दुहल से ही ढोल निकला है। यहां यह भी ध्यान रखना चाहिए कि जिसे आज ईरानी संगीत कहा जाता है वह मूलत भारतीय संगीत ही है। राजपूताने के इतिहास में इस बात का जिक्र मिलता है कि ईरान के शासक बहराम गोर के जमाने में भारत से बहुत से संगीतकार ईरान गए थे और ईरानी संगीत को बहुत कुछ उन्हीं की देन है। सितार के मूल अन्वेषक रोहिलों के दरबार के एक नेमत खां सदारंग थे। नवाब सादुल्ला रोहेले उनके आश्रयदाता थे। रोहेलो का काल अमीर खुसरो के बहुत बाद आता है। सितार मुगलकाल की देन है। तबले का आविष्कार तो शाहआलम के जमाने में हुआ है। तबले को रूप देने वाला दिल्ली का एक सत्तार खां नाम का व्यक्ति था और तबला बजाने वालों में आज भी एक सत्तारखानी ठेका प्रचलित है।

अमीर खुसरो के नाम से जुड़े हुए इन सब विवादो पर भारत और पाकिस्तान मे काम होता रहा है। विद्वान् लोग मानते हैं कि अधिकांश बातें तो किंवदंतियां ही हैं जिनके कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं मिलते। इस सारे विवादों को भूल कर अगर हम अमीर खुसरो का मिथक खड़ा करने लगे तो उससे केवल भ्रम ही फैलेगा, साम्प्रदायिक एकता पैदा नहीं होगी। अमीर खुसरो की इन सभी छवियों को एक मे बैठाने की कोशिश हास्यास्पद है। यह कैसे हो सकता है कि एक आदमी आलिम भी हो, हिंदुओं का निंदक भी हो, और प्रशसक भी। एक ही आदमी में दोस्ती, दुश्मनी, प्रशसा और निंदा एक साथ नहीं हो सकते। ✲

भूमिका भास्कर ...

(पृष्ठ 6 का शेष)

'भूमिका—भास्कर' के समान गम्भीर ग्रंथ सदा नहीं प्रकाशित होते, अत ऐसे ग्रंथों का अधिक से अधिक स्वागत विद्वानों की मण्डली मे होना चाहिए। स्वामी विद्यानन्द जी महाराज वैदिक वाङ्मय के मूर्धन्य विद्वान हैं—उन्हें पूर्व पश्चिम दोनो के साहित्य का परिचय है। अतः उनकी लेखनी से प्राप्त सामग्री हमारे लिए अभिनन्दनीय है। इसमें संदेह नहीं है कि ऋषि दयानन्द लिखित 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' वेद सबधी अध्येताओ के लिए युग प्रवर्तक ग्रन्थ है। पिछले दो सहस्त्र वर्षों से वेद के प्रति उपेक्षा रही और अनेक मतमतान्तरो के विवाद आरम्भ हो गये। ऋषि दयानन्द ने वेद की प्रतिष्ठा पुन स्थापित की। पुरानी परम्परा के वेदपाठियों ने संहिताओं के पाठ को रखने का अभूतपूर्व आश्चर्यजनक प्रयास किया, किन्तु जैसा वेदज्ञ श्रीपाद दामोदर सातवलेकर कहा करते थे, उन्होंने वेदों के जीवन संबधी प्रेरणादायक अभिप्राय को लुप्त कर दिया। इस युग में विदेशी विद्वानों ने वेद के पाठों को शुद्ध रूप में प्रकाशित और मुद्रित करने की परम्परा डाली और वैदिक सूचियो के निर्माण का दुरूह कार्य किया। ऋषि दयानन्द ने वेदों के प्रति आस्था जागरित की।

प्रबुद्ध आर्य जनता से मेरा विनम्र आग्रह है कि विद्यानन्द सरस्वती जी के इस ग्रन्थ का उचित समादर करें। वेद हमारे प्रेरणा के स्रोत हैं और यह 'भूमिका भास्कर' वेद सबधी हमारी शकाओ के समाधान के लिए अनूठा सकलन है। लेखक को आदरपूर्वक साधुवाद और प्रकाशक परिवार को सस्नेह आशीर्वाद।

—स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

राजस्थान प्रतिनिधिसभा : शताब्दी समारोह

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के शताब्दी समारोह की तैयारियां आरम्भ हो गई हैं। शताब्दी समारोह अलवर (राजस्थान) मे 30-31 दिसम्बर 88 एव 1 जनवरी 1989 मे सम्पन्न होगा। यह समारोह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाने की योजना है। इस समारोह में विश्व की प्रत्येक आर्य समाज के प्रधान और मन्त्री को आमन्त्रित कर आर्य महासम्मेलन करने का इरादा है जिसमे आर्य समाज के भावी कार्यक्रम पर विस्तार से विचार-विमर्श होगा। समारोह मे भारत के उपराष्ट्रपति श्री शकर दयाल शर्मा, प्रतिरक्षा मन्त्री श्रीकृष्ण चन्द्र पन्त, डा० कर्णसिंह एव अनेक आर्य सन्यासियो तथा आर्य विद्वानों को आमन्त्रित किया है।—सत्यव्रत सामवेदी, वेद प्रचार अधिष्ठाता

आर्य जनता की सेवा में

विगत आठ वर्षों से मैं यथाशक्ति आर्यसमाज व वैदिक धर्म के प्रचार मे जुटा रहा। ग्यारह पुस्तकें भी लिखी, इस सब में आप सबका स्नेह, सहयोग व आशीष मिला, इसके लिये आभारी हू।

परमात्मा की असीम कृपा से व आप सब के आशीर्वाद से मैंने अपना भवन क्रय कर लिया है। कृपया भविष्य में वेदप्रचार व वार्षिकोत्सव हेतु या मेरा साहित्य प्राप्त करने हेतु अब केवल निम्न पते पर ही सम्पर्क करें।

—डा० आनन्द सुमन 40-बी सेवक आश्रम रोड देहरादून-248001 फोन—26004

आर्यजगत् के नए आजीवन सदस्यों की सूची

[पृष्ठ 8 का शेष]

1111 श्री इन्द्रसेन जिन्दल 148/2 सर्वोदय इन्डस्ट्रीज, मधुसूदन पाल चौधरी लेन, हावड़ा

1112 श्री मन्त्री आर्य समाज, अम्ब, (ऊना) हि० प्र०

1113 प्रिंसिपल मेजर आर० एल० कपूर, डी० ए० वी० प० स्कूल 53—नेपियर रोड, अम्बाला कैन्ट

1114 प० सूर्यनारायण शर्मा लोकमान्य पुस्तकालय, ग्रा० पो० सिमरी, भोजपुर

1115 श्री आर० पी० भसीन ई 44, पाडव नगर, पटपड़गंज रोड, दिल्ली

1116 श्री सतोष मल्होत्रा बी-17, 1-फ्लोर, डिफेंस कालोनी नई दिल्ली

1117 श्री के० एल० पुरी० सी-50 ए० डिफेन्स कालोनी, नई दिल्ली

1118 श्री विवेक मलिक 2054/15 चण्डीगढ

1119 प्रिंसिपल डी० ए० वी० शताब्दी पब्लिक स्कूल, जगराव (पजाब)

1120 प्रिंसिपल एच०ए० डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, फिरोजपुर सिटी

1121 श्री सुभाष चन्द्र नारग व अमिता नारग D1/8 राजोरी गार्डन, नई दिल्ली

1122 प्रिन्सिपल बी० बी० एम०-बी० डी० ए० वी० प० स्कूल तलवारा टाउन शिप

1123 प्रिन्सिपल डी० ए० वी० प० स्कूल उर्वरक नगर, बरोनी

1124 श्री श्याम माणिक राव पाथरकर मु० पो० कासर (बीड) महाराष्ट्र

1125 प्रिन्सिपल डी० ए० वी० उ० मा० विद्यालय कैसर गंज, अजमेर

श्री विजय कुमार को हार्ट अटैक

आर्य साहित्य के प्रमुख प्रकाशक, गोविन्दराम हासानन्द के सचालक, तथा 'वेद प्रकाश' मासिक के सम्पादक श्री विजय कुमार को अकस्मात हार्ट अटैक हो गया है। मूलचन्द अस्पताल मे उनका इलाज चल रहा है। आशा है, अगले सप्ताह मे वे अस्पताल से घर पहुच जाएगे। इस समय वे अपने नाम आने वाले पत्रो का उत्तर न दे पाने के लिए क्षमाप्रार्थी हैं।

डी ए वी कौलेज नन्यौल

डी ए वी कोलेज नन्योला का परीक्षा परिणाम बहुत अच्छा रहा। ग्रामीण वातावरण में पालित पोषित इन छात्रो मे बारहवी कक्षा मे मनोज कुमार ने 76 75 प्रतिशत और विजय कुमार ने 74 75 प्रतिशत अक प्राप्त करके मैरिट लिस्ट मे स्थान प्राप्त किया। वे राष्ट्रीय छात्रवृत्ति के योग्य सिद्ध हुये। बी० ए० पार्ट—1 में अमरजीत कौर प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई और पार्ट—3 मे मजुबाला तथा नीतिका मैरिट लिस्ट मे स्थान प्राप्त किया। —प्राचार्य

श्री रामसरन दासआर्य महामंत्री बने

श्री रामसरन दास आर्य दो वर्ष बाद पुन दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मडल के महामन्त्री निर्वाचित हुए हैं। इनके अलावा निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये।—

प्रधान—श्री लखीराम कटारिया, उपप्रधान—श्री हरबस लाल कोहली, आचार्य विद्या रतन व श्रीमती सरला पाल। मत्री—श्री गणेश दास ग्रोवर व श्री सुरेन्द्र कुमार शास्त्री, कोषाध्यक्ष—श्री गगाशरण, लेखा निरीक्षक—श्री देसराज जुनेजा

(श्री रामसरन दास आर्य)

हिमाचल भी नशाबंदी के अभियान पर

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, हिमाचल प्रदेश के प्रधान श्री रमेशचन्द्र 'जीवन' ने हिमाचल मे बढती हुई नशे की प्रवृत्ति पर चिन्ता प्रकट करते हुए सरकार से अनुरोध किया है कि वह अपनी आबकारी नीति पर पुनर्विचार करे। उन्होंने एक प्रेस वक्तव्य मे कहा—एक ओर सरकार पाठ्यपुस्तको के माध्यम से शराब आदि मादक द्रव्यो के दोष प्रकट करती है तो दूसरी ओर स्कूलो, कालेजो और बस अड्डो के निकट शराब के ठेके खुलवा कर नवयुवको के पथभ्रष्ट होने का मार्ग प्रशस्त करती है। इसके अतिरिक्त सरकार राज्यों मे नई शराब की फैक्ट्रिया खोलने पर गम्भीरता से विचार कर रही है ताकि उसको अधिक से अधिक राजस्व प्राप्त हो सके। राजस्व प्राप्ति के लोभ मे प्रदेश के चरित्र से खिलवाड करना सरकार की सबसे बडी भूल है तथा भावी पीढी के साथ बहुत बडा अन्याय है। शराब के अतिरिक्त आज शहरो और गावो मे स्थान स्थान पर वीडियो हाल खोले जा रहे हैं। इनमे अश्लील और बेहूदी फिल्में दिखाई जाती हैं जिससे हमारे बच्चे और नवयुवक पथभ्रष्ट हो रहे हैं और हम आखें मूदे सब सहन किये जा रहे हैं।

आचार्य श्री जीवन ने सरकार से अनुरोध किया है सरकार अपने उक्त निर्णयो पर पुनर्विचार करे। इसके अतिरिक्त सभी आर्य समाजो एव धार्मिक सस्थाओ को भी चाहिए कि यदि शासन शराबबन्दी के लिए ठोस कदम न उठाए तो प्रदेश की सभी आर्य-समाजो, धार्मिक सस्थाओ और शैक्षणिक सस्थाओ को नशाबन्दी के लिए जनमत तैयार करने के लिए आगे आना पडेगा और सरकार को चेताना होगा। —मन्त्री

'अमीर खुसरो' और शकराचार्य की निन्दा

आर्य समाज नीमच मे सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित करके 'अमीर खुसरो' धारावाहिक द्वारा प्रस्तुत गलत इतिहास की निन्दा करते हुए सरकार से इस धारावाहिक को बन्द करने की माग की गई। दूसरे प्रस्ताव मे पुरी के शकराचार्य द्वारा हरिजनो को मन्दिर प्रवेश से वचित करने वाले बयान की निन्दा की गई तथा इसे सविधान का उल्लघन और मानव-मानव मे भेद पैदा करने वाला बताया गया।

देहरादून मे वानप्रस्थाश्रम

किशनपुर (देहरादून) मे वानप्रस्थाश्रम के भवन का शिलान्यास श्री रामकृष्ण मिशन आश्रम देहरादून के अध्यक्ष स्वामी क्षमानन्द जी के द्वारा सम्पन्न हुआ। भवन के लिए लगभग दो बीघे भूमि आर्य दानवीर डा० वेद प्रकाश गुप्त ने प्रदान की है और इस योजना के प्रेरणा स्रोत पुराने आर्य समाजी 84 वर्षीय प० गोपाल सिंह जी हैं।

—नैन सुख वर्मा मत्री

सेवामुक्त डाकपाल गुरचरणदास स्वामी शरणानन्द बने

सेवा मुक्त डाकपाल श्री गुरुचरणदास (दिल्ली कैन्ट) ने वैदिक आश्रम, रिवाडी में स्वामी भाजनान्द जी से विधिवत् संन्यास की दीक्षा ली। अब वे स्वामी शरणानन्द के रूप मे। गुरुकुल किशनगढ, घासेडा जिला महेन्द्रगढ़ (हरि०) मे अधिष्ठाता का कार्य कर रहे।

—सभा मत्री

डी ए वी स्कूल पचकुला के छात्र ने शत प्रतिशत अक प्राप्त किए

चमनलाल डी ए वी सीनियर पब्लिक स्कूल, पचकुला के छात्र रोहित गोयल ने 10वीं कक्षा की सस्कृत परीक्षा मे शत-प्रतिशत अक प्राप्त किए हैं। 115 परीक्षार्थियो मे 108 परीक्षार्थी उत्तीर्ण घोषित किए गए। स्कूल का उत्तीर्णता प्रतिशत 93 9% रहा, 17 छात्रो ने 75% या इससे अधिक अक प्राप्त किए।

—बी०पी० पौल, प्राचार्य

[illegible] लायसस टू पोस्ट विदाउट प्रिपमे०
रजिस्ट्रेशन न० आर० एन० आई० 39/57
'Delhi Postal Regd. No D (C) 409
N D. PSO. ON . 3/4 8-88, 7, अगस्त 1988

'आर्य जगत्' की प्रेमी एक अद्भुत महिला

आर्य कन्या महाविद्यालय जालन्धर के सस्थापक लाला देवराज की सुपुत्री, 'सत्यार्थ प्रकाश' का अंग्रेजी मे अनुवाद करने वाले और बर्मा तथा मारीशस मे आर्य समाज का सर्वप्रथम प्रचार करने वाले डा० चिरजीलाल भारद्वाज की पुत्रवधू, वेदो की विज्ञान परक व्याख्या करने मे दत्तचित्त डा० सत्यदेव भारद्वाज की पत्नी, 85 वर्षीय श्रीमती गोपा भारद्वाज (207 गोल्फलिक नई दिल्ली 3) ने स्वय वृद्धा और अत्यन्त अस्वस्थ होते हुए भी हाल मे ही 'आर्य जगत' के 101 नए ग्राहक बना कर भेजे हैं। इससे पहले भी वे ग्राहक बनाती ही रही हैं। अब जो नए ग्राहक बनाए हैं उनमे से अधिकाश का शुल्क उन्होने अपनी ओर से ही दिया है। उनकी केवल एक ही अच्छा है कि जिनका शुल्क अपनी ओर से देकर उन्होने ग्राहक बनाए हैं, वे सब 'आर्य जगत्' को आदि से अन्त तक पढ़ें और अपने परिवार वालो को पढ़वावें, सुनावें। आशा है ये नए ग्राहक और ग्राहिकाएं उनकी इच्छा अवश्य पूरी करेंगे।

'आर्य जगत्' के ग्राहक बनाओ अभियान तेजी पर

दयानन्द माडल स्कूल, (मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली) ने भी 'आर्य जगत्' के ५०० ग्राहक बनाने का संकल्प किया

नई दिल्ली—प्रिन्सिपल आर्य वीर मल्ला, डी ए वी पब्लिक स्कूल, सेक्टर 14 फरीदाबाद ने प्रतिज्ञा की थी कि वे इस वर्ष 1000 आर्यजगत् के ग्राहक बनायेंगे। उस प्रतिज्ञा के अनुसार उन्होंने 'आर्य जगत्' के 1000 ग्राहक बना दिये हैं तथा दिसम्बर 1988 तक अधिक से अधिक और ग्राहक बनाने का सकल्प किया है।

इसी तरह डी ए वी पब्लिक स्कूल राजनगर के प्रिन्सिपल श्री अशोक कुमार चावला ने 1000 ग्राहक बनाने का सकल्प किया था, उसके अनुसार उन्होंने 100 ग्राहक बना कर भेज दिये हैं।

आर्य जनो को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि दयानन्द माडल स्कूल, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली की प्रिन्सिपल श्रीमती उर्मिल मोंगा और कार्यालयाध्यक्ष श्री जितेन्द्र गोयल ने 'आर्य जगत के 500 ग्राहक बनाने का सकल्प किया है और उस सकल्प के अनुसार उन्होने भी 100 ग्राहक बना दिये हैं।

मेरी समस्त डी ए वी विद्यालयो के प्राचार्यों से प्रार्थना है कि हमारे कार्यालय से रसीद बुकें मगाकर अधिक से अधिक ग्राहक बनाने की कृपा करें। आर्य जगत् की ग्राहक सख्या इस समय लगभग 2100 है। जिसमें भारत भर की आर्य समाजो, आर्य सस्थाओ तथा डी ए वी सस्थाओ के समाचार प्रकाशित होते हैं। आपकी ओर से सूचना आने पर आपको रसीद बुक भिजवा दी जायेगी।

—सभा मन्त्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि

सत्यार्थ प्रकाश सम्बन्धी चार परीक्षाएं

ऋषिवर दयानन्द ने हजारो आर्ष और अनार्ष ग्रन्थो का अध्ययन करने के पश्चात् मानव की सर्वाङ्गीण उन्नति के लिए अपने ग्रथ 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना की थी। इस ग्रन्थ के पठन-पाठन से जहां धर्म का सच्चा स्वरूप विदित होता है और नाना मत मतान्तरो की वेद विरुद्ध मान्यताओं का पता लगता है, वहां अन्ध-विश्वासो से भी छूटने का सही रास्ता दृष्टिगोचर होता है। इसी लिए दिल्ली की आर्य युवक परिषद् ने इस वर्ष 25 सितम्बर को अखिल भारतीय स्तर पर सत्यार्थ-प्रकाश सम्बन्धी चार प्रकार की परीक्षाओ का आयोजन किया है। वे परीक्षायें इस प्रकार हैं—1 सत्यार्थ रत्न, 2 सत्यार्थ भूषण, 3 सत्यार्थ विशारद, 4 सत्यार्थ शास्त्री।

इन परीक्षाओ में अधिक से अधिक सख्या में विद्यार्थियो को बैठने की प्रेरणा देकर नई पीढ़ी को राष्ट्रप्रेमी, धर्मावलम्बी और देश के सुयोग्य नागरिक बनने का अवसर प्रदान करें।

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें—चमनलाल एम० ए०, सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा मन्त्री, एच० 64, अशोक विहार, दिल्ली-110052

पंजाब की आर्यसमाजों से अपील

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा पजाब—चडीगढ़ का कार्यालय 23-ए, दयानन्द नगर, लारेन्स रोड अमृतसर मे आ गया है।

पजाब की विषम परिस्थितियों को ध्यान मे रखते हुए प्रचार कार्य को नया रूप देना होगा। सेवा के माध्यम से जन-सम्पर्क स्थापित करना होगा। इस हेतु उपसभा पजाब की आर्थिक अवस्था को सुदृढ़ करना हम सब का कर्तव्य है। आप अपने प्रभाव द्वारा एव अपनी सस्थाओं के माध्यम से उपसभा के वेद प्रचार कोष में अधिक से अधिक आर्थिक योगदान देकर इस पुण्य कार्य को सफल बनाए।

आप अपनी समाज एव सस्था में किन-किन तिथियो में वेद प्रचार करवाना चाहते हैं, लिखें ताकि उपदेशक महानुभावों को भेजा जा सके। पूर्ण सहयोग की आशा रखते हुए।

सत्यानन्द मुंजाल, सरक्षक (लुधियाना) — प्रि० सुदेश अहलावत, प्रधान — विद्या सागर वैद्य वाचस्पति, मन्त्री

मुद्रक प्रकाशक श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाड़ी धीरज (फोन : 527335) दिल्ली से छपवाकर कार्यालय 'आर्य जगत्' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 (फोन 343718)

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य —30 रुपये विदेश मे 65 पौ० या 125 डालर वर्ष 51, अक 33 रविवार 14 अगस्त, 1988 दूरभाष 3 4 3 7 1 8
आजीवन सदस्य-251 रु० इस अक का मूल्य— 75 पैसे सृष्टि सवत 1972949089 दयानन्दाब्द 163 श्रावण शु०-1, 2045 वि०

स्वाधीनता दिवस अंक

15 अगस्त को प्रधानमंत्री की हत्या की साजिश

स्वर्ण मन्दिर में बरामद कागजात से भण्डाफोड़

15 अगस्त के स्वाधीनता दिवस पर या उसके आस पास प्रधानमत्री, गृहमत्री तथा अन्य अत्यन्त विशिष्ट जनो की हत्या का षडयन्त्र तैयार करके पाकिस्तान ने उच्च प्रशिक्षित आतकवादियो को भारत भेजा था—यह रहस्य ब्लैक थडर आपरेशन के बाद स्वण मन्दिर म प्राप्त कागजात से पता लगा है। अवतार सिह ब्रह्मा अभी हाल तक पाकिस्तान मे ही था और उसे खास तौर से इसीलिए भारत भेजा गया।

अवतार सिह को खालसा कमाडो फोस के मृत कमाडर लाभसिह उफ सुक्खा के समकक्ष माना जाता है उसके साथ आधा दर्जन आतकवादी और भेजे गए थे। पहले यह काम लाभसिह को सौंपा गया था। पर उसकी मृत्यु के बाद अवतार सिह को यह काम सौपा गया।

जब स्वणमदिर म आतकवादियो को मुह की खानी पडी, तब उसके बदने के रूप मे दिल्ली के अत्यत विशिष्ट जनो को मारने की योजना बनाई गई। इसका उद्देश्य यह था कि हताश आतकवादियो का किसी तरह फिर मनोबल बढाया जाए।

भारत के गुप्तचर विभाग ने ब्रह्मा को पाकिस्तान मे दिए गए आदेश के बारे मे पता लगाया। उसके बाद ब्रह्मा भारत आकर भिण्ड के इलाके मे छिपा रहा। कहा जाता है कि वह दिल्ली पहुच चुका है और राजधानी मे 'रेड अलट' की घोषणा कर दी गई है।

ससद मे दी गई सूचना के अनुसार यह भी स्पष्ट हो गया है कि आतकवादियो को पाकिस्तान की पूरी शह है। अब अकालीदल मे एकता का जो तरह तरह का अभियान चल रहा है, वह भी पाकिस्तान के आदेश पर ही हो रहा है।

मान का नया कदम

एकीकृत अकालीदल के अध्यक्ष सिमरनजीत सिह मान ने, इस समय भागलपुर जेल मे बन्द हैं, पार्टी के सब पदाधिकारियो को हटा कर उनके स्थान पर अध्यक्ष मण्डल तैनात किया है, जो मान के रिहा होने तक पार्टी का सब कामकाज समालगा। इस फैसले से अकालीदल की राजनीति म फिर नया मोड आया है। मान के वकील बी०एल० वढेरा ने एक प्रेस कान्फ्रेंस म मान के हस्ताक्षरो से युक्त उपरोक्त बयान दिया अब अध्यक्ष मण्डल के अलावा न कोई परिषद् होगी न कोई कमेटी और न ही कोई फोरम। किसी को अपनी ओर से प्रेस मे कोई वक्तव्य देने का भी अधिकार नही होगा।

विजयन्त टैंक की फाइलों की चोरी

डलहौजी हाउस से जो फौजी फाइल चुराई गई थी, उनके बारे मे पहले यह प्रश्न था कि बोफोर्स तोपो के सम्बन्ध की फाइलें चुराई गई हैं। पर रक्षामत्री श्री पन्त ने ससद मे इस समाचार का खण्डन कर दिया। उन्होने स्पष्ट किया कि फाइलो की चोरी अवश्य हुई है, पर वे बोफास से सम्बधित नही हैं।

तब और खोजबीन करने पर पता चला कि जो फाइलो चुराई गई हैं उनमे विजयन्त टैंक सम्बन्धी तकनीकी जानकारिया थी। यह ध्यान रखने योग्य बात है कि विजयन्त टक पूरी तरह भारतीय तकनीशियनो द्वारा निर्मित अत्यन्त आधुनिक टक है और उस पर भारतीय सेना को गर्व भी है।

कडी फौजी सुरक्षा के बीच रखी गई इन फाइलो की चोरी इस बात का सकेत है कि हमारी सुरक्षा व्यवस्था अभेद्य नही है, उसमे कहीं न कहीं छेद अवश्य है। इन फाइलो के साथ ही बोफोस सम्बन्धी फाइले भी रखी हुई थी।

फौजी अफसरो ने पहले 150 फाइलो के चुराये जाने की बात कही थी, लकिन बाद मे उन्होने केवल 75 फाइलो की सूची दी।

सतवन्त, केहर की फांसी बहाल

इन्दिरा गाधी की हत्या के सिलसिले तीन अभियुक्तो को हाईकोर्ट ने फासी की सजा दी थी, अब सुप्रीम कोर्ट ने उनमें से बलवीर सिह को परिपुष्ट सबूतो के अभाव मे बरी कर दिया है और सतवन्त सिह तथा केहर सिह की फासी की सजा बहाल रखी है। उनको यह अधिकार दिया गया है कि वे तीन मास के अन्दर अपने केस पर पुनर्विचार के लिए सुप्रीम कोट मे अपील कर सकते हैं।

इन्दिरा गाधी की हत्या हुए चार वर्ष होने को आए। इतने लम्बे अर्से तक लटकाते इस केस का अन्त म फैसला हो ही गया—जब कि यह फैसला बहुत पहले हो जाना चाहिए था।

जन्माष्टमी को समता दिवस के रूप मे मनावें

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने समस्त आर्य समाजो और आर्य सस्थाओ तथा शिक्षण-सस्थाओ को निर्देश दिया है कि वे 3 सितम्बर को जन्माष्टमी के दिन अपने यहा यज्ञो का आयोजन करें, उनमे हरिजन बधुओ को यजमान बनावें, उन्हीं के हाथ से प्रसाद वितरण कराए और उस दिन को सामाजिक समता दिवस के रूप मे मनावें।

फिजी का मुद्दा संयुक्त राष्ट्र संघ मे उठाने की मांग

गत सप्ताह हमने फिजी के तीन लाख भारतीयो का बलात् धर्मान्तिरण कर उन्हें ईसाई बनाने और फिजी को ईसाई राष्ट्र घोषित किए जाने के खतरे की ओर पाठको का ध्यान खीचा था। अब विदित हुआ है कि निर्दलीय सासद श्री कृष्णकुमार बिडला ने सदन मे इसका विशेष उल्लेख करते हुए सरकार से माग की है कि इस मामले को सयुक्त राष्ट्र सघ मे उठाया जाए, क्योकि इससे फिजी के समस्त भारतीयो का भविष्य खतरे मे है। दक्षिण अफ्रीका मे जातिभेद का विरोध करने वाली भारत सरकार इस मामले मे चुप क्यो है'

सम्पादक—क्षितीश वेदालकार
व्यवस्थापक—रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

सामवेद—एक काव्यांजलि (4)

—प. लेखराम, वरिष्ठ पत्रकार—

1 यज्ञायज्ञा वो अग्नये गिरागिरा च दक्षसे।
प्रप्र वयमम् जातवेदस प्रिय मित्र न शंसिषम ॥1॥

2 पाहि नो अग्न एकया पाह्यु ऽत द्वितीयया।
पाहि गीर्भिस्तिसभिरूर्जा पते पाहि चतसृभिर्वसो ॥2॥

3 बृहद्भिरग्ने अर्चिभि शुक्रेण देव शोचिषा।
भरद्वाजे समिधानो यविष्ठय रेवत् पावक दीदिहि ॥3॥

4 त्वे अग्ने स्वाहुत प्रियास सन्तु सूरय।
यन्तारो ये मघवानो जनानामूर्वं दयन्त गोनाम् ॥4॥

5 अग्ने जरितर्विश्पतिस्तपानो देव रक्षस।
अप्रोषिवान् गृहपते महा असि दिवस्पायुर्दुरोणयु ॥5॥

6 अग्ने विवस्वदुषमश्चित्र राधो अमर्त्य।
आ दाशुषे जातवेदो वहा त्वमद्या देवा उषर्बुध ॥6॥

7 त्व नश्चित्र ऊत्या वसो राधासि चोदय।
अस्य रायस्त्वमग्ने रथीरसि विदा गाध तुचे तु न ॥7॥

8 त्वमित् सप्रथा अस्यग्ने त्रातर्ऋत कवि।
त्वा विप्रास समिधान दीदिव आ विवासन्ति वेधस ॥8॥

9 आ नो अग्ने वयोवृध रयि पावक शस्यम्।
रास्वा च न उपमाते पुरुस्पृहं सुनीती सुयशस्तरम् ॥9॥

10 या विश्वा दयते वसु होता मन्द्रो जनानाम्।
मघोन पात्रा प्रथमान्यस्मै प्र स्तोमा यन्त्वग्नये ॥10॥

चतुर्थ दशति

35—उपदेश करे मित्र समान।

ज्ञान स्वरूप ईश महान
अमर, दाता समस्त ज्ञान
सज्जन के क्रिया कर्म मे
सदा देता है सद् ज्ञान।
उपदेश करे मित्र समान।

अपनी प्रेरक वाणी से
ज्ञान प्रद वेद वाणी से
हमें करता इसी प्रकार
नित्य समग्र ज्ञान प्रदान।

उपदेश करे मित्र समान ।1।

36—हमारी सदा रक्षा करो।

हे बलपति अन्तर्यामी
अग्नि रूप भगवन, स्वामी
ऋग्वेद के उपदेश से
साम के शुभ सन्देश से
हमारी सदा रक्षा करो।

ऋग् साम यजु इन तीन से
अरु चार वेद प्रवीन से
हमे सद् ज्ञान प्रदान कर
शुभ बुद्धि का आदान कर

हमारी सदा रक्षा करो ।2।

37—धन विद्या का हो प्रकाश।

हे दिव्य गुण युक्त महान
पावक और प्रकाशवान
शुद्ध, तीव्र किरण रूप गुण
से फैला सवत्र प्रकाश।
धन विद्या का हो प्रकाश।

जो हैं ये पुरुषार्थी जन
तव उपासक पूरित लगन
प्रदान कर विद्या अरु धन
जन जन मे भर दे प्रकाश।

धन विद्या का हो प्रकाश ।3।

38—समृद्धि नेतृत्व दे ईश।

जो जन हैं प्रिय तुम्हारे
स्तुति कर्ता प्रियतम प्यारे
राज्य नेतृत्व प्रदान कर
उपदेष्टा बना जगदीश।
समृद्धि नेतृत्व दे ईश।

दे स्वजन को पशु बाहुल्य
वैभव अरु समृद्धि अमूल्य
उचित रूप मे है ध्याता
ज्ञान स्वरूप तू जगदीश।

समृद्धि नेतृत्व दे ईश ।4।

39—स्वामी तू है पूजनीय।

समस्त पदार्थ गुण वक्ता
ऐश्वय अलौकिक युक्ता
सज्जनो का है तू रक्षक
खल जन तुझ से दण्डनीय।
स्वामी तू है पूजनीय।

गृहपति अग्नि रूप दाता
अचल द्युलोकादि त्राता
घट घट कण कण ओत प्रोत
है महान हे वचनीय।

स्वामी तू है पूजनीय ।5।

40—ज्ञानेन्द्रियां जागृत करे

उषा कि चेतन काल में
रग भरे चित्रित थाल मे
ज्ञान दाता परम ईश्वर
बुद्धि मे प्रेमामृत भरे।
ज्ञानेन्द्रियां जागृत करे।

अजर, अमर, ज्ञान प्रकाशक
भक्ति धन युत जो उपासक
हृदय मध्य ऐसे जन के
उषा नव ज्ञानामृत भरे।

ज्ञानेन्द्रिया जागृत करे ।6।

41—रक्षा सहित धन समृद्धि दे।

घर घर वासी अग्नि रूप
जनक हमारे, रक्षक भूप
रक्षा के अभय दान युक्त
विद्या धान्य की वृद्धि दे।
रक्षा सहित धन समृद्धि दे।

तुम धन के अद्भुत दाता
रक्षा अरु विद्या प्रदाता
सन्तति को आश्रय दे कर
सब रीति से अभिवृद्धि दे।

रक्षा सहित धन समृद्धि दे ।7।

42—मेधावी जन भजें तुझे।

ध्याता, तेजोमय, त्राता
तू सब व्यापी विधाता
अतएव विप्र अरु पण्डित
सर्वतोभाव भजें तुझे।
मेधावीजन भजें तुझे।

अग्नि रूप परमात्मन
तू सत, ज्ञानी, योग्य नमन
इसीलिए बुद्धिमान नर
निज चिन्तन मे भजें तुझे।

मेधावी जन भजें तुझे ।8।

43—प्रभु उत्तम यश अरु बल दे।

हे धारण कर्ता पावक,
परमात्मन्, ज्ञान प्रकाशक
अन्न उपजाऊ जल हमे
प्रचुर, समय पर, शीतल दे।
प्रभु उत्तम यश अरु जल दे।

अग्नि रूप अन्तर यामी
हे अखिल जगत के स्वामी
साथ ही सुनीति पूर्ण यश
अभीष्ट रूप मे अटल दे।

प्रभु उत्तम यश अरु जल दे ।9।

44—गायें मिल मधुर स्तुति गीत

यह जो कर्म फल प्रदाता
परम प्रिय आनन्द दाता
दे हमे विद्या धन विविध
पाए उसकी सदा प्रीत।
गायें मिल मधुर स्तुति गीत।

हो स्तोत्र उत्तम अरु ज्येष्ठ
मधु के समान रुचिर श्रेष्ठ
अग्नि रूप परमेश हेतु
ऐसा रचें हम सगीत।

गायें मिल मधुर स्तुति गीत ।10।

[क्रमश]

पता—18 आनन्दलोक, नई दिल्ली-49

यह कैसे सम्बन्ध ?

हमारे नेता व मन्त्री विदेशो में जाकर या विदेशियो के भारत आगमन पर उनके देशो के साथ शताब्दियो पूर्व सम्बन्ध होने की घोषणा करते हैं। इसी सबध में प्रधान मन्त्री की हाल की सीरिया यात्रा का प्रमाण पर्याप्त है जहा उन्होने कहा कि भारत व सीरिया के शताब्दियो पुराने सम्बन्ध हैं क्योकि मुहम्मद बिन कासिम सीरिया से ही इस्लाम का सन्देश लेकर भारत गया था। सत्य यह है कि कासिम एक लुटेरा था और धन दौलत के लोभ मे ही भारत पर उसने आक्रमण किया था। राजा दाहर ने अपने पराक्रम का परिचय दिया परन्तु कासिम को परास्त करने में वे शहीद हो गए। राजा दाहर की बेटियो को लेकर जब कासिम वापस स्वदेश को चला था तो उन आर्य वीरांगनाओ ने कासिम को मजा चखाने की माग मे ही एक योजना बनाई थी। उसी योजना के अधीन उन्होने कासिम के स्वामी खलीफा को झूठ मूठ कह दिया कि कासिम ने हमे आपको पेश करने से पूर्व भ्रष्ट कर दिया है। खलीफा ने इस कथन को सत्य मानकर कासिम की हत्या करवा दी थी। इस घटना मे कासिम व इस्लाम का कौन सा उज्ज्वल व प्रेरणादायक पक्ष प्रस्तुत हुआ है? क्या इस्लाम का यही सन्देश है कि दूसरे देशो पर अकारण आक्रमण करके उसे लूटा जाए, हत्याए की जाए व कन्याओ को उठा कर स्वदेश मे अपने सम्राट को पेश किया जाए? थोड़े बहुत अन्तर के साथ अलाउद्दीन खिलजी, मुहम्मद गोरी, महमूद गजनवी, बाबर व अहमद शाह अब्दाली की भी ऐसी कहानिया हैं। जिनको मनुष्य मानते हुए भी सकोच होता है, वे ही इस्लाम के प्रतिनिधि हैं तो इस्लाम कैसा होगा यह कल्पना की जा सकती है। भारत के प्रधान मन्त्री कब अफगानिस्तान, ईरान व अमरीका की यात्रा पर जाकर उक्त देशो में कहेंगे कि आपके देशो के साथ हमारे ननिहाल का रिश्ता है? —इन्द्रजीत देव, यमुनानगर (हरियाणा)

*

सुभाषित

यस्मिन् रुष्टे भयं नास्ति तुष्टे नैव धनागमः ।
निग्रहानुग्रहौ नस्त स रुष्टः किं करिष्यति ॥

मौनं कालविलम्बश्च प्रयाणं भूमिदर्शनम् ।
भृकुट्यन्यमुखी वार्ता नकारः षड्विधः स्मृतः ॥

जिसके रुष्ट हो जाने पर किसी को भय नहीं होता, जिसके सन्तुष्ट हो जाने पर धन की प्राप्ति नहीं होती, जो निग्रह या अनुग्रह करना नहीं जानता, वह रुष्ट होकर भी किसी का क्या बिगाड़ लेगा।

इन्कार करने के 6 तरीके होते हैं—चुप रहना, जान बूझकर देर करना, उठकर चले जाना, भूमि की ओर देखने लगना, भौंहें तान लेना, किसी की ओर मुख करके बात करना।

सम्पादकीयम्

क्या भारतीयों की आत्मा मर गई है ?

एक बार डॉ० अमर नाथ झा ने, जब वे हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष बने थे, तब हिन्दी वालों पर व्यंग्य करते हुए कहा था कि हिन्दी वालों की आत्मा पता नहीं क्यों स्त्रीलिंग हो गई है। जानकार लोग जानते हैं कि संस्कृत में आत्मा शब्द पुल्लिंग ही व्यवहृत होता है। परन्तु हम तो यहां आत्मा के केवल स्त्रीलिंग होने की बात नहीं कह रहे, उसके मर जाने की बात कह रहे हैं, और वह भी केवल हिन्दी वालों की नहीं, समस्त भारतीयों की। इस प्रसंग में आत्मा के अमर होने की बात कह कर आत्मा के मर जाने के मुहावरे का खण्डन मत करिये। स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर हम स्वयं भारतीयों पर यह आरोप लगा रहे हैं, इसका हमको भी कम दुःख नहीं है। बल्कि यह राष्ट्रीय पर्व होने के कारण मन की व्यथा और बढ़ गई है। पाठक पूछेंगे—क्यों ?

पिछले दिनों 'आर्य जगत्' में हम प्रथम पृष्ठ पर यह समाचार दे चुके हैं कि फीजी के राष्ट्रपति ने वहां के समस्त भारतीयों का धर्मान्तरण करके उनको बलात् ईसाई बनाने की धमकी दी है। इस धमकी के जवाब में अब तक न तो भारत सरकार ने अंगुली उठाई है और न ही अन्य किसी संस्था ने। आप जरा कल्पना करिये कि यदि भारत सरकार ने इस प्रकार की कोई घोषणा की होती और कहा होता कि भारत भर के समस्त ईसाईयों को हिन्दू बना लिया जायेगा और यदि वे हिन्दू बनना स्वीकार नहीं करेंगे तो उनका यहां रहना मुश्किल कर दिया जायेगा—तो सारे संसार में कितना तहलका मच जाता। जितनी महाशक्तियां हैं वे सब ईसाई मतावलम्बी होने के कारण इस प्रकार की घोषणा पर उबल पड़ती और भारत की सरकार को असभ्य, जंगली और अमानवीय आदि विशेषणों से सम्बोधित करने से बाज नहीं आती। परन्तु फीजी के राष्ट्रपति की उक्त घोषणा पर वे सब चुप हैं, एक तरह से कहना चाहिये कि वे महाशक्तियां प्रच्छन्न रूप से उसको सहयोग दे रही हैं। यह साम्राज्यवाद का सबसे घिनौना रूप है।

भारत सरकार की चुप्पी का हाल यह है कि विदेश राज्यमन्त्री और विदेश सचिव वहां के हालात का अध्ययन करने के बाद जब लौटकर आये तब उन्होंने यह रिपोर्ट दी कि फिलहाल फीजी में सत्ता परिवर्तन की कोई सम्भावना नहीं है। जनरल राबुका के पैर अच्छी तरह जम गये हैं और उनकी जितनी विरोधी राजनैतिक शक्तियां थीं, उनमें अब कोई दम नहीं रहा है। अगर हमारी सरकार की दिलचस्पी केवल फीजी की सरकार में ही होती, तो शायद इस प्रकार की चुप्पी कुछ मायने भी रखती। परन्तु यह भूलने वाली बात नहीं है कि फीजी में भारतीय बहुसंख्यक हैं। फीजी के निर्माण में और उसे आधुनिक राष्ट्र बनाने में इन भारतीयों का ही सबसे बड़ा योगदान है। इन भारतीयों ने लोकतन्त्र के माध्यम से वहां सत्ता पर अधिकार भी कर लिया था, परन्तु सैनिक क्रान्ति के द्वारा उस लोकतन्त्र को समाप्त कर दिया गया। अब राबुका की सरकार केवल सत्ता हथियाने और लोकतन्त्र को समाप्त करने से ही सन्तुष्ट नहीं है बल्कि और गहरी चाल चलकर भारतीयों की अस्मिता और अस्तित्व को सर्वथा समाप्त करने पर तुली है। शक्ति सन्तुलन के अन्तर्राष्ट्रीय ढांचे में क्या भारत इतना पौरुषहीन हो चुका है कि वह फीजी में भारतीयों को पुनः सत्तारूढ़ करने की तो बात ही क्या, उनके मूलभूत अधिकारों तक को बचाने में असमर्थ है ?

फीजी की कुल सात लाख आबादी में से तीन लाख से अधिक भारतीय हैं। राबुका के नये पैंतरों का परिणाम यह हुआ है कि पिछले एक वर्ष के अन्दर वहां से 8 हजार तकनीकी और विशेषज्ञ लोगों को फीजी छोड़कर जाना पड़ा। हजारों अध्यापकों, चिकित्सकों, वकीलों और उद्योग व्यापार में कुशल लोगों को फीजी छोड़ने के लिए बाधित होना पड़ा। अब वहां के भारतीयों की यह हालत हो गई है कि यदि किसी को फीजी के अलावा कहीं भी बस जाने का कोई मौका नजर आता हो तो वह उसे छोड़ना नहीं चाहेगा। जिन भारतीयों ने फीजी को आर्थिक दृष्टि से समृद्ध किया आज वे ही आर्थिक दृष्टि से तंग आकर उसे छोड़ने पर मजबूर हो रहे हैं। क्या इन भारतीयों के हितों की रक्षा करना भारत सरकार का कोई कर्तव्य नहीं है ?

राबुका को गुस्सा इस बात का है कि जिस तरह फीजी के मूल निवासियों को सहज ही ईसा की भेड़ों में शामिल कर लिया गया उसी तरह ये भारतीय भी गर्दन झुका कर ईसाईयत की शरण में क्यों नहीं आ जाते। परन्तु वे यह भूल जाते हैं कि वैदिक धर्म जिस दृढ़ बौद्धिक और तर्क संगत आधार पर टिका है उसकी तुलना संसार का कोई अन्य मत नहीं कर सकता। यह केवल फीजी का नहीं, संसार के उन सब देशों का इतिहास है जहां-जहां भारत वंशी गये। वहां भले ही वे कुलीगीरी और मेहनत मजदूरी करने के लिये गये हों, पर उनकी अपने धर्म पर आस्था इतनी दृढ़ थी कि साम्राज्यवादी शक्तियों के सारे प्रलोभन और ईसाईयत के प्रचार के लिये अंधाधुंध बहाया गया धन भी उन हिन्दुओं को अपने धर्म से विचलित नहीं कर सका। केवल फीजी में ही क्यों, मारिशस में, गुयाना में, सुरीनाम और ट्रिनीडाड आदि उपनिवेशों में जहां-जहां भारतीय गये वहां-वहां की यही कहानी है। उन प्रदेशों के मूल निवासियों को ईसाईयत के नाम पर जंगली कुप्रथाओं से हटाकर उन्हें भले ही सभ्य बना लेने का दावा किया गया हो, परन्तु वैदिक धर्मावलम्बियों की दृष्टि में ईसाईयत का सांस्कृतिक और नैतिक स्तर कहीं भी उनके समकक्ष नहीं है। यह बात न होती तो आज सारे संसार के बुद्धिमान लोग वैदिक धर्म के उन उदात्त दार्शनिक तत्वों की ओर आकृष्ट न होते।

यहीं हम एक बात और कह देना चाहते हैं। यह हिन्दू धर्म वह नहीं है जिस का प्रचार पुरी के शंकराचार्य करते हैं। वह कहते हैं कि जात-पात और छुआछूत तथा स्त्रियों को समानता का दर्जा न देना हिन्दू धर्म का अंग है। वे सती प्रथा और बाल विवाह का भी समर्थन करते हैं। विधवा विवाह का विरोध करते हैं पर बलि प्रथा का विरोध करने की उनकी हिम्मत नहीं है। हम यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि इन कुरीतियों और अन्धविश्वासों से भरा धर्म ईसाईयत और इस्लाम का मुकाबला नहीं कर सकते उसे तो उनके सामने पराजित होना ही पड़ेगा। हिन्दू धर्म का शुद्ध रूप तो वह है जिसमें न अवतारों का स्थान है, न मूर्तियों का, न पैगम्बरों का स्थान है न मनुष्य और परमात्मा के बीच किसी मध्यस्थ का, और न इतिहास के कालक्रम में विदेशियों और विधर्मियों के सम्पर्क से हिन्दू समाज में घर कर गई कुप्रथाओं का स्थान है। असली धर्म तो वेदानुमोदित है, वह तर्क शुद्ध है, बुद्धिसंगत है, वह विज्ञान सम्मत है, वह सृष्टि नियमों के अनुकूल है और मनुष्य जाति को उन्नति की ओर ले जाने वाला दिव्य सोपान है। हिन्दू धर्म का मूल वही वैदिक आदर्श है। इसलिए जब राबुका यह कहते हैं कि फीजी के मूल निवासियों को नरबलि की प्रथा से हटाकर हमने ईसाईयत की दीक्षा देकर उन्हें सभ्य बनाया है, तो यह स्मरण रखना होगा कि पशुओं या मनुष्यों की बलि देने की प्रथा वैदिक धर्म की देन नहीं है, वह ईसाईयत और इस्लाम की ही देन है। इसलिए धर्म के नाम पर हमें भारत में या विदेश में उसी विचार धारा पर जोर देना होगा जो ईश्वर और सृष्टि के विज्ञान सम्मत स्वरूप का समर्थक है अर्थात् वैदिक धर्म।

क्या फीजी के भारतवासियों के सिर पर मंडराते इस संकट के प्रति भारत सरकार का कोई कर्तव्य नहीं है ? क्या पोपपाल का भारत में बुलाकर स्वागत करने वाले और मिजोरम के आम चुनाव में एक अंग्रेज काऊबॉय (Cowboy) की तरह रंग बिरंगी पोशाक पहनने वाले राजीव गांधी के मन में और सारे भारत में भले ही साड़ी और बिन्दी लगा अपने पति के साथ सीता की तरह चलने वाली पर मिजोरम में स्कर्ट पहनने वाली सोनिया गांधी के मन में साम्राज्यवाद के इस घृणात्मक ईसाई रूप के प्रति कोई वितृष्णा पैदा नहीं होती ? यदि प्रधानमन्त्री की आत्मा इस समय नहीं चेतती, तो क्या समस्त इकाईयों की आत्मा भी मर गई ? या उनको चमचागिरी से फुरसत नहीं है। हम विपक्षी धुरन्धरों से पूछना चाहते हैं कि वे राजीव गांधी को हटाने के एकसूत्री कार्यक्रम के प्रति जोश खरोश से जुटे हैं पर क्या फीजी की यह घटना उनकी आत्मा को नहीं कचोटती ? हम धर्मध्वजियों से पूछते हैं कि क्या उनकी दृष्टि में उनके अपने हलवे मांडे के सिवाय शेष सारा संसार इतना मिथ्या है कि फीजी की इस घटना की ओर ध्यान देना उन्हें उचित प्रतीत नहीं होता ?

यदि सरकार, राजनैतिक नेता और धर्मध्वजी गुरुओं की आत्मा मर गई है तो हम भारतवर्ष की जनता से पूछते हैं कि क्या उसकी भी आत्मा मर गई है ? खासतौर से हम आर्य बन्धुओं से पूछते हैं कि इस भयंकर वैदेशिक साम्राज्यवादी षड्यन्त्र के विरोध में यदि और लोग अपनी जबान खोलते कतराते हैं तो क्या तुम्हारी जबान को भी लकवा मार गया है ? दक्षिण अफ्रीका, नाइजीरिया, अंगोला और फिलिस्तीन में साम्राज्यवाद के हिंसात्मक रूप का विरोध करने की फुर्सत तो हमें है, पर अपने भारतीय बन्धुओं की रक्षा की कोई चिन्ता नहीं है ? यदि अपने भारतीय उन बन्धुओं की रक्षा भारतीय नहीं करेंगे तो और कौन करेगा ? क्या हमारी आत्मा सचमुच मर गई है ?

और मैं मैं वापिस भारत आ गया!

—गुरचरण दास—

मैं सबसे पहले बारह साल की आयु में भारत छोडकर गया था, जब मेरे पिता का वाशिंगटन मे स्थानान्तरण हुआ। वहां मैं आइजन हावर के समृद्धिशाली दिनो मे बडा होता रहा हाई स्कूल समाप्त करने के बाद होस्टल के नजदीक चार्ल्स नदी के तटपर विद्यमान हार्वर्ड कालेज में मैंने फिलासफी विषय लेकर दाखिला ले लिया। चार वर्ष बाद जब मैं आत्मविश्वास से भरा बीस वर्ष का युवक था, तब मैं भारत लौटा जबकि मुझे बकले मे ग्रेजुएट बनने की तैयारी करनी चाहिए थी। मैंने अपने आप से कहा कि मैं जल्द ही वापिस चला जाऊंगा, परन्तु किसी भोज में आने वाले व्यक्ति की तरह मैं यहीं रुक गया।

बाद मे सन् 60 के दशक में मेरी कम्पनी मुझे दो वर्ष के लिए न्यूयार्क भेज दिया। वहां मेरी भेंट उस नेपाली लडकी से हुई जो सयुक्त राष्ट्र के कार्यालय में कायरत थी और बाद में मेरी पत्नी बन गई थी। उसके पास वह प्रशंसनीय ग्रीन कार्ड था जिससे हम दोनो सदा के लिए अमेरिका में रह सकते थे। परन्तु मैं अपना कार्यकाल समाप्त होते ही एक भी क्षण गवाये बिना अपनी पत्नी के साथ भारत आ गया और वह बहुमूल्य ग्रीन कार्ड बेकार हो गया।

मैंने हाल में ही एक अन्तंराष्ट्रीय कम्पनी मे मेनेजर के रूप मे बडी सफलता के साथ पांच वर्ष बिताये हैं और अब एक बहुत बडे बहुराष्ट्रीय निगम की मुख्य यूरोपियन कम्पनी का मुखिया बनने वाला था। तब मैं अचानक ही फिर भारत लौटकर एक ऐसा काम करने लगा जिसमें मुझे जितना पैसा मिलता था वह विदेश मे मिलने वाले पैसे का एक मामूली सा अंश मात्र था।

जिन लोगो के साथ आप पले और बढ़े उनकी नजर में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति होने की एक प्रसुप्त इच्छा होने के बावजूद मेरे बार बार भारत लौट आने की क्या व्याख्या हो सकती है? पिछले बीस वर्षों मे मैं तीन बार वापिस आया हू जबकि मेरा केरियर और भौतिक समृद्धि सबधी विचार मुझे दूसरी ओर ले जाते थे। शायद इसका उत्तर भारत मे बिताये मेरे जीवन के शुरू के बारह वर्ष हों। एक सरकारी कर्मचारी के सबसे बडे बेटे के रूप मे मैं मध्य वर्गीय परिवार में पला। परिवार मे आर्थिक तगी रहती थी और स्कूल की फीस तथा हम बच्चो के लिए दूध की व्यवस्था के बाद घर खर्च चलाने के लिए बहुत थोडा पैसा बचता था। मेरी मा हमको रामायण महाभारत की कथायें सुनाया करती और हमे कमखर्ची, ईमानदारी और अपने देश के प्रति जिम्मेवारी के गुणो का उपदेश दिया करती।

हम नेहरू युग की निष्पाप अबोधता में जीते थे जबकि हमारे विचार बहुत कच्चे थे। समाजवाद, लोकतन्त्र और सयुक्त राष्ट्र में हमें विश्वास था। राष्ट्र निर्माण के उत्साह से हम ओतप्रोत थे। नेहरू के आदर्शवाद ने भी हमारे मन पर स्थायी छाप छोडी थी। और मैं समझता हू कि मेरे वापिस आने में उसका भी कुछ हाथ था। यद्यपि मैं कभी राजनीति में नहीं गया, परन्तु मैं इस बात के प्रति लगातार सचेत था कि मुझे अपने देश को भी कुछ न कुछ देना चाहिए। एक बडी कम्पनी में मैनेजर होने के नाते से मुझे यह जिम्मेवारी और ज्यादा महसूस होती थी और अपनी कम्पनी में तथा उसके बाहर नई पीढ़ी को प्रशिक्षण देकर तैयार करने में मैं अपनी जिम्मेवारी निभाने का प्रयत्न करता था। मैं राष्ट्र-निर्माण के कार्य को एक प्रबंधकीय चुनौती की तरह से देखता था और मैं आई॰ए॰एस॰ अकादमी तथा अन्य प्रशासनिक उच्च पदों पर अपने युवा मित्रों को वैसी ही प्रेरणा देने का प्रयत्न करता था।

जब मैं न्यूयार्क में रह रहा था तब मुझे सूरत के एक सज्जन मिले। अन्य भले भारतीयो की तरह उन्होंने मुझे तुरन्त मध्यवित्तीय मोहल्ले के अपने घर मे आमन्त्रित किया। उनकी पत्नी ने थालियों मे लाजवाब गुजराती खाना परोसा और उसने गर्व से कहा—"यहां आपको सब तरह के मसाले और सब्जियां मिल जायेंगी जो कहीं ज्यादा स्वादिष्ट होंगी।" उसके पति ने इतना और जोडा—"दोनों दुनियाओं में जो सर्वोत्तम है वह हमारे पास है। हमारी आमदनी पश्चिमी दुनिया वाली है और हमारी जीवन शैली भारतीय है। यहां हजारों गुजराती रहते हैं और हमारा अपना एक मंदिर भी है। हम राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के सदस्य हैं और हमारे बच्चे शनिवार को स्थानीय स्कूल में आर॰ एस॰ एस॰ की शाखा लगाते हैं।"

उनके आत्मतृप्त जीवन की बात सुनकर मुझे कुछ ऐसा अजीब सा अनुभव हुआ कि जैसे मैं कहीं कुछ खो रहा हू। मैंने सोचा कि वे यहां भारतीय ढग का जीवन जीने की कोशिश कर रहे हैं जबकि भारत में वे इसको सीधा जी ही रहे होते। उनको अपने भारतीय मित्रों से परे किसी से कोई लेना देना नहीं। अपने पडोसियो से भी उनका कोई वास्ता नहीं। अपने मोहल्ले के स्थानीय चुनाव मे वे उदासीन हैं परन्तु अहमदाबाद के ताजा से ताजा राजनीति घटनाचक्र से परिचित हैं। मुझे कुछ उदासी अनुभव हुई, हालाकि मैं यह जानता हू कि उपनगरों मे रहने वाले लोग केवल प्रसन्नता का सपना ही देख सकते हैं, उसे कभी जीते नहीं।

विदेशों में धनी से धनी भारतीय भी गन्दी बस्तियों के ढंग का जीवन जीते हैं। फिलेडेलफिया में खूब चलती प्रेक्टिस से अच्छा पैसा कमाने वाली एक भारतीय डाक्टर ने मुझ से एक बार कहा—सारे हफ्ते मैं यह पतलून पहन के रहती हू क्योंकि मैं लोंगो का अपनी तरफ ध्यान नही खींचना चाहती परन्तु इससे मैं मोटी और भद्दी लगती हू। मैं सप्ताह के अंतिम दिनों के लिए तरसती रहती हू, जब मैं बढिया ढग से साडी पहन सकू। हम शनिवार और रविवार को भारतीय घरों मे पार्टियां करते हैं और एक सप्ताहान्त से दूसरे सप्ताहान्त की प्रतीक्षा करते हुए जीते रहते हैं। सप्ताह के दिनों में मेरा व्यक्तित्व कुछ और होता है और सप्ताह के अंतिम दो दिनों में मैं कुछ और होती हू।"

एक बार मैंने न्यूयार्क में अमरीकन मैनेजमैंट एसोसिएशन में बहुत सफल वार्ता दी थी। जब मेरी मां हमारे पास आयी तो मेरी पत्नी ने बड़े गर्व से उसे यह बात बताई। मेरी मां ने जवाब में कहा—"जगल में मोर नाचा, किसने देखा"। मैं उसकी बात पर सोचने लगा—

एक समय था जब मैं यह समझता था कि मैं 'विश्व नागरिक' हू। मैं कहा करता था कि घास की एक पत्ती हमेशा घास की पत्ती ही रहती है, फिर चाहे वह इस देश की हो या उस देश की परन्तु अब मैं यह समझता हू कि घास की हर पत्ती का पृथ्वी पर अपना स्थान होता है जहा से वह अपना जीवन और शक्ति ग्रहण करती है और यही बात आदमी के साथ होती है जो उस भूमि से जुडा होता है जहां से वह जीवन और आस्था साथ-साथ ग्रहण करता है।

अपने देश में कोई पहचान बनाने के बजाय मुझे लगा कि जैसे वह मुझसे पूछ रही हो कि मैं मैनेजर सबंधी अपना यह [illegible] को क्यो नहीं देता। मुझे अपना ही दोष नजर आने लगा और मैं जानता हू कि विदेश में रहने वाले बहुत से भारतीय इसी प्रकार का अनुभव करते हैं।

कुछ दिन बाद मैं अपनी एक बुजुर्ग पडोसिन से मिलाने के लिए, जो वृद्धावास चलाती थी, अपनी मां को दिखाने के लिए ले गया। वह बिचारी अकेली थी और उसको यह शिकायत थी कि बच्चे कभी कदास ही उससे मिलने आते हैं। मेरी मा ने मेरे ऊपर एक नजर डाली और बोली—"क्या जब तुम बूढ़े हो जाओगे तब तुम भी इसी तरह रहना चाहोगे?"

जब हम मैडरिक (स्पेन) गये तो हमारे दो बेटे थे, एक छ वर्ष का और दूसरा आठ वर्ष का। एक दिन मैं काम से जल्दी वापिस घर लौट आया तो मैंने उन दोनो को आपस में लड़ते हुए देखा। यह कोई अस्वाभाविक बात नहीं थी। यह सचाई भी कोई अस्वाभाविक नहीं थी कि ये दोनों आपस में एक दूसरे को स्पेनिश भाषा मे भला बुरा कह रहे थे। पहले मैं प्रभावित हुआ, फिर प्रसन्न हुआ और अंत मे उदास हो गया। जिस धाराप्रवाह ढग से वे स्पेनिश बोल रहे थे उससे मैं प्रभावित हुआ, उनके गलियाव से प्रसन्न हुआ, परन्तु इस बात से उदास हो गया कि वे चाहे कितने ही धाराप्रवाह ढग से स्पेनिश बोल ले, इस मोहल्ले के स्पेनिश बच्चे उनको कभी पूरी तरह स्वीकार नहीं करेंगे। हालाकि उनके पास पडोस में सब स्पेनिश लोग रहते थे, परन्तु उनके असली दोस्त अन्य भारतीयों के बच्चे ही थे।

अगले दिन अपना पासपोर्ट पुनः नया करवाने के लिए हम भारतीय दूतावास मे गये। मेरे बड़े बेटे ने पूछा कि हम अमेरिकन पासपोर्ट क्यो नहीं ले सकते?" मैंने जवाब दिया 'क्योंकि तुम भारत में पैदा हुए हो" वह बोला कितना अच्छा होता कि मैं अमेरिका मे ही पैदा हुआ होता।"

"क्यो"

"क्योकि तब हम भी प्रतिदिन मैकडोनाल्ड होटल मे कार्टून देख सकते और हेमबर्गर खा सकते।"

मैंने समझ लिया कि अब फिर घर वापिस जाने का समय आ गया। भारत के सबंध में उसके विचार अन्य विदेशी बच्चों से भिन्न नहीं थे। और मुझे मन में लगने लगा कि किसी दिन वह मिकी माउस को भी भारत में तलाश करने लगेगा।

टी॰ एस॰ ईलियट ने लिखा है —"हमारी सब यात्राओ का अन्त वापिस उसी स्थान पर होता है जहां से हमने यात्रा शुरू की थी और हम उस स्थान को

→

→

जैसे पहली बार जानने लगते हैं।" जिस हिन्दुस्तान को मैं पहली बार जाने रहा हू वह है सहनशील, फिर भी सामाजिक से अन्याय में उग्र, मानवीय सहायता और सहानुभूति की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध, परन्तु वहां के लोग बड़े ईर्ष्यालु और झगड़ालू, औरों की सफलता को नाकाम करने को आतुर, अपनी मनोभावनाओं में बहुत तीव्र और आज की दुनिया के अन्यायों से सनर्ष करने के बजाय अन्य दुनियावी बातों में अधिक मस्त हैं।

मैं भारत मे एक अमीर होने का भार भी ढोता हू। यदि मैं अपने जीवन में कुछ भी चाहता था तो वह केवल इतना ही कि गरीबी मुझे परेशान न करे। अब मैं 20 वर्ष की आयु वाले आत्मविश्वास से ओतप्रोत नही था जब मैं यह समझता था समाजवाद से गरीबी हटाई जा सकती है। समाजवाद की असली समस्या उसके प्रति आस्था नही है, बल्कि उसे पर अमल करना है। यदि समाजवाद के अनुसार आचरण होता तो आज सारा ससार समाजवादी होता। इस बीच जब भी मैं खासतौर से अच्छे भोजन में रस ले रहा होता तो मुझे अपने पेट के किसी कोने में पीडा सी भी अनुभव होती।

मैं भारत इसलिए वापिस आया था कि अपने मित्रों को व्यक्तिगत उद्योग का महत्त्व समझा सकू। मैं उनको बताता था कि समाजवाद तो अभी काम कर नहीं रहा तो हम क्यों न बाजार की व्यवस्था को ही पुन स्थापित करें। नेहरू के जमाने से लेकर हमारे चिन्तन में जो एक सामूहिक दुराग्रह की भावना आ गई है उसको हटावें और अपने जीवन में से राज्य के नियन्त्रण को कम करने का निरन्तर प्रयत्न करें। इस मनोवृत्ति ने हमारा ध्यान बाजार से हटा दिया है जो एक मात्र ऐसा स्थान है जहा सम्पत्ति खूब अच्छी तरह पैदा की जा सकती है। बाजार व्यवस्था से हमारी स्पर्द्धा की शक्ति तेज होती है और जब कोई व्यक्ति अपने उत्पादन में सुधार करता है और और उसकी लागत घटाने का प्रयत्न करता है तो वह उससे प्राप्त होने वाले अपने निजी लाभ के लिए भी सघर्ष करता ही है।

मैं अपने साथियो को यह दिखाना चाहता था कि तुम राजकीय उद्योगो की अपेक्षा व्यक्तिगत उपक्रम से अधिक उत्कृष्टता पैदा कर सकते हो। तुम नवीन पद्धति से और अधिक ईमानदार और सक्षम सगठन तैयार कर सकते हो जो कहीं अधिक सफल हो सकता है। तुम सामूहिक रूप से काम (टीम वर्क) करने में, उसको नियन्त्रित करने मे और निजी फर्मों में पूरी ईमानदारी से भाग लेने मे और अधिक सक्षम हो।

श्री गुरुचरणदास प्रोफेशनल मैनेजर है, कई वर्षों तक विदेश में रह कर उच्च पदों पर कार्य कर चुके हैं। वे इस लेख में बता रहे है कि मैं भारत वापिस क्यों आ गया।

मैंने अपने साथियो को बताया कि यदि तुम यह दृष्टि रखो कि अधिकांश लोग जिम्मेवारी समझने को तैयार होगे, अपने दिए गए दांव की परवाह करेंगे, उद्योगों का स्वय विकास करना चाहेंगे और उसमें सफलता प्राप्त करेंगे, उन्हें यदि मौका दिया जाये तो वे बहुत उत्कृष्ट काम करके भी दिखा सकते है, तब तुम्हे उनके साथ एक खास ढग से व्यवहार करना होगा। तुम सस्थान में ऐसा वातावरण तैयार करो जिससे लोग एक दूसरे पर भरोसा कर सकें और उनमें आत्मविश्वास की भावना पैदा हो। इस प्रकार के परिवेश में वे सृजनशील भी होंगे और नई निर्माण पद्धतिया भी निकाल सकेंगे। यदि उनको आधा मौका भी दिया जाये तो वह तुम को चमत्कार करके दिखा देंगे। मैं लार्ड बेवरिज के इस कथन से सहमत हू कि एक अच्छा सगठन सामान्य मनुष्यों को असामान्य काम कर दिखाने के लिए समर्थ बनाता है। यह कितनी विचित्र बात है कि हम कम्प्यूटरो पर तो गर्व करने हैं जो किसी कदर सोच सकते हैं, परन्तु वास्तव में सोच विचार कर काम करने वाले मानव प्राणी की क्षमता पर सदेह करते हैं।

मैंने एक दिन अपने एक मित्र से पूछा कि मैं बार-बार वापिस हिन्दुस्तान क्यों चला आता हू, तो उसने गूढ़ भाव से कहा—"मेरे प्यारे दोस्त। तुम ने अपनी मां की आवाज का सगीत वैसे ही सुन लिया होगा जैसे बच्चा सुन लेता है।' उसने कहा कि तुम बारह साल की उम्र होने तक अपने एक सबल व्यक्तित्व का निर्माण कर चुके होगे। उसने कहा—"इसी कारण तुमने हाई स्कूल मे अमेरिकन लहजा अपनाने की कभी जरूरत नहीं समझी।"

मैं जब कभी विदेश में रहा तब मेरी यह भारतीय पहचान ही मेरे लिए पड़ाव वाले ठोस लगर का काम करती रही। भारतीय होने पर शर्मिन्दा होने के बजाय मैं एक तरह से राजदूत का सा रोल निभाने में आनद अनुभव करता रहा। मुझे याद है कि वाशिंगटन में हमारे स्कूल के सामने जॉन फोस्टेर डलेस ने भारत की तटस्थ विदेश नीति पर जब आक्षेप किया तो मैं उस नीति के समर्थन के लिए खड़ा हो गया था।

मैंने यह अनुभव किया कि मैं भारतीय हू—इस चेतना के कारण जैसे मेरे अस्तित्व में कुछ वृद्धि हो जाती है। जब मैं विदेश में था तब भी भारत के प्रति मेरी उत्सुकता जागृत रहती थी। भारत सम्बन्धी जो भी पुस्तक मिलती, मैं उसे पढ़ता और हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में मैंने सस्कृत का कोर्स भी किया। मैं भारत के इतिहास, अर्थव्यवस्था और भारत से सबध रखने वाली हरेक बात में रुचि रखता था।

भारत की ओर खींचने वाला जो एक सुन्दर शब्द था, वह है धर्म, जिसका अर्थ है सत्य और उचित व्यवहार। हमें भारत में सिखाया जाता है कि अपने पूर्वजो के धर्म पर शका न करें और आख बद करके उसका पालन करते रहे। फिर भी मैं समझता हू कि हरेक को उसके सबध मे अपने तई शका करनी चाहिए और सोचना चाहिए। हमारे धर्म या कर्तव्य पालन की भावना हमारे अन्दर से निकलनी चाहिए, न कि वह किसी समाज के आदेश द्वारा थोपी जाए। जहा तक मेरा सवाल है, मैं तो यह मानने लगा हू कि मेरा धर्म है परमात्मा की तरह किसी को भी दुख पहुचाने की इच्छा न करना। यह मानवीय गरिमा भी है जीवित रहने का तरीका भी है, और अमरता का पथ भी है।

मैं उपनिषदो की ओर भी आकृष्ट होता हू जो हमें यह सिखाते हैं कि तुम औरो से उसी भाषा में बात करो जिस भाषा में तुम एकान्त में अपने आप से बात करते हो, जैसे कि साबरमती नदी के तट पर गांधी जी बकरियों के रेवड के सामने बोलते थे—वे सचमुच वाणी के द्वारा नहीं बोलते थे, क्योंकि वह जानते थे कि प्रश्न केवल एक ही है और वह हरेक के लिए समान है और बकरियो का रेवड उनके स्पन्दन के हिसाब से ही सास लेता था। कालिजो के ग्रेजुएट जिस तरह शिक्षा और तरह तरह के विश्लेषणो के अजीर्ण से भरे होते हैं, बकरिया उस तरह नहीं होती, वे तो खेतो के मौन शब्दों को सुनने की आदी होती हैं।

यदि मुझे अपना जीवन दोबारा जीने का मौका मिले तो मैं सस्कृत में निपुणता प्राप्त करना चाहूगा। परन्तु मैं ऐसा भारतवेत्ता नही बनना चाहता जो पुस्तकालय पर धूल जमने देता है। मैं ऐसी पुस्तक लिखता जो प्राचीन भारत की समस्त उत्तेजनाओं को अपने मे समेट कर आजकल के युवा भारतीयो को सुन्दर प्रासगिक विचार स्वातन्त्र्य की ओर प्रेरित कर सकती।

जब मैं विदेश मे था तो मुझे बबई याद आती थी। गर्मियो की किसी दोपहर मे पसीना सुखा कर ऊटपटाग विचारो को खत्म कर देने की ताकत रखने वाली अरब सागर की ओर से आने वाली ठडी हवाओ को मैं याद करता था। प्रातःकाल की वहा के मृदुल झोको से नीलम की तरह से चमकते हुए समुद्र के दृश्य को और अधिक आकर्षक बनाने की वेला में सवेरे उठना, या गुलमोहर वृक्षो की छाया तले हैंगिग गार्डन की मस्तानी हवा में पूर्णिमा की रात मे टहलना और 'रानी के हार' (क्वीन नैकलेस) की तरह शोभायमान सडक पर खडे होकर तारों जुडे खुले आसमान को निहारना मुझे बार-बार याद आता था।

परन्तु नगरो के बजाय भी मुझे लोग बहुत याद आते थे। विदेश मे सडक पर चलते चलते जब मुझे कोई श्वेत चेहरों के बीच मे गेहुआ चेहरा दिख जाता तो उसे मैं पसन्द नहीं करता था। यहा आने के बाद वैसे गेहुए चेहरो से घिरा होने की इच्छा ही सबसे अधिक बलवती होने लगी। एक दिन तो एक बचपन का दोस्त मिल गया, मैं उसकी ओर दौड़ा और उसे मैंने छाती से लगा लिया। अपने देश में वापस लोटने का यह कितना बडा बोनस था।

मैं बम्बई में रहता हू क्योंकि इससे लोगों का गौरव बढ़ता है। हालांकि अधिकांश लोग भीड भरे छोटे छोटे मकानो और झुग्गियो में रहते हैं। परन्तु यह शहर उनको रोजगार देता है और अपने गावो की जात-पात की व्यवस्था के अत्याचार से छुटकारा दिलाता है। एक बार मैंने अपने दफ्तर का फर्श साफ करने वाली एक नीची जात की महिला से पूछा—'अपना घर और परिवार इतनी दूर छोडकर तुम यहा क्यों चली आई?" उसने जवाब दिया—'जब से मैंने होश सभाला, तब से अपने गाव के ऊची जात के जमींदारो का मैं शिकार रही, मैं हमेशा आतकित रहती और हमेशा अपना सिर नीचा करके तथा अपने हाथ अपनी छाती पर रखकर झुककर चलती। इस शहर मे मैं आजाद हू और अपना सिर ऊचा करके चलती हू।"

यह कैसी विडम्बना है कि हम आधुनिक विज्ञान की देन कम्प्यूटरों पर तो, जो किसी कदर सोच सकते हैं, गर्व करते हैं परन्तु उन मानव-प्राणियो पर जो सचमुच सोच-विचार सकते हैं, सन्देह करते हैं।

जब मैं मैक्सिको में था तब एक दिन अपने दोनो बच्चो को मैंने आपस में लड़ते और फटाफट स्पेनिश बोलते देखा। उनके स्पेनिश बोलने की कुशलता को देख कर मैं बहुत प्रभावित हुआ। परन्तु मैं जानता था कि मेरे स्पेनिश पड़ोसियों के बच्चों के साथ इनकी कभी दोस्ती नहीं होगी।

(शेष पृष्ठ 12 पर)

ऋषि दयानन्द की देश वन्दना

—गजानन्द आर्य, महामंत्री परोपकारिणी सभा—

"यद्यपि मैं आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुआ और बसता हू तथापि जैसे इस देश के मतमतान्तरो की झूठी बातो का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता हू वैसे ही दूसरे देशस्थ व मत वालों के साथ भी बर्तता हू।"

किसी वीतराग सन्यासी के इन शब्दों से यह भ्रम हो जाना स्वाभाविक है कि ऐसा सन्यासी देश विशेष के लिए अधिक क्या लिखेगा ? सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में लिखे इस भ्रम का निराकरण सहज ही हो जाता है जब हम तत्कालीन ब्रह्म समाज और प्रार्थना समाज के कार्यों पर लेखक के विचार पढ़ते हैं। ब्रह्म समाज और प्रार्थना समाज की अग्रेज भक्ति पर आक्रोश करते हुए ऋषि लिखते हैं—"इन लोगो मे स्वदेश भक्ति बहुत न्यून है। ईसाइयों के आचरण बहुत से ले लिये हे।" अपने देश की प्रशसा अथवा पूर्वजों की प्रशसा करनी तो दूर वे तो उनको भर पेट निन्दा करते हे। वे कहते है कि अग्रेजो के अतिरिक्त तो सृष्टि मे आज पयन्त कोई भी विद्वान् हुआ ही नहीं। आर्यावर्तीय लोग सदा से मूर्ख ही थे, इनकी उन्नति कभी नहीं हुई।"

निश्चय ही देश के स्वाभिमानी नागरिक के लिए ये मान्यतायें अपमानजनक हे। इस प्रकाश की मान्यता रखने वाले स्वदेश भक्त नहीं बल्कि विधर्मियो के चाटुकार और खुशामदी कहे जा सकते हे। सत्याथ प्रकाश मे इन लोगों के लिए लिखा गया है—"ब्रह्मा से लेकर पीछे पीछे आर्यावत मे बहुत से विद्वान् हो गये हे उनकी प्रशसा न करके यूरोपियन को ही स्तुति मे उतर पडना पक्षपात और खुशामद के बिना क्या कहा जाय।"

इतना सब लिखने के साथ साथ ग्रन्थकार ने एक कर्तव्य बोध कराया है। यह बोध हर किसी देश के नागरिक के लिए धारण करने योग्य हैं।" भला, जब आर्यावर्त में उत्पन्न हुए हैं और इसी देश का अन्न जल खाया पीया, अब भी खाते-पीते हैं, तब अपने माता, पिता, पितामहादि के मार्ग को छोडकर दूसरे विदेशी मतो पर अधिक झुक जाना, इस लिश भाषा पढ़के पण्डिताभिमानी होकर झटिति एक मत चलाने में प्रवृत्त हुए मनुष्यों का स्थिर और वृद्धिकारक काम क्यो कर हो सकता है।"

देश के प्रति समर्पित ऋषि की यह देश वन्दना बहुत सरल हृदय से लिखी गई है, उनको इस बन्दना मे कहीं कोई छल कपट, पक्षपात और तुष्टिकरण की गन्ध नहीं है। पूरे ग्रन्थ में बिखरे हुए ऋषि के वाक्यों को एक कडी में गू थने का यहा प्रयास है।

सृष्टि के आदि में मानव जिस धरती पर उत्पन्न हुआ वह स्थान था तिब्बत। तिब्बत मे पैदा होने वालो में आर्य भी थे और दस्यु भी। स्वभाव के कारण उनके आर्य और दस्यु नाम हो गये थे। उनका आपस मे बहुत विरोध बढ़ चला तब आर्य लोग उस स्थान को छोडकर सीधे इसी स्थान पर पहुचे और इसको अपना प्यारा सा नाम दिया आर्यावर्त। जो लोग कहते है कि आर्य लोग ईरान आदि देशो से आकर बसे और उन्होने यहा के मूल निवासी गोंड भील आदि को भगाकर इस भूभाग पर अधिकार किया है, वे मानव इतिहास से अनभिज्ञ हैं। यह अर्वाचीन लेखकों की अपनी कल्पना है, जो मान्य नहीं है। इन लेखको के पास इस बात का कोई उत्तर नहीं है कि आर्यावर्त से पहले यदि यहा कोई रहते थे तो वे कौन थे और तब इस देश का नाम क्या था ? ऐसा लगता है कि विदेशी शासको ने अपनी ही तरह यहा के मूल निवासी आर्यों को भी विदेशी सिद्ध करने की चाल चली थी। इस चाल को यदि सवप्रथम किसी ने समझा है तो सत्यार्थ प्रकाश के लेखक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने। उन्होने डके की चोट विदेशियो के इस प्रचार का खडन किया। खेद तो यह है कि भारतीय नेता और इतिहासकार विदेशियों की हां मे हा मिलाते रहे हैं, जिसका परिणाम है कि बाहर से आये आक्रमणकारी अब आर्यों को भी आक्रमणकारी कहने लगे हैं। इस आर्यावर्त की सीमा उत्तर मे हिमालय, दक्षिण मे विन्ध्याचल, पश्चिम मे अटक और पूर्व मे ब्रह्मपुत्र नदी थी। इसका एक स्पष्टीकरण आवश्यक है। विन्ध्याचल के नाम से वर्तमान स्थान जो प्रसिद्ध की है, वह देश की मध्यवर्ती पहाडियो श्रृंखला थी और वह समुद्र के पास रामेश्वरम् तक पहुची हुई थी। इस प्रकार आज का दक्षिण भारत आर्यावर्त से पृथक् नही था। कुछ इतिहासकार इसको पृथक् सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं, वह निराधार है। आर्यावर्त के दक्षिण में राक्षसो का राज्य हुआ है, कालान्तर में राम रावण का प्रसिद्ध युद्ध हुआ, जिसमें वहां के राजा रावण को मारकर राम ने रावण के भाई को सिहासन पर बिठाया।

आर्यावर्त के उत्तर मे हिमालय के उस पार असुरो का साम्राज्य था। हिमालय प्रदेश में स्थित देवो के असुरो के साथ युद्ध होते थे, उसी को देवासुर सग्राम कहते हैं। इस प्रकार के एक सग्राम मे महाराज दशरथ ने भी देवों का साथ दिया था और महारानी कैकेयी की धनुर्विद्या और युद्ध-कौशल उसी युद्ध में प्रसिद्ध हुआ था। यहां का अस्त्र शस्त्र विज्ञान भी बहुत उच्चकोटि का था। शत्रुओ से लडने के लिए आग्नेयास्त्र, शत्रु के आग्नेयास्त्र के निवारण के लिए वारुणास्त्र का प्रयोग होता था। शत्रुओं को जकड देने वाला "नागपाश" और मूर्छित करने वाला "मोहमास्त्र" अभी तक कोई नहीं बना पाया है। जिसको आजकल तोप और बन्दूक कहते हैं। सस्कृत मे उसे शतघ्नी और भुशुण्डी कहा जाता था।

आर्यो का चक्रवर्ती साम्राज्य

आर्यावर्त का तत्कालीन इतिहास और भूगोल महाराज मनु द्वारा प्रणीत मनुस्मृति मे है। मनुस्मृति मे देश का विधान भी लिखा गया है। महाराज मनु के पूर्वज ब्रह्मा और विराट हुए हैं। सृष्टि की आदि में ईश्वर द्वारा दिया गया वेद ज्ञान चार ऋषियो के माध्यम से ब्रह्मा को प्राप्त हुआ। ब्रह्मा से विराट और मनु तक पहुचता-पहुचता वह वेद ज्ञान समस्त आर्यावर्त मे फैल गया। आर्यावर्त के पहले राजा महाराज स्वयभू हुए हैं। स्वयंभू से इक्ष्वाकु तक आर्यावत ससार का चक्रवर्ती साम्राज्य बन गया था। समस्त विश्व में आर्य लोगों का शासन था।

आर्यावर्त की विशेषतायें

आर्यावर्त देश की विशेषताओं पर ऋषि लिखते हैं "आर्यवर शिरोमणि महाशय ऋषि महर्षि, राजे, महाराजे लोग बहुत-सा होम करते और कराते थे, जब तक इस होम करने का प्रचार रहा, तब तक आर्यावत देश रोगो से रहित और सुखो से पूरित था। जब आर्यों का राज्य था तब देश मे महोपकारक गाय आदि पशु नही मारे जाते थे तभी आर्यावत वा अन्य भूगोल देशो में बडे आनन्द में मनुष्यादि प्राणी वर्तते थे, क्यों कि दूध घी गाय बैल आदि पशुओं की बहुताई होने से अन्न रस पुष्कल प्राप्त होते थे। ससार की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि जब बहुत सा धन असख्य प्रयोजन से अधिक होता है तब आलस्य, पुरुषार्थ रहितता, ईर्ष्या द्वेष विषयासक्ति और प्रमाद बढ़ता है इससे देश में विद्या सुशिक्षा नष्ट होकर दुर्गुण और दुष्ट व्यसन बढ़ जाते हैं।

"ग्रन्थकार का यह चितन आर्यावर्त की स्थिति के सदर्भ में है।

एक स्थान पर ऋषि लिखते हैं—"यह निश्चय है कि जितनी विद्या और मत भूगोल में फैले हैं वे सब आर्यावर्त देश ही से प्रचारित हुए हैं। देखो! एक जैकालियट साहब पेरिस अर्थात् फ्रांस देश निवासी अपनी बाईबिल आफ इण्डिया' में लिखते हैं कि सब विद्या और भलाईयों का भडार आर्यावर्त देश है और सब विद्या और मत इसी देश में फैले हैं और परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर! जैसी उन्नति आर्यावर्त देश की पूर्व काल में थी वैसी ही हमारी देश की कीजिए।"

ग्रन्थकार ने यहा विद्या के साथ-साथ "मत" शब्द का प्रयोग किया है। संसार में फैले विभिन्न मतमतान्तरों का स्रोत हमारा ही देश रहा है। सस्कृत की महिमा में ग्रन्थकार ने दाराशिकोह का एक उदाहरण दिया है। दाराशिकोह लिखता है—"मैंने अरबी आदि बहुत सी भाषाए पढ़ी परन्तु मेरे मन का सन्देह छूट कर आनन्द न हुआ। जब सस्कृत देखा और सुना तब नि सन्देह होकर मुझ को बडा आनन्द हुआ।"

स्वामी शकराचार्य के समय के राजा सुधन्वा से प्रारम्भ वैदिक मत और देशोन्नति कार्यों को लेखक ने याद किया है। शकराचार्य के तीन सौ वर्ष पश्चात् उज्जैन नगरी मे विक्रमादित्य को प्रतापी राजा लिखते हुए भर्तृहरि राजा के वैराग्य प्राप्ति की चर्चा की गई है। समयान्तर मे राजा भोज हुए जिनके शासन में व्याकरण और काव्य की बहुत उन्नति हुई। महान् कवि कालिदास इसी समय की देन थे। राजा भोज के समय की शिल्पकला लेखक को इतनी पसन्द है कि "शिल्पी लोगो ने घोडे के आकार का एक यन्त्रचालित यान बनाया था जो एक कच्ची घड़ी मे ग्यारह कोश और एक घटे मे साढ़े सत्ताईस कोश जाता था। वह भूमि और अन्तरिक्ष में भी चलता था। दूसरा एक ऐसा पखा बनाया था कि बिना मनुष्य के चलाये कलायन्त्र के बल से नित्य चला करता और पुष्कल वायु देता था।"

इस प्रशसनीय शिल्प पर ग्रन्थकार अपने को गौरवान्वित अनुभव करते हुए लिखता है "जो ये दोनों पदार्थ आज तक बने रहते तो युरोपियन इतने अभिमान मे न चढ़ जाते।" स्वामी जी को मुस्लिम काल में हुए अपने शिवाजी और गोविन्द सिह जी पर कम गर्व नहीं है। देश के इतिहास और विद्या पुस्तकों के खोजने की प्रेरणा आर्य सज्जनों को उस सन्दर्भ पर दी है जहा महाराज युधिष्ठिर के पश्चात् देश के आर्य राजाओ की सूची उनको श्री नाथ द्वारा से प्रकाशित एक पुराने पाक्षिक पत्र मे मिली थी। उन्होंने 4158 वर्षों के राजाओं की पीढ़ी और वश की तालिका अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में प्रकाशित की है।

सुवर्ण-भूमि भारत

ऋषि अपने विद्या विज्ञान और सम्पन्नता के गौरव को देश की पराधीन

(शेष पृष्ठ 12 पर)

बलिदान होने की आग

—योगेन्द्र कुमार रावत—

बलिदान ! [illegible] सब्द !! [illegible] इसके बाद में जीवन और मरण—जिन्दगी के इन दोनों किनारों के बीच मनुष्य की आवश्यकताओं का एक ऐसा पुण्य प्रवाह सिद्ध होता है जिसमें अवगाहन करके मानव की पीढ़ी दर पीढ़ी आने वाली सन्तानें स्वाभिमान, बल और स्फूर्ति प्राप्त करती हैं। यह भावना मात्र ही भाती है जो हर युग में, हर क्षण में, जाति, देश, रंग और धर्म की सीमाओं को लांघ कर शोषण, अनाचार, अत्याचार की बर्बर विकृतियों के उन्मुक्त स्वतन्त्रता, समानता और सदाचार की संस्कृतियों की रक्षा करती है। यही कारण है कि न केवल हमारा राष्ट्र बल्कि हर राष्ट्र अपने-अपने बलिदानों का इतिहास गौरव के साथ विरासत के रूप में अपनी नई पीढ़ियों को समर्पित करता है।

बलिदान की ऐसी व्यापकता को अनुभव करते हुए राष्ट्रीय बलिदानों की चर्चा करते समय हमें बलिदान की सर्वाङ्गीण व्याख्याओं को भूलना नहीं चाहिए। कुछ गहरे अतीत से उभार कर हमें एक बार के लिए जरूर समझ लेना चाहिए कि समाज या समष्टि की खातिर व्यष्टि के गौरवशाली बलिदान का उत्कृष्ट उदाहरण आता है—महर्षि दधीचि ! जिनकी हड्डियों से वज्र बनाकर मनुष्य के संस्कृति पक्ष ने मनुष्य के विकृति-पक्ष पर विजय प्राप्त की। त्रेता और द्वापर के क्षेत्र में राजा शिवि का बलिदान एक कथा मात्र नहीं है, बल्कि बलिदानों की भूमिका को भुलाकर 'लूट और लूट के बरबादी की दीक्षिका' में विचरण करने वालों के लिए एक जबरदस्त चुनौती है। धार्मिक क्षेत्र में, आस्था विश्वास के क्षेत्र में प्रह्लाद का बलिदान केवल पौराणिक कथा नहीं है बल्कि मनुष्य की उत्पीड़क, शोषक, एकाधिकारी वृत्ति की विकृति के विरुद्ध मानव की स्वतन्त्रचेता संस्कृति के संघर्ष का खुला उद्घोष है। बलिदान का एक दूसरा आयाम शंकर का गरलपान, नीलकण्ठ महादेव की अमरकृत्य कथा मात्र नहीं है। बल्कि—सामाजिक जीवन जीने की क्रिया में असामाजिक तत्वों द्वारा थोपी गई व्यवहार-सम्बन्धी विकृतियों के जहरीले घूंट स्वयं की ग्रीवा में अटका कर समाज की रक्षा करते हुए असामाजिक तत्वों को असफल कर देना, किन्तु उस विकृति को गले से नीचे नहीं उतारना है। क्योंकि विकृति पर विजय पाने का तात्पर्य यह नहीं कि हम स्वयं भी समूचे विकृत हो जाएँ। बल असामाजिकता के विष से स्वयं को बचाते हुए समाज को बचा लेना—गरल को गले तक अटका लेना—बलिदान का एक ऐसा आयाम है जो विश्व के इतिहास में ढूंढे नहीं मिलता।

कुछ और आगे बढ़कर सोचें तो अमेरिका में कालों का बलिदान गोरों के विरुद्ध; वायना और वियतनाम का बलिदान स्वयं अमेरिका के विरुद्ध, रूस का बलिदान फासिस्टों के विरुद्ध; धर्म-निर-पेक्ष मानव का बलिदान धर्म-सापेक्ष मानव के विरुद्ध अर्थात् बलिदानों की एक श्रृंखला हमें विश्व के इतिहास में मिलेगी जो अपने आप यह प्रमाणित करती है कि बलिदान मनुष्य मात्र की एक ऐसी अमित-सम्पत्ति है जो सूलकर मिली है—हर मनुष्य को मिली है—कुदरत की विरासत में और और विडम्बना है कि मानव को अपने सह-मानव की विकृतियों के विरुद्ध ही इस बलिदानी शक्ति का प्रयोग करना पड़ता है।

हमारे भारत के सन्दर्भों में राष्ट्रीय बलिदानों की परम्परा भी बहुत जबरदस्त रही है। साधारण तौर पर राणा प्रताप और शिवाजी से लेकर गांधी के बलिदान तक स्वतन्त्रता संग्राम का समूचा इतिहास बलिदानों से भरा पड़ा है। शायद इतना बड़ा इतिहास—बलिदानों का—अन्य किसी राष्ट्र का नहीं होगा, क्योंकि हमारा स्वतन्त्रता संग्राम मुगल साम्राज्य की स्थापना से लेकर अंग्रेजी साम्राज्य की समाप्ति तक चलता रहा। यही कारण है कि यहां पद्मिनी के जौहर जैसा बलिदान का अनूठा रूप देखने को मिलता है वहां चूड़ावत सरदार का अपनी पत्नी सहित जुझारु बलिदान भी सराहने को मिलता है। इसके बाद मुगलकाल में औरंगजेब के समय, तथा उसके बाद सन् 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में और अन्ततः कांग्रेस की स्थापना के बाद 15 अगस्त, 1947 तक, बलिदानों का एक ऐसा अटूट क्रम बन गया है जिसका रोंगटे खड़े कर देने वाला रोमांचक इतिहास है। उसको सही सही ढंग से प्रस्तुत करना नई पीढ़ी और भविष्य के भारत के लिए आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है। उस प्रस्तुतिकरण की दिशा भी सकारात्मक हो—यह और भी जरूरी है।

अपने बच्चों की चार चार पीढ़ियों तक के लिए बन्दोबस्त करने वाले जमाखोर, सूदखोर, अनाप शनाप मुनाफाखोर असामाजिक तत्व क्या कल्पना कर सकेंगे उस बाप के बलिदान की जब सिख गुरु गोविन्दसिंह के दो बच्चों को मुगल सम्राट औरंगजेब ने जिन्दा दीवार में चुनवा दिया। ठीक उसके बाद सन् 1792 में मैसूर के मुसलमान शासक टीपू सुल्तान के आठ साल और दस साल के दो बच्चों को अंग्रेज लॉर्ड कार्नवालिस ने गिरवी रखवा लिया। तीन करोड़ तीस हजार रुपये का दण्ड जब तक नहीं चुके तब तक टीपू सुल्तान अपने बेटे प्राप्त नहीं कर सका। राणा प्रताप ने जैसी प्रतिज्ञाएं की थीं उसी की तुलना में मैसूर का इतिहास बोलता है कि उस दिन से टीपू ने पलंग और बिस्तर पर सोना छोड़ दिया। मृत्यु तक वह जमीन पर टाट बिछा कर सोया।

ठीक इसके बाद दिल्ली का खूनी दरवाजा आज भी याद दिलाता है फिर से दो बच्चों के उस दृश्य की कि जब अंग्रेज हडसन मुगल सम्राट बहादुरशाह जफर के दो जवान बेटों और एक पोते के सिर काट कर जफर के सामने लाए तो बाप का बलिदान बोल उठा—"अलहम्दुलिल्लाह ! तैमूर की औलाद ऐसी ही सुर्खरू होकर बाप के सामने आया करती थी।"

इससे पहले 31 जुलाई, 1857 को रावी नदी में 500 भूखे-थके-हारे निहत्थे सैनिकों पर अंग्रेज फ्रेडरिक कूपर ने गोलियां चलाईं। इनमें से 150 सैनिक रावी नदी में डूब गये। उनके खून से रावी का पानी लाल हो गया। कुछ सैनिकों ने आत्महत्या कर ली। शेष 282 सैनिकों को अमृतसर से 16 मील दूर अजनाला थाने पर पहुंचाया गया। दूसरे दिन 1 अगस्त को बकरीद थी। उस दिन 237 सिपाहियों को गोली मार दी गई और 45 की लाशें पड़ी मिलीं क्योंकि उन्हें जहां कैद किया गया था वे वहीं घुट घुट कर मर गये थे। उन 282 लाशों को अजनाला थाने से थोड़ी दूर पर एक गहरे कुएं में फेंक दिया गया। उस पर मिट्टी डाल दी गई। वह कुआं आज भी मौजूद है। "कालियां दा खूह" के नाम से जाना जाता है।

इस प्रकार की एक नहीं बल्कि अनेक घटनाएँ सन् 1857 के दौरान घटित हुईं जो रोंगटे खड़े कर देती हैं। उसके बाद कांग्रेस आन्दोलन के दौरान भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु और चन्द्रशेखर आजाद के बलिदान हमारे इतिहास के गिने हुए बलिदान हैं। जलियांवाला बाग को चारों ओर से घेर लिया गया था। उसमें सभा करते हुए स्त्री बच्चों बूढ़ों और जवानों में से एक भी प्राणी जिन्दा बचकर नहीं निकल सका।

अतः बलिदानों के किसी भी प्रसंग को उभार कर किसी एक व्यक्ति-विशेष, किसी एक जाति धर्म विशेष या किसी एक राष्ट्र-विशेष के विरुद्ध किसी अन्य व्यक्ति, जाति, धर्म या राष्ट्र को घृणा-प्रतिशोध की भावना से भर देना एक घोर मानवीय अपराध होगा जिसका प्रायश्चित ढूंढे नहीं मिलेगा। वस्तुतः स्थिति तो यह है कि मनुष्य मात्र में कुदरत से दोनों ही तत्व मिलते हैं—सामाजिक तथा असामाजिक ! जब मनुष्य का असामाजिक तत्व उभर उठता है तब चाहे ईसा हो या मोहम्मद कबीर हो या नानक, महावीर हो या बुद्ध ! कोई भी उस उत्पीड़न शोषण अनाचार भ्रष्टाचार पर उतारू हुए तत्व को केवल उपदेशों से थाम नहीं सका। अतः प्रश्न हिंसा-अहिंसा का नहीं है प्रश्न वीरता और कायरता के मापदण्डों का नहीं है, प्रश्न वेद और कुरान का नहीं है। प्रश्न भारतीय अभारतीय संस्कृति का नहीं है। यहोवाह साम्यवाद और पूंजीवाद की नहीं है भाई। प्रश्नफल केवल एक है—यह सापेक्ष नैतिक मूल्यों की रक्षार्थ अनैतिक तत्वों को अपने जीते जी भूल कर ललकारा जावे या नहीं ? यदि ललकारा जावे तो कैसे ? इस 'कैसे' का उत्तर देते देते मानव का चिन्तन अब दधीचि के हड्डीदान से लेकर विनोबा के ग्रामदान तक पहुंच चुका है। अब कौन जानता है कि कल फिर कौन-सा नवीन चिंतन या क्रिया-पृष्ठ खुल जाय !

इसलिए मत बांधो नैतिकता के सेनानियों को—संस्था व्यवस्था नियम-उप नियम, ग्रन्थ ध्वज भाषा-वेशभूषा और संस्कृति की सीमाओं में ! हम सोचते हैं कि इन सीमाओं में बांधकर हम उनका प्रसार कर रहे हैं ! कैसी आत्म प्रवञ्चना है, बन्धु ! आग्रह पूर्वाग्रह छोड़कर खुले दिल से हम सब सेनानियों के पास चलो और इनसे वरदान मांगो ! मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि इन सबसे हमें एक ही वरदान मिलेगा—"और वह होगा—बलिदान होने की आग !"

पता—ढढ्ढों का चौक बीकानेर
(राज०)

[हाल में ही प्रकाशित व्यक्ति की तलाश नामक पुस्तक से]

अपनी किस्मत का विधाता

1 हर जगह रोज लाशों का नया अम्बार है,
सिसकियां, आंसू और हाहाकार है।

2. कीजिए चिन्ता कफन की मर चुकी सरकार है
उफ ! दरिन्दों से भी ज्यादा आदमी खूंखार है।

3 हर तरफ मौसम में दुर्गन्ध ही दुर्गन्ध है,
सांस लेना तक कसम से हो गया दुश्वार है।

4 हर गली, हर मोड़ पर बस एक ही चर्चा है आज,
अपनी किस्मत का विधाता आदमी खुद आप है।

—एम० जी० कश्यप, प्रि० डी ए वी इन्स्टिट्यूट आफ मनेजमेंट, सोनीपत

१७ अगस्त जिनका बलिदान दिवस है

अमर शहीद मदनलाल धींगड़ा

—नरेन्द्र अवस्थी—

स्वाधीनता संग्राम में, जहां एक ओर महात्मा गांधी के आह्वान पर हजारों देश भक्त भारत माता को विदेशी दासता की जंजीरों से मुक्त कराने के लिए अहिंसात्मक ढंग से सत्याग्रह करके जेलें भर रहे थे, वहां दूसरी ओर शस्त्र क्रान्ति के माध्यम से अनेक क्रान्तिकारी ब्रिटिश साम्राज्यवाद की नींद हराम कर रहे थे। इनमें कितने ही क्रान्तिवीर शहीदे आजम भगत सिंह, व रामप्रसाद बिस्मिल आदि की भांति फांसी के झूले पर झूल गए। तीसरी तरह के ऐसे भी क्रान्तिकारी थे जो शत्रु की मांद में अर्थात् उसके घर इंग्लैंड में जाकर संघर्ष में योगदान दे रहे थे। श्याम जी कृष्ण वर्मा, लाला हरदयाल, देवता स्वरूप भाई परमानन्द, वीर सावरकर, ऊधम सिंह, मदन लाल धींगड़ा आदि क्रान्तिकारी शत्रु के घर में स्वातन्त्र्य समर में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे थे।

क्रान्तिकारियों के मुकुटमणि स्वातन्त्र्यवीर सावरकर के कुशल नेतृत्व में देश भक्त क्रान्तिकारी युवकों का एक दल लन्दन के अन्दर संगठित हुआ। श्यामजी कृष्ण वर्मा द्वारा संचालित 'इण्डिया हाउस' इन गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र था। 10 मई 1908 को इन क्रान्तिकारी युवकों ने 'अभिनव भारत संघ' नामक संगठन के अन्तर्गत इण्डिया हाउस' में 1857 की जनक्रान्ति की वर्षगांठ मनाई। मदन लाल धींगड़ा इस आयोजन में शामिल था। विश्व में एकमात्र हिन्दूराष्ट्र नेपाल के प्रधानमन्त्री उन्हीं दिनों लन्दन आए तो वीर सावरकर के कहने पर मदन लाल धींगड़ा और अय्यर ने खून से लिख कर एक पत्र उन्हें दिया जिसमें भारत की आजादी के लिए उनसे योगदान करने की अपील थी। नेपाल के प्रधानमन्त्री इस पत्र को पढ़कर अत्यधिक प्रभावित हुए। उन्होंने मात्र इतना ही कहा वही होगा, जो भगवान चाहते हैं।"

भारत से लौटे क्रूर अत्याचारी सर कर्जन वायली की हत्या करके अपना आक्रोश प्रकट करने का निश्चय वीर मदन लाल धींगड़ा ने बहुत पहले ही कर लिया था। 1 जुलाई 1909 को 'नेशनल इण्डियन एसोसिएशन, की ओर से लन्दन स्थित इम्पीरियल इन्स्टीट्यूट के जहांगीर हाल की सभा में वायली का स्वागत किया जा रहा था। सहसा क्रान्तिवीर धींगड़ा ने रिवाल्वर निकाला और वायली के चेहरे को निशाना बनाकर 'धांय-धांय' कर पांच गोलियां चला दीं। वायली की तत्काल मृत्यु हो गई। हाल में खलबली मच गई। पुलिस ने उस नरनाहर को गिरफ्तार कर लिया। जब उन पर वायली की हत्या का आरोप लगाकर मजिस्ट्रेट के सामने प्रस्तुत किया तो उन्होंने निर्भीकता पूर्वक 'मैं हत्यारा नहीं, देशभक्त हूं। मैंने वायली नाम के व्यक्ति की नहीं, अपने देश के घोर शत्रु की हत्या की है। यदि जर्मनी इंग्लैण्ड को अपने आधीन कर लेता और कोई अंग्रेज किसी जर्मन की हत्या कर डालता, तो क्या आप उसे हत्या मानते? नहीं, मुझे विश्वास है कि आप उसे देश भक्त मान कर उसका आदर करते। इस न्यायालय में अंग्रेजी न्याय का नाटक देखकर मुझे बड़ी हैरानी हो रही है।

मजिस्ट्रेट ने वीर धींगड़ा को सेशन-सुपुर्द कर दिया। सेशन जज के सामने बयान देते हुए उन्होंने कहा "आप अंग्रेज लोग आज सर्वशक्तिमान हैं। आप मेरे साथ जैसा चाहें वैसा व्यवहार कर सकते हैं। पर यह बात स्मरण रखना कि एक दिन हमारा भी राज आएगा।"

जज ने वीर धींगड़ा को मृत्यु दण्ड दिया वीर सावरकर उनसे भेंट करने जेल में गए और कहा। 'मैं तुम्हारे दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त करने आया हूं।' धींगड़ा का चेहरा प्रसन्नता व गर्व से खिल उठा।

वीर धींगड़ा की गिरफ्तारी के बाद वहां के प्रवासी भारतीयों ने धींगड़ा के इस कृत्य की निन्दा का प्रस्ताव पारित करने के लिए सभा का आयोजन किया। उस सभा में आगाखान, सुरेन्द्र नाथ बनर्जी, बिपिन चन्द्र पाल, खापर्डे आदि प्रमुख व्यक्ति शामिल थे। जब प्रस्ताव में पढ़ा गया—'यह सभा सर्वसम्मति से मदन लाल धींगड़ा के कार्य की निन्दा करती है'—तो वीर सावरकर उठ खड़े हो गए और कहा "मैं इस प्रस्ताव का विरोध करता हूं।" इसके बाद हंगामे में ही सभा भंग हो गई।'

17 अगस्त, 1909 को क्रान्तिवीर मदन लाल धींगड़ा को फांसी दे दी गई। उनका अदालत में दिया गया वक्तव्य देशभक्ति की भावनाओं से ओत-प्रोत था। उन्होंने कहा—"मैं यह स्वीकार करता हूं कि मैंने एक अंग्रेज की हत्या, अपने निर्दोष देशवासियों की क्रूर हत्याओं और उन पर हो रहे अमानवीय अत्याचारों का एक मामूली सा बदला लेने की कोशिश में की। इस कार्य के लिए मैंने सिवाय अपनी अन्तरात्मा के और किसी से परामर्श नहीं लिया। मात्र अपने कर्त्तव्य के वशीभूत होकर, मैंने यह कार्य किया था। मेरी आस्था है कि जिस देश पर बलात् कब्जा किया जाता है वहां हमेशा युद्ध की स्थिति बनी रहती है। एक हिन्दू होने के नाते अपने देश का अपमान मुझे भगवान के अपमान के समान लगता है। देश की सेवा को मैं भगवान राम और श्री कृष्ण की सेवा के तुल्य मानता हूं। मेरे पास न बुद्धि है, न धन है। इस लिए मैं अपने प्राण देकर ही भारत माता की सेवा कर रहा हूं। भगवान से मेरी यही प्रार्थना है कि वह मुझे अगले जन्म में भी भारत में जन्म लेने का अवसर प्रदान करे, ताकि मैं उसकी सेवा करते हुए पुनः प्राण त्याग सकूं।"

उनके बलिदान दिवस पर उनकी स्मृति में सादर नमन।

पता—आर्य समाज मार्केट,
निवासपुरी नई दिल्ली-110065

*

वह देश है हमारा !

—उत्तम चंद शरर—

वह देश है हमारा !
भारत जगत् दुलारा, प्राणों से हमको प्यारा।

ऋषियों ने सबसे पहले जिस देश को बसाया
वेदों का ज्ञान जिसने परम पिता से पाया
अज्ञान दम्भ की थी जिसने मिटाई माया
प्यारी है धूप जिसकी मीठी है जिसकी छाया
वह देश है हमारा।

नदियां चली हैं जिसकी जग जग का ताप हरने
अभिषेक जिनका सागर से कर दिया सगर ने।
सोना उगलती धरती, चांदी से जिसके झरने
रत्नों से जिसकी झोली सागर लगा है भरने।
वह देश है हमारा।

इक्ष्वाकु से तपस्वी जिस देश के ऋषि थे
जिसके दिलीप रघु से राजा पराक्रमी थे।
जिसके अतुल पराक्रम से सिर झुके सभी के
जिस विश्व-सूर्य सम्मुख दीपक हैं जग के फीके
वह देश है हमारा।

बेटे हैं जिसके योद्धा, योगी, मनीषी, ध्यानी
हिमगिरि सुनाता जिसकी जग को अमर कहानी
यश जिसका गा रही है गंगा की मधुर वाणी
मिट्टी है जिसका सोना, अमृत है जिसका पानी
वह देश है हमारा।

पता – 30/8 पानीपत-132103

आर्य युवक दल पानीपत

आर्य युवक दल पानीपत का वार्षिक अधिवेशन 10-7-88 को आर्य समाज माडल टाऊन, पानीपत में दल के प्रदेश अध्यक्ष श्री रामस्नेही की अध्यक्षता में हुआ। महामंत्री श्री चमनलाल आर्य ने इसका उद्घाटन किया। अध्यक्ष एवं उद्घाटनकर्ता के अतिरिक्त अन्य अनेक आर्य युवकों ने भी इस अधिवेशन में अपने विचार व्यक्त किए। गत वर्ष में दल ने पानीपत और हिसार में शिविरों का आयोजन किया। इस अवसर पर स्थानीय युवक का गठन कर सर्व श्री राजकुमार को प्रधान, मधुदेव आर्य को मंत्री तथा शशिकान्त को कोषाध्यक्ष नियुक्त किया। इस अधिवेशन में पानीपत युवक दल की ओर से 15 अगस्त से 14 सितम्बर तक हिन्दी मास मनाने का निश्चय किया। इस मास में जनता को राष्ट्र भाषा का महत्व बताने का यत्न किया जाएगा। 14 सितम्बर को समारोह में डा० वेद प्रताप वैदिक, प्रो० श्रीमती कमला रत्नम् तथा श्री सुभाष जोशी को आमन्त्रित किया जा रहा है। इसके सुचारू संचालन के लिए श्री नीरज ठाकुर की अध्यक्षता में एक संयोजक समिति गठित कर दी गई है।

—चमनलाल आर्य, मंत्री

पत्रों के दर्पण में

शव को जलावें या दफनावें

पच्चीस जून के अनेक अखबारों में छपने वाले अपने लेख में खुशवन्त सिंह ने कहा है कि हिन्दुओं को अपने शव जलाने नहीं चाहिए क्योंकि इससे करोडो टन लकड़ी प्रति वर्ष नष्ट हो जाती हैं और इस तरह वनों का विनाश होता है। अत शवों को दफनाना चाहिए और चार-पांच साल बाद शवस्थलों पर ट्रैक्टरों द्वारा भूमि को समतल कर फलदार पेड लगा लेने चाहिए। क्योंकि हिन्दु धर्मग्रथों में कहीं भी शवों को जलाने का निर्देश नहीं है। किन्तु वेदों में स्पष्ट उल्लेख है—

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्त शरीरम्। (यजुर्वेद—40/15) दिव ते धूमो गच्छतु स्वर्ज्योति· पृथिवी भस्मना अपृण। (यजुर्वेद—6/21)। शरीरमस्य सदहा· वैनं धेहि सुकृतामु लोके। (अथववेद—18/7/71)

वेद के उक्त प्रमाणो से स्पष्ट है कि मृत शरीर का दाह कर्म होता था। इसे सुकृत कर्म माना है। इसके वैज्ञानिक और व्यावहारिक कारण भी हैं। रोगग्रस्त अथवा किसी भी प्रकार से मृत देह में तुरन्त हानिकारक जीवाणु पनपने लगते हैं। प्राणी की जीवन शक्ति ही देह में किसी विषाणु रोग को पनपने से रोकती है। किंतु प्राणी की मृत्यु के बाद जीवशक्ति समाप्त हो जाती है और हानिकारक जीवाणुओं की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। इसलिए इस देह को नष्ट करना आवश्यक हो जाता है। इसकी दो ही सुरक्षित विधियां हैं। उसे भूमि मे दफना दिया जाए या इसे अग्नि को समर्पित कर दिया जाए। शव को दफनाने में व्यावहारिक कठिनाई यह है कि शवों की उचित देखभाल न की गई तो जगली जानवर या अस्थियों का व्यापार करने वाले इन शवों को निकाल लेते हैं। ऐसी कई घटनाए समाचार पत्रों द्वारा प्रकाश में आई भी हैं, जब कब्रों से शवों की चोरी कर उनके अस्थि-ढाचो को बेचा गया है।

शव को दहन करने से विषाणुओ के फैलने की सम्भावना तो समाप्त हो ही जाती है, इसके किसी और दुरुपयोग की भी सम्भावना नहीं रहती। इसके साथ ही इस धरती की एक इन्च भूमि का भी मानव-देह के लिए दुरुपयोग नहीं होता। जहा तक लकडी के जलने का प्रश्न है अब ऊर्जा के अनेक स्रोत जैसे विद्युत, वायु विद्युत, तरल गैस और न जाने कितने रूपों मे विकसित हो चुके हैं। ऐसी हालत में दहन के लिए लकड़ी जलाने की चिंता व्यर्थ है।—डा० सत्यवीर त्यागी, 28 पटौदी हाउस, कैनिंग रोड, नई दिल्ली-1

मीरी और पिरी

13 जून के अक में मीरी और पिरी और एक भ्रम नाम सम्पादकीय लेख में विद्वान् लेखक ने सिख धर्म के इस सिद्धान्त पर प्रकाश डाला है। मेरा निवेदन है कि पीरी और मीरी को इकट्ठा करने का विचार हिन्दू परम्परा से नहीं, इस्लाम से लिया गया एक सिद्धान्त है। सिख मत पर इस्लाम के प्रभाव को प्राय सब विद्वान् स्वीकार करते हैं।

पीरी और मीरी, क्षत्रिय धर्म का और ब्राह्मण धर्म का एक ही व्यक्ति में पूर्ण विकास इस्लाम ही नहीं, सभी सामी धर्मों की विशेषता है। अब्राहम, डेविड, जरथुस्त्र, मूसा और मुहम्मद साहिब जहा ईश्वरीय ज्ञान के वाहक थे, वहा युद्ध वीर नेता भी थे। रोम का पोप भी बहुत समय तक धर्म और राज्य दोनों का नेता रहा। इगलैंड के बादशाह, हेनरी अष्टम से लेकर अब तक देश के जो शासक रहे वे आंग्ल चर्च के प्रधान भी हैं।

भारतीय धर्मों-आर्य धर्मों में कभी धर्म और राज्य शासक एक नही माने गए। ब्राह्मण के धर्म और क्षत्रिय के धर्म में मूलत भेद है, दोनो की विशेषताए परस्पर विरोधी है। ब्राह्मण अहिंसा प्रधान है, अपमान सह सकता है, क्षत्रिय नही। ब्राह्मण दान लेता है, क्षत्रिय नहीं। वसिष्ठ और विश्वामित्र का सघर्ष भी इस सिद्धान्त का साक्षी है।

सिख पन्थ पर इस्लाम का प्रभाव कोई अनहोनी बात नहीं। वैसे सिख व पन्थ आर्य परम्परा के अन्तर्गत हैं। सब आर्य मत पुनर्जन्म को मानते हैं, कर्म सिद्धांत को मानते हैं, सब सामी धर्म कयामत और सृष्टि के अन्तिम दिन को मानते हैं। जन्म या सुख दुख का आधार कर्म को नहीं मानते, ईश्वरेच्छा को मानते हैं। 'वाहे' शब्द को बहुत से विद्वान् 'वाहिद' का रूप मानते हैं जिसका अर्थ एक-अकेला है। झटका या हराम-हलाल का विचार भी इस्लाम से लिया गया है। गुरु नानक देव जी ने स्वय ही कहा है—सिख पन्थ मध्यमार्गी है, न पूरा हिन्दू और न पूरा इस्लामी। सिख गुरुद्वारों की बनावट में भी यही समन्वय दिखाई देता है।

गुरुओं के प्रयत्नों के बावजूद मुसलमान उनके अधिक अनुयायी न बन पाए। इसका कारण इस्लाम की कट्टरता है। हिन्दू तो प्रत्येक नई विचारधारा को सदा से स्वीकार करते आए हैं। पर आर्य समाज में तो न पीरी की प्रमुखता है, न मीरी की। यहा तो 'अमीरी' की पूछ है। शायद यही सार्थक हो।—सत्यदेव विद्या· लंकार, आशियाना, 15 रोड, खार (पश्चिम), बम्बई

'निर्णय के तट पर'—एक स्पष्टीकरण

12 जून के अक में 'निर्णय के तट पर नही मिली' पढ़ा। इस विषय में स्पष्ट करना है कि यह पुस्तक 'अमर स्वामी प्रकाशन' 1058 विवेकानन्द नगर के अधीन छप रही होगी जिसका श्रद्धेय (स्व०) अमर स्वामी जी से कोई सम्बन्ध नहीं है। इस प्रकाशन का कार्य श्री लाजपत राय अग्रवाल, श्री स्वामी जी क्या नाम रख· कर चला रहे हैं जो उनका अपना निजी है। पूज्य अमर स्वामी जी का क्या तो अमर वेद ज्योति प्रकाशन है जो अमर स्वामी वेद मन्दिर विवेकानन्द नगर गाजियाबाद के आधीन है। —डा० रामेश्वरदत्त गुप्त, मन्त्री अमर स्वामी वेदमन्दिर, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद

आर्य समाज भी पुर्नविचार करे

यद्यपि युगधर्म की प्रधानता सर्वत्र ही रहती है, लेकिन युग धर्म के आधार पर अकाट्य सिद्धान्त एव शुद्ध परम्परा की उपेक्षा नही की जा सकती। जाति-पांति और आचार-अनाचार एव भक्ष्या-भक्ष्य के सम्बन्ध में जो कुछ 'सत्यार्थ-प्रकाश' में लिखा है और वर्तमान आर्य समाज द्वारा जो उक्त सम्बन्ध मे अभियान चलाये जा रहे हैं, यह कहां तक समीचीन है ? नक्षत्र, नदी और पक्षी सूचक नाम वाली कन्याओं से तथा वैदिक ज्ञान से शून्य आदि परिवारो से विवाह सम्बन्ध नहीं करने की जो शिक्षा दी गई है, यह कहा तक व्यवहार्य और युक्ति युक्त है ? इस पर आर्य समाज को पुन विचार करना चाहिए। —मदनलाल सत्यार्थ शास्त्री, डाकखाना टिगखोग डिब्रूगढ़-786612

वेदों में शून्यवाचक मन्त्र

क्या वेदों में शून्य और रेखागणित नही है' लेख में 'पूर्णमद पूर्णमिद' को वेद मन्त्र बताया है। वस्तुत यह वेद मत्र नहीं, अपितु उपनिषदों का शान्तिपाठ है, जिसे शकराचार्य ने अपने भाष्य के अन्त में लिखा है। इसी लेख में वैदिक गणित तथा उसके 16 सूत्रों का रचयिता स्वामी रामानुजाचार्य को बताना भी ठीक नहीं है। वैदिक गणित के लेखक पुरी के भूतपूर्व पीठाधीश स्वामी भारती कृष्ण तीर्थ हैं। उन्होंने ही स्वरचित 'वैदिक मैथेमेटिक्स' में ये सूत्र दिये हैं तथा इन्हें अथर्व-वेदोक्त गणित सूत्र कहा है, किन्तु ये सूत्र अथर्ववेद में कहीं नहीं हैं। —भवानीलाल भारतीय पजाब विश्वविद्यालय, चडीगढ़

राम और बाबर की क्या तुलना ?

बाबरी मस्जिद को लेकर फिर से देश मे एक निरर्थक विवाद उठने लगा है। हिन्दू और मुसलमान, अक्तूबर में फिर से मोर्चा सम्भालने की तैय्यारी में लग गये हैं। इस प्रश्न की वास्तविकता को न देख कर क्यो हम साम्प्रदायिकता के रग मे रग रहे हैं ? प्रश्न तो नैतिकता का है। भारत के प्रसग में बाबर की स्थिति क्या है ? क्या वह भारतीय था ? क्या वह किसी मुसलमानी सन्त की तरह धर्म का प्रचार करने आया था ? इतिहास साक्षी है—बाबर लुटेरा था जो यहां अच्छे उद्देश्य से नहीं आया था। यदि ऐसा लुटेरा मन्दिर तोड़ कर मस्जिद बना देता है तो किसी डकू के हाथ से स्थापित मस्जिद पवित्र तो हो नही सकती। जबकि श्रीराम इतिहास की ऐसी अनुपम, विभूति हैं कि उनके उत्कृष्ट जोवन के कारण उन्हें भग-वान् के अवतार की तरह पूजा जाता है। उनके ऊचे चरित्र की तो किसी मुसलमान ने भी निन्दा नहीं की। क्या कोई भी समझदार मुसलमान इतने उन्नत और महान् व्यक्ति की जन्म भूमि को अपवित्र करना उचित समझेगा ?—आर्यमुनि वर्मा C II/20 मोतीबाग, नई दिल्ली-110021

यौनाचारी दण्डनीय

वैदिक सभ्यता ससार में सबसे श्रेष्ठ है। इस सभ्यता का पुजारी, चाहे स्त्री हो या पुरुष, दोनों ही अपनी कर्तव्य परायणता मे तत्पर, समाज के नियमों में आबद्ध रहते हैं। आज हमारे कर्णधार भारत मे उस 18वीं सदी की कलुषित पर-परा को लाना चाहते हैं, जिसे वाममार्ग कहते हैं, वह वाममार्ग जिसमे सुरा-सुन्दरी का उन्मुक्त प्रदर्शन होता था। आज भारतीय युवक युवतियां क्लबों मे जाकर रात्रि में मद्यपान कर अिक्षिप्त अवस्था में स्त्रियां पर पुरुषो के साथ पुरुष पर स्त्रियों के साथ डांस करने में आत्म गौरव समझते हैं यह उन्मुक्त यौनाचार भारत में इतना बढ़ा कि पुराण को भी मात दे दो। मनु महाराज ने लिखा है कि जो स्त्री अपनी जाति गुण के घमण्ड से पति को त्यागकर व्यभिचार करती है, उसको प्रजा के सामने कुत्तों से कटवा कर मरवा दे।

इसी प्रकार जो व्यभिचारी पुरुष स्वस्त्री को त्यागकर वेश्यागमन करे उस पापी को लोहे के पलंग को अग्नि में तपा कर लाल कर उस पर सुलाकर प्रजा के सामने जीते हुए भस्म कर दे। तब भारत में "मातृवत् परदारेषु" की भावना जागृत होगी। इसी में सच्चा सुख शान्ति है। —यज्ञदत्त शर्मा, 2608, मियांवाली कालोनी, गुड़गांव।

वनवासी आर्य सम्मेलन एवं विशाल शुद्धि समारोह

महर्षि दयानन्द ने जहा मानव मात्र को प्रभु की पवित्रवाणी पढ़ने का अधिकार दिया, स्त्री जाति का उद्धार किया, गोरक्षा का प्रचार किया वहां ईसाई मुसलमान आदि के लिये हजारो वर्षों से बन्द वैदिक धम का द्वार शुद्धि द्वारा फिर से खोलकर एक अद्भुत कार्य किया। स्वय अपने कर कमलों से एक यवन को शुद्ध कर मुन्शी अलखधारी नाम दिया। इस शुद्धि आन्दोलन से भारतीयों का आत्म गौरव जाग उठा।

यदि आर्यसमाज इसी प्रकार शुद्धि आन्दोलन को चलाता रहता और हिन्दू जगत इसका साथ देता तो देश को विभाजन का हृदय विदारक दु ख देखना न पड़ता। न ही अ ज वही स्थिति दोबारा उत्पन्न होती। आज विदेशी ताकते कही नागालैण्ड, कहीं झारखण्ड, कहीं खालिस्तान का नारा देकर भारत कि भाग्य के साथ खिलवाड न करते इन समस्याओ का इलाज है शुद्धि पूवजों कि धर्म में पुनरावर्तन।

इसी पुनीत परम्परा को कायम रखने के लिये वैदिक यतिमण्डल के निर्देश पर, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की देख रेख में, 1980 से उडीसा, मध्य प्रदेश मे हमने शुद्धि आन्दोलन चला रखा है। अब तक 10 हजार से भी अधिक इसाई वैदिक धर्म की शरण में आ चुके हैं। जैसे-जैसे शुद्धि का कार्यक्रम बढ़ता जा रहा है निरन्तर लोगो का आग्रह भी बढ़ता आ रहा है। अत इस वर्ष शुद्धि समारोह का एक विशाल आयोजन हम करना चाहते हैं। इसके लिये 19 जून को सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर श्री पृथ्वीराज शास्त्री का यह प्रस्ताव हर्ष विष्न के साथ स्वीकार हुआ कि शुद्धि का चक्र पुन एक बार तीव्र गति से चलाया जाये। जैसे 2 फरवरी 1983 मे पोपपाल के आगमन पर गुरुकुल आमसेना में शुद्धि का भव्य आयोजन हुआ था, इस बार वैसे ही 5 हजार से अधिक ईसाईयों को शुद्धि करने एक अपूर्व आयोजन करने का निश्चय किया है। अनेक प्रतिनिधि सभाओं, आर्य समाजो एव आर्य नेताओं ने इस कार्य हेतु सहायता की घोषणा भी की जो "सार्वदेशिक साप्ताहिक" में छप चुकी है।

उपरोक्त प्रस्ताव के अनुसार सार्वदेशिक सभा के अध्यक्ष स्वामी आनन्दबोध जी की अध्यक्षता में नवम्बर के अन्तिम सप्ताह में "वनवासी आर्य महा सम्मेलन" किया जायेगा। इस अवसर पर अधिक से अधिक सख्या में पधार कर अपने परावर्तित बन्धुओ का स्वागत कर उनका उत्साह बढ़ावें। अपने पधारने की स्वीकृति एव सख्या पहले सूचित कर सकें तो व्यवस्था में सुविधा होगी। आय समाज के अनेक मूर्धन्य साधु सन्यासी विद्वान्, और आर्य नेता अपना आशीर्वाद देंगे।

यह हमारा सौभाग्य है कि जहा हमे तपो मूर्ति वैदिक यति मण्डल के अध्यक्ष स्वामी सर्वानन्द जी तथा अन्य सदस्यो का आशीर्वाद प्राप्त है, वहा डी०ए०वी० ट्रस्ट एव आय प्रादेशिक सभा की ओर से श्री दरबारी लाल तथा श्री रामनाथ जी सहगल ने भी पूण सहयोग का आश्वासन दिया है। समस्त प्रतिनिधि सभाओ के प्रधानो ने भी हमारा उत्साह बढ़ाया है। यह स्नेह और सहानुभूति ही हमारी शक्ति है जो हमें काय करने के लिए निरन्तर प्रेरित करती है।

इस अति कठिन श्रम एव व्ययसाध्य कार्य मे आप सभी के सहयोग से ही सफलता मिलेगी। लगभग 15 हजार व्यक्ति इस आयोजन में भाग लेंगे। अत चार लाख से अधिक रु० इस आयोजन पर खर्च आयेगा। देश की अखण्डता और एकता की ज्वाला जिनके मन मे जागती है वे सभी आयबन्धु स्वय तथा अपने इष्टमित्रों के द्वारा इस महान् आयोजन की सफलता के लिए अपना पूर्ण सहयोग देंगे, यह विश्वास है।

पजाब मे यतिमण्डल के विशिष्ट सदस्य महात्मा प्रेम प्रकाश जी तथा दिल्ली में श्री पृथ्वीराज शास्त्री एव उनकी धर्मपत्नी इस काय मे प्राणपण से लगे हुये हैं। इन्हीं की प्रेरणा से यह आयोजन हो रहा है। दिल्ली वासी भाई बहन अन्न, वस्त्र एव धन आर्य समाज रानी बाग या आयसमाज अनारकली (मन्दिर मार्ग) को भेजें। इस गुरुकुल के स्नातक श्री धूमकेतु गुरुकुल गौतम नगर, श्री विश्व बन्धु आय समाज तिलक नगर के पास भी रसीद एव परिचय उपलब्ध है। अपने चैक या ड्राफ्ट स्टेट बेंक या सैन्ट्रल बेंक खरियार रोड के गुरुकुल आश्रम आमसेना या उत्कल आय प्रतिनिधि सभा के नाम से भेजें। इन्कमटेक्स छूट है।

कायक्रम के निश्चित स्थान एव तिथि की सूचना बाद में देंगे।

—स्वामी धर्मानन्द सरस्वती प्रधान उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा, गुरुकुल आश्रम आमसेना खरियार रोड (कालाहाण्डी) उडीसा

डीएवी पब्लिक स्कूल, पालमपुर

इस वर्ष डीएवी पब्लिक स्कूल पालमपुर का पहला बैच बोड की परीक्षा मे बैठा कक्षा मे कुल 13 छात्र थे जो सभी उत्तीर्ण हुए और उनमें से 10 प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण घोषित किए गए। विषयश 42 विशेष योग्यताए प्राप्त की। इस प्रकार परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहा। अधिकतम प्राप्तांकों का प्रतिशत 43 रहा। हमारे पठन-पाठन के अतिरिक्त खेल कूद तथा अन्याय गतिविधियो पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है जिसमे कि छात्रो का सर्वांगीण विकास और उन्नति हो सके। यही कारण है कि 1983 में रोपा गया यह पौधा धीरे-धीरे प्रगति करता हुआ विशाल वृक्ष बनने की ओर अग्रसर है।

'अमीर खुसरो' का विरोध

दक्षिण दिल्ली आर्य महिला मडल की बैठक मे दूरदर्शन पर दिखाये जा रहे 'अमीर खुसरो' की कडे शब्दो मे भर्त्सना की गई। इस धारावाहिक में इतिहास के साथ कर मजाक किया गया है। इससे साम्प्रदायिकता को ही बल मिल रहा है तथा आर्यों (हिन्दुओ) के हृदयों को ठेस लगी है। बैठक की अध्यक्षता करते हुए श्रीमती शकुन्तला आय ने कहा कि हिन्दुओं पर जजिया लगाने वाले सैकडो मन्दिरो को तोडने वाले, तलवार के बल पर धर्म परिवर्तन करने वाले, सबसे क्रूर बादशाह औरगजेब को इस धारावाहिक द्वारा सभी धर्मों का आदर करने वाला और राष्ट्र भक्त दिखाया गया है। इसके साथ ही आर्यों को यवनो के स्तर पर रख कर यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया गया है कि आय भी विदेशी आक्रामक थे।

एक प्रस्ताव के माध्यम से सूचना और प्रसारण मन्त्री और दूरदर्शन के महानिर्देशक से बलपूर्वक अनुरोध किया गया कि इस सीरियल पर तुरन्त रोक लगा कर नई पीढी को भ्रान्त होने से बचाए।

—कृष्णा ठुकराल, मन्त्री

'अस्पृश्यता : कारणा और निवारणा' पर विचार गोष्ठी

भारतीय लेखक मच के तत्वावधान मे 'अस्पृश्यता कारण और निवारण' विषय पर विचार गोष्ठी हुई जिसमे राजधानी के वरिष्ठ पत्रकार, आर्यजगत के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालकार, सुविख्यात साहित्कार श्री विष्णु प्रभाकर विश्व हिन्दू परिषद दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष श्री राजेश्वर जी, आयसमाज के कर्म नेता व विराट हिन्दू समाज के सचिव श्री चिन्तामणि, श्री मामचन्द रिवारिया, श्री नरेन्द्र अवस्थी श्री सुरेन्द्र मोगिया, श्री प्रेम चन्द्र शर्मा स्वतन्त्र आदि ने अस्पृश्यता को मानवता के माथे पर लगा कलक बताते हुए इसके उन्मूलन के कई रचनात्मक सुझाव दिए। वक्ताओ ने पुरी के शकराचाय श्री निरजन देव तीर्थ के हरिजन सम्बन्धी वक्तव्य की तीव्र भर्त्सना की, श्री क्षितीश वेदालकार ने तर्क सगत व ठोस ऐतिहासिक प्रमाणो द्वारा सिद्ध किया कि आर्य सस्कृति में अस्पृश्यता का कही कोई स्थान नही और वैदिक (हिन्दू) धर्म सदा सामाजिक समता के उद्देश्य की ओर अग्रसर रहा है। भारतीय लेखक मच के कनिष्ठ उपप्रधान श्री मामचन्द रिवारिया का जन्म दिवस होने के कारण वक्ताओ ने उन की सामाजिक धार्मिक सेवाओ की सराहना करते हुए उनकी दीर्घ आयु की कामना की। प्रेषक—नरेन्द्र अवस्थी

मैं वापिस भारत

(पृष्ठ 5 का शेष)

जब मैं पहली बार वापिस भारत आया तब मैं अपने मित्रों को वह सब बताना चाहता था जो मैंने विदेश में सीखा था। सबसे महत्वपूर्ण पाठ मैंने उन्हें बत या कि ससार को हिलाने वाली शक्ति बुद्धि नही बल्कि इच्छा शक्ति है। अपनी इच्छा शक्ति के अनुसार ससार को बनाने में ही हमारी बुद्धिमानी है। मैं उनसे कहता था कि जीवन जीने के प्रति जो तुम्हारा दावा है, हिम्मत से उसकी रक्षा करो और उसके लिए साफ तौर से आग्रह करो। किसी चीज में तुम जितना अधिक विश्वास करते हो, वह उतना अधिक ही अस्तित्व मे आती है। सत्य को लागू करने वाली बुद्धि नही, इच्छा शक्ति है और अपनी आस्था के लिए शहीद होने वाले ही किसी विश्वास को सार्थक करते हैं। इससे उल्टी बात नहीं होती। हमारे जैसे देश मे जो जबानी जमाखर्च और काल्पनिक विचारों से आराक्रात है, हमको यह याद रखने की जरूरत है कि ससार को केवल हाथो से काम करके ही पकडा जा सकता है, ख्याली पुलावो से नहीं। "आंख के बजाय हाथ ज्यादा महत्व पूर्ण हैं मन की बात को अमली जामा पहनाने वाला हाथ के सिवाय कोई और साधन नहीं है।" ब्रोनोवस्की ने कहा था। आज जब मैं भावी मैनेजरो का इन्टरव्यू लेता हू तो मैं ऐसे लोगों को तलाशता हू जो चीजो को गति दे सकें और कामो को करवा सकें, बजाय कृत्रिम और चमकदार चिन्तकों के।

अपने देश के प्रति प्रेम होने का अर्थ अपने प्रति अनुग्रह करना नहीं है। अपनी असफलताओं की आलोचना करना बहुत जरूरी है। उनमें से एक है हमारी आध्यात्मिकता जिसकी बहुत तारीफ आकी जाती है। परन्तु मैंने देखा है कि अक्सर वह किसी काम के प्रति अपनी नैतिक जिम्मेवारी से बचने का रास्ता भर होती है। मेरा विश्वास है कि प्रभु की भक्ति के बजाय मनुष्य की सेवा कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है। जैसा कि गांधी जी बहुत अच्छे ढग से कहा करते 'यदि परमात्मा को भारत मे प्रकट होना हो तो उसे रोटी के टुकडे की शक्ल में बदलना पड़ेगा।" जिस विश्वास से मुझे सबसे अधिक सतोष मिलता है वह यह है कि जो दया और सहानुभूति तुम अपने प्रति बरतते हो उसे सब मनुष्यों की ओर निर्बाध बहने दो।

हमारे पूर्वज हमको बता गये हैं कि स्वार्थ से ही दु:ख पैदा होता है। अपने अहम् को घटाकर औरो के साथ अपने आप को एकाकार करना, खासतौर से उनके दु:खो के साथ, शांति और सुख की ओर ले जाता है। इसके लिए न परमात्मा की जरूरत है और न ही अमरता की।

मनुष्य की गरिमा उसके अपने पिछवाड़ ही रहती है। मनुष्य जितना अधिक अपने ही देश और काल से जुड़ा होता है उतना ही वह सब देशों और सब प्रान्तों से जुड़ जाता है।

['टाइम्स आफ इण्डिया' से अनूदित]

ऋषि दयानन्द...

(पृष्ठ 6 का शेष)

अवस्था में भी उजागर देखना चाहते हैं। काशी मे मानमन्दिर के "शिशुमार चक्र" की चर्चा भी उन्होने ग्रन्थ में की है कि "जयपुराधीश" इसकी सभाल करते रहे तब खगोल विद्या की जानकारी प्राप्त होती रहेगी।" सम्पन्नता के सन्दर्भ मे लिखा गया वाक्य देश की स्तुति की बहुत सुन्दर सूक्ति है। स्मरण रखने योग्य है—"यह आर्यावर्त देश ऐसा देश है जिसके सदृश भूगोल मे दूसरा कोई देश नहीं है। इसीलिए इस भूमि का नाम सुवर्ण भूमि है क्यो कि यह सुवर्णादि रत्नों को उत्पन्न करती है। इसीलिए सृष्टि के आदि में आर्य लोग इसी देश में आकर बसे। जितने भूगोल मे देश हैं, वे सब इसी देश की प्रशसा और आशा रखते हैं कि पारसमणि पत्थर सुना जाता है, यह बात तो झूठी है, परन्तु आर्यावर्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिसको लोहे रूप दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।"

सत्यार्थ प्रकाश की यह देश वन्दना उस काल की है जब अधिकांश देश अंग्रेजी सत्ता की प्रशसा मे और लदन और टेम्स नदी के गुणानुवाद में अपने को धन्य समझता था।

प्रवेश आरम्भ

"आचार्यकुल निरजानन्द कुटीर वनस्थली" में छात्रों का प्रवेश प्रारम्भ हो गया है। इस सस्था में अष्टाध्यायी की शैली से शिक्षा दी जाती है। विशेष यहा वानप्रस्थियों और सन्यासियो को भी अष्टाध्यायी पढ़ाई जाती है। ध्यान रहे अष्टाध्यायी वेदो की कुन्जी है। पूर्ण विवरण के लिए सम्पर्क करें—

मातार्चाय सरस्वती, निरजानन्द कुटीर, वनस्थली, डा० लडरावण, जिला रोहतक (हरियाणा)

स्व० श्री चांदकरण शारदा की जन्म-शताब्दी पर श्रद्धाञ्जलि

—डा. कपिलदेव द्विवेदी—

कुलपति, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार)

श्रीमांस्तु 'चांदकरणो' गुणिनां वरिष्ठो,
विद्या - विभा - विभव - भूषित - भास्वराङ्ग।
स 'शारदेति' विदितो भरपुमयोऽय,
स्वोयैर्गुणै प्रतिपल भुवने चकास्ति ॥1॥

स्वार्थं विहाय निरतो जनता-हिते यो,
वेदाहवे धृतमति करुणा पयोधि.।
स्वीय समस्तमपि वैभवमार्पयत् स:,
दीनोद्धृतौ पतित-हीन-जनार्ति-नाशे ॥2॥

आर्यं समाजमवलम्ब्य धुरि स्थितो य,
सत्याग्रहे विविध-दुःखतानि प्रपेदे।
सत्याग्रहे ऽभवदसौ द्वितयो धुरीणो,
लेभे च तत्र विमलां कमनीयकीर्तिम् ॥3॥

वाग्मित्व - लेखन - गुणै विदुषां वरिष्ठो,
लोक - प्रबोध - निपुणो विधिशास्त्रवेत्ता।
धर्म - प्रचार - क्रियया प्रथित· स्वदेशे,
श्रीशारदा-गुणिवरो वद्हि कस्य वन्द्य· ॥4॥

यस्यास्ति चारु - चरितामृत - पाव - पूता,
पुण्याऽजमेर-नगरी प्रथिता स्वदेशे।
स्वातन्त्र्य-युद्धमवलम्ब्य गतस्तु कारां,
तत्रासहिष्ट विविधां गुरु-यातनां स· ॥5॥

औदार्य - शील - गुण - मूर्तिरय वरेण्य,
त्यागेन शौर्य-निवहेन सदा प्रसिद्ध:।
सत्याग्रहेषु विदधेषु सदाऽग्रणी सन्;
नेतृत्व-भारमवहद् विजयोपलब्ध्यै ॥6॥

धर्मप्रचार मनुरुध्य गतो विदेशान्,
प्राचारयद् भरत देश-सुसंस्कृति य:।
ग्रन्थान् प्रणीय विविधान् श्रुति-धर्म-निष्ठान्,
विद्वज्जनेषु विपुला समवाप कीर्तिम् ॥7॥

हिन्दूसभाऽऽर्य - जनता - हित - तत्परोऽयम्,
अध्यक्षतां विविध-सगमनेषु चक्रे।
यातो दिवं भुवि गुणैर्महितैर्गरिष्ठै,
लोकत्रये गुणिवर सतत चकास्तु ॥8॥

हिन्दी अर्थ

1 गुणियों में श्रेष्ठ श्री चांदकरण शारदा विद्या और ऐश्वर्य से विभूषित थे। वे 'शारदा जी' नाम से प्रसिद्ध थे। ये महान् विभूति अपने गुणों से सारे ससार मे विख्यात थे।

2 वे नि स्वार्थभाव से जनता के हित में लगे रहते थे। वे दयालु वेदों के आह्वान में तत्पर रहते थे। उन्होने अपना सारा वैभव दीनों के उद्धार और पतीतों के दुःख दूर करने में लगा दिया था।

3 वे आर्य समाज के अग्रगण्य नेता थे। उन्होंने सत्याग्रह में अनेक दु:ख सहे। वे हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के द्वितीय अधिनायक बने थे और उन्होंने सत्याग्रह में प्रशसनीय कीर्ति प्राप्त की थी।

4 वे अपनी भाषणकला और लेखनकला से विद्वानों में आदरणीय थे। वे कानून-वेत्ता थे और जनता में जागृति उत्पन्न करने में दक्ष थे। श्री शारदा जी धर्मप्रचार के द्वारा भारतवर्ष में विख्यात थे। वे किसके आदरणीय नहीं थे ?

5. उनके पवित्र चरित्र से अजमेर शहर देश भर में प्रसिद्ध था। वे स्वाधीनता-आन्दोलन मे जेल गए और वहां उन्होंने अनेक प्रकार की यातनाएं सहीं।

6 श्री शारदा जी अपनी उदारता, सुशीलता, त्याग और शूरवीरता के लिए सर्वत्र प्रसिद्ध थे। वे विभिन्न सत्याग्रहों मे नेता रहे और उन्होने सर्वत्र विजय प्राप्त की।

7. उन्होने अफ्रीका आदि देशों में जाकर भारतीय संस्कृति का प्रचार किया। उन्होंने धार्मिक और शास्त्रीय विषयों पर ('शुद्धिचन्द्रोदय' 'शारदा एक्ट' 'सृष्टि की कहानी' आदि) पुस्तकें लिखकर विद्वज्जनों मे विशेष कीर्ति प्राप्त की।

8. वे हिन्दू-महासभा और आर्य समाज के कार्यों में सदा तत्पर रहते थे। उन्होने अनेक सम्मेलनों में अध्यक्ष का पद सुशोभित किया। वे दिवंगत होकर भी अपने महान् गुणों से सारे ससार में सदा चमकते रहें।

साहित्य समीक्षा

विदेशों में भारतीय क्रांति की अलख जगाने वाले

भारत के स्वाधीनता संघर्ष में क्रांतिकारियो की क्या भूमिका रही है इस पर निष्पक्ष रूप से प्राय विवेचन नहीं हुआ। उस दिशा में कुछ कार्य हुआ भी है तो भारत के अन्दर किए गए क्रान्तिकारियों के कार्यों का भले ही कुछ विवेचन हुआ हो, विदेशों में संघर्षरत भारतीय क्रांतिकारियो के गौरवमय कार्यों का विवेचन बहुत कम हुआ है। इस दृष्टि से यह पुस्तक एक नई जमीन तोडती है। इसके लिए सुधी पाठको को इस पुस्तक के लेखक का आभारी होना चाहिए।

ब्रिटिश साम्राज्य के प्रारम्भिक दिनो से देश के विभिन्न वर्गों ने अपने अपने ढग उसका विरोध करना प्रारम्भ कर दिया था। प्लासी की लडाई के बाद शायद ही कोई ऐसा दशक बीता हो जब अंग्रेजों को जनता के किसी न किसी विद्रोही का सामना न करना पड़ा हो। सबसे मुखर विस्फोट सन् 1857 मे हुआ। अंग्रेजो के निष्ठुर दमनचक्र ने उसे विफल कर दिया परन्तु भारत वासियो के मन मे वह एक प्रच्छन्न आक्रोश अवश्य छोड गया। इसी आक्रोश को समाप्त करने के लिए और भारत वासियो को मानसिक दृष्टि से गुलाम बनाने के लिए ब्रिटिश शासको ने नई नीति से काम लेना शुरू किया। अंग्रेजों को महत्व देने वाले स्कूल और कालेज खोलने शुरू किए। इस नीति मे अंग्रेजो को जो सफलता प्राप्त हुई उसी की प्रतिक्रिया लगभग दो दशक बाद कांग्रेस के जन्म के रूप मे प्रकट हुई। कांग्रेस अंग्रेजी पढ़े लिखे राष्ट्र भक्त भारत वासियो के मानसिक असतोष को प्रकट करने का साधन बनी।

इसी बीच ऋषि दयानन्द कार्य क्षेत्र में आए। 1857 की राज्य क्रांति को उन्होंने अपनी आंखो से विफल होते देख और साथ ही अंग्रेजों द्वारा भारतवासियों को मानसिक दृष्टि से गुलाम बनाने के लिए किए जाते प्रयत्नो को भी देखा उन्होने अनुभव किया कि गुलामी के जुए को उतार फैंकने के लिए किसी छोटी मोटी कार्यवाही से काम नही चलेगा, प्रत्युत समाज और राष्ट्र का पुन निर्माण करना पड़ेगा। इसी दृष्टि से उन्होने आर्य समाज की स्थापना की थी। स्वधर्म, स्वभाषा स्वराज्य, स्वदेश, और स्वसस्कृति पर जितना जोर आर्य समाज ने दिया, उतना अन्य किसी ने नही, यह आन्दोलन जनता के अन्त करण को छू गया। भले ही लोग आर्य समाज के अनुयायी अधिक न बने हो, पर इस आन्दोलन ने देश में जो वातावरण पैदा किया उससे जनता में नयी चेतना पैदा हुई। जनता के मन में जो प्रसुप्त आक्रोश था, उसे आर्य समाज ने वाणी दी। सन् 1885 तक की रिक्तता को भरने वाला आर्य समाज के रूप में एक अखिल भारतीय मच तैयार हुआ।

ऋषि दयानन्द ने जो धारा चलाई थी कांग्रेस की स्थापना से उसले थोडी बहुत रुकावट बेशक आयी हो परन्तु प्रखर राष्ट्रवाद की वह धारा लुप्त नहीं हुई। ऋषि दयानन्द का राजनीतिक दृष्टिकोण क्या था, इसको आगे के उस इतिहास से समझ जा सकता है जिसको भारत तथा उसके बाहर क्रांतिकारियो ने अपने रक्त से लिखने का प्रयत्न किया है। ऋषि दयानन्द की प्रेरणा से ही श्याम जी कृष्ण वर्मा आक्सफार्ड विश्वविद्यालय मे सस्कृत के प्राध्यापक बन कर गए। वहा उन्होने अपनी सारी सम्पत्ति इडिया हाउस की स्थापना करके उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए भारत से ब्रिटेन जाने वाले विद्यार्थियो को छात्रवृत्ति देने मे लगा दी और भारतीय युवकों को क्रांति की दीक्षा देनी शुरू कर दी। लेखक ने विदेशो में क्रांतिकारियो की गतिविधियो का वर्णन ब्रिटेन से ही प्रारम्भ किया है इस लिए दूसरा अध्याय अधिकतर श्यामजी कृष्ण वर्मा पर ही केन्द्रित है। श्याम जी कृष्ण वर्मा को क्रांतिकारियो का पितामह कहा जा सकता है क्योकि बाद मे वीर सावरकर, भाई परमानन्द, लाला हरदयाल और मदन लाल ढींगरा आदि जितने भी प्रमुख क्रांतिकारी हुए उन सबके दीक्षा-गुरु श्याम जी कृष्ण वर्मा ही थे।

इसके बाद लेखक ने क्रमश एक एक अध्याय मे पेरिस, अमरीका, कनाडा आदि देशों में भारतीय क्रांतिकारियो द्वारा किए गए कार्यों का रोमाचक विवरण प्रस्तुत किया है, गदर पार्टी की स्थापना और कोमागाटामारू नामक जहाज से हजारो क्रांतिवीरो की भारत आकर सशस्त्र विद्रोह के द्वारा भारत को आजाद कराने की दास्तान पढ़ते पढ़ते रोमाच हो आता है। बलिदान की तीव्र भावना से ओतप्रोत थे ये भारतीय क्रांतिकारी युवक। परन्तु इन वीरों की क्रांति का प्रयास भी विफल हो गया। अन्तिम तीन अध्यायो मे बनारस मे सैनिक विद्रोह, सिगापुर में सैनिक विद्रोह और बर्मा मे क्रांतिकारियो की गतिविधियो के साथ प्रथम खण्ड समाप्त हो जाता है।

दूसरे खण्ड मे जर्मनी, जापान, तुर्की फारस, अफगानिस्तान और सोवियत सघ आदि देशो मे भारतीय क्रांतिकारियो के प्रयासो का मनोरजक और विवरण प्रस्तुत किया गया है। दूसरे विश्व युद्ध के दौरान मिस्र मे भारतीय सैनिको द्वारा किए गए विद्रोह, मलाया में आजाद हिन्द फौज के निर्माण और नेताजी के आह्वान पर भारतीय सैनिको द्वारा स्वेज नहर पर और कोचीन मे विद्रोह के विवरण के साथ दूसरा खण्ड समाप्त होता है।

लेखक ने इन दोनों खण्डो की सामग्री एकत्र करने के लिए अंग्रेजी और हिन्दी में प्राप्त पुस्तकों का अध्ययन ही नही किया, बल्कि इंग्लैण्ड और भारत के अभिलेखागारो में बैठ कर गोपनीय सरकारी रिपोर्टों और दस्तावेजो की छानबीन की है। इसके अतिरिक्त सैनिक विद्रोहो मे शामिल अनेक स्वाधीनता सेनानियो से भेंट वार्ताए करके भी अनेक नए तथ्यों का पता लगाया है। सम्पूर्ण ग्रन्थ में स्वाधीनता सघर्ष के उस गौरवशाली अध्याय का सप्रमाण और क्रमबद्ध विवेचन हुआ है जो अब तक प्राय अज्ञात या अल्पज्ञात था। विदेशो में सशस्त्रक्रांति के प्रयासों की भारत में चलने वाले स्वाधीनता सघर्ष पर प्रतिक्रिया का भी यथास्थान समुचित वर्णन किया गया है। साथ ही क्रांतिकारियों की विचारधारा मे किस प्रकार हिंसावाद के स्थान पर एक उच्च राष्ट्रवाद और शोषण मुक्त समाज के निर्माण का आदर्श निहित था, इसका भी उल्लेख है।

हर एक अध्याय के अन्त में सदर्भ ग्रन्थो की सूची एव प्रत्येक खण्ड के अन्त मे चालीस चालीस पृष्ठो कि लम्बी अनुक्रमणिका इस ग्रन्थ को ऐतिहासिक और प्रामाणिक दस्तावेज बनाती है। दूसरे खण्ड के अन्त मे विदेशो में क्रांति की अलख जगाने वाले लगभग सौ क्रांतिकारियो के दुर्लभ चित्र दिए गए हैं जिससे पुस्तक का महत्व और बढ़ गया हैं। हरेक आर्यसमाज और प्रत्येक आर्य सस्था मे यह पुस्तक विद्यमान रहने से नई और पुरानी पीढ़ी को समान रूप से प्रेरणा मिलेगी।

—क्षितीश वेदालंकार

दैनिक हिन्दुस्तान' के समाचार सम्पादक श्री विश्वमित्र उपाध्याय को रांची विश्वविद्यालय ने हाल में उनके शोध ग्रन्थ भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन और हिन्दी साहित्य' पर पी० एच० डी० की उपाधि से अलकृत किया है। इस ग्रन्थ मे सन 1857 से सन् 1947 तक के भारतीय स्वातन्त्र्य सघर्ष में क्रांतिकारी आन्दोलन के वैचारिक विकास का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। लेखक की स्थापना है कि कांग्रेस का अहिंसात्मक क्रांतिकारियो का हिंसात्मक और समाज सुधारको का जन जागरणात्मक—ये तीनो आन्दोलन परस्पर विरोधी नहीं, अपितु एक दूसरे के पूरक थे। इसीलिए हिन्दी साहित्य मे इन तीनो ही आन्दोलनो के प्रति अनुराग की एक समान भाव भूमि दृष्टि गोचर होती है। यह ग्रन्थ अभी प्रकाशित नही हुआ है। शीघ्र प्रकाशित होने की आशा है।

प्रस्तुत पुस्तक पर डा० उपाध्याय को उत्तर प्रदेश के हिन्दी सस्थान ने 11 हजार रु० का आचार्य नरेन्द्रदेव पुरस्कार (इतिहास) देने का निश्चय किया है। इससे पूर्व 'भारत का मुक्ति सघर्ष और रूसी क्रान्ति' नामक तीन खण्डो के ग्रन्थ पर उन्हें सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। क्रान्तिकारियो के सम्बन्ध मे लेखक की अन्य भी अनेक पुस्तकें निकल चुकी हैं। इस समय वे 'सन् 1857 के अज्ञात क्रांतिकारी' नामक पुस्तक लिखने के लिए उसकी सामग्री एकत्र करने मे लगे हैं।

पुस्तक का नाम—विदेशों में भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन
लेखक—डा० विश्वमित्र उपाध्याय
प्रकाशक—प्रगतिशील जन प्रकाशन, नई दिल्ली
पृष्ठ सख्या—प्रत्येक खण्ड—सवा चार सौ, मूल्य—प्रत्येक खण्ड—100 रु०
प्राप्ति स्थान-बी-55, गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली-110049

सामाजिक जगत्

सेवक की आवश्यकता

आर्य समाज माडल बस्ती, नई दिल्ली 5 तथा आर्यसमाज गुलबगश दिल्ली-6 मे सेवकों की आवश्यकता है, इच्छुक सज्जन उक्त आर्य समाजो के मन्त्री से शीघ्र सम्पर्क करें। वेतन योग्यतानुसार। —चन्द्रमोहन आर्य

शोक समाचार

आर्य समाज के प्रचारक श्री उत्थान मुनि वानप्रस्थ (पूर्व ओमप्रकाश गुप्त) वीर सावरकर ब्लाक शकरपुर तथा केन्द्रीय आर्य युवती परिषद् की मन्त्रिणी विमा आर्या के पिता श्री सिगल साहब के देहान्त पर केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली ने शोक व्यक्त किया है।

—चन्द्रमोहन आर्य

श्री विश्वम्भर नाथ भाटिया को भ्रातृशोक

दयानन्द मॉडल स्कूल विवेकविहार (दिल्ली) के प्रबन्धक श्री विश्वम्भर नाथ भाटिया के अनुज अवकाश प्राप्त सेनाधिकारी श्री जगदीश चन्द्र भाटिया का अल्पायु में ही निधन हो गया।

3 जुलाई को उनके निवास स्थान रोहतक में श्रद्धाजली सभा का आयोजन किया गया, जिसमे उनके परिवार एव इष्ट मित्रों के अतिरिक्त आर्यजन काफी सख्या में उपस्थित थे। वे अपने पीछे पत्नी के अतिरिक्त 3 पुत्र और एक पुत्री छोड गए हैं।

—पिथौरागढ आर्यसमाज मे कुशल मर्मज्ञ शास्त्रार्थ महारथी प० ललता-प्रसाद जी के निधन पर शान्तियज्ञ सम्पन्न हुआ। उनका 19 जून को निधन हो गया था।

—प्रसिद्ध विद्वान् स्वर्गीय ईश्वर दत्त जी मेधार्थी की पौत्री सौ० अजना, सुपुत्री श्री मेधामुनि जी डिप्टी रजिस्ट्रार जोधपुर विश्वविद्यालय का पाणिग्रहण सस्कार श्री ठाकुर जोगेश्वरसिंह दिल्ली निवासी के सुपुत्र श्री राजेश्वरसिंह के साथ 24 जून को डी० डी० ए० कम्यु-निटी हाल बी ब्लाक न्यू मोतीनगर नई दिल्ली में वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ।

शोक प्रस्ताव

श्री जय सिंह दलोई कार्बि आङ्ग-लाङ्ग जनपद डिफू शहर असम के एक समाज सुधारक धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। वेद के अनन्य भक्त, हिन्दु सस्कृति के रक्षा के लिए सदा प्रयत्नशील रहे। डिफू में दयानन्द सेवाश्रम सघ की स्थापना के साथ-साथ डी ए वी स्कूल की स्थापना करके हजारो बालक-बालिकाओ को शिक्षा प्रदान की। श्री दलोई का 12 जून को निधन हो गया। आर्यसमाज में स्वर्गीय दलोई जी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।—नारायण दास प्रधान असम आर्य प्रतिनिधि सभा गोहाटी।

—अल्मोड़ा। लक्ष्मी आश्रम कौसानी में साधना भट्ट—हसराज पांडे का विवाह सस्कार 1 जुलाई को रिटायर्ड जज कामतानाथ की अध्यक्षता में राधा बहन के सयोजन में स्वामी गुरुकुलानन्द ब्रह्मचारी के पौरोहित्य में हुआ।

—आर्यसमाज एव दयानन्द इन्टर कालेज, बिन्दकी (फतेहपुर) के सस्थापक एव अध्यक्ष श्री बाबूलाल जी आर्य का 75 वर्ष की आयु में 16 जून को देहान्त हो गया।

तीन युवतियां वेश्यालय से मुक्त

कानपुर नारी सेवा सस्थान व केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने यहां मूल गज वेश्यालय से दो अपहृत युवतियों को बरामद कर उनके सरक्षकों को सौंप दिया। श्री आर्य ने बेनाझाबार मुहल्ले की एक 17 वर्षीय अपहृत युवती कु० सध्या को कर्नलगंज पुलिस की सहायता से शरीफउद्दीन के कब्जे से बरामद किया।

—दर्शना कपूर

—आर्यसमाज, अल्मोडा के भूतपूर्व कोषाध्यक्ष श्री प्यारेलाल साह का 9 जुलाई को 70 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आर्य समाज के प्रति की गई उनकी सेवाओ की प्रशसा करते हुए उनकी आत्म की शान्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की और शोक प्रस्ताव पास किया गया।

नाम करण और विवाह

29 जून को रजौली (नवादा) में डा० वासुदेव नारायण के पौत्र तथा श्री प्रभाकर आर्य के सुपुत्र का नाम करण सस्कार सम्पन्न हुआ और 1 जुलाई को कु० मृदुला व 6 जुलाई को कु० ममता का विवाह सस्कार हुआ उपरोक्त कार्यक्रम डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ।

आर्य युवकों की बैठक

24 जुलाई को आर्यसमाज, इन्द्री में आर्य युवको की एक विशेष बैठक हुई जिसमें इस क्षेत्र के युवको ने भाग लिया। इस समय 12 स्थानों पर दैनिक शाखाए चल रही हैं और 150 युवक सदस्य बन चुके हैं। बैठक में श्री चमन लाल आर्य, श्री देवी दयाल श्री आदित्य प्रकाश, श्री धर्मपाल, श्री राजकुमार और श्री राम स्नेही उपस्थित थे।

योग साधना शिविर सम्पन्न

म० नारायन स्वामी आश्रम राम-गढ़ तल्ला (नैनीताल) मे 26 जून से 3 जुलाई तक समारोह पूर्वक मनाया गया इस शिविर में बिहार, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली के ये बधु ओने भाग लिया यह शिविर स्वामी दिव्यास जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

दूसरा शिविर 19 सितम्बर से 25 सितम्बर तक लगेगा जो सज्जन इसमें भाग लेना चाहे वे स्वामी सोमानन्द अध्यक्ष वेद प्रचारक मडल 60/13 राम-जस, रोड दिल्ली से सम्पर्क करें।

धर्म शिक्षा की पुस्तकें मुफ्त प्राप्त करें

आर्य समाज के उत्सवों पर तथा साधारण जनता में वितरण के लिए मुफ्त में प्राप्त करें।—हकीम नानक चन्द 9751/20 देवनगर दिल्ली-5

दयानन्द मठ चम्बा द्वारा वेद प्रचार

दयानन्द मठ चम्बा (हि०प्र०) द्वारा इस समय 1 जुलाई से नवम्बर मास तक पाच मास का वेद प्रचार का शानदार अभियान प्रारम्भ कर दिया गया है। हमारा विशेष ध्यान ग्रामो एव विद्यालयों पर है। वेद प्रचार के साथ-साथ नि:शुल्क औषधियां भी दी जा रही हैं।

इस वेद प्रचार के प्रथम चरण में गाजियाबाद के उत्साही नवयुवक प्रचा-रक श्री आशाराम आर्य एवं उनके साथी श्री प्यारेलाल आर्य इस समय बड़े उत्साह से वेद प्रचार मे लगे हुए हैं।

—सुमेधानन्द

डी ए वी के श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम

डीएवी उच्च माध्यमिक विद्यालय, अजमेर के बोर्ड एव हायर सैकण्ड्री परीक्षा के परिणाम कुल मिलाकर 80 प्रतिशत रहा। हायर सैकण्ड्री परीक्षा मे 296 छात्र और सैकेंड्री परीक्षा में कुल 280 छात्र प्रविष्ट हुये।

2500 रुपये की स्थिर निधि

डी ए वी के भूतपूव छात्र श्री वेद रत्न जी आर्य ने अपने स्व० लघु भ्राता एव जाने माने फिल्मी दुनियो मे उभरते हुये सगीतकार प्रियरत्न जी आर्य की स्मृति में प्रतिवर्ष सगीत के सर्वश्रेष्ठ छात्र को स्वर्ण रजत पदक आदि प्रदान करने हेतु 2500/- रुपये की स्थिर निधि विद्यालय के नाम पर उपहार के रूप में दी हैं जिनके ब्याज से यह पुरस्कार दिया जायेगा।

विद्यालय को अलमारियां दान

डी ए वी उच्च माध्यमिक विद्यालय को विजय चैरीटेबल ट्रस्ट अजमेर के श्री विष्णुचन्द पालीवाल ने दो बड़ी स्टील की अलमरी पूज्य माता सुशीला देवी की पुण्य स्मृति में प्रदान की है।

गुरुकुल विज्ञान आश्रम (पाली) में गुरुपूर्णिमा

गुरुकुल विज्ञान आश्रम पाली में सत्सग एव यज्ञ कार्यक्रम उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर ब्यावर एव पाली तथा आसपास से सैकड़ों जिज्ञासु आर्यजनों ने भाग लिया। इस अवसर पर रात्रि सत्सग में स्वामी प्रेमानन्द, श्री बसन्त राव 'वानप्रस्थी" आचार्य श्री सत्यदेव निगमालकार एवं नया गाव की भजन मण्डली ने प्रवचनों और भजनो से मन्त्र मुग्ध कर दिया। दूसरे दिन प्रात: ब्रह्मचारियो का व्यायाम प्रदर्शन आकर्षण का केन्द्र रहा।

श्री निगमालकार को गुरुकुल का नया आचार्य नियुक्त किया गया।

—खेवरचन्द आर्य प्रचार मन्त्री

—महाशय खुशहाल चन्द आर्य का 103 वर्ष की आयु मे 27 जुलाई को स्वर्गवास हो गया। 6 अगस्त को आर्य सीनियर स्कूल, पुरानी सब्जी मंडी लुधियाना में उनकी स्मृति में शान्तियज्ञ और पगडी की रस्म हुई।

—रणबीर भाटिया, लिली सूइग मशीन

ब्र० विश्वपाल जयन्त विदेश यात्रा पर

ब्र० विश्वपाल जयन्त (आधुनिक भीम) 3 अगस्त को अनेक देशों के निमन्त्रण पर लन्दन, इग्लेंड, पश्चिमी जर्मनी, स्विटजरलैंड, फ्रास, इटली; अमेरिका, कनाडा, जापान आदि—देशों मे जा रहे हैं। वहा पर आप ब्रह्मचर्य शक्ति एवं यौगिक क्रियाओ का प्रदर्शन करेंगे।

आर. आर. बावा डी ए वी कालेज, बटाला

इस वर्ष फिर लडकियों के उक्त कालेज ने बोर्ड और यूनिवर्सिटी की परीक्षाओ में अत्युत्तम परिणाम प्रस्तुत किया है। सीनियर सेकडरी शिक्षा बोर्ड और गुरु नानकदेव यूनिवर्सिटी के प्रतिशत से इस कालेज का अनुपात बहुत आगे है। सीनियर सेकडरी परीक्षा I में इस कालेज का प्रतिशत 92 1, सीनियर सेकडरी II मे 91 5, टी डी सी पार्ट II मे 97 4 और टी डी सी पाट III मे 91 7 है।

टी डी सी पार्ट मे इन्दु गुप्ता, सीमा गोयल, सीमा, मोनिका, मीना, रामा और लीना मित्तल मेरिट लिस्ट मे आए हैं। पार्ट III में रजनी बाला, सविता अग्रवाल और अनु खोसला मेरिट लिस्ट मे आए हैं।

इन सब परीक्षाओं में इनके अतिरिक्त प्रथम श्रेणी प्राप्त करने वालो की संख्या 118 है।

—प्रि० श्रीमती पी०पी० शर्मा

दिवंगत

पिछले दिनो निम्न महानुभाव दिवगत हो गए—

1 अमेठी के पूर्व नरेश और उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के पूव प्रधान राजा रणजय सिह, 2 कलकत्ता आर्यसमाज के स्तम्भ और परोपकारिणी सभा के उपप्रधान श्री पूनमचन्द आर्य, 3 भाषा विज्ञान के पडित और इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूव हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० बाबूराम सक्सेना, 4 आर्यरत्न धानन्द सत्यदेव (दक्षिण अफ्रीका)की माता और स्वर्गीय डी०जी० सत्यदेव की पत्नी तथा डरबन आर्यसमाज की निर्मात्री वृद्धा, 5 गुरुकुल कागडी के सुयोग्य स्नातक, गुरुकुल चिकित्सालय में चिरकाल तक चिकित्सक श्री सत्यपाल आयुर्वेदालकार।

पंजाब यूनिवर्सिटी की सीनेट का चुनाव

पजाब यूनिवर्सिटी की सीनेट का चुनाव रविवार 18 सितम्बर को प्रात 9 से 1 बजे तक और दोपहर 2 से 5 बजे तक होगा। इस सम्बन्ध मे पजाब यूनिवर्सिटी के सभी ग्रेजुएटो से प्रार्थना है कि—

इस चुनाव के लिए डी ए वी कालेज कमेटी ने सगठन सचिव श्री दरबारीलाल और उप सगठन सचिव प्रि० मदनलाल सेखरी को खडा किया है।

इसलिए दिल्ली, हरियाणा एव चडीगढ मे प्रथम प्रेफरेंस वोट श्री दरबारी लाल को और द्वितीय प्रेफरेंस वोट श्री मदन लाल सेखरी को देने की कृपा करें।

पजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू एव कश्मीर मे प्रथम प्रेफरेंस वोट श्री मदन लाल सेखरी को और द्वितीय प्रेफरेस वोट श्री दरबारी लाल को दें।

ये दोनो व्यक्ति अच्छे शिक्षा शास्त्री, सगठन-कुशल और चिरकाल से डी ए वी और आर्यसमाज की सेवा मे सलग्न हैं।

निवेदक—

प्रो० वेदव्यास, प्रधान — रामनाथ सहगल, सभा मत्री — जे०पी चोपडा, जनरल सेक्रेटरी — तिलकराज गुप्त, आगनाइजर दिल्ली

प्रि० बी० एस० बहल, मुख्य चुनाव सगठन कर्ता, चण्डीगढ — प्रि० बी० बी० गक्खड, आगनाईजर, चण्डीगढ

चुनाव समाचार

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा (हि प्र) के पदाधिकारियो एव अन्तरग सदस्यो की सूची वर्ष ८८-८९

प्रधान—प्रि० रमेश चन्द्र जीवन मत्री—डा० सुरेन्द्र कुमार शर्मा, वेद प्रचार अधिष्ठाता—प्रो० एम० एल० आय कोषाध्यक्ष—श्री चन्द्र कान्त सैनी

अतरग सदस्य—कर्नल दौलतराम चौधरी कागडा मेजर हरवश मनकोटिया कागडा, श्री मिलाप चन्द्र नगरोटा बगवा श्री स्वराज कुमार बाली पालमपुर, प्रि० ओ० एस० कुलश्रेष्ठ पालमपुर, श्री खुशहाल महाजन नूरपुर, श्रीमती तारापुरी धमशाला, श्रीमती आशापुरी धमशाला श्री व्रत पाल भारद्वाज गगरेट, श्री रोशन लाल देहरा, श्री ज्ञान चद हमीरपुर प्रि० आर० डी० शर्मा हमीरपुर

—आय वीर दल कैथल मे मण्डलपति श्री हरिराम कपडेवाले, मन्त्री—श्री युद्धेन्द्र कुमार सूद, कोषाध्यक्ष—श्री अमरनाथ आय, नगर नायक—श्री बृजमोहन जी आर्य और शाखा नायक—श्री जगदीश चन्द्र व श्री लक्ष्मणदास आय को नियुक्त किया।

—जिला आय सभा लुधियाना श्री महेन्द्र पाल जी वर्मा प्रधान, आनन्द आय महामत्री, श्री ओम प्रकाश पासी कोषाध्यक्ष।

आय समाज डी० ए० वी० माग अम्बालाशहर प्रधान—प्रि० जी० डी० जिन्दल, मन्त्री—प्रो० वेद प्रकाश वेदालकार कोषाध्यक्ष—श्री सन्तराम।

मू० 103/84 कन्सेसन ट पोस्ट विदाउट प्रिपेमेंट
रजिस्ट्रेशन न० आर० एन० आई० 39/57
Delhi Postal Regd No. D (C) 409
आर्य जगत्, नई दिल्ली — N D PSO ON 10/11-8-88, 14, अगस्त 1988

चुनाव समाचार

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा पंजाब चंडीगढ़

(कार्यालय—23-ए, दयानन्द नगर, लारेन्स रोड, अमृतसर)

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा पजाब—चडीगढ का कार्यालय अब अमृतसर स्थानान्तरण कर दिया है।

उपसभा के पदाधिकारी एवं अन्तरग सभा के सदस्य निम्नलिखित हैं—

सरक्षक—श्री सत्यानन्द जी मु जाल, 24-एल, माडल टाऊन, लुधियाना, प्रधान - प्रिसिपल सुदेश अहलावत, बी बी के डी ए वी कालेज फार वूमॅन, अमृतसर। वरिष्ठ-उपप्रधान—प्रिसिपल किशन जी आर्य, डी ए वी कालेज चडीगढ। उपप्रधान—श्री इन्द्रजीत जी तलवाड, प्रि० साई दास ए एस सीनियर सेकेन्डरी स्कूल जालन्धर, प्रि० पी एल त्रकरू, डीएवी कालेज जालन्धर, प्रि० देसराज गुप्ता, डी ए वी कालेज, अमृतसर, प्रि० मदन लाल, एस एल बावा डी ए वी कालेज बटाला। मन्त्री—विद्यासागर, वैद्य-वाचस्पति, 23-ए, दयानन्द नगर लारेन्स रोड अमृतसर। सहमन्त्री—प्रि० रविन्द्र तलवाड, डी ए वी सीनियर सेकेन्डरी स्कूल, ऐ० 8, चडीगढ, श्री भूषण कुमार केसर सि० शास्त्री डी ए वी सीनियर से स्कूल, अमृतसर। उपमन्त्री—श्री महेन्द्र पाल आर्य, 2 माडल टाउन, लिंक रोड, लुधियाना—श्री राजकुमार कपूर, प्रि० डी ए वी सीनियर सेकन्डरी स्कूल पट्टी (अमृतसर)। कोषाध्यक्ष—प्रिसिपल राजपाल सेठ, डीएवी सीनियर सेकेन्डरी स्कूल, अमृतसर।

अन्तरग सदस्य

1 श्री अतुल शर्मा, मन्त्री आर्यसमाज कालेज विभाग, फिराजपुर शहर। 2 श्री जसवन्त राय, आर्य समाज कालेज विभाग, फिरोजपुर शहर। 3 प्रिसिपल पी० डी० चोधरी जी, प्रबन्धक आर्य अनाथालय, फिरोजपुर छावनी। 4 प्रि० वेदव्रत जी, डी ए वी कालेज अबोहर। 5 प्रो० एम०एल० तनेजा, डी ए वी कालेज अमृतसर। 6 प्रो० विनोद पाल आर्य, प्रधान आर्य समाज लक्ष्मणसर, अमृतसर। 7 प्रि० कान्ता सरीन जी, हसराज महिला महाविद्यालय, जालन्धर। 8 प्रधान, आर्य समाज माडल टाऊन, जालन्धर। 9 प्रि० के०सी० महेन्द्रू, के०आर०एम० डी ए वी कालेज, नकोदर। 10 प्रधान, आर्य समाज अलावलपुर (जिला जालन्धर)। 11 श्री हसराज जी आर्य समाज किदवई नगर, लुधियाना। 12 श्री एस०डी० छाबडा जी, सराभा नगर, लुधियाना। 13, प्रि० जे०सी० डी ए वी कालेज दसूहा। 14. श्री शिवदत्त जी, प्रि० डी ए वी० हाई-स्कूल गुरदासपुर। 15 महात्मा जगदीशमित्र जी, महात्मा करमचन्द मुहल्ला कादियां (गुरदासपुर)। 16 प्रि०, माता गुणवन्ती डी ए वी कालेज दयानन्दनगर, भटिन्डा। 17 प्रि० डी ए वी कालेज, मलोट (जिला फरीदकोट)। 18 प्रि० माता पिशोरी देवी डी ए वी महिला कालेज, गिदड़बाह (फरीदकोट)। 19 चोधरी हरिदेव जी दत्त, आर्य समाज खन्ना। 20 प्रिन्सिपल, जे०जी०एस, डी ए वी सेंचुरी कालेज, जलालाबाद (फिरोजपुर)।

प्रतिष्ठित सदस्य

1 श्री भीमसेन जी बहल, पूर्व प्रि० डी ए वी कालेज जालन्धर। 590 सेक्टर 18 बी, चडीगढ। 2 कु० विद्यावती जी आनन्द, पूर्व प्रि०, हसराज महिला महाविद्यालय, जालन्धर। एन-66, पचशील पार्क, नई दिल्ली-17

आवश्यक सूचना

पजाब विश्वविद्यालय की दयानन्द शोध पीठ के अध्यक्ष पद से 30 4-88 को औपचारिक रूप से अवकाश ग्रहण करने तथा प्रोफेसर पद पर आगामी तीन वर्षों के लिए पुन नियुक्त हो जाने से मेरा निवास तथा विभाग का पता एक जुलाई 988 से निम्न प्रकार रहेगा— निवास – जी-2 पजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़, विभाग का पता—ई-1-115 पजाब विश्वविद्यालय चडीगढ़। दूरभाष-31409 (कार्यालय)

मुद्रक प्रकाशक श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाडी धीरज (फोन 527335) दिल्ली से छपवाकर कार्यालय 'आर्य जगत्' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली। (फोन 343718)

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य —30 रुपये विदेश मे 65 पौ० या 125 डालर वर्ष 51, अंक 38 रविवार 18 सितम्बर, 1988 दूरभाष: 3 4 3 7 1 8
आजीवन सदस्य-251 रु० इस अंक का मूल्य— 75 पैसे सृष्टि संवत 1972949089 दयानन्दाब्द 163 श्रावण शु०-7, 2045 वि०

अंग्रेजी

—मैथिलीशरण गुप्त—
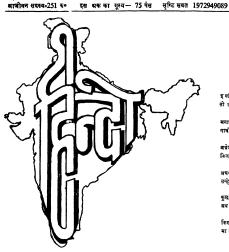
इंगलिश को भारत की भाषा अवश्य बना लेते हैं आप,
तो उस गोरी सत्ता ने ही किया कौन-सा ऐसा पाप।

मना लीजिए क्यो न उसे भी और कीजिए मृदुलालाप,
गाधी फिर थोडे आवेगा, सो भी देने को अभिशाप!

अंग्रेजी चलती न एक पल, यदि वह बूढ़ा होता आज,
निजभाषा के बिना राष्ट्र क्या, हरि के नाम हमारी लाज।

अधगोरे साहब ने पूरा अंग्रेजो को ही साधा,
उन्हे ज्ञात है पूरा मागो, तब मिल पावेगा आधा।

कुछ ऐसी ही बात सुनी थी, आई थी जब खादी हाय!
अब भी कुछ पुंगव कहते हैं, हिंदी यहा न लादी जाय।

किसने किस पर लादी हिन्दी? अंग्रेजी लादे रहिए।
मा कहकर ही हम कृतार्थ हैं आप यथेष्ट ममी कहिए।

भूकम्प राहत कार्य जोरों पर

आर्य समाज के प्रसिद्ध समाज सेवी एव डी ए वी के रीजनल डायरेक्टर भू पू प्रिंसिपल दयानन्द कालेज, हिसार श्री नारायण दास ग्रोवर का जिन्हें बिहार भूकम्प राहत कार्य चलाने हेतु भेजा गया है, 8 सितम्बर को प्रात रांची से फोन आया है कि उन्होने जिला दरभंगा तथा जिला मुंगेर मे चार भूकम्प राहत केन्द्र खोल दिये हैं। वहा हमारे कार्यकर्ता भूकम्प से पीडित लोगो के पास जाकर खाद्य सामग्री एव कपडे आदि वितरित कर रहे हैं और मकान बनाने के लिए आर्थिक सहायता भी दे रहे हैं।

ड्राफ्ट द्वारा उन्हें आर्थिक सहायता एव कपडो के 30 बंडल भिजवाए जाए चुके हैं। जैसे-जैसे हमारे पास नकद राशि, खाद्य सामग्री, तथा कपडे आदि आ रहे हैं, हम उन्हें भिजवाते जा रहे हैं।

मेरी समस्त देशवासियों से प्रार्थना है कि वे अधिक से अधिक खाद्य सामग्री कपड़े तथा नकद राशि आदि एकत्र कर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के नाम 'केवल खाते मे' वाले चैक या ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के पते पर भिजवाने की कृपा करें। यह बडा पुण्य का कार्य है।

—रामनाथ सहगल,
मंत्री आर्य प्रादेशिक सभा

'आर्य जगत्' के सम्पादक का अभिनन्दन

तीन सितम्बर, 1988 को कृष्ण जन्माष्टमी के दिन सामवेद परायण यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् प्रसिद्ध पत्रकार 'आर्य जगत्' के सम्पादक आर्य विद्वान् श्री क्षितीश वेदालंकार का आर्यसमाज नयांबास दिल्ली में, उनके 72 वर्ष पूर्ण करने के उपलक्ष्य मे हार्दिक अभिनन्दन किया गया। वे पहले कई वर्ष तक इस समाज के प्रधान रह चुके हैं और अब भी इसी समाज के प्रतिष्ठित सदस्य है। समाज के वर्तमान अधिकारियो ने उन्हें पुष्पमालाओ से लाद दिया। तत्पश्चात् मंत्री श्री धर्मपाल जी ने आर्य समाज और श्री प० चन्द्रभानु जी शर्मा स्मारक न्यास की ओर से सम्मिलित रूप से प्रदत्त अभिनन्दन पत्र पढा। न्यास की ओर से स्वर्गीय शर्मा जी के सुपुत्र डा० रामस्वरूप जी ने उन्हें 1,100 रु० भेंट किये। श्री क्षितीश वेदालंकार ने आर्य बन्धुओ का आभार प्रकट करते हुए कहा कि यह अभिनन्दन मेरा नहीं, प्रत्युत आपके उस स्नेह का है जिसके कारण स्नेह करने वाले को अपने स्नेहपात्र के अवगुण भी गुण प्रतीत होते हैं।

प्रेषक—मंत्री आर्यसमाज

पाठकों, ग्राहकों और लेखकों से निवेदन

1 कृपया अंग्रेजी मे समाचार मत भेजिए।
2 कृपया नेकटाई वाली फोटो मत भेजिए।
3 किसी भी शिकायत के निवारण के लिए ग्राहक संख्या अवश्य लिखें। पते पर आपके नाम से पहले वाली संख्या ही आपकी ग्राहक संख्या है'
4 रचना फुलस्केप कागज पर दोनो ओर हाशिया छोडकर, एक ही ओर साफ अक्षरो मे लिखें या टाइप करवायें। रचना कार्ड पर या अन्तर्देशीय पत्र में लिख कर न भेजें।
5 अन्य पत्रो को भेजी गई रचनाएं न भेजें।
6 अन्य ग्रन्थो से उद्धृत रचनाए अपने नाम से न भेजें।
7 आर्यसमाजो के चुनाव, उत्सव, या पर्वों के विवरण संक्षेप से लिखें।
8 करोडो रुपया की अफलातूनी योजनाओ और प्रधानमंत्री तथा राष्ट्रपति को भेजे अविनय पूर्ण पत्रो को छापने का आग्रह न करें।
9 व्यक्तिगत आलोचनापरक लेख हमे न भेजे।
10 रचना की वापसी के लिए, टिकट लगा, पता लिखा, लिफाफा भेजने पर सुविधा होगी।

सम्पादक—क्षितीश वेदालंकार व्यवस्थापक—रामलाल मलिक

सैंकड़ों हरिजनों को यज्ञोपवीत दिए गए

समस्त आर्य समाजो की ओर से समता दिवस का आयोजन

तीन सितम्बर को योगिराज श्रीकृष्ण जन्मोत्सव पर्व दिल्ली की समस्त आर्य समाजो की ओर से आर्य समाज दीवानहाल मे समारोह पूर्वक मनाया गया। एक सप्ताह से चल रहे यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति से पूर्व सैंकडो हरिजन युवको का सामूहिक यज्ञोपवीत सस्कार किया गया।

समारोह मे मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए केन्द्रीय इस्पात और खान मन्त्री श्री योगेन्द्र मकवाना ने कहा—योगीराज कृष्ण का जीवन हमे एकता और समता का सदेश देता है। हिन्दू जाति मे व्याप्त कुरीतियों तथा बुराइयो को दूर करने के लिए आर्य समाज द्वारा किया जा रहा प्रयत्न सराहनीय है। हरिजनो को समाज मे गौरवपूर्ण स्थान दिलाने के लिए आज समस्त दिवस समारोह का यह कार्यक्रम इसी का प्रतीक है। समारोह के अध्यक्ष स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा—योगीराज कृष्ण जहा आध्यात्मिक सत थे, वही वह प्रखर समाज सुधारक भी थे। हिन्दू जाति अपनी प्राचीन सास्कृतिक सम्पदा के बल पर, विदेशी आक्रान्ताओ के अनेक आक्रमणो के बावजूद आज भी सगठित और समृद्ध हैं। हरिजनो के मदिर प्रवेश पर रूढ़िवादी और सकीर्ण मनोवृत्ति के लोगो ने आपत्तिया करके हिन्दू जाति को कमजोर करने का दुस्साहस किया है। किन्तु आर्य समाज के मदिर सबके लिए समान रूप से खुले हुए हैं। हरिजनो को यहा आने, इसका सदस्य बनने और विद्या ग्रहण करने का पूरा अधिकार है। आर्य समाज के गुरुकुल व शिक्षण सस्थाए भी उनके लिए समान रूप से खुली हुई हैं। सैंकडो हरिजन आर्य समाज मदिरो मे पुरोहित के कार्य पर लगे हुए हैं। आर्य समाज कर्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था को मानते हुए हरिजनो को हिन्दू जाति का आधार स्तम्भ मानता है। 1982 में मीनाक्षीपुरम गाव के सभी हरिजनो का इस्लामीकरण किया गया था, आर्य समाज ने पुन सबको शुद्ध किया और हिन्दू जाति मे वापस लाने का महान कार्य किया। आज हम सबको इस देश मे जात-पात और छुआछूत को मिटाने का सकल्प करना चाहिए।

इस अवसर पर सनातन धर्म सभा के प्रमुख विद्वान श्री रमाकान्त गोस्वामी, प्रसिद्ध विद्वान डा० वाचस्पति उपाध्याय, प० शिव कुमार शास्त्री और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल और मन्त्री श्री सूर्यदेव ने भी अपने अपने विचार प्रकट किए।

भाषण प्रतियोगिता

स्वर्गीय प० देवव्रत 'धर्मेन्दु' जी की पुण्य स्मृति मे आर्य युवक परिषद्, दिल्ली (पजी०) व आर्यसमाज पुलबगश के सयुक्त तत्वावधान मे 18 सितम्बर 88 को प्रात 9 बजे से स्कूल के छात्र-छात्राओ की एक भाषण प्रतियोगिता "वर्तमान राष्ट्रीय सदर्भ मे युवको का दायित्व' विषय पर आर्य समाज पुलबगश, नया मुहल्ला, नजदीक आजाद मार्किट चौक, नई दिल्ली-6 मे होगी। —जुगल किशोर प्रधान

लाइब्रेरियन की आवश्यकता है

—आर्य समाज फरीदाबाद ओल्ड सैक्टर 19 का वार्षिक उत्सव 16, 17, 18 सितम्बर को हो रहा है—मन्त्री नकुलदेव चौधरी

आवश्यक बैठक

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली की एक आवश्यक बैठक 17-9-88 साय 6-30 बजे होगी।—धर्मपाल आर्य कार्यालय मन्त्री

—आर्य समाज अर्बन स्टेट करनाल का वार्षिक उत्सव 16 से 18 सितम्बर को बडी धूमधाम से मनाया जा रहा है।—शान्तिप्रकाश आर्य मन्त्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस

वेद सस्थान, सी 22 राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-27 में भाद्रपद शुक्ला 9, तदनुसार 20 सितम्बर को साय 6॥ बजे से रात्रि 9 बजे तक युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती का 165 वा जन्म दिवस समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। समारोह की अध्यक्षता डा० वाचस्पति उपाध्याय करेंगे और मुख्य अतिथि तथा मुख्य वक्ता होगे श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी। दयानन्द चरितामृत का गायन करेंगी श्रीमती चन्द्र प्रभा जी।—मन्त्री मोहनलाल आर्य

डा० सत्यकाम भारद्वाज का 89वां जन्म दिवस

प्रसिद्ध आर्य विद्वान डा० सत्यकाम भारद्वाज जी के 88 वर्ष पूर्ण कर 89वें वर्ष मे प्रवेश करने पर आयुष्काम यज्ञ के पश्चात् 'आर्यजगत्' के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालकार ने समस्त परिवार की ओर से प्रार्थना करते हुए कहा कि प्रभु ऐसी कृपा करें कि डा० साहब का वरद हस्त चिरकाल तक हम सब पर बना रहे और उनका आशीर्वाद प्राप्त होता रहे। डा० साहब ने 'टैक्नोलोजी आफ दि वेदाज' नामक बृहद् ग्रन्थ अग्रेजी मे दो खण्डों में लिखकर आर्य समाज को समर्पित कर दिया है। अब आर्य प्रादेशिक सभा और डी ए वी कालेज कमेटी इसे प्रकाशित करेगी। यज्ञ के पश्चात डा० साहब के परिवार की ओर से बिहार के भूकम्प पीडितों के लिए 500 रु० दान दिया गया।

त्रिभाषा सूत्र और सस्कृत

नई शिक्षा नीति के अनुसार त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत हिन्दी, अग्रेजी और 15 क्षेत्रीय भाषाओ (सस्कृत उर्दू, असमिया, बगला, गुजराती, कश्मीरी, मराठी, उडिया, पजाबी सिन्धी कोकणी, तमिल, तेलगु कन्नड और मलयालम) मे कोई एक भाषा पढ़नी है। उत्तर भारत में तो तमिल-तेलगु-कन्नड-मलयालम में कोई एक भाषा पढ़ने का प्रावधान है।

भाषाओं के द्वारा भारत की एकता को सबल प्रदान करना है तो विश्व की प्राचीनतम भाषा सस्कृत ही एक ऐसी भाषा है जिसके शब्द सभी भाषाओं में हैं। सभी भाषाओं की समृद्धि हेतु कक्षा 6 से 12 तक 50 प्रतिशत हिन्दी+50 प्रतिशत सस्कृत—एक भाषा के रूप में पढ़ायी जानी चाहिये तभी समस्या का हल हो सकता है। —स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती (फलाहारी) आर्य समाज, पिथौरागढ़ (उत्तर प्रदेश)

सुभाषित

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मी. समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्याय्यात् पथ· प्रविचलन्ति पद न धीरा ॥

—भर्तृहरि

चाहे नीतिनिपुण जन निन्दें, चाहे सस्तुति करें अपार
चाहे लक्ष्मी आवे अथवा चली जाय इच्छा अनुसार ।
चाहे मरण आज ही होवे या युगांत में जाय शरीर
किन्तु न्याय-पथ से पद भर भी कभी न होते विचलित धीर ॥

—गोपालदास गुप्त

सम्पादकीय

आर्य समाज और बल्लभ सम्प्रदाय

पिछले दिनों पुरी के शकराचार्य श्री निरजनदेव तीर्थ द्वारा नाथद्वारा के मन्दिर में हरिजनों के प्रवेश के प्रश्न को लेकर स्वामी अग्निवेश ने जो आर्य समाज की पदयात्रा निकाली थी, उसकी चर्चा सारे देश में हुई। नाथद्वारा का मन्दिर बल्लभाचार्य द्वारा स्थापित वैष्णवो के पुष्टिमार्गीय सम्प्रदाय का है। नाथद्वारा की सारी बस्ती और वहा के निवासियों के जीवन का आधार एक तरह से नाथद्वारा का मन्दिर ही है, इसलिये उसके साथ नाथद्वारावासियों की केवल भावनायें ही नहीं, बल्कि स्वार्थ भी जुडे हुए हैं। इसलिये नाथद्वारा के मन्दिर की किसी भी मर्यादा का उल्लघन उन लोगो को अपने स्वार्थों पर आघात प्रतीत होता है। स्वभावतः वे इस प्रकार के किसी भी आन्दोलन का विरोध करेंगे ही।

दूसरी ओर कुछ ऐसे बुद्धिजीवी लोग हैं, उनमें आर्य समाजियो की सख्या भी कम नही है, जो यह कहते हैं कि जब स्वामी अग्निवेश तथा अन्य आर्य समाजी मूर्ति-पूजा के विरोधी हैं तो वे हरिजनो को देवदर्शन के लिये मन्दिर में प्रविष्ट कराने का आन्दोलन क्यो करते हैं। यह हिन्दू समाज को विघटित करने की, या कुछ नेताओ की अपनी राजनैतिक नेतागीरी चमकाने की चाल मात्र है।

हम इस सम्बध में दो ऐतिहासिक तथ्यो की ओर समस्त देशवासियो का ध्यान खींचना चाहते हैं जिससे यह पता लगेगा कि नाथद्वारा मन्दिर मे हरिजनो के प्रवेश का आन्दोलन आर्य समाज ने क्यो उठाया। इन ऐतिहासिक घटनाओ के प्रकाश में आर्यसमाज की मनोवृत्ति को समझने मे आसानी होगी।

आर्य समाज की स्थापना सन् 1875 में हुई थी। उससे कई साल पहले, सन् 1862 में, बम्बई हाई कोर्ट में एक महत्वपूर्ण मुकद्दमा चला था जो "महाराज लाइबल केस" के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह मुकदमा लगभग 10 वर्ष तक चलता रहा। "सत्यप्रकाश" नामक समाचार पत्र के सम्पादक ने बल्लभाचार्य और उनकी शिक्षा तथा आचार-विचार की आलोचना करते हुए उक्त सम्प्रदाय के तत्कालीन आचार्य की आन्तरिक लीलाओ पर लेख प्रकाशित किया था जिससे उद्विग्न होकर गोस्वामी सम्प्रदाय के आचार्य ने पत्र पर मानहानि का मुकद्दमा चलाया। उन्होंने अपने सम्प्रदाय का मूल आधार वेद, पुराण तथा अन्य धर्मशास्त्रो को बताया, परन्तु अदालत में वे वेदों और ब्राह्मण ग्रन्थों के प्रमाण तो क्या, उनके नामो का भी ठीक ठीक उल्लेख नहीं कर सके। परिणामस्वरूप उनका मानहानि का दावा खारिज हुआ और अन्त में "सत्यप्रकाश" की विजय हुई।

इस मुकदमे से इस सम्प्रदाय के अनुयायियो मे अपने सम्प्रदाय के सम्बध में तरह तरह की शकायें उठने लगी। मुकदमे के दौरान जब पुष्टिमार्ग के अन्य आचार्यो की लीलाओं की पोल खुलने लगी तब सम्प्रदाय के अनुयायियो मे अपने गुरुओं और सम्प्रदाय के प्रति सहज विरक्ति का भाव पैदा हुआ। जिन दिनों 'लाइबल केस' चल रहा था उन्हीं दिनों समाचार पत्रो में ऋषि दयानन्द के काशी शास्त्रार्थ की धूम मची हुई थी, वे समाचार बम्बई में भी पहुच रहे थे और वहा के समाज सुधारकों और बुद्धिजीवियों में ऋषि दयानन्द के प्रति कौतूहल जागृत होने लगा था। वे लोग इन समाचारो को तथा ऋषि दयानन्द के अन्य भाषणो के समाचार पत्रो मे छपे विवरणों को बडे चाव से पढते और आपस में तथा अपने मित्रों में उनकी चर्चा करते। समाज सुधारको को ऋषि के विचारो से अपने कार्यों में बड़ी प्रेरणा और सहायता मिलती थी।

संयोग की बात है कि तभी मध्य प्रदेश और जबलपुर आदि का भ्रमण करते, वहा भाषण देते और शास्त्रार्थ करते हुए ऋषिदयानन्द सन 1874 ईस्वी के नवम्बर मास में बम्बई आ विराजे। ऋषि ने अपने बम्बई आने की सूचना अपने पूर्व परिचित व्यक्तियों को दे दी थी। उन महानुभावो ने ऋषि का भावभरा स्वागत किया और उनके निवास के लिये नगर के कोलाहल से दूर बालकेश्वर में प्रणामी सम्प्रदाय के मठ में व्यवस्था की। उन्हीं महानुभावों ने समाचार पत्रो में नगर में ऋषि के पधारने की सूचना प्रकाशित करवाई और यह विज्ञापन छपवा कर वितरित किया कि जिस किसी को धर्म के सम्बध में या वेदादि शास्त्रों के सम्बध में कोई शका हो, तो वह ऋषि के निवास स्थान पर आकर अपनी शकाओ का समाधान कर सकता है। इसके अतिरिक्त धोबी तालाब स्थित फ्रामजी कावसजी इन्स्टीट्यूट के सभागार मे नियमित रूप से स्वामी जी के सार्वजनिक व्याख्यानो की व्यवस्था की गई। महर्षि के विद्वतापूर्ण और तर्कपूर्ण व्याख्यानो को सुनकर तथा उनके निवास स्थान पर जाकर शका समाधान करने वाले लोग एव अन्य धर्म सुधारक ऋषि के विचारो से बहुत प्रभावित हुए। इन प्रभावित होने वाले लोगों में कुछ भाटिया सेठ भी थे जिनमे से कई पुष्टिमार्गीय बल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायी थे। कभी कभी वल्लभ सम्प्रदाय के पुरस्कर्ता पडित भी ऋषि के पास आकर शास्त्र चर्चा किया करते थे। परन्तु ऋषि का पाण्डित्यपूर्ण उत्तर सुनकर वे निरुत्तर हो जाते और विचलित भी हो जाते। ज्यों ज्यो पुष्टिमार्ग सम्प्रदाय के अनुयायियों मे इन विचारो की चर्चा बढने लगी, त्यों-त्यो आर्य समाज के जन्म की पृष्ठ भूमि तैयार होती गई।

अन्त मे महर्षि के विद्वतापूर्ण और युक्तियुक्त व्याख्यानो से मुग्ध होकर अनेक सदगृहस्थो और समाज सुधारकों ने एक दिन प्रवचन के पश्चात् रात्रि के समय ऋषि की सेवा में निवेदन किया कि यदि किसी सभा या सस्था की स्थापना हो जाए तो आपके इस पवित्र कार्य को स्थायी रूप मिल जाये, जिससे देश और जाति का बहुत भला होगा। तब ऋषि ने उत्तर दिया कि "आज देश में धार्मिक सस्थाओ और पथों की कमी नहीं है। मैं कोई अपनी बनाई हुई नई बात नही कहता। मैं तो वेद और शास्त्रों में प्रतिपादित बातों का ही उपदेश करता हू। हमारे देश में 25 कोटि आर्य हैं। उनमे आपस मे कुछ बातो में मतभेद है। परन्तु वे सब प्रेम पूर्वक विचार विमर्श करेंगे तो वे मतभेद भी स्वय दूर हो जायेंगे। यदि सस्था मे पुरुषार्थ करके परोपकार कर सको तब तो मेरी कोई मनाही नहीं किन्तु यदि यथोचित व्यवस्था न रखोगे तो आगे चलकर गडबडाध्याय हो जायेगा। मैं तो जैसे अन्यो को उपदेश करता हू वैसा ही आप लोगों को भी करूगा। इतना लक्ष्य में रखना कि मेरा कोई स्वतन्त्रमत नहीं है और मैं सर्वज्ञ भी नही हू। यदि मेरी भी कोई गलती आगे चलकर पाई जाये तो युक्तिपूर्वक परीक्षा करके उसे भी सुधार लेना। नहीं तो आगे चलकर यह भी एक मत हो जायेगा। आज भारत में जितने भी मत मतान्तर प्रचलित हैं, वेद शास्त्र रूपी समुद्र मे मिला देने पर नदियों के समान सबका पुन धर्म ऐक्य हो जायेगा, इससे धार्मिक, सामाजिक और व्यावहारिक सुधारणा आपोआप हो जायेगी।"

इसके बाद सस्था के नियम और विधान तैयार किये गये और लगभग 60 सज्जन प्रथम सभासद बनने को तैयार हुए गुजरात और महाराष्ट्र के ऐसे कई प्रसिद्ध व्यक्ति भी शामिल थे। पुष्टिमार्ग के जिन अनुयायियो ने भावी आर्य समाज के सभासद होने की उत्सुकता दिखाई, उनको उनके धर्माचार्यों ने जातीय बहिष्कार की धमकी दी। उन्हीं दिनों बल्लभ सम्प्रदाय के पडित गुट्टूलाल जी ने महर्षि के साथ शास्त्रार्थ करने की चुनौती दी। परन्तु वे शास्त्रार्थ करने के लिए नहीं आये। तब महर्षि ने पुष्टि मार्ग के सिद्धान्तो के खडन में अपने प्रवचन प्रारम्भ कर दिये। जनता में 'वेद में मूर्ति पूजा है या नहीं' इस विषय को लेकर काफी ऊहापोह चलती रही। परन्तु स्वामी जी के प्रबल तर्कों और प्रखर पाण्डित्य के सामने किसी की भी दाल नहीं गली। तब अन्त मे पुष्टिमार्ग के उन्हीं अनुयायियो ने स्वामी जी के पक्ष में दलबद्ध होकर भारत भूमि में आर्य समाज का पुण्य बीजारोपण किया।

इसके लगभग 100 साल के बाद एक दूसरी ऐतिहासिक घटना घटी।

बम्बई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशक श्री वेद मित्र ठाकोर ने गुजराती मासिक पत्रिका 'वेद विज्ञान' के दिसम्बर 1961 ईस्वी के अक मे अत्रि स्मृति का 382 वा निम्न श्लोक उद्धृत किया—

वेदैर्विहीनाश्च पठन्ति शास्त्र, शास्त्रेण हीनाश्च पुराणपाठा ।
पुराणहीना कृषिणो भवन्ति, भ्रष्टास्ततो भागवता भवन्ति ॥

इसका अर्थ उन्होने किया था—"वेदज्ञान रहित शास्त्र बाचते हैं, शास्त्रज्ञान रहित मनुष्य खेती करते हैं और भ्रष्टाचारी अधम मनुष्य भागवत बाचते हैं।" इस लेख पर पुष्टिमार्ग के अनुयायियों ने कचहरी में अभियोग चलाया। बम्बई आर्य

(शेष पेज 10 पर)

भारत की राजभाषा हिन्दी ही क्यों ?

—डा. राम कुमार मिश्र—

भारत एक महान देश है। इसमें अनेक भाषाए और बोलिया हैं जिनकी एक समृद्ध परम्परा है। हिंदी भी इस देश की एक भाषा है जो निरन्तर विकासशील है। इसका इतिहास एक हजार वर्ष से अधिक पुराना है। इसका विकास प्राकृत भाषा माना जाता है। हिन्दी के सबध में यह एक भ्रांत धारणा है कि यह किसी एक प्रदेश विशेष की भाषा है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और दिल्ली को हिन्दी भाषी क्षेत्र माना जाता है। वस्तुत: इन प्रदेशों में हिन्दी की अनेक बोलियां प्रचलित हैं जैसे देश के अन्य प्रदेशों में। उत्तर प्रदेश में कन्नौजी, अवधी और ब्रज, मध्य प्रदेश में बुंदेलखंडी, बिहार में मगही, भोजपुरी; राजस्थान में जयपुरी, मेवाड़ी या डिंगल, हरियाणा और दिल्ली में खड़ी बोली तथा हिमाचल प्रदेश में पहाड़ी बोलियां बोली जाती हैं। इन प्रदेशों के शहरी क्षेत्रों में हिन्दी का विकास हुआ है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुसार हिन्दी भाषा की प्रसार-वृद्धि करना, उसको विकसित करने का दायित्व सघ सरकार का है। उसका विकास ऐसे रूप में किया जाना है जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके।

भारत में अनेक धर्म और भाषाए होते हुए भी संस्कृति के माध्यम से वह एकता के सूत्र में बधा है। इस एकता के सूत्र को परिपुष्ट किया हमारे संतों, सुधारकों और प्रचारकों ने। इसके लिए उन्होंने ऐसी भाषा को अपनाया जो किसी न किसी रूप में देश के लगभग सभी भागों में समझी और बोली जाती थी। हमारे स्वतन्त्रता संग्राम को पूरे देश में एक साथ चलाने के लिए भी ऐसी ही भाषा की आवश्यकता थी। इस कार्य को कर पाने में समक्ष केवल एक ही भाषा पाई गई और वह थी हिन्दी।

हिन्दी देश के सर्वाधिक लोगों द्वारा समझी जाती थी। इस समर्थ तथ्य को ईसाई मिशनरियों ने भी पहचाना। उन्होंने कलकत्ता के पास श्रीरामपुर में एक हिन्दी-प्रेस की स्थापना करके ईसाई धर्म का साहित्य बड़ी मात्रा में प्रकाशित किया। ईसाई अपने धर्म प्रचार के लिए हिन्दी का प्रयोग कर रहे थे, वहीं दूसरी ओर केशव चंद्र सेन, स्वामी दयानन्द समाज सुधार के लिए हिन्दी में प्रचार कर रहे थे। अठारहवीं शताब्दी में कच्छ के राजा ने ब्रज में ब्रज भाषा की एक पाठशाला खोली। उससे हिन्दी की शिक्षा को बढ़ावा मिला और नरसी मेहता जैसे अनेक कवियों ने हिन्दी में कविता लिखी। महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता संग्राम को व्यापक बनाने के लिए हिन्दी को ही माध्यम बनाया। बंगाल में राजा राम मोहन राय ने "ब..." नामक पत्र प्रकाशित किया उसमें हिन्दी के महत्व पर बल दिया। जस्टिस शारदा चरण मित्र ने "एक लिपि विस्तार परिषद" की स्थापना की। सभी भाषा की उत्तम कृतियों को देवनागरी लिपि में प्रकाशित करने की पहल की। नगेन्द्रनाथ वसु का एक विश्वकोश हिन्दी में 25 भागों में प्रकाशित किया। "सरस्वती" और "विशाल भारत" जैसी पत्रिकाओं का प्रकाशन किया गया। एक अन्य हिन्दीतर क्षेत्र पंजाब में श्री नवीन चंद्र राय ने पंजाब विश्वविद्यालय में रत्न, भूषण और प्रभाकर की परीक्षाओं का प्रचलन किया। महाराष्ट्र में शिवाजी महाराज के दरबार में हिन्दी कवि भूषण की मौजूदगी, उस प्रदेश में हिन्दी के प्रचलन की साक्षी है। भारतेन्दु युग में आन्ध्र प्रदेश के नादेल्ल पुरुषोत्तम कविजी हिन्दी में मौलिक लेखन कर रहे थे। केरल के राजा स्वाति तिरूनाल ने ब्रजभाषा में भक्ति पदों की रचना की। तमिल भाषा के महाकवि सुब्रह्मण्यम भारती ने 1908 में मद्रास में हिन्दी की कक्षाएं प्रारम्भ कीं। आज जिन प्रदेशों का हिन्दी भाषी क्षेत्र कहा जाता है, वहां हिन्दी के विकास और प्रसार की प्रक्रिया निरन्तर चलती रही थी। इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी अतीतकाल में ही पूरे भारत वर्ष में अपना स्थान बना चुकी थी और विद्वान निर्विकार भाव से हिन्दी भाषा के प्रचार और प्रसार में लगे हुए थे।

हमारे स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान 1925 ई० में कांग्रेस ने कानपुर अधिवेशन में यह निश्चय किया कि राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी और प्रांत स्तर पर प्रांतीय भाषा का प्रयोग किया जाए। 1929 ई० में राजाजी ने कहा था—"हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा तो है ही, वही जनतन्त्रात्मक भारत की राजभाषा भी होगी।" हिन्दी के इस महत्व को देखते हुए विभिन्न प्रान्तों में हिन्दी प्रसार सभाओं की स्थापना की गई और हिन्दी के पठन-पाठन की व्यवस्था की गई। संविधान सभा ने हिन्दी के व्यापक प्रचार को देखते हुए संविधान के अनुच्छेद 343 में व्यवस्था रखी कि संघ की सरकारी भाषा देवनागरी लिपि में हिन्दी होगी। साथ ही यह भी कहा गया कि संघ के सरकारी कामकाज में नागरी अंकों के स्थान पर अंतर्राष्ट्रीय अंकों के प्रयोग की अनुमति होगी।

आजादी से पहले उत्तर, दक्षिण, पश्चिम और पूर्व—सभी दिशाओं से हिन्दी को राजभाषा बनाने की आवाज उठती थी किन्तु "हिन्दी ही क्यों?" का प्रश्न उस समय नहीं उठा। यह तथ्य स्वत इसे सिद्ध करता है कि हिन्दी ही एकमात्र ऐसी भाषा थी जिसे भारत की राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित किया जा सकता था।

भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में जिन भाषाओं को मान्यता दी गई है, वे हैं—असमिया, उड़िया, उर्दू, कन्नड, कश्मीरी, गुजराती, तमिल, तेलगू, पंजाबी, बंगला मराठी, मलयालम, संस्कृत, सिंधी और हिन्दी। इनमें से सभी भाषाएं पुरानी और समृद्ध हैं। इनमें से अधिकांश किसी-न-किसी राज्य में बोली जाती हैं। इनमें से 10 भारतीय आर्य-कुल की हैं और उन पर संस्कृत का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष प्रभाव है और उन पर संस्कृत का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष प्रभाव है। चार भाषाएं द्रविड कुल की हैं। इन पर भी संस्कृत का काफी प्रभाव है। तमिल पर भी संस्कृत का प्रभाव है। मलयालम पर संस्कृत का बहुत प्रभाव है। जहां भाषाएं एक दूसरे के बहुत निकट हैं वहीं इण्डो-आर्यन और द्रविड कुल की भाषाओं में व्याकरण और वाक्य विन्यास की अनेक समानताएं हैं। दर्शन, धर्म, ज्योतिष, आयुर्वेद आदि के क्षेत्र में सभी भाषाओं में संस्कृत शब्दावली बहुत है। मुगल शासन के दौरान सभी भाषाओं ने कुछ-न-कुछ मात्रा में अरबी-फारसी के शब्दों को राजस्व और प्रशासन के लिए अपना लिया। ब्रिटिश शासनकाल में अंग्रेजी के शब्द सभी भाषाओं में घुलमिल गए।

भारत की अनेक भाषाओं की लिपियां भी देवनागरी के काफी निकट हैं। तमिल की लिपि देवनागरी के काफी नजदीक है। हां, उसमें महाप्राण ध्वनियां हैं इसलिए वर्णमाला सबसे छोटी है। उर्दू को छोड़कर लगभग सभी भाषाओं की वर्णमाला मिलती-जुलती हैं। अनेक भाषाओं की वर्णमाला मिलती-जुलती है। अनेक भाषाओं में एकता के सूत्र होने के बावजूद भारत को एक राष्ट्रभाषा की आवश्यकता थी, जो देश के भीतर संपर्क, शिक्षा और राजकाज की भाषा हो सके और अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज पर देश का गौरव बन सके।

कोई भी राष्ट्र "राष्ट्रभाषा" के बिना गूंगा होता है। विदेशी भाषा को राजभाषा अथवा राष्ट्रभाषा के रूप में बनाए रखना या अपना लेना देश के आत्म-सम्मान के विपरीत था। ऐसे अनेक देश हैं जहां अनेक भाषाए होते हुए भी राष्ट्रभाषा या राजभाषा के रूप में एक ही भाषा को अपनाया गया है। रूस में 66 भाषाएं बोली और लिखी जाती हैं किन्तु राजभाषा एक ही अर्थात् रूसी है। ऐसा भी उदाहरण है कि अनेक राष्ट्र भाषाओं के बीच संपर्क भाषा के रूप में एक नई भाषा का विकास किया गया है। इण्डोनेशिया की "भाषा इण्डोनेशिया" ऐसी ही भाषा है।

संक्षेप में, हिन्दी एक समृद्ध भाषा है। उसमें विकास की अद्भुत क्षमता और संभावनाएं हैं। हिन्दी के इसी गुण के कारण उसने देश भर में अपने लिए स्थान बनाया और देश के कोने-कोने में उसको समझने-समझाने वाले मौजूद हैं। देश की आबादी का एक बड़ा हिस्सा इसको सम्पर्क भाषा के रूप में अपना चुका है। स्वतन्त्रता के बाद देश को एक भाषा को चुनना था जो देश के भीतर सम्पर्क भाषा का काम कर सके और अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर देश का प्रतिनिधित्व कर सके। अंग्रेजी से यह कार्य लेना हमारे गौरव के अनुकूल नहीं था। हिंदी ही एक ऐसी भाषा थी जो भारत को एक समग्र राष्ट्र के रूप में प्रतिष्ठित कर सकती थी। यही कारण था कि हिन्दी को राजभाषा का पद मिला। हम सब का यह पुनीत कर्तव्य है कि अपनी राष्ट्रभाषा को राष्ट्रध्वज के समान सम्मान दें और जल्दी-से-जल्दी अंग्रेजी के स्थान पर राजभाषा हिन्दी को आसीन करें।

उप निदेशक (राजभाषा)
के०लो०नि०वि०, निर्माण भवन,
नई दिल्ली

> 'किसी भाषा का विकास तब होता है जब वह जनसाधारण के हृदय में स्थान पाती है। हमने अपने संविधान में हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया है। इस लिए हमें देखना है कि सरकारी काम काज में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग हो।
>
> —प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी

हिन्दी की पहल कौन करे ?

—हरिबाबू कसल—

स्वतंत्र भारत मे भी चारों ओर अंग्रेजी का बोलबाला दिखाई पड़ता है। ऐसा क्यों ? क्या हममें राष्ट्रीय स्वाभिमान का सर्वथा अभाव है अथवा हीन भावना की मात्रा अत्यधिक है या देश में हिन्दी से प्रेम रखने वाले व्यक्ति बहुत कम हैं ?

हिन्दी से प्रेम रखने वाले व्यक्तियों की संख्या कम नहीं है, किन्तु ऐसे अनेक हिन्दी प्रेमी मिलेंगे जो दूसरों को कहेंगे कि वे अपना काम हिन्दी में करें, किन्तु स्वय अपने अनेक काम अंग्रेजी में करते रहते हैं। जब भी कोई काम जरूरी करना होता है तो एक प्रश्न बार-बार मन में उठता है कि यदि वह काम हिन्दी में किया जाये तो वह हो पायेगा भी कि नहीं। इस डर के कारण कि हिन्दी का प्रयोग करने से काम में सफलता नहीं मिलेगी, कई लोग हिन्दी में कार्य करना प्रारम्भ नही करते।

कुछ लोग जो इस बात का आग्रह करते हैं कि समस्त कामों में अथवा अधिकांश कामों में हिन्दी का ही प्रयोग किया जावे, उन्हें सलाह दी जाती है कि वे सिद्धान्त की बातें न करें अपितु व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाए। 'व्यावहारिक दृष्टिकोण' अपनाने का अर्थ होता है कि उन्होंने जो कुछ किसी सरकारी विभाग को अथवा व्यापारिक अथवा औद्योगिक प्रतिष्ठानों को लिखना है, अंग्रेजी में ही लिखें। सिद्धान्त तथा व्यवहार में यह अन्तर काफी समय से चल रहा है। वास्तव में जब तक सिद्धान्त और "व्यवहार" में इसी प्रकार की दूरी बनी रहेगी, हिन्दी की वास्तविक प्रगति कभी नहीं हो पायेगी।

हिन्दी में काम करने से वह काम बन पायेगा या नहीं इसकी सैद्धान्तिक चर्चा करते रहने से विशेष लाभ नहीं होगा। अच्छा हो कि जीवन के कुछ उदाहरण सामने रख कर इसके विषय में कुछ विचार किया जाए। अब से लगभग 20 वर्ष पूर्व पहले की बात है। मेरे एक मित्र दिल्ली में एक सरकारी क्वार्टर अपने नाम अलाट कराना चाहते थे। उस समय विशेष परिस्थितियों में सरकारी कर्मचारियों को बिना बारी के आवंटन किए जाने की प्रथा थी। मेरे मित्र ने अपना आवेदन हिन्दी में दिया। सक्षम अधिकारी की निगाह उस आवेदन पर विशेष रूप से पड़ी। इसी प्रकार के अन्य सभी आवेदन अंग्रेजी में थे। इस हिन्दी आवेदन पर सर्वप्रथम विचार हुआ और उन्हें बिना बारी के सरकारी मकान मिल गया। आप स्वय विचार कीजिए कि उनके कार्य मे हिन्दी साधक बनी अथवा बाधक।

सन् 1969 में मैंने नई दिल्ली में अपने मकान के निर्माण के लिए नक्शा हिन्दी में बनवाया। जब नक्शा पास हो गया तो मैंने अपने आर्टिटैक्टर से पूछा कि क्या इसको पास कराने मे कोई कठिनाई हुई। विचित्र बात मालूम पड़ी कि सम्बन्धित कार्यालय में नीचे के जिस अधिकारी ने नक्शे को जांचा वह हिन्दी भाषी था और उसके ऊपर का अधिकारी बंगला भाषी।। हिन्दी जानने वाले अधिकारी ने ऊपर के अधिकारी से पूछा कि नक्शा हिन्दी में है क्या इसे पास किया जा सकता है ? बंगला भाषी अधिकारी ने प्रश्न पूछा 'क्या नक्शा नियमों के अनुकूल है अथवा उनके विपरीत।' यह बताये जाने पर कि नक्शा नियमों के अनुसार बना है, बंगला भाषी अधिकारी ने कहा– तब पास करने मे कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। नक्शा पास हो गया।

जब मकान बनाते समय ईंटों की बिक्री करने वाले व्यापारी से ईंटों का सौदा हुआ तो देखा मकान पर जो ईंट उतर रही हैं उन सब पर ईंट बनाने वाली कम्पनी का नाम हिन्दी में लिखा है, अंग्रेजी में नहीं, और सारा ही मकान हिन्दी की ईंटों से बन गया। जब बिजली का कनेक्शन लेने के लिए आवेदन हिन्दी में दिया तो काउन्टर पर बैठे लिपिक ने बड़े आश्चर्य से पूछा कि आवेदन हिन्दी में भरा है। आश्चर्य इसलिए कि उसे प्रतिदिन अंग्रेजी में लिखे आवेदन प्राप्त होते थे। किन्तु दूसरे ही क्षण उसने बड़े प्रेम से सारा ही काम बहुत शीघ्र निबटा दिया।

सिंडीकेट बैंक में अनेक कर्मचारी दक्षिण भारत के हैं। एक बार अपने खाते से रुपए निकलवाने के लिए वहां गया था। काउन्टर बन्द होने में कुछ ही क्षण बाकी थे। काउन्टर पर बैठा लिपिक दक्षिण भारतीय था। उसने पूछा—"आपका कोई चैक है"। मैंने कहा—"हां"। उसने दूसरे केबिन की ओर झांका और अंग्रेजी में कहा 'हां, एक चैक वहां पड़ा है, हिन्दी मे लिखा है, क्या आपका है ?" मैंने हिन्दी में नम्रतापूर्वक कहा-"जी हां वह चैक मेरा ही होगा, मैं अंग्रेजी नहीं जानता हू।" वह मुस्कराया और बोला "आपका चैक कितने रुपये का है। अपना टोकन मुझे दीजिए" जितने रुपए मैंने बताए उसने मेरे हाथ पर रखे, तब तक उसके पास मैनेजर द्वारा पास किया गया चैक पहुंचा नहीं था। बाद में एक दिन और उस व्यक्ति ने मेरे हिन्दी चैक का भुगतान, मेरे मौखिक रूप से बताने पर, बिना चैक प्राप्त हुए इसलिए कर दिया कि मेरा चैक हिन्दी में था और मैंने उससे नम्रतापूर्वक बात की थी। क्या ऐसे उदाहरण आपको कहीं मिलेंगे कि मौखिक आधार पर अंग्रेजी के चैक का भुगतान इस प्रकार से किया गया हो।

हिन्दी का चमत्कार

कई लोग सरकारी कार्यालयों में अपना आवेदन इसलिए अंग्रेजी में देते हैं कि उनको विश्वास है कि अंग्रेजी में लिखे आवेदनों पर ही जल्दी कार्यवाही होगी। मैंने कुछ हिन्दी आध्यापकों को अपने मामलों से सम्बन्धित आवेदन अंग्रेजी में देते देखा है। ऐसे कुछ व्यक्तियों को जब मैंने कहा कि क्या आपके अंग्रेजी के आवेदनों पर सचमुच जल्दी कार्यवाही होती है तो उन्होंने स्वय यह स्वीकार किया कि अंग्रेजी में लिखे हुए उनके आवेदन भी सम्बन्धित अनुभागों में 5-5 व 6-6 महीनों पड़े रहते हैं। अंग्रेजी में लिखे हुए उनके आवेदन पत्रो पर कार्यवाही होने में कितना विलम्ब होता रहा है इस पर कभी किसी ने ध्यान नहीं दिया। हम अकारण इस भय से आक्रान्त रहते हैं कि हिन्दी में लिखे आवेदन पर देरी हो जायेगी। तथ्य यह है कि हिन्दी के लिखे पत्रों पर कोई विशेष देरी होती नहीं और यदि होती भी हो तो क्या हिन्दी से सचमुच प्रेम रखने वाले व्यक्ति स्वयं इतनी असुविधा शुरू की अवस्था में सहन करने को तैयार नहीं होंगे। यदि उस असुविधा को सहन करने के लिए स्वय कोई तत्पर नहीं होगा और दूसरों से ही यह आशा की जाती रहेगी कि असुविधा सह करके भी दूसरे लोग ही हिन्दी के प्रयोग की शुरूआत करें, तब तो हिन्दी का व्यवहार प्रारम्भ ही नहीं हो पायेगा और न उसका क्षेत्र विस्तृत बन सकेगा।

जिन लोगों ने हिन्दी का प्रयोग प्रारम्भ किया है और विश्वासपूर्वक प्रारम्भ किया है उनका अनुभव यही बताता है कि हिन्दी में काम करने से न तो काम रुकता है और न प्रतिकूल प्रतिक्रिया होती है। प्रारम्भ में कुछ लोगो को हिन्दी में लिखा पत्र देखकर कौतुहल जरूर होता है और उसके बारे में कुछ पूछाताछी भी होती है, किन्तु यदि उसको हम सहज और सामान्य रूप से लें और थोडा धैर्य बरतें तो उन व्यक्तियों को भी हम अपने अनुकूल बना सकते हैं जिन्हें अभी तक हिन्दी के प्रति कोई लगाव नही था।

हिन्दी मे पासपोर्ट ?

सन् 1972 की बात है। मैं कनाडा तथा संयुक्त राज्य अमरीका जाने का कार्यक्रम बना रहा था। पासपोर्ट के लिए आवेदन दिया। यह आवेदन हिन्दी में भरा। काउन्टर पर बैठे लिपिक ने इस आधार पर वापस कर दिया कि फार्म हिन्दी में भरा गया है जब मैं उसे लेकर उसके अधिकारी के पास गया तो उसने भी लिपिक वाली बात दोहरायी। शायद उस कार्यालय के लिए यह बिलकुल नवीन बात थी कि विदेश जाने का इच्छुक कोई व्यक्ति पासपोट के लिए अपना आवेदन हिन्दी मे प्रस्तुत करे। मैंने नम्रतापूर्वक कहा कि "सरकारी कार्यालयों में हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं में विभिन्न फार्म उपलब्ध रहते हैं और उन्हें चाहे हिन्दी में भरा जाये या अंग्रेजी में, स्वीकार किया जाता है।" यह कहते हुए कि "मुझे अंग्रेजी का ज्ञान कम है और फार्म हिन्दी में भर दिया है, इसे स्वीकार कर लीजिए, "उस अधिकारी ने पूछा, "क्या आपका पासपोट हिन्दी में बनेगा ?" मैंने पुन. नम्रतापूर्वक कहा, "यह आपकी इच्छा है कि पासपोर्ट हिन्दी में बनाए या अंग्रेजी में, वैसे अन्य देश पासपोर्ट पर अपनी भाषा का प्रयोग भी करते हैं।" कुछ देर की बातचीत के बाद उस अधिकारी ने कहा, "अच्छा आप अपना आवेदन छोड दीजिए मैं इसका अनुवाद करवा लूंगा।" 'मैंने कहा इसमें मेरा नाम तथा पिताजी का नाम हिन्दी के साथ अंग्रेजी मे भी लिखा है तथा अन्य कालमो में जो बातें लिखी गई हैं वे अत्यन्त साधारण किस्म की हैं, यदि उन्हें कोई बात स्पष्ट न हो तो उसे मौखिक रूप में बता सकता हूं"। इस बात को वह अधिकारी नहीं माना और कहा कि वह महत्वपूर्ण दस्तावेज है। वह उसका अनुवाद करायेगा। मैंने इस पर कोई आपत्ति नहीं की और कहा कि यदि अनुवाद की आवश्यकता है तो करवा लिया जाये और ऐसा करने में यदि 2 4 दिन लग जाते हैं तो मुझे कोई आपत्ति नहीं। वह अधिकारी बोला 2-3 दिन से अधिक समय लग जायेगा। मैं इस बात के लिए भी तैयार था कि 3-4 सप्ताह भी लग जाये तो कोई चिन्ता नहीं। उस अधिकारी ने फिर डराया कि इससे भी अधिक विलम्ब हो सकता है। कितना समय अधिक लगेगा वह नहीं बता सका। मैंने अपना धैर्य नही खोया और कहा कि यदि 3-4 महीने से भी अधिक लग जायें तब भी कोई चिन्ता की बात नहीं। यह भी कह दिया कि यदि 3-4 महीने बाद यह निर्णय हो कि हिन्दी में आवेदन देने के आधार पर पासपोर्ट नहीं दिया जा सकता है तो भी मुझे दुख नहीं होगा, क्योंकि मुझे विदेश में कोई जरूरी काम नहीं है, केवल घूमने-फिरने जाना है। यदि पासपोर्ट नही मिला तो मेरे जो 10 12 हजार रुपये व्यय होने थे वे बच जायेंगे। इसके पश्चात और आगे बातचीत नहीं हुई। मेरा आवेदन रख लिया गया। मैंने देखा मुझे 13-14 दिन के भीतर पासपोर्ट मिल गया। शायद यह धैर्य की परीक्षा मात्र थी। हिन्दी में आवेदन देने के कारण मेरा पासपोर्ट बनने में कोई बाधा उपस्थित नही हुई। उसके बाद सन् 1985 में बनवाया। आवेदन पत्र हिन्दी मे ही भरा था। पासपोर्ट आसानी से बन गया तथा 20 दिन के भीतर डाक द्वारा घर पहुंच गया।

पासपोट के आवेदन को सत्यापित करवाने के लिए आवेदनकर्ता भारत सरकार के उपसचिव अथवा उससे ऊपर

(शेष पृष्ठ पर 10)

समाज के लिए अलख जगाने वाला वह कर्मयोगी !

—गजानन्द आर्य, मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर—

"आपने हमारे बहुत बड़ा घाटा कर दिया।" निश्चय ही इन शब्दों से कोई परिचित जन अपने किसी सहयोगी से सुनकर चौंकेगा। किन्तु ऐसा प्यार भरा उलाहना श्री पूनमचन्द जी से बहुधा सुनने को मिलता था। किसी चन्दे के लिए वे अपने परिचितों के पास जाते और उनसे मुंह मांगा चन्दा न मिलता तो कार्य समाप्ति पर कह देते कि आपके इतने कम देने से सर्वत्र इसी अनुपात से कम मिलता गया और हमें इतने का घाटा हो गया। आर्य समाज के लिए, केवल आर्य समाज के लिए- "भिक्षां देहि' आवाज लगाने वाला कर्मठ कार्यकर्ता हमसे सदा के लिए विदा हो गया। चाहे कलकत्ता की आर्य समाज हो या भिवानी की हो, अथवा बम्बई की आर्य समाज हो, उनके लिए सब आर्य समाजें एक थीं। जहां रहते वहीं की सेवा करते। ऋषि निर्वाण शताब्दी समारोह के अवसर पर परोपकारिणी सभा के लिए धन एकत्र करने का उन्होंने जो कीर्तिमान स्थापित किया वह सदैव स्मरणीय रहेगा।

आर्य समाज एक ब्राह्मण संस्था है, इसके कार्यों के लिए सदैव धन की आवश्यकता बनी रहती है। अन्ध श्रद्धा फैलाकर अथवा येन केन प्रकारेण धन इकट्ठा करना आर्य समाज के सिद्धान्त में नहीं है, भले ही आर्य समाज को अभाव ग्रस्त रहना पड़े। इस प्रकार की संस्था के लिए मांग मांगकर पैसा लाने वाले सात्विक और निःस्वार्थी का मिल पाना दुर्लभ है। ऐसे दुर्लभ व्यक्तियों में एक थे स्व० पूनमचन्द जी। उन्होंने अपना निजी व्यवसाय कभी ठीक से नहीं संभाला तो इसीलिये कि उन्होंने आर्य समाज के कार्यों को सदैव प्राथमिकता दी।

आर्य समाज के सिद्धान्तों से उन्होंने कभी समझौता नहीं किया। जहां उनको किसी आर्य समाजी से संस्था की हानि का अंदेशा होता, तो डांट में नहीं हिचकते थे। भले ही वह आर्य समाजी कितना बड़ा नेता व विद्वान् रहा हो। छोटी-छोटी गलतियों को बड़ी बारीकी से देख लिया करते थे। एक बार कलकत्ता में मेरे कार्यालय में पधारे। बैठते ही कहने लगे—'आर्य जी! "आपके यहां सूंडवाला गणेश जी आ घुसा है।" मैं उनको इस बात को समझने की कोशिश कर ही रहा था कि कोने में टंगे एक कलेंडर की ओर संकेत करके कहने लगे—'देखिये! "उस कलेंडर पर गणेश जी का चित्र है।' इतना ही नहीं, उन्होंने अपने हाथों से उस कलेंडर को उतार दिया। ऐसे जागरूक साथी को खोकर किसे दुःख नहीं होगा।

शारीरिक कष्ट झेलने में उनमें अद्भुत सहन शक्ति थी। 66 वर्ष की अवस्था में भी अपने शरीर को साधनायुक्त बनाते आ रहे थे। एक बार उनके साथ रेल की प्रथम श्रेणी में यात्रा कर रहा था, रात को उन्होंने अपने थैले से एक कम्बल निकाला और ओढ़कर लेट गये। मैंने बहुतेरा कहा कि तकिया मेरे पास फालतू है, लगा लीजिए। कहने लगे मैंने तकिया आदि लगाना छोड़ दिया है। साधनों का परित्याग करके साधना अपनाने वाले पितृ-तुल्य व्यक्ति के प्रति एक श्रद्धा का भाव उत्पन्न हो गया।

कैंसर जैसा असाध्य रोग उनको न लगा होता तो अपना स्वास्थ्य ठीक संभालकर वे दीर्घजीवी व्यक्ति होते। ऐसी भयंकर बीमारी में भी उनके चेहरे पर कभी निराशा नहीं देखी। बम्बई में उनके निवास स्थान पर मेरा पुत्र और पत्नी उनसे मिलने गये। विविध वार्तालाप के पश्चात् उनको कहने लगे कि गजानन्द जी को सूचित कर देना" मैं ठीक हूं, चिन्ता न करें।"

जीवन काल में आर्य समाज के कार्यकर्ताओं को चिन्ता मुक्त करने वाला कर्मयोगी मरणासन्न अवस्था में भी चिन्ता मुक्ति का संदेश दे रहा था। मेरी श्रद्धांजलि उस तपस्वी को।

श्री दरबारी लाल एवं प्रिन्सिपल सेखड़ी पंजाब यूनिवर्सिटी की सेनेट चुनाव के प्रत्याशी

डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति ने इस बार श्री दरबारी लाल एम०ए० एवं श्री एम०एल० सेखड़ी एम० ए० को पंजाब यूनिवर्सिटी की सेनेट के लिये खड़ा किया है। चुनाव रविवार 18-9-1988 को होगा। चुनाव का समय प्रातः 9 बजे से 1 बजे तक और दिन को 2 बजे से सायं 5 बजे तक है।

बैलेट पेपर पर श्री दरबारी लाल जी का सीरियल न० 5 है और प्रिन्सिपल एम०एल० सेखड़ी का सीरियल न० 19 है।

श्री दरबारी लाल जी को दिल्ली, चण्डीगढ़, हरियाणा, उत्तर प्रदेश तथा राजस्थान के वोटर फर्स्ट प्रिफरेन्स देंगे और प्रिन्सिपल एम०एल० सेखड़ी को सैकिण्ड प्रिफरेन्स देंगे।

प्रिन्सिपल एम०एल० सेखड़ी को पंजाब, हिमाचल प्रदेश एवं जम्मू कश्मीर के वोटर फर्स्ट प्रिफरेन्स देंगे और श्री दरबारी लाल जी को सैकिण्ड प्रिफरेन्स देंगे।

वोट डालते समय आपको जो बैलेट पेपर मिलेगा उस पर सीरियल न० 5 पर श्री दरबारी लाल जी के आगे '1' तथा प्रिन्सिपल एम०एल० सेखड़ी के आगे '2' डालना है। दिल्ली, हरियाणा, चण्डीगढ़, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश के वोटर बैलेट पेपर पर सीरियल न० 5 पर श्री दरबारी लाल जी के आगे '1' लिखेंगे और प्रिन्सिपल एम०एल० सेखड़ी के आगे सीरियल न० 19 पर '2' लिखेंगे।

इसी तरह हिमाचल प्रदेश, पंजाब, जम्मू कश्मीर के वोटर बैलेट पेपर पर सीरियल न० 19 पर '1' (फर्स्ट प्रिफरेन्स) लिखेंगे और सीरियल न० 5 पर श्री दरबारी लाल जी के आगे '2' लिखेंगे।

मेरी समस्त वोटर्स से प्रार्थना है कि उपरोक्त लिखे अनुसार वोट डालने की कृपा करें। इसके लिये हम आपके अति आभारी रहेंगे। उपरोक्त दोनों प्रत्याशियों की जीत डीएवी तथा आर्य समाज की जीत होगी।

प्रो० वेद व्यास, प्रधान, डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति

राम नाथ सहगल मन्त्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

जी०पी० चोपड़ा, महामन्त्री, डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति

बी०एस० बहल, चीफ आर्गेनाइजर चुनाव अभियान चण्डीगढ़

बी०बी० गक्खड़, चीफ आर्गेनाइजर चण्डीगढ़ रीजन

श्री तिलकराज गुप्ता चीफ आर्गेनाइजर दिल्ली रीजन

जातकर्म उपनयन

आर्य समाज मुसाढ़ी (नालन्दा) के कोषाध्यक्ष श्री विनोद आर्य के सुपुत्र का जातकर्म संस्कार 24 जुलाई को और इसी समाज के सदस्य श्री अवधेश व श्री अनिल सिंह के सुपुत्रों का उपनयन संस्कार 14 अगस्त को सम्पन्न हुआ, उपरोक्त संस्कार डा देवेन्द्र कुमार शास्त्री के आचार्यत्व में हुआ।

—शिवबरण सिंह आर्य

मदन लाल धींगड़ा बलिदान दिवस

आर्य समाज, महर्षि दयानन्द बाजार (लाल बाजार) लुधियाना में अमर शहीद मदन लाल धींगड़ा का बलिदान दिवस मनाया गया। पं सुरेन्द्र कुमार शास्त्री के पौरोहित्य में यज्ञ सम्पन्न हुआ।

स्वतन्त्रता दिवस

15 अगस्त को स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में निम्नलिखित स्थानों पर रंगारंग कार्यक्रम हुए।—1 चौधरी बलवन्त लाल पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग नई दिल्ली 2 डी ए वी स्कूल कूटेश्वर, दयानन्द माडल स्कूल, मंदिर मार्ग नई दिल्ली, आर्य समाज पुल बंगश, दिल्ली केन्द्रीय आर्य युवक परिषद, दिल्ली

श्री हंसराज आर्य का अभिनन्दन सम्पन्न

श्री गुरु विरजानन्द आर्य युवक सभा लुधियाना द्वारा श्री हंसराज जी का आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा पंजाब के अन्तरंग सभासद मनोनित किये जाने पर 7-8 88 को श्री गुरु विरजानन्द आर्य समाज किदवाई नगर में स्वागत समारोह का आयोजन किया गया, समारोह रोशनलाल शर्मा प्रधान पंजाब आर्य युवक सभा की प्रधानता में श्री उत्तमचन्द जी ने अभिनन्दन पत्र पढ़ते हुये, श्री रोशन लाला जी द्वारा श्री हंसराज जी को एक शाल अभिनन्दन पत्र पुष्पों द्वारा भेंट की।

—उत्तमचन्द मन्त्री

चुनाव समाचार

—आर्य समाज भरवाई चिन्तपुरनी में प्रधान पं हरिश्चन्द्र शास्त्री, मन्त्री पं सोमदत्त और कोषाध्यक्ष महात्मा प्रभुदत्त चुने गये।

— जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, फर्रुखाबाद, आचार्य चन्द्र देव शास्त्री प्रधान, पं० विद्या सागर आर्य मन्त्री व श्री लालता प्रसाद आर्य कोषाध्यक्ष।

— आर्य समाज शाहपुरा (भीलवाड़ा) राजाधिराज श्री सुदर्शन देव आर्य संरक्षक, श्री रामस्वरूप बेली प्रधान, श्री अम्बालाल आर्य मन्त्री व श्री सत्यनारायण कोषाध्यक्ष।

— आर्य समाज अशोक नगर, नई दिल्ली श्री राजाराम आर्य प्रधान, श्री चन्द्रभान आहूजा मन्त्री व श्री चन्द्र भान सेतिया कोषाध्यक्ष।

— 3 अगस्त को धर्मगढ़ (करनाल) ग्राम पंचायत का चुनाव हुआ जिसमें धर्मगढ़ आर्य समाज के निम्नलिखित सदस्य निर्वाचित हुए। श्री प्रेम सिंह सरपंच, श्री जगत् सिंह आर्य, श्री चुन्नीलाल आर्य, श्री राम कुमार आर्य, श्री शोभाचन्द आर्य, श्री शिव चरण आर्य व श्रीमती भगवानी देवी आर्या। निर्वाचन के पश्चात यज्ञादि सम्पन्न हुआ, कन्या गुरुकुल को 552 रुपये दान में मिले।—डा० लक्ष्मण सिंह महामन्त्री आर्य कन्या गुरुकुल मोर माजरा

—आर्य समाज संगरूर (पंजाब) के मन्त्री एवं पुस्तकालय श्री राजेन्द्र प्रसाद आर्य के सुपुत्र का नामकरण संस्कार 3 जुलाई को महात्मा प्रेम प्रकाश वानप्रस्थी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। —सतीश गुप्ता प्रचार मन्त्री,

स्वर्गीय आर्य नरेश राजा रणञ्जय सिंह

—ज्वलन्त कुमार शास्त्री—

29 अप्रैल 1901 ई० को भूपति भवन, रामनगर अमेठी में राजा रणञ्जय सिंह का जन्म हुआ, और 4 अगस्त, 1988 को 87 वर्ष की अवस्था में रात्रि को 12-30 बजे पर देहावसान। वे देश के उन थोड़े से राजाओं मे थे जो महर्षि दयानन्द के भक्त और आर्य समाज के अनुयायी हुए। अपनी बाल्यावस्था में ही आर्य समाज के प्रभाव मे आये और ऋषि दयानन्द की विचारधारा को स्वीकार किया। धार्मिक तथा सामाजिक कुप्रथाओं, कुरीतियो, अन्ध विश्वासों, और पाखण्डों के विरुद्ध जनजागरण का शंखनाद फूकने वाले राजाओं की सख्या नगण्य रही है। किन्तु राजा साहब उन्हीं बिरले राजाओं में से थे। बलिप्रथा, मद्यपान, शुभ अवसरों पर वेश्या नृत्य, छुआछूत, अनमेल विवाह, अस्पृश्यता, नारी अत्याचार आदि धार्मिक तथा सामाजिक कुरीतियो को दूर करने का उन्होने सार्थक प्रयास किया और उन्होने इसमे सफलता प्राप्त की। उन्होने आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रधान पद को तीन बार सुशोभित किया।

आर्य समाजी होने के कारण राजा साहब देश भक्ति और स्वतन्त्रता आन्दोलन में भी अग्रणी रहे। इनके पितामह राजा लाल माधवसिंह ने भारत के प्रथम स्वातन्त्र्य सग्राम 1857 ई० के गदर युद्ध में अंग्रेजो के विरुद्ध सघर्ष किया था। राजा साहब ने 1921 ई० से खादी को अपनाया। तब से आजीवन वे पूर्ण स्वदेशी वस्त्रो में ही रहे। 1926 ई० मे केन्द्रीय धारा सभा के सदस्य चुने गये। सदस्यो मे वे सबसे कम उम्र के थे। मालवीय और लाजपत राय दल की ओर से सेन्ट्रल एसेम्बली की सदस्यता हेतु राजा साहब प्रत्याशी बने और विजयी रहे। 1930 ई० में नमक सत्याग्रह में भाग लिया और सेन्ट्रल ऐसेम्बली की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया। नमक सत्याग्रह के समर्थन के कारण अमेठी रियासत अग्रजों द्वारा 'कोर्ट आफ वार्ड्स' के अधीन कर दी गयी। 1926 ई० की केन्द्रीय धारा-सभा के सदस्यों में राजा साहब अकेले बचे थे। अब वे भी चल बसे।

राजा साहब को कांग्रेस की गरम दलीय नीति पसंद थी। वे महात्मा गांधी की अपेक्षा लोकमान्य बाल गगाधर तिलक के अनुयायी थे। लाला लाजपत राय से उनका निकट का सम्पर्क था। प० मदन मोहन मालवीय के प्रति उनकी अनन्य निष्ठा थी। मालवीय जी की भी अमेठी राज-परिवार से बहुत घनिष्ठता थी। राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन को राजा साहब का अच्छा परिचय था। क्रांति-कारी युवक फरारी की अवस्था में गुप्त रूप से अमेठी में रहते थे। क्रान्तिकारी और प्रसिद्ध लेखक यशपाल ने अपने

सस्मरणो में राजा साहब की उदारता तथा क्रान्तिकारी कार्यों मे सहभागिता का उल्लेख किया है। प्रसिद्ध लेखक वैद्य गुरुदत्त राजा साहब के प्रथम प्राइवेट सेक्रेटरी रहे हैं। गुरुदत्त स्वय उस समय एक क्रान्तिकारी थ तथा क्रान्तिकारियो के साथी थे।

राजा साहब आजादी के बाद 1952 से 1957 तक विधान सभा 1957 से 1962 तक विधान परिषद्, 1962 से 1967 तक लोक सभा तथा 1969 से 1977 तक पुन: विधान सभा के सदस्य रहे। आजादी से पूर्व 1926 से 1930 तक सेन्ट्रल एसेम्बली के सदस्य रहे। लोक सभा मे राजा साहब की भूमिका को प्रखर सांसद प० प्रकाश वीर शास्त्री ने इन शब्दों में प्रस्तुत किया है—

शिक्षा, कृषि और रक्षा, यह उनकी रुचि के प्रमुख विषय थे। हर विषय पर और हर समय बोलने की आदत तो शायद प्रारम्भ से नहीं रही पर जितना वे बोलते, उतना तैयारी के साथ बोलते थे। जिनका कुछ भी उनके जीवन की पृष्ठभूमि से परिचय था, विशेषकर प्रयागवासी तीनो प्रधानमन्त्री तो ध्यान से उन्हें सुनते थे। भारतीय ससद् में सत्ताधारी दल के दो ऐसे सदस्य थे, जिन्होंने राष्ट्र भाषा हिन्दी और गोवध बन्द करने के प्रश्न पर कभी सरकारी नीति का समर्थन नहीं किया। एक थे श्री सेठ गोविन्ददास और दूसरे राजा रणंजय सिंह। जब भी इन दोनों राष्ट्रीय प्रश्नों पर चर्चा उठी तो उन्होने सचेतक को स्पष्ट कह दिया—"यह हमारी मान्यताओं का प्रश्न है। इस पर हमे सरकार के साथ मत देने के लिए विवश न किया जाय।" राजा साहब द्वारा विधान सभा में प्रस्तुत गोवध संरक्षण विधेयक पर डा सर सीताराम की अध्यक्षता में समिति सगठित की गई। और उत्तर प्रदेश मे गोवध बन्दी का कानून बना। इसके अतिरिक्त भी लोक-सभा एव विधान सभा में समाज सेवा सम्बन्धी अनेक प्रस्ताव राजा साहब के प्रयास से पारित हुए। जैसे—आठवीं कक्षा तक नि शुल्क शिक्षा, उच्चकोटि की व्यायाम शालाओं की स्थापना, मद्य-निषेध आदि।

अमेठी क्षेत्र में शिक्षा प्रसार का एक मात्र श्रेय राजा साहब को है। जमींदारी उन्मूलन के बाद भी आपने अपनी चल-अचल अतुल सम्पत्ति एव सहयोग देकर अमेठी राज्य में अनेक इण्टर कालेज, जूनियर हाई स्कूल, आदर्श विद्यालय, वैदिक बाल मन्दिर, दीक्षा विद्यालय तथा स्नातकोत्तर महा-विद्यालय की स्थापना की। आज से 6 वर्ष पूर्व राजा साहब ने अपनी धर्मपत्नी महारानी सुषमा देवी का देहावसान हो जाने पर उनकी स्मृति में लाखों रुपये का दान देकर महारानी सुषमा देवी बालिका विद्यालय की स्थापना की थी। अमेठी के अतिरिक्त जनपद, प्रान्त तथा देश के विभिन्न भागो में स्थापित अनेक शैक्षणिक सस्थाओ को भी उन्होने मुक्त हस्त से आर्थिक सहयोग देकर समृद्ध बनाया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय लखनऊ विश्वविद्यालय, काशी विद्यापीठ, गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी, गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन, गुरुकुल महा-विद्यालय ज्वालापुर, गुरुकुल अयोध्या, डी ए वी कालेज लखनऊ आदि बीसियों शिक्षण सस्थाओ से राजा साहब जुड़े रहे तथा आर्थिक सहयोग देते रहे।

साहित्यिक अभिरुचि

राजा साहब स्वय एक रससिद्ध कवि एव कवियों के आश्रय दाता रहे। पिंगल शास्त्र मे उनकी गहरी पैठ थी। छन्दोबद्ध कविताओं के समर्थक और प्रशसक राजा साहब ने अनेक रस-सिद्ध कविताए लिखी हैं। कविताओ का विषय भी धर्म, सस्कृति, समाज सुधार, देश प्रेम चारि-त्रिक तथा नैतिक शिक्षा परक होता था। अमेठी राज परिवार के पूर्वज राजागण भी सुकवि और कवियों के आश्रयदाता के रूप में प्रसिद्ध रहे हैं। राजा साहब ने अनेक साहित्यिक तथा काव्य रचनाएं प्रकाशित कराई जो उनके पूर्वजो द्वारा रचित थीं। जैसे-भूपति सतसई, कविकुल तिलक प्रकाश, सुभटतरुण, कविता कल्पद्रुम, रणवीर रत्नाकर आदि। "मनस्वी" नामक सांस्कृतिक तथा साहित्यिक पत्रिका का राजा साहब ने वर्षों तक सफल सम्पादन किया। पद्म श्री क्षेमचन्द्र सुमन इस पत्रिका के सह सम्पादक थे। प्रकाशन का सारा व्यय राजा साहब ही वहन करते थे। हिन्दी, सस्कृत, अवधी तथा ब्रजभाषा के अनेक प्राचीन ग्रन्थों, दुर्लभ रचनाओं तथा पाण्डुलिपियो का सग्रह राजा साहब ने "हिन्दी साहित्य सम्मेलन" को भेंट किया। यह सामग्री सम्मेलन में "रणवीर कक्ष" के नाम से स्थापित है।

राजा साहब का स्वभाव बडा सरल, सौम्य और सात्विक था। उनका रहन सहन अत्यन्त सादा था। वे हमेशा खादी के ही वस्त्र पहनते। उनकी लम्बी ऊंची टोपी जन सभाओ में आकर्षण का केन्द्र बनती। बालसुलभ सरलता के साथ किन्तु गम्भीर और काव्यमयी उक्तियो में अपनी बात कहने का अनोखा ढग और बीच बीच में मन्द स्मित हास्य उनके वार्तालापो तथा व्याख्यानो में दृष्टिगोचर होता था। राजा साहब पूर्ण निरामिष भोजी थे। मद्य से कोसो दूर थे। धूम्र-पान की कौन कहे चाय तथा पान का सेवन उन्होने कभी नही किया। नित्य सन्ध्या, अग्निहोत्र और वेदपाठ उनके जीवन का अग था। उन्हें सैकड़ो मन्त्र और श्लोक कण्ठ थे। उन्होने वेद, रामा-यण, महाभारत, उपनिषद्, दर्शन तथा ऋषि दयानन्द के ग्रन्थो का गम्भीर स्वाध्याय किया था। मत मतान्तरो के धार्मिक ग्रन्थों के तुलनात्मक अध्ययन में उन्हें विशेष रुचि थी। उनके पुस्तकालय मे अनेक विषयों के दुर्लभ ग्रन्थ वर्तमान हैं। उनकी स्मरण शक्ति विलक्षण थी, उनके अनेक लेख और लोक-सभा, विधान-सभा मे दिये गये भाषण पत्र-पत्रिकाओं में आदर के साथ छापे जाते। उनका स्वस्थ और सुपुष्ट शरीर, क्रीडा प्रियता और व्यायाम-प्रेम बालको तथा युवकों को सत्प्रेरणा प्रदान करता था। फुटबॉल, लान टेनिस, और घुड़दौड उनके प्रिय खेल थे।

धर्म, सस्कृति, साहित्य, कविता, राजनीति शिक्षा और इतिहास आदि क्षेत्रों में उनकी सेवायें अविस्मरणीय हैं।

पता-डिग्री कालेज, अमेठी

पत्रों के दर्पण में

शताब्दी के लिए जयपुर ही ठीक

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की शताब्दी के समारोह के लिए जयपुर ही उपयुक्त है, अलवर नहीं। इसके निम्न हेतु हैं—

(1) क्योंकि सन् 1972 में सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन तथा सन् 1983 में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी यद्यपि अजमेर में मनाई जा चुकी थी, परन्तु पुन: अलवर में मनाई गई, अब शताब्दी समारोह तथा सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन अक्टूबर, 1989 में महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस के आस-पास जयपुर मे ही होना चाहिये। शताब्दी अलवर समाज की नहीं, प्रतिनिधि सभा की है और सभा का कार्यालय भी जयपुर में ही है। (2) सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन में देश विदेश के लाखों आर्यजन आते हैं, उनके आवास के लिये जयपुर में सैकड़ों विशाल धर्मशालाएं व होटल आदि हैं। (3) जयपुर में लाखों व्यक्तियों के विशाल नगर कीर्तन के लिये लम्बी व चौड़ी आकर्षक सड़कें, सभा, प्रदर्शनी आदि के लिये विशाल मैदान, स्टेडियम आदि भी हैं। (4) विश्वभर से आने वालों के लिये वायुयान तथा भारत के प्रत्येक प्रान्त से सीधी रेल यात्रा व बस आदि की सुविधायें हैं। (5) जयपुर में आकाशवाणी, डाक सेवा केन्द्र व टेलीविजन आदि के अनेक संचार साधन तथा देश विदेश के राजनेता आदि के लिए भव्य राजकीय आवास भी हैं।

—भगवती प्रसाद सिद्धान्तभास्कर प्रधान नगर आर्य समाज, कृष्ण पोल बाजार, जयपुर

अलवर नहीं, अजमेर

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का शताब्दी समारोह तथा सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन अलवर में 30-31 दिसम्बर 88 एवं 1 जनवरी 89 को आयोजित किया जा रहा है।

आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि अलवर में इस प्रकार का महत्वपूर्ण आयोजन आर्य समाज की दृष्टि से क्या औचित्य रखता है? जबकि अजमेर के साथ आर्य बन्धुओं की भावनाएं जुड़ी हुई है और वही उपयुक्त स्थान है। ईश्वर कृपा से अजमेर में इस वर्ष पानी की भी कोई समस्या नहीं है।

द्वितीय महत्वपूर्ण बात यह है कि शाहपुरा (भीलवाड़ा) से अखण्ड अग्नि अलवर मगवायी जा रही है। वर्तमान राजाधिराज सुदर्शनदेव जी के शुभ विवाह के उपलक्ष्य मे जो अग्निहोत्र हुआ था, यह उसकी जोत है जो तभी से ध्रांगधरा (महाराष्ट्र) में उनकी सुसराल से लायी गयी थी और आज तक प्रतिदिन इसी अखण्डित अग्नि से राजप्रसाद की यज्ञ शाला में यज्ञ होता है। कुछ बन्धुओं को यह भ्रम है कि यह अग्नि महर्षि दयानन्द जब शाहपुरा पधारे थे उस समय प्रज्वलित की गयी थी। यह सही नहीं है। अत यह स्पष्टीकरण आवश्यक है।

—ब्रह्मदत्त, पूर्व प्रधान आर्य समाज शाहपुरा (भीलवाड़ा)

इतिहास के पुनर्लेखन की आवश्यकता

इन 41 वर्षों में भारत का शुद्ध इतिहास लिखने की ओर ध्यान नहीं दिया गया। अंग्रेजों ने जो इतिहास स्कूलों और कालेजों में पढ़ाया, आज भी वही पढ़ाया जा रहा है। आर्यों को विदेशी आक्रमणकारी बता कर उन्हें महमूद गजनवी और नादिरशाह के समकक्ष रखना इतिहास के साथ क्रूर मजाक एवं खिलवाड़ है।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास में दिये गये कुछ प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार दिए हैं—

"प्रश्न—मनुष्यों की आदि सृष्टि किस स्थल पर हुई?

उत्तर—त्रिविष्टप अर्थात जिसको तिब्बत कहते हैं।

प्रश्न—आदिसृष्टि में एक जाति थी या अनेक?

उत्तर—एक मनुष्य जाति थी। आर्य और दस्यु। आर्यों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चार भेद हुए।

प्रश्न—फिर वे यहां कैसे आये?

उत्तर—जब आर्यों और दस्युओं में बहुत उपद्रव होने लगा तब आर्य लोग सब भूगोल में उत्तम इस भूमि के खण्ड को जान कर यहीं आ कर बसे। इसी से इस देश का नाम 'आर्यावर्त' हुआ।

प्रश्न—कोई कहते हैं कि आर्य ईरान से आये। इसी से इन लोगों का नाम आर्य हुआ।

उत्तर—यह बात सर्वथा झूठ है। क्योंकि—

विजानीह्यार्यान्ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान् ॥

ऋग्वेद म० 1 सूक्त 51 म० 8 ॥

आर्य नाम धार्मिक, विद्वान् आप्त पुरुषों का, इसके विपरीत जनों का नाम दस्यु। जब वेद ऐसा कहता है तो दूसरे विदेशियों के कपोल-कल्पित को बुद्धिमान लोग कभी नहीं मान सकते। किसी संस्कृत ग्रन्थ में या इतिहास मे नहीं लिखा कि आर्य लोग ईरान से आये और यहां के जंगलियों से लड़कर, जय पाके, निकाल के इस देश के राजा हुए। पुनः विदेशियों का लेख कैसे माननीय हो सकता है?"

महर्षि के उपरोक्त लेखों से स्पष्ट है कि आर्य ही इस देश के मूल निवासी हैं। उनको 'बाहर से आये बताना' सत्य का गला घोटना है। मुस्लिम शासकों ने पुस्तकालय जलाकर प्राचीन भारत के इतिहास के बहुत से विश्वसनीय स्रोत समाप्त कर दिये। फिर भी गहन खोज से प्रेरणादायक इतिहास तैयार किया जा सकता है जिसे पढ़ कर देश के भावी कर्णधार अपने पूर्वजों की धरोहर की रक्षा कर सकेंगे।

पता—गणपत सिंह आर्य, मन्त्री जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज मन्दिर घण्टाघर, भिवानी (हरियाणा)

इस घर को आग लग गई

भारत की धर्मनिरपेक्षता का परिणाम यह हुआ कि ईसाई और मुसलमानों को धर्मान्तरण की छूट मिल गई। अब यह धर्मान्तरण देश को खंडित करने का रूप धारण कर रहा है। भय है कि पाकिस्तान के समान कई छोटे-छोटे अन्य 'स्थान' न बनने लग जाय।

भारत सरकार धर्म-निरपेक्ष होने के बाद संस्कृत-निरपेक्ष भी होने जा रही है। नई शिक्षा नीति में संस्कृत के लिए कोई स्थान नहीं है। स्कूलों में प्रथम कक्षा से लेकर बारहवीं कक्षा पर्यन्त संस्कृत पढ़ाने की कोई व्यवस्था नहीं है दक्षिण भारत में स्कूलों में हिन्दी, अंग्रेजी और दक्षिण के लोगों की मातृभाषा पढ़ाई जायगी। उत्तर भारत में हिन्दी, अंग्रेजी और एक दक्षिण भारत की भाषा पढ़ाई जायगी। वैसे त्रिभाषा सूत्र में हिन्दी अंग्रेजी और एक भारतीय भाषा पढ़ाने का प्रावधान है। अत उत्तर भारत में संस्कृत तीसरी भाषा के रूप में पढ़ाई जा सकती है। परन्तु अब संस्कृत को आधुनिक भारतीय भाषाओं की सूची से निकाल दिया गया है। अत स्पष्ट है कि कोई भी छात्र विश्वविद्यालय स्तर से पहले किसी प्रकार भी संस्कृत नहीं पढ़ सकता। जब स्कूलों में संस्कृत पढ़ने वाले छात्र नहीं होंगे तो यह आशा करना निराधार है कि कालेज की उच्च शिक्षा में कोई संस्कृत पढ़ेगा?

अब भारत सरकार 'सत्यमेव जयते'-निरपेक्ष भी बनती जा रही है करेंसी नोटों पर अशोक चक्र के नीचे 'सत्यमेव जयते' लिखा रहता है। परन्तु अब पांच रुपये के तथा कई अन्य नए नोटों पर इसका लोप हो गया है। क्या यह उद्घोष भी इसलिए हटाया गया है कि यह संस्कृत में है?

'इस घर को आग लग गई, घर के चिराग से।'

—विश्वनाथ शास्त्री एम०ए०, 2 बी/51/8, भिलाई (म०प्र०)

क्या यह असत्य है?

जन्म लेते ही भारतीय शिशु विदेशियों का कर्जदार हो जाता है तो प्रत्येक मरने वाला भी ऋणी होकर मरता है। इस कटु सत्य को कोई माने या न माने, पर है यह सत्य ही।

वित्त मन्त्री की रिपोर्ट के अनुसार 1987 तक कुल पर 3 खरब 23 अरब 12 करोड़ से भी अधिक विदेशी ऋण था। चीन के बाद हमारी आबादी सबसे अधिक है। फिर भी छोटे-छोटे देशों से हम कर्ज मांगने में शर्म महसूस नहीं करते। दोष जनता का कम, अधिकारियों का अधिक है।

ऋण परतन्त्रता का चिन्ह है। भले हम हैं स्वतन्त्र देश के नागरिक हैं।

—पथिक छुटमलपुर, सहारनपुर, उ०प्र०

कांवरिया बम की जय!

सर्वप्रथम कांवरिया बम की विनाशलीला तब सुनने को मिली जब कटोरिया गांव में कांवरिया बाबा नामक एक महात्मा की हत्या हुई। उसके बाद कटोरिया प्रखण्ड में ही एक गांव के मुखिया तथा उसके परिवार के कई सदस्यों को कांवरिया बम ने मौत के घाट उतारा। अब तो बम के वेश में उस रास्ते के किसी दुकान में बैठकर भर पेट भोजन करना पैसा मांगने पर उल्टे दुकानदार के ऊपर झोला, लोटा, टार्च तथा कुछ नकदी रकम चुराने का इल्जाम लगाकर ड्यूटी पर तैनात सरकारी अफसर और पुलिस के द्वारा हर्जाना वसूलना लेना आम बात हो गई है। लगता है समाज के गुण्डे श्रावण मास भर कांवरिया बम के वेश में लूट-पाट मचाने के कार्य मे व्यस्त हो जाते हैं। सरकारी अफसर भी इस बला से डरते हैं बेचारे निर्दोष दुकानदार को प्रताड़ित करते हैं और हर्जाने के रूप में तुरन्त मुंहमांगा पैसा उस कांवरिया बम को दिला देते हैं। भला इससे अच्छा रोजगार क्या हो सकता है।

कुछ असामाजिक तत्व कांवरियावेश में रहते हैं, सोये हुए कांवरियों की जेबें साफ करते हैं। ऐसे सुनहले मौके का लाभ उठाने के लिए कुछ मनचले युवक अपनी प्रेमिका के साथ कांवरिया वेश में रहते हैं और जल चढ़ाने का बहाना बना कर कांवर के साथ चलते है परन्तु रास्ते में रात व्यतीत करने के लिए धर्मशाला में कोठरी बुक कराते हैं और रासलीला करते हैं। कुछ लोग पिकनिक मनाने के लिए भी कांवरियावेश में चलते हैं और रास्ते में भांग, गांजा इत्यादि नशा का सेवन करते मस्ती काटते देवघर तक पहुंचते हैं। कांवरिया बम की जय!—दयानिधि सिंह, ग्रा०नि० मेहसी पूर्वी चम्पारण

भूकंप पीड़ित सहायता कोष-3

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी ए वी संस्थाओं की ओर से बिहार में आये भूकम्प पीड़ितों की सहायता हेतु कार्य तेजी से चल रहा है। अब तक 30 मन राहत सामग्री बिहार भिजवाई जा चुकी है। आर्थिक सहायता भी भिजवा रहे हैं। आर्य समाज के प्रसिद्ध कार्यकर्ता एवं पू० पू० आचार्य श्री एस. डी ग्रोवर जी (दयानन्द कालेज हिसार) प्रि० राकेश शर्मा (डी ए वी विद्यालय, पटना) प्रो० वाचस्पति कुलवन्त सिंह आर्यमार्तण्ड डायरेक्टर, प्रि० एस०एन० झा (डी ए वी विद्यालय बरौनी) और उनके साथ आर्यसमाज तथा डी ए वी संस्थाओं के कार्यकर्ता जिला दरभंगा व मुंगेर में जाकर जिनका हानि हुई है उनको दे रहे हैं, हमें उपरोक्त व्यक्तियों से समाचार आ रहे हैं कि खाद्य सामग्री, कपड़े एवं आर्थिक सहायता को तुरन्त भेजें जिससे मकान आदि की मरम्मत हेतु राशि दी जा सके।

मेरी समस्त आर्य जनता से प्रार्थना है कि वे अधिक से अधिक दान राशि, चैक ड्राफ्ट, मनीआर्डर द्वारा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मंदिर मार्ग नई दिल्ली-1 के पते पर भेजें। अब तक जिन दानियों ने दान भेजे हैं उनकी तीसरी सूची निम्नलिखित है—

84. श्री टी०एन० तनेजा, A3/9A पश्चिम विहार दि०	500/-
85 हेड मास्टर हिन्दू ए०एस० हाई स्कूल, सढौरा (अम्बाला)	101/-
86. प्रधान आर्य समाज, जलालाबाद (फिरोजपुर)	200/-
87 डा० प्रेम सागर, 95 दुर्गा चरण रोड अम्बालाकेंट	151/-
88 मन्त्री आर्य समाज, मुगल सराय वाराणसी	100/-
89 श्री आई०एम० मेहता p Box-94 आगरा	100/-
90. श्री चन्द्र भान खण्डेलवाल 2 ल०3 विज्ञान नगर कोटा	50/-
91. फाईव स्टार नेशनल, ओरियंटल हाउस, 2, जमशेद टाटा रोड, बम्बई	151/-
92. श्रीमती राधादेवी 570 एल, माडल टाउन पानीपत	20/-
93. श्रीमती प्रकाशवती, 63-सी माडल टाउन एक्स, लुधियाना	50/-
94. श्री लेखराज चोपड़ा, W.Z. 2095, रानी बाग शकूर बस्ती दिल्ली	40/-
95 श्री मिट्ठनलाल मंत्री, आर्य समाज, फतेहाबाद आगरा	20/-
96 प्रिंसिपल, डी०ए०वी कालेज, मन्योला (हरियाणा)	101/-
97. श्रीमती शान्ता ग्रोवर, 574/18 बी, चण्डीगढ़	250/-
98 श्री चांदलाल लेखी, द्वारा वी०के० लेखी ऊपर दोआब शुगर मिल पी०—शामली (मुजफ्फर नगर) उ०प्र०	155/-
99 श्री आर०पी० मोहन, आर०पी० मोहन चे० ट्रस्ट, सहारनपुर उ०प्र०	250/-
100. श्री रामलाल, सी-5 पचवटी, आजादपुर, दिल्ली	100/-
101. श्री लालचंद आर्य, सी-5/सी, 24 बी, जनकपुरी, नई दि०	101/-
102. श्री एच० छाबड़ा, 50 माडल टाउन, पानीपत	500/-
103 श्री पुरुषोत्तम लाल 2052/21 सी चण्डीगढ़	250/
104. श्री पृथ्वीनाथ, 29-मुनीरका विहार, दिल्ली-67	100/-
105 मन्त्री, लाला रामशरण दास वेद प्रचार स्मारक स्थिर निधी, आर्य समाज, हांसी हरियाणा	1100/-
106 मंत्री, आर्य समाज हांसी, हरियाणा	1000/-
107. महेशकुमारी, 3480 श्री राम बिल्डिंग, निकल्सन रोड दिल्ली-6	51/-
108. श्री राजीव गुप्ता, ए-13/49 ए०बी०डी०ए० फ्लैटस कालकाजी एक्स, नई दिल्ली	251/-
109 विमला महाजन, पत्नी-द्वारकानाथ महाजन आनन्द वर्षा मकबूल रोड, अमृतसर, पंजाब	500/-
110. श्री एन० पाण्डे, ए-175, फस्ट फ्लोर, डिफेंस कालोनी नई दि०	101/-
111 प्रधाना, स्त्री आर्य समाज, निजामुद्दीन ईस्ट, नई दि०	500/-
112 मन्त्री, आर्य समाज, नया बांस, दि०	1100/-
113 मन्त्री आर्य समाज शिवाजी मार्ग, अ जार (कच्छ) गुजरात	1000/-
114. श्री निमल बंसल, ए-6, सत्यवती कालोनी, अशोक विहार-3 दि०	251/-
115. श्री ऋषिदेव शर्मा, बी-118/2, पूर्वी कैलाश, नई दि०	100/-
116. मन्त्री, आर्य समाज शाहबाद मारकण्डा, कुरुक्षेत्र	251/-
117 श्री सतीश अरोड़ा, 16-राजेन्द्र प्लेस, विक्रम टावर, नई दि०	25/-
118 श्री सिबल सत आर्य समाज रोड, करोलबाग, नई दि०	101/-
119 श्री राजेन्द्र प्रसाद 16-राजेन्द्र प्लेस विक्रम टावर, नई दि०	50/-
120. श्री रामकिशन 25/1 प्रीत नगर, लारेंस रोड, जालन्धर	101/-
121 श्री वेद प्रकाश भारद्वाज 1/6971ए, शिवाजी पार्क, शाहदरा, दि०	100/-
122. श्री हरिशचन्द्र निरुपद एन-119, टाण्डा रोड जालन्धर	50/-
123. श्रीमती शकुन्तला देवी स्वरूप निवास, आत्मा नगर, भिवानी रोड, रोहतक हरि०	50/-
124. मन्त्री आर्य समाज विक्रम नगर, नई दि०	251/-
125 श्री राजेश कुमार सिन्हा डारेक्टर, इन्टर एडस एडवरटाइजिंग प्रा.लि 4/24, ए, आसफ अली रोड, नई दिल्ली	501/-

डा. आनन्द सुमन जर्मनी रवाना

आठ वर्ष पूर्व वैदिक धर्म में प्रविष्ट डाक्टर आनन्द सुमन 23 अगस्त को जर्मनी रवाना हो गए। वहा दो सितम्बर से 5 सितम्बर तक यूरोपीय हिन्दू सम्मेलन हो रहा है जिसमें श्रीमती विजयाराजे सिंधिया, जैन मुनि सुशील कुमार, श्री गिरिराज किशोर (विश्व हिन्दू परिषद् के संयुक्त मन्त्री), श्री विष्णु हरि डालमिया, और स्वामी चिन्मयानन्द और स्वामी प्रभुआनन्द गिरि भी जा रहे हैं। श्री आनन्द सुमन जर्मनी से नीदरलैंड और स्पेन भी जाएगे।

हिन्दी की पहल ....

(पृष्ठ 5 का शेष)

के स्तर के अधिकारी के पास जाता है। मैं जब मन्त्रालय में उप सचिव के पद पर था तो मेरे कई मित्र अथवा सम्बन्धी पासपोर्ट के लिए अपने आवेदन का सत्यापन करवाने के लिए मेरे पास आते थे मैं उनसे कहा करता था कि इसके लिए फीस लूंगा। एक बार तो उन्हें आश्चर्य होता कि उनका मित्र अथवा सम्बन्धी होने पर भी मैं फीस लेने की बात किस प्रकार कर रहा हूं। लेकिन जब मैं उन्हें अपनी फीस बताता तो वह कुछ क्षण के लिए सोच-विचार में पड़ जाते। मेरी फीस होती थी, "आप अपने आवेदन को हिन्दी में भी भर दीजिए" कुछ लोग तो ऐसा तुरन्त कर देते थे लेकिन कुछ के मन में डर रहता था कि यदि उन्होंने आवेदन पत्र के कालम हिन्दी मे भर दिए तो उनका पासपोर्ट बन ही नहीं पायेगा। किन्तु अन्त में वह मेरी बात मान ही लेते थे और कभी कोई ऐसी घटना नहीं हुई कि उनमें से किसी का पासपोर्ट बनने में कोई बाधा उपस्थित हुई।

हिन्दी से प्रेम रखने वाले व्यक्ति अपने आवेदन अथवा पत्र, आदि अंग्रेजी में लिखते हैं उनसे यह प्रश्न पूछा जा सकता है कि क्या वह ऐसा इसलिए कर रहे हैं कि हिन्दी में विभिन्न विषयों के विचार अभिव्यक्त करने का सामर्थ्य नहीं है। उत्तर मिलेगा कि ऐसी बात नहीं है, हिन्दी में भी सभी विषयों पर विचार भली प्रकार व्यक्त किये जा सकते हैं। तब प्रश्न यह उठता है कि यदि हिन्दी समर्थ भाषा है तो क्या लिखने वाले मे हिन्दी लिखने की सामर्थ्य नहीं है। लिखने वाला कहेगा कि यह बात भी नहीं, वह अच्छी हिन्दी जानता है और सभी विषयों पर हिन्दी में अधिकारपूर्वक लिख सकता है। यदि हिन्दी समर्थ भाषा है और लिखने वाला हिन्दी में समर्थ हैं, फिर हिन्दी में नहीं लिखने से यह प्रश्न उठता है कि क्या लिखने वाले को हिन्दी मे आस्था नहीं। यदि हम चाहते हैं कि हिन्दी का प्रयोग बढ़े, सभी लोग अपना काम-काज हिन्दी में करें और अधिकतम मात्रा में करें तो उसके लिए हमें स्वयं अपना उदाहरण प्रस्तुत करना होगा।

ई-9/23, वसत विहार, नई दिल्ली-110057

आर्य अनाथालय फिरोज पुर में..

(पेज 11 का शेष)

प्रशंसा करते हुए कहा कि राष्ट्रीय चेतना, जन जागरण व आचरण के उच्चतम आदर्शों के लिए एडी बी ने बहुत योगदान दिया है। आश्रम के समुचित विकास, समारोह की सुव्यवस्था और कार्यक्रम आयोजन के लिए चौधरी दम्पति की बहुत सराहना की। उन्होंने संस्था की सहायतार्थ दस हजार रुपए देने की घोषणा की।

इसी अवसर पर बम्बई की मशहूर कपड़ा मिल 'फेमिना' की ओर से भी पांच हजार रुपये दान स्वरूप प्राप्त हुए। रोटरी क्लब के प्रधान श्री मनजीत सिंह व सेक्रेटरी प० सतीश कुमार एडवोकेट ने 501 रुपय लायस क्लब के प्रधान श्री वाई आर खोसला और सेक्रेटरी प अश्विनी कुमाद एडवोकेट ने उपहार स्वरूप वस्त्र प्रदान किए। अन्य सज्जनो ने भी यथा शक्ति योगदान दिया।

अंत में माननीय चौधरी साहब ने श्री राकेश सिंह डिप्टी कमिश्नर, श्रीमती वदना राकेश सिंह व श्री अनिल कौशिक S.S.P फिरोजपुर और अन्य सभी गणमान्य सज्जनों व सभी पधारे हुए बच्चो का हार्दिक आभार प्रकट करते हुए कहा कि मेरा सौभाग्य है जो संस्था के कार्य हेतु समय समय पर सभी प्रतिष्ठित जनो का सहयोग प्राप्त होता रहता है। मुख्य अतिथि दम्पति का आपने पुन आभार प्रकट किया। आश्रम के कार्य कर्तागण तथा सम्बन्धित शिक्षण संस्थानों के मुख्याध्यापिकाएं और अन्य अध्यापिकाओं के प्रति समारोप को सफल बनाने में योगदान के लिए आभार प्रकट किया। इस शुभ अवसर पर माननीय डी०सी० साहब व उनकी धर्मपत्नी की ओर से उपस्थित बालक-बालिकाओं को लड्डू वितरित किए गए।

(पेज 3 का शेष)

प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेणीभाई आर्य को जब इस अभियोग की सूचना मिली तो इस केस की पैरवी का भार सभा ने अपने ऊपर लिया। यह केस आर्यसमाज के लिए एक ऐतिहासिक और प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया था। आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वान् स्वर्गीय आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री ने भरुच जाकर, जहां यह अभियोग चलाया गया था, केस की जिस पांडित्यपूर्ण ढग से पैरवी की, उससे जज भी चकित रह गया और अन्त में उसने 30-6-1964 को अपना फैसला देते हुए वेदमित्र ठाकोर को निर्दोष घोषित कर अभियोग से मुक्त कर दिया। इस प्रकार आर्य समाज की पुनः विजय हुई।

इस प्रकार वल्लभ सम्प्रदाय के खडन के साथ आर्य समाज का जन्म हुआ। इसलिये इस प्रकार के पाखंडों के निराकरण के लिए आर्यसमाज का आगे आना उसे विरासत में मिला है, जिसे वह किसी हालत में छोड़ नहीं सकता।

डीएवी पब्लिक स्कूल मलोट में स्वतंत्रता-दिवस-समारोह

डीएवी एडवर्डगंज पब्लिक स्कूल मलोट में स्वतंत्रता दिवस समारोह बड़े उत्साह से मनाया गया जो तीन दिन तक चला। प्रथम दिन कवितोच्चारण प्रतियोगिता (हिन्दी, अंग्रेजी) और कहानी वर्णन प्रतियोगिता आयोजित हुई। दूसरे दिन भाषण प्रतियोगिता, सुलेख प्रतियोगिता (हिन्दी, अंग्रेजी), चित्रकला एव ललित कला प्रतियोगिता व क्विज-कंटेस्ट आयोजित किया गया। तीसरे दिन प्री-प्राइमरी कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता की गई। प्रतियोगिता के निर्णायक मडल मे कु० सतोष बरमानी (हिन्दी विभागाध्यक्ष, डीएवी कालेज) श्रीमती कृष्णा चलाना (वरिष्ठ अध्यापिका गुरु तेग बहादुर खालसा सीनियर सैकण्डरी स्कूल) एवम् श्रीमती प्रेम मक्कड़ (अध्यापिका, सेक्रेड हार्ट कानवेंट स्कूल) थी।

मुख्य अतिथि श्री एन० के वधावन एग्जैक्टिव मजिस्ट्रेट, गिदड़बाहा ने समापन समारोह का शुभारम्भ ज्ञान ज्योति को प्रज्ज्वलित कर के किया। स्कूल के सदनों प्रीति, ज्योति, कीर्ति एवं शक्ति सभी ने राष्ट्रीयता और देश भक्ति से ओतप्रोत गीत व झलकियां प्रस्तुत कीं जिसकी सबने प्रशंसा की। मुख्य अतिथि ने प्रतियोगिताओं के विजेता छात्र छात्राओं को पुरस्कार प्रदान किये। समारोह राष्ट्रीय गान के साथ समाप्त हुआ। सम्पूर्ण आयोजन के लिए स्कूल की सांस्कृतिक गतिविधियों की समिति व उसकी संयोजिक। कुमारी अरजोत बधाई के पात्र हैं। अन्य स्टाफ-सदस्यों का योगदान भी सराहनीय था।

अशोक विहार में दस दिवसीय वेद प्रचार समारोह

आर्य स्त्री समाज अशोक विहार का दस दिवसीय वेद प्रचार समारोह 15 सितम्बर से 24 सितम्बर तक सम्पन्न होगा। प्रतिदिन मध्यान्ह 2॥ बजे तक चारों वेदों के चुने हुए मन्त्रो से श्रीमती ऊषा शास्त्री द्वारा यज्ञ होगा। 24 सितम्बर को पूर्णाहुति प्रात: 10 बजे होगी। 11 बजे से श्रीमती सुशीला जी आनन्द की अध्यक्षता में वेदसम्मेलन होगा। श्रीमती शकुन्तला दीक्षित व शकुन्तला आर्या के प्रवचन व अनेक बहिनों के भजन होंगे, मध्यान्ह 1-30 पर प्रीतिभोज होगा।

—प्रेमशील, प्रधान स्त्री समाज

आर्य समाज नन्नौर का उत्सव

आर्य समाज नन्नौर शहर का 31 वें वार्षिक सम्मेलन में 'सामवेद पारायण यज्ञ' का आयोजन 12 से 16 अक्तूबर तक होगा। जिसके ब्रह्मा महात्मा रामकिशोर जी महाराज दिल्ली वाले होंगे।

—आर्य समाज, हावड़ा के श्री केशवदेव धीमान प्रधान, श्री पुरुषोत्तमलाल सर्राफ मन्त्री व श्री आनन्द कुमार आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य युवक सम्मेलन

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् सराय रोहिल्ला के तत्वावधान में आर्य समाज सुभाष कालोनी के 40 वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में "आर्य युवक सम्मेलन" स्थानीय निगम पार्षद श्रीकृष्ण शर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

पुस्तकें दान

एस. आर सोनवणे ने आर्यसमाज मोबरवा, लातूर, (महाराष्ट्र) को लगभग एक हजार रुपये का साहित्य दान में दिया।

मौखिक धर्म परीक्षा

21 अगस्त को श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में आर्य समाज अजमेर द्वारा सचालित विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के बालक-बालिकाओं की मौखिक धर्म परीक्षा का आयोजन किया गया था जिसमें 570 बालक बालिकाओं ने भाग लिया। समस्त परीक्षाओं का आयोजन आर्य समाज अजमेर के मंत्री श्री रासासिंह जी ने किया।

—आर्य समाज आदर्श नगर, जयपुर के श्री ज्ञानेन्द्र आर्य प्रधान, डा० सुभाष वेदालकार मन्त्री व श्री बलदेव राज आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य वीर दल, करतार पुर के श्री राजेश कुमार आर्य प्रधान, श्री देशबन्धु मन्त्री व डा० राजेश कृष्ण कोषाध्यक्ष चुने गये।

भारत को स्वाधीन कराने में आर्य समाज का विशेष योगदान

आर्य समाज ने भारत को स्वाधीन कराने में विशेष योगदान दिया है। राष्ट्र के कल्याण के लिए अब आर्य समाज को रचनात्मक कार्य अपने हाथ में लेने चाहिए। यह विचार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने बिरला आर्य कन्या सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, बिरला लाईन्स में आयोजित स्वतन्त्रता दिवस समारोह में व्यक्त किये। इस अवसर पर लायन्स क्लब के पूर्व डिस्ट्रिक्ट गवर्नर श्री महेन्द्र कुमार ने ध्वजारोहण किया और श्री एस० पी० भवन ने विद्यालय द्वारा प्रकाशित स्मारिका 'रश्मि' का विमोचन किया। बच्चों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रमों और योग प्रदर्शन की उपस्थित जनता ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। प्रिंसिपल श्रीमती सुशीला सेठी ने बताया कि इस वर्ष के कक्षा-12 के परीक्षा परिणाम 92 प्रतिशत और कक्षा-10 के परीक्षा परिणाम 96 प्रतिशत रहे। —सूर्यदेव, मन्त्री

प्रभात आश्रम में प्रवेश बन्द

अनेक अभिभावकों का छात्र प्रवेश के सम्बन्ध में पत्र आता है तथा कई अभिभावक छात्र को साथ लेकर उपस्थित हो जाते हैं। इस समय स्थान पूर्ण हो चुका है अत: अगले वर्ष अप्रैल में सम्पर्क करें। —आचार्य

आर्य अनाथालय फिरोजपुर मे रक्षा बधन समारोह की झलकियां

आर्य अनाथालय फिरोजपुर मे रक्षा-बधन पर्व समारोह पूर्वक मनाया गया। मुख्यअतिथि डिप्टी कमिश्नर श्री राकेश सिंह I A S तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती वदना थे। एस एस पी श्री अनिल कौशिक व बडी सख्या में अन्य प्रतिष्ठित जन व शिक्षा शास्त्री उपस्थित थे।

1 प्रि० पी० डी० चौधरी एवं श्रीमती सतोष चौधरी क्षेत्र के गणमान्य जनो के साथ मुख्यअतिथियो का स्वागत करते हुए। 2 आश्रम की कन्याए मुख्यअतिथि डी० सी० साहब श्री राकेश सिंह I A S को राखी बाधते हुए। 3 प्रि० चौधरी स्वागत भाषण देते हुए। 4 बाल आश्रम के बालक देशभक्ति का वृन्द गान प्रस्तुत करते हुए। 5 छात्र योगासनो का प्रदर्शन करते हुए। 6 मुख्यअतिथि व उनकी धर्मपत्नी वृन्द गान मे भाग लेने वाली कन्याओ को पुरस्कार प्रदान करते हुए। 7 समारोह में उपस्थित जनसमूह का एक दृश्य। 8 मुख्यअतिथि अध्यक्षीय भाषण करते हुए। उन्होने आश्रम के लिए दस हजार रुपए देने की घोषणा की।

आर्य अनाथालय फिरोजपुर में श्रावणी-पर्व

डिप्टी कमिश्नर द्वारा दस हजार रु. की सहायता

27 अगस्त को आश्रम के हरे भरे विशाल प्रांगण मे प्रातःकाल श्रावणी व रक्षा बधन का पर्व उत्साह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर फिरोजपुर के डिप्टी कमिश्नर श्री राकेश सिंह I A S तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती वन्दना राकेश सिंह मुख्य अतिथि थे उनके साथ SSP फिरोजपुर श्री अनिल कौशिक I P S भी उपस्थित थे। आर्य समाजो साथ और रोटरी क्लब के सम्माननीय अधिकारी तथा क्षेत्र के अनेक प्रतिष्ठित व्यावसायी, शिक्षा शास्त्री व अन्य गण-मान्य जन, स्थानीय डी ए वी शिक्षण सस्थानों की मुख्याध्यापिका अध्यापिका व अध्यापकगण और छात्र छात्राओ ने विशाल सख्या मे उपस्थित होकर समारोह की शोभा बढाई। सर्व प्रथम प्रातःकाल यज्ञशाला मे श्रावणी उपाकर्म का विशेष यज्ञ चौधरी दम्पति के यजमानत्व मे सम्पन्न हुआ। पुराने यज्ञोपवीत बदल कर ब्रह्मचारियो को नवीन यज्ञोपवीत धारण कराए गए। यज्ञ कार्य प० मनमोहन शास्त्री ने सम्पन्न कराया।

सवेरे 10-30 बजे डिप्टी कमिश्नर दम्पति व अन्य विशिष्ट जनो का मुख्य द्वार पर स्वागत प्रि० चौधरी दम्पति सहित आश्रम के कार्यकर्ता तथा डी ए, वी शिक्षण सस्थाओ के मुख्य जनो ने किया। आश्रम की कन्याओं ने डिप्टी कमिश्नर सहित मुख्य अतिथियो को राखी बांधी। आर्य अनाथालय, डी ए वी सीनियर सेकेण्डरी स्कूल एव एम डी ए वी पब्लिक स्कूल दुर्गा देवी डी ए वी मे टेनरी पब्लिक स्कूल, दयानन्द माडल स्कूल, दयानन्द प्राइमरी व गर्ल्स मिडिल स्कूल के छात्र छात्राओ ने विशेष रगारग कार्यक्रम, गीत, भजन, नृत्य नाटिका, आसन प्राणायाम भाषण आदि प्रस्तुत किए। सभी कार्यक्रमो की भूरि भूरि प्रशसा की गयी आश्रम के बच्चो द्वारा प्रदर्शित योगासनो तथा देशभक्ति के गीत भजन व भाषण की भरपूर सराहना की गयी। वक्ताओ ने रक्षा बधन के महत्व पर प्रकाश डाला। समारोह के अन्त मे डी सी साहिब व इनकी धर्मपत्नी ने आश्रम से सम्बधित विद्यालयों के छात्र छात्राओ को परीक्षा में अच्छे स्थान प्राप्त करने के लिए पुरस्कार वितरित किए। आपने सभी कार्यक्रमो में भाग लेने वाले बच्चो को भी उत्साह वर्द्धक पुरस्कार प्रदान किए।

उन्होने अपने अध्यक्षीय भाषण में रक्षाबधन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए इसे भाई बहन की भावना से ऊपर उठकर सभी सामर्थ्यवान जनो द्वारा असमर्थों की सहायता व सुरक्षा तथा समस्त राष्ट्र मे कल्याण व खुशहाली की क्रांति लाने का पर्व बताया। उन्होने गम्भीरता पूर्वक आवाहन किया कि हम सबको मिलकर इस पवित्र पर्व की प्राचीन प्रतिष्ठा को फिर से स्थापित करना चाहिए। उन्होने डी ए वी शिक्षण सस्थानो की कार्य कुशलता व सेवा भावना की

(शेष पेज 10 पर)

पूर्व 103/81 लाइसेंस टू पोस्ट विदाउट प्रिपेमेंट
रजिस्ट्रेशन न० आर० एन० आई० 39/57
Delhi Postal Regd. No D (C) 409
D PSO ON 14/15-9-88 सितम्बर, 1988

'लायन्स क्लब' गाजियाबाद के मुख्य अतिथि श्री बी०बी० गक्खड

लायन्स क्लब गाजियाबाद के 18 अगस्त को हुए प्रतिष्ठापन समारोह मे श्री बी०बी० गक्खड अतिरिक्त शिक्षा निदेशक डी०ए०वी०, मुख्य अतिथि बने। डी ए वी पब्लिक स्कूल गाजियाबाद के आचार्य श्री ए०के० चावला ने उनका परिचय देते हुए कहा कि वे 1987 से अनेक डी ए वी पब्लिक स्कूलो के प्रबन्धक हैं। कुछ ही वर्षों मे उन्होने अनेक डी ए वी पब्लिक स्कूलो की स्थापना की है। एम सी एण्ड ई ए चण्डीगढ़, कालिज आफ मैनेजमेन्ट कम्युनिकेशन तथा एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन चण्डीगढ़ आदि अनेके संस्थाओ की स्थापना में उनका प्रमुख योगदान रहा है। उनकी निष्ठापूर्ण सेवाओ के उपलक्ष्य मे डी ए वी प्रबन्ध समिति ने 1982 में उन्हें 'स्वर्ण पदक' प्रदान कर सम्मानित किया। 1983 मे राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुआ। 1984 मे डी ए वी प्रबन्ध समिति ने पुन सम्मानित किया। सन् 1985 में उन्हें कुरुक्षेत्र विश्व विद्यालय का कोर्ट मेम्बर चुना गया। श्री गक्खड उच्च कोटि के लेखक हैं। उनके द्वारा लिखित पुस्तकें विभिन्न पाठ्यक्रमो मे सम्मिलित की गई हैं। खेलो मे आपकी विशेष रुचि है। वालीबाल और हैण्ड बाल समिति [illegible] हैं। उच्चस्तरीय ज्ञान एव अनुभवो के लिये आपने अमेरिका, इग्लैंड, कनाडा आदि देशो का भ्रमण किया।

समारोह मे मुख्य अतिथि ने अपने भाषण मे समाज के कमजोर वर्गों के उत्थान पर विशेष बल और इसके लिये अपने पूर्ण सहयोग का वचन दिया। कमजोर वर्ग की स्त्रियो को उनके परिवार की सहायतार्थ सिलाई मशीन देने का सुझाव दिया तथा 'लायस क्लब' से भी इस पावन कार्य में सहयोग की प्रार्थना की। उन्होने प्रौढ़ शिक्षा पर विशेष बल देते हुए इस दिशा मे अपने महत्वपूर्ण सुझाव दिये।

—प्रिंसिपल

डीएवी पब्लिक स्कूल बृज विहार में स्वाधीनता-समारोह

डीएवी पब्लिक स्कूल बृज विहार गाजियाबाद मे स्वाधीनता दिवस पर ध्वजारोहण श्री रामनाथ सहगल ने किया तथा भारत इलेक्ट्रोनिक गाजियाबाद के सहायक महाप्रबधक लैफ्टिनेंट कर्नल श्री बी आर मल्होत्रा ने बच्चोको आशीर्वाद दिया।

मूसलाधार बारिश होने के बावजूद विद्यालय के बच्चो ने रोचक रंगारग कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसकी सबने भूरि भूरि प्रशसा की। इस कार्यक्रम के विशेष आकर्षण कव्वाली व हरियाणवी लोकनृत्य थे।

श्री सहगल ने अपने अध्यक्षीय भाषण में विद्यालय के अनुशासन व विद्यार्थियो की अनोखी प्रतिभा की प्रशसा की तथा आशा व्यक्त की कि यह विद्यालय थोडे समय में ही श्री वाई पी वर्मा के निर्देशन में एक विशेष स्थान प्राप्त कर लेगा। विद्यालय के भवन निर्माण हेतु नक्शा स्वीकृत हो गया है।

14 अगस्त 1988 को ईस्ट वीमेन पोलेटेक्निक द्वारा आयोजित कला प्रतियोगिता मे इस विद्यालय के 4 छात्रो ने पुरस्कार प्राप्त किये।

योग्य वधू चाहिए

एक अच्छे परिवार के 35 वर्षीय युवक के लिए, जिसकी पत्नी का पिछले वर्ष देहान्त हो गया है, 30-32 वर्ष की लड़की चाहिए। उनके तीन बच्चे हैं जिनकी आयु 10,8,2 है। सन्तानरहित विधवा भी स्वीकार्य है। युवक की मासिक आयु 10,000 रु० से ऊपर है। अपनी फैक्टरी, निजी मकान तथा अन्य सुविधायें हैं। पत्र व्यवहार का पता—रामनाथ सहगल, आर्य समाज, मदिर मार्ग नई दिल्ली-110001

मुद्रक प्रकाशक – श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाड़ी धीरज (फोन 527335) दिल्ली से छपवाकर कार्यालय 'आर्य जगत्' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 (फोन 718343)

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य —30 रुपये विदेश मे 65 पौ० या 125 डालर वर्ष 51, अंक 42 रविवार 16 अक्टूबर, 1988 दूरभाष : 343718
आजीवन सदस्य-251 रु० इस अंक का मूल्य— 75 पैसे सृष्टि सवत 1972949089 दयानन्दाब्द 163 आश्विन शुक्ल-6, 2045 वि०

अधिकार नहीं

—कविवर "प्रणव" शास्त्री एम ए महोपदेशक—

विजया दशमी पर्व मनाने का तुमको अधिकार नही है।
करो रामलीलाए तुमको वास्तविकता से प्यार नहीं है॥
आज अयोध्या के आँगन में बज क्यों ढोल रहे हैं
राज नीति मदहोश मदारी धावा बोल रहे हैं।
पाखण्डी तुला तथ्य को यो ही तोल रहे हैं
देख रहे हैं सब ही करता कोई किन्तु विचार नहीं है।
विश्वा मित्र, अगस्त्य कहाँ है जोकि प्रशिक्षण दाता हो।
राम और लक्ष्मण भी ढूढों जो धनुधा सधाता हो।
शबरी, केवट श्रमिक जनो को पावन प्यार प्रदाता हों।
भ्रातृ-भाव से भरित शत्रुघन भरत रूप साकार नहीं है॥
निर्ममता की तडित-ताडिका क्षण-क्षण चमक रही है।
मारीची माया सुबाहु की निभय धमक रही है।
दशों दिशाओं मे दैत्यों की दामिनि दमक रही है
यहा अमन के लिए दमन का क्यों उपचार नहीं है।
जन-स्वतन्त्रता सीता रोती रावण अरि की कारा मे,
दीख न सकती अश्रुधार मिल व्यास वारि की धारा मे।
कौन बँधाये धीरज उसको महानाश असिधारा में
लङ्का में जाने को कोई पवन पुत्र तैयार नही है॥
लिए विखण्डन खड्ग यहा खर, दूषण घूम रहे हैं,
देश विभाजन की पी हाला मद में झूम रहे हैं।
कुछ गुरुओं के शिष्य उन्हीं की पद रज चूम रहे हैं
पुण्य पुरातन स्नेह शान्ति का खुलता द्वार नही है॥
अङ्गद वीर कहा है जो लङ्का में दौर जमा देगा
राम सुभग सन्देश-पत्र रावण-हाथ थमा देगा।
विजय सत्य की, विजय धर्म की, जन-मन मध्य रमादेगा
आतङ्कों के उठे ज्वार को करता कोई पार नहीं है॥
"प्रणव" प्रेरणा और चेतना नही रही है नागर मे
पौरुष का पीयूष सूखता जाता गौरव गागर मे।
राम-सैन्य सब सोते खाती रामानन्दी सागर मे
कोई भी क्लीबत्व कला को देता निज धिक्कार नही है॥

पता—शास्त्री सदन, रामनगर (कटरा) आगरा 6

फीजी के जातीय भेदभाव की संयुक्तराष्ट्र संघ में गूंज

भारत के विदेशमन्त्री ने विश्वसमुदाय को आगाह किया

फिजी के जातीय भेदभाव के विरुद्ध 'आर्यजगत्' ने प्रबल आवाज उठाई थी। आर्यसमाज और विश्व हिन्दूपरिषद ने इस दिशा में सरकार का ध्यान खींचा। अन्त में सरकार के चेतने का प्रमाण दिखाई दिया। भारत के विदेशमन्त्री श्री नरसिंहराव ने हाल मे सयुक्तराष्ट्र सघ में इसका जिक्र किया और विश्वसमुदाय को इसके लिए जरूरी कार्रवाई करने को कहा।

श्री राव ने यह भाषण हिन्दी में दिया। इससे पहले जनतापार्टी के शासन काल में विदेश मन्त्री श्री अटलविहारी वाजपेयी ने स रा सघ मे पहली बार हिन्दी में भाषण दिया था। श्री वाजपेयी इस भारतीय प्रतिनिधि मडल मे भी शामिल हैं।

संयुक्तराष्ट्र सघ मे विदेस मन्त्री के इस भाषण से प्रभावित होकर अन्तर्राष्ट्रीय बदनामी से बचने के लिए, दो दिन बाद राबुका की सरकार ने सविधान मे सशोधन के लिए 11 सदस्यो की एक कमेटी बनाने की घोषणा की है जिसमें 5 भारतीय मूल के लोगो को भी रखा है। इस प्रकार आर्यसमाज के आन्दोलन का एक सुफल तो सामने आया।

श्री राव के भाषण का सम्बद्ध अ श यहा दिया जा रहा है।

संयुक्त राष्ट्र, 4 अक्तूबर। सयुक्त राष्ट्र दक्षिण अफ्रीका से रगभेद समाप्त करने के प्रयास कर रहा है। फिजी मे जातीय भेदभाव को बढावा देने के प्रयास चल रहे हैं।

यह चेतावनी भारत के विदेश मन्त्री पी०वी० नरसिंहराव ने आज यहां सयुक्त राष्ट्र महासभा के 43 वें वार्षिक अधिवेशन में दी। श्री राव ने कहा कि उनके प्रतिनिधिमडल ने गत वर्ष विश्व समुदाय को आगाह किया था कि फिजी में स्पष्ट रूप से जातीय भेदभाव है। उन्होने कहा कि अ तर्राष्ट्रीय समुदाय को जातीय भेदभाव का विरोध करना चाहिये चाहे वह कैसी भी हो।

श्री राव ने आशा व्यक्त की अन्तर्राष्ट्रीय जनमत से फिजी में विश्वास सद्भाव और सहमति की भावना बहाल करने मे मदद मिलेगी। सयुक्त राष्ट्र के एक सदस्य तथा इसके उपनिवेशवाद विरोधी समिति के एक सदस्य के रूप मे भारत फिजी की आजादी की लडाई मे आगे था। हम लोगो के लिये यह बडे दुख की बात है कि फिजी की स्थिति पिछले एक वष मे खासी बिगड गयी है। उन्होने कहा कि हम समझते हैं कि सविधान मसौदे को अन्तिम रूप देने के पहले विभिन्न समुदायो के साथ बातचीत की जानी चाहिये। इस प्रक्रिया से सभी वग के लोग खुल कर के भाग ले सकें।

श्री राव ने कहा कि एक समय था कि लोग चाहते थे कि सारा ससार फिजी जैसा हो। फिजी के जातीय सद्भाव शाति को विश्व मे आदर्श माना जाता था। उन्होने आशा व्यक्त की कि फिजी को शीघ्र ही पहले जैसी स्थिति वापस आ जायेगी।

सम्पादक—क्षितीश वेदालंकार
व्यवस्थापक—रामनाथ मलिक

आओ सत्संग में चलें

विश्वव्यापी विषमता को हटाने की चुनौती

—चमनलाल—

हम जिस ओर भी दृष्टिपात करें सारा संसार ही विषमता युक्त दिखाई पड़ता है। समानता तो मानो जीवन में से कहीं अज्ञात स्थान में जा छुपी है। हां मृत्यु ही एक ऐसी चीज है जिसके लिए राजा रंक, अमीर गरीब, बलवान-निर्बल, विद्वान मूर्ख सब एक समान हैं। अतः संसार को विषमतामय कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

सर्वप्रथम जड़जगत् को ही लीजिए। हम देखते हैं कि एक फूल किसी राजा के मुकुट की शोभा बढ़ा रहा, या किसी सुन्दरी की सुन्दरता को चार चांद लगा रहा है। दूसरी ओर कोई अभागा फूल धरती पर पड़ा मार्ग में आते-जाते यात्रियों के पांव तले रौंदा जा रहा है। एक कुएं का पानी बड़ा मीठा, ठंडा और निर्मल होता है, जिसे सभी लोग बड़ी चाह से पीते हैं, जबकि किसी दूसरे कुएं का गन्दा, खारा पानी पीने योग्य न होने के कारण लोग प्यासे होते हुए भी पीना पसंद नहीं करते। एक पत्थर का टुकड़ा कहीं शिव भक्तों के लिए शिव-लिंग के रूप में लाखों-करोड़ों स्त्री पुरुषों के लिए उनका आराध्य देव बन जाता है, दूसरी ओर वैसा ही पत्थर गली कूचों में इधर उधर ठुकराया जाता है। ऐसी ही विषमतामय दशा भोग योनियों के पशु-पक्षी प्राणियों की भी है।

तीसरी प्रकार की दुनिया मानव देह धारी उभय योनि (भोग तथा कर्म योनि) वाले प्राणियों की है। हमारे शास्त्रों में मानव योनि को सर्व श्रेष्ठ कहा गया है। महर्षि व्यास ने 'महाभारत' लिखा है "नहि मानुषात् श्रेष्ठतर ही किञ्चित्।" परन्तु विषमता की भयंकर ज्वाला इस सर्व श्रेष्ठ प्राणी को भी प्रभावित किये बिना नहीं रही। मानव समाज में कोई राजा है तो कोई रंक, कोई धनी है तो कोई दरिद्र। कोई दूध मलाई को चखाना तक पसन्द नहीं करता, तो कोई अभागा छाछ के सफेद पानी तक के लिए तरसता है।

> समौ चिद्धस्तौ न समं विविष्टः
> सम्मातरा चिन्न समं दुहाते।
> यमयोश्चिन्न समा
> ज्ञाती चित्सन्तौ न समं पृणीतः॥

अर्थात मनुष्य के दो हाथ हैं किन्तु दोनों में एक समान बल नहीं होता। एक मां से उत्पन्न दो गायें एक जैसा दूध नहीं देतीं। जुड़वा भाई एक साथ पैदा होने पर भी एक जैसे बलवान नहीं होते। एक परिवार में पैदा होने पर भी दो मनुष्यों की भावना एक जैसी नहीं होती। भगवान बड़ा न्यायकारी व दयालु है तो भी उसकी रची सृष्टि में इतनी असमानता?

मनुष्य को चिन्तन के पश्चात यह निश्चय हो जाता है कि वह शरीर नहीं है क्योंकि मृत्यु उसे शरीर के अतिरिक्त एक चेतन वस्तु अविनाशी आत्मा का बोध कराती है। मानव समाज में यह विषमता प्रभु की पैदा की हुई नहीं है, क्योंकि आनन्दकन्द भगवान तो न्याय कारी, दयालु तथा पक्षपात रहित है। वह तो बिना किसी पक्षपात के जीवों के कर्मों का फलदाता है, जहां किसी प्रकार की सिफारिश आदि को कोई स्थान नहीं। वह ठीक-ठीक हिसाब से जीवों को उनके कर्मों का फल देता है। अथर्ववेद के चौथे काण्ड में कहा है—संख्याता अस्य निमिषो जनानाम्। उसके हिसाब में किसी प्रकार की भूल नहीं होती। भूल तो मनुष्य ही करता है, क्योंकि भूल करना उसका स्वभाव है।

यह घोर विषमता जीव के अपने कार्यों के फलस्वरूप ही उत्पन्न हुई है। जीव को वेद में "मातरिश्व" कहा है, क्योंकि वह अपने कृत कर्मों का फल भोगने हेतु बार बार माता के गर्भ में आता है और इस प्रकार वह विषमता का कारण बन जाता है। इस बात को सांख्य दर्शनकार कपिल मुनि ने ये स्पष्ट किया है—"कर्म वैचित्र्यात् सृष्टि वैचित्र्यम्। कर्म की विचित्रता से ही सृष्टि की विचित्रता है।

यह भी याद रहे कि कोई भी कर्म बिना फल दिये नहीं रहता। कर्म फल से असावधान रहना नितान्त मूर्खता के सिवा और कुछ नहीं। महाभारत कार महर्षि व्यास जी ने ठीक लिखा है कि हजारों गायों के झुंड में से जैसे बछड़ा अपनी मां के ही पास जाता है, वैसे ही पूर्वकृत कर्म कर्ता का ही पीछा करते हैं।

> यथा धेनु सहस्रेषु वत्सो
> विन्दति मातरम्।
> तथा पूर्व कृत कर्म कर्तारमनुगच्छति
> महाभारत अ०प० 7/22

कर्म फल अवश्य भोगना ही पड़ता है। "अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्मशुभाशुभम्।" अतः मनुष्य को कर्म करने में बड़ा सावधान होने की आवश्यकता है। पुण्य सर्वहितकारी करने में ही सब का हित निहित है।

विषमता किसी भी राष्ट्र के लिए घोर अभिशाप है। इसको दूर करना प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति का कर्तव्य होना चाहिए। इसके अभाव में ही आज समूचे देश में अशान्ति तथा अराजकता की ज्वाला भड़क रही है। विषमता के कारण कमजोर वर्ग के लोग दूसरे सम्पन्न वर्ग के लोगों के शत्रु बने हुए हैं। अभाव ग्रस्त लोग सम्पन्न लोगों के वैभव को देखकर ईर्ष्या की अग्नि में जल रहे हैं और तोड़फोड़ करने पर उतारू होकर देश में अशान्ति फैलाने में लगे हुए हैं। सरकारी या गैर-सरकारी सम्पत्ति को नष्ट करना, बसों को फूंकना, हड़तालें करना, राष्ट्र-विरोधी नारे लगाना जन-साधारण का जीवन अस्त-व्यस्त करना इत्यादि विषमता के दुष्परिणाम ही तो हैं। जो धन राशि समाज कल्याण और राष्ट्र के विकास में लगनी चाहिए थी, वह इन अराष्ट्रीय तत्वों के दमन करने में व्यय हो जाती है। विषमता उस अमर बेल की तरह है जो राष्ट्र वृक्ष से ऐसे लिपट गई है कि जिस कारण यह राष्ट्र रूपी वृक्ष को पनपने, नहीं देती। इसी कारण सारा विकास रुक गया है। यह असमानता रूपी विष वृक्ष राष्ट्र समाज की रग-रग में ऐसे व्याप गया है कि जिससे छुटकारा पाना असंभव प्रतीत होता है।

परन्तु यह भी सत्य है कि इस विषमता को दूर किये बिना देश या समाज का कल्याण नहीं। अतः इस दिशा में कुछ सक्रिय कदम उठाने की नितान्त आवश्यकता है।

रूस और चीन जैसे कथित समाजवादी देशों में भी इस विषमता का कुछ कम प्रभाव नहीं है। किन्तु उन देशों की सरकारों ने राजनीतिक उपायों से इस विषमता को कुछ कम करने की कोशिश की है। उन उपायों में राज दण्ड का का भय और जबरदस्ती की भावना है, इस कारण कुछ यथेष्ट सफलता नहीं मिली। अतः वे जबरदस्ती वाले समाजवाद को छोड़कर अपने प्रजाजनों को उनके कार्यों में कुछ स्वतन्त्रता देने पर विचार करने लगे हैं। वास्तविकता यह है कि हम इस विषमता को शतप्रतिशत दूर कर नहीं सकते। परन्तु इसमें भी संदेह नहीं कि सज्जन लोग अपनी उदारता दानशीलता, सद्भावना और मानवीय सहानुभूति की भावना के द्वारा इस घोर भयानक असमानता के कुप्रभावों से बहुत हद तक दूर करने में सफल हो सकते हैं।

वेदों में जीवन यापन के कुछ अमूल्य सारगर्भित सिद्धान्तों का विवेचन है और उनको व्यवहार में लाने मात्र से ही यह विषमता बहुत हद तक स्वत ही दूर हो जाती है। इस संबंध में हमें किसी समाजवादी देश से कुछ सीखने की आवश्यकता नहीं है। वास्तव में यज्ञमय जीवन दीन दुखियों अभाव ग्रस्त साधन हीन लोगों की सहायता करने का ही नाम है। वेद में आया "अपाराति" शब्द स्पष्ट कह रहा है कि हम अदान की भावना को छोड़कर दानशील बनें। एक और प्रसंग में आया है—"मान्तः स्थुर्नो अरातयः" अर्थात् हमारे समाज में कोई अदानी कंजूस न हो। यह नहीं, वेद में धन की कामना है—

> वयं स्याम पतयो रयीणाम्।
> ऋग्वेद 10 122-10

यहां रयि शब्द ऐसे धन के लिए प्रयुक्त हुआ कि जो केवल अपनी ही तृप्ति के लिए न होकर, दूसरे अभावग्रस्त लोगों को दिये जाने की क्षमता रखता हो।

जो लोग वेद में बताये गये इन जीवन आदर्शों का पालन नहीं करते अर्थात् लोककल्याण हित कुछ नहीं देते, उन्हें वेद ने पापी कहा है—"केवलाघो भवति केवलादी।' यजुर्वेद में तो स्पष्ट कह दिया है—इस धन पर तेरे अकेले का अधिकार नहीं है, यह सब तो ईश्वर का है, तू तो केवल निमित्त मात्र है इसे बांट कर उपयोग कर तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।'

वास्तव में धन भी उसका ही सफल कहलाने योग्य है जो अभाव ग्रस्तों के काम आये। सामवेद में जीव भगवान से अदान की संकुचित भावना और द्वेष की वृत्ति से दूर रहने की प्रार्थना करते देखा जाता है —

> त्वं नो अग्ने
> महोभिः पाहि विश्वस्या अराते :
> उत द्विषो मर्त्यस्य।

अदान की भावना और आपसी द्वेष की वृत्ति ये दोनों ही मानव समाज के घोर शत्रु हैं। इसीलिए इन्हें दूर करने की कामना की गई है। अतः हम इन दोनों प्रकार की दुष्टवृत्तियों से हटकर समाज में फैली असमानता को बहुत हद तक दूर कर सकते हैं।

पता—H 64 अशोक विहार-1
दिल्ली-52

दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा की बैठक

महर्षि दयानन्द स्मारक टंकारा की एक आवश्यक बैठक रविवार 23 अक्तूबर को आर्य समाज मंदिर, ग्रेटर कैलाश 1 में प्रातः 11 बजे से 1 बजे तक होगी।—रामनाथ सहगल, मंत्री ट्रस्ट

कटक दूरदर्शन से वेदप्रचार

42 वें स्वतन्त्रता दिवस पर कटक दूरदर्शन केन्द्र से उड़ीसा के वैदिक विद्वान् आचार्य श्री प्रियव्रत दास ने 'वेदसुधा' के शीर्षक से वेदों के मन्त्रों का व्याख्यान किया।—योगेन्द्र कुमार उपाध्याय

रामराज्य कैसा था ?

बरनाश्रम निज निज धरम निरत बेद पथ लोग ।
चलहिं सदा पावहिं सुखहिं नहिं भय सोक न रोग ।।

दैहिक दैविक भौतिक तापा । रामराज नहिं काहुहि ब्यापा ।।
सब नर करहिं परस्पर प्रीति । चलहिं स्वधर्मनिरत श्रुति नीति ।।
चारिउ चरन धर्म जग माहीं । पूरि रहा सपनेहु अघ नाहीं ।।

अल्पमृत्यु नहिं कवनिउ पीरा । सब सुन्दर सब बिरुज सरीरा ।।
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना । नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना ।।
सब निर्दम्भ धर्मरत पुनी । नर अरु नारि चतुर सब गुनी ।।
सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी । सब कृतग्य नहिं कपट सयानी ।।
(गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरित मानस' में रामराज्य का यह वर्णन वाल्मीकि रामायण पर ही आधारित है) ।

सम्पादकीयम्

शहाबुद्दीन उवाच

विजयादशमी का पर्व ज्यो-ज्यो निकट आता जा रहा है त्यो त्यों राम जन्म भूमि अयोध्या और बाबरी मस्जिद के प्रश्न के कारण देश के वातावरण मे तनाव के लक्षण बढ़ते जा रहे हैं । अभी तक इस विषय में कोई उभयपक्षसम्मत समाधान नहीं निकल पाया । उसकी सम्भावना भी नहीं है, क्योंकि इस मामले में दोनों पक्षों में से कोई भी झुकने को तैयार नहीं है । फिलहाल वातावरण में गर्मी शहाबुद्दीन द्वारा 14 अक्तूबर को मुसलमानों के अयोध्या की ओर मार्च को लेकर उत्पन्न हुई है । कोई भी क्रिया प्रतिक्रिया को जन्म दिये बिना नहीं रहती । जब शहाबुद्दीन ने यह ऐलान किया तो न केवल उत्तर प्रदेश के बल्कि समस्त भारत के विशाल हिन्दू समाज के मन में उसकी प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक था । अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिये श्री शहाबुद्दीन जिस रास्ते पर चल रहे हैं वह देश को विघटन की ओर ले जाने वाला है । शहाबुद्दीन ने यह रास्ता जानबूझ कर चुना है । इसलिये हिन्दू समाज मे अगर अलीगढ़ और मुजफ्फरनगर के दगों जैसी प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है तो यह शहाबुद्दीन का मनचीता ही है । क्योंकि जितना जितना क्रिया-प्रतिक्रिया का यह दौर चलेगा, देश के विघटन की भूमिका उतनी ही प्रबल होती चली जायेगी ।

कुछ लोग समझते थे कि पाकिस्तान का निर्माण करने वाले कायदे आजम मोहम्मद अली जिन्ना के पश्चात् कोई दूसरा जिन्ना पैदा नहीं होगा । परन्तु शहाबुद्दीन अपने कारनामों से उन भूले लोगो की इस भूली समझ को झुठलाने पर तुले हुए हैं । वे स्वय जिन्ना के पदचिन्हों पर चलते हुए देश के एक और विघटन का श्रेय अपने सिर लेकर इतिहास में अमर होना चाहते हैं । भले ही देश के 85 प्रतिशत लोगों के मन में उनकी छवि कैसी ही क्यो न हो, परन्तु वे अपनी कूटनीति से देश के चन्द्रशेखर जैसे नेताओं को अपनी मुट्ठी मे ले चुके हैं । हमने 85 प्रतिशत की बात कही है । इसका अर्थ यह नहीं है कि बाकी 15 प्रतिशत लोगो के मन मे भी श्री शहाबुद्दीन की छवि कोई बहुत साफ-सुथरी है । स्वय जिस मुस्लिम समाज का वे नेतृत्व करना चाहते हैं उसमें भी अधिकांश उनके पक्ष में नहीं हैं । सैयद इमाम बुखारी और शहाबुद्दीन की एक दूसरे को आंखों देखी न सुहाने वाली परस्पर नेतागिरी की होड भी जग जाहिर हो चुकी है परन्तु 'मेरा टट्टू यहीं अड़ा' के उपासक शहाबुद्दीन मुस्लिम समाज में भी बीच चौराहे पर अपना टट्टू अड़ाये खड़े हैं और जिस सकीर्ण साम्प्रदायिकता और इस्लाम परस्ती का वे प्रचार कर रहे हैं उससे उनको विश्वास है कि एक दिन मुस्लिम जन मानस मारके उनके पीछे आयेगा । केवल मुस्लिम समाज ही क्यों, समस्त अल्पसख्यक वर्गों की यही मनोवृत्ति दिखाई देती है कि जो नेता जितनी उग्र वाणी बोले, वे अन्तत उसी के पीछे हो लेते हैं ।

श्री शहाबुद्दीन की एक बात के लिये तारीफ करनी होगी । वे अपनी बात में कभी लाग-लपेट नहीं आने देते और कभी दो अर्थों वाली भाषा नहीं बोलते । कितनी ही आलोचना होने पर वे कभी अपनी मंशा नहीं छिपाते । वे खुले आम कहते हैं कि हिन्दुओ को शासन करना नहीं आता । शासन करने की कला तो केवल मुसलमानों को आती है । अग्रेज इस देश पर 250 साल से अधिक राज्य नहीं कर पाये, परन्तु मुसलमानो ने 700 साल तक हिन्दुस्तान पर हुकूमत करके अपनी शासन करने की योग्यता साबित कर दी है । इसलिये हिन्दुस्तान का शासन भविष्य में भी मुसलमान ही करेंगे, क्योंकि हिन्दू अयोग्य साबित हो चुके हैं । अपनी बात को आधुनिकता का जामा पहनाते हुए वे इतना और जोड़ देते हैं—'पहले हमने शस्त्रों के बल पर हुकूमत की थी, किन्तु आजकल का जमाना वोट का है, इसलिये हम वोट के बल पर अपना बहुमत स्थापित करके हिन्दुस्तान की हुकूमत पुन अपने हाथ में लेंगे ।' इस काम में कितना समय लगेगा, इसकी उन्हें चिन्ता नहीं है । परन्तु वे अपने अनुयायियों को विश्वास दिलाते हैं कि वह समय बहुत दूर नहीं है जब सारे हिन्दुस्तान में मुसलमान बहुमत प्राप्त कर लेंगे । अपनी इसी मंशा को पूरा करने के लिये वे 'मुस्लिम इण्डिया' नामक अखबार निकालते हैं क्योंकि उनकी दृष्टि में यह भारत हिन्दुओं का स्थान नहीं है, मुसलमानों का स्थान है । हिन्दू तो हमेशा शासित होने के लिए पैदा हुए हैं और मुसलमान शासक बनने के लिये । मुस्लिम इतिहास इसका गवाह है । शहाबुद्दीन मुस्लिम शासन से पहले के भारत के इतिहास को इतिहास को इतिहास ही नहीं मानते ।

जो मुस्लिम देश हैं, वहा तो कट्टर इस्लाम का शासन है ही । परन्तु जो मुस्लिम देश नहीं हैं, वहा के मुसलमान हमेशा शासको के प्रति विद्रोह की मुद्रा में ही खड़ दिखाई देते हैं । क्योकि उनकी दृष्टि में गैर-इस्लामी देशो को इस्लामी झडे के नीचे लाना ही इस्लाम की असली सेवा है । इस्लाम अपने मूल मे ही लोकतन्त्र का विरोधी और तानाशाही का उपासक है । इसलिये जहा जहा इस्लाम है, वहा वहा लोकतन्त्र नही है । इस्लामी देशों मे लोकतन्त्र को दबाने के लिये ही सदा इस्लामीकरण का सहारा लिया जाता है । पाकिस्तान और बगलादेश इसके उदाहरण हैं ही । जनरल जिया के बाद पाकिस्तान जिस माहौल से गुजर रहा है उसमें भी इस्लामीकरण और लोकतन्त्र के पक्षपाती परस्पर विरोधी खेमों मे बन्टे हुए हैं और आगामी चुनावो में शायद यह स्पष्ट हो कि क्या वहां कभी लोकतन्त्र आ पायेगा ?

श्री शहाबुद्दीन के चिन्तन का एक पहलू और भी है । उनका कहना है कि सारे दक्षिण पूर्वी एशिया में केवल मात्र हिन्दुस्तान ही एक ऐसे क्षेपक की तरह से पड़ा हुआ है जो गैर मुस्लिम है और बाकी सब देश इस्लाम के झण्डे के तले आ चुके हैं । इस क्षेपक को हटाकर हिन्दुस्तान को भी इस्लामी इबारत के मूलपाठ में शामिल करना ही उनका राजनैतिक उद्देश्य है । और यह उद्देश्य बड़ी आसानी से समस्त इस्लामी देशो की सहानुभूति बटोर लेता है । इस क्षेपक को हटाने के लिये समस्त मुस्लिम देश इसे पवित्र कर्तव्य समझकर इस काम में यथा सम्भव सहायता करने को तैयार रहते हैं । सऊदी अरब अपने धन के बल पर, और पाकिस्तान तथा बगलादेश अपने जन के बल पर । पाकिस्तान और बगलादेश से मुसलमान की भारी सख्या में घुसपैठ इसी रणनीति का परिणाम है ।

और तो और, बगलादेश और असम की सीमा पर स्थित किशनगज नामक स्थान पर अचानक ईरानियों का इतना जमघट हो गया है कि उसका कोई औचित्य समझ में नहीं आता । उन ईरानियों के पास खेती बाड़ी के लिए जमीन नहीं है, वे किसी उद्योग धन्धे में लगे हुए भी नहीं हैं, पर जिस शान-शौकत से वे रहते हैं, उससे यही अन्दाज होता है कि उनका एकमात्र धन्धा केवल तस्करी है । देश का दुर्भाग्य यह है कि हमारे सत्तासीन नेता इन विधर्मी और विदेशी घुसपैठियो को अपना वोट बैंक समझकर उनको प्रश्रय देते हैं । इन राजनेताओ के प्रश्रय के कारण ही आम जनता इन घुसपैठियों से दब कर रहने को विवश होती है ।

तस्कर-सम्राट् हाजी मस्तान का नाम कौन नहीं जानता ? सारे उत्तर प्रदेश में तथा अन्य पर्याप्त मुस्लिम आबादी वाले प्रदेशो में दौरा करके हाजी मस्तान ने मुस्लिम दलित सघ बनाया है । दलितो के नेता कांशीराम के साथ भी उनकी साठ-गाठ है । और आगामी चुनावों में वे मुस्लिम और दलित लोगों को साथ मिलाकर अपने पैसे के बल पर कोई चमत्कार करने की सोच रहे हैं । हम सोचते हैं कि जिस व्यक्ति को सीखचो के पीछे होना चाहिए था, वह व्यक्ति इस तरह कैसे दनदनाता हुआ नेता बना घूमता है ? तो जानकार लोग बताते हैं कि शासन की कुर्सियों पर बैठे राजनेताओ का वरदहस्त जिसके सिर पर हो और जिसके पैसे के बल पर उनके जलसे जलूस और बड़ी-बड़ी रैलियां निकती हों, उस महापुरुष के लिये जेल के सीखचें नही, फूलो की मालायें ही सब जगह नजर आयेगी ।

देवबद के मुफ्ती यह फतवा दे चुके हैं कि हिन्दुस्तान भले ही दारुल इस्लाम (इस्लामी देश) न हो, किन्तु वह दारुल अमन (शान्तिप्रिय देश) है, इसलिये बाबरी मस्जिद के नाम पर मार्च से इस देश के अमन को भंग करने की जरूरत नहीं है । परन्तु जिन्ना बनने का ख्वाब देखते हुए शाहाबुद्दीन साहब उस फतवे को भी कबूल करने को तैयार नहीं हैं, क्योकि शान्ति और अमन उनके सपने को पूरा करने में बाधक हैं ।

अब वे कहते हैं कि बाबरी मस्जिद के सवाल को न्यायालय को सौंप देना चाहिये । परन्तु न्यायालयों की उनके मन में कितनी इज्जत है, यह भी हम जानते हैं । इसका प्रमाण है शाहबानो का केस । आखिर शहाबुद्दीन जैसे कठमुल्लों ने ही सरकार पर दबाव डाल कर सुप्रीम कोर्ट का फैसला भी व्यर्थ करवा दिया । इसलिये न्यायालय तो केवल बहाना है । शहाबुद्दीन साहब का कहना है कि न तो अयोध्या कोई पुरानी नगरी है, और न ही राम नाम का कोई व्यक्ति कभी हुआ है । यह तो तुलसीदास ने इन दोनों का महत्व बढ़ा दिया, नहीं तो इन दोनो का कोई महत्व नहीं था । बाबर निश्चित रूप से तुलसीदास से पहले हुआ है । इसलिये उनकी दृष्टि में बाबरी मस्जिद राम जन्म भूमि से पहले मौजूद थी ।

इस ज्ञान की बलिहारी !

समाजसेवा के लिए जीने की इच्छा ने कैसा चमत्कार कर दिया !

—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति—

दफ्तर से लौटा था। शान्त बैठा था कि अचानक घर के सामने एक रिक्शा रुका। उससे क्षितीश जी उतरे। उनका स्वागत किया। मुंह हाथ धोकर चाय-नाश्ते के बाद उन्होंने बतलाया कि उन्हें अचानक नागपुर आना पड़ा। उनका गन्तव्य तो दूसरा स्थान था, पर वहां अचानक साम्प्रदायिक गड़बड़ हो गई। किसी सामाजिक योजना की पूर्ति के लिए धनराशि एकत्र करने दौरे पर निकला हूं। क्योंकि मैंने वचन दे दिया था, ऐसी स्थिति में थोड़ी चिन्ता और परेशानी जरूर हुई कि अब क्या करूं। इतने में ख्याल आया कि तुम तो नागपुर में कई वर्षों से हो, यहां के सामाजिक और शहरी जीवन से थोड़ी बहुत वाकफियत भी है, तो तुम कुछ मदद कर सकते हो। मैंने कहा-यह तो बड़ा अच्छा किया। जैसा भी हो सकेगा, सुबह-शाम मेहनत करके देखते हैं। [लेखक उस समय नागपुर में 'लोकमत' नामक दैनिक पत्र के प्रधान सम्पादक के रूप में कार्यरत थे।—स०]

शाम के भोजन के बाद क्षितीश जी ने कहा-थोड़ी फुर्सत हो तो न्यू कालोनी चलते हैं। वहां दस साल पहले एक दूसरे सिलसिले में जब मैं आया था तो उन महानुभाव ने बड़ी मदद की थी। हम दोनों तैयार होकर न्यू कालोनी पहुंच गए। दरवाजे पर ही गुप्ता जी की पत्नी और लड़के से भेंट हुई। हमने गुप्ता जी के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा-"उनसे तो मिलना नहीं हो सकता। वो तो बहुत बीमार हैं, हड्डियों का ढांचा रह रह गया है। कोई दवा काम नहीं करती।" हमने कहा—"हमारा कोई खास प्रयोजन या काम नहीं है क्षितीश जी दिल्ली से आए थे, इसलिए गुप्ता जी के दर्शन करने आ गए। यदि आप अनुमति दें तो हम गुप्ता जी के दर्शन कर उन्हें नमस्कार कर लौट जाएंगे।"

गुप्ता जी की पत्नी को कुछ नागवार सा गुजरा। यह भी लगा कि इतनी लम्बी बीमारी के बावजूद लोग पीछा नहीं छोड़ते। कुछ भुनभुनाती सी वह अन्दर गई। थोड़ी देर में लौटीं। बोलीं-"गुप्ता जी आप लोगों से मिलना चाहते हैं।"

हम अन्दर गए तो एक बड़े पलंग पर हड्डियों का ढांचा मात्र पड़ा था। काफी दिनों से वह बीमार चल रहे थे। हम दोनों को देखकर वह कुछ खुश हुए। उनके चेहरे पर कुछ मुस्कान आई। उन्होंने इशारे से हमारे आने का प्रयोजन पूछा।

हमने कहा—"कोई प्रयोजन नहीं। केवल दर्शन करने आए हैं। भगवान से प्रार्थना है कि वह आपको जल्दी ही पूर्ण स्वस्थ, निरोग और प्रसन्न करेगा।"

उन्होंने कुछ बोलने की कोशिश की हमने और उनकी पत्नी सबने बहुत रोका, परन्तु वे कहने लगे "इतने लम्बे समय के बाद मुझे कुछ खुशी हुई है। क्षितीश जी दिल्ली से, इतनी दूर से आए हैं। आपने पहले भी बड़ा अच्छा काम किया था। सचमुच कहिए कि आपका क्या काम है—जो कुछ हो सकेगा, मैं मदद अवश्य करूंगा।"

लाचार होकर बड़ी अनिच्छा से क्षितीश जी ने अपनी यात्रा का मकसद बतलाया। साथ ही कहा—"हम आपसे कुछ भी अपेक्षा नहीं करते। हमारी तो प्रभु से यही प्रार्थना है कि आप पहले की तरह स्वस्थ हो जाएं, जिससे समाज का कार्य पहले की तरह करते रहें।"

पर गुप्ता जी माने नहीं। उन्होंने अपनी पत्नी को बुलाकर पत्र पुष्प के रूप में एक चैक दे दिया। उन्होंने हमें चाय-नाश्ते के लिए रुकने के लिए बहुत कहा, पर हम फिर रुके नहीं। उनका तथा उनके परिवार का हार्दिक धन्यवाद कर हम वापस लौट आए। भाई क्षितीश जी अगले कुछ दिन सुबह शाम अपने मिशन में लगे रहे। कई दिन की दौड़-धूप से उन्हें कुछ सफलता मिल गई। किसी तरह की कोई परेशानी नहीं हुई। उनका नागपुर रुकना सार्थक हो गया।

डेढ़ दो महीने बीते होंगे कि एक दिन सुबह ही अचानक लाठी खटखट-खटखट करते हुए गुप्ता जी घर पधारे। दरवाजे पर उन्होंने जोर से नाम पुकारा। उन्हें सामने के कमरे में बैठा दिया, फिर कुशलक्षेम पूछी तो हंस दिए। बोले 'मुझे देखिए। आप क्षितीश जी के साथ आए थे। उस समय मैं खटिया पर पड़ा था। खुद मुझे उम्मीद नहीं थी कि मैं कुछ दिन भी जी सकूंगा। जिन्दगी में समाजसेवा के अरमान तो बहुत थे, पर शरीर कुछ साथ नहीं दे रहा था। उस दिन रात को आप लोग आए। मुझे और पत्नी को बड़ा पछतावा हुआ कि हम लोग आपका कुछ स्वागत नहीं कर सके।"

गुप्ता जी, आपने अपनी इस बीमारी में तकलीफ सहकर भी जो किया वह कम लोग करते हैं। उसके लिए आपका हृदय से आभार है। परन्तु आपके उस अवस्था के बाद आज देखकर लगता है कोई चमत्कार हो गया। बताइए तो, यह चमत्कार कैसे हुआ?"

"हां, सचमुच ही चमत्कार हुआ है। इतनी बात जरूर कह सकता हूं कि उस दिन आपके आने से मुझे बहुत खुशी हुई। बहुत दिनों के बाद समाज सेवा या दूसरे कामों के लिए जीने की इच्छा प्रबल हुई। आप लोगों के मिलने के एक-दो दिन बाद ही मैं मेहता साहब के पास जा पहुंचा। (श्री दुर्गाशंकर कृपाशंकर मेहता उन दिनों पुराने मध्यप्रदेश-विदर्भ सरकार के वित्त उद्योग मंत्री थे। गुप्ता जी उनके ही निजी सचिव थे।)

गुप्ता जी ने आगे बतलाया—मैं हाथ जोड़कर मिनिस्टर साहब के सामने जो खड़ा हुआ और बोला—"साहब, मुझे आप अब छुट्टी दे दीजिए।"

मिनिस्टर साहब ने कहा—गुप्ता जी क्या बात हो गई जो आप छुट्टी लेना चाहते हैं?

"महाराज, मैं मरते मरते बचा हूं। इच्छा तो बहुत है कि कुछ समाज-सेवा कर सकूं और आप लोगों के साथ भी काम करता रहूं, पर अब शरीर साथ नहीं देता।

मेहता जी मुस्करा दिए। बोले—"गुप्ता जी, आप पुराने वफादार, ईमानदार कर्मठ आदमी हैं। आप जैसे मेहनती, आदमी को कोई भी नहीं छोड़ना चाहेगा। पर किसी के बीमार या अस्वस्थ होने पर जबर्दस्ती कोई काम क्यों लेना चाहेगा, फिर आप जैसे भले आदमी के साथ जोर-जबर्दस्ती करने की कोई सोच भी नहीं सकता।"

"साहब, मैं भी आप लोगों का साथ नहीं छोड़ना चाहता पर लाचारी दीखती है। जब शरीर साथ नहीं देता, बीमारी जा नहीं रही, ऐसे में इच्छा रहते कैसी समाज सेवा! और कैसे आपका साथ दूं।"

"गुप्ता जी हिम्मत न हारिए। आपको कोई ऐसी बीमारी नहीं है जो जानलेवा हो। आप जानते ही हैं कि मेरे भाई डाक्टर हैं। सिवनी में सिविल सर्जन हैं। उनसे मैंने आपके केस के बारे में पूछा था, उन्होंने ही बतलाया कि गुप्ता जी कोई खास बीमारी नहीं है।"

"सर, ऐसी कोई बात नहीं है कि भला-चंगा रहते हुए बिस्तर पकड़ना चाहता हूं। यह तो मेरी मजबूरी रही कि मैं आपकी सेवा नहीं कर पा रहा।"

गुप्ता जी इसमें आप परेशान और चिन्तित न हों। मेरे सिविल सर्जन भाई की राय को आप शायद तरजीह न दें। शायद यह समझते होंगे कि मैंने उनसे कुछ कहा होगा। मेरी सलाह पर ही वह ऐसा कहते होंगे। ऐसी कोई बात नहीं है। आप द्वारा बतलाए रोग और परेशानियों का विस्तार से ब्यौरा देने पर उन्होंने सोच-समझ कर ही यह राय दी है। अच्छा होगा कि कल सुबह ही आप डा० एन० बी० खरे से मिल लें। मैंने उन्हें फोन कर दिया है। आज वह राजनीति में हमारे साथ नहीं हैं, परन्तु देश के वे शीर्षस्थ चिकित्सकों में से एक हैं, वह प्रान्त के कांग्रेसी मुख्यमन्त्री रह चुके हैं। आप उन्हें अच्छी तरह जानते हैं। और वे भी आपको भली प्रकार जानते हैं। आप जल्दी ही उनसे मिल कर उनकी सलाह ले लें।"

"अगले ही दिन मैं डा० एन० बी० खरे के धन्तोली स्थित निवास स्थान पर पहुंचा। दूर से मुझे देखते ही पहचान लिया और कहा—गुप्ता जी, आइए, आप पड़ोस के कमरे में आराम से बैठ जाइए। मैं इन मरीजों को निपटा कर जल्दी ही आपको बुलाता हूं।"

थोड़ी ही देर में डाक्टर साहब ने मुझे बुलाया। मेरा सारा हाल पूछा। यह भी पूछा क्या बीमारी है और क्या इलाज करते रहे हो? अच्छी तरह परीक्षा करने के बाद डा० खरे बोले-"गुप्ता जी, आपको हाई ब्लड प्रेशर है। शायद आपको यह बात सुनने में अजीब लगेगी पर बात सही और सच कि हाई ब्लड प्रेशर कोई बीमारी नहीं है। एक उम्र में काम का दबाव होने पर हाई ब्लड प्रेशर एक चेतावनी देता है कि अब आप अपने रूटीन में दैनिक दिनचर्या में परिवर्तन करें। हाई ब्लड प्रेशर बीमारी न होकर एक 'सिम्पटम' या चिन्ह मात्र है जो लाल सिग्नल की तरह जिन्दगी का नया रास्ता अपनाने के लिए कहता है।

डा० खरे ने कहा—अब आप पूरी तरह नीरोग हैं। कुछ खुराक लेने पर आप कुछ ही दिनों में पहले की तरह काम करने लायक हो सकेंगे। हां, जब जब आप फिर से अपनी ड्यूटी पर आएं तो अपना सारा रूटीन बदल डालिए। जो काम आप पहले आठ घंटे में करते थे, उसे साढ़े छः घंटे में कीजिए। दो घंटे के बाद 10 मिनट का विश्राम करें, फिर डेढ़ दो घंटा कार्य कर थोड़ा सुस्ता लें। जब भी कुछ भी सुस्ती या बेचैनी हो तो ग्लूकोज या प्रोटीन के बिस्कुट या हल्का फलाहार आदि ले लें। इस दिनचर्या से आप अपनी सर्विस का बचा हुआ सारा समय अच्छी तरह गुजार लेंगे। आपको अवधि से पहले रिटायरमेंट लेने की कोई जरूरत नहीं है। इसी के साथ आप समझ लें कि अभी आपको बहुत जीना है, केवल जीने के लिए नहीं, बल्कि कुछ करने के लिए सच्ची समाज सेवा के लिए।'

डा० खरे ने कहा इस बीमारी के लिए दवा की उतनी जरूरत नहीं, जितनी जरूरत है ठीक आहार विहार की। आप सब तली हुई चीजें, कब्जी करने वाली चीजें बादी करने वाली खुराक छोड़ दीजिए। दाल-चावल मिठाइयां, नमकीन आदि सब चीजें छोड़ दीजिये। केवल बिना छने चोकर

(शेष पृष्ठ 11 पर)

जब शंकराचार्य ने भंगी से तत्त्वज्ञान प्राप्त किया

– श्री वीरेन्द्र मालवीय –

"ओ मेहतर, सुनता नहीं है ?"

'क्या है महाराज !" मेहतर ने झाड़ू चलाना बन्द करके उत्तर दिया।

"तुझे शीघ्र ही यहां से हट जाना चाहिए। जा कहीं गली में चला जा !"

क्यों ?"

'तुझे मालूम नहीं है, जगद्गुरु शंकराचार्य पधार रहे हैं। हट जा यहां से।"

"तो क्या उन्होंने मुझे हटाने का आदेश किया है ?"

'हां हां, जल्दी कर।"

"तो उन्होंने ऐसा आदेश क्यों किया ?"

"इसलिए कि तू शूद्र है।"

"मैं उनसे कुछ पूछना चाहता हूं।"

'नहीं तुझे उनसे कुछ पूछने का अधिकार नहीं है।"

"क्यों ?"

"हः ह हः ह. ! इसलिए कि तू शूद्र है। जब वे तेरा मुंह देखना नहीं चाहते तब यह कैसे हो सकता है कि तू उनसे बातचीत कर सके ?"

"हां, समझा। किन्तु क्या यह सच है कि वे जगद्गुरु हैं ?"

"अरे ! तुझे इसमें सन्देह है ? सारा संसार उनका लोहा मान चुका है। बड़े बड़े नास्तिकों ने उनके आगे अपना सिर झुका दिया है और तुझे उनके जगद्गुरु होने में संदेह है ?"

"किन्तु महाराज, मेरा तो ऐसा ख्याल है। कि जब तक वे मेरी शंकाओं का समाधान न करेंगे तब तक वे जगद्गुरु नहीं कहला सकते, क्योंकि मैं भी तो जगत में शामिल हूं। मेरा हृदय शंकाओं से भरा हुआ है। और जब तक उनका समाधान नहीं किया जाता, मैं किसी को जगद्गुरु कहने के लिए तैयार नहीं हूं।"

"क्या है, क्या है ? इसे अभी तक नहीं हटाया। अरे ! तू अभी तक नहीं गया ? देखता नहीं, आचार्य पधार रहे हैं ?" एक दूसरे ब्राह्मण ने आकर कहा। उसके नेत्रों से आग बरस रही थी।

"शान्त हूजिए ब्राह्मण कुमार ! क्रोध आपको शोभा नहीं देता।"

'अरे, तू ब्राह्मण को उपदेश कर रहा है ?"

"आप को कौन उपदेश दे सकता है ? मैं तो आपके ही शब्दों को दुहरा रहा हूं।"

"अच्छा, अब तू यहां से हट जा। जगद्गुरु की सवारी निकट आ पहुंची है।"

"मैं आचार्य के दर्शन करना चाहता हूं। उनसे अपनी सन्देह निवृत्ति कराना चाहता हूं।"

"तुझे मालूम है कि तू शूद्र है ? तेरा मुंह देखना भी अशुभ समझा जाता है।"

"क्या है ?" एक तीसरे व्यक्ति ने आकर पूछा। भीड़ बढ़ती ही चली गई और घंटों एवं शंखों की ध्वनि के साथ जगद्गुरु की सवारी भीड़ के समीप आ पहुंची। मेहतर आचार्य की ओर बढ़ने लगा। लोगों ने उसे रोकना चाहा, किन्तु वह न रुका। उस ने जोर से कहा—

"जगद्गुरु के दर्शन करने का मुझे अधिकार है। मुझे उनके दर्शन से कोई वंचित नहीं रख सकता।"

ध्वनि आचार्य तक पहुंच गई। उन्होंने शिष्यवर्ग से पूछा—"क्या है ? यह कौन बोल रहा है ? उसे आने दो।"

"एक शूद्र है, जगद्गुरु आपका दर्शन चाहता है !" एक ब्राह्मण ने कहा—

"नहीं, वह शूद्र नहीं प्रतीत होता है। उसका उच्चारण शुद्ध है। उसे आने दो।"

मेहतर के लिए मार्ग छोड़ दिया गया और उसने आचार्य के सम्मुख आ धरती पर झुक कर प्रणाम किया। इसके उपरान्त उसने पूछा—"आचार्य ! आप तब तक जगद्गुरु कैसे कहला सकते हैं जब तक मेरी शंकाओं का समाधान नहीं कर देते ? मैं भी तो जगत् में ही हूं।'

"चुप रह।" एक ब्राह्मण ने चिल्ला कर कहा।

"शान्त, शान्त, उसे बोलने दो," आचार्य ने कहा। सब शान्त थे।

'मैं कुछ पूछना चाहता हूं।"

"हां हां, पूछो।"

'मैं यह जानना चाहता हूं कि आपने मुझे मार्ग से हटाने का आदेश क्यों दिया।"

आचार्य ने प्रश्न की गम्भीरता को शान्ति से सोचा और फिर मुस्कराए। किन्तु उन के उत्तर के पहले ही एक ब्राह्मण ने चीख कर कहा—"इसलिए कि तू चण्डाल है।"

'इसका अर्थ तो यह है कि आप मुझ से घृणा करते हैं।"

"हां, बेशक तू घृणित है।" ब्राह्मण ने पुनः उत्तर दिया। आचार्य गम्भीर ही थे। मेहतर ने फिर पूछा—

"आचार्य, मैं यह जानना चाहता हूं कि आप किस से घृणा करते हैं ? शरीर से आत्मा से या कर्म से ?"

आचार्य ने प्रश्नों को ध्यान से सुना। मेहतर फिर बोला—

'क्या आत्मा से ? आत्मा तो शुद्ध ब्रह्मतत्त्व है। वह तो निर्विकारी है।'

मैं आत्मा से घृणा नहीं करता।' आचार्य ने कहा।

'तो क्या शरीर से ? हां, यह अवश्य घृणित पंचतत्त्वों से बना हुआ है। पृथ्वी अनन्त मलिनताओं की केन्द्र है। जल में अनन्त जीव और जीवाणु वास करते हैं और उस में मल-मूत्र करते हैं। अग्नि सर्व—भक्षी है। वायु में पृथ्वी पर सड़ने वाले दूषित द्रव्यों की दुर्गन्ध मिली हुई है, और आकाश भी इन से खाली नहीं है। इन्हीं तत्त्वों से हमारी देह बनी हुई है। ऐसी अवस्था में इस से घृणा होना अनिवार्य है। किन्तु इन द्रव्यों से तो आपका भी शरीर बना हुआ है। और जब आप उससे घृणा करते हैं तब उसे स्वयं क्यों धारण किए हुए हैं ?"

"नहीं, मैं शरीर से घृणा नहीं करता," आचार्य ने उत्तर दिया।

"तब आप कर्म से घृणा करते होंगे, आचार्य ? सुना है, बिना कर्म के निस्तार नहीं होता, कर्म करने में ही जीवन की सार्थकता है, कम से कम मेरा हृदय तो कर्म से घृणा नहीं करता, क्योंकि मैं जानता हूं कि कर्म-त्याग का परिणाम एक महान खेदजनक कार्य होगा। मेरे इस कर्म को त्याग देने से गन्दगी फैलेगी और उससे असंख्य रोगाणु उत्पन्न होंगे, जिनसे जीवमात्र का अकल्याण हो सकता है। इसलिए मेरे लिए ऐसा करना सम्भव नहीं। मैं जान बूझ कर ऐसी भूल नहीं कर सकता। क्या आप यह चाहते हैं कि मैं भी कर्म को घृणित समझूं और लोगों को रुग्ण होने का अवसर दूं ?"

आचार्य ने मेहतर के शब्दों को सुना और उनमें भरे हुए तत्त्वज्ञान को समझा, जैसे उन्हें एक नई बात मालूम हुई हो। वे विचार में इतने गहरे लीन थे कि उन्हें पता ही न रहा कि वे गंगा-स्नान के लिए आए हैं। विचारातिरेक में वे कल्पना करने लगे—"मेहतर में ऐसी तर्क शक्ति कहां हो सकती है ! फिर यह कौन है !" उन्होंने उसके अन्तः स्वरूप पर दृष्टि गड़ा दी। "अरे ! यह तो वही तत्त्वज्ञान है, जिसका मैं नित्य ध्यान किया करता हूं।" उनका सिर मन ही मन मेहतर के चरणों पर गिर पड़ा। उन के मुख से निकल पड़ा—

"भगवन्, निःसन्देह मैं भूलता हूं। कर्म से घृणा करना भी अज्ञान है। आपने आज मेरा अज्ञान दूर कर दिया। सचमुच, जगद्गुरु मैं नहीं आप ही हैं।"

लोगों ने इस दृश्य को आश्चर्य से देखा। मेहतर के चरणों में इतना बड़ा विद्वान् गिर पड़ा है।

शंकराचार्य लौट पड़े। शिष्यों ने पूछा—"आचार्य, गंगा-स्नान तो किया ही नहीं ?"

'नहीं, मैं स्नान कर चुका। आज तो ऐसा स्नान हुआ है, जो कभी बड़े भाग्य से ही प्राप्त होता है।" आचार्य ने उत्तर दिया।

[स्व० श्री सन्तराम बी० ए० द्वारा लिखित 'हमारा समाज' नामक पुस्तक से उद्धृत। वहां यह कहानी 'भंगी का तत्त्वज्ञान' शीर्षक से छपी है। यह कहानी काल्पनिक न होकर 'शंकर दिग्विजय' सर्ग 6 श्लोक 25-39 पर आधारित है।]

दण्ड
राष्ट्ररक्षा का अमोघ अस्त्र

—डा० सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्य एम० ए० —

महाराज मनु ने राज्य व्यवस्था का आधार दण्ड को माना है। उनके अनुसार दण्ड ही राजा है। दण्ड ही प्रजा का नेता, शासक और चारो आश्रमों के धर्म का रक्षक है। दण्ड की व्याख्या करते हुए उन्होंने लिखा है—

दण्ड शास्ति प्रजा सर्वा
दण्ड एवाभिरक्षति।
दण्डः सुप्तेषु जागर्ति
दण्ड धर्म विदुर्बुधाः।।मनु० 7/18

वस्तुत राजदण्ड से भयभीत हुई प्रजा अनुशासन का पालन करती है और अधर्माचरण से बचकर वह धर्म मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं करती। सोये हुए प्रजाजनो मे दण्ड भय सर्वदा जागृत रहता है। अत दण्ड ही राजधर्म का पर्यायवाचक हैं। भली प्रकार धारण किया हुआ दण्ड प्रजा को आनन्दित कर देता है। सत्यवादी विचारशील प्राज्ञ राजा ही दण्ड विधान का अधिकारी है। विचक्षण शासक दण्ड के द्वारा 'धर्मार्थ काम मोक्ष' मय पुरुषार्थ चतुष्टय की सिद्धि प्राप्त कराता है। अधर्मात्मा इस तेजोमय दण्ड को धारण नहीं कर सकता। राज नियम प्रणेता शासक मनु लिखते हैं—

यत्र श्यामो लोहिताक्षो
दण्डश्चरति पापहा।
प्रजास्तत्र न मुह्यन्ति
नेता चेत्साधु पश्यति।। मनु० 7/25

यदि राज्य के नेता विद्वान् पक्षपात रहित हैं तो निश्चित ही उनके द्वारा संचालित श्याम वर्ण अर्थात् दुष्टों के भयकर प्रतीत होने वाला लोहित नेत्रों वाला, पाप नाशक, दण्ड जनता की रक्षा करता है। प्रजा कभी भी पाप कर्मों में मुग्ध नहीं होती। आजकल प्रायः लोग पापाचरण में विश्वास करते हैं तथा कहते हैं 'सत्यवादी साधुजन सर्वत्र पीडित हो रहे हैं, पापी पद-पद पर सफलता प्राप्त कर रहे हैं।" राजा की निरपक्ष दण्ड व्यवस्था के अभाव मे प्रजा इस प्रकार अज्ञान जनित मोह को प्राप्त होती है। हमारे भारतीय संविधान के मुख पृष्ठ पर दण्डसंहिता का साराश निम्नांकित शब्दों में उल्लिखित है। "भले ही समस्त अपराधी छोड़ दिये जायें किन्तु एक भी निरपराध व्यक्ति दण्डित न किया जाय।" आश्चर्य होता है कि अपराधियो को यथोचित दण्ड दिये बिना न्याय कैसे सुरक्षित रह सकता है जो राजा का मुख्य कर्तव्य है। उत्तरोतर बढ़ते हुए भ्रष्टाचार का एक मात्र कारण लोहिताक्ष दण्ड के भय का अभाव ही है। सामान्य लोकोक्ति "लकडी के बल बन्दरी नाचे" के अनुसार न्याय रूपी दण्ड के प्रभाव से बड़े-बडे दानव दुराचारी सुधर जाते हैं।

दक्षिणा और दण्ड

राज्य संचालन में 'दक्षिणा और दण्ड' इन दो शब्दों का विशेष महत्व है। दक्षिणा का अर्थ है गुणवान सदाचारी व्यक्ति का यथोचित सम्मान तथा दण्ड अर्थात् दुष्ट पापियों के प्रति कठोर विधान अत्यावश्यक है। चीन देश के सन्त कन्फ्यूशस ने कहा था 'स्वच्छ प्रशासन के लिए दक्षिणा और दण्ड शासन के अनिवार्य अग हैं। सामाजिको के मध्य यदि साधुजन पुरस्कृत सम्मानित किये जाते हैं तो साधारण दर्शक जनो मे सदाचरण के प्रति विशेष श्रद्धा उत्पन्न होती है। तथा राजाज्ञा से राक्षसों को विषम दण्ड पीडा पाते देखकर जनता के हृदय में पाप के प्रति भय समा जाता है। जब तक प्रजाओं में दंड भय जागृत रहता है तब तक दुराचरण में प्रवृत्ति नहीं होती, यह सुनिश्चित सिद्धान्त है।

जिस प्रकार कठोर अनुशासक पिता या आचार्य की उपस्थिति मात्र से बालक दुष्ट कर्म नहीं करते, उसी प्रकार घोर दण्ड-भय पातकीय प्रजाजनों को अधार्मिक नही होने देता उन्हें धर्मात्मा बनाने का एकमात्र उपाय राजकीय न्याय विधान को कठोरता ही है।

दण्ड विधान की कठोरता और सुसमता पर विचार करते हुए महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं कि दण्ड यथा शास्त्र, यथापराध कठोर या सुगम होने चाहिये। सामान्य अपराधों पर सुगम दण्ड अपेक्षित है, किन्तु चोरी, दुराचार अनृत साक्ष्य जैसे 'अपराधों पर कडा दण्ड अवश्य दिया जाये ताकि आगे यह पापाचरण न दोहराया जा सके। कभी हमारे देश में इसी कठोर व्यवस्था' के आधार पर महाराज अश्वपति जी ने सन्यासियों के समक्ष यह सत्य घोषणा की थी।'

न मे स्तेनो जनपदे,
न कदर्यो न मद्यप।
नानाहिताग्निर्नाऽविद्वान्,
न स्वैरी स्वैरिणी कुत ।।

उन्हें गर्व था अपनी प्रजा के पावन चरित्र पिर, जिसमें कोई भी चोर, कायर, शराबी, अग्निहोत्र न करने वाला मूर्ख अथवा स्वेच्छाचारी नहीं था। जब पुरुष वर्ग में ही कोई दुरात्मा नहीं था, तो देवियों से अपराध होना तो असम्भव ही था। आज विदेश यात्रियों के मुख से पश्चिमीय देशों के स्वच्छ प्रशासन-बेईमानी, चोरी आदि का अभाव सुनकर यही समझ में आता है कि अपराधो पर तात्कालिक कठोर दण्ड विधान से ही ऐसी स्थिति सम्भव है। दंड व्यवस्था में विलम्ब और अन्याय ने वर्तमान राजनीति को दूषित कर अराजकता को जन्म दिया है।

पता—द्वारा डा० सुरेन्द्रनाथ शर्मा 'सावित्री सदन', फेलाबाद, बरेली

फिर लिखो इतिहास अपना

—धर्मवीर शास्त्री—

सत्य है परवश रहे हम पर गुलामी से न टूटे,
छूटने के यत्न हम करते रहे अविरत अनूठे।

हार का इतिहास पढ़ते हैं—भला क्या लाभ इससे,
शिशु-हृदय मे कौन सा होगा उभरता भाव इससे।

किस तरह स्वाधीनता का युद्ध किस-किसने लड़ा था,
स्रोत क्या थे प्रेरणा के कौन बाधक बन खड़ा था।

मूल्य कितना मुक्ति के हित पूर्व वीरों ने दिया था,
क्षय यह—किसने हमारे गर्व कब-कब विष दिया था।

हम लुटेरों—लम्पटों की कीर्ति ही यदि नित पढ़ेंगे,
आत्म गौरव-दीप्त उर से क्या कभी आगे बढ़ेंगे?

यह नहीं इतिहास अपना एक भीषण स्वप्न है यह,
कर रहा है मातृ भू के जो हृदय में टीस रह रह।

नाम सांगा का जपो रे! गीत बाबर के न गाओ,
मान राणा का करो बस सिर न अकबर को झुकाओ।

चिह्न औरगजेब का भी क्या कभी है काम आया,
प्रेरणा का स्रोत बन शिवराज का ही नाम आया।

युद्ध में स्वाधीनता के पुण्य जिनके नाम ले ले,
क्रान्तिकर्मी सुरमाओं ने सभी थे कष्ट झेले।

जो उन्होंने और उनके अनुचरो ने चिन्ह छोड़े
है वही इतिहास अपना और बाकी सब गपोड़े।

राम ने दशकण्ठ से सिय को छुडाया था—पढ़ें हम,
पर्वतेश्वर ने सिकन्दर को झुकाया था—पढ़ें हम।

वीर विक्रम ने यहाँ से शक भगाये थे—पढ़ें हम।
पांव गढ़ के शीश चेतक ने गड़ाये थे—पढ़ें हम।

तैर कर सागर धरा पर फ्रांस को चलना—पढ़ें हम,
देश-भक्तो की चिताओ का सतत जलना—पढ़ें हम।

मैं कभी झांसी न दूंगी—शब्द ये जिसने कहे थे—
हम पढ़—अंग्रेज जिसके सामने बेबस रहे थे।

प्रेरणा जिसमें न जय की जो पराक्रम से रहित है,
क्यों पढ़ें इतिहास जिससे एक भी सधता न हित है।

हम पढ़ें—स्वाधीनता है जन्मत अधिकार मेरा,
क्यों पढ़ें वे पृष्ठ जिनमें दासता का है अंधेरा?

हम गुलामी से कभी करके न समझौता रहे हैं,
शत्रु को हर काल देते युद्ध का न्योता रहे हैं।

थे जयी हम या विजय-हित यत्न-रत रहते सदा थे,
चिर पतन में भी सदपि उत्थान की चहते सदा थे।

ज्योति के हैं हम उपासक क्यों तिमिर को मुंह लगायें,
रख मनोबल उच्च अपना जीत से ही जीत जायें।

राष्ट्र की टूटे उदासी, वीर हैं हम बोध हो यह,
यह तभी सम्भव इतिहास का अनुरोध हो यह।

फूंक दो ये स्याह पन्ने फिर लिखो इतिहास अपना,
जाति की जीवन्त जिसमें अस्मिता का व्यक्त सपना।

पीढ़ियां जागें, रगों में रक्त से तस्वीर अपनी
झांकती प्रत्येक अक्षर से लगे शमशीर अपनी।

पता—B-1/51 पश्चिम विहार नई दिल्ली-63

साहित्य समीक्षा

वेद और जीवन का चरम लक्ष्य

(ऐक्सयोलौजिकल एप्रोच टु द वेदाज)

पुस्तक का नाम—एक्सियोलौजिकल एप्रोच टु दि वेदाज
लेखक—डा० साहेब राव गेणु निगल
प्रकाशक—नावल बुक सेण्टर, [4221/1 अंसारी रोड, नई दिल्ली 2, एवं 372 बादशाही मण्डी, इलाहाबाद]
मूल्य—160 रु०

अंग्रेजी की इस भव्य पुस्तक के लेखक डा० निगल बी० एम० एम० कॉलिज, चिपलूणी, महाराष्ट्र में दर्शन-शास्त्र के प्राध्यापक हैं। महर्षि दयानन्द ने पंच महायज्ञ विधि में सन्ध्या में गायत्री—पाठ के बाद अपनी भाषा में एक समर्पण दिया है—(अथ समर्पणम्) हे ईश्वर दयानिधे। भवत्कृपया अनेन जपोपासनादि कर्मणा धर्मार्थकाम मोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेत्। पुरुषार्थ चतुष्टय है जो अभिप्राय धर्म, अर्थ काम और मोक्ष की प्राप्ति ही है। प्रस्तुत ग्रन्थ में 7 अध्याय हैं। पहले अध्याय में पश्चिमी दर्शन का विकास, पूर्वीय दर्शन का इतिहास, पाश्चात्य दर्शन में 'ऐक्सियोलोजी' [आधुनिक जीवन में चरम लक्ष्य]—आदि का संक्षेप से वर्णन है। एक्सियोलोजी या (Axiology) पाश्चात्य दर्शन शास्त्र का एक शब्द है, जिसका भावानुवाद जीवन का चरम लक्ष्य या जीवन का दृष्टि कोण—ऐसा हम कर सकते हैं। आधुनिक तत्व ज्ञान में जीवन को यथार्थ और सप्रयोजन माना जाता है। चरम यथार्थता और जीवन—मूल्यों के तत्व ज्ञान को हम एक्सिऔलाजी कह सकते हैं।

अध्याय 2 में विद्वान् लेखक ने वेदों का परिचय दिया है और वेदों का अभिप्राय समझने—समझाने के कुछ विशेष उपादानों और उपपत्तियों का उल्लेख किया है। इसी प्रसंग में डा० निगल ने दयानन्द और अरविन्द की भी चर्चा की है। दयानन्द के विचारों के अनुसार वेदों में ज्ञान, कर्म, उपासना और विज्ञान—इन चार का प्रतिपादन है, और विज्ञान का परम लक्ष्य ईश्वर की प्राप्ति है—अर्थात् ईश्वर का सामीप्य, मुक्ति या मोक्ष। अरविन्द ने वेदों की ऋचाओं में उच्चतम मनोवैज्ञानिक तत्वों और अध्यात्म—वाद के दर्शन किये हैं। वेद व्यक्ति के लिए भी हैं, और समष्टि के लिए भी—ऐसा दयानन्द भी स्वीकार करते हैं, और अरविन्द भी।

पुस्तक के तीसरे अध्याय में अर्थ का प्रतिपादन है, चतुर्थ में काम का, पांचवें में धर्म का, छठे में मोक्ष का। सातवें अध्याय में विद्वान लेखक ने आश्रम व्यवस्था की व्याख्या की है, और अन्त में उन्होंने 'मेटा-एक्सिओलोजी' (Meta-axiology) या चरम लक्ष्य का परमार्थ—रक्षा नाम से एक नवीन पारिभाषिक शब्द का प्रयोग विशेष अर्थों के लिए किया है। अय्यर नामक एक पाश्चात्य विद्वान् ने इसी प्रकार 'मेटा—ईथिक्स' शब्द का प्रयोग किया था—जैसे 'फिजिक्स' के साथ 'मेटा' उपसर्ग लगाकर 'मेटाफिजिक्स' शब्द अध्यात्म ज्ञान का निदर्शक बना। जीवन का लक्ष्य, जीवन का चरम लक्ष्य और जीवन का परम लक्ष्य-इन तीनों पद—समूहों में कुछ न कुछ अन्तर तो है ही।

मैंने पूरी पुस्तक पढ़ी। लेखक ने धर्म, अर्थ काम और मोक्ष की व्याख्या की—इस विषय का प्रारम्भ उन्होंने 'अर्थ' से किया। ऋषि दयानन्द पहले धर्म को लेते हैं। धर्म से (या धर्मपूर्वक) जो कमाया जाये, उसे वह 'अर्थ' कहते हैं। अधर्म से जो सम्पत्ति अर्जित की जाती है, उसे उन्होंने अनर्थ कहा है। चाणक्य अर्थ का सम्बन्ध सम्पत्ति और राज्य सत्ता दोनों से है। काम शब्द में मनुष्य की काम वासना भी निहित है, और उच्चतम कामनायें और इच्छायें भी—सर्वाः सन्तु यजमानस्य कामाः। सर्वान्ते कामान्समर्धय यत्कामास्ते जुहुमः। दयानंद के अनुसार धर्म और अर्थ दोनों के माध्यम से काम प्राप्त किया जाना चाहिए। विद्वान् लेखक ने प्रत्येक अध्याय में आर्ष वाक्यों और प्रसंगानुकूल वेदमन्त्रों को देकर विषय को रोचक और महत्व-पूर्ण बना दिया है। इस सुन्दर और भव्य रचना के लिए लेखक को बधाई।

कहीं-कहीं वेदमन्त्रों को उद्धृत करने में छापे खाने के कारण स्खलन हैं। ऋग्वेद में 'तच्चक्षुर्देवहितं' मन्त्र का जो पाठ है (ऋ० 716616) उसमें पुरस्तात् शब्द का प्रयोग नहीं है (पृ० 30)। अर्थ के प्रकरण में 'ईशावास्यमिदं सर्वं', शतहस्त समाहर सहस्रहस्त सङ्किर' आदि मन्त्रों का बड़ा मूल्य है, और मन का वाक्य—'सर्वेषामेव शौचानां अर्थशौचं परं स्मृतम्।' काम के प्रकरण में लेखक ने अथर्ववेद, काण्ड 14 के दो सूक्तों का उल्लेख किया है जो विवाह प्रकरण के हैं और उच्च आदर्श के प्रतिपादक हैं। महर्षि दयानन्द ने विवाह की नैतिकता को भी इसी प्रकार स्वीकार करके महत्व दिया है। 'साम्राज्ञमसि ऋद्धत्वम्।'

आर्य समाज के सदस्यों और 'आर्य जगत्' के प्रेमियों से मेरा आग्रह है कि डा० निगल के इस छोटे से ग्रन्थ को अवश्य पढ़ें। आर्य सिद्धान्तों को ही प्रतिपादित करने वाला यह ग्रन्थ है। लेखक और प्रकाशक दोनों को बधाई।

—स्वामी सत्यप्रकाश

पानीपत में हिन्दी दिवस

14 सितम्बर को आर्य युवक दल के तत्वावधान में हिन्दी दिवस मनाया गया जिसकी अध्यक्षता श्री रामस्नेही ने की। स्वागताध्यक्ष हरियाणा हुड्डा के अध्यक्ष श्री बलबीर लाल शाह थे। आर्य युवक दल के मन्त्री श्री चमनलाल ने दल की गतिविधियों का परिचय दिया।

मुख्य वक्ता श्री नरेश चन्द्र चतुर्वेदी ने कहा कि यह कहना गलत है कि अंग्रेजी के बिना काम नहीं चल सकता यदि श्री कामराज और ज्ञानी जैलसिंह उच्चतम पदों पर रहकर भी अंग्रेजी के बिना काम चला सकते हैं, तो अन्य लोग क्यों नहीं चला सकते? उन्होंने हिन्दी सेवा के लिए ऋषि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द को आदर्श बनाने के लिए कहा।

स्वामी सत्यप्रकाश जी ने कहा कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के इतने वर्षों बाद भी हिन्दी सम्मेलन करने की आवश्यकता पड़ रही है, यह आश्चर्य है। सम्मेलन में हरियाणा सरकार से मांग की गई कि हिन्दी के प्रचार के लिए कम से कम 25 लाख रु० वार्षिक व्यय किया जाए।

आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वी अफ्रीका का चुनाव

डा० प्र० स० पूर्व के द्विवार्षिक चुनाव में निम्न पदाधिकारी चुने गए—

प्रधान—श्री नवल मल्ला, सहायक प्रधान—श्री बलवीर डावा, उपप्रधान—श्री सोमकान्त शर्मा, श्री ओ बी आर शर्मा, श्रीमती विद्यावती कपिला, श्रीपाल बलोटा, मन्त्री श्री देवेन्द्र मेहता, संयुक्त मन्त्री श्री रामदेव जासी, सहायक मन्त्री—श्री रजनी ओबेराय। कोषाध्यक्ष—श्री कदार नाथ सूद, सहायक कोषाध्यक्ष—श्रीमती पुष्पा भवान। पुस्तकालयाध्यक्ष—श्रीमती कौशल्या सूद, जन सम्पर्क अधिकारी—श्री सुधीर भण्डारी, युवा सगठन-कर्ता—श्री स्वर्ण वर्मा, वेद प्रचार अधिष्ठाता—श्री देवेन्द्र सूद। —मन्त्री

आर्य समाजों को सूचना

प० चन्द्र सेन, आर्य वैदिक मिशनरी सोनीपत ने 1988 से आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हरियाणा को अपनी सेवाएं अर्पित की हैं पंडित चन्द्रसेन आर्य पुराने प्रचारक व अनुभवी वक्ता हैं। विभिन्न आर्य समाजें वेद प्रचार हेतु आमन्त्रित कर सकते हैं। सम्पर्क सूत्र द्वारा श्री आचार्य सत्यप्रिय शास्त्री वेद-प्रचार अधिष्ठाता दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार (हरियाणा)

—डा० सर्वदानन्द आर्य मन्त्री

आर्य सम्मेलन

4, 5, 6 नवम्बर 1988 को गुड़गांवा में आर्य सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। जिसकी अध्यक्षता स्वामी ओमानन्द जी करेंगे। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रसिद्ध सन्यासी, विद्वान् एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

—रामचन्द्र आर्य स्वागत मन्त्री

नौवां वार्षिकोत्सव

दयानन्द मिशन धर्मार्थ हस्पताल हरिजन बस्ती, सदर करनाल का वार्षिकोत्सव 15 16 अक्तूबर को सोत्साह मनाया जायेगा। जिसमें अनेक विद्वान् और उपदेशक भाग ले रहे हैं।

निर्माण विहार का उत्सव

आर्य समाज निर्माण विहार दिल्ली का वार्षिकोत्सव 30 अक्तूबर को सेन्ट्रल पार्क में प्रातः 8 बजे से दोपहर 1 बजे तक समारोह पूर्वक मनाया जाएगा।

24 से 29 अक्तूबर तक रात्रि में 7-30 बजे से 8-30 बजे तक प० वेदव्यास जी के मनोहर भजन और 8-30 बजे से 9 30 बजे तक प० यशपाल सुधांशु जी का वेद प्रवचन होगा।

आर्यसमाज मन्दिर भूमि

आर्य समाज मन्दिर के लिए 500 वर्ग गज भूमि, निर्माण विहार में डी डी ए से 82,000/- रुपये लागत में प्राप्त हो गई है। निर्माण का कार्य शीघ्र आरम्भ किया जाएगा।

—रोशन लाल गुप्त संयोजक

क्रान्तिकारियों का विस्मृत इतिहास

आर्य समाज गंज मुरादाबाद के तत्वावधान में समाज मन्दिर में व कालेजों में डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी पटना द्वारा भारतीय स्वाधीनता संग्राम में 'महर्षि दयानन्द एवं उनकी शिष्य परम्परा' के ऐतिहासिक प्रवचन का आयोजन किया गया। रात्रि प्रोग्राम आर्यसमाज गंज के शहीद भवन में हुआ।

राज आर्या दिवंगत

आर्य समाज माडल टाउन महिला समाज की मंत्रणी श्री० राज आर्या के दिवंगत हो जाने पर आर्यसमाजों ने सम्मिलित रूप से शोक सभा में भाग लिया।

—आर्य समाज गणपुर सिटी ने प्रधान श्री लक्ष्मीचन्द जी गोयल (देवी स्टोर वाले) के निधन पर शोक व्यक्त किया है।

पत्रों के दर्पण में

हरिजनों का मन्दिर प्रवेश

हरिजनों के मन्दिर प्रवेश के दो पहलू है। एक पहलू तो है किसी भी इन्सान को किसी जाति विशेष में पैदा होने के कारण मन्दिर में प्रवेश करने से वंचित करना। यह तो पाप है और अपराध भी है। दूसरा पहलू है मन्दिर में जाकर पूजा करने का। उसके लिए तो आर्य समाज किसी को प्रेरणा नहीं देगा, बल्कि मूर्ति पूजा से रोकेगा ही। हां छुआछूत मानने वाले मन्दिर प्रवेश से किसी को रोकें तो उसका आर्यसमाज विरोध करेगा। आज तो कानूनी तौर पर भी कोई भी किसी को मन्दिर प्रवेश से नहीं रोक सकता, यदि रोकेगा तो उसे इस अपराध की कानूनी तौर पर सजा मिलेगी।

यह ठीक है कि संविधान और कानून के स्पष्ट प्रावधान होने पर भी समाज में हरिजनों को वह स्थान नहीं मिला है जो उनको मिलना चाहिये। उसके लिये आर्य समाज तथा गान्धीवादी और अन्य मानवतावादी संगठनों को मिलकर या अपने अपने ढंग से कानूनों को लागू करवाने और सामाजिक विषमता को मिटाने के लिये प्रबल आन्दोलन करना चाहिये। इस काम में तो स्वामी अग्निवेश का कोई भी आर्य-समाजी विरोध नहीं कर रहा है। परन्तु उन्होंने इस मामले को जिनेवा जाकर राष्ट्र-संघ की मानव अधिकार समिति में उठाया, यह ठीक नहीं था। इसके पीछे देश की और हिन्दू समाज की छवि बिगाड़ने की भावना है, और भारत विरोधी तत्व इसका लाभ उठायेंगे।—प्रो० शेरसिंह, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, रोहतक,

आर्य बन्धुओं से जरूरी निवेदन

सन् 1910 में पटियाला रियासत के 85 प्रमुख आर्य समाजी कार्यकर्त्ताओं को राजद्रोही करार देकर बन्दी बनाया गया था। पं० सत्यकेतु विद्यालंकार द्वारा रचित 'आर्य समाज के इतिहास' के सातवें खण्ड में भी उनके नाम नहीं आ पाए। मैं पूज्य पण्डित जी को काफी पहले लिखा था कि पटियाला काण्ड का पूरा विवरण दें। परन्तु उनको शायद अभीष्ट विवरण प्राप्त नहीं हो सका। 70 80 साल पुराने इस काण्ड से प्रत्यक्ष जानकारी रखने वाले भी अब कहां मिलेंगे? इसलिए मेरा समस्त आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि पटियाला केस के उन बन्दियों के सम्बन्ध में निम्न जानकारी देने की कृपा करें—

1 उनका नाम, स्थान, आर्य समाज से किस रूप में सम्बद्ध थे।

2 उनके जीवन चरित्र के सम्बन्ध में जितनी भी जानकारी हो।

3 अब उनकी सन्तानें – पुत्र पौत्रादि कहां हैं, क्या करते हैं क्या नाम हैं, अब भी आर्य समाज में कार्यरत हैं या नहीं।

4 सन्तानों के सम्बन्ध में अन्य जानकारी जो आप उचित समझें ताकि उनसे सम्पर्क किया जा सके।

भावी पीढ़ियों के लिए इस प्रेरणादायक इतिहास को सुरक्षित रखना बहुत आवश्यक है।—ओम् प्रकाश वानप्रस्थी, आर्य वानप्रस्थाश्रम, गुरुकुल भटिण्डा 151001

अभिनन्दनीय श्री वेदालंकार

श्री क्षितीश वेदालंकार के 72 वर्ष पूर्ण कर लेने पर अभिनन्दन का समाचार पढ़ कर बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं भी आर्य सेवा संस्थान, कानपुर की ओर से उन्हें हार्दिक बधाई देते हुए उनकी दीर्घायु तथा स्वास्थ्य की मंगलकामना करता हूं वे जहां एक ओर उच्चकोटि के विद्वान्, लेखक तथा ओजस्वी वक्ता हैं, वहां उन्होंने पत्रकारिता में भी अपनी कुशलता प्रमाणित की है। 'आर्य जगत' की दिन प्रतिदिन बढ़ती लोकप्रियता इसका प्रबल प्रमाण है। मैंने कानपुर में अनेक बार उनके प्रभावशाली और अन्य वक्ताओं से सर्वथा अलग किस्म के व्याख्यान सुने हैं। उनके जैसा प्रखर राष्ट्रवादी आर्य विचारक दुर्लभ है। आर्य समाज और ऋषि दयानन्द के प्रति उनकी निष्ठा का शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। ऐसे व्यक्ति का अभिनन्दन होना ही चाहिए।—ओम्प्रकाश आर्य, अध्यक्ष आर्य सेवा संस्थान, 119/122, दम्बा रोड, कानपुर-12

प्रौढ शिक्षा केन्द्र खोलें

11 सितम्बर के अंक में "कुलाची हंसराज माडल स्कूल में दयानन्द प्रौढ शिक्षा केन्द्र" शीर्षक का समाचार पढ़कर अति प्रसन्नता हुई। यह बहुत प्रशंसनीय कार्य है इसके लिए संस्था के प्रबन्धकों की मैं हार्दिक सराहना करता हूं। अन्य आर्य समाजें और संस्थाएं भी इससे प्रेरणा पाकर, अपने-अपने क्षेत्र में ऐसी वास्तविक समाज-सुधार तथा सेवा कार्य अपनायेंगे, यह आशा है।—शिवशरण दास मित्तल 4/54 मलाड को०हा० सोसायटी पोद्दार पार्क मलाड (पूर्व) बम्बई 400097

ऋषि दयानन्द की जन्मतिथि और भारतीय

25 सितम्बर के अंक में श्री आदित्यपाल सिंह का ऋषि दयानन्द की जन्म-तिथि के सम्बन्ध में लेख पढ़ा सम्पादकीय टिप्पणी में तो यह संकेत किया है कि डा० भारतीय भी स्वामी की जन्मतिथि भाद्रपद शुक्ला 9, 1881 वि० ही मानते हैं किन्तु लेखक ने यह उल्लेख नहीं किया कि लगभग 50 वर्ष पश्चात् इस तिथि को आर्य जनता के सम्मुख लाने का श्रेय डा० भवानी लाल भारतीय को है इस सम्बन्ध में निवेदन है कि—

(1) पं० अखिलानन्द रचित 'दयानन्द दिग्विजयार्क' सर्वथा दुर्लभ हो चुकी थी। इसका द्वितीय संस्करण मेरे द्वारा सम्पादित होकर स्व० श्री मथुरादेव गुप्त ने 1972 में सार्वदेशिक सभा की ओर से छपाया था इसी ग्रन्थ में यह तिथि दी हुई है।

(2) श्री मामराज सिंह ने अपने जिस लेख में पं० केशवराम विष्णु लाल पंड्या की हस्तलिखित ऋषि जीवनी का संकेत किया था, उस लेख की मूल प्रति मेरे ही पास है। इसकी प्रति मैंने श्री मीमांसक जी को भी उपलब्ध कराई थी।

(3) स्वरचित ग्रन्थ 'नवजागरण के पुरोधा' में इसी तिथि को प्रमाणित मान कर मैंने जो विवेचन किया है उसके आधार स्वरूप लेखों जीयालाल और टहल-राम गिरधारी दास की पुस्तकें भी मेरे पास हैं।

(4) इस तिथि की समकक्ष ईस्वी तिथि विषयक मेरी भूल को भी सिंह ने सुझाया और मैंने उसे सहर्ष स्वीकार कर वेदवाणी में उसका उल्लेख किया।
—डा० भवानी लाल भारतीय चण्डीगढ़।

कुछ सीख सके तो सीख

भारत सरकार लन्दन स्थित दूतावास से लाल बहादुर शिवाजी एवं शिवाजी के चित्र हटाकर इस ओर संकेत कर रही है कि भारत के महापुरुषों की शिक्षा अब इस के लिए आवश्यक, नहीं रही। मराठा ट्रस्ट के अनेक प्रतिवेदनों के उपरान्त भी ये दोनों चित्र दूतावास के कूड़े के ढेर से नहीं निकले।

इतिहास से हम सीख न लेकर बड़ी भूल कर रहे हैं। यही कारण है कि हमारी छवि दिन प्रतिदिन धूमिल होती जा रही है। अगर हमें इस भूल को हटाना है तो हमें हमारे पूर्वजों से सीख लेनी चाहिए। स्कूलों में राम, कृष्ण, दयानन्द, सुभाष, भगत सिंह, लक्ष्मीबाई आदि की गौरव गाथाएं पढ़ाने का विशेष प्रबन्ध करना चाहिए।—सत्य नारायण आर्य 205, लेक टाउन, ब्लाक ए, कलकत्ता-89

हिन्दू समाज में भेदभाव क्यों?

हिन्दू समाज को आज सत्ता ने कितने ही वर्गों व प्रदेशों में बांटा हुआ है—इसका सबसे बड़ा कारण है चुनाव प्रणाली। अपने चुनावी स्वार्थों के कारण सारे देश में द्वेष भावना को बढ़ाती ही रहेगी हिन्दू समाज इस बैर मूल कारण की ओर तो ध्यान देता नहीं, परन्तु कोई न कोई आंदोलन छेड़ देता है।

जब तक हम समस्याओं की जड़ में मौजूद कारणों को नहीं समझेंगे, तब तक समस्याओं से मुक्ति नहीं मिल सकेगी। हमारी समस्याओं की जड़ में कुछ कारण इस प्रकार है।—

1— संविधान की धारा—370: इसके अन्तर्गत कश्मीर को विशेष दर्जा प्राप्त है, जिससे अन्य राज्यों में भी इसकी मांग उठ रही है।

2— आरक्षण इसके कारण अनुसूचित जाति/ जन-जाति के लगभग 20 करोड़ हिन्दू अपने आप को मुख्य हिन्दू समाज से अलग मान बैठे हैं।

3— समान नागरिक संहिता का न होना: इसके कारण एक केशधारी हिन्दू चाहे कितनी भी बड़ी कृपाण रख सकता है, जब कि उसका सगा भाई छः इंच का एक चाकू भी नहीं रख सकता। एक मुसलमान चार चार विवाह कर सकता है; जब कि गैर मुसलमान के लिए दूसरा विवाह करना अपराध है।

देश में जब तक ये चार कारण दूर नहीं होंगे, तब तक भेदभाव होता रहेगा।
—किशन स्वरूप गोयल, पटवारी की सराय, करोल बाग, नई दिल्ली-5

आर्य समाज को क्यों छोड़ें?

4 सितम्बर के अंक में यह छोटा सा लेख पढ़ कर अत्यन्त उत्साह बढ़ा। यह लेख गागर में सागर की तरह था। आजकल सत्ता लोलुप लोगों के हाथ में आर्य समाज की बागडोर आ जाने और उन लोगों की उपेक्षा से निराशा तो होती है, पर नेक सलाह यही है कि हमें आर्य समाज नहीं छोड़ना चाहिए।—प्रभुलाल जादवजी ठक्कर, भावर, गुजरात-32

भूकंप पीड़ित सहायता कोष-7

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी ए वी संस्थाओं की ओर से बिहार मे आये भूकम्प पीडितों की सहायता हेतु कार्य तेजी से चल रहा है। अब तक 250 क्विंटल खाद्य, सामग्री दवाईयां, कपड़े और 100000/- (एक लाख रुपये) नकद भेजी जा चुकी है। जिला दरभंगा व मुंगेर के जो गांव अपनाये गये है वे निम्नलिखित हैं। खाजिदपुर, मिरूका, चाक ओकड़ा धर्मी, बलभद्र, नानटोल, बहादुर पुर, मनोज बस्ती, मनीहारी, निहालपुर, कोलिख, नारियल तोले आदि। यहां पर चावल, मक्का, बाजरा गरक, पुराने कपड़े, पॉलीथीन के हट्स मकान बनाने हेतु। इसके अतिरिक्त जिन्हें दवाईयाँ आर्थिक सहायता की आवश्यकता है, दी जा रही है। यह कार्य अभी काफी दिनों तक चलेगा।

समस्त आर्य जनता से प्रार्थना है कि वे अधिक से अधिक दान राशि, चैक ड्राफ्ट मनीआर्डर द्वारा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मंदिर मार्ग नई दिल्ली-1 के पते पर भजें। अब तक जिन दानियों ने दान भेजे हैं उनकी सातवीं सूची निम्नलिखित है—

क्रम	नाम	रुपये
436	अर्जुनदेव नारायण देवदास आ०स० राजपुरा	51
437	रविन्द्र जनरल स्टोर टाउन हि०० आनवपुरा,	101
438	मूलचंद नन्दलाल ,,	101
439	म० शांतिप्रकाश ,,	51
440	गुरबख्श राय ,,	21
441	नीरज अनुपम ,,	21
442	विजय सावित्री खुराना ,,	101
443	मानव स्कूल ,,	31
444	अरजनदास सदानन्द ,,	101
445	पारिवारिक सत्संग ,,	130
446	ज्ञानचन्द वधवा ,,	50
447	म रामलाल ,,	101
448	युधिष्ठिर आर्य ,,	21
449	नरेश मेडिकल स्टोर ,,	21
450	रामचन्द्र खुराना ,,	51
451	म. वीरेन्द्र जी पुरोहित ,,	51
452	डा सत्यदेव ,,	500
453	न्यामतराम एड क ,,	31
454	श्री मूलचंद जी आर्य मन्त्री आर्य समाज, अशोक नगर, गुना	51
455	श्री बागमल जी कोहली ,,	101
456	श्री जीतेन्द्रनाथ जी प्राचार्य ,,	21
457	श्री मुलखराज जी जवर ,,	51
458	श्रीमती विजया देवी जी ,,	11
459	श्री लक्ष्मी नारायण जी आर्य ,,	11
460	श्री मदनपाल जी ,,	25
461	श्री कमरच कुमार शर्मा ,,	11
462	श्रीमती सुमन बत्रा ,,	10
463	श्री अमान सिंह ,,	20
464	श्री बी०एम० पवार ,,	5
465	श्री राम गोपाल जी ,,	5
466	श्री गुरबख्श सिंह ,,	11
467	श्री भूम्भूपसेन ,,	5
468	श्री ओम प्रकाश जी ,,	10
469	श्री त्रिलोचन ,,	5
470	श्री जगदीश सोनी ,,	5
471	श्री राम स्वरूप ,,	5
672	श्री दीवान चंद ,,	10
473	श्री के०एस० कश्यप मैनेजर टैक्निकल सर्विसेस, हिन्दुस्तान फोटो फिल्मस आंध्र प्रदेश	50
474	स्व० सुशीला कोहड़ द्वारा के०जे०आर० कोहड राजौरी गार्डन, नई दिल्ली	200
475	प्रिंसिपल हिन्दू पुत्री पाठशाला सम्भा	1000
476	मन्त्री आर्य समाज, माडल टाउन, पानीपत	2100
477	आदर्श आर्य ट्रस्ट, आदर्श वूलन मिल्स, पानीपत	501
478	श्री आर०बी० चौधरी माडल टाउन, पानीपत,	100
479	एलाइड वूलन इण्डस्ट्रीज पानीपत,	101
480	श्री एस०बी० टंडन न्यू मंडी मुजफ्फरनगर, उ०प्र०	400
481	मन्त्री आर्य समाज, मालकोठा, महबूबाबाद,	500
482	श्री जयराम दास चौहान, बालोतरा,	101
483	मन्त्री मूलचंद आर्य वानप्रस्थ, आर्य समाज अशोकनगर, गुना	667
484	कौशल्या साहनी पटेलनगर, नई दि	100
485	युधिष्ठर राय सेठ करोलबाग, नई दि	101
486	प्रिंसिपल डी०ए०वी० प स्कूल बल्लभगढ़,	1500
487	डी०ए०वी प० स्कूल, चीका	451
488	जसवन्त राय पुरी गांधीनगर, दि	100
489	प्रिंसिपल डी ए वी प स्कूल बृज विहार, गाजियाबाद	1001
490	श्रीमती कृष्ण वर्मा लाजपतनगर, नई दि	100
491	मन्त्री म द मार्ग, उदयपुर,	10
492	श्री एम०एल० गांधी ककरखेड़ा, मेरठ	10
493	मेनादेवी आर्य गोपालसिंह मार्ग, मेरठ	50
494	श्रीमती रामकली गोपालसिंह मार्ग, मेरठ,	50
495	श्रीमती सरोज आर्या, अशोकनगर, गाजियाबाद,	100
496	श्री रामस्वरूप आर्य भू०पू० चेयरमैन गजड़ुन्डवारा	100
497	श्री सतीश चंद चोपड़ा लखनऊ रोड, सुलतानपुर	51
498	श्री धमपाल ककरखेड़ा, मेरठ,	20
499	कैप्टन एस०एल० शर्मा ककरखेड़ा, मेरठ,	30
500	मन्त्री आर्य समाज माडल टाउन, दि	6_0
501	श्री रामलाल ग्रोवर माडल टाउन, दि	501
502	प्रिंसिपल डी ए वी पब्लिक स्कूल, फरीदाबाद	कपड़े
503	श्री नरेन्द्र सेठ करोलबाग, नई दि	कपड़े
504	मन्त्री आर्य समाज, रघुवीर नगर नई दिल्ली	कपड़े व जूते
505	प्रिंसिपल डी०ए०वी० प० स्कूल बुद्ध विहार, दिल्ली	खाद्यसामग्रीवस्त्र
506	प्रिंसिपल हंसराज माडल स्कूल, पंजाबी बाग, नई दि	वस्त्र
507	प्रिंसिपल डी ए वी प स्कूल बजविहार, गाजियाबाद	खाद्य सामग्री
508	श्री गोपाल लाल मंदिर मार्ग, नई दि	खाद्य सामग्री
509	मन्त्री एवं प्रिंसिपल पब्लिक स्कूल दि	खाद्य सामग्री, दवा
510	श्रीमती कृष्ण आर्या मोतीनगर, नई दि	101
511	मन्त्री आर्य समाज, जामनगर,	500
512	मन्त्री आर्य समाज, नैनीताल,	500
513	प्रिंसिपल दयानन्द पब्लिक स्कूल, माडल टाउन, दिल्ली	230
514	प्रिंसिपल डी ए वी प स्कूल, मुखर्जी नगर, दि	1093
515	श्री रजनीश स्वास्थ्य विहार, दि	150
516	श्री जगदीश आर्य प्रधान, श्रीमती ज्ञानदेवी चरनजीत आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट 51 गोपाल पार्क, दि	51
517	मंगली सिंह सिविल लाइन, मुरादाबाद,	50
518	अशोक कुमार नागिया मायापुरी नई दि	20
519	कर्मचारी एस०पी०एस० एस० के०कपूर नई दि	105
520	मन्त्री आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दि	251
521	श्री रामलाल मलिक द्वारा रामलाल शान्ति देवी मलिक चेरीटेबल ट्रस्ट नई दि	250
522	श्री श्याम माणिक राव गुरुद्वारा रोड नान्देड,	21
523	ज्ञानदेवी 1078 बी, चंडीगढ़,	1000
524	श्री प्रदीप कुमारसूद आनंद निकेतन, नई दि	201
525	सूरजचंद सूद आनंद निकेतन, नई दि	101
526	प्रिंसिपल डी ए वी प स्कूल, एन०आई०टी० फरीदाबाद	1100
527	मैनेजर आर्य अनाथालय, फिरोजपुर	1100
528	निहालचंद चौधरी 529/10-डी, चंडीगढ़	251
529	मन्त्री आर्य समाज, विनयनगर नई दि	201
530	प्रिंसिपल डी ए वी पब्लिक स्कूल, बल्लभगढ़,	कपड़े
531	मन्त्राणी स्त्री आर्य समाज, पटेलनगर, नई दि	1000
532	प० जयशंकर त्रिपाठी गांधीपुरा बालोतरा, राज०	50
533	श्री एम०जी० कछवानी विक्रमनगर कोटा	10
534	धनेन्द्र सिंह लोधी विक्रमनगर, कोटा,	10
535	प्रिंसिपल महाराजा हरिसिंह डी ए वी प० स्कूल उधमपुर	300
536	पूरन चन्द राय जनकपुरी, नई दि	100
537	मन्त्री आर्य समाज, माडल टाउन, यमुनानगर	11000
538	मन्त्री आर्यसमाज चित्रगुप्त गंज, लश्कर	125
539	श्रीमती प्रेम रानी आर्य नदी रोड, मुजफ्फर नगर	101
540	प्रेतमचन्द रायसीना रोड, नई दि	101
541	गायत्री देवी चै० रिटेबल ट्रस्ट कमला नगर, दिल्ली	51
542	मंत्राणी स्त्री आर्य समाज पटेल नगर, नई दि	कपड़े
543	प्रिंसिपल डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल, ज्ञान भवन, सजोली, शिमला	2000
544	गुरमुखराय दुग्गल जनकपुरी, नई दि	101
545	श्री केदारनाथ दुग्गल रोहतक रोड, नई दि	100
546	श्रीमती राजकुमारी दुग्गल न्यू रोहतक रोड नई दि	100
547	मंत्री आर्य समाज, खरड, रोपड़,	400
548	श्री जतिन्द्रनाथ ,,	100
549	श्री ताराचन्द ,,	100
550	कशमीरी लाल ,,	100
551	बाबू राम ,,	50
552	श्री ओम दत्त गर्ग हौजखास, नई दि	101
553	प्रिंसपल डी०ए०वी० ध०प० स्कूल बटाला	600
554	मन्त्राणी स्त्री आर्य समाज जोरबाग, नई दि	कपड़े
555	मन्त्राणी ,	501
556	मन्त्री आर्य समाज, नामल टाउन शिप रोपड़	100
557	मन्त्री आर्य आर्य समाज, नयानांगल,	100

(क्रमश)

डी ए वी शताब्दी का उपहार

संग्रह योग्य पठनीय जीवनोपयोगी पुस्तकें

हमारी नई पीढ़ी को पढ़ने के लिए वांछित पुस्तकें नहीं मिल रही हैं। बाजार में ऐसी पुस्तकों की भरमार है जिनसे उनके मानस पर कुप्रभाव पड़ता है। निरर्थक पुस्तक पढ़ने वाले निरक्षरों से किसी भी हालत में अच्छे नहीं कहे जा सकते। युवकों के उचित मार्गदर्शन के लिए डी ए वी प्रकाशन संस्थान ने "डी ए वी पुस्तकालय" ग्रन्थ माला का अपने शताब्दी वर्ष में प्रकाशन आरम्भ किया है। अब तक निम्न पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। कागज और छपाई अत्युत्तम होते हुए भी मूल्य प्रचारार्थ कम रखा गया है।

		Price Rs.P
Wisdom of the Vedas	Satyakam	15 00
Select Vedic mantras with inspirational English renderings.	Vidyalankar	
Maharishi Dayanand.	K S. Arya and	20.00
A perceptive biography of the founder of Arya Samaj	P D Shastri.	
The Story of My Life.	Lajpat Rai	30 00
Autobiography of the great freedom fighter and Arya Samaj leader		
Mahatma Hans Raj	Sri Ram Sharma.	20 00
An inspiring biography of the father of DAV movement in India.		
प्रेरक प्रवचन	महात्मा हंसराज	15.00
डी ए वी कालेजों के जनक द्वारा विविध विषयों पर बोधप्रद प्रवचन		
सूक्तियां	धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री	15.00
प्रेरक संस्कृत सूक्तियां हिन्दी तथा अंग्रेजी रूपांतर सहित		
क्रांतिकारी भाई परमानन्द	धर्मवीर एम० ए०	20.00
प्रख्यात क्रान्तिकारी तथा आर्य समाज के नेता की प्रेरणाप्रद जीवनी		
Reminiscences of a Vedic Scholar	Dr Satyavrata Siddhantalankar.	20 00
It is a thought-provoking book on many subjects of vital importance for Aryan Culture		
DAV Centenary Directory (1886-1986) (In Two Volumes)		
A compendium of biographies over 1000 eminent DAVs, Benefactors Associates etc with their photographs Over 1000 pages, 9" X 11" size, printed in Delhi on very good paper, beautifully bound in plastic laminated card-board	Rs 150/-per set. in Delhi Rs. 200/- by Regd Post in India. Rs 150/-plus actual postage for Foreign countries.	
Aryan Heritage:	Rs. 60/- per annum	
A monthly journal for propagation of Vedic philosophy & culture.	Rs 500/- for Life for an individual. Rs. 600/- in lump-sum for Institutions.	

500/- रुपये से अधिक माल मंगाने पर 10% कमीशन दिया जायगा। डाक व्यय तथा रेल भाड़ा ग्राहक को देना होगा। चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट "डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति, नई दिल्ली, पब्लिकेशन्स एकाउन्ट" के नाम से भेजा जाए।

प्राप्ति स्थान

(1) व्यवस्थापक, डी ए वी प्रकाशन संस्थान, चित्रगुप्त रोड, नई दिल्ली-55

(2) मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1

ऋषिकृत ग्रन्थों पर भारी रियायत

दयानन्द ग्रन्थमाला (पहला खण्ड पृष्ठ 726) मूल्य 50
इस खण्ड में निम्न ग्रन्थ हैं—

सत्यार्थप्रकाश, आर्याभिविनय, काशी शास्त्रार्थ, सत्य धर्म विचार, वेद विरुद्ध मत खण्डनम्, शिक्षापत्री ध्वान्त निवारणम्,

दयानन्द ग्रन्थमाला (दूसरा खण्ड, पृष्ठ 844) मूल्य 50
इस खण्ड में निम्न ग्रन्थ हैं—

संस्कार विधि, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका भ्रमोच्छेदन, भ्रान्तिनिवारण, व्यवहार भानु, पञ्चमहायज्ञविधि, आर्योद्देश्यरत्नमाला, गोकरुणानिधि स्वीकार पत्र—आत्मकथा

नवजागरण के—पुरोधा (दयानन्द सरस्वती पृष्ठ 603) मूल्य 50

तीनों का मूल्य 150

रियायती मूल्य—100

आर्यसमाजों, पुस्तकालयों और शिक्षण संस्थाओं के लिए—90
पैकिंग—नि शुल्क

गजानन्द आर्य, मन्त्री परोपकारिणी सभा, अजमेर

गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में पंखे चाहिए

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने वाले तपोनिष्ठ स्व० श्री स्वामी व्रतानन्द जी महाराज ने इस रमणीक स्थान पर गुरुकुल की स्थापना करके ऋषि दयानन्द के ही एक स्वप्न को पूरा किया था। सन् 1930 से लेकर अब तक यह गुरुकुल निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है। इस समय यहां ब्रह्मचारियों की संख्या 200 के लगभग है। गतवर्ष यहां का परीक्षा परिणाम 98 प्रतिशत रहा है।

गुरुकुल की अपनी उत्तम गोशाला है और पर्याप्त कृषि भूमि है। परन्तु गत चार वर्षों के भयंकर सूखे के कारण विषम स्थिति का सामना करना पड़ रहा है। कुओं का जलस्तर एकदम नीचे चला गया है। इस वर्ष सारे देश में बहुत अच्छी वर्षा हुई, परन्तु राजस्थान का यह प्रदेश अपेक्षित वर्षा से वंचित रहा।

तीन ओर रेल लाइनों से घिरा होने के कारण इस वर्ष मच्छरों का बाहुल्य हो गया और मलेरिया का प्रकोप बढ़ गया। इससे परेशान होकर ब्रह्मचारियों के आश्रम में पंखे लगाने का निश्चय किया गया है। 50 सीलिंग फैनों के लिए 35,000 रु० की आवश्यकता है। आप अपने किसी प्रियजन की स्मृति में एक या अधिक पंखे लगवा सकते हैं। पंखे पर नाम लिखवा दिया जाएगा जो चिर स्मृति का काम करेगा। कृपया गुरुकुल को पंखे दान देकर या उनका मूल्य भेजकर पुण्य के भागी बनें। आप अपनी सामर्थ्य के अनुसार जितने भी पंखों की व्यवस्था कर सकें उसके लिए ब्रह्मचारी आपको आशीर्वाद देंगे।—यशदेव वेदवागीश, मुख्याधिष्ठाता

सात्विक जीवन के धनी स्व० प्राणनाथ वानप्रस्थी

प्राणनाथ जी वानप्रस्थी 1918 में लाहौर में जन्मे, वहीं डी० ए० वी० संस्थाओं में पढ़े। आपके पिता स्व० महाशय राजपाल जी ने सन् 1929 में धर्म की रक्षा में अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया। तभी सांसारिक जीवन से मोहभंग प्रारम्भ हो गया। माता जी के आदेश से कुछ वर्ष गृहस्थ में बिताए। एक बेटा और बेटी भी हुए। लेकिन, सहधर्मिणी की अकाल मृत्यु के बाद आप सांसारिक जीवन से पूरी तरह विरक्त होकर 35 वर्ष की आयु में ही गुरुकुल चित्तौड़ के आचार्य और संस्थापक स्वामी व्रतानन्द जी से वानप्रस्थ की दीक्षा ली और फिर निःस्वार्थ भाव से अवैतनिक रूप में गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में रहकर बच्चों को सदाचार की शिक्षा देते रहे।

उन्होंने अत्यन्त रोचक शैली में अनेक महापुरुषों की लगभग 40 जीवनियां लिखीं। मेवाड़ की वीरप्रसूता भूमि से प्रेरणा लेकर चित्तौड़गढ़ की कहानी लिखी। उनकी अनेक रचनाएं पुरस्कृत हुईं लेकिन इन पुरस्कारों के प्रति वे हमेशा निस्पृह बने रहे।

वे जरूरत से अधिक चीजों का संग्रह करना अनुचित समझते थे तथा सादगी को जीवन का आदर्श मानते थे। मितभाषी होते हुए भी वे जीवन की सीख देने वाली कहानियां सुनाने में बहुत रस लेते थे।

एक समृद्ध परिवार में जन्म होने पर भी वे आजीवन सादगी और तपस्या की प्रतिमूर्ति बने रहे। उन्होंने 23 9 को प्रातःकाल चित्तौड़गढ़ में अपने प्रिय ब्रह्मचारियों के बीच शांतिपूर्वक प्राण त्याग दिए।

आर्य अनाथालय फिरोजपुर बाढ़ की चपेट में

आर्य अनाथालय फिरोजपुर कैंण्ट के मैनेजर, प्रिन्सिपल पी डी चौधरी का तार आया है कि आर्य अनाथालय फिरोजपुर कैण्ट की चार दीवारी तोडकर बाढ़ का पानी अनाथालय में 6 7 फुट आ गया है। वहा सारे अनाथालय के बच्चे छतो पर बैठे हैं। वहा के कर्मचारी तथा उनके परिवार भी छतों पर बैठे हैं। इससे आर्य अनाथालय को भारी क्षति हुई है। धने धने. पानी तो उतार पर है, पर अनाथालय की लाखों रु को हानि हुई है।

हमने आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा के मन्त्री श्री वैद्य विद्यासागर, 23, ए दयानन्द नगर, लारेन्स रोड, अमृतसर, और प्रधान श्रीमती एस अहलावत, प्रि० बी०बी० के० डीएवी कालेज फॉर वूमैन, अमृतसर को निर्देश दिया है कि वहा जाकर निरीक्षण करें और बाढ़ पीड़ितों की अधिक से अधिक सहायता करें।

मेरी भारत भर की जनता से प्रार्थना है कि उपरोक्त क्षति की पूर्ति के लिये आर्य अनाथालय फिरोजपुर कैण्ट के नाम 'केवल खाते में चेक, ड्राफ्ट, मनीआर्डर मैनेजर, आर्य अनाथालय फिरोजपुर कैण्ट, पजाब के पते पर भिजवाने की कृपा करें अथवा 'आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के नाम आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भी भिजवा सकते हैं।

—मन्त्री, रामनाथ सहगल

अजनाला में बाढ़ राहत केन्द्र

आर्य प्रादेशिक उपसभा पजाब चडीगढ़ ने अपना बाढ राहत केन्द्र जिला अजनाला में आरम्भ कर दिया है। वहा के डिप्टी कमिशनर ने हमें जिले के चार गाव दिये हैं। वहा 500 व्यक्तियो को प्रात. नाश्ता, दोपहर एव रात्रि के भोजन एव अन्य सुविधाओ की व्यवस्था की है। उपसभा के समस्त अधिकारी और कार्यकर्ता अमृतसर में कम्बल, कपडे, खाद्य सामग्री तथा अन्य जरूरत की वस्तुए एकत्र कर अजनाला भिजवा रहे हैं। दानी महानुभाव उन बाढ़ पीडितो की सहायता करना चाहें तो श्री वैद्य विद्यासागर, 23-ए, दयानन्द नगर, लॉरेन्स रोड, अमृतसर, पजाब को भिजवा सकते हैं।

—रामनाथ सहगल

हरियाणा में बाढ़ सहायता के लिए ६००० रु०

27-28 सितम्बर को मैंने आचार्य सत्यप्रिय जी शास्त्री वेद प्रचार अधिष्ठाता व प्रो० दर्शन सिंह कोषाध्यक्ष हिसार शहर, बरवाला, उकलाना, टोहाना, बरवाला, जींद, पेहवा, कैथल, पूण्डरी, फरल, करनाल, कुरुक्षेत्र, व पानीपत की समाजो का दौरा किया, बाढ़ से प्रभावित इलाको का भी सर्वेक्षण किया व सहायतार्थ कार्य करने की योजना बनाई। कुछ सज्जनो से छ हजार रु० की राशि दान के रूप मे प्राप्त की। फरल मेले के उपलक्ष्य में वेदप्रचार की योजना भी बनाई गई। डा० गणेश दास जी करनाल, व साहिब दयाल कालडा का विशेष योगदान रहा।

—डा० सर्वदानन्द आर्य मन्त्री आ०प्रा० प्र० उपसभा हरियाणा

आर्यवीर दल दिल्ली का वीर पर्व

विजयदशमी के दिन 20 अक्तूबर को प्रात 8 बजे आर्यसमाज हनुमान रोड में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सचालित आर्य वीर दल दिल्ली की ओर से वीर पर्व मनाया जाएगा जिसकी अध्यक्षता श्री सूर्यदेव जी करेंगे। स्वामी आनन्द बोध जी आशीर्वाद देंगे। ध्वजारोहण श्री राममूर्ति कैला करेंगे। मुख्य अतिथि होगे महाशय धर्मपाल श्री देवराज बहल, श्री जयप्रकाश आर्य, श्री रतनलाल सहदेव। पारितोषिक वितरण श्री प्रकाशचन्द एडवोकेट करेंगे। अनेक आर्य विद्वान् आर्य वीरो को सम्बोधित करेंगे।

— प्रियव्रतदास रसवत, अधिष्ठाता

राष्ट्रीय एवार्ड से पुरस्कृत
श्री एम. आर. चोपड़ा

ऐंग्लो संस्कृत हाईस्कूल पूण्डरी (कुरुक्षेत्र) के प्रधानाध्यापक श्री एम० आर० चोपडा का शिक्षक दिवस पर राष्ट्र एवार्ड से पुरस्कृत किया गया है। शिक्षक के रूप मे सेवाओ का उनका 29 वर्षों का रिकार्ड है। अपनी निष्ठा, योग्यता व प्रशासनिक कुशलता के कारण उन्होने अपनी सस्था को ग्रामीण क्षेत्रो में विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त करवाई है। अपने स्कूल में उन्होने अनेक नए प्रयोग व परियोजनाए शुरू की हैं। अपनी गुणवत्ता और सख्या के द्वारा उत्तम परिणाम प्रदर्शित कर यह स्कूल हरियाणा की प्रमुख शिक्षा सस्थाओ मे अपना स्थान बना चुका है। राष्ट्रीय कैडेट कोर में इस स्कूल के 100 कैडेट हैं। सीमित साधनो के होते हुए भी जनता से धन-सग्रह कर स्कूल के भवनो मे विशेष वृद्धि की है। अनेक शिक्षाधिकारियो द्वारा उनको प्रशसा-पत्र दिए गए हैं। 1981 82 में उन्हें राज्य सरकार की ओर से भी पुरस्कृत किया गया था। छात्र तथा अभिभावक उनका समान रूप से आदर करते हैं।

यज्ञ एव वेद कथा

आर्य समाज बी-2 जनकपुरी नई दिल्ली में यज्ञ एव वेद कथा का आयोजन 12 से 16 अक्तूबर तक किया जायेगा। स्वामी विद्यानन्द जी द्वारा वेद कथा व प० जगमाल सिंह, श्रीमती सुदेश आर्या व श्री विजय सिंहल के भजन होंगे। — मन्त्री

आर्य युवक युवती दल हरियाणा तृतीय महासम्मेलन

आर्य युवक/युवती दल हरियाणा का तृतीय महासम्मेलन 29 30 अक्टूबर को डी० ए० वी० हाई स्कूल गुरु ग्राम (गुडगाव) में समारोह पूर्वक सम्पन्न हो रहा है। जिसमें देश के उच्चकोटि के आर्य सन्यासी, विद्वान एव राजनेता पधारेंगे। सम्मेलन को सफल बनाने के लिए प्रदेश भर के आर्य युवक एव युवतिया निरन्तर प्रयत्नशील हैं। आशा है आप सब इस सम्मेलन में पधार कर हमारा उत्साह बढ़ायेंगे।

समाज-सेवा के लिए

(पृष्ठ 4 का शेष)

के आटे की रोटियां हरी तरकारियो के साथ लें। दूध दही, मौसम के फल आदि अधिक लें। भोजन केवल आप दिन में दो बार लें। चाय-काफी आदि छोड दें। इनके साथ ही सबसे जरूरी चीज है कि साल में बारहो महीने सुबह-शाम सर्दी हो या गर्मी, धूप हो या बरसात, तीन मील अवश्य घूमें।

फिर गुप्ता जी हस पड़। बोले—यह डाक्टर खरे का डायग्नोसिए कहिए या उनके द्वारा बतलाई दिनचर्या और आहार और भ्रमण का सिलसिला उसे मैं पूरी तरह निभा रहा हू। मैं किसी भी कीमत पर पार्टियो और दावतो और और बाजार के खानों से बचता हू। आपने जो चमत्कार की बात कही है, उसे मैंने केवल महसूस करता हू। बल्कि जिस किसी से भी भेंट होती है। और जिस किसी ने मुझे मेरी लम्बी बिमारी के बाद देखा है। वह आश्चर्य करता है। हां, एक बात मुझे डाक्टर साहब ने जरूर कही थी, जिसे मैंने जीवन मे लाने की कोशिश की है। अब मैं केवल जीने के लिए नहीं जीता, प्रत्युत कुछ समाज-सेवा के लिए जीने की कोशिश करता हू। नहीं कह सकता कि मैं अपने मिशन में कहां तक कामयाब हो रहा हू। पर मेरी कोशिश यही है।

\+ \+ \+

उसके बाद दसियों वर्ष गुप्ता जी जीवित रहे, परन्तु वह न तो फिर कभी बीमार पड़ें, न उन्हें खटिया पर लेटे देखा। वह सामूहिक मिलन-कार्यक्रमों मे भी जाते थे, पर वे वहा सामूहिक चोकर वाली रोटी और सब्जी से ही काम चलाते थे। आधी हो या तूफान, गर्मी हो या सर्दी, वे बरसाती छाते या कोई भी इन्तजाम कर सुबह शाम धूप अवश्य लेते थे। वह पूर्ण स्वस्थ रहे, पर फिर कभी घर नहीं बैठ वर्षों तक समाज-सेवा के काम में जुटे रहे। उन्हें कभी कोई ओहदा मिला या नही मिला, पर समाज ने जो जिम्मेदारी उन्हें सौंपी थी, उससे वे कभी पीछे नहीं हटे।

आज गुप्ता जी शायद जीवित नहीं होंगे, पर कई बार सुबह शाम लगता है कि वे खटखट कर समाज-सेवा के अपने मिशन पर जा रहे हैं। उनके खटखट से लगता है कि उन्होने जीने का एक नया अर्थ सीख लिया है।

पता—अभ्युदय बी-22 गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली-110049

बु० 103/81 लाइसेंस टू पोस्ट विदाउट प्रिपेमेंट
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० 39/57
Delhi Postal Regd. No. D (C) 409
N.D.P.S.O ON: 12/13-10-88 16 अक्टूबर, 1988

पितरों का श्राद्ध कैसे करें

—श्री खेमचन्द मेहता—

प्रतिवर्ष अश्विन मास के पितृ पक्ष में सनातनी भाई अपने मृतक सम्बन्धियों का श्राद्ध करते हैं। उन पूर्वजों की निधन तिथियों के अनुसार ब्राह्मणों को भोजन कराते हैं। वे समझते हैं कि इससे मृतक सन्तुष्ट होते हैं और वह भोजन तथा दान-दक्षिणा उन पितरों तक पहुंच जाते हैं।

आर्य समाज ब्राह्मणों को, विद्वानों को, या अनाथों को, पितृ पक्ष मे या किसी भी दिन भोजनादि खिलाने के विरुद्ध नहीं है। दानदाता को तो अपने दान का फल अवश्य मिलता है, क्योंकि इस प्रकार का दान भी एक शुभ कार्य है। पर आर्यसमाज का विरोध इस बात से है कि भोजन या दान पितरों तक पहुंच जाता है। यह सम्भव नहीं है। हमारे पितर अब किस योनि में हैं, किस अवस्था में हैं, यह हम नहीं जानते। हमारा भोजन उनकी रुचि के अनुकूल भी है या नहीं, यह भी हम नहीं जानते। फिर साल भर में केवल एक दिन दिया गया भोजन उनके वर्ष की अतृप्ति को कैसे शान्त करेगा?

इसलिए आर्य समाज की दृष्टि से इसका व्यवहारोचित पहलू यह है, मृतकों की पुण्यतिथि मनाने की बजाय हम अपने जीवित बुजुर्गों की जन्मतिथि मनाएं। जैसे हम रामनवमी, कृष्ण जन्माष्टमी, शिवाजी जयन्ती और प्रताप जयन्ती आदि इन महापुरुषों के जन्मदिवस के उपलक्ष में मनाते हैं, वैसे ही अपने मृतक पितरों के गुणों का स्मरण करते हुए अपने जीवित पितरों— माता पिता, दादा दादी, आचार्य विद्वान आदि को उनके जन्मदिन पर विशेष निमन्त्रण देकर उनका यथोचित सत्कार करें। इससे सचमुच उनकी आत्मा तृप्त होगी, परिवारों में सौमनस्य बढ़ेगा और आधुनिक युग मे नवीन पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के बीच जो संवाद हीनता और रिक्तता पैदा हो गई है, वह मरेगी।

यदि इन जीवित पितरों की जन्मतिथि याद न हो तो पितृ पक्ष में उनको बुला कर यज्ञ, भोजन, सत्कार और यथोचित भेंट पूजा आदि करके उनका आशीर्वाद प्राप्त करने से समस्त परिवार का कल्याण होगा और समाज मे अन्ध रूढ़ि के बजाय एक उपयोगी सुधार परक परम्परा कायम होगी।

शरत् पूर्णिमा पर निश्शुल्क औषधि वितरण

प्रति वर्ष के अनुसार इस वर्ष भी शरत् पूर्णिमा (24 अक्तूबर, 88) को दमा की आयुर्वेदिक औषधि आर्य समाज लातूर द्वारा डागा धर्मार्थ ट्रस्ट के सहयोग से निश्शुल्क वितरित की जाएगी। दमा श्वास, पुरानी खांसी इत्यादि कफ विकारों पर यह औषधि अद्भुत लाभ करती है। इच्छुक सज्जन निम्नलिखित पतों में से किसी एक पर सम्पर्क करें—1 मन्त्री आर्य समाज, लातूर, 2 डागा धर्मार्थ ट्रस्ट, बलाप लाइन, लातूर, 3 वैद्य रामकृष्ण व्यास, मेन रोड, लातूर।

जो महानुभाव स्वयं लातूर न आ सकें, वे पत्र द्वारा शीघ्र सूचित करें। उन्हें डाक से औषधि भेजने की व्यवस्था की जाएगी। —मन्त्री आर्य समाज लातूर, पिन-413512

पुरोहित चाहिए

आर्य समाज पजाबी बाग पश्चिमी, नई दिल्ली-110026, के लिए एक योग्य पुरोहित चाहिए जो वैदिक संस्कारों को महर्षि दयानन्द प्रचलित पद्धति के अनुसार सम्पन्न कराने मे प्रवीण हो, आर्य सिद्धान्तो का अच्छा ज्ञाता हो तथा अपनी वाग्मिता, तार्किकता और प्रमाणो से जनता को प्रभावित करने की क्षमता रखता हो। संगीतज्ञ को वरीयता। प्रार्थना पत्र मन्त्री, आर्य समाज के पास 31.10.88 तक भेजें।

—मन्त्री

योग्य वधू चाहिए

23/180 एम० कॉम, एल०एल०बी०, स्वस्थ सुन्दर, सम्मानित एवं अत्यन्त सम्पन्न व्यापारिक, शाकाहारी आर्य समाजी यादव परिवार के युवक के लिये, सुशील, शिक्षित, सुन्दर स्वजातीय सम्पन्न घराने की आर्य समाजी कन्या चाहिये। प्रथम ही फोटो व पूर्ण विवरण के साथ लिखें, 48667—राव हरिश्चन्द्र आर्य C/O आर्य समाज, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

आर्य युवक दल एवम् आर्या युवती दल हरियाणा का

तृतीय प्रांतीय महासम्मेलन के लिए अपील

21,30 अक्तूबर 1988, शनिवार एवं रविवार को गुड़गांव, स्थान —डी० ए० वी० हाई स्कूल ... देश में बढ़ती हुई अवैदिक विचारधारा के निराकरण के लिए सात्विक, बलवान्, बुद्धिमान तथा चरित्रवान बनाना है। 2½ वर्ष के अल्पकाल में इस दल ने अनेक शिविरों का आयोजन किया। दो प्रान्तीय महासम्मेलन पानीपत एवम् हिसार में आयोजित किए। हरियाणा के विभिन्न जिलों में शाखाएं खोलीं और अपने अल्प साधनो से लगभग 5000 युवक युवतियों को प्रशिक्षित किया। आज भी यह दल तीव्र गति से अपना कार्य प्रशंसनीय ढंग से कर रहा है। वह दिन दूर नहीं जब आर्य युवक एवं युवती दल की शाखाएं ग्राम-2 और नगर-2 में फैल जाएंगी।

इस महान कार्य की पूर्ति के लिए आप सबका सहयोग अपेक्षित है। तन, मन और धन से इस महान यज्ञ मे आपका सहयोग अनिवार्य है। स्वयं और अपने इष्ट मित्रो सहित इस सम्मेलन में भाग लेवें और आर्थिक सहयोग के लिए अधिक से अधिक राशि नकद/धनादेश/चैक/ड्राफ्ट द्वारा "आर्य युवक दल हरियाणा" के नाम ई-36 इण्डस्ट्रीयल एरिया, पानीपत के भेजने की कृपा करें। हम आपके सहयोग के लिए सदा आभारी रहेंगे।

आर्य युवक एवम् युवती दल हरियाणा
के समस्त सदस्य एवम् अधिकारी गण।

मुद्रक प्रकाशक — श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाड़ी धीरज (फोन: 527335) दिल्ली से मुद्रित होकर कार्यालय 'आर्य जगत्' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व— आर्य सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 (फोन 343718)